विचित्रचारि

	पृष्ठ से	पृष्ठतक
आ... इसमें इसग्रन्थ की कथा सको ... करना और प्रहास वह ... ना इन उक्तकथाओं वर्णित है ॥ अद्भुत मिथ्या ईश्वरका इर ... ध्यानहैं मायाकृत अदृश्य में जाना महाराज शत्रुंजयका ... और आश्चर्य करानेवाले वन राजपुत्र भीम विक्रमका मोहनीचि वर्णन है बहुतसी स्वरूप- और प्रचण्डा म्लेच्छीका माराजाना के स्वरूपका वर्णन है बहुत और मोहनी चित्रसे संयोगहोना ंग की कथा हैं और वीररस देशाधिपका कैदकरलेना ये सम्पूर्ण कथा ोंका वर्णन है ॥ पद और नख शिख शोभा वर्णनसहित वर्णितायाजाल वनान राजा महावीरका अद्भुत मिथ्या ईश्वरकी से उससेछुटना यता के लिये सब मायावी राजाओंको पत्र लिखना प्रहा ... उनमेंसे विष्मयी मायादेशके स्वामी महाराज म ... द्र ... र माय । ... अने ... का उसको सह ... महोल्कानामी मायावीम्लेच्छ ... ड़ी को सेनासहित ... ना उसका राजा महावीरकी परम सुन्दरीपुत्रीपरआसक्त होना प्रहास बहुरूपियेका नाना छल रूप धारणकरके उसको पकड़लेना फिर वैष्णवों से मायावी म्लेच्छों का युद्धहोना और वैष्णवों की जय होना ये सव कथा नानाप्रकार के प्रेमरस और वीररस के पद और नाना स्थानों के वर्णनों सहित इस अध्यायमें वर्णन कीगई हैं ॥	६०६	७४८

राजपुत्र भानुविक्रम का विष्मयी मायारचितदेश को विजय करनेकेलिये बड़ीभारी सेना और पांच बहुरूपियों सहित जाना और सब का पृथक् पृथक् मार्गों से चलना और राजपुत्र का पहिले प्रवेशकरना और एक मायाकृत बागमें ठहरना वहां उसकीसेना को नागोंका भक्षण करजाना राजपुत्रका दुखी होकर फिरना और अंधेर नगरी में पहुंचना वहांके बाज़ार को लूटना और रानी विचित्रमायाका उसको पकड़- वाना और मायाकृत वनमें फिंकवा देना वहां राज- पुत्र का दुखीहोकर फिरना और एकमायाकृत प्रासाद के पास पहुंचना वहां राजपुत्री चन्द्रचूड़ाका राज
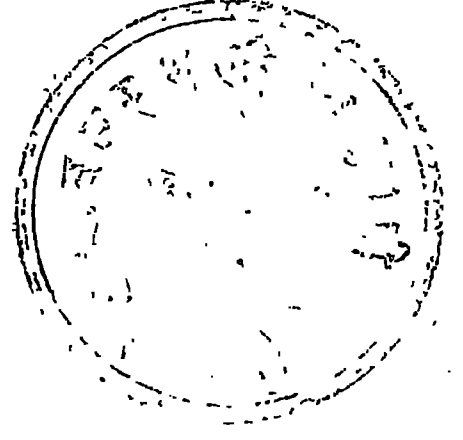
विचित्रचरित्र ॥

प्रथम खण्ड ॥

श्लोक नत्वाशिवंमहादेवं पार्वतीशंकरोम्यहम् ।
कथामत्यद्भुतांरम्यां हरभक्तिमुदप्रदाम् ॥

सो० यहअति विमल प्रसङ्ग मनमुदकर अरु दुखहरण ।
दायक भक्ति अभङ्ग कुंजलाल भाषा करत ॥

त्रेतायुगमें विंध्याचलपर्वतपर एक विड़ालाक्षनामी राक्षस
इताथा रावणसे उसकी परमप्रीतिथी और दोनों एक दूसरे
परममित्र जानतेथे जब रामचन्द्रावतार हुआ और रावण
मचन्द्रजीके हाथसे मारागया तब उसराक्षसको मित्रके मारे
नेका बड़ा संतापहुआ और वह अपने मित्रका बैर लेनेमें
पनेको असमर्थ जानकर उग्रतपस्या करनेलगा कईसहस्र
षं उसने तपस्याकी उपरांत शिवजी ने प्रसन्नहोकर उससे
यक्ष आनकर कहा कि वरंब्रूहि अर्थात् वरमांग यहसुन
राक्षसबोला कि महाराज मैंने रामचन्द्रसे अपनेमित्रराव-
का वैरलेनेको तपस्याकीथी सो रामचन्द्रतो परमधाम गये
ब मुझे ऐसीसामर्थ्य और ऐसावरदान दीजिये कि सब सं-
री मनुष्य रामकोभूलकर मुझको विष्णुजानें और वैष्णवों
मत संसारसे उठजाय यह सुनकर शिवजीनेकहा कि तथा-

स्तु अर्थात् ऐसाही होगा थोड़ेदिनोंमें तू इस शरीरको
कर सौराष्ट्रदेशकेराजा पुंडरीकके यहां जन्मपावैगा और व ां
तेरा समागम अप्सरा किन्नर राक्षस भूत वैताल पिशाच यक्ष
और गंधर्वआदि से होकर सबकी विद्या तुझे मिलैगी और
जैसा तू चाहता है वैसाही होगा परंतु कुछकालपीछे सूर्यवंशमें
एक बड़ाप्रतापी हरभक्त राजा उत्पन्नहोगा तबतू सब विद्याभूल
जायगा और उसके हाथसे माराजायगा यह कहकर शिवजी
अंतर्द्धान होगये और उसराक्षसने थोड़ेदिनोंमें राक्षसीशरीर
त्यागकर राजा पुंडरीकके यहां जन्मपाया पंडितोंने उसकीजन्म-
कुंडली के ग्रहोंको विचारकर राजासेकहा कि यह ऐसा प्रतापी
होगा कि संसारीमनुष्य इसके प्रतापके आगे परमेश्वरको भूल
जायंगे और इसीको ईश्वर ानेंगे और नामउसका अ ुतरक्खा
कुछकालपीछे राजा पुंडरीकका देहांतहोगया और अद्भुत राजगद्दी
परबैठा शिवजी के बरदानके अनुसार उसका समागम गंधर्व
िन्नर और राक्षस आदि उक्त देवजातियों से होनेलगा औ
थोड़ेहीकालमें सबसे मायावीविद्या सीखकर पर मायावी होगय
जब चाहताथा मायासे जल वर्षादेताथा और जिसको चाह ा-
था वरदान अथवा शाप देकर मायासे पूरा करदेताथा और
माया के बलसेही उसने सब संसारके राजाओंको अपने वशमें
करलिया ऐसी अने बातोंसे सब संसारी मनुष्य और राजा
उसे ईश्वर माननेलगे और वह आपभी अपनेको जगत् काउत्पन्न
पालन और नाशकरनेवाला कहनेलगा जहां वहजाताथा वहांके
मनुष्य और राजा उसकीपूजा ईश्व के समान करतेथे यहां
तक कि थोड़ेहीकालमें संसारसे शैवी शाक्तिक और वैष्णवीती-
नोंमतउठगये और सबराजाभी उससे और राक्षसोंसे समागम
रखकर मायावी होगये अनेक २ प्रकारकी माया करनेकेतंत्र
उनलोगोंने सीखलिये ऐसी दशाहोने पर उस समयके ऋषि

शूरमौर ब्रह्मज्ञानी मुनियोंने ईश्वर से इनराजाओंके नाश होनेकी नम्प्रार्थनाकी उसके प्रभाव से सूर्यवंशीराजा गौड़पतिके यहांएक बड़ातेजस्वी और प्रतापवान्पुत्र उत्पन्नहुआ राजाने उसकानाम शत्रुंजयरक्खा वह बाल्यावस्थासे ऋषियोंका सत्संग करके बड़ाहरभक्त होगया जबउसका पिता पंचत्वको प्राप्तहुआ और वह राजगद्दीपर बैठा तबउसने अद्भुत आदि नास्तिकोंके नाश करनेका विचारकिया उसके इस विचारको दृढ़जान कर बहुतसे ऋषि और देवताओंने उसकेपासआकर आशीर्वाद जयकादिया और अनेकप्रकारके शस्त्रअस्त्र और मंत्रजिनके प्रभावआगे कथाके प्रसंगमें वर्णन कियेजायँगे दिये शत्रुंजय ने उनसबकोग्रहणकरके राज्यपर अपनेपौत्र सुवीरको बैठादिया और आप अपनी सेनाका सेनापति बनकर अद्भुत ने मिथ्या ईश्वरपर चढ़ाई की और उसकी सबमायाकोव्यर्थ करके जीत लिया तब वह मिथ्या ईश्वर सौराष्ट्रदेशसे भागकर सहस्रमाया निधिको अर्थात् वहस्थान जो सहस्रप्रकारकी माया के प्रभावसे रचागया था भागगया शत्रुंजयने वहांभी उसकापीछा न छोड़ा और ईश्वरकी कृपासे उस माया के रचेहुये स्थानको भ्रष्टकर डाला इसकी विस्तारपूर्वक कथा इसग्रंथ के पूर्वार्धमें वर्णितहै इसकारणसे यहां संक्षेपमात्रही कहीगयी उससहस्रमायारचित स्थानके भंगहोनेपर वहमिथ्या ईश्वर रत्नाकर पर्वतपर भागकर चलागया जिसकीसीवां विस्मयकर मायारचितदेशसे मिलीहुई थी अबग्रंथके इसपरार्धमें इसीस्थानकी कथावर्णन कीजातीहै॥

पहला अध्याय॥

अद्भुत मिथ्या ईश्वरका भाग कर पर्वतीयदेशों में जाना और शत्रुंजयका उसपर चढ़ाई करना और प्रचंडा और मायावी म्लेच्छोंकावध और राजपुत्रभीमविक्रम का ग्रहण होना॥

सौरभमहाराजने इसकथाको अपने अद्भुतग्रंथमें इसप्रकार

से वर्णनकियाहै कि जबवह मिथ्या ईश्वर सहस्र मायानिधि भी रहने पर शत्रुंजय से न लड़सका तब उसने अपने सुबाहु और वीरबाहु नाम मंत्रियों से सलाहकी मंत्रियों ने कहा कि प्रभो रत्नाकर पर्वतके देशकामहावीर नामी राजा बड़ापराक्रमी और तेजस्वीहै उसकेपास असंख्यसेना और बड़े २ वीर योद्धा हैं और उसीदेशसे विस्मयकर मायारचित देशकीसीवां भी मिलीहुईहै उसदेशके अधिपतिका नाम महेंद्रहै वहसबमायावी राजाओं का स्वामी है उसके प्रतापतेज और मायाकी प्रबलतासे सबराजा थर्राते और काँपते रहते हैं ॥

दो० छत्रमुकुटपति भूपसों करदाकियनृपचंड ।
चंद्रलोकलों व्यापहै जासु प्रतापअखंड ॥

अब वहीं आपपधारिये यह सुनकर अद्भुत मिथ्या ईश्वर वहांसे चलदिया और कुछकाल में बड़े मार्ग को उत्तीर्ण करके रत्नाकरपर्बतके देशकी सीवांपर जापहुंचा वहांके राजदूतोंने उसके आनेका संदेशा राजामहावीरसे जा कहा वह मिथ्या ईश्वर के आगमन को सुनतेही उठखड़ाहुआ और भेटके लिये थालों में अनेक रत्न भरवाकर सभासदोंसहित नगर के बाहिरआया और नगरकी रचना करने की आज्ञादी और उस मिथ्या ईश्वर की पूजाकरके उसके नगरके भीतर से राजमंदिरमें लिवालेगया और आंगन में एकपरमोत्तम रत्नजटित सिंहासनपर उसको बैठाया जोजो वहांपर राजकाजी मनुष्यथे सबोंने उसकी पूजाकी इसके उपरांत वहां परमसुंदरी कोकिलबैनी मनोहरहास्य वेश्या आई और अपूर्वगतिके नृत्य और सुरीलेगानसे नाचने और गाने लगीं और परमोत्तम वारुणीकापान होनेलगा इसी अवसरमें वहां राजामहावीरके दो भानजे नक्र और वक्र नामी जो राजाकी सेनाके सेनापति थे और कई लक्षसेना उनकी आज्ञा मेंथी वहां आये और उनके साथ सबकासेनाधिपति

शूरसेननामी भी आया जिसकी सदृश अस्त्रज्ञाता औ कोई नथा इनसबने आकर यथायोग्य मिथ्या ईश्वर की पूजाकी और विनयकी कि हमसब आपके लिये प्राणतक देने को तयारहैं आप सुखपूर्वक यहां बासिये यह सुनकर मिथ्या ईश्वर परमस्वस्थ-चित्तहुआ और वहींरहनेलगा और राजामहावीर भी उसकी सेवा बड़ी आधीनता और उत्तमोत्तम भोजनाच्छादनसे करनेलगा यह मिथ्या ईश्वर जब सहस्र मायानिधि से चलाथा तब महाराज शत्रुंजयने चार चतुर दूतोंको आज्ञादीथी कि तुमलोग मिथ्या ईश्वरके पीछे २ विना जनायेचले जाओ और जिस राजाके यहां वह ठहरजाय उसराजाके देश प्रताप सेना की संख्या और शूरबीरोंकी प्रबलता को जानकर चलेआओ वे दूत उस मिथ्या ईश्वरके साथ २ भेष बदलेहुए यहांतक आयेथे जब उन्होंने सेना आदि सबका हाल जानलिया तब वे राजकोटसे बाहरनिकलकर वायु और बिजली के वेगकी समान वहांसे चलदिये और थोड़ेही कालमें महाराज शत्रुंजय के समीप आ पहुंचे उस समय महाराजाधिराज शत्रुंजय और उनके पौत्र महाराज सुवीर राजसिंहासनपर सभासदों सहित विराजमानथे और सहस्रमाया निधिके भ्रष्ट करने का उत्सव देखरहे थे उसी समय दूतोंने जिनके होठोंपर मार्गके श्रमसे पपड़िया पड़गई थी सभामें आकर दूरसे महाराज को साष्टाङ्गदण्डवत् की और जयशब्द उच्चारणकरके विनयकी कि —

सो० महाराज को राज सुकृत प्रताप अखंड यश।
रहै अछत ससमाज सूर्य चंद्र जबलों उदित॥

हमलोग आपकी आज्ञा के अनुसार उस मिथ्या ईश्वर के साथ २ रत्नाकर पर्वत तक गये वहां के राजाने उसको बड़े आदरसे ठहरायाहै और पूजा करके उसकी पूरी सहायता करने का विश्वास दिया यह कहकर दूतोंने कहा कि सेना और शू-

रवीर और देशकाहाल जो जो देखा और सुनाथा सबविस्तार-
पूर्वक कह सुनाया उस को सुनकर श्रीमहाराजने अपने सेनापति
महाराज शत्रुंजयकी ओरदेखा और उग्रवीर्यने प्रहासकोआज्ञा
दी कि आप शूरवीरोंको बुलाकर कहदीजिये कि शीघ्र तयारहो-
कर रत्नाकर पर्वतकी ओर चलें यह आज्ञा पाकर सब शूरवीर
चलनेकी तयारी करनेलगे॥

दो० डेरालदत जुझाउ के धूमधाम चहुं ओर।
वैरिन के हलचलपड़ी थरथरात जिमि चोर॥

और सेना पैदल और असवार भिन्न २ होकर पयानकरने
लगी औरडेरा और तंबू छकड़ों और बड़े २ बाहनोंपर लद२
कर चलनेलगे औरश्रीमहाराजभी अपने सबसभासदों सहित
परमोत्तम रथों और घोड़ोंपर बैठबैठकर चलनिकले और थोड़े
दिनोंमें बड़े मार्गको उल्लंघनकरके और अनेक बासस्थलों पर
बासकरतेहुये रत्नाकर पहाड़के निकट जापहुंचे और एक उ-
त्तम स्थानमें तंबूआदि लगादियेगये और सब सेना अपना २
सुपास देखकर उतरनेलगी और खान पानआदि सब पदार्थों
की हाट लगगई और भेरी मृदंग और नगारे आदि अनेकप्र-
कारके बाजे सेनाके आनेका हाल सूचित करनेके लिये बजने
लगे उनकोसुनकर वैरियोंकेचित्त भयभीतहोगये राजामहावीर
ने सेनाके आनेका संदेशापाकर नगरका प्राकार अर्थात् किला
ठीककराया और बुर्जोंपर पीतल और लोहनिर्मित शतघ्नी
यंत्र अर्थात् तोपइत्यादिरखवादीं और अपनी सेनाको युद्ध
के लिये सन्नद्धरहनेकी आज्ञादी और महाराजशत्रुंजयके सेना-
पति उग्रवीर्यने अपना तंबूउक्त किले के सन्मुख लगवाया इस
के पीछे उस बनकी परमशोभाऔर निर्दोषवायुको देखकर महा-
राजशत्रुंजयके पुत्र भीमविक्रमकी इच्छा उसबनमें अहेरखेलने
कीहुई और उसने अपने पितासे अहेर खेलनेके लिये जानेकी

आज्ञामांगी परंतु महाराज शत्रुंजयने उसको कुछ उत्तरनहीं दिया तबवहअपनी माता सुभद्राके पासगया और उससेकहा किमुझे इसबनमें अहेरखेलनेकी आज्ञा पिता से दिलवादो मैंनेआज्ञामांगी थी परंतु पिताने कुछ उत्तरनहीं किया यहसुन कर माताने आज्ञादिलाना अंगीकारकिया और जबमहाराजशत्रुंजय रनिवासमें गये तबरानी ने उनसे भीमविक्रमको अहेरखेलने को जानेदेनेकी आज्ञा मांगी महाराजने कहाकि इसबन में परममायावी मनुष्यरहतेहैं इसकारणसे मैंने उसे आज्ञा नहीं दीथी परंतु अबजो तुमकहतीहो तो हम आज्ञादेते हैं परंतु एकदिन से अधिक कालनलगे जल्दी चलाआवे यहसुनकर भीमविक्रम ने पिता की आज्ञाको माना और रात्रिभर अहेर खेलने का सरंजाम करतारहा जब प्रातःकालहुआ और सूर्यके उदयहोने काबेलाआया तब उसने अहेरका सबसरंजाम लेकर बहुतसे साथियोंसहित बनमें प्रवेशकिया उससमयउस मनोरमबनकी शोभाबड़ी मनोहरहोरहीथी चारों ओर पृथ्वी पर हरितदूबके उगनेसे ऐसाजानपड़ताथा मानों सबबनमें हरित पटडसाहुआ नानाप्रकारके पक्षी मीठी २ सुरीलीबोलियां बोलरहेथे और अपने २ घोंसलोंसे अन्नोदकके खोजमें चहचहाते हुएउड़तेजाते थे और चित्रविचित्र फूलोंके खिलनेसे वहबनहंसताहुआ जानपड़ताथा और वृक्ष और लता और बेल बड़ी२अद्भुत२ लगीहुईथीं और वायुशीतलमंदसुगंध चलरहीथी भीमविक्रम इसपरमईश्वरीय शोभाको देखताहुआ अपने साथियों सहित बनमेंचलाजाताथा कि अकस्मात् सामने से एक परम उत्तममृग निकला॥

सो० स्वर्णबर्ण सब काय अति उत्तम मुख चखकरण।
नहिं असजो न लुभाय देखि तासुशोभा परम॥

भीमविक्रम उसमृगकीशोभादेखकर उसपर आसक्त होगया और उसने अपने साथियोंको आज्ञादी कि देखो यह मृगनि-

कलन जायजैसेहो जीताहुआ पकड़लो यह सुनकर सब साथि
योंने उसमृगको घेरलिया परंतुउसमृगने संभलकर चारों ओर
कनखियों से देखा और फिर अकस्मात् उछलकर राजपुत्र
भीमविक्रम के ऊपरहोकर बाहिर निकलगया और चौकडी
भरताहुआ भागा राजपुत्र ने अपना घोड़ा उसके पीछे डाल
दिया और कई कोस निकलगया कि सबसंगसाथी छुटगये
जब उसने देखाकि वह मृगजीताहुआ न धरा जायगा तबउस
ने तरकससे बाणनिकालकर धनुषपरयोजितकिया और लक्षल-
गाकर छोड़दिया उसबाणके लगतेही वहमृगगिरपड़ा और राज-
पुत्रने शीघ्रघोड़ेसे कूदकर उसके पंचत्वकोप्राप्तकिया उस मृगके
मरतेही चारों ओर बड़ा भयङ्कर शब्दहोनेलगा पृथ्वी और
आकाशसे यहीशब्द सुनाई देताथा कि अरेशत्रुंजयकेपुत्र तैंने
बड़ादुष्करकर्मकिया जो इसमृगको मारडाला यहस्थानविस्मय
करमायारचितदेशकी सीवांके भीतरहै अबतेरायहां से बचकर
जाना कठिनहै जो कुछतेरेलिये बुरा न होथोड़ाहै उससमय राज-
पुत्रउसस्थान को धूलि और प्रचंड वायुसे अंधकारहुआ देख
करविस्मितहोगया और कुछ कालमोहितरहकर फिरजोचैतन्य
हुआ तो अपनेको कारागारमें पाया और वहां वह अस्वस्थ
होकर चिंताकरनेलगा जब यह राजपुत्रबनमें अहेरखेलनेआया
था तबउसके आनेका संदेशा मायावी राजाओंके स्वामी महेन्द्र
को भेजागयाथा उसकोसुनकर महेन्द्रने उसबनकी प्रचंडानामी
रानी के जोम्लेच्छी और राक्षसी मायामें बड़ीनिपुणथी आज्ञा
दीथी कि तू राजपुत्रको पकड़कर कारागार में कैदकरले और
राजपुत्र के स्वरूपका एक पुत्रला अपनीराक्षसीमायासेबनना
करडालदे जिससे उसे देखकर फिरकोई मनुष्य इस देशके
भीतरआने का उद्योग न करै निदान उस प्रचंडा ने वैसाही
किया इसकेपीछे रा[illegible]पुत्रके साथी भी राजपुत्रका पता लगाते

हुये वहांपहुं े और देखा कि प्रचंडवायु और धूलसे अंधकार होरहाहै जब वायुबंद हुई और धूलजाती रही तब देखते क्याहैं कि उस परमस्वरूपवान् राजपुत्र की रक्तप्लुत लोथपड़ी हुई है उसको देखकर राजपुत्रका मित्र और प्रहासका पुत्र सुवासनामी उस लोथसे लिपटगया और बडी करुणासे बिलाप करनेलगा फिर चित्तको सँभालकर उसने उसलोथ को घोड़े पर लादा और महाराज शत्रुञ्जय के डेरों की ओर चला राहमें जो साथी पीछे रहगयेथे वेभी आनमिले और सबके सब रोते पीटते लोथको लियेहुए सेनाके वासस्थलमें पहुंचे यहदेखकर महाराज शत्रुंजय बडे दीर्घस्वर से पुत्रशोकका विलापकरने लगे और सबसेना उत्साह रहितहोकर आंसुओंकीधारा छोड़नेलगी जब यह हाल सुभद्रारानी को विदितहुआ तब उसने पछाड़ खाकर इस प्रका से विलाप किया॥

चौ० हे हे प्राणप्रिय ममपुत्र। मकहँछोड़ि सिधारेउकुत्र॥
दीनदुखी नहिंमेरेध्यान। एकाकीतुम कियहुपयान॥

इसीप्रकारसे रानीने बहुतसा बिलाप किया उपरांत महाराज शत्रुंजयने अपने मित्र और साथी प्रहासको बुलाकर कहा कि शीघ्र सबसामानलाओ मैं अपनेपुत्रके मारनेवालेका शिर काटने जाऊंगा यहसुनकर प्रहास बोला कि श्रीमहाराज राजपुत्रको किसी मनुष्यने नहीं माराहै देखने वाले यह कहतेहैं कि वायुकी प्रचंडतासे आकाशमें धूलकेकारणसे अंधकारहोगयाथाऔरजब वह अन्धका दूरहोगया तब राजपुत्रका मृतकशरीर पृथ्वीपर पड़ाहुआ मिला यह ज्ञातनहीं हुआ कि राजपुत्र किसके हाथ से और क्योंक मारागया यह सुनकर महाराज शत्रुंजय ने कहा कि यदि ऐसाही हुआहै तो हम जानते हैं कि इसमें कोई दूसरा निमित्त है अच्छा शीघ्र श्रीगार्गेयमहाराज ज्योतिर्विद को बुलावो उनसे राजपुत्र के मरणका वृत्तान्त जानपड़ेगा यह

और बनविहार करताहुआ अपने प्रयोजनके खोजमें चला जाताथा कि इसीअवसर में उसने सामनेसे एक स्त्रियोंका झुंड आतेहुए देखा उनको देखकर प्रहास एक झाड़ीमें छिपगया और वहांसे उन स्त्रियोंको देखनेलगा जब वे स्त्रियां निकटआईं तब देखा कि कईसौ चन्द्रमुखी और परम स्वरूपवान् स्त्रियां

दो० पन्द्रह सोलह बर्ष की बयकिशोर शुचिअंग ।
कामकेलि रतिराग दिन भरे अनंग उमंग ॥

चली आरही हैं और उनके मध्य में एक राजपुत्री निर्दोष अंगी कुरंगशावनयनी चन्द्रमुखी परमशोभायमान स्वरूपवान् मणियोंमें हीरासी नक्षत्रोंमें सूर्यसी परमोत्तम रत्नजटित वस्त्रोंसे अलंकृत अपने दोनों कमलनाल हाथोंको दोसहेलियोंके कंधों पर धरेहुए मृदुतासे हँसतीहुई शनैःशनैः बनकी शोभाको देखती हुई जारहीहै प्रहास झाड़ीमें लुपाहुआ यह सब वृत्तान्त देख रहाथा कि इतनेमें एकस्त्री लघुशंकाके लिये उस झुंडसे निकल कर झाड़ीमें घुसगई प्रहासने इसी अवसरमें विचार किया कि इन स्त्रियोंके साथ जानेसे निस्संदेह राजपुत्र का खोज लगजायगा यह विचारकर प्रहासने पाश फेंककर उस स्त्रीको जो लघुशंका कररहीथी बांधलिया और जब वह चिल्लाई तब उसने उसके मुखपर मूर्च्छाकर चूर्ण डालदिया कि जिससे वह स्त्री अचेत होगई तब उसको एक वृक्षसे बांधदिया और दर्पण लेकर अपना स्वरूप उस स्त्रीकासा बनाया और उसीके वस्त्रोंको पहिर कर जल्दीसे उन स्त्रियोंके झुंडमें जामिला उसको सबने देख कर कहा कि अरी नवेली निगोड़ी तेंने बड़ीदेर लगाई प्रहास ने उत्तर दिया कि भैना ऐसीतौ कुछदेर नहींहुईहै और समझा कि जिस स्त्रीको अचेत कियाहै उसका नाम नवेली है वहां से बातें करतीहुई वे सब स्त्रियां एक बागके समीप पहुंचीं प्रहास ने देखा कि उस बागका द्वार प्रियदर्शनार्थी के नेत्रोंके सदृश

खुलाहुआहै और बड़ा शोभायमानहै वे स्त्रियां उस बागके भीतरराजपुत्री मोहनी चित्र सहित घुसगई भीतर जाकर प्रहास उसवैकुंठकीसी शोभारखनेवाले बागकोदेखकर चकितहोगया॥

क०। नीलपीतश्यामसेत पांडुरक्तरंगफूल जितदेखो तितफूलिरहेरंग रंगफूल। बनउपबनगृहबागबाटबीचफूल नहिंकोईअसजाकीनहींरहीत हैंमूल॥ धरणिअकाशतरुवेलिकूपवापीसर चित्रचित्रफूलभरेरहेसबनदी कूल। कुंजलालजगनहिंकोईअसशोभालखि तनधनदारपुत्रसुखनाहिं जाइभूल॥

पटरियां उसबागकी अनेक वरणके पाषाणोंसे बनीहुई थीं और उनमें रत्न और मणि इसप्रकारसे जटितथे कि उनकी शोभाकी उपमा न ीं कही जासकती और फल और फूल प्रकार २ की क्यारियों में लगेहुए बड़ा चमत्कार कर रहेथे और नानाप्रकारके पुष्पोंको स्पर्श करतीहुई शीतल मंदसुगंध बायु चलरहीथी प्रहास उस उत्तम वायुके घ्राणसे कुछकाल मदान्ध सा होगया और यामिनी भाषामें जिससे दूसरा कोई न जाने कहनेलगा--अगरफि दोसवरूएजमीनस्त--हमीनस्तो हमी नस्तो हमीनस्त॥ अर्थात्॥ यदिस्वर्गोपृथिव्याम् निर्मितस्ति इदम्अस्ति इदम्अस्ति इदंऽस्ति॥ उपरांत चैतन्यहोकर उस बागकीशोभाकोदेखनेलगा वृक्षनानाप्रकारके मधुर और मनोहर फलों े लदेहुएथे और उनकीलता सुनहरी और रुपहरी गोटे सेमढ़ीहुईथीं मार्ग सब सीधे सुडोल और रत्नोंसे जटितथे और उस बाग के बीचोंबीचमें एक सचिक्कण श्वेतपाषाणकाचबूतरा दो सौहाथकाचौकरबनाहुआथा और उसपर परमोत्तमआसनबिछे हुएथे और वहीं एक रत्नजटित राजाओंके योग्य सिंहासनपर एकस्त्री पचासवर्षकी वयरखनेवाली परमोत्तम बस्त्रोंसे अलंकृत एक बड़े तकियेपर कोहनी टेकेहुए हाथपर शिरधरे डगमगाती हुई बैठीथी और अनेक पुष्पोंसे बनाईहुई बारुणीसे भरेहुए

पात्र वहां रक्खेहुएथे और समीपही पानपात्र सुगंधपात्र दर्पण और २ अनेक प्रकारके मनोत्सुक और बिहारयोग्य पदार्थ भी स्थापितथे जब यह राजपुत्री मोहनीचित्र अपनी सहेलियों सहित उस चबूतरेके निकट पहुंची तब वह स्त्री अपने सिंहासन परसे उठकर उसेलेनेको आगेबढ़ी राजपुत्रीने उस स्त्रीको दंडवत्की और उसकी सहेलियोंने बड़ी नम्रतासे प्रणामकिया और यथायोग्य स्थानोंपर खड़ीहोगईं इस स्त्रीकानाम प्रचंडाम्लेच्छी था वहबाग उसके रहनेका स्थानथा और उस बनकी वहरानी थी और यह राजपुत्री मोहनीचित्र सब मायावी राजाओं के स्वामी महेनकीबेटीथी इसकी माकानाम विचित्रमायाथा और उस प्रचंडाकी भानजी लगतीथी निदान प्रचंडाने मोहनीचित्र पर बहुतसा प्यारकरके स्नेहसे उसकी बलैयांलीं और उसको अपने समीप सिंहासनपर बैठाकर गंधर्विणियोंको नृत्य और गान करनेकी आज्ञादी उसीसमय नृत्य और गान होनेलगा और उत्तम सुरासे पूर्ण पानपात्र चलनेलगा इसी अवसर में प्रचंडाने जिसने राजपुत्र भीमविक्रमको अपनी मायासे ग्रहण कियाथा मोहनीचित्रसे कहा कि बेटी आज इसबनमें पैदल पैदल चलकर यहां तेरे आनेका क्या कारण है वह बोली कि अरीमौसी मैंने सुनाहै तैंने किसी वैष्णव क्षत्रीको ग्रहण कियाहै मुझे वैष्णव क्षत्रियोंके देखनेकी बड़ी लालसाहै क्योंकि मैंने यह सुनाहै कि हमारे ईश्वर अद्भुतने इनलोगोंको ऐसी बीरता दीहै कि अब उनके मारे आपभी भागे२ फिरते हैं और इन लोगों ने बड़े २ मायाके स्थानोंको भ्रष्टकरडालाहै यहसुनकर प्रचंडाने हँसकर आज्ञादी कि बंधुवाको सन्मुख लेआवो यह सुनकर बहुतसी स्वरूपवान् म्लेच्छी महलोंकीओर जिनका प्रस्ताव कई कोसतक चलागयाथा और जहां कारागारमें भीमविक्रम डाल दियागयाथा गईं और वहां जाकर उन्हों ने कारागार के

द्वारपालकोंसे प्रचंडाकी आज्ञाकहसुनाई और कारागारमें जाकर भीमविक्रमको जो मायासे निर्मित पाशमे बँधाहुआथा और हाथों और पैरोंमें भारी२ निगड़ पड़ेहुएथे पाशको हाथसे पकड़े हुए प्रचंडाकेपास लेचलीं और थोड़ेही कालमें उस स्थानपर आपहुंचीं जहां प्रचंडा और राजपुत्री मोहनीचित्र सब सहेलियों सहित आनन्दपूर्वक बैठीहुई वार्तालाप कररहीथीं उससमय राजपुत्रीकी दृष्टि अकस्मात् उस दर्शनीय स्वरूपवान् और कामदेवकीसी मूर्ति रखनेवाले राजपुत्र भीमविक्रमपर जापड़ी॥

दो० वयकिशोर सुन्दर परम रत्न पुरुष छविधाम ।
मानो मानुष तन धरयो रूप राशिको काम॥
देवयक्ष गन्धर्व नर किन्नर आदिक माहिं ।
जाके सुष्टु स्वरूपकी उपमा मिलती नाहिं॥

देखतेही राजपुत्रकी धनुषाकार भृकुटीसे एक प्रेमरूपी बाण निकलकर राजपुत्री मोहनीचित्रके हृदयको विदीर्ण करताहुआ पार होगया॥

दो० भूतलगे मदिरा पिये सबकाहू सुधि होय।
प्रेमसुधारस जिनपियो तिनसुधिरहे न कोय॥
अद्भुत पैंडो प्रेमको न्याय कहत सब कोय।
नयननसों नयना मिलें घाव करेजे होय॥

और वह मूर्च्छित होगई उसीसमय प्रचंडाने केवड़ा और गुलाब आदि सुगंधित जल मँगवाकर उसके ऊपर छिड़का इसीअवसरमें राजपुत्र भीमविक्रम जो निकट पहुंचा तो देखता क्याहै कि एक परमसुन्दरीस्त्री मूर्च्छासे चैतन्यहोकर मुझे टकटकी लगायेहुए देखरही है परमेश्वरने क्या क्या अद्भुतस्वरूप उसका बनायाहै कि त्रिलोकीमें वैसी सुन्दरीस्त्री न थी शोभा और छविकी वहस्त्री मूर्तिथी उसको देखकर राजपुत्र यद्यपि कैदमें होने और धर्षणापानेसे अस्वस्थथा परंतु उस छबीलीके मनो-

त्सुक मुखारविंदको देखतेही मनसावाचा कर्मणा उसपर आस-
क्त होगया॥

सो० बुधिविद्या गुणज्ञान नेम चाव अरु हर्षबल।
यैताजिहों हिय जान जेहिघर विरहा संचरै॥
दो० मनमतंग मदरस मत्यो धरयो प्रेमरण धाय।
लोकवेद कुलकानकी दई सैनबिच लाय॥

और चित्त उसका डामाडोल होगया परंतु उसने अपनेतत्काल सँभालकर विचारकिया कि में एक तो महाकारागार में ग्रस्तहूं दूसरे यदि इन सबको मेरे आसक्तहोने का हाल विदितहोगा तो हरएक मेरेप्राणों का शत्रु बनजायगा और मेराजीवित न रहसकैगा यह समझकर वह चुपचाप खड़ारहा इसी अवसर में जब प्रचण्डाने राजपुत्री मोहनीचित्रकी अधिक कुदशादेखी तब उसने अपनी दासियोंसे कहा कि इस बँधुवाको सन्मुखसे शीघ्र अन्यत्र लेजावो आजतक मेरीपुत्री ने किसी मनुष्य को ऐसी कुदशामें न देखाथा इस कारण से अकस्मात् मूर्च्छितहो गई इसका रुधिर पतला है और चित्तभी दृढ़नहीं है यह सुन कर कई म्लेच्छी राजपुत्र भीमविक्रमको वहां से लेगईं और कारागार के एकस्थान में बन्दकरके चलीआईं राजपुत्र उस समय उस राजपुत्री के विरहमें व्याकुल होगया और कारागार में रहनेका सबदुःख भूलगया उसके चित्तसे मोहनीचित्रका चित्र क्षणमात्र नहीं हटताथा और वह उसगार में यह पढ़ा करताथा॥

दो० पलनलगत है एकपल क्षण न घटत घटसांस।
साहसमन जबतें चुभी नयन सैनकी फांस॥
हों मदमातो अरु दुखी मेरे सुधि नहिं कोय।
उन्मदता मति बांधियो गाढ़ो कसिके मोय॥

और कहताथा कि अरेभीमविक्रम उसरूपमानिनीको तेरा

ध्यान काहेको होगा जो इसकारागारसे भी किसीसमय छुटजाओगे तो प्रेमके फंदे में फँसकर अवश्य मरजाओगे॥

दो० नीकोबिरह समीपको जहांमिलनकी आस॥
कहियेभलो सँयोगक्या जामें बिछुरनवास॥

निदानयहांतो राजपुत्र की यह व्यवस्थाथी और वहांजब राजपुत्रीमोहनी चित्रने अपने सन्मुखअपने चितचोरको न देखा तब चारों ओर आंखें फैलाफैलाकर उस बाग में देखनेलगी और जब वहकहीं दृष्टिनपड़ा तब महापीड़ितकी भांति एक आर्तशब्दकरके चुपहोरही उससमय प्रचंडा ने कहा कि अरी बेटी अबतेराजी कैसेहै वहबोली मौसी मेराजी बैठासाजाताहै और यहउन्मादचित्त में समायाहै कि देखोमनुष्य ऐसाकष्टभी सहते हैं यह सुनकर प्रचंडाबोली कि बेटी तुमराजपुत्रीहो तुम को ऐसाभय न करना चाहिये राजाओंके यहां सबतरहकी बातें हुआकरतीहैं जोमनुष्यदुष्ट और अपराधीहोतेहैं वेअपनीदुष्टता और अपराधके कारण से दण्डपातेहैं किसीको शूलीदीजातीहै कोई कारागारमें डालाजाताहै और अच्छे मनुष्योंको श्रेष्ठकार्य करने के कारण से पारितोषिकादि द्रव्यवस्त्र और आभूषण भी दियेजातेहैं यहमनुष्य शत्रुंजयनामी वैष्णव क्षत्रीका जो हम सभोंका परमशत्रुहैबेटाहै और महाराजमहेंद्रकी आज्ञासे पकड़ा गयाहै इसकाछूटना कठिन है हां यदि कोई और कैदी होतातो में तेरे कारण से उसेछोड़ही नदेती किंतु और द्रव्यआदि देकर जानेदेती अबतूयहां से अपने बागको जा और वहां अपनेचित्तको स्वस्थकर और ऐसे निरर्थक अनुमानको अपने चित्तसे भुलादे अभीतक मैं तेरेचित्तकी वृत्तीकोदूसरे प्रकारकी देखती हूं देख तेरेमाथेपर पसीना आरहाहै जिससे यह सूचितहोता है कि इस समयतक तेरे चित्तमें वही निरर्थकभय और अनुमान भराहुआ है यहां रहने से वह वैसाही बनारहैगा इससे अब

शीघ्रयहांसे जाकर अपनी सहेलियोंके साथ चित्तको स्वस्थकर
और इसकैदीके ओरकी चिंताको छोड़दे यहसुनकर राजपुत्री
मोहनीचि~ वहां से यह बिचारकर उठखड़ीहुई कि बहुत श्रेष्ठ
यहहुआ कि इसने मुझे अपने आपसे जानेकी आज्ञादेदीकदा-
पि ऐसानकरती तो यहांरहनेमें यदिकोई बात चित्तके दुःखकी
मुखसे निकलजाती तो सबको मेरेप्रेमका हाल विदितहोजाता
अबअपने बागमें चलकर जीभरकेरुदन करूंगी और चित्त में
भरे हुए प्रेमजन्य दुःखको दूरकरूंगी ऐसाविचारकर उससुंदरी
ने प्रचंडाको साष्टाङ्गदण्डवत्की और प्रचंडाने उसे अनेकप्रका-
रके आशीर्बाद देकर बिदाकिया उससमय राजपुत्रीके साथकी
जो जो सहेलियां इधर उधर बागमें बिहारकररहींथीं राजपुत्री
के चलने का संदेशा पाकर तुरंतवहां चली आईं और राज-
पुत्री के साथहोलीं परंतु प्रहासनेजो ~वेली सहेली का स्वरूप
बनाये हुएथा उससमय यह विचार किया कि इसराजपुत्री के
साथ २ नजानेकहां जानापड़े हमारा राजपुत्र तो यहांहै किसी
बहाने से यहां रहकर आज इस दुर्भाग्य प्रचण्डा को मारकर
राजपुत्रको कारागारसे छुटालीजिये यह बिचारकर वह प्रच-
ण्डा के सन्मुखगया और हाथजोड़कर बोला कि महा~निमुझ
दासी को आपकास्थान बड़ाउत्तम और मनहरण मालूमहुआ
है और आप के प्रेमके कारणसे ~ी आज मेरा चित्त आप के
चरणों को छोड़कर जाने को नहीं चाहता और इसके सिवा-
यभी मैंने गांधर्व विद्या बड़े परिश्रमसे सीखकर उस विद्यामें
प्रवीणता पाई है इससे मैं चाहती हूं कि आपकी आज्ञापूर्व-
क आज रात्रि को यहींरहूं और अपने गुणसे श्रीमहारानी
को प्रसन्न करके मुँह मांगा द्रव्य पाऊं यह सुनकर प्रचण्डा
बोली कि नवेली मेरा और मोहनी का घर पृथक् पृथक् नहीं
है जैसा वह घरहै वैसाही यहहै एकदिन दो दिन जितने दिन

चित्तचाहे यहां रहकर आरामकर अरी राजपुत्री मोहनीचित्र आज नवेलीको यहीं छोड़तीजा यह सुनकर राजपुत्री ने कहा मौसी बहुत श्रेष्ठ यहीं रहनेदो निदान राजपुत्री मोहनी चित्र वहांसे चलदी और नवेलीरूप प्रहास वहीं रहगया चलनेमें राजपुत्रीकी दशा ऐसीथी कि कहीं पैररखतीथी और कहीं पड़-ताथा और चित्तमें राजपुत्रके विरहसे पीड़ित होकर यह कहती जातीथी कि हाय मैं आसक्तभी हुईतौ किस मनुष्यपर हुई जो हमारी जातिवालों और हमारे मतका शत्रुहै और दूसरे कैदमें है जहांसे उसका छुटना बहुत कठिनहै अब उसके विरहमें नि-स्संदेह मुझे प्राण छोड़ने पड़ेंगे राजपुत्री चित्तमें इसीप्रकारकी वार्ता करतीहुई चली जारहीथी कि एकाएक उसने सामनेसे अपनी नवेलीनाम सहेलीको नंगी और रोतीहुई आतेहुएदेखा उसको देखकर राजपुत्री चकभक रहगई और कहने लगी कि यह अभीतो प्रचंडाके घर रहगईथी यहां कैसे आगई और इसके वस्त्र किसने छीनलिये हैं इसी अवसरमें नवेली निकट आगई और राजपुत्रीके चरणोंको छूकर विनय पूर्वक बोली कि हे राजपुत्री मैं आपकेसाथसे लघुशंका करनेको झाड़ीमें चली गईथी कोई मनुष्य मुझे नजानें कैसे अचेत करके मुझे एक वृक्षसे बांधकर मेरेकपड़े उतारकर नजाने कहां चलागया जब मैं चैतन्यहुई तब मैंने बटोहियोंको प्रार्थना करके बुलाया और अपनेको छुटवाकर आपकी शरणमें आईहूं यह नवेली वहीथी जिसका स्वरूप धारण करके प्रहास राजपुत्रीके साथ प्रचंडाके बागको गयाथा उसकी बातको सुनकर राजपुत्रीको बड़ा आ-श्चर्यहुआ और अनुमान कियाहै जिस नवेलीको मैं प्रचंडाके यहां छोड़आईहूं वह नवेली नहींहै राजपुत्र भीमविक्रमका कोई मित्रहै नवेलीका स्वरूप बनकर राजपुत्रको छुटानेके उद्योगमें गयाहै अच्छाहै जो यहबात अब प्रकट न होनेपावे क्योंकि जो

प्रचंडाको यहबाद विदित होजायगी तौ वहभी पकड़ाजायगा निदान राजपुत्रीने भीमविक्रमकी प्रीतिके कारणसे अपनी मौसीकाभी कुछ पास न करके नवेलीको और वस्त्र दिवादिये और सहेलियोंसे कहा कि देखो यह उन्मादिनी मुझसे बहाना करके मेरी मौसीके घर इसकारणसे रहगईथी कि जब मैं चलीजाऊं तब जो इसके मनमें आवे सो करे सो वहांसे न जाने किसके साथ कहां चलीगई और अपने वस्त्रभी छिनवाआई यह सुन कर नवेलीने शपथ खाखाकर अनेक प्रकारसे कहा कि राजपुत्री जो कुछ मैंने कहाहै उसमें असत्य कुछभी नहीं है परन्तु राजपुत्रीने कुछ क्रोधपूर्वक डाटा और कहाकि चल मिथ्या वादिनी तेरीबातका मैं कभी विश्वास नहीं करूंगी और फिर ऐसा कहैगी तौ अच्छेप्रकारसे तुझे दंड दिलाऊंगी यह छर्पणा राजपुत्रीने इसकारणसेकीथी कि यह नवेली इसवार्ताको बारंबार न कहै बारंबार कहनेसे प्रकट होजायगी निदान उक्तप्रकारसे नवेली को धमकाकर राजपुत्री परमेश्वर को उपाय संग्रहकर्ता जानकर यहविचारतीहुई कि अब कोई उपाय राजपुत्र के छुटने का निकल आवैगा अपने बागकीओर चलदी और जबअपने बागमें पहुंची तब उसको वह परमशोभित वाटिका अपने चितचोरके बिनाकंटक रूपदीखने लगी ॥

क० फूलेहैं रसाल नवपल्लवविशाल वन जूही चौपलास मल्लिआदि बहुकोगने । कूजत विहंगपिक कोकिलादि एकसंग गुंजतमलिन्दवन बीथिकानमें घने ॥ बहति समीरमन्द शीतल सुरभिधीर रहत नयोग युत मुनिगनके सने । एरेचितचोर यहउदित अनंगयोग तेरेबिनमोको सबकंटकसम हैं बने ॥

इसप्रकारसे राजपुत्री मोहनीचित्रने राजपुत्रकीयाद करकर के उसके विरहमें बड़ी व्याकुलता से अपने उसस्थानमें निवास किया और यहां प्रहास जो प्रचण्डाके बागमें नवेलीका स्वरूप

बनायेहुये स्थितथा दिनभर प्रचण्डाकी सहेलियोंके साथ हास्य और ठठोली करतारहा कभी किसी को नोचलेताथा कभी अपना कपोल किसीके कपोलपर रखदेताथा और कभी आंख बचाके जिसकिसीकी जो बस्तुपाता उठाकर धर्मराजकी दीहुई थैलीमें डाललेताथा निदान उसकी तो ठठोलियांथीं और वहां प्रचण्डाकी सहेलियां बड़े अचम्भेमें होहोकर चिल्लाती पुकारतीथीं कोई कहतीथी मेरा पानपात्र कौनलेगया दूसरी बोली मेरा शृङ्गारपात्र भी तो नहीं मिलता तीसरी कहतीथी अरी मेरा ताम्बूलपात्र भी तो यहींथा कहांगया कोई आयाभी तो नहीं निदान दिनभर इसीप्रकार की वार्तारहीं जब सायंकाल हुआ तब प्रचण्डा ने मद्यमांस के अनेक२ प्रकार के उत्तम २ खाद्यपदार्थ बनवाये और बागके बीचमें जो मणियोंका चबूतरा बनाथा उसको वस्त्र और आसनों से अलंकृत करवाकर वहां जाकर बैठगई और रनिवास और समस्त बागके भीतर कांच और मणियों के पात्रोंमें दीपक प्रज्वलित कियेगये उनके कारण से वह बाग और वे महल मणियों के जटितहोनेसे जाज्वल्यमान दीखनेलगे और एक मणिकीआभा दूसरी मणिपर पड़ने से ऐसी उत्तम शोभा वहां की दीखती थी कि मनुष्य सिवाय चकमक रहने के कुछ कहनहीं सकताथा आहा क्या वर्णन कियाजाय ॥

दो० दर्पण मणि अरु रत्नसों ज्योतिभई आभास।
मानो अग्नि प्रभादोऊ इकटक करत प्रकास ॥

फुआरों के कोषमें गोटाकिनारी के टुकड़ों को सूक्ष्म काट२ कर डालदियागया उससे बहताहुआ जल अद्भुत शोभा दिखाताथा निदान जब सब सरंजाम होचुका और बागको बनाने की कृत्य समाप्तहुई तब प्रचण्डाने आज्ञादी कि गन्धर्विणी नृत्य और गानकरने को बुलाईजावें और नवेलीको भी बुलावो कि

आज उसकी विद्याकी भी परीक्षा कीजावे आज्ञाहोतेही सब गन्धर्विणी और नवेली आकरस्थितहुईं उससमय नवेली रूप प्रहास ने नृत्यकरने के उत्तम२ वस्त्र पहिरलिये और पांवोंमें घुंघरूबांधे एकसमय यह प्रहास गन्धमादनपर्वतपर भी गया था वहां इसको चित्रसेनगन्धर्व ने इन्द्रके नन्दनवनके तीनफल खिलादियेथे एक फलका यह प्रभावथा कि प्रहास गानकरके सबकामन मोहलेताथा और दूसरे फलके प्रभाव से नृत्यकरने के समय ध्यानमात्र करने से ७२ प्रकार के स्वरूप बदल सकताथा और तीसरे फल के प्रभाव से जिसदेश की भाषा में चाहताथा उसीदेशकी भाषाके गीत गासकताथा और उसदेश की भाषा बोलसकताथा निदान प्रहास ने अपनी बांसुरी निकालली और एक पीतलका तार पावँके अँगूठेमें बांधकर एक छोर उसका होठोंमें दबादिया और थोड़ेसे मोती निकालकर मुखमें रखलिये और माधवी वारुणी का एकपात्र बगलमें दबा कर हाथमें पानपात्र लेलिया और बांसुरी बजाकर नृत्यकरना आरम्भकिया उस नृत्य में वह ऐसी अद्भुतगति से नाचताथा कि कभी एक घुंघरूका कभी दोका कभी तीनका और कभी सबका शब्द निकलताथा और कभी एक घुंघरूभी न बजताथा और उसतार में मुखसे निकाल निकालकर मुक्ता पिरोताजाताथा और जिसओरको नृत्यकरताहुआ जाता उसीओरके नृत्य देखनेवालों को पानपात्र में माधवी भर२ के पिलाताथा निदान ऐसी अद्भुतगति और छलबलका उसका नृत्यथा कि देखनेवाले चारोंओर से उसकी प्रशंसा करते थे और साधु साधु पुकारतेथे ॥

क० । बाजत मृदङ्ग मुरचङ्ग बीन औ उपङ्ग तातथई तातथई करत उमङ्गमें । घूंघटकी ओटकरि कबहुं उघारि पट ऐंड़ि बेंड़ि नाचत दिखाइ भाव सङ्गमें ॥ भृकुटी मटक पटपीतकी चटकचारु कुण्डल झलक छजै

छबिके तरंगमें। पदकी पटकपानि झटकसु मुसुकानि ग्रीवाकी लटकसजै शोभा अंग अंगमें॥

इसप्रकारके नृत्यको देखकर प्रचंडा अपने चित्तमें बड़ाआश्चर्य करके कहतीथी कि यह मानुषीहै अथवा देवपुत्रीहै जो ऐसेअद्भुतप्रकारका नाचनाचतीहैबांसुरीमें गतिकाठेका बजरहा है मुक्ताबराबरतारमें पुहतेहुए चलेआते हैं और नृत्यदर्शकोंको माधवी बराबर देतीजाती है यहबिचारकर प्रचंडाने उसकी बहुत सीप्रशंसाकी और अपनाहार उतारकर हाथों में देने के लिये लेलिया उससमयप्रहास नृत्यकरताहुआ प्रचंडाके समीप चला गया और अपना शिरझुकादिया प्रचंडाने वह हार उसकेगले में डालदिया तब प्रहासने नृत्यकरना बंदकरके महामधुर स्वर से गाना प्रारंभकिया उसके सुनके सबदेखने वाले मोहितसेहो कर चित्रकेसे लिखेहोगये और प्रचंडाका चित्तभी मोह और प्रेमसे गद्गद होआया॥

दो० मधुरसुरीली गानध्वनि सुनिसबभये अबोल।
पक्षी भूले बासथल भई समीर अडोल॥

इसकेपीछे प्रचंडाजब प्रेममेंआकर रोनेलगी तबप्रहासने गाना बंदकरदिया यहदेखकर प्रचंडाबोली कि अरीनवेली आजतैंने गानक्याकियाहै कि मेरेचित्तकोऐसामोहितकरदियाहै कि अबकेवलप्राणजानाबाकीहै अभगानाबंदमतकरै यहसुनकरनवेलीरूपीप्रहासनेकहा कि मैं अपनाकुछवृत्तांत गानमें निवेदनकरतीहूं॥

ठुमरी। बनिठनि आई आली देखो नईनई नारी।
नैनवां सलोने कजरादिये किये शृंगार॥
अंतरा। गोलकपोल मुखचन्द्र चारुकी भृकुटी कुटिल चपलनयना।
आली ललन पियासंग पियत माधवी चतुरसुघर सुकुमारी१॥

यह सुनकर प्रचंडा बहुत प्रसन्नहुई और अपने चित्तमें यह समझकर कि नवेलीको मद्यपान करनेकी इच्छाहै बड़ी लज्जावान् है जो सबको पान कराती रही परंतु आप विनादिये नहीं

पी आज्ञादी कि शीघ्र उत्तममद्य और पान करनेका सरंजाम मेरेपास लाओ यह सुनकर बहुतसी दासियां दौड़ीं और उत्तमोत्तम मद्य और रत्नजटित पानपात्र उठालाईं उनको लेकर प्रचंडाने नवेलीरूप प्रहाससे कहा कि हेनवेली आज तैंने अपने अद्भुत गान औ नृत्यसे मुझेबहुत प्रसन्नकिया आजसे मैंतुझे अपनी सहेली बनातीहूं आ इस उत्तम मद्यको पी और मुझे भी पिला यह सुनकर प्रहास ने आगे बढ़के पांच सुवर्णखंड प्रचंडाको भेटकिये और प्रचंडाने उसीसमय उसको बहुतसा द्रव्य और परमोत्तमवस्त्र दिये उन वस्त्रोंको पहिरकर प्रहास उन अनेक वर्णके सुरापात्रोंको उस स्थानपर लेगया जहां रत्नजटित पात्रोंमें दीपक प्रज्वलितथे और वहां वह वर्णानुसार रक्त पीत हरित श्वेत श्याम और नीलवर्ण पात्रोंको इसप्रकारसे स्थापित करनेलगा कि दीपकोंकी ज्योति उनपर पड़नेसे नीचे बिछेहुए वस्त्रपर उन पात्रोंकी आभासे प्रकार २ के खिलेहुए पुष्प सूचित होवें ऐसा करनेसे प्रहासका प्रयोजन यहथा कि आंख बचाकर मद्यमें मूर्च्छाकर द्रव्य मिलादूं निदान उसने वैसाहीकिया और फिर हाथमें पानपात्र और बगलमें अरुण मद्यपात्रलेकर नृत्य करना आरंभकिया और पानपात्रमें मद्य भरकर नाचताहुआ प्रचंडाके सन्मुखगया और हाथ आगेको बढ़ाकर बोला ॥

श्लोक । इदंसुपात्रम्मधुमद्यपूरितं सुधीकरंदुःखनिबर्हणंच ।
सुप्रीतयात्रनिवेदितंमया वराननेसौख्यकरंप्रगृह्यताम् ॥

यह सुनकर प्रचंडाने ज्योंहीं अपनाहाथ पात्र ग्रहण करनेको बढ़ाया प्रहासने पात्रको इसप्रकारसे उछालकर कि मद्यकी एक बुंदभी न गिरनेपाई अपने शिरपर लेलिया और शिरको आगे झुकाकर बोला कि हे महारानी आपसी रानियोंको पानपात्र शिरसे देना उचितहै प्रचंडाने उसकी इसप्रकारकी बातोंसे और भी आश्चर्यकिया और पानपात्रको उसके शिरसे उठाकर ज्योंहीं

चाहा कि पीजाऊं त्योंहीं उसके श्वासकी वायु लगतेही वहमद्य अग्निकी लौ होकर उड़गई और वहपात्र खाली रहगया यह देखकर प्रचंडाकी आंखें खुलगईं और वह विचार करनेलगी कि यह क्या चरित्रहै मैं जानतीहूं यह नवेली नहीं है वरन नवेलीका स्वरूप धारण कियेहुए कोई बहुरूपियाहै यह विचारकर उसने उसीसमय कुछ आसुरीमंत्र पढ़कर प्रहासके ऊपर फूंकि दिया उसके प्रभावसे उसका वह नवेलीका स्वरूप तुरन्त दूर होगया तब प्रचंडाने उसके स्वरूपको देखकर म्लेच्छियों को आज्ञादी इसको शीघ्रग्रहण करो यह सुनकर उन्होंने प्रहासको पकड़कर बांधलिया तब प्रचंडा फिर बोली कि अरेअरे तैनेतो आज मुझको माराहीहोता देख मैंभी तुझको किस दुर्दशासे मारतीहूं प्रहासबोला अब क्या चांडाली तू बचीजातीहै प्रहास जहां आताहै अपना प्रयोजन सिद्धकिये बिना नहींजाता थोड़े हीकालमें तू यमलोकमें पहुंचैगी यह सुनकर प्रचंडाने महाक्रोध करके प्रहासको एक वृक्षसे बँधवादिया और बागके चारोंओर मायासे दिग्रक्षा इसप्रकारसे करदी कि कोईमनुष्य उसबागके भीतर न आनेपावे और न बाहर जानेपावे जबसे इस प्रचंडाने राजपुत्र भीमविक्रमको कारागारमें ग्रहण कियाथा तब से उसने एकमंत्र सिद्धकरके इस प्रयोजनसे अपने पास रहनेदियाथा कि जब कोई मनुष्य छलसे राजपुत्रको छुटानेआवे तब मुझकोभी उसकाहाल विदित होजावे सो यही कारणथा कि मद्यपात्रमें से लौ होकर उड़गईथी निदान जब प्रचंडा प्रहासको बँधवाचुकी तब उसने एकपत्र महेन्द्रनामी मायावी राजाओंके स्वामीको लिखा और उसमें सब पूर्ववृत्तांत लिखकर यह आज्ञापूछी कि प्रहास जीताजी आपकेपास भेजदियाजावे अथवा आपकी आज्ञाहोतौ उसका शिर काटकर भेजदियाजावे और उस पत्र को अग्निरूपा म्लेच्छी को महेन्द्र के पास लेजाने को दिया

और वह म्लेच्छी पत्र लेकर चलदी इस महेन्द्रका संक्षेप वृत्तांत यह है कि इसके राज्यमें साठसहस्र देशथे और सब देशोंमें बड़े २ मायावी म्लेच्छ और मनुष्य रहाकरतेथे और उन सब देशोंके राजा इस महेन्द्रके आज्ञावर्तीथे और जो देश महेन्द्र के निपट स्वाधीनथा उसीकानाम विस्मयकर माया रचित देशथा इस देशमें तीनखंडथे एकका नाम दैवीखंड दूसरे का अदृश्यखंड और तीसरेका प्रत्यक्षखंडथा दैवीखंडमें महे[illegible] के बड़े बूढ़ेलोग अदृश्यखंडमें उसके मंत्री और महाजन और प्रत्यक्षखंडमें सब प्रजा आदि निवास करतेथे और अदृश्य और प्रत्यक्षखंडों के बीचमें एक मायाकी रचीहुई रक्तवाहिनी नामनदीथी उस नदीपर एक सेत धूमका बनाहुआथा उसपर दोसिंहधूममे खड़ेरहतेथे और उसीपर एक प्रासाद तीनखंडका बनाहुआथा पहले खंडमें बहुतसी गंधर्विणी सहनाई और वीणा आदि बाजे लियेहुए खड़ी रहतीथीं दूसरे खं[illegible] अप्सराअपनी गोदमें मोतीलियेहुए खड़ीहुई नदीमें मोती उछाल २ कर डालाकरतीथीं और उनमोतियोंको नदीके मत्स्य मुखमें लिये हुए इधरसे उधर डोला करतेथे और तीसरे खण्डमें बड़े २ शरीरधारी राक्षसगण हाथोंमें ख[illegible] लिये हुए रहतेथे और आपसमें युद्धकियाकरतेथे उनके शरीरसे जो रक्तवहताथा वही नदी रूपथा इसीकारणसे उसनदीकानाम रक्तवाहिनीथा और [illegible]स सेतकानाम गांधर्वसेतथा वहमहेन्द्र इनतीनों खंडमें हरस्थान परविहारकरता हुआ फिराकरताथा और सबस्थानोंमें बाग प्रासाद महल उद्यान और २ अनेक २ प्रकारके विहारकरनेके [illegible]थानबनेथे इनसबकी विस्तारपूर्वक कथा उसअध्यायमें वर्णितहै जहां प्रहास और महाराजशत्रुंजयका पौत्र इनमायाके स्थानों को भ्रष्ट करने के लिये सेना लेकर मायावी राजाओंसे युद्धकरनेकोगयेहैं निदान वह अग्निरूपाम्लेच्छी प्रचंडाका पत्रलेकर

उड़ी और उस रक्तवाहिनीनदीके तटपर पहुंचकर उच्चस्वरसे पुकारी कि हे मायाधीश महाराजमहेन्द्र मैं अग्निरूपा राक्षसी प्रचंडाकी प्रेरित इसस्थानपर उपस्थितहूं उससमय महेन्द्रअदृश्य मायाखंडके एक बागमें जिसकानाम बदरीउद्यानथा अपने सभासदों सहित राज्यशासन कररहाथा कि अकस्मात् उसको मायाके बलसे अग्निरूपाराक्षसीके रक्तवाहिनीनदी पर आनेका हाल विदितहुआ यह महेन्द्र इतना बड़ामायावीथा उसकेमाया कृतदेशमें जोकोई उसे पुकारताथा उसीकाहालउसको मायाके बलसे बिदितहोजाताथा और लोह और मृत्तिकाआदिके बहुतसे पुतलेभी उसने मायासे बनारक्खेथे कि वे उसकी आज्ञासेयुद्ध भीकरतेथे और हस्तमात्र बनकर जिसको आज्ञा पातेथे उठाले जातेथे निदान जबमहेन्द्रको अग्निरूपाके आनेकाहाल मालूम हुआउसने तुरंत एक पुतलेको आज्ञादी और वह रक्तवाहिनी नदीपर आकर अग्निरूपाको उठाकर क्षणमात्रमें लेगया और उसे महेन्द्रके सन्मुख खड़ाकरके अंतर्द्धान होगया वहां जाकर अग्निरूपादेखती क्याहै कि एकबड़ाउत्तम उद्यानहै बीचमें उस के एक बड़ासुंदर भवनबना हुआहै उसमें कईसहस्र उत्तमोत्तम आसन और मंचसबरत्नजटित बिछेहुएहैं और उनमंचोंकेपाये सिंह और मकर और हाथी आदिके मुखोंके सदृश बनेहैं और उन मुखोंमें से प्रज्वलित अग्निकी समानलौ निकलरहीहै और उन आसन और मंचोंपर बड़े २ मायावी सभासद विराजमानहैं कि नाम उनके आगेकथा के प्रसंगमें वर्णनकिये हुएहैं उनमेंसे मुख्य २ के नामये हैं आनन्दामाया १ माया केसरी २ मायाकुंकुमी ३ मायामयूर ४ कस्तूरीगंधकेशी ५ और माया वती ६ और उनसबमंच और आसनों के मध्यमें एक सिंहासन बहुमौल्यरत्नोंसे जटितबिछाहुआहै उसपर महाराजमहेन्द्र अपनीस्त्री महारानी विचित्रमायानाम्नी सहित बैठेहुए हैं और

उनके सन्मुख राजपुत्री समीररूपा अपनी चारों सहेलियों स-
न्ति जिन   म प्राता १ वेधिनी २ उग्रा ३ और तीव्रा ४ थे
आज्ञाभिलाषी खड़ीहुईहैं यह राजपुत्री अपनीसहेलियों सहि-
त महाराज महेन्द्रकी बहुरूपिणीथी और दो मंत्रियोंकी पुत्रि-
यां जिनके नाम मायामणि और मायारत्नथे महारानी विचित्र-
मायाके पीछे खड़ीहुई वस्त्रसे प्रस्वेदादिपोंछरहीथीं और जित-
ने सभासद और दास और दासियांथीं सबअपने २ स्थान पर
हाथजोड़े हुए चुपचाप बैठे अथवा खड़ेथे और महेन्द्रके चारों
मंत्री जिनके नामयेहैं विश्वमाली १ मायाकर २ नागप्रस्फुर ३
और सीतप्रेरक महेन्द्र के पीछे खड़ेहुए आज्ञापालनकररहे थे
निदान अग्निरूपाने वहां पहुंचकर महेन्द्रको दण्डवत्की और
प्रचंडाकादियाहुआ पत्रदेदिया उसकोपढ़कर महेन्द्रने यहउत्तर
लिखवाकर कि प्रहासको शूली देदो वह पत्रअग्निरूपाको दे
दिया और फिर एकपुतलेको आज्ञादी कि वहउसे रक्तवाहिनी
नदी के पारपहुंचागया वहां से अग्निरूपा प्रचंडा के समीपको
चलदी परंतु यहां से बहुत दूरहोनेके कारणसे यहराक्षसी तो
प्रचंडाके बागमें दूसरे दिनपहुंचैगी अब यहांसे प्रहासकीकथा
वर्णनकीजातीहै जो प्रचंडाके बागमेंवृक्षसे बँधाहुआथा जबरात्रि
अधिक व्यतीतहोगई तब प्रचंडा अपने महलमें जासोई और
प्रहासबिचारनेलगा कि यदि किसी प्रकारसेमैं इसवृक्षसे खोल
दियाजाऊं तो प्रचंडाको मारूं इसीविचारमें वहथा किउधरसे प्र-
चंडाकी एकदासी निकली प्रहासने उसे हाथसे अपनेपासबुला-
या और जब वहसमीप आई तब करुणा बिलापकरके कहने
लगाकि हाय अब कलमैं माराजाऊंगा मैं महाराज शत्रुंजयका
बहुरूपियाहूं मेरे पास मुक्तामणि सुवर्ण और बहुतसे बहुमौल्य
रत्नहैं सोमुझे शूलीदेकर यहसब द्रव्य चांडाली लेलेगी इससे
जो तू मेराकहना करदे तो यह सबद्रव्य मैं तुझेदेदूं यहसुनकर

वह दासी लालच बश होकर प्रहास के पास बैठगई और बोली कि बता कितना द्रव्य तेरे पास है और वह क्या बात है जिसे करने से तू मुझे द्रव्य देने कहताहै प्रहास बोला कि द्रव्य तो मेरे पास बहुतसा है और कहना यह है कि जब मैं माराजाऊं तब मेरी लोथको किसीप्रकारसे प्रचंडा से मांगकर मेरा ऊर्द्ध्व दैहिक कर्म करदेना और महाराज शत्रुंजय की सेनामें जाकर आधा द्रव्य मेरी स्त्री और पुत्रोंको देकर आधा आप लेलेना यह सुनकर दासी बोली कि अच्छा वह माल कहां है प्रहासने कहा कि मेरा एक हाथ खोलदे तो मैं निकालदूं दासी ने हाथ खोलदिया तब प्रहास ने अपनी थैली निकालकर रखदी और कहाकि मेरादूसराहाथ बँधाहुआहै तूइसमेंसे जोजो मैंकहताजाऊं निकालतीजा वह दासी जिसका नाम सलोनीथा और मायामेंनिपुणथी उस थैलीको खोलकर उसमेंसे पदार्थ निकालनेलगी प्रथम तो उसमेंसे बहुरूपियोंका सरंजाम कहीं स्त्रियोंकेबस्त्र कहींपुरुषों के कहीं तैल कहीं मृत्तिका और २ पदार्थ निकले प्रहास उन सबको बताता जाताथा कि इसप्रकारसे हम स्त्रीका स्वरूप कर लेतेहैं इस पदार्थ से हम अपना स्वरूप राजाओंकासा बना लेतेहैं और इस बस्तु से हम ऋषि और मुनियोंका भेषबनाते हैं और इस तैल के मर्दनसे यह करदेते है और उस मिठाईमें मूर्च्छाकर द्रव्य मिलाहै इस पदार्थ से मनुष्य अचेत होजाता है निदान जब ये सब निकलचुकीं तब एक बटुआ रत्न और सुवर्ण खंडोंका भराहुआ निकला प्रहासने कहा इसे तू लेले वह उसको लेकर बहुत प्रसन्नहुई इसके पीछे फिर जो उस दासीने उस थैलीमें ढूंढ़ा तो एक रत्नोंकी बनीहुई डिबिया निकली उससे वह स्थान दीप्तहोगया प्रहासने शीघ्रतासे उसको उठालिया दासीने पूछा इसमें क्या है प्रहास बोला कि इसमें मेरे प्राण हैं आजतक जो कुछ द्रव्य मैंने उपार्जन किया है वह यही है दासी

बोली इसे भी मुझे देदे प्रहास बोला कि नहीं इसको तौ मैं अपने साथ चितामें लेजाऊंगा दासीने कहा भला बता तो इसमें क्या ऐसा पदार्थ है प्रहास बोला कि इस डिबियामें एक मुक्ता है कि उसका मौल्य नवखंड पृथ्वी के राज्यसे भी अधिक है दासीने कहा अरे प्रहास अंत तौ तू कल माराही जायगा यह भी मुझको देदे मैं तेरी स्त्री और पुत्रों के साथ बड़ा सलूक करूंगी प्रहास बोला अच्छा तूभी क्या स्मरणकरेगी लेले परंतु इस डिबियाको खोलकर एकबार मुझे और दिखादे तब दासी वह डिबिया प्रहास से लेकर खोलनेलगी परंतु वह न खुली तब प्रहास ने कहा कि छाती के समीप रखकर दोनों हाथोंसे मलकर तब खुलैगी दासी ने वैसाही किया और वह डिबिया खुलगई और उसमें से मूर्च्छाकर चूर्ण उड़कर उस दासी के मुखपर जा पड़ा कि उससे वह दासी एक छींकलेकर अचेत होकर गिरपड़ी प्रहासका एक हाथ तौ खुलाही हुआथा दूसरा भी उसने खोललिया और उस दासी को एक स्थान एकांतमें लेजाकर उसके मुखपर बहुरूपी पदार्थ लेपकर उसका स्वरूप अपनासा बनादिया और उसकी जिह्वामें एक पदार्थ ऐसा लगाकर जिससे जिह्वा फूलजाय और वह बोल न सके और उसे उसी वृक्षसे बांधिआया जिससे आप बँधाहुआ था और अपना स्वरूप उस दासीकासा बनाकर अपनी थैलीमें सब उक्त निकलेहुए पदार्थों को रखकर थैली अपने पास लियेहुए उस स्थान में चलागया जहां वह दासी रहती थी और वहां उसकी खटियापर जाकर सोरहा कि थोड़ी देर पीछे प्रातःकाल होगया और पक्षी अपनी २ बाणी में अनेक प्रकार के मधुर शब्दों से चहचहातेहुए अन्नोदक के खोजमें अपने २ घोसलों और बासस्थलों से उड़ उड़कर जानेलगे थोड़ी देर पीछे प्रचंडा और उसकी सब सहेली और दासियां भी जागीं और

शौच आदि आवश्यक कर्मोंसे निवृत्तहोकर महलके आगे जो चबूतरा बनाथा उस पर अच्छे २ आसन बिछवाकर प्रचंडा वहां आकर बैठी और उसकी सब सहेलियां और दासियां भी उसके समीप उपस्थित होगईं प्रहास भी सलोनी दासी का स्वरूप बनायेहुए वहीं बातें चीतें करताथा इसी अवसर में अग्निरूपा म्लेच्छीभी मायाधिपति महेन्द्र का उत्तर लेकर आपहुंची उसको देखतेही प्रचंडाने आज्ञादी कि प्रहासको वृक्ष से खोलकरलेआओ और फिर चांडालीसे कहा कि तू शिर इसकाकाटले निदान दासियां सलोनी दासीको जिसका स्वरूप प्रहास ने अपनासा बना दियाथा वृक्षसे खोलकर प्रचंडा के सन्मुखलाईं वहां वह दासी जिह्वा के फूलजाने के कारण से कुछ बोल नहीं सकती थी परन्तु रोरोकर बहुतसे इशारे करतीथी परन्तु उसके इशारों को किसीने न समझा और चांडाली ने खड्ग से एकही हाथमें उसका शिर काटकर गिरादिया उसके मरतेही ऐसा अंधकार होगया और उसके मायाधिष्टोंने बड़े शब्दसे कोलाहलकिया उसको सुनतेही प्रचंडा घबड़ाई और कहनेलगी कि हाय सलोनीके प्राण व्यर्थगये और उस छलीने मुझे बड़ाधोका दिया देखो जहां सलोनीके रहनेका स्थानहै वहीं वहदुष्ट बैठाहोगा परंतु प्रहास उस अंधकारमें वहांसे भागकर उस बागमें एक स्थानपर जाछिपाथा इसकारणसे दासियां उसे वहां न पाकर प्रचंडाकेपास चलीआईं और कहा कि वहांतौ कोई नहीं है यह सुनकर प्रचंडा बोली कि रात्रिको मैंने दिग्रक्षा करदीथी वह बागके बाहरतौ नहीं जा सकता मैं जानतीहूंकि तुमलोगोंमें मिलाहुआहै जाओमहलके भीतर मेरामायासे निर्मित काष्ठकोषरक्खा हुआहै उसेउठालाओ उससे मैं उसको पकड़लूंगी यह सुनतेही एक दासी उसकाष्ठकोषको उठा लाई प्रचंडाने उसे खोलकर सबसे कहा कि अपना२

हाथ इसमें डालो जो प्रहासहोगा उसकाहाथ इसके भीतरके
कड़ेमें फँसजायगा निदान सबने अपना२ हाथडाला परंतुकिसी
काहाथ उसमें न फँसा तब प्रचंडाने कहा कि तुममेंसे कोई
प्रहासनहींहै जाओ इसकाष्ठकोषको भीतररखआओ आजरात्रि
को मैं कुछमाया करूंगी और उससे देखूंगी कि वहकहांहै प्रहा-
सयहसबवृत्तांत बागमें छुपाहुआ देखरहाथा जबदासियां उस
ाष्ठकोषको रख आईं तब वह इधर उधरदेखने लगा और देखा
कि बागमें एक स्थानपर एकझोंपड़ी पड़ीहै प्रहास वृक्षोंमेंछिप-
ताहुआ उसझोंपड़ीके समीपगया और वहां एक वृद्धस्त्रीको
लेटाहुआ देखकर उससे पूछाकि तूकौनहै वहवृद्धास्त्रीबोली कि
मेंपुष्परूपा मालिनकी माताहूं नाममेरा चंपाहै यहसुनकरप्रहास
ने थोड़ासा मूर्च्छाकरचूर्ण उसके मुखपर डालकर उसको अचेत
करदिया और उसे अपनीथैलीमें डालकर अपना स्वरूप उस
कासा बनाया और वहांसे लकड़ीटेकता हुआ प्रचंडा के समीप
आयाउसकी मूर्द्धाको प्रणामकरके उसकी परिक्रमाकी उसको देख
कर प्रचंडाने पूछा क्यों चंपा आजक्याहै वह बोली हेमहारानी
मैंने सुनाहै कि आपके यहांसे कोई चोर भागगयाहै सो आपने
सबकी परीक्षाकी है मैंभी परीक्षादेने आईहूं प्रचंडाबोली कि
तेरी परीक्षालेना कुछआवश्यकनहींहै मैं आजरात्रिको मंत्रसिद्ध
करूंगी उससे जहां प्रहासहोगा वहींसे बँधाहुआ चलाआवैगा
चंपाबोली महारानी जो आपकी इच्छाहो सो कीजियेगा परंतु
जैसे श्रीजीने सबकी परीक्षाकीहै वैसेही मेरीभी करलीजिये जि-
ससे संदेहदूरहोजावे यहसुनकर प्रचंडा बोली कि अच्छाजाओ
कोई मेराकाष्ठकोष उठालाओ चंपारूपी प्रहासनेकहा श्रीजी मैं
लातीहूं बताइये कहांधराहै प्रचंडाने कहाकि महलके मध्यकेखं-
डमेंहै यहसुनकर चंपालकड़ी टेकती हुईगई और अकेलेमें अव-
सरपाकर उसने उसकोषको खोलकर कड़ेसेहाथ बचाकर उसमें

मूर्च्छाकर चूर्णडालदिया और फिर बंदकरके उसेउठाकर शनैः शनैः चली प्रचंडाने उसे देखकर और दासियोंसे कहा कि वह वृद्धाचलनहीं सकतीहै तुमसबबैठी देखरहीहो क्योंनहींलेआती यहसुनकर एकदासीदौड़कर गई और उस वृद्धासे काष्ठकोषको लेकर प्रचंडाके सन्मुख लाकररखदिया चंपारूपी प्रहासभी वहां आकरखड़ाहोगया ज्योंही प्रचंडाने उसकोखोला उसमेंसेधूमसा निकला और उसके घ्राणमात्र करनेसे प्रचंडा और उसकेसमीप कीदासियां अचेतहोकर गिरपड़ीं गिरतेही प्रहासने खड्गनिकालकर प्रचंडाका शिरकाटलिया उसके मरतेही प्रलयकासा काल होगया महाअंधकारछागया चारोंओरसे पाषाण और अग्निकी वर्षाहोनेलगी और जिधरदेखो भयंकरशब्द मचनेलगा यहदेखकर प्रहासने मरुतदत्त वस्त्रओढ़लिया और उसके प्रभावसे अदृश्यरहकर चित्रसेन गंधर्वदत्त तूरबजाने लगा जिससेनिकलेहुए स्वरको सुनकर सबअसुर और राक्षस नाचनेलगतेथे उस के शब्दसे प्रचंडाकी जितनी दासियां दास और सहेलियांथीं सबको यह सुनाई पड़ा कि कोई कहताहै कि तुमसब भागजाओ नहीं मारेजाओगे यहसुनकर वेसबके सब वहां से भागगये तब प्रहासने जो दासियां अचेतपड़ीथीं उनकेभी शिरकाटडाले निदान बड़ीदेरतक महाघोर शब्दहोतारहा और अंधकार छायारहा उपरांत प्रहासदेखताक्याहै कि उनराक्षसीयोंकी लोथेंपड़ीहुई हैं और उसबागमें जो जो प्रासाद और वृक्षआदि मायाकृतथे कोई भी नहीं रहे केवल दैवी वृक्षरहगये और उन्हीं वृक्षोंमेंसे एकके नीचे राजपुत्रभीमविक्रम खड़ाहुआ प्रहासकी कृत्यका चमत्कार देखरहाहै उससमय प्रहासनेराजपुत्रकीओर देखा राजपुत्रनेउसे साष्टाङ्गदंडवत्की प्रहासने आशीर्वाददेकर पूछाकि हेपुत्र तुमकारागारसे क्योंकर छुटे राजपुत्रबोला किप्रचंडाके मरतेही उसकी मायानिर्मित पाश और निगड़ सब गिरपड़े और कारागार नष्ट

होगया और मैं बाहरनिकलआया येदोनों इसप्रकारसे बातचीत करहेथे कि अकस्मात् बड़ीप्रचंड वायुचलनेलगी और उसमें भयानक चक्रउठनेलगे वेचक्र अकस्मात् प्रचंडाकी लोथकेपास पहुचकर लोथकोचक्राकार घुमाने लगे और वहलोथ उनचक्रों में उड़तीहुई आकाशमार्गसे एकदिशाको चलदी यह देखकर प्रहासने कहाकि हेराजपुत्र अबयहांसे शीघ्रचलदो यहलोथहम जानतेहैं कि महेन्द्रके पास जायगी और शीघ्रही कोई बड़ाप्रपं-चखड़ा होगा यह सुनकर भीमबिक्रम ने कहा कि यदि कोई वा-हनहोता तौ शीघ्रही मार्ग उत्तीर्णहोता प्रहासने कहा कि एक घोड़ातौ बिकाऊहै परद्रव्यचाहिये राजपुत्र बोलाकि मै एकलक्ष मुद्रादेसकताहूं प्रहासने अपनी थैलीमें से लेखनी और मसी पात्र और कागजनिकालकरदिया और कहा कि तुम्हारी युवा-वस्थाहै तुम्हारी बातका बिश्वासनही मुझे एक लक्षमुद्राकावि-श्वासपत्र लिखदो यहसुनकर भीमविक्रमने हँसकर लक्षरुपिया देने का बिश्वासपत्र लिखदिया प्रहासने उसे थैलीमें रखलिया और बागके बाहर आकर अपनी थैली में से एक घोड़ा और उसपर कसनेका सबसरंजाम निकाला और घोड़ेकोकसकर भी-म ि क्रमके सन्मुख लाकर कहाकि एक वणिक्से इसी समयमोल लेकर आयाहूं राजपुत्रने कहा क्यासंदेहहै अच्छा वणिक्था जो ऐसेसमयमें घोड़ा लियेहुए द्वारपरही खड़ाहुआ आप की बाट देखरहाथा प्रहासबोला कि अरे शत्रुञ्जय के पुत्र तुझे धूर्तता के सिवाय कुछ औ भी आताहै अबशीघ्र यहांसे चलो ऐसानहो किकोई और उपद्रव खड़ाहोजाय यहसुनकर भीमबिक्रम घोड़ेपर सवारहोगया और प्रहास और वह दोनों बागसेनिकलकर चल दिये इसप्रहासको महाराज शत्रुंजय का मित्रहोने के कारणसे शत्रुंजय के पुत्र तात तातकहकर पुकाराकरते थे और पिताके समान मानतेभीथे निदान भीमविक्रमने कहा कि हेतात मुझको

यहांसे चलाजाना एक निन्दितकर्म मालूम होताहै क्योंकि मेरा चित्त राजपुत्री मोहनीचित्रप आशक्तहै यदि वह सुनैगी तौ कहैगी कि शत्रुंजयका पुत्र अपने प्राणलेकर भागगया और मुझे प्राप्त करनेके निमित्त कुछ उपाय नहींकिया यह सुनकर प्रहासने राजपुत्रकीओर क्रोधकी निगाहसे देखकर कहा॥

एक दुःख संशय प्रानको मृतरूप करि अबही गयो।
यहकष्ट नूतन हानिको हे राम केहिअपत्तों भयो॥

अभी हृदयके व्रणनहीं गयेहैं इस मायावी देशके सब शाभित पुष्प आपत्तिप्रद हैं तुम अभी सेनामेंभी नहीं पहुंचेहो कि यह नयाराग पैदाकिया जल्दी यहांसे चलो नहीं तो महाराज शत्रुंजयकी शपथ खाकर कहताहूं कि मैं मारे कोड़ोंके तुम्हारे शरीरका चर्म उधेड़दूंगा यह सुनकर भीमविक्रम बोला कि हे तात मै आपको अपनी भुजाका केयूर अर्थात् बाजू देताहूं यह कई लक्ष मुद्राकाहै आप इसको लीजिये और कोई उपाय ऐसा विचारिये कि जिससे मेरी प्यारी मुझको मिलजाय उसकेबिना मेरी यह गतिहै॥

दो० विरहअग्नि प्यारी बिना दहति नित्य ममगात।
हाडमास कितहूं रहो जीवन ताके साथ॥

प्रहासने जब केयूरकानाम सुना तब क्रोधकासा आवेशलोप करके बोला कि क्यातेने मुझको वेश्याभृत्य समझाहै मैं वेश्या का मिलाना नहीं जानताहूं परन्तु हां मोहनीचित्र राजपुत्री है उसकेसाथ तेरा बिवाह करादूंगा ला वह केयूर अर्थात् बाजू मुझेदे यह सुनकर भीमविक्रमने केयूर अपनी भुजासे खोलकर प्रहासको देदिया और प्रहास वहांसे उस ओरको चलदिया जिधरसे उसने मोहनीचित्रको आते देखाथा और यह अनुमान किया कि उसका स्थानभी उसीओर होगा और जब उसस्थान पर पहुंचा जहां उसने नवेलीको अचेत करके अपना स्वरूप

उसकासा बनायाथा तब उसने वह जगह राजपुत्रको दिखाई और सब वृत्तांत कहसुनाया यह सुनकर राजपुत्र भीमविक्रम बहुत हँसा और आगेको बढ़ा अब मोहनीचित्रकी व्यवस्था सुनिये जो राजपुत्रके बिरहसे पीड़ित और विदीर्ण चित्तहोकर प्रचंडाके पाससे चलीआईथी उसीदिनसे उसका यहहालथा॥

क० कहाकहौंप्यारेजूबियोगमेंतिहारेचितविरहअनललूकभरकिभरकि उठै। कैसेकैबिताऊंदिन जोयनकेहाहाकामकरलै कमानमोपेतरकितरकि उठै॥ भूलैनाहिंहँसनितिहारीहरिचन्दतैसी वाकीचितवनिहियफरकिफर-किउठै। बेधिबेधिउठतविषीलेनैनबाण मेरेहियमेंकटीलीभौंहकरकिकरकि उठै॥

और उसके हृदयमें राजपुत्र भीमविक्रम के स्वरूपका चित्र बनगया कि उसीके ध्यानमें वह रहा करती थी और दिनरात उसीके नामकी रटनाथी जब उस राजपुत्री की यहदशा साथकी सहेलियोंने देखी तब उन्होंने पूछा कि हे राजपुत्री तुम्हारी यह क्या दशाहुई है किसपर तुम्हाराचित्त मोहित हुआहै जिसके कारणसे नेत्रोंमें आँसू और चित्तविचित्त रहता है नित्यप्रति तुम्हाराहाल बुरा होताजाताहै हमकोभी बताओ तो हमलोग उसका कुछ उपायकरें और तुम्हारे प्यारेको तुमसे मिलावें यह सुनकर राजपुत्री बोली कि मेरेकष्टका कोई उपाय नहीं है इस रोगकी चिकित्सा धन्वन्तरिसेभी असाध्य है॥

दो० जोमैं ऐसो जानती प्रीतिकरे दुखहोय।
नगर ढिंढोरा पीटती प्रीतिकरै नाकोय॥

क० जानतकौनहैप्रेमबिथाकेहिसेचरचायबियोगकीकीजिये। कोकही मानैकहासमझैकोऊक्यों बातकीरारिहिलीजिये॥ कूरचवाइनमेंपडि-के हरचन्दजूक्योंइनबातनछीजिये। पूछतमौनक्योंबैठिरहोसबप्यारेकहा इन्हैंउत्तरदीजिये॥

यह सुनकर सहेलियां बोलीं कि हेराजपुत्री आप चाहे प्रसन्न हों अथवा नहीं परन्तु आपने जबसे उस बँधुआको अप

मौसीकेघर देखाहै तभीसे आपका यह बुराहाल है एकने कहा भैना तैने सचकहा वह मनुष्य ऐसा स्वरूपवान् है कि कामदेव कीभी छवि उसके सामने लज्जित होती है तेरी आंखोंकी सौगंद जबसे मैंने उसे देखाहै मैं बावलीसी होगईहूं रातोंको स्वप्न मेंभी उसेही देखा करतीहूं और दिनरात यही जी चाहताहै कि वह मिलै तौ उसे देखाकरूं जब राजपुत्रीने अपनी सहेलियोंकी ऐसी २ प्रियबातें सुनी तब उसने अपने आशक्तहोनेका सब वृत्तांत कहसुनाया और उनको आज्ञादी तुमलोग अपना स्वरूप मायारूपी कपोत आदि पक्षियोंकासा बनाकर प्रचंडाके स्थानके निकट निवासकरो और वहांका सबहाल लेतीरहो और उसहालको मुझसेकहि जायाकरो निदान सहेलियोंने वैसाही किया एकदिन उन्होंने आकर कहाकि आजप्रहासजो नवेली का स्वरूप बनाये हुएथा पकड़ागया यह सुनकर राजपुत्रीको बड़ाकष्ट हुआ और वह उसके कारणसे म्लानचित्तबैठी हुई चिन्ताकररहीथी कि दूसरेदिन दूसरी सहेलीने आकर कहा कि आज प्रचंडा मारीगई यहसुनकर वह बहुत प्रसन्नहोकरखिलखिलाउठी और सहेलियों से बोली अब राजपुत्रअपनी सेना में जायगा तुमसब जाकर जैसे बने उसे यहां लिवालाओ और मुझसे मिलाओ यहसुनकर सहेलियां उस ओरको चलदीं उधरसे प्रहास भीमविक्रम राजपुत्रको साथ लियेहुए आहीरहा था थोड़ीदूरपर वह क्या देखता है पांच चार स्त्रियां परमसुंदरी थोड़ी बयकी रत्नजटित बस्त्र और आभूषणोंसे अलंकृत मांगमें सिंदूर लगाहुआ आरहीहैं दूरसे वहमांगका सिंदूर ऐसा जान पड़ताथा मानों मनुष्योंके चित्तको बिदीर्ण करनेके लिये रुधिर भरीहुई तलवारें लगा रक्खीं हैं उनके नेत्रोंकीशोभा अपूर्वथी॥

क॰ कैधोंचन्द्रबिम्बमेंप्रकाशमिन्दरेखाबिम्ब कैधोंरूपसिंधुमेंविकासे नीलमरविन्दु ॥ कैधोंशीलतालहूबंधायेमणिनीलमैन कैधों पंचबानकी

कमानजगडारयोनिन्दु॥ मनरघुनाथकिधों शोभासरजानतुन्द नयनकंज मानवसे मुदितभनेमलिन्दु। कैधोंरतिराजकी पराजयकेकाजआजधनुजग साजलैसमाजरह्योराजइन्दु॥

निदान वे स्त्रियां मंद मंद गयंदी चालसे हँसती और ठठोलियां मारतीहुई भीमविक्रम के समीप आपहुँचीं और राजपुत्रको दण्डवत् करके बिनयपूर्वक बोलीं कि हमारी राजपुत्री मोहनीचित्रने आपकी कुशल पूछी है और कहा है कि यदि आपका कोई विघ्न न हो तौ दो चार घड़ी हमारे बागमें आकर चित्तको प्रसन्न कीजिये और फिर जब इच्छाहो चलेजाइयेगा यह सुन प्रहासने कहा कि हम इस देशकी मायावी स्त्रियोंको मुहँ नहीं लगाते हैं और उनसे अपना लोटातक नहीं उठवाते यह सुनकर उन स्त्रियोंने देखा कि एक सूखासा क्षीण पुरुष ऐसी बातें बकरहाहै वह सब तौ चंचलस्वभाव थीहीं प्रहास की उक्त बातोंको सुनकर ठठोली मारमारकर कहनेलगीं एक बोली यह सूकटा भूतसा कौन है दूसरी ने कहा यह मटिया राक्षस है तीसरी बोली नहीं री यह बनमानस है यह सुनकर प्रहास बोला कि मैं ऐसा सूकटा भूतहूं कि सबको नाच नचाऊंगा इसके पीछे राजपुत्र भीमविक्रमने कहा कि हे प्रहास क्या चिंता है चलिये इधर भी होतेचलें और राजपुत्री से भेट करलें प्रहास बोला कि जहां तूने किसी स्त्रीका संदेशा सुना और तू लट्टूहुआ चल देख तौ तुझे महाराज शत्रुंजय से कैसा ठीक बनवाताहूं निदान दोनोंजने उन स्त्रियोंके साथ बात चीत करतेहुए राजपुत्री मोहनीचित्रकी बाटिका के निकट जापहुंचे उससमय उन स्त्रियोंमें से एकने आगे दौड़कर राजपुत्र के आने का संदेशा राजपुत्री को जा सुनाया सुनतेही राजपुत्री ने बाटिका और मणिजटित प्रासादों को अलंकृत करने की आज्ञादी और सब दास और दासियां बड़ी शीघ्रतासे उत्तमो-

त्तम बस्त्रोंको पृथ्वीपर बिछाकर प्रासादको खाद्य और पेय आदि नानाप्रकारके भक्ष भोग और बिहार करने की वस्तुओंसे अलंकृत करनेलगे जबसब सरंजाम ठीकहोगया तब मोहनीचित्र उस बाटिके द्वारपर चली आई और वहां खड़ीहोकर राजपुत्रकी बाट देखनेलगी और थोड़ी देरमें उसने राजपुत्रको सामने से आतेहुए देखा जब वह राजपुत्र निकट पहुंचा और उसने मोहनीचित्रको अपने दर्शनों की इच्छासे बाटिका के द्वारपर खड़ाहुआ देखा तब वह घोड़ेसे उतरपड़ा और एक दासी ने उस घोड़े को एक स्थानपर बँधवादिया जब प्रहास सहित आगे बढ़ा तो क्या देखता है वह मोहनीचित्र अतीव प्रकाशमान रत्न और सुवर्ण जटित बस्त्र और आभूषणों को पहिनेहुए परम शोभायमान है और अपने कमलनाल हाथों को दो सहेलियों के कंधोंपर धरेहुए खड़ीहई है छबि उसकी क्या वर्णन कीजावै ॥

क० जटित जवाहिरकेभूषण सरससाजि चलीगजगति रतिलालके मिलनवाल । पगपगमगमग करतमनोरथन डगडगडिगडिग मैनमद मातीचाल ॥ किंकिणीकलितध्वनि नूपुरनिरुनिझुनि हायलकरत बजे पायल परतताल । चन्दतेचटकप्यारी बदनसलोनताई बरणिनजाईछबि अद्भुत अनंगहाल ॥

जब भीमबिक्रम द्वारपर पहुंचा तब राजपुत्री मंद मुसकान करतीहुई शनैः शनैः आगे बढ़ी और उसका हाथ बड़े प्रेमसे पकड़कर बोली हे राजपुत्र आपने बड़ी कृपाकी जो मुझ दासी को अपना दर्शन दिया और मेरे स्थाल को अपने चरणारबिन्दों से पवित्र किया ॥

क० छांड़िसबहितू तेरीचेरीभई चाहभरी गुरुजनपरिजन लोक लाजनासीहौं । चातकीतृषित तवरूपसुधाहेतुनित पलपलदुसहबियो गदुखनासीहौं ॥ हरिचंद एकब्रतनेमप्रेमहीकाल्लावे रूपकीतिहारेराज-

पुत्रहौं उपासीहौं। ज्यायलेरे प्राणनबचाइले लगाइकंठ एरे राजपुत्र तेरी मोल लई दासीहौं॥

यह सुनके भीमविक्रम बोला कि हे राजपुत्री तुम्हारे वियोगमें तुम्हारे दर्शनों की इच्छामें मेरे नेत्रोंकी यह दशाथी॥

क० रोवैंसदा नितकीदुखियां बनियेमंखियां जेहियोसको लागी। रूपविषाझोइन्है कबहूं हरिचन्दजूजानिमहाअनुरागी॥ आनिहैं औरन नहियै तबरंगरंगोकुल लाजहित्यागी। आंसुनकों अपनेअंचरानसोंमानि नि पोंछिकरो बड़भागी॥

परंतु उस परमेश्वर को धन्यवादहै जिसने मुझे तुमसे मिलाकर मेरा दुखदूरकिया निदान दोनों पुष्प और भ्रमर रूपी परस्पर प्रीतिमान बातें करतेहुए वाटिकाभीतर गये वहां जाकर राजपुत्र क्यादेखताहै कि वहबाटिका क्याहै मानोबैकुंठ बगियाहै लता और वृक्ष प्रकारप्रकारके सुगंधित पुष्पों से लदे हुएअपूर्व शोभा देरहे हैं और भ्रमरोंकी गुञ्जार कोकिला की कूक और शीतल मंद सुगंध वायुके बहने से ऐसाजानपड़ताहै मानोंबसंत ऋतुके रहनेका यही स्थानहै॥

क० ललित लताके नवपल्लव पताके सजे बजे कोकिलान के गु कलगान के निशान। ठौरठौर मौरनपै भौंरभीरभौरकरें दौरदौर गावत नकीबनकी तौर गान॥ फूलनकीसैनमैन सैनसीकरैहैं चैनशीतलसुगंध मन्दमारुत चलतबान। सजिकैं समाजसाजि बिरही बिकलकाज यहि पलबीच ऋतुराज आजहरै प्रान॥

और प्रत्येकवृक्षके सन्मुख उसी वृक्षकेसमान एक २ मणियों का बनायाहुआवृक्षभी लगाहुआहै और उसके कोटरमेंउसीवृक्ष का बनायाहुआ सुगंधित तैलभी भराहै उसके कारणसे जबवायु चलतीहै तब वह बाग सुगंधिसे पूर्णहोजाताहै और उसमें बिहार करनेवाले मनुष्योंका चित्तप्रफुल्लित होजाताहै निदान दोनों उस अपूर्व बाटिका की शोभा देखतेहुए महलकी बारहद्वारी में पहुंचे जो नानाप्रकार के बस्त्र आसन और मणि और कांच के

पात्रोंसे अलंकृत थी एक ओर उसमें सुवर्ण की रत्नजटित शय्या बिछीहुई थी और दूसरी ओर अति उत्तम चौकी पर परम शोभायमान बारुणी से भरेहुए पात्र रक्खेहुए थे निदान राजपुत्री भीमविक्रम को वहां की शोभा दिखातीहुई नदी के किनारे पर पहुंची वहां एक प्रासाद परमोत्तम बनाहुआथा वह स्थान भी उक्त बारहद्वारी की भांति वस्त्रादि से अलंकृत था और राजाओं के योग्य आसन और शय्या भी बिछीहुई थी और सब प्रकार के खाद्य पेय चोष्य और बिहार करने के पदार्थ मौजूदथे निदान दोनों प्रीतिमान् उन उत्तम आसनोंपर बैठ गये और प्रहास भीमाबक्रम के सन्मुख बैठगया और राजपुत्रीने बारुणी और पानपात्र मँगवाये और आज्ञादी कि गंधर्विणी नृत्य और गान करने को बुलाई जावें उससमय प्रहासने हास्यकरने की इच्छासे कहा कि हे भीमबि[illegible]म देव तौ यह स्त्री कैसी कुरूपा है आंखों में बामनी पड़ीहुई है और शिरकेबाल उड़ेहुएहैं यहसुनकर मोहनीचित्र खिसियानीसीहोगई तबभीमविक्रमने कहाकि हेराजपुत्री यहमनुष्य लालचीहै यदि तुमइसको कुछद्रव्यदो तौ अभी यहतुम्हारी प्रशंसा करनेलगैगा यह सुनकर राजपुत्रीने एक संदूकमोती और सुवर्णसे भराहुआ मँगवाकर प्रहासकोदिया उसको पातेही प्रहासबोला हे भीमविक्रम क्योंनहो अंतमें यह राजपुत्रीहीहै तू बड़ाभाग्यवान्है जो एकपुजारी का लड़काहोकर इसराजपुत्री के बराबरबैठाहुआहै यह सुनकर राजपुत्रने कहा देखो राजपुत्री अबइसने मेरी बुराई करना आरंभकिया तबतौसब प्रहासकी बातों पर हँसनेलगी इसके उपरांत राजपुत्रीने एक पात्र बारूणी से भरकर भीमविक्रमसे कहा कि हेराजपुत्र ॥

श्लोक। मद्दत्तमिदंपात्रंमधुमद्येनपूरितम्।
मार्गश्रमनिवृत्त्याय गृह्यताम् ममप्रीतया ॥

और फिर उसने खड्गसे उसको बीचसे दो करडाला परन्तु ज्योंहीं उसके शरीरके खंड पृथ्वीपर गिरे त्योंहीं फिर उछलकर पानीमें जापड़े और कुछ कालमें वही राक्षस सजीव होकर निकला और भीमविक्रमके सन्मुख आया यह देखकर राजपुत्री के मंत्रीकीबेटी लीलावती ने राजपुत्री से कहा कि यह राक्षस इसीप्रकार से सप्तबार मरमरकर सजीवहोगा परन्तु जब आठवीं बार सजीवहोगा तब फिर न मरैगा और राजपुत्रको पकड़लेगा यह सुनकर राजपुत्रीने कहा कि हे लीलावती जो तुझको इस राक्षसके मरनेका कोई उपाय विदितहोतौ बतादे वह बोली कि मुझको इतना ज्ञानहै कि इसराक्षसको प्रचंडाने तुम्हारी रक्षाके निमित्त इस स्थानपर नियत कियाथा और उसके मारनेकेवास्ते उसने एक धनुष और तीनबाण माय रचकर इसीबागकी किसी कोठरी में रखवादियेथे उस धनुषपर वेहीबाण चढ़ाकर मारनेसे यह राक्षस मरसकता है परन्तु तीनोंबाण खाली जाने पर यह कदापि न मरेगा यह सुनकर राजपुत्रीने पूछा कि वह कोठरी कहां है लीलावतीने कहा कि प्रचंडाने मायासे उसको अदृश्यकर रक्खाथा परन्तु अब वह मारीगई और उसकी माया भी सब नष्टहोगई इससे अब वह कोठरी दिखाईदेगी आपमेरे साथ द्वादशद्वारीतक आइये वहां मैं उस कोठरीको ढूंढूंगी निदान मोहनीचित्र लीलावतीके साथसाथ उस महलमेंगई और वहांजो देखातौ निस्संदेह एक नवीन कोठरी दिखाईदी कि जिसको पहले कभी न देखाथा उसे देखकर वह बहुत प्रसन्नहुई और कोठरीके भीतर जाकर देखातौ एक धनुष और तीनबाण रक्खेहुए मिले मोहनीचित्रने उनको उठालिया और बड़ीशीघ्रतासे उन्हें लेकर वहांआई जहां भीमविक्रमका युद्ध उस राक्षस से होरहाथा वहां भीमविक्रम पांचवीबार उस राक्षसको मारचुकाथा और उसके शरीरके खंड उछलकर पानीमें गिरपड़ेथे परंतु

अभी वह राक्षस सजीव होकर पानीके बाहिर नहीं निकलाथा कि इतनेमें राजपुत्रीने लेजाकर वह धनुष और बाणदिये और कहा कि उसराक्षसका बध इन बाणोंसे कीजिये यह सुनकर भीमविक्रम ने वह धनुष लेलिया और उसपर एकबाणको योजित करके धनुषको सज्ज कियेहुए उस राक्षसके पानी से निकलने की अपेक्षा में स्थितरहा थोड़े कालमें वह राक्षस भयानकरूप होकर निकला और युद्धाकांक्षी राजपुत्रके सन्मुख दौड़ा उससमय राजपुत्रने उस राक्षस के हृदयको लक्षलगाकर बड़ी शीघ्रता से कानतक धनुष खींचकर बाण छोड़दिया और दैवइच्छा से वह घोर बाण उसके हृदयको बेधकर पार निकल गया और वह राक्षस चक्कर खाकर पृथ्वी पर गिरपड़ा गिरतेही उसके हृदयसे एक तेज उत्पन्नहुआ और उससे उस राक्षसका शरीर भस्मीभूत होगया इसके पीछे चारोंओर से भयानक शब्द हुआ और शब्द के अंतमें आकाशबाणीहुई कि—मायावी क्षसोहतः—इसके उपरांत भीमविक्रम ने परमेश्वर सर्बब्यापी को नमस्कार की और राजपुत्री को धीर्य देकर उसका अनेक प्रकार से तोषणकिया और प्रहास ने जिससमय वह राक्षस पानी से निकला था मरुतदत्त बस्त्र ओढ़लियाथा और उसके प्रभाव से अदृश्य होगया था और उसे यह बिचार लिया था कि अब राजपुत्र और राजपुत्री जाने राजपुत्र अपने आप यहां आकर बिपत्ति में फँसगया नही तो मैं उसको छुटाही लाया था और अबतक कभीका सेनामें कुशल पूर्बक पहुंचजाता अब जाकर महाराज शत्रुंजय से सब हाल बर्णन करके कहूंगा कि आपका पुत्र तो नष्टहोगया परंतु जब वह राक्षस मारागया तब प्रहास ने वह बस्त्र उतार लिया और प्रकटहोकर राजपुत्र से कहा कि अरे भ्रष्टबुद्धी अब यहां मत ठहर शीघ्रचल नहीं तो कोई और आपत्ति आना चाहती है यह सुनकर भीमवि-

क्रमने राजपुत्री से कहा कि अब मैं यहां से जाताहूं वह बोली कि मैभी आपके साथ चलूंगी यहां रहकर मैं क्या करूंगी क्योंकि यह सब वृत्तांत महाराज महेन्द्र के कानोंतक अवश्य पहुंचैगा और वह मुझको मरवाडालैगा यह सुनकर राजपुत्र ने अपना घोड़ा मँगवाया और उसपर राजपुत्री को बैठाकर आप भी सवार होगया और भृत्यगणों से कहा कि तुम सब तौ दासहो तुम से कोई कुछ न कहैगा हमारे चले जानेपर तुम्हारी जहां इच्छाहो चलेजा अथवा तुम चाहो तौ हमारी सेना में चलेआना जो रत्नाकर पर्वत के समीप स्थित है यह कहकर वह राजपुत्र प्रहास सहित उस बाग से निकला और रत्नाकर पर्वत का रास्ता लिया—अब महेन्द्र की कथा सुनिये वह बदरी उद्यान में बैठाहुआ प्रहास का शिर कटकर आने की अपेक्षा कररहाथा कि इतने में वायुके चक्र प्रचंडाकी लोथ को आकाशमार्गसे उडातेहुए बदरीउद्यानमें लाये और बाहिर से शब्दहुआ कि हे मायाधीश महाराज महेन्द्र प्रचंडा मारी गई यह सुनतेही महेन्द्र क्रोधमें भरगया और अद्भुत जालकी पुस्तक को उठाकर देखने लगा कि प्रचंडाका हंता कहांहै और राजपुत्र भीमविक्रम कारागारसे छुटकर किधर को गया उस पुस्तक से उसको विदित हुआ कि प्रचंडाको प्रहास ने मारा और प्रहास और भीमविक्रम दोनों मोहनीचित्र के बागमें आये वहां भीमविक्रम ने मायावी राक्षस को मारा और मोहनीचित्र को लेकर प्रहास और भीमविक्रम दोनों अपनी सेना की ओर जारहे हैं यह हाल जानतेही उसने कुछ मंत्र पढ़कर पृथ्वी में हाथ मारा कि उसी समय वहां से एक राक्षस उत्पन्न हुआ जिसके मुख और नाक से वारम्बार अग्नि निकलती थी और शरीरपर उसके अनेकप्रकार के चित्र बनेहुएथे निकलतेही उसने महेन्द्र को दण्डवत् की और कहा कि क्या आज्ञा

है महेन्द्र ने कहा कि अरे हैडंब तू शीघ्र जाकर भीमविक्रम और मोहनीचित्र को जो प्रहास सहित अपनी सेना की ओर जारहे हैं पकड़ला और दोनों को कारागारमें बंदकरदे परंतु प्रहास को मत पकड़ियो क्योंकि जब वह जाकर सब वृत्तांत शत्रुंजय से कहैगा तब शत्रुंजय भयभीत होकर चलाजायगा और इधर आनेकी इच्छा न करैगा यह सुनतेही वह हैडंब राक्षस वहां से चलदिया यहां भीमबिक्रम राजपुत्री मोहनीचित्रको लियेहुए कई कोस निकल आयाथा कि अकस्मात् एक झाड़ी से एक घोर सर्प निकला और उसने मार्ग रोकदिय उससमय प्रहास ने तौ मरुतदत्त वस्त्र ओढ़लिया और वह उसके प्रभावसे अदृश्य होगया परंतु भीमबिक्रम घोड़ेपर आगे बढ़ा और धनुष चढाकर उस सर्पपर बाण संधान करना प्रा- भ किया परंतु जितने बाण छोड़े सबको उस सर्प ने अपनी फुंकारसे भस्म करदिया और बड़े पराक्रम से उसने अपना श्वासखींचा कि उससे भीमबिक्रम और राजपुत्री दोनों घोड़ा सहित खींचतेहुए उसके मुख की ओर चले उससमय भीम- बिक्रम ने अनेकप्रकारसे पराक्रम किया परंतु सब व्यर्थ होगया और वह राजपुत्री और घोड़ा सहित श्वाससे प्रेरित उस सर्प के मुख में चलेगये प्रहास ने भी उससमय बहुत से पत्थर उस सर्प के मारे परंतु सब खालीगये और उस सर्प ने पुकारकर कहा कि अरे प्रहास तू जाकर शत्रुंजय से कहदे कि यहदेश विस्मयकर माया का रचाहुआहै यहां आनेकी कोई कांक्षानकरै और भीमविक्रम का अबछुटना असंभवहै शत्रुंजय अपनेइस पुत्रसे हाथ धोवै क्योंकि जोकोई उसकेछुटाने को आवैगा इसी आपत्ति में पडैगा और हे प्रहास तेरेपकड़नेकी मुझको आज्ञा नथी नहींतौ तराबचकर जानाभी दुर्लभथा यह कहकर वहमहा सर्पवहीं अंतर्द्धान होगया और प्रहास महारुदन करताहुआ

म्लानाचित्त बड़े मार्गको उत्तीर्ण करके अपनीसेनामें पहंचा उस समय हाराजशत्रुंजय सन सभासदों सहित सभामें बिराजमान थे प्रहासने वहांजाकर महाराजकोदण्डवत्‌की और उत्तमआसनपर बैठगया उस समय महाराज और २ सभासदोंने प्रहास से पूछा कि कहिये क्षेमकुशलहै तब प्रहासने यथायोग्य सभा की क्रियाका आचरण करके सबवृत्तांतभीमविक्रम और मोहनीचित्र का निवेदनकिया उसको सुनकर महाराजशत्रुंजयने कहा परमेश्वरको धन्यवादहै कि उसकी कृपासे मेरापुत्र सजीवहै अब कुछ उपाय विस्मयी माया रचित देशके जयकरने का करना उचितहै परंतु इससमयतो राजामहावीरसे युद्ध करनाहै उससे युद्ध करनेका सरंजाम संचित करनेपर किसीको उसदेशके जय करने को भेजूंगा यह कहकर महाराज शत्रुंजय युद्धकी तैयारी करानेमें प्रवृत्तहुए अबअगले अध्यायमें राजामहावीरकावृत्तांत वर्णन किया जाताहै जिसने उसमिथ्या ईश्वरको अपने यहां टिकाकर उसको बिश्वासदियाथा कि मै शत्रुंजयसे युद्धकरूंगा॥

इतिश्रीआगरापुरनिवासिचौरासियागौड़वंशावतंसश्रीपंडितमोहन लालात्मजपंडितकुंजबिहारीलालकविनाविरचितेअद्भुत चरित्रेप्रथमखण्डेप्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय॥

राजा महावीर का अद्भुत मिथ्या ईश्वरकी सहायता के लिये महेन्द्र को पत्र लिखना महेन्द्रका महोल्का म्लेच्छको चालीससहस्र सेना सहितभेजना और प्रहासका उस म्लेच्छको ग्रहण करलेना और युद्धहोना॥

इसअध्यायमें सौरभमहाराजने इसप्रकारसे बर्णनकिया है जब महाराज शत्रुंजय अपनी सेनाको लेकर उस अद्भुत मिथ्या ईश्वरको नाश करने के निमित्त रत्नाकर पर्वतकी सीवां पर आकरस्थित हुए तब वहांके महावीर राजाने यह बिचार कर

कि महाराजकी सेना अतिशय प्रबल और दुर्जयहै एक २ पत्र सबमायावी राजाओं को जिनके देशोंकी सीवां उसके देशसे मिलीहुईथी भेजा और उन पत्रोंका आशय यहथा कि हमसबके श्री अद्भुत ईश्वर महाराज शत्रुंजय से पराजित होकर मेरे यहां आकर स्थितहैं इससे तुमसबको उचितहै कियहां आकर उन की सहायता करो और उनके बैरियों का विध्वंसनकरो क्योंकि श्री अद्भुत तुमसबके ईश्वरहैं इसकार्यको विनामेरे संबन्ध के आपसबको करना उचितहै तुमसब उनकी सहायता करके फिर उनके फिर उनको उनके ईश्वरी अधिकार पर नियत करो नहीं तो वे तुमसबसे अप्रसन्नहोकर तुमसबको नाशकरदेंगे वहऐसे दयालुहैं कि उनके उत्पन्न कियेहुए जीवही उनको लाचारकररहे हैं परंतु वे उनको नाशनहीं करतेहैं और कहतेहैं कि मैंने जिस समय इन मनुष्योंको उत्पन्नकियाथा उससमयमें मद्यके आवेश से उन्मत्तथा और उसउन्मत्ततामें मैं इनके कर्मविपाकमें इनको उपद्रवी और घमंडी लिखगया अब वहमेरा लिखाहुआ अमिटहै निदानयही कारण है कि हमारे ईश्वर इनसबका नाशनहीं करते हैं और उनसे यहांतक अप्रसन्न हैं कि ये लोग उनके पीछे पीछे हठ करके अपना अपराध क्षमाकराने को फिरतेहैं परंतु हमारे ईश्वरकी इच्छा उनका अपराध क्षमाकरनेकी नहीं है इसीसे आप भागते फिरते हैं और वहलोग अन्यहकहते हैं कि आखिर हमारा अपराध तो क्षमाहोताही नहीं अब जहां तक होसकै हमभी उपद्रव करलें इससे तुम सबको उचित है कि शीघ्र आकर सहायता करो निदान उक्त आशय के पत्र लिखवाकर सब राजाओं के नाम भेजेगये नाम उनके उस समय वर्णन किये जायंगे जब वे राजसहायता के लियेआवेंगे इस महावीर राजा के देशकी एक ओर की सीवां परएक पहाड़ है वहीं से विस्मयी मायारचित देशकी सीवां प्रारंभ है

वहांएक नगाड़ा और एक डंडारक्खारहताहै वह दोनोंमायासे निर्मित हैं जब राजा महावीर को कोई पत्र महेन्द्र को भेजना होताहै तब वह वहां जाकर उस नगाड़े को बजाता है उसके बजने से महेन्द्र को हाल मालूम होजाता है और वह पुतला भेजकर पत्र मँगालेता है और उसी पुतले के हाथ उत्तर भी लिखकर भेज देताहै निदान महावीर ने एक विनयपत्र महेन्द्र के पास भी उक्तप्रकार से भेजा और उसके उत्तर में महेन्द्रने लिखा कि मेरा भाग्य धन्य है जो मेरी सहायता हमारे ईश्वर के काम आवे में समझताहूं कि हमारे ईश्वर को अपने उत्पन्न कियेहुए मनुष्यों की वृद्धी स्वीकार है इससे अपने विरुद्ध जीवों को भी नाश नहीं करते किंतु चाहते हैं कि कोई दूसरा हमारा उत्पन्न कियाहुआ जीव इनको विध्वंस करै और उसको इस कार्य के बदले में वैभवयुक्त करें निदान जो कुछ कि हमारे ईश्वर ने विचारा है बहुत श्रेष्ठ है शत्रुंजय और उसकी सेना को मैं तृणवत् समझताहूं और महोल्का म्लेच्छको जो बड़ा मायावी है चालीससहस्र सेना लेकर श्री अद्भुत ईश्वर की सहायता को भेजताहूं वह जातेही क्षणमात्रमें संपूर्ण शत्रुंजय की सेना को नाशकरडालेगा यह पत्र लिखकर महेन्द्रने पुतले के हाथ उसी पहाड़पर भेजदिया वहां राजा महावीर का एक सेवक उसकी बाट देखरहा था वह उसको लेकर राजाके पास आया और राजा महावीर उसे पढ़कर बहुत प्रसन्नहुआ और युद्धमें प्रहार करने का सरंजाम करनेलगा पत्र भेजने के पीछे महेन्द्र ने कुछ मंत्र पढ़ा और शब्द किया कि तत्काल आकाशमार्ग से एक विमान उतरा और उसपर से एक म्लेच्छ जिसका नाम महोल्काथा उतरकर महेन्द्र के सन्मुख गया और दण्डवत् करके विनय की कि क्या आज्ञा है वह बोला कि हमारे ईश्वर को कुछ एक जीवों ने सता रक्खा है और वे सा-

मर्थवान् होनेपर भी उनके भयसे भागकर रत्नाकर पर्वती देश के महावीर राजा के यहां स्थित हैं तू वहां जाकर उनकी सहायताकर और जो जो उनसे विरुद्ध हैं सबको नाशकरडाल यह सुनकर उस दैत्य ने कहा कि बहुत श्रेष्ठ ऐसाही करूंगा और यह कहकर वह विमान पर चढकर चलदिया इस म्लेच्छ के पास चालीस सहस्र सेना है और इस विस्मयी मायारचित देशमें जो साठ सहस्र खंडहैं उनमें से एक खंडका स्वामी यह म्लेच्छ भी है निदान उस म्लेच्छ ने अपनी सेनाको युद्धके लिये सन्नद्ध होनेकी आज्ञादी आप भी सब सरंजाम युद्धके लेकर एक बड़े उग्र अजगरपर सवारहुआ और उसकी सेना के लोग भी मायाके रचेहुए मयूर गृद्ध आदि नानाप्रकार के वाहनोंपर मुशल और त्रिशूल आदि अस्त्र लियेहुए सवार होगये और उन सब के गलेमें एक २ झोली भी पड़ीहुई थी कि जिसमें म्लेच्छी माया करने का कुल सरंजाम रक्खा हुआ था इसप्रकार से वह म्लेच्छ अपनी सेना को लेकर रत्नाकर पर्वत की ओर चलदिया उससमय महावीर राजा और अद्भुत मिथ्या ईश्वर दोनों महल के भीतर विराजमान थे कि अकस्मात् आंधी चलने लगी बादल छा गया और पाषाणों की वर्षाहुई उसे देखकर राजा महावीर ने जाना कि कोई महान् पुरुष आता है और यह जानकर वह उत्थान और सन्मान क्रिया करनेके लिये महल के बाहिर आया और अपने साथ मुख्य २ शूरवीरों को लेकर परकोटेपर चलागया वहां उसने महोल्का म्लेच्छको चालीस सहस्र सेनासहित आते देखा उससमय सब सेना के म्लेच्छ अपनी २ माया की शक्ति एक दूसरे को दिखातेहुए चलेआते थे जब निकट आये तब राजा महावीरने उनकी उत्थान और सन्मान क्रिया की और उन सब को साथ लेकर परकोटेके भीतर आया जहां महलों में वह

मिथ्या ईश्वर सिंहासन पर बैठहुआ था उस म्लेच्छ और उसके सेनापतियों ने उस मिथ्या ईश्वर की विधिपूर्वक पूजाकी और दाहिनी ओर जो वस्त्र बिछाथा उसपर जा बैठा राजा महावीरने उसकी सेनाको एक उत्तम स्थानमें [illegible]सदिया और महलके समीप जो एक उत्तम वाटिका थी उसमें उसने महोल्काको टिकाया वह बाग अनेकप्रकारके पुष्पित वृक्ष लताओं से शोभायमान और भौरों की गुंजार और नानाप्रकारके पक्षियोंकी मधुर वाणीसे शब्दायमान था उसमें जो स्थान बने थे सब दिव्य और र[illegible]जटित थे राजाकी आज्ञासे वे स्थान सब प्रकार के भोग विहार और खाद्य और पेय आदि पदार्थोंसे अलंकृत कियेगये और गंधर्विणियोंको बुलाने की आज्ञा दी[illegible]ई जब सब सरंजाम [illegible]कहोगया तब वह मिथ्या ईश्वर अपनी सभाको विसर्जन करके महोल्का सहित उसी वाटिका में आकर स्थितहुआ और विहार करनेलगा महाराज शत्रुंजय के दूतोंने यह सब वृत्तांत महाराजको सुनाया उसको सुनकर महाराज ने कहा कि कुछ चिंता नहीं है वह सर्वशक्तिमान् ईश्वर हमारा रक्षक है उससमय प्रहास ने श्रीमहाराज से विनयकी कि जब से सेना इस देशमें आई है तब से मैंने रत्नाकर पर्वत के किले को कभी नहीं देखा आज मेरी इच्छा[illegible] यदि आज्ञाहो [illegible] मैं वहां जाकर महोल्काके सन्मान के सरंजाम का उत्सव देखूं यह सुनकर महाराज ने कहा कि हे प्रहास वे सब बड़े मायावी हैं ऐसा न [illegible] कि तुमको जानजायँ और पकड़ लें प्रहास बोला कि (भवतिचभाव्यं विनाप्रयत्नेन) मैं आजकल बहुत निर्धनहूं वहांजाऊंगा तौ कुछ द्रव्य उपार्जन करलाऊंगा महाराजने क[illegible] । बहुतश्रेष्ठ जाइये ऐसे स्थानप[illegible] वाणिज्य करने को तुमको कौनरोकता है निदान प्रहास व[illegible]ांसे सब सरंजाम स्वरूप दलने का लेक[illegible] चलदिया जब रत्नाकर पर्वत के

प्राकारके समीपपहुंचा तब उसने द्वारको महावीर राजाकी सेना के लोगों से रक्षितपाया तब उसने अपना स्वरूप महोल्काकी सेनाके म्लेच्छोंकासा बनाया और गलेमें झोलीडालकर सीधा भीतर घुसाहुआ चलागया रक्षकों ने उसे महोल्काका साथी जानकर नहींरोका वहां जाकर क्या देखताहै कि एक परमोत्तम नगर बसाहुआ है रहनेवाले वहांके सब प्रसन्नहैं गलियां सब पाषाणसे बनी हैं और सब राजमार्गोंके दोनोंओर नानाप्रकार के वृक्ष लगेहुएहैं और वृक्षोंके पीछे२ बनियोंकी दूकानें हैं उन में हरप्रकारके पदार्थ स्थापितहैं और झुंडके झुंड लोग वहां क्रयविक्रय कररहे हैं और मार्गोंपर अनेक जलपिलानेवाले अपना स्थान सूचित करनेके लिये पात्रोंको शब्दित करतेहुए फिर रहेहैं प्रहास उस नगरकी इसप्रकार की शोभाको देखता हुआ राजमंदिरके समीप पहुंचा वहां उसनेदेखा कि एक बाग में राजाके समीपवर्ती और सेवकआदि जारहे हैं समझा कि इसीस्थान में महोल्काके आने का उत्सव है निदान उन सबके साथ साथ आपभी चलागया वहां जाकर प्रहास उस बागकी शोभाको देखकर चकमक रहगया और अतिउत्तम शीतलमंद सुगंध वायुकरके प्रेरित गंधको घ्राणकरने और पक्षियोंकी मधुर मधुर बोली सुननेसे मदान्धसा होगया थोड़ीदेरमें उसको चेत हुआ और उसने यह कबित्त पढ़ा॥

क० सोहैशुकबानी चहुंओर मंजुकाननमें षटपदी ध्वनि इहि बेला विलसन्तहै। केतक अशोकपर सेवत सुधीर द्विज बोलत रसाल सुमन सविकसन्तहैं। तरुणीके देखनको नैननि नचावें जित माधवी सुरतियुत बात विकसन्तहै। उपजे विशाल रुचिदेखतही दीनयाल किधौंवैकुण्ठ किधौं शोभित बसन्तहै॥

जब आगे बढ़ा तब देखता क्याहै कि बड़ीउत्तम सभा बनी हुईहै शूरवीर लोग वहां प्रकार २ के आसनों पर बड़े सुखसे

एकांत में जाकर हाथसे प्रहासको बुलाया प्रहास तुरंत चला आया तब वहउसे एक बागसें दूरलेगया और वहां उससे पूछा कि कहोजी वंदीजन तुमने क्योंमुझको हाथसे बुलायाथा यहसुनकर प्रहासने प्रथमतो बहुतसे मंगलवचन कहकर आशीर्वाददिये उपरांत कहा कि राजपुत्री कंदर्पनयनी मेरे हाथोंकी खिलाईहुईहै और बच्चापनसेप्रीतिमान होनेके कारणसे मुझको अपना विश्वासी जानतीहै और मुझसे कोई बातनहीं छिपाती निदान अब वहतुमपर आसक्तहोगईहै इसकारणसे उसने यह कहलाभेजाहै कि अगरआपभी मुझसे प्रीतिमानहैं तो मेरेपिता से कहकर एकस्थान अलगलीजिये और उसमें आपकेसिवाय और कोई न रहै रातकोमैं इसीप्रासादकी छतपरसोऊंगी आप दो विश्वासपात्र म्लेच्छभेजकर आकाशमार्ग से मुझेशय्यासहितउठामँगावें रात्रिकोमैं आपकेपासरहूंगी और जबप्रातःकाल का समयहोय तब वेहीम्लेच्छ मुझको शय्यासहित इसीस्थान में पहुंचादें सोयहीकहनेकोमैंने आपको बुलायाथा अबआपबतावेंकि किसदिन आप राजपुत्रीको बुलवावेंगे मैं उससे जाकर कहदूं कि वहउस रात्रिको यहीं सोवै यहसुनकर महोल्का बहुत प्रसन्नहुआ और अपनी ग्रीवासे मुक्ताहार उतारकर प्रहासको दिया और कहा कि मैं तुझको माला मालकरदूंगा अबतूजा और राजपुत्रीसे कहदे कि तेरे विरहमें मैंभी महादुःखीहूं मैं आजही दूसरा स्थान नियत करूंगा और कल राजपुत्री को बुलवाऊंगा यह सुनकर प्रहास ने कहा बहुत श्रेष्ठ अब आप जाइये और कोई एकांत स्थान खोजिये निदान महोल्का प्रसन्न सभा में चलाआया और नृत्य देखने लगा और प्रहास वहां से फिर उसी द्वारपर चलाआया और मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर अपने को अदृश्य करके भीतर घुसगया और देखा कि वह परमसुंदरी राजपुत्री कंदर्पनयनी एक उत्तम आसनपर

बैठीहुई नृत्य देखरही है और कई एक दासियां उसकी सेवामें उपस्थित हैं यह देखकर प्रहास ने उस बस्त्र से अपना शिर और हाथ और पैर बाहिर निकाल लिये वह दीखनेलगे और शेष अंग उसका अदृश्य रहा और राजपुत्री के सन्मुख आकर बोला कि मै बेधड़का ब्रह्मराक्षसहूं तुम सबको खाजाऊंगा यह सुनतेही वह राजपुत्री दासियों सहित उस भयानक रूपको देखकर भयभीत होगई और सब औंधे मुखसे गिरपड़ी उस समय प्रहास ने उन सब को मूर्च्छाकर हुलास सुँघाकर सबको अचेत करदिया और बड़ी शीघ्रतासे सब द्वारोंको बन्दकरके आप राजपुत्री के पास बैठगया और उसका स्वरूप अच्छे प्रकार से देख देखकर अपना स्वरूप उसकासा बनाया और उसके बस्त्र उतारकर पहिर लिये और उसे उठाकर अपनी थैलीमें डाललिया इसप्रकार से जब अपने को बनालिया तब उसने दासियोंको धूंनी सुँघाकर सचेत किया जब वे सब दासियां चैतन्य होगईं तब उन्होंने राजपुत्री रूप प्रहास से कहा कि हे राजपुत्री शीघ्र यहां से चलो नहीं तो वह ब्रह्मराक्षस खाजायगा यह सुनकर वह बोली कि तुम सब से तो मैंही निडरहूं कि मैं चैतन्यरही और तुम सब अचेतहोगईं परंतु वे सब बोलीं कि चाहे कुछहो परंतु हम अब आपको यहां न ठैरने देंगी चलिये भीतर चलें यह कहकर वे दासियां प्रहास को राजपुत्री के धोखेसे राजमंदिर के भीतर लिवालेगईं वहां जाकर उसने देखा कि वह महल अतीव उत्तम बनाहुआ है और रंग बिरंगकी मणियों से जटित होनेके कारण परमशोभायमान है और यावत् बस्तु राजा और महाराजाओं के योग्य हैं सब से वह रनिवास युक्त और अलंकृत है निदान वहां पहुँचकर प्रहास ने आज्ञादी कि मेरी शय्या ठीककर बिछाओ वे दासियां दौड़ीं और जहां राजपुत्री सोयाकरतीं थी वहां जाकर शय्या

को अलंकृत करनेलगीं उनको देखकर प्रहास ने जाना कि जिस राजपुत्री का तुमने स्वरूप बनाया है उसके सोनेका यही स्थान है निदान वह वहां गया और आनन्दपूर्वक यह विचार करताहुआ सोगया कि कल अपने कहने के अनुसार बाहिर छतपर सोऊंगा और यहां महोल्का ने सभामें आकर राजा महावीर से कहा कि मैं शत्रुंजय से युद्धकरनेकेलिये कुछ हवन करूंगा इससे आप मुझको नगरसे बाहिर एकांत में एकस्थान खाली करादीजिये यह सुनकर राजा ने सेवकों को बुलाकर आज्ञादी तुम बहुत शीघ्र उस बागको जो नगर के किनारेपर है खाली करादो और उसको वस्त्रादि से अलंकृत कराकर उसमें सब भक्ष्य भोज्य पेय चोष्य और भोग और विहार का सरंजाम रखवादो यह आज्ञा पातेही सेवकोंने तुरंत उस बाग को खाली कराया और वहां सब सरंजाम छकड़ों और मजूरों पर लदवाकर भेजने लगे दैवयोगसे वहां प्रहास का सुवास नामी पुत्र भी इस प्रयोजन से आया हुआ था कि यदि मेरा पिता पकड़लियाजाय तौ उसको अपनी क्रियाके बलसे छुटालाऊंगा जबवह बाग राजाके सेवकों ने खाली कराया तब वे सेवक सरंजाम लाने के वास्ते मजूरों को ढूंढ़ने लगे यह सुवास भी अपने को मजूर बनाकर पहुँचगया निदान जहां वस्त्र पात्र आसन आदि पदार्थ और मजूरों के शिरपर भेजे गये तहां एक आसन सुवास को भी लेजाने को दिया और वह उसे लेकर बागमें आय और उसे राजाके सेवकोंको देकर बोला कि और कुछ काम भी बताइये कि मेरी मजूरी पूरी हो जावै उन्होंने कहा कि तू ठहरारह इसके पीछे वे सेवक महोल्काके पास गये और पूछा कि महाराज आपकी शय्या किस स्थानपर अलंकृत कीजावै उसने कहा कि प्रासाद की छतपर लगाओ निदान उन्होंने आकर सुवास आदि मजूरोंको आ-

ज्ञादी कि शय्या का सब सरंजाम ऊपर लेचलो और उन्होंने साही किया सुवास भी सब के साथ २ सरंजाम ऊपर पहुँचातारहा और उस छतपर सेवकों ने उत्तम वस्त्र बिछाकर ऊपर उसके एक ओर शय्या को सब प्रकार की विहार की चीज़ों से अलंकृत किया एक ओर छपर खट खड़ा करके उसकेनीचे उत्तमोत्तम बैठने को आसन बिछादिये एक ओर प्रकार प्रकारकी उत्तम मद्यके पात्ररक्खे और एक ओर संपूर्ण खाद्यआदि पदार्थ और जल रखदिया इसप्रकारसे जब उसस्थानको अलंकृत करचुके तब सबसेवक नीचे चलेआए परंतु सुवास आंखबचाकर शय्याकेनीचे छुपरहा और नीचे बिछेहुए वस्त्रका कोण ओढ़कर अपनेको छुपालिया सेवकोंने सब मजूरोंको दाम देदिये और कहा कि एक मजूर नहीं है पर वह आपही अपनी मजूरी लेने आवैगा इसके उपरांत सेवकों ने महोल्कासेजाकर विनयकीकि आपकी आज्ञानुसार सब सरंजाम करदियागया और इसी अवसरमें प्रातःकाल होजानेके कारणसे वह सभाभी विसर्जन होगई और वह महोल्का दैत्य राजासे आज्ञालेकर उसी बागकीओर चला और अपनी सेना के सेनापतियोंको बुलाकर कहा कि मैं आज कुछ हवनकरूंगा इससे तुमलोग मेरेपास जबतक मैं न बुलाऊं न आना यह कहकर उसने अपनेसाथ अपने दो विश्वासी म्लेच्छोंको जिनका नाम मुंड और महामुंडथा लेलिया और वहांसे उसबागमें आया और देखा कि एक छोटासा बागहै और प्रकार २ केपुष्प और वृक्ष और लताओंसे ऐसा शोभितहोरहाहै कि बैकुंठ भी उसके सामने लज्जितहोजाय नानाप्रकारके पक्षी वहां मधुर २ वाणीसे बोलर हैं और परम सुगंधित वायु चलरहीहै उसको देखता हुआ महोल्का प्रासादके ऊपरचलाआया और रात्रिमें जागनेके कारणसे सोगया और उसके दोनों विश्वासी उस

बागमें विहार करतेरहे इसप्रकारसे वहदिन समाप्तहुआ और इधर प्रहासने दासियोंसे राजपुत्रीके सबआभूषण और वस्त्र मँगवालिये और अपनेको उनसे दिनभर अलंकृत करतारहा जब चार घड़ी दिनरहा तब दासियोंको आज्ञादी कि मेरी शय्या बाहिर लाकर छतपर बिछादो आज मैं चांदनीकी शीतलताको देखूंगी और वहीं सोऊंगी यहसुनकर दासियोंने तुरंत शय्याको निकालकर छतपर बिछादिया और उसको वस्त्रपुष्प और सुगंधित जल और तैलोंसे युक्त और अलंकृत करके प्रहाससे कहा कि आपकी आज्ञाके अनुकूल शय्या अलंकृत करदी गई यहसुनकर वह राजपुत्री अर्थात् प्रहास उनके साथ२वहां आया और कुछ मेवा मँगाकर और खाकर शय्यापर बैठगया उससमय चांदनीमें उसकी ऐसी शोभाथी कि उसको देखकर चन्द्रमा भी लज्जित होताथा हाथ पाऊंमें दी लगीहुई और मांग मोतियोंसे भरीहुई अपूर्व छबि दिखातीथी सब दासियां चकोरकी भांति उसके चन्द्रमुख को देखदेखकर बलिजातीथीं इसप्रकारसे प्रहर रात्रितक तौ बातें होतीरहीं उपरांत राजपुत्री लेटरही और सब दासियां शय्याके दहिने बायें नीचे लेटरहीं वह सब तौ सोगई परंतु राजपुत्री अर्थात् प्रहासने अपने मुखपर दुपट्टा डाललिया और सोनेका बहाना करके जागतारहा और विचारतारहा कि देखिये आज परमेश्वर क्याकरताहै इधरप्रहर रात्रि जानेपर महोल्काने अपनेमुंड और महामुंड दोनों विश्वासियोंको बुलाकरकहा किहमारा एक कामहै यदि तुमलोग किसीसे न कहो और मनसे करौ तौ मैं कहूं मै उसकार्यके करनेके बदले में तुमको असंख्य धनदूंगा और तुमको अपनी सेनाका सेनापति बनाऊंगा यहसुनकर दोनोंजने बोले कि महाराज हमलोग मनसा बाचा कर्मणा आपकाकार्य करनेको तैयार हैं अभीहम अपने प्राणोंको आप-

के चरणारविंदोंपर बलि करसकतेहैं और आपकी गुप्तवार्ताका दूसरा तो क्या हमारे कान भी न सुनने पावेंगे यहसुनकर महोल्काने कहा कि धन्यहै ऐसाही तुमको उचितहै अब सुनोवह कार्य यहहै कि मैं राजा महावीरकी कंदर्पनयनी नाम पुत्री पर आशक्तहूं और वह भी मुझे चाहतीहै और उसने मुझसे कहला भेजाहै किमैं उसी प्रासादके कोठेकी छतपर सोऊंगी जहां नृत्य हुआथा वहांसे म्लेच्छ भेजकर मुझे उठवा मँगवाना सो तुम दोनों जाकर उसको शय्यासहित लेआओ और उसके समीप जो दास यादासी सोरहींहों उनको मायासे ऐसा मोहित करआना कि जबतक राजपुत्रीकी शय्या फिर वहां न पहुंच जावै तबतक कोई न जगै जिससे यहहाल किसी को विदित न हो और कोई राजपुत्रीकी रात्रिमें खोज न करै यह सुनकर उन दोनोंने कहा कि हम अभी यहकाम कियेलातेहैं यह क्या बड़ी बातहै यह कहकर वे दोनों आकाशमार्गीहुए और राजपुत्रीके महलपर पहुंचकर देखते क्याहैं कि वह सुंदरी सोरही है एक जंघा उसकी खुलीहुईहै और कुरती ऊपरको चढ़गई है और शिरसे पैरतक रत्नों से लदी हुई है शिरकाजूड़ा खुलगया है पेटचमक रहा है हाथ कहीं हैं पांउकहीं हैं युवावस्थाकी नींद में कुछ ध्यान नहीं है कि क्याखुला है निदान उन दोनोंने वहां आकर ऐसी मायाकरी कि सबदास और दासियां अचेतहोकर सोगईं और दोनोंशय्याको उठाकर आकाश मार्गीहुए प्रहास उससमय जगरहाथा समझा कि अब महोल्काने बुलायाहै देखिये ईश्वर क्याकरताहै यही सोचताथा कि इतनेमें वे दोनों महोल्काके स्थानपर पहुंचगये और उन्होंने शय्याको उस छतपर रखदिया उसको देखकर महोल्का बहुत प्रसन्नहुआ और उनदोनोंसे कहा कि तुमलोग नीचेजाकर अब विश्रामकरो यहां कोई मनुष्य न आनेपावै और तुम दोनोंभी

जबतक मैं न बुलाऊं न आना यह सुनकर वे दोनों दैत्य नीचे उतरकर चलेगये और आपसमें सलाहकी एक हममेंसे सोजाय और एक जागतारहै क्योंकि नजानै महोल्का किससमय हमको बुलावैठे निदान उन दोनोंने बारीबांधकर वैसाही किया वहां महोल्काने उनके चलेआनेके पीछे शय्याके पास जाकर उस राजपुत्री रूपी प्रहासका वस्त्र जिससे मुख ढकाहुआ था हटा दिया और उसकी अद्भुत सुन्दरताको देखकर चकभख रहगया उस रात्रिको चन्द्रमाके प्रकाशमें उसकी शोभा ऐसी उत्तमथी कि कभी किसीने वैसासुंदर स्वरूप और मुखकी आभा मनुष्यों में तौ क्या देवता और गंधर्वोंमेंभी न देखी और न सुनीहोगी॥

क० चन्द्रसो मुखनयन खंजनअवरुए चूंकजकमां। दांतदाड़िमहास्यवि-द्युत् लाललब अमनोअमां॥ कीरकेसमनासिका द्युतिगेसुए दामेजमां॥आ-जुसोतिय तोहिजोवत गहनदीदे आसमां १ स० वारिजसोमुख मीनसेनैन सेवारसेवारनकी सुखदासी। कम्बुसोकंठ लसेकुच कोकसेभोरसीनाभि भरीभ्रमभासी॥ जांघदोऊ कदलीसीबनी लहरीसलिलसैत्रिवलीछबिरासी। सुन्दरताकहँलौंवरणौं वहबालबनी सुखकी सरितासी २ क० वहचितवन वह सुंदरकपोलद्युति वहदशननिछबि बिज्जुकीधरातिहै। वहओठलाली वह नासिकासकोरनिमें भावकारिनूतन सुकौतुककरतिहै॥ कहैमनीराम छबिबरणिनजायकछू रतिकेसमानसन मुनिकेहरतिहै। वहसुसक्यानयुग भौंहनिकमानद्युति वहबतरानिनाबिसारीबिसरतिहै ३॥

इसप्रकारकीशोभा देखकर महोल्का अचेतसा होगया परन्तु फिर अपने को सँभालकर उस राजपुत्री के चरण दाबनेलगा इसपर राजपुत्री रूपी प्रहासने करवटली और निद्रासे जग कर अपनी दासियोंका नाम लेलेकर पुकारा यह देखकर महो-ल्काने अपना मस्तकउसके चरणोंपर रखदिया और विनयपूर्वक बोलाकि वे दासियांतौनहींहैं परंतु आपका यह नवीनदास मौजूदहैयहसुनकर राजपुत्रीने अपनीभौओंको चढ़ाकर उसकीओर देखा और अपने वस्त्रको सँभालकर शय्यापरदोनों पैरलटकाकर

बैठगई और अपनेकेशोंको बांधकर महोल्काकी ओरसेमुख फेर लिया महोल्का इसभावको देखकर मृतकरूपहोगया और पतंग की समान उसराजपुत्री के मुखरूपी दीपककी ओरचलागया उसको देखकर राजपुत्रीने कहा कि सत्यकहो तुमकौनहो कोई यक्षहो अथवा राक्षसहो और यहस्थान किसका है और यहां मुझको कौनलायाहै यहसुनकर महोल्का बोला कि हेप्राणप्यारी हे सुन्दरी यहसबकार्य आपके विश्वासी बंदीजन के कहने के अनुसार मुझदासहीने कियाहै यहकहकर उसने सबपूर्ववृत्तांत कहसुनाया उसको सुनकर वहराजपुत्री मंदमुसक्यानकरतीहुई वस्त्र झाड़कर खड़ीहोगई और बोली कि हेदुष्ट मैं इसीप्रकार से पैदलअपनेघर जातीहूं और उसपातकी वृद्धबंदीजनको जिसने मेरेऊपर यह मिथ्या उपचार बनायाहै और तुझपरआशक्तहोने का झूठाचरित्ररचाहै कैसादंड दिलातीहूं और अपने पितासे कहकर एकपत्र महाराज महेन्द्रकोभी लिखवातीहूं कि वहतुझसे पातकी दुष्टात्माको अपने देशसे बाहिर निकालदे तू इसीप्रकारसे राजा महाराजाओंको निन्दितकराताहै और उनकी बहूबेटियों का सत्यानास खोता है महोल्का यह क्रोध युक्त वाक्योंको सुनकर भयभीतहोगया और विनयपूर्वक कहनेलगा कि हेराजपुत्री आप एकक्षणभर यहां विराजें जिससे मै आपकी यथायोग्य पूजाकरसकूं और उपरांत मैं आपको आपकेस्थान पर पहुंचादूंगा यहसुनकर राजपुत्री बोली कि क्या पूजाकरने कोतेरी माता अथवा बहिननहीहै जो फिर ऐसे वाक्यबोलैगा तो दंडपायेगा तबमहोल्काने फिरहाथजोरकर विनयकी कि हे राजपुत्री कृपाकरके थोड़ी देरके वास्ते इसअलंकृत शय्यापर विराजिये जिससे मैं आपके सुन्दर स्वरूपके दर्शन नयनभर कर के अपने चित्तकी कांक्षाको पूर्णकरूं मुझे केवल आपके दर्शनोंही की लालसाहै और कोई कार्यनहीं है हेप्राणप्रिया हे

सुंदरी हेमहारानी मैं तेरा एकछोटासा दासहूं यहकहकरमहोल्का राजपुत्री के चरणोंपर गिरपड़ा यहदेखकर राजपुत्रीको दया आई और वह गयंदी चालसे शनैः शनैः आकर शय्यापर बैठ गई और महोल्का उसके सामने बैठगया और संभाषण करने लगा जबकभी वह अपना हाथराजपुत्री की ओर बढ़ाताथा राजपुत्री कभीरूखा मुखबनालेती कभीभौंचढ़ालेती और कभी मंद मुसकराकर अपने कटाक्षरूपी बाणोंसे उसके हृदयको वेध डालती इधर तो काम की उमंग थी और उधर लज्जा की तरंग थी इसीप्रकार से जब दोनों रसिक के अनेकभाव होचुके और महोल्काने बहुत कुछ विनय और रोना पीटना किया तब राजपुत्रीने हँसकर कहा कि अरे महोल्का तू निपट निर्बुद्धी काठका उल्लूहै अपने अर्थ के सिवाय कुछ नहीं जानता है न मद्य कुछ खाद्य एक वृथाका प्रमाद है जो कोई किसीको बुलाता है तो यही रीति होती है कि केवल अपना अर्थ साधनकरना और उसके सन्मान का कोई कार्य न करना सत्यहै कि पुरुषमात्र सब स्वार्थी होते हैं परंतु तू तो प्रीतिकानाम भी नहीं जानता है यह सुनकर महोल्का बहुत लज्जित हुआ और विचारने लग कि यह सत्य कहती है मद्यपी से लज्जा जाती रन्तीहै जब यह दो एक पात्र पानकरलेगी तब उन्मत्त होजायगी और उससमय मेरा कार्य होजायगा यह विचारकर वह उठा और उत्तमोत्तम मद्यके पात्र उठालाया और एक रत्नजटित पात्रमें मद्य भरकर उस पात्रको हाथमें लेकर राजपुत्री के सामने किया और कहा कि इस प्रीतिकी मद्यको ग्रहणकीजिये और मेरे चित्तको आनन्द दीजिये॥

श्लोक। दुःखशोकादिशमनं सुरतिश्चमुदप्रदम्।
वराननेमयादत्तम् पानपात्रंप्रगृह्यताम्॥

राजपुत्री ने वह पानपात्र हाथमें लेलिया और भौं चढ़ाकर

मुखफेरकर उस पात्रको अपनेहोठोंसे लगाया और अकस्मात्
महोल्का की ओर फिरकर बैठगई और मुखबनाकर वह मद्य
उसके ऊपर फेंकदी और कहा कि यह मेरे काम की नहीं है
बड़ा आश्चर्य है कि तू राजाहोकर ऐसी बुरी मद्य पीताहै महो-
ल्का बोला कि हे राजपुत्री यहां मेरा घर नहीं है यह सब मद्य
आपही के पिताने भेजीहै उसीको मैं भी पानकरताहूं राजपुत्री
ने कहा कि राजाओंको कोई बस्तु कहीं दुर्लभ नहीं है यदि तू
मेरे निमित्त केतकी के पुष्पोंकी उत्तम मद्य बनवाने का उद्योग
करता तौ निस्संदेह बनजाती परंतु तुझे तौ केवल अपने अर्थ
साधनका प्रयोजन है और किसी बात के प्रबंधका काहेको
ध्यान था पर क्या करूं अब तौ मैं यहां आपड़ीहूं यह कह
कर राजपुत्रीने अपने पास से एक पात्र मद्यका निकाला और
उसमें से कुछ बुन्द उसने उस पानमात्रमें डालदिये उससे उस
पात्रकी मद्यका वर्ण श्वेत रक्तसा होगया और फिर उस पात्र
को अपने हाथमें उठाकर महोल्कासे कहा कि मद्यपानकराना
हमारा काम है तू तौ दुष्टात्मा है परंतु ले यह पात्र ग्रहण कर
और हमारे हाथकी दीहुई कृपाकी मद्यपानकर यह सुनकर म-
होल्काने अपने को बड़ा धन्य समझा और उस पात्र को राज-
पुत्रीके हाथ से प्रीति पूर्वक लेकर पीगया उस मद्य में प्रहास
ने मूर्च्छाकर औषधी मिलादीथी निदान पीतेही महोल्काको
घुमेरआई और वह बोला कि हे राजपुत्री तुम बड़ी तीव्र मद्य
पीतीहो मुझको तौ इसने एक चुल्लूहीमें उल्लू बनादिया यह
सुनकर राजपुत्री बोली कि उठकर वायुके सन्मुख थोड़ी देर
स्थितहो यहमद्य बड़ा चमत्कार दिखावैगी यह सुनकर महोल्का
उठा और ज्योंहीं वायु उसके मुखलगी वह अचेत होकर गिर
पड़ा उसके गिरतेही प्रहासने अपनी थैलीमेंसे खड्ग निकाल
कर ज्योंहींचाहा कि महोल्काका शिर धड़से काटडाले त्योंहीं

प्रहासकेपुत्र सुवासने शय्याके नीचेसे निकलकर कहा कि देखो ऐसा मतकरो यह सुवास उक्त सब वृत्तांत शय्याकेनीचे छुपा छुपा देखरहाथा और बड़े आश्चर्यमेंथा कि यह कौन राजपुत्री है परंतु जब उसने देखा कि महोल्का अचेत होगया तब वह समझगया कि यह राजपुत्री नहीं है किंतु हमारे पिताने राज पुत्रीका रूपधारण करके यह कौतुक कियाहै और अपने मनमें उस स्वरूपको देखकर बहुत कुछ सराहनाकी और कहा कि क्या उत्तम प्रतिस्वरूप राजपुत्रीकी उतारी है किसीप्रकारसे जान नहीं पड़ता और महोल्काके मारेजानेमें बुराई जानकर उसने प्रहासको उसके मारनेसे रोकाथा निदान उसके निषेध करनेकी बाणीको सुनकर प्रहास यह विचारकर कि यह कौनहै चकित होगया और फिर खड्गलेकर सुवासके ऊपर दौड़ा सुवास उसके प्रहारको पैतरा बदलकर बचागया और बोला कि मैंतो आपका पुत्र सुवासहूं यह सुनकर प्रहासने कहा कि अरे मूर्ख तू यहां क्यों आयाहै और इसम्लेच्छके मारनेसे मुझको क्यों निषेध करताहै यह सुनकर सुवास बोला कि हे पिता जब ये मायावी म्लेच्छ मरतेहैं तब बड़ाशब्द होताहै इसको मारने सेभी भयानकशब्द होता और उसको सुनकर इसके मुंड और महामुंड नामीभृत्य जो नीचे स्थितहैं यहां आजाते और आप को पकड़लेते यह सुनकर प्रहासने कहा तू सत्यकहताहै परंतु अब क्या कर्तव्य है सुवास बोला कि मेरास्वरूपतो राजपुत्री कासा बना दीजिये मैं इस शय्यापर सोजाऊंगा और आप अपना स्वरूप महोल्काकासा बनाकर दोनोंमुंड और महामुंड दैत्योंको बुलाकर आज्ञादीजिये कि राजपुत्रीको उसके स्थानपर पहुंचादो और इस महोल्काके शरीरको अपनी थैलीमें डाललो इसप्रकारसे यहां से निकल चलेंगे फिर और जो कुछ कार्य करना उचित समझियेगा कीजियेगा निदान प्रहास ने उसका

कहना स्वीकार किया और सुवास का स्वरूप राजपुत्री का और अपना महोल्काका बनाकर महोल्का के शरीरको थैली में डाल लिया राजपुत्री रूप सुवास को शय्या पर सुलाकर उन दोनों मुंड और महामुंडको बुलाकर आज्ञादी कि राजपुत्री को उसके स्थानमें पहुँचादो आज्ञापातेही वे दोनों शय्याको उठा कर आकाशमार्गी हुए और उसी छतपर राजपुत्री की शय्या को यथावस्थित स्थापितकर चले आये और जो माया शय्या लाने के समय कर आये थे कि कोई जागने न पावै उस माया का चलते समय संहार करदिया माया के संहार होनेसे सब दास और दासियां जो वहां सोरहीं थीं चैतन्य होगईं और प्रातःकाल का समय समझकर उठखड़ी हुईं और अपना २ कार्य करनेलगीं थोड़ीदेरमें राजपुत्री रूप सुवास भी अँगड़ाई लेकर उठा और प्रहास ने जो जो नाम दास और दासियों के बतादिये थे और जो जो स्थान राजपुत्री के सोने रहने और बिहार करने के बतादिये थे उन सबको बुद्धि बल और प्रहास के बतायेहुए पते से निश्चयकरके अपना आनन्द बिहारकरने लगा और यहां प्रहास जो अब महोल्का बनाहुआ है अपने सभासदों सहित राजा महावीरकी सभामें आया उसको देख कर सबने बड़े आदर से बैठाया और बैठजानेपर उसने उस मिथ्या ईश्वर से बिनय की हे परमेश्वर आप सेनालेकर पर-कोटेके बाहिर चलिये जिससे मैं वहां चलकर शत्रुंजयकी सेना को नाशकरके महाराज महेन्द्र के पास चलाजाऊं यह सुनकर अद्भुत ने राजा महावीर को आज्ञादी कि शीघ्र सब सेनापति-यों को आज्ञा देदो कि अपनी २ सेनाको युद्धके लिये सन्नद्ध करके परकोटे के बाहिर चलें और शत्रुंजयकी सेनासे युद्धकरें यह आज्ञा पातेही युद्धका सब सरंजाम होनेलगा और इधर दूतोंने आकर महाराज शत्रुंजय से यथायोग्य दण्डवत् करके

विनय की महाराज आज महावीर राजा की सभामें महोल्का ने युद्ध करने का प्रण किया है और अद्भुत मिथ्या ईश्वर और राजा महावीर और महोल्का दैत्य तीनोंकी प्रबल मायावीसेना युद्ध करने को परकोटे के बाहिर निर्माण कीगई है यह सुनकर शत्रुंजय अपने सभासदों सहित सभाके समीपसे सेनाका निर्माण देखने को खड़े होगये थोड़ी देरमें उस रत्नाकर पर्वत के विचित्र किलेका द्वारखुला और उसमें से ध्वजा हाथियों पर रक्खीहुई निकलीं उपरांत साठ सहस्र अश्वसादी प्रबल अश्वोंपर नानांप्रकारके आयुधों सहित बैठेहुए निकले उनके पीछे सत्तर सहस्र पयादे ढाल खड्ग धनुष और बाण तर्कससे अलंकृत निकले और उनके पश्चात् मायावी म्लेच्छोंकी सेना निकली इस सेना के दैत्य महोर्ग और सिंह आदि नानाप्रकारके बाहनोंपर चित्रविचित्र कुंडल आदि आभूषण धारण कियेहुए बैठे थे और अपनी २ अभ्यासित माया का चमत्कार एक दूसरे को दिखाते थे और अद्भुत ईश्वर की जैकारा बोलते थे उससमय प्रहास ने जो महोल्का बनाहुआ था अपने मुंड और महामुंड भृत्योंसे कहा कि तुम लोग मेरे लिये एक महोर्ग मायासे निर्मित करके लेआवो यह काम मैं तुमको देताहूं और मैं अपनी मायाकी प्रबलता युद्धमें दिखाऊंगा यह सुनकर वे दोनों एक महोर्ग बनालाये और उसपर बैठनेके लिये आसन कसवाकर महोल्कारूपी प्रहास बैठकर दैत्योंकी सेनाको लेकर निकला शिरपर उसके मुकुट और भुजाओंपर केयूर बँधे थे और उसके सेनापति मायासे अग्नि और पाषाणों की वर्षा करते थे इसके पीछे देखते क्या हैं कि चालीस हाथी एक में लोहके बंधनोंसे बांधेगये हैं उनपर बड़ी चौकी बांधीगई है और उस चौकीपर एक मंडप मोतियों का बनायागया है उसमें वह मिथ्या ईश्वर अद्भुत बैठाहै और उसकी बराबर में उसका

पुत्र जिसका नाम कुँवर माणिक्य था और विशल्यका बेटा अशल्य बैठेहैं और दक्षिणारण्यका चित्रांगद नामी राजा नास्तिक होनेसे उसके पीछे बैठाहुआ चमर ढोररहा है और इन हाथियों के चारोंओर सुनाद और सुघोष और डंबर और सौवीर आदि अनेक निषाद और कलिङ्ग और पंजर और सौराष्ट्र देशोंके राजालोग उत्तम बाहनों पर मुकुट और वस्त्रादि से लंकृत अपनी २ सेना लियेहुए चलेआरहे हैं उसके पीछे अशल्य के सेनापति चित्र और विचित्र और सुचित्र और उपचित्र आदि अपनी २ सेना को लियेहुए निकले और सब के पश्चात् राजा महावीर की सेना निकली जिसके सेनापतियोंका नाम नक्र और वक्र और शूरसेन था इस सेना को देख कर महाराज शत्रुंजय ने परमेश्वरसे प्रार्थनाकी कि हे भगवन् तूही सर्व सामर्थ्यवान् है और तेरेही हाथजय और अजय है निदान वहसेना पर्वतसे उतरकर एकक्षेत्रमेंठहरी और महाराज शत्रुंजयकी सेनासे इतनी दूरपर वहक्षेत्रथा कि दोनोंसेनाओंके बीचमें युद्धकरनेभरका मैदान छोड़दियागयाथा निदानजबसेना उसक्षेत्र में आई तब युद्धकी सूचना करने के लिये भेरी और शंखआदि अनेक प्रकार के बाजे बजनेलगे॥

जयकरी छंद॥ इमिअसंख्यसेना निर्मान। होत भयो भूकंपमहान॥
चलत शूरसबउन्नत काय। धूरि दियो सर्वसनभछाय॥

सेना के पहुंचनेपर सबराजा और शूरवीर और सेना के मनुष्य दैत्य और बाहनोंके वासकेलिये यथायोग्य वस्त्र निर्मित वासगृह अर्थात् डेरेतंबू खड़ेकियेगये और उनमें सबसेना अपने २ सुपाससे उतरी उपरांत हरएक प्रकारके पदार्थोंकी हाट लगवाई गई और उसमें दधि दुग्ध घृत मिष्टान्न मांस और शाकआदि विक्रयकरने वाले बणिकोंको बसादियागया मनुष्य उसहाट में इधरसे उधर भ्रमणकरने लगे और उनको नगरमें

भ्रमणकरनेकासा आनन्द आने लगा और प्रबंधकेलिये चौकी-दार और दंडप्रद नियत करदिये गये जब सायंकाल होगया तब सबहाट में दीपकप्रज्वलित किये गये और सेनाके लोग आवश्यक पदार्थों का क्रयविक्रय करनेलगे और चार सेनापति एक सहस्र अश्वसादीलेकर सेनाके वासस्थल के बाहिर रात्रि में प्रबंध रखने के लिये नियत हुए और सेनाके वासस्थल में दंडप्रद अपने चौकीदारों को लेकर चौकसी करने लगा और चारों ओरसे जागो जागो का शब्द होनेलगा इसी प्रकारसे महाराज शत्रुंजयकी सेना में भी प्रबंध था और वे दोनों सेना एक रात्रि दिन उसी प्रबंधसे रहीं और दूसरे दिन सायंकाल से कुछपहले महोल्काने युद्धकी तुरवजवाई और उसको सुन कर सबराजाओंने अपनी २ सेनाको सन्नद्धकर अनेकप्रकारके युद्धके बाजे बजवाना आरंभ किये और उनसबके महान्शब्द से आकाशमें प्रतिशब्द होनेलगा यह संदेशा महाराज शत्रुं-जयके दूतलेकर शत्रुकी सेना से आये और दंडवत् कर के विनयकी ॥

सो० सार्वभौम महराज रहोअछत यावत जगत।
करेतिहारो काज सबभूपति होइभृत्यसम ॥

श्रीमहाराज का प्रताप और ऐश्वर्य सदैव अखंड रहे और जैसा महाराज का नाम शत्रुंजयहै वैसेही सब शत्रुओंको आप विजय करते रहें आज शत्रुके दलमें युद्धके बाजे बजरहे हैं इससे निश्चय है कि कल सेना युद्धके लिये आवे और सबप्र-कारका आनन्द है यह सुनकर शत्रुंजय ने अपनी सेना के अधिपति की ओर देखा और उसने कहा कि आप भी युद्ध के बाजे बजने की आज्ञादीजिये क्योंकि अंतमें जो कुछ ईश्वर की इच्छा है और भविष्य है वह अवश्यही होगी महाराजकी सेना के वाद्य मंडली के अधिपति दो कैकय देशके राजपुत्र थे

नाम उनके वीरबाहु और वीरध्वज थे और वाद्योंमें एक वाद्य कार्तिकेगी था जिसको कार्तिकेयजी ने पूर्व समय में दैत्यों से युद्धकरने के लिये उनके मनको भयभीत करने और उनकी स्त्रियोंके गर्भपात कराने के लिये निर्मित किया था इसका शब्द ६४ कोश तक जाताथा और युद्धके समय प्रहास उसको बजाताथा और जब प्रहास न होता था तब प्रहास का पुत्र अथवा वाद्य मंडली का अधिपति बजाताथा निदान उस वाद्य मंडली के अधिपतिने जब शत्रुकी सेना के वाद्योंका शब्द सुना तभी से उस भेरीको बजाने के निमित्त ठीककर रक्खाथा और महाराज की आज्ञा की बाट देखरहाथा कि इतने में महाराज के बहुरूपी भृत्योंने जाकर आज्ञा उस भेरी के बजाने की जाकही आज्ञापातेही वह भेरी बजाईगई और उसके शब्द से पृथ्वी कांपने और दिशा विदिशा और आकाश गूंजनेलगे और शत्रुओं के हृदय भयसे धड़कने लगे॥

वसुकलाछंद। वह शब्द घोर। करि प्रबल रोर॥
जनु प्रलय शोर। अतिशय कठोर॥
सर्वत्र प्राप्त। भो जक्त व्याप्त॥

उस समय सेना में छोटे और बड़े और शूरवीर और कायर सब सन्नद्ध होगये क्योंकि वह समय यमपुरकी हाट में प्राणोंकी बाटकाथा सभा उसदिन शीघ्रही बिसर्जनकीगई और शूरवीर लोग अपने २ वासोंमें जाकर धनुषबाण खड्ग तोमर और पट्टिश आदि आयुधों के तीव्र और युद्धकार्य साधन योग्य करने लगे उस समय जो जो शूरवीर थे वे प्रसन्नचित्त होकर युद्धभूमिको देखते फिरतेथे और कायर मुख मलीन होकर भागने और बचनेकी घातें विचारते थे और महोल्का की सेनामें राक्षसीमाया की सिद्धी प्राप्तकरने के लिये हवनादि होरहे थे और अशुचि मंत्रों का प्रयोग होताथा जब एकप्रहर

रात्रिरही तब कवीश्वर दोनों सेनाओं में शूरवीरोंकोयुद्धाभिला-
षी करनेके लिये वीररस सुनानेलगे ॥

दो०। अनी बढ़ी उमड़ी लखे असिबाहक भटभूप।
मंगलकरि मान्यो हिये भौमहि मंगल रूप ॥

निदान इसीप्रकारसे सेनामें प्रहरभरतक धूमधाम रही उप-
रांत पूर्व दिशामें मार्तण्ड मंडलकी अरुणाई का प्रकाश आ
और सूर्योदयहोनेसे अंधकार जातारहा ॥

दो०। होतप्रात दोउसेनसजि सहभूपति मतिमान।
युद्धभूमि रमणीकमें कीन्हों सकल पयान ॥

उससमय शूरवीर लोग अपनी २ सेनाको विभागकरके अनी
अनी पत्ति पत्ति वाहिनी वाहिनी वरूथिनी वरूथिनीकी व्यूह
रचनाकर करके रणभूमिमें लेजानेलगे महाराज शत्रुंजय उस
समय प्रातःस्मरण ईश्वरका कररहेथे जब करचुके तब ईश्वर से
प्रार्थनाकी कि हेप्रभो तू सर्व सामर्थ्यवान् और भक्तवत्सल है
मुझे अपनाभक्त जानकर आज इन मायावियोंके युद्धमें जयदे॥
जयकरी छंद। जयपुरुषोत्तम परमानन्द। जगपति श्रीपति आनँदकन्द ॥
शरणागतहों करिशुचिगात। देउमोहिं जययश अवदात ॥

इसप्रकारसे महाराज शत्रुंजय ईश्वरसे प्रार्थनाकररहे थे कि
इतनेमें धनुषविद्याके आचार्यकृपने आकर जय शब्दका उच्चा-
रण किया उसको सुनकर महाराज ने उसकी ओर देखा और
पूछा कि सेनाका क्या हाल है वह बोला ॥

सो०। उभय सैनके वीर साजि साजि निजसेन कूँ।
युद्धोत्सुक रणधीर प्रलय अरोपण चहत हैं ॥

परंतु आपके चलने और आज्ञापाने की बाट देखरहे हैं यह
सुन महाराजने कहा कि हमारे सबअस्त्र मँगवाइये यह सुनकर
सब अस्त्र लायेगये और श्रीमहाराजने उनके प्रयोगको पृथक् २
स्मरणकरके धारणकिया इनअस्त्रोंमें बहुतसे अद्भुत अस्त्रथे जो
श्रीमहाराज को अनेक देवता और ऋषियों ने उसीप्रकार से

दियेथे जैसे बहुतसे पदार्थ प्रहासको मिलेथे जिनका वर्णन पूर्व में होचुकाहै और इन सब अस्त्रों के मिलने की बिस्तार पूर्वक कथा इस ग्रंथके पूर्वार्द्ध में वर्णित है परंतु संक्षेपकरके उनके नाम यहांभी कहेजाते हैं वे ये हैं भास्कर अस्त्र १ आग्नेयअस्त्र २ वारुणास्त्र ३ वज्रास्त्र ४ ऐंद्रास्त्र ५ वैष्णवास्त्र ६ रुद्रास्त्र ७ और और भी हैं निदान श्रीमहाराज शत्रुंजय ने उन सब अस्त्रों को प्रयोगसहित धारण किया और पूजाके स्थानसे उठकर बाहर आये वहां महाराज का अश्वशीक्षक सौवल नाम सुग्रीव नाम घोड़ेको अलंकृत करके खड़ाथा महाराजको देखकर उसने दण्डवत्की और घोड़ेको लेआया वह घोड़ा महाराजको देखकर हींसनेलगा महाराज ने उसकी ग्रीवापर हाथ रखकर उसको आश्वासन किया और उसकी ग्रीवाके बाल पकड़कर उसपर सवार होगये और आगे बढ़े चारोंओरसे स्वस्त्ययनका शब्द होनेलगा उसको सुनकर वैदर्भ्य-सुषेण-रंतिकाल-महाकाल श्रीनिधि-मार्तण्ड विक्रम-नैषध-पौंड्र-कलापर्यंक-शिशुपाल महीपाल-शत्रुहंता आदि अनेक शूरबीर राजा और सेनापति महाराज का आगम जानकर अपनी २ सेनाओंको रणभूमिकी ओर भेजकर श्रीशत्रुंजय महाराज के पास आये इन सबकी संख्या पांचसहस्र पांचसौपच्चीस थी महाराज उनसबसे यथायोग्य मिलकर सबको साथ लियेहुए वहां गये जहां सबके अधिपति चमरछत्र सिंहासन समुद्राधिपति सार्वभौम श्रीमन्महाराज उदयादित्यसुबीर प्रतापी का वासस्थान था और वहां उनके आगमनकी बाट देखनेलगे कि इतनेमें उस वासाका द्वार खुला और बंदीजन स्वस्त्ययन पढनेलगे और श्रीमहाराजके आगमनका प्रबन्ध होनेलगा प्रथमतौ बारहसौ सुंदर स्वरूपवान् दास अनेकप्रकारके आभूषणों से अलंकृत हाथों में सुगंधित और मांगल्य पदार्थ लियेहुए निकले उपरांत सहस्रों शूर

वीर तोमर भल्ल और खड्ग आदि अस्त्र धारण कियेहुए आये उनके पीछे गात्ररक्षक भृत्य सुवर्ण और रौप्यसे मढ़ेहुए लकुट और शस्त्र लियेहुए आये उपरांत ब्रह्ममंडली वेदध्वनि करती हुई निकली फिर श्रीमहाराज सुखपाल में बैठेहुए आये उस सुखपालको सुंदर स्वरूपवान् स्त्रियां बहुमोलके वस्त्र पहिरेहुए क्षुद्रघंटिका नूपुर केयूर कटक और २ आभूषण धारण किये हुए लियेहुईथीं और उस सुखपालके चारोंओर सहस्रों दर्शनीय दास अनेकप्रकारके अलंकारों से सेवामें युक्तथे निदान श्रीशत्रुंजय महाराज आदि सब राजाओंने श्रीराजाधिराजको देखा और उनसे मिलनेको आगे बढ़े इतनेमें बंदीजनोंने स्वस्त्ययन पढ़कर श्रीमहाराज शत्रुंजयका आगमन निवेदन किया श्रीराजा धिराजने उसको सुनकर नेत्रउठाकर देखा महाराज शत्रुंजय ने दण्डवत् की राजाधिर जने आशीर्वाद दिया और अपने हाथको हृदयपर रक्खा कि तुम मेरे हृदयमें विराजमान हो उपरांत महाराज शत्रुंजय हटगये और पौंड्र और मार्तंडविक्रम और कालपर्यंक आदि राजाओंने बढ़कर साष्टाङ्गदण्डवत् कर चरणोंको स्पर्श किया श्रीराजाधिराजने सब से यथायोग्य मिलकर सबको अपने २ बाहनोंपर सवारहोनेकी आज्ञादी और वे सब सवारहोकर श्रीराजाधिराज के चारों ओर स्थितहोकर रणभूमि की ओर चले उससमय युद्धके वाद्यबजने लगे कि एकसाथही सब दिशा उस शब्द से पूरित होगईं ॥

दो० । वाद्यघोषसे होतभो तहां शब्द उत्पन्न ।
होइहै जय हरि भक्त की जो दृढभक्त्यासन्न ॥

निदान शनैःशनैः उस प्रातःकाल की उस उत्तम वायुमें श्रीराजाधिराज की सवारी उक्त तय्यारी के साथ रणभूमिमें पहुंची वहां दूसरी ओर राजा महावीर व अशल्य और अद्भुत मिथ्या ईश्वर की सेना सब शूरबीरों सहित धनुष बाण

खड्ग भिंदिपाल और तोमर आदि अनेक २ प्रकार के अस्त्र लियेहुए युद्धके लिये सन्नद्ध खड़ी थी और शत्रुसेना को देख रही थी इतने में महोल्का जिसका स्वरूप इससमय प्रहास बनायेहुए था अपने चालीस सहस्र म्लेच्छों की सेना को लेकर महोर्गपर सवार मुंड और महामुंड दैत्यों से युक्त आपहुंचा और युद्धभूमिके एक देशमें ठहरगया उसकी सेना के म्लेच्छ पाषाण और अग्नि की वर्षाकरतेथे और मायासे कभी वायु चलाते कभी बादल करदेते कभी जल वर्षाते और कभी बिजली चमकाते थे और शंख आदि वाद्य बजाते थे उनको देखकर सब सेना भयभीत होगई पक्षी अपने घोंसले भूलगये पशु जहां तहां दिशाओं में भागे और सेना के मनुष्यों के हाथ पावँ फूलगये कोई उनसे युद्धकरने का उत्साह नहीं करताथा पृथ्वी भी कँपती थी और सूर्य भी धूलसे मलीन होगया था निदान भृत्यगण उस युद्धभूमिमें भेजेगये उन्होंने सब वृक्ष और झाड़ी झंकारको काटकर अलग किया और नीची ऊंची पृथ्वी को समानकरके रणभूमि निष्कंटक करदिया फिर दूसरे भृत्योंने आकर सब पृथ्वी पर जलका छिड़काव किया ये भृत्य रुपहरी वस्त्रों से अलंकृत थे और हाथमें सहस्र छिद्रान्वित जल यंत्र लियेहुए पृथ्वी को मार्जन करनेलगे उसके कारण से सब धूल बैठगई और एक शूरवीर दूसरे को देखने लगा दोनों सेनाओं के वीर लोहके अस्त्रोंसे यहांतक अलंकृत थे कि केवल लोहही उनके शरीरपर जानपड़ता था इसके उपरांत व्यूहरचना होने लगी प्यादे बराबर बराबर आगे खड़े किये गये उनके पीछे सवार घोड़े से घोड़ा मिलाकर खड़े किये गये और उन सबके आगे और पीछे और दाहिने और बायें शूरवीर लोग और सेनापति युद्धके लिये स्थित किये गये यह व्यूहरचना होरही थी कि इतने में कवीश्वरों के सुकुमार स्वरू-

पवान् पुत्र रणभूमिमें आकर सब शूरवीरोंको वीररस सुनानेलगे !

क० । आवै वीरविक्रम प्रचारे जो समरबीच तिनहूंको झपटि डपटि नेकहारैना । जाहिरहै जम्बूद्वीप श्रीप्रताप शत्रुंजय दान सनमान समय शोच उरधारैना ॥ द्विज बलदेव कहैं बकसि बितुखडदेत झुंड झुड गुणिन को लखिके विचारैना । हल्लाहै कुवेरके महल्लामें त्रसितमेरु कोविद कविन हित मोहूको उपारैना १ गरदकै उड़त ढक्यो मार्तंड मंडलकै बाने फहराने जब ढिग आनि अरिके । तमकि तमकि तब राजेकराजिलै बीर बिरुझाने खरुझाने जैसे बाघथरिके ॥ मराडनि विरचि लीनीघोरिन की बागदीनी दौरिके दरेरे जिमि भादोंकी लरिके । जित तित बिजली सलोहलगे लहकन बरसन बाणलागे जैसे बूंद झरके २ ॥

वसुकलाछंद । हे सुभट शुद्ध । अब करहु युद्ध ॥
शरशक्ति घोर । बर्षो अथोर ॥
सेनासमंग । करि अंग भंग ॥
शत्रुहि भजाय । देउ विजय चाय ॥

रोलाछंद । युद्धकरि तनत्यागि क्षत्रीलहै ऊरधलोक । युद्धमें तनत्याग क्षत्रिहि श्रेष्ठ त्यागो शोक ॥ राम लक्ष्मण हनुमतादिक वीरवर गुणधाम । ख्यातहैं संसारमें करि वीरता शुचि थाम ॥ रोग क्लेशितहोय शय्यापर न मरिबो श्रेष्ठ । युद्धमें करि शूरता है मरण सुखद यथेष्ट ॥ जानि अस हे शूरवीरो करो युद्ध महान । मारि शत्रुहिलेहु जययश वर्षि अस्त्र अमान ॥

इस संसारमें मरना निश्चय है इससे समरमें जय लेकर प्रशंसापाना अथवा मरकर स्वर्गमें जानाही श्रेष्ठहै इससे हेशूर-वीरो रणधीर होकर युद्धकरो और शत्रुके लोहे के अस्त्रों से भी विमुख न हो क्योंकि संसारमें यह दोहा विख्यातहै ॥

दो० । लोहा लोहा सब कहैं लोहा बड़ी बलाय ।
पग आगे तो पतिरहै पग पाछे पतिजाय ॥

निदान कवीश्वर लोग उक्तप्रकारसे कहकर रणभूमिसे हट गये उनको सुनकर हरएक शूरवीरका हृदय वीररस से भरगया औरसबने क्रोधसे लाल २ नेत्रकरके धनुष बाण और खड्ग आदि अस्त्रप्रहार करनेको सज्ज किये कि इतनेमें महोल्कानेमुंड

और महामुंडको आज्ञादी कि मेरे महोर्ग बाहनको रणभूमिमें पहुंचादो उन्होंने वैसाही किया और फिर उसदैत्यने जो प्रहास था बड़े उच्चस्वरसे पुकारकर कहा कि हे शत्रुंजय हमारे अद्भुत परमेश्वर सन्मुख प्राप्तहैं इनको नमस्कार करके इनकी उपासना करो नहीं तो मैं तुम्हारा शिरकूटनेक आयाहूं जो कुछ पराक्रम रखतेहो रणभूमिमें आकर दिखाओ यह सुनकर महाराज शत्रुंजयने अपने सुग्रीव घोड़ेको उसओर फेरा जिधर श्रीराजाधिराज स्थितथे और अनन्ताचार्यने गारुड़ी यंत्रको घुमाया कि उससे ३६ गरुड़ उत्पन्नहुए और जयनारायण जयनारायण का शब्दहोनेलगा इस गारुड़ी यंत्रको गर्गमुनिने निर्मितकिया था जब वह यंत्र घुमायाजाताथा तब उसमेंसे ३६ गरुड़ उत्पन्न होजातेथे और उसमेंसे बड़ी सुगंधित वायु निकलतीथी और उस वायु के साथही जयनारायण जयनारायणका शब्द होताथा उनको देखकर बड़े २ नाग और महोर्ग भयभीतहोकर भागजाते थे उससमय सब शूरवीर और राजपुत्र उस यंत्रके प्रयोग को देखनेलगे कोई युद्धको नहीं गया और महाराज शत्रुंजयने राजाधिराजके निकट जाकर घोड़ेसे उतरकर युद्धकरने की आज्ञा मांगी महाराजने अपने चित्तकी प्रस[illegible]ता सूचित करनेकेलिये अग्निमुखी पात्रमें वीररस भरकर दिया शत्रुंजय ने उस को लेलिया और सेनापतिको देदिया इस अग्निमुखी पात्र और वीररसकी कथापूर्वार्द्ध में वर्णित है संक्षेपवृत्तांत उसकायहहै कि महाराज शत्रुंजयने एक बड़ेराक्षस अग्निमुख नाम को युद्धमें माराथा यह उत्तमपात्र उसकेपाससे निकलाथा प्रभाव इसपात्रका यहथा कि इसमें भरकर रसदेने से मनुष्य वीररससे छकितहोजाया करताथा वह पात्र शत्रुंजय ने राजाधिराजको निवेदन किया और राजाधिराज तबसे युद्ध के दिन जिसकिसी से बहुत प्रसन्नहोतेथे उसको उस पात्र में

अमृतरूपी रसभरकर पानकराते थे निदान महाराज शत्रुंजय उस स्नेहपूर्वक दियेहुए पात्र के रससे वीररसमें छकितहोकर फिर अपने सुग्रीवनामी घोड़ेपरसवारहुए और उदयहुए मार्तण्डकी सदृश प्रकाश करतेहुए उस उत्तम अश्वपर रणभूमि की ओर चले उससमय वह घोड़ा उछलता कूदता और कलोलें करताहुआ आगेको बढ़ा॥

जयकरी छंद। सोतुरंग कांचनवर्ण। अति प्रबल उन्नतकर्ण॥
करि बायु वेग प्रचंड। हिहनायकरि महिखंड॥
पहुँचो निमिषमें तत्र। हो शत्रु को दलयत्र॥

निदान जब वह घोड़ा महोल्का दैत्यके पासपहुँचा तब उस दैत्यने माया करने के बहानेसे हाथ में एकश्रीफल लिया और उसपर सबके दिखाने को कुछ मंत्र पढ़नेलगा पर वहमंत्र न था महाराज शत्रुंजयसे यक्षोंकी भाषा में यह कहताथा कि में महोल्का दैत्यनहींहूं मैं आपका प्रहास नामी दासहूं आपभास्कर-अस्त्र छोड़कर मुझको पकड़ लीजिये परंतु मैं एक सुकुमारमनुष्यहूं तुम हट्टेकट्टेहो इसप्रकारसे पकड़ना कि मेरे चोट न लग जाय एकसमय जब महाराज शत्रुंजय प्रहास सहित वितलखंडमें यक्षोंसे युद्ध करनेगयेथे तब वहां से दोनों यक्षोंकी भाषा सीख आयेथे इसकी कथा ग्रंथके पूर्वार्द्ध में है निदान महाराज शत्रुंजयने प्रहासकी बाणीको सुनकर उसकी ओर देखा और प्रहासकी बाईंआंख में जो तिलथा उससे शीघ्र पहिचानलिया कि यहमहोल्का नहीं है किंतु प्रहास है और चित्तमें आश्चर्य युक्तहोकर उसके अलौकिक स्वरूप बनानेकी प्रशंसाकी इतने में महोल्काने उस श्रीफलरूपी अस्त्रको शत्रुंजय पर छोड़ा शत्रुंजयने उसीसमय भास्करअस्त्र का प्रयोगकिया उससे वह श्रीफल गिरपड़ा और वह माया का निर्मित महोरग जिसपर महोल्का सवारथा नष्ट होगया तब वह एक त्रिशूललेकर शत्रुंजय

की ओर दौड़ा शत्रुंजयने स्थानसे चलितहोकर उस त्रिशूलके प्रहारकोबचाया और घोड़े से कूदकर उसको पीछेसे पकड़लिया और सब म्लेच्छों से पुकारकर कहा कि तुम्हारा सेनापति मैं-ने पकड़लिया यहदेखकर सब म्लेच्छ चारों ओरसे धरु धरु कहतेहुए दौड़े महाराजने महोल्का रूपी प्रहास को अपने साथ के वहरूपीको देदिया और वह उसको लेकर अपनी सेनाकी ओर चलागया और महाराज वहांसे नारायणास्त्रका प्रयोगक-रते हुए म्लेच्छों की ओर चले उससमय अद्भुत मिथ्या ईश्वर और राजा महावीर और राजा अशल्यने अपने सेनापतियों को ललकारा और उधर श्रीराजाधिराजने अपनीसेनाको आज्ञा दी निदान दोनोंओर से समुद्रकी भांतिसेना उमड़कर भिड़गई और अस्त्र शस्त्र एक दूसरेपर प्रहार करनेलगे उससमय का घमसान बड़ाही बिचित्रथा ॥

चौ०। हयहींसन गज गर्जनिभारी। रथघंटनिकी ध्वनिबिकरारी ॥
अगणितबाद्य भेद्यश्रुति मर्दन। अरुभटगणको भूरिनिनर्दन ॥
भोअतिदुसह शब्दतेहिक्षणमें। पूरिरह्यो सर्वथा गगनमें ॥
वीर अभीर धीर अति कोपे। करिकरि युद्ध प्रलय आरोपे ॥

उससमय मुंड और महामुंड नामी म्लेच्छोंने सबम्लेच्छी सेनासे कहाकि हमारा सेनापति पकड़गया इससे हमनहींजानते हैं कि वह महाराज शत्रुंजयकी ओर रहकर युद्धकरेगा अथवा नहीं इससे हमको उचितहै कि युद्ध न करें और जबस्वामीकी इच्छाजानपड़े उससमय अपने स्वामीका साथदेवें यहसमझकर सबम्लेच्छोंकी सेना सिमिटकर रणभूमिसे एकओरको खड़ीहो-गई और अद्भुत मिथ्याईश्वर और राजा महावीरकी सेना से युद्धहोना प्रारम्भहुआ चारोंओर [illegible] स्त्रोंका प्रयोग और बाणों का योगहोनेलगा शूरवीर अपने अपने राजाओं के प्रतापकहै कह एकदूसरेको मारनेलगे भिंदिपाल और तोमरोंसे शत्रुओंको

काटने लगे एक खड्ग लेकर दौड़ताथा दूसरा उसके प्रहारको अपनी ढाल पर बचाताथा फिर दोनों ओरसे बाणोंकी वर्षाहुई और उनसे भिदभिदकर शूरवीरोंसे यमपुरकी वृद्धीहुई सेनापति उससमयशूरवीरोंको अनेक २ शूरताके पदोंसे युद्धका उत्साह दिलातेथे कोईकहताथा—गहिगुरुगदाभीमसमभिरके। जयशत्रुनृशत्रुंजयकहिके॥ दूसरा बोलताथा—अर्जुनरूपवीरधनुधारी। होतुममहाप्रबलरणचारी॥ इसप्रकार से शूरवीरबीररस में भर भर कर युद्धकरतेथे क्या वर्णन कियाजाय॥

तोमरछंद। गुरुगदा मूशलपत्र। वर्षणलगे सब तत्र॥ अरु भल्ल शक्ति अनेक। कीकिए भरि गहिटेक॥ दोउओर योधा चंड। अतिचपल करि कोदंड॥ करि चक्रसम दोर्दंड। की बाणवृष्टि अखंड॥ बधिगये अगणित वीर। बिचलाय अगणित भीर॥

वसुकलाछंद। इमि सुभट शुद्ध। अति किएयुद्ध॥ शरशक्ति घोर। वर्षे अथोर॥ बहुरुणड मुणड। पगपाणिशुणड॥ ध्वज धनुप बान। पाखर महान॥ मणिमुकुटजूह। भूषण समूह॥ सब शस्त्रभेद। घायलसखेद॥ महि रुधिरधार। निरखेअपार॥ महिभई भूप। अतिभयदरूप॥

निदान महाराज शत्रुंजयकी सेनाने इसवीरतासे युद्धकिया कि अद्भुत मिथ्या ईश्वर और राजामहावीरकी सेना उसके सन्मुख ठहरनेको समर्थ न हुई और ह्रासचित्त होकर कुछ व्यवसाय न करसकी उससमय चित्रांगद ने विचारकिया कि यदि यहांसे भी भागनापड़ैगा तौ फिर कुछ न बनसकैगा इसकारणसे उस ने सेनाके युद्ध त्यागकी दुंदुभी बजानेकी आज्ञादी और उसकी सबसेना शूरवीरों सहित लज्जित होकरफिरी यहदेखकर महाराजशत्रुंजय ने जयदुंदुभी बजवाई उसयुद्धमें तीससहस्र वीर महाराज शत्रुंजयकीसेनाकेऔरतीनलक्षवीर शत्रुसेनाकेमारेगये महाराजने अपनेवीरोंका आवश्यक ऊर्द्धदेहिक कर्मकराया और शत्रुने अपने वीरोंको उठवाकर अपनी रीतिपर क्रियाकराई निदान उसदिनसभामें महाराज नहीं बैठे परंतु दूसरेदिन बिराज-

मान होतेही उस महोल्का रूपी प्रहासको बुलाकर पूंछा कि तू उस त्रिलोकी नाथ सच्चिदानंद परमेश्वरके सत्य होनेमें क्या कहता है वह बोला कि यावज्जीवामि दासोस्मि यह सुनकर महाराजने उसको वस्त्रादिसे अलंकृत करके छोड़दिया तबवह महोल्का रूपी प्रहास वहांसे सवार होकर अपनी सेनामें गया और सब म्लेच्छों से बोला कि मैं आजसे महाराज शत्रुंजय का आज्ञावर्त्तीहूं तुमसबको भी उचितहै कि मेरेसाथरहो और मुझसे अन्यथा न हो यह सुनकर कई एक म्लेच्छ तो अप्रसन्न होकर महेन्द्रके पासचलेगये और बाकी सब महाराज शत्रुंजयके यहां महोल्कारूपी प्रहासके साथ चले आये यहां महाराज शत्रुंजयकी तीनसभाके डेरे थे एक का नामसणिभद्रथा दूसरेका नाम उपेन्द्रीय था जिसको राजा विशल्यने उपेन्द्रसे बहुत द्रव्य खरच करके बनाया था और महाराजने विशल्य और उपेन्द्रको मारकर वह डेरा लियाथा और तीसरे डेरेका नाम भास्करी था इसका प्रभाव अद्भुत था प्रथम तो कोई उसको उल्लंघन करनहीं आसक्ता था क्योंकि जितना मनुष्य ऊंचा जाता था उससे अधिक ऊंचा वह होताजाताथा दूसरे उसमें कोई सुरंगसे नहीं जासक्ता था क्योंकि जितनी नीची पृथ्वी खोदाजातीथी उतनाही नीचा वह होताजाता था तीसरे वह किसीअस्त्रसे अभेद्यथा चौथे उसकेभीतर यदि कोई मायावी आजाय तो वह भस्म होजाता था यह डेरा महाराजको राजा भास्करने दियाथा निदान उसदिन महाराजने सभा उपेन्द्रीय डेरेमें की वहां प्रहासने अपनी थैलीमेंसे महोल्का दैत्य को निकाला और उस को एक खम्भसे बांधकर उसकी जिह्वाको शूचीसे छेद दिया जिससे कुछ माया न करसकै उपरांत उस को चैतन्य नास देकर सचेत किया चैतन्य होतेही वह अपने को पकड़ाहुआ और अपने सन्मुख अपने स्वरूपका दूसरा

दैत्य देखकर बहुत घबराया तब प्रहासने कहा कि अरे दुष्ट तू-
ने देखा कि मैंने ईश्वरकी कृपासे किसप्रकारसे तुझको पकड़ा
है वह राजपुत्री जिस को तैंने अपने कोठे पर बुलाया था वह
राजपुत्री न थी किन्तु मैंही उस परमात्माकादासथा जो तुझको
पकड़कर यहां लेआया और तेरी सब सेना अब महाराज के
यहां नौकर होगई है और उनकी आज्ञामें है और वह राज-
पुत्री अर्थात् तेरी प्रिया भी मेरे पास पकड़ीहुई है सो यदि तू-
भी महाराजकी आज्ञामें रहना अंगीकार करैतो तेरे प्राणछोड़
दियेजावें और तेरी प्रियाभी तुझको मिलजाय और जो तुझको
अपने राज्यकी चिन्ता हो कि महाराज महेन्द्र उसको ले
लेगा तौ महाराज शत्रुंजय तुझको एक राज्यके बदले चार
राज्यदे सकते हैं इसबात को सुनकर महोल्का दैत्यने बिचार
किया कि निश्चय यह अद्भुत मिथ्या ईश्वर है यदि यह सत्य
होता तौ इसगति को न पहुंचता और फिर अपनीदशा और
अपने मित्र रहित स्थानमें होनेको जानकर हाथसे बताकर
कहा कि मुझको महाराज शत्रुंजयकी आज्ञामें रहना स्वीकार
है तब प्रहासने वह शूची उसकी जिह्वामेंसे निकालकर उस
को छोड़दिया छोड़तेही वह महाराज शत्रुंजय के चरणों पर
गिरपड़ा महाराजने उसका आदरकिया और बस्त्रादि से अलं-
कृत करके उसको अपने यहांके सेनापतियों में भरती करलि-
या अब श्रोताओं को विदितहो श्रीराजा धिराज के बैठनेकी
सभाका जोडेराहै उसमें चालीस खम्भ हैं उसकी बराबरही
महाराज शत्रुंजयकी सभा का डेरा खड़ा होताहै और उसके
बाद एकडेरा और रहताहै और उसमें महाराज शत्रुंजयकेपुत्र
प्रपौत्र और युवराज और प्रहासके पुत्र बिराजतेहैं औरबाकी
जितने राजाहैं उनके बैठने का स्थान राजा धिराजकी सभाके
बाहर महाराज शत्रुंजयके दक्षिण और बामपार्श्व में है जो

सेनापति और राजा दक्षिण पार्श्वमें बैठते हैं उनके अधिपति का नाम पुंडरीकहै और जो बामपार्श्वमें बैठतेहैं उनके स्वामी का नाम अनन्ताचार्यहै इनदोनोंपार्श्वोंके बैठनेवालेसेनापतियों मेंआपसमें बिरोधसारहाकरताहै क्योंकि युद्धमेंएकदूसरेसेअपना व्यवसाय अधिक दिखानाचाहतेरहते हैं इसीकारणसे इनसब सेनापतियोंकेसाथ रहनेवाले जोकार्यसाधकबहुरूपियेहैं वहसब यद्यपि प्रहासकेही पुत्रप्र पौत्रादि हैं तथापि आपसमें दक्षिणसे बामा और बामसे दक्षिण निरोध मानतेहैं और महाराजकीसेना में समस्त बहुरूपियों की संख्या एक लक्ष और चौरासी सहस्रहैं उनमें १४ उपअधिकारी हैं और उन उपअधिकारियों के ऊपर चार अधिकारीहैं और उनचारोंकानेतारक और चारों को आज्ञा देनेवाला एकअधिपतिहै और उस अधपतिका गुरू और स्वामी प्रहास है इस अधिपति का नाम उपहासहै और चारों अधिकारियोंके नाम चपला १ सुबास २ महती ३ और बिचक्षण ४ हैं और १४ उपाधिकारी इन नामोंसे बिख्यातहैं तैलंगी १ महराष्ट्री २ गुर्जर ३ मालवी ४ पांचाली ५ बङ्गी ६ कलिङ्गी ७ अङ्गी ८ ताम्री ९ चांद्री १० दाक्षिणी ११ सैन्धी १२ पर्बती १३ और उपदेशी १४ इनसबके आपसके बिरोधकीकथा बड़ी मनोरम है और प्रसंग आने पर आगे बर्णन कीजायगी निदान जब महोल्का सेनापति हुआ तब महाराज शत्रुंजय ने उससे पूछा कितुम किस पार्श्वकी मंडलीमेंबैठना चाहतेहो यहां का यह नियमहै कि बाम अथवा दक्षिण जिस मंडली में बैठना जिसको रुचै उसी में बैठाकरै यहसुनकर महोल्काने बामपार्श्व के सेनापतियों से प्रीतिहोने के कारण से उसी मंडली में बैठना स्वीकार किया और उसमंडलीके अधिपतिने बड़ेआदरसे अपनी मंडली में उसको योग्यस्थान बैठनेको दिया उससमय महाराज शत्रुंजयने कहाकि अब तुम अद्भुत मिथ्याईश्वरकी उपास-

ना छोड़कर श्रीबैष्णवहोजाओ और जिसमायाकेबलसे लोभके लियेतुम अद्भुत की उपासना करतेथे वहसब मिथ्याहै केवलपरमेश्वर और उसके दियेहुए अस्त्रोंका बलही सत्यहै यह सुनकर वह म्लेच्छ रामताड़क मंत्र लेकर बैष्णव होगया इसके उपरांत महाराज ने आज्ञादी कि अब जयहोनेका उत्सव किया जाय यह आज्ञा होते ही सब प्रकारके खाद्य और पेय पदार्थ लाये गये और गंधर्बिणी नृत्यकरने को बुलाई गई उससमय सिवाय महाराज शत्रुंजय के और सब राजा और शूरबीरोंने परस्पर प्रीति पूर्बक एक ने दूसरे को निवेदन करके उत्तम वारुणी का पानकिया और सदानन्दसे मग्नहोकर नृत्य देखनेलगे इसीअवसरमें उस सभा के भीतर एकस्त्री परमसुंदरी ने प्रवेशकिया वहस्त्री बस्त्र और भूषणोंसे अलंकृतथी उसको देखतेही महोल्का जानगया कि राजा महावीरकीपुत्री और मेरीप्रिया कंदर्पनयनीनामहै परंतु उसको बड़ा आश्चर्य यहहुआ कि यह लज्जाछोड़कर सभामें क्योंकर चलीआई निदान उसस्त्रीनेमहाराजके सन्मुख आकर दंडवत्की उसकोदेखकर महाराज आश्चर्यमें आगये परंतु उसीसमय उसस्त्रीने कहा कि महाराजमैं प्रहासका पुत्र सुबासहूं और फिर अपनेराजपुत्रीके भेषमेंराजा महावीरके महलमें रहनेका सबबृत्तांत कहकर कहाकि जबमैंने सुना कि मेरेपिता अर्थात् प्रहास सेनामें चलेआये और राजा महावीर युद्धमें हारकर युद्धत्याग करने की दुंदुभी बजवाकर सेनाको लौटालाया तब मैं राजा महावीर अर्थात् पिताकोदेखनेके बहानेसे अपने दास दासियोंके साथ २ सवारीमें किलेके बाहरआया और वहांसे सवारीमेंसे निकलकरभागा दासमुझे पकड़नेके लिये पीछे दौडे परंतु मैं फलांगमारताहुआ निकल आया और यहां आपहुंचाहूं यहसुनकर महोल्काको बड़ाआश्चर्यहुआ और कहा कि हेपरमेश्वर येलोग कैसास्वरूपबना-

तेहैं कि इतनेदिन महलमें रहनेपरभी किसीने न पहिंचाना जब राजपुत्रीके भागनेकावृत्तांत राजा महावीरको विदितहुआ तब वह खड्गलेकर भागा कि मैं अभी शत्रुंजयकी सेनामें जाकर उसका शिरकाटूंगा यह देखकर उसको राजा अशल्यने पकड़ लिया और कहा कि कोई ऐसाकाम करता है यह संसार का चलनहै देखो हमारे ईश्वर अद्भुत महाराजकी भी दो पुत्रियां जिनके नाम कमलनयनी और पुंडरीकनयनीथे शत्रुंजयकेपुत्रों के साथ भागगई यह सुनकर अद्भुतने कहा अरे बर्णसंकर मेरी पुत्रियोंका नाम क्योंलेताहै वहबोला कि हे ईश्वर मैंने संसारकी रीतिकाहाल कहाहै आप क्रोध न कीजिये निदान वह बात हास्यमें जातीरही और वहां यह सबबातें होहीरहीथीं कि इतनेमें राजा महावीरकेदूत जो वेषबदलकर राजपुत्रीके पीछे २ शत्रुंजयकी सेनामें गयेथे आये और उन्होंने सुबासके मुख का कहाहुआ सब वृत्तांत निवेदन करके कहा कि महाराज वह आपकी पुत्री न थी यहसुनकर राजाअशल्य बहुत हँसा और बोलाकि महोल्काको महाराज महेन्द्रनेभेजाथा परंतु वह युद्धभी न करनेपाया कि उसका गुरूप्रहास उसे पकड़लेगया और आपमहाराज महावीरजी अपने घरकाभी प्रबन्धनहीं करसकतेहैं राज्यका प्रबन्ध आपसे क्याहोगा और शत्रुंजयसे शूरबीर और बुद्धिमान् राजासे क्यायुद्ध कीजियेगा यहसुनकर राजा महावीर बोला कि महाराजमैं आज दूसरापत्र महाराज महेन्द्र को भेजकर उनसे सहायता मांगताहूं और अबकी बार बहुत प्रबन्धकेसाथ युद्ध कियाजायगा यहकहकर उसने एक पत्रमहेन्द्र को लिखा और उसमें सबवृत्तांत महोल्का और उसकी सेना का और युद्धका हाल निवेदनकरके प्रार्थनाकी कि किसी महाउग्र मायावीदैत्यको भेजिये जो आकर हमारे अद्भुत ईश्वरकी पूरी पूरी सहायताकरे निदान वहपत्र पूर्ववर्णित रीतिपर उसपहाड़

पर भेजादियागया और नगाड़ेपर चोटलगातेही महेन्द्रने हस्त भेजकर उसपत्रको मँगाया और उसकोपढ़कर महाक्रोधित हो· गया और अपने सभासदों से बोला कि देखो महोल्कादैत्य तो अपने धर्म और अद्भुत ईश्वरकी उपासनाको छोड़कर शत्रुओं का आज्ञावर्त्ती होगया इससे मैं चाहताहूं कि तुममेंसे कोई जा·· कर शत्रुंजय की सेनाको बिध्वंसकरके महोल्कादैत्यको बांधकर मेरेसमीप लेआवो यहसुनकर महेन्द्रकी सभामें जितने म्लेच्छ और म्लेच्छीआदि बैठीहुई उसकी उपासनाकररहीथीं उनमेंसे एकदानवी हिडम्बानामी जो बड़े ऊंचे आसनपर बैठीथी उठी और महेन्द्रको दण्डवत् करके बोली कि महाराज यहयुद्ध मैं करूंगी यहसुनकर महेन्द्र ने उसको वस्त्रादिसे अलंकृत करके बिदाकिया और कहा कि देखो बहुरूपियों से बहुत होशियार रहना निदान वह दानवी वहांसेचलदी और अपनेदेशमें जहां की वहरानीथी उसने बीससहस्रदानव और दानवीयोंको आज्ञा दी कि शीघ्र युद्धका सबसरंजाम ठीककरके मेरेसाथ रत्नाकर पर्वत की ओर चलो निदान यहां तो सरंजाम ठीक होनेलगा और वहां महेन्द्र ने उस पत्रका यह उत्तर लिखकर कि हि- डम्बादानवी भेजीजाती है वह शत्रुंजयकी सेनाको नाशकर- देगी उसी पहाड़पर भिजवादिया राजा महावीर के अनुचरोंने उसपत्रकोलाकर राजाकोदिया और वह उसेपढ़कर बहुतप्रसन्न हुआ यह सबवृत्तान्त दूतोंने जाकर महाराज शत्रुंजय से निवे- दन करके कहा कि महाराज राजामहावीरके उसपत्रको पढ़कर प्रसन्नहोनेसे सूचितहोताहै कि कोई प्रबल दानव उसकी सहा- यताको आनाचाहता है यहसुनकर महाराज शत्रुंजयबोले कि जबतक इनमायावी म्लेच्छोंका देशबिजय न कियाजायगा तब तक इसीप्रकारसे दैत्य और दानव और म्लेच्छ युद्धकेनिमित्त आयाकरेंगे और मेरापुत्रभी तबतक नहींछूटैगा इससे हे प्रहा-

ए प्रथम तुम राजा महावीरकी कंदर्पनयनी पुत्री को अपनी थैलीसे निकालकर रनिवासमें भेजदो और उसकाबिवाह महोल्कासे करादो और हमारे कोषसे उस राजपुत्री के व्यय के वास्ते यथायोग्य बन्धानकरादो और उससेकहदो कि उसमिथ्या ईश्वरकी उपासना छोड़कर श्रीविष्णु भगवान्‌की उपासना करे यह सुनकर प्रहासबोला कि सुनिये मेरी थैलीकाहाल यह है कि—लवणागरेयन्निपातितम् लवणंभवेत्—वह एकबस्तु ऐसी है कि उसमें कोई पदार्थ रखलियाजावे परंतु जबतक उसका प्रतिनिधि उसमें नरक्खाजावे तबतक वहपदार्थ निकाला नहीं जासकता इससे यदि आप मुझको राजपुत्री के बदले धनदें तौ मैं राजपुत्रीको निकालूं यहसुनकर महाराज बहुतहँसे और प्रहासको कईलक्ष मुद्रादिये उसने वह सबद्रव्य लेलिया और राजपुत्रीको थैलीमें से निकालकर अपने डेरे में बैठाया और महाराजने जो वस्त्रभेजेथे वह राजपुत्रीने धारणकरलिये परंतु बहुत चकितथी और कहतीथी कि मैं कहांहूं और येसब कौन हैं इतनेमें महाराज शत्रुंजय वहांआये और कहनेलगे कि हे राजपुत्री मेरे बहुरूपिये तुझको पकड़कर यहां लेआयेहैं और फिर उससे सब पूर्बवृत्तांत कहकर कहा कि वह तेराभक्त महोल्का यहां हमारी सेनाका सेनापतिहै यदि तुझको उसके साथ हमारी सेनामें रहनाहो तो यहांरह नहींतो तुझको तेरे पिताकेपास पहुंचवादियाजाय यहकृपायुक्तबातेंसुनकर उसराजपुत्रीनेकहाकि मुझको आपका मत स्वीकारहै तब महाराजने उसकाबिवाह महोल्काके साथ बिधिपूर्वक करादिया और दोनोंको बहुतसाधन और राज्यदिया इसके उपरांत महाराजनेकहा कि श्रीगार्गेयजीको बुलालाओ उनकी आज्ञासे भृत्यगणोंने दौड़कर गार्गेयजीसे कहा कि आपको महाराज बुलातेहैं वह गर्गपुत्र तुरंतचलेआये श्रीमन्महाराजने बड़े सन्मानसे उनको बैठाया और कहा कि आप

केरलकी रीतिसे बिचारिये कि यह मायावी म्लेच्छों का देश किसके हाथसे विजय होगा उनकी आज्ञानुसार गार्गेयजी ने बिचारकर कुंडली खेंची और लग्न और ग्रहोंको बिचारकरकहा कि महाराज भविष्यका जाननेवाला तो केवल ईश्वरहीहै परंतु उसी ईश्वरकी रचीहुई विद्याके अनुसार हमारे बिचार में यह देश आपके दोहित्र भानु विक्रम के हाथसे विजयहोगा और उसके साथ पांच बहुरूपियोंका भी जाना उचितहै नाम उनके ये हैं प्रथम तो उपहास जो इन्द्रसे बरदान पाचुकाहै दूसरा चपला कि वह आपके दोहित्रका साथी होनेसे अवश्य जायगा—तीसरा उपदेशीहै चौथेकानामप्रचण्डहै और पांचवां कार्य साधक बहुरूपिया जिसकाजाना उचितहै उसके नामका पहला अक्षर प्रहै यहसुनकर प्रहास जानगया कि मुझको कहते हैं और बोला कि महाराज एक ज्योतिर्विदकाभी जाना अवश्य है केवलबहुरूपियोंके जानेसेही कार्यसाधन न होगा यहसुनकर गार्गेयजी बोले कि देखिये महाराज हमने प्रहासजीका नामइसी कारणसे नहीं बतायाथा तिसपरभी प्रहासजीने हमपर हास्य किया अब आपजाने हमाराकाम केवल नामबतानेकाहै यहसुन- कर महाराजबोले कि हेप्रहास तुम्हारा नाम निकलाहै अबतुम- कोही जाना होगा प्रहासने कहा कि महाराजमैं कदापि नजा- ऊंगा इसके पीछे महाराज ने गार्गेयजी को धन देकर बिदा किया और राजपुत्र भानु विक्रमको बुलाकर आज्ञाकी कि हे पौत्र तुमजाकर इसविस्मयी मायारचितदेशको विजय करो यहसुन- करवहराजपुत्र महाराजको दंडवत्करके अपनेस्थानपरआया औरचलनेका सरंजामकरनेलगा फिरमहाराजने दशलक्ष मुद्रा मँगवाकर पांचलाखतो प्रहास को दिये और पांचलाख दूसरे चार कार्य साधक बहुरूपियों को देकर आज्ञाकी कि यह द्रव्य अपने व्ययके निमित्त लेकर तुमलोग राजपुत्र भानुविक्रमके

साथ जाओ यह देखकर प्रहासबोला कि महाराज मुझको द्रव्य की तो ऐसी कुछ आवश्यकता न थी और मैं कदापि न जाता परंतु आपके पुत्र भीमविक्रमके पकड़ेजाने के कारण से मुझे अवश्य जानापड़ा और आपने इतना द्रव्य इन मेरे शिष्योंको क्यों दिया जान पड़ताहै कि आप इनको नष्ट किया चाहतेहैं यह कहकर प्रहासने अपने उन चारों शिष्योंसेकहा कि अरेदुर्बुद्धियो तुमसब इतना द्रव्य लेकर क्या करोगे मुझे देदो मैं रखछोडूं तुम्हारे काम पीछेसे आवैगा और तुमलोगोंको बहुरूपधारिणी विद्या के सीखनेसे क्या प्रयोजन निकला जो तुम घरसे द्रव्य लेकर व्ययकरो तमको तो उसदेशसे और द्रव्यउपार्जन करके लाना उचित है और मैंने जो द्रव्य लियाहै उसका कारण यह है कि मेरा आवश्यक व्यय बहुत अधिक है यह सुनकर उन शिष्यों ने बिचारा कि हमारे आचार्य अबद्रव्य देखचुकेहैं छोड़ेंगे नहीं यह बिचारकर उनचारोंने वह पांचलाख मुद्रा प्रहास को देदिये उसने सबद्रव्यको अपनी थैलीमें रखलिया और अपने डेरे में आकर चलनेका सरंजाम करनेलगा और वे चारों बहुरूप धारिणी विद्याके वेत्ता भी अपने यत्नको प्रबन्ध करनेलगे और महाराजने उनचारोंकोप्रहाससेछुपाकर औरबहुतसाद्रव्यदिया॥

इतिविचित्रचरित्रप्रथमखण्डेद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

राजकुंवर श्री भानुविक्रमका सेना सहित विस्मयी माया रचित देशको विजयकरनेको चलना और उसकेसाथ पांच बहुरूप धारिणी विद्याके वेत्ताओंका जाना और उसदेशमें पृथक् २ प्रवेशकरना और मायावी म्लेच्छोंसे समागमहोना ॥

जयकरीछंद । हेवागीश वरदमतिधाम । देउमोहिं पीयूषललाम ॥

जाके पानहोइ वरबुद्धि। तृष्णाक्षुधारहितअतिशुद्धि॥
जाहिपायकरिसकोंबखान। उत्तमबिमलप्रसंगअमान॥
विस्मयमाया रचितअनूप। चमत्कार अतिअद्भुतरूप॥

सौरभ महाराजने इसअध्यायमें इसप्रकारसे इसइतिहासको वर्णनकियाहै कि राजपुत्र भानुविक्रमने अपनी सभामें आकर चालीससहस्र अश्वसादियों को आज्ञादी कि तुमलोग शीघ्र तय्यारहोकर मेरे साथ विस्मयी माया रचित देशकी बिजयको चलो उसकी आज्ञापाकर सब अश्वसादी शीघ्र२तय्यारीकरने लगे और निवास और सभा और पाकआदि कर्मों के करनेके पृथक् २ डेरे छकड़ों और वाहनों पर लादेगये और शूरबीर लोग अपनेको अस्त्रोंसे अलंकृतकर चलनेकेलिये उद्यतहोगये उससमय राजपौत्र भानुविक्रम रनिवासके डेरेमेंगया और अपनीमाता सुदेष्णाको दंडवत् करके विनयकी कि मातामह जीने मुझको आज्ञादीहै कि तुम दानवी देशमें जाकर अपने मातुल अर्थात् राजपुत्र भीमविक्रमको छुटानेके वास्ते जाओ सो मैं वहां जानाचाहताहूं और तुझसे आज्ञामांगने आयाहूं इससे हे माता मैंने जो कुछ जाने अथवा बिनाजाने अपराध कियाहो उसको क्षमाकरके मुझको जानेकी आज्ञादे सुदेष्णा एक तो अपने भाई राजपुत्र भीमविक्रमके पकड़ेजानेके कारण से म्लानचित्त रहतीथी और जब उसने सुना कि बेटा भी मेरा उसीओर जाताहै तब उसका हृदय करुणासे भरिआया और उसने प्रेमके आंसुओंको नेत्रोंसे छोड़कर पुत्रको हृदयसे लगा लिया उसीसमय यहवृत्तांत सबरनिवासमें फैलगया कि राजपौत्र भानुविक्रम अपने मातुल भीमविक्रमको छुटानेके लिये जाताहै उससमय महाराज शत्रुंजयकी सब रानियोंने आकर राजपौत्र की बलैयालीं और बहुतसे यंत्र उसके गले और भुजापर बांधे इसके उपरांत रानी सुभद्रा जो भानुविक्रमकी सगी नानी थी

स्नेहसे बहुतरोनेलगी परंतु अंतमें सबने आशीर्बाददेकर बिदा किया वहांसे आकर भानुविक्रमने उस अस्त्रालयको खुलवाया जो पौलोम मायाजालको विध्वंसकरके प्राप्तहुआथा कथा स की ग्रंथके पूर्वार्द्धमें वर्णन होचुकीहै निदान उसको खुलवाकर उसने सब अश्वसादी और सेनापतियोंको अभेद्यकवच और खड्ग आदि अनेक अस्त्रदिये और सुवर्ण और चांदी से मढ़ेहुये नगारोंके हाथी और ऊंटोंपर रखवाया और बहुत सा धनभी अपनेसाथ लिया और एकदिन औररात्रि वहांरह कर सब सेनापति और राजाओंसे मिलापरहा सबने भानुविक्रमको जयका आशीर्ब्बाददिया उपरांत दूसरेदिन प्रभातसमय मार्तंडमण्डलके उदयहोनेकी बेलामें पूजनादि नित्यकर्मसे निबट कर वह राजपुत्र सवारहुआ उससमय डंकेपर चोटपड़ी और मांगल्य बाद्य और नगारे बजनेलगे उससमय महाराज शत्रुंजय अपने मुख्य सभासदों सहित पूजनमें थे नगारोंका शब्द सुनकर पूछनेलगे कि ये नगारे कैसे बजतेहैं भृत्यगणोंने निवेदनकिया कि महाराज राजपुत्र भानुविक्रमकी यात्रा होरही है महाराज यह सुनकर सबसे बो‌ले कि चलो यात्रा का सामान हमलोगभी देखें और मैं एकबार अपने दौहित्रको चलते समय देखलूं यह कहकर महाराज उन मुख्य सभासदों सहित बाहरआये और एक ऊंचेस्थानपर खड़ेहोकर सब सरंजामदेखनेलगे प्रथम हाथियोंका झुंडनिकला सबहाथी गोटेकीझूल चांदीके हौदा और चित्र बिचित्र बस्त्र और आभूषणोंसे अलंकृतथे और उनके ऊपर उनके प्रेरक बस्त्र और भूषण उत्तम धारणकियेहुये सुवर्ण और रजतमयी अंकुश हाथमें लियेहुये बैठेथे और हाथियोंके मस्तक और अंगोंके बस्त्रोंपर सुनहली अक्षरोंमें यहशब्द लिखेहुये थे—श्रीनारायणायनमः- श्रीगोविन्दायनमः- श्रीविष्णवेनमः-श्रीहृषीकेशायनमः इनके पीछे उस-

सबस्र और भूषणोंसे अलंकृत ऊंटोंकीकतार निकली जो रेशम की डोरियोंसे बंधेहुये थे और उन ऊंट और हाथियों के ऊपर सुवर्ण और चांदी से मढ़ेहुये नगारे रक्खेहुये थे उनको चित्र बिचित्र बस्त्रोंसे अलंकृत बाजा बजानेवाले बैठेहुये बजातेजाते थे और शंख और भेरी आदि अनेकप्रकारके बाजोंको बजाते हुये दूसरे मनुष्य उनपर बैठे थे परमशोभा देतेथे उनके पीछे ऊंटों पर नानाप्रकार की ध्वजा और पताका जिनमें सुनहला और रुपहरा काम होरहाथा सहस्रों मनुष्य हाथ में लियेहुये शोभा देतेहुये निकले उनकेपीछे पांचसहस्र पैदलमनुष्य शिर पर एकरंगकी पगड़ी देहपर एकरंगके उत्तम वस्त्रों की मिरजई कमरके नीचे श्वेतबस्त्रकी धोती और पैरोंमें एकप्रकारके उपानह धारणकिये सब ढाल खड्ग फरसा भल्ल और२ आयुधोंसे युक्त निकले उनके पीछे चारसहस्र अश्वसादी एक उँचाई के उत्तम घोड़ों पर पृथक् पृथक् रंगके घोड़ोंकी पृथक् २ कतार लगायेहुये प्रति कतारके घोड़ोंपर घोड़ोंहीके रंगके बस्त्रधारण किये आभूषणोंसे अलंकृत शक्ति भल्ल असि चर्म फरसा तोमर और२ अस्त्रोंसे युक्त अनूप शोभादेतेहुये आगेबढ़े उन के पश्चात् जलग्राहक जलके पात्र और रस्सियां नवीन लियेहुये औरबढ़ई और बेलदारआदि काटने और खोदनेवाले सहस्रों मनुष्य अपने अपने कार्यके करने के यंत्र और अस्त्र लियेहुये चलेजाते थे उनके पीछे भृत्यगण और दास हाथों में सुनहरे और रुपहरे कटक धारण कियेहुये दर्शनीय और युवान सेवा कर्मकी आवश्यक बस्तु लियेहुये प्रकार२ के रंगके वस्त्र धारण कियेहुये और बस्त्रोंके रंगके अनुसार टोपी बांधेहुये चलेजाते थे उनके उपरांत सूत मागध और बंदीजनों के गण सुनहले रुपहरे गोटेसे चित्रित प्रकार प्रकारके रंगोंके वस्त्रोंसे अलंकृत हाथोंमें कंचन और रौप्यसे मढ़ेहुये लकुट लियेहुये विरदा-

वलीपढ़ते और यश गातेहुये और शूरबीरों को बीररससे छ-
कातेहुये चलेजाते थे ॥

क०। जगमग्यो दलछत्रपतिको प्रताप नवखंडमें अखंड दाव अरिनके माथहै। तेरेहीउदंड भुजदंडके भरोसेसोऊ रहत निशंकअवदात यहगाथ हैं॥ सुभटसमाज सामासयन समानसुख संचै सबभांतिनुको साहजू के साथहैं। रहतअभय भानुबिक्रम महराजसदा समरविजयकी सिद्धि रावरेही हाथहै ॥

भुजंगीछन्द ॥

सुनो शूरबीरो हमारेबचन। बढ़ेजाओ आगे रहो सब टिचन॥
यहकाल आताहै लेनेकायश। सुविक्रम दिखाके करो शत्रुवश॥
महाविक्रमी सर्वयोधा होचंड। चलो दानवोंको करो खंड खंड॥
महाराज इसकर्मसे हो प्रसन्न। सुभूपण बसन और देवेंगे धन्न॥

इनकेपीछे अखंड प्रतापवान् सूर्यसम तेजस्वी वीर शिरोमणि श्रीराजपुत्र भानुबिक्रम रत्नजटित सुनहरे वस्त्रों से अलंकृत मणि और मुक्ताओं की माला और किरीट और कुंडल अति उत्तम धारण कियेहुये अतीव सुरंग रंग और बस्त्राभूषणों से अलंकृत घोड़े पर सवार पौलोमीय अस्त्र शस्त्रोंको धारण किये हुये सेनापति और छत्र चमर धारण करनेवाले मनुष्योंसे आ-वृतआये पीछे २ उनके चालीस सहस्र पूर्ववत् अलंकृत अश्व सादी बड़े शूरबीर अस्त्र शस्त्रोंसे युक्त रंगरंगके घोड़ोंकी पृथक् पृथक् कतार बांधे घोड़ेसे घोड़ा भिड़ायेहुये आये जबराज-पुत्र उस स्थानके निकट पहुँचा जहां महाराज शत्रुंजय खड़ेथे तब महाराज को देखकर वह घोड़ेसे उतरपड़ा और आगे बढ़कर दण्डवत्की महाराजने उसे आशीर्बाद जयका दिया और उस को अपने हृदयसे लगालिया उससमय भानुबिक्रम ने कहा हे नानाजी मैं आपसे बिदा होताहूं और आपको परमेश्वर की रक्षामें छोड़ता हूं महाराजने कहा बहुत श्रेष्ठ हे पुत्र अब तुम जाओ हम आशीर्बाद देते हैं कि परमेश्वर सब प्रकारसे तेरी

रक्षाकरै और तेरी बिजयहोय और बहुत शीघ्र शत्रुओं को नाशकरके फिरकर आकर मेरे नेत्रोंको आनन्द दे यहआ- शीर्बाद लेकर भानुबिक्रमने महाराजके चरण छुये और उनके सब सभासदोंसे यथायोग्य मिलकर लौटा और फिर अपने उत्तम अश्वपर सवारहोकर बड़ी धूमधाम के साथ सेनाका निर्या- णकिया उसके चलेजानेपर महाराजके सब महाराय सभासद रोनेलगे और रनिवास में भी स्नेहके रुदनका शब्द होनेलगा महाराज शत्रुंजय वहांसे अपनी सभाकी ओरलौटे और राह में सहस्रों मनुष्यों को देखा जो सेनाके अस्त्र शस्त्र और तंबू और राजाके निवास और सभाके डेरे और अहेर आदिअ- नेक प्रकारके बिहार करनेके सरंजाम छकड़ा ऊंट हाथी और घोड़ा आदि बाहनों पर भारकियेहुये चले जारहे थे थोड़ी दूर चलकर महाराज को एकशब्द सुनाई दिया और आंख उठा कर देखा तो क्या देखते हैं कि बहु रूपधारिणी विद्याके आचार्य प्रहास जी अपने साथ चारों शिष्योंको लियेहुये चले आरहेहैं गलोंमें झोले पड़ेहुयेहैं शिरसे पगड़ी अलबेली बांधे हैं पाश ग्रीवासे और गोफें भुजाओंसे लपेटे हैं अस्त्रशस्त्र और बहुभेष धारण करनेके अलंकार और सरंजाम लिये हुये हैं जिनके मुखकी कांतिसे बुद्धिकी तीब्रता और नेत्रोंकी चंचलता से चपलता और शरीरकी कसावट से अदीर्घ सूत्रता भासित होरही है निदान वे सब महाराज के समीप आकर चरणों पर गिरपड़े महाराजने सब को हृदयसे लगाया और प्रहास की जुदाईको जानकर स्नेहसे महाराजका अन्तष्करण भरआ या उससमय प्रहासने हाथ जोड़कर बिनयकी कि इस साथ के खेलेहुये प्राचीनदास को भूल न जाइयेगा और इसदासने जो जो सेवाकी है उसके बदले परमेश्वर से कुशल रहने की प्रार्थना कीजियेगा क्योंकि इससमय इस दानव देश के माया-

कृत स्थानोंमें जानाहै और महेन्द्र दानवेन्द्रसे युद्ध होनाहै और में अपनी जगहपर अपने सुवासनामी पुत्रको किये जाताहूं जो कार्य मुझसे लियाजाता था वहआज से मेरेपुत्रसे लीजियेगा मुझको बिश्वास है कि वह अपना कार्य पूरापूरा करैगा यहसुनकर महाराजने प्रहासका कहना स्वीकारकिया और सब भेषधारिणी विद्याके वेत्ताओंसे जो प्रहास अपने आचार्य को पहुँचाने आयेथे वह आज्ञा कहसुनाई सबने प्रसन्नता पूर्वक सुवासका अधिकारी होना अंगीकार किया उपरांत प्रहाससब से बिदा होकर चारों शिष्यों सहित आगे बढ़ा और थोड़ीदूर जाकर बोला कि अरेभाइयो संसारमें यह कहावतचलीआती है कि अपनी अपनी डफली और अपना अपना राग सो यहांसे अपनी २ राह अलग २ लो और इसमायारूपी देशमें पृथक् पृथक् प्रवेश करो ऐसा करनेसे एकयह भी भलाई है कि यदि हममेंसे कोई पकड़ा भी जायगा तो दूसरा उसकी सहायताका यत्न करैगा और एकसाथ जानेमें सब पकड़ जायँगे यह सुन कर उनचारोंने चारमार्ग लिये और प्रहास उसमार्गको छोड़ कर जिससे राजपुत्र सेनासहित गया था एकदूसरी मार्ग से चलदिया अब प्रथम राजपुत्र भानुबिक्रमका वृत्तांत सुनिये कि वह अश्वविद्याका ज्ञाता अपनीसेनासहित बड़ेमार्गकोउत्तीर्ण करताहुआ रत्नाकर पर्वतकी सीवांसे आगे बढ़कर उस स्थान पर पहुँचा जहां पर्वतके ऊपर वह नगारा और दंड रक्खाहुआ था जिसके सहारेसे राजा महाबीर महेन्द्रकेपास पत्रभेजाकरता था उस पर्वतकी उँचाई ऐसीथी कि आकाशसे बात कररहाथा उसके ऊपर जाना यत्नरूपी पाश और मनरूपी पक्षीके सहारे से भी दुर्लभ था और नीचे २ उसपहाडके कोसोंतक डांग और बन चलागया था॥

तोमरछंद। सोअचलहोअतिरम्य। सर्बथासर्बअगम्य॥

होइविधिनभगतधाह । मनुयहीदिवकीराह ॥

निदान थोड़ीदेरतक तौ वह राजपुत्र वहांखड़ारहा उपरांत देखता क्याहै कि वह पर्वत चित्रविचित्र पाषाणोंसे विचित्र रंग रंगके सुगंधित पुष्पोंसे पुष्पित पानीकेभरनोंके शब्दसे शब्दित प्रकार प्रकारके वृक्ष औ बनस्पतियोंसे अलंकृत और नानाप्रकारके गानकरनेवाले पक्षियोंसे युक्त बड़ामनोरम होरहाहै रूपा उसके नगारा रक्खाहुआथा और एक तीनसौ वर्षकी वय रखनेवाला वृद्धमनुष्य बैठाथा जब राजपुत्र उस पर्वत की सीवांके भीतरगया वह वृद्धमनुष्य पुकारकर कहनेलगा कि अरे युवान पुरुष क्या करताहै मान मान यहां मत आ इस पहाड़के आगे सबदेश अद्भुत मायाके चमत्कारोंसे युक्तहै वहांका गया हुआ कभी लौटकर नहींआया अपनी युवावस्थापर कृपाकर और जान बूझकर सर्पके मुखमें हाथमतडाले नहीं तौ न जाने तू कहां होगा और तेरे प्राण कहांहोंगे यह सुनकर राजपुत्र ने ललकारकर कहा कि अरे बालवृद्ध तू क्या बकता है शूरवीर कभी मरनेसे डरतेहैं और आगे पैररखकर कभी पीछेको हटते हैं तू नहीं जानताहै मैं महाराज शत्रुंजयका दौहित्र अनेक माया रचित स्थानोंका भृष्ट करने और म्लेच्छ और दानवों का नाश करनेवाला राजपुत्र भानुबिक्रमहूं तेरे रोकनेसे कब रुकसकताहूं मैं तौ अपनी जानपर खेलकर इस मायावी देश को जय करने आयाहूं जब उसवृद्धने यह वृत्तांत सुना तब तौ वहबोला कि जो आप इसदेशको जयकरनेकी इच्छासे आये हैं तौ आपका आना शुभहो आइये और इसदेशमें प्रवेशकरके अपने मन के उत्साहको पूरा कीजिये यह सुनकर राजपुत्र ने अपना घोड़ा बढ़ाया और सेना सहित उस पहाड़ी मार्गमें प्रवेशकिया उसीसमय मायाके निर्मितपक्षी वहां उड़नेलगे और नगारा बजनेलगा और उन पक्षियोंने तुरंत जाकर महेन्द्र से

कहा कि शत्रुंजयका दौहित्र भानुविक्रमनामी इतनी सेनालेकर इस देशको बिजयकरने के निमित्त चलकर देश की सीवां के भीतर आपहुंचाहै यह सुनतेही महेन्द्रने झटपट सब सीवांके समीपके राजाओं को पत्रलिखा कि भानुविक्रमनामी राजपुत्र शत्रुंजयका धेवता इस मायानिर्मित देशको विध्वंसन करनेकी इच्छासे आता है तुमलोग जहां पाना उसे पकड़लेना निदान सब राजा उसके आनेके समाचार पाकर उसके पकड़नेका उद्योग बिचारनेलगे इधर भानुविक्रम उस पर्वतीमार्गको उत्तीर्ण करके एकबड़े हरेभरेबनकेक्षेत्रमें पहुंचा उसक्षेत्रमेंकोसोंतक हरी दूब लहलहारहीथी कहीं बिचित्र झाड़ी थीं कहीं वृक्षथे कहीं लताथीं कहीं सरोवरोंमें पुन्नाग और पुंडरीक कमल खिलेहुयेथे कहीं नदी अपनी लहरों से लन्रातीहुई अपूर्वशोभा देती थी और सर्वत्र नानाप्रकारके सुगंधित पुष्प खिलेहु थे उनकेकारणसे वह सबक्षेत्र सुगंधसे सुगंधित होरहाथा--

क० सुमनअनंतफूले बिपिनलसंतपवन सौरभबहंत भँवरगुंजैंरसमन्त है । सतरुफलन्त कूक कोकिलकलन्त तजैध्यान मुनिसन्त जहां केलि को अगन्त है ॥ सबै रसवंत औ वियोगिनको गन्त जहँ रतिहीको तंत तो खसुकविभनन्तहै । बेधे रतिकन्त पाय तरुणीयकंतअब जाहु कितकन्त ऋतु भूपति बसन्तहै ॥

दो० लतावृक्ष सर पुष्पमहि हरीहरी सब ठौर ।
रोगी रुज मृत मृत्युहर सौरभबहति सडौर ॥

निदान राजपुत्र अपने मित्रवर्ग औ सभासदों सहित पीछे पीछे सेनायुक्त उस बनके रमणीक क्षेत्र में बन बिहार करता हुआ और परमशोभा देखता हुआ एक ओर को मार्गी था कि सामने एक उत्तम बाग दृष्टि पड़ा उसको देखकर सबने कहा कि हे राजपुत्र चलो इस मनोहर बागमें चलकर इसकी शोभा को देखें यह सुनकर राजपुत्र उसी ओरको चल दिया और जबसमीप पहुंचा तो देखता क्याहै कि उस बागका

द्वार अनेक प्रकारके पाषाणों से बडी उत्तमता से बना है और जितने पाषाण हैं अनेक रंगके लगेहुये हैं सब ऐसे निर्मल बनाकर लगायेगयेहैं कि उनमें मुख दिखाईदेताहै और उसका द्वारप्रिय दर्शनार्थीके नेत्रोंकेसमान खुलाहुआहै द्वारपालक वहां का कोई नहींहै केवल शोभाही वहांकी प्रबन्ध कर्त्ता है निदान राजपुत्र सब सेना सहित उस बागके भीतरगया तो शोभाको देखकर चकित रहगया मार्ग उस बागके श्वेत पाषाणोंसे बने थे जहां तहां पानी बड़ानिर्मल सरोवरोंमें भराथा फुआरेछूट रहेथे उनके निर्मलजल बह बहकर चारोंओर पाषाण की बनीहुई नालियोंमें होकर जाता था बहुतसे सरोवरोंमें कुमोदिनी और बहुतोंमें सौगंधिक कमलखिलेहुयेथे लतावृक्ष और झाड़ी सब पुष्पित और एक डौलकी काटकर बनादी गई थी पुष्पों पर भ्रमरोंके झुंडके झुंड गुंजारकर रहेथे लताओंमें कोकिलाओर कीर मधुर २ ध्वनि सुनातेथे जहां तहां बैठने के स्थान बने थे और उनस्थानों में और उनके स्तंभों में रत्न सुवर्ण और रूपे का काम होरहाथा उन स्थानों के सन्मुख प्रकार २ के पुष्प खिलेहुए थे--

दो० चम्पा गुड़हल सेवती कुमुद चमेली कंज ।
गुल गुलाल बेलाखिले आनँदप्रद दुखभंज ॥

जयकरीछंद—गेंदा जूही पुष्प अनेक । शोभा भरे एकसे एक ॥
फूलकेवड़ाअतिरमणीय । अतिउत्तमसुगंधकमनीय ॥
फूलीफलीलतासुसुहायँ । अलीगुंजरतमधुरसखायँ ॥
बापीसुघर सरोवरकूप । चलतफुआरे अमितअनूप ॥
सुखशोभाप्रदअसनहिंथान । नन्दनबनमनुहैयहआन ॥

परन्तु वहां मनुष्य और पशूकानाम न था जिसओरजाओ सन्नाटा मालूम होताथा उसबाग के बीचोंबीच में एक चबूतरा सौहस्त लम्बा और सौहस्त चौड़ा और २ हस्त ऊंचा बड़ा शोभायमान बना था और बीचमें उसके एक रमणीक बंगला

बनाथा राजपुत्र उस बँग में जाबैठा और उसचबूतरे के ओर पास जो बाग चारखण्डोंमें लगाथा उसके चारोंओर सबसेना जन बाहनों सहित उतरे उन चारोंखण्डोंमें लाले के फूल फूले हुएथे जैसेही राजपुत्र उसस्थानमें जाकरबैठा तैसेही एकहँसने का बड़ाशब्द हुआ और शब्दके होतेही उनखण्डों में जितनी लालेकीकलीथीं एकसाथ खिलगईं और उनमेंसे सहस्रों बड़े २ नागोंके मुख निकलआये उननागों ने प्रथम तौ मुखसे अग्नि ज्वालाप्रकट की उपरान्त श्वासको ऐसाखींचा कि सब सेना बाहन और तम्बूआदि सरंजाम सहित उनकेमुखमें प्रवेशकर गई और भानुविक्रम एकाकीरहगया यह देखकर राजपुत्र उस बँगलेसेउठकर अपने मित्रवर्गोंकीओरदौड़ा परन्तु ज्योंहींचला त्योंहीं पीछेकी ओर से एकशब्दहुआ और फिरकर जो देखा तौ क्यादेखताहै कि जिसघोड़ेपर सवारहोकर वहआयाथा उस के पर निकलआयेहैं और वह एकओरको उड़ाहुआ चला जा रहाहै यह देखकर राजपुत्र विस्मितहोगया और जब थोड़ीदेर में वह बाग के खण्ड यथावस्थित होगये तब राजपुत्र अपने सब साथियोंको स्मर्णकर२ के रोनेलगा और बोला कि हे पर- मेश्वर क्यापाप मैंनेकियेथे जिससे मुझको यहदुख अकस्मात् प्राप्तहुआ थोड़ीदेर भी अपने मित्रबर्गों में बैठकर स्वचित्त न होनेपाया और इस निर्जनबनमें एकाकी रहगया हाय किससे कहूं और किसको पुकारूं--

जयकरी छंद—हे समीर व्यापक सर्वत्र । बन्धुबर्ग मम होवें यत्र ॥
तहां जाय कहियो संदेश । हौं एकाकी निर्जन देश ॥
हरहु दुःखसब जाय सयान । नहिंतौहैहैं प्राणपयान ॥

कभी घबड़ाकर राजपुत्र खड्गनिकालकर दौड़ताथा परन्तु किसीको न पाकर न प्रहारकरसक्ताथा और न अपने चित्त के क्लेशको मिटासकताथा निदान वह नागराजपुत्र को कंटकरूप

दीखनेलगा और जब देरतक न कोई सर्प दिखाई दिया और न कोई अपने मित्रवर्गोंमेंसे आया तब राजपुत्र उसी बँगलेमें बैठकर बिचारकरनेलगा कि यहदेश मायावी म्लेच्छोंकाहै यह पहलाही उनकी माया का चमत्कार है अभी न जाने ऐसे कितने चमत्कार न देखनेमें आवेंगे इससे घबड़ाना उचितनहींहै चलोउठो और अब एकाकीही पहुँचकर अपनाप्रयोजन सिद्ध करो यह बिचारकर वह उठखड़ाहुआ और उसबाग में चारों ओर फिर फिरनेलगा एकओरको एकदूसराद्वार दिखाईदिया और राजपुत्र उसद्वारसे निकलकर एकओरको चलदिया यह बन एकमायाका चित्रथा फूलभी वहांका उसकाशत्रुथा उसमें वह एकाकी चलाजाताथा पैदल चलने से पैरों में छाले और फेफड़ी बँधनेसे होंठकालेपड़गये थे राजपुत्र उसमें यह पढ़ता हुआ चलाजाता था--

चौ० दीनदयाल भक्त जनत्राता । शमनसकल भवशुभवर दाता ॥
मेटहु यह असह्य दुखशूला । करह सहाय हरहु भयसूला ॥

निदान राजपुत्र तीन रात्रि और दिन इसी प्रकारसे चला गया और मार्ग में कोई स्थान स्वस्थ होने का न मिला परंतु तीसरे दिन उसको एकनगर दिखाई पड़ा और वहयथा तथा वहां जा पहुंचा निकट जानेपर क्या देखता है कि उस नगर के प्राकार की दीवार स्फटिक की बनीहुई है और उसपर सूर्यकी आभा पड़ने से जगमगारही है और उस दीवारपर राजा और महाराजाओं के अनेक चित्रखुदेहुये हैं और बन उपबन नदी पर्वत और प्रासादों के चित्र खोदकर ऐसे बनाये हैं मानो वह चित्र नहीं हैं किन्तु जिनके वे चित्र हैं वे स्वयं स्थित हैं और द्वार उस नगर का परमउत्तम बनाहुआ था और उसमें बड़े २ किवाड़ मत्तगजकी भांति झूम रहेथे और वहां सहस्रों म्लेक्ष खड़ेथे स्वरूप उनके अद्भुतथे बहुतोंका सिर मनुष्य कासा और

धड़ पशकासा और बहुतें का सिर पशूकासा और धड़ मनु-
ष्यकासा था और हाथों में लोहदंड लिये हुये बड़े भयानक
मालूम होते थे बहुतसे उनमें से अग्निमें कुछ होमकर रहे थे
और अनेक प्रकार के रूप धारण किये थे किसी का मुख घोड़े
कासा किसी का गर्धब कासा किसीका ऊंट कासा और बहुतों
का सर्प कासा था और द्वारके समीपही किलाभी था जिसमें
सहस्रों बुर्जबने थे और उनबुर्जों में एक बड़ा दानव लोहे का-
सा शरीर और हाथी कीसी आकृत रखने वाला बैठाथा घडि-
याल का शब्द और शंखोंकी ध्वनिहोरही थी और मायाकर्त्ता
के भजन गा रहेथे निदान राजपुत्र यहसब चरित्र देखताहुआ
उसनगरमें चलागया उसको जानेसे किसीने नहीं रोंका और
भीतर आकर उसने उस नगर को बड़ी उत्तमतासे बसाहुआ
पाया गली और सबराज मार्ग पाषाण निर्मित और निर्मलथे
हाटकी दूकानें बड़ी सजीहुई और बिमलथीं कहीं बस्त्र देचने
वाले बणिक अपनीदूकानोंमें प्रकार२के ऊनी रेशमी सूती और
सुनहली कामके बस्त्रखोले हुएथे कहीं सराफी के उद्योगी अश-
रफी रुपिया पैसा कौड़ी और २ राज्यांकित मुद्रा लगाएथे
कहीं हलवाई लोग सुनहरे रुपहरे थालों में दूधदही मलाई
रबड़ी लड्डूपेड़े जलेबी अमिरती बालूसाई तिनगिनी मिष्टखंड
गजक मिश्री हेमकंद कलाकंद और मोहनभोग आदि प्रकार
२ के मिष्टान्न और पक्वान्न लगाकर रक्खेथे कहीं शाकबणिकों
की परम सुंदरी स्त्रियां सोया पालक मेथी और मूरी आदि
शाक और नारंगी सेव अमरूद और श्रीफल आदिफल और
अनेक २ प्रकारके मूलसुनहली डलियामें लगायेहुए सुनहली
तराजुओं से तोल तोल हँसतीहुई बेचती थीं और लेनेवालों
के चित्तों को कटाक्षों से हरलेती थीं कहीं मांसकी दूकान थी
कहीं मद्यका पानथा कहीं भंगघुटरही थी कहीं अहिफेनलुट

रहीथी और दूकानों के ऊपर रसीली छबीली कमल नयनी कोकिल बयनी चन्द्रमुखी सब प्रकार सुखी वेश्या उत्तमोत्तम वस्त्र और आभूषण पहिरे हुए बैठीथीं और ताने भरतीं थीं और आने जाने वालोंके चित्तोंको कटाक्षरूपी बाणोंसे हरतीं थीं और नगर की गृहस्त स्त्रियां हाथों पैरोंमें सुवर्ण औरचांदी के कटककेयूर नूपुर बिछिया माला छल्ला चंपाकली टीका झुमका बाला करनफूल और पचलड़ी सतलड़ी आदिअनेक प्रकारके आभूषण धारणकिये साड़ियां सुनहरे रुपहरे कामकी पहिरे डुपट्टा कामदार ओढ़े एकस्थानसे दूसरे स्थानको जाती थीं और देखने वालों के चित्तों को लुभातीथीं निदान राज-पुत्र उस नगर की शोभा को देखताहुआ क्षुधित होनेसे एक हलवाई की दूकानपर ठहरगया और उसे एकमुट्ठी भर द्रव्य देकर कहा कि मिष्टान्न का थाल लगाकर लेआ और आप एकांतमें ठहरने का बिचार किया उसको देखकर हलवाई ने फेंकदिया और कहा कि अपना द्रव्य लेलो भा[illegible] बिक्रमने उसे उठालिया और कहा कि भाई इसमें क्या बुराई है वह बोला कि हमारे यहां ऐसे द्रव्यके ढेरलगे हुएहैं और लड़के कं[illegible]ड़ पत्थरों की जगह इन्ही से खेलते हैं विश्वासनहो तो देखलो य[illegible] कहकर उसने एक मनुष्यसे कहा और वह भीतर जाकर झोलीभर के सुवर्ण खंड और मुक्ता ले आया यहदेखकर राज-पुत्रने पूछा कि फिरभाईयहां पदार्थों का क्रय बिक्रय किसरीति से होताहै उसने कहा कि जो मुद्रा इस समय चलताहै वहदो और जो इच्छा चाहे सो लो तब राजपुत्रने पूछा कि इसनगर में किसका मुद्रा चलताहै वह बोला कि महाराज महेन्द्रका [illegible]ाजपुत्रने कहा नाम इसनगर का क्या है उसने कहाकि अंधेर नगरी और यह कागज का रुपिया चलता है देखो यह है राजपुत्र ने देखा कि कागज के खंडपर एक ओर किसी राजा

का चित्रहै और दूसरी ओर कुछ यंत्र सा बना है उसको दि-
खाकर वह हलवाईबोला कि ऐसाही रुपियादो तौ तौ मिष्टान्न
लोनहीं तौ अपना मार्ग लो यह सुनकर राजपुत्र दूसरी दूकान
पर गया और वहां भी यही उत्तर पाकर भूंखके कारणसे क्रो-
धित होगया और बिचारा कि इस नगर का नाम अंधेरनगरी
है कोई पूछने वाला तौ हैहीनहीं लूटकर मिठाई खालो और
नगरमें धूमम चादो यह बिचार कर वह एक हलवाई की दूका-
नसे थाल उठाकर ले चला उसने तस्करो याति तस्करो याती
का शब्द किया उसको सुनकर बहुतसे मनुष्य दौड़े और जब
राजपुत्र के समीप आये तब राजपुत्र ने एक का मस्तक दूसरे
से लड़ाकर सब को यमपुर में भेजदिया इसपर बड़ा कोलाह-
लहुआ और नगर का दंड करता अधिकारी दौड़ाहुआ आया
राजपुत्र ने अपना खड्ग निकाल लिया कई मनुष्यों को घाय-
ल करदिया और हलवाई की दूकानसे चौकी उठालाया और
उसे बीच मार्ग में बिछाकर बैठगया और मिष्टान्न का थाल
सामने रखकर भोजन करना आरंभ किया और जो कोई पास
आया उसी को मारकर भगादिया निदान वे लोग कोलाहल
करते हुए नगर के स्वामी के पास दौड़े इस नगर के बसने का
वृत्तांत सौरभजी ने इस प्रकार से लिखा है कि महेन्द्रने इस
नगर को अपनी रानी बिचित्र मायाके लिये बसायाहै इस न-
गरमें एक भवन बना है नाम उसका निस्प्रभ भवन है उस के
तीन खंडहैं पहले खंडमें बारह सहस्र मायावी दानव रहते हैं
और दूसरे खंडमें अनगिने घंटे और शंख रक्खे हुएहैं उनका
यह प्रभाव है कि यदि वे सब बजने लगजायँ तौ उस देश
के सब मायाविद दानव और म्लेक्ष निश्चेष्टा होजायँ और
तीसरे खण्ड में महारानी विचित्रमाया बिहार करती है और
माया निर्मित चमत्कारों को करती है इसस्थानसे दूर २

के माया निर्मित चमत्कार दृष्टि पड़ते हैं एक ओर इस भवनमें माया निर्मित प्रकार २ के चमत्कार बनेहैं और दूसरीओर बड़ा रमणीक बागहै वही स्थान उस महारानीके रहनेका मुख्यहै और देखनेमें बड़ा अद्भुत है परंतु सब एकमाया का बनाहुआ खेल है और यह नगर उसभवन के निकट इसी प्रयोजन से बसा-यागयाहै कि जब कभी रानी वि चित्र माया यहांआवै तब उस को किसी बातका दुःख न हो जो इच्छाहो मिलजाय निदान उस समय वहरानी उसी भवनमें विराजमानथी मायानिर्मित चमत्कारों की बहार देखने आईथी सामने उसके नृत्य हो रहा था और तेरह सौ दासियां वस्त्र भूषणोंसेअलंकृत सन्मुख हाथ जोड़ेहुये आज्ञाभिलाषी खड़ी थीं कि इतनेमें बाहरसे शरणा-गत शरणागतका शब्दसुनाई पड़ा उसको सुनकर रानीने अप-नीमाया रत्ननामी सखीको आज्ञादी किबाहर जाकर देख कौन आयाहै किसने किसकोसतायाहै वहगई और हालसुनकर शर-णागतोंको लाकर रानीके सन्मुख खड़ाकरदिया तबरानीके पूछ-ने पर उनलोगोंने राजपुत्र भानु बिक्रम के उपद्रव करने का सब वृत्तांत कह सुनाया उसको सुनकर रानीने अपनी अल-बेलीनामी दासी को आज्ञा दी कि तूजाकर उसलड़ेरेको पकड़ कर लेआ कि उसको दंड दियाजावे यह सुनकर वह उन मनु-ष्योंके साथगई और उस स्थानके निकट जाकर क्या देखतीहै कि एकयुवानपुरुष कामदेवकीसी छबि रखनेवाला मार्गकेबीच में चौकी पर बैठाहुआ मिष्टान्न भोजनकर रहाहै और खड्ग निकालकर अपने पासरक्खे हुयेहैं उसकेसुंदर स्वरूपकीशोभा और मुखार बिन्द की क्रांति से वहसबस्थान दीप्तहोरहाहै न ऐसा मनुष्य कभी देखाथा और न सुनाथा—

दो० मूर्त्तिमान सुन्दर रसिक देखे सुने अनेक ।
असअनूप छबिकोपुरुष देख्यों सुन्योंनएक ॥

वह दासी उसको देखतेही आसक्त होगई और पुकारकर बोली कि कहिये आपकौनहैं जो हमारी रानीकी प्रजाकोसताते हैं और उनके पदार्थोंको छीन छीनकर भोग लगाते हैं उस को सुनकर राजपुत्रने शिर उठाकर देखा तो क्या देखताहै कि एकस्त्री सिंदूरका टीका लगाये गलेमें झोलीडाले साड़ी पहिरे हुये चली आरही है उसको देखकर विचारा कि यह मायावी है कुछ मायाकरके मुझे पकड़लेगी औरफिर कुछ न बनपड़ैगा साराघमण्ड किरकिरा होजायगा इससे इसको दण्ड दीजिये यह विचारकर वह बोला कि तुम हमारे पासआओ तो तुमसे अपना हाल भी कहें और तुम्हारे साथ तुम्हारी रानीके पास भी चलें यह सुनकर वह पास चली आई राजपुत्रने उसकी ओर आंखका इशाराकिया वह समझी यह मुझपर रीझगया शीघ्र बढ़कर उसने राजपुत्र का हाथ पकड़लिया और कहा उठो तुमको रानीके पासलेचलूं और चित्तमें यह विचार उसके था कि रानी से इसे मांगलूं और घर ले जाकर इसके साथकाम कलोलकरूं जबराजपुत्र के हाथमें उसका हाथ आया उसने एक ऐसा झटकादिया कि वह गिरपड़ी और शीघ्रतासे उसके मुखमें कपड़ा ठूंसदिया कि पढ़कर माया न करसके और फिर उसीके बस्त्रसे उसकी भुजा चढ़ाकर उसको एक दुकानके स्तम्भसे बांधदिया और पांचचार कोड़ेमारे कि वह बिलबिलागई और फिर चौकीपर बैठकर मिठाई खानेलगा यह देखकर सबबाणिक दूर २ खड़ेहोकर धमकानेलगे परन्तु समीप कोई नहीं आया अंतमें सबके सब फिर रानीके पास जापुकारे रानी उस वृत्तांतको सुनकरहँसी और अपनी मायारत्ननामी सखी को आज्ञा की कि तू शीघ्र जाकर उसमरेको पकड़ला और अलबेलीको छुड़ाला यहसुनकर मायारत्न कुछ मायाकरके वहां से उडी और माया से राजपुत्रके हाथ पैरोंको स्तब्ध करके

अलबेली को लुटादिया और उस की कमरमें हाथ डालकर क्षणमात्रमें अलबेली सहित राजपुत्र को लियेहुए रानी के समक्षमें आखड़ीहुई उससमय भानुविक्रम क्या देखताहै कि एक स्त्री बड़ी स्वरूपवान् रत्नजटित आभूषणों से अलंकृत उत्तम आसन पर बिराजी है और सन्मुख उसके सत्तरहसौ दासियां हाथ जोड़ेहुए खड़ी हैं उससमय भानुबिक्रमने अपना मुख उसकी ओरसे फेरलिया परंतु उसके सुंदर शोभायमान स्वरूप को देखकर उस बिचित्र मायारानी का हाल बिचित्रही होगया और वहबोली कि अरे दुःखत्रसित तू किस फुलवाड़ी का फूल है वह बोला कि मैं महाराज शत्रुंजयका दौहित्र हूं इस मायावी देश को जय करने को आयाहूं शत्रुंजय का नाम सुनतेही वह घबरागई और बड़े चक्कर में आकर दासियों से बोली कि मेरा संदूक शीघ्र लाओ वह उसीसमय संदूक ले आई रानी ने उसे खोलकर एक चित्र निकाला और उसके स्वरूप को राजपुत्र के स्वरूपसे मिलाया और जब उसका स्वरूप चित्रसे मिलगया तब उसने पूछा कि क्या तेरा नाम भानुविक्रम है राजपुत्र ने कहा हां यही नाम है तब वह दासियों से बोली कि इस पुरुष का नाम और स्वरूप इस चित्रसे मिलता है निस्संदेह यह माया के स्थानों को तोड़नेवाला उत्पन्न हुआ है अच्छा इसको मायाकृत वनमें फेंकदो यदि यह मायाकृत पदार्थों का तोड़नेवाला है तो आप उस बनसे निकल जायगा नहीं तो उसी बनमें अपने प्राण गँवावैगा यह सुनकर उन दासियों ने कुछमायाकी और भानुबिक्रम निश्चेष्ट होगया तब वे उसे उठाकर मायाकृत बनमें लाईं और वहां छोड़कर चलीगईं क्षणमात्रके पीछे राजपुत्रकी आंखें खुलीं और उसने अपनेको एक हरेभरे बनमें पाया वहां से वह उठकर एक ओरको चलदिया वहबन क्या था मानोंस्वर्गका नन्दनबनथा॥

चौ०। दिव्य वृक्ष सब ठौर सुहाये। हरी भूमि अति सुखमाछाये॥

आम्र और पुन्नाग के वृक्षों पर सारिका और कपोत मधुर२ वाणी बोलतेथे और जहांतहां कुंजों में मोर नृत्य करकरके कामपीड़ित मोरनियों के साथ कलोल कररहे थे॥

जयकरीछन्द। कूजत कलरवगुंजतभौंर। रहेसुफुल्लि तरुणके चौंर॥
कुसुमोद्भव वर गंध गँभीर। घ्राणकरत सोअति वरवीर॥

जहांतहां पाषाणके कूप परम सुंदरबनेथे और उनकी जगतपर चढ़नेको पैड़ियां मनोहर बनीथीं कहीं कमलयुक्त तड़ागथा कहीं प्रफुल्लित पुंडरीक भरा सरोवरथा कहीं सुगंधित प्रसूनोंसे आवृतवापी थी कहीं चमेली खिली थी कहीं चंपाथा कहीं जूहीथी कहीं गुलाब था कहीं गेंदाथा कहीं मोतियाथा कहीं खट्टे नींबू कहीं मीठे नींबू कहीं नारंगी कहीं सोमवल्ली कहीं अमृतवल्ली कहीं जम्बू कहीं आम्र इसप्रकार से वह बन बड़ा शोभायमान था और वायु उन सब प्रसूनों में मंदताके साथ होती हुई शरीर को स्पर्शकरती हुई ऐसी जानपड़ती थी मानो ऐसे मान्यस्थान में चलने से उसको मानहोगया है॥

जयकरीछन्द। मारुत गंध भरो तहँमत्त। परसत अंग करत उन्मत्त॥
जलधारानिर्मलकमनीय। जहँतहँ बहेसुअतिरमनीय॥
मिष्टवारि स्वादिष्ट महान। वरपीयूषसदृश गुणवान॥

और झीलें निर्मल जलसे भरी हुई लहरा रहीं थीं किनारे किनारे उन के कोसोंतक पृथ्वी हरी थी और तटपर उनके चकोर और चातक आदिपक्षी जल क्रीड़ाकररहे थे और तटस्थ वृक्षोंपर कोकिला मोर हंस हरियल शुक और सारिका आदि पक्षी मधुर २ वाणी बोलते हुए एक शाखासे उड़कर दूसरी शाखा पर बैठते थे और शाखाओं के हिलने से झूमते हुए और झूलाझूलतेहुए मालूम पड़ते थे और मृग चीतल पाड़े और नीलगाय आदि जंगली पशुओं के झुंड के झुंड हरी २ दूब चरते और कुलाँचें भरते हुए विहार करते थे॥

करीछन्द। तहांतुंगफल लहि फलभार। रहे नमित समश्रमित उदार॥
कोकिल कूजत गुंजत भौंर। जिनपै भये रहत नित चौंर॥
पद्माकर सम पद्म अनूप। अतिरमणीय लखे तहँभूप॥
शोभा बरणि सकै कवि कौन। सुरपुरहूमें दुर्लभ तौन॥

निदान भानुबिक्रम उस अपूर्व बनकी शोभा देखता हुआ जा रहाथा कि उसने आगे एक फुलवाड़ी देखी जहां बहुत से मनुष्य फूल तोड़ रहेथे राजपुत्र वहां गया और उन सबसे पूछा कि हे भाइयो आपलोग कौन हैं क्या आपका नामहै और इस फूल चुनने का क्या कामहै यह सुनकर वे बोले कि हमारी कथातो बड़ी लंबी चौड़ी है परन्तु संक्षेप वृत्तांत यह है कि हम सब राजपुत्रहैं मृगया करते हुए यहां आनपड़े फिर यहां से जाने की राह न मिली और यहांही रहना पड़ा एक राजपुत्री यहां रहती है वह नित्य फूलों के गहने बनवाकर पहनती है उसीकेलिये हमलोग ये फूल तोड़रहेहैं नित्य सायंकालको उस राजपुत्री की दासी आकर फूल लेजातीहै और फूलोंके बदले सबको भोजन दे जाती है वही भोजन खाकर हमलोग अपने दिन काटते हैं और यहां रहते हैं अब तुमभी आनपड़ेहो तुम को भी जाने की राह न मिलैगी इससे यहीं रहो और फूल तोड़ २ कर गहने बनाओ इसीसे तुमको भोजन मिलैगा यह सुनकर भानुबिक्रम बोला कि हरे राम यह माली का कर्म मुझे नहीं आता यह आपही को प्रियरहे यह सुनकर वे मनुष्य बोले कि भाई अभी तो तुम आये हो पेट तुम्हारा भराहै हट्टे कट्टे बनेहुएहो जब कुछ दिन फिरोगे और बे अन्न रहोगे तब दुर्बलता आपही सब काम करालेगी यह सुनकर राजपुत्र ने कुछ उत्तर नहीं दिया और एक ओरको बैठकर बिचार किया कि वृक्षों से कुछफल तोड़कर खालीजिये और निर्मल जल पीकर प्यास बुझाइये यह बिचारकर उसने एक वृक्षकी शाखा

से फल तोड़नाचाहा परंतु वह शाखा ऊंचीहोगई और उसके हाथमें न आई और जो फल उसमें से टूटकर गिराथा वह भी अदृश्य होगया फिर जब उसने उस वृक्षपर चढ़नेका बिचार किया तौ ऐसाहोगया कि चढ़ाई नहींगया उपरांत उसने पानी पीनेके लिये एक जलके सरोवरमें हाथडाला तौ वह सरोवर जल रहित होगया और वह निराश होकर बैठगया इसीप्रकारसे वह दिवस व्यतीतहुआ और जब सायंकालका समय हुआ तब कई स्वरूपवान् दासियां मजूरनियों पर भोजनके थाल रखवाकर लाईं और बोलीं कि अरे मायाकृत बनके कैदियो आवो भोजनलो और फूलों के भूषण दो यह सुनकर वे सब मनुष्य दौड़े और फूलोंका बनाहुआ गहना देकर वह भोजन लेलिया तब वे दासियां चलीगईं और वह सब बैठकर भोजन करनेलगे राजपुत्र दूर बैठाहुआ देखाकिया परंतु किसी ने उसको एक ग्रास भी नहींदिया और सब भोजन आप खालिया निदान राजपुत्र वैसेही भूखा प्यासा रात्रिको सोरहा और जब मार्तंड मंडलने प्रातःकालकी बेलामें प्रकाशकिया॥

दो०। दिवसअंत आशानशत रजनी करि संभोग।
भानुउदय लखिपरत है नूतनआशा योग॥

तब सब कैदीउठकर फूलबीननेलगे और राजपुत्रने अपना प्रातः कर्मकिया जब वह ईश्वर स्मरण करचुका तब सब कैदियोंने आकर फिरकहा कि हे आर्य तू अपनी युवावस्थाको क्यों खोताहै और अपने कंजसे मुखारविंदको बेदाने पानी के मलीन करताहै आज हमारेसाथ फूल बीनकर गहने बना और सायंकालको भोजन करके आनन्दपूर्वक सोइयो नहीं तौ यह बन मायाकृतहै बिना अन्नोदकके मरजायगा इसमें न जल मिलैगा न कहीं भोजन पायेगा यह सुनकर राजपुत्रबोला कि भाइयो तुम अपना २ काम करो और मुझको मत समझा-

ओ यह सुनकर वे सब फूल बीननेलगे और राजपुत्र बैठा रहा वह दिवस भी व्यतीत हुआ और जब सायंकाल हुआ वे दासियां पूर्ववत् उन कैदियोंके लिये भोजन लेकर आईं उनको देखकर भानुबिक्रम उनके समीप चलागया और डाटकर उन से कहा कि सब भोजन रखदो और चलीजाओ यह देखकर वह दासियां चिल्लाकर बोलीं कि अरे कैदियो चलो यह संड तुम सब का भोजन छीने लेताहै यह सुनकर वे दौड़े और जब समीप आये राजपुत्र ने अपने खड्गकी मूठके प्रहार से उनके शिरोंको घायल करदिया और दासियोंके थप्पड़ और मजूरिनों के लातें मारकर सब भोजन छीनलिया और उनके वस्त्रभी उतर-वाकर उनको छोड़दिया और वहीं बैठकर उन कैदियोंको दिखा दिखाकर भोजन करनेलगा और वे दासियां रोती पुकारती नग्नाङ्गी अपनी रानी के पास गईं रानी उनकी महाराज महे-न्द्र मायाकृत देशाधिपति की भानजी थी नाम उसका चन्द्र-चूड़ाथा महेन्द्रने उसको अपनी पुत्रीकरके माना था और इसी कारणसे इस मायाकृत देशके प्रत्यक्ष और अदृश्य आदि खंडों के रहनेवाले देशाधिपति सब उसको मानते और भेटदेतेथे उस महाराज पुत्री चन्द्रचूड़ाको यह बनबिहार करनेके लिये प्रियथा इसीसे महाराज महेन्द्रने उसके लिये रहनेको यहां एक भवन बनवादिया था उसी में वह रहती थी और महेन्द्र की भगिनी सुगंधप्रिया यहां रहकर उस राजपुत्री की रक्षाकरती थी परंतु ईश्वर इच्छासे वह इससमय यहां न थी किन्तु अपने भाई महेन्द्रकी सभामें गईहुईथी कि इतनेमें दासियां रोतीहुई पहुँचीं उनको देखकर चन्द्रचूड़ा ने कहा कि क्यों कुशलतो है वे बोलीं कि आज एक निपूता नया कैदा आया है वह बड़ा उपद्रव म-चाता है न फूल बीनता है न भूषण बनाता है आज उसने हम सबको और कैदियों को मारा है और सब भोजन छीन

लिया है यह सुनकर उसने कहा कि अच्छा अब तुम भोजन न लेजाओ कहारी और महल रक्षक लेजायँगे यह आज्ञापाकर महल रक्षक हाथों में गंगा जमनी दंडलिये हुए कहारियों के शिरपर भोजन के थाल रखवाकर चलीं जब राजपुत्र भानुबिक्रमके समीप पहुँचीं तब बोलीं कि अरे मरे कैदी क्यों तुझको कुदशा ने घेरा है क्या तेरी मृत्युआई है जो तू राज्य भृत्यों को मारता है देखो तो नपूता कैसा बैठाहुआ खारहा है मानो इसीने यह भोजन बनवाया है यह सुनकर राजपुत्र को क्रोध आगया और यह बिचारकर कि तुमभी बहुत दुखी हुए हो इनको भी मारने को खड़ा होगया और उस महल रक्षक को मारते मारते उधेड़ दिया और उसके हाथों के कटक और दुपट्टा छीनलिया यह देखकर सब कहारियां भोजनके थालडाल कर भागीं और सब कैदी भी छिपरहे तब राजपुत्र उन कहारियोंके पीछे दौड़ा उससमय के ` ` और पुकारने के कोलाहल को सुनकर राजपुत्री चन्द्रचूड़ा महल के बाहर निकल आई और देखा कि एक युवान स्वरूपवान् किशोर अवस्था कामदेव कीसी छबि सूर्यकासा तेजधारी॥

जयकरीछंद। मृगशावक केसे दोउ नैन। धनुषाकृतभ्रू शरसम सैन॥
काम मूर्त्तिसुंदर छवि धाम। बेधत हृदय लखत जोबाम॥

कहारियों के पीछे युवावस्था के मदसे मतवाली चालसे भागता हुआ चला आरहा है उसको देखतेही राजपुत्री चन्द्रचूड़ा आसक्तहोगई और पुकारकर कहनेलगी हांहां अरे युवान तू यह क्या करता है यह सुनकर राजपुत्र ने जो नेत्र उठाकर देखा तो एक प्रियदर्शनी स्त्री अप्सराओं कासा स्वरूप रखने वाली खड़ी है उसके नेत्रों के बिशिखरूपी कटाक्ष शीघ्र राजपुत्र के हृदय को बेधकर निकलगये स्वरूप की सुंदरता क्या बर्णन की जाय वह चन्द्रमुखी—सबप्रकार सुखी—मृगनैनी- पि-

कबैनी- निर्दोषअंगी- कोमलउपाङ्गी- बिशालनेत्रा- सूक्ष्म कटि-
वान- छबिकीखान- ललित अधर धरी- पीनपयोधरी- सुकुमार-
छबिआगार- दाड़िमदशन- सुंदरवसन- पदपंकजी- छबि और
शोभा की धाम थी॥

जयकरीछंद। पूर्णचन्द्र आनन छबिधाम। बालव्याल सम अलकललाम॥
कोमल कंज कपोल मयंक। कीर नासिका भ्रूअति बंक॥
खंजन नयनी बिशिखकटाक्ष। बेधक जिमि कामहिरुद्राक्ष॥
श्रवणसीपसमचिबुकललाम। अधरदाड़िमी दलअभिराम॥
दशन रत्नसम बिद्युत हास। मुखरसना मृदु करत प्रकास॥
कनकदंड मृदु भुजामृणाल। शुचिकपोत ग्रीवा शुचिभाल॥
पीन पयोधर सुभगशरीर। त्रिबली युत शुभनाभि गँभीर॥
पीन नितम्ब सूक्ष्म कटिमंजु। जंघा कदलीसम पद कंजु॥
नखशिख शोभा अकथअनूप। रति जनुआपु धरयोछबिरूप॥
कुंज लालसुंदरता तासु। को कहि सकै न उपमा जासु॥

निदान उस राजपुत्री को देखतेही भानुबिक्रम तन मन से आसक्त हो गया और वह छबीली भी मद मुसकान करती हुई उसके पास चली आई और कहने लगी कि हे आर्य इस लूटमार करने से क्या नफा है जो कुछ तेरे चित्तकी वृत्ती हो मुझसे कह यह कृपायुक्त बचन सुनकर राजपुत्र ऐसा प्रसन्न हुआ मानों बिश्वका बैभव मिलगया और बोला कि हे सुंदरी मैं अपने प्राणों से तंगथा इसकारण से यह नंगपना कियाथा कई दिनसे बे अन्नोदकके था इसीसे मैंने भोजन छीना था यह सुनकर राजपुत्री ने कहा कि तुम्हारी क्षुधोन्मत्तता प्रकट है परंतु मैं क्या करूं जाओ कोई दूसरा घरढूंढ़ो राजपुत्र बोला कि सुंदरी मैं केवल तेरे प्रिय दर्शन का भूंखाहूं और यही तुझ से तेरी सुंदरता की न्योछावर मांगताहूं यह सुनकर राजपुत्री बोली कि निर्लज्ज का ईश्वर भलाकरै प्रश्न और उत्तर और मैं कुछ कहतीहूं तुम कुछ सुनते हो चलो अपना चलता धंधा

करो यह सुनकर राजपुत्र ने कहा कि-- हम मृतकप्राय । कहँ जाऊँ धाय--हे सुन्दरी हर मनुष्य प्रीति की फांसीसे लाचार है मैं अब कहां जाऊंगा राजपुत्र यह कहही रहाथा कि इतने में दासियों ने आकर कहा कि यह मार्ग है यहां खड़े होनेसे कोई देख लेगा तो निस्संदेह दोष लगावेगा इससे महलके भीतर चलो और इनको भी लेती चलो वहां बातें करलेना यह सुनकर वह राजपुत्री भानुविक्रमसे बोली कि बहुत अच्छा आप ऐसेही भूखेहैं तो मेरे स्थान पर चलिये और भोजन करके अपना चित्त स्वस्थ कीजिये यह सुनकर भानुविक्रम राजपुत्रीके साथहोलिया और जब समीप पहुंचा तो उसउत्तम रत्नजटित स्थानकी शोभा देखने लगा उँचाईमें वह आकाश से बातें करताथा और अप्रतिम मणि गणोंसे जटितथा ॥

रोलाछंद। मणिन विरचित हेमनोहरकंज परमसुढार।
विहंगमाणिमय कूर्म झषवर कलकके सहचार ॥
बहुरंगके सोपान विरचे फटिक के अभिराम।
निष्पंक जलमें लहरिमुक्ता तुल्यविन्दु ललाम ॥
नीलमणि की बंधी वेदी चारु अति चहुंओर।
परै तिनकी झलक सरसी माहिं स्वच्छ सुठोर ॥

वह राजपुत्री भानुविक्रमको उस प्रासादके द्वारपर छोड़कर आप ऊपर चलीगई और वहां उसने दासियोंको सब सरंजाम ठीककरनेकी आज्ञादी परंतु यहां राजपुत्रको कहांधीर्यथा कहने लगा। कि चलो हम भी ऊपर चढ़चलें और बढ़कर दो तीन सीढ़ी चढ़ा कि किसीने उठाकर पटकदिया फिर उठकर चढ़ने लगा और फिर किसीने पटकदिया निदान तीन चार पटकनी खाईथी कि राजपुत्री वहां आगई और राजपुत्रकी दशाको देखकर खिलखिलाकर हँसी और कहनेलगी कि आपने पराये मकानमें घुसजाना खेलसमझलिया और फिर अपनी पद्माव-

तो सखीसे कहा कि सुगंधप्रिया भूप्राचलते समय माया से दिक् रक्षाकरगई थी कि कोई दूसरा मनुष्य भीतर न जाने पावे तू कोई ऐसी मायाकर कि राह होजाय और मैं भानुविक्रम को प्रासादके भीतर लेजाऊं यह सुनकर पद्मावतीने कुछ पढ़ कर ताली बजाई और राह खुलगई तब चन्द्रचूड़ा राजपुत्र को ऊपर लिवालाई और उसको एक उत्तम शय्यापर बैठाया और दासियोंको आज्ञादी कि उत्तम २ खाद्य और पेय पदार्थ लाकर लगाओ यह सुनकर वे सब शीघ्र उत्तमोत्तम परम स्वादिष्ट खाद्य पेय और चोष्य आदि पदार्थ लेआईं तब राजपुत्री ने कहा कि लो अब भोजनकीजिये और फिर यहांसे सिधारिये यह सुनकर भानुविक्रम बोला कि हे प्राणप्यारी तेरेमुखारविन्द की अमृत रूपी शोभाको पान करनेसे मेरी सब भूख और प्यास जातीरही अब हमको खानेको गम और पीनेको आंशू हैं तुम्हारे दर्शनोंहीसे मुझे कामहै और यदि हमको भोजन करानेकी इच्छाहै तो म्लेच्छी मार्गको त्यागकरके सत्यधर्मको ग्रहणकरो यह सुनकर राजपुत्री बोली कि मुझको म्लेच्छी माया नहीं आती परंतु उन अद्भुत परमेश्वरकी उपासनाको त्याग नहीं करसक्तीहूं क्यों कि उनका बड़ानामहै यह सुनकर भानुविक्रमने कहा कि जो वह अद्भुत सत्यईश्वरहोता तो क्या वह मेरे नाना महाराज शत्रुंजयसे भागा भागा फिरता यह सुनकर राजपुत्री उसको राजपुत्र जानकर बहुत प्रसन्नहुई और राजपुत्रके कहनेसे उसने अद्भुतकी उपासना त्यागदी तब राजपुत्र और वह राजपुत्री दोनों भोजन करनेलगे और आपसमें प्रेमकी वार्ताकररहेथे कि इतनेमें आंधी चलने लगी बादल उमड़आया और बिजली चमकनेलगी यह देखकर राजपुत्र घबड़ाया और परमेश्वरसे विनयकी कि तुही रक्षकहै इतनेमें एक म्लेच्छी महानागपर सवार जटारखाये मुंडों की

माला पहिरे भयानक रूपसे वहां आपहुंची और भानुवि[illegible]को राजपुत्रीके पास बैठाहुआ देखकर क्रोधितहोकर बोली कि अरे कुलटा तू किसको अपनेपास लियेहुए बैठीहै यहसुनकर राजपुत्री खड़ीहोगई और बोली कि अरी भूआ यह भी इस मायाकृत बनका एक कैदीहै यहां भूंखा प्यासा आनिकलाथा मुझे दया लगिआई इससे बुलाकर इसको भोजन करायाहै अब यह चलाजायगा यह सुनकर वह चुपहोगई और विचार किया कि यह कैदी तो महेन्द्रकाहै आपही माराजायगा परंतु अब राजपुत्रीका रखना यहां अच्छा नहीं नहीं तो यह नष्टहोजाय गी यह विचारकर वह राजपुत्रीके समीपगई और वहांजाकर जो देखा कि वह कैदी बड़ा स्वरूपवान् और छबीलाहै और उसका अंग अनङ्गकी तरंगोंसे शोभायमानहै तो उसपर वह आसक्त होगई और विचारनेलगी कि मुझवृद्धाको अब कोई नहीं पूछताहै यह युवान अपने प्राणोंके बचनेके लोभसे मुझ को अंगीकार करलेगा तब मैं इसको महेन्द्रसे मांगकर भोग बिलास करूंगी परंतु प्रथम इससे भी पूछना उचितहै यह विचारकर वह राजपुत्रीसे बोली कि मैं सामने के भवन में जाकर बैठतीहूं तू इस मनुष्य को वहां मेरे पास भेजदे इससे पूछकर मैं तेरा अपराध क्षमाकरूंगी नहीं तो इसे पास बैठाने का दंड दूंगी यह कह कर वह म्लेच्छी उस भवन में गई और वहां उसने अपना स्वरूप पंद्रह सोलहबर्ष की वयकी परम मनोहर सुन्दर स्त्री कासा बनालिया कि जो कोई अब उसको देखै उस पर आसक्त होजावै और इधरराजपुत्री ने भानुबिक्रम से कहा कि लीजिये भूआजी भी आप पर आ-सक्तहोगई अब आप हमको क्यों पूछेंगे आपको तो बड़ी छ-बीली प्रिया जिसकी बय कमसे कम सातसौ बर्ष की होगी मिलगई जाइये उसके साथ बिहार कीजिये यह सुनकर राजपत्रु

ने कुछ उत्तर नहीं दिया और उस सुगंधप्रिया म्लेच्छी की ओर चला यह देखकर वह राजपुत्री अपनी आंखों में आंशू भर लाई और राजपुत्रका वस्त्र पकड़ कर कहने लगी कि क्यों जी आपने इतनी ही देर में हमारा स्नेह छोड़दिया और हम को भूलगये मानो तलुओं में तेलही न था यह सुनकर राजपुत्र ने उसको अपने हृदयसे लगालिया और उसके आंशू पोंछकर कहा कि हे प्राणप्यारी मैं तेरा भक्त और दासहूं तू देख मैं इस वृद्धा म्लेच्छी के साथ क्या करताहूं यह कहकर वह अपना वस्त्रछुट कर वहां चलागया जहां वह वृद्धा सुन्दर स्वरूप धारण किये हुए बैठीथी और राजपुत्री रोती हुई रहगई वहां जाकर राजपुत्र ने देखा कि वह मनोहर रूपधारण कियेहुए रत्नजटित शय्या परबड़े मानसे बैठी है और अपने पास बारुणी के पात्र रक्खे हुएहैं राजपुत्र जाकर उस शय्यापर बैठगया उसने प्रथम तौ कुछ मानसा किया उपरान्त पानपात्रमें मद्यभरकरदी और कहालो इसे पियो राजपुत्र ने उसे हाथमें ले लिया और कहा कि हे प्राणप्यारी मुझे अपनी जूठी बारुणी दे कि उसको पानकर अपने चित्तके दुःखको दूरकरके तेरा अधरामृत पीऊं यह कहकर राजपुत्र ने उसे गोदीमें उठालिया और उसी शय्यापर लिटाकर एक हाथ अपना उसकी ग्रीवा पर और दूसरा दोनों जंघाओं के बीचमें रक्खा वह समझी कि यह प्यार करता है थोड़ी देरमें काम कलोल करके मेरी आशा पूर्ण करेगा परंतु राजपुत्र ने उसकी ग्रीवा बड़े बलसे दबाई वहदानवी बहुत कुछ उछली कूदी परंतु उसकी ग्रीवा तौ सिंह के करतलमें आचुकी थी कबछुटती है निदान वह पंचत्व को प्राप्तहुई और उसके शरीरसे बिहंगवर निकल २ कर उड़ने लगे और ऐसा कोलाहल और शब्द हुआ कि मानों आकाश फटा चाहता है इधर राजपुत्री झरोखे से झांककर देखरही थी और राजपुत्र के

आलिंगनादि कर्मको देख २ कर भस्महोतीथी और कहतीथी कि देखा यह मनुष्य मुझसे तो क्या कहकरगयाथा और वहां उस वृद्धापर रीझकर क्याक्याबातें कररहाहै कि तनेमें कोला हल होना प्रारंभहुआ आंधी बड़े धूमधामसे चली बिजली प्रलय कालकीसी चमकनेलगी और अग्नि और पाषाणोंकी बर्षा होनेलगी राजपुत्र कूदकर अलग जाखड़ाहुआ कि इतने में आकाशसे बाणी हुई कि मुझको छलसे माराहै मेरा नाम सुगंधप्रियाहै मुझको इसबातका बड़ा दुःखहै कि इस सातसौ वर्षकी आयुमें मैंने अपनी युवाअवस्थारूपी फुलवाड़ीसे कोई फूल आजतक न तोड़ाथा कि आज अदृश्य लोककी वायु ने मेरे वय रूपी प्रसूनको सुखादिया यह सुनकर राजपुत्रीने अपनी पद्मावती सखीसे कहा कि हाय इन्होंने बड़ा दुष्कर कर्म किया कि मेरी फूफीको मारडाला पद्मावती बोली वाहरी तुम्हारे स्नेहके कारणसे राजपुत्रने अपने प्राणोंका भी कुछ ध्यान न किया और उसे मारडाला चलकर तो देखो कि वह किस दशामें है और क्या उसका हाल हुआहै यहसुनकर राजपुत्री पद्मावतीको साथलेकर वहां आई उस समयतक अंधकारदूर होगया था और उस म्लेच्छीकी लोथ नग्नपड़ीहुई थी और भानुविक्रम एकओरको खड़ाहुआ हँसरहाथा कि इतनेमें राजपुत्री बोली कि वाह २ आपने मेरी फूफीको मारडाला वह बोला कि क्यों प्राणप्यारी मैंने इसको कितनी जल्दी यमलोक में पहुंचादिया वह बोली कि क्या आपका कथनहै आपसे डरना चाहिये क्योंकि आपने एक तो अपने ऐसी चाहने वाली पर कुछ भी कृपा न की दूसरे मेरीही फूफीको मारकर मुझीसे अपनी प्रशंसा कराना चाहतेहो यह सुनकर भानविक्रम ने अपना हाथ राजपुत्रीके गलेमें डालकर प्यारकिया परंतु राजपुत्रीने हाथ झिटककर कहा कि क्या मेराभी गला घोटोगे वह

वोला हे प्राणप्यारी मैं तेरा गला घोटकर अपनेप्राणोंको क्यों कर रखसकताहूं यही बार्ता होरहीथी कि अकस्मात् सुगंध प्रिया म्लेच्छीकी खोपड़ी चटकी और उसमेंसे एक विहंगवर निकला और शोचनीयम् शोचनीयम् कहताहुआ उड़ा उस को देखकर पद्मावती बोली कि हे राजपुत्री यह विहंग नहीं है किंतु इस दानवी सुगंधप्रियाकी आसुरी मायाका अधिष्ठाता देवताहै अब यह महेन्द्रके पास जाकर सब हाल कहेगा और राजपुत्र भीमविक्रम और राजपुत्री मोहनी चित्रकीभांति आप भी पकड़ जायँगी यह सुनकर राजपुत्रीने घबराकर कहा कि भैनामैं क्या करूं पद्मावती बोली कि तुम राजपुत्र सहित यहां से भागो और बनजाय तो इस मायाकृत देशके बाहिर चले जाओ यह सुनकर राजपुत्र बोला कि मैं तो इसदेशको विजय करनेको आयाहूं जबतक मैं महेन्द्रका बध न करलूंगा तब तक न जाऊंगा तब चन्द्रचूड़ा बोली कि अरी पद्मावती भैना मुझको कुछ माया नहीं आतीहै जो तुझसे बनसकै तो हम दोनोंको भगालेचल यह सुनकर पद्मावती बोली कि हे राज- पुत्री मैं माया में ऐसी प्रवीण नहींहूं कि महाराज महेन्द्र के किसी सेनापतिसे युद्धकरसकूं या तुमको इस मायाकृत देश के बाहिर लेजाऊं परंतु मैं आपके कहनेसे माया करके पर्वत बनी जातीहूं तुम राजपुत्रको लेकर आओ और उस पहाड़के किसी घाटेमें छिपरहो इसप्रकारसे मैं तुमको लेकर भागचलूंगी राजपुत्री बोली कि बहुत श्रेष्ठ तब पद्मावती नीचे चली आई और कुछ माया करके पर्वत बनगई और राजपुत्र और राज- पुत्री दोनों आकर उस पर्वतके एक स्थानमें छिपरहे और वह पर्वत अपने स्थानसे उठकर एक ओरको चलनिकला उस समय राजपुत्रीकी सब सखी और दासियां रोनेलगीं परंतु पद्मावतीने किसीका कुछ ध्यान न करके सबको रोताहुआ

छोड़कर राजपुत्र और राजपुत्रीको लियेहुए चलदी और वह बिहंग जो उसम्लेच्छी के मस्तकको फोड़कर निकलाथा वहां से चलकर महेन्द्रके पास चला महेन्द्र बदरीउद्यानमें अपनी सभामें मंत्री और सेनापतिआदि सब सभासदों सहित बैठा हुआथा और सन्मुख नृत्यहोरहाथा कि इतनेमें वहपक्षी उड़ता हुआ वहां पहुँचा और महेन्द्र के सिंहासन के समीप जाकर गिरपड़ा और बोला कि हेदानवेन्द्र महाराज महेन्द्र आज राज-पुत्र भानुविक्रमने सुगन्धप्रियाको बधकिया यहकहनेकेसाथही उसबिहंग के मुखसे एकअग्निकी शिखा निकली और उसमें वह भस्महोगया यहसुनतेही महेन्द्र रोनेलगा और सब सभा-सदों को शोकवस्त्र धारणकरनेकी आज्ञादी और रानी विचित्र मायाकोभी अंधेरनगरी से बुलवाया वहभी उसकामरण सुनके रोनेलगी उपरान्त महेन्द्र वहांसे सबसभासदोंसहित उसस्थान पर आया जहां सुगन्धप्रिया दानवीकी लोथपड़ी थी उसको देखकर राजपुत्री चन्द्रचूड़ाकी सबदासियांआकर उसकेचरणों में गिरीं और बोलीं कि हमारा कुछ अपराधनहींहै यहसुनकर महेन्द्रनेपूछा कि चन्द्रचूड़ाकहांहै तब उन्होंने सबवृत्तान्त राज-पुत्र भानुविक्रम और राजपुत्री का कहसुनाया उसको सुनके महेन्द्रने कहा कि सकी सामर्थ्य इसमायाकृत देश के बाहर जानेकी नहीं है परन्तु प्रथम में सुगन्धप्रिया दानवी की लोथ का संस्कार करलूं उपरान्त उस झोंटाउपाड़ीको दण्डदूं यह कहकर उसने आज्ञादी कि लोथउठाने के वास्ते सबमायाकृत और अकृत सरंजाम शीघ्र इकट्ठाकियाजावे यहआज्ञापातेही घण्टे और घड़ियाल और शंखबजानेवाले और अद्भुतमिथ्या ईश्वरके भजन गानेवाले और सहस्रों मायाकृत लोहके पुतले मायाकृत घोड़ोंपरसवार और उसदेशके जितने बड़े२ मायावी दानवथे सबआये और उस म्लेच्छी को बड़ी धूमधामसे उठा

कर अपनेमतके अनुसार लोथका संस्कार किया उपरान्त म-
हेन्द्र म्लान चित्तहोकर बदरी उद्यानमें चलाआया और उस
देशके जितने म्लेच्छ और दानवराजाथे सबको एकएक आज्ञा
पत्र इसप्रकार से लिखा कि पद्मावती शत्रुंजयके दौ त्रि भानु
विक्रम और राजपुत्री चन्द्रचूड़ा को लेकर पलायन होगई है
उनको जहां जो कोईपावे पकड़कर मेरेपासलेआवै और उन्हीं
पत्रोंकेसाथ एकपत्र उसने निशाकरी म्लेच्छीकोभी लिखा यह
निशाकरी राजपुत्री चन्द्रचूड़ाकीनानीथी म्लेच्छी और दानवी
माया में उसकेसदृश दूसरा कोई न था और महेन्द्रसे सम्बन्ध
भी उसका था और बड़ी बुद्धिवान् और चतुर थी पहिले वह
अदृश्यखण्डमें रहाकरतीथी परन्तु जबसे उसका मारीचनामी
पुत्र महारानी विचित्रमाया की सुंदरीनाम पुत्रीपर आसक्तहो-
गया था तबसे वह महेन्द्र के भयसे उसखण्ड से निकलकर
प्रत्यक्षखण्ड के हैहयदेश में आबसीथी और जब उनदोनोंकी
प्रीति का वृत्तान्त महेन्द्रको विदितहुआ तब उसने राजपुत्री
सुन्दरी को पकड़ाकर रक्तबाहिनी नदीके पूर्वतटके आगे जो
मायाकृत बन था वहां भिजवादिया था और वहां उसको
एकहिंडोले में बैठाकर हिंडोलेको कुछ मायाकरके ऐसा स्थापि-
तकरदिया था कि वह अपने आप हिलाकरता था राजपुत्री
उसमें बैठी हुई झूलाकरती थी और न उससे उतरसकती
थी और न कोई उसके निकट जा सकता था और मारीच को
निशाकरी के भयसे कुछदंड नहीं दिया क्योंकि निशाकरी बड़े २
प्रतिष्ठित मायावियों में सेथी और दानवी माया का गुरुभी
जानती थी बारह सहस्र मायावी म्लेच्छ उसकी आज्ञामें रहते
थे और वे सब हैहय देशमें बसे थे यह म्लेच्छी उन सबकी
प्रधान थी महेन्द्र सदैव उससे भयभीत रहताथा और प्रत्यक्षमें
बाड सत्कार करता था परंत अंतष्करण से शत्रुभाव मानताथा

निदान इस समय उसने यह ध्यान किया कि चन्द्रचूड़ा को मोहनी चित्रकी भांति पकड़वा लेने से उसकी नानी निशाकरी अवश्य बुरामानेगी और ऐसा न हो कि कोई उपद्रव उठावे और उस मायाकृत स्थानों के नष्ट कर्ता से मिलजाय और इसी बात को बिचारकर उसने पृथक् एक पत्र निशाकरी को इस आशय का लिखा कि हे रानी निशाकरी तेरी धेवती चन्द्रचूड़ा को मैंने बड़ा अधिकार दिया था और उसको सब देशकी रानी बनादियाथा परंतु इसपरभी उसने मेरा कुछ ध्यान न किया और नङ्गपना करके भानुविक्रम के साथ भागगई इससे तुमको लिखाजाता है कि इस आज्ञापत्र को देखतेही उसको ढूंढ़कर मेरे समीप ले आओ मैं उसको डाटकर तुम्हारे खयालसे छोड़दूंगा और भानुबिक्रम का बधकरूंगा और जो तुम इस में देरी करोगी अथवा इस आज्ञाके पालन से निषेधकरोगी तौ तुमराज्यकी शत्रुसमझी जाओगी और तुम्हाराराज्य और धन सब हरण करके तुम्हारा बध किया जायगा इस आशय को उसने गद्यलेखमें लिखकर अपने बकासुरनामी भृत्य को दिया और आज्ञादी कि इसको निशाकरी के पास लेजा और शीघ्र उत्तर लेकर चला आ निदान वह भृत्य उस पत्रको लेकर बड़ामार्ग उत्तीर्ण करके हैहय देशमें पहुंचा निशाकरी उसके आने का वृत्तांत सुनकर उठी और बड़े सन्मानसे उसको लाकर अपने महल में टिकाया और उत्तमोत्तम खानपान और नृत्य और गान का सरंजाम करके बडे भावसे उसकी सेवा की जब सब हो चुकातब उस ने पूछा कि आपनेमुझसी हीनके गृहको पवित्र किया परंतु अब आप अपने आने का कारण कहिये यह सुनकर बकासुरने वह महेन्द्र का पत्र देदिया उसको पढ़कर बुद्धिमान् होने के कारणसे क्रोध नहीं किया किन्तु बहुत धीमेपनके साथ बकासुरसे कहा कि आप यहां स्थित रहिये मैं

अपने मंत्रियोंसे सलाह लेकर सोच बिचारकर उत्तरलिखतीहूं
यहसुनकर वह बोला कि बहुत अच्छा तब निशाकरी वहां से
उठकर अपने भवनके भीतर चलीगई यह निशाकरी केरली
विद्यामें भी परम प्रवीण थी भीतर जाकर एकांत स्थानपर बैठ
कर राजपुत्र भानुविक्रम और मायाधीश महेन्द्रके बलाबलका
प्रश्न करके विचारनेलगी उससे उसने निश्चय कियाकि राज
पुत्र भानुविक्रम बड़े उत्तम बंशसे उत्पन्न है और मायाधीश
महेन्द्रका बधकर्त्ताहै वह इस मायाकृत देशको विजयकरेगा जो
जो उसके साथदेंगे प्रतिष्ठा धन और राज्यसे युक्तहोंगे और
जो उससे शत्रुता करेंगे वे सब मारेजायँगे और उनकास्थान
और धन दोनों नष्ट होजायँगे यह निश्चय करके उसने अप-
ने चित्तमें कहा कि चन्द्रचूड़ा तेरे आंखों की पुतली है उस
का साथ दे और इसदुष्ट महेन्द्रको छोड़ जो बड़ा कृतघ्नी है
क्यों कि इसने इस देशके पूर्व महाराज सुरेन्द्र को कैदकर
रक्खा है और तेरे पुत्र मारीचसे उसके राजपुत्री सुंदरी पर
आसक्त होनेके कारणसे शत्रुता मानताहै और उसकी स्त्रियाको
प्रकार २ का दुख दे रक्खा है कि जिसके शोकमें आश्चर्य्यनहीं
है कि मेरापुत्र पंचत्वको प्राप्त न होजाय इससे उचितहै कि मैं
अपने पुत्र और धेवती को बचाऊं और महेन्द्रसे युद्धकरके
अपनेजीकी लगीहुई को बुझाऊं क्यों कि इससे उत्तम कोई
समय न मिलैगाकि मायाकृत स्थानोंका नाशकर्त्ताभी आगया
है और केरल विद्यासे भी यही निश्चयहुआ है निदानउक्त
प्रकारसे सोच बिचारकर उसने एकपत्र आधीनताईसे इस
आशय का महेन्द्रके पत्रके उत्तर में लिखा कि हे राजेन्द्रदान-
वेन्द्र मायाधीश महाराज महेंद्र इसदासी को ऐसापत्र भेजकर
आपने यहांतक प्रतिष्ठा दी कि ऐसी प्रतिष्ठा किसीकी स्वर्ग में
भी न होगी आपने जो कुछ आज्ञा मेरी धेवतीकेलिये लिखीहै

उसको सुनकर मुझको बड़ाआश्चर्य होताहै-योंतोमैंबहुत दिनों से आपकी दृष्टिसे उतरगई हूं कोई न कोई अपराध मेरे ऊपर लगाया जाता है कृपादृष्टि बहुतकालसे उठाली है और यहां इतनी दूरपर अपने घरमें पड़े रहने पर भी अपराधीहूं परंतु इसमें तो मेराकुछभी अपराध नहींहै संसारमें सबमनुष्यप्रीति के बंधनसे लाचारहैं कोई मनुष्य अपने नेत्रोंके प्रकाशपुत्र या पुत्री को अपने जीते जी न मरवाने चाहेगा किंतु अपना प्राण देना अंगीकार करेगा इससे यह प्रयोजन है कि इस दासीसे यहकार्य कभी न होगा कि अपनी धेवती को ढूँढ़कर आपके पासलावे और उसका मरण अपने नेत्रोंसेदेखे आप सब के स्वामी हैं आपचाहे मारें चाहे छोड़ें जो कुछआप से होसकै करें मेरेलिये कुछ उठानरक्खें मुझको आपका सन्मान अथवा चंद्रचूड़ाका अपमान अंगीकार नहीं है यहपत्र लिखकर उसने बकासुर को देदिया और वह उसे लेकर महेंद्रके पास चल-दिया और यहां निशाकरीने अपने आज्ञावर्ती बारह सहस्र मायावी दानवोंको बुलाकर आज्ञादी कि युद्ध के लिये सन्नद्ध होजाओ वे सब आज्ञापातेही शस्त्रादिसे अलंकृतहोकर आगये और तंबूआदि सब सरंजाम बाहनोंपर लाददिये गये तब उस रानीने अपनी माता ‥द्राननको भी अपने साथ लेलिया और अपने पुत्र मारीचको एकपत्र भेजा जो अपनी प्रिया सुंदरीके विरहमें घरसे निकलकर पर्वत और बनोंमें रहाकरता था घरअच्छा नहीं लगताथा और उसकी रक्षाके लिये निशा-करीने बारह सहस्र म्लेच्छ नियत करदियेथे और वे भी उस साथ वहीं रहतेहैं उसपत्रमें उसको लिखाकि हे पुत्र मुझसे और महाराज महेंद्रसे बहुत बिगड़ गईहै तू इसपत्रके देखते ही अपने साथ की सेना सहित यहां चलाआ उसपत्रको पाते ही वह बहुत प्रसन्नहुआ और अपने चित्तसे कहनेलगा कि

अब या तो हम महेन्द्रके हाथसे मारेही जायँगे अथवा बचेंगे तो हमको हमारी प्रिया मिलेगी॥

सो० आजुहि न्याउ चुकाय लेहौंकरि अतिसरबरी।
रहैं प्राणकै जाय तेरे कारण सुन्दरी॥

निदान वह बारह सहस्र म्लेच्छों को लियेहुये तुरंतचला आया और निशाकरी चौबीस सहस्र मायावी दानवोंकी सेना लेकर राजपुत्री चंद्रचूड़ाको ढूँढ़नेको चलदी इधर वहबकासुर पत्रलेकर महेंद्रके पासपहुँचा उसको देखतेही वहक्रोधरूपीज्वालासेदीप्त होगया और आज्ञा दी कि तुममेंसे थोड़ेसे मायावी म्लेच्छ जाकर जहां मिलै चन्द्रचूड़ा को पकड़लाओ औरजो कोई उसकी सहायता करै उसेभी दण्डदो मैं एक स्त्री पर क्या सेना लेकर जाऊं तुम मेंसे थोड़ेसे निशाकरीको सेनासहितबध करनेके लिये बहुत हैं यह सुनकर बहुतसे दानव और दानवी मायाविद म्लेच्छ राजपुत्री चन्द्रचूड़ा के खोजमें चल दिये नाम उनके आगे बर्णन होंगे अब कुछ वृत्तांत उनदोनों परस्पर प्रीतिमान् अर्थात् राजपुत्र भानुबिक्रम और राजपुत्री चन्द्रचूड़ाका सुनिये पद्मावती उसीप्रकारसे माया रूपी पर्वत बनी हुई दोनों परस्पर आसक्तोंको लियेहुए पांचसौ कोसतक चली गई परंतु उस मायाकृत देशकी सीवांको उल्लंघन न करसकी कहीं कोई उग्रपर्वत बीचमें आगया कहीं अगम्य नदी पड़गई और कहीं और २ मायाकृत अद्भुत पदार्थ बीचमें आगये कि वह उनको लेकर बाहिर न जासकी जब अपनी जानमें वह बहुत दूर निकलआई तब एक स्थानपर ठहरगई और दोनोंसेकहा कि अब तुम पर्वतपरसे उतर आओ जब वे उतर आये तब आप फिर अपने प्राचीन स्वरूपमें आगई और गुप्तमार्गोंसे दोनोंको साथ लेकर चलदी औरथोड़ी दूरपर उनको एक वन परम शोभायमान प्रफुल्लित प्रसूनों से सुगन्धित और जल

की धाराओंसे अलंकृत हरा भरा बड़ा रमणीक मिला ॥

चतुर्विंशतिकलाछंद। कुंजवृक्षनिकी बनी शुचि परमशोभाधाम।
मधुर बाणीउच्चरत शुकसारिका अभिराम ॥
एकतरुके पत्र शाखा मिले दूसर साथ।
मनो मतवारे खड़े दो डारि गलमें हाथ ॥

वहां पहुंचकर चन्द्रचूड़ाने कहा कि हे पद्मावती इस बन में आनेसे कुछ चित्त स्वस्थसा हुआहै और क्षुधा और प्यास से पीड़ितहूं जो तू थोड़ीदेर ठहरजाय तो विश्राम करलूं और बनसके तो कुछ खा पी भीलूं यह सुनकर पद्मावती रोकर कहने लगी कि देखो यह वह राजपुत्रीहै जिसके पीछे तेरह सहस्र राजकुमारी चलतीथीं और सदैव उसकी आज्ञामें रहतीथीं आज वही राजपुत्री बिना किसी सरंजामके इसबनमें भागी भागी फिररहीहै न छत्रहै न चमर और न पीछे चलनेवालेहैं सत्यहै कि प्रेमरूपी राजाधिराजकी सभामें राजा और रंकका एकसा सन्मान और अपमानहै इसपर भी देखिये कि प्राण बचते हैं या नहीं और कहीं विश्राम मिलताहै अथवा नहीं सब पृथ्वी आकाश शत्रुरूप होरहाहै महेन्द्रने ढूंढ़नेको सहस्रों मायावीभेजे होंगे कोई आपत्ति आयाही चाहतीहै इस प्रकारसे उसने अपने विचाररूपी दर्पणमें भविष्यरूपी स्वरूपको देखकर फिर सोचा कि यह राजपुत्री है श्रमित होगईहै किसी स्थानपर ठहरजाओ और देखो कि प्रारब्ध क्या दिखाताहै यह सोचकर वह पर्व्वतपर एक स्थान में ठहरगई परन्तु वहां वह राजपुत्री विकलहोकर रुदनकरनेलगी राजपुत्र भानुविक्रमने उसका अनेक प्रकारसे आश्वासन किया तब उसने कहा कि अरे कृतघ्नी मैंनेतेरेकारणसे क्याक्या दुःख मोलनहीं लियेहैं—

छं॰इतउतजगमेंदिवानीसीफिरतरही कौनबदनामीजौनशिरपैलईनहीं।
त्रासगुरुलोगनकीग्रासकैअनेकसहीकबबहुभांतिनकेतापसोंतईनहीं ॥

हरिचन्दगिरिबनकुंजजहांजहांसुन्यों तहांतहांकबउठिधाइकैगईनहीं।
प्राणकेपियारेहमहिंएतौनकष्टहोतोहोतीजोतिहारेप्रेमफंदमेंपरीनहीं॥

परन्तु मैं इसबात का कुछ उराहना नहींदेतीहूं यदि होसके तौ कुछ भोजनको लाओ जिसे खाकर क्षुधाकी पीड़ाको मेटूं यहसुनकर राजपुत्र बोला कि आप यहींबिराजिये मैं कोई मृग अहेरकरके लाताहूं उसके मांसको अग्निसे संस्कारकरके तुम को खि॰ाऊंगा यहकहके वह धनुषबाण लेकर चलदिया और पद्मावतीको राजपुत्रीके समीप ॰ोड़गया कुछदूर पर्व॰से चल कर उसको एकमृग मिला परन्तु पैदलहोनेके कारणसे उसका पीछाकरताहुआ दूरनिकलगया जब यहांबिलम्बहुई तब पद्मा- वती ने कहा कि मैं भानुविक्रम को बुलाने जातीहूं ऐसा नहो कि कोई मायावी मिलजाय और मायाकरके उनको पकड़ ले जाय यह कहकर वह चलदी और वहां राजपुत्री चन्द्रचूड़ा एकाकी रहगई उससमय वह एकांतपाकर अपनी विपत्ति को स्मरणकरके रोनेलगी और ईश्वरसे प्रार्थनाकी कि हे दुःखार्ति- नाशन कब मेरी विपत्तिको हरोगे॥

क० कालेपरेकोसचलिचलि थकिगयेपांयसुखकेकसालेपरेतालिपरेनसके।
रोयरोयनैननिमें हालेपरेजालेपरे मदनकेपालेपरे प्राणपरवसके॥
हरीचन्द्रअगहूंहवालेपरेरोगनिके सोगनिकेभालेपरे तनबलखसके।
पगनिमेंछालेपरेनाँघिबेकोनालेपरे तऊहायलालेपरेसुखकेदिवसके॥

राजपुत्री इसीप्रकारसे अपने कष्टके सोचमेंथी कि इतनेमें उनमायावी दानव और मनुष्योंमेंसे जिनको महेन्द्र ने नियत किया था एकमायावी मनुष्य अमित्रनामी वहां आ निकला और राजपुत्री को अकेली बैठीहुई देखकर बिचारनेलगा कि यह तौ बड़ी सुन्दरी और वस्त्रआभूषणों से अलंकृत है और महेन्द्रने इसकेमारडालनेकी आज्ञादीहै इसे धोखादेकरलेचलो और घरचलकर इससे रमए करनेका प्रश्नकरो जो इसने मेरे

साथ रहना स्वीकारकिया तो एक तो सुन्दरीस्त्रीहै दूसरे बहुमोल के आभूषणोंसे युक्तहै बहुत सुखपूर्वक निर्बाहहोगा और आज कलके अधाधुंधमें कोई ऐसा ध्यानभी न करैगा कि चन्द्रचूड़ा मेरेयहांहै यही समझैंगे कि भानुविक्रम भगाकर लेगया यह बिचारकर उसने राजपुत्री के समीप जाकर दण्डवत् की उसे देखकर राजपुत्री भयभीतहुई कि अब यह मुझको पकड़कर लेजायगा परन्तु उसनेकहा कि हेराजपुत्री मैं तेरामित्रहूं मुझसे कह कि पद्मावती और भानुविक्रम तुझसे क्योंकर पृथक्होगये वहबोली कि अन्नोदकके खोजमेंगयेहैं अमित्रने यहबात केवल उनदोनों का वृत्तान्त जाननेको तो पूछाही था जब उसको वह मालूम होगया तब उसने छलकरके कहा कि हे राजपुत्री राज पुत्र भानुविक्रमने मुझको अपना आज्ञाकारीबनायाहै वह इस समय मेरे बागमें बैठेहुएहैं और मुझको आपके बुलानेकेलिये भेजाहै यहसुनकर राजपुत्रीबोली कि पद्मावती आजाय तब मैं चलूंगी वहबोला कि आपको पहुंचाकर मैं उसकोभी ढूंढ़ला-ऊंगा इसपर राजपुत्री उठकर उसकेसाथ २ उसकेबागमें चली आई और देखा कि वह बाग प्रकार २ के फूलफल वृक्ष लता और पक्षियों से युक्त बड़ाशोभायमानहै वहां आकर राजपुत्री उसबागके भीतरके प्रासादमें चलीगई और वहां एकरत्न ज-टित शय्यापर बैठगई और अमित्रसेकहा कि भानुविक्रम कहां हैं उनको बुलालाओ यहसुनकर वहबोला कि हेराजपुत्री अब तुम भानुविक्रमका नाम मतलो मैं तुम्हाराभक्तहूं तुमको धोखा देकर बुलालायाहूं मेरे साथरहना स्वीकारकरो और यहां आ-नन्दपूर्वक रहो जब भानुविक्रम माराजावै और महाराज शत्रुं-जयका क्रोधशांतहोजाय तब अपने स्थानको चलीजाना यह सुनकर चन्द्रचूड़ा घबड़ागई और बोली कि अरे अमित्र जो तैंने मेरे शरीरसे हाथभी लगाया तो मैं अपनी अंगूठीके हीरे

को खाकर अभी अपनेप्राणदेदूंगी तब वह हाथजोड़कर कहने लगा कि मेराकहना स्वीकारकर में तेरे पैरोंपर अपना शिर रखताहूं परन्तु जब राजपुत्रीने न माना तबवह धमकाने और उसके साथ अधिकताई करनेलगा उस समय राजपुत्री ने परमेश्वर से विनयकी कि हे ईश्वर हे परमेश्वर हे परमात्मा हे भक्तार्तिनाशन हे दीनोद्धर हे करुणानिधान हे अच्युत हे माधव हेमुकुंद मेरी इस पापीसे रक्षाकरो और मेरी लज्जा रक्खो विनय करतेही परमेश्वरकी मायासे वहां एक और मायावी मनुष्य विरोधी नामी राजपुत्रीके खोजमें वहां आनिकला और राजपुत्रीके शब्दको सुनकर वहां आया और अमित्रको वह अकर्म करतेहुए देखकर डाटकरबोला कि अरे निर्लज्ज तू यह क्या कररहाहै उसको देखकर अमित्रने सोचा कि मेरा यह कर्म अब प्रकटहोगया यह अवश्य जाकर महेन्द्र से कहैगा और वह मुझको दंड देगा इससे इसको मार कर राजपुत्रीके साथ बरियाई कुकर्म करूं यह सोचकर उसने आसुरी धूम्रास्त्र विरोधीके ऊपर फेंका उससे सबबाग में धूम फैलगया और अंधकारसा होगया विरोधी ने यह देखकर आसुरी जल अस्त्रका प्रयोग किया उससे वह धूम एक ओर को हटकर प्रकाश होगया और फिर उसी अस्त्रको दुबारा अमित्रपर फेंका कि उसपर पड़तेही वह जल अग्निरूप होगया और उसने अमित्रको भस्म करदिया भस्म होतेही बडा घोर शब्द होनेलगा और थोडीदेरमें जब वह मिटगया तब आकाशबाणी हुई कि- अमित्रोत्रव्यपोथितम्- इसके पीछे विरोधी उसे मारकर राजपुत्रीके समीपआया और तन मनसे उसके परम सुंदर स्वरूपपर आसक्तहोकर हाथ जोडकर कहने लगा कि हे राजपुत्री जो तू मेरे यहां रहना अंगीकार करै तो अपने जीवितकी अवधि पर्यंत तेरीसेवाकरूं और महाराजसे विनयकरके

तेरा अपराध क्षमाकरादूं भी राज्य सम्बन्धियों मेंसेहूं कोई ऐसा वैसा नहींहूं यह सुनकर राजपुत्री बोली कि अरे विरोधी तू क्याकहताहै तुझको ऐसी अनुचित बार्त्ता कहना उचित नहीं है अपने चित्तसे ऐसे विचारको दूरकर नहींतो जो तैंने मेरे शरीरसेभी हाथ लगाया तौ फिर मुझको जीतीहुई न पावैगा यह सुनकर विरोधीने समझा कि यह भानुविक्रमपर आसक्तहै मेरेसाथ रहना कभी स्वीकार न करैगी यह विचारकर उसने कुछ बशीकरण किया और उसके प्रभावसे राजपुत्री उसपर मोहितहोकर कहने लगी कि मुझको तेराकहा करना स्वीकार है तब विरोधीने विचारकिया कि यह स्थान परायाहै स्वामी इसका मारागया यदि इसका कोई कुटुम्बी आगया अथवा महेन्द्रके प्रेरितोंमेंसे कोई इधर आनिकला तौ बड़ा बुरा होगा राजपुत्री तौ छिनजायगी और मेरे प्राणजायँगे यह विचारकर वह उठकर चलदिया और बशीकरणके प्रभावसे राजपुत्री भी उसके पीछे २ होली और वह उस बागसे निकलकर अपने स्थानकी ओर चलदिया उधर भानुविक्रम एक मृगको अहेर करके उसस्थानपर गया जहां राजपुत्रीको बैठाआयाथा और वहां उसे न पाकर ढूंढ़ताहुआ इस ओरको आनिकला कि अकस्मात् विरोधी राजपुत्रीको लियेहुए उसे दृष्टिपड़ा यह देख कर राजपुत्रने अनुमान किया कि इसमनुष्यने राजपुत्रीपर कुछ माया करदीहै जिसके प्रभावसे वह दौड़ीहुई उसके पीछे २ जारहीहै यह अनुमानकरके उसने विरोधीके हृदयको लक्षलगा कर धनुषसे एकबाण छोड़ा और वह विरोधीके शरीरके पार होगया बाणके लगतेही विरोधी चक्कर खाकर गिरपड़ा और निश्चेष्ट होगया उसके मरनेपर बड़ा भयंकर शब्दहुआ और उसकी शांति होनेपर भानुविक्रम राजपुत्रीके समीप गया व विरोधीके मरनेसे चैतन्य होगई और राजपुत्रको देखकर उस

से लिपटगई और रोरोकर सब वृत्तान्त कह सुनाया तब राज-
पुत्र उसको लेकर पर्वतके एक स्थानपर आया और खड्गको
पहाड़के पाषाणसे रगड़कर अग्नि बनाई और बनकी समिध
बटोरकर अग्नि प्रज्वलितकी और उस अहेर कियेहुए मृगके
मांसको अग्निमें संस्कारकरके राजपुत्रीको खिलाया और
आप भी खाया और जलधारामेंसे निकलाकर पानकिया और
परमेश्वरको धन्यबाद देकर अभी विश्राम नहीं करने पाये
थे अकस्मात् चपला चमकी और बादल गरजा और थोड़ी
देरमें एक म्लेच्छ महेन्द्रका प्रेरित कालेवर्णका आया और
भानुविक्रम और चन्द्रचूडाको बैठाहुआ देखकरबोला कि अब
कहांजावोगे—महौधीदानवोहम्—यह सुनकर भानुविक्रम खड्-
ग लेकर उसकी ओर दौडा परंतु उसने तुरंत कुछ माया की
कि उससे भानुविक्रमका आधा शरीर पृथ्वीमें समागया दैव
योगसे उसीसमय वहां पद्मावतीभी आपहुंची और उसदानव
को देखकर उसने कुछमंत्र पढ़कर नारिकेल अस्त्र उस दानव
के मारा उसको देखकर महोधीने तुरंत कुछ और माया करके
पद्मावती का अस्त्र व्यर्थ करदिया और आप वायुरूपी बन
कर उन तीनों के शरीर से लिपटगया और उनको उड़ाकर
लेचला परंतु मार्गमें उसने विचारकिया कि यदि कोई इनका
सहायक मिलगया तो वह इनको मुझसे छीनलेगा इससे इन
तीनोंका शिरकाटकर महेन्द्रके पासलेचलूं और बहुतसा द्रब्य
पाऊं यह विचारकर वह एक स्थानपर ठहरगया और वह
उन तीनोंको मारने को उद्यतहुआ उससमय राजपुत्री चन्द्र
चूड़ ने विलापकरके कहा कि अरे दुष्ट प्रथम मेरे शिरको काट
ले जिससे मैं अपने प्राणप्यारेको रुधिरसे लिप्त और मृतक
स्वरूप न देखूं यह सुनकर वह दानव राजपुत्रीका शिरकाटने
को चला तब राजपुत्रने पुकारकर कहा कि अरेनपुंसक पहले

मुझे मारडाल यह कब उचितहै कि पुरुष जीतारहै और स्त्री उसके सन्मुख मारीजावै यहसुनकर वह राजपुत्रकी ओर फिरा कि उससमय पद्मावतीने ललकार कर कहा कि अरे पापात्मा तुझको यह उचित नहींहै कि सेवकके जीतेजी उसके स्वामी को मारे इससे प्रथम मेरा शिर शरीरसे पृथक्कर यह सुनकर वह एक चक्करमें आगया और विचार करनेलगा कि इनमेंसे प्रथम किसको मारूं कि इस अवकाशमें भानुविक्रमने अपने हृदयकी शुद्धतापूर्वक उस सर्व सामर्थ्यवान्‌दयालु परमेश्वर से विनयकी कि हे दीनानाथ हेक[illegible]णानिधान इस अधम म्लेच्छ से हम दीनोंकी रक्षा कर—

जयकरीछंद। हेप्रणतारत हरणकृपाल । हेजगदीश्वर[illegible]नदयाल॥
भक्तबछलकरुणानिधिपर्म । पाहिपाहितवशरणसधर्म॥
वारिअग्निसोंजिमिप्रह्लाद। प्रलयसोंमनुजिमिसहअह्लाद॥
तिमिमोहिंदीनभक्तनिजजान । दानवसेरक्षहुभगवान॥

एकसमयतीर्थयात्रा में महाराज शत्रुंजय सुगंधमादन पर्वत पर बनबिहार कररहेथे कि वहां एक अप्सरा आई और महाराजके सुंदर स्वरूपको देखकर आसक्तहोगई महाराजने उसके साथ गंधर्व बिवाह करके बहुत दिनोंतक उस बनमें बिहार किया उपरान्त वह अप्सरा बरुणलोकको चलीगई और महाराज तीर्थयात्राकरके अपने नगरको चले अ[illegible] तबसे वह अप्सरा यदा तदा किसी खेचर राक्षसको भेजकर महाराज की क्षेम कुशलका हाल मँगाया करतीथी और जबकभी महाराज उसको बुलवातेथे तब महाराज के पासआया करतीथी निदान उसी अप्सराने एक खेचर राक्षसको पत्रलेकर महाराज शत्रुंजयके पास भेजाथा और वह आकाश मार्गसे शत्रुंजय की सेनाकी ओर जाताथा कि राजपुत्रकी विनयको सुनकर ईश्वर ने उस राक्षसको प्रेरणाकी और वह उसीसमयपर जब वह

म्लेच्छ उन तीनोंको मारनेको उद्यतथा आकाश मार्गसे उसी ओरको मुड़पड़ा और इनके करुणा विलापको सुनकर नीचे उतरआया और राजपुत्रको पहँचानकर देखा कि वह परवश में है और एक दानव उसको मारनेको उद्यतहै यह देखकर उस खेचरने उस मायावी म्लेच्छको पीछेसे जाकर अकस्मात् पकड़ लिया और उसको खंड खंड करके भक्षण करगया पेट में जानेपर उस खेचरको उदरमें बड़ा गड़गड़ाहट मालूमहुआ और वह पेट पकड़कर इधरसे उधर दौड़नेलगा और बोला कि यह कैसा बुरा भक्षण जिसने पेटमें जातेही गड़गड़ाहट मचादी है निदान जब थोड़ी देरमें वह गड़गड़ाहट मिटगई तब वह खेचर भानुविक्रमके समीप गया और उसको दंडवत् करके बोला कि आप यहां कहां आयेहैं राजपुत्रने पूछा कि तू कौन है उसने कहा कि मुझको आपकी नानी चित्रिणी अप्सराने आपके नाना महाराज शत्रुंजयकी क्षेम कुशललेनेको भेजा है वहीं मैं जाताहूं तब राजपुत्रने अपना सब वृत्तान्त कह सुनाया और उस खेचरसे कहा कि श्रीनानाजी से मेरी साष्टाङ्गदंडवत् कहके सबवृत्तान्त जो अबतक हुआ है कह सुनाइयो औरवहां जितने हमारे मित्रवर्ग और महाशय लोगहैं सबसे हमारीयथा-योग्य नमस्कार कहिदीजियो और तैंने यहबुराकर्मकिया जो इस दानवको मारडाला क्योंकि यह मनुष्यथा कर्म इसकेदानवीथे जोमेराजीवित ईश्वरकोनष्टकरना इच्छित न होतातौ वहईश्वर किसी न किसीप्रकारसे मुझको बचाताहमलोगचाहेंतौ राक्षसोंसे सब मायावी म्लेच्छों को नाश करादें परन्तु ऐसाकरना उचित नहीं है क्योंकि खेचर राक्षस आदिकों के कर्म और पृथ्वी के मनुष्यों के कर्मोंमें बड़ा अंतर है यही क्या कर्महै कि हमलोग इन म्लेच्छों को बहुवेष धारण करके छल से मारकर इन को विध्वंस करते हैं सो अब तू जा और फिर ऐसा मतकीजियो

तब वह खेचरराक्षस राजपुत्र को दण्डवत्करके आकाशमार्गी हुआ और वह तीनों वहांसे चलकर पर्वतकी एककंदरामें आकर छिपकर बैठे महेन्द्र इनका खोजकरा रहाहै और सहस्रों मायावी दूतउनके खोज लगानेको चारोंओर फिररहे हैं और राजपुत्रीकी नानी निशाकरी इनको ढूंढ़ने निकलीहै निदान अब इनसबको यहां छोड़कर अगले अध्यायमें प्रहास आदि पांचों कार्य साधक बहु वेष धारण करनेकी विद्याके वेत्ताओंकी कथा वर्णन होगी ॥

इतिश्रीआगरापुरनिवासिचौरासियागौड़वंशावतंसश्रीपण्डितमोहनलालात्मजपण्डितकुंजविहारीलालकविविरचितेविचित्रचरित्रे प्रथमखण्डे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

प्रहासआदि पांचो बहुवेष धारण करनेकी विद्याके परमवेत्ताओं का पृथक् २ मार्गोंसे उसमायाकृत देशमें पहुंचना और छलकरके बहुत से दानवों और म्लेच्छोंका वधकरना और राजपुत्र भानुविक्रम और राजपुत्री चन्द्रचूड़ासे मिलापहोना और रानी निशाकरीसे भेटहोना ॥

चौ० नन्दनवन उद्भव मधुचारु। अमियस्वाद अतिगुण आगारु ॥
वरप्रज्ञाकर मदकर स्वच्छ। पान करत जेहिंअमर स्वदच्छ ॥
हेवागीश देहु मोहिं सोय। जासे विमलबुद्धि ममहोय ॥
छकितहोयवरणों छलरीति। धरि बहुवेषलेत जिमिजीति ॥
कहो प्रसंगमनोहर गुप्त। मननहिं होय सुनत जेहितृप्त ॥

सौरभ महाराजने इसललित कथाको इस अध्याय में इस प्रकारसे वर्णन कियाहै कि वह परम प्रज्ञावान् बहु वेषियों का आचार्य प्रहास और उसके चारों शिष्य जिनके नामपूर्वमें वर्णनहोचुकेहैं बड़े २ पर्वती मार्गोंको उत्तीर्ण करतेहुये उस विस्मयी मायाकृत देशकीसींवापर पृथक्२ मार्गोंसे जापहुंचे और उसदेश के मायावी मनुष्यों का वेष धारण करके उसदेश में

प्रवेशकिया और चारोंओर भ्रमण करनेलगे परन्तु एकदूसरेके रहने और जानेकी दिशा और स्थानको जानरहे भ्रमणमें कहीं उनको रमणीकहरेभरे वनमिले कहीं उत्तम जलरखनेवाली नदियां मिलीं कहीं मायावी मनुष्योंके मायासे रचेहुये अनेक प्रकारके स्वांगमिले कहीं पर्वत और पर्वतोंकी डांगमिली कहीं महेन्द्रकी आज्ञासे बैठीहुई मायावी रक्षकों की चौकियां मिलीं और कहीं आसुरी विद्याके साधक मायासे अग्निऔर जल वरसतेहुये उन सबको देखतेहुये वे सबबहुरूपी पृथक् पृथक् जातेथे कि एक स्थान पर प्रहासको एकवनवड़ा अद्भुत मिला पृथ्वी औरवृक्ष उसवनके सबचांदीके थे और घासस्वर्ण और रजतमयीथी उसको देखकर प्रहासने कहा कि हाय क्या किया जाययदि कोई उपाय चलता तो इससब वनको उठाकर अपनी थैलीमेंरखलेता परंतु और कुछन होसकैतो घासजितनी कटसके काटलो यह विचारकर उसने अपनी थैलीमेंसे हसिया निकाला और शीघ्र २ घास काटनेलगा और इसडरसे कि कोई आ नजाय चारों ओरको देखता और बड़ी चपलतासे घासकाटता जाताथा कि इतनेमें एकवाणी सुनाईदी कि अरे छलियारह अब कहां जाने पावैगामें तेरेही खोजमें था यहसुनकर प्रहासनेग्रीवा को सीधाकरके कहा कि हाय मेरा प्रारब्ध कैसाबुरा है और फिर उठकर जो सन्मुख दृष्टिकी तो देखा कि एकमायावी मनुष्य जिसका शरीर चांदी का है केश सुवर्ण औररजतमयी हैं शिर से एकबड़ा सर्प लपेटे हुये है और म्लेच्छी मायाके प्रयोगकरने कासरंजाम लियेहुयेहै ललकारताहुआ आरहाहैउसको देखकर प्रहासभागा परन्तु उसनेतुरन्त मायाकरके उसको स्तम्भितकर दियाऔर पासजाकर खड्ग निकालकर बोला कि तेराही नाम प्रहासहै महेन्द्रको तेरीही विशेष चिन्ताहै इससे मैंने तुझे पकड़नेके लिये यहचांदीका वनरचाथासो तुझे पालियाअब तेरा

शिर काटकर महेन्द्र के पास लेजाऊंगा और बहुतसाधन उसके बदलेमेंपाऊंगा प्रहासबोला कि मैं प्रहासनहींहूं मैंतो एकआपत्तिकामाराहुआ घसियाराहूं वह बोला कि तेराछल मुझसे नहीं चलैगा मुझकोमहेन्द्रनेरे आनेकासमाचार पहिलेहीसेबताचुका है निदान यहां यहबातें होरहींथीं कि बाकी चारों बहुरूपियोंमें से एक उपहासनामी एकऊंचेस्थानसे यह देखरहाथा कि प्रहास को कालके मुखमें जानकर शीघ्र एकछल चिंतवन किया और वहांसे तुरन्त उस ओरको चलदिया और जैसेही वह मायावी मनुष्य जिसका नाम सौवीरथा प्रहासका शिर खड्गसे पृथक् किया चाहताथा कि पीछेसे किसीने कहा कि भाई थोड़ीदेर ठहर जाओ उधर जो उसने दृष्टिकीतो देखा कि एक मनुष्य ग्रीवामें सर्प लपेटे हाथमें त्रिशूल धारणकिये कानोंमें मुद्रे पहिरे पुकारता चलाआताहै सौवीर ठहरगया और जबवह समीपआया कहनेलगा कि यह मनुष्य बड़ाचोरहै मेरा सबधन चुरालायाहै इससे मेरे धनका पता पूछकर इसे मारिये मेरेघरमें इसने कुछ नहीं छोड़ाहै सो और धनकीतो मुझे चिंतानहीं है परन्तु मेरे पास दोमोती बड़े अद्भुतथे एक यह चुरालाया है और दूसरा मेरेपास रहगयाहै यह कहकर उसमनुष्यने एकमोती कुक्कुटाण्ड की सदृश बड़ा निकालकर सौवीरको दिखाया उसको देखतेही सौवीर उसका ग्राहक होगया और बोला कि भाई यह पदार्थ तो बड़ा दुर्लभहै कहां तुमनेपाया मुझेदो मैं उसको अच्छीप्रकारसे देखूं उस मनुष्यने कहा कि मैं अलंघ्य पर्वतपर रहताहूं वहां श्रीअद्भुत परमेश्वरकी मायासे पृथ्वीमें मुक्ता उत्पन्नहोतेहैं उन्हींमेंसे यहदोनों मुक्तामैं छांटकर लायाथा एक उनमेंसे यह चुरालाया है और दूसरा यह मेरेपास है लो देखो यह कहकर वह मुक्ता सौवीरके हाथमें देदिया उसने उसको चारों ओरसे देखकर बड़ीप्रशंसाकी तब उस मनुष्यने कहा कि मुखकीभाप

देकर इसके तेज और प्रकाशको देखो यह सुनकर सौवीरने उस मुक्ताको मुखकेपास लेजाकर भापदी उससे वह मुक्ता फट गया और उसमेंसे एकप्रकारका धूम निकलकर सौवीरके मुख और नासिकाकी राहसे ललाटमें चलागया उसके प्रभावसे वह अकस्मात् चक्कर खाकर गिरपड़ा और निश्चेष्ट होगया उस समय उस मुक्तालानेवाले मनुष्यने बड़े शब्दसे कहा—विश्नोर्जेयतितन्नमः--और एकदंड उठाकर ऐसा सौवीरके शिरपर मारा कि उसका भेजाफटगया और वह पंचत्वको प्राप्तहोगया उससमय बड़ा घोरशब्द हुआ और वहसब चांदीकावन अदृश्यहोकर एक भयानक बनरहगया और प्रहास उस आपत्तिसे मुक्तहुआ और उसने उपहासको हृदयसे लगाकर उसके वेष और छलकी प्रशंसाकी तब उपहासने कहा कि यह सब आपहीकी संथादेनेका प्रभावहै अब कहिये क्या आपकी इच्छा है और किधर चलनेका विचारहै प्रहासनेकहा कि हेपुत्र अपना२ पृथक् मार्गही उचित है जावो परमेश्वर तुम्हारी रक्षाकरै यह सुनकर वह प्रहासको दंडवत् करके एकओरको चलदिया और प्रहासने दूसरा मार्गलिया परंतु सौवीरके शरीरस्थ मायाधिष्ठान देवताने विहंगरूपसे जाकर महेन्द्रको सौवीरके मारेजानेका वृत्तान्त सुनाया उसको सुनकर उसने ताली बजाई कि एक लोहनिर्मित पुतला उसके सन्मुख आकर खड़ाहोगया महेन्द्रने उसको एक पत्रदेकर आज्ञादी कि इसपत्रको क्रौंचबनमें लेजाकर वहांके मयंकनामी अधिपतिको देआ वहपुतला तुरंत उस पत्रको लेकर क्रौंचबनमें आया और पत्र उसने मयंकको देदिया मयंकने उसको खोलकर पढ़ा उसमें लिखाथा कि प्रहास और चार और बहुवेष धारण करनेकी विद्याके वेत्ता तुम्हारे बनकी सीवांपर पहुंचतेहैं उनको पकड़लेना और देखो उनसे निश्शंक न रहना निदान वह पुतलातो पत्रदेकर चलागयाथा परंतु

महेन्द्रने सौवीरके सम्बन्धियोंको बुलाकर कहा कि तुमलोग जाकर सौवीरके शरीरका संस्कारकरो और उसके मारनेवाले को खोजो यह सुनकर उसके सब सम्बन्धी वहां आये जहां सौवीर मारा गयाथा और उस के शरीर का संस्कार अपने मतकी रीतिपर करके बहुरूपियों को पकड़नेकी चिन्ता करने लगे और मयंकने पुतलेके चलेजाने के पीछे मायासे उसबन में एकबड़ा उत्तम प्रासाद निर्माणकिया और उसको धनधान्य रत्न शय्या अलंकार और सबप्रकारकी खाद्यपेय और चोष्य पदार्थों से युक्तकरके उसके द्वारपर कुछ मनुष्य रक्षाकरने को बैठादिये और आप प्रासाद के भीतर बैठकर मद्यपान करने लगा और एक कागदका चन्द्रमा बनाकर उसप्रासादके ऊपर स्थापित करदिया और ऐसी कुछ उसपर मायाकी कि वह आकाश के चन्द्रमा की सदृश प्रकाश करनेलगा मद्य पीते पीते उसने विचारकिया ये बहुरूपिये जब आते हैं कोई बेष धारण करके आते हैं और पहँचाने नहींजाते ह इससे कोई ऐसा उपाय रचना चाहिये जिससे ये पहिचान लियेजायँ यह विचार कर उसने मायासे कुछ पक्षीरचे और उनको उड़ाकर उसप्रासादकी मुड़गेलियोंपर बैठादिया और उनमें यह प्रभावरक्खा कि जबकोई अन्य पुरुषआवे अथवा जब प्रहास या दूसरे बहुरूपिये आवें तब उन पक्षियोंमें से एकपक्षी उड़कर नीचे गिरपड़े और कहे कि प्रहास अथवा अमुक बहुरूपिया या अमुक अन्य मनुष्यआया और यह कहकर भस्महोजायँ निदान अब जो मनुष्य आवेगा उसीका नाम ये पक्षी बतावेंगे यह चमत्कार बनाकर मयंक बड़ी स्वस्थतापूर्वक बैठगया और बनकी शोभा देखनेलगा इतने में प्रहास और उपहास आदि बहुवेषधारी सौवीरके बनको उल्लंघन करके क्रौंचबनमें पहुंचे और प्रहास ने देखा कि एक प्रासाद उसबन में बनाहुआ है

ऊपर उसके एक चन्द्रमा लगाहै कि वह आकाश के चन्द्रमा की सदृश किन्तु उससे भी अधिक प्रकाश कररहा है और उस प्रासादके द्वारपर बहुत से मायावी मनुष्य चित्रविचित्र स्वरूप बनायेहुये बैठेहैं दानवी भजन गारहे हैं मृदंगआदि वाद्य बजा रहेहैं और भोजनकेलिये पक्वान्न बनारहेहैं यह देखकर प्रहास ने विचारकिया कि ये वरणसंकर बड़ाआनन्द कररहेहैं चलकर इनको मारिये और इसबनको इन असुरों से निर्भय कीजिये यह सोचकर उसने अपना स्वरूप भी उन्हींकी आकृतिकासा बनालिया और उस प्रासाद के समीपजाकर उन गानकरने-वालोंकी प्रशंसा करनेलगा उसको देखकर उनलोगों ने पूछा कि तुमकहां रहतेहो और नाम तुम्हारा क्याहै वह बोला कि मैं चैलपर्वतपर रहताहूं और नाममेरा सुभाषी है यह सुनकर वह सबबोले अच्छा बैठजावो और तुमभी अपना गानासुनावो यह सुनकर प्रहासने ऐसी एक सुरीली तानलगाई कि उसको सुनकर मयंक भीतर से द्वारपर चलाआया और उन मनुष्यों को आज्ञादी कि इस गानेवाले को भीतरलेआवो यह सुनकर वे सब मायावी म्लेच्छ उसको भीतरलेगये और जैसेही उसने भीतर पैररक्खा तैसेही ऊपर से एक चिड़ियागिरी और बोली कि प्रहासआया और प्रहास ने जो देखा कि मेरानाम पक्षी ने बतादिया तत्काल मरुतदत्त वस्त्रको ओढ़कर अदृश्य होगया जब मयंकनेदेखा कि अब वह पक्षी नहीं बोलता है तब सबसे कहा कि पक्षीका शब्दसुनकर प्रहास ऐसा छुपगया मानों यहां थाहीनहीं तुमसब अब बाहरजाकर चैतन्यहोकर बैठो यहदे-खकर सबम्लेच्छों को बड़ाआश्चर्य हुआ और बाहर आकर सलाहकी कि यदि कोई अबआवेगा तौ हमलोग उसको तुरंत पकड़लेवैंगे निदान वे सब बड़ी चैतन्यता से बैठकर पहरादेने लगे प्रहास वहांका सबवृत्तांत जानकर दूरबनमें चलाआया

और वहां उसने अपनी झोली बिछाई उसके शब्दको सुनकर प्रहासका शिष्य चपला जो वहां और सब बहुरूपियों सहित पृथक् २ स्थानोंमें छिपेहुएथे प्रहासकेपास चलाआया और पूछा कि कहो गुरू क्षेमकुशलतोहै उसने सबवृत्तांत कहकरकहा कि वह जो सामने प्रासादबनाहुआहै वहींसबम्लेच्छ मायावीबैठेहैं और उसी प्रासादके ऊपर मायाकृत पक्षीबैठे हैं वे जोईजाता है उसकानाम बतादेतेहैं सो हे पुत्र तू मेरासा स्वरूपबनाकर वहां चलाजा तुझको वे पकड़कर जानेंगे कि प्रहासपकड़ागया और फिर निर्भय बैठेंगे उससमय मैं अपनी विद्याकी कृत्यका साधन करके तुमको छुटायलाऊंगा यहसुनकर चपलाने कहा बहुत श्रेष्ठ और फिर अपनास्वरूप प्रहासकासा बनाकर वहांसे उस प्रासादकीओर चलदिया जब उन मायावी म्लेच्छों के समीप पहुंचा वह तो यह मंत्रकरही चुकेथे अब जो कोई आवै उसे पकड़लो सबने तुरंत प्रहासरूपी चपलाको पकड़कर कैदकर लिया और बहुतसा कोलाहल किया उसको सुनकर मयंक प्रासादके भीतरसे निकल आया और पूछनेलगा कि किसको पकड़ाहै वह सब बोले कि आप पहंचानिये परंतु हम सब की समझमें तो यह प्रहासहीहै तब उसने कहा कि अच्छा इस को यहांलाओ मैं पहँचानदूं वह सब उसको वहांलेचले और जैसेही उस प्रासादके भीतर उसने पैररक्खा तैसेही एक पक्षी गिरा और बोला कि चपला आया यह सुनकर मयंकने पूछा कि क्यों रे छली तेरा नाम चपलाहै वहबोला कि नहीं मेरानाम प्रहासहै मयंकने कहा कि ये पक्षी मिथ्या कभी नहीं बोलेंगे चपलाने कहा कि जो मेरानाम चपला होता तो मैं अपने को प्रहास बताके क्यों आपत्तिमें डालता क्या मैं नहीं जानता कि इसदेशमें प्रहासके सब शत्रुहैं अच्छा जो आप मुझको चपला जानतेहैं तो तो चपलाही सही यह सुनकर मयंकने विचार

किया कि यह भी सत्य कहताहै क्योंकि इतने बड़े अपराधीके नामसे तौ हरमनुष्य बचना चाहैगा और आप भी होगा तौ दंडसे बचनेके लिये अपना नाम न बतावेगा और ऐसाकोई नकरैगा कि जिसका नामदूसराहो और अपनादूसराभी बतावे तौ ऐसे अपराधीका बतावै कि कभी छुट न सकै यह विचार कर वह बोला कि अच्छा प्रहास तूने अपना नाम क्यों नहीं छिपाया कह दियाहोता कि मैं चपलाहूं तब वहबोला कि आप लोगोंको मायाका बड़ा बलहै आप उससे तुरंत जानलेते मेरे बतानेसे क्याहोता और एक मिथ्या भाषण करनेका पाप लेता यह सुनकर मयंक बोला कि बात तौ तू सब सत्य कहता है परंतु मुझको जो पक्षीने दूसरा नाम बताया इससे जान पड़ताहै कि तेरा नाम चपला भी होगा तब वह हँसकर बोला कि मेरा असलीनामतौ ठीक चपलाहीहै परंतुप्रहासके नामसेमें विख्यातहूं यह सुनकर मयंकने कहा कि क्यों मैं कहताथा कि मेरा पक्षी मिथ्या कभी न कहैगा तू भी सत्य कहताहै और मेरे पक्षीने भी सत्य कहा परंतु अब मैं तेरी परीक्षा एक प्रकार से और करलूं महाराज महेन्द्रने मेरे पास प्रहासका चित्र भेज-दिया उससे मिलालूं यह कहकर उसने वह चित्र एक संदूक खोलकर निकाला और जब उससे उसका स्वरूप ज्योंकात्यों मिलगया तब उसने निश्चय जाना कि यह प्रहासही है और प्रसन्न होकर उसको एकओर बँधवादिया अब प्रहासका वृत्तांत सुनिये वह दूरपर खड़ाहुआ यह सब हाल देखरहाथा जब चपला बँधवादिया गया उसने तुरंत अपना स्वरूप एक कि-शोर अवस्थाकी सुंदर स्त्रीकासा बनाया छवि उसकी निराली थी कामदेवकी रतिभी उसके सामने लज्जितथी मुखकी शोभा मनोहरथी शिरकेबाल बड़े शोभायमान और मुखपर अलकें छुटीहुई नागिनि की भांति वंकहोरहीं थीं--वह बिखरेहुए लंबे

केशथे कि उनमें उलझाहुआ मन सुलझ नहीं सकताथा॥
दो० सहज सचिक्कन श्याम रुचि शुचिसुगंध सुकुमार।
गनत न मनमथ अपथछवि बिथरे सुथरे बार॥
अलकें नागिनि भांति चन्द्राननपर छुटीहुई वह शोभा दे रहींथीं कि उनके डसेहुएको लहर नहीं आती थी॥
दो० कुटिलअलक मुखपरत छुटि बढ़िगोइतो उदोत।
बंक बिकारी देत ज्यों दामरुपैया होत॥
मुख ऐसा सुंदर और कोमल और प्रकाशमानथा कि उसको देखकर पूर्ण चन्द्रमा भी लज्जित होताथा॥
दो० हाहा बदन उघारि दृगसफल करें सब कोय।
रोजसरोजनि के परें हँसी शशी की होय॥
और वह छबीला मुखारविंद सारीकी किनारीके बीच में ऐसा शोभित होताथा मानो पूर्णिमाका चन्द्रमा मंडल बैठाहै॥
दो० जरी कोर गोरे बदन बढ़ी खरी छवि देखि।
लसतमनोबिजुलीकिये शारदशशि परिबेखि॥
और नेत्र वह छबीले रसीले रतनारे प्यारेथे कि मृगके नयन भी लज्जित होतेथे॥
दो० अमीहलाहल मदभरे श्वेत श्याम रतनार।
जियतमरतझुकिझुकिपरतजेहिचितवतएकबार॥
और उस सुरंग रंग सारीमें इत उत चलायमान होनेसे उनकी छबि निरालीही दीखती थी॥
दो० चमचमात चंचलनयन बिचघूंघट पट छीन।
मानहुं सुरसरिताविमल जलउछलत युगमीन॥
भौंहें ऐसी धनुषाकार बनीथीं और कटाक्ष ऐसे विशिख रूपीथे कि उनसे भिदकर कोई अपना जीवित धारण नहीं करसकताथा॥
दो० लागत कुटिल कटाक्ष शर क्यों न होइ बेहाल।
कढ़त जो हिये दुशाल करि तऊरहत नटशाल॥
और नासिका कीरकीसी मनोहर कपोल कंजसे कोमल

कान मोतीकी सीपसे सुडौल अधर दाड़िमकी कलीकेसे दल और दशन अनारदानेके समान वह छवि दिखातेथे कि बड़े २ जितेन्द्रियोंको भी मोह होताथा ॥

दो॰ उज्ज्वल सबसम दशनलखि सकुची चपला फौर।
मुक्ता हीरा मणिनको घट्यो मान सब ठौर ॥

चिबुक ऐसी ललाम छविधामथी कि उपमा उसकी नहींहै और उसपर लीलागुदा हुआ उसकी छविको औरही छबीली करता था ॥

दो॰ ललितश्याम लीलाललन बढ़ीचिबुकछविदून।
मधुछाक्यो मधुकर परयो मनोगुलाब प्रसून ॥

और ग्रीवा कपोतकीसी ऐसी सुडौल और कोमल थी कि पानकी अरुणाई भी उसमें दृष्टि पड़तीथी और अपूर्व छवि दिखाती थी ॥

दो॰ खरी लसत गोरीगरे धसति पानकी पीक।
मनोगुलीबँदलालकीलाललालद्युतिलीक ॥

भुजा लंबी लंबी अतिकोमल हाथ कंजकासा स्पर्श रखने वाले और कुच अति पीन सुडौल और ऐसे मनोहरथे कि उनको देखकर चित्त आपेमें नहीं रहताथा कैसाही जिते- न्द्रिय क्यों नहो ढुलही जाताथा ॥

दो॰ सोहनमोहन मनहरन कंचन वरन अडोल।
करे करारे चीकने ऊंचे गोरे गोल ॥

कटि अति सूक्ष्म चीतेकीसी बनीहुई चलतेमें दूजके च- न्द्रमाकीसी छवि देती थी ॥

दो॰ बुधिअनुमान प्रमान श्रुति किये नेह ठहराय।
सूक्षमकटि परब्रह्मकी अलख लखीनहिंजाय ॥

उदर परम शोभायमान गंभीर नाभि से छजितत्रिवली से युत चित्तको डामाडोल करनेवालाथा और जंघा बड़ीकोमल कदलीके समान बनीहुई मनको आकर्षण करती थीं ॥

दो० जंघ युगल जो इन निरे करे मनो विधि मैन।
केल तरुनदुख दैन ये केलकला सुख दैन॥

निदान नखशिखसे वह ऐसी छबीली बनीथी कि जिसको देखकर बड़े२ मुनिभी मोहित होजातेथे कोई उस स्वरूपको देखकर अपनेको सँभाल नहीं सकताथा जो देखताथा सकता-सा होजाताथा और नाक कान ग्रीवा हाथ और पाउँ आदि अंगोंमें प्रकार२ के सुनहले रुपहरे रत्नजटित आभूषण और परमोत्तम दिव्यवस्त्रोंसे अलंकृत होनेसे ऐसी छविथी कि रंभा और रमाकोभी सकुचथी निदान ऐसा सुन्दर स्वरूप धारण करके प्रहास बड़ा करुणा विलाप करताहुआ अपने खड़ेरहने के स्थानसे चला और जिस द्वारपर मयंक बैठाहुआ बनकी शोभा देखरहाथा उसके सन्मुखकी पहाड़ीपर जाकर बैठगया और वहां बड़े विलापसे करुणा सहित रोरोकर संसार और उसके पदार्थों के नाशमान और दैवगति के अमिट होने का आपत्तिकाल वर्णन करनेलगा॥

अमात्रिकछंद। सुनोसंसार यह मिथ्याहै सुपना। नहींइसमें कोई है मित्र अपना॥ भलेहैं और बुरे जितने पदारथ। तमाशाहै नहीं कोई यथारथ॥ नहीं है नित्यता इसमें किसीको। ग्रसैगा काल क्रमसेसव किसीको॥ जोसुख संपत्ति इससंसारकी है। ववूलकी सदृश निस्सारकी है॥ कोईदुखियाहै और सुखिया कोईहै। कोईरोताहै और हँसताकोईहै॥ समझ कर जगतको निस्सारभाई। रहो इसके विभवपर मत भुलाई॥

हे दैव तेरीगति निपट निराली है क्यामैंने तेरा बिगाड़ाथा जो मुझको यह महान्‌शोक देकर अनाथ कियाहै हाय॥

दो० नहिं विकासनहिं मधुरह्यो अलीकियो तववास।
विकसत मधुरस परतही अलीभयो विनइवास॥

निदान प्रहासने उससमय ऐसी करुणासे पुकार पुकार

और बिलबिला बिलाकर विलापकिया कि बज्रकेहृदयभी पसी-
जकर पानी होगये और वह करुणाकाशब्द मयंकके कानमेंपड़ा
सुनतेही झाड़ीकी ओर जो उसने दृष्टिकीतो देखा कि एकपरम
सुंदरी स्त्री जिसके मुखारविन्दकी प्रभा चन्द्रमाकी चांदनीको
मलीन करतीथी बड़ा करुणा विलाप कररही है केशोंको दुख
के कारणसे खोलदियाहै सारी किनारीकी कहीं खुलगई है कहीं
शरीरपर पड़ीहै कंचुकी एकओर ढकीहै एकओरखुलीहै कंचन
वरनकी कोमल सुडौलभुजा रत्नजटित भूषणोंसे अलंकृत हैं
कुछ खुलीहैं कुछ ढकी हैं कभी बालोंको खींचती है कभी सारी
को ईंचती है कभी हाथ मलतीहै कभी पैर रगड़ती कभी श्वास
भरकर चुपहोजातीहै कभी विलाप करतीहै और एकांतमें बैठी
हुई अपनाहाल बेहाल कररहीहै उसको देखकर मयंकने म्ले-
च्छोंको आज्ञादी कि इसस्त्रीको बहुत कोमल बाणीसे आश्वा-
सन करके मेरेपास बुलालाओ यह आज्ञापाकर वे वहांगये
और जब समीप पहुंचे वह सुंदरी उनको देखकर गिरतीपड़ती
भागी उनसबने बहुत प्रकारसे आश्वासनकिया और कहा कि
हमारे स्वामीने तुमको बुलायाहै परंतु उसने कुछउत्तर न दिया
तब उनलोगोंने लौटकर मयंकसे सब वृत्तांत कहा और वहतो
उसके चित्तरोचक स्वरूपको दूरसेही देखकर बेहालहोगयाथा
उसबातको सुनतेही आप उठकर चलागया और जब उस
झाड़ीके समीप पहुंचा वह चन्द्रमुखी लइयां पइयां भागी मयं-
कने आगे बढ़कर उसकाहाथ पकड़लिया और समीपसे उसके
स्वरूपकी छबि और सुन्दरताको देखकर भौंचकसा होगया ॥

क० इन्दीबरनैननिपै भृकुटीकमाननिज रूपके गुमानमानरतिकेपचैपचै ।
रूपकीसिराशिबालसोहै मणिमंदिरमें उन्नतउरोजभार लंककोलचै लचै॥
कहैंनन्दराम जबभौचक उघारमुखकंजसे कपोलचित्त चौगुनो सचैसचै ।
चौंकिपरे चहकिचकोर चारोंओरनैते चंचरीकचारुचमकाहट मचैमचै ॥

हाथ पाउँ दोनों निस्सत्व होगये चित्तमें संसनाहट होगई और गिरनाही चाहताथा कि फिर उसने अपनेको संभाला और कहा कि हे चन्द्रानने अपने इस महान्‌कष्टके वृत्तांतसे मुझेभी सज्ञानकर कि किसघरकी तू स्त्री रत्नहै क्यातेरी विपत्ति है और कौनसी आपत्तिहै जिसके कारणसे ऐसा विलाप करती है यह सुनतेही उससुन्दरीने बड़ेकष्टसे ऊद्‌र्ध्वश्वासलिया और ऐसी फूटफूटकर रोई कि मयंककाभी चित्तभरआया और वह सुसकनेलगा तब उस स्त्रीनेकहा कि मैं कौनकौनसी बिपत्तिकहूं और क्याक्या दुःखसुनाऊं॥

दो० जो मैं ऐसो जानती प्रीतिकरे दुखहोय।
नगरढिंढोरा पीटती प्रीतिकरै ना कोय॥

मैंजिस चन्द्रकी चकोरहूं वह मुझदुखियाको छोड़कर परम धामको चलागया मैं उसको मनभरके देखनेभी न पाई क्या करूं मेरेप्राण बड़े कठोरहैं जो न उसके साथगये और न अब जाकर उसका दर्शन करते हैं–हृदयभी मेरा बज्रकाहै जो ऐसे प्राणप्यारेके बिछुड़नेपर फटता नहीं यह कहकर वह फिर विलाप करने लगी॥ जयकरीछंद॥

चहुंदिशि लखन लगी भर्तार। दुःख शोकसों भरी अपार॥
प्रीतम प्रीतम कहिकरि शोर। रोदनकरन लगी अतिघोर॥
महात्राससों भरी अचैन। कहति विलाप भरे बहु बैन॥
हियहनिहाहानाथ पुकारि। चहुँदिशि लखतिबहतदृगवारि॥
मरी विनष्ट भई बनमाह। तुम्हें बिना प्रियपति नरनाह॥
प्रियअनुरक्त जानिकैमोहिं। छोड़िजाययह उचित नतोहिं॥
विलपतमोहिं देखिछविराज। आयनशांत करतमो पास॥

यह देखकर मयंकने बहुत दुखीहोकर उससे कहा कि हे सुन्दरी अपना सब वृत्तांत मुझसे कह तेरादुख देखकर अब सहानहींजाता तबवह बोली कि हेप्रियबादी मैंएकबड़े मायावी म्लेच्छपतिकी बेटीहूं मेरे पिताकानाम अनुविन्दथा दैवयोगसे

मैं अपने बापके छोटेभाईके पुत्रपर आसक्तहोगई नाम उसका मयंकथा जब मेरे पिताने यह वृत्तांत सुना तब उन्होंने मयंकके साथ मेरा बिवाह करनेकेलिये दिन नियत किया और जब वह दिन आया तब बिवाहका सब सरंजाम हुआ और बरात आ रहीथी कि एकयक्ष जो मुझपर बहुत दिनोंसे आसक्तथा और जिसका मैं सदैव तिरस्कार करतीरही अपने साथ दशबीस यक्षोंको लेकर आया और मेरे माता पिता चचा भाई और पति सबको मारकर चलागया मैं उसी हायहायमें भागकर बन को निकलआई वह मेराप्राणपति परम सुन्दरथा अवस्था उस की किशोरथी और मेरे अमृताधरको एक दिनभी पान नहीं करने पायाथा कि मृत्युरूपी हलाहल पीकर पंचत्वको प्राप्तहो- गया उसीके शोकसे मैं ग्रसितहूं और इससंसार निस्सारमें रहनेकी इच्छा न करके अपने प्राणदूंगी यह सुनकर मयंक प्रथमतौ उसके दुखको सुनकर रोनेलगा उपरांत बोला कि हे सुंदरी हे बरानने जो मरगया उसका शोचकरना व्यर्थहै॥

रोलाछंद। मृत्युलोक प्रसिद्ध यह जो धरत तन इतआय।
मृत्युवश सोहोतविधिवत समयविरचितपाय॥

इससे अब उचितहै कि अपने मिथ्याशोकको अपने हृदय से निकालकर मेरे स्थानपर चलो और मुझे अपना भक्त और अनुरक्त जानकर मेरे सूनेघरको बसाओ मेराभी नाम मयंक है नहीं तौ–तूबिनसहाय। होइमृतकप्राय। भिदिशोकवान। हुइ हैअप्रान–मैं महाराज महेन्द्रका सभासदहूं अधिकारभी मुझे बहुतहै और मायाका बलभी रखताहूं मेरे यहां तू सुख पूर्वक रहैगी और मैं अपने जीवित पर्यंत तेरादास रहूंगा और जो तू मेराकहना न मानैगीतौ–कहँवयकिशोर। कहँदुखअथोर। यहरूपधाम। होगोअकाम॥ यह सुनकर बोली कि मैं अभागी दुःखग्रसित किसीके यहां रहनेके योग्य कैसे होसकतीहूं तब

मयंकने अपना शिर उसके चरणोंपर रखदिया और सहस्रों शपथदेकर बहुत कुछ सुश्रूषाकी उससमय उसनेकहा कि भला बताइये कि आपका नाम क्याहै और आप क्याकार्य करते हैं वह बोला कि मेरानाम मायावी मयंकहै यहांसे लेकर नीलमणि पर्वत तकके रहनेवाले सब मायावी म्लेच्छगण मेरी आज्ञामें रहतेहैं यह सुनकर उस सुंदरीने अपना हाथ कानपर रखके कहा कि मुझको तो मायावी दानव अथवा म्लेच्छोंसे बड़ा डर लगताहै उनके तो मैं नामसे डरतीहूं उनकी आयु सहस्रसहस्र वर्षकी होती है और वे जब चाहतेहैं पुरुष और जब चाहते हैं स्त्रीकारूप धारण करलेतेहैं यह सुनकर मयंकने अपने चित्तमें कहा कि मैंने निरर्थक इससे अपने मायावी होनेका वृत्तांत कहा और अपना स्वार्थ खोदिया परन्तु फिर बोला कि हेप्राणप्यारी मैं तेरेसन्मुख कभी किसीप्रकारकी माया न करूंगा और मेरी आयु अभी बहुत नहींहै केवल तीनसौ पच्चीसवर्षकी बयहै यह सुनकर वह बोली कि अच्छा तू शपथकर कि मैं तेरेसाथ कभी माया न करूंगा उसने अपने अद्भुत ईश्वरकी सौगंद खाकर कहा कि मैं अपने प्रणसेकभी बाहिर न होऊंगा तब वह उठकर मयंकके साथ होली और वह उसको लियेहुए उस प्रासादके समीपआया और जैसेही उस सुंदरीने अपनापैर उसके भीतर रक्खा तैसेही ऊपरसे एकपक्षी गिरा और यह बोलकर कि प्र-हासआया उससमय मयंकने अपने चित्तमें ध्यानकिया कि मैं अभीतो प्रहासको पकड़कर उसका चित्रभी मिलाचुकाहूं यह पक्षी अब मिथ्या बोलता है निदान उसने तो यह ध्यानकिया और इधर इस सुंदरीने कहा कि मैं इसीकारणसे नहीं आतीथी लो अब मैं जातीहूं इस मायाकृत उपचारमें मेरेप्राणभी जाते रहेंगे मयंकतो आसक्त होहीरहाथा कहनेलगा कि हेप्राणप्यारी यहां बहुरूपिये आयेहैं उनसे अपनीरक्षा करनेके निमित्त मैंने

येपक्षी मायासे निर्मित कियेहैं यह सुनकर वह चन्द्रमुखी बोली कितो मैंने यह झगड़ाछोड़ा येपक्षी मुझको बहुरूपिया बताते हैं तो तुम मुझसे दूररहो मैं बहुरूपियाहूं कहीं तुमको मार न डालूं यह कहकर वह उठखड़ीहुई और चलनेलगी तब मयंक खड़ाहोकर उससे लिपटगया और बड़ी सुश्रूषा करके फिर भीतरलाया उससमय फिर एकपक्षीगिरा और बोला कि प्रहासआया तब उस स्त्रीनेकहा कि भलाबताओ अब कौन अनजान मनुष्य यहां आया है जिसका हाल पक्षी ने तुमसे कहा वह बोला कि मायाका प्रयोग करनेमें कुछअंतर आगया और तुमको भयभी लगताहै इससे मैं इन मायाकृत पक्षियोंको दूर ही कियेदेताहूं यह कहकर उसने कुछमंत्र पढ़कर ताली बजाई और वे सब पक्षी नीचे गिरकर भस्महोगये तब मयंकने उस सुंदरीसे कहा कि अब निर्भय होकर बैठो तब स्त्रीरूपी प्रहास एक रत्नजटित शय्यापर बैठगया और देखा कि सामने चपला बँधाहुआहै जब उनकी आंखें चारहुईं चपला जानगया कि यह स्त्री नहीं है किंतु गुरूजी हैं इसअवसरमें मयंकने भोजन मँगवा कर प्रहाससे कहा कि लो सुंदरी तुमक्षुधितहोगी भोजन करलो तो फिर हम तुम आनन्दकरैं यह सुनकर वह बोली कि मुझे कईदिनसे मद्यनहीं मिलीहै इससे मेराचित्त डामाडोलहै न भूंख है न प्यासहै केवल मद्यहीकी इच्छाहै इससे तुम यह अपनी मिठाई उठारक्खो और मुझे एकपात्र मद्यपीनेको दो॥

दो० छत्रराज्य भूषण बसन नहिं चाहतहौं एक।
चुल्लूभर वर माधवी देहुमोहिं मम टेक॥

यह सुनकर मयंकने उत्तमोत्तम बारुणीके घट मँगवाकर उसके सामने रखदिये कि जितना चाहे पीले तब उस सुंदरीने एकपात्रमें मद्य भरकर मयंककोदी वह बोला कि तुमने बहुत दिनोंसे नहींपीहै पहिले तुम पानकरो वह बोली कि मैंभी पान

करतीहूं तुमतो इसेपीओ निदान यहांतो यह वृत्तांतथा और वहां महेन्द्रने विचारकिया कि मैंने मयंकको प्रहासके पकड़नेकी आज्ञादीथी सोअबतक उसका कुछ समाचार नहींमिला लाओ अद्भुत जालकी पुस्तकलाओ उससेदेखूं कि क्याहोरहाहै निदान उसने वह पुस्तक मँगवाई और उसमें देखनेसे उसको विदित हुआ कि प्रहास एक स्त्रीकास्वरूप बनाकर मयंककेपास बैठाहै और मयंकको वधकिया चाहताहै यह मालूम करके उसने तुरंत कुछ पढ़कर तालीबजाई कि एक लोहमयी पुतला उसके सन्मुख आगया उससे उसने आज्ञादी कि तू शीघ्रजाकर मयंकसेकहदे कि जो स्त्री तेरेपास बैठीहै वह प्रहासहै और जो बँधाहुआहै वह चपलानामी बहुरूपियाहै दोनोंको पकड़कर मेरेपास भेजदे यह आज्ञापातेही पुतला वहां से चलदिया और यहां प्रहास ने मयंककी दृष्टि बचाकर थोड़ासा मूर्च्छाकर चूर्ण वारुणी में मिलादिया और थोड़ासा अपने मुख में रखलिया और उक्त चूर्णकी मिलीहुई वारुणी से पात्रभरकर मयंकको दिया उसने अभी पान नहीं कियाथा कि पृथ्वीकँपी उसको देखकर प्रहास जानगया कि कोई आपत्ति आतीहै इतनेहीमें वह पुतलापृथ्वी को विदीर्ण करके निकला उसको देखकर वह स्त्रीरूप प्रहास आहिदैया कहकर मयंकके गलेसे लिपटगया मयंकने कहा कि तुम डरोमत परंतु प्रहासने अपना कपोल मयंकके कपोल पर रखकर वह चूर्णफूंका और वह उड़कर मयंककी नासिका में गया और उसके घ्राणमात्रसे मयंकको छींकआई और वह मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा और उसीसमय उसपुतलेने पुकारकर कहा कि हे मयंक यह प्रहासहै महाराजकी आज्ञाहै कि इसे पकड़ले परंतु मयंक तो मूर्च्छित होचुकाथा उसकी कौनसुनता है जब कईबार कहनेसे मयंकने उत्तर नहींदिया तब वह पुतला आगे बढ़ा और चाहा कि समीपसे मयंकको महाराजकी आज्ञा

सुनादूं कि उसको आतेहुए देखकर प्रहासने उसके ऊपर ब-
रुणदत्त जालफेंका वह पुतला उसमें बझगया और प्रहासने
उस जालसे पुतलेको एक स्थानपर बांधकर चपलाको खोल
दिया और मयंकको मारडाला उससमय अन्धकार छागया
भयानक शब्द होनेलगा और प्रचण्ड वायु चलने लगी यह
देखकर बाहिर बैठेहुए मायावी म्लेच्छदौड़े और उसअंधकार
में जो जो भीतरआया प्रहास और चपला दोनोंने खड्ग
मार मारकर सबके शिर पृथक् करदिये उनके मरनेसे और
भी अधिक कोलाहल हुआ और जो दो एक म्लेच्छ बाहिर
बचिरहेथे वे भयभीत होकर भागगये और समझे कि न जानें
भीतर क्या आपत्तिहै कि जो जाताहै माराजाताहै निदान जब
थोड़ी देरमें वहकोलाहल और अंधकार दूरहोगया तब प्रहास
ने उस पुतलेको खोलदिया और कहा कि तू उस निर्लज्ज
महेन्द्रसे जाकर कहिदीजियो कि प्रहासजी आकर अब बहुत
शीघ्र तेराबध किया चाहतेहैं यह सुनकर वह पुतला कालके
गालसे छुटकर भागा और प्रहासने जो कुछ द्रव्य मयंकका
पाया सब लूटकर अपनी थैलीमें रखलिया और चपला को
साथ लेकर वहांसे बनमें चलाआया वहां आकर चपला ने
पूछा कि कहिये गुरूजी अब क्या आज्ञाहै प्रहासने कहा कि
बेटा अपनी मार्ग पकड़ो पृथक् पृथक् चलो और समयपर
मिलजाओ यह सुनकर चपला कूदताहुआ एकओरको चल
दिया और प्रहासने दूसरा मार्गलिया और वहां उस पुतलेने
जाकर महेन्द्रसे मयंकके मारेजानेका समाचारकहा और फिर
अपनेपकड़ेजाने और प्रहासके दुर्बचनकहनेका वृत्तांत सुनाया
उसको सुनकर महेन्द्रक्रोध में भरगया और आपही प्रहासको
जाकरपकड़ने के लिये उद्यतहुआ उससमय सबसभासदों ने
हाथजोड़कर बिनयकी महाराज प्रहास शत्रुंजयका एकछोटासा

भृत्यहैं उसकेपकड़नेकेलिये आपसे महाराजकाजाना उचितनहीं है आपके भृत्य ऐसे२हैं कि प्रहासतो कौनपदार्थहै शत्रुंजयकोभी जाकर पकड़लासकतेहैं अब आप ऐसा कीजिये कि किसी भृत्य को ऐसी कुछमाया बतलादीजिये कि ये बहुरूपिये जिसस्वरूप और वेषसे उसके सन्मुख आवें जानलियेजावें और उसको भेजकर प्रहासको पकड़वा मँगवाइये यहसुनकर महेन्द्रनेकहा कि यह बातठीकहै और फिर एकबागकी ओर दृष्टिकी वहबाग अग्निसे भस्महोनेलगा उसी बागमें वह अग्निरूप बनकर घुसगया और थोड़ीदेरमें उसमेंसे एक रत्नमयी पट्टिकालिये हुए निकला उसपट्टि पर एकपरमसुंदरी मनोहर स्त्री का चित्रथा उसको हाथमेंलियेहुए उसने पृथ्वीमें एकलातमारी कि तुरंत वह स्थानफटगया और उसमें से एक उग्रम्लेच्छ संपातीनामी निकला उसको महेन्द्रने आज्ञादी कि प्रहास मयंकको मारकर अभी उसी बनमें फिररहाहै तूजाकर उसे पकड़करलेआ और यह चित्रलेताजा जोकोई मनुष्य तुझको आताहुआमिले उस कोदेखकर प्रथम इसचित्रको देखलीजियो जोयह चित्र ज्योंका त्योंस्त्रीकासारहै तो उसमनुष्यसे कुछमतबोलियो और जो यह चित्रबदलकर पुरुषकाचित्र होजाय तो उसआनेवाले को चाहे जिसवेषमेंहो पकड़कर मेरेपासलेआइयो जबप्रहास तेरेसन्मुख आवैगा तभी यहचित्रबदलैगा नहींतो ज्योंकात्यों रहैगा यहसुन कर संपाती उसचित्रको लेकरचलदिया और मयंकके बनमें जा-कर प्रहासकोढूंढ़नेलगा यहां प्रहासएकगुप्तस्थान में बैठाहुआ ध्यानकररहाथा किहेप्रहास देख अंत यहांआनेका क्या होताहै लाखों मायावी म्लेच्छ और दानव यहां भरेहुएहैं कहांतक उनकावध कियाजायगा यह माया कृतदेशहै नजानें इसमायाके नष्टहोनेका क्यागुरुहै नजानें राजपुत्र भानुबिक्रमका क्या हाल है कहांहै जीताहै अथवा मरगया ऐसीही बातें बैठा २ सोच-

रहाथा कि इतने में उसने एक म्लेच्छकोदेखा कि बनमें इसप्र-
कारसे चारों ओरको देखताहुआ फिररहाहै मानों किसी के
खोजमें है उसको देखकर प्रहासने विचारा कि इस दुष्टकोभी
मारना उचितहै जोही म्लेच्छ कमहुआ सोहीसही निदान उस-
ने अपना वेष म्लेच्छोंकासा बनाया और उस म्लेच्छको पीछे
से पुकारा कि भाई थोड़ीदेर ठहरना उसने जो पीछे फिरके देखा
कि एकम्लेच्छ मायावी भयंकर स्वरूप रखनेवाला जिसके मुख
और नासिकासे अग्नि निकल रही है बुलारहा है वह ठिठुक
गया और फिर आगे बढ़कर उससे मिलकर पूछा कि तुमकौ-
नहो प्रहासने कहा आपका क्यानामहै और यहां आनेका क्या
प्रयोजनहै वह बोला कि मेरानाम संपाती है प्रहासको ढूंढ़ने
आयाहूं तुम बताओ तुम किसकार्यसे आयेहो प्रहासने कहा
उसी दुष्टको मैंभी खोजरहाहूं मैं भयंकका सम्बन्धीहूं जबसे उस
के मरनेका वृत्तांत सुनाहै तभीसे प्रहासके खोजमेंहूं यहसुनकर
संपातीने कहा कि चलो हमतुम साथही उसे खोजें वह संपाती
केसाथ होलिया और इसचिंतामेंथा कि कुछ अवकास पाऊंतो
इसका बधकरूं परन्तु राहमें संपातीको स्मरणहुआ कि महाराज
महेन्द्रने कहाथा कि जो कोईमार्गमें तुमकोमिले उसको देखकर
प्रथम इसचित्रको देखलेना निदान उसने उसचित्रको निकाल
कर जो देखातो वह चित्र प्रहासके स्वरूपका होगयाथा अर्थात्
तोमड़ीसा शिर चीमांसी आंखें सूपसेकान सूतसी ग्रीवा और
रस्सीसे हाथपैर नीचेकाधड़ छैगजका और ऊपरका तीनगजका
यह अद्भुतरूप देखकर संपाती घबड़ाया और विचार किया
कि यह कोई बहुरूपियाहै जिसने अपना स्वरूप म्लेच्छोंकासा
बनालिया है इसका तद्रूप स्वरूप ऐसाही है जैसा कि इस
चित्रमें बनगया है यह विचार करके उसने कुछ माया करके
प्रहासके पैरोंका स्तंभित करदिया और अपनी झोलीमेंसे लोह

की जंजीर निकालकर उससे प्रहासको बांधकर लेचला तब प्रहासने कहा कि हेभाई मुझ निरअपराधी को क्योंकष्ट देतेहो वह बोला कि अरे छली तू मुझही से छलकरने आयाथा तेराहीनाम प्रहासहै मुझे तेरा सब वृत्तांत विदित है यह सुनकर प्रहासको क्रोधआगया और वह बोला कि अच्छा बचा अब तुम किसीप्रकार से नहीं बचोगे कोई क्षणमें तुम मारे जाओगे एकलक्ष और चौरासी सहस्र बहुरूपिये इस देशमें आये हैं कोई न कोई आकरतेरा बध करैगा संतापी बोला कि मैं सबको दंड दूंगा तेरी धमकी से नहीं डरता हूं और यह कहकर प्रहासको पकड़े हुए आगे बढ़ा उसीसमय दूर से उपदेशी बहुरूपी ने देखा कि कोई म्लेच्छ हमारे आचार्य को पकड़ेहुए लियेजाता है वह उसके छुड़ाने के उद्योग में दौड़ा और कोसभर आगे निकल गया वहां उसने देखा कि एक गोप गाय भैंस बन में चरारहा है और भेष बदलकर उस से जाकर कहा कि देख उसझाड़ीमें सिंह बैठाहुआ तेरी गायको देखरहा है यह सुनकर वह उस झाड़ीकी ओर दौड़ा पीछेसे उपदेशीने पाश फेंककर उस गोपकी ग्रीवा बांधली उसके कारण से वह कुछ बोल न सका और फिर उसको पृथ्वीपर डालकर मूर्छा कर चूर्ण सुंघादिया जब वह मूर्छित होगया तब उपदेशी ने उसके सब वस्त्र धोती मिरजई आदि आप पहिर लिये और उसका स्वरूप देख देखकर वैसाही अपना स्वरूप बनाया और लकुटि हाथमें लेकर गाय चराने लगा और उस गोप को झाड़ीमें छुपादिया इसी अवसरमें संतापी भी प्रहासको पकड़े हुए आपहुँचा और उपदेशीसे बोला कि अरे गोप तेरे पास जो लोटा डोरहो तो थोड़ासा पानी पीनेकोलेआ मैं दूरसे धूप में चलाआताहूं प्यासा बहुतहूं अहीरबोला कि महाराज आप धूपमें चले आयेहैं जल न पीजिये आ ाहो तो थोड़ा दूधले

आऊं उसे पीजिये यह सुनकर संतापीनेकहा कि अच्छा दूधही लेआ तब उस अहीररूपी उपदेशी ने एक गायको पुचकार कर एक पित्तलके लोटेमें दूधदुहा और उसमें थोड़ासा मूर्छा कर चूर्णमिलाकर लाया और संतापीको देदिया और ज्योंहीं उसने चाहा कि पीलूं उसको ध्यानआया कि मयंकने दो बहुरू-पियोंने माराथा यह भी कोई बहुरूपिया न हो लाओ चित्रको देखलूं यह विचारकर उसने दूधरखदिया और उस चित्रको निकालकर जो देखा तो वह उपदेशी के तद्रूप होगया था देखतेही तुरंत उसने मायाकरके उपदेशीको स्तंभित करदिया और पकड़ लिया उपदेशी बहुत कुछ रोया गाया कि महाराज मैं आपका गोपहूं मुझ निरअपराधको क्यों दुखदेतेहो क्या भलाईकापलटा बुराईहै यहसुनकर संपातीने कहा कि अरेछली तू बड़ा पाखंडी है मैं तुझको अच्छेप्रकारसे जानताहूं यह कह करउसने उपदेशीकोभी उसी जंजीरमें बांधदिया जिसमें प्रहास बँधाथा और दोनोंको लेकर आगे बढ़ा उससमय प्रहासने कहा कि क्यों मैं जो कहताथा कि सहस्रों बहुरूपिये इस माया कृत देशमें आयेहैं हमदोको तैंनेपकड़लिया तो क्याहै कोई क्षण में तेराबधहुआ चाहताहै इससे तुझको उचितहै कि हमलोगों की आज्ञामेंरह यहसुनकर संतापी अपनेहृदयमेंडरा और कहने लगा कि यहसत्य कहताहै ये बहुरूपिये चारोंओरको फैलेहुये हैं देखिये अदृश्यखंडमें महाराजमहेन्द्रके पास कैसे पहुँचताहूँ मुझको उचितहै कि अबआगे जोमिले उससे उससमयतक बातनकरूं जबतकउसचित्रको न देखलूं यह शोचकर वह आगे बढ़ाइनसब बहुरूपियोंकेचलनेका यहप्रकारथा किसब पृथक् २ मार्गसे जातेथे परंतु ऊंचे स्थानोंपर चढ़कर एक दूसरेको देख लेतेथे निदान एक ऊंचेस्थानसे दूरसे चपलाने देखा कि एक म्लेच्छ दो बहुरूपियों को पकड़ेहुए लिये जाताहै यह देखकर

वहएकपर्वती की खोह में बैठगया और अपना स्वरूप एक परमसुंदरी स्त्री कासा बनाकर शृंगार करनेलगा मांगमें सिंदूर भरा आंखोंमें सुरमा आंजा माथेपर बिन्दी लगाई भ्रूके मध्यमें टीका दिया नाकमें नथ पहिनी कानों में करनफूल भुजाओंपै बाजूबांधे हाथोंमें छन्नपछेली और पहुंची पहिनी ग्रीवामें माला टीक पचलड़ी सतलड़ी पहिनी उंगलियों में पोर २ पर छल्ले अंगूठे में आरसी कमरमें तगड़ी पैरोंमें छड़े कड़े और पाजेब और पावँकी उँगुलियों में बिछिया और अनवट पहिने और सुंदर कंचुकीको कसकर नांदनेका लहँगापहरलिया और सूही फरिया ओढ़कर हाथों में मूर्छाकर चूर्ण और बारुणीके घट ले लिये और घूंघटकाढ़करमहावरलगेहुये पैरोंको मचकमचकउठा-तीहुई इठलैयां करतीहुई कलवारिनबनीहुई उसीमार्ग से चली जिससे संतापी आताथा उसने अपना स्वरूपबडामनोहर बना-याथा कि–

क० सुंदररूप सरूप महामन योंललचै जैसे आंखोंमें लीजै ।
जीवनमोरसो जीवनकीछबि देखि देखि छबिदेखिही जीजै ॥
पानचबात निहार सुधारस चाहेतो चन्द्रको देखै न दीजै ।
और बनाउ बनै न बनै ढिग बैठि कै आननदेखाही कीजै ॥

निदानवहसुंदरी-कियेमस्तचाल। नहिंअतिउताल॥ लखिजा-हिहाल । होवैबिहाल--आगेबढ़ी जब संपाती के समीपपहुँची उसने देखाकि एकस्त्री परमसुंदरी बड़ीछबीली अनङ्गरूपी मत-वाली चालसेदेखनेवालों के मनकोहरण करतीहुई चलीआतीहै वह रूपवती भानमती ऐसी बनीथी--हां औरभी कुछ नैनाथे पुंडरीक सैनबान चलाती--और भौंहें कमानें छबिरूप दिखाके वह कालकूट पिलाती--और लहर न आती ज्ञानी व ध्यानी सब का मन वो छिनमें छीनती--यहभी रामकीमाया निदान उसको देखतेही संतापीका चित्त उसकीओर फिरगया और वह बोला

कि अरी कलवारिन ठहरजा थोड़ीसी बारुणी देतीजा यह सुन
कर उस स्त्रीने अपनाघूंघट थोड़ासा उठाकर उसकी ओर मुस-
कुराकर देखा और कहा कि यह बारुणी बिकाऊ नहींहै उसके
मुखारविन्दको देखतेही संतापीकी बुद्धिका नाश होगया और
उसने समीप जाकर उस स्त्रीसेपूछा कि कहांजातीहो वहझिझक
कर हटगई और बोली कि जहां मेरी इच्छाहै तहां जातीहूं तुम
पूछनेवाले कौनहो क्या कहींके राजाहो यह सुनके जब संतापी
ने देखा कि वह हँसहँसकर वार्ता करती है तब समझ गया कि
यह मेरी इच्छासे बाहर न होगी और तुरन्त उसकाहाथ पकड़
लिया वह बोली हां हां यह क्याकरतेहो कोई देखलेगा तो मुझे
दोष लगजायगा और तुम्हारा कुछ न बिगड़ैगा संतापी बोला
कि सामने के सुंदरछायादार वृक्षों के नीचे चलो वहां हम तुम
बैठकर मद्यपानकरें दोदोबात करलें तब चलीजाना शीघ्रता
क्याहै जो हमारा तुम्हारा संभाषण होजायगा तो मैंसदैव तेरा
दास बनारहूंगा और जोद्रव्य उपार्जन करूंगा तुझकोही दिया
करूंगा यह सुनकर वह सुंदरी खिलखिलाकर हँसी और बोली
कि तू संभाषण अपनी घरवालीसेकर क्या मेरे पति नहीं हैं मैं
ऐसे बटोहियोंसे बातनहीं करतीहूं तब वह बहुत आधीनताई
करनेलगा शिरअपना उसके पैरोंपर रखनेलगा और कहनेलगा
कि हे सुंदरी मैं बटोही नहींहूं इसीदेशका रहनेवालाहूं महाराज
महेन्द्रका सभासदहूं वह बोली कि आपकोईहों मैं ऐसी निर्बुद्धि
नहींहूं जो मरदोंके दममें आजाऊं उससमय संतापीने समझा
कि यह अब केवल लज्जायुक्त है नहीं तो सबप्रकारसे इसकी
इच्छा मेरेसाथ रमण करनेकी है यह समझकर उसने उस जं-
जीरको जिससे प्रहास और उपदशी बँधेथे अपनी कटिसे बांध
लिया और उसस्त्रीको गोदमें उठाकर चलदिया वह नहीं नहीं
करती रही परन्तु उसने न छोड़ा और एक वृक्षके नीचे उसे

उतारकर अपनी कटिसे एक वस्त्र खोलकर बिछादिया और प्र-
हास और उपदेशीको उस वृक्षसे बांधकर उस सुंदरीको उस
वस्त्रपर बैठाया और बोला कि हे प्राणप्यारी मेरेप्राण अब तेरे
आधीनहैं यहां आकर मेरे बामाङ्गमें बैठकर मेरेचित्तके दुखको
दूरकर यहसुनकर उससुंदरीने ठण्ढेठण्ढे श्वासभरे और कहा--

दो० बहुतप्रीति प्रेमीमिले सबहि परीक्षाकीन।
ठगविद्यानहिं लागिहै ठगहु जे मतितेहीन॥

तबसंतापीने उसको अपने हृदयसे लगालिया और चुंबन
करने के अर्थ अपना मुखबढ़ाया परंतुउसने हाथसे उसके मुख
कोहटादिया और कहा कि बसबसमुझसे ऐसीबातें मतकरो यह
सबमुखदेखेका प्रेमहै पुरुष सदैव बिश्वासघाती होतेहैं अच्छा
जो तुमको मेरेसाथ प्रेमहै तौ अद्भुत ईश्वरकी शपथखाकरकहो
कि मैं आजसे तेरे सिवाय और किसीस्त्रीसे बातनकरूंगा यहसुन
कर संतापीने शपथखाई तब उसस्त्रीने मद्यसे पात्रभरकर संता-
पीकोदिया संतापीने उसे लेलिया परंतुउसीसमय उसकोध्यान
आगया कि उसचित्रको देखलेनाचाहिये उपरांत इसप्राणप्यारी
के साथभोगबिहार करनाउचितहै यहबिचारकरउसने उस चित्र
को निकाला और देखा कि उसपर चपलाका स्वरूप ज्यों का
त्यों बनगया है यह देखतेही उसने कुछमायाकी कि उस से
चपला ने जो भेषधारण कियाथा वह जातारहा और जो उस
कास्वरूपथा वहीरहगया यह देखकर उसने तुरंत मायाकरके
चपलाको स्तंभित करदिया और पकड़कर उसको उसी जंजी-
रमें बांधदिया जिसमें प्रहास और उपदेशी बँधेथे और फिर
बोला कि आज बहुरूपियों ने तारबांधदिया है प्रतिपदपर
आकर छलकरते हैं प्रहासबोला कि अरे दुष्ट क्या तू बचभी
जायगा अबकोई क्षणजाता है कि तेराबध होगा यह सुनकर
संतापीको बडाभयहुआ परंतु वह उनतीनोंको लियेहुए आ

बढ़ा उससमय उसको उनतीनों को लेजातेहुए प्रचंडने देखा वह पीछे २ होलिया और थोड़ीदूरपर मार्गमें अकस्मात् एक म्लेच्छका बाग अनेकप्रकार के फूल फल और लताओं से शोभितमिला--

चौ० भांतिअनेकप्रसूनसुहाये । खंडखंडप्रतिपृथकलगाये ॥
बिबिधभांति केतरुअरुवेली । क्यारिनक्यारिनलगींनवेली ॥
शुकसारिकाआदिखगनाना । करेंसुमंजुमधुरध्वनिगाना ॥
शोभाललितमनोहरताई । रंभापुरीदेखिसकुचाई ॥

उसको देखकर संतापी श्रमितहोने के कारण से उसके भीतर चलाआया और एक स्थान में बैठगया प्रचंडउसको उसबाग में जातेहुए देखकर ठहरगया और पीछे से माली का भेषबनाकर हाथमें खुरपीलिये करमें कैंचीलगाये झोलीमें फूलभरे बनसे एकवृक्षका पौधा लियेहुए आया उसकोदेखकर संतापीने अनुमान किया कि यही इसफुलवाड़ीका मालीहै बन में कोई वृक्षका पौधालेनेगयाथा अब आया है यह विचारकर उसने उस मालीके समीप जाकर पूछा कि यह फुलवाड़ी किस की है प्रचंडने कहा कि महिल्याजीकीहै यह सुनकर वह चुपरहा और अनुमान किया कि इसमायाकृत देशमें अनेक मायावी जीव रहतेहैं मिहिल्याजीभी कोईहोगी इसकेपीछे प्रचंडने एक डलियामें फलफूल और मेवोंकी डाली लगाई और उसे लेकर संतापीके पासआया संतापीने उसे प्रसन्नहोकर द्रव्यदिया और उसमेंसे कुछफल खानेकी इच्छासे उठाये परन्तु जैसेही खाना चाहा फिर उसको उस चित्रका ध्यान आगया और उसके निकालकर जो देखातो उसपर प्रचंडका स्वरूप बनगया था उसको देखकर संतापीने कहा कि अरे प्रपंची तू मुझसे छल करना चाहताथा मैंजानगया तू बहुरूपियाहै यह सुनकर प्रचंडभागा परन्तु संतापीने माया करके उसके पैरोंको स्तंभितकर

दिया और उसकोभी पकड़कर और उसी जंजीरमें बांधकर तीनोंको लियेहुए चलदिया भयके मारे उस बागमेंभी न ठहरा और मार्गमें उसने विचार किया कि बहुरूपिये मेरेपीछे पड़े हैं कहीं एकांत स्थानपाऊं तो एकपत्र श्रीमहाराजको लिखूं कि मेरीसहायताके लिये कुछ म्लेच्छ भेजदें मैं अकेला होनेसे बहुत दुखीहूं बहुरूपिये प्रतिपदपर प्रपंच रचरचकर मिलतेहैं चारको तो मैं पकड़ चुकाहूं और अभी न जाने कितनेहैं आप इनचारों कैदियोंको मँगवालें क्योंकि इनके कारणसे में आकाश मार्गसे आपके समीप नहीं आसकता अकेला होता तो चलाआता निदान इसी विचारसे वह स्थानमार्गमें देखताहुआ जाताथा कि उसको दूरसे उपहासनामी बहुरूपधारिणी विद्याके परम- वेत्ताने जो इन्द्रसे बरदानभी पायेथा देखा कि उक्तविद्याके आ- चार्य प्रहास और तीन दूसरे बहुरूपियोंको पकड़ेहुए लियेजाता है उसको देखकर उसने विचार किया कि इस म्लेच्छके बधके लिये चार बहुरूपिये गये परन्तु क्या कारणहै जो चारों पकड़ गये और कोईकार्य पूरा न करसका मालूमहोताहै कि इस म्ले- च्छकेपास कोई ऐसा मायाकृत योगहै जिससे जो बहुरूपिया उसके सन्मुख जाताहै उसीको वह जानजाताहै अब ऐसी कुछ युक्ति विचारना चाहिये जिससे न इसके सन्मुख जाइये और न इससे वार्ता कीजिये परन्तु मारडालाजाय निदान इसी चिंतामें वह छलकी फुलवाड़ीमें कोई प्रपंचरूपी पुष्प ढूंढ़ते घूमने लगा और थोड़ीदेरमें उस पुष्पको पाकर मार्गको शोधा और यह निश्चय करके कि संतापी इसीमार्गसे आवैगा वहां एक किनारे उसने शीघ्रशीघ्र बनसे लकड़ी और लता और पत्ते लाकर एकत्रकिये और उनसे एक मंडपसा ऐसा बनाया जिसको देखकर यह जानपड़ताथा कि किसी महापुरुषकी कुटी है और उसकेआगे आपमाला म्लेच्छोंकीसी लेकर कोपीन बांधकर जटा

फैलाकर चीमटा गाड़कर आसन बिछाकर बैठगया और अपने चारोंओर लकड़ियां सुलगाकर धूनी लगादी और उन धूनियों पर मूर्छाकर चूर्ण डालदिया जिससे उसका धूम चारोंओरको फैले और मूर्छाको दूरकरनेकी औषधीको रुईमें लपेटके अपने दोनों नथनोंमें रखली जिससे उस धूमका विकार उसको नहोने पावे निदान थोड़ीदेरमें संतापी उनचारों बहुरूपियोंको पकड़ेहुए उसीमार्गसे आया और देखा कि एकम्लेच्छ मतका साधू धूनी रमायेहुए बैठाहै चीमटा आगे पृथ्वीमें गड़ाहुआ है जहां तहां फूल लगेहैं एकओर धूमपीनेका पात्ररक्खाहै झोली एक ओर रक्खी है अधोवस्त्र धारण किये है ऊपरका शरीर नग्न है उसे देखकर संतापीने आगे बढ़कर दंडवत्की और कहा महाराज ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि मैं कुशलतासे महाराज महेन्द्रके पास पहुँचजाऊं बहुरूपिये मेरेपीछे पड़ेहुए हैं यह सुनकर उस साधूने उसकीओर क्रोधकी दृष्टिसेदेखा और वह साधूके लाल लाल नेत्रोंको देखकर भयभीत होकर बैठगया और उस मूर्छा कर औषधीका धूम अच्छीप्रकारसे नासिकाके मार्गद्वारा उसके ब्रह्मांडमें पहुँचगया उससमय उपहासने जो साधूबनाथा कहा अरे दुष्ट मैंभी तो बहुरूपियाही हूं तेरावध करनेको यहां बैठा हूं यह सुनकर संतापी ने खड़ाहोकर उसको पकड़ना चाहा परन्तु उस चूर्ण का धूम अपना काम करचुका था वह खड़ाहो तेही गिर पड़ा और उपहास ने गदा मारकर उसका शिरचूर्ण करडाला उसके मरतेही पाषाणकी वर्षा होनेलगी बड़े २ भयानक शब्दहुए और थोड़ी देर में यह शब्द सुनाईपड़ा कि मैं मारागया संतापी मेरानामथा और उसके ब्रह्मांडसे एक अद्भुतपक्षी निकलकर शोचनीयम् शोचनीयम् कहताहुआ महेन्द्र के समीप चलागया और प्रहासआदि चारों बहुरूपिये उसकेदंडसेमुक्तहुएउससमय उपहासने प्रहासको दण्डवत्की प्रहासने

आशीर्वाददिया और उनसबको विदाकिया तब वे सब पृथक पृथक् मार्गोंसे चलेगये और एक दूसरेकी दृष्टिसे अदृश्यहो-गया और प्रहासभी छुपाछुपा चला कि इसीअवसर में दिन-मणि अस्ताचलचूड़ावलंबीहुए और भगवन् कुमुदिनी नायक ने तारागणों सहित आकाशमें प्रकाशकिया पक्षीसब अपने २ घोंसलों में बसेरालेनेलगे और बनकेजीव अपने अपने सुपास के स्थानों में जाकर विश्रामकरनेलगे॥

दो० भये दिवाकर अस्त जब। कमलनि तज्योविकास॥
फूलनलगी कुमोदनी। लखि शुचि इन्दुप्रकास॥

तबसब बहुरूपियोंने पर्वतोंकी गुफाओं में वासकिया और अपनी थैलियोंमेंसे भोजननिकालकर खाया और पर्वतों से जो जलधारा निकलतीथीं उनमेंसे जलपानकरके परमेश्वरको धन्य-वाददिया और सोरहे परंतु प्रहासबेअन्नोदकके रहा उसने अपने चित्तसे कहाकि थैली में से भोजन न निकालना चाहिये शत्रु-जयकी नौकरी में यहबड़ादुखहै कि अपने पाससे भोजनकरने पड़तेहैं अबरात्रिके समय कहींजाभी नहीं सकताहूं दिनभरतो उसदुष्ट संतापीने कैदरक्खा इससे आज भूखेही पड़रहो निदान वह उक्तप्रकारसे विचारकर पहाड़की एक गुफामें एक पाषाणकी शिलापर सोरहा जबक्षुधाने अधिकसताया तब उसने वृक्षों के फल तोड़तोड़कर खाये और बड़ेदुखसे अपनी थैलीमेंसे थोड़ा सा चर्वण निकालकरखाया और क्षुधाको मिटाकर लेटरहा और वह पक्षी जो संतापीके ब्रह्मांडसे निकला बदरीउद्यान में चला गया और वहां उसने पुकारकर कहा कि हेमायाधीश महाराज महेन्द्र संतापी मारागया यह सुनकर महेन्द्र क्रोधकेमारे कांपने और होठोंको चबानेलगा और एक वृहत्रूपनामी म्लेच्छको आज्ञादी कि तू अभी उसबनमें चलाजा जहां संतापी मारागया है उसके शरीरका विधिपूर्वक संस्कारकरके उसके पासजो मेरा

दियाहुआचित्रहै उसे लेआ में कल किसी ऐसे मायावीदानवको भेजूंगा कि वहसब बहुरूपियोंको पकड़लावेगा उसचित्रसेमैं देखूंगाकि किसबहुरूपिये का क्यास्वरूपहै और अबतो रात्रिहो गईहै इससेतुमभी वहांमतठहरना शरीरका संस्कारकराके चित्रलेकर चलेआना यह कहकर महेन्द्र अपने भोगविहार में आनन्दकरने लगा और वहबहुतरूप वहांसे आकाशमार्गसे उसबनमें आया और संतापीके शरीरका विधिपूर्वक संस्कारकर के और वहचित्रलेकर चलाआया और वहचित्रमहेन्द्रकोदिया इतनेमें रात्रिव्यतीतहुई और पूर्वदिशामें मार्तण्डमण्डलने प्रकाश किया ॥

चौ० उदयउभानुभयोतुप्रकशा । इन्दुमलीनभयो तमनाशा ॥
वरतड़ाग इन्दीवरफूलं । सकुचिकुमोदनालझुकिभूलं ॥

उससमय सबबहुरूपिये उठकर प्रातःक्रियासे निश्चिन्तहुए और परमेश्वरको नमस्कारकरके पृथक् २ मार्गों से आगेबढ़े और यहां महेन्द्रभी निद्रासे विमुक्त होकर बदरीउद्यानमें आया और सभामें आकर सिंहासन पर बैठगया और सब सभासद्भी आकर अपने अपनेस्थानपर स्थानासीनहुए नृत्यहोना प्रारंभ हुआ और वारुणीकेपानपात्र इधरसेउधरचलनेलगे उससमय महेन्द्रने मद्यके आवेशसे उन्मत्त होकर बहुतसे म्लेच्छोंकोजो आसुरी मायामें बड़े प्रवीणथे बुलाकर कहा कि प्रहास और चार और बहुरूपिये इसमायाकृत देशमें आयेहैं औरमायावी दानव और म्लेच्छों को छलसे मारतेहुये रक्त वाहिनी नदीके समीप आपहुंचे हैं और रानी निशाकरी भी भानु विक्रमऔर चन्द्रचूड़ाको खोजती हुई इससमय का दंबरी वनतक पहुंच चुकी है और भानुविक्रमआदि एकपर्वतकीगुफामें छिपेहुएबैठे हैं इससे अबतुमलोग बहुरूपियोंकी ओरमतजाओ किंतु वहां जाओ जहां भानुविक्रमहैं वहीं रानी निशाकरी भी जाती है

और बहुरूपियेभी उसी ओर जायँगे वहां जाकर उनसबको पकड़ लाओ औरलो यहभस्म मैं देताहूं यह ऐसा प्रभाव रखती है कि जिसके ऊपर इसको डालदोगे वह कैसाही बड़ा मायावीहो मूर्च्छित होजायगा निदान वे मायावी म्लेछ जिनके नाम आगे युद्धके प्रसंगमें वर्णनकिये जायँगे वह भस्म लेकर चलदिये अब हाल उन बहुरूपियोंका सुनिये कि वे अपने अपने रात्रिके निवास स्थानोंसे उठकर पर्वत और बनोंको उल्लंघन करतेहुए चलेजातेथे सब पृथक्२ मार्गोंसे जातेथे और एक दूसरेके समीपभीथे उनमेंसे प्रहास जो रात्रिभरका भूंखा था इसचिंतामें चलाजाताथा कि मार्गमें कोईग्राम अथवा नगर मिलैतो कोईउपाय करके भोजनकरूं थोड़ीदूर चलकर उसको एकनगर दिखाई दिया देखतेही वह शीघ्र २ पैर उठाकर उस नगरके प्राकारके समीप पहुंचा और देखा कि वह प्राकार अनेक वर्णके सुंदर सचिक्कण पाषाणोंका बनाहुआहै और उस नगरमें प्रवेश करनेका द्वार लोहनिर्मित है और प्रियदर्शनार्थी के नेत्रोंकी सदृश खुलाहुआहै कोईमनुष्य न ड्योढ़ीवानहै और न कोई वहां दिखाई देताहै प्रहास उसमें घुसाहुआ चलागया और देखा कि वह नगर बड़ा रमणीक बनाहै मार्गसब पाषाणकेहैं घर सब बड़े ऊंचे २ और उत्तम बनेहैं हाटकी दूकानें बड़े क्रमसे शोभायमान हैं कहीं बजाजा है कहीं सराफाहै कहीं जौहरी हैं कहीं हलवाइयोंकी दूकानहै और उन दूकानोंमें प्रकार प्रकारसे चुनेहुए सब पदार्थ रक्खे हैं परन्तु कोई क्रय अथवा विक्रय करनेवाला नहीं है और नगर घरभी सब खालीपड़े हैं सरंजाम गृहस्थीका सबहै परन्तु मनुष्यका नाम नहीं है प्रहास उसको देखताहुआ चलाजाताथा आगे जाकर उसने एकक्षेत्र में देखा कि एकबड़ा उत्तम किला बनाहुआहै ॥

जयकरीछंद। उच्च अगम्य पुष्ट प्राकार। लोहमयी अति उत्तम द्वार।

भांति भांतिके बुर्ज महान । कनककुंभ युत श्वेतपखान ॥
यंत्र शतघ्नी आदिक अस्त्र । वज्र सदृश स्थापित तत्र ॥
चहुंदिशिपरिखा खुदीअखर्व । अतिगंभीर जलपूरितसर्व ॥

द्वार उस किलेका खुलाहुआथा रोकनेवाला वहां कोई नथा प्रहास उसमें घुसा चलागया और देखा कि भीतर राजमंदिर बड़ा शोभित बनाहै और समीपही राजसभाभी बनीहै उसमें एक परम अलंकृत सिंहासन रक्खाहुआ है और उसके चारों ओर उत्तम २ बहुतसे आसन बिछेहुएहैं और सिंहासनकेपास जो चारआसन हैं उनपर कागद की पुतली बैठीहुई हैं जब प्रहास आगे बढ़ा तब उन पुतलियोंने कहा कि अरे मरे तू यहां भी आया प्रहास उन पुतलियों को बोलतेहुए देखकर आश्चर्य में आया और यह विचार कर कि यह मायाकृत स्थानहै यहां किसी बातपर कुछध्यान न करना चाहिये यहां से निकलचलो वहां से चलाआया और जब नगरमें आयातब उसने दुकानों को विना किसी वणिकके देखकर एक दूकानपर से कुछ पदार्थ उठाकर जैसा चाहा कि थैली में रखलूं तैसे ही पृथ्वी विदीर्ण हुई और उन्हीं चार पुतलियोंमेंसे जिनको किले में बैठा देखा था एकने निकलकर प्रहास का हाथ पकड़लिया और कहा कि अरे मरेतस्कर तू जो अपना कल्याण चाहताहै तो जो पदार्थ जहांसे उठाया है वहीं रखदे यह सुनकर प्रहास ने वह पदार्थ जहांके तहां रखदिये और वह पुतली फिर वहीं गुप्तहोगई तब प्रहास आगेबढ़ा और कहनेलगा कि हाय बड़े शोचकीबातहै कि यहसब पदार्थ संतहीजातेहैं और फिर उसने एक दूकानपरसे कुछ पदार्थ उठाये उसीसमय पृथ्वी फटी प्रहासने समझा कि पुतली आई और वह उन पदार्थोंको लेकर भागा और बहुतदूर जाकर एकगलीमें ठहरा परन्तु उसने पैर ठहराये हीथे कि तत्काल पुतली पृथ्वीमेंसे निकली और प्रहास

काहाथ पकड़कर वहीं घसीटलाई जहांसे उसने वे पदार्थ उठाये थे प्रहासका कुछवशनचला और वहपुतलीउनपदार्थोंको जहां का तहांरखवाकर गुप्तहोगई निदान वहांसे प्रहास निराशहोकर आगे बढ़ा और कहनेलगा कि हमारा प्रारब्ध बड़ाबुराहै देखो कलसे आजतक दो कपर्दिकाभी नहीं प्राप्तहुई अन्त को उस नगरके वह बाहिर आया और एक बनमें होकर अपना मार्गलिया और बड़े मार्गको उत्तीर्ण करके रक्तवाहिनी नदीके तटपर पहुंचा और देखाकि वह एक रक्त का समुद्रहै लहरेंउस की प्रलयकालके समुद्र कीसीहैं और रुण्ड और मुण्डउसमें मच्छ कच्छोंकी भांति उछलते और डूबतेहैं॥

छ० सो सरित अति गंभीर दुस्तर अशुचि अतिभयकारिनी।
विस्तार सागर सम अपार सुलहरि प्रलय प्रसारिनी॥
चंड भ्रमर प्रवाहयुत अति घोर ध्वनि सहचारिनी।
खंड दृश्या दृश्य बीच सो रही मार्ग निवारिनी॥

और उस नदी के बीचमें एक धूमका सेतु बनाहुआ है उसके तीन खण्ड हैं ऊपर के खण्ड में सहस्रों बुर्जबने हैं उनमें सहस्रों गंधर्विणी और गंधर्व वीणा सहनाई और तुतुई आदि वाद्यमुखसे लगाये खड़े हैं यदि एक बारभी वे लोग उन वाद्योंको बजादें तो समस्त देशके बासी मूर्च्छित होजायँ और दूसरे खंडमें अप्सरा अपनी २ झोलियोंमें मोती भरेहुए उछाल रहीहैं और तीसरे खंडमें दानव आपसमें लड़रहे हैं शिर उनके कटकटकर गिरते जातेहैं और उन्हींके रक्तसे वहनदी वहती है निदान प्रहासने बहुत कुछ उपाय उसनदीके पारजानेका विचारा परन्तु हरप्रकारसे पारजाना असंभव जानपड़ा क्योंकि यह नदी मायाकृत देशके दृश्य और अदृश्य खंडोंके बीचमें रचीगई है और अदृश्यखंड उसनदीके उसपार है वहां बिना महेन्द्रकी आज्ञाके कोईनहीं जासकताहै वहां बड़े २ मायावी दानव और

मनुष्योंके रहनेका स्थानहै निदान जब प्रहास पार न जासका तबउसने अपना सरंजाम निकाला और एकांतमें बैठकरअपना स्वरूप एकपन्द्रह अथवा सोलहवर्षके युवानकासा बनाया और डाढ़ी और मूछोंको कपड़ेसे बांधकर उनके ऊपर ऐसा कुछ रंग लगाया कि उसका मुख भोला भोला लड़कोंकासा जानपड़ता था आंखोंमें सुरमा लगाया हाथोंमें मेंहदी लगाई बसन्तीअंगा और रक्तांबरकी धोती पहिनी हाथोंमें कटक धारणकिये और शिरपर मंडील बांधकर थैलीमेंसे मत्स्यके अहेर करनेका सरं- जाम निकाला और कटियाको नदीमें फेंककर हाथमें डोरपकड़े नदीके तटपर बैठगया दैवयोगसे मायावतीकी बहिन निद्रावती उसओरसे निकली येदोनों बहिन महेन्द्रकी प्रियाहैं और बड़ी भारी मायाकी ज्ञाताहैं दोनों अदृश्य खंडमें रहती हैं परन्तु उस दिन निद्रावती कहीं कामको गईथी और वहांसे लौटते समय उसने रक्तवाहिनी नदीके समीप पहुंचनेपर देखा कि एक स्व- रूपवान् दर्शनीय किशोर अवस्थाका पुरुष जिसके अभी होठ भी कालेनहीं पड़े हैं भौंदोनों दूजके चन्द्रमाकी समानहैं ॥

दो० सुन्याकाम समरूप नहिं सुरनर मुनिमें आम ।
हम जानत या समनहीं अन्यपुरुष छवि धाम ॥

हाथमें डोर पकड़ेहुए खड़ाहै उसको देखकर निद्रावतीने आ- श्चर्य करके कहा कि यह मनुष्य ऐसा स्वरूपवान इतना बाल बुद्धी है कि यहनहीं जानता है कि यहनदी मायाकृत है इसमें मत्स्य कहांसे आये लाओ इसे समझाकर निरर्थक श्रमकर- नेसे बचादूं यह शोचकर वह अपने महोर्ग से उतरी और प्रहासके समीप आकर बोली कि अरे लड़के यह क्या उन्मत्त- ताकीसी बात कररहाहै जो मायाकृतनदी से मत्स्यअहेर करना चाहताहै यहसुन प्रहासने दृष्टि उठाकर देखा कि एक स्त्री परम सुंदरी थोड़ी अवस्थाकी उत्तमवस्त्र धारण कियेहुए गलेमें मुक्ता

ओंकी माला पड़ीहुई बालबालमें मोती पिरोएहुए अपने मुखारविन्दकी छवि से चन्द्रमाकोभी लज्जा देने वाली सन्मुख खडी हुई देखरही है ॥

छं० । कंकन करनफल किंकिनी कलितकटि कंचनकंगूरे कुच केशकरी यामिनी । कानन करनफूल कोमल कपोल कंठ कंबुककपोत ग्रीव कोकिल कलामिनी ॥ केसरि कुसुमकलधौतकी कलूनकांत कोविद प्रवीनबैनी करिबरगामिनी । काककारिकासी सीनरीके कन्यकासी कैधौं कामकी कलासी कमलासी खासी कामिनी ॥

उसको देखनेही प्रहासके मुखमें पानी भरआया कि तुझे आज बिनाकार्य्य दोदिनब्यतीत होचुके हैं परमेश्वरने अबतेरे लिये यह अहेर भेजाहै अबइसको मारकर इसके सब वस्त्र और आभूषण उतारलो तो तुम्हारे दोदिन बेकाम रहने का ऋण कुछ तो चुकजायगा यह विचार कर उसने मंदमुसुकान करके निद्रावतीकी ओर देखा और कहा कि तुमक्या कहतीहो मैंने सुनानहीं वहबोली कि मैं तुझको यह समझातीहूं कि यह नदी दैवीनहींहै किंतु यह मायाकृतनदी है इसमें मत्स्यनहीं हैं तूइस निरर्थक कामसे निवृत्तहो और अपने घरको जा यह सुनकर प्रहास बोला कि वाहजी हमतो कई मत्स्य इसमें से मारचुके और उनको संस्कार करके खाभीचुके और दो एक और मारलें तो उनको लेजाकर अपनी स्त्री को खिलाकर प्रसन्नकरें यह सुनकर निद्रावती को आश्चर्यहुआ और बोली कि अरेमेरेप्यारे तू कहांरहता है और स्त्री के कहने से तेरा क्या प्रयोजनहै प्रहासबोला कि कलहमारा बिवाहहुआ था सोजब हमअपनी स्त्री के पासगये तब उसने कहा कि हमको रक्त वाहिनी नदी के मत्स्यलाकर दो तब हम तुमसे बातकरेंगी नहीं तो मुखसेभी न बोलेंगी सो अब हम उसीकेलिये मत्स्य मारकर लेजायँगे ऐसी भोली बातें सुनकर निद्रावती मारे हँसी के लोटगई और कहने

लगी कि अरे मूर्ख नादान तेरी स्त्री छिनाल है उसने तुझको नष्टकियाहै और यहां इस प्रयोजनसे भेजादियाहै कि इसमाया कृत नदी पर जाकर कुछ मूर्खताका कामकरै और माराजाय और फिर मैं आनन्द करूं सो खबरदार इसबुरे कर्मको त्याग और मेरे साथ चल मैं तुझको एक चन्द्रमुखी स्त्री दिलादूं और उस कुलटा दुष्टा स्त्री का नामनले यह सुनकर प्रहास बोलाकि कुलटा और छिनालतू होगी चल अपनामार्गदेख मैंतो अपनी प्यारी भार्यापर आसक्तहूं यह सुनकर निद्रावतीने ध्यानकिया कि यह अभी थोड़ी बय होनेसे बहुत कम समझहै अभी किसी से फँसा नहीं है औरन इसने अभी अनङ्ग का रंग देखा है इसीसे अपनी स्त्री पर आसक्तहै इससे यदि होसकै तो ऐसे थोड़ी बयके भोले सलोनेको अपने पासरखलूं औरइसकेनवीन यौवनको लूटूं यह विचारकर उसने शोचा कि अबइससे कड़ा न बोलूं किन्तु कुछ लगावटकी बातेंकरूं यहशोचकर वहप्रहास के समीप आई और बोली कि कहोजी अलबेले तुम किसखण्ड में रहतेहो वह बोला कि मेरे रहनेका स्थानतुम्हारा हृदयहै यह सुनकर निद्रावतीने हँसकर उसका हाथपकड़लिया और बोली खिलाओ वह संस्कारकी हुई मछली हमकोभी खिलाओ जिस-को तुमने अहेर कियाहै प्रहास बोला वाहजी जो तुमको हम खिलादें तो अपनी स्त्री के लिये क्यालेजायँ यह सुनकर निद्रा-वतीने उसको अपने हृदयसे लगा लिया और बोली कि हम-हीं तुम्हारी स्त्रीबनेंगी वह बोला सत्यकहो तुमहमारीस्त्री बनोगी वह बोली हां तब प्रहासने उसको आलिंगन करके बहुतसा प्यार किया और कहा कि हमको तो एक स्त्री चाहिये चाहे तुमहो चाहेकोई औरहो चलो अलग चलकर बैठें और तुम को संस्कृत मत्स्यखण्ड खिलावें तब निद्रावती उसी नदी के किनारे एक वृक्षके नीचे ठहरगई और प्रहासने अपनी कटिसे

एक वस्त्र खोलकर बिछादिया और उसपर उसको बैठाया और थैलीसे संस्कार कियेहुए मत्स्यखण्ड निकालकर उसकेसन्मुख रखदिये उनको देखकर निद्रावती बोली कि मद्यभी होता तो क्या बातथी वह बोला कि मेरा घर यहांसे समीपहीहै मैं अभी मायाके बलसे वहां जाकर मद्यलिये आताहूं वहां तुमको नहीं लेजासकता क्योंकि मेरी स्त्री देखैगी तो बकैभिकैगी यहकहकर वहमरुत दत्त वस्त्र ओढ़कर अदृश्य होगया निद्रावती यह देखकर समझी कि यह बड़ा मायावी है जो तुरन्त अन्तर्द्धान होगया निदान थोड़ीदेरमें उसने अपनीथैलीसे मूर्च्छाकर चूर्ण मिलीहुई गुलाबी रंगकी बारुणीका एकघट निकाला और फिर उसवस्त्रको उतारकर प्रकटहुआ और वहघट उसकेसन्मुख रखदिया निद्रावतीने उसमेंसे पानपात्र भरके प्रहासको दिया उसने निद्रावतीके गलेमें हाथ डालकर कहा कि प्राणप्यारी तुम पहिलेपियो और फिर वह पात्र उसके मुखसे लगादिया प्रहास के इस इठलानेसे वह प्रसन्नहुई और उसने अपना मुख खोल दिया प्रहासने वह सब बारुणी उसके कंठमें डालदी उदरमें जातेही निद्रावतीको एकझोंकआई और वह चक्करखाकर गिरपड़ी और निश्चेष्ट होगई तब प्रहासने उसके वस्त्र और आभूषण सब उतारलिये और बालोंमें मोतियोंको देखकर बोला कि एक२ मोतीको न निकाले थैलीसे अस्तुरह निकाला और उसका शिर मूड़कर सबमोती निकाललिये और खड्ग निकालकर जैसेहीचाहा कि उसको मारडालें तैसेही उस नदीकाजल उबलने लगा और वहांके रक्षक दौड़े उससमय प्रहासने तो मरुतदत्त वस्त्र ओढ़लिया और अदृश्य होगया और वह रक्षक वहांआकर निद्रावतीको उठाकर महेन्द्रकेपास लेगये महेन्द्रने अपनी प्रियाकी यह दुर्दशा देखकर बड़ा शोचकिया और उसको वस्त्र पहिराकर और चैतन्यकरके उसका वृत्तांत पूछा तब निद्रावती

ने कहा कि एक मनुष्य रक्तवाहिनी नदीके तटपर खड़ाहुआ मछलीका अहेर कररहाथा मैंने उसको निषेधकिया वह बोला कि में कईमत्स्य मारकर और उनके खण्डोंको अग्नि संस्कार करकेखाभीचुका तुम्हारी इच्छाहोतोलोतुमभी एक आधखण्ड खाओ मुझको बड़ाआश्चर्य हुआ और मैंने एक मत्स्य खण्ड लेकर खाया और खातेही मूर्च्छित होगई यहसबतो कहा परन्तु अपने आसक्त होनेका वृत्तांत नहींकहा तब महेन्द्रने कहा कि वह निस्संदेह कोई बहुरूपिया होगा हेप्रिये आजकल इसदेश में बहुरूपिये बहुत आयेहैं इससे यदि तुम कहींजाओ तो किसीकी ठगीमें मत आजाना नहींतो वह मारही डालेंगे क्योंकि वे बड़े छली और पूरे ठगहैं मैंने मायावी म्लेच्छोंके गणभेजे हैं वे लौटकर आजायँ तो फिर मैं रानी विचित्रमायाको सेनालेकर रानी निशाकरी से युद्धकरने को भेजूं और भानुविक्रम का बध कराऊं यह कहकर महेन्द्र ने करतल का शब्दकिया करतेही बहुतसे सुंदर बिहंग उस उद्यानसे उड़कर महेन्द्र के समीपचले आये उसने सबको आज्ञादी कि तुम सब वहां जाओ जहां रानी निशाकरी और भानु विक्रम बैठेहैं और वहां के वृक्षों पर बास कर जो कुछ वार्ता वे लोग करें सबसुनो और हमसेआकर उस का समाचार कहो यह सुनकर वे सब पक्षी उड़े और उस ओर को चलदिये और प्रहास उसस्थानसे उठकर नदीके किनारे २ चलदिया परन्तु उसके पार न जासका और थोड़ी दूरचल कर उसको एक पर्बत दृष्टि पड़ा जब उसके समीप पहुंचा देखा कि वहपर्बत बड़ाशोभायमानहै प्रकारप्रकार के पाषाणोंके होनेसे वहरंगाबिरंग दिखाईपड़ताथा दूरसे झरनेझरतेहुए ऐसा जान पड़तेथे मानो मुक्ता और रत्नों के खण्डोंकी बर्षाहोरही है और जलके जहां तहां ओर पासहोनेसे मालूम होताथा कि वह पर्बत डुपट्टाडालेहुए है और अनेक प्रकारकी पुष्पित लता और

वृक्षों से ऐसादीखताथा मानो अनेकप्रकारके वस्त्र और आभूषणों से अलंकृतहै और इस सब शोभा पर टेसू आदि अनेक प्रकार के पीले पुष्पों के विकाससे चारोंओर बसंतकीसी अपूर्व शोभा दृष्टि आतीथी ॥

क० कूलनमें केलिन कछारनमें कुंजनमें क्यारिनमें कलितकलीनाकिलकन्तहै । पद्धपद्माकरपरागहू में पौनहूमें पांतिनमें पीकनपलाशन पगन्त है ॥ द्वारमेंदिशानमेंदुनीमें देशदेशनमें देखौद्वीपद्वीपनमेंदीपित दिगन्तहै । बीथिनमें गिरिमें नवेलिनमेंवेलिनमें वननमेंबागनमें वगरयोवसन्तहै ॥

जब उसपर्वत की एक घाटी पर पहुंचा तब नृत्य और गान का शब्द सुनाई पड़ा उसको सुनकर वह उस घाटीके मार्गको उत्तीर्ण करके पर्वतकी शिखरपर पहुंचा वहांउसने बड़ा चमत्कार देखा कि वहां वड़े उत्तम उत्तम वस्त्रबिछे हुए हैं उनपर दसवीस स्त्रियां प्रकार २ के वस्त्रोंसे अलंकृत परमसुंदरी मनोहर हास्य निर्दोष अंगी बैठीहुईहैं वृक्षोंपर झूला पड़ाहुआहै बहुतसी छबीली झूलती हैं बहुतसी झोटादेती हैं और बहुतसी यहांतक बेगबढ़ाती हैं कि यह जानपड़ताहै कि उनकीइच्छा आकाशको छूनेकी है और सबकी सब युवानछबीली और रसीलीहैं और अनङ्ग के मदसे मदोनमत्त होकर अनेक प्रकार के नृत्य और गानकरती हैं और कलोल मार मारकर प्रकार प्रकारकी क्रीडामें अनुरक्तहैं उनको देखकर प्रहासने चाहा कि कहीं आड़में बैठकर अपना स्वरूपभी स्त्री का बनाकर उनमें जामिलूं परन्तु जैसेही उसने उस पर्वतकी शिखरपर पैर रक्खा वैसेही सबने कोलाहलकिया कि प्रहासआया प्रहासआया यहसुनकर प्रहाससे कुछ न बनसका और मरुतदत्त वस्त्र ओढ़कर अदृश्य होगया और विचारकिया कि यह सब मायाकृत चमत्कारहै विना दैव निर्मित नष्ट कर्त्ताके दूसरे से इनका नष्टहोना दुर्लभहै इस से इन स्त्रियों के पासजाना व्यर्थ है मालूम होताहै कि मायावियों

ने अपनी माया का यह अद्भुत चमत्कार रचा है ये सब भी पुतली हैं इनका यथावत् वृत्तान्त मायान्वेषणी चक्रसे विदित होगा यह शोचकर वह पर्वतसे उतर आया और आगे बढ़ा और कई दिनमें बड़े मार्गको उल्लंघन करके उसस्थानपर आ निकला जहां पर्वतकी कन्दरामें राजपुत्र भानुविक्रम औरराज-पुत्री चन्द्रचूड़ा आदि बैठे थे जब समीप पहुंचा देखता क्याहै कि उस कन्दरामें एक यामिनी खड़ी है और भानुविक्रम बैठा है और उसके बामाङ्गमें एकस्त्री परमसुंदरी बैठी है जिनको देखनेसे ऐसा जान पड़ता है मानो कन्दरा में सूर्य्य और चन्द्रमा दोनों एकत्र हैं उनको देखकर प्रहासने पुकारकर कहा क्योंरे छोकरे तू अच्छा यहां इसदेशको विजयकरने आया कि वेश्यागामी होगया उसको सुनतेही भानुविक्रमने बाणीसे पहिचानलिया कि प्रहासहै और शिरउठाकर जो देखा तो आगेसे प्रहासको आतेहुये देखकर खड़ा होगया और बोला कि पितामह आइये और पितामह कहनेका कारण यह है कि भानुविक्रमके पिताको प्रहासने अपनापुत्र कर माना था निदान जब प्रहास निकटगया भानुविक्रमने दण्डवतकी प्रहासने उसे हृदयसे लगालिया और चिरं जीव रहनेका आशीर्वाद दिया फिर प्रहास वहां बैठगया और चन्द्रचूड़ाकीओर भयानक दृष्टिसे देखकरकहा कि अरे भानुविक्रम तूनेकिस कुरूपास्त्रीको अपनेबामाङ्गमें बैठायाहै रामराम क्या तेरीभी नियत है यह सुनकर राजपुत्री बहुत लज्जितहुई परन्तु राजपुत्रने तुरन्त उसकेकानमें कहदिया कि हेप्राणप्यारी यह मनुष्य बड़ा लालची है इसको कुछ दोतो अभी तुम्हारी प्रशंसा करने लगेगा तुम इनके कहनेपर कुछध्यान मतकरना यह सुनकर राजपुत्रीने तुरन्त अपने हाथसे नवरत्नका केयूर उतारकर प्रहासको दिया उसको लेतेही प्रहास कहनेलगा कि हे राजपुत्री यह शत्रुंजय का धेवता तेरे योग्य नहीं है

तू ऐसे राजाकी पुत्री है कि इसपृथ्वी के बड़े बड़े राजा और महाराजा तेरी बराबर नहीं बैठसकते हैं यह सुनकर भानु-विक्रम और चन्द्रचूड़ा और पद्मावती तीनों हँसनेलगे तब प्रहासने कहा कि परमेश्वर तुमको सदैव हँसताही रक्खै इसके उपरान्त भानुविक्रम बोला कि हे राजपुत्री अब विजय मिलना कुछ कठिन नहींहै हमारे पितामह आगये शूरवीरोंको मैंमारूंगा और मायावी म्लेच्छ और दानवों का विध्वंसन यह करेंगे यह बातें सुनकर वह राजपुत्री प्रसन्नहुई अब आगे वृत्तान्त रानी निशाकरीका सुनिये कि जो बीससहस्र सेनालेकर राजपुत्रीको ढूंढ़ने निकलीथी वहरानी ढूंढ़तीहुई आगे बढ़आईथी और मारीचसे कहआईथी कि तू सेनालेकर पीछेपीछे आ निदान वह भी राजपुत्रीको ढूंढ़तीहुई अकस्मात् उसीपर्वतकी कन्दराके समीप आनिकली जिसमें भानुविक्रम आदि बैठेथे और पद्मावती खड़ीहुई स्थानकी रक्षा कररहीथी उससमय पद्मावतीने राज पुत्रीसे कहा कि आपकी नानीआती है यह सुनकर वहसमझी कि हम सबको पकड़ने आती हैं और घबड़ाकर बोली कि हाय अब बड़ा अनिष्टहुआ राजपुत्रने कहा कि मैं अभीजाकर उस काबध करताहूं यह कहकर वह हाथमें नङ्गाखड्ग लेकर उठा और प्रहासने मरुतदत्त वस्त्र ओढ़लिया कि ऐसा नहो कि मैं भी पकड़ लियाजाऊं तोफिर कुछ न बनपड़ेगी परन्तु जब राज-पुत्र समीप पहुंचा तब रानी निशाकरीने कहा कि आप क्यों खड्ग लेकर चलेआतेहैं मैं आपके समीप आपकी सहायताको मित्रभावसे आईहूं और चन्द्रचूड़ाकी नानीहूं बताओ मेरीबच्ची कहां है यह सुनतेही चन्द्रचूड़ा दौड़कर निशाकरीके चरणोंमें गिरपड़ी उसने उठाकर उसको अपने हृदयसे लगालिया और कहा कि देखो बेटा अब अन्तहमारा और तुम्हारा क्या होताहै महेन्द्र बड़ा प्रबलहै मैं उससे बिगड़करतो चलीआईहूं परन्तु

वह राजाधिराजहै उससे युद्धकरनेकी मेरी सामर्थ्य नहीं है वह चाहेगातो हम सबको क्षणभरमें नष्टकरदेगा यह सुनकर भानुविक्रम बोला हे महारानी उसकी क्या सामर्थ्यहै जो हमको नष्ट करदेगा हमलोगों का रक्षक ईश्वर है तुम यहां आनन्दपूर्वक विश्रामकरो हमलोग शिर देनेको सन्नद्ध हैं जो तुम हमारी सहायकहो तो परमेश्वरकी कृपापर अपना भरोसा रक्खो निशाकरी बोली कि हां यहसब तुम्हारा कहना सत्य है परन्तु जो दृष्टिगोचर में है वहभी तो देखना उचित है भानुविक्रम ने कहा कि अबतो यहां मायावी दानव और म्लेच्छों के कालरूपी शत्रुआये हैं एक दिन महेन्द्रकोभी कुत्तेकी भांति दुरदुरा दुरदुराकर मारडालेंगे निशाकरी बोली कि आपने सबको देखाहै परंतु अभी महेन्द्रको नहीं देखाहै वहबड़ा प्रबल है उसका सामना कोईनहीं करसकताहै परन्तु अब मैं जो आई हूं तो फिरकर थोड़ीजाऊंगी चाहे प्राणरहें अथवा जायँ मैं उससे युद्धकरूंगी उससमय पद्मावतीने वस्त्रबिछादिया और उसपर सबबैठगये परन्तु प्रहास अभीतक इस प्रयोजनसे प्रकट नहीं हुआ कि कदाचित् यहसबबातें छलसे बनातीहो और अभिप्राय यहहो कि जबसब इकट्ठे होजायँ तब पकड़लूं निदान जब वे सब वहांबैठगये तब निशाकरीनेकहा कि हे राजपुत्र मैं अपनी केरली विद्यासे निश्चय करचुकीहूं कि तू महेन्द्र का बध कर्त्ता और सबमाया के जालों का नष्टकर्त्ताहै परन्तु मैंने तेरे सन्मुख महेन्द्रकी प्रबलताकी प्रशंसा तेरेबल और धैर्य्यकी परीक्षा करने को करीथी परंतुमैं ने तुझे बड़ाशूरचित्त दृढ़विक्रमी और धैर्य्यमानपाया निदान ये सबबैठेहुए इसी प्रकारकी वार्त्ताकर रहेथे कि इतनेमें महेन्द्र के प्रेरित दानव और म्लेच्छों में से एकधुंधकनामी बड़े मायावी दानवने वहां पहुंचकर और निशाकरीको बैठाहुआ देख कर ललकार कर बोला कि अरे कुकर्मिणीदुष्टा

ठहर कहांजायगी कहावत है कि नदीमेंरहना और मगरसे बैर महाराजसे बिगड़कर तू कहां जासकती है यहसुनकर निशाकरी ने तुरन्तही अग्नि लोहनामी आसुरी अस्त्रका प्रयोगकिया और उस अस्त्रसे सहस्रों अग्नि रूप शस्त्रनिकल निकल कर धुंधक के ऊपर चले उससमय उसने महेन्द्रकी दीहुई अद्भुत भस्म निकाली और एक चुटकी उस अस्त्रपर छोड़दी छोड़तेही वह अस्त्र शमितहोगया और धुंधकने आगे बढ़कर एक चुटकी भस्म निशाकरी और पद्मावतीपर फेंकी उस भस्मके पड़तेही वह दोनों मूर्छितहोगई तब भानुविक्रमने खड्ग निकाल कर उस दानव पर प्रहार किया परन्तु उसने कुछ मायाकरके राज-पुत्रको स्तम्भित करदिया और चन्द्रचूड़ा सहित सबको बांधकर लेचला यह देखकर प्रहासने गोफन निकाली और उस में एक साढ़े पांच सेरका अष्टकोण पाषाण रख कर उसको भ्रमाया और मरुतदत्त बस्त्रको उतारकर पीछे से बोला अरे धुंधकठहरियो वह उसशब्दको सुनकरठहरा और प्रहासको देखने नहीं पायाथा कि उसने उस गोफनको भ्रमाकर ऐसामारा कि उससे फेंकेहुए पत्थरके लगने से उस दानव का शिर भुट्टा सा कटकर जापड़ा उससमय बड़ाभयानक शब्दहोनाप्रारम्भ हुआ वायु प्रचण्डचली और धरुधरु की वाणी होनेलगी कि इतने में निशाकरी चैतन्यहुई और उसने कुछ मायाकरके उस उपाधि को शान्तकिया और उसकी शान्ती पर धुंधककी लोथ पड़ीहुई देखी और एक अपूर्व मनुष्य अर्थात् प्रहास को भी खड़ा देखा उसको देखकर न जानने के कारणसे उसेकोई माया-वीम्लेच्छ समझकर उसने चाहाकि इसे पकड़लूं परन्तु प्रहास उसके अभिप्राय को समझगया और उसने तुरन्त मूर्च्छाकर गेंद फेंककर उसके मुखपर मारी वह पड़तेही फटगया और उसका जल उसके मुख और नासिकामें चलागया औरउससे

वह मूर्च्छित होगई तब प्रहास फिर मरुतदत्तवस्त्र ओढ़करअ-
दृश्य होगया और भानुविक्रम और चन्द्रचूड़ाने जो अबबंधनसे
मुक्तहोचुकेथे निशाकरीको चैतन्यकिया तब निशाकरीनेपूछा कि
यह क्या बात है भानुविक्रम बोला कि पितामहने उस दानव
को मारकर हम सबको उसके बंधन से मुक्तकिया और आपने
उनको पकड़ना चाहा इससे उन्होंने आप को मूर्च्छितकरदिया
और यहांसे चलेगये यह सुनकर निशाकरीने कहा कि उनको
अवश्य बुलाओ भानुविक्रम बोला कि आपही बुलाइये यह
सुनकर निशाकरी ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा कि हे बहु-
रूपाचार्य्य जी मैं आपके दर्शनोंकी बड़ीलालसा रखतीहूं कृपा
करके अपने अपूर्व दर्शन कराइये क्या मैं आपके दर्शन करने
के भी योग्य नहींहूं जो आप मुझको देखकर छुपजाते हैं यह
सुनकर प्रहास बोला कि कुछ मुँह दिखाई दो मुँह दिखावें यह
सुनकर भानुविक्रम आदि सब हँसनेलगे और निशाकरीने
कुछ आभूषण उतारके रखदिये और कहा लीजिये मुँहदिखाई
भी आपकीमौजूदहै तबतो प्रहास तुरन्त प्रकटहोगया और वह
सब भूषण लेकर अपनी थैलीमें डाललिये जब निशाकरी ने
प्रहासको उस स्वरूपसे देखा जैसा कि पूर्वमें उनकी असली
सूरत वर्णन होचुकी है तब उसको बहुतही तुच्छजाना और
अपने मनमें कहा कि यह क्या किसीका सामनाकरेगा प्रहासने
उसकी दृष्टिको पहिचाना और कहा कि तुम जानतीहो कि यह
सूखासा मनुष्य क्या करसकैगा क्योंकर किसी से लड़ सकेगा
निशाकरी बोली कि तेरी बुद्धि बड़ी तीव्र है कि जो मेरे जी में
बातआई थी वह तू जानगया प्रहास ने कहा कि मैं माथेका
लिखा सब पढ़ लेताहूं जो कुछ किसी के जी में हो सब बतला
देताहूं निदान यहां यही चर्चा होरही थी कि महेन्द्रका प्रेरित
दूसरा दानव वजदन्त नामा वहां आपहुंचा और सबको बैठा

हुआ देखकर दूरहीसे डाटकर बोला कि भला राज्यापराधी मैं आपहुंचाहूं अबकहां बचकर जाओगे तब प्रहासने कहा कि लो निशाकरी आपने बड़ी आसुरीमायासीखीहै देखें इसदानव को कैसे मारती हो वहबोली कि हे प्रहास पहले तो मैं मूर्च्छित थी मैंने नहीं देखा कि तुमने धुंधकको कैसे मारा परन्तु अब देखूंगी कि तुम इसको क्यों कर मारते हो प्रहासने कहा कि मैं इसको कुत्तेकी भांति अभी मारे डालताहूं यहकहकर वहवहां सेउठकर उसीस्वरूपसे वज्रदन्तकेसन्मुखआया औरउसेप्रचार करकहा कि अरेदुष्टात्मा निर्लज्ज तू क्या बकताहै और पुरीष भक्षण करता है इधर मेरे सन्मुखआ कि आजतूही मेरीअहेर होगा यह सुनकर वज्रदन्तने कछमाया करनेको एक श्रीफल निकाला और कुछ आसुरी प्रयोग करनेलगा कि इतनेमें प्रहासभी एकरम्भाफल अपनी थैलीसे निकालकर कुछ बुदबुदाने लगा वज्रदन्तनेजाना कि यहभी कोई आसुरी मायाकावेत्ता है उसीसमय प्रहासने कहा कि अरेमूर्ख तू दूसरे के बलका आश्रय करके लड़ता है देख दूसरा म्लेच्छ तेरे पीछे और लड़नेको आता है वह मुख फेरकर देखनेलगा कि इतनेमें प्रहास कूदकर उसके निकट चलागया और जब उसने देखा कि दूसरा कोई नहीं आता है यह केवल धोखा देनाहै तब उसने फिर प्रहासकी ओर मुख फेरा और फेरतेही प्रहासने मूर्च्छाकर चूर्ण उसकेमुखपर मारा और उसके नासिकामेंजानेसे उसदानव को छींकआई और वह मूर्च्छित होकर जैसेही गिरा प्रहास ने खड्गसे उसकाशिर काटडाला उसके मरतेही प्रलयकालकासा कोलाहल होनेलगा और अंधकार छागया परन्तु निशाकरी ने कुछ ऐसा प्रयोगकिया कि वहसब तुरन्त दूरहोगया और तब उसने देखा कि प्रहास पृथक् खड़ाहुआ हाथ में माला लियेहुए पढ़रहाहै कि मामरक्षयरक्षय हेपरमेश्वर मुझे बचाइयो

और उसे इसप्रकार से देखकर निशाकरी उसके समीप चली आई और कहनेलगी कि धन्यहै बहुरूपा चार्य्यजीधन्यहै आप का क्याकहना कितनाही शीघ्र आपने इसको नरकगामी कियामैं आपकीदासीहूं आइये विराजिये निदान यहांयह वार्त्ताहोहीरही थीं कि सन्मुख से धूलउड़ती हुई दृष्टि पड़ी और नगाड़ोंके बजने का शब्द सुनाईदिया और आंखउठाकर दृष्टिकी तो देखा कि नगाड़ा बजाने वाला सुवर्ण और तारके सूत्रों से निर्मित वस्त्रों से अलंकृत हाथी और ऊंटों पर नगाड़ा बजातेहुए चले आते हैं उनके शब्द से वहपर्वत और वन थर्राताहुआ सा जानपड़ता है और उनके पीछे मायावी म्लेच्छों की सेना आरही है उसके म्लेच्छ मायासे भयानकस्वरूपबनायेहुये महोर्गोंपर बैठेहुए अनेक प्रकारके मायाकृत अस्त्र लियेहुए आरहे हैं और उनमहोर्गोंके मुखसे अग्निकी ज्वाला निकलरही है उनके आतेही उसबन में अग्नि और पाषाणकी वर्षा हुई उसके पीछे निशाकरी के पुत्र मारिचकी सवारी आई जो एक अग्निकीसी आभा और कांतिरखनेवाले हंसपर सवारथा उसके पीछे पीछे चालीस सहस्र सेना नाग और मयूर आदि अनेक प्रकार के अग्नि संभव वाहनों पर बैठेहुए आरहे थे और निशाकरी की माता चन्द्रानन एक विमान पर बैठीहुई जिस में महोर्ग लगे हुए लिये आते थे चलीआती थी निदान वहसेना बड़ी धूमधाम से आई और प्रहार और त्रास आदि करने का सब सरंजामभी आया जो मारीच अपने साथ लायाथा उस समय भानुविक्रम उसके वैभव और समृद्धसेना को देखकर कहनेलगा कि इससेनासे ऐसाजान पड़ताहै कि महाराज शत्रुंजय का कोई सेनापति अथवा सभासद आरहाहै॥

रोलाछंद॥ साजसंगीसैन सादर दुन्दुभी बजवाय। राजपुत्र महानआवतचल्यो ओजबढ़ाय॥ शस्त्रशिल्पी भिषजमंत्री गणिकके समुदाय। चले

सेना संगआवत कुशल आनँद छाय ॥ सैन शुभचतुरंगिनी गुरुअस्त्र युक्त अखर्व। अश्वसादी अरुपदादी पृथक आवत सर्व ॥

उससमय निशाकरीने राजपुत्रसेकहा कि आपकादास मारीच नामी जो मेरापुत्रहै आरहाहै आपउसके शिरपर हाथरक्खें और उसको आश्वासनकरें इतने में मारीच समीप आगया और भानुविक्रम और अपनी माको खड़ाहुआ देखकर हंससे उतर पड़ा और पास आकर प्रहास और राजपुत्रको दण्डवत्‌की राजपुत्रने उसको गलेसे लगालिया और प्रहासने उसका आश्वासन किया उससमय रानी निशाकरी ने आज्ञादी कि सेना इसीस्थानपर उतरे आज्ञा पातेही भृत्यगणोंने भाड़ी भंकार काटना प्रारम्भकिया और थोड़ीदेरमें उसवनकी पृथ्वीको भाड़ बुहारकर निष्कंटककरदिया और रणकेलिये गढ़बनाना प्रारम्भ हुआ परिखा खुदवायेगये प्राकार बनायागया उसपरसे प्रहार करनेके स्थान निर्माण कियेगये कहीं कहीं सुरंगगढ़के भीतरसे बाहिर जानेको खोदीगई और युद्ध करनेका सब सरंजाम उसमें यथायोग्य स्थानोंपर रक्खागया चारोंओर ध्वजा और पताका लगायेगये गढ़केबीचमें राज्यसभाका तम्बूखड़ाकियागया उसके बीचमें सिंहासन बिछायागया और चारोंओर सब सेनापति और मंत्री और सभासद और महाशयोंके लिये यथायोग्य उत्तम २ आसन बिछवा दियेगये उसके एकओरको रनिवासके लिये उत्तम तम्बू लगायेगये और उनमें सब पदार्थ सोने बैठने बिहार करने क्रीड़ाकरने और भक्षभोज्य आदि रखवादिये और दूसरी ओरको सब सेनापति और सभासद और महाशयोंके निवासकेलिये यथायोग्य सिविर रचेगये और तीसरी ओर समस्त सेनाके निवासके अर्थ डेरे लगायेगये और चौथी ओर रमणीकहाट लगवादीगई और उसमें सबप्रकारके भक्ष भोज्य पेय चोष्य और २पदार्थोंकी दुकाने लगवादीं निदान सबमनुष्य

अपने २ योग्य स्थानोंमें उतरे और बाजार लगगया और सब लोग इधरसे उधर लेतेदेते भ्रमण करनेलगे उससमय रानी निशाकरी अपनी सभामेंगई और भानुविक्रमसे कहा कि आइये और इस राज्यसिंहासनपर विराजिये यह सुनकर भानुविक्रम बोला कि मैं राज्यसिंहासनपर नहीं बैठसकताहूं क्योंकि मैंमहाराज शत्रुंजयका सेवकहूं यह सबराज्य राजाधिराजका है मैंतो केवल उनकी आज्ञाका पालन करनेवालाहूं इससे इस देशका राज्य राजपुत्री चन्द्रचूड़ा करेगी और साल साल कुछ द्रव्य और रत्न आदि पदार्थ राजाधिराजको करदिया करेगी इससे चन्द्रचूड़ाको राज्यसिंहासनपर बैठाकर राज्याभिषेक कराइये और उसकेलिये कोई शुभमुहूर्त्त विचारिये यह सुनकर रानी निशाकरी और प्रहासने जोबड़े ज्योतिर्विदथे शुभमुहूर्त्तनिकाला और उसमुहूर्त्तके आने पर सबने मिलकर बडीधूमधामसे राजपुत्री चन्द्रचूड़ाका राज्याभिषेक कराया जब सब क्रिया राज्याभिषेककी समाप्तहुई तब भानुविक्रम और रानी निशाकरी आदि सबने उठकर भेटें दीं और चन्द्रचूड़ाने चन्द्रिका और कुण्डल धारण किये उससमय सूत मागध और बन्दीजन तेज और बीरता और प्रतापका बखान करनेलगे चारोंओर जयशब्दका उच्चारण होनेलगा मांगल्य पदार्थ सब रक्खेगये और सभामें परमसुंदरी चन्द्रमुखी कोकिलबैनी गंधर्विणी आकर नृत्य और गान करनेलगीं उत्तम सुराके पात्रआये और भृत्यगण रत्नोंके पानपात्रोंमें सुरा भरभरकर सब शूरवीर और सभासदोंको देने लगे बड़ा उत्सव और आनन्दरहा शूरबीर उस उत्तम बारुणीको पान कर करके बीररससे छकित होकर भृत्य गणोंसे कहतेथे ॥

तोमरछंद। करिपूर्ण मम यहपात्र। जेहिहोय निर्भयगात्र ॥
धरिल्लेछगण समुदाय। अरुदानवोन्नत काय ॥

करि खड्गको संचार। हौंदेहुं महिपै डार॥

इसके उपरांत अधिकारियोंके नियुक्त करनेका प्रबन्ध होने लगा रानी निशाकरीको मंत्रीका अधिकार दियागया पद्मावती चन्द्रचूड़ाकी मुख्य सेवक नियतहुई भानुविक्रम को सेनापति का अभिषेक कियागया और प्रहास को सर्वाध्यक्ष करके यह अधिकार दियागया कि जा मंत्र प्रहासदे उसको रानी अवश्य स्वीकारकरै और जो स्वीकार न करै और प्रहास अप्रसन्न हों तो रानी को राज्यसे उतारदें निदान इसके पीछे सब अधिकारी अपने २ अधिकार का प्रबन्ध करने लगे रानी निशाकरी मंत्रीकी सभामें आकरबैठी और जितना कोष अपने साथलाई थी सब कोषाध्यक्षको सौंपा और पियादों को आज्ञादी कि चारों ओर जाकर बाद्य बजवाकर नगर और ग्रामों में राज्याभिषेक को घोसितकरादें और सबको विदित करदें कि सेनाके लिये सब प्रकार के मनुष्यों की चाहना है आसुरी मायाके जाननेवाले और न जाननेवाले और बहुरूप धारिणी विद्याके ज्ञाता और मल्लयुद्ध के प्रवीण बाणैत खड्गवाही गदा प्रहारी और उपल युद्धकोविद सबकी चाहना है जिसकिसी को सेनामें भरतीहोना हो वह आवे उसको मासिक यथायोग्य दियाजायगा और जिस विद्याका वह अभ्यासी होगा उसी कार्यपर नियुक्त कियाजायगा निदान मनुष्य चारोंओर से आनेलगे और अपनी २ विद्या बल और अस्त्रज्ञाताके अनुसार सेनामें अधिकार पानेलगे और प्रहासके साथ के जो चार और बहुरूपिये थे और पीछे रहगये थे उनमेंसे उपहास और उपदेशी और प्रचण्ड तीनों भ्रमणकरतेहुए उसओरको आनिकले और ढिंढोरेका शब्द सुनकर अपना भेष म्लेच्छों कासा बनाकर वहांगये और पूछनेपर उनको विदित हुआ यह निवास प्रहास और भानुविक्रम का है और उनकी सेना भरती होरही है निदान वे तीनों भी भेटलेकर रा-

नी निशाकरी के समीप गये जो मंत्री थी और और भेट देकर खड़ेरहे निशाकरीने पूछा कि तुम कौनहो उन्होंने कहा कि हम विचित्र नगरके निवासी हैं आसुरी माया में प्रवीणहैं और यहां नौकरी करने को आयेहैं मंत्रीने पूछा कि क्या मासिक तुमलोगे वह बोले एक २ सहस्र रुपिया तब निशाकरी ने कहा कि अच्छा प्रथम तुम हमको अपनी अभ्यासित आसुरी मायाकी विद्याका कुछ चमत्कार दिखाओ जिससे यह जानाजाय तुम कितने हो बहुरूपियों ने कहा बहुत श्रेष्ठ और उपहासने एक गोला निकाला और सबके दिखाने को उसपर कुछ पढ़कर निशाकरीके मुखपर मारा उसने बहुत कुछ उस मायाके तंत्रके नष्टहोनेके उपायकिये परन्तु किसी प्रयोगसे कुछ न हुआ और उसगोलेके धूमको घ्राणकरतेही मूर्च्छित होगई तब और और आसुरीमायाके वेत्ताओंने अनेकप्रकारके प्रयोग उसको चैतन्य करनेको किये परन्तु वहकिसी मायाकेतंत्रसे तो मूर्च्छितहुईनथी वहतो मूर्च्छा कर चूर्ण के प्रभावसे निश्चेष्टथी इससे किसी के प्रयोगने कुछकाम न दिया तब सबने कहाकि ये बड़ेभारीमायावीहैं इनका प्रयोग किसी के प्रयोगसे नष्टनहीं होसकता यह कहकर उन सबने बहुरूपियों से कहा कि आप की परीक्षा होचुकी अब आप अपने तंत्रको विसर्जन कीजिये यह सुन कर उन्होंने थोड़ासा जल लेकर दिखानेको उसे मंत्रित किया और निशाकरी के मुखमें डालदिया कि वह तुरन्त चैतन्य होगई तब उन तीनों ने कहा कि कहिये आप हमारी विद्याकी परीक्षा करचुकीं वह बोली हां परीक्षाहोचुकी आजसे तुमतीनों का वेतन एक एक सहस्रमुद्रा कियागया तब वहबोले कि हमारे नौकरीकरनेमें एकनिबन्ध और है कि प्रथमतो हमको एकएक मासिक अब देदीजिये दूसरे हमसभामें प्रहासके बराबर बैठेंगे यहसुनकर निशाकरीने एकएकमासका वेतनदेदिया और बोली

कि चलो मेरेसाथआओ मैं प्रहाससे तुमको वहांबैठनेकी आज्ञा दिलादूं निदान वे उसकेसाथ राजसभामेंगये औरदेखाकि एक सिंहासन मणियों से जटित बिछाहुआहै उसके चारों कोनोंपर चारहंस रत्नोंके इसप्रकारसे बनेहैं कि पीछे से उनकेपर मुड़कर आगेको इसप्रकारसे झुकि आयेहैं कि छत्ररूप होगयेहैं और उस सिंहासनपर चन्द्रचूड़ा रत्नजटित चन्द्रिका और कुण्डल धारणकिये हुए बैठी है नौलखाहार गलेमें पड़ाहै जड़ाऊभूषण और बसन पहिरेहुए है पद्मावती पीछे खड़ीहुई मोछेल कर रही है सहस्रों मनुष्य संमुख हाथजोड़े खड़ेहैं भानुविक्रम उससिंहा-सनकेसमीप एक बड़े उत्तम आसनपर विराजमानहै और वहीं प्रहास भी एक रत्नजटित आसनपर बैठाहै निदान इनतीनोंने जाकर वह सहस्र सहस्र रुपिया प्रहासकी भेटकिया उनकोदे-खतेही प्रहास जानगया कि ये मेरेसाथके बहुरूपियेहैं और उठ कर हरएक को हृदय से लगाया यहदेखकर निशाकरी चकित होगई और उसने प्रहास से पूछा कि आप इनको कैसे जानते हैं प्रहास ने कहा कि ये तीनों महाराज शत्रुंजय की सेनाके ब-हुरूपिये हैं इसका नाम उपहास है यह उपदेशी है और उस का नाम प्रचण्डहै इनमें से यह उपहास मेरे सब शिष्योंमें बड़ा प्रवीण और पहुंचाहुआहै और इन्द्रसे बरदान पानेके कारणसे कभी पकड़ा नहीं जा सकता है और जबकभी मैं पकड़जाताहूं तो यही मुझे छुटाताहै और इन तीनोंके सिवाय एकशिष्यमेरा और आया है नाम उसका चपला है न जाने कहां है परन्तु मुझको विश्वासहै कि बहुत थोड़ेकालमें आयाजाताहै यहसुन-कर निशाकरी बहुत प्रसन्नहुई और उन सबसे मिली और सभाके समीप तीन सिविर उत्तम खड़े कराकर उनको शय्या आसन बिछौना और भक्ष भोज्यआदि सबआरामके पदार्थों से युक्त कराके उनतीनोंसेकहा कि आपके निवासके लिये तम्बू

आदि सब सरंजाम होगया अब आप चलकर अपनी २ सि-
विरमें विश्राम कीजिये यह सुनकर उपहास बोला कि मैंतो
कभी सिविरमें नहीं रहताहूं मेरा सिविरतो पर्वतकी गुफा अथ-
वा पृथ्वीकागर्तहै वहीमें रहकर ईश्वर स्मरण वनमेंकरताहूं यह
कहकर उसने अपना खड्ग पृथ्वी पर टेक दिया और उसपर
बल लगाकर उछला और प्राकारको फांदकर वनमें चलागया
तब प्रहास ने बाकी दोनों बहुरूपियों को आज्ञादी कि तुम
अब जाकर सिविरों में विश्राम करो और सेना की रक्षाकरो
और इसप्रकार से रहो कि यदि तुमको कोई खोजै भी तो पा
नसके उन्हों ने कहा बहुत श्रेष्ठ और फिर सिविर में जाकर
दोनोंने कमरखोली हाथ और मुखधोये और यथेष्ट भोजन
करके विश्रामकिया और फिर सभामें आकर नृत्य देखनेलगे
अब वृत्तान्त चपलाकासुनिये कि वह मायाकृत वन और उपव-
नोंको देखताहुआ और अपने साथियों का खोजलेताहुआचला
आताथा कि एक ऊंचे स्थानसे दृष्टि करके जो देखा तो उसको
एकबड़ी सेना पड़ीहुई दिखाईदी वह उसी ओर को चलदिया
और जबसमीप आया तब उसने एक मनुष्यसे पूछा कि यह
सेना किसकी है उसनेकहा कि यह भानुविक्रम और प्रहासकी
सेना पड़ीहुईहै और फिर सबवृत्तान्त कहसुनाया उसको सुनकर
उसने विचार किया कि अब हमारे आचार्य्य और साथीतो आ-
नन्दपूर्वक एक स्थानपर स्थितहैं हम चलकर कोई कार्य्य करें
यहशोचकर उसने वनका मार्ग लिया और विचारता रहा कि
क्याकार्य्यकरूं इतनेमें उसवनमें एक कूपकेपास पहुंचा जो राज-
मार्ग पर बनाहुआथा उसको देखकर चपलाने विचारा कि यह
मार्ग बड़ा चलताहुआहै अवश्य इस कूपपर आने जानेवाले
जल पीने आवेंगे यह विचारकर उसने अपना स्वरूप एक
पथिक सेवककासा बनाया और डोललोटा रस्सी और कुछ

भोज्य लेकर कूपपर जाबैठा थोड़ी देर में पचास मनुष्य जो बहुतसा धन लेकर महेन्द्र को कर देने के लिये जाते थे उस मार्गसे निकले और उसी कूपकेसमीप ठहरगये उन्होंने पथिक सेवकको देखकर कहा कि भाई थोड़ासा जल तो खींचकर पिला सेवकने वैसाही किया और कहा कि मेरेपास कुछ भोज्य भी है आप लोगों को इच्छा हो तो ले लीजिये मैं सस्ते दाम लेकर दे दूंगा पथिकोंने पूछा किसभाव से दोगे वह बोला कि एक भारके चार ताम्र खण्ड लूंगा वह सब लालचमें आगये और सबने थोड़ा २ सा भोज्य मोल लिया और वहां बैठकर खानेलगे खातेही सब मूर्च्छितहोगये और उस अवस्थामें चपलाने सबके शिर काट डाले और उस सब द्रव्यको लेकर एक वृक्ष के नीचे गाड़ दिया और वहांसे सेनाके निवास स्थानकी ओर चलदिया और सेनामें म्लेच्छके भेषसे पहुंचा और सेना के मुख्यरक्षकों से कहा कि हमारे आनेका समाचार बहुरूपाचार्य जी से कहदो कि एक दासानुदास आपके दर्शनोंका इच्छामान उपस्थित है उन्होंने जाकर कहा उसको सुनकर प्रहास को बड़ा भ्रमहुआ कि यह कौन आया है और फिर आज्ञादी कि अच्छा उसको यहांआनेदो यहसुनकर वे रक्षक चपलाको सभामें लिवालाये और उसने उससभा और सरंजाम को देख कर और प्रसन्नहोकर चन्द्रचूड़ा और भानुविक्रम और प्रहास और रानी निशाकरी को दंडवत्‌की और एक कागजकापत्र हाथपररखकर प्रहासकोभेटदी प्रहासने उसको लेलिया और पढ़ातो उसमें लिखाथा कि मैं अमुक वनमें आपकी भेटके लिये एक वृक्षके नीचे लक्षरुपिया स्थापितकर आयाहूं आपमेरे साथ चलकर लेलीजिये प्रहास ने पतापूछा और जब अच्छी प्रकारसे देखने से जानलिया कि चपलाहै तब तुरंत खड़ा होकर उसको अपने हृदय से लगालिया और निशा-

करी से कहा कि हेआर्या यहीमेरा चपलानामी शिष्यहै जिस-
काहाल मैं तुमसे कहताथा निदान उसके लियेभी उत्तम सिविर
शय्याआदि सबपदार्थों से युक्त रचीगई और चपला ने उस
में जाकर कमरखोली स्नानकिये यथेष्टभोजन खाये और शय्या
पर विश्रामकिया और थकावटको दूर किया और प्रहास उस
गढ़से निकलकर चुपचाप उसी पते पर चलागया और कूप के
समीपजाकर उस वृक्षके नीचे से वह द्रव्यखोदकर अपनी
थैली में रखलिया और चित्तमें यह कहताहुआ लौटा कि मेरे
दुःखके ऊपर इसबेचारे शिष्यने ध्यान कियाहै नहीं तो और तो
सबनष्ट निकले और फिर राजसभा में आकर आनन्दपूर्वक
बैठगया परन्तु अबवेसबपक्षी जो महेन्द्रने भेजेथे और जो वृक्षों
परबैठेहुए सबवृत्तान्त देख रहेथे उड़कर महेन्द्रके पासगये और
उन्होंने रानी निशाकरी के सेनासहित आने धुंधक और ब-
ज्रदंत दानवों के मारजाने गढ़के बनाने सेनाके भरती करने
और चन्द्रचूड़ाके राज्याभिषेक को घोषित करानेका सब वृत्तांत
यथावत् कहसुनाया यह सुनकर महेन्द्र ने बड़ा क्रोधकिया और
उसीसमय अपनी रानी विचित्रमायाको एक पत्रलिखा कि तुम
इसके देखतेही अंधेरनगरी से यहां चली आओ मुझको एक
बड़े आवश्यक कार्य्य में तुमसे सलाह लेनी है और वह पत्र
एक पुतले के हाथों रानी के पासभेजा रानी उसपत्रको देख-
तेही मायाकृत विमानपर बैठकर अपनी सहेली और दासियों
सहित महेन्द्रके पासचलीआई उससमय महेन्द्रने उससे कहा
कि तुमने इसनिशाकरीके अधर्मकोदेखा कि मायाकृतचमत्कारों
के नष्टकर्तासे जामिली है और मेरे ऊपर सेना इकट्ठी कररहीहै
अरे धर्मच्युत यदि मैं रक्तवाहिनी नदी की एक गंधर्विणी को
आज्ञा दे दूं और वह दुंदुभी बजावै तो सब देशके मायावी
मूर्च्छित होजायँ मुझे हँसी आती है कि निशाकरीजीसी रानी

और मेरा सामना यहसुनकर विचित्रमाया बोली कि महाराज उसकी क्या सामर्थ्य है जो वह आपका सामनाकरे मैं उसको बुलवाकर समझातीहूं महेन्द्रनेकहा कि अच्छा तुम उसको बुला कर समझाओ तुमसे उससे सम्बन्धभी है इसी कारणसे मैंने अवतक कुछ नहीं किया और दूसरे यह भी है कि मुझको उसकेनौकर और इसघरके पालकहोनेका भी ध्यानहै और देखो इस मायाकृत देश के रचनेवाले यह लिखगयेहैं कि एकसमय ऐसा आवैगा जब सबप्रजा और अधिकारी मायाकृत देशके राजासे विरोध मानकर उसका सामना और उससे युद्धकरने को सन्नद्ध होंगे उस समय राजाको उचित है कि उनको जैसे बने प्रसन्नकरे और उनसे सामना न करे और न युद्धकरै नि-दान यही कारण है कि मैं प्रहार आदि कर्मोंसे निवृत्तहूं नहीं तौ अद्भुत परमेश्वर की शपथ करके कहताहूं कि पलक मारने में मैं इनदुष्ट शत्रुगणों का खोज इस संसारसे मिटादेता यह सुनकर विचित्रमाया बोली कि इसमें क्या सन्देह है परन्तु बुद्धिमानी तौ यही है जैसे श्लोक—

मतिरेव बलाद् गरीयसी यदभावे करिणा मियंदशा ।
इति घोषयतीवडिंडिमकरिणोहस्तपकाहतःक्कणन ॥

निदान विचित्रमाया ने एकपत्र निशाकरी को लिखा कि हे रानी तुमको उचितहै कि जिसका लवण तुमने उमर भरखा-या है और जिसने तुमको हर प्रकारसे पाला है उसके साथ रहकर युद्धकरो इससे अबतुमको स्वामि सेवक धर्मकी रीति से जताया जाता है कि इस आज्ञापत्र के देखतेही दासों की भांति कंठमें कुठार और दांतोंमें तिनका लगाकर मेरे पासचलीआओ जिससे मैं महाराजसे कहकर तुम्हारा अप-राध क्षमा करादूं नहीं तौ जो तुम आज्ञाके अन्यथा करोगी तौ महाराज तौ बड़ेसामर्थ्यवान्‌हैं मैं उनकी एकदासी आकरतुमको

तृणवत् नाशकरदूंगी इससे जो अपनाभला चाहतीहोतौ इस थोड़े लिखेको बहुतजानकर आज्ञाका प्रतिपाल तुरन्त करना ।

दो० जो तुम चाहत साम्हहो हम न चहत रण रंग ।
रणकरिवो जो चहतिहो हमनकरव प्रणभंग ॥

निदान विचित्रमायाने उसपत्रको एकपक्षीको देकर आज्ञा दी कि इसको लेजाकर रानी निशाकरीकोदे और उसका उत्तर लेआ यहसुनकर वहपक्षीउड़ा और निशाकरीकी सभामें उतर कर उसकी गोदीमें जाबैठा निशाकरीने पूछा कि तुझको किसने भेजाहै वहबोला कि महारानी विचित्रमायाने यह पत्रदिया है और उसका उत्तरमांगाहै निशाकरीने उसपत्रको लेलिया और पढ़तेही उसकेमुखकारंग जातारहा और वह थरथरकांपनेलगे यहदेखकर प्रहासने तुरंत उसपत्रको निशाकरी के हाथसेछीन लिया और उसेपढ़कर मारेक्रोधके फारडाला और उसकाउत्तर इसप्रकारसे लिखा कि पहिलेतौ परमात्माका गुणानुवाद गाया ॥

क० पूरण पुराण परमानँद परेशतूहै पारावारहूते परे प्रकृतिप्रधानमें । घटघट तेरोवास सदातू स्वयंप्रकास तेरीचिदाभाससो न बनत बखानमें ॥ विधि औ निषेध भावाभावतेरहित तूहै शुद्धबुद्ध तूहैध्याताध्येय और ध्यान में । तूहै निस्संग तोमेंगुणके प्रसंगऐसे जैसे रङ्गदेखियत फटिकपखानमें ॥

उपरांतलिखा कि सुनो विचित्रमाया और महेन्द्र मैं नास्तिक और म्लेच्छों का नाश और उनका विध्वंसकरताहूं मैंनेही तुम्हारे परमेश्वर अद्भुतकी पोती चन्द्रकलाका शिरकाटा था मैंनेही चक्रासुरको माराथा जो जलमें रहताथा और जिसको आसुरीमायाका आचार्य सबलोग कहते थे मैंहीहूं जिसने तुम्हारेपरमेश्वर उज्झलकको यमलोकमें पहुंचाया और पूर्वसेपश्चिम और दक्षिणसे उत्तरतक जितने देशहैं उनके रहनेवाले बड़े२ मायावी दानव और म्लेच्छगणोंको मैंने नरकगामी किया है कहांतक नामगिलाऊं और बड़े २ चक्रवर्त्तीम्लेच्छ राजाओं

को जिन्होंने मायाकी निपुणतासे संसार के राजाओंको अपने वशमें करलियाथा सिंहासन से उतारकर मृत्युके आसन पर सुलादियाहै ॥

जयकरीछंद ॥

सोईबहुरूपाचार्य प्रहास। जासो म्लेच्छ धरत उरत्रास ॥
रचि प्रपंच जो धरिबहुरूप। नाशे प्रबल म्लेच्छगणभूप ॥
जाकरनाम विदित संसार। शंकितरहत भूमिभरतार ॥
जोरहि सर्बकाल हुसियार। अवसरपाय करतनिजवार ॥
निर्भय जाके छलमय पत्र। गच्छत वायुसदृश सर्वत्र ॥
जाके निग्रहकोउत्साह। करत सोअवशि नशतनरनाह ॥
जापर मायाकृत उपतंत्र। निष्फलहोत म्लेच्छकृत मंत्र ॥
भयकर नरनारी निश्शेश। आयोहों प्रहास यहि देश ॥

इससे तुमदोनोंको उचितहै कि अपनेसाथ राजपुत्र भीमविक्रम और राजपुत्री मोहनीचित्रकोलेकर दासोंकीभांति महारानी चन्द्रचूड़ाके पास चलेआओ जो इस समय इसदेशकी अधिपतिहैं तुम्हारा अपराध श्रीराजाधिराजसे क्षमा करादिया जायगा नहीं तो जो मैंने तुमको नाककाटकर और मुखपर कालिखलगापर गर्दभ पर सवार न कराया और नगरकी फेरी न दिलवाई तो मैं अपना नाम प्रहास न रक्खूंगा यह लिखकर प्रहासने वह पत्र उसपक्षीको दिया और कहा कि उस वरणसंकरीकुलटा विचित्रमायासे कहदीजियो कि मैंबहुतशीघ्र आकर तेरा शिर मूंड़ताहूं तू किस भरोसे पर भूली है जो कुछ तुझसे होसके कर अपनी चलते कमताई मतकरै यहां भी परमेश्वर मालिक है यह कहकर उसपक्षीको बिदाकिया और वह उड़ता हुआ रानी विचित्रमायाके पासआया और वहपत्र उसे देकर कहा कि आपके पत्रको पढ़कर निशाकरी तो कांपनेलगी थी परन्तु एकदूबलेसे मनुष्यने उसपत्रको लेकरफाड़डाला उसका

जवाब लिखकर मुझकोदिया और आपको बहुत कुछबुराभला कहा विचित्रमायाने उसपत्रको पढ़ा और महेन्द्रके पासलेजाकरबोली कि महाराज आपका कहना सत्य है येलोग जबतक दण्ड न पावेंगे नमानेंगे देखिये यह तो मेरेपत्रका उत्तरआया है और उस धिक्कारके मारेने मुझको आपको बहुत कुछअनुचित कहा है यह सुनकर महेन्द्रने उसपत्र को पढ़ा और पढ़कर क्रोधके मारे लालहोगया और होठोंको चबाकर बोला कि जब पिपीलिकाके पर निकलते हैं तभी वह मरती है अबइस दुर्भगा निशाकरी की कुदशा आईहै निदान वह तो सेना के साजनेके उद्योग में हुआ और इधरउस पक्षीके चलेजाने पर निशाकरीने प्रहाससे कहा कि आपने यह बड़ादुष्कर कर्म किया जो विचित्रमाया को कुत्सित बातें कहीं अब कुछ कालमें कोई आपत्ति आना चाहती है उसमें हम तुम सब मारे जायँगे प्रहास बोला कि हे रानी तुम्हारा जी बड़ा कच्चा है अपने आपतो केरलसे विचारचुकी हो कि भानुविक्रमकी विजयहोगी और फिरभी घबराई जाती हो मैंने जब देखा कि तुमपत्रको देखकर कँपनेलगी तब मैंने यह सोचकर गालियां दीं कि जो हमारी सेना के सेनापति यहां हैं वे सब तुम्हारी दशाको देखकर अपनी हिम्मत हारदेंगे क्योंकि जब स्वामी की यह दशाहै तो सेवक की क्यानहोगी इससे मैंने ऐसे ऐसे वचन कहे जिससे सेना के लोग यह जानें कि हमलोग भी कुछ तो पराक्रम रखतेहैं जो ऐसे बड़े सामर्थ्यवान् महाराज को ऐसे शब्दकहतेहैं इससे तुमको उचितहै कि चित्तमें धीर्य्यरक्खो और ऐसी छोटीछोटी बातोंपर घबराया न करो देखोतो वह सर्वसामर्थ्यवान् परमेश्वर क्याकरताहै वही हम असामर्थ्योंका रक्षकहै यह सुनकर निशाकरीने प्रहासके कहनेको स्वीकार किया अब ये सबतो प्रकार २ की आशा और अनाशा के

खंडन मंडनमें रहे परन्तु अब अगले अध्यायकी कथा सुनिये॥
इतिश्रीआगरापुरनिवासिचौरासियागौड़वंशावतंसश्रीपण्डितमोहनलाला-
लात्मजपण्डितकुंजविहारीलालविरचितेविचित्रचरित्रे
प्रथमखंडेचतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवा अध्याय॥

महेन्द्रका साठसहस्र सेनालेकर तीन सेनापतियोंकी रानी निशाकरी
और प्रहासपर चढ़ाई कराना बहुरूपियोंका अपनी विद्याका बल
साधन करना दोनों सेनाओंसे युद्धहोना औरवड़े भयंकर
युद्धके होनेपर महेन्द्रकी सेनाका पराजयहोना और
वहुतसे मायावी म्लेच्छोंका माराजाना॥

जयकरीछंद। दिव्यमूल फल अमृतसमान। उद्भव देवलोक उद्यान॥
तिनिसोंनिर्मितआसवअच्छ। अमलअमीवतजोअतिस्वच्छ॥
जेहिपी अमर वीररसपाय। दैत्यदुर्मद नवधतरिसाय॥
सोइआसव देवहु वागीश। पान करतजेहि नितवारीश॥
जासोंप्रवल वीररस पाय। कादरता सर्वस मिटिजाय॥
करोंवखान युद्धके कर्म। संगर जो कंपितकर मर्म॥
मायाकोविद शूर सधीर। अतिरण कर्कस भट गंभीर॥
जेहिविधिमारि म्लेच्छसमुदाय। लीनीजयअतिप्रलयपसाय॥

सौरभ महाराजने इस अध्यायमें इस इतिहासको इसप्रका-
र से प्रस्ताव कियाहै कि जब महेन्द्र और विचित्रमाया को
यह विदित होगया कि निशाकरी अब न आवेगी और युद्धकरे-
गी तब सिवाय प्रहारकर दंडदेनेके औरकोई उपाय उसउपाधि
की शांतीका नसूझा और विचित्रमाया युद्धकरने को सन्नद्धहुई
परंतु उस को महेन्द्र ने निषेध किया और कहा तुम्ह राजपुत्री
और राजाधिराज की भार्या को एक निकृष्टदासी के साथ युद्ध
करने को जाना उचित नहीं है क्या अब कोई और भृत्यहमारे
नहीं है यह कहकर उसने करतलका शब्द किया कि अकस्मा-
त् चारों ओरसे बादल उमड़ आया विजलीचमकने लगी और
अग्नि और पाषाणों की बर्षाहुई थोड़ीदेरमें वह बादल फटा

और उसमें से तीन मायाकृत विमान निकलकर नीचेउतरे उन
पर बड़े भयानक और कुत्सितरूप म्लेच्छबैठेथेवेनीचेआकर वि-
मानोंपरसेउतरेऔर महेन्द्रको साष्टाङ्ग दण्डवत्करके विनयपूर्वक
बोले कि श्री महाराज ने हम दासोंको क्यों स्मरण कियाहै यह
सुनकर महेन्द्र ने रानी निशाकरी के झगड़े और भानुविक्रम
के आनेका सब वृत्तांत कहा और आज्ञादी कि तुमतीनों अपने
साथ साठसहस्र सेनालेकर जाओ और सब शत्रुओंको बांध
कर मेरेपास लेआओ यह आज्ञापाकर वे तीनों दानव जिनके
नाम आतापी १ संतापी २ और दुरतापी ३ थे वहांसे अपने
स्थानपर चलेआये और उस साठसहस्र सेना के सेनापतियों
को बुलाकर महेन्द्रकी आज्ञासुनादी सेनाके निर्याणके वाद्यव-
ज येगये सब सरंजाम युद्ध और आरामका मायाकृत महोर्गों
पर लादागया और सब सेनाके म्लेच्छ और दानव मायाकृत
नानावाहनों पर सवारहोकर अपने२ अभ्यासित मायाके चम-
त्कार एक दूसरेको दिखातेहुए चले और रक्तवाहिनी नदीको
उत्तीर्णकरके प्रत्यक्षखंडमें उसस्थानके समीप पहुंचे जहांरानी
निशाकरीकी सेना पड़ीहुईथी यहां चन्द्रचूड़ा और भानुविक्रम
और निशाकरी तीनों बैठे बातेंकररहेथे कि अकस्मात् वायुशी-
तल चलनेलगी और काले पीले बादल उमड़े कि उनमें से
भयंकरशब्द सुनाईपड़ते थे उससमय निशाकरीने कहा कि हे
प्रहास लो अब सेना आनपहुंची यहसुनतेही सब बहुरूपिये
उछलते कूदतेहुए बनमेंनिकलगये और अब म्लेच्छोंकी सवा-
रियां दृष्टिपड़नेलगीं उससमय रानी निशाकरी कुछ माया का
प्रयोगकरनेलगी और २ जो मायाविद् सेनामें मनुष्य थे सब
कुछमंत्र पढ़नेलगे प्रयोजन यहथा कि वहसेना अग्नि और
पाषाणोंकी वर्षा करती आतीथी ऐसा नहो कि हमारी सेनामें
वर्षा हो और कष्ट पहुंचे निदान महेन्द्र के सेनापति सेना

सहित बड़ी धूम धामसेउतरे और निशाकरीकी सेनाके सन्मुख बीचमें रणभूमि छोड़करठहरे तम्बू सबलगगये सभाके डेरेखड़े हुए सिविर रची गई हाट लगाईगई और सबआवश्यक सरं-जाम ठीककराके आतापी आदि तीनों दानव अपने २ सिविर में आकर बैठगये और नृत्य होनेलगा इधर आतापीने और उधर निशाकरीने दोनोंने मायासे पक्षीबनाकर शत्रुके समाचार लानेको भेजे उससमय एक प्रलय कासा कोलाहल चारोंओर था आतापीने आज्ञा दी युद्धके वाद्य बजायेजावें सुनतेहीभृत्य गणोंने भेरी शंख और वाद्य ले लिये और बड़े शब्दसे उन को बजाना आरम्भकिया कि उनका महान्शब्द सब पृथ्वी और आकाशमें छागया उससमय वे पक्षी शत्रुके दलमें से समाचार लेकर निशाकरी के समीप आये और महारानी चन्द्रचूड़ा को दण्डवत् करके जय शब्दका उच्चारण किया और कहा ॥

दो० । धन प्रताप ऐश्वर्य राज सुयश सम्पत्ति सब ।
रहैं अचल हेवर्य सुखसमाज सेनासहित ॥

और विनयकी कि शत्रुकी सेनामें युद्धके वाद्य बजरहे हैं सबकोई युद्धके लिये सन्नद्ध होरहे हैं यह कहकर वे पक्षीतोंउड़-गये और महारानी चन्द्रचूड़ाने राजपुत्र भानुविक्रमकीओर देखा भानुविक्रमने रानीनिशाकरीको आज्ञादी कि परमेश्वर सर्वशक्ति-मानकेभरोसेपरहमारीसेनामें भी वाद्यबजायेजावें यहसुनकरभृत्य गणदौड़ेऔर डंकेपर चोटलगाई उससमय पद्मावती और रानी निशाकरी ने मायाकृत बांसुरी लेकर बजाना प्रारम्भ किया कि उसकाशब्द अन्तरिक्ष तकगया और उससे पृथ्वी कंपितहुईऔर सबकोई जानगया कि कलयुद्ध होगा और घमसानमचैगा ॥

चौ० । सो सुनि शूरवीर अति हर्षे । कायर सकुचि मोद तजि कर्षे ।
धीरवीर दुर्मद सब याधा । युद्धोत्सुक भे करि करि क्रोधा ॥

निदान दो दिन इसीधूमधाममें व्यतीतहुए सायंकाल होने पर रक्षक दोनों सेनाओंमें निश्चलहुए और शूरवीर अपने २ प्रहार करने के अस्त्र शस्त्रों को ठीक करतेरहे ॥

रो०छं०। बजे अनगिने वाद्यजे उत्साह युतसब वीर।
कढ़ो सबके बदनसों इतजैतिशब्दगँभीर॥

और जो मायावी दानव और म्लेच्छ थे वे अपने २ माया के मंत्र और तंत्रों को बलि आदि कर्म करके उद्धार करतेरहे आतापी दानवने कई पुतले आटेके बनाये और उनको सींक के धनुष और बाण देकर कुछ बलिकिया और अग्निमें धूपदे-कर अपना तंत्र ठीक किया इधर निशाकरीनेअग्नि प्रज्वलित की उसमें कुछ हवन किया और एक मोमकी पुतली बनाकर उसमें डालदी और कुछ पढंत पढ़कर कहा कि जा कलसमय पर आइयो और फिर जाकर अपनी सिविरमें सोरही निदान ये सब मायाविद् अपनी २ मायाके तंत्र मंत्रोंको ठीककरतेरहे और वे बहुरूपिये जो सेनाका आगम सुनकर बनको चलेगये थे उनमेंसे चपला और उपदेशी दोजने शत्रुकी सेनामें कार्यसाधन करनेको आये चपलानेतो अपनास्वरूप एकवृद्धाशीकासा बना-या भौं पलक और शिरके सबबालश्वेतश्वेतवस्त्र ओढ़ेहुये शिर हिलताहुआ बगलमें टिपारी दबाएहुए हाथसे लकड़ी टेकता हुआ सेनामें घुसगया और उस ओरकोगया जहां दुरतापीका तम्बूथा और उपदेशीने कमरसे वस्त्र लपेटकर शिरपर पगड़ी बांधकर और कंधेपर दुशाला आदि वस्त्र धरी कियेहुए डाले अपनास्वरूप भृत्योंकासा बनाकर सेनामें चलागया और इधर से उधर घूमनेलगा दैवयोग से दुरतापीके तंबूमें से एक भृत्य निकलकर किसीकार्यसे बजारमें आया उपदेशी उस के समीप चलागया और नमस्कारकीउसने पूछा कहो कुशलआनन्द है वहबोला हां सबअच्छा है परंतु मुझको आपसे कुछ कहना है

यदिआप उसको न सुनेंगेतो आपकेलिये अच्छा न होगा यहसुन कर उसभृत्यने समझा कि यह किसीबड़े महानुभावका सेवक है इसने कुछबात मेरी सुनीहोगी अच्छाहै सुनलीजिये क्याक-हताहै यह विचारकर उसनेकहा कहोभाई क्याबातहै उपदेशी बोला कि एकान्तमें चलो तबकहूं और यहकहकर उसकाहाथ पकड़ेहुए एककोनेमें लेगया और वहांजाकर कहा कि वहपीछे कौनआताहै जैसेही उसभृत्यने पीछेफिरकर देखा तैसेही उपदे-शीने पाश गलेमें डालकर उसकागला ऐसा कसदिया कि वह बोल न सका और फिर उसको मूर्च्छाकर चूर्णसुंघाकर अचेत करदिया और उसकासा अपनास्वरूप बनाकर और उस के वस्त्र उतारकर औरपहिरकर दुरतापी के तंबूमें जहां दुरतापी के सभासद बैठेथे गया और वहां इसप्रयोजन से खड़ारहा कि जिसकामके करनेको मुझसे कोईकहैगा मैं समझजाऊंगा कि जिसमनुष्यको मैंने अचेतकियाहै वह उसीकामपर नियत था निदान वह खड़ाही था कि एकसभासदने कहा कि भाई तुम मद्यपानकरनेका सबसरंजाम ठीककररक्खो ऐसा न हो कि राजा मांगबैठें और तय्यार न मिले यहसुनतेही उपदेशीजानगया तूने मद्यपिलानेवाले भृत्यका स्वरूप धारणकिया है और जल्दी २ मद्यपिलानेका सरंजाम करनेलगा और अरुण वारुणीकेपात्र सजाकर रखदिये परंतु चपला जो वृद्धस्त्रीका स्वरूपधारणकरके गयाथा वह दुरतापीके तंबूके सामने चलागया और वहां बैठ कर रोने और पुकारकरनेलगा उसकीकरुणाको सुनकरदुरतापी तंबूकेबाहर निकलआया और उसवृद्धासे पूछा कि तू कौन है वहबोली कि अरेबेटा मैं यहांसे थोडीदूरपर एकग्रामहै उस में रहतीहूं जबसे निशाकरीकी सेना आई है तबसे मेरा सबघर लुटगया सो मैं अपना दुखलेकर तेरेपास आईहूं क्याकहूं दैव की सताईहूं यहसुनकर दुरतापीबोला कि अच्छा तू घबडाकैमत

चल मेरेडेरेमें बैठ कल मैं इनसब बर्णसंकरों का बधकरूंगा और जितना तेराधन गयाहै उससे द्विगुणदिलादूंगा यहसुन कर वहवृद्धास्त्री दुरतापी को आशीर्बाद देतीहुई उसके साथ साथ उसके तंबूमें चलीगई वहां दुरतापी ने उसके पास एक पिटारी देखकर पूछा कि बुढ़िया इसमें क्या है वह बोली कि बेटा तुमसे तो कुछ दुराउ नहीं है परंतु इन और सबको हटादो तो आप खोलके देखलो दुरतापी ने तब सब भृत्यों से कहा कि बाहर चले जाओ और जब वे बाहर चलेगये तब उस वृद्धाने वह पिटारी दुरतापी के हाथमें देदी और कहा कि लोबेटा अब इसे खोलकर देखलो तुमको आपही हाल विदितहोजायगा निदान दुरतापी ने वह पिटारी लेकर खोली खोलतेही उस में से मूर्च्छाकर चूर्ण उड़कर उसकी नासिका में चलागया उस से उसको छींकआई और वह अचेत होकर गिरपड़ा गिरतेहीचपला खड्ग निकालकर उसकी छातीपर बैठगया और जैसेही चाहा कि उसका शिरकाटूं तैसेही एक पुतली तंबूके एक कोनेमें से दौड़ी और चपलासे लिपटगई दुरतापी ने इस पुतली को मायासे बनाकर इस प्रयोजनसे खड़ाकरदियाथा कि यदिकोई आपत्ति मेरे ऊपर आवै तो उससे वहमेरी रक्षाकरै निदान उस पुतली ने चपला को पकड़ कर अलग किया और दुरतापी को पानी छिड़ककर सचेत किया और कहा कि यह बुढ़िया नहींहै किंतु यह बहुरूपिया है तुमको मारे डालताथा यहसुनकर दुरतापी ने कहा कि अरे दुष्ट तैंने तो मुझको मारही डालाथा अच्छा अब कल तेरे स्वामी कोभी पकड़ लूं तब उसीके साथ तेराभी बधकरूंगा यह कहकर उसने चपला को एक खम्भसे बँधवादिया और एक भृत्यको बुलाकरकहा कि मद्य पिलानेवाले से कहो कि शीघ्र मद्यपीने की सामग्री लावै मैं एक पात्रपीकर शीघ्र सोजाऊं क्योंकि कल युद्धकरना है उस भृत्यने पुकार

कर कहा कि पानपात्र और वारुणीका घट लेकर शीघ्रचलो यह सुनकर उपदेशी तुरन्त घट और पानपात्र लेकर गया और मूर्च्छा कर चूर्ण मिलीहुई वारुणीमें से पात्रको भरकर दुरतापी को निवेदन किया दुरतापी उसे पीतेही अचेत होगया और उपदेशी ने भी उसको चपला की भांति खड्ग से मारनाचाहा परन्तु वही पुतली फिर आकर उससे लिपटगई और उस को पकड़ लिया और जल छिड़ककर दुरतापी को सचेत किया और कहा कि यह भी बहुरूपी है तुम को मारना चाहता था दुरतापी ने उसको भी बांधदिया और सो रहा और रात्रि के व्यतीत होनेपर प्रातःकालकी बेलामें प्राची दिशासे मार्त्तण्ड मंडलने आकाशमें अपना प्रकाश दिखाया॥

छं०। दिनराति ऋतुअरुवर्ष कारण भानुतव विकसत भयो।
जाके भ्रमणसों अंतपावत सकलजग सुखदुखमयो॥
खगमृग मनुजजागि जीवजंतु समस्त आशा वहभये।
अतिशयशुभ्र प्रकाश तबसब कमलसर फूलतभये॥

निदान प्रातःकाल होतेही दुरतापी अपने मायावी म्लेच्छ और दानवोंकी सेनालेकर चला और आतापी और संतापीभी अपनी अपनी सेना सहित आकर तीनों बड़ी धूमधामसे रण-भूमिमेंआये और उधर रानी निशाकरी और पद्मावतीभी तीस अथवा चालीस सहस्र सेनाको लेकर चली और जितने नये मनुष्य भरतीहुएथे वेभी सब साथ लेलिये राजपुत्र भानुविक्रम भी सोकरजगा और प्रातःक्रियासे निवृत्त होकर और अस्त्र धारण करके राजसभामें आया और महारानी चन्द्रचूड़ा सुख-पालमें बैठकर अपनी सोनेकी सिविरसे निकली व सभासद और सेनाके मनुष्योंने यथायोग्य दण्डवत् करके अस्त्रसमर्पण किये भेरी आदि अनेक वाद्य बजनेलगे और वहांसे महारानी रत्नजटित विमानपर विराजमानहुई और कहारोंको आज्ञादी

कि उसको उठाकर रणभूमिमें चलो निदान वे विमान लेकरचले साथ उसके बंदीजन यशगातेहुए और मागध और सूतआगे २ प्रताप बखानतेहुए और मनुष्योंको हटातेहुए चले और सेना के मध्यमें पहुँचकर सिंहासन खड़ाकरदिया गया उससमय पद्मावती चमरलेकर महारानीको प्रसन्न करतीहुई अपनी सेवा पर बड़ी दृढ़तासे नियुक्त होगई दोनों सेनाओंके मायावी म्लेच्छोंने युद्धभूमिको साफकराना प्रारंभकिया किसीने मायाकरके बिजली गिराई कि उनसे जितने वृक्ष और झाड़ियांथीं भस्म होगये किसीने वायु चलाई कि उससे वहसब राख उड़गई और किसीने जल वर्षाकर धूलको शांतकिया निदान जब युद्धभूमि निष्कंटक होगई तब मायावी दानव और म्लेच्छोंने अपनी अपनी अभ्यासित आसुरी विद्याके अस्त्रोंका प्रयोग करना विचारकर सन्नद्ध होनेलगे कोई बाणोंको मंत्रित करताथा कोई लोह गोलकके प्रयोगका तंत्र बनाताथा कोई अग्नियंत्रको उठाताथा इसप्रकारसे वे युद्धको सन्नद्ध होरहेथे और मायाकृत घोर शब्द होतेथे कि इतनेमें दोनोंसेना आमने सामने कतारलगाकर खड़ी होगईं और दोनोंसे युद्धका उत्साह दिलानेवाले कवि निकलकर रणभूमिमें आये और सबको संसारकी अनित्यता और युद्ध में मरणकी श्रेष्ठता दिखाते हुए बीररस से छकित करने लगे ॥

क० । पाय प्रभुताई कछु कीजिये भलाई इहां नाहीं थिरताई बैनमानिये कविनके । यशही अयश रहिजात संसारबीच देशकोष साथगये कहो किनकिनके ॥ और महिपालन की गिनतीगिनावै कौन रावणसेगयेहींत्रिलोकी बश जिनके । चोपदार चाकर चमूपतिचंवरदार मन्दिर मतंगये तमाशे चारदिनके ॥

दो० । मरण एक दिन अवशि है व्याधजरामिसपाय ।
युद्ध मरण अति श्रेय है जाते सुरपुर जाय ॥
ताते हे शुचि शूरगण शंका प्राण विहाय ।

बलपौरुष दरशायके करो युद्ध व्यवसाय ॥
जीवत लहियो सुयशअति मरिजैहो सुरलोक।
उभय भांति मंगल तुम्हहिं तजो मरणकोशोक ॥

जब ये कवीश्वर उक्तप्रकारसे कवितासुनाकर रणभूमिसे अलग चलेगये शूरवीर लोग युद्धरूपी महोत्सव पाकरबीर-रससों भरेहुये झूमनेलगे उसीसमय संतापी दानव अपने महोर्ग को बढ़ाकर रणभूमिमें लेगया और कई एक मायाकृत चमत्कार करके ललकारकर बोला कि अरी अधर्मिणी दुर्भगा निशाकरीआ मेरेसन्मुख आकर अपनी मायादिखा यह सुनकर निशाकरीने अपने मायाकृत विमानको बढ़ाया सबने उसके विजय की प्रार्थना की और वह संतापी के सन्मुख पहुँची उसने मन्त्रित बाण निशाकरी पर छोड़ा निशाकरी ने कुछ पढ़कर फूंका कि वह बाण उलटा लौटगया फिर संतापीने अग्निगोल-कका प्रयोगकिया उसको आतेहुए देखकर निशाकरी आकाश को उछली और उसगोलकने उसके बैठनेके सिंहासनकोभस्म-करदिया परन्तु वह आकाशमें जाकर खड्गाकार होगई और संतापी पर इसभांतिसे गिरी कि वह महोर्गसहित दो खण्ड होगया उससमय अग्नि और पाषाण की वर्षा और बड़ाभयं-कर कोलाहलहुआ उससमय उसके सबसाथी मायावीम्लेच्छ और दानव दौड़े और भांति भांति के प्रयोग करनेलगे और निशाकरी के ऊपर अपने गलेके हार उतारकर फेंकेकि वहसब महा विषधर होकर निशाकरीकी ओर दौड़े यह देखकर पद्मा-वतीने अपनी सेनाके मायावी म्लेच्छोंसे कहा कि तुम भी युद्ध करो आज्ञा पातेही उन्हों ने ऐसी माया की कि अकस्मात् बादल घिर आया और पानी की वर्षा होनेलगी उसपानी की बूँद जिस शत्रुसेनाके योद्धापर पड़ी वही निश्चेष्ट होगया यह देखकर आतापी दानव दौड़ा और एक प्रयोग ऐसा किया

कि उससे एक सूर्य निकलकर आकाश को ऊंचाहुआ उसकी धूप से वह मायाकृत बादल नष्ट होगये और वह धूप जिस किसी निशाकरीकी सेनाके मनुष्यपर पड़ी वोही जड़रूप होगया फिरतौ संतापी और दुरतापी दोनोंजने सेनामें त्रिशूल लेकर घुसपड़े और बहुतसी सेना को यमलोकमें पहुँचाया औरदो-नों ओर से निंबुक और नारिकेलि आदि अस्त्र चलने लगे उससमय भानुविक्रमका चित्त अपनी सेना को शत्रुके वशमें देखकर वीररससे भर आया और उसने चन्द्रचूड़ासे कहा कि मैंभी अब अपनी तलवार खींचताहूं उसने उसके मुखपर तौ कहदिया कि बहुत श्रेष्ठ परन्तु जब वह अपना घोड़ा बढ़ाकर शत्रु सेना की ओरचला तब उसने पद्मावतीसे कहा कि राजपुत्र माया नहीं जानता है जो युद्धकरने जायगा तौ पकड़ जायगा यह सुनकर पद्मावती ने कुछ माया की कि उससे भानुविक्रम के घोड़े के पक्ष निकल आये और वह अभी शत्रुसेनामें नहीं पहुँचा था कि पक्ष निकलने से घोड़ा उसे लेकर आकाश-मार्गीहुआ उसने बहुतेरा बाग खींची और कोड़ेमारे परन्तु वह न माना और उसे आकाशमें लेगया वहांसे वह परवश हो-कर युद्धकी व्यवस्था देखताथा और क्रोधसे अपनी हथेली काटता और होठ चबाता था पद्मावती उसे क्षण २ पर देखती रहती थी इस प्रयोजनसे कि राजपुत्रपर कोई आपत्ति न आय जाय और उसे कोई पकड़ न ले इसी अवसर में आतापी युद्ध करताहुआ रानी निशाकरीके समीप आगया और उसने माया करके गर्भासुरी अस्त्र उसके ऊपर छोड़ा उसको आतेहुए देख कर रानी निशाकरी पृथ्वी में प्रवेश होगई और उस अस्त्र से शूचीवत् बाण निकल निकल कर सब सेनाको व्याकुल करने लगे थोड़ी देरमें रानी निशाकरी पृथ्वी को फोड़कर आतापी के समीप निकली और उसे ललकार कर एक बाणऐसा मारा

कि वह आतापी के शरीरसे पार होगया और आतापी मरकर गिरपड़ा मरतेही चारोंओरको भयानक शब्द होनेलगे अग्नि और पाषाणों की वर्षाहुई और प्रचंड वायुचली और वहमाया कृत सूर्य नष्टहोगया और उसके प्रभावसे जो योद्धा जड़रूप होगयेथे वे सबपूर्ववत् होकर युद्ध करनेलगे यह देखकर दुरतापी दौड़ा चारोंओर पाषाण फेंककर ऐसीमायाकी कि एकप्रलयकालकीसी कालीपीली आंधी चारोंओरसे उठी उससे सबकी आंखें बन्दहोगईं और थोड़ी देरमें जो फिर आंख खोलीतौ देखा कि बड़े २ पर्वतउड़कर शिरकेऊपर आगये हैं और गिर कर सबको दबाकर मारडालनाचाहते हैं यहदेखकर निशाकरी की सबसेना भयभीतहोकर भागी उससमय रानी निशाकरीने कुछ मंत्रपढ़ा और कहा कि हे सुंदरी अब आकर प्रकटहो कि पूर्वमें यहवर्णन होचुकाहै कि रात्रिको निशाकरीने एक मोमकी पुतली बनाकर अग्निमें डालदीथी और कहाथा कि जब बुलाऊं तबआना निदान इससमय रानी निशाकरी ने उसी स्त्रीका आवाहनकिया मंत्रके पढ़तेही बिजलीचमकी और एकओरसे एकस्त्री अप्सराओंसेभी उत्तमरूप धारणकियेहुए नानाप्रकार के वस्त्र और आभूषणोंसे अलंकृत एक उत्तम विमानपर बैठी हुई प्रकटहुई ॥

क० । मंजनसुनेह शील बोलन चितौनचाल मृदुमुसक्यान चारुगूंधनसुबेनीकी । सेंदुरसुमांग भाल तिलक दृगंजनहूं बीरीमुख चिबुकमसीकनकदेनीकी ॥ भनै रघुनाथअंगरागवर केसरिको कर मेंहदीकी दैन सब सुखदेनीकी । जावकसमेत लसेकंजपद कैसोआज देखतबनैहै कांतिवह मृगनैनीकी ॥

नैन उसस्त्रीके परमशोभायमान और कटाक्ष बाणरूपीथे ॥

दो० । रसर्सिंगार मंजनकिये कंजन भंजनदैन ।
अंजन रंजनहूं बिना खंजन गंजन नैन ॥

औरकंचुकीमें कसेहुए पीनपयोधर बड़ेमनोहर मालूमहोतेथे ॥

दो०। दुरतनकुचविच कंचुकी चुनरी सारी सेत।
कविश्रांकनके भरथलों प्रकटदिखाई देत॥

निदान वह अंगअंग शोभायमान परमसुंदरी उसरणभूमि में आकर ठहरगई और जब दुरतापी युद्धकरताहुआ उसके समीपआया तब वहबोली कि हे दुरतापी सैंतो तेरेकारणसे यहां आई परंतु तू मुझसे मुखसेभी नहींबोलताहै ले मैं अबजातीहूं यह सुनकर दुरतापीने जो उसकीओरदेखा देखतेही उसस्त्रीके कटाक्षरूपी बाणोंसे घायलहोगया और पासचलाआया तब उस सुंदरीने पूछा कि कहो क्या तुम्हारीइच्छाहै वहबोला कि मैं तेरे स्वरूपपर आसक्तहूं और तेराभक्त और दासहूं वहबोली कि मेरा हाथआना कठिन है और यहकहकर वह अपने हाथ के रत्नजटित पंखेसे उसकी वायुकरनेलगी दुरतापी उसवायुसे उन्मत्तसा होगया और विरहीकीभांति बचन बोलनेलगा यह देखकर वहस्त्री अपने विमानको उड़ातीहुई एकओरको चली तब दुरतापीने पुकारकरकहा॥

दो०। गईबाम मृततुल्यकरि मारिसैन दृगवान।
नहिंबोली चितलैगई इनको हृदयपपान॥

और बहुतसी आधीनताई करके बुलाया अपना शिर उसके पैरोंपर रक्खा और ऐसा आसक्त होगया कि युद्ध करना भूल गया उससमय उस सुंदरीने उससे कहा कि मैं रानी निशाकरी की दासीहूं तू मेराभक्त कैसाहै जो मेरेस्वामीसे युद्ध करता है अपने सेनाको युद्धसे निवृत्तकर और अपनी मायाको दूरकर यह सुनकर दुरतापीने कुछ पढ़कर अपनी मायाको दूरकिया वहसबपर्वत कंकड़होकर पृथ्वीपर गिरपड़े और सेना को आज्ञादी कि युद्धमतकरो तब सबसेनाके योद्धा युद्धत्यागकर उसके समीप चलेआये और उस स्त्रीके मोहनीरूपको देखकर सब मोहित होगये इसके पीछे दुरतापीने फिर बहुतसी आधीनताई

की तब वह बोली कि मैंनेसुना है कि तूने रानीके बहुरूपियोंको पकड़ रक्खाहै उनको बुलाकर छोड़दे यह सुनकर उसने तुरन्त उनको बुलवाया और धन और वस्त्र देकर बिदाकिया तब वे दोनों बहुरूपिये मुक्तहोकर सेनामेंआये और सबसे मिलभेटकर बनको चलेगये इसके पीछे उस मोहनीरूपाने कहा कि हे दुर-तापी जो तू मेराभक्त और आसक्त सच्चाहै तौ अपनी ग्रीवा अपने हाथसे काटडाल यह सुनकर दुरतापीने अपना खड्ग निकालकर अपनी ग्रीवापर रखलिया और पुकारकर बोला ॥

सो० । सुदिन सराहिय मोर भयोमरण ऐसे समय ।
सन्मुखमम चितचोर ठाढ़ोलखिये मृत्युमम ॥

यह कहकर दुरतापीने जैसेही अपना शिर काटना चाहा तैसेही उस सुंदरीने उसकाहाथ पकड़लिया और कहा कि जो तू मरजायगा तौ मेरे इससुंदर स्वरूपके यौवनको कौन लूटैगा क्योंकि ॥

दो० । रसिकविना संसारमें रसको पूछै कौन ।
मधुफूलनिको भ्रमरबिन सूखिजातसबतौन ॥

अच्छा अब मैं भी तेरासाथदूंगी परन्तु नियम यहहै तू जाकर रानी विचित्रमायाका शिर काटला और उसेरानी निशाकरीको भेटदे फिर मेरेसाथ आनन्द पूर्वक रमणकर उससुंदरीने दुरता-पीसे तौ यह नियम किया और जो औरसेनाके लोग उसके स्वरूपको देखकर मोहित होरहेथे उनको देखकर उस मोहनी-रूपाने पुकारकर कहा कि हे भक्तजनो जो तुम्हारा प्रेम सत्य है तौ चलेजाओ और दुर्भगा विचित्रमायाको पकड़कर लेआओ अथवा उसका शिर काटलाओ यहशब्द सुनकर दुरतापी और उसकी सब सेनाके म्लेच्छ और दानव तंबू आदि सब सरंजाम छोड़कर लीजियो लीजियो पुकारतेहुए भागे और रक्तबाहिनी नदीको उल्लंघन करके अदृश्य खंडमें आये और बदरी उद्यान

में पहुँचे वहां महेन्द्रके सहस्रों म्लेच्छ और दानव नौकर खड़े थे उन्होंने उनको रोका और आपसमें युद्ध करनेलगे दुरतापी ने क्षणमात्रमें बहुतसे दानव और म्लेच्छोंको मारकर गिरादिया बड़ाभारी कोलाहलहुआ अग्नि और पत्थरोंकी बर्षाहुई उसको सुनकर महेन्द्र और विचित्रमार्या दोनों बाहर निकल आये और देखा कि दुरतापी युद्धकरताहुआ चला आता है यह देखकर महेन्द्रने अद्भुत जालकी पुस्तक निकाली और उस में देखनेसे उसने जाना कि यह दानव और उसकी सेना एक महाउग्र मायाकृत पुतलीपर मोहित हुए हैं अब इनका मोह किसीप्रकारसे दूर नहीं होसकता यह विचारकर उसने एक लोहमयी अग्नि गोलकका प्रयोग किया और उससे दुरतापीछातीपर घायल होकर मरगया फिर महेन्द्रने ऐसी मायाकी कि सहस्रों वज्र आकाशसे गिरे और उनसे दुरतापी की सबसेना भस्महोगई निदान जब यहां सब मारेगये तब वह मोहनीस्त्री जिसपर मोहितहोकर ये सब यहां आयेथे वहां रणभूमिमें खड़ी खड़ी भस्महोगई यह देखकर रानी निशाकरीने कहा कि मालूमहोताहै कि महेन्द्रने दुरतापी और उसकी सब सेनाकोमारडाला क्योंकि यह स्त्री मायाकृत उन्हीं के निमित्त बनीथी उन सबके मरनेपर यहभी भस्महोगई निदान यहां जयदुन्दुभी बजी और शत्रुके दलके सब तम्बूआदि पदार्थ लूटलिये और जहां दुरतापीकी सिबिरथी वहां सेनाने बासकिया और वहांसे कईकोस आगेबढ़कर महारानी चन्द्रचूड़ाकी सभाके डेरेखड़े कियेगये और भानुविक्रमको आकाशसे उतारा और राजसभा में लिवालेगये वहां सब सभासद और सेनापति और महाशयलोग आकर अपने २ योग्य आसनोंपर बिराजगये आनन्द होनेलगा गन्धर्विणी मधुरध्वनिसे गाने और नाचनेलगीं और मद्यपानका व्यसन उत्साहसहित होनेलगा उससमय राजपुत्र

भानुविक्रमने पूंछा कि हे रानी निशाकरी मुझको छोड़ाउड़ाकर आकाशमें कैसे लेगया वह बोली हे राजपुत्र तुम माया आसुरी नहीं जानतेहो इससे पद्मावतीने मायाकरके तुमको आकाशमें पहुँचादियाथा जिससे आपको कोई मायावी म्लेच्छ अथवा दानव धर्षणा न करै यह सुनकर राजपुत्रने कहा कि आप लोगोंने मुझको नपुंसक अथवा कायर समझा क्षत्रीके लिये इससे बढ़कर दूसरा बुराकर्म नहीं है कि युद्धकेसमय रणभूमिसे भागजाय हमलोग जहां रहते हैं सबसे प्रथम युद्धमें जाते हैं और प्राणका पास नहीं करते यदि अब कोई ऐसा करैगा तौ मैं अवश्य उसकावध करूंगा यह सुनकर निशाकरी बोली कि बहुत श्रेष्ठ अब ऐसाहीहोगा और फिर सबलोग आनन्द विहारमें अनुरक्त होगये परन्तु पांचोंबहुरूपियों मेंसे चार तौ सेनामें लौटआये और पांचवां उपहास नहींआया निदान यहां तौ ये सब आनन्द विहारमें थे और वहां महेन्द्रने विचित्रमायासे कहा कि हाय यह कैसाबुरा समयआयाहै कि अपने भृत्य और सम्बन्धियोंको अपनेही हाथसे मारनापड़ा और साठसहस्र म्लेच्छ और दानवोंकी सेना तीन सेनापतियों सहित क्षण भरम नाशहोगई इसमायाके देशके रचनेवाले सत्यलिखगये हैं कि एकसमय ऐसा आवेगा कि जब इसदेशके राजाके नौकर चाकरही राजासे युद्धकरेंगे और उस समयमें यदि राजा उनसे तरह न देगा तौ उसकेलिये बुराहोगा निदान मुझको यह वही समयआया दीखताहै परन्तु हे विचित्रमाया चाहे यह देश रहै अथवा उजड़े और प्राण मेरेबचें अथवा न बचें परन्तु इस अधम अधर्मिणी दुर्भगाको अवश्य दण्डदूंगा और अपने पादत्राण उसके शिरपर रक्खूंगा निदान महेन्द्र इसीप्रकारकी बातें कररहाथा कि अकस्मात् जल और अग्निकी वर्षाहोने लगी महेन्द्रने कहा कि कोई महान् पुरुष आताहै और सभा-

सर्दोंको आज्ञादी कि आगेजाकर सन्मानसहित उसे लिवाला-
ओ वे चले और थोड़ीदूर जानेपर भेरीकेबजनेका शब्द सुनाई
देने लगा और कुछकालपीछे एक मायावी म्लेच्छ भयानक
स्वरूपबनाये सिंहपर सवार गलेमें बहुतसे चित्रडाले साथमें
बारहसहस्र सेनालियेहुए बदरी उद्यानमें उतरा और सेनाको
बाहर खड़ाकरके आप उस उद्यानमें बनेहुए भवनके भीतर
घुसगया और विचित्रमाया और महेन्द्रको दण्डवत्की विचि-
त्रमायाने उसेपहचाना कि मेरा भानजाहै सिंहसादीहै औरउठ
कर उसे हृदयसे लगाकर उसकी बलैयांलीं और पूछा बेटाक्यों
तू आयाहै वह बोला कि मैंने सुनाहै कि मौसाजीके कुछ भृत्य
अपनाधर्म छोड़कर युद्धकरने पर उत्सुकहुएहैं सो मैं उनकेशिर
तोड़नेको आयाहूं आप आज्ञादीजिये कि मैं जाकर उनको
उचितदण्डदूं वह बोली कि बेटा ये अधर्मी किनमें हैं इनको
दण्डदेनेके लिये बहुतसे नौकर मौजूद हैं तेराजाना ठीकनहींहै
शत्रुंजयकी सेनाके कुछ बहुरूपिये इसदेशमें आयेहैं वे मायावी
दानव और म्लेच्छों को छलकरके ठगविद्यासे मारडालते हैं
इसीसे ये शत्रु अभीतक बचेहुए हैं नहीं तो अबतक कभी के
यमलोकमें पहुँचगयेहोते यह सुनकर सिंहसादी बोला कि
मैं अवश्यजाकर इनसब बहुरूपियों को मारकर शत्रुसेना
का सेनापतियों सहित विध्वंसन करूंगा निदान बड़ी जिदा-
बिदीसे उसको युद्धकरनेको जानेकी आज्ञाहुई और महेन्द्रने
भी उसके साथ औरसेनाकरदी अदृश्यखंड में इसबातकी
बड़ीचरचाफैली कि विचित्रमायाका भानजा युद्धकरनेको जाता
है और उससे मिलने और उसको बिदाकरने बड़े २ मायावी
वहांआये उससमय विचित्रमायाने महेन्द्रसेकहा कि श्रीमहारा-
जकी इच्छाहो तो निष्प्रभ भवनपर चलकर बैठें वहां से सब
मायाके चमत्कार दिखाईदेतेहैं वहीं बैठकर युद्धकीभी व्यवस्था

देखियेगा और सिंहसादीसे बोली कि बेटातुम रक्तवाहिनीनदी के तटपर उतरना वहांसे निशाकरीकीसेना तीनयोजनपर पड़ी है और हैहयदेशभी वहां से समीप है निदान सिंहसादीने यह सब अंगीकार किया और सेनाको सन्नद्ध होनेकी आज्ञादी॥

चौ०। सुनहुवीरवल बुधिकरधामा। लावहु मम विमान प्रतुनामा॥
तापरहौं अद्भुत समकसिकें। करिहौं युद्ध भानुसम लसिकें॥
साजहुसकलजुझाउसमाजू। चलहु वेगि साधहु रण काजू॥
अस्त्र शस्त्र अतिउग्रअमाना। आसुरिमाया कृत जे नाना॥
वाण अमोघ साथ सबलेऊ। चलहु सुजय महेन्द्रकहँ देऊ॥

निदान वह बहुतसी सेनालेकर वहांसेचलदिया और रक्तवाहिनी नदीके पारआकर हैहयदेशके समीपपहुंचा और वहां आकर उसने सेनाको टिकनेकी आज्ञादी तम्बू और डेरे खड़े कियेगये सिविर रचेगये और वहां सबसेनाने वासकिया उस समय रानी निशाकरीने मायाकृत पक्षीभेजे कि देखो यह भेरी आदि वाद्य कैसे बजरहे हैं वहपक्षी आज्ञापाकर उड़कर उस स्थानपर आये जहां सिंहसादीकी सेना पड़ीहुईथी और उसे देखकर लौटे और यहां चन्द्रचूड़ा और भानुविक्रम और प्रहासआदि सब आनन्दपूर्वक वार्त्तालाप कररहेथे कि इतनेमें पक्षियोंने आकर विनयकी॥

जयकरीछंद। हेप्रभुनरपति आनँदरूप। तववशहोहिं शत्रु सब भूप॥
साधैंदेवसकलतवकाज। दिनप्रतिवढ़ै मान धन राज॥

श्रीमहारानीजी सुनिये आज शत्रुकी सेनाआकर रक्तवाहिनी नदीके तटपर उतरीहै वाकीसब अच्छाहै यहसुनकर सब बहुरूपिये फिर सेनासे निकलकर बनमेंजाकर गुप्तहोगये और रानी निशाकरीने आज्ञादी कि हमारी सब सेना सन्नद्धहोकर आगेबढ़कर चले यहसुनतेही सब युद्धका सरंजाम लदनेलगा और महारानी चन्द्रचूड़ा सब सेनासहित मायावी मनुष्यों से आवृत बड़ीधूमधामसे आगेबढ़ी॥

चौ० । चतुरंगिनी सेन विकरारी । अतिदुर्जय सुभयंकर भारी ॥
अस्त्रशस्त्र नाना विधिलीन्हे । धनुषवाण करतलमधकीन्हे ॥
कवचअभेद्य अंगछविछाये । मायाकृत जेसकल बनाये ॥
इविधिप्रवलरण कर्कशसेना । चलीयुद्ध उत्सुक जगजेना ॥

निदान वहसेना वहां पहुंची और बीचमें युद्ध करनेकेलिये रणभूमि छोड़कर दोनों सेना एक दूसरे के सामने ठहरीं उस दिन सिंहसादीने कहा कि आज युद्ध न होगा और सेनाके चारों ओर वारहसौ मायावी म्लेच्छोंको रक्षाकेलिये नियतकिया और एकसौ म्लेच्छोंको अपनी सिविरके चारोंओर बैठादिया और सबको आज्ञादेदी कि बहुरूपिये यहां आये हैं वे धोखा देकर म्लेच्छ और दानवोंको मारडालते हैं इससे तुमलोग किसीस्त्री अथवा पुरुष अपनी अथवा पराई सेनाको सिविरके भीतर न आनेदेना और सेनाके द्वारपरभी सब चौकस रहना भीतर किसीको न आनेदें और न किसीको अपनेपास बैठनेदें यह सुनकर सबनेकहा कि ऐसाही होगा और सब बाहर आकर वारी बांधकर रक्षा करनेलगे निदान वहदिन व्यतीतहुआ और सायंकाल होनेपर तारागणोंने आकाशमें अपनी प्रभाका प्रकाशकिया और भगवन् कुमुदनी नायकके अखंडमंडलने प्राची दिशामें उदयाचल चूड़ाको अवलंब किया ॥

क० । निर्मलस्वच्छश्वेत हिमसदृशप्रभायुक्त मंडलअमोघजाको अतिशैसुहातहै । अमलअमी पूर्णसुप्रकाशित रश्मिछुटीं दाहहरकौमुदी मनोरम दिखातहै ॥ मुदितचकोरहोत जाकीक्रांति शोभालखि सागर छुअनकों सध्वनि सरसातहै । कहतकुंजलालआज उग्योशरदइन्दु षोड़शकलानि युतनभमें विभातहै ॥

सायंकाल होनेकेपीछे सब सेनाके योधा सबप्रकारकी रक्षा आदिका प्रबन्ध करके शयनादिक क्रिया करनेलगे उससमय चपलानामी बहुरूपीने कार्यसाधनके निमित्त पर्वतकी कन्दरामें बैठकर अपना स्वरूप एक म्लेच्छतपस्वीकासा बनाया अर्थात्

शिरपर जटा ऐसीलगाईं कि पैरोंतक लटकतीथीं शरीरपर वि-
भूति रमाई एक नीलावस्त्र कमरसे घोंटूकेनीचे तक बांधा लाल
हरे पीले काले और श्वेतरंगके कांचके मणियोंकी माला गलेमें
पहिरी उंगलियोंमें बारह बारह अंगुरके लखलगाये एक हाथ
को सीधाकरके ऐसा कड़ा करलिया कि यह जानपड़े कि सूख
गयाहै और दूसरे हाथसे एकघट मूर्च्छाकर चूर्णमिली मद्यसे
भराहुआ पकड़ेहुए और कमरपर रक्खेहुए सिंहसादीकी सिवि-
रके सन्मुख आया और उसओरसे निकला जिधर वह एकसौ
म्लेच्छ पहरादे रहेथे उन सबने उसे बड़ासिद्ध तपस्वी जानकर
दण्डवत्की परन्तु चपलाने कुछ उत्तर नहींदिया और उन्हें
देखकर कतराकर एकओरको चलदिया उसको देखकर सब
रक्षक आपसमें कहनेलगे कि यह कोई सिद्ध मालूम होता है
चलो इनके दर्शनकरें और बनजायतो ठहराकर अपना वृत्तांत
पूछें यह शोचकर वे उसके पीछे होलिये वह तपस्वी उनको
आताहुआ देखकर बैठगया और पृथ्वीमें कुछ खींचने खांचने
लगा और जब वे समीप आये तब उठकर एकओरको फिर
चल निकला और दूरपर जाकर ठहरगया और पृथ्वीसे कुछ
मृत्तिका उठाकर आकाशकी ओरफेंकी और कुछ मुखसे बुदबु-
दानेलगा जब वे सब फिर समीप पहुँचे आपउठकर फिर चल
दिया और कुछ दूरजाकर चक्रकीभांति फिरनेलगा वह सब
म्लेच्छ खड़ेहुए उसे देखतेरहे परन्तु वह फिर वहांसेभागा वह
म्लेच्छभी उसकेसाथ भागे निदान जब सेनासे दूर सबको ले-
आया तब वह मद्यका घट पृथ्वीपर रखके एकझाड़ीमें घुसगया
उससमय उन म्लेच्छोंने आपसमें कहा कि यह तपस्वी सिद्धि
वाणी और विरक्तहै इसीसे संसारी जीवोंसे वार्त्तालाप नहींकरता
है जब उसने देखा कि हमलोग उसको बहुत घेरते हैं तब यह
घट हमारे लिये छोड़कर चलागयाहै चलदेखिये कि इसमें क्या

है निदान सब म्लेच्छ उसघटके समीप चलेगये और उसपर
जो पीनेकापात्र ढकाथा उसको उठाकर जो देखातो उसमें मद्य
भरीपाई उसको देखकर सबने कहा कि यह तपस्वीके हाथकी
दीहुई प्रसादी है इसके पान करनेसे इसलोक और परलोक
दोनोंमें भलाहोगा फिर एकबोला कि इसके पीनेसे तमामउमर
कोई रोग न होगा उसपर दूसरेने कहा कि रोगहीनहीं किंतु कुछ
आयुर्भी अवश्य बढ़जायगी निदान वे सब वहीं बैठगये और
बाबाजीकी प्रसादीका एक एक पानपात्र भरके सबनेपिया और
पीपाकर वहांसे उस तपस्वीके गुप्तहोनेकी चर्चा और आश्चर्य
करतेहुए सेनाकी ओरचले थोड़ीही दूरपर जैसेही शीतल वायु
सबकोलगी मूर्च्छाकर चूर्णने अपना गुण उत्पन्नकिया और
वे सब अचेत होकर गिरपड़े और सुधबुध सब जातीरही
तब चपला जो झाड़ीमें छुपाबैठाथा खड्गलेकर बाहर निक-
ल आया और उनके शिर काटनेलगा और बड़ी शीघ्रता
से पचासके शिर उड़ादिये उससमय बड़ा कोलाहलहोना प्रा-
रंभहुआ प्रलयकालकी सी बिजली चमकी प्रचंडवायुचली पा-
षाण और हिमकी वर्षाहुई और जोजो मारेगये थे उनसबकी
लोथें उड़उड़कर वहांगईं जहां सिंहसादीकी सिविरथी वह अप-
ने डेरेमें बैठाहुआ स्वस्थतासे वारुणी पीरहाथा लोथोंको देख
कर बाहरनिकलआया और म्लेच्छ बहुतसेदौड़े और उन्होंने
देखा कि म्लेच्छ अचेतपड़े हैं प्रलयकालकासा शब्दहोरहा है
और एकमनुष्य खड्गलियेहुये म्लेच्छोंकी ग्रीवा काटताफिरता
है यहदेखकर सिंहसादीने कुछमायाकरके चपलाके पैरोंकोस्तं-
भितकरदिया और थोड़ीदेरमें जब वहकोलाहल और अंधकार
दूरहोगया तब उसको पकड़कर अपनी सिविरमें लेआया और
उससेपूछा कि अरेदुष्ट बता तू कौनहै चपलाबोला कि मैं म्लेच्छ
और दानवोंका कालहूं तेरानाशकरनेको आयाहूं मुझको मारू-

मनथा कि ऐसीविपत्ति आवेगी और लोथंउठकर सेनामें आवेंगी नहींतो सबको जीताजी पृथ्वी में खोदकर गाड़देता और अबभी कुछनहींगया है थोड़ीदेर में तुझको भी यमलोक में पहुँचाऊंगा-संसारचक्र। अतिभ्रमतवक्र॥ क्षणमेंअनेक। क्षणमें नएक॥ छिनएकतौर। छिनहोतऔर॥ हमहेंस्वतंत्र। अबभे प्रतंत्र॥ पुनिहोंवमुक्त। जिमिकरवयुक्त॥ अब तुझको मारकर रानी निशाकरीकी सेनामें कुशलपूर्वक जाऊंगा यहसुनके सिंहसादीका जीछूटगया और चित्तमेंकहा कि तेरे धीर्य और दृढ़ताकोधन्यहै रानी विचित्रमायाने सत्यकहाथा कि ये बहुरूपिये आपत्तिके चक्रहैं परंतु फिर उसने अपनेको दृढ़करके कहा कि सुनवे चपला तू मुझको लाखप्रकारसे धमका परंतु में तुझे प्रातःकाल अवश्य मारडालूंगा अब इससमय इसप्रयोजन से तुझको नहींमारताहूं कि जो तेरेछुटानेको कोई और बहुरूपिया आवेगा तो वहभी पकड़लियाजायगा चपलाबोला कि अभी तक तू बचाभीहै परंतु अबकीबार जोकोई दूसराआवेगा तो तुम्हारा कामही अंतकरदेगा निदान सिंहसादी ने उसको कैद किया और सेनाके चारोंओर कुछ मायाकरके ऐसी दिग्रक्षा करदी कि जोकोई सेनाके भीतरआजाय वह बाहर न जासके इसकेपीछे वह शय्यापरजालेटा और चपलापैरोंके स्तंभितहोने से खड़ारहा निदान यहांतो यहहालथा और वहां दूरसे उपहासने चपलाका म्लेच्छोंको मारना और फिर उसका पकड़ाजाना देखा था वहतुरन्तही मायावीम्लेच्छोंकासा स्वरूपधारणकरके सेनामें आया और जैसेहीचाहा कि भीतरघुसे तैसेही उसको ध्यानहुआ कि कहीं ऐसा न हो कि दिगरक्षा मायासे कीगईहो ऐसाहोगा तो फिर निकलना दुर्लभहोगा यह विचारकर वहरात्रिभर सेनाके चारोंओर घूमाकिया परन्तु कुछ न करसका अंतमें चपलाके सोचमें पौफटी और सूर्य्यने अपने प्रकाशसे अंधकारको दूरकिया--

चौ०। उदयभानु लखिसकल समाजू। जगेलगेनिजनिजसबकाजू॥

निदान सिंहसादी प्रातःकाल होनेपर उठा सिविरसे बाहर आया और शौचसे निवृत्त होकर कई पात्र मधुर मधुके पिये और चपला को उसीप्रकार क़ैद में रखकर म्लेच्छोंसे कहा कि मेरी सवारी अर्थात् यान लाओ मैं बनविहारको जाऊंगा वहां से लौटकर इस दुष्ट बहुरूपियेका बधकरूंगा यह आज्ञा पातेही म्लेच्छ उसका यानलाये और वह उसपर चढ़कर बनकीओर चलदिया उसको जातेहुये देखकर उपहासनेभी बनकी राहली और कछारमें जाकर सिंहको खोजने लगा और थोड़ीदेरमें एक सिंह सोताहुआ मिला यहतौ इन्द्रसे बरदान पायेहुए था उससे भय नहीं किया और ललकारा ललकारको सुनकर सिंह खड़ा होगया और थप्पड़ उठाकर उपहास की ओर चला उपहासने उसके थप्पड़ को बचाकर उसके पंजे पकड़ लिये और नीचे डालकर घूंसेमारे उससे वहबशमेंहोगया और तब उसने अपनी झोलीमेंसे एक जीन वैसाही निकाला जैसा सिंहसादी का था और उसको उस सिंहपर कसकर और अपना स्वरूप सिंह-सादीकासा बनाकर उस सिंहपर सवार हुआ और सिंहसादी की सेना की ओर आया जब उसकी सिविरके समीप पहुँचा तब म्लेच्छगण उसको अपना स्वामी समझके उसके समीप आये उसने उनसे कहा कि मेरी कीहुई मायाको दूरकरके उस बहुरूपिये को लेआओ मैं उसको निशाकरीकी सेनाके सन्मुख जाकर मारूंगा और वहांसे लौटकर सिंहसे उतरूंगा यह आज्ञा पातेही वे म्लेच्छ सिंहसादी की सिविरमें दौड़करगये और उसकी कीहुई मायाको दूर करके चपला को लेआये उपहास उसको लेकर निशाकरी की सेना की ओर चलदिया और जब तब उसके समीपपहुँचा चपलासे बोला कि मेरानाम उपहासहै अब जो कोई कार्यकरना समझके करना चपला उपहास को

सिंहपर सवारदेखकर बोला कि परमेश्वरने यहसामर्थ्य आपही को दीहै जो जीताहुआ सिंह पकड़लायेहो निदान वे दोनों बनमें आये और वहां उपहास ने उस सिंहको छोड़दिया और कहा जाओ अब तुम्हारा कुछ कार्यनहींहै सिंह छुटतेही भागा और चपला फिर अपने स्वरूपको बदलकर सिंहसादीके बधकरने की इच्छासे उसकी सेनाके समीप आया और इधरसे उधर घूमनेलगा थोड़ी देरमें सिंहसादी भी बन विहार करके लौटा म्लेच्छों ने जाना कि अब उस बहुरूपी को मारकर आयाहै सब उसके समीपगये और वह सिंहसे उतरकर अपनी सिविरमेंगया परन्तु जब उसने वहां उसकैदीको नहींपाया तब सब भृत्योंको बुलाकर पूछा कि वह बहुरूपी कहांहै जिसको मैंने कल कैद कियाथा सबने विनय की कि महाराज अभी तौ आप उसको अपने साथ लिवा लेगयेथे सिंहसादी बोला कि तुम सब उन्मत्त होगयेहो क्या मैं जबका गयाहुआ अभी चलाआताहूं मैं कब आयाथा जो लेगया तब उनसबने शपथ खाकर सबवृत्तांत कहा उसको सुनकर उसने आश्चर्य किया और कहा कि कितने प्रबल ये बहुरूपिये हैं कि मेरा स्वरूप बनकर कितनी शीघ्र अपना कार्य कर लेगये सबतौ सबकिया परन्तु न जाने मेरी सवारी का सिंह कहांसे लाये और अपने चित्त से यह कहकर कि अब प्राण बचना कठिनहैं सबम्लेच्छ और दानवोंको आज्ञादी कि अब महाराज महेन्द्र अथवा विचित्र माया भी आवैंतौ बिनामेरी आज्ञाघुसने नपावें और उससमय पकड़ लियेजावें यह कहकर अपनी सिविरमें आकर मद्यपान करनेलगा और विचार किया कि आज सायंकालको युद्धके वाद्य बजवाकर कलरानी निशाकरी और उसकी सेनासे युद्ध करूं और सबको मारकर लौटचलूं निदान यहतौ इसविचार में बैठाथा और वहां अन्धेर नगरीमें महेन्द्र और विचित्रमाया

निष्प्रभ भवन में बैठेहुए आनन्दकर रहे थे कि इतनेमें विचित्रमाचाने सिंहसादी को स्मरणकरके महेन्द्रसे कहा कि महाराज मेरे भानजेको युद्धके लिये गयेहुए दोदिन होगयेहैं उसके कुछ समाचार नहीं आये मेरा चित्त लगाहुआ है आप अद्भुत जालकी पुस्तक देखकर उसके कुशल होने का वृत्तांत कहिये यह सुनकर महेन्द्रने उस पुस्तक को देखकर चपला और उपहासके भेष धारण करनेका वृत्तांत सबकह सुनाया वहउसको सुनकर घबरागई और कहा कि कहीं ऐसानहो कि सिंहसादीको मारडालें ये मरे बड़े कठिनहैं बनसे जीताजी सिंह पकड़लाये यह कहकर उसने विचार किया कि सिंहसादीको बुलालूं और किसीदूसरे अधिकारी को युद्धके लिये भेजदूं यह विचारकर उसने सिंहसादीकोपत्रलिखा कि तुमसे मुझे एकबड़ाआवश्यक काम है पत्रदेखतेही सब सेना को वहीं छोड़कर मेरे पास चले आओ और वहपत्र अपनीसहेली मायारत्नको देकर कहा कि इसपत्रको सिंहसादीके पास शीघ्रलेजा और उससेकहियो कि तुझे बुलायाहै यहआज्ञापाकर मायारत्न वहपत्रलेकर मायाके बलसे आकाशमार्गसे सिंहसादीकी सेनाकी ओर चलदी यह मायारत्न बड़ीसुंदरी स्त्रीथी अंगसब सुघर और सांचेकासाढला था आंखें बड़ीबड़ी भों पतली और धनुषाकार ललाट चौड़ा और दमकताहुआ कपोल कोमल होठ पतले और लाललाल चिबुक मनोहर ग्रीवा कपोतकीसी कुचकठिन कटि अतिछीन जंघा कदलीकेसे स्तंभ और गौरवर्ण सबअंग निर्दोषथे उसे देखकर कोई ऐसाजीव नथा जो मोहितनहोजाय ॥

क० । बेंदीभालनासाबेसबेसरतरौनाकानकंठसिरी कंठहार हीरामणि संगमें । बाजूबंद बंकनअंगूठी छला छापयुक्त नीबीबंद किंकिणीसुहाइरस रंगमें ॥ भनैरघुनाथपाँय नूपुरमंजीरमंजु राजतरंगीलीभरी योबनतरंगमें । लीन्हें प्रतिबिंब चन्द्रबिंबकीनिकाईलखें बारहू अभूषणबिराजेंबालअंगमें ॥

निदान वह सुकुमारी चन्द्रमुखी वहांसे चलकर सिंहसादी की सेना में आकरउतरी और जब सिविर में घुसनेलगी तब सबम्लेच्छोंने उसेघेरकर कैदकरलिया और भीतरनजानेदिया और सिंहसादी से जाकर विनयकी कि मायारत्नआई हैं परंतु हमने पकड़रक्खा है आपके समीप आनेनहींदिया है वहबोला कि मैं चौकसहूं उसे आनेदो देखूं कोई बहुरूपियातो नहीं है निदान उन्होंने आकर उसे भीतरजाने की आज्ञादी और जब वह वहांगई सिंहसादीने अपनेहाथकी अंगूठीको उतारकर और कुछ मायाकरके फेंकदी औरकहा कि हेमायारत्न इसअंगूठीको उठाकरलाओ और यहां बैठजाओ जोतुम मायारत्नहीहो तौतौ अंगूठी उठालाओगी और जो कोई बहुरूपियाहोगी तौ हाथ तुम्हारा जलजायगा और अंगूठी न उठैगी वहबोली कि पहिले तो मुझे म्लेच्छोंसे पकड़वाकर निर्लज्जकिया और अब यहढ-कोसला निकाला यहकहकर उसने कुछपढ़कर वह अंगूठीउठा ली और आकर उत्तम शय्यापर बैठगई तब सिंहसादी उसको एकपात्र मद्यभरकर देनेलगा वहबोली कि चलोबैठोमैं ऐसे बोदे जीके मनुष्यसे बातनहींकरतीहूं जो तुमको बहुरूपियोंका ऐसा-ही डरथा तौ युद्धकरने क्योंआयेथे सिंहसादीने जो उस सुंदरी को एकांतमें रसभावकरतेहुएपाया चित्तसे आसक्तहोगया और यहविचारकर कि आजइससे अपनेमनका मनोरथ पूराकरूंगा उसने उसके कपोलपर हाथरखकर कहा कि हेप्राणप्यारी मुझ भक्तपर क्रोधमतकरो अच्छामैं बोदेही जीकासही परंतु लो यह मद्यतौ पानकरो यहसुनकर मायारत्न उसके चित्तकी वृत्तीको जानगई और लज्जितहोकर बोली कि तुम मुझसे ऐसीबातें मतकरो नहींतो मैंजाकर तुम्हारी मौसीसे कहदूंगी यहसुनकर सिंहसादी चुपकाहोरहा और उसके लायेहुए पत्रको पढ़कर बोला कि मैं सायंकालको आऊंगा और तीसरेपहरको यहां से

चलूंगा मायारत्न वह उत्तरलेकर चली परंतु सिंहसादी उसके विरहमें व्याकुलहोनेलगा और मायारत्नभी फिरफिरके उसकी ओर देखतीजातीथी और पत्रलियेहुए सेना के वासस्थल के किनारे पहुंची वहां चपला कुछकार्य साधनकरनेको फिरहीरहा था मायारत्नके साथहोलिया परंतु वह सेनाके बाहिरजाकर आकाशमार्गीहुई चपला यह देखकर आश्चर्य में हुआ परंतु फिर कुछयत्न शोचकर पहाड़की गुफामें चलागया और वहांजाकर उसने अपनास्वरूप मायारत्नकासा बनाया धानीरंग के उत्तम रत्नजटित वस्त्रधारणकिये पद्मराग और नीलमणिसे जड़ेहुए भूषणपहिरे और सुरमा बेंदीआदि सोलहोंशृंगारकिये उससमय उसकीछवि अपूर्वहोगई आंखें ऐसी कटीली रसीलीथीं कि वसीकार मंत्रकासा प्रभाव रखतीथी॥

दो०। अनियारे तीखे कुटिल अंकुशसे दृगबाण।
लागतसीधे आय के पाछे खैंचें प्राण॥

नासिका मनोहर श्रवण शोभायमान भाल विशाल कारेसटकारेबाल मानो इन्द्रजाल और होठपतले और लालथे दांतों की द्युति बिजली के समानथी चिबुक ललामथी और मुखकी छबिके आगे चन्द्रमाकी छबि मलीन थी और कोमल कपोल और पयोधर अडोल चित्तको डामाडोल करनेवालेथे॥

स०। सुंदरशुभ्र सुवेष सुकेश सुश्रोणि सुठोनि सुदंतसुनैनी।
तुंगतनीमृदु अंग कृशोदरि चंद्रमुखी मृगशावकनैनी॥
सोनेकोवासरुदासमिलै गुणगौरिप्रियानवलासुखदैनी।
पीनिनितम्बवती करभोरुह मत्तगयंदगतीपिकवैनी १॥

क०। चहचही चुभकै चुभी है चौक चुंबनकी लहलही लांबीलटैं लपटीं सुलंकपर। कहैपदमाकर मजानि मरगजी मंजुमसकी सुआंगीहै उरोजनि के अंगपर॥ सोईसरसारयो सुगंधन समोइसेज शीतल सुलोनेकोने वदन मयंकपर। किन्नरी नरी है कैपरी है छविदारपरी टूटिसी परी है कैपरी है पर्यंकपर २॥

निदान चपला उक्तप्रकारका मोहिनीस्वरूप धारणकरके मूर्च्छाकर चूर्णमिलीहुई मद्यकाघट और पानपात्र लेकर बड़ेछबीले भावसे एक उत्तम हरेभरे स्थान पर बैठगया और रसकवित्त पढ़नेलगा और चित्तसे कहताथा कि जोकोई म्लेच्छ इस ओरको आवैगा वहतेरेही भागकाहोगा उसकोवधकरना इतने में दिन ढलगया और सिंहसादी उसदिनभी युद्धको बंदरखकर सब सेनाके म्लेच्छ अधिकारियों को अच्छी प्रकारसे रक्षित और चौकस रहने की आज्ञा देकर आप आकाशमार्गसे रानी विचित्र मायासे मिलनेको चलदिया और दैव योगसे उस स्थानपर पहुंचा जहांचपला मायारत्न कासा स्वरूप बनाकर बैठाथा उसको देखकरचपला ने यह दोहापढ़ा॥

दो॰ तची आंचअति विरहकी रही प्रेमरसभीज।
नैननिके मगजल बहै हियो पसीज पसीज॥

यह सुनकर सिंहसादीने जो नीचेको आंखेंकरके देखा वहां मायारत्नको बैठापाया और ऊपरसेही बोला कि हे मायारत्न कहो कुशलतौ है यहां कैसे बैठीहो क्या तबसे मौसीके पास नहीं गई यह सुनकर मायारत्न रूपी चपलाने ठंढी ठंढी सांस भरकर कहा कि प्रेमके बनमें भूलेहुए से तुमको क्या प्रयोजन है जहां चित्तरुचा वहीं बैठरहे और विरहके दिनको रात्रि करदिया॥

दो॰ कहा भयोजो वीछुरे मो मनतोमनसाथ।
उड़ी जाहु कितहीं गुड़ी तऊ उड़ायकहाथ॥
यह विनशननगराखिकें जगतबड़ोयशलेहु।
जरी विषमजुरिजाइयै आय सुदरशन देहु॥

तब सिंहसादीने विचार किया कि मैंने जो इसको तम्बू में छेड़ाथा उससमयसब सेनाके वहांहोनेसे इसने कोई बातअंगीकारनहींकीथी परन्तु मैंने जो इससे कहाथा कि मैं सायंकाल

को आऊंगा सो इसने यहां ठहरकर मेरे आनेकी बाट देखीहै यह भी मुझपर आसक्त है यह सोचकर सिंहसादी नीचेउतर कर पृथ्वी परआया और मायारत्नके समीपगया उसनेउसको अपने समीप देखकर यह दोहापढ़ा॥

दो० नेह निबाहन है कठिन फिरयो जगत सबजोय।
विमल प्रीति नहिंदेखिये स्वारथ लग सबकोय॥

यहसुनकर सिंहसादी ने उसका हाथ हँसकर पकड़लिया और यहदोहापढ़ा॥

दो० मेरोमनतांपै रह्यो तेरोमन मोमाहिं।
दोऊव्याकुलबिनमिले चैनशरीरहिनाहिं॥

यहकहकर सिंहसादी बैठगया और चाहा कि उसके अधरामृतको पानकरूं कि मायारत्नबोली कि बसबस अलगरहो तुमसाकठोर कोईसंसारमें नहोगा हमको दिनभर इसबन और पर्वतोंमें अपने प्यारेप्राणोंको विरहकी अग्निसे तपाते होगया और आप अब प्रीतिभाव जताने आयेहैं हेसिंहसादी जिस दिन मैंने तुझे सभामेंदेखाथा उसीदिनसे यह दुष्ट चित्त विचित्त होगया है॥

दो० मरीडरी कितरीव्यथा कहाघरी चलिचाहि।
रहीकराहिकराहिअति अबसुखहोयनजाहि॥

यहसुनकर सिंहसादी बोला कि हेप्राणप्यारी मेरीभी तुझे देखकर यहगतिथी॥

क०। जादिनतें मोहनीको मंत्रडारिदिनों उनरूपकी मिठाई तादिनते कलमलैहै। ज्योंज्यों चित्तडाटूं औरोंकूं और हटकूं मैं त्योंत्यों अति बल कर उतहीको हलैहै॥ सबविधिमनाऊं बुझाऊं नहिंमानैएक ताहींमेंरमो रहत वहीगैल चलैहै। कहैंकुंजलालतहँ प्रपंचनालगैएक छिनमेंविलोकि मन ज्ञानिनको छलैहै॥

हेप्राणप्यारी अब तूहीबता कि मैं उससमय क्याकरसकता था क्योंकि॥यावतप्रियान देइजनाइ। प्रीतमतावतसकतनजाइ॥

तुम्हारे सुंदरस्वरूप के विरह में होठहमारे मौनथे और दूसरे पूछनेवाले कौनथे परंतु ॥

सो० कीकर पाकर तार जामन फलसा आमिला।
सेव कदम कचनार पीपलरत्ती तून तज ॥

अब हम तुम दोनों आनन्दकरें और विरहकी अग्नि को शांतकरें मायारत्नबोली कि मेरी तो यहदशाहै कि ॥

दो० तेरांमेरो एकमत देखत दोय शरीर।
बाणजो मारैकामइक होतदुहुनकोपीर ॥

यहकहकर उसने अपनाकपोल उसके कपोलपर रखदिया और गलेमें बाहेंडालदी यहदेखकर सिंहसादी प्रसन्नहोकर मनोरथ प्रकार प्रकारके करनेलगा और कामदेवसे पीड़ित होने के कारणसे रमणकरनेकी इच्छाकी उससमय चपलानेकहा कि लाओ थोड़ी२ वारुणीपीलें तब आनन्दपूर्वक विहारकरेंगे और यहकहकर उसने घटमेंसे एकपानपात्र भरा और सिंहसादीको देकर कहा कि लो यह प्रीतिकापात्र पानकरो परंतु अब वहांका हालसुनिये कि जब सायंकाल होगया और सिंहसादी नहींपहुंचा तब रानी विचित्रमायाने महेन्द्रसेकहा कि मेरा भानजा अभीतक नहींआया है इन्द्रजाल में देखकर बताइये कि इस समय वहकहां है और कैसे है यहसुनकर महेन्द्रने वहपुस्तक देखी और अपनाशिर पीटकर बोला कि उसे चपला बहुरूपिया मायारत्नका स्वरूपबनाकर मारनाचाहताहै और अमुकबन में उसे पर्वतपर लियेहुए बैठाहै यहसुनकर विचित्रमायाने अपनीसहेलीमायारत्नसे कहा कि तू शीघ्र जाकर उसको इस वृत्तांत से विदितकरदे किंतु उसे लेती भी आ जो यों न मानै तौमें तुझे यह भस्म देतीहूं इसको छोड़दीजो वहअचेत होजायगा और तब उसे ले आइयो निदान वह वह भस्म लेकर चलदी और जब उस बनके समीप पहुंची तब उसने दूरसे पुकारकर कहा कि

अरे सिंहसादी तू यह क्या कररहा है अपनी मृत्यु आप बुला रहा है यह जो तेरे पास बैठाहै इसको शीघ्र पकड़ले यह बहुरूपिया है यह सुनकर चपला घबराया और मायारत्नको आतेहुए देखकर कहा कि हे सिंहसादी परमेश्वरकी इच्छा हमारे तुम्हारे एक स्थानपर बैठनेकी नहीं है देखो कोई बहुरूपिया मेरा स्वरूप बनाकर तुमको छलने आता है उस समय सिंहसादी ऐसा कामासक्त होरहाथा कि उसको मायारत्नका आना बहुत बुरा मालूमहुआ और निश्चय होगया कि यह बहुरूपियाही है निदान उसने चपलासे कहा कि तुम छिपजाओ मैं इस मिथ्या मायारत्नको पकड़े लेताहूं यह सुनकर चपला एक झाड़ीमें छिपगया और सिंहसादी खड़ा होगया इतनेमें माया रत्न वहां आपहुंची और बोली कि हे सिंहसादी वह बहुरूपिया जो तुम्हारे पास बैठा था कहांगया वह बोला कि तुमको देख कर भागगया है और फिर उसने हाथमायारत्नका पकड़लिया और कहा कि क्योंरे दुष्ट तू मुझकोही बहँकाने आया है इसी समय मायारत्नरूपी चपला भी झाड़ीसे निकलआया औरबोलाकि हे सिंहसादी इस बहुरूपियेको न छोड़ना तब सिंहसादी ने एक पत्थर मायासे वेष्टित करके मायारत्नके मारा वह आसुरीमायामें बड़ी प्रवीण थी शीघ्र उसने अपना गाल माया करके लोहकासा बनालिया कि उसके कारण से उस पत्थरकीचोट न लगी नहींतो दूसरे का शिर उस पाषाण के प्रहार से चूर २ होजाता और फिर उसने विचित्रमाया की दीहुई भस्मसिंहसादी परडालदी कि उससे वह अचेत होकर गिरपड़ा यहदेखकर चपला घबड़ाया और फिर मायारत्नने कुछ पढ़करचपलाके पैरोंको स्तंभित करदिया इसके उपरांत उसने कुछमायाकी और उससे दो पाणि प्रकटहुए उसने उन दोनों पाणिको आज्ञादी कि इनदोनोंको उठाकर निष्प्रभ भवनमेंपहुंचादो यह सुनकर

वे पाणि विजली की सदृश चमककर उन दोनों पर गिरे और दोनोंको उठाकर ले चले मायारत्नभी उनके पीछे २ होली और निष्प्रभ भवनमें पहुंची और विचित्रमायासे कहा कि आपके भानजे तौ बहुत अच्छे हैं अपना परायाभी नहीं पहंचानते ऐसे उन्मत्त होगये कि मेरी मायासे वेष्टित पाषाणमारा यदि मेरे स्थान परकोई और होता तौ जीतानबचता लीजिये वहआपको भानजे यहआगये और यहवह बहुरूपिया है जिसको बामाङ्कमें लियेहुए बैठेथे और जिसके कारणसे मुझे पत्थरमाराथा अब मुझे आपकी सेवाकरना स्वीकारनहींहै मारपीट सहनेकी मेरी प्रकृति नहींहै यहसुनकर विचित्रमाया ने मायारत्नको आश्वासनकिया और सिंहसादी को सचेत किया जब सिंहसादी की आंखेंखुलीं उसने अपने सन्मुख विचित्रमाया और महेन्द्र को बैठेदेखा तुरन्त उटकर दण्डवत् की तब विचित्रमाया ने कहा कि क्यों रे तू बहुरूपियेको बामाङ्कमें लियेहुए बैठारहा अपने परायेको नहींपहिंचाना और मायारत्नके मायावेष्टित पाषाण मारा कुछ मेरा भी खयाल न किया तब सिंहसादी बोला कि मुझसे बड़ा अपराधहुआ और मैं बहुत लज्जितहूं तब विचित्रमाया ने चपलाकीओर देखकरकहा कि देखो इसमरेने कैसावेष बदला है देखा मायारत्न तुम्हीं बताओ कि क्योंकर सिंहसादी छलमें न आजाता तुम्हारे और इसकटेमरेके स्वरूपमें कुछभी अंतर है यहस्थान क्रोधकरनेकानहींहै क्योंकि जब स्त्री पुरुषका साथ एकान्त में होजाताहै तब बड़ेबड़ोंका चित्त डामाडोल होजाता है यह कहकर विचित्रमाया ने कुछ मायाकी कि उससे चपला का स्वरूप फिर ज्योंका त्यों होगया और जो जिनपदार्थोंसे उस ने अपना स्वरूप बदलाथा वह सबदूरहोगये और कहा कि जा मैं तुझे छोड़देतीहूं रानी निशाकरी से कहिदीजो कि तेरीमृत्यु क्योंआईहै जो अपनाकल्याणचाहतीहै तौ चन्द्रचूड़ाको लेकर

मेरे समीप चलीआ मैं महाराजसे तेराअपराध क्षमाकरादूंगी यहसुनकर चपलाबोला कि यहकुलटा अपनी जगहपर बैठी २ कैसी बातें बनाती है यह नहींजानती कि जो दिन प्राणबचे हैं सोईदिनहैं अन्तमें तौ मेरीलोथको गृद्ध और काग भक्षणकरेंगे रानी निशाकरी मानों इनकी चाकरहै सो दौड़ी चलीआवेगी यहसुनकर विचित्रमाया ने एकम्लेच्छको आज्ञादी कि इसअप्रियवादी का शिरकाटडालो यहसुनकर चपला ने अपने चित्त को एकाग्रकरके ईश्वर परमात्मासे विनयकी ॥

श्लोक ॥ त्वमेवमाताचपितात्वमेव त्वमेवबन्धुश्चसखात्वमेव ॥
त्वमेवविद्याश्चगुरुस्त्वमेव त्वमेवशरणंममदेवदेव ॥

सो० हे प्रभु कृपा निधान शरणागत में भक्त हौं ॥
रक्षहु अबममप्रान तुमबिन रक्षक मोरनहिं ॥

निदान परमात्माने उसकी विनयसुनी कि उससमय सिंहसादी ने कहा कि हेमौसी इसदुष्टके हाथसे मैंने बड़ानीचादेखा है इसको मुझेदीजिये मैं लेजाकर निशाकरी की सेनाके सन्मुख इसकावध करूंगा जिससे और सब इसकामरण देखकर ऐसा न करें विचित्रमाया बोली कि हे बेटा में अब तुझको न जाने दूंगी उसने कहा कि मुझको सबके सामने नीचा देखनापड़ाहै जो मुझको न जानेदेगी तौ मैं अपना शिर आप काटडालूंगा और यहकहकर उसने खड्गनिकालकर अपनी ग्रीवा काटना चाही परन्तु विचित्रमायाने उसकाहाथ पकड़लिया और बहुत कुछ समझाया परन्तु उसने एक न माना अन्तको लाचारहोकर उससे कहा कि अच्छा शीघ्रजाकर इसको सेनाके सन्मुख मारकर और शत्रु सेनाको भी शीघ्र विध्वंसकरके चलाआ मैं तेरी सहायता के लिये बड़े२ मायावी दानवोंको भेजूंगी निदान सिंहसादी ने कुछमायाकी कि एकसिंह प्रकटहोगया और सिंहसादी उसपर चपलासहित सवार होकर अपनी सेनाकी ओर

चलदिया परन्तु यहां उपहासने जब से चपलाको मुक्तकराया था उसके थोड़ीदेर के पीछेसे उसे ढूंढ़नेलगा और बन और उपबन सबस्थानों को ढूंढ़ा परन्तु उसका कुछ खोज न लगा और सूर्यअस्तहोकर वहसमयआया कि आकाशमें तारागणों ने अपना प्रकाशकिया और चन्द्रमाकी किरणें सबदिशा और विदिशामें प्राप्तहोगईं॥

चौ० गिरि वन उपवन चन्द्र प्रकासे। कुमुदिनि सरवर कुमुद बिकासे॥
नभमण्डल कौमुदी मनोहर। भई विभाति परम शोभाकर॥

उससमय उपहास चपलाको ढूंढ़ताहुआ उसबनमें पहुँचा जहांसे चपला पकड़ागयाथा और मायारत्न उसे स्तंभितकरके लेगईथी वहांपहुँचकर वह एकक्षणभरही ठहराहोगा कि सामने से उसने सिंहसादीको चपलासहित सिंहपर सवारआते देखा देखतेही समझा कि चपला पकड़ागया है निदान उसने तुरन्त कागजलेकर इसप्रकारसे लपेटकर बंद किया कि यदि उसको कोई खोलनेचाहे तौ जबतक बलसे न खींचे न खुले और उस के भीतर मूर्च्छाकर चूर्णभरके और ऊपर उसके विचित्रमाया की ओरसे पत्रकासरनामा लिखकर और उसपर विचित्रमाया के हस्ताक्षरबनाकर म्लेच्छोंकासा भेषकरके चला और पीछेसे जाकर सिंहसादीको पुकारा वह दूरनिकलगयाथा परन्तु उपहास की टेरसुनकर ठहरगया और जब उपहास उसके समीप पहुँचा तब उसने पूछा कि तू कौन है वह बोला कि मैं विचित्रमायाका प्रेरित आयाहूं सिंहसादीने कहा कि मैं अभी तौ वहां से चलाआताहूं मैंने तुमको तौ वहां नहीं देखाथा मुझे आते देरनहींहुई कि उसका प्रेरित मनुष्यभी आया उपहासको उस के वहांसे आनेजानेका तौ कुछ वृत्तान्त मालूमही न था उत्तर क्यादेता परन्तु उसने अपनी तौरीचढ़ाकर कहा कि मैं यहकुछ नहींजानताहूं मुझेतौ यहपत्रदियाहै इसेपढ़ो और इसकाउत्तरदो

क्या नौकर सदैव विचित्रमायाकी छातीपर चढ़ेरहतेहैं मैं अपने स्थानपरथा मुझेबुलाकर यहपत्रदिया औरकहा कि इसकोशीघ्र सिंहसादीके पास लेजा और उत्तरलेकर शीघ्र चलाआ सो मैंने वहीपत्रलाकर तुमकोदियाहै अब तुममुझसे मीन मेष छांटतेहो यहसुनकर सिंहसादी बोला कि यह रात्रिका समयहै मेरेसाथ सेनामें चलो वहां इसकोपढ़कर मैं उत्तरदूंगा उपहास ने कहा तौ अच्छा तुम किसीकेहाथ उत्तर भेजदेना नहींतौ तुमतौ मायावीकर्तव्यमें बहुतनिपुणहो मायासे प्रकाश उत्पन्नकरलो और जो बुरानमानो तौमैं प्रकाशकरदूं यहसुनकर सिंहसादी लज्जितहुआ और फिर उसने पृथ्वीमेंसे एकलकड़ी उखाड़ली और मायाकी कि वह दीपककीभांति जलनेलगी तब उसने वहजलतीहुई लकड़ी उपहासको दिया और कहा कि इसे लियेरहो मैं पत्रको पढ़लूं उपहासने थोड़ीसी मूर्च्छाकर चूर्ण उस जलतीहुई लकड़ीपर डालकर आगेको बढ़ाई और सिंहसादीके मुखके समीप करदी उसने अपनेमुखको हटाया परंतु धूमतौ उस के नासिकाकेद्वारा ब्रह्मांडमें जाहीचुकाथा और कुछ जलभी वहघुमेरखाकर पृथ्वीपर गिरपड़ा गिरतेही उपहास ने एक खड्गका प्रहारकिया कि उसकाशिर कटकर पृथक्होगया और बड़ाभारी कोलाहलहुआ चपला मुक्तहोकर भागा और उपहासने बनका मार्गलिया परंतु चपला दौड़ाहुआ अपनी सेनामें गया और पद्मावती और रानी निशाकरी से कहा कि सिंहसादी तौ मारा गया तुम अपनीसेनाको शीघ्र सन्नद्धकरके उसकीसेनापर छापा मारो यहसुनकर पद्मावती ने मायाकृत बांसुरीबजाई सबसेना शीघ्र तयारहुई और शूरवीरलोग मयूरआदि अनेक मायाकृत वाहनों पर सवारहोगये और पद्मावती और रानी निशाकरी दोनों चालीससहस्र सेनासहित सिंहसादीके अरक्षित सेनापर अकस्मात् जागिरे और लोहनयी अग्निगोलक और मायाकृत

शूची वाणोंकी वर्षाकरनेलगे सिंहसादीकी सेनातो सन्नद्धनथी क्षणभरेमें सहस्रोंम्लेच्छ मारेगये वायु प्रचंडचलनेलगी आका-शसे वज्रपातहोनेलगे और चारोंओरसे निम्बुक और नारिकेल आदि आसुरी अस्त्रोंकी वर्षा होनेलगी उनसे सहस्रोंम्लेच्छ और दानव कटकटकर रुंडमुंडहोगये और चारोंओरसे रुधिर की धार बहनिकली इस अवसरमें प्रहासने वनमें नीयताम् गृह्यताम् का शव्दसुना और वह दौड़ाहुआ आया देखा कि सिंहसादीकी सेना कटरहीहै तुरंत उसने भी अपनाखड्ग निकाला और मरुतदत्त वस्त्रको कंधे पर इस प्रयोजनसे डालकर कि मायावी म्लेच्छोंके बीचमें जा पडूंगा तो इसे ओढ़कर गुप्तहो-जाऊंगा सेनामें घुसगया और युद्ध करना प्रारम्भकिया जब अस्त्रपात करताथा छै छै योद्धाओंकेपैर एकप्रहारसें काटडालता था और जब ऊर्द्धपात करता था योद्धाओंके कंधोंपर जाखड़ा होताथा और जो कोई योद्धा उसका पैर पकड़ लेताथा उस का शिर तुरंत काटडालता था और उनकी कमर से द्रव्यकी हिमियानी काट काटकर थैलीमें डालता जाताथा और जब युद्ध करते २ किसी शत्रुकी सिविर अथवा तंबूकेसमीप पहुँचजाता था तब वरुणदत्त जालमारकर तंबू शय्या आदि सब पदार्थों को समेटकर थैलीमें डाललेता था जब यह युद्धकी धूमधामका शव्द राजपुत्र भानुविक्रमके कानमें पड़ा वह तुरंत सब शस्त्र धारण करके चला महारानी चंद्रचूड़ाने उसके साथ पचास मायावी म्लेच्छ करदिये और कहदिया कि तुमलोग राजपुत्र को मायावी म्लेच्छोंके मायाकृत प्रहारोंसेरक्षाकरना और वे गुप्त उसकी रक्षाकरतेहुए उसकेसाथ होलिये और महारानी चन्द्र-चूड़ाभीपद्मावतीके लायेहुए विमानपर बैठकर शूरवीरोंसे आवृत रणभूमिमें आई भानुविक्रमने रणभूमिमें पहुँचकर अपनाखड्ग निकाला और सव्य और अपसव्य मंडलबांधकर म्लेच्छगणों

को मारना आरंभकिया और थोड़ीदेरमें उस स्थानको रुंडमुंडों सेपाटदिया और गर्जगर्जकर शत्रुओंके हृदयको निम्नलिखित शब्दोंसे विदीर्णकिया ॥

तोमरछंद। ममभानुविक्रमनाम। बलभानु सम अभिराम ॥
असिवाहिअतिशयचंड। करिहौंमलेच्छ निखंड ॥
गुरुगदा के गुरुघात। वरसव्य मण्डलपात ॥
अरुबाण वृष्टि अघोर। करिकरब संगर घोर ॥

एकओरसे पद्मावती मायासे अग्नि और जलकी वर्षाकरतीहुई चली आतीथी निदान ऐसा युद्धहुआ कि शत्रुके दलमें भगदड़ परगई परंतु जो शूरवीरथे उन्होंने मुखनहींमोड़ा और प्रहार करते और दूसरेके प्रहारको सहतेहुए रणमें स्थिर रह कर युद्ध करतेरहे उस दिन भानुविक्रमने गदाके प्रहार और असिकी मारसे सहस्रों म्लेच्छोंको यमलोकमें पहुँचा दिया और बाणोंकी वर्षाकरके प्रलयकाल मचादिया ॥

महिखरीछंद। करि उग्रअस्त्रअमंदको सुप्रयोग सेनापतिहते।
बलभरेअचल अनेकभट म्लेच्छाधिपतिकेहितरते ॥
कोदंडवर गंभीरसों निर्मुक्त अनुपम शरघने।
रथतुरंग गजनर धनुपध्वजशर भयेकाटतअनगिने ॥
जेवीरतहँ धरिधीरताक्षण बलकिकें सन्मुखभये।
भिदिशरन सोंते सकलतनताजि तुरतहीयमपुरगये ॥
सबदिशिविदिश सबशरवरनसों पूरिसोअतिरिसभरे।
नरनाग हयके रुधिरकी वरनदी तहँविरचितकरे ॥

अंतमें सबम्लेच्छ और दानव रोते पुकारतेहुये रक्तवाहिनी नदीको उल्लंघनकरके निष्प्रभ भवनमेंपहुँचे महेन्द्र और विचित्रमायाको सिंहसादीकी सेनाके भागआने का हाल विदितहुआ विचित्रमायाने पूछा कि मेरेबच्चेकी कुछखबरहै भागेहुओंने विनयकी कि महारानी उनको तो बहुरूपियों ने श्रीमहारानीके समीपसे जातेहुये मार्गमेंही मारडालाथा यहसुनकर विचित्रमाया

ने अपनाशिर पीटडाला औरकहा कि हाय हाय मेरे प्यारे२ बेटे को इनकटेमरे वहुरूपियोंने न छोड़ा चारोंओर करुणाविलाप फैलगया महेन्द्रने उससमय कुछमायाकी कि उससे बड़ीआंधी चली और वहआंधी सिंहसादीकी लोथको उड़ाकर निष्प्रभ भवनमें लेआई सबम्लेच्छोंने शोकवस्त्र अर्थात् कालेवस्त्र धारणकरलिये और मृतकका शारीरिक संस्कारकरनेका उद्योगहोने लगा और यहां रानी निशाकरी ने शत्रुकी सेनाका डेरा तंबू आदि सब सरंजाम लूटलिया और जयदुंदुभी वजवाई और सेनाको उस स्थानपर उतारा जहां सिंहसादीकी वाहिनीपड़ीथी यहांसे रक्तवाहिनी नदी सन्मुख दीखतीथी और हैहयदेश का गढ़भी समीपथा जब सेना उतरचुकी तब बहुरूपिये भी सेना मेंचलेआये सभामें चन्द्रचूड़ा सिंहासनपर विराजमानहुई सब ने भेंटेंदीं सबको वस्त्र और रत्न अधिकारके अनुसार दियेगये गंधर्विणी आकर नृत्य और गानकरनेलगीं और इसी आनन्द में प्रातःकाल होगया और मार्तंडरूपी राजाधिराजके उदयहोनेसे तारागणरूपी शत्रुदल रणभूमिरूपी आकाश से अस्त होगया॥

दो०। इन्दीवर विकसे सरनि उदयभानु अवरेखि।
जगेजीव जगचर सकल विगतनिशा तमदेखि॥

निदान प्रातःकाल होनेपर महेन्द्रने वड़ी धूमधाम से सिंहसादी के शरीर का संस्कार किया और जब उससे निवृत्तहुए विचित्रमायानेकहा कि महाराज अब मुझको आज्ञा दीजिये कि मैं जाकर इन अधर्मियों को मारकर दण्डदूं यह सुनकर महेन्द्र ने कहा कि अबकी मैं ऐसे किसी मायावी को भेजताहूं कि वह प्रथम जाकर इन वहुरूपियोंकोही मारे और उसको किसी पदार्थ से मूर्च्छा न होय और न कोई अस्त्र उसपर चले यह कह कर उसने कुछ माया की और पुकारा कि हे वज्रांगी शीघ्र

आओ पुकारतेही एक म्लेच्छ बड़ा लंबा चौड़ा भयानक शरीर रखनेवाला अग्निरूपी एक गैंड़ेपर सवार वहां आया और महेन्द्रको दण्डवत् करके आज्ञापूछी महेन्द्रने कहा कि आज कल इसमायाकृत देशमें बड़ा अंधेर होरहा है कुछ बहुरूपिये आयेहैं वे बड़ा उत्पात मचारहे हैं देखो सिंहसादीभी मारागया में अबतक तो इसकारणसे तरह देतारहा कि ये सबलोग अब भी अधर्म छोड़कर आज्ञामें चलनेलगें परन्तु अब इनकी मृत्यु निकट आई है इससे तू बारहसहस्र मायावी म्लेच्छोंकी सेना लेकरजा और इनसब दुष्टोंको पकड़कर लेआ और तेरे साथ बारह लोहमयी पुतली किये देताहूं कि वे न मूर्च्छितहोंगी और न उनको कोई मारसकैगा यह पुतलियां सबको पकड़कर तेरेहवाले करदेंगी यह कहकर महेन्द्रने कुछ मायाकी और वह बारहों लोहमयी पुतलियां पृथ्वीसे निकलकर वहां आकर उपस्थितहुईं महेन्द्रने उनको आज्ञादी कि तुमसब वज्रांगीकेसाथ जाओ और जोकुछ यह आज्ञादे उसको करो यह सुनकर वज्रांगीने कहा कि हे महाराज इन पुतलियोंका क्याहोगा मैं एकाकीही बहुतहूं क्योंकि जबसेरों मूर्च्छाकर चूर्ण डालकर मद्यपीता हूं तबतो मुझको आवेश होताहै शरीरपर मेरे कोईशस्त्र लगता नहीं न मेरा कुछ बहुरूपिये करसकते हैं मायावी और मल्ल भी मुझसे युद्धनहीं करसकते हैं महेन्द्र बोला कि लेजानेमें कुछ अनिष्टभी तो नहीं है कुछ कार्यही सधैगा लेतेजाओ और आज्ञाका पालनकरो यह सुनकर वज्रांगी महेन्द्रको दण्डवत् करके बारहसहस्र मायावी म्लेच्छोंकी सेनालेकर उन बारहों पुतलियों सहित बड़ी धूमधामसे चला साथउसके तंबूडेरे और अस्त्र शस्त्र आदि सब युद्ध और आनन्दका सरंजाम वाहनोंपर लद लदकर चला और हटो बचोका शब्द होनेलगा॥

जयकरीछंद। महाबली सेनाके शूर। युद्धोत्सुक विक्रमसों पूर॥

लीन्हैमायाकृत सबअस्त्र। चलेचपलहा अरिदलयत्र॥

निदान वहांसे चलकर वहसेना रक्तवाहिनी नदीको उत्तीर्ण करतीहुई वहां आई उससमय सेनाके वाद्योंका शब्द सुनकर रानी निशाकरी ने मायाकृत पक्षी समाचार लानेको भेजे और वे उड़कर शत्रुसेनामें पहुंचे और सबवृत्तांत वहांका लेकर लौटआये और राजसभामें आकर रानी चन्द्रचूड़ासे प्रशंसापूर्वक कहने लगे॥

चौ०। तेजअखंड सूर्य सम जाको। महा अपूर्व रूप वरभाको॥
जाकर विक्रम शीलसुभाऊ। शत्रुमथन रण कर्मउछाऊ॥
वरणतरहत सकल नरनारी। लहहिसोविजयसुमंगलकारी॥
करहि मनोरथ सो जगजेते। विन प्रयासहोवें सिधितेते॥

श्रीमहारानीका चित्त सदैव प्रसन्नरहै शत्रु सर्वदा खिन्नरहै हमारी विनयहै कि एकदानव वज्रांगी नामका सेना लेकर युद्ध की इच्छासे आयाहै यह कहकर वेपक्षी चलेगये और शत्रुसेना का नवीन वृत्तांत देखनेको सेनाके समीप वृक्षोंपर जाबैठे और यहां रानी निशाकरीने प्रहाससे कहा कि ईश्वर अब रक्षाकरै यह दुष्ट बड़ा प्रवलहै मेरींतो मूर्च्छाकर चूर्ण मद्यमें पीजाता है और मूर्च्छित नहींहोता है शस्त्र कोई उसके अंगको नहीं काट सकताहै मायाका कोईतंत्र उसपर नहींचलताहै निदान न मारे मरताहै न काटेकटताहै यहसुनकर प्रहासबोला कि परमेश्वर की सहायता चाहिये सैकड़ों बड़ेमायावी और प्रबल इससंसार में होगये हैं जिन्होंने ऐसे २ वरदान तपकरके लिये कि सोते बैठते जागते चलते फिरते दिनको न रातको कभी मृत्यु न आवे और ईश्वरने अपनीईश्वरता दिखानेको वह वरदानदिये और मोहसे उनको विश्वासहोगया कि अब हम न मरेंगे जब हमारी इच्छा होगी तभी मृत्यु आवेगी परंतु वे भी अधर्मकरनेसे मारे गये और नरकगामीहुए तुमने राजा विश्वसेनका इतिहास सुना

होगा जिसन तपकरके ऐसेही वरदान लियेथे और अंतको अ
मकेफलसे कैसामरा कि वहघोड़ेपरसे उतरताथा और पैर उसका
पृथ्वीपर नहीं आनेपायाथा कि उसके वधकर्ता पहुँचगये और
उसको प्रातःकालकी वेलामें मारडाला यह वज्रांगी विचारा कि-
नमेंहै और उसका स्वामी वह महेन्द्र क्यापदार्थ है और वहवर्ण
संकर मिथ्या ईश्वर अद्भुतही क्या है जिसने उस सच्चिदानन्द
परमात्माको त्यागकरके आपअपनेको ईश्वर बनायाहै और यह
लोक और परलोक दोनोंखोदिया है देखो महाराज शत्रुंजयके
भयकेमारे कैसा घरघर घूमता फिरताहै और कहीं ठिकाननहीं
पाताहै इससे हेरानी निशाकरी तुमउसी ईश्वरपर अपना वि-
श्वासदृढ़रक्खो यदि तुमपर कोई बड़ीआपत्ति भी आवेतो भीउस
से अपना विश्वास मतहटाओलो मैं जाताहूं और उसवज्रांगी
का वध करताहूं यह कहकर प्रहास तम्बूसे निकलकर चल
दिया और बहुरूपिये तो पहिलेही शत्रुकी सेनाका आगमसुन
कर चलेगये थे और उपहास वनमें था और शत्रुकीसेना जब
से आई थी तबसे कुछकार्य साधन करनेका यत्न सोचरहा था
परंतु अब प्रथम प्रहास और चपला और उपदेशीका वृत्तांत
सुनिये कि ये तीनों बहुरूपिये अपना वेष मायावी म्लेच्छोंकासा
बनाकर वज्रांगी की सेनामें आये और प्रहासने सिविरकेद्वार-
रक्षकके पास जाकर कहा कि तुम जाकर वज्रांगीसे कहदो कि
एक मनुष्य काल कंटक नामी आपसे मिलने आयाहै द्वारपा-
लकने जाकर खबरकी वज्रांगीने कहा कि अच्छा आनेदो तब
उसने आकर प्रहाससे कहा कि जाइये आपको बुलाते हैं प्र-
हास यह सुनकर भीतरगया और देखा कि वज्रांगी एक ऐसे
उच्च आसन पर बैठा है जिसमें से सहस्रों अग्नि शिखानिकल
रहीहैं अग्निरूपी करधन कमरमें पहिरे है शिरपर अग्निकी
सदृश जाज्वल्यमान मुकुट धारण कियेहैं चारों ओर बड़े २

भयंकर दानव आसनों पर बैठे हुएहैं और लोहमयी पुतलियां हाथोंमें खड्ग लियेहुए टहलरहीं हैं और जब बोलतीहैं उनके मुखसे अग्निकी ज्वाला निकलती हैं और बंदीजन और सूत और मागध खड़े हुएहैं निदान जब प्रहास भीतरगया और वज्रांगी को दंडवत्की उसने दंडवत् लेकर देखाकि एकमायावी म्लेच्छ जिसके शिरसे काले सर्प बँधेहुएहैं बारबार जिह्वा निकालते हैं मालामोती की गलेमें डाले सुवर्ण की करधन पहिरे झोली तान्त्रिक विद्याकी लिये आताहै उसने समझा कि यह कोई बड़ा मायावीहै और प्रहासको समीप बुलाकर बैठने को उत्तम आसनदिया प्रहास उसपर बैठगया वज्रांगीने पूछा कि आपकौन हैं और यहां आनेका क्या प्रयोजनहै वह बोला कि मैं हैहय देशका वासीहूं रानी निशाकरीने मेरा सबघरद्वार छीन लियाथा मैं उसकी सरोबरी नहीं करसका इससे बहुतकालसे उसके विध्वंसन करनेकी चिंतामेंथा अबजो आपका आगमन सुना मैं बहुत प्रसन्नहुआ और आपसे मिलनेको चलाआया वज्रांगी बोला कि आपने बहुत श्रेष्ठ किया जो मेरे पास चलेआये यह आपकाघर है मैं इनदुष्टोंको मारकर महाराज महेन्द्र से आपका सब असबाब और घर द्वार दिलादूंगा यहकहकर वज्राङ्गीने प्रहासको उत्तम वस्त्रदिये प्रहास ने भेंटदी और मंत्रीबनकर बैठा और उधर उपदेशी प्रचंडभी सेनामें फिररहेथे और चाहतेथे किसी प्रकारसे वज्राङ्गीके डेरेमें जाय कि इतनेमें उन्होंनेदेखा कि दोभृत्य उस सिविरसे निकलकर एकओरको जारहेहैं ये बहुरूपिये उनके पीछे २ होलिये और जबदेखा कि एकांतमें पहुँचगये हैं तब पीछेसे पुकारा कि भाई थोड़ीदेर ठहरना वे भृत्य उनकी टेरको सुनकर ठहरगये जब येदोनों बहुरूपिये उनके समीपपहुँचे भृत्योंसेकहा कि भाइयो हम थोड़ासा सुगंधिततैल बेचनेको लायेथे परंतु वज्राङ्गीके

समीप नजासके तुम अपनीमारफत विकवादो भृत्योंनेकहा कि अच्छा दिखाओतो कि कैसातैलहै तब बहुरूपियों ने कमर से दोशीशी निकालकरदी उनको खोलकर जो उनभृत्यों ने सूंघा दोनों मूर्च्छितहोगये तब बहुरूपियों ने उनके वस्त्र उतारलिये और दोनोंको एकगर्तमें फेंककर अपनास्वरूप उनकासा बनाया और उनके उतारेहुये वस्त्रोंको धारणकरके बज्राङ्गीकी सिविरमें चलेगये और उसकी पीठकेपीछे खड़ेहोगये इसीअवसरमें प्रहासने जो कालकंटकके नामसे अपनेको बताकर बैठाथा मूर्च्छाकर चूर्ण मिलीहुई वारुणीसे एकपात्रभरकर बज्राङ्गीको दिया वह उसपात्रको निर्भयतासे पीगया और मूर्च्छाकर चूर्ण ने कुछ अपनागुण न दिखाया परंतु बज्राङ्गी उसमद्यको पीकर उसके स्वादसे जानगया कि इसमें मूर्च्छाकर चूर्णमिलाहै और सोचा कि यह कालकंटकनामी कोई बहुरूपियाहै यह सोचकर उसने कुछमाया ऐसीकी कि प्रहास उसीआसन से चिपटगया जिसपर बैठाथा और फिरकहा कि अरे बहुरूपिया मैं तुझको पहिचानगया तू मुझको मारने के लिये आयाहै ला जितना मूर्च्छाकरचूर्ण तेरेपासहो मुझेपिलादे यहसुनकर उपदेशी और प्रचंडबहुरूपियोंने जो पीछेखड़ेथे आपसमें कहा कि जो यह मूर्च्छाकर चूर्णसे अचेतनहो तौ खड्गकेप्रहारसे इसको मारडालें यही नहोगा कि पकड़जायँगे परमेश्वर रक्षकहै यहकहकर दोनों ने दाहिनीऔर बाईओरसे बड़ेतीक्ष्ण खड्गों के प्रहारकिये परंतु वेखड्ग झंझना झंझनाकर टूटगये और दोनोंजने वहांसेभागे यहदेखकर बज्राङ्गीने कुछमायाकी कि उसके प्रभावसे वे दोनों मुहकेबल पृथ्वीपर गिरपड़े और फिर म्लेच्छगणों को आज्ञा पकड़नेकी दी वे प्रहासको उपदेशी और प्रचंडसहित पकड़कर लेगये बज्राङ्गीने आज्ञादी कि मेरे डेरेकेसमीप एक तंबू और खड़ाकरो और उसमें इनको क़ैदकरो भृत्यगणोंने वैसाही किया

और जब डेरा खड़ाहोगया और उसमें ये तीनों बहुरूपिये कैद करदियेगये तब उसने कुछमायाकी कि उससे उसतंबूके चारों ओर अग्निका प्राकार बनगया और फिरकहा कि महाराज महेन्द्रकी कृपासे आतेही पहिले बहुरूपिये पकड़गये अब युद्ध के वाद्यबजावो कि निशाकरी को भी नाशकरूं यह सुनकर नगाड़े बजनेलगे और मायाकृत तूरको भी शब्दितकिया उसको सुनकर सबसेनाके योद्धा यह समझकर कि कल शत्रुकीसेना से युद्धहोगा अपने२अस्त्र शस्त्रोंको ठीककरनेलगे और मायाकृत पक्षियोंने आकर दण्डवत्‌की और निशाकरी से विनयकी कि तीनबहुरूपिये पकड़गये हैं और शत्रुसेनामें युद्धके वाद्यबजरहेहैं यहकहकर वहपक्षी फिर वहीं चलेगये और रानी निशाकरी ने महारानी चन्द्रचूड़ा से कहा कि आपने सुना कि बहुरूपिये तो पकड़गये और अब हमारीसेना में कोई ऐसानहीं है जो बज्राङ्गी से युद्धकरसके यदि तुमचाहो तो आजरात को भागकर कहीं छिपरहें नहीं तो सब मारेजायँगे मुझको इस मायाकृत देशके बाहर जानेका मार्ग मालूम है मैं तुम सब को बाहर निकाल कर महाराज शत्रुंजय के पास लेचलूंगी वह आपही आवेंगे तबहीं इसमायाकृत देशके महाराजसे युद्ध हो सकेगा यह सुनकर भानुविक्रमने कहा कि हे रानी प्रहासआदि बहुरूपिये सहस्रोंबार पकड़ जातेहैं औरफिर छूटजातेहैं उनकी चिंता मतकरो और युद्धके वाद्य तुमभी बजवाओ क्षत्रीके लिये युद्धसे भागनेकी बराबर दूसरा बुराकर्म नहींहै औरहम भागकर आयंगे भी तो महाराज शत्रुंजय हमको सेनासेबाहर निकलवा देंगे और कहेंगे कि भाग क्यों आये रणमें प्राणक्यों न दिये अब मेरेपास तुम्हारा कुछ कामनहीं है इससे हे रानी निशाकरी तुम्हारी इच्छाहोतो तुमभागके चलीजावो तुमको स्त्रीजानकर वह तुम्हारी रक्षाकरेंगे परंतु मैं तो कदापि नजाऊंगा यह सुनकर

रानी निशाकरीने कहा कि हमसबतो आपहीके साथ हैं जो आपही की यह इच्छा है तो युद्धके वाद्य बजने की आज्ञादीजिये यह सुनकर भानुविक्रमने सेनापतियोंसे कहा कि हमारी सेनामेंभी युद्धके वाद्य बजायेजावें आज्ञा पातेही बजंत्री दौड़े औरडंकेपर चोट पड़नेलगी और सेनाके सब योद्धा युद्धके लिये सन्नद्ध होनेलगे कि थोड़ीदेर में सूर्य अपनी किरणों के तेज को आकर्षण करके अस्ताचल अवलंबी हुआ और उदयाचल की शिखरसे निशापतिके आगमन का समय हुआ॥

सो० दिनमणि को गतजानि कलाकलानिधि ने धरी।
व्योम भयो सुखखानि पाय सुशीतल कौमुदी॥

शूरबीर अपने अस्त्रशस्त्रोंको ठीककरनेलगे और युद्धमें प्राणान्त करने पर तय्यारहुए और रानी निशाकरी और पद्मावती ने चार सौ बड़े २ मायावी म्लेच्छों को बुलाकर अग्नि प्रज्वलितकी उसमें प्रकार २ के जीवोंका बलिदान करके आहुतिदी और मोमके सर्प बना २ कर अग्निमें डाले और कहा कि जब बुलावें तब आना और लोहबान आदि अनेकपदार्थों से धूप देकरमायाकृत अनेक तंत्र बनाये और मंत्रोंका उद्धार किया और भानुविक्रमने अपनी सेनाको सन्नद्धकिया औरजो लोगमाया आसुरी नहीं जानते थे उन्हों ने खड्गआदि शस्त्रों की धारको तीव्र किया निदान इसी प्रकारसे दोनों दलोंमें रात्रि भर युद्ध का सरंजाम होतारहा रक्षक फिराकिये और वाद्यबजा किये कि रात्रि व्यतीत हुई अंधकार क्रम क्रमसे दूरहोने लगा और मार्तंड अपनी प्रभाके तेज से तारागणों की प्रभाको नष्ट करताहुआ प्राची दिशासे आकाश मंडलमें प्रकटहुआ॥

चौ० उदय होत दिनपति को जानी। कलानिशापति की बिलगानी॥
भये अस्त तारागण भारी। जिमि मृग सिंह देखि विकरारी॥
सार्वभौमजिमिमहि भ्रमिगजत। तिमिसकाशभोदिनमणिछाजत॥

निदान प्रातःकाल होने पर भानुविक्रमने ईश्वर को स्मरण किया और नित्य क्रियासे निवृत्त होकर महारानी चन्द्रचूड़ा की सिविर पर आया उससमय रानी निशाकरी और पद्मावतीने सब सेनाको वाहिनी वरूथिनी और पत्तिआदि विभागकरके व्यूह रचना सहित सब सेनापतियोंके साथ २ युद्धभूमि की ओर निर्याणकिया और आप दोनों महारानीके समीप चलीआई महारानी चन्द्रचूड़ा बड़े वैभवसे निकलीं सबने यथायोग्य दण्डवत्की औरफिरपद्मावती सहितमायाकृतविमानमें बैठकररणभूमिकी ओर चलीं उनके साथ साथ भानुविक्रमआदि सबमहाशय होलिये और चोबदार हटो बचो पुकारतेहुए आगे आगे भागने लगे और युद्धके भेरी और तूर आदि वाद्योंका शब्द दुस्सह होनेलगा॥

सो० रथी गजी असवार ध्वजी पदादी युक्त वह।
सेनाप्रलय प्रसारलसतभई कालाग्निसम॥
मायाविदजे वीर ग्रहण किये मायास्त्रसब।
नहिं जानतजे वीर शस्त्रमानुषी तिनगहे॥

निदान वह सेना चलकर रणभूमिमें आई उधर परदल में बज्रांगी रात्रिभर अपनी मायाके प्रयोगोंको ठीककरतारहा जब प्रातःकालहुआ वह अपनेगेंड़ेपर सवार होकर बारह सहस्रमायावीम्लेच्छ और नंगे खड्गों को लियेहुये बारहों पुतलियों सहित रणभूमि की ओरचला गेंड़ा उसका तरंगें भरताहुआ आगेबढ़ा और शत्रु सेना सब बड़ी धूमधामसे घंटा भेरीतूर्य और शंखोंका शब्द करतीहुई रणभूमिमें पहुंची मायावी म्लेच्छोंने रणभूमिपर बिजली गिराकर सबभाड़ी भंकारको भस्म करदिया और जल वर्षाकर धूलको शांतकिया फिर दोनोंदलों में व्यूह रचनाहुई और दोनों दलके कवीश्वरोंने रणभूमिमें निकलकर शूरबीरोंको रणका उत्साह दिलाया॥

जयकरीछंद ॥ सुनहु शूरसब अतिबलधाम। शिक्षा हमरीलेहु ललाम ॥
इविधिदिखावहुरणमेंकर्म। मिटहि नाम अर्जुनकोशर्म ॥
मारिशत्रुदलजय यशलेहु। क्षात्र धर्मकरि तनतजिदेहु ॥
उभयप्रकार होइकल्यान। मरेस्वर्ग जीये बड़मान ॥

निदान जब कवीश्वर उक्त प्रकारसे कहकर हटे वज्रांगीने अपना गेंडा रणभूमिमें बढ़ाया और ललकारकर कहा कि अरे अधर्मियो रणभूमि में आओ और जो कुछ बलरखतेहो दिखाओ यह सुनकर मारीचने अपने यानको बढ़ाकर महारानी चन्द्रचूड़ा से युद्धकी आज्ञाली और बज्रांगीके सन्मुखआया उसने कहा कि जो कुछ तुझको प्रहार करनाहो कर यह सुनकर मारीचने मायाकी उससे महा अन्धकार होगया औरअंतरिक्षसे वज्रांगी पर बाण और भल्लआदि शस्त्रोंकी वर्षा होनेलगी तब वज्रांगीने प्रभाकरी मायाका प्रयोगकिया उससे अंधकारनष्टहोगया और शस्त्रोंकी वर्षा भी मिटगई और एकलोहमयी अग्नि गोलकको मायासे वेष्टितकरके मारीचके मारा कि उसके धूंएकी घ्राणसे मारीच अचेत होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा वज्रांगीनेएक पुतली को आज्ञादी कि इसे पकड़ला वह आई और मारीचको बांधकर लेगई यह देखकर उसकेसाथी मायावी म्लेच्छोंने चन्द्रचूड़ासे युद्धकीआज्ञाली और एक एकबढ़कर बज्रांगीकेसन्मुख गया परंतु जो गया उसीको उसने मायावेष्टित नारिकेलअस्त्र मारकर अचेत करदिया और पुतलीसे पकड़वालिया निदान फिर रानी निशाकरी सन्मुख गई और उसने ऐसी माया की कि महाप्रचण्ड बायु चलनेलगी और उससे बज्रांगीका नारिकेलअस्त्र नष्टहोगया और फिरनिम्बुक अस्त्रको पृथ्वीमें प्रवेश किया कि उससे एक महासर्प मुखसे ज्वाला छोड़ताहुआ निकला और उसने ऐसा श्वास खींचा कि वज्रांगी उस श्वाससे खिंचताहुआ उस सर्प के मुखकी ओरचला तब बज्रांगी ने

पुतलियों से पुकारकर कहा कि दौड़कर मुझे बचाओ इसे निशाकरी दुष्टाने बड़ी प्रबल माया की है यह सुनतेही वे मायाकृत पुतलियां दौड़कर उस सर्प के लिपटगईं और चीर फाड़कर रानी निशाकरीके आ लिपटीं उससमय रानी निशाकरीने अनेक प्रकार की मायाके प्रयोग किये परंतु उन पुतलियों को किसीसे कुछनहुआ तब महारानी चन्द्रचूड़ाने सब सेनाको आज्ञादी कि निशाकरीको पुतलियोंसे मुक्तकरो यह सुनकर वह सेनाचारोंओरसे समुद्रकीभांति उमड़ी और मायावी मायासे बिजलियां चमकाने और भयंकरशब्द करनेलगे और अनेक प्रकारके मायाकृत अस्त्रोंकी वर्षाकी यह देखकर वज्रांगी ने चार नारिकेलअस्त्रोंको चारोंदिशाओंमें फेककर पृथ्वी में प्रवेश करदिया उनसे पृथ्वीमें से अग्नि प्रकटहुई और चन्द्रचूड़ाकी सेनाके चारोंओर एक अग्निका परकोटा बनगया और उसके धूएनें सेना के ऊपर मंडपसा बनादिया कि जो कोई उसमेंसे नीचेसे निकलना चाहता था उसको अग्नि उस परकोटेकी बढ़कर भस्म करडालती थी और जो आकाशमार्गसे जाना चाहता था उसको वह धूआ अचेत कर देता था निदान सब सेनातो इस आपत्तिमें फंसगई और रानी निशाकरीने उनपुतलियोंसे छुटनेका बहुतकुछयत्नकिया परंतु कुछबस नचला और वे पुतलियां उसको बांधकर वज्रांगीके सन्मुखले गईं उसने रानी निशाकरी और मारीचके मायाकृतनिगड़ डलवादिये और सेनाको कूचकरनेकी आज्ञादी उसीसमय कूचके डंके पर चोटपड़ी सब सेनाने शीघ्र शीघ्र तम्बूआदि भार किये और सेना चलनिकली और प्रहास और उपदेशीऔर प्रचंडको भी कैदमें करके सेनाके साथकिया इसके पीछे वज्रांगीने कुछ मायाकी कि उसअग्निके परकोटेकीदीवार चलने लगी और पीछेकी दीवार सेनाके समीपआगई और आगेकी आगेको बढ़गई यह

देखकर भानुविक्रमआदि सब शूरवीर और महारानी चन्द्र-
चूड़ा उसपरकोटेमें घिरेहुए अग्नि में जलनेके भयसे परवश
होकर हेईश्वर हेप्रणतार्त्तिनाशन पुकारतेहुए आगेबढ़े उस पर-
कोटेकी चालको देखकरवज्रांगी हंसताहुआ और अपनीसेनाके
सेनापतियोंको अपनीसामर्थ्य दिखाताहुआचला इसमहा आप-
त्तिको दूरसे उपहास और चपला बहुरूपियोंने देखा क्योंकि यही
दोनों नहीं पकड़े गये थे बाकी सब शूरवीर आदि तो उसअग्निके
परकोटेके भीतर बंदथे निदान चपला इस आपत्ति को देख
कर रोनेलगा और उपहास से बोला अबमें जाताहूं और दु-
ष्टात्मा वज्रांगीको मारे खड्गोंके टुकड़े २ किये डालताहूं और
अपने प्राण देताहूं उपहासने कहा कि हे भाई तुम्हारे जाने
से क्या प्रयोजन निकलैगा इस दानवके शरीरपर कोई शस्त्र
तो लगताही नहीं है और न मूर्च्छाकर चूर्ण अपनागुण प्रकट
करता है फिर बताओ कि बहुरूपियोंकी विद्याक्यालगे इस
से अब परमेश्वरका स्मरणकरो और इसके साथ २ चलो मार्ग
में जहां कहीं ठहरैगा वहां कुछ यत्नकिया जायगा यह कहकर वे
दोनों छुपेहुए सेनाके साथ होलिये और यहां निष्प्रभ भवनमें
महेन्द्रने इन्द्रजालकी पुस्तकको इसप्रयोजनसे निकालकरदेखा
कि देखूं वज्रांगी की क्या व्यवस्था है और उससे उसको मा-
लूमहुआ कि सबको अग्निके परकोटेमें कैदकरके लिये आता
हैदेखतेही उसने अपना कीटमानके कारणसे टेढ़ा करलिया
और विचित्रमाया से बोला कि तुमने देखा कि भृत्यधर्म को
त्यागनेका कैसाफल होताहै कि अबइसबुरी गतिसे पकड़ेहुए
आरहे हैं विचित्रमाया बोली कि इन सब धर्महीनों को शूली
दीजिये इसके पीछे महेन्द्र ने वज्रांगीको एकपत्र लिखा कि हे
मेरे शूरसेनापति साधु साधु तेरा क्या कहना है कितनाशीघ्र
तैंने इसयुद्धका अंतकिया तेरेलिये यह पारितोषिक वस्त्र भेजे

जानेहैं इसको ग्रहणकर और इसके पीछे और भी बहुत कुछ पारितोषिक दियाजायगा और तुमपर राजाकी सदैव कृपादृष्टि रहेगी अबतुम इन क़ैदियों को लेकर सीधे आनन्द वाटिकामें आओ जो विजय नगरी के समीप प्रत्यक्षखंड में रक्तवाहिनी नदीके उसी पारहै हम भी वहीं आकर इनसबको दंडदेंगे यहां नदीके पार इतनीदूर सबकोलाना और निरर्थक दुख उठाना कुछ आवश्यक नहीं है यह पत्र लिखकर उसने बड़े उत्तमपारि-तोषिक वस्त्र सहित कई मायावी म्लेच्छों को दिये और आज्ञा की कि यह शीघ्र वज्रांगीके पास लेजाओ वे उन सबवस्त्रोंको लेकर वज्रांगीके पासआये वज्रांगी उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और उन म्लेच्छों को विदा करके निष्प्रभ भवनकेमार्ग को छोड़कर आनन्दवाटिकाकी राहली और महेन्द्रपत्र भेजने के उपरांत आनन्दवाटिका में रानी विचित्रमाया और बड़े २ मायावी म्लेच्छ और दानवों सहितआया और उसवाटिका के सन्मुख जो वनथा उसमें उसने सहस्रों शूलियां गड़वादीं और आज्ञादी कि शूली देनेवाले बुलायेजावें निदान शूली देनेवाले सहस्रों आकर उपस्थितहुए हाथों में सबके खड्गथे नाक और कान सबके कटेथे लंगोटे लगाये और रक्त पोंछने का वस्त्र कांधेपर डालेहुये थे उनसबने आकर विनयकी कि हे मायाधीश महाराजाधिराज हमसबलोग यहां उपस्थित हैं क्या आज्ञाहै किन किन अपराधियों की आयुका प्याला पूर्ण हुआहै जिनको हमलोग शूलीदें महेन्द्रकी आज्ञाहुई कि तुम सबलोग तय्याररहो मेरा सेनापति अपराधियोंकोलेकर आता होगा कल या आज आजावेंगे यह सुनकर वे सब शूलियों के पास ठहरगये और बहुतकुछ पारितोषिक द्रव्यपाने की अभि-लाषामें रहे आये और महेन्द्र ने उसवाटिकाको सजाना आर-म्भकिया वृक्षोंकीडालियां गोटों से मढ़वादीगईं नानाप्रकार के

कंचन और मणियोंके पात्र स्थानोंमें स्थापित कियेगये फुआरे छोड़ेगये और अनेकप्रकार से अलंकृत कियागया निदान यहां यह सवतयारी होरहीथी और वहां वज्राङ्गी कैदियोंको लियेहुये चलाआताथा मार्गमें कहीं विश्राम नहींकिया और विजयनगरी के निकट आपहुंचा और देखा कि उसनगरका प्राकार सुवर्णका बनाहुआ है और उसके भीतर जानेका जो द्वारहै वहीं किला बनाहै सहस्रों मायावी म्लेच्छ प्रकार प्रकारके स्वरूप मायाकृत बनाये वहां मौजूद हैं कोई अग्निमें कुछ वलिदेरहा है कोई कुछ पढ़रहा है और उसकिले के सामने कोसोंतक केसरकी क्यारी चलीगई हैं और उनमें प्रकार प्रकार के फूल खिलेहुये हैं इस किलेके अधिपतिकानाम केसरीमायाथा जो यहां महेन्द्रकीओर से नियतथी और बड़ी मायाकोविद और सुन्दरी और प्रतिष्ठितथी उसकेपास बहुतसाधन और राज्यभीथा उससे मायाकृत पक्षियोंने आकरकहा कि वज्राङ्गीनाम महाराज महेन्द्रका सेनापति अपराधियोंको लियेहुये आपके राज्यकी सीवांमें आनपहुंचा है आनन्दवाटिकाको महेन्द्रके पासजाता है यहसुनकर वह अपने सिंहासनसे उठी और मायाकृत मयूरपर सवारहोकर भेटकेलिये अनेकप्रकारके पदार्थ लियेहुये वज्राङ्गीसे मिलने को चली जब उसकिलेके द्वारपरआई उसने अग्निका परकोटा कोसोंका विस्तार रखनेवालादेखा और उसके भीतरके कैदियों के रोनेका शब्दभी सुनाईदिया और वज्राङ्गीको बारहों पुतलियों सहित एकओरको जातेहुये देखा निदान इसने अपनामोर आगे बढ़ाया और पुकारकरकहा कि हे शूराधिप धन्यहै धन्यहै क्याकहना है थोड़ीदेर ठहरिये उसको देखकर वज्राङ्गी ठहरगया सेनाभी रुकगई और कुछमायाकी कि वह अग्निका परकोटा भी स्थिरहोगया केसरीमायाने समीपपहुंचकर वज्राङ्गीसेकहाकि मेरे इस छोटेसे किले को चलकर पवित्र कीजिये और जोकुछ

दाल दलिया तयारहो उसको खाकर चले जाइये यह सुनकर वज्रांगीने सोचा कि मैं बड़ी दूरसे चला आताहूं मार्ग में भी कहीं विश्राम नहींकिया यह स्थान भी रक्षितहै यहां आजठहर जाइये और कहा कि मुझको जाना तो आवश्यकहै क्योंकि मेरे साथमें अपराधीहैं परंतु मैं आपके कहेको टाल नहीं सकताहूं चलिये बढ़िये मैं भी आताहूं यह सुनकर केसरीमाया लौटी और नगरकी रचना करनेकी आज्ञादी निदान सब नगर में मणियोंके पात्रोंमें दीपक प्रज्वलितहुए मकान और दूकान अनेकप्रकारसे अलंकृत कियेगये बणिक दूकानोंमें उत्तमउत्तम बहुमौल्य वस्त्र पहिर पहिरकर बैठे एक उत्तम फुलवाड़ीमें एकमहल परमोत्तम खालीकरायागया वस्त्र अच्छे अच्छे बिछवायेगये भोजनका प्रकार प्रकारका सरंजाम कियागया निदान जब सब सामान ठीकहोगया वह रानी अपने सब अधिकारी औरसभासद और महाशयों सहित वज्रांगी को लेने के लिये किलेके बाहरआई वह अपनी सब सेनाको उस अग्निके प्राकारके चारोंओर उतारकर बारहों पुतली और सब सेनाके अधिपतियोंसहित नगरकोआताथा कि राहमें केसरीमायामिली और वह उसके साथ साथ नगरके भीतरपधारा और देखा कि वह नगर अच्छा बसाहुआ है और रहनेवाले सब प्रसन्न हैं-शोभा उस नगर की क्या कहीजाय॥

जयकरी छंद॥

गिरिसम हेम प्रकार महान। परिखा निर्मित सिंधुसमान॥
हिमगिरि कन्दर समपुरद्वार। रत्न जटित वरलगे केवार॥
तहं बैठे रक्षक वरवीर। धरे शस्त्र बहुबल गम्भीर॥
धरी शतघ्नि ऊर्ध्व प्राकार। अरिदल बलकारक संहार॥
बहु विस्तीरणरचितबजार। वणिक वस्त्रधन धरे उदार॥
महतशुभ्रहिमगिरिसे भौन। नगर लसत सुरपुरसो तौन॥
चहुंदिशिते व्यापारी आय। क्रय विक्रयके रचत उपाय॥

वसेशिल्प विद गुणीअनेक। वहु भाषा विदजन सविवेक ॥

निदान वज्रांगी उस नगर की उत्तम शोभाको देखताहुआ उस बागमें पहुंचा जो उसके निमित्त खाली करायागयाथा उस वाटिकाकी शोभा क्या वर्णन कीजाय जो नगर ऐसा अद्भुत बना है वहांकी फुलवारी का क्या कहना है द्वारपर किवारहाथी दांतके बहुत सुन्दर बनेहुए लगेथे बुर्जियों पर सोने के कलश चढ़ेथे औरउनपर मणियों के प्रकार प्रकार के फूल बनेहुए लगेथे और कलशों पर रत्नोंसे निर्मित मयूरपरम शोभायमान खड़ेथे चोंचमें मोतियोंकी माला लियेथे परकोटा उसकासुनहलाथा और उसमें स्थान स्थानपर रत्न और मणि जड़ीहुईथीं निदान वज्रांगी उस बागके भीतरआया और उसे हराभरापाया क्यारियां औरखण्ड उस वाटिकाके शुभ्रतासे रचे गयेथे पटरी सबमणियोंसे जटितथीं जलधारा मनको आह्लाद देनेवालीब-हतीथीं वृक्ष सबफले फूलेथे मेंहदी और अंगूर की टट्टियां कटीहुईसमान लगीथीं जलधाराओंका नीर निर्मल और स्वच्छ था और वहबहकर हरएक खण्डमें जाताथा फूल नानाप्रकारके फूलेहुएथे वृक्षों पर कोयलोंकी कूक सारिकाओं की हूक और प्रकार प्रकार के पक्षियोंके चहचहे वहुतहीभले मालूम होते थे ॥

जयकरीछंद ॥

फूले फले विटप बहुरंग। बहुत भांतिकी लतिकनसंग ॥
कलरवमंडितअतिअभिराम। मधुकर निकरकरें जहंधाम ॥
लताभौनकुसुमितअतिमाम। शरपंजर कीन्हे मनुकाम ॥
वापीलसें भरीं वर नीर। भू मुद्रालम लसें गँभीर ॥
सरवरभरे सलिल अभिराम। हंसकरंड चकनिके धाम ॥
फूले कमल लसतसहभौर। श्रीकेमनुविधिविराचितचौर ॥

उस बागके बीचो बीचमें एक द्वादश द्वारी बनीथी उसमें उत्तम वस्त्र और राजाओं के योग्य शय्या और आसन बिछे थे मणियों के पात्र स्थापितथे आनन्द और विहारका सब सरं-

जाम एकत्रथा वहां आकर बज्रांगी शय्या पर विराजगया और बारहों पुतली और उसके सेनाके अधिकारी समीपस्थ आसनों पर बैठगये तब रानी केसरी मायाकी आज्ञासे वहां नृत्य होना प्रारम्भहुआ और मद्यपिलानेवाले रत्नोंके बनेहुए पात्रोंमें उत्तम बारुणी भरभरकर देनेलगे उसको पाकर वे सब उन्मत्त होकर पिलाने वालेसे कहतेथे ॥

जयकरीछंद ॥

कबते बाटलखतइपानक। बहुतदिवसपर मिल्योअचानक ॥
करुमम पात्र पूर्ण अबदायक। मद्य शेष दे दे बरकायक ॥

रानी केसरी माया चारोंओर प्रबन्ध करती फिरतीथी और आवश्यक पदार्थ बिहार सभाके मनुष्यों को भेजतीथी बड़ाही आनन्दथा एकतौ चांदनी रात दूसरे शीतल मंद सुगंधवायु तीसरेमनोहरगान यहांतौ यह भोगबिलासका सरंजामथा मनुष्य नगरबासी उससभामें चलेआतेथे बड़ीधूमधाम होरहीथी और गानेकी मधुर २ लय हरतानपर रोमखड़ीकरतीथी परन्तु अब वृत्तान्त उपहास और चपला का सुनिये जो महाम्लानचित्त सेनाके साथ साथ रानीनिशाकरी आदिको शत्रुके बशसे मुक्त करने का उपाय सोचतेहुए चलेआतेथे जब शत्रुकी सेना ने विश्रामकिया ये दोनों अपना भेष म्लेच्छोंकासा बनाकर सेना में गये और वहां रानी केसरीमायाका वज्रांगीको ठिकाने और सत्कार करने का वृत्तान्त पूछकर बज्रांगीके साथ साथ विजय नगरी में पहुँचे वहां पहुँचनेपर बज्रांगी तौ उक्त बागमें जाकर आनन्द बिहार करनेलगा और ये दोनों किलेके प्राकारके समीप स्थितहोगये उससमय उपहास ने चपलासे कहा कि तू अपनो भेष मजूरकासा बनाले उसने तत्काल लंगोटा बांधकर डलिथा और इडुआलेकर नंगेशिर नंगेपांउकरके अपना भेष बदललिया और उपहास ने अपनाभेष रसोइयाकासा बनाया

घी और हलदीकेधब्बे लगेहुए वस्त्रपहिरालिये तरकारी छीलने बनानेकी छुरियां कमरमें लगाली और कांधेपर साफी छानने की डालली और चपला सहित बज्रांगीकी सेनामेंआया और डलियामें अरवी आलूआदि अनेकप्रकार के शाक भरवाकर डलियाको चपलाके शिरपर रखवाकर चलदिया और विजय नगरी में पहुँचकर किलेके द्वारमें घुसनाचाहा कि द्वाररक्षकोंने निषेधकिया और कहा कि बिनाआज्ञाके हम भीतर न जानेदेंगे उपहासनेकहा कि हम राजभृत्यहैं रानीकेसरीमायाकी आज्ञासे बज्रांगीकी सेनामेंसे शाकलेकर आयेहैं वहबोले कि तुम थोड़ी देरठहरो हमतुम्हारे प्रवेशहोनेकी आज्ञामँगालें तब उपहासने कहा कि यदि व्यंजन बनानेमें देरहुई तो तुम इसके जवाबदेने वाले होगे अच्छा हम लौटेजातेहैं यहशाक रानी की आज्ञासे आयाहै तुम्हीं पहुँचादेना यहकहकर उपहास ने डलियामें से सबशाक उड़ेलदिया और वहांसे चलदिया यह देखकर उन द्वारपालकोंने विचार किया कि ऐसानहो कि व्यंजननबने और भूंख का समय टलनेसे बज्रांगी रसोइयेसे पूछै कि क्यों अभी तक व्यंजन तयार नहींहुए और वह कहदे कि हमको द्वारपालकोंने भीतरनहीं घुसनेदिया तो हमलोगोंकी नौकरीतो जहां तहांरही कहीं प्राणोंपर न आजाय इससे इसरसोइयेको जानेदो यह विचारकर उन्होंनेपुकारा कि अजी रसोइयाजी जाइये आप को भीतरजानेसे कोई नहींरोकताहै उपहासबोला कि अबकुछ आवश्यक कामनहींहै और यहकहकर आगे चलदिया तबतो द्वारपालक दौड़े और उपहासका हाथपकड़कर बोले कि अप्रसन्न न हूजिये जाइये हमलोग नहीं रोकतेहैं वहबोला कि तुमने झंझटकरके इतनी बिलम्बकरली अबमें जाकर क्याकरलूंगा तुमसब उत्तरदेलेना तब वे सबकेसब बड़ीआधीनता करनेलगे परन्तु उपहास निषेधही करतारहा यहांतक कि सबने कुछद्रव्य

लाकरके उपहासकोदिया और कहा कि इसकी आपमिठाई खाइये और क्रोध न कीजिये जाइये भीतर चलेजाइये हमने आपको जानानहीं हमभी तो आज्ञासे बाहर कामनहीं करसकतेहैं तब उपहासने वहद्रव्य लेलिया और डलियामें शाक भरवाकर चपला के शिरपररक्खी और भीतरचलागया और देखा कि भीतर बहुतसुन्दर बजारलगाहुआ है और हरप्रकार के उत्तम मध्यमलोग क्रय विक्रय कररहे हैं उपहास एक शाक वणिककी दूकानपरगया और बोला कि यह शाक हमको सरकारसे मिलाहै क्योंकि रसोई में जो बचरहता है वह हमको मिलता है हम इसको बेचते हैं तुम अपना नफारखकर चाहो तो लेलो वणिकबोला कि अच्छा दोरुपयालेलो और शाक हमकोदेदो उपहास ने वह रुपये लेलिये और आगे बढ़कर अपनाभेष भृत्योंकासा बनाकर उसबाग में पहुंचे जिसमें वज्राङ्गी के सत्कारका सरंजाम कियागयाथा वह बाग और उस के भीतर के मकान बड़े मनोहरथे सामने एक उत्तम शय्यापर वज्रांगी बैठाहुआथा एकओरको मद्यपीनेका सरंजाम स्थापितथा दूसरी ओर जलपीनेके घटरक्खेथे सामने गन्धर्विणी परमसुन्दरी मनोहरी बैठीथीं नृत्यहोरहाथा गान बड़ी मधुर बोलीसे गायाजाताथा और वज्रांगी नृत्यकीगति और गानकी लयको बड़े मनसे देखरहाथा उससमय उपहासने चपला से कहा कि आजही रात्रिको किसीप्रकार से इसको मारना चाहिये क्योंकि जो प्रातःकाल होगया तो यह यहां से चलकर महेन्द्र के पास पहुंचजायगा वहां फिर कुछ न बनसकैगा और रानी निशाकरीआदि सबश्रेष्ठ सेनासहित मारेजायँगे चपला बोला कि हे उपहास मेरीबुद्धि तो कुछ कामनहीं देतीहै जो में भेषबदलकर इसकेपासभी पहुंचजाऊं तोभी क्याकरूंगा क्योंकि न इसको मूर्च्छाकर चूर्णसे मूर्च्छाहोतीहै और न शस्त्रसे इसका

शरीर कटताहै उपहासबोला कि देखो वह जो म्लेच्छ बज्रांगी के समीपबैठा है उसके स्वरूपको अच्छीप्रकारसे देखलो और उसकासा स्वरूप बनाकर जो रानी केसरी मायाको पकड़लो तौ मैं कुछ उपायकरूं यहसुनकर उसनेकहा कि बहुतश्रेष्ठ और फिर उसीबागके एक एकान्त स्थान में बैठकर उसने बज्रांगी के उससभासदकासा अपना स्वरूप बनाया नाम उससभासद का कौतुकीथा स्वरूपबनाकर चपला वहां से चला और उस के आगे आगे उपहास हाथमें दीपायन लियेहुए चला वहांसे वे दोनों चलकर रानी केसरी मायाके भवनों पर आये और भृत्यों से पूछा कि रानी क्या कररही है लोगोंने कहा कि इस समय महलोंमें कुछ प्रबन्ध कररही हैं तब चपलाने कहा कि तुमजा-कर उनसेकहदो कि एक मनुष्य बज्रांगीका प्रेरित आपके पास आया है भृत्योंने जाकर उसके आनेका समाचर रानीसे कहा वह सुनतेही बाहर निकलआई और देखा कि कौतुकी आया है उसको देखकर रानीने कहा कि मुझकोही वहां बुलालिया होता आपने इतना परिश्रम क्योंउठाया वहबोलाकि आपएका-की थोड़ीदेरको श्रमकरें मैं और आप मिलकर उसकामको कर डालें जिसके लिये बज्रांगीने मुझे भेजाहै वहबोली कि अच्छा चलिये और सबभृत्योंको छोड़कर उसके साथ एकाकीहोली कौतुकीरूपी चपला उसको बातें करताहुआ एकपरम एकांत स्थानमें लिवालाया जहां होकरआनाजाना जभी मनुष्योंको नथा और बराबरमेंतो उसके चलाही जाताथा अकस्मात् मूर्च्छाकर चूर्णका बुकट भरकर रानीके मुखपरमारा वह चूर्ण उसकी ना-सिकाके मार्गसे उसके ब्रह्माण्डमें पहुंचा और वह मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी तब चपलाने उसको उस चूर्णकी और भी नासदेदी और उसकी जीभको सुई से इस प्रयोजन से छेदकर कि यदि मूर्च्छा खुलभी जाय तो माया नकरसके उसके वस्त्र उतार

लिये और उपहास ने उसको उठाकर एकवृक्ष के ऊपर बांध दिया और पत्तों से छिपादिया और चपलाने अपना स्वरूप उसरानी केसरी मायाकासा बनाया तब उपहास ने उससे कहा कि अब तुमचलकर बागके द्वारपर ठहरो मैंभी आताहूं निदान चपला उसरानी के स्वरूप में ढकाहुआ उस बागपर आया उसे देखकर सबनौकर और सेनापतिआदि उसे अपनी रानी जानकर उस के समीप चलेआये और हाथ बांधकर खड़े हो-गये इसी अवसर में उसके पास एक मनुष्य मलिन बस्त्र पहिरेहुए हाथमें कुछ अग्नि गर्भा अर्थात् फुलझड़ी और कुछ चन्द्राभा अर्थात् महताबी लियेहुए गया और उसने रानी को दण्डवत् की वहरानी रूपी चपला तत्काल जानगया कि उपहास अग्निक्रीड़ा पदार्थ अर्थात् आतशबाजी बनानेवाले का भेष धारणकरके आयाहै और सोचाकि इससे कुछ अग्नि क्रीड़ा पदार्थोंका वृत्तांत पूछों तो मालूम होजायगा कि क्या उपाय इसने विचारकियाहै यह सोचकर उसनेपूछा कितेरेपास इससमय कितनेअग्नि क्रीड़ाके पदार्थ तयारहैं औरअबकितने करसक्ताहै उपहास बोला कि महारानी मेरेपास तो कुछतयार नहीं है परंतु मैं अभी तयार करसक्ता हूं रानी रूपी चपला ने कहा कि अच्छा क्यालेगा उपहास बोला कि एकलक्षरुपिया लूंगा वह बोली कि इतना रुपिया तो बहुत है वह बोला कि अच्छा तो आप अग्निदीप्ता अर्थात् बारूद दिलवादीजिये जितनी खर्चहोगी आपहीके सन्मुख होगी मैं घर न लेजाऊंगा मुझे आप मेरी मजूरी दिलादीजियेगा चपलाने कहा अच्छा कितनी अग्निदीप्ता चाहिये वहबोला महारानी पच्चीसभार ल-गेंगे तब चपलाने सेनापतिको आज्ञादी कि इसीसमय पच्चीस भार अग्निदीप्ताके इसेमँगवादो उसने तुरन्त छकड़ोंपर पच्चीस भार लदवाकर भेजदिये तब उपहास ने कहा कि इसको बाग

के पीछे रखवादीजिये और एक कनात घिरवादीजिये कि उस के भीतर बैठकर मैं अकेला अग्निक्रीड़ा के पदार्थ बनाऊंगा आपने ऐसा कारीगर भी न देखाहोगा कि इतनी अग्निदीप्ता के अग्निक्रीड़क पदार्थ क्षणभरमें बनादे यहसुनकर चपला ने अनुमान किया कि उपहास का विचार वज्रांगीको भस्मकरने काहै यह विचारकर उसने बागकेपीछे कनातघिरवादी अग्नि दीप्ताके भार उसमें रखवादिये और सबसे कहदिया कि इसके समीप कोई न जाना निदान उपहास वहांगया और अपने खड्ग से सुरंग खोदनेलगा और इन्द्रसे अभीष्टकार्य सिद्धी का वरदान पाने के कारणसे उसने एकप्रहर में उसबागके नीचे नीचे उस स्थानके पूर्वसे पश्चिम और उत्तरसे दक्षिणतक जिसमें वज्रांगी बारहोंपुतली और सब सेनापति और सभासदों सहित बैठा हुआ नाच देखरहाथा सुरंगलगादी और उसमें अग्निदीप्ता अर्थात् बारूद के पच्चीसोंभारों को बिछाकर अपने ओढ़ने के वस्त्रको बटकर दीपवर्तिका बनाई और उनको उस अग्निदीप्ता के बीचमें दबाकर छोर उसका सुरंगके मुखपर लगादिया और फिर कनात के भीतर से निकलआया रानी रूपचपला बागके द्वारहीपर आसन बिछवाकर बैठाथा और बाटदेखरहा था कि देखिये उपहास कबआताहै और क्या चरित्ररचताहै कि इतने में उपहासने जाकर विनयकी कि महारानी सबअग्निक्रीड़ा के पदार्थ तयारहोगयेहैं आप अकेलीचलके देखलीजिये कि मैंने क्या क्या कारीगरीकी है और किसीको साथ न लेचलिये यह सुनकर रानी रूपचपला ने सब सभासद और नौकरोंसे कहा कि अच्छा तुमसब यहींठहरो मैं बुलालूंगी और आप उपहास के साथ साथ बागकेपीछे आया वहां आनेपर उपहासने कहा कि हे चपला मैं सुरंग खोदकर अग्निदीप्ता बिछाचुकाहूं अभी अग्नि इसमें लगाताहूं तुम जाकर रानी केसरी माया को

खोलकर सचेतकरदो जिससे वहभी वज्रांगी की इसदशाको देखे और रोवै यहसब पृथ्वी महलादि सहित अग्निदीप्ता से आकाशको उड़कर गिरैगी और जीभ तौ उसकी सुईसे छिदीही हुई हैं कुछकर न सकैगी और परवशहोकर यह सब वृत्तान्त देखैगी यह सुनकर चपला बड़ीशीघ्रता से उस वृक्षके समीपगया जिसपर वहरानी बँधीथी और उसको खोल कर नीचेउतारा और फिर वृक्षसे बांधकर सचेत करदिया उसकी जो आंखेंखुलीं तौ उसने अपनेको एक महाआपत्ति में पाया इसीअवसर में उपहास ने उनवर्त्तिकाओं को प्रज्वलित करदिया और आप भागकर वहांसे दूरचलागया वे वर्त्तिकासुलगतीहुई जब सुरंगके भीतरगईं अकस्मात् आकाशके फटनेकासा घोरशब्दहुआ और वह द्वादशद्वारी महल जिस में वज्रांगी अपने सभासदों सहित बैठाहुआ नृत्य देखरहाथा पृथ्वीसे उड़कर ऊपरकोगई और उसके कंकड़ और पत्थरआदि पदार्थ उसकिलेमें बरसनेलगे उसघोरशब्दकी ताड़नासे नगरके मकानोंकेद्वारोंकी सांकरेंखुलगईं स्त्रियोंके गर्भपात होगये प्रजा सबभागनेलगी एक महाआपत्ति मचगई रानी केसरीमाया के नौकर बागकी ओरभागे और कहनेलगे कि यहक्या अकस्मात् हुआ क्या आपत्तिआई सब चारोंओरको भागने लगे और मायावीदानव और म्लेच्छों के मरनेसे और भी भयंकर शब्द होनेलगे अग्नि और पाषाण वर्षनेलगे और आकाश से वाणी हुई कि वज्रांगीदानवोहतः अर्थात् वज्रांगी दानव मारागया उसीसमय उपहासने अवसरपाकर अग्नि यंत्रों में आगलगा लगाकर नगरमें चारोंओरको फेंकदिये उनसे नगरके मकानों में अग्नि लगगई बहुत से म्लेच्छजलगये और जबतक उस को बुझाया तबतक उपहास ने और कईमकानों में उक्तप्रकार से अग्नि लगादी नगरभरमें हे अद्भुत ईश्वर हे अद्भुत ईश्वर

का शब्दहोनेलगा अग्नि सबनगर में व्याप्तहोगई लौ ऊंची ऊंची उठनेलगीं और सब नगरबासी घर छोड़ छोड़कर नगर की प्राकार के बाहर निकलकर चलेगये और यहां बज्रांगी के मरतेही वह अग्निका परकोटा जिसमें महारानी चन्द्रचूड़ा और राजपुत्र भानुविक्रमआदि वंदथे नष्टहोगया और मारीच और निशाकरी और प्रहासआदि तीनों बहुरूपियों के मायाकृत निगड़ अलोपहोगये और वे सब कैदसे मुक्तहोगये और सुरंग उड़ने के शब्दको सुनकर प्रहास ने कहा वह मारा यह सुनकर रानी निशाकरी ने पूछा कि प्रहास तुम क्या कह-रहेहो वह बोला कि मैं सत्य कहता हूं यह शब्द बज्रांगीकेमारे जानेका है मालूम होताहै कि उपहास अथवा चपलाने उसको मारकर नरकमें भेजाहै अबइस अभद्र कैदसेनिकलो और देखो सेनाभी हमारी सब कैदसे मुक्त हुई होगी इन बारहोंसहस्र म्लेच्छों को जो बज्रांगी की सेनाके हैं मारना उचित है निदान प्रहास के कहनेसे मारीच और निशाकरी उठकर बाहरआये और मायाका प्रयोगकिया उससे बड़ीप्रचण्ड आंधीउठी और आकाशसे बाणोंकी बर्षा होनेलगी यह देखकर कैदियों के सब रक्षकभागे और उधर सेना में पद्मावतीने चन्द्रचूड़ासेकहा कि आपकीनानी रानी निशाकरी पुकाररहीहैं और बज्रांगीकी सेना से युद्धकररही हैं आपकी सेना जिसप्रकारसे अस्त्र शस्त्र धारण करके लड़ने आई थी उसीप्रकारसे अग्निके प्राकारमें कैदहो-गई थी अब वह प्राकार नष्ट होगया आपभी सेनासहित चल कर बज्रांगी की सेनाको नाशकरिये यहसुनकर महारानी चन्द्र-चूड़ाने पचास साठ सहस्र योद्धाओं सहित बज्रांगीकी सेनापर धावाकिया और उसको घेरलिया और दोनोंओरसे नारिकेल निम्बुक लोहगोलक अग्निगोलक शूची बाणआदि अनेकअने-क प्रकारके माया वेष्टित अस्त्रचलनेलगे बज्रपातहोनेलगे और

त्रिशूल आदि शस्त्रवर्षनेलगे एकओरसे भानुविक्रमनेगर्जनाकर के घोड़ेपर सवारहुआ सेनामें प्रवेशकिया और दूसरी ओरसे प्रहास रानी निशाकरी के साथ युद्धकरताहुआ लेनामेंघुसा और गर्जे गर्जेकर चारोंओरको मंडल बांधकरखड्ग प्रहारकरनेलगा॥

गुरुतोमर छंद। असियुद्धमें मैं आर्यहूं। बहुभेषविद्या चार्यहूं॥
सबदानवनकोमार्यहूं। महिम्लेच्छउदरविदार्यहू॥
नहिबचत मोसों युद्धमें। नरजूटि असिरणशुद्धमें॥

जबअधपात करताथा एक प्रहारमें दशदशके पैरकाटताथा और जब ऊर्ध्वपातकरताथा दश दशके शिरउड़ादेताथा और जो मरमरकर गिरतेथे उनकी कमरसे रुपयोंकी हिमियानीका-टलेताथा निदान भानुविक्रम आदिने उसदिनबड़ी वीरतासे युद्ध करके सबको अपनी असि और गदा युद्धकी निपुणता दिखाई॥

चौ०। गदापाणिभुजऊरधकीन्हे। कालकरालदण्डजनुलीन्हे॥
बढ़िवढ़िवीरसिंहसमगरजे। सकल दानवनिकेहियदरजे॥
सेन दानवीमर्दनलागे। असि प्रहार करि रणरस पागे॥
हतैवज्रधर जिमि धनुजनको। हतैतथा मलेच्छ मनुजनको॥
रथ परहयगज गणपरमहिपर। हतेअसंख्य सुभटते ताथर॥
गदापाणि भटवर बिरुझाने। शूलपाणि सम तहां लखाने॥
नहिंबढ़ि जोरदियो भटकोऊ। रहे दूर डरपतहे तेऊ॥
तहां तौन जिनके दिशिदेखे। मरे आजु ध्रुव तिन अवरेखे॥
क्षुधित गयंद इक्षुके बनमें। लसें लसेतिमि ते भटगनमें॥

निदान वज्राङ्गीके बारहसहस्र सेनामेंसे एकभी न बचा शूर-बीरों ने सबको घेरघेरकर मारडाला और वहांसे लड़ते लड़ते रानी केसरी मायाके किलेतक पहुँचे इतने में वहरात्रि व्यतीत हुई और निशापतिरूपी पराजित राजाकी तारागणरूपी सेना मार्तंडरूपी विजयकरनेवाले राजाके आकाशरूपी देशमें उदय होनेसे भागकर अदृश्यहोगई॥

सो०। भयो उदय जब भानु चहुँदिशि भयो प्रकाशतब।

वीर धीर दृढ़ जानु हर्षे लखि शोभा परम ॥

प्रातःकाल होनेपर मालूमहुआ रानी केसरीमायाकी सब सेना और नगरकी प्रजा नगरछोड़कर प्राकार के बाहर चली आईहै यहसमाचार पातेही रानी निशाकरीने शीघ्रआकर उस को घेरलिया परंतु वह केसरीमायाकी सेना प्रथमतौ बेनाथके थी दूसरे रात्रिभरकी दुखीथी युद्ध क्याकरती थोड़ीदेरतक तौ मायाकृत असियुद्धहुआ उपरांत रानी केसरीमायाकी सेनाभागी और प्रजाने रक्षापानेकी विनयकी उसको सुनकर रानी निशाकरीने युद्धनिवृत्तीके वाद्यबजवाये और सबसेना और प्रजासहित नगरमें प्रवेशकिया इसीअवसरमें चपलाने आकर उपहास से कहा कि किलातौ लेलियागया अब रानी केसरीमायाको रानी निशाकरीके पास लेचलो और दोनोंजने उसको मूर्च्छितकरके लेचले उससमय रानी निशाकरी राजसभामें महारानी चन्द्रचूड़ाको सिंहासनपर बिठाचुकीथी और नगरमें ढुंढेरा पिटरहा था कि जोकोई समयके राजाकी आज्ञा न मानेगा वह दंडपावेगा और विजयघोषित होरहीथी और नगर के महाशयलोग महारानी चन्द्रचूड़ाको भेटदेरहेथे नृत्य गीतादिका आनन्दहो रहाथा कि इतने में चपला और उपहास रानी केसरीमाया को लियेहुए वहांपहुँचे और उस रानीको उतारकररक्खा उनकोदेखतेही रानी निशाकरी उठकर लिपटगई और बड़े आदर से दोनोंको रत्नजटित आसनपर बैठाकर हालपूंछा तब उपहासने सुरंगलगाकर बज्राङ्गीके मारने का सबवृत्तांत कहसुनाया उस को सुनकर सब बहुत प्रसन्नहुए और महारानी चन्द्रचूड़ा ने उन दोनों बहुरूपियों को बहुत कुछ पारितोषिक द्रव्य और वस्त्र दिये उन्होंने उस सब धन को प्रहासके भेट किया प्रहासने उस सब को लेकर अपनी थैली में रखलिया और एक अंगोछा गाढ़ेका निकाल कर उपहासके कंधेपर पारितोषिककी भांति

डालदिया उसको देखकर उपहासने कहा कि मेरा धन्यभाग्य है गुरूजी से आजतक किसी ने ऐसा पारितोषिक कभी नहीं पाया तब चपला बोला गुरू महाराज मैं भी तो उपहास के साथ इस कार्य की साधना में था मुझे भी कुछ पारितोषिक दीजिये प्रहास ने कहा कि तू अभी इसयोग्य नहीं है उपहास तो 'मेरा प्राणदाताहै तू उसकीबराबरी क्याकरेगा ऐसाकर्म उसीका है जो मैंने उसे पारितोषिक वस्त्रादिया चपलाबोला कि देखिये अबकी मैं ऐसी धूमधामसे किसी कार्यकी साधनाकरूंगा कि आपसे पारितोषिक कुछलूंगा इसकेपीछे रानी केसरी माया को सभाके खंभसे बांधदिया और चैतन्यचूर्ण देकर उसकी मूर्च्छा को दूरकिया जब उसकी आंख पहिलेहीपहिल खुलीथी तबतो उसने सुरंगसे द्वादशद्वारी महल उड़ते और अग्नि से नगर जलतेदेखाथा अबकी जो आंखखुली तो अपूर्वही कुछदेखा कि रानी चन्द्रचूड़ा सिंहासनपर बिराजमानहै सबसभासद अपने अपने स्थानोंपर आसीनहैं नृत्य और गान होरहा है यह देख कर उसने अपनेनेत्र बंदकरलिये और अनुमानकिया कि यह सब मैं दुःस्वप्न देखरहीहूं परंतु प्रहासने पुकारकर उसीसमय कहा कि हे रानी यह स्वप्ननहींहै किंतु जाग्रतअवस्थाहै जिनकी तुमने दावतकीथी वेसब सुरंगलगाकर उड़ादियेगये तुम्हरादेश और धनसब महारानी चन्द्रचूड़ाके वशमेंआगया यदि तुम उनकी आज्ञामेंरहना स्वीकारकरो तो तुम्हारेप्राण बचेंगे नहीं तो तुमको शूलीदीजावेगी यह रानी केसरीमाया बड़ीबुद्धिमान् और चतुरथी और आसुरीमायामें बड़ी प्रवीणथी उसने विचारकिया कि निस्संदेह अब इसमाया के ह्रासकासमय आगया और इसका नष्टकर्त्ताभी ठीक भानुविक्रमही जानपड़ताहै यह विचारकर उसने सैनसेबताया कि मुझको आज्ञामेंरहना स्वीकार है मेरेप्राण छोड़दो तब प्रहासने उठकर उसकीजीभमें से

शूर्चीनिकाललली और उसे खोलादिया खुलतेही रानी केसरी मायाने दौड़कर महारानी चन्द्रचूड़ाको दंडवत्की महारानीने उस का बहुतकुछ सत्कारकरके उसे पारितोषिक बस्त्रदिये और कहा कि जब हम इसदेशको बिजयकरलेंगे तब तुम्हारे इसराज्यके सिवाय तुमको औरभी राज्यदेंगे और आज्ञादी किसब देशमें तत्काल ढिंढोरा पिटवादियाजावे कि जिसकिसीको अपनीरानी केसरीमायाका साथदेनाहो वह चलाआवे निदान उसीसमय ढिंढोरा सबदेशमें पीटागया और उसकीसेनाके सबयोद्धा और सेनापति जो भयसे भागकर बन और पर्वतोंमें जाछिपे थे सब चलेआये और पच्चीससहस्र सेनाहोगई सबने साथदेना और आज्ञामेंरहना स्वीकारकिया और सबने अपना अपना अधिकार और बहुत पारितोषिक द्रव्यपाया इसकेपीछे प्रहासने कहा कि हे रानी निशाकरी अब यहांरहना उचितनहींहै अपनेप्राचीन स्थानपर चलीचलो क्योंकि जो महेन्द्रका कोई उग्र सेनापति सेनालेकर यहांआगया तौ सबकोशीघ्र महेन्द्रकेपासपहुँचादेगा फिर कुछ बनाये न बनेगा और वहां रहनेमें यह उत्तमता है कि यदि वह सबको पकड़भी लेगा तौ वहांसे चलकर मार्गमें कहीं तौ बिश्राम करेगा इसमें बहुरूपिये उसे मारलेंगे यहसुन कररानी निशाकरीने उसीसमय यात्राकेवाद्य बजवा दिये उस समय रानी केशरी मायाने कहा कि मैं भी साथचलूंगी क्योंकि यहां रहने से महेन्द्र मुझको जीता न छोड़ेगा निदान सबसेना और रानी केसरीमाया और निशाकरी आदि सब अधिकारी और सेनापति तय्यारहुए और मायाकृत अनेक प्रकारकेयानों और वाहनोंपर सवारहोकर कूचकिया और हैहयदेशके निकट उसी स्थानपर जहां बज्रांगीसे युद्धहुआ था आकर सेनाने बिश्रामकिया तम्बू और डेरे और बितान खड़े कियेगये सिविर रचीगई सभामें महारानी चन्द्रचूड़ा आकर बिराजमानहुई नृत्य

होनेलगा और मद्य उड़नेलगी उससमय उपहास तो बन को सिधारा और सबलोग आनन्द विहार करनेलगे यहां तो यह हो रहाथा और वहां आनन्दबाटिकामें महेन्द्रभी आनन्द विहार कररहाथा और बज्रांगीके आनेकी बाट देखरहाथा शूली सब खड़ीथी शूली देनेवाले सबमौजूदथे कि इतनेमें दूसरे दिन कुछ एक विजयनगरीके बासी रोते पुकारतेहुए वहां जापहुँचे महेन्द्रने आज्ञादी कि इनसबको हमारे सन्मुखलाओ भृत्यलोग उनको लेगये तब महेन्द्रनेपूछा कि क्याबातहै उन्होंने विनयकी कि महाराज विजयनगरी का किला नष्ट होगया और फिर बज्रांगी और उसकी सेनाके मारेजाने का सबवृत्तांत कह सुनाया सुनतेही महेन्द्र ने अपनाहाथ अपनी जांघपर दे मारा रानी विचित्र माया रोनेलगी महेन्द्रनेभी अश्रुपात छोड़े और कहा कि हे विचित्रमाया मैं अभी चाहूं तो एक ऐसी आपत्ति रूपाको भेज दूं कि जातेही निशाकरी की सब सेनाको भक्षण करजाय परंतु मेरे हृदयमें दया आजातीहीहै कि ये मेरे पालेपनासे पुराने आज्ञाकारी हैं एकाएक क्या इनका वधकरूं परंतु हां ऐसा कुछ दण्डदूं कि उनका लुच्चपन छूटजाय और भानुविक्रम आदि को पकडलूं विचित्रमाया बोली महाराज अपना काम अपनेही से ठीक होताहै आप मुझे आज्ञा दीजिये और मायावी दानवों की सेना मेरेसाथ करदीजिये मैं युद्धकरके सब शत्रुओंको पकड़कर आपके सन्मुख लेआऊं उसने उत्तरदिया कि देखो इन बहुरूपियों ने बज्रांगी सदृश को सुरंग लगाकर मारडाला ऐसे अभद्र रूपों के साथ तुमको युद्ध के लिये क्योंकर भेज सकताहूं अब मैंभी दैवीखण्ड में रहाकरूंगा इसप्रत्यक्ष खण्डमें न आऊंगा तब विचित्रमायाने कहा कि फिर मैं आज्ञा हरबातमें किससे लिया करूंगी महेन्द्रने उत्तरदिया कि तुम आपही दैवी खण्डमें चलीआना और मुझको जोआना

होगा और आऊंगातो मायाकृत दर्पणमें रहूंगा और तुमदेखोंगी कि में वातें कररहाहूं परंतु में नहीं होऊंगा किंतु मेरेस्वरूप कापुतलाहोगा औरअवजोयोद्धालड़नेजाय वह बहुतचौकसी से युद्धकरे और जहांटिके वहांकीपृथ्वी मायासेपाषाणकीकरदे कि कोई बहुरूपिया उसमें सुरंग न लगासके जब महेन्द्रने उक्तप्रकारकी भयकी वातें कहीं तब उसके एक चेलेने जो उसका चमर उससमय ढोररहाथा और जिसका नाम अलंबुषथा सन्मुखआकर विनयकी कि महाराज इसदासको आपने किसदिनके लिये पालाहै इसेआज्ञादीजिये कि इन सब अधर्मियोंका विध्वंसन करके सबको क्षणमात्रमें पकड़कर आपके सन्मुख लेआऊं मुझको न कोई सुरंगमें उड़ासकैगा और न कोई बहुरूपिया मेरेपास आसकैगा महेन्द्रने पूछा कि तुझको क्यामाया आतीहै वहबोला कि मुझको एक मंत्र ऐसा आताहै कि उसको पढ़कर फूंकदेनेसे बहुरूपियाका स्वरूप वदल जाताहै में पहँचानकर पकड़लूंगा और उसकोही पहँचानकर पकड़लूंगा और उसकोही पढ़करफूंकनेसे कोई तम्बूमें सुरंग लगाकरभी नहीं आसकताहै तबमहेन्द्रने कहा कि अच्छाजाओ निशाकरीअभी विजयनगरी केसमीप होगी उसे पकड़लाओ परंतु देखो बहुरूपियोंसे चौकन्ने रहना यह सुनकर अलम्बुष बागकेबाहर आया और मायाकृत तूर बजाई उसको सुनकर बड़े२ मायावी म्लेच्छ और दानव उस के पासआये उनको अलंबुषने आज्ञादी कि तुममेंसे दशसहस्र छटेहुए योद्धा मेरे साथचलो कि चलकर शत्रुओं को विध्वंस करके चलेआवें यहसुनकर वे सब नानाप्रकारके मायाकृत वाहनों पर सवार होकर मायाके प्रयोग करनेका सब सरंजाम लिये हुए उसकेसाथ होलिये॥

जयकरीछंद। दीर्घकाय शचि वीरमहान। चलेसुगर्जत मेघसमान॥
दीर्घबाहुचखलालकराल। आननभयदमहाविकराल॥

वाहन मायाकृत वहुसर्प। तिनपर चढ़ेजातसहदर्प॥
मायाकृतजे वाद्यमहान। तूर आदिको करै बखान॥
तिनकोशब्द असह्यकठोर। पूरिगयो नभदिगमेंघोर॥

निदान वहसेना कूंच और विश्रामकरतीहुई विजयनगरीमें पहुँची वहाँआकर अलंबुषने देखा कि वह नगर उजाड़होगया गृहसबजलेहुएहैं सेनाका पतानहींहै और नगरबासी सब दीन और दुखीहैं उसने वहाँ विश्रामकिया और एक निम्नलिखितपत्र रानीनिशाकरी को लिखा-पत्र-हमारे ईश्वर अद्भुतको धन्यवाद है और मायाधीश महाराज महेन्द्रकी विजयहोय कुमार्गगामियों के समुदायको विदितहो कि मैं अलंबुषहूं मेरी करीहुई माया से कोईबचानेवालानहींहै न इसमायाकृत देशमें कोईमेरासामना करनेवाला है आजतक मुझ से युद्धकरके कोई जीतानहीं क्षण भरमें तुमसबका नाम इस संसार से मिटादूंगा सबको मारकर यमलोकमें पहुंचादूंगा॥

चौ० बलको गर्वनकरहु नरेन्द्र। देवनसों है अजितमहेन्द्र॥
कारजतौ न करो मतइष्ट। जातें प्रकटे महाअनिष्ट॥
हठशठता बश कीन्हें युद्ध। सबको मृत्यु कालहै उद्ध॥
पाककरत जरिमरै वराक। कौनमोद कीन्हें वह पाक॥
वैर बढ़ाइव नाहीं नीक। सम्मतआनँदसिन्धु अलीक॥
शक्र समान बलीवहुभूप। शत्रुकरबनहिं तव अनुरूप॥
मोह बातवशभरि उन्माद। करतसोकरिहै तुम्हेंविषाद॥

सो हे निशाकरी जो तू इसपत्रके देखतेही यहां न आवैगी तो बुरादिन देखैगी यहपत्र लिखकर अलंबुष ने एक पाषाण की मूर्त्तिनिकाली और उससे कहा कि हे मायानिर्मित मूर्त्ति तू यहपत्र रानी निशाकरी के पासलेजा और उसका उत्तरलेकर चलीआ उसमूर्त्ति ने वहपत्र लेलिया और वहीं पृथ्वीमें समा गई और यहां निशाकरी सभामें आसीनथी नाचहोरहाथा सब आनन्दमें मग्नथे और निशाकरीभी निश्चिन्त बैठीहुईथी कि

इतनेमें वह पाषाणकीमूर्त्ति वहां पृथ्वीसे निकली और निशा-करीकी गोदमें जापड़ी और वहपत्र देकर उसका उत्तरमांगा जब निशाकरीने वह पत्रपढ़ा पढ़तेही मूर्च्छितहोगई और जब सचेतहुई तब प्रहासनेपूछा कि क्यों कुशलतोहै वहबोली कि हे प्रहास अबकीबार अलंबुष आयाहै जो महेन्द्रका चेलाहै और जिसे महेन्द्र ने आप मायाकी शीक्षाकी है और पुत्रके समान पालाहै अब सबकामरण निश्चयहै इससे युद्धकरने की किसी की सामर्थनहींहै प्रहासबोला कि हेरानी तुम परमेश्वरको याद करके उत्तर इसकादो कि युद्धकरेंगे अबतक जोजो आये सब एकसेएक बली मायावीआये परंतु तुमनेदेखा कि बहुरूपधारि-णीविद्याके वेत्ताओंने उनको किसकिसदुर्दशासेमाराहै कि उनके शरीरकाभी संस्कार नहींहुआ और काग और गृद्धोंने उनको खाया निदान प्रहासकेकहनेसे उत्तर निम्नलिखित लिखागया॥

चौ० लिख्यो प्रथम हरिनाम सुवासा। मंगलदायक जोसुखरासा॥
तदनुलिखी गुरुभक्तिप्रशंसा। करति जो तमअज्ञान विध्वंसा॥
इमितव उत्तरलिख्योबनाई। हौं मैं परम शत्रु तव भाई॥
वीर भानुविक्रम रिपुजेता। है इह प्रबल सेन को नेता॥
युद्ध चित्रता ध्वंसन शूला। लखी न अबहींते अघमूला॥
गिने गिने दानवनिनिमिषमें। वधि ,प्रहास भेज्यो यमपुरमें॥
रे शठ तेहूं लज्जित ह्वैहै। दंभ त्यागि जो शरण न ऐहै॥
शरणआइनिज जीवितराखो। नतुसम्मतको नाम न भाखो॥

यहउत्तर लिखकर उस मूर्त्तिको देदिया और वह उसे लेकर पृथ्वीमें समागई और अलंबुषके पासआकर उसेदेदिया और वह उस उत्तरको पढ़कर युद्धकेलिये तयारहोनेलगा उसीसम-यमें रानी निशाकरीने भी आज्ञादी कि सबसेना तयारहो और युद्धके लिये चले तब रानी केसरीमाया ने कहा कि मुझको आप आज्ञादें कि मैं जाकर अलंबुष से कहूं कि रानी निशा-करी की सेना ने मेरे सबराज्यको अपने वश में करलियाथा

और बहुरूपिये मुझे पकड़कर लेगये थे इसकारण से मैंने समयके अनुसार कर्तव्य विचारकर शत्रुकी आधीनताई स्वीकारकरलीथी परन्तु अब आपआयेहैं मैं आपकेसाथहूं चलिये आज मेरे यहां चलकर मेरे स्थानको अपने चरणों से पवित्र कीजिये और पत्रपुष्प ग्रहणकीजिये कल मैंभी आप के साथ चलूंगी और सब शत्रुओंको मारकर अपना बदला निशाकरी और उसकी सेनासे निकालूंगी ऐसाकहने से जबवह मेरेस्थानमें चलकर आवैगा तब यातो उसको दासियां मारडालेंगी या पकड़लेंगी निशाकरी बोली कि ऐसानहो कि वह तुमकोही पकड़ले मैं अकेला तुमको क्योंकर जाने और आपत्तिमें डालनेकी आज्ञा देसकतीहूं इसीअवसर में चपलाने कहा कि हे रानी निशाकरी आप इनको बहुतसी सेनासहित जानेकी आज्ञादीजिये ये उससे लिखापढ़ी करेंगी उसमें वहरुकैगा और मैं उसका बधकरडालूंगा आप अभी सेनालेजाकर वृथाका श्रम न उठावें निदान निशाकरीने रानी केसरीमायाको बिदाकिया और मारीचको भी पंद्रहसहस्र सेनादेकर पीछे२भेजदिया और कह दिया कि तुम समयपर प्रहारनेकी सहायताकेलिये अलंबुषकी सेनाके निकटरहना वहभी सेनासहित चलदिया और चपला और उपदेशी और प्रचण्ड बहुरूपिये भी सेना के साथ साथ होलिये और मार्गको उत्तीर्णकरके शत्रुके दलके निकट डेरे तंबू खड़ेकराकर सबसेनासहित विश्रामकिया अब रानी केसरीमाया का वृत्तान्तसुनिये कि वह अपने किलेमें पहुंची और वहां उसने एकपत्र बड़ीआधीनताई से अलंबुषको इसप्रकार से लिखा कि हे महाराज महेन्द्रके पुत्र यहदासी महाआपत्तिमें पडीथी कोई सहायक अथवा नायक मेरानथा इसकारण से बेवशहोकर मुझ को रानी निशाकरीकी आधीनताई स्वीकार करनीपड़ीथी क्योंकि जो ऐसा न करती तो क्याकरती अब मेरे प्रारब्ध अच्छे हैं कि

आप यहांआकर उपस्थितहुये हैं मुझको अपनीदासी जानकर कृपाकीजिये और अपनेचरणारविंदसे मेरेस्थानको पवित्रकीजिये मैं उसदुष्टासे अपना बदलालूंगी और आपकेसाथ चलकर युद्धकरूंगी और उसपत्रको एकबड़े मान्य म्लेच्छको देकर अलंबुषके पासभेजा वहलेकर आया और अलंबुष ने उसेपढ़कर परीक्षा करनेकेलिये कुछमायाकी कि उससे एकपुतला एकपत्र हाथमें लियेहुये प्रकटहुआ अलंबुष ने उसके हाथ से वहपत्र लेकर पढ़ा उसमें लिखाथा कि यहपत्र छलसे लिखागया है वह तनमनसे शत्रुकी मित्रहै तुझको छलसे अपने किलेमें बुलाकर मारना चाहती है खबरदार उसके चक्करमें न आना यहपढ़कर उसने वहपत्र उसपुतलेको फिरदे दिया और वह पृथ्वीमें अलोप होगया और फिर रानीकेसरीके पत्रका उत्तरलिखा कि अरे कुकर्मिणी मैंतेरीसबछलकीबातें जानताहूं तेरीबनावटके धोखेमेंनहीं आसकताहूं क्या तैंने मुझेभी ऐसा वैसा मायावी जाना मैं अलंबुषहूं तुझे थोड़ेही कालमें पकड़कर तेरे सहायकोंसहित तेरां वधकरूंगा तू अपनी कुशलमना प्रथम निशाकरीको जाकर पकड़लाऊं फिर तुझको भी पकडूं तू इस मायाकृत देशसेनिकल कर कहां जायगी बहुत शीघ्र तू अपने इसकुकर्मका फल देखेगी यह उत्तर लिखकर उसने उसी म्लेच्छको दिया जोपत्र लायाथा और वह लेकर चलागया परंतु बहुरूपिये सेनाके विश्राम करने पर अपने स्वरूप मायावी म्लेच्छोंकेसे बनाकर अलंबुषकीसेना में आकर फिरनेलगे उनमें से उपदेशीतो एकभृत्यकासा स्वरूप बनाकर उसकेतंबूमें घुसगया और प्रचण्ड मायावी म्लेच्छबनाहुआ तंबूके द्वारपर खड़ारहा इतने में अलंबुषने उपदेशी को भृत्यके भेषमें देखकर अलंबुषको कुछ शंकाहुई और उसनेकुछ मायाकी कि उससे उसका स्वरूप भृत्यकासा जातारहे तब अलंबुषने कहा कि अरे नौकरले यह पत्र रानी केसरीमाया के

पास लेजा और एक कागज का टुकड़ा उठाकर उसको दिखा-
या उपदेशी उसके लेनेकोगया और जैसेही उसने हाथ बढ़ा-
कर वह पत्र लेना चाहा तैसेही अलंबुषने उसका हाथ पकड़
लिया औरकहा कि अरे वरणसंकर तू मुझसे छलकरने आया
है उससमय उपदेशीने चाहा कि खड्ग निकालकरमारूं परन्तु
अलंबुषने माया करके उसके हाथ और पैरोंको स्तंभितकरदि-
या और पुकारा कि कोईहै प्रचण्ड जो मायावी म्लेच्छ बनाहुआ
तंबूके द्वारपर खड़ाथा श्रीमहाराज श्रीमहाराज कहताहुआ भी-
तरचलागया अलंबुषने कहा कि बहुरूपियोंने आना प्रारम्भ
किया एकको मैंने पकड़ा है इसे लेजाकर कैद में रक्खो और
चौकन्नेरहो प्रचण्ड बोला कि आप इसपरसे अपनी माया को
दूर कीजिये में अपनी मायासे स्तंभित करके कैदकरलूं अलं-
बुषने अपनी माया दूरकरदी और प्रचण्ड उसे बांह पकड़कर
लेचला परंतु फिर अलंबुषको कुछ संदेहहुआ और कुछ माया
की कि उससे प्रचण्डका भी स्वरूप जातारहा और वह अपने
निज स्वरूपमें होगया तब अलंबुषने उसको भी पहिचानलिया
और अभीतक वे दोनों तंबूके द्वारके बाहिर नहीं निकले थे
कि उसने ऐसी कुछमाया की कि दोनों कमर कमरतक पृथ्वी में
प्रवेशहोगये इतनेमें वह दिवस व्यतीतहुआ सायंकालकी वेला
हुई और आकाशमें तारागणों का क्रमपूर्वक निकलना प्रारम्भ
हुआ और निशाका आगम जानकर निशापति ने भी अपनी
अमीपूर्ण रश्मियों से आकाश मंडल को शोभायमानकिया॥

चौ० दिनपति सूरभये जबअस्त। गोपि रश्मिकीध्वजा प्रशस्त॥
जानि भानुको मिटयो निशान। तारा सेना कढ़ी महान॥
तिनके गण सोहत नभतथा। पर्वत परजन सेना यथा॥

सायंकालके समय चपला रानीकेसरीमायाके पासगया और
बोला कि जो बहुरूपी जाता है उसीको अलंबुष पहिचानकर

पकड़लेता है मैं उसके पास न जाऊंगा आप मुझको एकतंबू
और शय्या और आसन और बिछौना ऐसेदो जो राजाओंके
योग्यहों रानीनेकहा यह सब मौजूदहैं लेजाइये तब चपला ने
सब उक्तसरंजामको एकछकड़ेपर भारकराया और किलेकेबा-
हरआकर वह अलंबुषके डेरेके समीप एक वनमें गया जो हरा
भरा अनेकप्रकारोंके फूलोंसे फूलाहुआ और निर्मल जलधारा
और तड़ागोंसे शोभायमानथा॥

क० कोकिल कूकिकलोलकरैं कलकोइलकूंजिनिकुंजनमें। कीरउदोत कपोतकेगोत छकेमदशोरव गुंजनमें॥ किंशुक केतकी कुन्दजुही विकसौभुवनेशजूपुंजनमें। काहेनऐसीसमयमलितोहिंसुहातअहैरसभुंजनमें॥

निदान चपलाने वह छकड़ातो किलेमें भेजदिया और वह
तंबू उस मनोहर स्थानपर खड़ाकिया और उसको फूलोंसे आ-
च्छादित करदिया वह सबफूल मूर्च्छाकर चूर्णके सुगंधित तैल
से बसायेथे और फूलोंके हार उस तंबूपर इसप्रकारसे डालेथे
कि वह एक नवीनशोभा दिखातेथे और वह अचेतकरनेवाला
सुगंधित तैल बहुतसा उस डेरेकेभीतर और बाहरभी छिड़क
दिया और नाकमें रुईरखके अपनी नासिकाको बंदकरलिया
कि उसतैलकी सुगंधि ब्रह्मांडमें न जाय और उस तंबूके भीतर
शय्याबिछाई और उस शय्याके सबबिछौनों और तकियों में
वह मूर्च्छाकर सुगंधित तैल अच्छीप्रकार से मलदिया और
उस शय्याकेनीचे उत्तम आसन बिछाये और सबपर वह तैल
छिड़कदिया उस तंबूकेसन्मुख ऐसाउत्तम वह बनथा कि उसके
देखने से चित्तहराहोताथा और चंद्रमाकी चांदनी के खिलने
से उसकी अपूर्वहीशोभाथी वहांकी पृथ्वीकेकण चांदनीसे चम-
कतेहुए ऐसे जानपड़तेथे मानो ऊपर आकाश और नीचेपृथ्वी
दोनों एकरूपथे निर्मलजल धाराओंकी तरंगें अति उत्तम थीं
उनके तटपर चीतल हिरन पाढ़े और २ मृग फिरते चरते और

कूदते फांदते बहुतभले मालूमहोतेथे निदान वहां जब चपला सबसरंजाम रचचुका तब उसने अपनास्वरूप एकम्लेच्छयोगी कासा बनाया शिरपर खुलेहुए बाल लटकाये गलेमें हरी पीली नीली लाल और श्वेतरंगकी मणियोंके दानोंकी माला डाली हाथमें एक कालेपाषाणके मणियोंकी सुमिरनी ली कम्बल की घोघी ओढ़ी अधोवस्त्र कटिसे पैरोंपर्य्यंत पहिरा हाथमें लोहे का चिमटालिया कंधेपर झोलीडाली और उस तंबूके द्वारपर कंबल बिछाकर बैठगया और तंबूराबजाकर बड़े मधुर स्वरों से अद्भुत मिथ्या ईश्वर के भजन गानेलगा यहां अलंबुष उन दोनों बहुरूपियों को कैदकरने के पीछे अपने तम्बू में बैठगया और ऐसी मायाकरदी कि उसके भीतर अपना पराया कोई न आसकै यहांतक कि भृत्यों को भी निकालदिया और पृथ्वीको मायासे लोहकी सदृश कड़ाकरदिया कि कोई सुरंगलगाकरभी न आसकै निदान इसप्रकारसे सबप्रकारका प्रबंधकरके वहबैठा था कि अकस्मात् उसकेकानोंमें वह मधुरसुरीली गानकी ध्वनि गई उसको सुनतेही वहतम्बूके द्वारपरआया और देखा कि वह ध्वनि पीछेकीओर जो वनहै उसमेंसे आरही निदान उसीओर कोचलदिया और चपलाके तम्बूकेसमीपपहुंचा चांदनी तो छि- टकीहुईथी चपला उसेदेखतेही भागा और एकझाड़ीमें नदीके तटपर छुपरहा परन्तु अलंबुष वहां चलाआया और देखा कि आसन बिछाहै तम्बू बड़ी उत्तमजगहमें लगाहै भीतर तम्बूके एकरत्नजटित शय्याबिछीहै वस्त्रउसपर राजाओंकेयोग्य बिछेहैं शय्याके नीचे सुवर्णसूत्र निर्मितआसनडसेहैं और सुगन्ध चा- रोंओरसे बड़ीउत्तम आरही है उसे देखकर वह चकितहोगया और भीतर तम्बूके आकर उसशय्यापर बैठगया और वहतैल की उत्तम सुगन्धमूर्छाकर गुणयुक्त उसकेब्रह्माण्डमेंगई और वह उसके घ्राणसे आनन्दमें मग्नहोगया परन्तु फिर शोचा कि यह

तम्बू कहीं किसीबहुरूपियेने अपनेरहनेको न खड़ाकियाहो यह शोचकर उसने कुछमायाकी कि पृथ्वीसे एकपाषाणकी मूर्त्ति हाथ में एकपत्रलियेहुये निकली अलंबुषने जो वहपत्रपढ़ा उसमें लिखाथा कि यहतम्बू चपलानागी बहुरूपियेकाहै वह तुझको बध करचुका और अबतू मृतकतुल्यहै वह यहपढ़हीरहाथा कि तैल की गन्धने अपनागुण प्रगटकिया अर्थात् उसको एकछींकआई और वहमूर्छितहोकर गिरपड़ा चपलाउसकेभीतर आनेपरझाड़ी मेंसे शनैःशनैःनिकलकर तम्बूकेपास आलगाथा और देखरहा था कि वह क्याकरताहै उसके गिरतेही वह भीतर चलाआया और खड्गनिकालकर अलंबुषकाशिर धड़से पृथक्करदिया उसके मरतेही एकप्रलयकाल मचगया शिलावरषनेलगी बड़ेभयानक शब्दहोनेलगे और आकाशसेबाणीहुई कि मुझेमारा मेरा नाम अलंबुषथा उससमय चपला भागकर मारीचके पासगया और कहा कि शीघ्रचलो और उसभयानकशब्दको सुनकर अलंबुषकेसाथी उसके मरनेके स्थानकीओर दौड़े और वह दोनों बहुरूपिये जो कैदथे छुटकर दौड़ेहुये रानी केसरीमायाके पास गये और कहा कि अलंबुषमारागया तुमजल्दी सेनालेकरचलो और उसकी सेनाको घेरलो निदान वह बहुत शीघ्र सबसेना को सन्नद्ध करके किलेके बाहिरआई और एक ओरसे उसने और दूसरी ओरसे मारीच ने दोनोंने अलंबुषकी सेनाको घेरलिया और मायाकृत युद्ध होनेलगा और दोनों ओरसे अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षाहोनेलगी॥

चौ० ते युग सेना वीर भमाना। कीन्हे तहां घोर घमसाना॥
विविधभांतिकीमायाकरिकरि। सुरेशक्रसम्बरसमचरिचरि॥
माया कुशल करालकठोरा। दोऊ सैन सुमति बरजोरा॥
मारिमारिसहिसहिबहुत्राना। किये युद्ध अभिषेक महाना॥
तिनके शस्त्रघातसोधरणी। रुधिररुण्ड मयभयी विवरणी॥

निदान इसी प्रकारसे अनेक अनेक प्रकारके मायाकृतयुद्ध रात्रि भर होतेरहे और प्रातःकालहुआ और निशापति दिन-पतिके आगमको जानकर अपनी नक्षत्रोंकी सेना सहितनभ-मण्डलसे भागा और मार्तण्डने अपनी ज्योति से सब आकाश को व्याप्त किया॥

चौ० भयोप्रातजब निशा बितानी। उदये सूर प्रकाशग्रमानी।
इविधियुद्धमायाकृत भयऊ। कंपीधरणिदिग्गजडिगमगऊ॥

निदान अलंबुषकी सेना व्यथित होकर आनन्दवाटिकाकी ओरभागी रानी केसरीमाया ने सबडेरे तम्बू और युद्ध और विहार की सामग्री लूटली और चपलाने बहुतसा धन लूटा कि चलकर प्रहास को निवेदन करूंगा और उसने रानीसे कहा कि अब यहां ठहरना उचित नहींहै शीघ्र यहांसेचलो सेनातो तयारहीथी सब वहांसे हँसते कूदते और प्रसन्न होतेहुए चल-दिये और मार्गको उत्तीर्ण करके सेनाके विश्रामस्थलमें जय दुंदुभी बजातेहुये प्रवेशहुए रानी निशाकरीने सबको प्रसन्नता पूर्वक कंठसे लगाया और जयशब्दका उच्चारणहुआ॥

चौ० मिलें सुभक एकसनजाई। हंसे मोद भरि भरि सब आई॥

महारानी चन्द्रचूड़ाने चपलाको बहुतसा पारितोषिक द्रव्य दिया और सब बहुरूपियों का बड़ासन्मान किया परन्तु अलं-बुषकी सेना पराजित होकर महादीन और दुःखी भागतीहुई आनन्द वाटिकाके समीप पहुंची उससमय महेन्द्र आनन्दमें बैठाथा और २ सत्रहसहस्र मायावी म्लेच्छ उसकी सभामें बैठे थे नृत्य और गान होरहाथा मद्यके पात्र इधरसे उधर चलरहे थे कि इतनेमें सेनाके आर्त्तवचन उसके कानोंमें सुनाई पड़े पूछा कि क्याहै भृत्योंने सब वृत्तांत जानकर निवेदन किया कि अलंबुष मारागया और उसकी सेना भागकर आईहै तब उस ने उससेनाके कुछ अधिकारियों को बुलाकर अलंबुषके मारे

जानेका विस्तारपूर्वक वृत्तांत पूछा उन्होंने सब कह सुनाया उसको सुनकर उसने बड़ा शोककिया और दुःखसे होंठोंको काटा उससमय विचित्रमायाने कहा कि अबमें सहन नहीं करसकती हूं में जातीहूं और इन कुकर्मियोंको दंडदेतीहूं महेन्द्र बोला कि अभी तुम्हारा जाना उचित नहींहै तुम बदरी उद्यानमें चलकर सब राज्य अधिकारियों सहित ठहरो मैं दैवीखंडमें जाताहूं वहां से लौटनेपर जैसा उचितहोगा कियाजायगा यह कहकर महेन्द्र एक परमोत्तम रत्नजटित सिंहासनपर सवारहुआ उसके चारों कोनोंपर उसके चारोंमंत्री हाथमें चमर लियेहुए खड़ेहुए और चमर ढोरनेलगे वह विमान मायाकृत स्वेच्छाचारीथा महेन्द्रके सवारहोतेही वह विमान आकाशकोउठा और उसीसमय उस विमानके सन्मुख एक रत्नजटित मायाकृत तखत आगया उस पर परमसुंदरी मायाकी निर्मित अप्सरायें आकर नृत्य और गान करनेलगीं और बहुतसी अप्सरा पर कंधोंपर लगेहुए हाथोंमें सोनेरूपेके घड़े केवड़ा आदि अनेक प्रकारके सुगंधित जलसे भरेहुए और सुवर्णकी रत्नजटित पिचकारी लिये उसी तखतपरआकर खड़ीहुई और वहसुगंधित जलभरभरके एकदू-सरेके ऊपर पिचकारियोंसे डालनेलगीं और फिर एक बादल लालरंगका आकर आकाशमें महेन्द्रके ऊपर स्थित होगया और उससे मोतियोंकी वर्षाहुई उपरांत वह मायाकृत सिंहासन और तखत उस मायाकृत बद्दलसहित वायुकी भांति सन सन करतेहुए आकाशमार्ग से चले जिधर जिधर वह सिंहासन जा-ताथा वहांके पक्षी और वृक्ष और मनुष्य श्रीमहाराज महेन्द्र श्रीमहाराज महेन्द्र कहतेथे इसप्रकारसे चलकर वह महेन्द्र दैवीखंडको चलागया किसीन न जाना किसमार्गसे गया इस दैवीखंडका वर्णन उससमय होगा जब प्रहास प्रवेश करेगा रानी विचित्रमाया महेन्द्रके चलेजानेके पीछे मायाकृत मयूरपर

सवारहुई और सब राज्याधिकारियों सहित बड़ी धूमधामसे बदरी उद्यानमें आई और सिंहासनपर आसीनहुई और सब अधिकारी और सेनापति और महाशय अपने २ योग्य आसनोंपर विराजमान होगये नृत्य और गान मधुर मधुर वाणीसे होनेलगा गति बजनेलगी और उत्तमोत्तम पुष्पोंकी बनीहुई मद्यके पात्र चलनेलगे उससमय वायु ठंढीचली घटा घिरआई उस उद्यानके सब प्रसून प्रफुल्लित होगये और वृक्ष उन पुष्पों से लदेहुए सौरभ पवनके झोंकोंसे झूमनेलगे और कुछ मायाकृत पक्षियोंने आकर विनयकी कि श्रीआनन्दा मायाजी आती हैं विचित्रमाया बोली कि तभी अकस्मात् यह आनन्द छागया अच्छा कुछ अधिकारी जाकर उसको बड़े आदरसे लिवालावें यह सुनकर बहुतसे मानपात्र मायावी म्लेच्छ उठकर बाहिर गये और आनन्दाको बड़े आदर सत्कारसे उस बदरीउद्यानमें लिवालाये जब वह राजमंदिरमें पहुंची सबने उठकर उत्थान क्रियाकी और विचित्रमायाने उसे कंठसे लगाया और उसकी बलैयालीं और अपने समीप बैठालिया यह आनन्दामाया विचित्रमायाकी छोटी बहिनहै और ऐसी सुंदरी है कि उसकेरूपके सदृश देवताओंकी स्त्रियांभी नहीं हैं परमेश्वर जगत्कर्ता ने उस के सबअंग निर्दोष बनायेथे और ऐसी छविदीथी कि चैतन्यतो क्याजड़भी उसके स्वरूपको देखकर प्रफुल्लितहो जातेथे अपूर्व ही स्वरूप उसको दियाथा॥

दो० अंगअंग छविकी लपट उपटति जाति अछेह।
खरी पातरीहू तऊ लगै भरीसी देह॥
अंगअंग प्रति विंबपरि दरपनसे सबगात।
दुहरे तिहरे चौहरे भूपण जाने जात॥

महेन्द्र इसके सुंदर स्वरूपपर बहुत आसक्तथा और उसने इससे बहुतबार उसे अंगीकृत करनेको कहाथा परंतु इसने अ-

पनी वहिन विचित्रमायाकी कानसे निपेधकिया और इसीकारण
से राज्यसभामेंभी बहुत कम आतीहै और इसदेशमें एकआन-
न्दगिरि पर्वत है वहीं रहाकरती थी और इस मायाकृत देशमें
उपद्रवके उठने और मायावी दानव और म्लेच्छोंकेमारे जानेका
वृत्तांत सुनकर अपनी वहिनके पास आईथी हरएक मान्य मा-
यावी उसको चाहताथा परंतु इसकारणसे कोई उसके साथ
विवाहका योग नहीं डालताथा कि महेन्द्रभी उसको चाहताथा
और महेन्द्रके चाहनेके कारणहीसे विचित्रमाया यह चाहतीथी
कि वह उस देशमें न रहे परंतु लोकदिखाईको उसका बड़ासन्-
मान करती थी निदान जब वह आनन्दा वहां आकर बैठगई
विचित्रमायाने आज्ञादी कि मद्यलाओ भृत्यगण तुरंत उत्तम
वारुणीकेपात्र लेआये और मद्यपीना प्रारंभहुआ जब उसमद्य
से ब्रह्मांडमें ऊष्मा पहुंची तब आनन्दाने पूछा कि क्योंजी आज
कल यह कैसा उपद्रव उठरहा है विचित्रमाया बोली कि मैंना
इस निशाकरी निपूतीकी मृत्यु आई है कि इसने महाराजसे
शत्रुतामानीहै और महाराजके धर्मारूढ़ सेनापतियोंको मारती
है अब मैं जाकर उसे पकड़तीहूं और ऐसे बुरेलाहसे सिरपर
उपानह मारकर उसका वध करूंगी कि ऐसीदुर्गति किसी की न
हुईहोगी यह सुनकर आनन्दाको बुरालगा और वह बोली कि
मैंन तुम यहबात अनुचित कहतीहै निशाकरी चन्द्रचूड़ाकी नातीं
है कहीं पानीमें लाठी मारनेसे पानीअलग नहींहोता और यह
तुम कैसे कहती हो कि उपानह मारकर वध करूंगी कुछ वह
हमलोगोंसे कमनहीं है हां महाराज महेन्द्र और बड़े बड़े नामी
मायावी म्लेच्छ अथवा नील और सप्तवरणा नदियोंके निवासी
उसको पराजित करसकतेहैं और हम और तुम उसका सामना
करसकते हैं अथवा महाराज के चारों मंत्री उसके जोड़के हैं
मैंने सुना है कि उसने मायाकृत सर्पसे वज्रांगी को निगलवा

लिया होता यदि मायाकृत पुतली न होती तौ उससर्पसे बचके आना कठिन था ऐसी मान्य और वृद्धा के तुम कैसे जूती मार सकती हो यह सुनकर विचित्रमाया आगहोगई और बोली कि ओ लुकरिया तू उस निशाकरी का प्रताप बखानकर मेरे सेनापतियों को भयभीत करती है विश्वासघाती अधर्म इसी का नाम है मालूम होता है कि उन्हीं अधर्मियोंसे तूभी मिली है इसीसे उनकापक्षलेतीहै और फिर समीपस्थ महाशयोंसेकहा कि देखासंसारमें अब कैसा अधर्म आगयाहै देखो जब ऐसे ऐसे लोग अधर्म पर कमर बांधेंगे तौ और से क्या आशा होगी लीजिये हमारे सामने और निशाकरी की प्रशंसा यह दुर्भगा अब हमारी हितूहै अथवा शत्रुहै मैं अब उसके जूती न मारूंगी तौ क्या उसकोशिरपर बैठाऊंगी आनन्दाने यह कुवाक्य सुनकर कहा कि बस बस अब अपनामुख रोककर बात करो अधर्मी जो होगा सो जाने ये झगड़े मेरी जूती जाने मुझे क्या काम है तुम अब मेरेमुंह मतलगो नहीं तौ मैंभी अपने नाम की हूं अपना महारानीपन सब भूलजाओगी मुझे यह मत जताना कि मैं महाराज की भार्या हूं निदान ये बातें होही रही थीं कि अकस्मात् दैवी खंडसे महेन्द्र की सवारी जैसी कि ऊपर वर्णन होचुकी है आपहुंची और वह सिंहासन मायाकृत परमे आनन्दपूर्वक वार्तालाप करता हुआ प्रसन्नचित्त उतरा उसको देखकर सब सभासद खड़ेहोगये और सबने दंडवत् की इसके पीछे वह अपने सिंहासनपर सभामें विराजमान हुआ और देखा कि आनन्दा के नेत्रोंसे अश्रुपात चले जातेहैं बंद नहीं होतेहैं और उनसे उसके परम सुंदर चन्द्रमा से मुख की शोभा ऐसी दीखती है मानों मोतियोंकी झालर उसके मुख पर लगी हुई है अथवा मानों सीपी के मुखसे मोती निकल रहे हैं और मुखका वर्ण अति सुकुमारता से लालरंगका होगयाहै

उसे देखतेही महेंद्र का चित्त ह्रास होगया और उसने पूछा कि हे चन्द्राननी वायुरूपी शोक तुझे न लगै क्या तुझको ऐसाकष्ट पहुंचा है जिसके कारण से तेरा यह चन्द्रमा को लज्जा करने वाला मुखारविंद मलीन पड़गया है वह बोली कि महाराज अबतो मैं कुकर्मिणी और अधर्मिणी हूं परंतु मेरी यह इच्छाहै कि जाकर निशाकरी की सेना रूपी वसंतऋतुपर वह ग्रीष्मकी घाम डालूं कि उसका चित्तरूपी भ्रमर सहायतारूपी फूलके लिये रोता फिरै और मुझको दया न आवै और जीवितरूपी वाटिका में कोई शत्रुरूपी वृक्ष न रहजाय पर अब हमभी फूल की गंधके समान इस मायाकृत देशसे चले और आपके वाटिकारूपी राज्य से अलग हुये जब महेन्द्र ने उस शुभांगी के प्रसूनवत् मुखसे उक्त वार्ता सुनी और देखा कि कमलरूपी नयनों में जलरूपी अश्रुपात भरेहैं और कोमल कोमल होठ प्रसूनकी पंखड़ीकीसमानक्रोधयुक्त वाणीरूपी वायुसे थर्रारहेहैं॥

जयकरी छन्द॥

होयमलीन पाय अपमान। रहिबो चहति न छिन उन मान॥
अधर हँसी चितवन में लाज। प्रकट प्रीति उर क्रोध विराज॥

और खिसियानीसी होकर बात कररही है तब महेन्द्रने विचित्रमाया से घुड़ककर कहा कि जब येही लोग धर्म त्यागी हैं तो तुम धर्मात्मा कहांसे उत्पन्न हुई विचित्रमाया बोली कि मैं सब बातें जानती हूं मुझसे ऐसी बनावट की बातें मतकरो मैं मनुष्य को दृष्टिसे पहिचानजाती हूं तुम उसकी भला क्यों ओर न लोगे यह बातभी आनन्दा को बुरी लगी और महेन्द्र चुप होरहा तब आनन्दा ने यह विचारा कि यहां से चलकर प्रथम तो निशाकरी की सेनाका विध्वंसन करो पीछे कहीं को निकल चलो यह विचारकर उसने अपने प्रसूनरूपी मुखारविन्द से वाक्यरूपी प्रसून इस प्रकार से निवेदन किये कि हे महाराज

अंतमें आप किसीको न किसीको शत्रुसे युद्धकरनेको भेजेंगेही मुझीको आज्ञा दीजिये तब महेन्द्र ने विचार किया कि जो में इसको रोकताहूं तो विचित्रमाया कहैगी अपनी प्रियाको लड़ने न जानेदिया यह शोचकर उसने आज्ञादी कि अच्छा जाओ परंतु तुम युद्ध न करना अलग रहना और निशाकरी की सेनाका विध्वंसन किसी अपने नौकरसे करादेना और मैं भी तुम्हारे लिये सहायक भेजूंगा आनन्दा बोली कि आजतक तो मैंने किसी की सहायता नहीं ली यदि आपभी सहायक बनके आवेंगे तो मैं अपना गला काटडालूंगी कहीं ऐसा न कीजियेगा कि किसीको सहायता के लिये भेजिये महेन्द्र बोला कि सत्यहै हे रानी तुम ऐसीहीहो और फिर उसको पारितोषिक वस्त्र आदि मँगाकर दिये उपरांत आनन्दा मुख फुलाये और त्योरी चढ़ाये हुये वहांसे अपने यानपर सवार हुई और आनन्दगिरि पर आई औ एक दिन अपने स्थानपर रहकर दूसरे दिन उसने अपने ५ त्तानन नामी सेनापतिको आज्ञादी कि सेनाको सन्नद्धकरें और वसंतीडेरे तंबू मायाकृत सर्पोंपर लादेगये और साठसहस्र मायावी म्लेच्छ और दानव और दानवी मायाके प्रयोग करनेके अनेक प्रकारके सरंजाम लेकर युद्धाभिलाषी उपस्थितहुए और जब प्रातःकाल हुआ और दिवाकरने अपनी किरनों के प्रकाशसे अंधकार को नाशकर के दिन किया॥

सो० मिटयो निशाको लेश उदय भानुके होतही।
शुभमंडल नभ देश निशापती त्यागतभयो॥

प्रातःकाल होतेही मायाकृत तूरबजाई गई और सेनाने कूच किया और आनन्दा माया अपने मायाकृत विमानपर सवार हुई उसपर नानाप्रकारके फूलोंके गुच्छे रक्खेथे ऊपर घटाछारहीथीं मंदी मंदी फुइयां पड़ती जातीथीं जिधर जिधरसे उसका

विमान जाताथा उधर उधरकी पृथ्वी में बेलेकेफूल उत्पन्नहोते और खिलते जातेथे दासियां सिरपर सुनहला रत्नजटित छत्र लगायेथीं और बहुतसी अप्सरावत् स्वरूपवान् स्त्रियां साथमें पिचकारीलिये प्रकटहोती और रंगखेलती जातीथीं होलियां गातीथीं और साथके मायावीदास और दासियां रानीपर सोने केफूल नोछावर करते जातेथे और मायाके चमत्कार दर्शातेथे और आगे आगे सेनापति प्रमत्तानन महोर्गपर सवार और पीछे पीछे सेना साठिसहस्र चली ॥

चौ० मदप्रमत्त अतिबल मतवारे। दीरघ उन्नत काय करारे॥
अस्त्रशस्त्र मायाकृत लीन्हें। असिशायक निषंगकटिकीन्हें॥
रौद्र विक्रमी रौद्रस्वरूपा। मायाकोविद अकथ अनूपा॥
मायाकृत वाहननि नचावत। खेचरभूचर गतिदरशावत॥
दानवम्लेच्छ नैनकरि राते। चले सकलरण रसरँगमाते॥

निदान रानी आनन्दा बड़ी धूमधामसे पांच पांच कोसपर विश्राम करतीहुई वहां से चली जब आनन्दगिरि पर्वतसे पांच कोस सेनाचलकर आई रानीने वहां विश्रामकिया परंतु उसके मंत्री प्रमत्ताननने कहा कि हे रानी जो आपकी आज्ञा होतो मैं बारहसहस्र सेनालेकर आगेजाऊं और रानी निशाकरीको सेना सहित पकड़लूं जिसमें श्रीमहारानीको व्यवसाय न करना पड़े केवल इतना काम रहजाय कि उनकेशिर कटवाकर आप महाराज महेन्द्रके पास भिजवादें रानीबोली कि अच्छाजाओ और मेरीशिक्षित मायाको जातेही करना यह आज्ञापाकर वह बारह सहस्र छटेहुए योद्धालेकर चलदिया और बड़ेमार्गको शीघ्रता से उत्तीर्ण करके रानी निशाकरीकी सेनाके निकट जापहुंचा और डेरेतंबू खड़े कराकर नगाड़े बजवाये और सेनावहां उतरनेलगी और आप अपनी सभाके तंबूके समीप एक और तंबू खड़ाकराकर उसमें बैठकर सब सरंजाम लेकर मायाका प्रयोग करने

लगा राई और सरसोंका होमकिया वाराहका वलिदान दिया और एक चौकीपर बैठकर मंत्रकाजप करनेलगा निदान यहतो यह प्रयोग करताथा और उधर मायाकृत पक्षी उसके आगम को जानकर महारानी चन्द्रचूड़ाकी सभामेंआये और महारानी की जयस्तुति करनेलगे॥

चौ० क्रीटमुकुट अरु छत्रसुहायो। जो तवशीशलसत छविछायो॥
सिंहासन यह परम अनूपा। शीश नवावत जेहिजग भूपा॥
धन अरु राज्य मित्र अरुसेना। रहैंअचल होवहु जग जेना॥

और विनयकी कि रानीआनन्दामायाका सेनापतिप्रमत्तानन नामी सेना सहित युद्धकी इच्छासेआयाहै यह सुनकर निशाकरीने प्रहाससेकहा कि परमेश्वर अपनी कृपाकरै रानी आनन्दा का आना प्रलयका आनाहै हमकोई उसका सामनानहीं करसकतेहैं और उसके सेनापतिसेभी युद्धनहींकरसकते इनमें तो वार्तालापहोनेलगा और वहुरूपिये उसके आनेका वृत्तांतसुनतेही निकलकर वनमें चलेगये प्रहासने कहा हेरानी परमेश्वररक्षकहै घवड़ाना उचितनहींहै निदान प्रहासने अनेकप्रकारसे आश्वासनकिया परंतु सवसेना में खलवलीपड़गई और जो कायर और कमविश्वास रखनेवालेथे वे भागनेलगे और जोशूरवीर और चित्तके थोदे न थे उनको अपने मरणका निश्चयहोगया प्रहासने चाहा कि सवको आश्वास न करके मैं भी सेना से निकलकर वाहिरचलाजाऊं कि अकस्मात् आकाशमें एक वद्दल प्रकटहुआ और उससे सहस्रोंसितारे टूट टूटकर गिरने लगे उसकोदेखकर रानीकेसरी मायावोली कि मालूमहोताहै कि रानी रक्तकेशी आतीहै जोरक्तागढ़कीरानीहै यहसुनकर निशाकरीने वहुतसे मान्य म्लेच्छोंको उसको आदरपूर्वक लानेके लिये भेजा और प्रहास कहांतो जाताथा ठहरगया कि देखूं कौनआताहै निदान रानी निशाकरी और केसरीमायाभी उठकर उसको लि-

वानेगई उसने देखतेही रानी केसरीको अपनेहृदयसे लगालिया क्योंकि रानी रक्तकेशी और रानीकेसरीदोनों का भैनापनाथा और अब रक्तकेशी रानीकेसरीको समझाने आईथी कि प्रहास का साथ क्योंलियाहै अबभी समझकर लौटचले और मेरेसाथ साथ लिवालेजाऊं यह रक्तकेशीबड़ी भारीमायाविनीथी और राज्य और धनभी रखतीथी तीससहस्रसेना उसकी आज्ञामेंथी और महेन्द्रभी उसको बहुत मानताथा और स्वरूपकीभी बड़ीसुंदरी थी निदान रानीनिशाकरीने उसेबड़े आदरसे सुनहलेआसनपर बैठाया तब उसने देखा कि महारानी चन्द्रचूड़ा सिंहासनपर विराजमानहै सभा लगीहुई है और प्रहास एकरत्नजटित आसन पर बैठाहै महेन्द्रने पहिलेही प्रहासके स्वरूपकावर्णन सबदेश में विख्यातकरादियाथा इससेयहभी उसकोदेखतेही पहंचानगई और उसके अपूर्व स्वरूपको देखकरहंसी और बोली कि अरी भैनाकेसरी तैंने यह क्या अपकर्मकिया जो महाराजसे बिगाड़ की बड़े शोचकी बातहै कि तैंने अपन प्राण निरर्थकदिये वह बोली कि भैना अब महेन्द्ररूपी चन्द्रमा के अस्तहोने का समय आगयाहै और प्रहासरूपी सूर्यकाउदय है यह मायाकृत देश विजयहोगा महेन्द्रमाराजायगा जो कोई प्रहासका सहायकहोगा वहजीताबचैगा बाकीसब मारे जायंगे तुमभी भैन आकर मिल जाओ यहसुनकर रक्तकेशी बहुतहंसी और बोली कि वाहकहां महाराजमहेन्द्र और कहां प्रहास भला बताओतो कि कहां पृथ्वी और आकाशतेरी मतिकहांगईहै तूमुझेउलटी समझावैहै ये बहुरूपियै सहस्रों मायावी दानव और म्लेच्छों को मारडालेंगे तोभीक्याहोगा महेन्द्र के पास इतनी सेनाहै कि एक गढ़है उस में कईसैकूपहैं और उन कूपोंमें अनगिनती मत्स्यभरेहैं परंतु वे मत्स्यनहीं है किन्तुमाया कृत योद्धाहैं और महेन्द्रकी वहीसेना है यदि उनमें से एकभी कूपखोलदेतौ सारासंसार मायावीम्ले-

च्छ और दानवोंसे भरजाय भला महाराज महेन्द्रसे कौनसा-
मना करसकताहै और यहभी माना कि प्रहास सबको विजय
करलेतौ मायान्वेषणी चक्रकहांसे पावैगा विना उसके यहमाया-
कृत चमत्कारक्योंकर नष्टहोसकतेहैं और उसचक्रका वृत्तांत महे-
न्द्रको तौमालूमही नहीं यह प्रहासकहां से पावैगा रानी केसरी
बोली कि रक्तकेशी वह सर्वशक्तिमान ईश्वरकोई तौकारणऐसा
उत्पन्नकरेगा कि वह मायान्वेषणी चक्रमिलैगा और यहमायाकृत
देशविजयहोगा तुमने सुनानहीं कि मारनेवालेसे बचानेवाला प्रब-
लहै तब रक्तकेशी बोली कि भैना अबमुझे जानपड़ा कि हमारा
तुम्हारा वियोगहुआ क्योंकि हमसे प्रहास ऐसे क्षुद्रकी आज्ञातौ
न मानी जायगी निदान आपसमें यह वार्तालाप होहीरहाथा कि
इतनेमें प्रमत्तानन अपनीमाया का प्रयोग पूराकरचुका और
उसी प्रकारसे जैसे उसने बलिप्रदान आदि कियाथा उठाहुआ
तंबूके द्वारपर चलाआया और खड़ाहोकर निशाकरीकी सेना
की ओर कुछपढ़कर फूंकदिया कि उससे एक बादलउठकर सब
सेनापर छागया और ठंढी ठंढी प्रचंड वायुचलनेलगी उसको
देखकर रक्तकेशीने कहा कि देखो कोई आपत्ति आई और यह
कह कर आकाशमार्ग से चलनेलगी परंतु बादलतौ घटाटोप
होहीगयाथा ठंढीवायुकेलगतेही मूर्छितहोकर पृथ्वीपरगिरपड़ी
और थोड़ी देरमें जबचैतन्यहुई तब बोली कि अरी केसरीतेरी
प्रीति के कारणसे मैंभी पकड़ीगई रानीनिशाकरी और केसरी
और मारीच आदि सबभूलमें थे वे जानतेथे कि जब प्रमत्तान-
नयुद्धके बाद्यबजवावेगा तब युद्धहोगा निदान उस शीघ्रतामें
सब अपनी २ मायाका प्रयोगकरनेलगे परंतु किसी प्रयोग से
कुछ न हुआ और ठंढी२ वायुके जोझोके लगनेसे सबके सब मू-
र्छितहोगये और थोड़ी देरमें जब चैतन्यहुएतौ पुकारनेलगे॥

दो०। मद्यवणिक बाजारमें आजुहोतयहघोस।

मृतकप्रायतेहोयंगे जिनहिंरहैगो होस ॥

सबमदोन्मत्तहोकर झूमते थे और पानपात्र और वारुणी पात्र लियेहुए मद्यपान करतेथे कोई किसीके धूललगाताथा कोई किसीकी मूछ उखाड़ताथा और किसीको उसमद्यकी तरंगमें तरंगिणी दृष्टि पड़तीथी और नाक पकड़कर पृथ्वीमें गिरताथा और अपनेको जानताथा कि मानोंनदीमें गोता लगारहाहूं कोई कहताथा ॥

दो० जबतक श्वास शरीरमें देखहुरस संसार ।
मृतकभये कह देखिहो भयेदेह निस्सार ॥

इसके पीछे सब सेनाकेलोग ढोलक और पखावज लेकर होली गानेलगे कोई तान उड़ानेलगा और कोई कहनेलगा कि-मद्यपेयी रंगतो ऐसाजमाना चाहिये— मस्तआवें भट्टियोंपर होलियां गातेहुए-उनके मदोन्मत्तताकी दशाके गाने बजाने नाचने और कोलाहल करने से एक अपूर्व खड़मंडल था हरएक मद्यपेयी कहताथा ॥

अलापजयकरीछंद ॥

लावहुमद्य भरहुमम पात्र । जाते शुद्ध होंइ ममगात्र ।
मधुरफूल फलगण अभिराम । जिनकोरसअति स्वादललाम ॥
तिनसों निर्मितअति स्वादिष्ट । धारिसकत नहिं जेहि पापिष्ट ।
लावहुमद्य भरहु ममपात्र । जाते शुद्धहोंइ मम गात्र १ ॥
बुद्धिप्रचोदक अति कमनीय । वात पित्तहर अति अमनीय ।
वीरकाम आदिक रससर्व । प्रकट करतजो अखिल अखर्व ॥
लावहुमद्य भरहु ममपात्र । जाते शुद्धहोंइ ममगात्र २ ॥
चित्तहोत जासों एकाग्र । धरतध्यान हरि निशिदिन जाग्र ।
छलप्रपंच जोकरत अलोप । राखिसकत नहिंसत्यहि गोप ॥
लावहुमद्य भरहु ममपात्र । जाते शुद्धहोंइ ममगात्र ३ ॥
जासों विपदापत्ति भुलाइ । तत्क्षण चिंता शोकनसाइ ।
जोजग जीवन आयुपमूल । परमौषधी हरति सबशूल ॥
लावहुमद्य भरहु ममपात्र । जाते शुद्धहोंइ ममगात्र ४ ॥

क्षुद्रजीव जेहि करिकेपान। इमिनसकत धरिवेग महान॥
जैसेनीर नदीको आय। नहिं तलावमें सकत समाय॥
लावहुमद्य भरहु ममपात्र। जासें शुद्धहोइ ममगात्र ५॥

निदान इन सबकीतो यहां यह गतिथी कि मायाकृत बद्दल से वेष्ठित होकर कैदथे जो निकलना चाहताथा शीतल वायुके लगतेही मूर्च्छित होजाताथा और जो उसमेंकैदथे सब मदोन्मत्तथे परंतु प्रहासके सिवाय और सब बहुरूपिये सेनाके बाहिर पहिलेही निकलकर चलेगये थे उन्होंने दूरसे अपनी सेनाकी यह दुर्दशा देखकर बहुरूप धारिणी विद्या सम्बन्धी तूरबजाई उसको सुनकर उपहास जो बनमेंथा उनके पास चलाआया और उससे उन्होंने सब वृत्तांत निवेदनकिया तब उपहास कार्य साधनकी चिंता करताहुआ एक ओरको चलदिया और बाकी तीनों बहुरूपिये दूसरी ओरको मार्गीहुए और उधर प्रमत्तानन उक्तप्रकारसे मायाके बद्दलसे सबको वेष्ठित करके अपने तंबूमें आया और स्नान करनेकी इच्छासे भृत्योंको आज्ञादी कि जल लाओ वह भृत्य पानीके घटलेकर सेनाके समीप जो नदीथी वहां जलभरने आये और नदीसे जल भरनेलगे कि इतने में उपहास कार्य साधन करनेकी चिंतामें वहां आ निकला और उसने उन भृत्योंसे पूछा कि यह जल कहां जायगा भृत्य बोले कि प्रमत्ताननके स्नानोंको जाता है तब उपहासने एक भृत्यसे कहा कि भाई तुमसे मुझे कुछ कहनाहै तुम्हारे एक मित्रने तुम्हारे लिये कुछ भेजाहै यह सुनकर वह भृत्य लालचमें आगया और सोचा कि यद्यपि मैं इसको जानता नहींहूं तथापि कदाचित् किसीने कुछ इसके हाथ भेजाहो आओ अकेले में चलकर लेलूं यह सोचकर वह उपहासके साथ २ होलिया और जब एकांतमेंपहुंचा उपहासने उसके मुखपर मूर्च्छाकर चूर्णका बुक्कट भरके मारा और उससे वह अचेत होगया उपहासने उसे एक

वृक्षसे बांधदिया और उसका स्वरूप बनाया मुड़ासा शिरसे बांध
लिया ऊर्ध्ववस्त्र पहिर लिया एकवस्त्र कमरसे लपेटा और घट
उठाकर शीघ्रतासे नदीपर आया और पानीभरकर घड़ेको शिर
पर रखके प्रमत्ताननकी सेनामें आया वहां देखा कि एक तंबूके
भीतर भृत्य पानीके घटलेकर जातेहैं और आतेहैं यहभी चला
गया और जहां चौकीपर बैठाहुआ प्रमत्तानन स्नान कररहाथा
गया और घट लियेहुए उसके पीछे जाखड़ाहुआ जब और
भृत्य पानी उसके शरीरपर डालकर और पानीलेने बाहिरगये
उसने घट उतारकर एक हाथसे घटसे पानी डालनेलगा और
दूसरे हाथसे अपनी भुजाली जो कमरमें छुपालीथी निकाली
और निकालकर उसने वहघट जलका प्रमत्ताननके शिरपर प-
टकदिया और जैसेही उसने घबराकर शिर फेरकर उसकीओर
देखा उसने एक भुजाली उसके शिरमें मारी कि उसका शिर
कटगया और वह त्यौराकर पृथ्वीपर गिरा तब उपहासने उस
काशिर काटडाला उससमय चारोंओर अंधकार छागया महा-
कोलाहल प्रकटहुआ और उसके साथी मायावी म्लेच्छ दौड़े
उपहासतौ वहांसे कूदकर भाग आयाथा जब वे म्लेच्छ तंबूके
भीतर आये आकाशसे शब्द हुआ कि मैं प्रमत्तानन मारागया
उसकी लोथको उन सबोंने उठाया और रोने पीटनेलगे और
इधर उसके मरतेही वह बद्दल जिससे सब सेना वेष्ठितथी भट
गया और नष्टहोगया और सेना चैतन्य होगई वह मदोन्मत्त
तावत्क्षण दूर होगई उससमय रानी रक्तकेशीने रानी केशरीसे
कहा कि भैन अब मैं जातीहूं यह क्याथा और क्या होगया वह
बोली कि हमसब प्रमत्ताननकी मायाकृत बद्दलसे वेष्ठितथे उस
को किसी बहुरूपिये ने मारडाला है इससे वह माया सब दूरहो
गई और हमसब मुक्त होगये यह सुनकर रक्तकेशीके होश उड़
गये और वह बोली भैन अबतौ मैं मानगई क्याही शीघ्र बहु-

रूपियोंने कार्य साधनाकी वाह वाह वाह क्या कहनाहै तब केशरी ने कहा कि भैन अब कहां जायगी यहीं ठहरो और देखो किक्या होताहै यह सुनकर वह ठहरगई और उपहास ने बनमें जाकर वहुरूपधारिणी विद्या सम्बन्धी तूरबजाई उसको सुनकर चपला दौड़ाहुआ आया और पूछनेलगा कि प्रमत्ताननकी सेनामें यह कैसा कोलाहल था और यह अग्निसी लगी हुई क्या था उपहासने कहा कि प्रमत्तानन को मैंने मारकर यमलोक में पहुंचा दिया अब शीघ्र जाकर निशाकरीकी सेनाको लाकर शत्रुकीसेना को मारडालो यह सुनके वह दौड़ाहुआ रानी निशाकरी के पास आया और बोला कि शीघ्र चलकर प्रमत्तानन की सेना का वध करो यह सुनकर निशाकरी ने मायाकृत तूर बजाई और बड़ी शीघ्रता से साठ सहस्र सेनाको सन्नद्ध करके प्रमत्ताननकी बारह सहस्र म्लेच्छोंकी सेनाकोघेरलिया दोनों ओरसे मायाकृत युद्ध होनेलगा एक ओर से जो अग्नि बरषी तो दूसरी ओर से जल वर्षा पाषाणों की वर्षा हुई अस्त्र शस्त्र वर्षे और ऐसा भयानक युद्ध हुआ कि प्रलयकाल मालूम होता था चन्द्रचूड़ा का विमान सेनाके ऊपर ऊपर बढ़ता जाताथा पद्मावती मायाकृत बिजलियां शत्रु सेनापर गिरती थी और प्रहास पूर्व रीति से कभी अधपात करके योद्धाओं के पैर काट डालताथा कभी ऊर्ध्वपात करके शिरकाटताथा और मरेहुओंकी कमरकाटकाटके लूटता था एक ओर भानुविक्रम गरजि गरजि कर कहता था ॥

हौं भानुविक्रम नाम। असि युद्ध वेत्ता आम ॥
गद बाणयुद्ध कराल। करि वधत शत्रुन हाल ॥

उस समय चारों ओर से काली घटा घिर आई थी खड्ग बिजली की भांति चमकते थे और शिर कट कट कर मेघ की भांति बरसते थे मारीच भानुविक्रम के साथ साथ माया के प्रहार से उसकी रक्षा करताहुआ युद्ध करता था और भानुवि-

कम खड्गादि अस्त्रों के प्रहार से शत्रु सेनारूपी बनको अग्नि की भांति भस्म करता हुआ विचरता था और शत्रु सेना के योद्धा उसपर प्रहार करते थे ॥

भुजंगप्रयात ॥

गजी अश्व सादी रथी भूरि योधा । भिरैं हांक दै दै गहे क्रूर क्रोधा ॥
किते शक्ति चालैं किते मल्लचालैं । किते तोमरैं औ किते भिंडपालैं ॥
किते खड्ग बाहैं किते बाण डारैं । कितेकोंगदा आयसी जीरमारैं ॥
तहां भानुविक्रम सुविक्रम दिखायो । गदापाणिलै घोरसंग्रामचायो ॥
कटे शीश केते फिरे रोर रारे । खरैहैं किते गर्वके दर्प सारे ॥
किते सोहिबाहैं गदा साथियें पें । मरे बीर केते गिरें हाथियेंपें ॥
गहे धीरता वीरता भूरि ठाटैं । करी वाजि वीरानके गातकाटैं ॥
करें दीह चिक्कार केते विलूटैं । भगें ओगिरें औ मरें ह्वै विछूटैं ॥
भयो घोर संग्राम ताठौर जैसो । यथायोगकासों कहोजायतैसो ॥

निदान थोड़ी देरमें शत्रुकी सब सेनाको विध्वंस करदिया औरजो थोड़े से बचे थे वे वहां से रानी आनन्दा सायाके समीप को भाग जब कोई युद्ध करने वाला न रहगया रानी निशाकर्ण ने असमानतन के साथ के तंबू और कोष आदि जितने पदार्थ थे सब लूट लिये और लूट मार करके सब सेनापति अपनी २ वाहिनी सहित अपने डेरोंको लौट आये सब सभासद् सभामें आकर विराज गये महारानी चन्द्रचूड़ाको सबने भेंट दी और आनन्द पूर्वक बैठकर सब विजय पानेका हर्ष मनाने लगे उस समय रानीरक्तकेशी ने भी उठकर भेंटदी और कहाकि मैं आप सबके साथ युद्धमें रही हूं इससे अब मैं लौटकर न जाऊंगी जो जाऊंगी तो महेन्द्र मुझको जीता न छोड़ेगा मैं अब यहीं ठहरती हूं मरूं चाहे जीऊं आप मुझकोभी अपनी एक दासी समझिये यह सुनकर रानी निशाकर्णी ने उठकर उसे गले से लगाया और पारितोषिक वस्त्र दिये इसके पीछे रानी रक्तकेशी ने एक पत्र अपने सेनापति दुर्मुख नामी को लिखा कि हमारा

सब माल और कोष और सेना लेकर तुम शीघ्र रानी निशा-करी की सेना में आजाओ क्योंकि मैंने प्रहास की आज्ञा में रहना स्वीकार किया है और यह लिखके वह पत्र एक मायावी म्लेच्छ को दिया और वह उसेलेकर आकाश मार्गसे रक्तागढ़ की ओर चलदिया परंतु अब आनन्दा माया का हाल सुनिये कि वह पांच पांच कोस का कूंच करती हुई चली आती थी और इस बात की बाट देख रहीथी कि शत्रुकी सेनाके पकड़े जाने के समाचार प्रमत्तानन के पाससे आवें तौ मैं शीघ्र जा-कर सबको मारडालूं और सबके शिरकाटकर महेन्द्रके पास भेजदूं कि इतने में एक दिन वह एक परम शोभायमान हरे भरे वनमें विश्राम करके वन बिहार कररही थी कि प्रमत्तानन के सेनाके मनुष्य रोते पुकारते हुये वहां जा पहुंचे उनके क-रुणामय शब्दको सुनकर आनन्दा ने सबको अपने सामने बुलवाया और हाल पूछा तौ उन्हों ने सेनाके मारेजानेकाहाल कहकर प्रमत्तानन के जीवितरूपी तड़ाग के शुष्क होजाने का भी सब वृत्तांत कह सुनाया उसको सुनकर रानी आनन्दा पीली पड़गई और महा क्रोधित होकर क्रोधके आवेशसे अपने होंठ चाबने और हथेली काटनेलगी और अपने मायाकृत मयूर वाहनको मँगवाकर उसपर सवारहुई वह मयूर बड़ा शीघ्रयंता और बड़े डीलडौलका था ॥

चौ० तरुशाखा समपक्ष सुहाये। विटप समान गोड़ मनभाये ॥
गिरिसम उन्नत विस्मितकाया। वायुवेग अति दुस्तरगाया ॥

और सब सरंजामको छोड़कर एकाकी उस मयूरपर सवार होकर चली उससमय सेनाके सेनापतियोंने उसे जातेहुए देख कर तुरंत कूंचके नगाड़े बजवाये और बड़ी शीघ्रतासे सबकोई अपने २ वाहनोंपर चढ़नेलगे उससमय आनन्दाने सब सेना-पतियोंको बुलाकर कहा कि मैं आगे जातीहूं तुमलोग पीछे २

आओ और निशाकरीकी सेनासे पांचकोस इसओर ठहरजाना में जाकर सबका अंत तुरंत कियेदेतीहूं सेनालेजानेमें यह बड़ा भयहै कि मनुष्योंके बहुत होनेसे बहुरूपिये पहिंचाने नहींजाते और वे सेनामें घुसकर बड़ी आपत्ति उत्पन्न कर देते हैं में खड़े खड़े सबको कैद करके चली आऊंगी यह कहकर उसने दोचार दासी और सहेली अपने साथलीं और वहांसे चलदी यहां सेनामें सब अपने २ आनन्दमें गाते बजातेथे और नृत्य देखते थे परंतु रानी निशाकरीको संदेह लगाहुआथा कि आनन्दा मायाका सेनापति मारागयाहै वह अवश्य आकर कुछ बखेड़ा मचावेगी और प्रहासभी सुन चुकाथा कि प्रमत्तानन आगे २ आयाथा और आनन्दा पीछे उसकेआरहीहै अब प्रमत्ताननके मारेजानेसे कुछ न कुछ आपत्ति अवश्य आवेगी वह सेनासे निकलकर बाहिर चलना उचितहै निदान उसने निशाकरीसे कहा कि लो मैं जाताहूं परमेश्वर तुम सबका रक्षकहै जोकुछ आपत्ति आवे उससे तुम घबड़ा न जाना और चित्तको सावधान और धीर्य रखना आनन्दा मायाके आनेके समाचार उड़रहे हैं मेरा अब यहां ठहरना उचितनहीं है यह कहकर वह चलदिया और और बहुरूपियाभी प्रहासको जातेहुए देखकर वनमें निकलगये और रानी निशाकरी आनन्दाकी मायाके उपद्रवको शांत करने के उपायमें लगीं कि अकस्मात् वायु शीतल सुगंधभरी चलने लगी और निशाकरी की सेनामें यह शब्द प्रकटहुआ कि आनन्दा आई आनन्दा आई यह सुनकर रानी निशाकरी और सब सेनापति सभामेंसे उठकर घबड़ायेहुए बाहिर चलेआये और देखा कि सेनाके सन्मुख वह महामयूर अपने पक्षोंको थर थरारहाहै और रानी आनन्दा उसपर सवार है और जब सब सेना और सेनापति सभा और तंबू और अपनी २ सिविरसे निकलकर एकस्थानपर खडेहोकर आनन्दाके परम सुंदर स्व-

रूपको देखनेलगे तब आनन्दाने कुछ मायाकी और पर्वतोंसे एक बड़ी घनघोर घटाउठी उसको देखकर रानीनिशाकरी और और सब मायाकोविद्रक्षाके लिये अपनी २ अभ्यासित माया के प्रयोग करनेलगे परंतु अकस्मात् पृथ्वीमेंसे एक पीलेरंगकी धूलउड़ी और उससे सबके नेत्र बंदहोगये और वह घटाचारों ओरको छागई थोड़ीदेरमें जब सबकी आंखेंखुलीं तब देखा कि फुलवाड़ी अति उत्तम अनूप लगीहुई है शीतल मंदसुगंध स-मीर चलरही है और सामने एक चार पांच हाथ ऊंचा स्फटिक का प्राकार बनाहुआ कोसोंतक चलागया है जिससमय सबकी आंखें बन्दहुईथीं उससमय आनन्दाने तुरंत माया करके यह चमत्कारी स्थान इस प्रयोजनसे बनायाथा कि इसमें जो कोई आवे मदोन्मत्त होजाय और अधर होनेसे उसमें कोई सुरंग भी न लगासके निदान सबने उससमय देखाकि आनन्दा अपने महा मयूरको उड़ाकर उसबागमें चलीगई यह देखकर रानी निशाकरीआदि सब सेनाके योद्धा और सेनापति उस बागकी ओर चलदिये औरसमीपजाकर क्या देखतेहैं कि ॥

चौ० अतिरमणीक बनो प्राकारू। शुभ्रफटिक निर्मित अति चारू ॥
ठौर ठौर शुचि बुर्ज बनाये। चित्रबरण मणि जटित कराये ॥
उन्नत द्वार बनो अति चारू। हेमरत्न मय लगे किवारू ॥
उपलविचित्रबरणलोंशोभित। रौंसे बनीं चारु चित चोभित ॥
तिनसोंखण्डखण्डक्षतक्यारी। बनीं फूल द्रुमलता सवाँरी ॥
नानावर्ण प्रसून सुहाये। ठौर ठौर बहुभांति लगाये ॥
फलितलताद्रुम पुष्पितनीके। चित्रविचित्र लगे हरहीं के ॥
जहँ तहँबने सुलता विताना। छादित बहु प्रसून विधिनाना ॥
कनकबरण कदली छबिछाये। वर तडाग चौपास लगाये ॥
तिन में पुण्डरीक कल्हारू। फूलिरहे इन्दी वर चारू ॥
अमीस्वादु निर्मल जलधारा। भांति भांति तहँ बहें अपारा ॥
मोरचकोर शोर अति करहीं। शुक सारिका विहँग मन हरहीं ॥
शीतलमन्द सुगन्ध बयारी। परसि अंग अति करत सुखारी ॥

पुष्पपनिज नित गन्धउत्कर्षा। भ्रमित वायुवश करति सुहर्षा॥
मधुकर निकर गुंजरत डोलें। करि करि भौंर प्रसूननि कोलें॥
तोमरछन्द। बहुझरत मधुमकरन्द। मिलि बहत मारुत मन्द॥ उड़ि सघन सुरंग पराग। सो भरत मनु अनुराग॥ कलकरत कोकिलराव। मधुमत्त मधुप सचाव॥ करिरहे हैं गुंजार। मनमदन मन्त्र उदार॥ ऋतु सरस है ऋतुराज। लहि संग काम समाज॥ थल देखि सो अभि राम। वशभये सवगहि काम॥

बागके भीतर एक स्फटिकका वड़ा प्रकाशमान चबूतरा वनाथा उसपर सुनहलेरंगका वितान मोतियोंकी झालर लगा-तनाहुआथा और नीचे वड़े उत्तमवस्त्र और आसन विछेथे आसपास परमसुन्दरी शोभायमान दासियां हाथ में वारुणी पात्र और पानपात्रलिये खड़ीथीं और बीच में एकरत्नजटित आसनपर रानी आनन्दामाया विराजमानथी हाथ में रत्नजटित छड़ीलियेहुयेथी रत्नजटित वस्त्र आभूषणों से अलंकृतथी सामने उसके प्रकार प्रकारके पुष्पोंकेगुच्छे मणियों के पात्रों में स्थापितथे स्फटिकके रत्नजटित पात्र सुगन्धित जलोंसे भरेहुये रक्खेथे और वहां बैठीहुई उसके स्वरूपकी छवि अपूर्वथी सुन्दरता उसकी मुनियों के मनको भी आकर्षण करनेवालीथी समता उसकी देवकन्याओंमें भी न थी अप्सराओंने भी उड़कर जो स्वरूप पायाहोगा तौ इसकासा न होगा सवअंग उस के मनको मोहित और चित्तको आकर्षण करनेवालेथे वाल उसके देखनेवालों के चित्तरूपी पक्षीको फँसानेको जालथे लटें वाल व्यालकीभांति डसनेवालीथीं॥

क०। गतिपै गयन्दवारों पग अरविन्दवारों हठी अलिवृन्दवारों अलकनफन्दपै। गुलफ गुलिन्दवारों शीलतापै सिन्धुवारों सकल सुगन्धवारों मुखकी सुगन्धपै॥ कटिपै मृगेन्द्रवारों वेणीपै फणीन्द्रवारहुं वारों कुरंग नयन नैन अरविन्दपै। होठपै प्रसूनवारों वैननिपै सुधाकन्द वारों कोटि कोटि चन्द ताके मुखचन्दपै १ वारों मुख चन्द्र चन्द्रका पै चन्द्रमाकी

छटा वारों रमारम्भा काम सुन्दरी निकाईपै। वारों कंजकोमल गुलाब गुलखैराफूल प्यारी मृदुमूल कंज पद अरुणाईपै॥ भनै रघुनाथ चम्पा दाड़िम कुसुम्भ गुंज रम्भाजाय सोनके प्रसूनरंग छाईपै। वारों पद्मराग लाल माणिक प्रबालरंग तेरे पदपंकजकी जावक ललाईपै २ प्रतापहेत बालकी कहीनजात चालकी लसै दुकूलचालकी इतै निरेखि नैगई। बिलोकि सुन्दरीहँसी हिये सुवक्रमाधसी मयंकसी कलाकसी कला प्रयोग कैगई॥ गती गयन्द राटसी लचङ्क लङ्क साटसी सुभाय लाय लाटसी हियो लपेटि लैगई। सनेह सिन्धुबोरिकै कटाक्ष कोर झोरिकै चटाकचित्त चोरिकै पटाक पट्टदैगई ३॥

निदान उसबागकी शोभा और आनन्दा की सुन्दरताको देखकर चन्द्रचूड़ा और निशाकरी और रक्तकेशी और केसरी और भानुविक्रम और मारीचआदि सबसेनापति और योद्धा मोहितहोगये और पुकारकर कहनेलगे॥

दो० कुसुम और कंटकसदृश प्रिय सरवरि नहिं होय।
कहां भाग ऐसे लखें प्रियको दीठि न जोय॥

हे रानी आनन्दामाया हमसब पतंगरूपी तेरी अग्निशिखा रूपी कपोलकी द्युतिपर आशक्त और विरक्तहैं हमारे इसदुखी हालपर दयाकीजिये॥

क०। इन दुखियानको न चैन सपनेहुं मिल्यो तासों सदा व्याकुल बिकल अकुलायँगी। प्यारे हरिचन्दजूकी बीतीजानि औधप्राण चाहत चलेंपै येतो संगना समायँगी॥ देखो एकबारहू न नैनभरि तोहिं याते जौन जौन लोकजैहैं तहां पछतायँगी। बिना प्राणप्यारे एक दरश तुम्हारे हाय भरेहूपै आँखें ये खुलीही रहिजायँगी॥

हे रानी हमसबको अपनी दास और दासी समझ यहसुनकर आनन्दाने एकफूलोंका गुच्छा उठाकर मारा मारतेही सब के नेत्र फिर बंदहोगये और उसफूलोंके गुच्छेके फूलोंकी पंखड़ी अलग२ होगईं और एक एक पंखड़ीका एक एक हारहोकर सबके गलेमें पड़गया हारपड़तेही सबकी आंखेंखुलीं और सबके सब बड़ी आधीनताई से विनय करनेलगे कि हे रानी हम

को इसप्रपंची छली प्रहासने ठगाथा अबआप हमारा अपराध क्षमाकर और हमसबको महेन्द्रके पासलेचलें यहसुनकर आनन्दाबोली कि अच्छा तुमसब मेरे पीछे२ चलेआओ मैं तुमको महेन्द्रकेपास लेचलूं यहकहकर वह उस महामयूरपर कूदकर चढ़बैठी और उसबाग से बाहर निकलकर चलदी और सब सेनाके बड़े छोटे उसके विरहसे व्याकुल स्तब्धबुद्धि से होकर विरह विषय के छंद पढ़तेहुये उसके पीछे पीछे होलिये उसके चलनेपर वह मायाकृत बाग नष्टहोगया और बहुरूपियों ने सबसेनाको मदोन्मत्तता से उसके पीछे पीछे झूमते हुये जाते देखा और बहुरूप धारिणी विद्या सम्बन्धी तूर बजाई उसको सुनकर पांचो बहुरूपिये इकट्ठे होगये उस समय चपलाने प्रहास से कहा कि गुरू मैं कार्यसाधना को जाताहूं प्रहास बोला कि वह बड़ी मायावी है तुम उसको न जीत सकोगे और जो तुमने उसको मूर्च्छित भी करदिया तो फिर उसको मारकरही सेनाको लुटाओगे परंतु मेरी इच्छा यह है कि मैं आनन्दाको पकड़कर अपने स्वाधीन करूं इससे जोतुम आनन्दाको मारो नहीं तो जाकर कार्यसाधन करो तब चपला आदि सब बहुरूपियोंने कहा कि यह तो हमसे न होसकैगा तब प्रहासने कहा कि अच्छा तो तुम सब ठहरो विदितहो कि पूर्वमें इस प्रहास को गंधमादन पर्वतपर अनन्य ऋषिने एक दैवीपात्र दियाथा और यह वरदान दियाथा कि जब तू ईश्वरका ध्यानकरके इस पात्रमें जो पदार्थ रक्खेगा वह अमृतवत् होजायगा और जिस गुणकी इच्छा करके उस पदार्थ को खाओगे वही गुण उससे उत्पन्न होंगे निदान प्रहास ने अपनी थैलीमें से उस दैवीपात्र को निकाला और उसमें जलभरके विनयकी कि हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर इसपात्रस्थ जलमें ऐसा गुणदे कि उसके पानसे संसारी जीवों को मेरा स्वरूप १३ अथवा १४ वर्षका दिखाईदे

और स्वरूपभी मोहनीहो यह विनयकरके वह उसपात्रके जल को जो अमृततुल्य होगयाथा पीगया और उसकेप्रभावसे तत्काल उसका स्वरूप महामोहनी १३ अथवा १४ वर्षकी वयकासा दिखाई देने लगा गौर वर्ण मनोहर पर गुलेनाररंग का अंगरखा पहिरे शिरपर गोटे पट्ठेकी टोपी लगाये मोतियोंकीमाला पहिरे कानों में कुण्डल डालेहुये ऐसा जानपड़ता था॥

दो०। चितवत वचतन हरतहठि लालन दृगवरजोर।
सावधान केवटपरा ये जागत के चोर॥

गलेमें १३ यंत्र सुवर्ण के पड़ेहैं जिससे वह सूचितहोताथा कि १३ वर्ष बीतगये हैं और चौदहवां वर्ष चलरहा है और प्रति वर्षके पूरेहोनेपर एक यंत्र गलेमें अधिक करदिया जाता है और उसकी चितवन से यह जान पड़ता था कि रसिक स्वभाव रखनेवाला है॥

दो०। छुटी न शिशुता की झलक झलक्यो यौवनअंग।
दीपति देह दुहून मिलि दिपति ताफता रंग॥

पैरोंमें जूता चमकदार हाथमें लकुटि कामकार नीलाम्बर पहिरे पीताम्बर ओढ़े ऐसा जान पड़ताथा कि छवि की सीवां यहीं है॥

दो०। लटकि लटकि लटकत चलत झटत मुकुटकी छांह।
चटकभरयो नट मिलिगयो अटक भटक वटमांह॥

क०। लटकि लटकि चलि निरखतु बार बार फेरि फेरि ग्रीवछांह मंजुल मुकटकी। केसरिकी खौरपरि कलित रुचिर भाल कुण्डल ललित सोहै वनमाला टटकी। ह्वैगई विपिनमग अटक भटकभेट तवहींते नैननिमें खुभी शोभानटकी। भूली सुधि घटकीरी लोकलाज सटकीरी अटकी हियेमें फहरानि पीरेपटकी॥

निदान जब प्रहासने उक्त प्रकारसे अपना स्वरूप मनोहर बनालिया तब वहांसे चला और आनन्दासे दो कोस आगे जाकर एक बड़े रमणीक मनोहर हरे भरे प्रफुल्लित वनमें

एक वृक्ष के नीचे खड़ाहुआ टोपी उतारकर अँगरखे की तनी खोलकर आंखें वन्दकरली और बड़ी मधुर ध्वनि से तानें उड़ाने लगा और रोरोकर प्रेम और कामरस सम्बन्धी षटपदी अष्टपदी आदि गीत गाने लगा॥

अष्टपदी रागवसन्त॥

ललितलवङ्गलता लगिमलयज पवनचलत सुखदाई। मधुकर पुंजनि गुंजति कुंजति कोकिलकलधुनिछाई १ विहरतहरिइह सरसवसन्ते निरतत युवति जननकेसंग सुविरहीजनहि दुरन्ते॥ ध्रु०॥ विलपति पति परदेश कामिनी कामकामनामार्ता। कुसुमित वकुल मधुप कुल आकुल लखिव्याकुल विलखाती २ तरुणतमाल माल के परिमल मृग मदको मदछीन्यो। किंशुक कुसुम विरहिहिय पारन मनसिज नख वपु लीन्यो ३ केसर कुसुम मदन क्षितिपति शिर कनकछत्र छविछाजै। पाटल पटल लरसमिलि अलिकुल मदनतूण रुचिराजै ४ ऋतुमद निलज लोग लखिमानो हँसत करुण जो फूले। विरहीजन दुखदैन कितक इनके कितसाजे शूले ५ मालति माधविकामिलि परिमल जुही सुगन्ध गहीसी। मुनिमनहूंको मोहनकारण तुवजन हिये पुहीसी ६ मुकुलित सरस रसाल पुलकिमनु भेदत मुकुतलताते। वृन्दावन बनिरही सरस छवि श्रीयमुना शोभाते ७ श्रीजयदेव भणित यह शोभित हरिचरणस्मृत सारं। सरसवसन्त समय वनवरणन उपजत मदन विकारम् ८॥

आनन्दा कैदियों को लिये हुये चली आती थी जब वह स्थान जहां प्रहास खड़ाहुआ गारहा था कोस आधकोस के अनुमान रहगया तब उसने वह मनको आकर्षण करनेवाली वाणी सुनी सुनतेही उसका चित्त बेवश होगया और वह अपने मयूरको उड़ाकर उसी ओर को चली क्योंकि वह आनन्द रूपी माया वशीकरण आदिके करने में जैसी प्रवीणथी वैसीही कोविद गानविद्यामें भी थी निदान जब वह प्रहासके निकट पहुंची उसने अपूर्व दशा देखी कि एक लड़का परमसुंदर चन्द्रवदन मनोहर स्वरूप जिसका यौवन उठता हुआ है एक वृक्षकी डाली पकड़े हुये आँखें बंद किये हुये गारहा है और

राग की ध्वनि में ऐसा लयहोरहा कि पक्षी उसके हाथोंपर और शिरपरबैठेहैं और उसके मधुरगानको बड़ेप्रेमसे सुनरहेहैं परंतु उसको कुछचेतनहींहै कानोंमें कुण्डल पड़ेहैं बाहोंपर रत्नजटित केयूर बँधेहैं गलेमें मुक्ताओं की माला और यंत्र पड़ेहैं हाथों में मेंहदी लगी है मुख उसका पूनों का चांद है किंतु वहभी उसके सामने लज्जित है और वस्त्र उत्तम उत्तम पहिरेहैं जिससे यह मालूम होता है कि यह किसीका लाड़ला पुत्रहै निदान आनन्दा उसके समीप गई और पुकार कर बोली कि अरे प्रियदर्शनी तू किस फुलवाड़ी हरी भरी का द्रुमहै जो इस भयंकर वन में खड़ा है तेरे माता पिता का कैसा पत्थर का हृदय है॥

क०। वाढ़येकरै दिनहीं क्षणहींक्षण कोटिउपाय करों न बुझाई।
दाहत लाज समाज सुखै गुरुकी भय नींद सबै संगलाई॥
छीजत देहके साथमें प्राणहुं हा हरिचन्द करों का उपाई।
क्योंहू बुझै नहिं आंसूके नीरन लालन कैं री दवारि लगाई॥

यह सुनकर प्रहासने आंखें खोलदीं और सहमकर आनंदा की ओर देखा और दोनोंहाथ जोड़कर उसको प्रणामकी और कहा कि मैं जाताहूं मुझे यह नहीं मालूमथा कि यह आप का स्थानहै आनन्दाने यह देखकर विचारकिया कि मुझे देखतेही यह पीला पड़गया अभी बच्चा है डरगया यह विचारकर वह अपने मयूरपरसे कूदपड़ी और उसके समीप जानेको चली तब प्रहास हाथ जोड़ेहुए रोताहुआ पीछेको हटनेलगा और बोला कि मुझसे अपराध हुआ अब कभी न आऊंगा तब तो आनन्दाने कहा कि हाय यह अभी निपटही बेसमझ है न जाने यहां क्योंकर आगयाहै और आगे बढ़कर उसको पुचकारकर बोली डरोमत मैं तुमको प्यार करूंगी तुम किसके लड़के हो उसके पुचकारनेसे प्रहास ठहरगया और इठलैयां करके बोला तुम हमें मारोगी तो नहीं हमें अम्माने माराथा सो हम यहां

भागकर चलेआये यह सुनकर आनन्दा ने विचार किया कि हाय इसके मा बाप इसे ढूंढ़ते होंगे और यह यहां भागआया है जबहीं मैं शोचमें थी कि यहां यह कैसे आया अब मालूम पड़ा कि मारके डरसे भागा है यह विचारकर उसने कहा कि नहीं नहीं तुम डरोमत मैं तुमको मारूंगी नहीं प्रहास बोला अच्छा अद्भुतकी सौगंद खाओ कि नहीं मारेंगे वह बोली अ-द्भुत की सौगंद मैं कुछनहीं कहूंगी तब प्रहास सहमकर पहले तो कुछ आगे बढ़ा फिर पीछेको हटा तब आनंदाने विचारा कि इसके कठिन मा बापने ऐसा माराहै कि लड़का सहमा जाताहै यह शोचकर उसने अपनी झोलीसे एक उत्तम फूलोंका गुच्छा निकाला और उसे दिखाकर कहा कि यह लोगे तब प्रहास ने विचारा कि यह मायावीहै जो मायाकरदेगी तो फिर कुछ न बन पड़ेगा और यह विचार करके उस फूलों के गुच्छेको देखतेही हँसा और बोला कि हां लेंगे तब आनंदा ने वह गुच्छा छुपा लिया और कहा कि आवो हमारे कंठसे लगजाओ तब हमदेंगे प्रहास दौड़कर उसके गलेसे लिपटगया और बोला लाओ हमें वह फूलदो हम वही लेंगे तब आनंदा ने उसको बहुतसा प्यार किया और कहा चल मैं तुझको अपना बेटा बनाऊंगी प्रहास बोला वा क्या तुम हमारी अम्माहो आनंदा बोली कि हां मैं तुम्हारी अम्मा तो हूंहीं तब प्रहासने कहा फिर हमें वह फूलदो आनंदाने पूछा कि बताओ तुम्हारा घर कहां है वह बोला कि हमारा घर तो बड़ीदूरहै देखो वह जो पेड़ दिखाईदेते हैं उधरही हमारा घरहै वह दिखाई देताहै आनंदा बोली कि चल झूंठे तुम्हारा घर ऐसा पास आगया सो यहां से दिखाई देताहै यह बातें होही रहीथीं कि आनंदाकी दासी और सखी वहां आन पहुंची उन्हें देखकर प्रहास उछलकर उसकी गोद से निकला और बोला कि हमजातेहैं आनंदा उन सबसे बोली

कि बच्चा तुमको देखकर डरताहै तुम सेनाकी ओर चलो मैं भी आती हूं यह सुनकर वह सब तो आगे बढ़गई और आनंदाने पुकारकर कहा कि क्योंजी तुम तो जातेहो और अपनी अम्मा को यहीं छोड़जाओगे तब प्रहासने कहा कि फिर क्या हम तुम्हारे घर चलें वह बोली हां तब प्रहासने कहा अच्छा हमें हिरन पकड़देगी आनंदाने पूछा कि तुम हिरन क्या करोगे प्रहास बोला कि हमारी अम्मा कहती थी कि अपने बेटा का व्याह करेंगे तो हिरनका मांस बनवावेंगे सो आज हमने बनमें बहुत से हिरन देखेहैं सो हम हिरन लेतेजायँ अम्माको देदेंगे अम्मा राजी होकर हमारा व्याह करदेंगी यह सुनकर आनंदा बहुत हँसी और बोली कि तुझे बहूके मिलनेकी बड़ी खुशी है जो तू मेरा बेटा बनेगा तो मैं तेरा व्याह किसी राजाकी बेटीसे करादूंगी तू अपने बापका नाम बता मैं उसे बुलवाकर उससे तुझे मांगलूं प्रहास बोला कि हमारे बाप का नाम तो मायासुवीर और हमारा नाम मायावीरहै चलो अम्मा हमारेघर चलो वह बोली कि तुमको अपना घर अच्छे प्रकारसे मालूम नहीं तुम मेरेसाथ चलो म मनुष्यों को भेजकर तुम्हारा घर ढुंढवालूंगी और तुम्हारे बापको बुलालूंगी प्रहास बोला कि अच्छा हमको गोदमें लेचलो तब आनंदा ने उसे गोदमें उठाकर अपने मयूर पर बैठालिया और उसको लियेहुए वहां से चली उसकी सेना उसकी आज्ञाके अनुसार निशाकरी की सेनासे पांच कोस पर ठहरीहुई थी और वह कईकोस आचुकी थी इससे बहुत शीघ्र अपनी सेनामें आपहुंची और सेनाके अधिकारियों को आज्ञा दी कि मैं अपनी मायासे वेष्टित करके निशाकरी की सब सेना को पकड़कर लेआई हूं जबतक इनके गलेमें हार रहेंगे किसी को बोध न होगा परंतु तथापि भी तुम सब लोग पहरा करके रक्षा करो कदाचित् कोई बात प्रकटही होय और दासियों को

आज्ञादी कि तुममेरे डेरेके भीतर सब सरंजाम खाने पीने और सोनेका लगाकर सब बाहर चलीआओ और देखो कोई फिर भीतर न आना क्योंकि बहुरूपिये तुममें मिलकर चलेआवेंगे अब दिन थोड़ासा रहाहै अब निशाकरी की सेनाके शिर कट न सकेंगे प्रातःकाल सबका बध करूंगी और आज दिनभर मुझे चलतेही बीताहै इससे श्रमित भी हूं और देखो मेरेडेरेके ओर पासभी कोई न रहै मैं अपनीरक्षा अपने आप करलूंगी निदान दासियां अपने काममेंलगीं और सेनाने जाकर निशाकरी की सेनाको घेरलिया और रक्षा करनेकी वारीबांधली और दासियोंने डेरेके भीतर रत्नजटित शय्या बिछाई उसपर उत्तम बिछौने बिछाये और शय्याके नीचे उत्तम आसन और गद्दी और तकिये लगाये नानाप्रकार के मांस अन्नके खाद्य पदार्थ और मद्य आदि पेयवस्तु और अनेक प्रकारके चोष्यफल और जलपात्र पानपात्र तांबूलपात्र सुगंधपात्र आदि सब आनन्द विहार की सामग्री वहां यथायोग्य स्थानोंपर स्थापितकरके सब बाहर चलीं आईं और आनन्दा प्रहास सहित उसडेरेमें गई और डेरेके द्वारोंपर चिक छुड़वाकर दासोंसे आज्ञाकी अबदिन तो बीतही चुकाहै तुमलोग भी दीपक प्रज्वलित करके चले जाओ निदान वे दासभी दिनहींसे मणियों के पात्रोंमें दीपक प्रज्वलित करके बाहर चलेआये और वहां केवल आनन्दा और प्रहास रहगये इतनेमें वह दिवस व्यतीत हुआ और निशारूपी नृत्यक सितारेदार नाचने के वस्त्र पहिरकर महाराजारूपी चन्द्रमा के सन्मुख नृत्य करनेको आई॥

चौ०। नभमयंक जबकरयो प्रकासा। भये विगतश्रम गहे हुलासा॥
गयोनिशा तम कढी उज्यारी। निर्मल अमल स्वच्छ सुखकारी॥

उस समय आनन्दा ने प्रहासको कुछ मिष्टान्न और मेवा खानेको दी और एक थालमें प्रकार प्रकार के व्यंजन सामने

भोजनके लिये रक्खे प्रहास बोला कि मैं भोजन तो न करूंगा और मेवा कुछ खाई और आनन्दा भोजन करके गद्दीपर जा बैठी और बोली कि लो बेटे अब कुछ गाओ तब प्रहास ने अपनी कमरमें से बांसुरी निकालकर बजाना और उससे प्रेम रससे पूर्णपद गाना आरम्भकिया ॥

अष्टपदी रागपरज तिताला ॥

उरपर अरपित हार उदारा। शोभा अति कृश तनपर भारा १ राधिका विरहे तव केशव ॥ ध्रु० ॥ मलयजपंग सरस घसिलावन । करत गरल जिमि अति तन तावन २ दीरघश्वास लेति निशिवासर। ज्वलित होत अति मदन दहनवर ३ दिशि दिशि झरत सजलकनजालसु। नयन नलिन मनु विलगितनालसु ४ किशलय शयन नयन के आगे। बूझत मनो हुताशन जागे ५ करतलतें नहिं तजत कपोलहि । नव शशि जैसे सांझ अडोलहि ६ हरि हरि जपत सकाम पियारी । मरण विरह वश जानि विचारी ७ श्रीजयदेव भणित यह गीतम्। केशव पदमुख करहु पुनीतम् ८ ॥

उससमय प्रहासकी अद्भुत मधुर मनोहरगान और बांसुरी की तानसे सब वनके जीव मोहित होहोकर उसडेरे के समीप चले आये और वायु अडोलगई आनन्दा आनन्दमें आकर प्रेमसे गदगदाआई और वर्षाकी भांति आंसुओंकी धाराछोड़नेलगी और हर ताल और तानपर अधीर्य होहोकर प्रहास का मुख देखतीथी एकप्रहरके उपरांत प्रहासने बांसुरी रखदी और चुपहोरहा तबवह बहुत अधीरहोगई और कहनेलगी कि बेटा मुझे घायलकरके तड़पतीहुई क्योंछोड़तेहो कुछ और गाओ जिससे इस चित्तबेठीकको ठिकानामिलै प्रहासबोला कि मेरे शिरमें दरद होने लगाहै तब उसने अनुमान किया कि जो इस को एकपात्र उत्तम वारुणी पिलादूं तो उसकी तरंगोंके आनन्द में बडाआनन्द दिखावैगा निदान उसने वारुणीसे एक पात्र भरकर प्रहासको दिया और कहालो यह मिष्टमिश्रित जल

पीजाओ वह बोला कि वाह क्याहम नहीं जानते कियह वारु-णीहै हमारे घरमें भी सब पीतेहैं लाओ हम भी पीयें यह सुन कर आनन्दाने वह स्थाली जिसमें वारुणीके पात्र रक्खेथे प्र-हासको देदी उससमय प्रहासने अपने चरित्रके अनुसार उस स्थालीको सजाया अर्थात् गुलाबी लाल और हरेपात्रोंको एक केसामने दूसरेको रखकर एकरंग विरंगेफूलोंके समुच्चयकीभांति बनाया उसको देखकर आनन्दा बहुत प्रसन्न हुई और कहने लगी कि यह किसी मान्यपुरुषका लड़का मालूम होताहै और प्रहासने उस उलटफेरमें मूर्च्छाकर चूर्ण मिलीहुई वारुणी उन पात्रोंकी वारुणीमें मिलादी और कहा कि हे रानी प्रथम आप बड़ीहैं आप पीयें फिर हमभी पीवेंगे आनन्दा उस के चलनसे बड़ी प्रसन्न हुई और प्रहासने एक पात्रमें वारुणी भरकर नि-वेदनकी आनन्दा उसको लेकर पीगई तब प्रहासने दूसरापात्र और भरकर निवेदन किया और कहा कि एकपात्र नहीं पीते हैं और पीनेमें मद्यसे निषेध करना अनुचित है॥

दो०। हौं पूछतहौं मद बनिक कुशल कौन विधि होय।
बोल्यो पीओ मद्य को दुख चिंता दो खोय॥
मद्य न दीजो तौन जेहि कहत बुरी सब कोय।
करि प्रमाण हमरो वचन पीओ लखौ जो होय॥

प्रहास जब दो चारपात्र वारुणी आनन्दाको पिलाचुका तब उसने दृष्टि बचाकर दो तीन पात्र आप भी अपने वस्त्रोंमें कंठ के नीचे उड़ेललिये जिससे उसने यह जाना कि आपभी पीता है और मुझेभी पिलाताहै इसके पीछे उसने अपनी बांसुरी नि-कालकर बजाई और उसमें मधुरध्वनिसे अलापना प्रारंभकिया उससमय आनन्दा ऐसी मदोन्मत्तथी कि बारबार मुख चूमती थी और प्रमत्त होकर आपभी गातीथी लोक और परलोकका

कुछ ध्यान न था हरसमय पानापानथा और प्रहास उससमय यह गारहाथा ॥

मत्तछन्द । वसंतएको द्वितीयमद्यो तृतीयप्यारा चतुर्थप्यारी । भये इकट्ठे हैं आज वनमें हुआहै प्रारब्धसे ये संगम ॥ समीपहै अब वियोग कालम् मनाओ प्रभुसे यही हेमित्रो । न प्रात होवै कदापि समये कदापि होवै न संग भंगम् ॥ प्रणम्यईशम् करोमि विनयम् त्वमापि सम्यक् कुरुष्वभद्रे १ हुआहै संगम वहुत दिनोंमें प्रसन्नहूजै मलीनता तज। यहां न कोई है विघ्नकारी स्वअंकमें भरि सुकेलि कीजै ॥ सुपुष्प निर्मित सुवारुणी है सुपान पात्रम् स्वहस्त लीजै । है लाज अनुचित् मिलाप काले उठाके घूंघट सुमद्य पीजै ॥ स्वयम् मुखम् में मुखाग्र धृत्वा कुरुष्व इष्टम् शृणुष्वभद्रे २ ॥

रात्रिभर यहीडोल पीनेपानेकारहा और आनन्दाको अपनी देहीका कुछचेत न रहगया और वह रात्रि व्यतीतहुई और चन्द्रमारूपी राजाने तारागणरूपी सभासदों सहित आकाश रूपी सभा को त्यागा और प्राचीदिशा में दिनमणिने अपने महाप्रकाशमान मुखारविन्द का आकाश मंडलकी सीमापर दर्शन दिया ॥

सो० । उदयो रवि सप्रकाश विगत निशा सवजनउठे ।
कमलनि कियेविकाश घटीज्योतितवइन्दुकी ॥

उससमय प्रहासने देखा कि वह अचेत शय्यापरपड़ी ऊर्ध्व वस्त्रके खुलजानेसे ऊपरकाधड़ और अधोवस्त्रके चढ़जाने से नीचेका धड़ जंघातक खुलगया है उससमय प्रहासने उसकी जीभनिकालकर सुईसे छेददी और उसे एकखंभसे वांधकर एक वत्तीसुलगाई और उसकेधूमकी नासदेकर उसको सचेत किया और जवछींकके आनेसे वहचैतन्यहुई तवप्रहासने उसेदंडवत् करके कहा कि माजी तुमने हमको हिरन न मँगवादिया आनन्दाको इससमय तक पूर्ववृत्तांत काही ध्यानथा उसने उत्तर देना चाहा परंतु जीभके वाहर निकलने और छिदेहोनेसे उससे

बोलानहींगया और उसने सैनसे घबराकर पूछा कि यहसब क्या बातहै तब प्रहासने अपनी थैलीसे कोड़ा निकाला और बड़ेशब्दसे कहाकि मैं बहुरूपाचार्य बहुरूपियोंका राजाधिराज म्लेच्छों का नाश करनेवाला और मायावियों का विध्वंसकरनेवालाहूं॥

चौ०। बहुरूपिणि विद्याकोवेता। हों प्रहास अरिगणकोजेता॥
बहुरूपिनिको होंआचार्य। भरो बुद्धिकर्ता निजकार्य॥

हेआनन्दा तैंने परमेश्वरकी मायाको देखा कि मैंनेउसकीकृपा से किसप्रकारसे अपने वशमें कियाहै अबजो तू हमारी स्वाधीनता स्वीकारकरैगी तौ तेरेप्राणबचेंगे नहींतौ क्षणभरमें यमलोक को जायगी आनन्दातौ विचित्रमायासे द्वेषमानकर आईहीथी और उसकी इच्छा इस मायाकृत देशसे बाहरनिकलजानेकीही थी उसने सैनसे कहा मुझेआज्ञामें रहनास्वीकार है मुझेअब बन्धनसे मुक्तकरो तबप्रहासने तुरंत उठकर उसको खोलदिया और सुई उसकी जीभसे निकाललली जबवह मुक्तहुई तबउसने शोचा कि जिसप्रकार से इसबहुरूपियेने मेरे साथ छलकिया उसीप्रकारसे मैंभी इससे छलकरूं और दूसरे यह बहुरूपिया क्या ऐसाबल रखताहै जो मुझसी सामर्थ्यवान् इसकी आज्ञा में रहे और रानी विचित्रमाया फिरभी मेरीबहिन है उससे विरोध करना अच्छानहीं यहशोचकर उसने प्रहासकी ओर बड़ी भयानकदृष्टिसे देखा तब प्रहासबोला कि सुनो रानीआनन्दा मैंने तुमको तुम्हारे सैनका प्रमाण करके छोड़दियाथा परंतुतुम अभीयह मतजानना कि मैंमुक्तहोचुकी हूं प्रहास मेराकुछ न करसकैगा अरी कृतघ्नी तुझको ऐसे मैं मारडालूंगा जैसेकोई मशक और चेंटीको मारडाले तू जोकुछ सामर्थ्य रखतीहो सो दिखा कुछ उठामतरक्खै और अपने सहायक म्लेच्छ और मायावीदानवों को भी बुलाले यहकहकर प्रहास डेरे से बाहर

आया उससमय आनन्दा ने पुकारकर कहाकि देखो वह चोर जाता है पकड़ो यह सुनकर बहुत से मायावी म्लेच्छ दौड़े और प्रहास ने इन्द्रदेवताका दियाहुआ छत्र जिसकी कथा पूर्व में वर्णन होचुकी है निकाला और उसको लगाकर बैठ गया तबआनंदा और म्लेच्छोंने उसे घेरलिया और कहा कि अरे प्रपंची अबतू कहां जायगा यह कहकर आनंदा ने माया करके एक फूलों का हारफेंकदिया और उससे चारों ओर प्रकार प्रकारके फूलों की क्यारियां खिलगईं शीतलमंद सुगंध वायुबह-नेलगी और ऐसी शोभाहोगई कि मानों बसन्त ऋतु आप आ-कर उपस्थितहुई है परंतु प्रहास उस छत्रके नीचे बैठारहा उस-की मायाने उसपर कुछ गुण न किया क्योंकि वह छत्रभी इन्द्र-दत्तथा उसका भी प्रभाव अपूर्वथा और प्रहास इन देवदत्त पदार्थों को उसी समय काममें लाताथा जब कोई और उपाय इसको नहीं मिलताथा और महाराज शत्रुंजयने भी इस से प्रण करालियाथा कि तुम छत्रको लगाकर अथवा मरुद्दत्त वस्त्रको ओढ़कर किसीको न मारना क्योंकि मनुष्य को दूसरे मनुष्यको केवल पुरुषार्थहीसे जीतनायोग्यहै निदान जब आनंदा ने देखा कि मेरी माया व्यर्थहुई तब उसने म्लेच्छों से कहा कि तुम इसे घेरेरहो मैंजाकर पकड़ेलातीहूं यह कहकर वह उस छत्रकेसमीप गई और जैसेही उसने चाहा कि छत्र के भीतर जाऊं तैसेही वह उलटी होकर उस छत्र के किनारे से लटकगई उस समय प्रहासने उसके दो कोड़े मारे कि वह कोमलाङ्गी बिलबिलागई उससमय प्रहासने अपना प्रभाव दिखानेको उस छत्रसे आज्ञा की तंबूकी सदृशहोजा आज्ञा पातेही वह छत्र तबूकेसमान हो-गया कलश सोने के चढ़ गये परदे रत्नजटित वस्त्रों के पड़गये तब प्रहासने यमराजकी दीहुई थैलीसे एक रत्नजटित शय्या निकाली और चार अप्सरा निकालीं उन अप्सराओं ने उसी

यहअद्भुत और महेन्द्रथोड़ेही दिनोंके मेहमानहैं सबमारेजायँगे यहकभी मतसमझो कि अद्भुत बचालेगा निदान प्रहासने ऐसा ज्ञान उपदेशकिया और उस इन्द्रदत्तछत्रको खड़ा करके और अपने बहुरूपिणी विद्याकेप्रभावसे ऐसे चमत्कार उसको दिखाये कि उसके चित्तके कपाट खुलगये और नास्तिकता उसके हृदयसे जातीरही और प्रहास के गानेपर भी आसक्तथी निदान उसने दौड़कर अपना शिर प्रहास के चरणोंपर रखदिया और बोली कि मैं आजसे आप की एक छोटी सी दासी हूं प्रहास बोला कि मैं अपने बहुरूपिणी विद्या के साधन काल में तुमको माजी कहता था सो अबभी तुम मेरी बहिनकी बराबर हो देखिये परमेश्वर चाहता है तो इस देश में तुम्हारा अधिकार कितनाबड़ा होताहै तब प्रहास बोला कि मैंभी अपने प्राण खोने और शिर देने में किसी प्रकार का संदेह न करूंगा निदान पक्का प्रण करके आनन्दा उस छत्रमयी डेरे के बाहिर आई और सब सेनापतियों को बुलाकर कहा कि मैंने आजसे प्रहासकी आधीनता स्वीकार की है जो तुम सबको भी मेरी नौकरी करके उसके आधीन रहना स्वीकार हो तो बहुत श्रेष्ठ है नहीं तो जहां तुम लोगों की इच्छाहो चले जाओ यह सुनकर उन सब ने प्रहास की आज्ञा में रहना स्वीकार किया फिर आनन्दा ने कुछ माया की कि उससे वे सब हार जो निशाकरी की सेना के लोगों के गलेमें पड़ेथे मुरझागये और वे सबलोग जो मदोन्मत्तसे होकर काम और विरहरसके छंद पढ़ रहेथे सब चैतन्य होकर यथावत् होगये आनन्दाकी सब सेना साठ सहस्रथी उसमें से कोई दशसहस्र के अनुमान तो पहिले मारी गई और बाकी पचास सहस्र सेनाके अनुमान महारानी चन्द्रचूड़ा की आज्ञावर्ती हो गई इसके पीछे आनन्दा भेंट लेकर महारानी चन्द्रचूड़ाके पास गई राजपुत्र भानुविक्रमसे मिली और रानी निशाकरी के पास

गई रानी निशाकरी ने उसे अपने हृदयसे लगालिया और कहा कि अब तुम्हारे आजाने से हमारी सेनाको बड़ा भरोसा हो गया उसी समय में प्रहास अपना छत्र उखाड़कर चलदिया और महारानी चन्द्रचूड़ा सब सेना सहित अपने बास स्थलमें आई और आनन्दा की सेना के आजाने से जो पांच कोसका अंतर दोनों सेनाओंमें था वह जातारहा और दोनों सेना मिलकर एक होगई और अब चन्द्रचूड़ाकी सेनाका प्रमाण कोई लाख डेढ़लाखका होगया निदान सब कोई अपनी अपनीसिबिर में आकर आनन्द बिहार करने लगे और आनन्दा चन्द्रचूड़ा की सभा में आकर रत्नजटित आसनपर बिराजी नृत्यक और गंधर्विणी आई नाच और गान होनेलगा मद्यके पात्र उड़नेलगे और सब बहुरूपिये भी सभामें आकर आनन्द करनेलगे इसी अवसर में मायाकृत पक्षियों ने आकर रानी रक्तकेशी के सेनापति के सेना सहित आने के समाचार कहे रानी निशाकरी ने उसे लेनेको कुछ मान्य सेनापति भेजे सब सेना को यथायोग्य स्थान देकर उतरनेकी आज्ञादी और वह दुर्मुख नामी सेनापति सभामें आया और जो कुछ कोष और असबाब अपने साथ लाया था सब निवेदन किया इस प्रकारसे वह सभा आनन्द पूर्वक निर्भय निश्शंक होकर बड़े हर्ष में मग्नरही परंतु अब वहां का वृत्तांत सुनिये कि रानी आनन्दा का म्लान चित्त होकर आना महेन्द्र को बहुतही बुरा लगा था इससे जब आनन्दा बिचित्रमाया से द्वेषमानकर चली आई उसके एक दिन पीछे महेन्द्र आनन्दा पर आसक्त होने के कारणसे मलीनमन करके चीनपर्वत पर चलागया यह पर्वत नानाप्रकार और वर्ण के पुष्प और कड़ोरहों प्रकारके सुंदर वृक्ष और लता और भांति भांति के मधुर बोली बोलने वाले पक्षियों से युक्त बड़ा उत्तम बना था महेन्द्र वहां आकर अपने चित्तको स्वस्थ कर-

ने लगा परंतु वहां उसशोभा को देखकर उसको आनन्दा का विरह बहुत सताने लगा और उसने बहुतसे छंद विरहके पढ़ कर चाहा कि अपने चित्तको वशमें करूं परंतु जब उसके वश में न हुआ और विरह और भी अधिक सतानेलगा तब उसने एक पत्र आनन्दाको अपने आसक्तहोने और विरहमें दुःख पाने और विचित्रमाया से अप्रसन्न होने और भूत अपराधके क्षमा कराने के विषयमें लिखा आशय उस पत्रका यह था--

दो० कागजपर लिखतन बनत कहत सँदेश लजात।
कहिये सब तेरो हियो मेरे हिय की बात॥
रँगरात्यो राते हियो पाती लिखी बनाय।
पाती काती विरह की छाती रह्यो लगाय॥

श्री सौंदर्यलहरी शोभा की धाम छविकी सींवा मनोहरबेनी इन्दीवरनैनी चन्द्रमुखी निर्दोष अंगी आनन्दरूपा श्री प्राण प्यारी रानी आनन्दाको महेन्द्र का प्यार पहुंचै-- तेरेइच्छारूपी बाग में इष्ट लाभ रूपी पुष्प सदैव प्रफुल्लितरहें और जीवित रूपी वाटिका हरी भरी रहे और उस वाटिकामें सुख रूपी वृक्ष सहस्र शाखा होकर फैलता और बढ़तारहै हे प्राणप्यारी तेरे म्लान चित्त होकर चले जानेसे तेरे विरहमें मेरी यहगतिहै कि॥

क० आश ना मरत मनरूँधत उसास प्रेम नेम अनुमान ध्यान धीर ना धरत हैं। अंकभरि भेटनिको सुख सँग लेटनको आनँद समेटनको चिन्तन करत हैं॥ सुधाभरी बातनिको बंक दृग घातनिको मुख जलजातनको सुमिरत रहत हैं। राधिका संयोग योग साधन अराधन में विरह उपाधि आधि व्याधि गत रत हैं॥

दो० तरुण कोक नद बरुण वर भये अरुण निशि जागि।
तेरेही अनुराग दृग रहे मनो अनुरागि॥

विचित्रमायाके कहनेका कुछ बुरा न मानना मुझेअपना परम भक्त जानना अब तुम उस कठिन कर्म से निवृत होकरआओ और मेरी विरहकी अग्निको अपने दर्शन रूपीजलसे बुझाओ

किसी और योद्धा को भेजदियाजायगा वह उन दुष्टोंको समाप्त करेगा तुमको अपने भक्तकी शय्यारूपी छातीपर सोना और भाव करना योग्य है तुम सर्व्वथा सुखही के योग्यहो नकि तुम-को कष्टभोग्य है यह पत्र लिखकर महेन्द्रने कुछ माया की कि पृथ्वी फटी उसमेंसे एक पुतला निकला महेन्द्रने वह पत्र उस पुतले को दिया और आज्ञादी कि जहां आनन्दा बैठीहो वहां लेजाकर इस पत्र को उसे देदे वह पुतला पत्र लेकर चलदिया यहां आनन्दा चन्द्रचूड़ा की सभामें पराजित होकर बैठी थी कि इतने में उस पुतले ने आकर उसको वह पत्र दिया उसको पढ़कर आनन्दा ने उत्तर लिखा कि— श्रीमन्महाराजाधिराज सकलमायाकोविदाधीश मार्त्तंडवत् तेजस्वी प्रतापवान् तारा-गण सदृश असंख्यसेनापति आकाश सदृश बहुविस्तीर्ण सभा-पति श्रीमहाराज महेन्द्र को दंडवत् पहुंचे—प्रेमरस के रस से आप सदा छकितरहैं और सुंदरीसदैव आप के सुंदरस्वरूप को चाहा करें आपका प्रेम का पत्रपहुंचा जिसमें आपने प्रेमरूपी बागमें स्नेहरूपी पुष्पोंको बड़ी उत्तमता से लगाया है परंतु प्रेम का नाम तौ अब संसार से उठगया॥

दो० प्रेम न हमरो बूझिये करि छल बलकी घात।
　　अपने हिय से पूछिये मेरे हिय की बात॥

अबमैं आप को अपनी इच्छा निवेदन करती हूं

दो० तव कारण हम सहव सब लोक हँसी तजि लाज।
　　पर जो तुमहूं करहु कछु हमरे मनको काज॥

विचित्रमाया के कपोल कंजके भ्रमर होकर भ्रमाकरो मुझसे हाथ उठाओ जो तुम को हमारा प्रेम सत्य है तो मायाकृत देश केउत्तम पदार्थ लेकर राजपुत्रभीमविक्रम औरराजपुत्री मोहनी-चित्र सहित यहां चले आओ और प्रहास की आज्ञा में रहना स्वीकार करो क्योंकि हमने अब अपने तनमन और धन से

प्रहास की आज्ञा मानना और उसके चरणों पर अपने प्राण निछावर करना स्वीकार करलिया है यह उत्तर लिखके उस ने वह पत्र उस पुतले को देदिया और वह लेकर चीन पर्वत पर आया महेन्द्र ने उस को पढ़ा और बड़े दुःखसे श्वास भर कर छोड़ा औ बुद्धि उसकी जाती रही और वहबेचैन और धीर्यरहितहोगया उस समय उसने कुछ मायाकी कि उससे एक घटा उठी और वह आकर उस पर्वत पर उतरी उस घटामें से तीन मायावी म्लेच्छनिकले और उन्होंने आकर महेन्द्रको दंडवत्की और देखा कि वह बड़ा म्लानचित्त और चिंतायुक्त बैठा है वे मायावी म्लेच्छ हाथबांधेहुए सन्मुख खड़ेरहे थोड़ीदेरमें महेन्द्र ने कहा कि हेदुष्कुल हेदुष्कृती हेदुष्कृतात्मा रानीआनंदा मुझसे अप्रसन्न होकर शत्रुओं से जाकर मिलगई है तुमको उचित है कि बहुत भारीसेनालेकर जाओ और जैसे बने उसे समझाकर लेआओ और जो वह समझानेसे न माने तो युद्ध करके बलसे पकड़कर लेआना मैं इसमायाकृत देशके रचनेवाले की समाधि पर जाताहूं वहां का एक वस्त्र मैं लाकर तुम्हारे पास भेजूंगा तुम उसके आने की बाटदेखना क्योंकि आनन्दा बड़ी प्रबल मायाविनी है योंहीं पकड़ाई न देगी अब तुम तीनों शीघ्र शीघ्र अपनी २ सेना लेकर चलदो यह आज्ञा पाकर वे तीनों चलदिये और अपने देशोंमें आये जो उसपर्वतके निकट थे और जहांके वे राजा थे और सत्तर सत्तर सहस्र की सेना लेकर वहांसे चलदिये ॥

चौ० दुराधर्ष अतिशय दुष्कर्मी। रूपभयानक महाअधर्मी॥
बड़ेप्रबल मायावी योधा। चलेशीघ्र गहिगहि अतिक्रोधा॥
घोररावकर वाद्यबजावत। मायाकृत वाहननि नचावत॥
अस्त्र असंख्य धरे धनुर्पत। चलेवीर रसभरे अधर्पत॥

निदान कूच और विश्राम करतेहुए वे सब रानी निशाकरी

की सेना के वासस्थल के निकट पहुंचे वहां उन्होंने विश्राम किया डेरेतंबू खड़े हुए सभा रची गई शिविर वनाई गईं और सबसेनाके लोग अपने योग्य स्थानों में टिके और दुष्कल आदि सब सभामें जाकर आसीन हुए उनके आने के समाचार मायाकृत पक्षियों ने रानी निशाकरीसे कहे उसको जानकर रानी ने अपने सबसेनापतियों को रक्षापूर्वक रहने की आज्ञा दी निदान सबसेना सन्नद्ध हुई सेनापतियों ने अपने २ मायाके प्रयोग ठीक किये कि ऐसा नहो कि दुष्कुल भुलावादेकर चढ़ि आवैं और सेना को कष्ट पहुंचावैं वाद्य सब सेना में बजने लगे और शस्त्रों को सब शूरवीर तीव्र करने लगे यहां तो यह था और वहां महेन्द्र चीन पर्वतसे चल कर वदरी उद्यान में पहुंचा चिंता और शोकसे उसका मुख मलीन था और वह उसी दशा से जाकर राज्य सिंहासन पर बैठ गया उसके मुखको मलीन देख कर विचित्रमाया ने पूछा आपका चित्त कैसाहै वहबोला कि हे विचित्रमाया तुम्हारे द्वेष के कारणसे अंतमें यह हुआ कि रानी आनन्दामाया जाकर प्रहाससे मिलगई विचित्रमाया बोली कि महाराज उस छोकरी को बड़ा घमंड होगया था अपनी बराबर दूसरे को नहीं जानती थी दृष्टि उसकी प्रथमही से वरी थी मेरे सामने निशाकरी का यश वर्णन करतीथी आपको इसका शोचकरना उचित नहीं है आपके वहुतसे अनुचर ऐसेहैं जो इनको पकड़कर आपकेपास लेआवेंगे महेन्द्र बोला कि ये सब बातें कहनेकी हैं मैंने लक्षों द्रव्य व्यय करके निशाकरी और केसरी और आनन्दाआदि को पालाहै आसुरीमाया सिखाईहै अब उन सबको एका एक क्योंकर मारडालूं मैं अब तक यही चाहताहूं कि अब भी सब सँभल जायँ और ठीक मार्ग पर चलने लगें अबमें वस्त्र लेने मायाकृत चमत्कारों के कर्ताकी समाधिपर जाता हूं तुमभी अब

निष्प्रभ भवनको चली जाओ मुझको तुम्हारा रहना स्वीकार नहींहै क्योंकि मनुष्य आश्वासन और बड़ाईकरके अपनीसेना के सेनापतियों के मनको बढ़ाता है अथवा बुरा भला कहकर अपना शत्रु बनाता है यह कहकर महेन्द्र उक्तसमाधि की ओर चलदिया और विचित्रमाया दुखी होकर निष्प्रभभवन की ओर चलीआई और यहां दुष्कुल और दुष्कृती आदिने कईपत्र शिक्षा के आनन्दा के पास भेजे और उनमें लिखाथा कि हे रानी अभी तक कुछ बिगड़ानहीं है चलीआओ और शत्रुओंका साथ छोड़ो स्वामी का अन्नोदक खाकर उसके विपरीतहोना अच्छा नहीं है देखो मायाकृत चमत्कारों के कर्ताओं को मत छोड़ो बुरा होगा रानी आनन्दा ने हर बार इन पत्रोंका कड़ा उत्तर दिया दिनभर पत्रोंका आना जाना रहा और वह दिन व्यतीत होगया सायं-काल को सब मायावी म्लेच्छ अनेक अनेक प्रकार की सामग्री लेकर होम करने लगे और राजा रूपी निशापति आकाश रूपी रणभूमि में माया सिद्ध करने के लिये आसन मारकर बैठगया और दिनमणिसे रारि ठहराकर अपनी तारागण रूपी सेना को इकट्ठा करनेलगा॥

दो०। चन्द्रज्योति दीपकमनहुं नभजनु तन्यो वितान।
शोभा उदित मयंक की करिको सकत वखान॥

उससमय दुष्कुल और दुष्कृती आदिने आपसमें मंत्रकिया कि जो हम महेन्द्रकेवस्त्र भेजनेकी राहदेखेंगे तो सबलोग हमको कायर कहेंगे इस आनन्दा की क्यासामर्थ्य है जो हमसे युद्ध कर-सकै इससे जबतक वह वस्त्रआवै तबतक हम सब उसको पकड़ रक्खैं जिस से हमारा नाम हो यह मंत्र करके उन्होंने युद्धके वाद्य बजने की आज्ञादी और म्लेच्छगणोंने तूर भेरी आदि अनेक युद्धकेवाद्य बजाना आरंभकिया॥

सो०। वाद्य बजनको शोर अतिदुस्सह तहँ होतभो।

पूरिगयो अति घोर सकल दिशा आकाश में ॥
तूर बजावत तत्र द्विविधिशब्द निकसतभयो ।
आयो काल सपत्र यमपुरको बर्द्धन करन ॥

मायाकृत पक्षियोंने शत्रुसेनामें युद्धके वाद्य बजनेके समाचार रानी निशाकरीको पहुंचाये उस ने भी अपनी सेना में युद्ध के वाद्य बजने की आज्ञादी बड़े शब्दसे नाना प्रकारके बाजे बजने लगे योद्धा सब प्रहार और रक्षा के अस्त्रों को ठीक करने लगे मायावी म्लेच्छोंने अपने मायाकृत अस्त्र और प्रयोगोंको सिद्ध किया रात्रिभर नानाभांति के बाजे बजतेरहे कोई श्मशान की राखलाकर कुछ तंत्रकरताथा कोई मृतककी खोपड़ी पर फूल पान चढ़ाताथा कोई कागका बलिदान देताथा कोई उलूक के रक्तसे अग्निमें होमकरताथा कोई भांति भांति के पुतले मांस मृत्तिका और अन्नके चूनसे बनाताथा और उनमें सुई आदि अनेक लोहकीवस्तु छेदकर धूप लोहवानकी देताथा फूलचढ़ा-ताथा और ढोकेंलगाकर विसर्जनकरताथा कोई नारिकेलअस्त्र को सन्नद्धकरताथा कोई निंबुक अस्त्रको आसुरीमाया से वेष्टित करताथा और सब अपने २ मायाधिष्ठान मान्योंको मनातेथे उनका आराधन करते थे और बलिदेते थे और जो माया नहीं जानते थे वे अपने धनुषोंपर ज्या चढ़ाते थे बाणों की नोकों को शिला पर तीव्र करते थे खड्गों की धारको पैनाते थे और तोमर भल्लऔ गदाआदि मानुषी अस्त्रोंको देख देखकर युद्धमें प्रहार करनेको छांट छांटकर रखते थे निदान इसीप्रकार से रात्रिभर धूमधाम रही और शूरता की कथायें और वीररस के पद होते रहे कि इतने में वह रात्रि व्यतीत हुई और प्राची दिशा में सूर्यमंडल ने प्रकाश करके आकाश को अपनी दिव्य रश्मियों से दीप्त और चन्द्रमाकी ज्योतिको मलीन करदिया ॥

सो०। दिनमणि कियो प्रकाश सरवर फूले बर कमल।

नील वर्ण आकाश शोभित अति तारों भये॥
निदानप्रातःकाल होतेही राजपुत्र भानुविक्रम ने प्रातःक्रिया की और जितने म्लेच्छ कि राजपुत्रके वशमेंहोकर वैष्णवहोगये थे सबने श्रीविष्णु भगवान का ध्यान किया परंतु अपना स्वरूप म्लेच्छों का सा ही बनाये रहे कि इतने में युद्ध के लिये सन्नद्ध होनेके वाद्यबजे सब योद्धा शीघ्र शीघ्र अस्त्र शस्त्र धारण करने लगे सेनापति अपने वाहनों पर सवार हुए एक ओर से महारानी चन्द्रचूड़ाके विमानको पद्मावती मायासे आकाश में लाकर खड़ीहुई और रानी निशाकरी और केसरी और रक्तकेशी और आनन्दा और मारीचआदि सब मान्य सेनापति माया कृत मयूर आदि वाहनोंपर बड़ीवीरतासे बैठेहुए निकले और महारानी चन्द्रचूड़ाके विमानके समीप आई सबने दंडवत् की और उसके विमानको बीचमें लेकर सब सेना सहित शनैः शनैः गर्जते लर्जते और तर्जते हुए रणभूमि में आये मायावी सब सहोर्गों पर सवार थे और वह सेना ध्वजाओंसे अलंकृत पड़ी शोभायमान थी और भानुविक्रम भी बड़े उत्तम घोड़ेपर सवारहोकर माया न जाननेवाले शूरवीरोंकी सेना लियेहुएचला और उसका घोड़ा तरारे भरता और नाचताहुआ आगे बढ़ा॥

सो०। पुष्ट सुउन्नत काय रंग सुरंग सो अश्ववर।
वायु वेग सम जाय पहुंचो लंगर भूमिमें॥

और सेनापतिहोनेसे सब सेनाकेआगे आकर व्यूह के द्वार पर खड़ाहुआ इतनेमें सामने से काली काली घटा विद्युच्छटा सहित उठी भयंकरशब्द होनेलगे और दुष्कुल और दुष्कृती और दुष्कृतात्मा म्लेच्छोंकी सेनाका आगमहुआ और नदीके लहरोंकी भांति उमड़तीहुई बड़ी धूमधाम से रणभूमि में आपहुंची उससमय मायावी म्लेच्छों ने बिजलियां गिराकर रणभूमिमें जितने वृक्ष और झाड़ी झंकारथे सबको भस्मकरदिया

और जलकी वर्षाकराके धूलको शांतकिया जब पृथ्वी युद्धयोग्य होगई तब सेनाकी व्यूहरचना प्रारंभहुई और दक्षिण और वाम आदि पार्श्वों में बड़े २ शूरवीरोंको रखकर सेना युद्धके लिये सन्नद्धहुई उसीसमय कवीश्वर सेनाओं से निकलकर रणभूमि मेंआये और पिछलेराजा और शूरवीरों का वर्णन सुनाकर शूरवीरोंको रणका उत्साह दिलाने लगे ॥

चौ०। क्षत्री जेहि हित प्रगटत जगमें। प्राप्तभयो अवसो दिन जगमें ॥
अति विक्रमकरि महियरलीन्हों। बुधनतजत तेहि बिनुश्रमकीन्हों ॥
अयुतनाग बल भीम समाना। अहै न जग अब सो बलवाना ॥
तिमिधनुधरजिमिबिदितपिनाकी। सुरपति लही नसमता जाकी ॥
सो अर्जुन अब नहिं जगमाहीं। काल जगत भक्षत सब काहीं ॥
कर्ण वीर दुर्मद भट नायक। सकल जगतको जीतन लायक ॥
सोऽमरयो रह्यो नहिं जगमें। जानो सबहि कालके मग में ॥
पर रणशूर कर्म यश लीबो। अरु करि युद्ध विमुख नहिंहीबो ॥
अक्षय रहत सदा संसारा। जब लगि सूर्य चन्द्र अरु तारा ॥
अस मनजानि शूरसब सुनहू। अस्त्र प्रहारि सुविक्रम करहू ॥
जीते मिलिहै यशधन ओघा। मरे प्राप्तहुइ हैं दिव भोगा ॥

उक्तशिक्षाको सुनकर हरएक योद्धा रणभूमिमें विक्रम करके मरनेपर तयारहुआ और दुष्कृती अपने महोर्ग वाहनको रण-भूमिमें लाया और माया करके अग्नि और पाषाणोंकी वर्षा करके गर्जा और बड़ेशब्दसेबोला कि अरे अपने स्वामीसे बहि-र्मुखहुए दुष्टात्माओ रणभूमिमें मेरे सन्मुखआओ किमैं तुमको उचितदंडदूं यहसुनकर रानीकेसरीमायाने अपनामयूर बढ़ाकर महारानी चन्द्रचूड़ासे युद्धकी आज्ञामांगी महारानीने उसे पा-रितोषिक वस्त्रदिये और आज्ञादी और वहरणभूमिमें दुष्कृती के सन्मुख आई दुष्कृतीने एकलोहमयी अग्निगोलक मायासे वेष्टितकरके मारा और वह केसरीकी जंघाको तोड़कर पार हो-गया और वह घायलहोगई तब रक्तकेशी आज्ञालेकर दुष्कृ-

तीके सन्मुखआई उसेदेखकर दुष्कृतीने निम्बुकअस्त्रका प्रयोग किया रक्तकेशीने लक्षसे हटकर उसे व्यर्थकरदिया और अपने शिरके केशोंको हलाया हिलातेही उनमेंसे एकरत्नजटित पात्र गिरा रक्तकेशीने उसपात्रको उठालिया और उसमेंसे कुछ सितारोंकीभांति दीप्तविन्दु निकाले और मायाकरके उनकोआकाश की ओर फेंकदिया वे विंदु आकाशमें उल्काकी भांति स्थितहोगये और थोड़ीदेर में बड़े शब्दसे टूटकर पृथ्वीपर गिरे और दुष्कृतीको भस्मकरतेहुए पृथ्वीमें प्रवेशकरगये उससमय बड़ा भयानक शब्दहोनेलगा परन्तु रानीनिशाकरीने कुछ मायाकरके उनशब्दकरनेवाले मायाधिष्ठान मान्योंको अपनीजंघाकारुधिर बलिदेकर स्ववशमें करलिया और वह घोरशब्द मिटगया तब दुष्कृतात्मा रणभूमि में आया और उससे युद्धकरनेको इधरसे मारीच गया दुष्कृतात्मा ने त्रिशूललेकर मायासे वेष्टित किया और उससे मारीचपर कईवार प्रहारकिये परन्तु मारीचने स्थान से हटहटकर सबप्रहारोंको व्यर्थकरदिया और फिर अपने खड्ग को मायासे वेष्टितकरके उसकेऊपर छोड़ा कि वहवज्ररूप होकर दुष्कृतात्माके ऊपर गिरा और उससे दुष्कृतात्मा भस्महोगया तबतो दुष्कुल महाक्रोधित होकर रणभूमि में आया और एक सर्प मायासे निर्मितकरके छोड़दिया उस उग्रनागने मारीच को आकर लपेटलिया मारीचने बहुतकुछ मायाकेप्रयोग किये परंतु किसीसे कुछ न हुआ और उससर्पके डसनेसे वह मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा रानीनिशाकरीने उसे उठवालिया और उससर्पके विषको भाड़नेके लिये कई मायावी म्लेच्छोंको नियतकरदिया तब रानीरक्तकेशी फिर रणभूमि में आई उसमहानागने उसेभी घेरा परंतु उसने कुछ ऐसीमाया की कि तत्काल एकबड़ामयूर प्रकटहुआ और वह उसनागको अपनी चोंच में दबाकर उड़ गया यह देखकर दोनोंसेनाके मायावियोंने उसकी सराहना की

और दुष्कुल महाक्रोधितहोगया और उसने धनुषचढ़ाकर एक बाण मायासे वेष्टितकरके मारा उसको आतेहुए देखकर रक्त-केशी ने मायाकी और उसके सामने अकस्मात् चालीसचर्म अर्थात् ढाल आड़करके अन्तरिक्ष में स्थितहोगई परन्तु उस उग्रबाणने चालीसोंचर्मोंको फोड़कर रक्तकेशीको स्कंधके समीप घायलकरदिया और वह रणभूमिसे हटगई उससमय दुष्कुल ने रणभूमि में ललकार कहा कि अरे आनन्दा मैं तेरेपकड़नेको आयाहूं शीघ्रआकर मुझसे युद्धकर कबतक तू छिपी छिपी फिरेगी आनन्दा उससमय एक उत्तम विमानपर विराजमान थी चारोंओर उसके परमसुन्दरी दासियां हाथोंमेंफूल प्रकार प्रकार के लियेहुए खड़ीथीं और सिंहासनपर प्रकार प्रकार के फूलोंके गुच्छे और हारबनेहुए स्थापितथे दुष्कुलकी बाणीको सुनतेही वहअपना सिंहासन बढ़ाकर आकाशमार्ग से रणभूमि में आई और मायाकरके एक फूलोंकागुच्छाउठाकर फेंका कि अकस्मात् पर्वतोंकी शिखरोंसे एक महाअन्धकार उठा और अंधेरीरात की भांति सबओर छागया तब आनन्दाने अपने भालपर एक दीप्तबिन्दु लगाया और उस अन्धकार में एक चन्द्रमा प्रकट हुआ और तारागण भी निकले जिससे यह मालूम होनेलगा कि दिननहींहै किंतु चांदनीरात्रिहै यह देखकर दुष्कुल विविध भांतिसे मायाकरनेलगा कि इतनेमें आनन्दाने दूसरागुच्छाफूलोंका मायाकरके मारा और पुकारकर कहाकि बसंतऋतुआवो यहकहतेही बड़ीआनन्दकारी शीतलमंद सुगंधवायु चलनेलगी और उसके स्पर्शसे दुष्कुलकी सेनाकेयोद्धा प्रमत्तहोकर ताली बजा बजाकर हँसनेलगे इतनेमें आनंदाने तीसरा गुच्छाफूलों का माया करके छोड़ा उससे सहस्रों बड़ी सुंदरी स्त्रियां तत्काल प्रकटहोगईं हाथमें अनेक प्रकारके बाजे लियेहुईथीं सबस्वरूपवान् निर्दोषअंगी और चन्द्रमुखीथीं कुछ उनमें से गौरंडिनी

स्त्रियोंके समान वस्त्र धारण कियेथीं कुछ यामिनी कुछ म्लेच्छी कुछ पर्वती कुछ तैलंगी कुछ वर्वरी और कुछ और और देशों की स्त्रियोंके समान थीं निदान उन स्त्रियों ने प्रगट होतेही वाजे वड़ी उत्तमगति से वजाना प्रारंभ किया उनको देखतेही सव शत्रु सेना उनपर आसक्त होगई इतने में आनन्दा ने चौथा गुच्छा फूलोंका माया करके मारा कि अकस्मात् सव सेना की आंखें वंद होगई और वसंतऋतु आकर वहां उपस्थित हुई अपूर्व आनन्द होगया कोसोंतक वाग लगगया फूल प्रकार प्रकारके खिलगये वड़ी उत्तम सुगंध चारों ओर फैल गई और वायु शीतल मंद सुगंध उन पुष्पोंको प्रफुल्लित करतीहुई और उनकी उत्तमगंधको लेतीहुई वहनेलगी॥

क०। नागरसेहे खड़े तरु कोऊलिये करपल्लवमें फल फूलन। पावड़े साजिरहेहैं कोऊ कोउ वीथिनवीच पराग दुकूलन॥ फूलझरें द्विजदेवके ऊपर काननमाहँ कलिन्दजाकूलन। आगममें ऋतुराजके आज सवै विथि खोयेसवै निजशूलन १ फूलेनिकुंजघने द्रुममंजुल भृङ्गलतानन तानकहे। अतिशीतल मंद सुगंधपवन चहुंतीक्षण तीर समीरवहे॥ धुनिकोकिल कीर कपोतन के भरकानन कानन जातसहे। उरशालत शूल समूह प्रताप वसंतमें कंत वसंतरहे॥

निदान आनन्दा अपने सिंहासनसे उतरकर उस वाग में गई और उसके साथसाथ वह अप्सराओंकासा स्वरूप रखने वाली स्त्रियांभीगई जव दुष्कुल और उसकेसाथी उसमें प्रवेश करनेलगे तव उन्हों ने देखा कि आनन्दा सामनेसे आरही है और उसके सुंदरस्वरूपकी छवि उससमय ऐसीथी कि रतिभी उसकोदेखती तो लज्जितहोजाती॥

क०। पुंडरीक नैनइन्दुकुन्दसों मुखारविन्द भृकुटी कमानमानों मैनकी मरोरीहै। रञ्चक उरोजकी उंचाई त्योंललाई अधरानकीमिठाई चारुचौं-गनी चभोरीहै॥ कहैं कुंजलाल लरिकाई भरेभोरे वैननागरी नवेलीनव

यौवनकिशोरी है। श्वेतरंगसारी अंग ओपते दुरंगहोत जानिपरै केसर कुसुम रंग बोरीहै॥

निदान देखतेही दुष्कुल आसक्तहोगया उससमय आनन्दा ने एक दासीको आज्ञादी कि एकस्थाली और एक शस्त्र अर्थात् छुरीलेकर आजा और जब वह लेआई पुकारकर आनन्दाने कहा कि हेमेरे चाहनेवालो तुमसब अपनारुधिर मेरी भेटकरो यहस्थाली और शस्त्र मौजूद है यहसुनकर दुष्कुल की सेनाके म्लेच्छदौड़े और आपसमें पहिले पहुंचनेकेलिये ढक्का मुक्की करतेहुए एकएक उस दासीकेपास जो शस्त्र और स्थाली लियेहुईथी आनेलगा जो आया उसीके शरीरकी नस को उस दासीने शस्त्रसे चीरा और उसका रुधिर स्थाली में लिया और रुधिरके निकलतेही वह प्राणरहित होकर गिरपड़ा इसीप्रकारसे एक एक आआकर अपना २ रुधिर देकर प्राणदेनेलगे कोई मरतेसमय कहताथा॥

दो०। भृकुटी धनुष चढ़ाइ के मारि सैन के बाण।
हिय कठोर पाषाणकरि लिये हमारे प्राण॥

चारोंओर अन्यायका शब्दथा लोथपर लोथ गिरतीजाती थी और एकदूसरेको हटाहटाकर आगेबढ़कर स्थालीको रखवाकर अपनारुधिर देताथा और अपने प्राण खोताथा इस अवसरमें आनन्दाने एक दूसरीदासीसे सैनसेकहा कि दुष्कुल कोबुला उसने पुकारकर कहाकि हेदुष्कुल तुझको महारानी बुलाती हैं शीघ्रआ वह सुनतेही दौड़ा और आनन्दा वहां से एक ओरको फिरकर चली दुष्कुल उसके पीछेपीछे चलागया औरबहुतभांति से विनती करतागया थोड़ीदूरपरजाकर आनन्दा ठहर गई तब उसने देखा कि वह हाथमें फूलोंकी छड़ी लिये हुए फूलों कीगंध को घ्राण कररही है शिरका जूड़ा तिरछा बंधा है झल्लू पल्लू के डुपट्टेका आंचल सामने पड़ा है साड़ी में जंघा

के समीप सिलवटें पड़ी हैं फूलोंके आभूषण धारण कियेहैं फूलों
को देखती फिरतीहैं और छवि उसकी जैसी प्रथम देखीथी उस
से सौगुनी अधिक मालूम होती है उससमय दुष्कुल हाथजोड़
कर सन्मुख खड़ा होगया आनन्दाने उसके एक छड़ी मारी और
कहा कि तू इसी मुखसे कहताहै कि मैं तेरा प्रेमीहूं मुझको विचि-
त्रमाया ने सभा में सबके सामनें दुर्वचन कहे और तैंने उसका
कुछ बदला न लिया वह बोला कि हे प्राणप्यारी मुझको यह व्य-
वस्था कब मालूमथी तब आनन्दा ने दो तीन छड़ी और मारीं
और कहा कि अरे दुष्ट अब जोतेंने सुनाभीतो क्याकिया तुझ-
को कुछभी मेरा पासहै तब वह बोला कि यदि आप आज्ञादें तो
मैं अभी विचित्रमाया को जूतियां लगाताहुआ पकड लाऊं तब
आनन्दा ने उसे मारे छड़ियों के झूरडाला और कहा कि अरे
वर्णसंकर जब हम आज्ञा दें तब तूकुछ करैगा तुझे अपने आप
कुछ मेरी प्रीति नहींहै उन मायानिर्मित छड़ियों के खाने से वह
और भी भ्रष्ट चेत होगया और बोला कि मैं अभी जाकर उस
दुर्भगा विचित्रमाया के झोटे पकड़ कर तेरे सन्मुख लिये आ-
ता हूं आनन्दा बोली कि मुझको तेरी बातका विश्वास नहीं तू
अपने सेनापतियों को बुला उसने उनको पुकारा वे सब आकर
खड़ेहुए आनन्दा ने दासीको आज्ञादी कि अब रुधिर मत ले
और फिर सबसे कहा कि लो मैं अपने प्राणकी निशानी तुम्हारे
हाथोंमें बांधे देती हूं कि मुझको विचित्रमाया ने दुर्वचन कहेहैं
जोकोई जाकर उसे मार आवैगा उसीको मैं बरूंगी यहकहकर
उसने सबके हाथोंमें दासियोंसे फूलोंके गजरे बँधवादिये और
दुष्कुलकेहाथमें आप गजराबांधदिया निदान दुष्कुल औरउस
की सबसेना जो रुधिर देकर प्राण छोड़ने से बची थी प्रेम रसके
पदपढ़तेहुए सबतंबूआदि सरंजाम छोड़कर निष्प्रभ भवनकी
ओर चलदिये उनकेजानेकेपीछे आनन्दाने अपनीमायाका सं-

हारकिया और वह चांदनीरात्रि और वसंतऋतु अलोपहोकर सूर्य निकलआया निशाकरीकीसेनामें जयदुंदुभीवजी और निशाकरीने दुष्कुलकी सेनाका सवसरंजाम लूटकर अपने स्वाधीन किया और आनन्दापर द्रव्यनोछावरकरती और उसकी श्लाघा करती हुई चली महारानी चन्द्रचूड़ाभी लौटकर अपनी सभामें आई और पारितोषिक द्रव्य वहुत कुछवांटा सेनाके योद्धाओंने अपनी २ कमरखोली और जयप्राप्तिहोनेका उत्सव होनेलगा गंधर्विणी मधुरध्वनि से गाने और नृत्यकी नाचनेलगीं और अद्भुतगतिसे मृदंगआदि वाजे वजनेलगे और सवलोग आनन्द विहार करनेलगे निदान यहांतो यह आनन्द होनारहा और दुष्कुल आनन्दाके प्रेमकेरसमें पूराडूवाहुआ सेनासहित रक्तवाहिनी नदीके पारआया और वड़ेमार्गको शीघ्र उत्तीर्णकरके निष्प्रभ भवनके समीप पहुँचा और वहींसे विचित्रमायाको दुर्वचन कहनेलगा कि उसकुलटा दुर्भगा विचित्रमायाको पकड़ लाओ जिसने मेरी प्राणप्यारीको दुर्वचन कहेहैं और अंधेरनगरीमें आकर लूटमार प्रारम्भकी जो म्लेच्छमिला उसीको मार डाला सव नगरमें रोनेपीटनेका कोलाहलहुआ उसको सुनकर विचित्रमायाने जो उससमय निष्प्रभ भवनमेंथी म्लेच्छोंसे कहा कि देखो यह कोलाहल कैसाहै वहसवगये और देखकर आये और सव वृत्तांत कहा उसको सुनकर विचित्रमायानेउन वारह सहस्रदानव और म्लेच्छोंको जो निष्प्रभ भवनके वामखंडमें रक्षाके लिये रहाकरतेथे और जिनका वृत्तांत पूर्व में वर्णनहोचुका है आज्ञादी कि तुम जाकर इसको रोको आज्ञा पातेही वे सव चलदिये और दुष्कुलकी सेनासे युद्धकरनेलगे दोनों वड़े प्रवलमायावीथे अनेक अनेक प्रकारकी मायाकर करके दोनों सेना लड़ीं और निष्प्रभ भवनके रक्षकोंने प्रवल होने से सहस्रोंको मारकर गिरादिया परंतु दुष्कुल युद्ध करताहुआ निष्प्रभ

भवनके समीप आपहुंचा और उसपर चढ़ने लगा परंतु वह मायाकृत स्थान अगम्यथा इससे उसपैचढ़ानहींगया जैसेही चढ़ना चाहता था तैसेही गिरपड़ता था निदान कईवार चढ़ा और गिरा और नीचे उसभवनके युद्धहोतारहा परंतु अब वृत्तांत महेन्द्रका सुनिये कि वह बहुरी उद्यानसे चलकर दुर्गमखंड में पहुँचा और वहां अगम्यवनमें होताहुआ अग्नि तरंगिणी नदी के बड़े मार्ग को उल्लंघन किया और मायाकृत चमत्कार कर्त्ताकी समाधिके समीप जापहुँचा इन सब स्थानोंकी विस्तार पूर्वककथा आगे आवैगी वहांसहस्रोंबड़े २ भयानकदानव और म्लेच्छ निवास करतेथे और एक भवन अंतरिक्षमें बनाथा और बाहर उसके सात झूले पड़े हुयेथे और उनपर उस चमत्कारों के कर्त्ताकी दासियां झूलरहीथीं महेन्द्र आकाशमार्गसे उसभवन के पासगया और देखा कि वह सबभवन रत्नोंका बनाहै सहस्रों घंटे उसमें टंगे हैं और जो मायावी दानव और म्लेच्छ वहांरहतेहैं वे सब महाविपत्ति और उत्पात करतेहैं जबमहेन्द्र वहांपहुँचा उसभवनके घंटे बजनेलगे और वे दासियां झूलेपरसे उतर कर चली आईं महेन्द्रने वहांपहुँचकर प्रथम एक पाऊंसे खड़े होकर उस मायाकृत चमत्कार कर्त्ताकी स्तुतिकी और अपने पैरका मांस काटकर बलिदान दिया तब उसको भवनके भीतर जानेकी आज्ञा हुई तब वह भीतर गया उन सातों दासियों ने उसको दंडवतकी और पूछा कि महाराज आप कहांसेआजइस ओरको आये महेन्द्र बोला कि मैं श्री परमेश्वर मायाकृत चमत्कार कर्त्ताकी समाधि पर जाताहूं वहबोली कि समाधितो अभी बहुतदूरहै क्योंकि प्रथमतो भयङ्करवनका बड़ामार्ग उल्लंघन करनाहोगा फिर प्रभाकूटकी प्रभापर चलना पड़ेगा और वहां से समस्थाधि भवन तक जब पहुँचोगे तब आगे चलकर उस ईश्वरकी समाधि मिलैगी परंतु सातवीं समाधिकी यहीसेद्वारसहै

और यहांभी कुछ मायाकृत अद्भुत पदार्थ हैं तो फिर वहां जाने से क्याप्रयोजन है महेन्द्रबोला कि मुझे अद्भुत वस्त्रदो जिसका प्रभाव उक्त ईश्वरने अद्भुत जालमें लिखा है क्योंकि मुझे आ-जकल शत्रुवोंने घेर रक्खाहै प्रहास इसदेशमें आकर प्राप्तहुआ है एक उपाधि मचरही है हमारेईश्वरके सहस्रों सेवकमारेगयेहैं वह दासियां बोलीं कि वह अद्भुत वस्त्र मौजूद है लेजाओ तुम मायाकृत चमत्कारों के राजाहो जो इच्छा होसो करो परंतु हां और अद्भुत पदार्थ नहीं हैं और उस ईश्वर के कुछ अद्भुत पदार्थ प्रभाकरी माया देशमें हैं जहांका राजा कालेन्द्र तेरापटै-तहै और जिससे सप्तवर्णीनदी के ऊपर तुझसे सदैव झगड़ा रहताहै बड़े शोचकी बातहै कि तूने अपना सब देश उजाड़दि-या और अब अद्भुत पदार्थों पर नीयत धरी है हमारे ईश्वरइ-समाया देशके कर्ता लिखगयेहैं कि यहांका अंतमें जो राजा होगा वह महानष्ट होगा और वह इस मायाकृत चमत्कारर-खनेवाले देशका कुछ प्रबन्ध न करसकैगा सब अद्भुत पदार्थ और चमत्कार नष्ट होजायँगे और हमजानती हैं कि अब हमारा भी कालआगयाहै क्योंकि तू हमकोभी एकदिन लेजाकर ल-ड़वावैगा सो तू वहीं अंतका राजा है जिसका हाल हमारेईश्वर लिखगये हैं उस सामनेके संदूकमें अद्भुत वस्त्ररक्खा है जातू उसको लेले यह कहकर एक दासी ने कुंजी फेंकदी। परंतु महेन्द्र उन दासियों की बातें सुनकर रोनेलगा और बोला कि जो आप आज्ञा दें तो मैं अद्भुत वस्त्र लेजाऊं मैंने बहुत चाहा कि मैं निशाकरी आदि से युद्ध न करूं और अबतक भी यही परिणाम शोचकर तरह दे रहाहूं और चाहताहूं कि येसब लोग फिर सत्य मार्गपर आजायँ और इसीलिये अद्भुत वस्त्र लिये जाताहूं कि सबको पकड़कर दंडदूं और उनको उनके अधिकारपर नियतकरदूं तब वहबोली कि तू यह सब प्रबन्ध

तौ करताहै परंतु तैंने समीररूपा बहुरूपिणीको क्योंनहीं भेजा कि जो तेरा सेनापति युद्धकरने जाता उसकी वह रक्षाकरती और शत्रुके प्रहासआदि बहुरूपियोंका छल न चलता यहसुन कर महेन्द्रबोला कि तुमने सत्यकहा अब यहांसे जातेही बहु-रूपिणियोंको भेजूंगा यहकहकर उसने कुंजी उठाली और उस संदूकको खोला खोलतेही उसमेंसे एक अग्निकी लौनिकली कि उससे महेन्द्रके शरीरपर जलनपड़गई तब महेन्द्रने अपने गात्रमें से रुधिर निकालकर बलिदी और उससे वह अग्नि शांतहुई और उसमेंसे एक रेशमी रत्नजटित वस्त्रनिकला जि-सको अद्भुतपट कहते थे और प्रभाव उसका यहथा कि यदि महेन्द्रभी माया अपनीकरै तौ उसपटके रखनेवालेपर कुछ उस मायाकाफल नहोवै और शत्रुसेनाके योद्धा कैसेही प्रबलमाया-वी क्योंनहों उसवस्त्रके हिलानेकी वायुलगतेही मूर्च्छितहोजावें निदान महेन्द्र उस अद्भुतपटको लेकर आकाशमार्ग से बदरी उद्यानमें आया और वहां ठहरकर कुछ मायाकी कि एक मा-यावी दानव बड़ामान्य और उग्ररूप जिसकाशरीर अग्निकी सदृश दीखताथा पृथ्वीमेंसे निकला और महेन्द्रके सन्मुखजा-कर उसने दंडवत्की महेन्द्रने उससेकहा कि हे प्रलंब लो यह अद्भुतवस्त्र लेजाकर आनन्दा और निशाकरी आदि सब शत्रु-ओंको पकड़लाओ तुमसे अधिक और कौन मान्यहै जो यह वस्त्रदेनेके योग्य समझाजाय वहबोला कि महाराज आप मुझ को बड़ाई देते हैं मैं केवल इसमायाकृत चमत्कारों के कर्त्ता का एकसेवक और आपकीप्रजा और भृत्यहूं निदान प्रलंबने वह पट लेलिया और पूछा कि महाराज मैं एकाकी जाऊं अथवा कुछ सेनाभी लेजाऊं वहबोला कि सेनातौ मैं दुष्कुल आदिके साथ भेजचुकाहूं परंतु तुमभी बारह सहस्र सेना लेलो और शीघ्र चलेजाओ मैं निष्प्रभ भवनपरजाताहूं वहीं सबकोपकड़

करलेआना क्योंकि औरस्थानोंसे वहस्थान समीप है और इत-
ना ऊंचाहै कि वहींसे मैंभी तुम्हारे युद्धको देखूंगा यह कहकर
महेन्द्र वहां से सवारहोकर निष्प्रभ भवनकी ओर चलदिया
और प्रलंब वहां से अपने स्थानपर आया और बारहसहस्र
सेनालेकर तंबूआदि बांस और युद्धका सब सरंजाम भारकरा-
कर कूंचकाडंका बजाया और आप हंसपर बैठकर मार्गीहुआ॥
चौ०। मायाविद दानव बलभारे। म्लेच्छ भयानक रणमतवारे॥
सहज निशंक भयंकररूपा। चढ़ेवाहननि विविध कुरूपा॥
अधऊरध मधगति करिकरिके। चलेहिये अमरपभरिभरिके॥
नभमारगगहि गर्जततर्जत। चले जिन्हेंलखिहियमतिलर्जत॥
निदान प्रलंबतौ इधरचला और उधर जोमहेन्द्र निष्प्रभ
भवनमें पहुँचा तौ देखा कि सब अंधेरनगरी वासी मारेजारहे
हैं बड़ा कोलाहल मचरहाहै और दुष्कुल उस भवनपर चढ़ने
का उद्योग कररहाहै यह देखतेही वह समझगया कि दुष्कुल
आनन्दाकी मायासे वेष्टित है और महा क्रोधकरके चाहा कि
कुछ ऐसी मायाकरूं कि यह आनन्दाकीमाया लौटजाय और
जो हाल दुष्कुलका है वह आनन्दाका होजाय और दुष्कुल
चैतन्यहोजाय परंतु शोचा कि इसमायाको उलटाफेरनेसे प्रथ-
मतौ आनन्दा मरजायगी और जो जीतीभी बची तौ बहुत
मलीनमन होकर अप्रसन्न होजायगी तौ फिर तेराकार्य नसधै-
गा अपनेप्यारेको अप्रसन्नकरना और दुःखदेना अच्छानहींहै॥
सो० यदपि प्रीतिको लेश नहीं अहै ताके हृदय।
तदपि भेट यहि देश हुइहै जो जीवितअछत॥
यह शोचकर उसने एक निम्बुकअस्त्र मायासे वेष्टितकरके
दुष्कुलकेमारा और वह उसके शरीरको बेधकर पार निकलगया
और भयानक शब्द होनेलगा इसकेपीछे महेन्द्रने कुछ माया
करके अपनाहाथ हिलादिया कि सहस्रोंवज्र पृथ्वीपरगिरे और
दुष्कुलकी सबसेना उनसे भस्मीभूत होगई महाभयानक शब्द

हुए और जब वहशब्द शांतहुआ तब महेन्द्र निष्प्रभभवनमें आया विचित्रमाया ने उसको बड़ेआदरसे लिया और उसने उससेकहा कि यह आपकी बहिन आनन्दाकी कीहुई मायाका प्रभावथा कि दुष्कुल अपने आपेमें नथा आपके कारणसे यह मेरी इतनीभारी सेना मारीगई तब वहबोली कि आप मुझे आज्ञादीजिये किमैं जाकर उसछोकरीको दंडदूं महेन्द्रनेकहा कि निशाकरीने मेरेविपरीतहोकर मेरासामना कियाहै इससे उसके पकड़नेका मैं उपाय आप करूंगा परंतु आनन्दा तुम्हारी बहिन है तुम और वह बराबरहो उसकेविषयमें तुम जोइच्छाहो करो परंतु मैंनेप्रलंबको अद्भुतपट लेकर भेजाहै वह उन सबकोपकड़ करलावैगा जो उससे नपकड़ीजायतौ तुमजाना यहकहकरउस ने उसभवनका वहखंड खुलवाया जो रक्तवाहिनी नदीकी ओर था और जहांसेउसदेशके प्रत्यक्ष और अदृश्य दोनोंखंड दिखाई देतेथे और वहां सिंहासन बिछवाकर अपने चारोंमंत्री और सभासदोंसहित बैठा नृत्यहोनेलगा और विचित्रमायामद्यपात्र में भरभरके देनेलगी उससमय महेन्द्रने दासोंको आज्ञादी कि हमारी पांचों बहुरूपिणियोंको बुलालाओ वहआज्ञापातेही अ- नूपनगरमेंगये यहनगरउसदेशमेंथा जोउसदेशकेराजाने अपने बहुरूपियों को पारितोषिक दियाथा इससमय वहांकी रानी स- मीररूपा नामी थी और मंत्री उसकी भ्राताथी और वेधिनी १ उग्रा २ और तीव्रा ये तीनों उसकी सहेलियांथीं येपांचों आसु- री माया नहीं जानतीथीं परंतु बहुरूपधारिणी विद्या में बड़ी प्रवीणथीं और बड़ी स्वरूपवान् और थोड़ी वयरखनेवालीथीं और लड़कपनसे साथखेलनेकेकारणसे आपसमें प्रीतिमानथीं निदान महेन्द्र के अनुचरों ने जाकर महेन्द्र की आज्ञा उन को सुनाई सुनतेही उन्होंने अपने शरीर पर संपूर्ण बहुरूपधारिणी विद्यासम्बन्धी अलंकार धारणकिये और वहांसेचलकर महेन्द्र

के समीप आईं और दंडवत् करके हाथ जोड़े हुए महेन्द्र के सन्मुख खड़ीहोगईं तब महेन्द्र ने कहाकि हे समीररूपा कुछ बहुरूपिये प्रहास सहित इस देशमें आयेहैं और सहस्रों म्लेच्छों को मारचुकेहैं मैं जानताथा कि माया के आगे छल न चलैगा क्योंकि संसार में कहावतहै कि जिसकी लाठी तिसकी भैंस परंतु इन बहुरूपियोंने एक व्याधिफैलादीहै इससे हमको अबनिश्चयहोगया कि छली से छलीही जीतसकता है इस से तुम को उचित है कि जाकर इन सब बहुरूपियों को पकड़ कर हमारे समीप लेआओ और यद्यपि तुम माया नहीं जानतीहो तथापि तुम प्रत्यक्ष और अदृश्य और दैवीखंडों में से जहां इच्छा हो विचरना तुम को कोई नहीं रोकैगा यह आज्ञा पाकर समीररूपा उनचारों बहुरूपिणियोंसहित महेन्द्रको दंडवत्करके और पारितोषिक ग्रहण करके बिदा हुई और कूदती फांदती हुई उस स्थानके समीप पहुंची जहां निशाकरीकी सेना पडीहुईथी उस समय तक वहां प्रलंब नहीं आयाथा निदान बहुरूपिणी वहां पहुंचकर कुछ उपाय कार्य साधन करनेका विचारनेलगीं परंतु यह बन तो बहुरूपियोंकाथाही प्रहास और उपहास आदि फिराही करतेथे दैव योगसे प्रहास उस दिन तीन बहुरूपियों सहित किसी कामको बन में जारहा कि उसने बहुरूपधारिणी विद्या संबन्धी तूरका शब्द सुनाया बहुरूपिये उसशब्द की ओर चले और आगे बढ़कर देखा कि पांच स्त्रियां परमसुंदरी बहुरूपधारिणी विद्या संबन्धी अलंकारोंसे अलंकृत शिरकेबालोंके तिरछे जूड़े बांधे गातियां डुपट्टेकी बांधे अधोवस्त्रको गुल्फतक लपेटे पैरों में उपानह पहिरे भुजाओं पर गोफिनें बांधे साफा शिर से लपेटे रूप धारण करनेके सरंजामकी खुरजी डालेहाथों में खड्गलिये धनुषबाण और ढाल लगाए भूषण सुवर्णकेधारण किये शिरमें मांगनिकाले कूदती फांदतीहुई चलीआरही हैं ॥

चौ०। एक एकको छेड़तआवत। हँसिहँसिखेलतजियललचावत॥
चतुर सुघरसुकुमारनवेली। छलकरिहियोछलत अलवेली॥

उनमेंसे सबकेआगे समीररूपा शिरपर चन्द्रिकामनोहर लगाए अकड़ती और वलखाती हुई चली आती थी उसकी अकड़ से दोनों पयोधर अपनी हीं मड़ोड़में थे देखने वालेके चित्तको क्षण में मड़ोड़तेथे चाल ऐसी छलबल कीथी कि बड़े बड़े जितेन्द्रियों के मनको वलाखिला देतीथी और भाव चितवनके ऐसी वेंड़ेथे कि उनसे विधकर जीना दुर्लभथा और उसके पीछे उसकी मं-त्रिणीथी वह अपनी सुंदरता के आगे पद्मिनी और चित्रिणी को लज्जित करतीथी और कटाक्ष उसके विशिषरूपीथे और उसकी बराबरमें बाँकीतीनों बहुरूपिणी आनन्द स्वरूपिणी च-लीआतीथीं जिनके शरीरका वर्ण ऐसा मनोहरथा कि फूलभी उसवर्णको देखकर ईर्षा करतेथे और बड़ी चिलविली औरनि-पटनिर्दोष अंगी थीं॥

चौ०। तेनव नागरि सबछविधामा। रसिकहिय हरकोविद कामा॥
इन्दुरूप आनन छविछाये। विधि चितवशकर निपट बनाये॥
चंचलदृग दीरघ अनियारे। शर सम जन मन वेधन हारे॥
लटकचाल अतिछलबलकारी। ऐंडीवेंड़ी लचक लचारी॥
श्रुति नासा ग्रीवा कर सोहैं। रत्न जटित भूषणमनमोहैं॥

क०। जोरि जोरि जोरि दृग मोरि मोरि मोरि मुख चोरिचोरि चोरि चि-तचखनिचितौतिहैं। झुकिझुकि झांकिझांकि एक एक ओट करि ताकि ताकि तीक्षण सुतीर तन देतिहैं। सुमति प्रवीण मुखचन्द्र सो उदोतहोत मृदुमुसिकान सों चकोर चितकैतिहैं। लुकि लुकि लोचन सकोचन सों हेरि हेरि लगीसी लगायके लपेटि मनलेतिहैं॥

उनको देखतेही प्रहासने अपनी विद्यासम्बन्धी तूरबजवाई उसको सुनतेही उपहास वनसे दौड़ा हुआ आया और उन बहु रूपिणियोंनेभी तूरके शब्दको सुनकर अपने २ खड्ग कोपसे खींच लिये और अपना २ नाम बताकर गर्जतीहुई दौड़ीं तब

इन पांचों बहुरूपियोंने भी अपना २ नामबताया जिससे धोखा कार्य साधनाके समय नहो और गर्जतेहुए उनके सन्मुख गये और प्रहासने समीर रूपाको उपहासने प्राताको चपलाने वेधिनीको प्रचंडने उग्राको और उपदेशीने तीव्राको रोका उन्हें देखतेही पांचों बहुरूपिये आसक्त होगये और बहुरूपिणियोंके कटाक्षरूपी बाणधनुष रूपी भ्रूसेनिकल उनपांचों बहुरूपियोंके हृदयको बेधकर निकलगये और वे सब मोहित होकर रस सम्बन्धी पदपढनेलगे प्रहासने कहा कि हे प्राण प्यारी॥

दो०। करसमेट कचभुज उलटि खयेशीशपट डारि।
काको मन बांधे न तू जूरा बांधन हारि॥

यहसुनकर समीररूपाने झपटकर प्रहासपर खड्गका प्रहार किया और उत्तरदिया॥

दो०। कारीं लट कारीं अलक बँधींधर्म उपचार।
जे अधर्मरत तिनहिंनहिं देखत एकहुबार॥

इतनेमें उपहासने बढ़कर प्रातासेकहाकि हेचित्तकेचुरानेवाली॥

दो०। तेरीमूरति मोहनी मो मन बसी जो आय।
खड्गहियेहनि निकसिहै तुहींबेधिममकाय॥

यह सुनकर प्राता ने चमककर उपहास के खड्गमारा और उत्तर दिया॥

दो०। अवशिहोति होनी प्रबल नहिं कोउ मेटनहार।
दुख सुख पावत अवशिनर जोविधि लिख्यो लिलार॥

तब चपलाने बेधिनीके सन्मुख आकर कहा—

दो०। तज्यो शरीर वियोगमें तबहुंन प्रीति सिरात।
तनदाहनको धूमउडि प्रियढिग जात थिरात॥

उसको सुनकर बेधिनी ने कूदकर उसके एक गदामारी और उत्तरदिया—

दो०। नहीं शत्रुसों प्रेमहम करत चहत यहबात।
महि पछारि तोहिं डारिकै धरों हियेपै लात॥

उससमय प्रचण्डने उग्रासे विनयकी कि हे चित्तको आनन्द देनेवाली—

दो० । दृग न लगत वेधत हियहि विकल करत अँगआन ।
ये तेरे सबते विषम ईक्षण तीक्षण बान ॥

यह सुनकर उग्रा भौंचढ़ाकर लड़तीहुई उसके समीपआई और कहनेलगी कि--

दो० । सहसव्याधि सौ अग्निसम विथाकरब ममबान ।
मोहिं हियहर्षक कहततू यहतव निपटअज्ञान ॥

और जब उपदेशी तीव्रासे लड़नेलगा तब उसने कहा कि-

दो० । मनबहलावत दिनगयो कठिन होयगी रैन ।
नैनसैन शरहिय बिध्यो कहोपरै किमिचैन ॥

तीव्रा उसके हालको देखकर बहुतहँसी और कहनेलगी कि अरे अज्ञान--

दो० । प्रीति प्रीति सबकोउ कहै कठिन तासुकीरीति ।
आदि अन्त निबहै नहीं बालूकीसी भीति ॥

निदान उक्तप्रकारसे आपसमें प्रेमकी व्यवस्थाकी बातेंकरके वे बहुरूपिये और बहुरूपिणी आपस में खड्ग का प्रहार करने और एक दूसरेके वारको ढाल पर रोकने लगे इसके पीछे बहुरूपिणियोंने चौदहग्रंथ रखनेवाली पाशें फेंककर बहुरूपियोंकी ग्रीवा और कटिमें डालीं परंतु वे बहुरूपिये अपने शरीर को सिकोड़कर आकाशको बड़ी शीघ्रता से उछले कि उन पाशोंके कुंडल सब पैरोंके नीचे गिरगये और नीचे आतेही उन्हों ने बहुरूपिणियोंको दंडोंसे ताड़नाकी कि वे पांचो बहुरूपिणी कला खाकर दशहाथ पर जा पड़ीं इसी प्रकार से पांचो बहुरूपिये उन पांचो बहुरूपिणियों से दो कोस का मंडल बांधकर लड़तेथे कभी कोई कूदकर किसीका प्रहार बचाता कभी कोई उछलकर किसी को मारता कोई सव्यमंडल करके लड़ता और दूसरा धोखादेकर अपसव्यमंडल करके प्रहार करता तीसराकलाखा-

कर दूर जापड़ता पांचो बहुरूपिये मंडल करते हुये जाते और बहुरूपिणियों की दृष्टि को ऊर्ध्व घातपर छलकर उनकी गोदोंमें बैठ जाते और मुखचुंवन करते कभी वहुरूपिणी उनके समीप आतीं और उन्हें काट खातीं निदान इसी प्रकारसे चार घड़ी तक युद्ध रहा उपरांत बहुरूपिणी सब छलांग मारमारकर निकलगईं और यह कहती हुई एक ओर को चली गईं किदेखो हम तुम सब दुखियोंको किस किस प्रकारसे मारतीहैं और पांचो वहुरूपिये भी वहां से लौटकर एक पर्वत की कंदरा में आकर ठहरे उससमय प्रहासने कहा कि सुनो भाइयो समीररूपा मेरी प्राणप्यारीहै जो कोई उसको मारडालेगा तो मैं उसके साथ बहुत बुरा आचरण करूंगा तब उपहास बोला कि प्राता पर मेराभी चित्त आसक्तहै तुम सबको उसकी रक्षा भी करना उचितहै इसकेपीछे चपलाने अपनेचित्तके बेधिनीपर आसक्तहोने और प्रचण्ड ने अपने मनका उग्रापर मोहित होने और उपदेशी ने अपने हियका तीव्रा से प्रीतिमान होने का वृत्तान्त कहा निदान सबको एक दूसरेकी प्रियाका हाल विदित होगया और सबने प्रण किया पांचो बहुरूपिणियोंमें से किसीको कोई न मारै तब प्रहास ने कहा कि जब यह देश विजयहोजायगा और ये वहुरूपिणियां पकड़ी जायँगी और महाराजकी आज्ञामें रहना स्वीकार न करेंगी तब इनके बधका अधिकार महाराज शत्रुंजय को रहैगा परन्तु इससमय इनको मारना उचितनहीं है यह सलाह आपसमें करके वे पांचो अपनीसेनाकी रक्षा करनेलगे और वे बहुरूपिणी भी इसीओरबनमें एकस्थानपर ठहरीं उस समय समीररूपा ने प्राता से कहा कि अरी आज तो मुझको तेरारंग दूसराही दीखताहै होठोंको चाटती है मुख पीलाहोगया है पैररखती कहींहै पड़ते कहींहैं केश खुलेहुयों को बांधती नहीं है बतातो यह क्याबात है वहबोली यह तुम क्या कहतीहो मैं

तौ लाजसे कुछकहनहीं सकीथी परन्तु अब जो तुमनेही छेड़ा
है तौ अपनी थैलीमेंसे दर्पण निकालकर अपना मुख तौ देखो
कि जिससे ठीक यह जानपड़ता है कि किसीसे आंखलगी है
देखो तौ तुम्हारी आंखोंमें अश्रुपातहैं विकल सब तुम्हारे गात
हैं चेष्टा औरकी औरहै आपने तौ वहीकहावतकी अपनीआई
औरपै गँवाई समीररूपा बोली कि परमेश्वर ऐसा न करे
यहतेरीही प्रकृति है कि जहां किसी पुरुषको देखा फिसलपड़ी
तू मतवाली है जो मुझपर शंकाकरती है और जो मैं ऐसा भी
करूं तौ मेराआसक्त आजदिन सबसंसार के बहुरूपियों का
राजा है और महाराज शत्रुंजयका परममंत्री और चित्तका प्रे-
रकहै तूतोबता कि तू क्यासमझकर रीझी है जो मेरी बराबरी
करती है तब प्राता हँसकरबोली कि जो तुम अप्रसन्न न हो तौ
कहूं मुझपर जो दृष्टिपड़ी है तौ उपहासकी पड़ी है जो इन्द्र से
वरदानपाने से अवध्य और अधर्ष्य है प्रहास के भी प्राण ब-
चानेवालाहै और अपनेदेशका राजाहै परन्तु मैंनहीं जानतीहूं
कि इनतीनों छोकरियों ने क्याजानकर अपनामन विमन किया
है यहसुनकर वेधिनीबोली कि वाहजीवाह जो राजपुत्रीसे आप
का वशनचला तौ अपना खिसियानपन हमपर मिटाया अ-
च्छाजी अपका खिसियानपन हमारे शिर माथेपर आपकीबुद्धि
का क्याकहना है बड़ीही तीव्रहै बहुतअच्छा जो आप कहती हैं
वहीसही परन्तु मुझको बताइये तौ कि आपने मेरेनायक में
क्याबुराई निकाली वह भी गौरण्डदेशों के एकदेशका अधि-
पति है और प्रहासका महानुभाव शिष्य है हां जो कुछकहो सो
इनदोनोंसेकहो तब उग्राने अप्रसन्नहोकर कहाकि वेधिनी तु-
म्हारी यह बड़ीबुरी प्रकृति है कि अपनीबात दूसरोंपर डालकर
कहाकरतीहो तुम्हीं ऐसी उदमातीहो मेरा चाहनेवाला तौ तुम
सबसे अच्छाहै पर मैं उसको कुछनहीं जानतीहूं प्राताकी कहा-

वत कि उपहास वरदानपानेवाला और एकदेशका राजा है तौ उसीके बेटेने मुझसे प्रीतिलगाई है पर वहपड़ा अपने प्राणदो में कब सुनतीहूं ऐसे ऐसे चौदहसहस्र मरते फिरते हैं हां इन तीव्राको जो कहो ठीकहै वहबोली कि आईगई मुझपरहुई कुछ चेतकरबोलो अपने दहीको कोई खट्टाबताता है मुझको तौ प्रचण्डसे कुछ प्रयोजन नहीं है परन्तु जो वह मेरेऊपर प्राण भी दे तौ जिनजिनकी तुमसबने श्लाघाकीहै उनसबसे वह अच्छा है क्योंकि प्रथम तौ वहभी उपहासकी भांति वरदान पायेहुयेहै और दूसरे इन मायाके चमत्कारोंके नष्टकर्त्ताका मंत्रीहै जो इस समय इसदेशका अधिपतिहै सत्यतौ योंहै कि जो जो इसदेशके निवासी हैं सब उसकी प्रजाहैं यहसुनकर समीररूपा बहुत हँसी और बोली भला तुम फलो फूलो आजसे हमतुमको दण्डवत् कियाकरेंगे हम तौ तुम्हारी प्रजा हैं परमेश्वर तुम्हें बनायेरहै अबक्या है अबतौ सैयां भये कुतवाल अब डरकाहेको निदान तीव्राको सबने आड़ेहाथोंलिया और वह लज्जितहोकर पसीनों में नहागई और बोली कि वाह वाह तुमसबने मुझे कोई सिर्रिनिजानाहै देखो लोगो अपने अपने लोगोंकी सब श्लाघाकरें तब तौ कुछ न होय मैंहीं निगोड़ी निर्बुद्धिहूं जो मेरे बोलतेही सब मुझे हँसीमें उड़ानेलगीं भैना मुझे तौ कुछ तीन पांच आतानहीं मैं तौ सीधी सच्चीहूं ये छलछंद तुम्हीं सबको आतेहैं कि अपने मतलबकी तौ कहलो और दूसरेको बैठकरहँसो तब प्रातानेकहा कि अरी तीव्रा तू तौ झाड़ीका कांटा बनगई इसमें खिसियानेकी क्या बातहै हमारी राजपुत्रीने यहीनहीं कहा कि अब हम तुम्हारी प्रजाहैं तौ इसमें कौनसी लाज और खिसियानेकी बात है मेरीप्यारी तैंने बातही ऐसीकही न आकाशमें फेंको न शिरपर गिरे निदान वे सब इसीप्रकारकी बातें आपस में करतीरहीं और इन बातोंके करनेसे उनका प्रयोजन यहथा

कि एक दूसरे के प्रियतमको जानजाय मानों एकने दूसरीसे अपने प्यारे को रक्षाकरने की कांक्षा प्रकटकी और सलाहकी अंतःकरणसे तो उन पांचों बहुरूपियोंकी मित्रबनीरहो और सब देखनेमें शत्रु रूपरहो और निदान वे पांचों एक ओर को चलदीं इतने में प्रलंब अपनी सेना सहित बड़े मार्ग को उत्तीर्ण करके निशाकरी की सेना के समीप आगया और वहां उसने अपना डेरा डाला उसके आने का समाचार निशाकरी को पहुंचा वह होशियार होगई और जागरण करनेलगी पांचों बहुरूपियों ने भी बनमें से सेनाका आगमन देखा और पांचों बहुरूपिणियों को भी उन के आनेका हाल विदितहुआ और अपने अपने कार्य की साधना का चिंतवन करने लगे प्रलंबने एक दिन तो मार्गका श्रम मिटानेको आरामकिया और दूसरेदिन जब सूर्यअपने दिनके आकाश मार्गको उत्तीर्णकरके अस्ताचल पर पहुंचा और चन्द्रमा अपनी प्रभा भरी किरणों सहित आकाशमें भ्रमण करता हुआ प्राचीदिशासे प्राप्त हुआ तब प्रलंब के नीलाम्बरी डेरोंमें चन्द्रमा कीसी प्रभा रखने वाले दीपक प्रज्वलित हुए॥

सो०। भयोसोदिवसव्यतीत निशिआईनिजपतिनिरखि।
दोनोंराखें प्रीति एकहि इक शोभित कियां॥

उस समय प्रलंब की सेना में युद्ध के बाजे बजने लगे और कोलाहल प्रारंभ हुआ और मायाकृत पक्षियों ने राजसभा में आकर महारानी चन्द्रचूड़ा से विनय की कि॥

चौ०। रहैसदैव प्रताप अखंडा। होहिंशत्रु तव सब भौभंडा॥
उदयअस्तलों धरासमागर। लहैसुशासनतवगुणआगर॥
भयोनअहाहि न होवनहारा। तवसमान जग भूभरतारा॥
जबलगिभानुइन्दुआकाशा। तबलगितवयशकरहिंप्रकाशा॥

आज शत्रुने अपनी सेनामें युद्ध के बाद्य बजवाये हैं और वह

युद्ध की इच्छा रखता है यह सुनकर निशाकरी ने आज्ञा दी कि हमारी सेनामेंभी बाजे बजें ईश्वर हमारा रक्षक है यह सुनकर भेरी और तूर आदि अनेक बाजे बजने लगे ॥

दो० तहां तूरसों कढ़तभो अद्भुत शब्द महान ।
उठहुवीर यशलेहुजग बधिनिज शत्रु विहान ॥

उससमय हर एक योद्धा अपने २ अस्त्रोंको ठीक करनेलगा मायावी सब अपनी अपनी अभ्यासित माया के प्रयोग सिद्ध करते रहें चार पहर रात्रि यही कोलाहल अस्त्रों के लेने रखने और निर्मल करने का रहा और माया सिद्ध करनेवालों का शब्द भी होतारहा कि इतने में प्रातःकाल के होने से अंधकार दूर होगया रात्रि व्यतीत हुई तारागण अस्त हुए और मार्त्तण्डने आकाश मंडल में अपना प्रकाश किया ॥

सो० होत उदयमार्तंड प्रभाछीन शशिकी भई ।
सप्तद्वीप नवखंड भयो उजेरो भानुको ॥

प्रातःकाल होतेही रानी निशाकरी और केसरी और आनंदा सेनासहित रणभूमिमेंआई और महारानी चन्द्रचूड़ाभी विक्रमी भानुविक्रम सहित सबसेनाके शूरवीरोंको प्रसन्न करतीहुई बड़ी धूमधामसे युद्धभूमिमें आकर उपस्थितहुई और शत्रुकी सेनाभी प्रलंब सहित गर्जतीहुई दूसरी ओरसे रणभूमिमें प्राप्तहुई और उस पृथ्वीको युद्धके लिये निष्कंटक करके दोनोंसेनाओंमें व्यूह रचनाकीगई और बंदीजनोंने निकलकर योद्धाओंको रणका उत्साह दिलानेकेलिये समय अनुरूप शिक्षा और वीरता भरेहुए पदपढ़े ॥

जयकरीछंद ॥

हे हे सकल शूरबलधाम । शिक्षाहमरी लेहु ललाम ॥
मृत्युलोक यहप्रकटअसत्य । यहां नरहत जीवशसि नित्य ॥
उदयअस्तलों धरणिसमस्त । जिमजीती करियुद्धप्रशस्त ॥
सुरअरु असुर लोक गंधर्व । जिन जयकरि वशकीये सर्व ॥
त्यागित्यागितनउरधलोक । गये न सके कालको रोक ॥

परतिनको यशधर्म ललाम । मिट्योन मिटिहैहेबुधिधाम ॥
असजियजानि आजुयशलेहु। मारि शत्रुदलजयसुखदेहु ॥
मरेस्वर्ग जीतेभू भोग । उभयप्रकार बन्यो भल योग ॥

जब वंदीजन उक्तप्रकारसे शिक्षाकरकेहटगये तबप्रलंब रण-भूमिमें अग्नि और पत्थर बरसाताहुआ आया और बड़ेशब्द से गर्जिकर और ललकारकरबोला किअरे धर्मके त्यागनेवालो तुममेंकोई ऐसाहै जोरणभूमिमें आकर मुझसे युद्धकरे औरमेरी कीहुई मायाके प्रयोगकोरोके यहसुनकर रानीनिशाकरीके सेना-पति अपनी२सेनासहित उससे युद्धकरनेकेलिये बढ़े परंतु प्रलं-बने कुछमायाकी कि उससे सहस्रोंपक्षी प्रकटहोगये और नि-शाकरीकी सेनाके योद्धाओंके शिरपर बैठनेलगे जिसकेशिरपर एकपक्षी बैठताथा वही वृक्षहोजाताथा और तत्काल शाखाफूट कर कोंपल और हरे २ पत्ते लगजातेथे और वेपक्षी उन वृक्षों पर बैठजातेथे उससमय निशाकरी और मारीचआदि सब बड़े बड़े मायावी अनेक२प्रकारकी माया अपनेको बचानेको करते थे कि रानी आनन्दाने जो मयूरयुक्त मायाकृत विमानमें बड़ी शोभासहित बैठीथी समझी कि यह प्रलंब माया क्याकरता है मानो मुझे तानेमारता है कि सबको वृक्षबनाता चलाजाता है यहसमझकर वह अपने विमानसे कूदकर पृथ्वीपरआई और अपने वस्त्रको संभालतीहुई प्रलंब के सन्मुखगई और अपने जूड़ेको खोलकर उसमेंसे एकडिबिया निकाली और उसमें से एक श्वेत पाषाणकी मूर्त्ति निकालकर उसको अपने शरीरकेरु-धिरका बलिदानदिया और कहा हेमायाकर्त्ताकी मूर्त्ति क्या मैंने तुझे यहीदिन देखनेको अपनेशिरपर चढ़ायाथा कि मायाकृत पक्षीआकर मेरी सेनाके शिरपर घोंसलेलगावें और मनुष्योंको वृक्ष बनावें यहसुनकर वहमूर्त्ति बड़ेशब्दसे हँसी और डिबिया से उड़कर अंतरिक्षमें अंतर्द्धानहोगई थोड़ीदेर में क्या देखते

हैं कि आकाशमें कोसोंतक एकजाल बिछगयाहै उसमें वेसब मायाकृत पक्षी फँसगयेहैं और वही मूर्त्ति हाथमें शस्त्रलिये उस जालमेंसे पक्षियोंको निकाल निकालकर मारती है और उनके रुधिरको उन वृक्षोंपर छिड़कती है जिसवृक्षपर वह रक्तकीबूंदें पड़तीहैं वही फिर मनुष्यहोजाताहै जब प्रलंबने देखा कि उस मूर्त्तिने सबसेनाको फिर वृक्षोंसे मनुष्यबना दिया और आनन्दा सन्मुख खड़ीहै कुछ मायाकरना चाहती है जो मायाकरदी तो उसकी मायाका निवारणकरना कठिनहोगा बड़ी प्रबल है यह शोचकर उसने वह अद्भुतपट निकाला और आकाशमें जाकर उसको निशाकरीकी सेनाकेऊपर भाड़ा भाड़तेही उसमेंसे धूल सब सेनाकेऊपर बरसी और धूलके पड़तेही निशाकरी आनन्दा और केसरी और रक्तकेशी और मारीच और पद्मावती और चन्द्रचूड़ा आदि सब सेनापति और मायावी योद्धा मूर्च्छितहोगये और बाकी सबसेना उनको मूर्च्छित देखकर भागने लगी उससमय प्रलंबकी सेनाके योद्धाओं ने सहस्रों को जीते जी पकड़लिया और सबके हाथों पैरोंमें बड़ी बड़ीभारी बेड़ियां डलवादीं और उनको मायासे वेष्टितकरके कैदकरलिया इसके पीछे उसने उस अद्भुतवस्त्रको सबकेऊपर हिलाकरकहा हेमहा प्रभावरखनेवाले वस्त्र येसब चैतन्यहोकर अपने कैदहोने का बुराहालदेखें उसीसमय निशाकरी आदि सबरानी और सेना पति सचेतहोगईं और अपनेको शत्रुकेवशमें प्राप्तदेखकर बेवश होकर चुपरहीं इसकेपीछे प्रलंबने आज्ञादी कि मैं आज युद्धके कारणसे श्रमितहूं इससे आज तो यहां विश्रामकरूंगा और कल सबको लेकर महाराज महेन्द्रके पास चलूंगा यह आज्ञा पातेही सब योद्धाओंने अपनीकमर खोली और विश्रामकिया और सब कैदियों पर रक्षक नियुक्तकरादिये और वे बारी बांध बांधकर पहरादेनेलगे और प्रलंब वहांसे अपनी सभामेंआया

और परमोत्तम आसनपर बैठगया और जितने दास और सेवक थे सबको आज्ञादी कि बाहरचलेजाओ वेसब चलेगये और उसके पास केवल उसकी एक वेश्यारहगई उस समय उसने उससभाके डेरेको मायासे वेष्टितकरादिया कि यदि कोई मनुष्य उसके भीतरआवे तो मूर्च्छितहोजाय क्योंकि उसको बहुरूपियों का डरथा कि ऐसानहो कि कोई बहुरूपिया आकर मारडाले निदान यहतौ निर्भयहोकर आनन्दसे वहांबैठा और इधर बहुरूपियों ने अपनी सेनाको ग्रहीत देखकर सलाहकी और अपना अपनास्वरूप बदलके सब प्रलंबकी सेनामेंचले आये उससमय उपदेशी ने प्रलंब के डेरे के पास जाकर एक सेवक को बुलाया औरकहा कि मुझको कुछ एकांतमेंकहनाहै और जबवह उसके साथ २ एक एकांतस्थानमें पहुंचा तब उपदेशीने उस के मुखपर एकमूर्छापिण्डमारकर उसको अचेत कर दिया और आप उसकास्वरूप बनाके और उसके वस्त्रपहिरकर प्रलंबके डेरेके समीप आया और जैसे भीतर घुसनाचाहा तैसेही और सेवक बोले कि वहां मतजाओ भीतर जानेकी आज्ञा नहींहै यहसुनकर उपदेशी ने कहा कि तुम क्या जानो कि मैं किसकार्यसे जाताहूं और यहकहकर भीतर घुसा परंतु जैसेही भीतर पैररक्खा मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा प्रलंबने आकर उसको उठाया और कुछ मायाकी कि उससे उसका स्वरूपज्योंका त्यों होगया और तब उसे उसीडेरेमें मायाके जालसे बांधकर कैद करलिया और आप फिर उसीप्रकार से बैठकर उस वेश्या से हास्यकरनेलगा इतने में प्रचण्ड अपना स्वरूप परमसुन्दर शोभायमान बनाकर गया और सेवकों से बोला कि मैं नौकरी करने आयाहूं इस समय प्रलम्बजी एकांत में बैठेहैं जो आप लोग आज्ञादें तो जाकर अपना हाल कहूं वह बोले कि भीतर जाने की आज्ञा नहीं है तुम्हारी इच्छाहै तो चले जाओ परंतु

जो अप्रसन्नता हुई तौतुम्हारे शिरहै प्रचंड बाला कि मैं अपनी व्यवस्था निवेदन करके अभी आताहूं और यह कहकर डेरेके भीतर चला गया परंतु थोड़ीही दूरगया होगा कि मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा प्रलंबने उठकर माया करके उसके स्वरूप को भी ज्योंका त्यों करदिया और यह कहकर उसे भी माया जाल से बांधकर कैद कर लिया कि बहुरूपिये स्वरूप बदलबदल कर आने लगे और फिर वहीं बैठकर अपनी प्रिया से बात चीत करने लगा इतनेमें चपला ने देखा कि दोबहुरूपिये भीतर जाचुके परंतु कुछ कार्य सिद्धी नहीं हुई और आप उसडेरे के चारों ओर घूमने लगा दैवयोग से उस ने देखा कि प्रलंब के डेरेके पास एकतंबू उसकी वेश्याका खड़ा हुआहै और उस वेश्याका एक सेवक छोकरासा धूम्रपानका यंत्र ठीक कररहा है चपलाने उससे कहाकि तू इधरतोआ कल तूने मेरे कुत्ते को क्यों माराथा वह छोकरा आश्चर्यमें हुआ कि कैसा कुत्ता और बोला कि भाई किसीको पहँचानतेभी हो तब चपलाने उसका कान पकड़लिया और खींचता हुआ लेचला कि चलो बचा जिसके सामने तुमने कुत्ते को माराहै उससे पुछवाकर तुमको कैसा ठीक बनाताहूं यह कहता हुआ वह उसछोकरे को एकांत स्थानमें लेआया और उसको मूर्च्छितकरके अपना स्वरूप उसकासा बनाया और शीघ्रआकर धूम्रपान तयारकरनेलगा इतने में एक सेवकने आकरकहा कि अरे अभी तू चिलमही भररहाहै जा शीघ्र बाईजी धूम्रपान करनाचाहतीहैं यहसुनकर वहबोला कि अग्नि तो सुलगारहाहूं और फिरतमाल में मूर्छाकर चूर्ण मिलाकर चिलम भरी और धूम्रपान तयार करके उस सेवकसे कहा कि लो लेजाओ वहबोला कि तू आपलेजा हमको भीतर जानेकी आज्ञा नहीं है निदान चपला धूम्र पान लेकर भीतरगया और औरोंकीभांति वहभी मूर्च्छितहोकर गिर-

पड़ा प्रलंबने उसेभी कैद करलिया और मायाकरके उसके स्व-
रूपको उड़ाकर ज्योंकात्यों करदिया और कहा कि हमारे ईश्वर
की कैसी कृपाहै कि बिना परिश्रमके बहुरूपियेभी पकड़ लिये
गये यह कहकर उसने तीनों बहुरूपियोंको मायासे वेष्टित कर-
के उनके शरीरको स्तंभित करदिया और आप फिर अपनी
प्यारीसे हास्य करनेलगा इतनेमें प्रहास अपना स्वरूप प्राता
बहुरूपिनी कासा बनाकर आया और एक पत्र महेन्द्रकी ओर
से प्रलंबकेनाम लिखकर उसपर महेन्द्रके हस्ताक्षर बनाये और
उसके हरपरतमें अति सूक्ष्म मूर्छाकर चूर्ण रखकर बंदकिया
और लेकर प्रलंबके डेरे में आया और सेवकोंसे कहा कि तुम
जाकर प्रलंबसे कहदो कि महेन्द्रके पाससे प्रातापत्रलेकर आई
है वह बोले कि हमको तो भीतर जानेकी आज्ञा नहीं है तुम
आप चलीजाओ यह सुनकर प्रहासने अनुमान किया कि भी-
तर जानेमें कुछनकुछ उपाधिहै इसीसे ये नहींजाते यह शोचकर
उसने डेरेके द्वारहीपरसे खड़ाहोकर कहा कि हे प्रलंब मैं प्राता
हूं महाराज महेन्द्रके पाससे पत्र लेकर आईहूं वह बोला कि
भीतर चलीआओ प्रहासने कहा कि महाराज मायापति महे-
न्द्रके भेजेहुए पत्रका यही सन्मान है कि उठकर द्वारतकभी
नहीं आयाजाता हांजी जिनका वैभव बड़ाहोताहै वे यहीकरते
हैं यह सुनतेही प्रलंब लज्जित होकर उठ खड़ाहुआ और उस-
के समीप चलाआया प्रातारूपी प्रहासने उसे दंडवत् की और
पत्र निकालकर दिया और कहा कि लीजिये इसको पढ़कर इस
का उत्तर लिखलाइये प्रलंब बोला कि आपभीतर पधारिये एक
पात्र वारुणीपान करिये जबतकमैं उत्तर लिखलूंगा प्रहास बोला
कि तुम जिसको पातेहो भीतर बुलालेतेहो तुमको बहुरूपियों
का कुछभय नहीं है वह बोला कि नहीं यह डेरा मायासे वेष्टित
है जो कोई यहां आवेगा वही अचेत होजायगा तब प्रातारूपी

प्रहास ने कहा कि मैं बहुरूपिनीहूं और माया नहीं जानतीहूं सो तुम इसीलिये मुझेभीतर बुलातेथे कि मैं मूर्च्छित होजाऊं परंतु मैं पहिलेही जानगईथी कि तुमने बहुरूपियोंको पकड़ने के लिये कुछनकुछ उपाय अवश्य कियाहोगा इससे यह हमसे छलियों की बात नथी कि मैं भीतर चलीआती और आती-भी तौ गिरती हाथ मुँ टूटजाता यहसुनकर प्रलंब ने उसकी बुद्धिकी बहुत कुछ प्रशंसाकी और उस माया मूर्छा करनेवाली का संहार करके प्रातारूपी प्रहास का हाथ पकड़कर भीतरले आया वहां जाकर प्रहास ने देखा कि तीन बहुरूपिये स्तंभित होकर स्तब्ध पड़े हैं और एकसुंदरस्त्री बैठीहुई है और वस्त्र और आभूषणोंसे अलंकृत एक उत्तम आसनपर आसीनहै प्रहासभी एकओरको बैठगया और वहपत्र निकालकर देदिया प्रलंबने उसेलेकरखोला खोलनेसे उसमेंसे मूर्छाकर चूर्णकी सुगंधआई वहपत्रको सूंघनेलगा कि यहकाहे की सुगंध है परंतु सूंघतेही मूर्च्छित होगया उसीसमय प्रहासने एकमूर्छांड उसवेश्याके मुखपरभी मारा किवहभी अचेतहोगई और प्रहासनेतब प्रलंबका शिर काटडाला काटतेही अग्नि और पाषाण वर्षनेलगे और महाकोलाहल होनेलगा उससमय प्रहास उस वेश्याका गहना उतारनेलगा औरतीनों बहुरूपियेभी उसके मरनेसे मुक्त होकर लूटपाट करने लगे और चपला उसअद्भुत वस्त्रको प्रलंब की झोलीमेंसे निकालकर डेरेकी कनातको फांदता हुआ भागा उसकोलाहलको सुनकर सबमायावी म्लेच्छदौड़े और प्रहास और दोनों बहुरूपियाभी कूदकर निकलगये उधर प्रलम्ब के मरनेपर उसकी सबमाया नष्टहोगई और जिनाजिनको उसने कैदकियाथा सबछूटगये निशाकरी और आनन्दा मायाकेबलसे आकाशमार्गीहुई औरअंतरिक्षमें ठहरकर प्रलंबकी सेनापर लोहमयीअग्नि गोलक और नारिकेल और निम्बुक अस्त्रोंकी वर्षा

की ओर बड़ा कोलाहल होनेलगा कभी अंधकारहोगया कभी वादलउठा कभीविजलीगिरी कभी अग्निवर्षी कभीपाषाणवर्षे उससमय आनन्दाने मायावेष्टित फूलों के गुच्छे मार २ कर वसंतऋतु उत्पन्न करदी और सहस्रों मायावी म्लेच्छोंको मोहित करके यमलोकमें पहुंचाया निशाकरी और मारीचने वज्र पातकर करके सहस्रोंको पंचत्वकोप्राप्तकिया और रक्तकेशी और केसरीने माया वेष्टित बाणोंकीवर्षाकी॥

जयकरीछंद॥

वर्षेतहांअग्निपाषाण। अरुमायावेष्टितवरवान॥
तिनसोंवेधितउन्नतकाय। मरेम्लेच्छदानवसमुदाय॥
हाहाकारशब्दअतिघोर। मचोप्रलंवसेनमेंशोर॥
मरेअसंख्यवरिरणधीर। कायरभगेजेरहेअवीर॥

निदान प्रलंवकी सवसेना क्षणभरमें नष्टकरडाली और तंवू और द्रव्यआदिजोकुछ सरंजाम शत्रुकाथा सवनिशाकरीने लूटकर अपने वशमेंकिया जयदुंदुभी घोषितहुई भागीहुईसेना लौटकरआई और फिर पहलेकीभांति सव अपने २ वासस्थलमें उतरे आनन्द और उत्सवहोने लगा परंतु प्रहास जव भागकर वनमेंआया तव उसनेविचारकिया कि अद्भुतवस्त्रजो वहुरूपिया लेकरभागाहै उससे वहलेलेनाचाहिये यहशोचकर उसनेअपनी विद्यासम्वन्धी तूरवजाई उसको सुनकर उपहास और प्रचंड दौड़ेहुए आये परंतु चपला इस प्रयोजन से नहीं आया कि जाऊंगा तो गुरूजी अद्भुतवस्त्र को छीन लेंगे प्रहास ने उन दोनों से पूछा कि तुममेंसे अद्भुत वस्त्र कौन लायाहै वहवोले कि हमको महाराज शत्रुंजय ने अन्नोदक की शपथ है हम नहीं लाये हैं तव प्रहास ने अनुमान किया कि चपला तूरका शब्द सुनकर नहीं आया है वही लेगया है यह अनुमान करके प्रहास हाथमें कोड़ा लेकर चपलाको ढूंढ़नेचला परंतु चपलाने विचार

किया कि जो मैं इसप्रत्यक्ष खंडमें रहूंगा तो गुरूजीयह अद्भुत पट अवश्यही छीन लेंगे उनके पासतो मरुतदत्त वस्त्र और थैली आदि अनेक पदार्थ हैं और मेरे पास कोई ऐसा पदार्थ नहींहै जिससे माया मेरे ऊपर असर न करे इससे इस वस्त्रको गुरूजी को न दीजिये यह विचार करके वह मायाकृत देश के अदृश्य खण्ड की ओर चला परंतु अब उन बहुरूपिनियों का वृत्तान्त सुनिये कि वे सब वन में थीं और महेन्द्र ने उन को बहुरूपियोंके पकड़नेकी आज्ञा दी थी इससे वे उनके पकड़ने के उद्योगमें थीं प्रलंब की सेना से उन्होंने कुछ प्रयोजन नहीं रक्खाथा परंतु जब प्रलंब के मारेजाने का कोलाहल सुना तब समीररूपा ने कहा कि अरी प्राता बड़ा दुष्कर्महुआ कि प्रहास ने प्रलंब को मारडाला महाराज हमसे क्या कहेंगे कि तुमवहां थीं और सेनाकी रक्षा न करसकीं इससे अब शीघ्र चलकर प्रहासको पकड़ो यह कहके वेपांचों पृथक् पृथक् मार्गोंसे बहुरूपियोंको पकड़ने चलीं प्राताती निष्प्रभ भवन के मार्गपर होली और समीररूपा निशाकरीकी सेनाकी ओरआई और उसने दूरसेदेखा कि प्रहास एक ऊंचेस्थानपर खड़ाहुआ हाथमें कोड़ा लिये चारोंओरको देखरहाहै यह देखकर समीररूपाने अपना स्वरूप चपलाकासा एक एकांत स्थानमें बैठकर बनाया और वहांसे उछलती और कूदतीहुई उसओरको आई जहां प्रहास खड़ाथा यहतो उसकेहीं खोजमेंथा देखतेही दौड़ा और बोला कि अरे चपला सत्यबता कि तू अद्भुतवस्त्र लायाहै या नहीं यदि लायाहोतो मुझेदे चपलारूपी समीररूपा हाथ जोड़कर उसके पैरोंपरगिरपड़ी और विनयपूर्वक बोली कि गुरूजीमहाराज वह वस्त्र मुझीको देदीजिये तब प्रहासने कोड़ाउठाकर कहा कि क्या कुछ उपाधिने तुझे घेराहै ला शीघ्र मुझेदेदे उससमय समीररूपाने पैरोंपर गिरकेपैर प्रहासके खींचलिये और बड़ीशीघ्रतासे

उसके मुखपर मूर्छौड मारकर उसको अचेतकरदिया और उस को एकचादरमें लपेटकर पाशके दोकुंडलोंसे उसकेपैर दोसे उस के हाथदोसे गरदनबांधी और बाकी पाशके दो कुंडलोंसे ऐसा कसा कि प्रहास बँधकर एकगठरीकी भांतिहोगया और उसे पीठपर लादकर फेंटेसे कसलिया और उछलती कूदतीहुई निष्प्रभ भवन की ओर चलदी परंतु अब चपलाका वृत्तांत सुनिये कि वह भी निष्प्रभ भवन के मार्गपर चलाजाताथा दूरसे उसने प्राता को आतेहुए देखा बहुत शीघ्र उसने अपना स्वरूप समीररूपाकासा बनाया और उस मार्गसे चला जिसपर प्राताआरहीथी प्राता उसे देखतेही पुकारी कि हे राजपुत्री कहां जाती हो समीर बोली कि यहां मत ठहरो अलग आओ वह चली आई तब उसने कहा कि ये मेरे बहुरूपिये बड़ीआपत्तिहैं अभी प्रहास का और मेरा सामना हुआथा वह इस झाड़ीमें चला गयाहै अब एकओरसे तूजा और दूसरी ओरसे मैंजातीहूं यह कहकर वे दोनों बातें करते हुए आगे को चले थोड़ी दूर पर जाकर चपला ने कहा देखतो पीछे कौन आताहै प्राताने पीछे को मुख फेरा और चपलाने एक मूर्छौड उसके मुखपर मारा वह अचेत होगई चपलाने अपना स्वरूप प्राताकासा बनाया और प्राताका स्वरूप प्रहासकासा बनाया और प्रहासरूपी प्राताको उक्तप्रकार से बांधकर और पीठपर लादकर निष्प्रभ भवन की ओर चलदिया और अद्भुत वस्त्र के प्रभाव से रक्तवाहिनी नदीको उत्तीर्ण करके अंधेरनगरीमें आया और उस को किसीने नहीं रोका किंतु किसी किसीने पूछा कि कहोजी प्राता किसको पकड़कर लाईहो वह बोली प्रहासको इसीप्रकार से चपला निष्प्रभ भवन के ऊपर जापहुँचा वहां महेन्द्र सिंहासन पर विराजमान था नृत्य होरहाथा और सहस्रों मायावी म्लेच्छ और दानव जो महेन्द्र के सान्य और अनुचरथे वहां

बैठेहुए थे इतने में प्राताखूपी चपला भी वहां पहुँचा उसने महेन्द्रको दंडवत् की और वह गठरी सामने पटकदी महेन्द्रने पूछा किकिसको बांधाहै वहबोली कि प्रहासको और यह कहकर उसने प्रहासरूपी प्राताको एकखंम्भसे बांधदिया इतनेमें समीररूपाभी प्रहासको लादे हुए पहुँची और चारों ओर एक कोलाहल हुआ कि समीररूपा एक और प्रहास को बांधकरलातीहै तब चपला ने महेन्द्र से कहा कि महाराज में जो प्रहास को बांधकर लाईहूं तो उसको मुक्त कराने के प्रयोजन से कोई बहुरूपिया समीररूपा का स्वरूप बनाकर आया होगा में छुपे जातीहूं आप उस समीर रूपारूपी बहुरूपिये को पकड़वा लीजिये यह कहकर प्राताखूपी चपला सिंहासनके नीचे छुपरही और समीररूपा प्रहासको लियेहुए महेन्द्र के सन्मुख आई और वह गठरी सिंहासन के सामने रखदी उससमय महेन्द्र ने एक म्लेच्छ से सैन में आज्ञादी उसने तुरंत समीर रूपाको पकड़लिया और वह जो गठरी लाईथी उसेभी खुलवाया उस समय प्राताखूपी चपला जो सिंहासन के नीचे छिपाथा निकला और प्रहास को बँधाहुआ देखकर रोनेलगा और बोला कि महाराज यह दुष्ट बहुरूपिया समीररूपा का स्वरूपबनकर और समीररूपाका प्रहास कासा स्वरूप बनाकर लाया है तब महेन्द्रने प्रहासको छुड़वादिया और समीररूपा को खम्भसे बँधवादिया उससमय प्राताखूपी चपलाने चाहा कि सबको मद्यपिलाकर अचेतकरदूं परंतु उससमय समीररूपाने कहा कि महाराज मैं सत्य सत्य समीररूपाहूं आप बड़ादुष्कर्म करते हैं जोमुझे बँधवातेहैं परंतु उसकी किसीने न सुनी उससमय प्राताखूपी चपलाने समीप जाकर समीरसेकहा कि सुनो गुरुआनीजी तुम हमारे गुरुको बांधलाई उसके कारणसे यहां बांधीगई अबकहो तो तुम्हारी नाकभी कटवालूं अहंचप-

लास्मि यह सुनकर समीररूपा दुहाई देनेलगी और प्रातारूपी चपलाने आज्ञादी कि इसपरमारपड़ै और मारपरनेलगी तब समीररूपाने कहा कि महाराज आप अद्भुतजालमें देखिये कि प्रहास कौनहै महेन्द्रने इसबातको स्वीकारकरके अद्भुतजालकी पुस्तक मँगाई तब प्रातारूपी चपलाने कहा कि महाराज एक बात मेरीभी सुनलीजिये मैं कानमें कहूंगी यहकहकर वहसमीप आया और महेन्द्रने बात सुननेको कानलगाया तब चपलाने एक हाथसे तो महेन्द्रका मुकुट उतारा और दूसरेहाथसे एक चपतलगाकर बोला कि अहंचपलास्मि और कूदकर वहांसे भागा महेन्द्रने आज्ञादी कि इसेपकड़ो जाने न पावै यहसुनकर म्लेच्छ उसके पीछे दौड़े और मायाकरनेलगे उसहुल्लड़में प्रहासनेजोमुक्तहोचुकाथा लूटना प्रारंभकिया और बरुणदत्त जालमारकर महारानी विचित्रमायाका पानपात्र सुवर्णका शृंगार पात्र और रत्नजटित आसनोंकोघसीट घसीटकरथैलीमें डालने लगा तबतौ महेन्द्र घबराकर खड़ाहोगया औरकुछमायाकी कि सहस्रों मायाकृत पुतलेदौड़े उससमय प्रहासने मरुतदत्त वस्त्र ओढ़कर अपनेको अदृश्य करदिया और निष्प्रभ भवनके नीचे उतर आया उधर चपलाभी नीचे उतरकर आया औरम्लेच्छों ने बड़ी२ मायाकीं परंतु अद्भुत वस्त्रके प्रभावसेकोई मायान चली और जोकोई उसके समीप पकड़नेकोगया उसके अंगमें आग लगगई और वह जलनेलगा और भागआया और महेन्द्रने समीररूपा और प्राताकोजोबँधीथी खुलवाया औरबहुतप्रकारसे उनका आश्वासन किया परंतु प्रहास और चपलाने उस अंधेर नगरीमें आकर लूटना प्रारंभ किया प्रहासने जिसदुकानपर जालमारा उसदुकानके सबपदार्थ खिंचकरउसमें चले आये नगर में कोलाहल मचगया और बणिक शीघ्र शीघ्र अपनी दूकानें बन्द करनेलगे किसी बटोहीने पूछा भाई यह कैसा कोलाहल है

तौ वणिकनेकहा कि प्रहास इस नगरमें आयाहै और लूटता फि-
रताहै उसबटोहीने समझा कि अकेला कहांतक लूटैगा मालूम
होताहै कि अपने साथ सेना लेकर आयाहै निदान वह आगे
बढ़ा और जो मिला उससे कहा कि अरेभाई भागो सेना आ-
गई है और मनुष्योंको मारतीहै यहसुनकर वहभागा और उसे
भागतेहुए देखकर और लोग भी उसकेसाथ भागे वह जिधर
जिधर भागकर गये उधरही उधर भगदड़ पड़गई सबके मुख
से यहीबात निकलती थी कि सेना आगई कोई अपने पुत्रको
लेकर भागाजाताहै कोईस्त्रियोंको साथमेंलिये भौचकासा चला
जाताहै एक दूसरेसे पूछतेहैं भाई कोई मार्ग खुलाभी है किस
ओरको जायँ और रोतेहैं और कहतेहैं कि हाय घिरगये परंतु
जो शूरवीरथे वे अपने२ द्वारपर शस्त्रलियेहुए अपने प्राण देने
की इच्छासे निर्भय बैठेरहे लोग आ आकर उनके सामने समा-
चार कहते थे और उपदेश देतेथे कि आप यहां क्यों बैठे हैं
निरर्थक आपके प्राणजायँगे अभी अभी हमारेसामने रत्नोंकी
हाटके वासी मारेगये हैं और चौक लुटरहा है हम तौ जातेहैं
आप भी भागिये यह सुनकर वह वीर बोले कि जो कोई यहां
आवैगा तौ प्रथम तौ हम उनसे विनयकरेंगे और जो न मानेंगे
तौ युद्ध भी अच्छाहोगा हम भी ऐसे खड्गके प्रहारकरेंगे कि
शत्रुओंके दांत खट्टे करदेंगे निदान एक महाउपाधि फैलगई
और चपला और प्रहासलूटतेहुए फिरनेलगे सराफोंकी थैलियां
बजाजोंकी वस्त्रोंकी गठरियां जौहरियों के रत्नों के डिब्बे गहना
बेचनेवालोंके गहने लूटलिये सब बज़ार उजाड़ होगया कोई
अपने घरके पदार्थ फेंककर भागाजाताहै और जो कोई अपने
प्राणोंपर खेलके नहींभागा तौ अपने पड़ोसके निर्जन घरों में
जा जाकर गृहस्तीकी वस्तु उठारहाहै कोई अस्त्र और असबाब
कूपोंमें डालताहै कोई घरके महिगत खंडमें बैठाहै कोई कहता

है कि मेरा भाई प्रहासकी सेनामें नौकर है उसने कहलाभेजाहै कि मैं सबको बचालूंगा तुम सब मेरेयहां चलेआओ निदान जब यह कोलाहल महेन्द्रने सुना कि लोग भागेजातेहैं भानुविक्रमकी सेना आगईहै उससमय उसने आज्ञादी कि सब म्लेच्छ मायावी जायँ और उनका विध्वंसनकरें निदान आज्ञा पातेही सबम्लेच्छ निष्प्रभ भवनके नीचे उतरआये और महेन्द्र भी नीचे उतरकर आया विचित्रमायाने कुछ मायाकी कि उससे सहस्रों महासर्प उत्पन्नहोगये और नगरकीओर चले उससमय प्रहासने इन्द्रदत्त छत्र अपनेऊपर लगालिया और चपलाने अद्भुत वस्त्र ओढ़लिया और एकओरको ठहरगये उनमहोगों ने बहुतसे मनुष्योंको निगललिया और सबको विश्वासहोगया कि सेना आगई और और अधिक भगदड़ पड़गई और वे महोर्ग थोड़ेसे मनुष्योंको भक्षणकरके लौटआये तबविचित्रमायानेकहा कि महाराज मैंने सबको महोर्गोंसे निगलवालिया वहयहकहही रहीथी कि सामनेसे एकम्लेच्छ गठरी पीठपर लादेहुए महेन्द्र के सन्मुखआया और दंडवत्की महेन्द्रनेपूछा कि इसमें क्याहै उसने कहा कि महाराज प्रहासको बाँधकर ले आयाहूं यहकह करवह गठरी को खोलनेलगा और जब सब झुककर देखनेलगे तब उस म्लेच्छ ने उछलकर महेन्द्र के एक धौलमारी और उसके शिरपरसे दूसरा मुकुटभी उतारकर भागा और बोला मैं चपलाहूं उससमय महेन्द्र के मंत्री मायाकर ने कुछ माया की उसके प्रभावसे सिवाय महेन्द्र और विचित्र मायाके और सब मूर्च्छित होगये परंतु प्रहास और चपला को कुछ न हुआ तब मायाकर ने उस मायाका संहार किया और सब चैतन्य होगये उससमय महेन्द्र के सन्मुख बेधिनी आई और महेन्द्र को दंडवत् करके एक ओरको खड़ी होरही महेन्द्रने उससेकहा कि प्रहास को पकड़ला वह बोली कि महाराज जो उपाय मैं

बताऊं वह कीजिये तो प्रहास पकड़ा जाय महेन्द्रने कहा कि बतला वह बोली कि एकांत में कहने योग्यहै यह सुनकर महेन्द्र उठकर सबसे पृथक् उसके पास आया उस समय उस मिथ्याबोधिनीनें छलांग मारी और फिर महेन्द्र के एक धप लगा कर और तीसरा मुकुट भी लेकर जो उसने मँगाकर धारण कियाथा भागी और कहा अहंचपलास्मि-तब दूसरे मंत्री शीत-प्रेरक नामी ने मायाकी उससे हिमकी शिला की शिला गिरने लगी बहुत से म्लेच्छ उससे दबकर मरगये और ऐसाशीत पड़ने लगा कि सबके दांत बोलनेलगे थोड़ी देरमें उसने उस मायाका संहार किया और कहा कि अब प्रहास और चपला मरगये होंगे उसी समय सन्मुख से एक म्लेच्छ दौड़ा हुआ आया और रोकर बोला कि महाराज की दुहाई है मुझको प्रहासने लूटलिया महेन्द्र ने उसका आश्वासन किया और कहा देखो उसके पकड़ने का उद्योग हुआ जाता है तब उस म्लेच्छने कहा देखिये महाराज आपके पीछे चपला खड़ाहुआ है आपका कीट उतारना चाहताहै यह सुनकर महेन्द्रने जैसे-ही मुख फेरकर देखा उस म्लेच्छ ने कूदकर एक धौल महेन्द्र के मारी और चौथा कीटभी लेकर भागा और बोला कि-अहं चपलास्मि- उससमय महेन्द्र के तीसरे मंत्री विश्वमाली नाम ने अपने गले से एक फूलों का हार उतारा और माया करके तोड़ कर फेंकदिया उससे अकस्मात् एक गुलाब के फूलों का बाग लगगया और उन फूलोंमेंसे सहस्रों रक्तपक्षी बड़े सुन्दर निकल कर चारों ओर फिर फिर कर प्रहास और चपला को ढूंढ़ने लगे परन्तु प्रहास तो इन्द्रदत्त छत्र लगाये बैठा था और चपला अद्भुत वस्त्र ओढ़े हुएथा इसकारण से दोनों में से किसीको वे पक्षी न पासके और अंत को नगरवासी म्लेच्छों के शिरपर जाबैठे कि उनके बैठने से सब म्लेच्छ विक्षि-

मत्से होगये और मदोन्मत्तों केसे पद पढ़तेहुए वनकी ओर चले और उनकी एक अपूर्वही दशाहोगई कोई किसीके चपत मारताथा कोई किसी के गले में भुजा डालेहुए प्यार करताथा और कोई यह पढ़ताथा॥

मत्तछन्द। कौनसा थल है जहां पर आज मद माते नहीं।
नहीं कोई मार्गहै मदमत्त जहँ पाते नहीं॥
आज़ मद आवेशमें मैं देखताहूं यह चरित्र।
धरा नभपुर दिशा कोई मदसे अब खाली नहीं॥

यह दशा देखकर विश्वमाली ने अपनी माया का संहार किया परंतु प्रहास अथवा चपला का कुछ पता न चला इतने में चपला सन्मुखसे विना भेष बदले प्रकट हुआ उसे देखतेही महेन्द्र ने कुछ मायाकी कि सबके देखते देखते एक कांचकी शिला मनुष्यकी बराबर खड़ी होगई और उसके भीतर महेन्द्र चित्रकी भांति विराजमानहैं तब चपला ने दूरसे पत्थर फेंककर मारे परंतु वे पत्थर उलटे लौट गये उससमय चौथे मंत्री नागप्रस्फुरने कुछ मायाकी कि अकस्मात् बड़े बड़े पर्वत आकाश में आगये और चपला की ओर चले परंतु अद्भुत वस्त्र के प्रभाव से चपलाको तौ वे पर्वत केवल कंकड़ रूप मालूम पड़े और उस नगरके सहस्रों वासी उनके नीचे दबगये फिर नगर में बड़ाकोलाहल उत्पन्न हुआ और प्रहास छत्रके नीचे से निकलकर फिर लूटने लगा परंतु मरुतदत्त वस्त्र ओढ़े रहाजो बड़े मायाकोविद थे वेतौ मायाकरके उन पर्वतोंके नीचे से निकल आये परंतु और सब दबकर मरगये उस समय नागप्रस्फुरने नगरवासियों का कोलाहल सुनकर अपनी माया को शमित किया और अबकी प्रहासने आकर अपना छत्र उस स्थान परखड़ाकिया जहां महेन्द्रथा और सबने देखा कि वह उसकेनीचे रत्नजटित शय्या विछायेहुए आनन्दपूर्वक लेटाहुआ

हैं और दो अप्सरा उसके पैर दबारही हैं तब महेन्द्र ने कहा कि प्रहास भी बड़ाभारी मायावीहै तुममें से कोई ऐसा है जो इसका सामना करके इसको पकड़े यह सुनकर एक मायावी म्लेच्छ जिसका नाम दुष्कंठथा माया करता हुआ आगेबढ़ा और जैसेही छत्रके नीचे गया शिर उसका नीचे और पैर ऊपर होकर छत्रमें लटक गया उससमय प्रहासने उठकर थोड़ी अग्नि बनाई और छुरीसे थोड़ासा मांस उस म्लेच्छके शरीर का काट लिया वह बड़े शब्द से रोने लगा तब प्रहास बोला कि अरे वर्णसंकर मैं तेरे शरीर के मांसको अग्निमें संस्कार करके खाऊंगा क्योंकि मायावी म्लेच्छों का मांस मुझको बड़ा स्वाद लगताहै यह सुनकर सब म्लेच्छ चिंता करनेलगे और उस म्लेच्छका भाई सुकंठनामी दौड़ाआया और प्रहाससेबोला कि अरे प्रहास मेरे भाई को तू मतखाय मैं तुझको एकसहस्र सुवर्णखंड दूंगा प्रहास ने कहा कि मैं पांच सहस्र सुवर्णखंडलूंगा वह बोला कि अच्छा पांचही सहस्र ले और मेरे भाई को छोड़ दे और फिर पांच सहस्र सुवर्णखंड मंगाकर छत्रके बाहर ढेर करादिया उस समय प्रहास ने वरुणदत्त जाल मारकर सब सुवर्णखंड खींचलिये और दुष्कंठ को छत्र से छुटाकर मूर्च्छित किया और उसकी थोड़ीसी जीभ काटकर छत्र के बाहर फेंक दिया सुकंठ न अपने भाई को उठालिया और देखा कि जीभके कटेहोनेसे बोला नहीं जाताहै निदान क्रोधकरके वह सहस्रों प्रकार के माया के प्रयोग उस छत्र पर करने लगा कभी पत्थरों से ढकदिया कभी अग्नि वर्षा कर ज्वाला में गुप्त करादिया परंतु किसी से कुछ नहुआ तब प्रहासने उस छत्र को उखाड़ लिया और उस को अपने शिर पर लगाये हुए चलदिया और चपला भी उसके साथ होलिया इस के उपरांत महेन्द्र ने कहा कि हम भी जातेहैं और एक ओर को चलदिया इतनेमें बड़ी भारी

आंधीउठी और सहस्रोंघंटे और २ बाद्योंके बजनेकेशब्द आ-
काशमें सुनाईदिया और महेन्द्रकी सवारी बड़ीधूमधामसे आई
उसको देखकर सब खड़ेहोगये तब महेन्द्रने उस महेन्द्रसेकहा
जो कांचकी शिलामें विराजमानथा कि हे मेरेस्वरूप अब तुम
जाओ तुमको बड़ाकष्ट हुआ और बहुरूपियोंने तुम्हारे साथ
बड़ी ढिठाईकी यह कहतेही वह महेन्द्र जो कांचकी शिला के
भीतरथा अंतर्द्धानहोगया और फिर असली महेन्द्रने अप-
नी अद्भुतजालकी पुस्तक निकालकरदेखी उससे उसको विदि-
तहुआ कि चपला के पास अद्भुतवस्त्रथा इसकारण से उसपर
मायाकृतप्रयोग नहींचलताथा और तुझको ऐसी क्याआवश्य-
कताथी जोतू जाकर उस परमेश्वरके अपूर्व अद्भुतवस्त्रकोलाया
उसीका कारणथा जिससे तेरेस्वरूपने धौलेंखाईं यदि तू अपने
स्वरूपको छोड़कर न चलाजाता तो वही गति तेरी भी होती
सौरभ महाराजने यहभी लिखाहै कि इस महेन्द्रके वाम और
दक्षिणहाथों में कुछ ऐसे चिह्नथे कि उनसे उसको अपना यश
अयश और सबप्रकारका बुराभलाहाल मालूमहोजाताथा वाम
हाथके चिह्नोंसे बुरा और दक्षिणसे भला विदितहोताथा इसी
कारणसे जिससमय महेन्द्रको बहुरूपियोंने समीररूपा आदि
का स्वरूपबनाकर छलाथा उससमय इसने अपना वामहस्त
देखाथा उससे इसको विदितहुआ कि दोप्रहर तुझपर बड़ेकड़े
हैं यहां से टलजा नहींतो नीचा देखैगा सो यहहाल जानकर
महेन्द्रने मायाकरके उस कांचकी शिलामें अपने तद्रूपपुरुष
को आह्वानकरालिया और आप अंतर्द्धानहोगया और वहां
पर जितने मायावी म्लेच्छ और सभासदथे वेसब बहुरूपियों
के पकड़ने धकड़नेमें थे इससे किसीको यहहाल विदित नहीं
हुआ और इस मायाकृतदेशमें सातम्लेच्छ बड़ेप्रबल मायावी
थे उनसब के तद्रूप पुरुषभी सातथे कि वे नील नदीमें रहतेथे

जबतक वेसातों तद्रूप पुरुष न मारेजायँ तबतक उन सातों को कोई नहीं मारसकताथा चाहे बहुरूपिये सहस्रोंबार उनको मूर्च्छितकरदें निदान महेन्द्र और विचित्रमायाभी उन्हीं सातोंमें सेहैं और इनके तद्रूप पुरुषोंकी कथा उससमय वर्णनहोगी जब प्रहास और भानुविक्रमको नदीपतिका नित्य समाचारपत्र मिलेगा और यहीकारणहै कि महेन्द्र और विचित्रमायाको बहुरूपियोंने बहुतबार मूर्च्छितकिया परंतु उनको कोई मारनसका अब यहांकी कथासुनिये कि महेन्द्र बहुरूपियोंके उत्पातसे बहुत क्रोधितहुआ और उसने बड़ेरोषसे बहुरूपिणियों से कहा कि अरे दुर्भगाओ क्या मैंने तुमसबको इसीदिनके लिये पालाथा और भेजाथा कि बहुरूपिये आकर सब नगरको उजाड़डालें तब समीररूपा बोली कि महाराज में आपकी आज्ञासे प्रहास को पकड़लाईथी और प्रहास बहुरूपियोंका राजाहै उसकोपकड़ लेना कोई लाघवकर्म नहींहै परंतु श्रीमहाराजने उससमय मेरी विनय नहींसुनी और उसको छोड़दिया अब जो आज्ञादीजिये करूं महेन्द्रनेकहा कि चपलातो रक्तवाहिनी नदीकेपारचलाजायगा क्योंकि उसकेपास अद्भुतवस्त्रहै और प्रहास नजासकैगा हां जो वह उसीद्वारसे निकलकरगया जिधरसे भानुविक्रम इस नगरमेंआयाथा तोतो उसको रक्तवाहिनी नदी न मिलेगी परंतु फिर उसको निशाकरीकी सेना में जाके उतनाही मार्ग पड़ैगा जितना भानुविक्रमने उत्तीर्ण कियाथा निदान तूजा और जहां प्रहास मिलजाय वहीं उसको पकड़कर बांधलीजो और रक्तवाहिनी नदीकेउसपार ठहरियो और मेरेपास किसी अपनी बहुरूपिणीके द्वारा समाचार भेजदीजो मैं वहींआकर उसको निशाकरी आदिके सन्मुख मारूंगा यह आज्ञापाकर समीररूपा चलदी और महेन्द्रने अपने सभासदों से कहा कि बड़े कष्टकी बातहै कि आनन्दाको पकड़ने जिसे भेजताहूं वहीजाकर मारा

जाताहै क्या तुममेंसे ऐसा कोई नहीं है जो जाकर आनन्दाको पकड़लावै यहसुनकर एकम्लेच्छ शंख मायानामी उठा और उसने विनयकी कि महाराज आनन्दाकी ऐसी क्या सामर्थ्य है जो श्रीमहाराज के सेवकों से ग्रहण न होसकै मैं जाताहूंऔर अभी पकड़ेलाताहूं तब महेन्द्रने कहा कि अच्छा जाओ और सेना साथ लेलो वह बोला कि महाराज आनन्दा इसयोग्य नहीं है जो उसके ऊपर मैं सेनालेकर जाऊं और सेना लेजाने में एक यह बड़ाडर है कि बहुत से मनुष्य होने से बहुरूपिये पहिचान नहीं पड़ते हैं और उत्पात करते हैं इससे मैं अपने साथ सेवकों को भी न लेजाऊंगा मैं जाकर निशाकरी की सभा में घुसकर आनन्दा को पकड़लाऊंगा देखें मेरा कोई क्या कियेलेता है यहकहकर वह तो आकाशमार्गी हुआ परन्तु अब चपलाका वृत्तान्त सुनिये कि वह अंधेरनगरी से निकलकर अद्भुत वस्त्रके प्रभाव से रक्तवाहिनीनदी के पार चलाआया यहां यह वर्णनकरना अवश्य है कि इस अंधेरनगरी के चालीस द्वारथे और प्रतिद्वार से एक एक मार्गगयाथा उनमें से कुछमार्ग तो ऐसेथे कि उनपर जाने से मनुष्य बिना रक्तवाहिनीनदी उतरे प्रत्यक्षखण्ड में जासकताथा और बहुत से ऐसेथे कि उधरजानेसे बिना रक्तवाहिनीनदी के उतरे प्रत्यक्षखण्ड में नहीं जासकताथा और कुछमार्ग ऐसेभीथे कि उधर से जानेसे मनुष्य इस मायाकृतदेश के बाहर चलाजासकताथा निदान समीररूपा वहां से चलकर अनुमान करनेलगी कि प्रहास इसीमार्ग से गयाहोगा जिधरसे रक्तवाहिनीनदी पड़ती है और प्रत्यक्षखण्ड में पहुंचगयाहोगा आओ मैंभी इसीओर से चलूं और नदीके किनारे किनारे ढूंढ़तीचलूं और जहांकहीं वह मिलजाय उसको पकड़लूं और इसमार्ग के जानेसें एक उत्तमता और है कि मैं इधरसे जाऊंगी और प्रहास उधर से

आताहोगा तो दोनोंका सामना पड़जायगा यह विचारकर वह प्रत्यक्षखण्डमें चलीआई परन्तु चपला जो पहिले प्रत्यक्षखंड में आगयाथा उसको वेधिनी और उग्रा और तीव्रा बहुरूपिणी मिलगईं और तीनोंने चपलाको घेरलिया और गदा चलने लगी चपला यद्यपि अकेलाथा परन्तु सबका प्रहार रोकताथा और घात भी करताथा उससमय प्रचण्ड भी आगया और दोनों लड़भिड़कर एकओरको चलदिये और आगे बढ़के चपलाने पृथक् और प्रचण्ड ने पृथक् मार्गलिया और चपला इसविचार से कि मुझसे कोई अद्भुत वस्त्र न लेले अलग सब से रहताथा परन्तु बहुरूपिणियों ने प्रचण्डको फिर अकेला पाकर घेरलिया और युद्धहोनेलगा उग्रा ने पीछेसे पाशडाली प्रचण्ड उछलकर उसके कुण्डल से निकलगया परन्तु निकलनाथा कि दूसरीओरसे वेधिनी ने पाशडाली प्रचण्ड उसके कुण्डल से उछलकर निकला और गिरपड़ा कि तत्काल तीव्रा ने मूर्च्छाण्ड उसके मुखपर मारकर उसे मूर्च्छितकरदिया और फिर उसकी गठरीसी बांधकर उग्रासे कहा कि तुम इसको महाराज की सभामें लेजाओ हमदोनों और बहुरूपियों के पकड़ने के उद्योग में जाती हैं यहकहकर वे दोनों तो एकओर को चलदीं और उग्रा प्रचण्डको लादकर मार्गीहुई परन्तु उग्राको गठरी मनुष्यकी बांधकर लेजातेहुए उपदेशीने देखा और वह दूसरे मार्ग से निकलकर उससे एककोस आगे चलाआया और पाशके कुण्डलों को मार्ग में दूरतक फैलाकर बिछादिया और धूल से उसको छिपाकर उसका शिरा हाथ में पकड़ेहुए एकझाड़ी में छुपकर बैठरहा जब उग्रा उसपाश के कुण्डल के समीपपहुंची उसकाजी धड़कनेलगा और उसने कुछशंकाकरके पुकारकरकहा कि भला वे बहुरूपिये मैंने तुझे पहँचानलिया है तब उपदेशीने अनुमानकिया कि यह तुझको जानगई अब

निकलकर इसका सामना कीजिये परन्तु फिर सोचा कि कदा-
चित् यह छल से कहतीहो इससे थोड़ीदेर ठहरजाओ यह तो
इसी सोचमेंथा कि इतने में उग्रा ने एकपाषाण गोफिन में रख
कर फिराकर मारा और वह उपदेशी के समीप आकरपड़ा तब
इसने जाना कि निस्सन्देह उग्रा मुझको जानगई और चाह-
ताथा कि झाड़ी से बाहिर निकलूं कि इतने में उग्रा ने दूसरा
पाषाण दूसरी ओरको फेंका उपदेशी ने तब तत्काल निश्चय
किया कि यह अपने चित्तकी शंका मिटातीहै यह समझ कर
चुपका बैठ गया उग्रा जब अच्छी प्रकारसे शंका मिटाचुकी
तब उसने अनुमान किया कि यहां बन सूनसान है इससे डर
के मारे तेरा चित्त धड़कताहै यह विचारकर उसने एक छलांग
मारी कि पाशके कुंडल में आपड़ी और जैसेही चाहा किदूस-
री छलांग मारकर उस भयभीत स्थानसे बाहिर निकलजाऊं
तैसेही उपदेशीने सिंहकी गर्जना बनाकर शब्द किया उसको
सुनतेही वह झिझकी और उपदेशी ने पाश खींची कि सब
कुंडल उसके शरीर में कस गये और वह गिरपड़ी तब उपदेशी
दौड़कर आया और उग्राको मूर्च्छितकरके प्रचंडकोखोला और
सचेत किया और चाहा कि उग्राको बांधूं कि इतनेमें समीर
रूपा प्रहासको ढूंढ़ती हुई वहां आनिकली और उग्रा को गृ-
हीत देखकर गदालेकर दौड़ी और बोली कि ओ दुष्टो ठहरो
कहां मुझसे बच कर जाओगे यह सुनकर प्रचंड और उपदेशी
भी गदा लेकर उसकी ओर दौड़े और समीप आकर कहा कि
गुरुआनीजी जिस दिन गुरूजी तुमको पकडकर लेजावेंगे
तुमसे दाना दलवावेंगे और चक्की पिसवावेंगे हमारे गुरूजी
अपनी किसी स्त्री को रोटी नहीं देतेहैं और रात्रि भर अपने
पैरचप्पी कराते हैं समीररूपा बोली कि आओ मरे तुम्हारे
गुरू पर आग डालूं मरे तुम्हारी गुरुआनी कौन ऐसी तैसी

है निदान समीररूपा बड़े क्रोधसे उक्त वाक्यों को कहकर उनसे लड़ने लगी और गदाके घातहोने लगे समीररूपा लड़-ती लड़ती उग्राके समीप तक आई और उसके मुखपर एक चैतन्यांड मारा कि उसको छींक आई और वह चैतन्य होगई और बराबर का युद्ध होनेलगा परंतु समीररूपा तो प्रहास को पकड़ने आईथी उसको विलंब होतीथी इससे वह छलांगमार कर एक ओर को चलदी औरउग्रा दूसरी ओर को मार्गी हुई परंतु समीररूपा तो प्रहासके खोज में थी रक्तवाहिनी नदी के तट पर देखती हुई नदीके पार आई और देखाकि प्रहासनदी के पार आने को मार्ग खड़ा हुआ खोज रहाहै और भटकता फिरताहै परंतु मार्ग नहीं मिलताहै यह देख कर समीररूपा ने मार्ग में एक वस्त्र फेंक दिया प्रहास जब उस मार्गपर आया उसने देखा कि एक वस्त्र बड़ा उत्तम पड़ाहै और उसमें कुछ बँधा है प्रहासने उसे उठालिया और देखने लगा उसके एक कोण में पचास सुवर्ण खंड बँधेथे दूसरेमें कुछ चन्द्रखण्ड औरकुछ ताम्रखंड थे और तीसरे में कुछ एला और सचिक्कण पूगीफल बँधेथे और सुगंधित तैल से वह वस्त्र बसा हुआथा प्रहासने समझा कि इस ओरसे प्रत्यक्षखंडमें बहुतसे बड़ेबड़े म्लेच्छ युद्ध करनेको गयेथे यहवस्त्र किसी रसिकका गिरपड़ाहै यह अनुमान करके उसने उसमेंसे सुवर्णखंडखोल लिये और जैसेही चाहा कि उनको थैली में डालें तैसेही उस वस्त्रके सुगंधित तैलकी गंध उसकेब्रह्मांडमें पहुंचकर बसगई और वह चक्करखाकरमूर्छितहो कर गिर पड़ा यह देखकर समीररूपा जो छिपी हुईथी दौड़ आई और प्रहास को गठरीकी भांति बांध कर अपनी पीठपर लादि लिया और महेन्द्र की आज्ञानुसार उसको लेकर नदी के पार प्रत्यक्षखंड में चली आई और तूर बजाकर चाहती थी कि किसी बहुरूपिणीको भेजकर महाराज महेन्द्रको समा-

चार भेजूं कि उसको दूरसे चपलाने देखा और उसने शीघ्रता से अपना स्वरूप तीव्राकासा बनाया अर्थात् धानी वस्त्र धारणकिया दांतोंमें मसी लगाई अलकों को कपोलों पर छोड़लिया तांबूल खालिया और झोली बहुरूप विद्या संबन्धी मेंसे एक पात्र रक्त भरा हुआ निकाला जो उस विद्याके कार्यसाधन के निमित्त रक्खाथा और भुड़भुड़ भी निकाल कर उसके पोले हाथ पोले पैर और ग्रीवा पर्यंत पोला शिर बनाया और उसको रक्त से परिप्लुत किया और उन पैरों में पैर हाथों में हाथ और शिरमें शिर डालकर मारे गये मनुष्य कासा भेष बनाकर उसी मार्ग के किनारे आकर लेटरहा जिसपर समीररूपा चली आतीथी और संधियों को वस्त्र से छिपाकर सांस खींचकर पड़रहा जिसके देखनेसे यह जानपड़ता था कि हाथ पैर और ग्रीवा किसी ने काटडाले हैं निदान समीररूपा जो प्रहास को लिये हुए अपनी साथियों मेंसे किसीके मिलने की इच्छा से उनको ढुंढ़ती हुई उधर आई उसने देखा किएक लोथ पड़ीहै जिसके हाथ पैर और ग्रीवा कटीहै और रुधिर निकलरहाहै यह देखकर वह उस लोथके समीप आई और जब अच्छी प्रकार से देखातौ पहिंचाना कि तीव्राहै ये पांचों बहुरूपिणी आपसमें एक दूसरी को बहिन कहतीथी और परस्पर बहुत प्रीतिमानथीं इस कारण से उसे पहिचानतेही समीररूपा का चित्त भरआया और कहने लगी कि इन मरे कटे बहुरूपियों ने हाय मेरी बहिनको मारडाला और फिर करुणासे विह्वल होकर वह गठरी जिसमें प्रहास बँधाथा फेंक दी और रोनेलगी कि हाय मेरी बहिन तीव्रा तू मुझे छोड़कर चलीगई और फिर उसलोथसे लिपट लिपटकर विलाप करने लगी उससमय अकस्मात् उस कटीहुई ग्रीवामें से एक धार रुधिरकी निकली वह समीररूपाके मुखपर पडी और उसके

घ्राणमात्रसे उसको एक छींकआई और वह अचेतहोगई तब चपला गर्जताहुआ उठखड़ाहुआ और एक वस्त्र बिछाकर उस पर समीररूपाको पौढ़ादिया और प्रहासको गठरीमेंसे खोलकर उसके पंगातन बैठादिया और समीररूपाके पैर प्रहासकी गोद में रखदिये चैतन्यवर्तिका निकालकर एक हाथसे प्रहास को और दूसरे हाथसे समीररूपाको सुँघाई उसकी घ्राणसे दोनों चैतन्यहोगये और फिर चपलाने सन्मुखआकर समीररूपासे कहा कि गुरुआनीजी दण्डवत् वाह वाह आपको ऐसा उचित न था कि गुरूजीको दिनधाड़ेलियेहुये वनमेंपड़ीहो क्या कोई बाग अथवा घर न मिलाथा ऐसाहीथा तो डेरेमें चलीगईहोती इधर तो चपलाने यहकहा और उधर प्रहासकी जो आंखखुली और समीररूपाको अपनी अंकमेंपाया यह कहताहुआ लिपट गया कि हे प्राणप्यारी चित्त आनन्दकारी॥

दो०। तोरेमिलै न होयकस मन अलिको आनन्द।
　　है तवलोचन कंजको मधुग्राहक स्वच्छन्द॥

समीररूपाने अपनी यह दशा देखकर प्रहासकी छातीमें एक दुलत्तीमारी और उछलकर दूरजापड़ी और कहा कि अरे तुम बड़े कठिनहो तब प्रहासने पुकारकर कहा कि॥

सो०। रहैव न कौन उपाधि तेरे कारण हे प्रिया।
　　लहवस्तुकल विधिव्याधि मारवतजब अधीनतव॥

तब समीररूपा लज्जित होकर एकओरको चलीगई और प्रहासने चपलाका हाथपकड़कर कहा कि बेटा डेरेको चलो मैं तुझसे अद्भुतवस्त्र नलूंगा यहकहकर प्रहास उसको भुलावा दे-कर सेनामेंलाया और वहांआकर चपलाने महेन्द्रके चारोंकिरीट निकालकर महारानी चन्द्रचूड़ा और राजपुत्र भानुविक्रमके भेट किये भानुविक्रमने वे किरीट प्रहासकोदिये और चन्द्रचूड़ाने एक

लक्ष सुवर्णखंड चपलाको पारितोषिक दिया और आनन्दानेभी पचाससहस्र सुवर्णखंड उसको दिये सब सेनापतियों ने उसकी प्रशंसाकी चारों ओर से धन्य धन्यका सबने बादकिया और आनन्दपूर्वक उत्सवकिया मद्य पान होनेलगा और गंधर्विणी मधुर ध्वनिसे गाने और नाचनेलगीं उससमय एक गंधर्विणी ने यह गाया ॥

ठुमरी। कब करिहौ रसपान हमारेसंग कबकरिहौ रसपान ॥ टेक विरहबिथामम जानि प्राणपति आवहु वेगि सुजान ॥ कवित्त । अंगन भूषणसाजि सुधारति सेजसँभारति मैनकीछाकी। पातनिकेखरके उचके मनभावन आवन जानि पियाकी॥प्यारे तिहारेबिना अब ताकी मैं ताको वियोग वियाकुल ताकी। देखिकै देहदशा अनुमानति नीठि निशा नहिं बीतिहै ताकी ॥ हमारेसंग कब करिहौ रसपान ॥

उससमयप्रहासने चपलासेकहा कि बेटामैं तुमसेअद्भुतबस्त्र इसकारणसे मांगताहूंकि महाराज शत्रुंजयकी यह आज्ञाहै कि देवदत्त पदार्थोंसे केवल महाविपत्ति और आवश्यकतामेंहीकाम लेनाउचितहै तुम अद्भुतवस्त्र पातेही अंधेरनगरीमें चलेगये और वहांजाकर तुमने महेन्द्रका सामनाकिया मैंजो ऐसाचाहता तो मरुतदत्त बस्त्र ओढ़कर कबका सबके शिरकाटडालता और इस मायाकृत देशको बिजयकरलेता इससे तुमको उचितहै कि केवल अपनी विद्याके कर्मोंकोकरके राजपुत्रसे साथी और सहायकबनेरहो और अद्भुत बस्त्र मुझेदेदो यहसुनकर चपलाने कहाकि मुझे अद्भुतबस्त्र क्या करनाहै मैंबिना अद्भुतवस्त्रके सहस्रों मायावियोंको मारूंगा यह कहकर उसनेवह बस्त्र प्रहासको देदिया निदानयहांतो इसप्रकारसे उत्सव और वार्त्तालापहोरहा था कि अकस्मात् बड़ा भयानक शब्दहुआ और एक हस्त चमकताहुआ पृथ्वीपर गिरा और आकाशसे गर्जना सुनाईदी किमैं शंख मायानामी म्लेच्छहूं और वह हस्त आनंदामायाको

पकड़कर लेचला उससमय निशाकरी आदि सबसभासद खड़े होगये और उन्हों ने सैकड़ों निम्बुक नारिकेल आदि अस्त्र मारे परंतु वह हस्त बड़ी उग्रमायासे वेष्टितथा किसी अस्त्र से कुछ न हुआ और वह हस्त आनन्दाको लियेहुए एक पर्वत पर आया प्रहास और सब बहुरूपिये भी दौड़े हुएगये उस समय शंखने पर्वतपरसे मायाके बलसे बड़े शब्दसे कहा कि हे नमक खानेके धर्मको त्यागने वालो यह मत कहना कि शंख छिपाकर आनन्दाको लेगया मैं यहां ठहराहूं जिस किसी को मुझसे युद्धकरनेका उत्साहहो वह मेरे सन्मुखआवे यह कहकर उसने मायासे एक पुतला बनाया और उसको पर्वतपर जानेके मार्गपर बैठाकर आज्ञादी कि जोकोई मेरेपासआवे उसकेआने का वृत्तांत मुझसे कहिदीजो और आप मायासे आसन आदि पदार्थ निर्मित करके बैठगया और एकआसनपर आनन्दाको लिटादिया जो उसकी मायासे मूर्च्छितथी इसीअवसरमें प्रहास एक मायावी म्लेछका रूपबनाकर हाथमें थालीलिये और उस में कुकुटांडकी समान बड़ेबड़े दाड़िमके दाने स्थापित कियेहुए उस पर्वतपर चढ़केगया जब उस पुतलीके समीपपहुंचा उसने निषेधकिया कि यहां मतआओ परंतु प्रहास न माना और आगे बढ़गया तब उस पुतलेने पुकारकर कहा कि हेशंख चौकसहोजा देख प्रहास आता है यहसुनकर शंखने उत्तरदिया कि आनेदे तब वहपुतला चुपहोरहा और प्रहास शंख के समीप पहुंचा प्रहासने दंडवत्की और कहा कि यहपुतला झूठबोलता है मैं तो महाराज महेन्द्रका नौकरहूं दाड़िमके कुछबीज बदरीउद्यान से आयेथे उनमेंसे इतने महाराजने आपके लिये भेजे हैं यह सुनकर शंख बहुतहँसा और बोला कि अरे प्रहास तू बड़ाछली है मैं तेरे छलमें न आऊंगा लादेखूंतो कैसे दाड़िमके बीजहैं यह कहकर उसने वहस्थाली हाथमें लेली और देखनेलगा कि कैसे

अपूर्व दानेहैं कि वैसे उसने कभी न देखेथे और हाथमें उठा-
कर देखनेलगा उससमय उन दोनोंमेंसे एकप्रकारका धूमसानि-
कलनेलगा और श्वासकीवायुसे प्रेरित उसके ब्रह्मांडमें पहुंचा
उससे शंखको एक छींकआई और वह मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा
तब प्रहासने शीघ्र उसका शिर काटडाला काटतेही अंधकार
होगया कोलाहल होनेलगा और थोड़ीदेरमें आकाश बाणीहुई
कि मैं मारागया मेरा नाम शंखथा और उसके शरीरमेंसे एक
पक्षी बड़ासुंदर निकलकर महेन्द्रके पास चला उसके मरनेपर
आनन्दा चैतन्यहोगई और प्रहाससहित अपनी सेनामेंआई
सबकोई उसे देखकर बहुत प्रसन्नहुए और उत्सव होनेलगा
इतनेमें पक्षी महेन्द्रके समीपगया और उससे शंखके मरनेका
हाल कहकर भस्महोगया उससमय विचित्रमायाने हठकी कि
मैं शत्रुसे युद्धकरने अवश्य जाऊंगी और अपने साथ बड़े २
मायावियोंको लेजाऊंगी तब महेन्द्रने उसे आज्ञा जानेकी दी
और वह सेनाको लेजानेका उद्योग करनेलगी परंतु अब यहां
अद्भुत मिथ्या ईश्वरकी कथासुनिये कि पहले यहवर्णन होचु-
काहै कि राजा महावीरने महेन्द्रके पास पत्रभेजाथा कि ईश्वर
महाराजकी सहायताके लिये किसीको भेजिये और महेन्द्रने
हिडंबाको आज्ञादी थी कि तू जा परंतु हिडंबा अपने घर पर
आकर बीमार होगई और वहां न गई और जब बहुत बिलम्ब
हुई तब महावीरने दूसरा पत्र लिखकर भेजा और वहीं पर्वत
पर रखवाकर नगाड़ेमें डंकेकी चोटलगाई उसीसमय एक हस्त
आया और वह पत्रलेकर महेन्द्रके पास उससमय पहुंचा जब
विचित्रमाया सेनाको निर्याण करनेकी उद्योगमेंथी महेन्द्रने उस
पत्रको पढ़ा और अपने एक सभासदसे कहा कि हे करालदंड
तुम जाकर परमेश्वरकी सहायताकरो यह आज्ञापाकर कराल
दंड अपने घर आया और बारह सहस्र सेना अपने साथ

लेकर रत्नाकर पर्वत की ओर बड़ी धूमधाम से चलदिया ॥

इतिश्रीआगरापुरनिवासिचौरासियागौडवंशावतंस पण्डित
मोहनलालात्मज कुंजविहारीलालकविनाविरचिते
अद्भुतचरित्रेपंचमोऽध्याय: ॥

छठां अध्याय ॥

करालदण्डका सेनालेकर अद्भुत मिथ्या ईश्वरकी सहायताको जाना और महाराज शत्रुंजय से युद्धकरना और प्रहास के पुत्र सुवासका वहुरूपधारिणी विद्याके बलसे छलकरना और विचित्रमायाका सेनालेकर आना और निशाकरी से वहुतदिनोंतक युद्धकरना और उग्रमायाकरके लड़ना और वहुरूपिये और वहुरूपिणियोंका छलकरना ॥

जयकरीछन्द ॥

वाणीपति श्री आनन्दकन्द। मांगों वार वार तोहिं वन्द ॥
देहु मोहिं सो रस अतिस्वच्छ। जो पीयूष यूपतें अच्छ ॥
अमर जाहिकरि निशिदिनपान। भरे वीररस रहत सुजान ॥
दैत्य दुर्मदन गिनत न नेक। निर्भय अस्त्र प्रहारत फेंक ॥
करोंपान सोरस अभिनीय। वुद्धि वीरता को कमनीय ॥
तासों पाय सुदृष्टि प्रशस्त। युद्ध व्यवस्थालखों समस्त ॥
वरणनकरों भयो जिमि युद्ध। लड़े शूर सब अति भट शुद्ध ॥
करि करि माया अकथ अनूप। जिमि भे लरत शूर भयरूप ॥
अस्त्रवाह करि शस्त्र प्रहार। एक एक जिमि डारतमार ॥
करि घमसान घोर रणरङ्ग। भरी सुशोणित नदी उतङ्ग ॥
ताको रूप देहु दरशाय। गद्यपद्य वरणन करि चाय ॥

सौरभमहाराज ने इस इतिहासको इस अध्याय में इसप्रकारसे वर्णनकिया है कि जब विचित्रमायाने सेना निर्याणकरने का उद्योग निशाकरी से युद्धकरने के लिये किया तब दुःप्रधर्ष और दुर्मुख और विकट और विवित्सु और शल्य और दुःसह

और दुष्प्रहार आदि बड़े बड़े मायावी म्लेक्ष और दानव उस के साथ चलनेको सन्नद्धहुए इनकी संख्या सत्रहलाखथी और महेन्द्र ने अपने नागप्रस्फुर और शीतप्रेरक नाम मंत्रियों को भी उसकेसाथ करदिया और मायामणि और मायारत्न दोनों मंत्रियों की पुत्रियां विचित्रमाया के ऊपर चमर ढुरातीहुईचलीं और विचित्रमाया एक विमानपर सवारहुई जो मणि और रत्नोंका बनाथा उसविमान में सहस्रों रत्नजटित आसन बिछेथे और बीचमें एकसिंहासन बड़ाउत्तम सूर्यकीसी प्रभारखनेवाला बड़े दिव्यवस्त्र और छत्रआदि से अलंकृत बिछाथा विचित्र-माया उस सिंहासनपर जाकर बैठगई और अग्निशिखा की भांति तेजसे शोभितहुई वह विमान उसके बैठनेपर आकाश मार्गीहुआ उससमय अंतरिक्ष में सहस्रों भेरियों के बजने का शब्द होनेलगा और जैसे जैसे वह विमान आगे जाताथा तैसे तैसे उसके आगे घंटे और तूर अपनेआप बजतेजातेथे और मायाकर्त्ता और अद्भुतका जयकारक शब्द बड़ाहोताजाताथा और जब जब विचित्रमाया महोल्कचको आज्ञादेतीथी तबवह आकाशमें एकफल फेंकदेताथा वह अंतरिक्षमें जाकर फटजाता था और उससे सहस्रों अग्नि यंत्र अर्थात् तोपोंके छुटने कासा शब्द होताथाऔर लाखोंतारे टूटटूटकर आतेथे और प्रकाशित फूलरूप हो हो कर विचित्रमायापर बरसतेथे और उसके साथ साथ सत्रहलाख मायावी म्लेच्छ और दानव बड़े बड़े भयानक वाहनों पर बैठेहुए चलेजातेथे उन के चलने गर्जने और अस्त्रों के आपसमें टकरानेसे ऐसाघोर शब्द होताथा कि उस से सब पृथ्वी और आकाश पूर्ण होगया॥

छं०। सोसेन अति दुर्धर्षभयकर उमड़िजल निधि समचली।
झपमकररूपी प्रबलयोधा युक्त विस्तृत अति बली॥
अतिउग्रअस्त्र सुशस्त्र जलचर जीवसों शोभित भली।

बहुध्वजपताका रूप उच्छ्रित लहरिलेत उतावली॥
जयकरी। दानवम्लेच्छ महा विकराल। रूपभयंकर मानहु काल॥
धरेविविधविधि अस्त्रमहान। गदामुशल असिधनुवरवान॥
नानावाहन भीषम रूप। उग्र अमानुष अकथ अनूप॥
चढ़िचढ़ि चलेजात बलवान। गर्जत तर्जत वज्रसमान॥

निदान वह महा भयंकर सेना बड़ी धूमधामसे चलकर बड़े मार्ग को उत्तीर्ण करतीहुई हैहय देश के निकट जापहुंची उस समय चन्द्रचूड़ा और निशाकरी अपनी सभामें विराजमानथी अकस्मात् घंटे और नगाड़ोंके बजने की घोर ध्वनि सुनाईपड़ी उससे पृथ्वी कांपनेलगी और वह शब्द आकाशमें गूंजनेलगा यह देखकर सब सेनापति बाहिर चले आये और देखा कि बड़ी उग्र सेना और विचित्रमाया की सवारी चली आरही है देखतेही निशाकरी आदितो अचेतसी होगई और सब सेना भय से थर्राने और पुकारने लगी बड़ी हलचल पड़गई परंतु विचित्रमाया के डेरेके बीचमें युद्धकरनेके लिये रणभूमि छोड़कर निशाकरी की सेना के सन्मुख खड़े कियेगये और उन के रत्न-जटित कलश बड़ी शोभा सहित चमकने लगे कोसोंतक म्ले-च्छ और दानवोंकी सेना और सेनापतियोंके रहनेको तंबू तन गये शिविर रचिगई हाटलगगई क्रयविक्रय होनेलगा सेनाके योद्धा इधरसेउधर घूमनेलगे विचित्रमाया अपने विमानसे उतरी और सभामें आकर उत्तम सिंहासनपर विराजमानहुई और सेनापति और मंत्री और २ सभासदभी अपने योग्य उत्तम आसनोंपर सभामें बैठगये और बहुरूपिणी जो बनमेंथीं वेसब आकर वहां उपस्थितहुईं और प्रबन्ध करनेलगीं निदान यहांतो विचित्रमायायुद्धका प्रबन्ध और उद्योग करनेलगी परंतु अब दूसरीकथा सुनिये कि महेन्द्रकी आज्ञानुसार करालदण्ड बारह सहस्र सेनालेकर अद्भुतकी सहायता करनेको चला उस

मायाकृत देशके बड़े मार्ग को उत्तीर्ण करके रत्नाकर पर्वत की सींवां पर आपहुंचा और वहां के हरे भरे बन की बड़ी उत्तम शोभा और गंधभरी वायु को देखकर उस पर्वतके समीप ठहर गया डेरे खड़े कराये और सेना को विश्राम दिया और आप अहेर खेलने को बन में चलागया और बहुत से बनबासी पक्षियों को मारा उपरांत॥

चौ०। नानावर्ण सुनानारूपा। यूथ यूथ मृगलखे अनूपा॥

उन को देखकर करालदंड ने बहुतसे मृगोंको अहेर किया परंतु एक मृग उसका बाण खाकर भागा और उस ने उस के पीछे अपना घोड़ा डाला दैवयोग से उसी बनमें महाराज शत्रुंजय का पुत्र चंडविक्रम नामी भी पहिलेसे अहेर खेलने गया था उसने जो मृगको भागाहुआ आतेदेखा एक बाणमारा कि वह गिरकर मरगया इतने में करालदण्ड भी वहां घोड़ा मारताहुआ जापहुंचा और अपने अहेरको चण्डविक्रमके सामने पड़ाहुआ देखकर ललकारकर बोला कि अरेतू कौनहै जो तैंने मेरेअहेरको मारडाला तब चण्डविक्रम बोला कि अरे शूरबीर मुझे यह नहीं मालूमथा कि यह तेरा अहेर है नहीं तौ कभी न मारता अबतू यहमृग और और भी जो मृग मैंने अहेरकिये हैं सबलेजा और मेरेऊपर क्षमाकर परन्तु करालदण्ड तौ उस समय मद्यकी तरंगमेंथा राजपुत्रका वाक्य कुछकान न किया और बोला कि अरे दुर्बुद्धी क्या तैंने मुझको आमिषलुब्धक समझाहै जोमुझे मांसका लोभ दिखाताहै मैं करालदंडहूं अब अपने अहेरके पलटे तुझे अहेर करूंगा चंडविक्रम बोला कि तुमलोग मायावीहो अपनी मायाके बलपर बड़ाघमंड करतेहो जो मानुषी आयुधोंसे युद्धकरोतौ जानपड़े उससमय करालदंड ने शपथकरके कहा कि मैं तेरेऊपर माया न करूंगा देखूं तू मेरा क्या करलेताहै आ और मुझपर प्रहारकर चंडविक्रम बोला

कि मैं पहिले कभी प्रहार नहीं करताहूं तू अपना प्रहारकर और फिर मेराबल देख यह सुनकर करालदंडने अपना खड्ग निकाललिया और घोड़ेकी एक रकाबपर पैरटेककर भुजाको भले प्रकार तौलकर शरीरके पूर्णबलसे चंडविक्रमके शिरपर खड्ग मारा कि चंडविक्रम तत्काल आगे बढ़कर शत्रुके समीप आगया और अपने सब शरीरको सिकोड़कर ढालकेनीचे करलिया यह करनेसे करालदंडके खड्गकी केवल मूंठ उसकी ढालपर पड़ी और उसका प्रहार खालीगया और वह झोंकसे अभी सँभलनेनहीं पायाथा कि चंडविक्रमने अपना खड्ग खींचा और उससे पुकारकर कहा कि देखदेख अपनेको सँभाल ॥ चौ० ॥ तव प्रहारमें सह्यउंभाई। अबतू सहमम दुसह गदाई ॥ और यह कहकर खड्गमारा करालदंड उस पूर्णबलसे भरे तीक्ष्ण धार खड्गको अपने शिरपर आते देखकर उछलकर घोड़ेके पिछले अंगपर चलागया और अपनी ढालको प्रहारके सन्मुख करलिया परंतु वह राजपुत्रका खड्ग बिजली की भांति चमकता हुआ वज्र प्रहार की समान उस ढालपर पड़ा और उस के सब अंगों को काट कर करालदंड के शिर में समागया उस समय करालदंड ने बड़ी शीघ्रता से हस्तत्राण उस खड्ग में मारे कि वह झंझनाता हुआ उस के शिर में से निकलगया परंतु घाउ के नगने से रक्त बहकर उस के मुखपर आया और वह मूर्च्छित होकर गिरपड़ा उस समय चंडविक्रम ने चाहा कि शिर काटलूं परंतु फिर सोचा कि मूर्च्छित और बेबशको मारना शूरता के योग्य नहीं है यह सोचकर वह ठहर गया कि अकस्मात् एक काली पीली आंधी उठी और सामने से एक म्लेच्छिनी भयंकररूपा जिसका नाम नागमाया था आई इसने करालदंड को दूध पिलाकर पालाथा आतेही जो उसने अपनेपुत्रकी यह दशा देखी क्रोधमें भरगई और तुरंत ऐसीमाया

की कि चंडविक्रमके चारों ओर एक अग्निका प्राकार खड़ाहो-गया और किसी ओर निकलने को मार्ग नरहा और कराल-दण्डको उठाया इसी अवसर में करालदंडका सेवक कारुक-नामीजो पीछे रहगयाथा सेनालिये हुए पहुंचा और राजपुत्र चंड विक्रमके साथीभी आन पहुंचे आपसमें युद्ध होनेलगा और दोनोंसेना लड़ने लगीं परंतु म्लेच्छोंकी सेनाने माया के बलसे राजपुत्रकी सेनाको मारकर भगादिया और वह सेना भागकर पर्वतकी ओर चलीगई और कराल दंडकी सेना वहीं ठहरगई परंतु प्रकाशनामी बहुरूपिया जो सेनाके साथ साथ आयाथा उसने एक लंगोटा बांधा शिरपर बोझ लकड़ियों का लिया हाथमें उपानहलिये और लकड़िहारे कासा स्वरूप बनाकर करालदंडकी सेनामें आया और कुछलोग भागकर सेनामें गये और उन्होंने राजपुत्रके पकड़े जानेका सबवृत्तांत महाराज शत्रुंजयसे कह सुनाया उससमय बहुरूपिये कराल-दंडके मारनेके उद्योगमें चलदिये और महाराजभी चलनेकी तयारी करनेलगे और यहां नागमायाने मायाकृत औषधी क-रालदंडके शिरपर लगाई किवह अच्छा होगया और फिर उसे युद्धके कर्मोंमें आचरण करनेकी रीतिका उपदेश करके और यह कहकर कि अबतू यहांमत ठहर अद्भुत परमेश्वरके समीप चलाजा आप वहांसे विदा होकर चलीगई और करालदंडभी उसी समय सेनाको लेकर चलदिया और राजपुत्र कोभी कैद करके लेतागया और अद्भुतकी सेनामें पहुंचा और प्रकाश बहुरूपियाभी उसकेसाथ २ आया यहां अद्भुत सिंहासनपर-बिराजमान था कि अकस्मात् काली आंधी उठी और अंध-कार छागया और अग्नि और पाषणोंकी वर्षा हुई यह देख-कर अद्भुत भयभीत हुआ और सिंहासनसे उतरकर उसके नीचे जा छिपा निदान करालदंड वहां आया और सिंहा-

सनको खाली देखकर विचारने लगा कि परमेश्वर कहां गये उससमय दक्षिणारण्य के राजा चित्रांगदने उठकर उसको सन्मान पूर्वक एक उत्तम आसनपर बैठाया और कहा कि आप विराजिये परमेश्वर आते हैं और फिर सिंहासनकी आड़ एक वस्त्र से करके अद्भुतको उसके नीचे से निकाला और कहा कि हे परमेश्वर जो आप इसीप्रकारका भयकरके सिंहासन के नीचे छिपजाया करेंगे तो सबलोगोंका विश्वास जातारहैगा निदान वहांसे निकलकर अद्भुत सिंहासनपर बैठा उससमय करालदण्डने आकर साष्टाङ्ग दण्डवत्की और कहा कि मायाकृत देशके महाराजा ने मुझे आपकी सहायता करने को भेजा है तब अद्भुतने उसे बहुतकुछ पारितोषिकदिया और महावीर और चित्रांगद ने उन म्लेच्छों की सेनाको एकउत्तम स्थानपर उतरवाया और वहां वे सब आनन्दपूर्वक विश्राम करनेलगे घंटे और घड़ियाल बजनेलगे मद्यपीना प्रारम्भहुआ भक्ष्य भोज्य पदार्थ आये सबने भोजनकिये और गाने बजाने लगे नाचहोनेलगा उससमय वहां श्रीमहाराजाधिराज के दूत भेष बदलेहुए आयेथे उन्होंने सबहाल देखा और देखकर अपनी सेनामें लौटआये और श्रीमहाराजाधिराज की सभा में जाकर दण्डवत्की और हाथ जोड़कर विनयपूर्वक बोले कि ॥

सो०। राजपाट ऋधिसिद्धि श्रीमहराजाधिराजको।
दिनप्रतिहोय समृद्धि यावत धरणि प्रकाशहै॥

हे श्रीमहाराजाधिराज उस अद्भुत मिथ्या ईश्वरकी सहायताकेलिये एक करालदण्डनामी मायावी म्लेच्छ दशबारह सहस्र मायावी म्लेच्छोंकी सेनालेकर श्रीमहाराज के अनुचरों से युद्ध करनेकी इच्छा से आया है और राजपुत्र चण्डविक्रम को कैदकरके अपने साथलायाहै यहसुनकर महाराज शत्रुंजय जो राजपुत्रके छुटानेको जातेथे सो ठहरगये कि अब तो वह

यहीं आगया है देखाजायगा और अब वहां करालदण्ड के सन्मानकरने का सरंजाम होनेलगा उससमय अद्भुत ने करालदण्डके अनुचर सेनापतिके लिये अपनी जूंठन भेजी और उसको लेकर एक सेवक बाहर निकला और मजूर ढूंढ़नेलगा प्रकाश तो लकड़िहारा बनकर सेनाके साथ आयाही था मजूरबन के उससेवक के पासगया और वह जूंठनकी थाल अपने शिरपर रखकर उसके साथहुआ जब कुछदूरआया उसने अपने पावँसे ठोकरलेकर वहथाल पृथ्वीपर गिरादिया तब उससेवक ने उससे बुरा भलाकहा और बैठकर फिर उसीथालमें सबपदार्थ उठाउठाकर रखनेलगा प्रकाश भी उसके साथ पदार्थोंको पृथ्वीपरसे उठाउठाकर रखनेलगा और दृष्टि बचाकर पदार्थ उठाताजाताथा और उनमें मूर्छाकरचूर्ण मिलाताजाताथा निदान जब सबभोज्यआदि पदार्थ फिर उसथालमें ठीक करके रखलिये वह सेवक उसे लिवाकर कारुक के समीपआया और कहा कि परमेश्वर ने यह अपनी जूंठन तुम्हारेलिये भेजी है यहसुनकर कारुक बहुत प्रसन्नहुआ और वह सेवक उस थालको देकर चलागया परन्तु प्रकाश वहीं डेरेकेपीछे छिपरहा निदान कारुकने उस जूंठनको अपने सबसाथियोंसहित खाया और सबके सब मूर्छित होगये उस समय प्रकाश उस तंबूको काटकर भीतर घुसआया और भुजालीसे सबकेशिर काटडाले शिर कटतेही महा भयानक शब्द होनेलगा उसको सुनकर लोग दौड़े और लीजियो लीजियो पुकारनेलगे प्रकाश उस समय भुजाली उठाकर चिल्लाताहुआ भागा और लीजियो लीजियो कहताहुआ निकलगया जब यह समाचार करालदण्डको पहुंचा उसने चित्रांगदसे कहाकि अब में विश्रामभी न करूंगा यद्यपि मार्गके श्रमसे श्रमितहूं तथापि युद्धकेबाद्य बजवाइये कि में इन सबको विध्वंसकरूं चित्रांगद बोलाकि बहुत

श्रेष्ठहै निदान जो दिन शेष रहगयाथा उसमें कारुक और उसके मित्रवर्गोंके मृतक शरीर उठवाये और अपनी रीतिपर उनकोसमाधिदी और जब वह दिवस व्यतीतहुआ और सूर्य अपने तेजरूपी राज्यको संसार में फैलाकर भ्रष्टराज्य होकर रात्रिरूपी कारागार के मुखपर पहुंचा तब विजयकरनेवाले राजारूपी चन्द्रमा सेनारूपी तारागणों सहित अन्तरिक्षरूपी देशमें आकर और सिंहासनरूपी आकाश में बैठकर राज्य करनेलगा॥

सो०। भये अस्त जब सूर निशिपति कियो प्रकाशनभ।
गई कौमुदी पूर महिमण्डल सर्वत्र में॥

निदान करालदण्ड ने आज्ञादी कि युद्धके वाद्यबजायेजावें आज्ञाहोतेही सहस्रों बाजे बजनेलगे उससमय श्रीमहाराज के दूतोंने फिर श्रीमहाराज की सभामें जाकर साष्टाङ्ग दण्डवत्की और विनयकिया कि महाराज शत्रु ने युद्धके वाद्य बजवाये हैं यहसुनकर श्रीमहाराज ने आज्ञादी कि हमारीसेनामें भी युद्ध के वाद्यबजायेजावें यह आज्ञापाकर प्रहास के पुत्र सुवास ने वाद्यालयखोला और पौलोम भेरीको बजाया और २भी अनेक वाद्यबजवाये उनके घोर दुस्सह शब्दसे पृथ्वी कांपनेलगी और शूरवीर रात्रिभर सबयुद्धका सरंजाम करतेरहे कवीश्वर सब को वीररस सुनातेरहे और उसको सुन सुनकर सब शूरवीर रणमें प्राणदेनेको सन्नद्धहुए निदान वहरात्रि व्यतीतहुई और राजारूपी चन्द्रमा सेनारूपी तारागणों सहित रणभूमिरूपी आकाश में पराजितहोकर भागा और दिनके ईश्वर तेजमयी मार्तण्ड ने उदय होकर अपनी किरणों से संसार में निर्मल प्रकाश करदिया॥

सो०। गई राति जबबीति सूरउगेउ प्राचीदिशा।
इन्दुतेजसोंरीति भयोक्षिण नभमेंमलिन॥

प्रातःकाल होतेही दोनों सेना यूथ यूथ पंक्ति पंक्ति भिन्नहोकर रणभूमि की ओर चलीं उससमय महाराज शत्रुंजय प्रातःक्रियाकरके हरिस्मरण कररहेथे कि इतनेमें सुवासने जाकर विनयकी कि महाराज तरंगिणी रूप सबसेना समुद्ररूपी रणभूमि में जाचुकी श्रीमहाराज भीपधारें यहसुनकर महाराज शत्रुंजय उठे और अस्त्रशस्त्र धारणकरके पूजाके स्थानसे बाहिर आये उससमय सबसेनापति और मान्य योद्धामहाराजके पासआये और महाराजसुग्रीव घोड़ेपर सवारहोकर सबसेना पतियोंसहित श्रीमहाराजाधिराज सुवीरके वासस्थलपर आये थोड़ीदेरमें श्रीमहाराजाधिराज उत्तम सिंहासनपर विराजमान सिंहासन को कहार उठायेहुए अपनी शिविरसे बाहिरआये वंदीजनोंने जयके व आशीर्वादके पदपढ़े सूतों ने विमलकथासुनाई और महाराजशत्रुंजय आदिसब सेना पतियोंने आकर दंडवत्कीऔर सवारी श्री महाराजाधिराजकी रणभूमिकी ओरचली अनुचर हटियो बचियो पुकारतेहुए आगेबढ़े और सब सेनापति और मान्य योद्धा उनके साथसाथ होलिये और बड़ी धूमधाम से रणभूमि में आये वहांआकर देखाकि अद्भुत मिथ्या ईश्वरभी करालदंड सहित दूसरी ओर रणभूमि में स्थित है उस समय दोनों सेनाओंमें व्यूह रचनाहुई युद्धसेवकोंने ऊंची नीची पृथ्वी को बराबर किया और जलका छिड़काउ किया और कवीश्वरोंने वीररसके अनेक पदपढ़के शूरवीरोंको रणका उत्साह दिलाया तदनंतर करालदंड अद्भुत मिथ्या ईश्वरसे युद्धकीआज्ञा लकर रणभूमिमें मायाकृत महोरग पर सवारहोकर आया और ललकारकर बोला कि हे नास्तिको हमारे ईश्वरसे बहिर्मुख तुम मेंसे कौनमुझसे रणभूमिमें आकर युद्धकरने का उत्साह रखता है यहसुनकर राजाकैकेयसे आज्ञा लेकर उसके सन्मुख युद्ध करनेको गया उस समय करालदंडने मायाकी कि वनकी ओरसे

धूलउड़ी और उसमेंसे एकअश्वसादी प्रकटहुआ और उसने कैकेयके सन्मुखआकर कहा किप्रहारकर निदान दोनों युद्धकरने लगे कैकेयने भल्ल लेकर प्रहार किया अश्वसादी अर्थात् सवार मायाकृतने उसे पकड़कर छीन लिया तब कैकेयने एक गदा मारी सवारने उसेभी गदामारकर गिरादिया तब कैकेय खड्ग लेकर दौड़ा सवारने वह खड्गभी छीन लिया और कैकेयको कमरसे पकड़कर पृथ्वीपर देमारा और कैद करके करालदंड की सेनाके म्लेच्छोंको देदिया वे उसे लेगये तब उससवार ने फिर पुकारकर कहा कि आओ अब कौन तुममेंसे मरनेकी इच्छारखनेवाला मुझसे युद्धकरने आताहै निदान महाराजाधिराजकी सेनाके शूरवीर एकके पीछे एक उससे युद्ध करनेको आनेलगे और सबको वह सवार पराजित करकरके पकड़पकड़कर करालदंडकी सेनाको देतागया और वेसबको कैदकरतेगये इसी प्रकारसे महाराजाधिराज सुवीरकी सेनाके सैकड़ों शूरवीर पकड़गये कि इतने में दिनके समाप्तहोनेपर सूर्य अस्ताचल पर पहुंचे और प्रकाशके पीछे पीछे अन्धकारने आकर युद्ध करने से निषेध किया॥

सो०। भये सूर्य जब अस्त वेला सन्ध्याकी भई।
तजि रणकर्म समस्त उभय सेन डेरनि गईं॥

सन्ध्याकाल के प्राप्त होतेही करालदण्डने युद्ध निवृत्ती के वाद्य बजवाये और दोनों सेना लौटकर अपने अपने डेरों में आईं और आहारादिक क्रिया करनेलगीं परंतु सुबास बहुरूपिया इस प्रयोजनसे चलदिया कि देखूं यह अश्वसादी कौन है और कहांसे आयाहै और उधर चित्रांगदने करालदण्ड से कहाकि शत्रुंजयको कोई ऐसा नाम यादहै कि उसके प्रभावसे कोई माया नहीं चलतीहै जोमाया कीजातीहै वही व्यर्थहोजाती है उसपर कोई माया न चलैगी यह सुनकर करालदण्डनेकुछ

माया की कि उसके करनेसे नागमाया वहां आकर उपस्थित हुई और करालदण्डने उससे कहा कि शत्रुंजयके पकड़ने का कोई उपाय करनाचाहिये क्योंकि माया व्यर्थकर मंत्रका जाननेवालाहै वह बोली कि मैं जातीहूं और बहुरूपियों से छिपकर ऐसी माया करतीहूं कि शत्रुंजय वह मंत्र भूलिजाय और फिर उसको वह मंत्र याद न आवै तब चित्रांगद बोलाकि जो सेनापति आज पकड़े गयेहैं उनको बहुरूपिये छुड़ालेजायँगे इससे आपका यहीं रहना योग्यहै यह सुनकर नागमाया ने चित्रांगदको एक यंत्रदिया और कहा कि जब मेरे आने की आवश्यकताहो तब यह यंत्र अग्निपर रखदेना मैं तुरंत आजाऊंगी यह कहकर वह आकाश मार्गसे कहीं चलीगई और सुबास बहुरूपिया उस सवारके खोजमें चारोंओरको घूमा परंतु उसका कुछ खोज न लगा अन्तमें उसने एक सेवकका स्वरूप धारण किया और चित्रांगदके तंबूमें आया चित्रांगद उसको देखतेही पहँचानगया एक समय इस चित्रांगद को प्रहासने इसके बाप चित्रसेनको मारकर उसका मांस खिलायाथा तबसे यह बहुरूपियोंके कार्यमें कभीकुछनहीं बोलताहै और जानताहै कि बोलूंगा तो ये मारहीडालेंगे बाहिरेमनसे बड़ी आधीनताई बहुरूपियोंकी करताहै निदान उसने सुबास बहुरूपियेको पहिचानकर बड़े आदरसे उसे अपनेडेरेमें लेगया और एक ऊंचे स्थानपर बैठाकर बोला कि कहो गुरूजीकेपुत्र आजकहां इधर आयेहो यह तो बताओ कि मेरेप्राण आज जायँगे या बचेंगे सुबास बोला कि दिन दशा तो तुम्हारी घेरेही फिरतीहै हमभी आज इसी इच्छासे आयेहैं कि आपसे एकबात पूछें और जो आप न बतावें तो फिर आपको इस दुःखरूपी जीवितसे छुटादें यह सुनकर चित्रांगद एक श्वेतवस्त्र ओढ़कर पृथ्वीपर मृतक तुल्यहोकरसोगया तबसुबासबोला श्रीमान् आजतुम बचोगेनहीं

उठो लो ये हमारे हाथ के मोदक खाओ तब चित्रांगद हाथ जोड़कर और गिड़गिड़ाकर बोला कि आपको जोकुछ पूछनाहै वहपूछलीजिये और जो मेरेप्राणलेने तो मेराशिर आपकेआगे है मुझे मूर्च्छित करनेकी क्या आवश्यकताहै यहसुनकर सुबास ने भुजाली दिखलाकर कहा कि क्यों तू मुझसे भी छल चलता है ले शीघ्र इन मोदकों को खाले तब चित्रांगद ने कहा बहुत श्रेष्ठ मैं खायेलेताहूं और बेवश में पड़कर उसने वे मोदक खा लिये और खातेही मूर्च्छित होगया तब सुबासने उसकी गठरी बांधी और उसे पीठपर लादकर कूदता फांदता हुआ निकल-गया और बनमें आकर इस भयसे कि कोई आ न जाय उसे पहाड़पर लेकर चढ़गया और वहां चित्रांगद को खोलकर चैतन्य किया और पूछा कि बता यह सवारजो युद्धकरताथा कहांसे आताहै वहबोला कि अच्छा जो मैं बतलादूं तो मुझको छोड़ दीजियेगा फिरतो न मारियेगा तब सुबासने धमकाकर कहा कि शीघ्रबता तू बचन क्यों मांगता है मेरीइच्छाहोगी तुझे छोड़दूंगा न होगी मार डालूंगा तब वह बोला मैं केवल इतना जानताहूं कि नागमाया म्लेच्छिनी शत्रुंजय को जो महामंत्र मालूमहै उसे भुलाने के उद्योगमें गईहै और यह यंत्र मुझको दे गईहै और कहगईहै कि जब आवश्यकताहो इस यंत्रको अग्निपर रखना मैं तत्काल आजाऊंगी सो आपकी आज्ञाहो तो उसको बुलाऊं और यह बात चित्रांगद ने इस प्रयोजन से कही कि जो वह मायावी म्लेच्छिनी आ जायगी तो मैं छुटजाऊंगा और सुबास को उससे पकड़वालूंगा यह सुनकर सुबासने कुछयत्न शोचकर कहा कि अच्छा उस नागमाया को बुला यह सुनकर चित्रांगद ने उस यंत्र को अग्निपर रक्खा और रखतेही एक सन्नाटा सा हुआ और वह म्लेच्छिनी वहां आई और चित्रांगद से बोली कि कहिये श्रीमान् आपने क्यों मुझको बुलाया है उस समय

चित्रांगद ने मुखसे तो कुछ न कहा परंतु हाथ से बताकर बोध किया कि यह शत्रुहै इसेपकड़लो परंतु नागिन उसके इशारेको न समझी और चारों ओर देखने लगी सुवासतो उसके आने पर छिपगयाथा जब उसनेदेखा कि वह म्लेच्छिनी चारोंओर को चकित होकर देखिरहीहै तब उसने बड़ी शीघ्रतासे एक पत्थर गोफिनमें रखकर ऐसामारा कि नागमायाका शिर टूटकर शरीर से पृथक् जापड़ा और वह प्राणरहितहोकर गिरपड़ी और बड़ा कोलाहलहुआ उससमय चित्रांगद अपनीआंखें बंदकरके बैठ गया सुवासने उसे एकवृक्षसे बांधदिया और अपना स्वरूप नागमाया कासा बनाकर करालदंड के डेरेमें गया उसको देख-कर करालदण्ड उसे अपनी दाई जानकर खड़ाहोगया और दंडवत्करके पूछा कि कहो महामंत्रको विस्मरण कराआई यह सुनकर नागिनने उसका हाथ पकड़लिया और कहा कि तुझ पर तीन दिन बड़े कड़ेहैं बहुरूपियोंसे तेरे प्राण बचने कठिनहैं इससे तू मेरे साथआ मैं तुझको कुछ उपाय बताऊं यह कह-कर वह नागमायारूपी सुवास उसको वनमें लेआया और अपनी थैलीमेंसे एकफल निकालकरदिया कि ले इसेखाले यह मायाकर्त्ताकी फुलवाड़ीका फलहै इसके खानेसे तेरी आयु बढ़ जायगी और फिरतुझको कोई न मारसकैगा यहसुनकर कराल-दंडने वहफललेकरखालिया खातेही मूर्च्छितहोगया औरसुवास ने उसकाशिर काटडाला काटतेही महाकोलाहल हुआ अग्नि और पाषाणोंकी वर्षाहुई और कैकेयआदि जितने शूरवीरमाया-कृत प्राकारके भीतर कैदथे सब छूटगये और सबने सलाहकी कि इस दुष्ट अद्भुतको मारडालो यह विचारकर वे सब खड्ग निकाल निकालकर उसकी सेनापर जापड़े और जो मायावी म्लेच्छोंकी सेना पड़ी हुई सोरही थी वह कोलाहल को सुनकर जगपड़ी और यह विचारकर कि ये क्षत्री भी बड़े मायावी हैं

जिन्होंने हमारे सेनापतियोंको मारडाला भागखड़ीहुई और वे शूरवीर धनुष वाण और खड्ग आदि प्रहारकर के अद्भुतकी सेनाको मारनेलगे ॥

रोलाछंद ॥ करि अलात सुचक्रसम धनुवरपि शायकभूरि। सैनअ-द्भुतमेंदये वरवाण सवदिशिपूरि ॥ काटि अगणित शक्ति तोमर वाणरथ धनुकेत। दयेकाटि असंख्य शिरकरचरणरचिशरसेत ॥ गदाअसिवर आय-सीतत्र वाहि वाहि सटेक। घातकरि करि वांध मण्डल वधेवीर अनेक ॥ तुरंगगजभट काटि अगणित डारि महिपै तत्र। कियो भीपमरूप धरगि-हिभटनिरणकृत सत्र ॥ मचो हाहाकार तेहि क्षण सैनमें तेहिठौर। वि-कलह्वै भटभगे अगणित तजि भटनको तौर ॥ धरि धरि धरि गयेसन्मुख वीरजे वलवान। भये ते सव ज्वलनिकेढिगजात शलभसमान ॥

इतनेमें वह रात्रि व्यतीतहोगई और चन्द्रमारूपी राजा अपनी तारागणरूपी सेनालेकर भागा और विजय प्राप्तकर के सूर्यरूपी महाराज देशरूपी आकाशमें आकर राज्यशासन करने लगा ॥

सो०। भयो प्रातको काल दिनमणि कियो प्रकाश तत्र।
फूले कमल विशाल मुदीं कुमुदनीं सकुचिकें ॥

निदान अद्भुतकी सेनाको जीतकर सवशूरवीर अपनीसेना में चलेआये और अद्भुत पराजितहोकर रत्नाकरपर्वतके किले में चलागया और मायावी म्लेच्छ भागकर मायाकृत देशमें चलेगये उससमय महावीरने फिर एक पत्र लिखकर महेन्द्रके पास भेजा महेन्द्र निष्प्रभ भवनमें आनन्दपूर्वक बैठाथा और विचित्रमाया निशाकरीसे युद्धकेलिये उतरीहुईथी कि इतने में भागेहुए म्लेच्छ महेन्द्रके पास पहुंचे और एकहस्त महावीर का पत्र भी लेकर पहुंचा महेन्द्रने उस पत्रको पढ़ा और बड़ी चिंतामें मग्नहोकर चित्तमें कहा कि ये वहुरूपिये प्रलयकारी हैं और इन सवका गुरू जो कुछ चेलोंको लेकर इस देश में

आयाहै वह तौ हम सबसे माराही नहीं जासकता तौ वहां तो सहस्रों बहुरूपियेहैं निस्संदेह ईश्वर बड़ी उपाधिमें होंगे यह विचारकर उसने उसीसमय दोपत्र लिखे एक तौ विचित्रमाया को लिखा कि आशय उसका यह था कि हेरानी विचित्रमाया तुम अभी युद्धके वाद्य बजवाकर युद्ध न करना क्योंकि जो तुम शत्रुको जीतकर अपने वशमें करोगी तौ बहुरूपिये उसमें विघ्न डालेंगे और कोई उपाधि खड़ीकरेंगे इससे उचितहै कि प्रथम समीररूपा आदिको भेजकर बहुरूपियों को पकड़वालो फिर निशाकरी आदिका पकड़ना तौ तुमको कोई बड़ी बात नहीं है यह पत्र लिखकर उसने एक मायाकृत पुतलेकोदिया और आज्ञा दी कि विचित्रमायाके पासलेजा और वह उसपत्रको लेकरचल-दिया और उसके जानेपर उसने दूसरा पत्र हिडंबाको लिखा कि हेरानी तुम मुझको यह बचनदेकर गईथीं कि मैं परमेश्वर की सहायता करने जाऊंगी परंतु मैंने सुना है कि तुम बीमार होगई इससे जो अब तुमको आरामहो तो परमेश्वरकी जाकर सहायता करो और जो आराम नहो तौ मुझको लिखो कि मैं किसी दूसरे को परमेश्वरकी सहायताके लिये भेजूं यह पत्र भी लिखकर उसने एक मायाकृत पुतलेको दिया और कहा कि हिडंबाके पासलेजा वह उस पत्रको हिडंबाके पासलाया हिडंबाने उसेपढ़ा और यह उत्तर लिखके कि अब मैं अच्छीहूं और परमेश्वरकी सहायताके लिये जातीहूं आप निश्चिंत्यरहें उसी पुतलेको देदिया और वह उसे लेकर महेन्द्रकेपास आया महेन्द्र उसको पढ़कर चुपहोरहा और जब वह दूसरा पुतला पत्रलेकर विचित्रमायाके पास गया विचित्रमायाने समीररूपा से महेन्द्रकी आज्ञानुसार कहा कि महाराजने आज्ञादीहै कि तू जाकर प्रहासको पकड़ला यह सुनकर समीररूपाने कहा कि बहुत अच्छा और बहुरूपधारिणी विद्या संबन्धी सब सरंजाम

लेकर चलदी अब हाल बहुरूपियोंका सुनिये कि ये आनन्द पूर्वक निशाकरी की सभा में बैठे थे परन्तु जब विचित्रमाया की सेना आई सब बहुरूपिये सभा से निकलकर वनमें चले गये और कुछ कार्य करने की चिन्ता करने लगे कि विचित्रमाया की सेना को चलकर लूटें प्रहास इसी चिन्तवन में निष्प्रभ भवन के समीप के एकग्राम में गया और वहां देखा कि एकस्थानपर एक वितान तनाहुआ है और उसके नीचे बहुत से म्लेच्छ बैठे हैं और एकदूल्हा बड़े सुन्दर आसनपर रत्नजटित वस्त्रपहिरेहुए बैठाहुआ है नाचहोरहा है और मद्य उड़रही है यह देखकर प्रहास बहुत प्रसन्नहुआ कि अच्छी जगह आयेहैं कुछ न कुछ मिलही जायगा आज इसबरातको लूटो निर्द्धन भी आजकलहो यह सोचकर वह एकांत में बैठ गया और लंबीडाढ़ी लगाकर पीठ कुबड़ी की और स्वरूप एक वृद्धयाचककासा बनाकर पगड़ी शिरसे बांधी और ऊर्ध्व वस्त्र धारणकरके बांसुरी कमर में खोंसी और हाथ में खंजरी लेकर उसबरात के सन्मुखआया और बैठकर बड़ी सुरीली वाणी से मांगल्यपद गानेलगा उसको सुनकर सब चित्रकेसे लिखे होगये वह बरात विलोचनदहपती की बेटेकीथी जब उसने उसयाचकको गानविद्या में निपुणपाया बड़ेसन्मान से उसे बुलाकर पास बैठाया और कहा कि कुछ सुनाइये यह आपका घरहै मुझसे जो कुछबनेगा आपकी भेटकरूंगा तब प्रहास बोला कि धनवान्होउ पुत्रवान्होउ आयुष्मान् होउ और यह आशीर्वाद देकर बांसुरी निकाली और उसे बजाकर गानेलगा ॥

ठुमरी। यासाँवलिया की लटकचाल मोरे जियमें बसिगईरे।
स्थायी। मुकुटपीताम्बर अधिकसुहावै लै मुरली पढ़ि फूंकिबजावै।
लटकाली नागिनसी लटकत तनमन मेरो डसिगईरे १ ॥

विनदेखे नहिं परतचैन कहो उनबिन कैसे कटत रैन।
अब काहकरों मोरी सजनी सुधि बुधि सब बिसरीरे २॥
एकौ कही न माने मोहन भई अधीर दही के कारण।
मधुवन कुंजन आनि फँसी परवश भई फँसिकेरे ३॥
मकसूदपियारा पियजबआवै बांकीतिरछी छबिदिखलावै॥
अब डालगले पीतम बहियां सबकसक निकसि गईरे ४॥

निदान प्रहास तौ बांसुरी में उक्तप्रकार से गारहाथा कि उसकी मधुरध्वनि को वन में समीररूपा बहुरूपिणी ने सुना जो प्रहासके खोजमें निकलीथी और उसध्वनि को सुननेकी इच्छा से वहीं चलीआई और बरात में एकवृद्ध याचकको गातेहुए देखा परन्तु वहदेखतेही पहँचानगईकि प्रहासहै और खड़ीहुई गानासुनाकी और चित्तमें सराहनाकरकेकहा कि तेराबड़ाभाग्य है जो तेराआसक्त सबगुणनिधानहै परन्तु वहतौ अपने स्वामी की आज्ञासे उसे पकड़ने आईथी इससे वह उससभामें त्रिलोचनके समीपगई और चुपकेसेकहा कि यह याचकनहींहै किन्तु प्रहास है इसे पकड़लो परन्तु प्रहास समीररूपा के होठों को हिलतेहुए देखतेही जानगया कि यह मुझे पकड़नेकेलिये कह रही है इसने मुझे पहिचान लियाहै यह अनुमान करके वह खड़ा होगया और त्रिलोचनके पास आकर बोला कि महाराज देखिये वह कौनहै त्रिलोचनने जैसेही शिर फेरा प्रहासने उसके एक धौल जमाई और उसकी मुक्ताओं से अलंकृत शिरकी टोपी उतार कर भागा म्लेच्छ उसके पीछे दौड़े परंतु समीररूपाने कहा कि आप ठहरें मैं पकड़कर लातीहूं और भुजाली लेकर झपटी प्रहास वहांसे चलकर एक वन में आकर ठहरा हुआथा कि समीररूपाने जाकर डाटा कि अरे बहुरूपिये अब मेरे हाथ से कहां जायगा तब प्रहास ने भी खड्ग खींचलिया और उससे लड़ने लगा उस समय चपला भी एक ओर से

घूमताहुआ वहां आ निकला और बोला गुरुआनीजी दंडवत् समीररूपा बोली कि अरे चपला यह तेरा गुरू कैसा सब बहुरूपियों का राजा है कि मुझ अकेलीसे भी नहीं लड़सक्ता है जो कुछ बहुरूपधारिणी विद्या का बल रखता है तो यहां से चलाजा मैं और ये दोनों समझ लेंगे चपला बोला कि मेरा काम क्या है जहां दोनों प्रिया और प्रीतमहों वहां ठहरना न चाहिये तुम्हारा अभिप्राय मुझे टालकर अकेले रहने का है यह कहकर वह एक ओरको चलदिया दैवयोग से उधर से प्राता आरहीथी चपला ने समझा कि जो यह जायगी गुरूजी को लड़ने में कष्ट होगा और यह समझ कर उसने डाट कर प्राता से कहा कि कहां जातीहै यह सुनकर प्राता खड्ग खींच कर आपड़ी और चपलासे लड़ने लगी परंतु दैवयोग से उस स्थान पर जहां समीररूपा और प्रहास लड़ रहेथे एक म्लेच्छ कचाङ्गी नाम जो विलोचन के यहां विवाह में जाताथा वहां आ पहुंचा और देखा कि एक स्त्री और एक पुरुष दोनों लड़ रहेहैं उसने दोनोंको माया करके स्तंभित करदिया तब समीररूपानेकहा कि मैं महाराज महेन्द्रकी नौकरहूं तूने मुझको क्यों स्तंभित करदियाहै तब प्रहास ने कहा कि श्रीमान् सुनिये यह झूंठीहै मैं याचकहूं और यह मेरी भार्याहै परंतु मैं वृद्धहूं और यह कुलटाहै और अपने स्नेहियोंके साथ खराबहै कईबार मैं इसको पकड़चुकाहूं और जब पकड़ताहूं तभी यहमुझसे लड़ने लगतीहै और भागजातीहै परंतु आप छोड़दीजिये आज इस कुलकलंकिनीकी मैं अवश्य नाककाटूंगा कचाङ्गीबोला कि सुना तो हमने भी है कि महाराज महेन्द्रने समीररूपा बहुरूपिणीको उसकी प्राताआदि सहेलियोंसहित बहुरूपियोंको पकड़ने भेजा है परंतु मैं उसको पहिचानतानहींहूं क्योंकि हमतो छोटे मनुष्य प्रजाहैं महाराजकी सभामें जानहींसक्तेहैं इससे किसीकोपहिचा

नता नहीं इससे हमको संदेहहै न जानें तुमदोनोंमेंसे कौनसच्चा
है तब प्रहासबोला कि आप हमारा हाल जो आगे बरात टिकी
है वहां पूछलीजियेगा वहबोला कि वहांतो मैं जाताहूं और यह
कहकर उसने उन दोनोंको मायाकृत हस्तसे उठाया और दोनों
को लियेहुए उस बरातमें आया और विलोचनसे मिलकर सब
वृत्तांत कहा तब विलोचन बोला कि मैं इतना जानताहूं कि
प्रथम यह याचक आयाथा और पीछे यह स्त्री आई और यह
याचक मेरी टोपीलेकर भागा टोपीलेकर भागने से अनुमान
होताहै कि यह बहुरूपियाहै और समीररूपाको मैंभी नहीं प-
हिचानताहूं और न मैंने कभी किसी बहुरूपियेको देखा परंतु
यह बहाना राजसभा में जानेका बहुत श्रेष्ठ मिलाहै आप इन
दोनोंको महारानी विचित्रमायाके पास लेजाइये वह इसप्रत्यक्ष
खंडमें आईहैं कचाङ्गी बोला कि मैं मायासे यहभी जानसक्ताहूं
कि इनमें प्रहास कौनहै और समीररूपा कौनहै परंतु इसबहाने
से राज्यसभामें होआऊंगा इससे लाओ आकवी बरातमें थोड़ी
देर ठहरलूं तब वहां जाऊं यह कहकर उसने प्रहास और स-
मीररूपा दोनोंको बांधदिया और आपबैठकर नृत्य देखनेलगा
उधर चपला जो प्रातासे लड़रहाथा अकस्मात् कूदा कि एक
गर्तमें जापड़ा प्राता भी भुजाली लियेहुए उसगर्त्त में कूदपड़ी
और बोली कि अब तू कहांजायगा परंतु चपलाने उसके कूद-
नेके पहिले अपनी पाशके कुण्डल लगादिये थे इससे प्राता
कूदतेहीं उलझकर उन कुण्डलों में चपलाकी गोदमें गिरपड़ी
चपलाने तुरंत उसके मुखपर मूर्च्छाकर चूर्णलगाकर उसको अ-
चेत करदिया और उसकी गठरीबांधकर और उसेपीठपर लाद
करचलदिया और वहांआया जहां विलोचनकी बरात टिकीथी
परंतु गठरी बांधनेकेपहिले उसनेअपना स्वरूप तो प्राताकासा
बनालियाथा और प्राताका स्वरूप प्रहासकासा बनादिया था

जब वह उस बरातके समीपपहुंचा सबनेकहा कि एकस्त्री और किसीको बांधेहुए लारहीहै इतनेमें प्रातारूपी चपलावहां पहुंचा और देखा कि प्रहास और समीररूपा बँधेहुएहैं उसने जाकर विलोचनकी बलैयांली और कहा कि श्रीमान् मेरीबहिनको क्यों बांधाहै कचांगी तब बोला कि मैं इनको जानता नहीं विचित्र-मायाके पास लेजाऊंगा प्रातारूपी चपलाबोला कि भला कहीं स्त्री और पुरुष भी छिप सकतेहैं यह समीररूपा राजपुत्री है और मैं इसकी मंत्रिणीहूं और यह याचक प्रहासके साथ का बहुरूपियाहै प्रहास नहींहै प्रहासको तो मैं पकड़कर लाईहूं तब-कचांगीने चपलाकी बातपर विश्वासकिया और विलोचन की बरातमें एक और म्लेच्छ भी आयाथा उसने कहा कि मेरेपास सब बहुरूपिये और बहुरूपिणियोंके चित्रहैं उनसे आप मिला लीजिये यह कहकर उसने अपना संदूक मँगवाया और चित्र निकालकर मिलाये उससमय समीररूपाको उसने छोड़दिया और प्राताको जिसको चपला प्रहासका स्वरूप बनाकर लाया था बँधवा दिया और समीररूपा जो मुक्तहुई उसने चपला को पहिचाना और सोचा कि ये सब अंधे हैं सब मारेजायंगे परन्तु इन्होंने तेरी अप्रतिष्ठा की है इनको भी दण्ड पाने दे यह विचारकर वह चलीगई परंतु चपलाने कहा कि हेकचांगी मैंने यह प्रणकियाथा कि जब मैं प्रहासको पकड़लूंगी तब माया-वी म्लेच्छोंको इकट्ठाकरके अपने हाथसे मद्य पिलाऊंगी सो देखिये अद्भुत परमेश्वरकी क्या महिमाहै कि आजही मैंने प्रहास को पकड़ा और पकड़नेके पीछेही म्लेच्छ मंडली भी एकत्रपाई और मंडलीभी अच्छीहै इससे मैं यहीं सबको मद्यपान कराऊं-गी हेविलोचन जो कुछ मद्यका निष्क्रयहो वह सब मुझसेलेले और सब मद्य मुझेदेदे विलोचनबोला कि निष्क्रयकी क्या बात है यहतो आपकाघरहै जितनीइच्छाहो मद्य आपपीजिये और

सबको पिलाइये यहसुनकर प्राताऋपी चपला ने मुसकुराकर सब मद्यपात्र आपलेलिये और उलटफेर करनेमें उसमें मूर्च्छा कर द्रव्योंसे निर्मित मद्य मिलादी और सबको पात्र भरभरकर पानकराई उसको पानकरके सब मूर्च्छितहोगये तब चपलाने प्रहासको खोलदिया याचककारूप धारणकिये बंधाथा और भुजाली निकालकर सबके शिर काटनेलगा और प्रहास मुक्त होकर सबको लूटनेलगा परंतु दो चार म्लेच्छही मारेगयेहोंगे कि महेन्द्रने अद्भुत जालकी पुस्तक निकालकर देखी और कारण देखनेका यह था कि जबसे उसकी रानी विचित्रमाया युद्धके लियेगईहै तबसे उसको यह भय रहताहै कि बहुरूपिये कहीं उसकी लज्जा न लें और इसीकारणसे वारंवार उसपुस्तक को देखाकरताथा निदान उस पुस्तकके देखनेसे उसको मालूम हुआ कि जो ग्राम निस्प्रभ भवनके निकटहै उसमें प्रहास और चपलाने बड़ा दुंदमचारक्खाहै यह देखतेही उसने अपनेचित्त से कहा कि अब कहांतक क्षमाकरूं आज प्रहासको पकड़कर मारडालूं निदान उसने निद्रावतीको जिसकाशिर प्रहासने मूंड़ा था कथा उसकी पूर्वमें वर्णनहोचुकी है आज्ञादी कि देखो एक बरातमें प्रहास और चपला बड़ा उपद्रव मचारहेहैं म्लेच्छोंके शिर काटरहेहैं तुमजाकर दोनोंको पकड़लाओ और प्राता जो बंधीहै उसको खोलदेना यह आज्ञा पातेही वह मायाबल से आकाशमार्गी हुई और उस बरातके समीप आकर पुकारी कि ठहरो तौ दुष्टो यह सुनतेही चपला तौ छलांग मारकर निकल गया और एक स्थानमें जा छिपा परंतु यह तौ प्रहासकेही बड़े खोजमेंथी अकस्मात् वज्रकी समान गिरी और मायाकृतहस्त में प्रहासको उठाकर फिर आकाशमार्गीहुई चलते समय उसने ऐसी मायाकी कि प्राता जो बंधीथी अपनेआप खुलगई और एकओरको भागकर चली और फिर उसने आकाशकी ओर

अपनी उंगली दिखादी कि तत्काल एकबादलउठा और उसने जलवर्षाकर जितने म्लेच्छ मूर्च्छितपड़ेथे सबको चैतन्यकर दिया वे जो चैतन्यहुए देखा कि लोथें पड़ीहुई हैं और उस उत्सवकी सब सभा टंटभंट पड़ीहै यह देखकर सबने कहा कि देखो अंतमें बहुरूपियोंने छलकरके यह विघ्नकिया निदान वे सब तौ अपने अपने कामसे लगे और निद्रावती प्रहास को लेकर महेन्द्रके पासगई और उसको दण्डवत्करके प्रहास को निवेदनकिया प्रहास उससमय वायुके वेगसे अचेतहोगया था जब उसकी आंखें खुलीं उसने अपनेको महेन्द्रकी सभामेंपाया प्रहासने महेन्द्रको दण्डवत्की और उसनेपूछा कि क्यों प्रहास तुझको यह दिन भी स्मरणथा प्रहासबोला कि क्यों याद क्यों न था अब हम इससभाको लूटकर जायंगे और तुम्हारी डाढ़ी और मूछ मूंड़ेंगे आज इसी प्रयोजनसे आये हैं यह सुनकर महेन्द्रको क्रोधआया उसने प्रहासको तौ एक लोहके पिंजरेमें बन्द करदिया और विचित्रमायाको एकपत्र लिखा कि हे रानी हमने प्रहासको यहां पकड़लियाहै तुमको उचितहै कि सेनाको सेनापतियोंको सौंपकर तुम यहां चलीआओ कि मैं प्रहासको तुम्हारे सन्मुख मारूं तुम उसकी मृत्युदेखकर प्रसन्नहोगी यह पत्र लिखकर उसने एक मायाकृत हस्तकोदिया और आज्ञादी कि विचित्रमायाके पास लेजा वह हस्त पत्रलेकर आया और विचित्रमायाको दिया उसने पढ़ा और पढ़तेही खिलखिलाकर हँसपड़ी और ऐसी प्रसन्नहुई कि ऐसी कभी न हुई थी निदान उसने अपने सेनापतियों को बुलाया और सब वृत्तांत कह कर आज्ञादी कि तुम सब सेनाकी रक्षाकरो और फिर आज्ञा दी कि प्रसन्नतासूचक वाद्य बजाये जावें क्योंकि बड़ी प्रसन्नता की बातहै कि प्रहास माराजाताहै निदान सेना में वाद्य बजने लगे और विचित्रमायाने रक्तपटके वस्त्र और महारत्न और

मणियों जटित आभूषण नखसे शिख पर्य्यंत धारणकिये और एक उत्तम मायाकृत मयूरपर सवारहोकर निस्प्रभ भवन की ओर चलदी परंतु मायाकृत पक्षियोंने रानीचन्द्रचूड़ा और निशाकरीसे यह समाचार जाकर कहे कि प्रहासजी कैदहोगये हैं शत्रुसेनामें जय दुंदुभी बजरही है और विचित्रमाया आप प्रहासका वध करनेको गईहै यह सुनकर चन्द्रचूड़ा और केसरी आदिने कहा कि सेनाको सन्नद्धकरना चाहिये हम सब भी चल कर अपने प्राणदेंगे अथवा प्रहासको छुटालावेंगे तब निशाकरी बोली कि निस्प्रभभवनपर जाना बहुत कठिन है तब भानुविक्रम बोला कि किसीकी क्या सामर्थ्य है जो प्रहासको मारसके उसको सप्तऋषियोंका वरदानहै कि जबवह अपने मुखसे आप तीनवार मृत्युमांगे तब काल उसकाआवै महेन्द्र की सामर्थ्य यह नहीं है जो उसका वधकरसकै वहमायावी म्लेच्छोंका काल है परन्तु हमसबको उचित है कि हमसब हाथजोड़कर उस परमेश्वर सच्चिदानन्द से उसकेलिये प्रार्थनाकरें यह सुनकर सबने हाथजोड़कर प्रार्थनाकी कि हे श्रीविष्णुभगवान् अन्तर्यामी सच्चिदानन्दमूर्त्ति सर्वव्यापक सर्वसामर्थ्यवान् हम सबने प्रहासही के कारण से तुझको जाना है कि तेरे सिवाय कोई उत्पन्न पालन और नाशकरनेवाला नहीं है और वैष्णवी मत धारणकिया है तूहीं उस महानुभाव प्रहासका रक्षक है ॥

क०। चाहे सुमेरुको छारकरै अरु छारकी चाहै सुमेरु बनावै।
चाहे तौ रंकते राउकरै चहै रावको द्वारहि द्वार फिरावै॥
रीति यही करुणानिधिकी कविदेवकहै विनती मोहिंभावै।
चींटी के पांयमें बांधि गयन्दहि चाहे समुद्रके पारलगावै॥

सो०। हे प्रभु दीनदयाल अन्तर्यामी सर्वगत।
सुनहु विनय ममहाल रक्षणकरहु प्रहासको॥

निदान ये सब तौ यहां ईश्वर से प्रार्थना करतेरहे और वि

चित्रमाया हुल्लासभरी प्रसन्नतापूर्वक निस्प्रभभवन में पहुंची सब सभासदोंने बड़ा सत्कारकिया और वह आकर महेन्द्र के पास सिंहासनपर विराजगई दासियोंने शृंगारपात्र सुगन्धपात्र और सुवर्णका तांबूलपात्र उसके सामने लाकरधरे उसने तांबूलपात्र को खोलकर दो तांबूल लगाये और अपने हाथ से महेन्द्रको खिलाकर उसके गलेमें बड़ेभावसे अपने हाथ डालदिये और कहा कि अबविलम्ब न कीजिये उसमरेको यमलोक पहुंचाइये यहसुनकर महेन्द्र ने आज्ञादी कि आज रात्रि को अन्धेरनगरी के सबनिवासी इस भवन के नीचे जो मैदान है वहां आकर एकत्रहों और इसकी दुर्दशाकोदेखें इससमय दिन थोड़ारहगया है दिन निकलतेही वहदिन प्रहासको प्रलयका दिनहोगा बड़ी कठिनता से उसके प्राणजायँगे निदान सबनगरमें उक्तवार्त्ता डोंड़ी पिटवाकर घोषित कराईगई और सब नगर में यहबात फैलगई कि कल प्रहास माराजायगा और अपने कियेहुए कर्मों का फलपावैगा निदान नगरवासी वहां आआकर इकट्ठे होनेलगे और आपस में कहतेथे कि देखो उपद्रव करनेका अन्त यहहोताहै कि मनुष्य अपने प्राणखोता है बहुतसे जो बुद्धिमानथे वे कहतेथे कि देखो शूरवीरो यहवही प्रहास है जो शत्रुंजयका परममन्त्री है जिसने अद्भुत ईश्वर को भी नाकचने बिनवारक्खे हैं यह संसारचक्र भी अविनाशी नहीं है जो यहां आयाहै सो अवश्य जायगा बड़े बड़े शूरवीर बड़े २ राजा बड़े २ गुणी बड़े बड़े धनाढ्य और बड़े २ मायावी इस संसार चक्रमें समा गये नित्यता किसी को नहीं है काल एक दिन सब को है ॥

अरल। केतेअर्जुन भीमजराजसवन्तसे। केतेगिने अशंकबली हनुमंत से ॥ जिनकी सुनि सुनि हांक महा गिरि फाटते। तिनधरखायो कालजे इन्द्रहि डाटते १ हों जानो कछु मीठमंतकहँ तांतहै। देख्यो हृदयविचारि

देहयहअनितहै ॥ पान फूल रसभोग अंतकहँरोगहै। प्रीतम प्रभुके नाम
बिना सब शोगहै २ ॥

इतनेमें पुरुष रूपी सूर्यके अस्तरूपी कैद होनेसे निशारूपी स्त्रीने अंधकार रूपी शोक वस्त्र धारणकिये अर्थात् वहरात्रिहुई जिसका प्रातःकाल प्रहासके बधके लिये नियत कियागयाथा॥

दो०। चख नक्षत्र सों निशित्रिया लखि पति इन्दु वियोग।
ओसरूप अँसुआन सों रोवति जनु तजि भोग॥

रात्रि जबहुई महेन्द्रने उसलोहके पिंजरेमें तालाडालकर उस को मायासे ऐसा वेष्टितकिया कि उसके सिवाय और कोई उसे न खोलसके अथवा वह माराजाय तब खुलै इसप्रकारसे प्रहास को क़ैद करके उसने उसके शरीरपर की हुई मायाको लोपित करदिया जब रात्रि विशेषगई और सब अपने २ आनन्द विहारमें लगे और लोहके पिंजरे को माया वेष्टित होनेसे सबकोई प्रहास के निकल जाने के भयसे निश्चिंत्य हुए तब प्रहास ने अपनीथैली में से एक पुतला निकाला और उस का स्वरूप अपना सा बनाकर उसे अपने बदले बैठादिया और आप मरुतदत्त वस्त्र ओढ़कर अदृश्य होगया और उस पिंजरेके एक कोनेमें बैठगया यहां रात्रिभर प्रजा आ आकर इकट्ठीहोतीरही मृदंग बजतारहा सब म्लेच्छ बड़े उत्साहसे कहतेथे कि उसने हमको लूटाहै एक२ लात हमसब भी मारेंगे कोई कहताथा कि मैं अपने त्रिशूलसे और भल्लसे उसकाहृदयछेदूंगा दूसराबोलताथा कि मैंतो उसकीजीभनिकालूंगा तीसराउसकेनेत्र निकालने का उत्साह करताथा कि इतनेमें वह रात्रि व्यतीतहुई प्रातःकाल होनेके समय पौफटी प्रकाश होताआया अंधकार दूरहोता गया चंद्रमा मलीनहुआ तारे गुप्तहुए और आकाशमंडल में दिवाकरने उदयहोकर सब संसारको दीप्तकरदिया॥

सो०। सकुचीं कुमुदिनिसर्व लखिप्रकाश शुचिभानु को।
फूले कमल अखर्व दिनमणिकी शोभा निरखि॥

प्रातःकाल होतेही महेन्द्रने उस मायाकृत तालेको खोला और मायाकोदूरकरके म्लेच्छोंको आज्ञादी कि प्रहासको निकालो यहसुनकर म्लेच्छोंने हाथडालकर उसपुतलेकीग्रीवा पकड़ी और बाहर खींचलिया और प्रहासभी उसपुतलेकेसाथ मरुत दत्त वस्त्रओढ़े अदृश्यरूप बाहरनिकलआया उधर तो म्लेच्छोंने उस पुतलेको मारना प्रारंभ किया और इधर प्रहासने महेन्द्र की सुंदर स्वरूपवान् दासियोंका असबाब जो राज्यसभामें नियतथीं लूटना आरंभकिया और पानपात्र और सुगंधपात्र और ताम्बूलपात्र और २ जो जो पदार्थपाये जालमारकर घसीट लिये और थैलीमें रखकर एक स्त्रीसे कहा कि लो हम जाते हैं उस ने अपनी दूसरी साथी से कहा कि भैनाकोई कहरहाहै कि हम जातेहैं इतनेमें प्रहास ने कहा कि अरे ओ महेन्द्र ले हम जातेहैं यहसुनकर सबम्लेच्छ घबराये इतने में प्रहास ने फिर जालमारकर सुवर्ण के आसन और जड़ाऊ परदे और और रत्नजटित शय्याआदि भी खींचकर अपनी थैली में डाललिये यह देखकर और भी सब घबराये और इसी अवसर में वह पुतला जिसको म्लेच्छ माररहेथे टुकड़े२ होगया औ सबकेसब यह देखकर कि जिसको हम माररहेथे वह केवल एक कागद का बनाहुआ पुतलाथा बड़े लज्जितहुए यह देखकर महेन्द्र ने निद्रावतीसे कहाकि क्योंरी मरी तू अपनाप्रभाव जतानेकेलिये प्रहास के स्वरूपका पुतला बनाकर लेआईथी शीघ्रबता यह क्याबात है वहबोली कि महाराज जब मैं प्रहास को पकड़कर लाईथी तब आपने प्रहाससे बातेंकीथी और जो कहिये कि मैं मायासे पुतला बनालाईथी तो आप अद्भुत जालकी पुस्तक निकालकरदेखें उसमें देखने से आपको सबसत्य और मिथ्या

विदितहोजायगा यहसुनकर महेन्द्रने वह पुस्तकदेखी और उ-
ससे उसको ज्ञानहुआ कि निद्रावती सत्यकहती है वह प्रहास
कोही पकड़कर लाईथी परन्तु वह छल करके निकलगया यह
जानकर महेन्द्र ने अपने मंत्री विश्वमाली को आज्ञादी कि तू
प्रहासको शीघ्रपकड़ला यहआज्ञापातेही विश्वमालीने कुछमा-
याकी कि अकस्मात् पृथ्वी से धूमकी एकलाट निकली और
आकाशतक चलीगई विश्वमाली ने तबकहा कि जहां प्रहास
हो वहांसे उसे पकड़ला उसकासाथ मतछोड़ियो यह आज्ञापा-
तेही वहधूम चारोंओरको प्रहास के खोज में फिरनेलगा और
उधर प्रहासने निस्त्रभभवनसे उतरकर नीचे जो तमाशादेखने
वाले एकत्रहुएथे उनपर जाल मारमारकर उनकी पगड़ी और
टोपी और डुपट्टेलूटे बड़ाकोलाहल होनेलगा लोगभागेकि कोई
दिखाई नहीं देता है और हमलुटेजातेहैं ऐसानहो कि पहिलेकी
भांति फिर कोई विपत्ति आकरपड़े यह अनुमानकरके सबभागे
और क्षणभर में वहां सन्नाटा होगया सबने दुकानें बन्दकरदीं
और अपने अपने घरोंके पट बन्दकरलिये और प्रहास जो कुछ
मिला लूटताहुआ उसनगर के एकद्वार से निकलकर सेनाकी
ओर चलदिया और मरुतदत्त वस्त्रको उतारकर थैलीमें डाला
और आगेका मार्गलिया इतने में उसको उस मायाकृत धूम ने
जाकर चारोंओरसे घेरलिया और उसे आकाशमें भ्रमाताहुआ
विश्वमाली के पास लेआया विश्वमाली ने उसेपकड़कर महेन्द्र
को निवेदनकिया और कहा कि वह अपराधी यह उपस्थितहै
महेन्द्रने उसे देखकर पूछा कि क्यों रे प्रहास तेरा वध किस
प्रकारसे करूं प्रहास बोला कि मेरी समझमें तो इस संसारमें
कोई ऐसा नहीं जन्माहै जो मेरा बाल बांका करसके महेन्द्र
बोला कि तू इससमय मेरे वशमें है मैं जो चाहूं सो दण्डतुझ
को देसक्ताहूं प्रहास बोला कि हां यातो मैं तेरे वशमेंहूं या तूही

मेरे वशमें है परंतु मैं तो यह जानताहूं कि आप के शिरपर इस समय सैकड़ों उपानह पड़जायँगे और स्वरूप आपका दूसराहो जायगा यह सुनकर महेन्द्रने बड़ाक्रोधकिया और कहा कि सत्य कहाहै कि॥ जोनलोभ प्राणको राखै। भली बुरी जो चाहैभाखै॥ और फिर प्रहासकेकहा कि अच्छा तू इसका कोई कारणतौबता कि तुझको क्यों ऐसाविश्वासहै कि मुझको कोई नहीं मारसक्ता है तब प्रहासबोला कि महाराज आप प्रथम मुझको यह बतलाइये कि आप अद्भुतको क्यासमझतेहैं महेन्द्रबोला कि हम उसको अपना परमेश्वर जानतेहैं तब प्रहास नेकहा कि फिरबताओ परमेश्वर के हाथमें सबकीमृत्यु और जीवितहै अथवा नहीं तब सबम्लेच्छबोले कि निस्संदेह ईश्वर सर्वसामर्थ्यवान्है वह जिसको चाहे मारे और जिसकोचाहे जिलावे प्रहासबोला कि मैंजो मायावी म्लेच्छोंको मारताहूं परमेश्वरहीकी आज्ञासे मारताहूं नहींतो मुझसे क्षुद्रमनुष्यकी यह सामर्थ्य कहांहै जोमैं महाराजके अनुचरोंको मारसकूं संसारमें इसदोहेको सबकोई जानताहै कि॥

दो०। जाकोराखे सांइयां मारिसकत नहिंकोय।
बाल न बांका करसके सबजग बैरी होय॥

इसमायाकृत देशमें परमेश्वरने मुझे इसप्रयोजनसे भेजाहै कि मुझेलोग स्मरण नहींकरतेहैं तूजाकर सबकावधकर इससे तुम मुझको परमेश्वरका भेजाहुआ काल जानो परमेश्वर ने जिनजिन नास्तिक और कुमार्गियोंके वधकरनेकी मुझको आज्ञादीहै उनका मैं वधकरूंगा मैं उसपरमेश्वरका अनन्यभक्तहूं यहसुनकर महेन्द्रआदि सबम्लेच्छोंने कहा कि धन्यहै धन्य है विना परमेश्वरकी आज्ञाके पत्तानहीं हिलसक्ता है प्रहास यथार्थकहताहै हमसे बहुतअपराध हुए हैं और हमने परमेश्वरकी बहुतसी आज्ञाओंका पालन नहींकियाहै सत्यहै कि॥ राईघटै न

तिलवढ़ै वैसाहवकीचाह ॥ यहकहकर महेन्द्रउठा और प्रहास केहाथोंकोचुंबनकरके उसके शरीरपर जोमायाकृत वेष्टनथा उसको उतारलिया और कहा कि हेपरमेश्वरके प्रेरितकाल आइये और यहां विराजिये और यहवतलाइये कि किस२की मृत्युआई है प्रहास एक रत्नजटित आसनपर बैठगया और बोला कि यह परमेश्वरका मंत्र में प्रकाश नहीं करसक्ताहूं पर हां परमेश्वरने मुझे बहुतसी सामर्थ्यदींहैं उनको प्रकाशकरके आपकहें दिखाऊं और इनसेपृथक् मेरीवाणीको गानमें मधुरता वहुतदीहै और स्वरूप धारणकरनेकी सामर्थ्यभी दीहै और बाकी परमेश्वरकी इच्छाकाहाल मैं आप नहींजानताहूं तुमको क्यावताऊं महेन्द्र बोला कि कुछ हमकोभी दिखलाइये आपका यहकहना सत्यहै परमेश्वरके चरित्रको परमेश्वरही जानताहै प्रहास यह सुनकर बैठे बैठे मरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर अदृश्यहोगया उससमय सब नेकहा कि निस्संदेह यह परमेश्वरका प्रेरितकालहै परंतु प्रहास उठकर एक एकांतकोनेमें चलागया वहांजाकर उसने वहवस्त्र उतारलिया और बैठकर अपनास्वरूप एकस्त्री अप्सराओंका सास्वरूप रखनेवालीकासा बनाया उत्तमवस्त्र और भूषण धारणकिये और नखशिखसे शृंगारकरने के कारणसे ऐसा जान पड़ताथा ॥

क० । यौवनकी ज्योतिजगे तनकी वनककीनी हीरनकनकछवि महल विलंदकी । ललितविलासकोटि मन्द मृदुहास मतिरास अंगवासु मृगमद वासु मंदकी ॥ मदंकेमदनवन मदनैन मन्दिरसे गति गरवीली मदभौकल गयंदकी । अधिकअँध्यारीमें उज्यारीहोति चन्दकी त्यों चन्दकी उज्यारीमें उज्यारी सुखचन्दकी ॥

निदान ऐसास्वरूप बनाकर प्रहास महेन्द्र के सन्मुखआया और दंडवत्की महेन्द्र उसके रतिकेसे स्वरूपको देखकर चकितहोगया औरपूछा कि हे सुंदरी मनोहरस्वरूपिणी तू कौन है और यहां कैसे आईहै यहसुनकर वहसुन्दरी बोली ॥

दो०। मोहिंभरोसो रीझिहैं उझकि झांकि एकवार।
रूपरिझावनहार वह यह नैना रिझवार॥

हेमहाराज मैं आपकी दासीहूं और आपके वियोगसे उदासीहूं यहसुनकर महेन्द्रने उसे हाथपकड़कर अपनेसमीप बैठा लिया यह देखकर रानी विचित्रमायाको बड़ादाह हुआ और चित्त उसका मलीनहुआ उससमय वहसुंदरीबोली कि हेरानी विचित्रमाया मैं स्त्री नहींहूं किंतु प्रहासनामी बहुरूपियाहूं यह सुनकर महेन्द्र स्तब्धसाहोगया और चित्तमेंकहनेलगा कि निस्संदेह यह हमारे ईश्वर अद्भुतका अनन्यकृत भक्त है निदान उसने बहुतकुछद्रव्य प्रहासको पारितोषिककीभांति दिया और बड़ेसन्मानपूर्वक कहनेलगा॥ चौ०॥ अद्भुतप्रभुकीतूगतिजानै। तोकोप्रभु अद्भुतबहुमानै॥ अबआपकोउचितहै इससभाकेगान श्रोताभिलाषियोंकी इच्छाको अपनी मधुरवाणी सुनाकर पूरा कीजिये यहसुनकर प्रहासने गाना आरंभकिया प्रथमतो बड़ी उत्तमगति से नृत्यकिया और पीछे वांसुरी बजाकर गानेलगा उसकोसुनकर सबसभाकेलोग चित्रकेसेलिखेरहगये और उसने निम्नलिखितपद गाया॥

अष्टपदी राग सोहनी। चलत मलय पवनकी मदनमनजगाइ। खिलनविविध कुसुमके विरह हृदय दुखदाइ १ दुखपावत तबविरहे वनमाली॥ ध्रु०॥ हिमकर किरण दहनतेंमरणमन मनाइ। मदन विशिख लगेतेबिलपति अति विलखाइ २ मधुपध्वनि न सहत है श्रवण राखत मूंदि। विरहदुखदाहं निशिदिन हियअतिरूंदि ३ तजिसदन सुख सिगरे बसतवन घनधाम। विकल धरतल लोटै जपतरहत तुवनाम ४ भणित कविजय देवे हरि विरह विलास। सरस विभव मनपावै सुकृत उदयत जास ५॥

यह सुनकर सबमदोन्मत्त से होगये उस समय प्रहास नाचता नाचता मद्यालयके समीपचलागया और उठाने धरनेमें उसमद्यमें मूर्च्छाकर चूर्णकी बनीहुई मद्य मिलाकर एक

पात्र उठालाया और पानपात्र को मद्यसे पूर्ण करके महेन्द्र के सन्मुखगया और पात्रको उछालकर और शिरपर रोककर शिर को महेन्द्रकेआगे झुकाकर मद्यपात्र निवेदनकिया महेन्द्र तो प्रेमकी उमंगमें भराहुआथाही बड़ेप्रेमसे उसपात्रको लेकर पी गया फिरतो जितने सभासदथे सब उससुंदरीके सुंदरगाने पर मोहित होकर मांगमांगकर मद्य पीनेलगे और प्रहास सबको मूर्च्छाकर चूर्ण निर्मित मद्य मिलीहुई मद्यभरभरके पानकराने लगा जब शीतलवायु का झोंकालगा महेन्द्रने पुकारकर कहा कि हे प्रहास पीनेदोसो ईश्वर आकर तेरा गानसुनरहे हैं और अद्भुत परमेश्वर और मायाकृत चमत्कारकर्ता ईश्वर भी खड़े हुए तेरेगानकी प्रशंसा कररहेहैं प्रहासबोला किसबकी टांगेंली-जिये और बुलाकर बैठाइये तब महेन्द्र मदोन्मत्त होनेसे वि-चित्रमायाका हाथ पकड़कर नाचताहुआ उठा और मुखकेबल गिरपड़ा और सब सभाके म्लेच्छ भी आपसमें लड़ते भिरते अचेत होगये कोई किसीकी मूंछ उखाड़ताथा कोई किसीकेधौल लगाताथा कोई अपनेकुटुम्बकी कथाकहताथा निदान बक झि-कके जब सब अचेत होगये तब प्रहास अपनी भुजाली निकाल कर म्लेच्छोंके शिरकाटनेलगा और दशबीसके शिर काटडाले और जालमारकर जोकुछ वस्त्र और द्रव्य और पात्रमिले लूटने लगा उससमय मायावी म्लेच्छोंके मरनेपर बड़ाभारी कोलाहल हुआ चारोंओर अंधकार छागया और अग्नि और पाषाणों की वर्षाहुई और प्रहास भुजाली लियेहुए महेन्द्र और विचित्र-मायाका शिर काटनेचला परंतु जैसेही वह सिंहासनके समीप पहुंचा अकस्मात् पृथ्वी फटी और उसमेंसे कईअप्सरा हाथमें पिचकारी सुगंधित जलके घट लियेहुए प्रकटहुई और महेन्द्र के शिरको अपनी जंघापर रखकर उस सुगंधित जलकी पिच-कारियां भरभर मुखपर मारीं औरकहा कि हेमहाराज निद्राको

आगिये यह सुनतेही महेन्द्र चैतन्य होगया और वे अप्सरा वहींपृथ्वीमें समागई उससमय प्रहास उनलोथोंमें जाकर लेट रहा जो म्लेच्छोंके मारेजानेसे पड़ीथीं और लेटेलेटेउसने एकरक्त से भीगाहुआ वस्त्र अपनी थैलीसे निकाला और उसको अपने गलेमें लपेटलिया और रुधिर भरेहुए मांसका खण्ड अपने मुखपर रखलिया जिससे वहभी और म्लेच्छों की भांति एक मृतक मालूम होनेलगा परंतु जबमहेन्द्र चैतन्यहुआ उसने देखा कि सब सभासद मूर्च्छित पड़े हैं और बहुतसे मरेहुए हैं यहदेखकर उसने आकाशकी ओर उँगली दिखाई कि तत्काल बादल घिरआये और जलकी वर्षा होनेलगी और उस जल के पड़ने से जितने म्लेच्छ निश्चेष्ट पड़ेथे सब चैतन्य होगये उससमय विचित्रमायाबोली कि क्योंमहाराज प्रहासने कैसाछल किया महेन्द्र बोला कि मुझ से बचकर कहां जायगा मैं अभी उसको पकड़ताहूं यहकहकर उसनेसेवकोंसे आज्ञादी किजोपदा- र्थयहांसे लुटगयेहै सबलाकर शीघ्र इसस्थानको पूर्ववत् अलं- कृतकरो यह सुनकर म्लेच्छगण दौड़े और आसन औरशय्या और मद्यपात्र और पानपात्र और वस्त्र आदि जो जो पदार्थ प्रहासने लूटकर अपनी थैलीमें डालालियेथे सब लेआये और फिरसे उस स्थानको पूर्वकी भांति अलंकृतकिया तब महेन्द्रने अद्भुत जालकी पुस्तक निकालकर देखातो उससे मालूमहुआ कि प्रहास अपनारूप मृतक म्लेच्छोंकासा बनाकर म्लेच्छों की लोथोंमें लेटा है उसको किसी से पकड़वा और देखतू यहां मतठहरै अदृश्यखण्डमें कहीं अन्यत्रचलाजा तुझपरकुछघड़ी बहुत भारीहैं यहदेखकर महेन्द्रने उनम्लेच्छोंको जोलोथ उठा रहेथे आज्ञादीकि अभीलोथें मतउठाओ इनमें प्रहासहै महेन्द्र यह कहही रहाथा कि समीररूपा बहुरूपिणी प्रहास के पकड़े जानेकी ख़बर सुनकर वहां आपहुंची महेन्द्रने उसेआज्ञादीकि

देखतो इनलोथोंमें प्रहास कौनसाहै पहँचानकर उसे पकड़ ले
यह सुनकर समीररूपा उनलोथोंमें प्रहासको ढूंढ़नेलगी और
सब म्लेच्छ उसकी ओर देखनेलगे उससमय महेन्द्र सबउस
ओर देखतेहुए जानकर अंतर्द्धान होगया और अपने स्वरूप
का पुतला मायासे बनाकर वहां बैठागया उसकेजाने को किसी
ने न देखा और सबको यही विश्वासरहा कि महेन्द्र बिराजमान
हैं इधर समीररूपा ने सबलोथें देखी और प्रहासको चीन्हकर
छलांगमारी और उसके छातीपर जाबैठी और चाहाकि उसेबां-
धलूं कि इतनेमें प्रहासने अपनेदोनोंपैर समीररूपाकेगलेमें डाल
कर मल्लोंकीभांति कलाखाई कि समीररूपा नीचे औरआपउसके
ऊपरहोगया और तत्काल उसकेमुखसे मूर्च्छाकर चूर्णमलदिया
कि वहमूर्च्छितहोगई और प्रहास उसको गोदमें उठाकर भागा
म्लेच्छ यहदेखकर बड़ेआश्चर्यमेंथे कि यहक्याहोरहाहै परंतु वि-
चित्रमायानेसबसेकहा कि तुमसबबैठेहुए क्यामुखदेखरहेहोशीघ्र
उसकोपकड़ो नहींतो समीररूपाको लेजायगा यहसुनकर सब
म्लेच्छदौड़े परंतु प्रहास निष्प्रभभवनसे उतरकर वायुकेवेगकी
सदृश भागकर अंधेरनगरी में आया और यह विचारकरके कि
यहां सब मायावीही रहतेहैं पकड़लेंगे उसओरके बनमें मार्गी
हुआ जो निष्प्रभभवनके पीछेथा और जो माया से विचित्रमा-
याके विहारकेलिये निर्मितहुआथा दैवयोगसे उसीओरसे प्राता
और बेधिनी दोबहुरूपिणी आरहीथीं उनको देखकर प्रहासने
समीररूपाको एकगर्तमें डालदिया और आप खड्गलेकर उन
दोनोंसे लड़नेलगा इस अंधेरनगरीके सबमार्गोंपर म्लेच्छोंका
आनाजाना सदैव लगारहता है निदान उस मार्ग से महेन्द्रकी
सभाका एकसभासद कीर्तलनामी मायाकृत बाहनपर बैठाहुआ
साथमें कईम्लेच्छ लियेहुए महेन्द्रकी सभाको आरहाथा वह
उसस्थानपर आनिकला जहां प्रहास उनदोनों बहुरूपिणियोंसे

लड़रहाथा और उनको इन अनजान मनुष्यसे लड़तेहुए देख
कर उसनेजाना कि यहप्रहासहै और चाहा कि मायाकरके पक-
ड़लूं कि उन बहुरूपिणियोंने कहा कि हेकीर्तल हमारीविद्या के
विपरीत यहबातहै कि हम शत्रुको मायाकराकर पकड़वावें इस-
से आप इसविषयमें न बोलिये वह बोला कि तुमतो उन्मादिनी
हो शत्रुको सदैव मारना उचितहै यहकहकर वह कुछमाया कर-
नेलगा कि इतने में प्रहास मरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर अदृश्यहो-
गया इसीअवसरमें वेम्लेच्छभी वहांआपहुंचे जोप्रहासकोपकड़
ने निष्प्रभभवनसे दौड़ेथे और उनसे उनबहुरूपिणियोंनेकहा कि
प्रहासने हमारेसन्मुख समीररूपाको अमुकगर्तमें डालदिया है
वेम्लेच्छ समीररूपाका उसगर्तसे निकालनेकोगये परंतु प्रहा-
स मरुतदत्त वस्त्रओढ़ेहुए उसगर्त में चलागया और अपनी
थैलीमेंसे एक कागदका बनाहुआ महासर्प निकालकर उसका
मुख उसगर्तकेबाहर निकालदिया म्लेच्छ उससर्पको बैठाहुआ
देखकरभागे और दूरजाकर ठहरगये और वहां कुंडलखींचकर
बैठगये और दूरही से सर्प वशीकरण मंत्र पढ़ पढ़ कर कंकड़ी
मारते रहे परंतु न कोई समीप आया और न किसी के मंत्र ने
कुछ गुण दिखलाया और वह महासर्प अग्नि की ज्वाला मुख
से छोड़ता हुआ बैठारहा तब सबकोई आपसमें कहनेलगे कि
यह सर्प बड़ा उग्र है किसी से वश न होगा बड़े शोचकी बातहै
कि समीररूपायोंही मारीगई उससमय कीर्तलके एकपरम हितू
नैतल नामसे सबने कहा कितुम जाकर किसी प्रकारसे समीर
रूपाको निकाल लाओ तुमको बहुतसा धन देंगे यह म्लेच्छ
बहुत वृद्ध और बड़ा मायावी था यह सुनकर माया करताहुआ
उस सर्प की ओर चला प्रहास ने उसे आतेहुये देखकर उस
महासर्प को गर्तके भीतर करलिया वह समझा कि मेरी माया
से सर्प हटगया और निर्भयतासे उस गर्तमें कूदपड़ा प्रहासने

वहां पाश के कुंडल तो लगा ही रक्खे थे उन में उलझकर वह म्लेच्छ गिरा और प्रहासने उसके मुखपर सूंड मारकर उसे अचेत करदिया तब प्रहासने फिर उस सर्प को गर्त के बाहर निकाला उसको देखकर सबने समझा कि इस सर्पने नैतल को मारलिया और वे सब फिर उसको वशकरने का यत्न करनेलगे इतने में प्रहासने अपना स्वरूप नैतलकासा बनाकर उसके कपड़े उतारकर आप पहिरलिये और उसको थैलीमें डालकर और उस कृत्रिम सर्प को गर्त के किनारे बैठाकर आप गर्त के भीतरसे निकला और बोलाकि भाई यहां नतो समीररूपाहै न और कोईहै उसेदेखकर और उससर्पको भी बैठादेखकर सबने पुकारकर कहाकि अरे देख वहां वह महानाग बैठाहै भागभाग कहीं काटनले यहसुनकर प्रहास बड़ीतीव्रतासे भागा और कीर्तलके सन्मुख आकर गिरपड़ा और अचेतहोगया और दांती भिचगई म्लेच्छोंने आकर उसेउठाया और देखाकि उसका शरीर नीलापड़गयाहै तबकीर्तलने उनबहुरूपिणियोंसे कहा कि समीररूपा हम से नहीं निकलसक्ती है तब वेबहुरूपिणी अपने आप निकालनेका यत्न करनेलगीं और कीर्तल उस अपनेहितू अर्थात् प्रहासको वाहनपर डालकर महेन्द्रकी सभा में आया और महेन्द्रको सिंहासनपर बैठाहुआ देखकर दूरसे दंडवत्की और सिंहासनकेसमीप आकर सबवृत्तान्त कहसुनाया महेन्द्र तो चलाहीगयाथा और उसका यह प्रतिबिम्बी स्वरूपथा उसनेआज्ञादी कि किसी वैद्यको बुलाओ कियह इसकी चिकित्सा करै यह सुनकर अंधेरनगरीसे वैद्य बुलाकरआया और उसने विषहरऔषधी प्रहासकोदीं और उसको एकस्थानमें शय्यापर लिटादिया और चिकित्सा होनेलगी इसअवसरमें समीररूपा चैतन्यहोगई और फलांगमारकर उसगर्तसे निकली और वहां नागको देखकर भयभीतहोकर ऐसीभागी कि पीछे फिरकेभी न

देखा और महेन्द्रकी सभाका मार्गलिया राहमें उसको बोधिनी और प्राता मिलीं और उनसे उसने पूछा कि तुमको प्रहासका कुछ हाल विदितहै कि कहांहै वह बोलीं भैना तुझेगर्तमें फेंक कर वह अदृश्यहोगयाथा हम जानती हैं निकलगयाहोगा तब समीररूपाने कहा तो फिर सभामेंजाना निष्फलहै वहां जानेसे और लज्जाआवेगी कि प्रहासको न पकड़सकी चलो इसबन में चलकर प्रहासको ढूंढें यह सलाहकरके वे तीनों बहुरूपिणी बनमें चलीगई और यहांप्रहास चिकित्सा होनेपर चैतन्यहुआ और इसी अवसरमें महेन्द्रकी सवारी बड़ी धूमधामसे आई सबने खड़ेहोकर बड़े आदरसे लिया और वह सिंहासनपर विराजमान हुआ और उसप्रतिबिम्बी स्वरूपको आज्ञादी कि जाओ वह पुतला उसीसमय अंतर्द्धानहोगया उससमय सब म्लेच्छ कहनेलगे कि प्रथम जो प्रहासने हम सबका अपमान कियाथा उसका कारण यहथा कि हमारा राजा तो थाही नहीं वह उसका प्रतिबिम्बी स्वरूपथा दूसरा बोला सत्यतोहै भला मायाकृत देशका स्वामी मायावी राजाओंका राजाधिराज क्यों मूर्च्छितहोनेलगा तीसरा बोला कि महेन्द्रका निजस्वरूप हम ने आजतक नहींदेखा और न जानतेहैं कि निजस्वरूप उसका कौनसाहै हमारी सब बयस सभामेंही ब्यतीतहुईहै भला महेन्द्र के समीपतक कौन जासक्ताहै न जानें वहकहां तो रहताहै और क्या उसका अधिकारहै निदान महेन्द्रके आनेपर नृत्यहोनेलगा और फिर आनन्दहोनेलगा उससमय कीर्तलने अपने सुहृद का सब वृत्तांत फिर महेन्द्रसे निवेदनकिया महेन्द्र बोला कि भला बड़ाअच्छाहुआ नहीं तो तुम्हारा सुहृद् माराजाता अब कहो कैसाहै वह बोला कि अब तो मायाकर्त्ताकी कृपासे अच्छा है उससमय प्रहास भी अपनी जगहसे उठकर महेन्द्रके सन्मुख आया और दंडवत्की महेन्द्रने पूछा अबकैसेहो उसनेकहा कि

मायाकर्त्ताकी कृपा और महाराजकी दयासे अच्छाहूं तब महेन्द्रने उसे बैठनेकी आज्ञादी और वह एकआसनपर बैठगया और नाच देखनेलगा परन्तु जो वेश्या गारही थी उसको वह नाम धरनेलगा कि देखिये यहां बेसुरीहोगई यहां तालचूकी यहां कंठ इसका भरगया यहां सुर लहरागया यहां समजाता रहा यहां वाद्यसे पृथक्होगई यहां कंठ भरआया यह सुनकर महेन्द्र बोला कि हे नैतल मालूमहोताहै कि गानविद्यामें तुम बहुत निपुणहो वह बोला कि महाराज आपकी दयासे मैंने बड़े बड़े उत्सव देखेहैं और गानविद्याही पर कुछ नहीं है हरप्रकार की विद्या में जानताहूं क्योंकि श्रीमहाराज ऐसे राजाकी सभा को सदैवसे देखता चलाआताहूं तब महेन्द्र बोला कि अच्छा तुम अपनागान कुछसुनाओ यह सुनकरप्रहासने दण्डवतकी और सन्मुखबैठकर यहपदउठाया॥

अष्टपदी रागरामकली ता० ३। रतिसुखकारी कुंजविहारी रहसिनिकुंजपधारे। चलिरसलीजै विलम्बनकीजै जितप्राणेशपियारे १ धीर समीरे यमुनातीरे बसतबने बनमाली। गोपीपीन पयोधरमर्दन चञ्चल करयुगशाली॥ ध्रु०॥ नामतिहारो तहां पियारो वंशीमोहि बजावै। रज तवतनकी उनके मनकी लागि अभिलाषपुजावै २ पक्षीफरके दलकेखरके तवआगम उरमानत। सेज सँवारत पन्थ निहारत चकितन धीरज आनत ३ बजत अधीरैं तजिमंजीरैं रिपुजों तरल विलासहिं। सघननिकुंजनिअतितम पुंजनि नीलधारचलि वासहिं ४ हरिउर सोहतमुक्तामोहत मनुघन ढिगबनमाला। बिजुरीलों चलि पियसों हिलि मिलि रतिसुख समयरसाला ५भूषणतनधरि बसनदूरकरि पिय अँगअंतर पारत। कुसुम सेजपर पियहि अंकभरि शरन असमशरमारत ६ हरिअभिमानी निशि नियरानी समय बिलँबनहिंकीजे। जिनतैजीजे सोनहिं खीजै रसलीजै सुखदीजै ७श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयं। प्रमुदितहृदयं भजिहरि सदयं नमतसुकृत कमनीयं ८॥

महेन्द्र उक्तगानको सुनकर बहुत प्रसन्नहुआ और प्रहास को बहुतकुछ पारितोषिकदिया तब प्रहासने विनयकी कि महा-

राज मुझको एकविद्या और आती है उसको मेरेपितामह वंग देशसे सीख आयेथे और मैंने उनकी पुस्तकोंमें लिखा देखकर सीखलियाहै वह यहहैकि मैं एक वर्त्तिका प्रज्वलित करदेताहूं और उसके प्रभावसे अप्सरा आकर नाचनेलगती हैं और राजाइन्द्रकी सभाभी दृष्टिआतीहै महेन्द्रने उसके देखनेकी कांक्षाकरके कहाकि हेनैतल शीघ्र उसवर्त्तिकाको प्रज्वलितकर हम भी देखें कि वहकैसी विद्याहै प्रहासने कहाकि महाराज पांचसेर घी और तैल और राल मँगादीजिये निदान महेन्द्रकी आज्ञासे तत्काल उक्तपदार्थ आगये तब प्रहास ने वस्त्र की आड़ करके एकांत में बैठकर एकवत्ती बड़ीमोटीबनाई और उसमें सेरों मूर्च्छा कर चूर्णलपेटा और बीचसभामें बैठकर उसवत्ती को प्रज्वलित किया और उसकाधूम चारोंओर सभामें फैलनेलगा उससमय प्रहास बोलाकि दोघड़ीमें अप्सराओंका नृत्यहोने लगेगा सब तो उसवत्तीकी ओर देखतेरहे आप एककिनारे बैठकर कुछ बुदबुदानेलगा जिससे सबको यह मालूमहो कि कुछमंत्र पढ़रहा है और महेन्द्र और विचित्रमाया और सब सभासद उसवत्ती की ओर देखतेरहे और तमाशा देखनेवाले इतने इकट्ठे होगये कि एकदूसरे के ऊपर झुका पड़ताथा कि देखें अब क्या होता है जब दोघड़ी बीतगई और धुआं उस वत्तीका सबके ब्रह्मांडमें भलेप्रकार जाचुका तब सबकेसब उस मूर्च्छाकर चूर्णके आवेशसे मदोन्मत्तहोकर कहनेलगे भाईसच्चे ही अप्सरा नाचरहीं हैं कोई कहताथा किराजा इन्द्रभी बैठे हैं और कोई उठकर आप नाचने लगताथा निदान महेन्द्र और विचित्रमाया आदि सब सभासद मूर्च्छित होगये तब प्रहासने फिरिभुजाली निकालकर पहिलेकी भांति दशबीस म्लेच्छोंके शिर काटडाले और जालमारकर संपूर्ण पदार्थ जो दूसरीबार मँगाकर सभाको अलंकृत कियाथालूटलिये और म्लेच्छोंकेमर-

नेंसे महाकोलाहल प्रारंभ हुआ आंधी बड़े बेगसेचली अग्नि
और पत्थर बरसने लगे लीजियो पकड़ियोका शब्द चारों ओर
पूरगया बिजली चमकनेलगी औरऐसा जानपड़ताथा कि प्रलय
काल आगयाहै उससमय प्रहास खड्ग लेकर महेन्द्रका शिर
काटनेको गया परंतु वहसमीप न पहुंचने पायाथा किअकस्मात्
पृथ्वी फटी और उसमेंसे अप्सरा निकली और उसने सुगंधि-
तजलकी पिचकारी महेन्द्रके मुखपरमारी और उसे चैतन्यकर-
केआप फिर पृथ्वी में समागई उससमय प्रहास मरुतदत्त बस्त्र
ओढ़कर अदृश्यहोगया और निष्प्रभ भवनसे उतरकर चलदि-
या जब महेन्द्र चैतन्यहुआ उसने देखाकि सभा सब खड़मंडल
होगई है तुरंत मायाकृत बादलोंसे जलवर्षाकर सब सभासदों
को चैतन्यकिया और उस मूर्च्छा करनेवाली वर्तिकाको बुझवा
दिया और मृतकोंकी लोथोंको उठवाकर फिरसे संपूर्णपदार्थ मँ-
गवाकर सभाको अलंकृतकराया जब सबसभासद महेन्द्रसहित
फिर अपने २ योग्य आसनोंपर बैठगये सब प्रहासके छलपर
आश्चर्य करने लगे और महेन्द्रने बातबनाकर कहाकि इसमें
कुछसंदेह नहीं है कि प्रहास हमारे अद्भुत ईश्वरका अनन्य
भक्तहै वह किसीप्रकारसे न माराजायगा और जिसजिसके मार
नेको परमेश्वरने आज्ञादीहै उसउसको वहअवश्य मारैगा उस-
काकहना सत्यहै परंतुपरमेश्वर अद्भुतने मुझको प्रहासके मार-
नेकी आज्ञादीहै इससे हे विचित्रमाया तुमजाओ और निशा-
करीकी सेनासे युद्धकरो मैं अब और कुछउद्योग करताहूं यहां
पर प्रहासको बोलाना अच्छा नहीं है यहसुनकर विचित्रमाया
मायाकृत मयूरपर सवार होकर अपनेसाथ परमसुंदरी दासि-
योंको लिये हुए अपनी सेनाकी ओर चलदी और प्रहासजो
अंधेर नगरी में आया विचारनेलगा कि पहले जो मैं गयाथा
तो मार्ग न मिलाथा रक्तवाहिनी नदीके तटपर भटकता फिर-

तथा अबभीजो उसओरसे जाऊंगा तौ जा न सकूंगा यह वि-
चारकर वह अपना स्वरूप म्लेच्छों कासा बनाकर अन्यमार्ग
के मिलने की खोजमें उस अंधेरनगरी में घूमने लगा और
एक स्थानपर उस ने कुछम्लेच्छों को वार्त्तालाप करतेहुए देखा
एक कहताथा कि प्रहासभी एकही आपत्तिरूप है महाराज को
दोबार धर्षणाकरके निकलगया दूसराबोला कि यहांसे जा न
सकैगा क्योंकि बीचमें नदीपड़तीहै तीसराबोला कि जो पूर्व के
द्वारके मार्गसेजायगा तो प्रत्यक्षखंडमें पहुंचजायगा क्योंकि इस
नगरके चालीसद्वारहैं चौथाबोला कि भला जो इतनाबड़ा छली
है वह क्यामार्ग न जानताहोगा प्रहास उनकीबातें सुनकर पूर्व
के द्वारकीओर चलदिया और जब नगरके किनारेपहुंचा उस-
ने एक बड़ाभारी द्वारदेखा और वहांपर सहस्रों म्लेच्छ नाना
रूपधारी उसकी रक्षाकररहेथे प्रहासतौ म्लेच्छोंकारूप धारण
हीकियेथा दौड़ाहुआ चलागया द्वारपालकोंने पूछा कि कहांको
जाओगे वहबोला कि मैं विचित्रमायाकी सेनाका नौकरहूं प्रहास
को पकड़नेजाताहूं मुझसेबातें मतकरो क्योंकि जो देरहोजाय-
गी तौ महाराज अप्रसन्नहोंगे यह कहताहुआ वह उस द्वारके
बाहर निकलकर मार्गीहुआ जब थोड़ीदूर निकलगया देखा कि
एकओरतौ रक्तवाहिनी नदी है और दूसरीओर विचित्रमाया
की सेना पड़ीहुईहै यहदेखकर वह प्रसन्नहुआ और आगेबढ़ा
और थोड़ीदूरचलकर निशाकरीकी सेनादृष्टिपड़ी निदान प्रहास
सेनामें आया जिसने उसेदेखा वहीं उससे लिपटकरमिला और
सबसेनामें कोलाहल मचगया कि प्रहासआये प्रहासजी आये
उसकोसुनकर सबसेनापति जो उसकेलिये ईश्वरसे प्रार्थनाकर
रहेथे अपने २ डेरोंसे निकलआये और निशाकरी और चन्द्र-
चूड़ाऔर केसरीआदि सबआकर बड़ीप्रसन्नतासे उससेमिले
और उसकेऊपर द्रव्यनौछावरकरके उसको सभामेंलिवालेगये

जयदुंदुभी बजनेलगी जब प्रहासजाकर सभामें उत्तमआस-
परबैठा उसने महेन्द्रकी सभाका सबवृत्तांतकहा उसकोसुनकर
सबलोग खिलखिला खिलखिलाकर हँसनेलगे और उधर वि-
चित्रमायाभी निष्प्रभभवनसे चलकर अपनीसेनामें आई सब
सेनापति उसकी आगोनीकोगये और उसकाआगमन सूचित
करनेके वाद्यबजायेगये और आकर सिंहासनपर बैठगई औ
युद्धकरनेका उद्योग करनेलगी परंतु अब हिडंबाका वृत्तांतसुनि-
ये जो अद्भुत मिथ्या ईश्वरकीसहायता करनेकोचलीथी वह माया
कृत विमानपरबैठकर सेनासाथ लियेहुये कूचऔर विश्रामकर-
तीहुई बड़ीधूमधामसे रत्नाकर पर्वतपरपहुंची उससमय अद्भुत
अपनी सभामें सभासदोंसहित बैठाहुआथा और नाचहोरहाथा
कि इतनेमेंमायाकृत लाललाल बादल मायावीम्लेच्छोंकाआग
मन सूचक आकाशमें प्रकटहुए उनको देखकर चित्रांगद और
महावीरने जाना कि कोईमायावी म्लेच्छआताहै और दोनों स-
त्कारकरनेकेलिये उठकर बाहरआये निदान सब म्लेच्छीयसेना
उतरी और हिडंबाभीउतरी उसके परमसुंदर स्वरूपको सबने
देखाइसम्लेच्छिनीने अपनास्वरूप मायासेबड़ाही मोहनी बना-
याथा कि उसकावर्णन युद्धकेसमय कियाजायगा निदान अद्भुत
के सेनापति आदि अधिकारी हिडंबाकी आगौनीकरके उसको
लिवालेगये और चित्रांगदने उस म्लेच्छीय सेनाको शत्रुंजय
महाराजकी सेनाकेसामने उतारा और वहांडेरे तंबू और सिबिर
लगकर बाजार लगवादिया परन्तु हिडंबाने आकर अद्भुतको
ईश्वर जानकर साष्टांग दण्डवत्की उससमय अद्भुतनेकहा कि
अपना शिरउठा मेरी कृपा तेरेऊपरहै यहसुनकर हिडंबा उठी
और एक परम उत्तम आसनपर बैठगई तब अद्भुत ने उसे
अपनी प्रसादीदी उससमय हिडंबाबोली कि हेपरमेश्वर आप
के कौनसे ये जीवहैं जो आपकी समताकरतेहैं वह बोला कि यह

तथा बहुत बड़ीहै परन्तु यह कलि अर्थात् चित्रांगद उसकथा को पूरापूरा जानताहै तब हिडंबाने चित्रांगदसे पूछा चित्रांगद ने शत्रुंजयके उत्पन्नहोने और राजाविशल्यके समयसे उपाधि उठाने का सब वृत्तांत जैसा कि इस ग्रंथमें पूर्वमें भी वर्णनहो-चुकाहै कहा और बोला कि हेरानी हिडंबा इस शत्रुंजय की प्रबलताका दृष्टांत तो तुम्हारे मायाकृतदेशमें प्रहास और राज-पुत्र भानुविक्रम मौजूदहैं कि आजतक महाराज महेन्द्रसे न पकड़ागया हिडंबा बोली कि युद्धके वाद्य मेरेनामसे बजवाये जावें मैं क्षणभरमें सबका नाशकरदूंगी चित्रांगद हँसकरबोला कि आप अभी संसारमें आई हैं कुछदिनरहिये और यहां की वायु देखिये फिर अंतमें तो सबका कालहीहै हिडंबा बोली कि आपको तो मूत्रमें भल्ल दीखतेहैं चित्रांगदबोला कि हेरानी मैंने इस कारणसे यह बात कहीथी कि आपके देशमें एक प्रहास बहुरूपिया गया है और यहां एकलाख अस्सीसहस्र दूसरे प्रहास मौजूदहैं और वहां एक राजपुत्र भानुविक्रमगयाहै और यहां भानुविक्रमके पिता और पितामह विराजमानहैं इन पर-मेश्वरने अपने इन जीवोंको ऐसाकठिन उत्पन्नकियाहै कि न मारेमरतेहैं और न काटेकटतेहैं वह बोली इन्हीं ईश्वरकी कृपा चाहिये देखो मैं इनदुष्टोंका क्या हाल करतीहूं निदान दो चार दिन तो हिडंबाने विश्रामकिया नाच और उत्सवहोतारहा म-हावीरने हिडंबाका हरप्रकारसे बड़ासत्कारकिया और चौथेदिन तीसरे प्रहरकी सभामें हिडंबाने अद्भुतसे विनयकी कि आजमेरे नामसे युद्धके वाद्य बजनेकी आज्ञादीजिये कि कल इनसब वैष्ण वोंको मारकर यमपुरमें पहुँचादूं निदान जब वहदिन समाप्तहुआ और सूर्य पश्चिमदिशामें जाकर अस्ताचलपर पहुँचे और अस्तंगतहुए और अंधकाररूपी राजाका कालेरंगका डेराखड़ा होकर कालीडोरियां सबसंसारमें खिंचगई अर्थात् रात्रिहुई ॥

सो० । भये जो दिनमणिअस्त प्रभागई आकाशकी ।
जनुवियोग सों ग्रस्त नभतन कृष्णाम्बर धरं ॥

तब अद्भुतकी सेनामेंयुद्धके वाद्यबजनेलगे उससमय वैष्णवी सेनाके दूतोंने महाराजाधिराजकी सभामें आकर इसप्रकार से विनयपूर्वक आशीर्वाद देकर सब वृत्तांत कहा ॥

क० । श्रीपति महाराजअधिराज श्रीसुवीरवीर तेजमार्तंडसों अखंडतो बनोरहै । राजपाट धान्यधन वृद्धिपाइ दिन दिन पुत्रदार आदि सुख नितही जुहोरहै ॥ तेरी शूर वीरताओधीरता निरखिहिय वैरीगण हाय भयभीत बशमें रहैं । सुहृदसमाज सुखसाज ऋधि सिधि आदि यावत नक्षत्रपति तावत भरोरहै ॥

हेमहाराजाधिराज एक म्लेच्छिनी हिंडबा नामी मायाकृत देशसे युद्धकी कांक्षामानआईहै और शत्रुके दलमें युद्धकेवाद्य बजरहेहैं यह सुनकर वैष्णवीसेनाके महाराजाधिराजने आज्ञा दी कि हमारीसेनामें भी युद्धके वाद्य बजायेजावें यह आज्ञा पातेही प्रहासके पुत्र सुवासने वाद्यालय खोलकर कार्तिकेयी भेरीको बजाया और उसके शब्दसे आकाश गूंजनेलगा और सब योद्धा सन्नद्धहोकर युद्धकी तयारी करनेलगे ॥

चौ० । महाघोपकर वाद्य अनूपा । नानाविधि अरि भयदस्वरूपा ॥
सैन वैष्णवीमें तब बाजे । सो सुनि शूर वीर रस गाजे ॥

निदान रात्रिभर सब शूरवीर अपने २ अस्त्र शस्त्रोंकोप्रहार के लिये ठीक करतेरहे और जब वह रात्रि व्यतीत हुई और अंधकार दूरहुआ और सूर्यने आकाश मंडलमें उदयहोकर संसारको अपने प्रकाशसे प्रकाशित करदिया ॥

सो० । भयो सकल तमदूर प्रभाभई आकाशमें ।
प्राचीदिशिमें सूर उदय भये जेहिकालमें ॥

तब अद्भुत मिथ्या ईश्वर बड़े ठाटसे सवारहुआ और म्लेच्छीय सेनाको साथलिया और हिंडबा मायाकृत विमानपर चढ़कर रंगभूमिमेंआई और अपनी सेनाको व्यूहितकरनेलगी

उससमय महाराज शत्रुंजय भी नित्यकर्मसे निवृत्तहोकर सब सेनापतियों सहित महाराजाधिराजके डेरेपरआये थोड़ी देरमें श्रीमहाराजाधिराज की सवारी निकली सबने यथायोग्य दंडवत्की और उनको मध्यमेंकरके सबरणभूमिमेंआये सेनाव्यूहित कीगई रंगभूमिकी ऊंची नीचीपृथ्वीको युद्धसेवकोंने बराबर करके जलका छिड़काउ किया और फिर कवीश्वर शूरवीरोंको रणका उत्साह दिलानेकेलिये वीररस के पद पढ़नेलगे और शिक्षा करनेलगे॥

दो०। सुनहु शूर रणबांकुरे हमरे शिक्षाबैन।
रणमें तजिबो प्राणसम धर्मदूसरोहैन॥

सो०। मरैमिलै सुरधाम जिये विजययश भूमिधन।
लहिऐसो संग्राम को रणकरिबोनहिंचहहि॥

चौ०। यातें सुनहु शूरबर भाई। करि रण जग में लेहु बड़ाई॥
आजुभीमसमरणमेंलसिके। शत्रुहि अजयदेहुसबमिलिके॥

निदान उक्त शिक्षाकरके कवीश्वर तो एककिनारे हटगये अद्भुतसे आज्ञा लेकर चांडूरनामी मल्ल रणभूमिमें आया और अपने आयुधोंकी सुशिक्षा दिखाकर ललकारकरबोला कि शत्रु सेनामेंसे कौन आकर मुझसे युद्ध करसकताहै जिसको मारकर मैं यमलोक में पहुँचाऊं यह सुनकर वैष्णवीसेन से चीनपति का पुत्र वीरसेन नामी महाराज शत्रुंजय और राजाधिराज से आज्ञालेकर उससे युद्धकरने को रणभूमिमें घोड़ाबढ़ाकर गया और दोनों भल्ल लेकर परस्पर प्रहार करनेलगे वीरसेन ने अपने भल्लसे चांडूरके भल्लको काटडाला यहदेखकर हिडंबाने छलमायाकी कि उससे वीरसेनके शरीरकी शक्तिजातीरही और चांडूरनेउसकी कटिपकड़कर घोड़ेपरसे गिरादिया और छातीपर चढ़कर उसकेहाथ पैरबांधदिये और सेनाकीओर देखा कि राजा महावीरके बहुरूपियों ने आनकर मूर्च्छाकर चूर्ण सुंघाकर वीर-

सेनको अचेतकरदिया और उठाकर अपनीसेनामें लेगये और वहां उसको कैदकिया तब चांडूरने फिर पुकारकरकहा कि और जिस किसीको प्राण प्यारेनहो वह आकर मुझसे युद्धकरे यह सुनकर कैकेय अपने अश्वको बढ़ाकर युद्ध करनेको गया परंतु उसकी भी वही गतिहुई और वह भी पकड़ागया इसकेपीछे वैष्णवी सेनासे रणवीर युद्धकेलिये गया वहभी हिडंवाकी माया से शक्तिहीन होजानेसे पकड़ागया और उसके उपरांत रण-विजय और रणजीत और रणविक्रम और रणबाहुआदि सत्रह शूरवीर युद्धकरने को क्रमसे गये परन्तु सबमायाके कारण से पकड़े गये उससमय वैष्णवी सेनामें ध्वजा ऊंचीकीगई और सब शूरवीर युद्धाभिलाषी हुए परंतु उससमय राजपुत्र इन्द्र-विक्रम ने अपना घोड़ा बढ़ाया और राजाधिराज से आज्ञा युद्ध की मांगी राजाधिराज ने पारितोषिक देकर उसको आज्ञादी और कहा कि परमेश्वर तेरी रक्षाकरे तब वह अप-ने पिता शत्रुंजय के पासआया और युद्धकी आज्ञामांगी महा-राज शत्रुंजय ने पुत्रको हृदय से लगाया और उसके गले में मायाको नष्ट करनेवाली वासवी माला पहिरादी और अभेद्य कवच उसे देकर विदाकिया तबवह राजपुत्र उस उत्तमवायुवेगी अश्वको दौड़ाकर रणभूमिकी ओरचला वह घोड़ा क्षणमात्र में चांडूरके सन्मुख लेगया चांडूर उसे देखकर घबराया और शीघ्र तीव्र खड्ग निकालकर राजपुत्र के शिरपर मारा राजपुत्रने मण्डल करके प्रहारको बचाया और फिर अपना खड्गखींच-कर और गर्जना सहित चांडूर के शिरपर मारा उसने उसको ढालपर रोका और हिडंवा ने अनेकप्रकार की मायाकी परंतु वासवी माला के कारणसे माया न चली और राजपुत्रके खड्-गने उस चर्मको काटकर चांडूर के शरीरके दोभाग करदिये उससमय वैष्णवी सेना में जय दुंदुभीबजी और इंद्रविक्रम ने

युद्धकेलिये शत्रुसेनाके योद्धाओं को बुलाया उससमय हिडंबा आप रणभूमिमें आई और मायाकृत एकपुतली अपने स्वरूप की बनाकर उसेरणभूमि में छोड़कर आप अंतर्द्धान होगई निदान उस पुतलीने खड्ग खींचकर राजपुत्रपर प्रहारकिया राजपुत्र उसके प्रहारको मण्डलकरके बचागया और एकगदाऐसी मारी कि उससे उस पुतलीके टूटकरदोभाग होगये और दोनों भाग उड़कर आकाशकी ओरगये थोड़ीदेरमें आकाशसे घुंघुरू वजनेकासा शब्द आनेलगा और इन्द्रविक्रमने देखा कि हिडंबा म्लेच्छी विमानपर बैठी हुई आकाश से नीचे आरही है मुख उसका परमसुंदर है चन्द्रमा भी उसकी उपमाके योग्य नहींहै नासिका मनोहरहै नेत्र कमलकेसे बड़े बड़े भौंहें धनुषाकारसे कटाक्षरूपी बाणोंसे रसिकोंके हृदयको बेधनेवालेहैं ॥

क० । कामसरसीसी रमाउमादरसीसी पटफूलअरसीसी घनदामिनि उसीसीहै । प्रेमभरसीसी मोह कसन कलीसी लोकलाज उकसीसी शुचि रूपमें रसीसीहै ॥ लरीलरसीसी कटिराजै हरिसीसी हठीउरमेंबसीसी द्युति जगमें जसीसीहै । सिद्धकरिसीसी हियअंगन ससीसी करैरतिकी हँसीसी दीसी उरमें बसीसीहै ॥

राजपुत्र इन्द्रविक्रम उसके मनोहर स्वरूपको देखतेही आसक्तहोगया और पुकारकर कहनेलगा ॥

बरवा । हेवरभामिनि कामिनि चितकीचोर । जातकितै वरआननि चितलै मोर ॥ बेध्योहियममभृकुटीधनुशरसैन । अबकरि मीठीबतियांदैमोहिंचैन ॥

यहसुनकर वह सुंदरीबोली कि हेराजपुत्र तुममुझपर आसक्त होकर मुझ अपनी प्रियासे लड़ने आयेहो और कहतेहो कि हम तुमपर आसक्तहैं लाओ अपने सबशस्त्र मुझेदेदो यह सुन कर राजपुत्रने असि चर्म गदा और धनुषआदि सबअस्त्र उस स्त्रीको देदिये तब उस चन्द्रमुखीने कहा कि यह बासबी माला प्रियाको पहिराना योग्यहै तुम इसको अपनेगलेमें क्यों पहिरे हो इन्द्रविक्रमबोला कि हे सुंदरी ॥ चौ० ॥ नहीं प्राणसमप्रिय

लिया अधर बड़े सुघर और कपोल अनमोलथे नेत्रों की चितवन चित्तको चोरतीथीं और मुखकी शोभा सनेह सिंधुमें बोरतीथी ॥

चौ०। रूपअनूप महाछबिछायो। सुंदर शोभितपरम सुहायो॥
बांधेकेश न जायँ बखाने। जगके प्राण जहांउरझाने॥
तेहिबिच मांगसुरुचिरसुभेखा। जनोंकसौटी कंचनरेखा॥
भालविशालन असजगमाहीं। पूर्णमयंकतासुपरछाहीं॥
भ्रकुटीशुभजनुबनीकमाना। हरतप्राणचितवन वरबाना॥
दीरघनैनलखे जेहि ओरी। टोनाकरि मनलेहिंमरोरी॥
सुघरनासिका परमबनाई। बदनसजोग महाछबिछाई॥
अधरअमोल सुरुचिरपियारे। बीड़ी रचें अधिकरंग भारे॥
सोहैंकोमल बरण कपोला। रसभीनेअस दोउअमोला॥
तिनपरगोललटकिलटआई। घुंघरावलिजियलेत लुभाई॥
बोलेहँसैबात जोकामिनि। दांतनिद्युतिलखिलाजैदामिनि॥
श्रवनसपिअतिचिबुकललामा। मोहनरूपसुअतिछविधामा॥
अंगअंगप्रति भूषणसाजे। लखिस्वरूप जाको रतिलाजे॥

निदान उसके सुंदर स्वरूपको देखतेही राजपुत्रपार्थ विक्रम उसपर आसक्तहोगया यद्यपि बैष्णवीसेनाके सब शूरवीर और राजपुत्र बड़े जितेन्द्रीथे और म्लेच्छी कैसीही सुंदरी क्यों न हो उसकीओर देखते न थे परंतु वह राजपुत्र मायासे वेष्टित होनेके कारणसे ऐसा निश्चेत होगया कि उसको महाराज शत्रुंजय की लाजभी न लगी और महाराजाधिराजकाभी ध्याननरहा केवल हिडंबाका सुंदरस्वरूपही उसको दिखाई देताथा और वह तनमन धनसे मोहित होकर विक्षिप्तोंकी भांति रससम्बन्धीपद पढ़नेलगा॥

क०। हम तो तिहारे सबभांतिसों कहावैं सदा हमसों दुरावकौन सो है सोसुनाइदै। द्वारपैखड़ेहैं बड़ीदेरसों अड़ेहैं यहैआशाहै हमारी ताहि नेक तो पुराइदै॥ हरिचन्दजोरिकर बिनती बखाने यही देखि मेरी ओर

नेक मृदुमुसुकाइदै। एरी प्राणप्यारी बारबार बलिहारी नेकघूंघट उघारि मोहिं वदन दिखाइदै॥

निदान जब हिंडंबाने राजपुत्रको अपने ऊपर उक्तप्रकारसे आसक्त देखा वह म्लेच्छीयसेना की ओर चली राजपुत्र उसके साथ साथ होलिया उससमय चित्रांगदने युद्ध निवृत्त करनेके वाद्य बजवादिये और सबसेना म्लेच्छोंकी डेरोंकीओर लौटपड़ी महाराज शत्रुंजयभी म्लानचित्त होकर अपनी सेनाको लौटा लाये और इधर चित्रांगदने बहुत से मान्य योधाओं को भेजा कि राजपुत्रको आदरपूर्वक लिवालावें वे सबगये और राजपुत्र को लेआये उससमय अद्भुत मिथ्या ईश्वर अपनी सभा में बैठा था जबराजपुत्र वहां पहुँचा सबने उठकर उसका आदर किया और वह हिंडंबाकेसमीप जाबैठा और विरह विषयके पद पढ़नेलगा उससमय चित्रांगदने पूछाकि हे राजपुत्र आपका आगमन किस कारणसे हुआहै पार्थविक्रम बोला कि हेश्रीमान आप किसीप्रकारसे रानी हिंडबाको मुझसे संयोग करना अंगी कृतकरादें मैं आपका बेदामका अनुचर बनारहूंगा यह सुनकर वह बोला कि बहुत श्रेष्ठ मुझसे जहांतक होसकेगा मैं आपके मनोरथ सिद्धी में यत्न करूंगा आगे आपका प्रारब्धहै देखिये मैं रानी को अभी समझाता हूं आप उठकर पृथक् बैठजाइये यह सुनकर राजपुत्र वहां से उठकर दूसरे उत्तम आसनपर जाबैठा और चित्रांगद ने हिंडंबा के पास जाकर कहा कि हेरानी विशल्यसे जब युद्धहुआथा तब यह राजपुत्र माया विशल्यकी पुत्री सुनैनापर आसक्त हुआथा उससमय सुनैनाने यह निबन्ध इसके साथ कियाथा कि जो तू शत्रुंजय का शिर काटकरलादे तो मैं तेरेसाथ अपना विवाह करूं सो उससमय इसी पार्थविक्रमने शत्रुंजय अपने पितासे युद्धकिया था इससे मैंचाहताहूं कि तुमभी इसकेसाथ कईनिबन्धकरो एकतोयह कि

अपने बापका शिरकाटकरलेआ दूसरे भास्करी सभाकाडेरा वै-ष्णवी सेनासे लादे तीसरे अद्भुतको अपनाईश्वर जानकर उस कीउपासनाकरे और इननिबन्धोंके साथ कहा कि मैं अपना वि-वाह तेरेसाथकरूंगी तुमको उचितहै कि रुकीरहो सुंदरस्वरूप-वान्पुरुष पाकर संयोगअभी अंगीकार न करो ऐसाकरनेसेदो भलाईहोंगी प्रथमतौ यह कि जो इसने शत्रुंजयको मारडाला तौ बड़ीही उत्तमबात है सहजहीं कार्य सधजायगा और जो आप भी मारागया तौ इसके वियोगमें शत्रुंजय रोरोकर मरजायगा परंतु प्रथमतौ इसको वैष्णवी सेनाकाकोई न मारैगा और यह मोहितहोनेके कारणसे सहस्रोंका बधकरैगा यहसुनकर हिंडंबा बोली कि श्रीमान आपने मंत्रतौ भलाशोचा है इनवैष्णवों को आपस में लड़वाकर मरवाडालो और जो आपने कहा कि रुकी रहना सो मैं ऐसी मदमाती नहीं हूं कि एकाएक फँसजाऊं यद्यपि मेरी वय अभी चारसौवर्षहीकी है और ऐसेही युवान पुरुषोंको सदैव खोजाकरतीहूं परंतु ऐसीनहींहूं कि अपनेकार्यको इन्द्रियों के विषय की इच्छासे बिगाड़दूं अबतुम जाओ और जोनियम उचित जानो मेरीओर से करो परंतु इतनाकरना कि रात्रि को मेरेपास इसयुवानको भेजदेना मैं संपर्क न करूंगी परंतु ऊपरी रस कलोलकरके अपने चित्तको स्वस्थ करूंगी और उसके सुंदर स्वरूप को देखदेखकर अपने नैनों को आनंद दूंगी यह सुनकर चित्रांगद उठकर राजपुत्र के पास आया और कहने लगा कि हे पार्थ विक्रमजी आप के मनोरथ सिद्धी का मैंने बड़ा यत्न किया सो हिंडंबा प्रथमतौ आपके साथ किसी प्रका-रका संयोग करना स्वीकारही नहीं करती थी फिर मेरे बहुत कहनेपर उसने उत्तरदिया कि जो राजपुत्र अपने पिताकाशिर काटकर वैष्णवी सेना से भास्करी सभाका डेराले आवै और हमारे ईश्वर अद्भुतकी उपासनाकरना अंगीकारकरै तौ मैं उस

के साथ अपना विवाह करूंगी यह सुनकर राजपुत्र बोला कि
लो मैं अद्भुत ईश्वरकी पूजा अभी करताहूं यह कहकरराजपुत्र
ने उस मिथ्या ईश्वरको दण्डवत् की तबतो वह मिथ्या ईश्वर
बहुत प्रसन्नहुआ और पारितोषिक वस्त्र देकर बोला कि मैंने
आजसे तेरा प्रारब्ध बड़ा किया और मेरी सेवकिन हिडंबा इस
मेरे सेवकसे अपना विवाह करै यह सुनकर राजपुत्र बोला हे
श्रीमान् चित्रांगद आज आप मेरेनामसे युद्ध के वाद्य बज-
वाइये जिससे मैं भास्करीसभा और शत्रुंजयका शिर काटकर
अपनी प्यारी हिडंबा के लिये लेआऊँ यह सुनकर चित्रांगद
बोला कि मैं रानी हिडंबा के पास जाकर कहताहूं कि आपने
सब निबन्ध अंगीकार करके अद्भुत परमेश्वर की पूजाभीकीहै
इसपरजोकुछ रानीहिडंबाआज्ञादेगी वहमैंआकर आपसेकहूंगा
मैंअपनेआप युद्धके वाद्यबजवानेकी आज्ञानहीं देसक्ताहूं क्यों-
कि यदि हिडंबाने कहाकि तुमने मेरेबिनापूछे मेरेआसक्तको क्यों
लड़वादिया तोमैंक्या उत्तरदूंगा यहकहकर वहहिडंबाकेसमीप
गया और बोलाकि हेरानी मैंनेजो विचारकियाथा वहसब पूरा
होगया परंतु अबएक और चिंताहुईहै वहयहहै किराजपुत्रतो
अपनेपितासे युद्धकरनेको तयारहै परंतु शत्रुंजयको महामंत्र
आताहै जिसवैष्णवीमंत्रके प्रभावसे किसीप्रकारकी माया नहीं
रहसकतीहै सोजबयह राजपुत्र उसके सन्मुख जायगा तुम्हारी
कीहुई माया सबनष्टहोजायगी और राजपुत्र चैतन्य होजायगा
और मेरा सब किया कराया परिश्रम नष्ट होजायगा तब वह
बोली मैं भी इसी चिंता में हूं कि कोई ऐसा माया का प्रयोग
करूं जिससे शत्रुंजय उस मंत्रको भूलजाय और फिर उसको
स्मर्ण न आवै परंतु ऐसा प्रयोग तत्काल संभवनहींहै दो चार
दिन में उसका सरंजाम होगा यह सुनकर चित्रांगद बोला कि
अच्छा अबतुम राजपुत्र को लेजाकर एक उत्तम बाटिका में

निवास करो वहां आनन्द पूर्वक उसके साथ हँसो खेलो कूदो और मद्यपीओ परंतु देखना अभी उसकेसाथ विहार मत करना यह कहकर वह राजपुत्रके पासआया और कहनेलगा कि हे पार्थविक्रम मैंने आपकी प्रिया से सब आप का वृत्तांत कह दिया वहकहतीहै कि अभी युद्धकेवाद्य मतबजवाओ मैं अपने आसक्तकोलेकर कुछदिन एकांत में वासकरूंगी और दोनों जने अपने अपने मनोरथों को पूराकरेंगे उपरांत शत्रुंजय से युद्धकरेंगे हेराजपुत्र रानी हिडंबाको केवल आपके प्रेमकीपरीक्षा लेनीथी नहीं तौ वहक्या युद्धकरनेको कमहै अब आनन्दपूर्वक भोग विलासकीजिये पार्थविक्रमबोला कि हेश्रीमान् मैंसबप्रकार से रानीहिडंबाका अनुचरहूं जो वह कहेंगी उसके करनेमें मुझ को कुछ विचार नहींहै तब चित्रांगदने राजामहावीरसे कहकर रत्नाकर पर्वतके एकदेशमें एकउत्तम बागको खाली करादिया और उसको वस्त्र और आसन और शय्याओंसे अलंकृतकरा के उसमें सबप्रकारके भक्ष भोज्य खाद्य पेय आदि पदार्थ स्थापितकरादिये और सुंदर स्वरूपवान् दास और दासियां सेवा करने को नियतकरदीं और उत्तमवारुणी और पानपात्रभी भिजवादिये उससमय हिडंबाराजपुत्रका हाथपकड़ेहुए उसबाग मेंगई देखा कि वह वाटिका ऐसी शोभायमान है मानो उसकी प्रबन्धकर्त्ता वसंतऋतु आपही है वृक्ष सघनलगेहुए हैं लता अनेक अनेक प्रकार की फैलीहुई हैं फूल नानाभांति के खिले हुए हैं जलधारा बहरही है तड़ागों में कमल फूलेहुए हैं भ्रमर गुंजार कररहेहैं वायु शीतल मंद सुगंध चलरही है और फूल भांति भांति के वृक्षों में लगेहुए हैं॥

क०। तालनिपैतारपै तमालनपै आलनपै लालमालवालपै रसालसर सोपरै। पद्वैकविरामचन्द्र कुन्दकन्दवन्दनपै चन्दनपै चन्दपै मलिन्ददरसो परै॥ केकीकेलकेसरि करंज केतकीपै कंज कारकूल कोकिलकदंवपरसो

परै। रंग रंग रागनपै संगही परागन वृन्दवनबागनपै बसंत वरसोपरै॥

उसबागके बीचोबीचमें एकमंदिर परमसुंदर रत्नजटित शयन और आसन और सब प्रकारके भोग विहारके पदार्थोंसे अलंकृत बनाहै ये दोनों प्रिया प्रीतम वहांगये और उत्तम शय्या पर बैठकर परस्पर हास्य और केल करनेलगे और उत्तम मद्य पान करके परस्पर आलिंगनकरनेलगे एक चुंबनकरता दूसरा मर्दन करता परंतु जब राजपुत्र भोग करनेकी इच्छाकरता तब हिडंबा क्रोधकीसी आंखें करके त्योरी चढ़ालेती और जब राजपुत्र बिगड़जाता तब हिडंबा मुसकुराकर गलेमें बाहें डालदेती और मनाकर कहती कि हे प्राणप्यारे में परमेश्वरकी आज्ञासे लाचारहूं नहीं तौ मैं तुझपर तन मन धनसे मोहितहूं जो अद्भुत परमेश्वरनेचाहा तौ मैं बहुत शीघ्र तुझको अपना अधरामृत पानकराऊंगी दो चार दिन ठहरजा परन्तु जब राजपुत्र बहुत अधीरहोजाताथा तब हिडंबा उसकोभोगकी इच्छासे शय्यापर लिटादेती और जब वह भोग करनेकी इच्छाकरताथा तब कुछ ऐसी मायाकरदेती कि राजपुत्र सोजाता और हिडंबा भी धीर्य रहितहोकर अपने चित्तसे कहतीथी कि जो मैं इसकेसाथ संपर्क करूं और ईश्वरके कार्यमें विघ्नपड़े तौ यहांसे मायाकृत देश पर्यंत मेरा अयशहोगा और महेन्द्र यह सुनकर मुझको देशसे निकालदेगा इससे उचितहै कि चित्रांगदके कहनेके अनुसार दो चार दिन चुपरहूं जब शत्रुंजय माराजाय तब इसप्राणप्यारे को अपने देशमें लेजाकर इसकेसाथ आनन्दकरूं और जो परमेश्वरकी आज्ञापूर्वक इसको शत्रुंजयसे लड़वा भीदूं तौ ऐसा यत्नकरूं कि यह मारा न जाय यहदुष्ट चित्रांगद इस मेरे प्रीतम को मरवाना चाहताहै जो कहताहै कि मेरी दोनों प्रकारसेभलाई है चाहे शत्रुंजय इसका बधकरै चाहे यह शत्रुंजयको मारै और कभी यहभी विचारकरती कि तू इससेसंपर्ककर न जाने क्याआप-

त्ति आवे और मनका मनोरथ मनहीं में रहजाय परंतु फिरयह भी डरतीथी कि ऐसा न हो कि परमेश्वर अप्रसन्नहोकरमुझको इसको दोनोंको अपनी क्रोधाग्निसे भस्मकरदें निदान इसीप्रकारसे दोनों परस्पर प्रीतिमानथे और जबकभी हिडम्बा सभा में आतीथी तौ उसकेसाथ पार्थ विक्रमभी आताथा परन्तु यह सब वृत्तान्त दूतों ने जाकर महाराज शत्रुंजय से कहा उसको सुनकर सब शूरबीरोंने राजपुत्रके वैष्णवीमतको त्यागकर नास्तिकहोजानेका बड़ाशोचकिया परन्तु महाराजाधिराजने कहा कि राजपुत्र पार्थविक्रम अपनेआपेमेंनहींहै जोवहहमसे लड़ने आवै तौ कोई उसको न मारे और न घायलकरै यहसुनकर सब ने कहा कि यह तौ बड़ाकठिन युद्धहै संसारमें यहकहावतहै कि जो हमें कोई न मारे तौ हम जगतको मारडालें निदान वैष्णवी सेनामें सबके चित्त उदास और मनमलीन थे और महाराज शत्रुंजय भी पुत्रके शोकमें ग्रसित थे यहहाल सेनाका देखकर प्रहासका बेटा सुत्रारा बहुरूपिया हिडम्बाका वधकरनेको चलदिया और उधर चित्रांगदने प्रौढ़ बहुरूपियेको आज्ञादी कि जाकर जिसप्रकार से होसके शत्रुंजयको पकड़करलेआ कि मैं पार्थविक्रमसे उसकीसेनाका वधकराऊं यह आज्ञापाकर प्रौढ़ सब सरंजाम बहुरूपधारण करनेका लेकर चलदिया और जब वैष्णवीसेना के निकट पहुंचा उसने अपनास्वरूप एक सेवक कासा बनालिया और सेनाके सेवकों में मिलकर राजसभा में पहुँचा और एककोनेमें ठहरारहा जब अर्द्धरात्रिके समय सभा विसर्जनहुई तबवह उसभीड़भाड़में बिनाकिसीके जाने सिंहासन के नीचे जाछिपा सब सभासद उठउठकर अपनी अपनी सिविरोंमेंगये परन्तु महाराज शत्रुंजय भास्करीसभामें रहेआये और महाराजाधिराज अपने आनन्दभवनमें पधारे सबसेनामें रक्षक इधरसे उधर फिरनेलगे और कृप अपना धनुषबाण ले-

कर उससभाके द्वारपर बैठकर रक्षाकरनेलगा जबरात्रि विशेष गई और महाराज शत्रुंजय खर्राटेलेकर सोनेलगे तबवह प्रौढ़ बहुरूपिया जो सिंहासन के नीचे छिपा बैठाथा निकला और उसने दूरसेदीपकपर मूर्च्छाकर चूर्णडालना प्रारम्भकिया उससे सबसभामें मूर्च्छाकर धूमफैलगया और उसको घ्राणकरके जो सेवक महाराज के पैरदबारहेथे वे मूर्च्छित होकर गिरपड़े उस समय प्रौढ़ महाराज की शय्या के समीप आया और मुखपर से वस्त्रहटाकर एकपोलीनेमें मूर्च्छाकर चूर्णभरा और उसको महाराजकीनासिकाके अग्रभागपर लेजाकर श्वासलेनेके समय दूसरीओर से वहचूर्ण महाराज की नासिका में फूंक दिया कि ब्रह्मांडमेंजानेसे महाराज मूर्च्छितहोगये उससमय प्रौढ़सभाके द्वारपर गया और महाराजकीसी वाणी बनाकर कृपको बुलाया वह श्रीमहाराज आया कहकर भीतरचला परंतु पैर रक्खाही था कि प्रौढ़ने मूर्च्छांड मारकर उसकोभी मूर्च्छित करदिया और वह गिरपड़ा तब प्रौढ़ने सेवकों को टांगपकड़कर नीचेडाल दिया और एक वस्त्रमें महाराज शत्रुंजय को पाश से बांधकर गठरी सी बनाई और उसको पीठपर लादकर और बांधकर सभाकेडेरेके बाहिरआया और कनातोंके किनारे किनारे होकर उठताबैठता अपनेको रक्षकोंकी दृष्टिसे बचाताहुआ चला जब रक्षकोंको आते देखता पृथ्वी में छिपकलीसा चिपतजाता जब रक्षक आगे बढ़जाते तब आगे बढ़ता निदान इसी प्रकार से श्वान और बिड़ालकी भांति दृष्टि बचाताहुआ चलागया और सेनाके बास स्थलके किनारे पहुंचकर सीधाहोलिया और वहां से उछलता कूदताहुआ चलदिया मार्ग में उसने विचारकिया कि जो शत्रुंजयको सेनामें लेजाऊंगातो बहुरूपिये आकर छुटा लेजायंगे यहसोचकर वहपर्वतकी एकगुफामेंआया और चाहा कि शिरकाटकर लेचलूं फिरसोचनेलगा कि अभीप्रहास ऐसा

बहुरूपिया सजीवहै वह तुझको जीता न छोड़ैगा और दूसरे शत्रुंजय के पुत्र और सेनापति प्रलयकर डालेंगे और इस के सिवाय इसकाबेटा पार्थविक्रम परमेश्वरकी सेनामें आगया है उसको जो पिता का स्नेहआया और उसने कहा कि तैंने मेरे पिताको क्यों मारडाला तौमेरे प्राणनिरर्थक जायँगे यह विचार करउसने शत्रुंजयको एकअंधे कूपमें डालदिया और मुख उस कूपका एकशिलासे ढककर चित्रांगद के पास आया और सब वृत्तांत कहसुनाया और कहाकि मैं उसको ऐसेस्थानमें बंदकर आयाहूं कि वहां वहबे अन्नोदकके आपही मरजायगा यहसुनकर चित्रांगदनेकहा कि तैंने बहुत श्रेष्ठकर्मकिया नहींतौ बहुरूपिये यहाँसेउसे अवश्यछुटालेजाते और उधर प्रातकाल होने पर वैष्णवी सेनामें महाराज शत्रुंजय की चोरीजाने का कोलाहलहुआ और श्रीराजाधिराजने अपने यहांके बहुरूपियों को आज्ञादी कि शीघ्रजाकर पतालगावें और आज्ञापाकर विक्षण आदि बहुरूपिये चलदिये और चित्रांगद ने बागमें आकर हिडंबा से कहा कि अब तुम्हारा कार्य सिद्धहोगा अबराजपुत्र पार्थविक्रम को लड़वाकर सब वैष्णवी सेनाको मरवाडालो शत्रुंजयको मैंने चुरवा मंगवाया है यह सुनकर हिडंबा ने कहा कि अच्छा श्रीमान् अबयुद्ध के वाद्य वजनेकी आज्ञादीजिये और फिर राजपुत्र से कहाकि लो जो तुममेरा संयोग चाहते हो तौ अपने पिता का शिर काटकर लादो वहबोला कि अच्छा अब वाद्ययुद्धके वजवाइये मैं शत्रुंजयको मारकर उसके टुकड़े टुकड़े करडालूंगा निदान चित्रांगद वहां से प्रसन्न होकर अद्भुत मिथ्याईश्वर के पासआया और सब वृत्तांत कहकर राजपुत्र पार्थविक्रमके नामसे युद्धके वाद्यवजनेकीआज्ञादी और बहुरूपिये वाद्यबजानेकोचले निदान यहांतौ यहवृत्तान्त होरहाहै कि बापबेटोंमें युद्धकी तैयारीहोती है परंतु अबवहांका वृत्तान्तसुनि-

येकि महेन्द्रने कीर्तलको जिसके मित्रका स्वरूप धारण करके
प्रहासने लूटाथा आज्ञादी कि तुमभी जाओ और निशाकरीकी
सेनाको पकड़कर विचित्रमायाको देदो और पानीकी भरीहुई
दोसीसीदीं और कहाकि इसजलका १ बड़ाप्रभावहै इसको ले-
तेजाओ थोड़ासा इसमेंसे और बहुतसे जलमें मिलाकर सेनाके
चारोंओर धारादेने से जो कोई बहुरूपिया कुछछल करनेकी
इच्छासे आवेगा वहमूर्छितहोजायगा औरजब युद्धकेलिये जा-
ओ तबजोयोद्धाआवे उसपरइसजलके छींटेडालदेना वहमूर्छि-
तहोजायगा औरतुमउसको पकड़लेना इसीप्रकारसे एक एक
करके सबको पकड़लेना और बहुरूपियेभी छलकरने अवश्य
आवेंगे उनकोभी कैदकरलेना और दूसरीसीसीके जलका यह
प्रभावहै कि जिसपर छिड़कदोगे उसकी मूर्च्छाजगजायगी यह
आज्ञापाकर कीर्तलने दोनोंजलकी सीसीलेलीं और वहांसे च-
लकर अपने स्थानपर आया और अपनीसेनाको महेन्द्रकीआ-
ज्ञा सुनाकर आज्ञादी सबचलनेको सन्नद्धहोजाओ उससमयकी-
र्तलकीमाता भ्रामीने सुनाकि मेराबेटा युद्धकरने कोजाताहै वह-
भी बड़ीमायावीथी उसनेभी अपनी तैयारीकी पुत्रके साथजा-
कर उसकी समयपर रक्षाकरूंगी निदान कीर्तल अपने घरका
सबप्रबन्ध करके महेन्द्रके पासआया और महेन्द्र ने उसेपारि-
तोषिक वस्त्रदेकर विदाकिया और बारहसहस्र सेनाउसके साथ
करदी तबकीर्तल मायाकृत महोरगपर सवारहोकरचला और
उसकेसाथ १२ सहस्र म्लेच्छोंकी सेनाभी नानारूप मायाकृत
वाहनोंपर सवारहोकर आकाशमार्गीहुई उससमय वे मायावी
म्लेच्छ अपनी२अभ्यासित मायाके चमत्कार दिखातेहुए आ-
गेबढ़े और कीर्तलकी माताभ्रामीभी मायाके प्रभावसे अपने
पुत्रकी रक्षाकेलिये गुप्तहोकरचली औरवह सेनाकीर्तल सहित
बड़ेमार्गको उत्तीर्ण करके विचित्रमायाकी सेनाके समीपजापहुं-

ची विचित्रमायाने उसको महेन्द्रका हितूजानकर उसका सत्कारकराया और बहुतसे मान्यम्लेच्छोंको उसकी आगोनीके लियेभेजा और वेउसे साथलेकर सभामेंआये औरउसकी सेनाने विचित्रमायाकी सेनाके निकट वासकिया सभा और रहनेके तंबूखड़ेहुए कीर्तलने सभामें पहुंचकर विचित्रमायासे सबवृत्तांतकहा और विनयकी आपयुद्धके वाद्यवजने की आज्ञादीजिये मैंकल शत्रुसेनाको विध्वंस करूंगा यहसुनकर विचित्रमायाने वाद्यवजने की आज्ञादी और वाद्यवजनेलगे उससमय मायाकृत पक्षियोंने चन्द्रचूड़ा की सभामें आकर अपनी चोंचउठाई और सुंदरवाणीसे विनयपूर्वक बोले ॥

चौ० । हेहे सकलजगतकी रानी । हेसुयशिनि मनिगन धनदानी ॥
हेधर्मिणि सुधर्मप्रति पादक । वेद पुराण विरुध पथ बाधक ॥

एक मायावी म्लेच्छ कीर्तलनामी महेन्द्रका प्रेरितआयाहै विचित्रमायाने युद्धके वाद्य बजवायेहैं उसकी इच्छा युद्ध करने की है जो इच्छाहो कीजिये यह कहकर वे पक्षीउड़गये यहसुनकर महारानी चन्द्रचूड़ाने निशाकरीसे कहा कि आप भी युद्धके वाद्य बजनेकी आज्ञादीजिये और संग्रामकी तैयारी कीजिये निशाकरीने कहा बहुतअच्छा और सेनापति योद्धाओंको बुलाकर आज्ञादी कि युद्धके लिये सन्नद्धरहो निदान उन्होंने सब सेनाको यह समाचार सुनाये इतनेमें वह दिन व्यतीत हुआ और सूर्यके अस्ताचलपर जानेसे सायंकालहुआ और अंधकारके आनेसे सब आकाशमें तारागण उदयहुए और चन्द्रमाने अपने प्रकाशसे उस रात्रिको शोभित किया ॥

सो० भयो सूर जब अस्त विकस्यो इन्दु प्रकाश युत ।
कुमुदिनि हुलसि समस्त विकसीं सब सरवरनिमें ॥

उससमय निशाकरीकी आज्ञासे इस सेनामें भी वाद्य बजने लगे और तूर बड़ी लयसे बजनेलगी और उसकी लयमें बड़े

शब्द से यह वाणी प्रकटहोतीथी कि--एकोविष्णुर्जगद्व्यापी--
कभी उसीतूरसे ऐसाशब्द निकलताथा कि--सैवविश्वंप्रसूयते--
कभी ऐसी वाणी भासितहोतीथी कि--सैवनाशकरोदेवः-- और
कभी यह गिरा सुनाईदेतीथी--सदेवोवरदायकः--औरजो बड़े २
मायावीथे वे अपने २ माया के प्रयोगोंको सिद्धकरनेलगे और
जो शूरवीरथे वे अपने शस्त्रोंको ठीककरनेलगे और महारानी-
चन्द्रचूड़ा सभाको विसर्जन करके अपने शय्याके भवनमें गई
और प्रहासआदि बहुरूपिये निकलकर वन में चले गये और
पहाड़ोंकी कंदराओंमें जाकर छिपरहे और भानुविक्रम अपनी
सेनाको सजानेलगा॥

चौ०। भरेवीर रससों मदमाते। गर्जतशूर करें चखराते॥
तिनकीगर्जनि ध्वनि अतिघोरा। अतिभयकरपूरीचहुंओरा॥
तर्कसलेहिं धनुष टंकारहिं। रणउत्साह भरहिं ललकारहिं॥
जे माया कोविदवरवीरा। उन्नतकाय प्रवल रणधीरा॥
ते लै सामग्री अरुभोगा। लगेकरन ते सकल प्रयोगा॥
कोऊ ज्वलितहुताशनकरिकें। देतमांस आहुतिभरिभरिकें॥
कोऊ अशुचि देह निजकीन्हे। करतआसुरी जपमुदलीन्हे॥
इमिरणउत्सवसों सवपागे। करतयत्ननिजनिज निशिजागे॥

और निशाकरी और आनन्दा और रक्तकेशी और केसरी
ने यह विचारकर कि कल महेन्द्रकीरानी विचित्रमायाका साम-
नाहै वड़े २ उग्र मायाके प्रयोग सिद्ध किये बहुतसे पुतले बनाये
अग्निमें आहुतिदीं आसुरीमंत्रजपे वलिदान दिये और आसुरी
और म्लेच्छी मायाधिष्ठाताओं को आह्वान करके उनकी पूजा
की और यह वचनलेकर कि समयपर स्मर्ण करते ही आवेंगे
सबको विसर्जन किया निदान रात्रि भर यही तयारीरही और
प्रातःकालका समयहुआ और रात्रि के व्यतीत होने से प्राची
दिशामें सूर्यने उदय होकर आकाश मण्डलको अपने निर्मल
तेजसे व्याप्त करदिया॥

श्लोक सूर्योऽर्यमा भगस्त्वष्टा पूषार्कः सविताऽरविः।
गभस्ति मानजः कालो मृत्युर्धाता प्रभाकरः॥
पृथिव्यापश्च तेजश्च खम्वायुश्च परायणं।
सोमो वृहस्पतिः शुक्रोवुधोंऽगारक एवच॥
इन्द्रोविवस्वान्दीप्तांशुःशुचिःसौरिःशनैश्चरः।
वैद्युतो जाठरश्चाग्निरैंधनस्ते जसांपतिः॥

सो०। भानु तेज सागार प्राचीदिशि विकसतभये।
कंजप्रसून मझार विकसे वरसरितानमें॥

प्रातःकाल होनेपर सब शूरवीर अपने अपने आयुधों को लेकर अपने २ सेनापतियोंसहित रंगभूमिकीओर चले और सब माया कोविद वैष्णव म्लेच्छ भी नानाप्रकार के मायाकृत वाहनोंपर सवारहोकर आकाशमार्गीहुए और रणभूमिकीओर चले उस समय भानुविक्रमने अपने शरीरपर विचित्रमाया के साथ युद्ध जानकर वे अस्त्र और शस्त्र धारणकिये जिनका मिलना दुर्लभ है और अभेद्य रत्नजटित कवच धारण करने से उसकी शोभा अपूर्व होगई॥

चौ०। कवच विचित्र अभेद्य अनूपा। धारण किये सो अद्भुतरूपा॥
विशिखशरासन वरकटिकीन्हे। कालदण्डसमअसिकर लीन्हे॥
अति शुचि गदा आयसीभारी। चर्म अनूप शक्ति बरधारी॥
तिमि सो लसै सुशूर भटानिमें। मनोभीम प्रगट्योरणभुमि में॥

और चन्द्रचूड़ा भी मायाकृत विमान में बैठकर बड़ी धूमधामसे रणभूमि को पधारी एक ओर अश्वसादी दूसरी ओर गज प्रमादी तीसरीओर पैदल और सामने अनेक वाहनोंपर अनेक सेवक अनेक २ प्रकारके बहुमोल्य वस्त्र धारणकियेहुए युद्धके मनोहरवाद्य बजाते हुए सब सेनापति औरवीर योद्धाओं सहित रणभूमि में पहुंचे कि इतने में विचित्रमाया की सवारी आतीहुई दृष्टिपड़ी सब ने देखा आकाश में सहस्रों मंडव रत्नजटित उड़तेहुए चलेआरहेहैं और चौंसठ सहस्र मायाकृत न-

गाड़े आकाशमें बजते आतेहैं और चारोंओरसे मायावी म्ले-
च्छिनियां परमसुंदरी अंग अंगमें रत्नजटित भूषणपहिरे सुन-
हले रुपहरे बहुमोल्य वस्त्र धारण किये सुनहले माया निर्मित
मयूरोंपर सवार चली आरही हैं उससमय विचित्रमाया के वै-
भवके सामने चन्द्रचूड़ा का सामान तुच्छजान पड़ताथा और
जहां विचित्रमाया बैठी थी वहां सुनहले वस्त्र बिछेहुए थे
सामने नृत्य होरहाथा और पीछे सहस्रों बड़े२ मायावी म्लेच्छ
खड़ेथे और अनेक प्रकारके वाद्य बजातेथे निदान रणभूमि में
आकर कीर्तलकी आज्ञासे मायावी म्लेच्छोंने मायासे बिजलि-
यां गिराकर रणभूमिके झाड़ी झंकार और वृक्षोंको गिरादिया
और भस्म करडाला और फिर मायासे जलवर्षाकर सब धूल
को शांतकिया तब दोनों सेनाओंसे कवीश्वर निकले और सं-
सारके नाशमान और यशके सदैवरहनेका उपदेश करनेवाले
पदोंको पढ़कर सब शूरवीरोंको रणका उत्साहदिलानेलगे॥

सो०। नहिंपारथनहिंभीम जिनसम भट नहिं जगभये।
दुर्बल अरु बलसीम सबहि कालभक्षण करत॥
परितिनको यशशुद्ध छायो है सबजगत में।
तातें हे भट उद्ध संशय तजि संगरकरहु॥

इसप्रकारसे जब कवीश्वर लोग उपदेश करके हटगये की-
र्तल विचित्रमाया से आज्ञा लेकर रणभूमिमें आया अनेक प्र-
कारके मायाकृत चमत्कारदिखाकर बोला कि मुझसे कौन युद्ध
करनेका उत्साह करताहै यह सुनकर रानी रक्तकेशी ने आज्ञा
लेकर अपना मायाकृत महोर्ग बढ़ाया और रणभूमिमें कीर्तल
के सन्मुख आई कीर्तलने एक माया वेष्टित बाण मारा रक्त के-
शीने तुरंत कुछ मायाकी कि उससे एक दंडधारी हस्त प्रकट
हुआ और उसने दंडमारकर उस बाणको काटकर गिरादिया
और फिर उसने अपने केशोंको हिलाया कि उन से बहुत से

दीतकण निकले और वे आकाशमें जाकर बाणरूप होकर कीर्तल की सेनापर गिरे और उनसे सहस्रों म्लेच्छ मारेगये तब कीर्तलने क्रोधकरके वह सीसी मायाकृत जलकी निकाली जिस जलके छिड़कनेसे मनुष्य मूर्छितहोजाताथा और थोड़ा जल मँगवाकर उस जलमें उस सीसीका किंचित् जल मिलाया और उस जल से एक रुई के पहल को भिगोकर कुछ माया की कि वह पहल आकाशमें जाकर बादलहोगया और चन्द्र-चूड़ाकी सेनाके ऊपर घिरिआया और जल बर्षानेलगा जिस पर वह बूंद जल की गिरी वहीं मूर्छित होकर गिरपड़ा रानी रत्नकेशी जो रणभूमि में थी वह सब से प्रथम मूर्छित होकर गिरपड़ी और फिर पानी बड़ेवेग से बर्षनेलगा निशाकरी और आनन्दा आदि जो बड़ीबड़ी मायाकी जाननेवालीथीं उन्होंने मायाकरके अपने २ ऊपर मण्डप बनालिये परंतु वहजल मंड-पोंको तोड़ तोड़कर सबके ऊपरगिरा और सबमूर्छित होगये तबतो चन्द्रचूड़ाकी सेनामें भगदड़ पड़गई और सब सेना भागगई उससमय भानुविक्रम ने अपना घोड़ा बढ़ाया कि मैं मारकर अपने भी प्राणदूं परंतु उस जलकी बूंद पड़ने से वह भी मूर्छित होकर गिरपड़ा और सेना भागकर पर्वत और बनोंमें जाछिपी और जो सेनापति और योद्धा शूरवीरथे वे सब रणभूमिसे नहींहटे और जलके पड़नेसे मूर्छितहो होकर गिर-पड़े उससमय कीर्तलने सबमूर्छितहुए सेनापतियोंकोपकड़वा-कर बँधवालिया और सेनाके लौटने के बाद्य बजवादिये और रणभूमिसे लौटा और विचित्रमायाभी द्रव्यलुटातीहुई लौटकर अपनी सभा में आई और उत्सव करनेकी आज्ञादी और सब सेनाने लौटकर कमरखोली और विचित्रमायाने यहसब वृत्तांत महेन्द्रको लिखकर सबकैदियोंको अपने सन्मुख बुलवाया परंतु वे सब तो अचेतथे कीर्तलने उनसबको स्तंभितमायासे किया

और सबकीजीभोंको सुईसे सींकर दूसरीसीसी काजल सबपर छिड़का उससे सबचैतन्यहोगये और अपनेको बंधनमें पाकर सबनीचेको शिरकरके चुपचाप खड़ेहोगये उससमय विचित्र-मायाने कहाकि क्योंरी निशाकरी तुझको यहदिनभी यादथा निशाकरीने हाथसे आकाशकी ओर बताकर कहाकि ईश्वर हम सबका रक्षकहै हाथसे बतानेका कारणयहथा किजीभके सींजाने सेकोई बोलनहीं सक्तीथा और जिससे विचित्रमाया कुछकहती थी वहीहाथ और नेत्रोंसे कड़ा उत्तर देतेथे तबतो विचित्रमाया ने क्रोधितहोकर आज्ञादी किशूलीखड़ीकीजावे कि सबको शूली देकर सबबध कियाजावे यहआज्ञा पाकर तत्काल सहस्रों चां-डाल आये और सहस्रों शूली खड़ी होगई और चारोंओर कोलाहल होनेलगा तब विचित्रमायाने कीर्त्तलसे कहाकि इन सब अपराधियोंको लेजाकर कैदकरो और रात्रिभर सेनाकी भले प्रकार रक्षाकरो जिससे कोई बहुरूपिया भीतरसेनाके न आने पावे यह सुनकर कीर्त्तल सबको अपनी सभामें लेआया और उनको स्तंभों से बंधवादिया और अपने सब सेवकों को आज्ञादी कि मेरे पास केवल एक सेवकहीरहै और बाकी सब बाहिररहें और तुमसब जाकर जलसेवकों से कहदो किशीघ्र-पानीके घटभरभरकर मेरेपास लेआवें मैं उनमें मूर्छाकर माया कृत जलमिलादूं किउस जलसे सेनाके चारोंओर जलधारादेदें यहआज्ञा पाकर सब अनुचर सभाके डेरेके बाहिर चलेआये और एक सेवकसे कहा कितू जाकरभीतररह और सब पनि-हारोंको बुलाकर कीर्त्तलकी आज्ञासुनादी वेसब तुरंत घटले-लेकर जलभरनेको गये और जललाकर सबतो बाहिर खड़े रहे और एक उनमेंसे सभाके भीतर गया कीर्तलने उसको प-हिले उसजलकी सीसीदी जोचैतन्य करने वालीथी और कहा कि इसजल को अपने शरीरपर लगाले जबउसको उसने श-

रीरपर लगालिया तब कीर्तल ने वह सीसी उसे दी जिस का जल मूर्च्छा करनेवाला था और कहा कि इसमें से दोचार बूंद घट में डालकर लेजा और इसके जल से सेना के चारोंओर पतली पतली धारादे जब इसकाजल होजाय तब फिर दूसरा घट भरकर लेआइयो यह सुनकर उस पनिहारे ने वैसाही किया और घटलेजाकर जलकीधारा देनेलगा निदान इसीप्रकारसे वे पनिहारे जाने और जलधारा देनेलगे परंतु अब यहां से बहुरूपियों का वृत्तांतसुनिये कि वे सब सेना के तितरबितर होने और सेनापतियोंके पकड़ेजानेपर अपनी २ जगहसेचले और सबसेपहिले उपहास एकसेवककासा रूपबनाकर कीर्त्तल की सेनाके समीपगया और जलसेवकों को सेना के चारोंओर जलधारा देतेहुए देखकर राहकतराकर दूसरीओरको मार्गलिया और विचारा कि इसजलमें कुछनकुछ विकारहै नहींतो इस समय चारोंओर सेनाके जलधारादेनेका क्याप्रयोजनहै निदान वह दूसरेमार्गसे सेनाके भीतरगया और एकपनिहारे से पूछा कि कहोभाई धारादेआये वहबोला कि इतनीबड़ी सेनाके चारों ओर अभी कैसे धारादीजासक्ती है कई योजन में सेनापड़ी है दोतीनदिनसेकम नलगेंगे यहसुनकर उपहासने अपने चित्तमें कहा कि मेराविचार ठीकथा अब यह मायाकृतधारा दीजातीहै जोकोई इसको उल्लंघनकरेगा वही पकड़ाजायगा यही विचार करताहुआ वह कीर्त्तलकी सभाकेनिकट पहुंचा और वहां जाकर ठैरगया चारघड़ी के पीछे उससभा के भीतरसे वह सेवक निकला और पुकारा कि भाई अब औरकोई आवे मैं अपनी सेवाकासमय पूराकरचुका यहसुनकर उपहास ने तुरंत जाकर कहा कि भाई मैंतो कमरबांधेहुए इसीकारणसे पहिलसे खड़ाहूं कि मुझे नौकरीबदलानीहोगी परंतु भीतर एकहीसेवकके रहनेकी आज्ञाहै इसकारणसे भीतर नहींगया अब तुमजाओ मैं

अपनेकर्मपर उपस्थित हूं यहसुनकर वह चलागया और उप
हास भीतरजाकर कीर्त्तलपर मूर्छलकरनेलगा उसीसमय उप
देशी और प्रचंडभी अपना अपना स्वरूपबदलकर सेना में
आये परंतु उन्होंने पनिहारोंके जलधारादेनेका कुछध्यान नहीं
किया और जैसेही धाराको उल्लंघनकिया तैसेही मूर्च्छितहोकर
गिरपड़े कीर्त्तलने बहुतसे मायावीम्लेच्छ जहांतहां यह आज्ञा
देकर बैठादियेथे कि जो कोई मनुष्य जलधाराको उल्लंघनकर
नेसे मूर्च्छितहोकर गिरपड़े उसे मेरे पास लेआना निदान वे
लोग उपदेशी और प्रचंडको उठाकर कीर्त्तल के सन्मुखलेगये
उसने कुछ मायाकी कि उससे उनदोनोंकाभेष दूरहोगया और
जो उनका निजस्वरूपथा वह निकलआया तब कीर्त्तलनेजाना
कि ये बहुरूपियेहैं और यह जानकर पुकारकर कहनेलगा कि
मायाकर्त्ताको धन्यवादहै कि दो बहुरूपिये तो आकरफँसे और
फिर सेवकोंको आज्ञादी कि इनकोभी लेजाकर स्तंभोंमें बांधदो
उन्होंने वैसाहीकिया और कीर्त्तल मद्यपानकरनेलगा परंतु अब
जो जलसेवक घटलेकर आताहै उसीके घटमें वह उसमूर्छाकर
जलकी बूंदें डालदेताहै और वह घट लेजाकर जलधारा सेना
केचारोंओर देताहै इसीअवसरमें प्रहासभी भ्रमण करताहुआ
कीर्त्तलकी सेना के समीप आया और पनिहारों को जल धारा
देताहुआ देखकर शहकतराकर दूसरीओरको चला और एक
स्थानपर एक पनिहारे को एक छोटेसे डेरे के समीप बैठेहुए रो-
टीखाते देखा तब प्रहासने भी अपना स्वरूप पनिहारों कासा
बनाया अर्थात् धोती जंघातक बांधी शिरसे पगड़ी बांधी मि-
रजई पहिरली कंधेपर बहँगारखलिया और बहँगेके दोनोंओर
छींकों में घटरखकर उस जलसेवकके समीप आया जो रोटी
खारहाथा और बोला कि भाई रामराम उसनेकहा कि आओ
कहो भाई कहां सेवाकरतेहो प्रहासबोला कि आजकलतो भाई

वे सेवाकेहैं तुमजातिका कुछध्यानकरके हमकोभी नौकरकरादो वहबोला कि अच्छा मैं नौकरकरादूंगा आजकल पनिहारे बहु-तचाहिये क्योंकि सेना के चारोंओर जलधारा दीजाती है तब प्रहासबोला कि तुम रोटी बेसमय क्यों खारहेहो वहबोला कि जलकीधारा देने और छिड़काउकरने से सावकाश नहीं मिला प्रहासबोला कि धनवान्भी सिड़ीहोते हैं भला जलधारा सेना के चारोंओर दिलवाने से क्याप्रयोजन सिद्धहोसक्ताहै यहसुन कर उस जलसेवक ने उन दोनों सीसीके जलकाप्रभाव वर्णन किया और कहा कि भीतरआनेवालेको मूर्च्छितकरनेके प्रयो-जनसे यह जलधारा दीजातीहैं यहसुनकर प्रहास उससे इधर उधरकी बातें करतारहा और फिर कुछ मिष्टान्ननिकालकर उस सेवककोदिया कि लो इससे रोटीखाओ उस सेवकने वहमिष्टा-न्नलेलिया परंतु उसमें मूर्छाकरचूर्णमिलाथा खातेही वह मूर्च्छि-तहोगया तब प्रहासने उसकोतो उसीडेरे में एकस्थानपर छुपा दिया और उसके वस्त्र आप पहिरकर और उसकासा स्वरूप बनाकर कीर्त्तलकी सभाके डेरे में आया और कीर्त्तल से कहा कि महाराज सब जलहोगया अब और मिलादीजिये कीर्त्तलने तब वह सीसीदी जिसमें मूर्छा करनेवाला जलथा और कहा कि दो चारबूंद मिलाले तब प्रहास बोला कि मुझको प्रथम वह जल दीजिये जिससे मैं आपतो मूर्च्छित नहोजाऊं वह बोला कि तू कहां से अभी आया है प्रहासबोला कि मेराभाई बीमारहोगयाहै उसने अपनी सेवापर मुझको भेजदियाहै तब कीर्त्तल ने उसे पहिले वहसीसी दी जिसकाजल चैतन्य करने वाला था प्रहास ने उसजल को शरीरपर मललिया और फिर मूर्छाकर जल दिया प्रहास ने उसजलकी सीसी लेकर जल चुल्लूमें लिया यहदेखकर कीर्त्तलबोला कि अरे दुर्बुद्धी क्याक-रताहै केवलघटमें दो चारबूंद जल डालले यह सुनकर प्रहास

बोला कि दुर्बुद्धी तू और तेरा बापदेख यहकरताहूं यह कहकर उसने वहचुल्लूजल कीर्तलके ऊपरफेंकदिया कि वहबिना बोले मूर्च्छितहोगया तबप्रहासने तत्काल भुजालीकमरसे निकालकर उसकाशिर काटडाला काटतेही लीजियो मारियोका बड़ाकोलाहल होनेलगा प्रहासने प्रचंड और उपदेशीको खोलदिया और उन्होंने निशाकरी और आनन्दा आदिकी जिह्वा से सुइयां निकालीं और जो जो छूटतागया दूसरेको छुटातागया परंतु प्रहासजाल मारमार कर सबसभाको लूटनेलगा और जब दो चार आदमीहीं छूटनेपायेथे तभीसेनाके म्लेच्छ कोलाहलसुनकर सभाकीओर दौड़ेथे और कीर्तलकी माता भ्रामरीभी जो अपने पुत्रकी रक्षाकेलिये गुप्तआईथी वहभी कोलाहलसुनकर आकाश मार्गसे शीघ्रसभामें आई और कुछमाया करके पृथ्वी पर एक दुहत्तड़मारी कि प्रहास जो लूटता फिरताथा अर्द्धाङ्गसे पृथ्वीमें धसगया और भ्रामरी उसकीओर लपकी कि पकड़कर लेचलूं इतनेमें उपहासने जो पहिले से सेवकोंकासा भेषधारण कियेहुए वहां खड़ाथा पुकारकरकहा कि हे रानी सुनियेगा वह ठहरी कि इतनेमेंउपहासने उछलकर एकभुजाली ऐसीमारी कि भ्रामरीका शिर कटकर गिरपड़ा और वह बिलबिलाकरमरगई फिर महा कोलाहलहुआ और प्रहास छूटकर फिर लूटनेलगा इसकालमें जो जो सेना के मनुष्य कैदथे सबछुटगये और कीर्तलकी सेना के म्लेच्छोंसे जो दौड़कर वहां आयेथे युद्धकरने लगे उससमय रानी आनन्दाने अपनी मायासे बसंत ऋतुको वहांउत्पन्न करदिया चारोंओर बाग लगगया नानाप्रकार के फूल खिलगये पक्षी भांति भांतिकी मधुर ध्वनि सुनाने लगे और समीर शीतल मंद सुगंध चलनेलगी उसको देखकर सब म्लेच्छ मोहित होगये और कहनेलगे ॥

क० । मदमाती रसालकी डारनपै चढ़ी आनँदसों यों विराजति हैं ।

कुलजानिकी कानिकरै न कछूमन हाथ परा यहि मारतिहैं ॥ कोऊ कैसी करै द्विज तूही कहै नहिं नेकोदया उर धारतिहैं । अरं कोयल कूक करेजन की किरचैं किरचैं किये डारति हैं १ चहुंदिशि आगिसी लगाइ के पलाश फूले तरसों गुलाब गुल्लाल कचनारोहाय । आयगयोशिरपे चढ़ाय सैनवान निज विरहिन दौरिके प्राण न सम्हारोहाय॥हरीचन्दकोयलें कुहूकोंफिर बनबनबजनलग्यो जगकामको नगारोहाय । दूरप्राणप्यारो काको लीजियेसहारो अबआयोहै शिरपैवसंत बजमारोहाय २ ॥

उससमय रानी आनन्दाने उन सब मोहित हुए म्लेच्छोंसे कहा कि तुम सब जाकर विचित्रमायाकी सेनाको नाश करो यह सुनकर वे सब विचित्रमाया की सेनापर गिरे और पीछेसे निशाकरी और आनन्दा और रक्तकेशी और केसरी और भानुविक्रम और चन्द्रचूड़ा आदि सब लोग जाकर विचित्रमाया की सेनापर अकस्मात् जाकर गिरे और लोह मयी अग्नि गोलक और शूचीअस्त्र नारिकेल अस्त्र और आसुरी मायाकृतअस्त्र चलनेलगे उससमय विचित्रमाया बड़े आनन्दमें सुंदरस्वरूप बनाये अपनी सभामें विराजमान थी और सबअसुर और मायावीम्लेच्छ भी उत्सव देखरहेथे किसीको न मालूमथा कि परमेश्वरकी क्याइच्छाहै कि अकस्मात् मायाकृत उक्तअस्त्र उनपर बर्षनेलगे और पहलेहीप्रहारमें सहस्रोंम्लेच्छ मारेगये और कोलाहल प्रारंभहुआ बिजलियां गिरनेलगीं हिम की शिलागिरी महाअंधकारछागया बादलकीघटा बड़ीभयंकर गर्जना सहितउठी यहांतककि हाथभी दिखाई नहीं देताथा यह देखकर विचित्रमाया घबराकरउठी और आज्ञादीकि मायानिर्मितमसालें प्रज्वलितकीजावें म्लेच्छोंने तुरंतमसालें प्रज्वलित कीं परंतु निशाकरीने ऐसीमायाकी किसबकी सब तुरंत बुझगईं उससमय म्लेच्छोंके मारेजानेसे ऐसा रक्तबहा कि उसपृथ्वीपर फिर दूर्वाजमनेकी आशाजातीरही किअब कभीन जमैगी और जो जमैगीभी तो उसपर रक्तका चिह्न अवश्यरहेगा निदान

उससमय एकप्रलयकासा कालथा कीर्तिलकेसाथ जोसेना आई थी वह महेन्द्रने छांटकर भेजीथी इससे बड़ी उग्ररूपथी उसने सहस्रों म्लेच्छोंको मारकरगिरादिया और विक्रमी भानुविक्रम ने खड्ग और गदाके प्रहारसे सहस्रों को मारकर यमलोक में पहुंचादिया॥

तोमरछंद। तहँ मच्यो संगर घोर। बहुभट कटे दुहुंओर॥
बहुभये शीश विहीन। बहुभये करपग छीन॥
कटिगिरत वेपरमान। शिरउपल वृष्टिसमान॥
नरमुण्ड करपगरुण्ड। कटिपरे तुरंग वितुण्ड॥
भे झुंड शोणित बीच। इमिलसे भ्रमलअनीच॥
मनुभारती मधिजाद। परिरहे लहि अहलाद॥

उससमय विचित्रमाया सिंहासनसेकूदी और पृथ्वीमेंसमागई और उसदेशकी पृथ्वी इसप्रकारसे कंपितहुई कि बड़े बड़े पर्वत टकरानेलगे रानी आनन्दा और निशाकरीने आपसमें सलाह की कि विचित्रमायाकी माया बड़ीउग्रहै परमेश्वर रक्षाकरै इस समय हम सबको विजय परमेश्वरकी दीहुईमिलीहै इससेलौट चलो नहींतोसब फिर पकड़ेजायँगे यह मंत्रकरके मायाकृत तूर बजाई कि उसको सुनकर सब योद्धा युद्धसे निवृत्तहोकर लौट-पड़े और अपने डेरेकोआये और प्रसन्नमन होकर बैठे और बहुरूपियेभी मारपीट करके निकलगयेथे वे भी चलेआये और चन्द्रचूड़ाकी आज्ञा से विजय घोषित कराईगई उसको सुनकर जो सेना भागकर बन और पर्वतों में जाछिपीथी लौटकर आ-गई और फिरसे सबडेरे खड़े कियेगये और हाटलगगई और चन्द्रचूड़ा सिंहासन पर विराजमानहुई और नाचहोने लगा॥

चौ०। बालसुंदरी कोकिल वैनी। नाचन गावन लगीं सुनैनी॥
गाइमधुरध्वनिभावबतावें। नचिअनेकगतिजियहुलसावें॥

उधर विचित्रमाया पृथ्वी से निकली सब सेनापति उसके

अपने प्राणतक देनेपर तयारथे और सेना तित्तर बित्तर होकर भागीहुईथी सबको एकत्रकरके फिरसे सभा अलंकृत होनेलगी और सिविर रचीगई और विचित्रमाया क्रोधसे मनमलीनसभा में आकर अपने स्थानपर बैठगई और सब सेनापतियों को सेना सौंपकर आप मायाकृत मयूरपर सवारहुई और महेन्द्र के समीपचली उसदिन महेन्द्र निष्प्रभ भवनसे बदरी उद्यान में आया था कि इतने में विचित्रमाया भी पहुंची सबने उठकर उसका सत्कारकिया और विचित्रमाया ने महेन्द्रके पास बैठ कर कीर्तल और मायावी म्लेच्छों की सेनाके मारेजानेका सब वृत्तांत कहा तबतो महेन्द्रने अद्भुतजाल की पुस्तकनिकालकर देखा और उससे मालूमहुआ कि ग्रहासने मायाकृत जल ले-कर कीर्तल को माराहै और भ्रामरीभी उसके पीछे मारीगई ये दोनों तेरेही मायाकृत जलके कारणसे मारेगये यहजानकर म-हेन्द्र क्रोधकेमारे अग्निरूप होगया और विचित्रमायासे बोला कि तुम सेनामें चलो अबकी में ऐसी आपत्ति शत्रुओं के शिर पर उतारताहूं कि सबके सब बुरेहालसे मारेजायंगे यहसुनकर विचित्रमाया वहां से चलदी और बड़े मार्ग को उत्तीर्ण कर के अपनीसेनामेंआई सबसेनापतियों ने उसका सत्कारकिया और वह आकर सिंहासन पर विराजमान होगई और उसके चले-आनेके पीछे महेन्द्रने आज्ञादी कि सातोंबिजली आकर हमारे सामने उपस्थितहों सौरभजीने लिखाहै कि इसमायाकृतदेश में सातबिजलीभी थीं कि वे सदैव क्रीड़ाकरतीथीं और युद्धकेसमय शत्रु सेनापर गिरकर उसको भस्म करडालतीथीं निदान उनके बुलानेको कुछमायाकीगई और क्षणभर नहीं हुआथा कि लाल लालबादल आकाशमें प्रकटहुए और बिजलियां उनमें चमक-तीथीं वे बादल महेन्द्रकी सभाके निकटजबआये पृथ्वीपरउतरे और वे बिजलियां पृथ्वीपर लोटनेलगीं और थोड़ी देरमें उन

सातों बिजलियोंका स्वरूप सातसुंदर स्वरूपवान् थोड़ी वयरख-
ने वाली स्त्रियोंकासा होगया वर्ण उनके शरीरका सोनेकासा था
और वस्त्र और आभूषणोंसे अलंकृत वे बड़ीसुंदर मालूमहोती
थीं नाम उन सातोंके ये थे- संडीनचपला १ अडीनचपला २
निडीनचपला ३ अतिडीनचपला ४ विडीनचपला ५ परडीन
चपला ६ और अरडीनचपला ७ निदान उनसातों चपला-
ओंनेआकर महेन्द्रको दंडवत्की और कहा महाराज हमदासि-
योंको क्यों स्मरणकियाहै महेन्द्रनेकहा कि तुममेंसे एकचपला
विचित्रमायाकी सहायताकोजाकर शत्रुओंको विध्वंसकरे और
शेष अपने स्थानोंपररहैं जब हमारा आज्ञापत्रजाय तब उस
केअनुसार आज्ञाकापालनकरैं यहसुनकर निडीनचपला बोली
कि मैं दासी आपकी जाकर शत्रुओंको दंडदूंगी तब महेन्द्र ने
उसको पारितोषिक वस्त्रदिये और वे सातों बिजलियां वहां से
चलकर अपने२रहनेकेदेशोंमेंआईं और निडीनचपलाने अप-
नेस्थानपर आकर सेनासजाई और एकलक्ष मायावी म्लेच्छ
और डेरे तंबूआदि सब सरंजामलेकर लाललाल बादल में
बड़ी तीव्रतासे चमकती दमकतीहुई विचित्रमायाकी सेनाकी
ओरचली और मायावी म्लेच्छभी मायाकृत बादलोंपर सवार
अग्निनिर्मित आयुधलियेहुए उसकेसाथ आकाशमार्गसेचले
उससमय उनसबकी गर्जना और बिजलीकी चमक बड़ीभया-
नक मालूमहोतीथी ॥

चौ०। ज्वलद अग्निसम रूपभयंकर। अतिमायावी ते प्रलयंकर ॥
जिनके दया धर्म मननाहीं। रणलखि जेअतिशयहरषाहीं ॥
गहेंअस्त्र सब अग्निसरूपा। चले विजयहित वीरअनूपा ॥

निडीनचपलाके चलेजानेके पीछे महेन्द्रकेपास समीररूपा
और प्राता बहुरूपिनीगईं उनकोदेखकर महेन्द्रने अपना मुख
फेरलिया तब यहदेखकर उन्होंने बिनयकी कि महाराज हमसे

क्या अपराधहुआहै महेन्द्रनेकहा कि प्रहास और उसकेसाथी बहुरूपिये जबसे इसदेशमें आयेहैं तबसे उन्होंने कैसेकैसे नामी मायावीम्लेच्छ और असुरोंको माराहै और तुमसब आज तक घर बैठे मासिकपातीरहीं और सदैव राज्य से तुम्हारा पालन पोषणहुआ परंतु तुमने आजतक नतो शत्रुसेना का कोई बड़ायोद्धा मारा और न किसीको पकड़ा यह क्रोधकेवचन सुनकर समीररूपा ने लज्जासे अपनाशिर झुकालिया और कहनेलगी कि अब मैं जातीहूं और जैसेबनेगी तैसे भानुविक्रमको जो इसदेशका नष्टकर्त्ता बना है और चन्द्रचूड़ा को जो शत्रुसेनाकी रानीहै पकड़कर लियेआतीहूं इन दोनोंसे बढ़कर प्रहासके प्राणप्यारे कोईनहीं हैं इनके पकड़जानेसे शत्रुसेनाकी कमरसी टूटजायगी अब श्रीमहाराज मेरे अपराधको क्षमाकरें और मेरीबातपर विश्वासकरें यहसुनकर महेन्द्र बहुत प्रसन्न हुआ और बहुरूपिनियोंको पारितोषिक द्रव्यदेकर भानुविक्रम और चन्द्रचूड़ाके पकड़नेकोभेजा और आनन्द करनेलगा ॥

इतिश्रीआगरापुरनिवासिचौरासियागौडवंशावतंसश्रीपण्डितमोहन लालात्मजपण्डितकुंजविहारीलालकविनाविरचितेअद्भुत चरित्रे प्रथमखंडेषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवांअध्याय ॥

समीररूपा आदि बहुरूपिनियोंका छलकरके राजपुत्र प्रतापवान् भानुविक्रम और महारानी चन्द्रचूडाको पकडलेजाना महेन्द्रका उनको कैद करना वृष्णवी सेना में बडाशोक होना और फिर प्रहासके मंत्रसे रानी निशाकरीका राज्याभिषेकहोना और निडीनचपला से युद्धहोना म्लेच्छों की सेनाका माराजाना और बहुरूपियों का अनेक छल करके सेना को चपला से छुटाना ॥

जयकरी छंद ।

शोकभरो ममहियो महान । अबनहिं करनचहत मधुपान ॥

बिसरीसुधिबुधि सबआनन्द। अमृतहुचहै न बुद्धिअमन्द॥
कठिन शोकको कारागार। तामधिपरयो सुचित्त हमार॥
कोमधुपावै कोमुद लेय। मधुहै हमको नहिं अब पेय॥
मधुमद त्यागि शोकमदपाय। रहब सदर्पित सहसमुदाय॥

सौरभ महाराजने इस अध्याय में कथा इसप्रकारसे वर्णन कीहै कि जब समीररूपा और प्राता दोनों बहुरूपिनी राजपुत्र भानुविक्रमको पकड़ने को चलकर रक्तवाहिनी नदीके पारआईं तब वहांसे उछलती कूदतीहुई दोनों निशाकरीकी सेनाके निकटआईं समीररूपाने अपना स्वरूप एक करोड़ा अर्थात् मिर्देहे कासा बनाया शिरपर गोल पगड़ी बांधी हाथमें सुनहरी लकुटि ली जामा पहिरा पटका बांधा और डुपट्टा कंधेपर डालकर सेना में चलीआई और फिरनेलगी और प्राताने अपना रूप एक ग्रामपति कासा बनाया धोतीबांधी मिरजई पहिरी पगड़ी लपेटी पिछौरी कंधेपर धरी और हाथमें लस्टिका लेकर सेनामें चली आई यहां हरएक डेरे के सामने हाट लगी थी नानाप्रकार के पदार्थोंका क्रय विक्रय होरहाथा कोई लेताथा कोई देताथा एक आताथा दूसरा जाताथा बहुत से टहलते फिरतेथे ये दोनों भी दिनभर वहीं भ्रमण करतीरहीं और जब सूर्यने सम्पूर्ण आकाशमार्गको उत्तीर्णकरके अस्ताचलपर निवासकिया और आकाश तारागणोंसे शोभित और अलंकृत होनेलगा॥

सो०। यामनिशा पर्यंत रह्यो उजेरो इन्दुको।
तदनुभयो निशिकंत अस्तभई तब कृष्णनिशि॥

तब चन्द्रचूड़ाने सभाको बिसर्जन किया और सब सभासद उठ उठकर अपनी २ सिबिरमें गये और चन्द्रचूड़ा और भानुविक्रम दोनों अपने शयनभवन में आकर उत्तम शय्यापर बैठे उसशयनके डेरेकेद्वारपर वे बहुरूपिनी भी आकरठहरीं यहां चन्द्रचूड़ा की दासियां सहस्रों उस शयनमंदिरके भीतरजाती

और आती थीं और कामकाज करती थीं दैवयोग से जब ये दोनों बहुरूपिनी वहां पहुंची शयनमन्दिर से एकदासी किसी कामको निकली प्राताबहुरूपिनी ने बढ़कर उसे दण्डवत् की और कहा कि मैं ग्रामपतिहूं रानी चन्द्रचूड़ाने मेरे ग्रामपर अधिक करबांधा है और मेरे खानपान की पृथ्वी भी लेलीहै सो आज रानी निशाकरी की सभामें मेरे प्रार्थनापत्रका न्याउहोगा सो आप इससमय अकेले में जाकर महारानी से कुछ ऐसा कहिदीजिये जिससे मेरा भला होजाय और यहकहकर उसने एकस्थाली में बहुत से सुवर्ण खण्ड और अच्छे अच्छे फल रखकर उस दासी को दिये उसने बहुत प्रसन्न होकर वह थाली लेली और उस ग्रामपति से यह कहकर कि अच्छा तेरा न्याउ ठीक २ होगा उसने वे सुवर्णखण्डतो अपने वस्त्रमेंबांधे और उन फलोंको खानेलगी परन्तु उनफलोंमें मूर्च्छाकर चूर्ण था दो एकफल खातेही वह मूर्च्छित होगई प्राता उसको उठाकरएकांतमें लेगई और उसकासा अपनास्वरूप बनाकर और उसके वस्त्र उतारकर और पहिरकर उसे वहीं छिपादिया और आप उस शयनमंदिरमें चलीआई उधर समीररूपाने जो एक दासीको शयनमंदिर से बाहर निकलकर जातेदेखा यह उसके पासआई और बोली कि क्योंरी कल तूने सब करोड़ाओंको दुर्वचन क्योंकहेथे वहबोली कि अरे निर्लज्जतू किसी को पहचानता भी है फिर ऐसीबात मुझसे कही तो महारानी से कहकर तेरी लकुट छिनवालूंगी और तुझे ठीक बनवादूंगी तब समीररूपाने उसका हाथ पकड़लिया और कहा कि तू मेरे प्रधानके पासचल वह और दुर्वचन कहनेलगी इसपर समीररूपानेहाथमें मूर्च्छाकर चूर्ण लेकर उसके मुखपर एक तमाचामारा कि वह तत्काल मूर्च्छित होगई तबसमीररूपा उसको उठाकर एक एकांतस्थानमें लेआई वहां उसने अपना स्वरूप उसदासी का

सा बनाया और उस के वस्त्र पहिरकर और उसे वहीं छिपाकर शयन मंदिरमें चलीआई वहांआकर उस ने देखा कि महारानी चन्द्रचूड़ा और राजपुत्र भानुविक्रम दोनों रत्नजटित शय्यापर आनन्दपूर्वक बैठेहैं और मद्यपान करतेहुये एक दूसरेसे हास्य विनोद कर करके परस्पर प्रसन्न कररहेहैं और सामने गंधर्विणी कोकिलबैनी बैठीहुई गारहीं हैं और संपूर्णखाद्यपेयआदि पदार्थ समीपमें स्थापितहैं निदान ये दोनों बहुरूपिणी उनदासियोंमेंमिलकर कामकाज करनेलगीं जिसकामकी आज्ञाहोतीथी उसको येही सबसेपहले दौड़ २ कर करतीथीं और सबखानेपीनेके पदार्थोंमें मूर्छाकरचूर्ण मिलातीजातीथीं समीररूपाने मद्यऔरमांस मेंभी मूर्छाकरचूर्ण मिलादियाथा राजपुत्रभानुविक्रम और रानी चन्द्रचूड़ाउसमद्यको पीकर और मांसकोखाकर मूर्छाकरचूर्णके आवेशसे लड़खड़ातेहुये उठे और शय्यापर पड़कर मूर्छित होगये और उधरसब दास और दासियांभी मूर्छाकर चूर्णमिलेहुए पदार्थोंके खानेसे मूर्छितहोगये उससमय समीररूपा ने राजपुत्र भानुविक्रमको और प्राताने चन्द्रचूड़ाको वस्त्रमेंपाशसे बांधकर गठरियांसी बनाई और उनकोपीठपर कसकर और सबको उसी प्रकार मूर्छितछोड़कर उसशयनमंदिरसे बाहिरआईं औरअपनी विद्या बलसेअपनेको रक्षकोंकी दृष्टिसेबचातीहुईं सेनाके निवास के किनारे पहुंचीं और वहां से चपलाकी सदृश चपलतापूर्वक चलकर रक्तवाहिनी नदी को उतरकर बदरीउद्यान में आईं और जो रात्रि रहगईथी उसको व्यतीतकरके जब सब संसारकी निद्रारूपी मूर्छा चैतन्यकर वर्तिकारूपी सूर्य के उदय होने परजगी अर्थात् प्रातःकालहुआ और सूर्य ने अपना प्रकाश आकाश मंडल में किया ॥

सो०। अवनी भईव्यतीत भोर भयो निशिपौफटी।
तारे भये अतीत नीलाम्बर अम्बर भयो॥

भानुकियो सुप्रकाश मलिन भईदीपक शिखा ।
उठे सुलहि अवकाश सकलजगतके जीवसब ॥

निदान प्रातःकाल महेन्द्र आकर अपने सिंहासनपर विराजमान हुआ और सब सभासद्‌भी आकर बैठे उस समय इन दोनों बहुरूपिणियों ने वे गठरियां लेजाकर महेन्द्र के सन्मुख रखदीं और विनयकी कि महाराज भानुविक्रम और चन्द्रचूड़ा दोनों अपराधी आपके समक्षमें उपस्थितहैं यह सुनकर महेन्द्र बहुत प्रसन्नहुआ और आज्ञादी कि इनपर ऐसी माया प्रथम करदो कि ये पृथ्वीसे उठनसकें और फिर इनको चैतन्य करो यह सुनकर मायावी म्लेच्छोंने ऐसाही किया और जब भानुविक्रमकी आंखें खुलीं तब अपने को महेन्द्रकी सभामें पाकर देखा कि सब मायावी असुर और म्लेच्छों का राजा सिंहासन पर विराजमानहै और उसके प्रधान और सेनापति और सभासद बैठेहुए उसकी उपासना कररहेहैं यह देखकर भानुविक्रम ने पुकारकर कहा कि इस सभामें मेरी नमस्कार उसको पहुंचै जो विष्णुभक्तहो और वैष्णवहो विष्णुका नाम सुनतेही सब नास्तिक म्लेच्छोंने अपने कानोंमें उंगली देलीं और कहा कि यह अपराधी प्रत्यक्ष परमेश्वर अद्भुतको छोड़कर एक विना देखेहुए की प्रशंसा करताहै और महेन्द्रने क्रोधकरके वधिकको बुलाकर आज्ञादी कि इस भानुविक्रमका वधकरो और चन्द्रचूड़ाको बहुत समझाकर कहा कि अब तू इस राजपुत्रसे प्रीति छोड़दे परंतु उसने नमाना और कहा कि मैं तन मन धन से भानुविक्रम की भक्तहूं ॥

चौ० । सौमें कहूंसहसमें गाई । हौंचकोर यहिचन्द्र लुभाई ॥
भ्रमररूप मम चखदोउसोहे । राजपुत्र कमला मनमोहे ॥
हौंमैं राजपुत्रकी नारी । ताविन मोको सबदुखकारी ॥

यहसुनकर महेन्द्रने उसकोभी मारनेकी आज्ञादी उससमय

वे दोनों परस्पर प्रीतिमान् एक दूसरेकी ओर प्रेम दृष्टिसे देख-नेलगे और आंखोंमें आंशूभरभरकर एक दूसरेसे अपने अप-राधों की क्षमा चाहताथा उस समय महारानी चन्द्रचूड़ा ने अपने चित्तको एकाग्रकरके श्रीविष्णुभगवान् से प्रार्थनाकी कि हे दीनानाथ हमको इस आपत्तिसे बचाइये॥

चौ०। हेप्रभु दीनदयाल गुसाईं। हे प्रणतारति हर जगसाईं॥
नहिंकोउतुरविनमोरसहायक। रक्षहुरूपासिंधुवरदायक॥
हैं ममपति के शत्रु घनेरे। मायावी सवहैं तेहि घेरे॥
तिनकी धर्षणसे प्रभु मेरे। पतिकीरक्षा करहु सवेरे॥
ताहिंनसकैं कुदृष्टि विलोकी। राजसुहागरहै ममओकी॥
लखूंनमैं प्रियपतिकरमरना। पाहिपाहि प्रभुतेरीशरना॥
कुदिननमोहिंलखाउविधाता। शरणागततेरी भवत्राता॥
गिरैवज्रमोहिं देहिजनाई। पतिवियोगसोंसोसुखदाई॥

इस मनसावाचा प्रेमभक्तिकी विनयको श्रीभगवान्ने सुनकर तुरंत उन म्लेच्छोंके चित्तको प्रेरणाकी और वे सव मान्य मा-यावी म्लेच्छ हाथ जोड़े हुए महेन्द्र के सन्मुख आये महेन्द्र ने पूछा कि तुम क्या चाहतेहो उन्होंनेकहा कि हमारेप्राण बचें तो हमलोग विनयकरें वह बोला कि प्राण तुम्हारे बचेहैं तुमजो बात भलाईकीहो कहो हम उसपर ध्यान करेंगे और उचितहो-गीतो अंगीकार करेंगे यह सुनकर सव प्रधान और सभासदों ने विनयकी कि मायाकर्ताओंने लिखाहै कि जिसको पकड़ो उस को तुरंतही नमारो इससे आप अद्भुत जाल देखें और उस में जैसी आज्ञा निकले वैसा करें यह सुनकर महेन्द्रने उनकी वुद्धि की प्रशंसाकी और अद्भुतजालकी पुस्तक निकालकर देखी तो उसमें यह लिखा निकला कि भानुविक्रम का वधकरना श्रेष्ठ न होगा क्योंकि प्रहासमरुतदत्त वस्त्रओढ़करसवके शिर काटडाले-गा और फिर किसीकेवनाये कुछनवनैगा इससे उचितहै किभानु-विक्रमको कैदकरले और प्रहास आदि वहुरूपियोंको पकडनेका

उद्योगकर जब वेभी पकड़जायँ तब सबको एकसाथ मरवाडा-
लियो यह देखकर महेन्द्रने पुकारकर कहा कि तुमलोग सत्य
कहतेथे पुस्तक इनके बधका निषेध करती है इससे तुमलोग
इन दोनोंको लेजाकर निष्प्रभभवनमें कैदकरो और जो द्वार
उस भवन के प्रत्यक्षखंडकी ओर हैं उनको में माया करके
मनुष्योंकी दृष्टि से अदृश्य किये देताहूं न मेरी मायाको कोई
दूरकरसकैगा न वे द्वार दृष्टिपड़ेंगे ऐसाहोनेसे कोई बहुरूपिया
अथवा इनका सहायकभी नजासकैगा यह आज्ञापाकर कई
लक्षनिर्लज्ज भयंकर और दुष्ट मायावी म्लेच्छों ने मायाकृत
बड़े२ निगड़ उन दोनोंके हाथों पैरोंमें डालदिये और उन्हें ले-
कर अंधेर नगरी को चले और जब वहां पहुंचे सहस्रों म्लेच्छ
उनके देखनेको आये और कहनेलगेकि ये वही कैदीहैं जिन्हों
ने इस देशमें बड़ा उपद्रव मचा रक्खाहै निदान उन्हों ने इन
दोनोंको निष्प्रभभवनके एक अंधेरे और छोटे स्थानमें जोअदृ-
श्यखण्डकी ओरथा कैदकिया और कईलक्ष असुर और म्लेच्छ
उनकी रक्षाकेलिये नियतहोगये और फिर महेन्द्रने माया कर-
दी कि प्रत्यक्ष खंडकी ओरके सब द्वारअदृश्य होगये और रक्त
वाहिनी नदी उस स्थानके चारों ओर बहनेलगी निदान यहां
तोयह प्रबंधहोगया परंतु वहांका हालसुनिये किप्रातःकालहोने
पर सब सेनापति और प्रधान अपनी२सिविरोंसे उठकरआये
और महारानी चन्द्रचूड़ाको लेनेकेलिये शयनमंदिरके द्वारपर
खड़ेहुए इतनेमें वेदासियां जिनको बहुरूपिणी मूर्छितकरगईथीं
चैतन्यहुई और शय्याके स्थानकी ओरगई और वहां महारा-
नी चन्द्रचूड़ा और राजपुत्र भानुविक्रमको न पाकर रोने पीटने
लगीं यह देखकर आनन्दा और निशाकरी आदि दौड़करआई
और पूछाकि क्योंरोतीहो तब वह बोलींकि राजपुत्र भानुविक्रम
और महारानी चन्द्रचूड़ाको कोई रात्रिको शय्यापरसे उठाकर

लेगयाहै यह सुनकर सब प्रधान और सेनापति रोनेलगे और सब सेनामें त्राहि त्राहि पड़गई उस करुणाविलापको सुनकर प्रहास बनसे सेनामेंआया और सबवृत्तांत सुनकर शयनमंन्दिर मेंगया और शय्याके पास पैरोंके चिह्न देखकर पहिचाना कि समीररूपा और प्राताके पैरहैं तब उसनेकहाकि हेरानीनिशाकरी राजपुत्र और चन्द्रचूड़ाको समीररूपालेगईहै यह सुनकर निशाकरी पछाड़खाकरगिरपड़ी और बोलीकि हाय महेन्द्र उनको जीतानछोड़ंगा यह सुनके सब बड़े करुणाविलापसे रोनेलगे और निशाकरी विलाप करनेलगी॥

विलापपदी। हे वीरवता कहां गयातू। नैनोंसे मेरे पृथक् भयातू॥
किसओर गयाकरैहै क्यातू। क्या भूलगया अभी मुझेतू॥
क्या कष्टपड़ाहै तुझपैआकर। आपत्तिमेंकिसपड़ाहैजाकर॥
किसओर गयाहै प्राणप्यारे। संदेश तेरा मिलै कहांरे॥
है यक्ष कोई कि देव गन्धर्व। तुझको जोगयाहै लेगहेगर्व॥
क्योंकर तेरे दर्शनोंको पाऊँ। हेवीर तुझे कहां ढुंढ़ाऊँ॥
वह रूपतेरा कि कामरूपी। वह बलतेरा कि भीमरूपी॥
क्योंकर होचित्तसे मेरेदूर। क्योंकर न फिरूं मैं ढूंढतीदूर॥
दूरीसे तेरीहूं मृतप्राया। कर राममेरी तू अन्तकाया॥
है सर्ववही निशानहीं दिन। एकतुही नहींहै है यहदुर्दिन॥
तुझको तो नहीं है सुध हमारी। है दुःख हमें बड़ाही भारी॥
व्याकुलहैमहानिशाकरीअब। तुझबिनहैनिशाकरीमरीअब॥
हे कालआके प्राणहरतू। हेवज्रआके भस्म करतू॥
अबशोक सहानहींहै जाता। जीवितहै नहीं मुझे सुहाता॥

उससमयरानीकेसरीने अपने अंचलसेनिशाकरीके अश्रुपातोंको पोंछा और कहा कि हेरानी यहसब वामविधिकीगतिहै संसार में उसको कोई उल्लंघन नहींकरसक्ताहै तुमने यहसुनाहोगा कि॥

क०। कालउपावत कालखपावत कालमिलावतहै गहिमाटी।
कालहलावत कालचलावत कालसिखावतहै सबआटी॥
कालबुलावत कालभुलावत कालडुलावत है घनघाटी।

कालउलंघन होतनहींगतिकालकी कोयसके नहिंकाटी ॥

इससे वामविधि की गति और कालके भविष्यको अमिट जानकर तुमको धैर्यकरना उचित है यहसंसार मिथ्याहै और इसमेंकोई पदार्थ सदैव एकसा नहींरहताहै ॥

चौ०। जगयहरीति सदाचलि आई। कबहुंकदुख कबहूंसुखभाई ॥
कबहुंकशुचिबसंत ऋतुआवत। नवपल्लव प्रसूनदरशावत ॥
पल्लव रहित होततरु कबहूं। ठूंड सदृशठाड़े इत बितहूं ॥
कहूंगान मुदमंगल नाना। कहुंरोवतदुखविपतिंनिदाना॥
कहुं विवाह उत्सव अनुरागे। कहूंमरण दुस्सहदुखपागे ॥
इमिसंसार चक्र फिरिफिरिकै। देतनवीन पूर्बगति हरिकै ॥
सदा नरहै एकगति कोई। कबहुंकरातिकबहुंदिनहोई॥

और रानीआनन्दा अपने आनन्दस्वरूपको शोकसागर में कुरूप करके अश्रुपातों की धारा छोड़नेलगी और विलापकरके कहनेलगी कि हेबामविधाता तैंने क्यायह दुःख मुझदुखिया को दिया अबमें किसके आश्रयहोकर रहूंगी और कहां जाऊंगी सत्यहै कि ॥

क०। योसकीराति करैजोचहै चहिरातिहूंको करियोस दिखावै।
त्योंपदमाकर शीलकोसिंधु पिपीलिका केवलफीलफिरावै॥
सोसमरत्थ सोई जगव्यापक सोईकरैजो कछूमन भावै।
चाहै सुमेरुको राईकरै रचिराईको फेरि सुमेरु बनावै ॥

उससमय प्रहासने सबके अश्रुपातोंको पोंछकर निशाकरीसे कहाकि तुमनेतो अपनेआप केरलीविद्यासे देखाहै कि भानुविक्रम इन मायाकृत चमत्कारों का नष्टकरता है और महेन्द्र को मारैगा फिर तुमको इतनाशोककरना उचितनहींहै जबतक महारानी चन्द्रचूड़ा न छूटै तबतक उसकीजगह तुमसिंहासनपर बैठो और सेनाको धैर्यदो परमेश्वर चाहेगा तो बहुतशीघ्र भानुविक्रमछुटैगा और हम सबसे आकर मिलेगा वह महाराज शत्रुंजयके कुलका शूरवीर क्षत्रीहै ऐसी ऐसी विपत्ति न जानें कि-

तनी पड़तीरहतीहैं इसका कुछशोककरना उचितनहींहै जो म-
हेन्द्र उसको मारडालेगा तो मैं मरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर सबके
शिर काटडालूंगा तुमधीर्यरक्खो और भगवान्को यादकरो और
शोकको अपनेहृदयसे दूरकरो निदान प्रहासने समझाकर रानी
निशाकरीको सिंहासनपर बैठाकर उसका राज्याभिषेक कराया
किजबतक चन्द्रचूड़ा कैदसे न छुटै तबतक वह राज्यकरै और
निशाकरीने भी बेवशहोकर अंगीकारकिया और फिर उत्सव
हुआ सबने भेटेंदीं और नृत्यहोनेलगा परंतुप्रहास वहांसे कुछ
कार्यसाधनाकरनेकी इच्छासेचलदिया औरइधर निडीन चपला
एकलक्षमायावीम्लेच्छोंकी सेनालियेहुये बड़ीधूमधामसे बादल
में चमकतीहुई विचित्रमायाकी सेनामेंपहुंची और महेन्द्रकापत्र
भी पहुंचा जिसमें भानुविक्रम और चन्द्रचूड़ाके पकड़ेजानेका
वृत्तांत और निशाकरी आदिसे युद्धकेलिये निडीन चपलाका
भेजना लिखाथा विचित्रमायाने मान्यप्रधानोंको भेजकर निडीन
चपलाकी आगौनी कराई उसकी सभाका डेरा खड़ाकियागया
और उसमें सिंहासनपर वहजाकर विराजगई और उसकी सब
सेना के उतरने को सुंदर स्थान देकर उनके सुखकी सबसा-
मग्री इकट्ठी करादी और वह निडीन चपला बहुरूपियों के भय
से चपलारूप अपना धारण कर के चपलाकी भांति सिंहासन
परबैठकर चमकनेलगी जो कोई उस को देखता है केवल यही
जानपड़ताहै कि बिजलीको घरहीहै इसवृत्तांतका संदेशा माया-
कृत पक्षियों ने रानी निशाकरी को पहुंचाया और वह रक्षाका
उद्योग करनेलगी परंतु उस निडीन चपलाने रानीनिशाकरीके
पास एकपत्र इसआशयका भेजा कि जो तू मेरेपास चली आवे
और विरोधको छोड़दे तो मैं महाराज महेन्द्रसे तेरा अपराध
क्षमा करा दूं और तेरा सबधन और देश दिलादूं तू महाराज
की आज्ञाकारीहोकर रहयहपत्र लिखकर निडीन चपलाने एक

पुतलेको दिया और उसने लाकर रानी निशाकरीकोदिया रानी ने उसका उत्तर लिखा कि हे निडीन चपला प्रहास म्लेच्छोंका नाशकर्ताहै हरएक मायावी म्लेच्छ उससे डरताहै इससे उचित है कि महेन्द्र प्रहासके आधीन रहना स्वीकारकरें नहीं तो तुम सब अपने कियेका फल पाओगी यह उत्तर वह पुतला लेकर आया और निडीन चपलाकोदिया वहपढ़तेही उठी और प्रज्व-लित अग्निकी समान निशाकरीकी सेनाकीओर चली उसकी सेनाके सेनापतियोंने उसेजातेहुए देखकर शीघ्र अपनी सेनाको सन्नद्धकिया और बड़ी उतावलीसे मायाकृत पक्षियोंपर बैठबैठ कर उसके साथहुए उसके आनेका संदेशा सुनकर रानी निशा-करीनेभी अपनी सेनाको बड़ीशीघ्रतासे सन्नद्धकिया और सब योद्धाअनेक २ प्रकारके वाहनोंपर सवारहोकर निडीन चपला का सामना करने को उपस्थितहुए उससमय निडीन चपला चमक२ कर निशाकरी की सेनापर गिरनेलगी उससमयबड़े २ मायावियोंने मायासे चालीस २ ढालें निर्मित करके अपने २ शिरोंके ऊपर छादित करलीं और अब सब देखते हैं कि घटा छाईहुईहै बिजली चमकतीहै और चमक चमककर निशाकरी कीसेनापर गिरतीहै और योद्धाओंको भस्म करतीहै उससमय दोनों सेनाओंमें बड़ाभारी कोलाहलथा दोनोंओर से मायावी मायाकरके लड़ते थे लोथपर लोथ गिरतीथी और रक्तकीनदी बहती थी इस प्रकारसे सायंकाल तक युद्धहुआ और सहस्रों बड़े २ मायावी योद्धामारेगये और सूर्य अस्तहोनेके पीछे नि-डीन चपलाने पुकारकर कहा कि हे निशाकरी मैंने तुझे अपनी शक्तिका केवल एक प्रमाण दिखाया है इससमयतो मैं फिरकर चली जातीहूं परंतु कल आकर तुमसबको विध्वंस करूंगीयह कहकर वह जयदुंदुभी बजवाकर फिरगई और रानीनिशाकरी भी म्लान चित्त होकर लौटआई और अपनी सभा में उदास

मनहोकर बैठगई और सेनाके लोगोंनेभी फिरकर कमरखोली आहारकिया परंतु ऐसे भयभीत होगयेथे किजो कायरथे वे तो भागगये और जोशूरबीरथे वेरहेआये और परमेश्वरसे विनय करनेलगे ॥

चौ० । हे प्रभु करुणासिंधु कृपाला । हरहुहमारि विपत्ति बिशाला ॥
यहचपलाअतिप्रबलअधर्षन । तासें करुहमार प्रभु रक्षन ॥

परंतुप्रहासजो पहले चलागयाथा वहकार्य साधनके उद्योग में निडीन चपलाकी सेनाके निकट पहुंचा औरदेखा कि उसकी सेना विचित्रमायाकी सेना सेकुछदूरपर एकनदीके तटपर उतरी हुईहै प्रहासने अपनास्वरूपएक किशोरअवस्थाके मनुष्यकासा बनाया और नदी में उतरकर गोते लगानेलगा दैवयोग से उसन दीके तटपर निडीन चपलाका एकसेवक आनिकला और उस ने पूछा भाई नदी में से क्या निकालरहेहो प्रहासबोला कि कौड़ी पैसा जो कुछ प्रारब्धका है मिलजाता है तब वह सेवक बोला कि हमपैसे फेंकें तुम निकालोगे प्रहासबोला कि हां तब उस ने कुछ पैसे नदी में फेंकदिये और प्रहास गोतालगा लगाकर पैसे निकालनेलगा जब सब पैसेहोगये तबवह सेवकबोला कि अब कल तुमआना हम अब जायँगे क्योंकि हमारी सेवाका समय आगया है इस समय निडीन चपला धूम्रपानकरेंगी और मेरी पुकारहोगी यह कहकर वहचला प्रहासभी नदी से निकलकर उसकेसाथ होलिया और बोला कि लो इसतमालकाधूम आज रानीको पिलाना ऐसी तमाल कहीं न मिलेगी जो यह अच्छी लगे तो फिर मैं उस बणिक् को बतादूंगा जो इस तमाल को बेंचता है उस सेवकने वह तमाललेली तब प्रहास ने कहा कि इसको सूंघकर देखोकि कैसी सुगंधि इसमेंआती है उसने सूंघा और छींकआई और वह मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा तब प्रहास ने अपनास्वरूप उस सेवककासा बनाया और उसकेवस्त्र पहिरकर

निडीन चपलाकी सेनामेंआया और सभामें पंहुचकर देखा कि
सिंहासनपर एक बिजली सी कौंधरही है प्रहास ने समीपजा-
करपुकारकर कहा कि धूम्रपान तैयार है तब वहचपला कौंधना
बंदकरकेइकट्ठीसी हुई और फिर एकस्वरूपवानस्त्रीबनगई जिस
के शरीरका वर्ण कंचनकी सदृशथा और उसमें सूर्यकीसी प्रभा
थी तबप्रहासने पेचवान लेजाकर उसके सामने लगादिया और
वह प्रहास को दृष्टिजोरकर देखनेलगी उस समय प्रहासने अ-
पनीझोलीमेंसे वहसीसी जलकी निकाली जो कीर्त्तलको मारकर
प्रहासनेपाईथी और उसमें से एकचुल्लू जल लेकर उसका छींटा
निडीन चपलाके माराकि वहमूर्च्छितहोकर सिंहासनपर गिरपड़ी
परंतु उसके मूर्च्छित होतेही वह सिंहासन उड़कर आकाश में
चलागया यहदेखकर प्रहास चकित होकरभागा और रानी नि-
शाकरीसे आकर कहाकि निडीन चपला सिंहासन सहितउड़गई
यह सुनतेही निशाकरी मायाकृत तूरबजाकर और सब सेनाको
सन्नद्धकरकेचली और निडीनचपलाकी सेनापर आ गिरी वह
सब तौ सन्नद्धनथे इससे प्रथमही हल्लेमें सहस्रों मारेगये और
बाकी तैयारहोकर युद्ध करनेलगे और दोनों ओरके योद्धा मा-
र करनेलगे चारोंओरसे सेनाघिरआई लीजियो पकड़ियोका
शब्द होनेलगा और नारिकेल और निम्बुक आदि अस्त्र चलने
लगे उन अस्त्रोंसे बड़ेबड़े सर्प मुखसे ज्वाला छोड़तेहुए निकल-
ते थे और योद्धाओंको भक्षणकरजातेथे और अग्निकीसी प्रभा
रखनेवाले सहस्रों बाण आकाश से गिरतेथे इस प्रलय सदृश
युद्धकी व्यवस्था सुनकर बिचित्रमाया सवारहुई और निशाकरी
की सेनाको रोकनेलगी॥

भुजंगप्रयातछंद॥

मचोघोर संग्राम ता ठौरभारी। चढेचाव चोखे भिरे युद्धचारी॥
उभै ओरके बरिलै नामटेरैं। थिरोहे थिरो भाषिकैं बाण प्रेरैं॥

कितेउग्रमाया करैंभल्लमेलें। कितेअस्त्रलन्हिं पिलेखूब खेलें॥
किते अग्निवर्षाकरैं और केलें। किते बाणमाया मयीउग्रझेलें॥
भिदेवीरकेते गिरें फेरि ऊठें। नसंग्रामके ग्रामसों नेकलूठें॥
बिनाशीशके ह्वै कितेवीरडोलें। किते मारुरे मारुरे मारु बोलें॥

निडीनचपलाकी सेना बहुतसी मरचुकीथी और अकस्मात जो उसपर मायाकृत प्रहारहुआ बस वहठहर नसकी और भागनेलगी विचित्रमाया ने बहुतकुछ संभाला परंतु जब निडीन चपलाकी सेना भागी तौ विचित्रमायाकी सेनाकेभी पांउ उखड़ गये यह देखकर विचित्रमायाने युद्ध निवृत्तकरनेके वाद्य बजवाये और रानी निशाकरीभी विचित्रमायासे भयभीतहोनेके कारणसे लौटआई और सब योद्धाओंने कमर खोली और सबने प्रहासकी बड़ी प्रशंसाकी और आनन्द उत्सव होनेलगा और निडीनचपलाका सिंहासन उड़ताहुआ महेन्द्रकेपास बदरीउद्यान में पहुंचा महेन्द्रने कुछ मायाकरके निडीनचपलाको चैतन्यकिया और अद्भुत जालकी पुस्तक निकाल कर देखा उससे उसे मालूमहुआ कि तेरीही मायासे इसकी यह दशाहुईहै अर्थात् प्रहासने तेरे मायाकृत जलसे इसको मारडालाहोता परंतु यह बड़ी भारी मायाकोविद थी इससे इसकी मायाधीश असुर इसको उड़ाकर यहांलेआयेहैं और निडीनचपला चैतन्य तौ होगई परंतु उस उग्र मायाकृत जलके छींटे खाने से बीमारहोगई और महेन्द्र से आज्ञालेकर अपने स्थान को चलीआई तब महेन्द्र ने मायाकृत पुतला भेजकर दूसरी चपलाको बुलवाया जिसका नाम संडीनचपलाथा जब उसके पास वह पुतला पहुंचा वह बड़ी धूम धामसे अपने पुत्र रंतिकाल सहित महेन्द्र मायाधीश के पास आई महेन्द्रने उसे आज्ञादी कि तुम जाकर विचित्रमायाकी सहायताकरो और शत्रुका विध्वंसनकरो यह आज्ञा पाकर वह एक लक्ष सेनालेकर चली और उसका विमान सा-

याकृत बादलों म गुप्तहोगया डेरे और तंबू लदगये और वह
वड़ी धूमधामसे बादलोंमें चमकतीहुई चली ॥
चौ० । विपुल सैनसँग शोभित तैसें। ताराचलें इन्दु अनुजैसें ॥
कनकवरन अतिउन्नत कायक। नभपथचले म्लेच्छभयदायक ॥
धरेंसुअस्त्र शस्त्र विधिनाना। मायाकृतको करै वखाना ॥
जिनकों लखेंहोत भयभारी। अतिशय प्रवल महादुखकारी ॥
गर्जततर्जत जात उड़ाने। युद्धकरन हित अति हरपाने ॥
निदान वह वहांसे चलकर बड़ेमार्गको उत्तीर्णकरके रानीविचित्रमायाकी सेनाकेसमीप एकस्थानपरआईजो रानीनिशाकरी की सेनासे ३ योजनथा वहां एकवाग परममनोहर बनाथा क्यों कि महेन्द्रने मायाकृतदेशमें सर्व्वत्र उत्तम२स्थान और वागविहार करनेकेलिये बनवायेथे वहसंडीनचपला उसीबागमें उतरी परंतु इसस्थानके समीप एकपर्व्वती देशथा वहांकी रानीकानाम नैतलीथा वहवड़ी स्वरूपवान् और सुंदरीथी और सहस्रोंम्लेच्छ उसपर मोहितहोरहेथे उनमेंसे इस संडीनचपलाकापुत्र रंतिकालभीथा जबसेना इसबागमें उतरी वहअपनी प्रियाके देखने को चलदिया और उसके स्थानपर आकर उसकी एक दासी को बहुतकुछद्रव्य दिया और उससे कहाकि तू किसी बहानेसे नैतलीको अटारीके ऊपर बुलाकरलेआ जिससे मैं और कुछन हो तो दूरहीसे उसके दर्शन करलूं ॥
सो० । महिसों नभअति दूरि तदपिचन्द्र लागत ललन।
चन्द्रवदन छविभूरि नीकी लसिहै भवनपर ॥
यहसुनकर वहदासी भीतरगई और किसीबहानेसे नैतली को चढ़ाकर राजमंदिरकेऊपर लेआई उसको देखतेही रंतिकाल मोहितहोगया और उसके चन्द्राननकी छविको चकोरहोकर देखनेलगा इतनेमें नैतलीके और आसक्त म्लेच्छभी वहां आगये और रंतिकालको अपनीप्रियाको उसभावसे देखतेहुये देखकर भस्महोगये और ऐसीमायाकी किवह खड़ाका खड़ारहगयातब

सबने उसको बांधलिया और उसको इसप्रयोजनसे लेचलेकि वनमें लेचलके इसको मारडालें क्योंकि यहां इसकीमाता समीप में टिकीहै यहां इसकेमारनेमें अच्छा न होगा निदान वेतो रंतिकालकोलेकर मार्गीहुये और इधर प्रहासजो वनमेंगया तोशोचनेलगा कि निडीनचपला जोउड़कर चलीगईहै तो महेन्द्र अब औरकोई आपत्ति भेजेगा वह यही सोचरहाथा किउसने देखाकि दोतीनम्लेच्छ एक थोड़ीवयके म्लेच्छको पकड़ेहुए लियेजाते हैं देखतेही उसके मुखकी कांतिसेजाना कि यहकोई बड़ामान्य मायावीम्लेच्छहै जोइसको इनसबसे छुटालूं तोकुछ विलक्षण नहीं है कि इससे हमाराकुछ कामनिकले यह विचार करके वहपहाड़की एकगुफा में आया और वहां बैठकर उसने कागद के दशमुख रखनेवाला एक पोला शिर बनाया और उसको अपने शिरपर रखकर अपनामुख ग्रीवापर्यंत उसमें छिपाया और देववस्त्र धारण करलिया जो एकक्षण में सातरंग बदलता था और शरीरपर वह तेलमला जिसके मलने से यह जानपड़ता था कि सब शरीर में से अग्निकी ज्वाला निकलती है और उनमुखों में सर्पकीसी जिह्वालगाई और कागदकीकई भुजा भी बनाकर लटकाई इसप्रकारसे जबवह अपना भयंकर रूप बनाचुका तब गुफाके बाहिर निकला और देवदत्त तूरले कर बजानेलगा जिसका शब्द सुनकर निशाचर और राक्षसे नाचने लगतेहैं उन म्लेच्छों ने जो रंतिकालको लिये जारहे थे उस भयंकर शब्द को सुना और सुनतेही भयभीत होकर देखने लगे कि इतने में सन्मुखसे प्रहासभी आता हुआ दिखाईपड़ा उन्होंने देखा कि एकअपूर्वजीवआरहा है जिसके दशशिर है कईभुजा हैं जीभसर्पकीसी निकाले है शरीरसे अग्निकी सी ज्वाला निकलरही है और वस्त्रजो पहिरे है वह कभी रक्तवर्ण होजाताहै कभी श्वेत कभी श्याम कभीपीत कभी हरित कभी

नील अनेक वर्ण बदलता है वे म्लेच्छ उसको देखतेही भय-
भीत होगये और पृथ्वी में गिरकर उसेसाष्टांग दण्डवत् करने
लगे उससमय प्रहास ने कहा कि--कालोहम् वायसीनामा--अ-
र्थात् मैं अद्भुत परमेश्वरका आज्ञाकारी वायसीनाम कालहूं यह
सुनकर वे मायावी म्लेच्छ थरथर कांपने लगे और पूछा कि
आपक्यों आयेहैं वहबोला कि तुमइस अपराधीको मारनेलिये
जातेहोमैं इसकेप्राणों को हरकर लेजाऊंगा और तुमसबकीभी
आयु अबपूरीहोचुकीहै तुम्हारे प्राणोंकोभी हरूंगा यहसुनकरवे
म्लेच्छ विनयपूर्वकबोले कि अद्भुत परमेश्वरके प्रेरित कालकोई
ऐसा उपाय बतलाइये जिससेहमअभी नमरैं कुछकालतक और
जीतेरहैं यह सुनकर प्रहासनेकहा कि कुछ दानकरो तो परमे-
श्वरकी कृपाकाहोना असंभव नहीं है यहसुनकर जोकुछ रत्न
आदि द्रव्य उन के पासथा सब उन्होंने प्रहास को देदिया तब
प्रहासने एक फल निकालकरदिया और कहाकि इसका एक २
टुकड़ा काटकर खाओ इससे चिरंजीवी होजाओगे यहसुनकर
उन्होंने एक २ टुकड़ा उसका काटकरखाया थोड़ी देर में जबमू-
र्च्छाकर चूर्णने अपनागुण प्रकटाकिया तब वहबोले कि काल
इसफलके खानेसे तो हमारा जीव संसनाताहै प्रहास बोला कि
आयु बढ़तीहै शरीरकीरगें खिंचतीहोंगी निदान क्षणमात्र पीछे
वे मूर्च्छित होकर गिरपड़े तब प्रहास ने खड्ग निकालकरउन
के शिर काटडाले बड़ा कोलाहलहुआ और रंतिकालजो स्त-
म्भित और मूक होगया था अब वाचालहुआ और जब वह
कोलाहल और अग्निकी वर्षाशांतहुई तबवह प्रहासकी ओर
देखकर घूरनेलगा प्रहासने तबकहा कि मैंनेतो तेरे प्राणबचाये
हैं और तू मेरीओर घूरताहै वहबोला कि आपकानाम क्या है
प्रहासनेकहा कि मेरानामदेवदूतहै तब वहबोला कि इनम्लेच्छों
ने मुझे अनचेत में पकड़लिया था नहींतो मैं संडीनचपला का

पुत्रहूं मायाकरके पृथ्वीमें समाजाताहूं और शत्रुकेसमीप पृथ्वी से निकलकर ऐसा भयंकर शब्द करताहूं कि शत्रुका शिर फट-जाताहै और जो शत्रु बड़ाभारी मायावी होताहै तौभी मूर्च्छित अवश्य होजाता है और मेरीमाता बिजली कीभांति चमककर गिरतीहै और उसको दोटूकड़ेकर डालती है सो महाराज महेन्द्र ने हम दोनों को निशाकरी की सेनाका विध्वंसन करने भेजा है हम अब जाकर सब को यमलोक में पहुंचावेंगे यह सुनकर प्र-हासने बिचारा कि यह बहुत श्रेष्ठहुआ जोतुम इसको मिलगये अब इसकोभी मारकर यमलोकमेंपहुंचाओ नहींतौ बड़ीआपत्ति यहफैलावेगा प्रहासतौ इसीविचारमेंथा कि इतनेमेंसंडीन चपला कौंधतीहुई एकबादल में प्रकटहुई और बड़ी धूमधाम से उस स्थानके निकट अपने पुत्रको ढूंढ़तीहुई आपहुंची क्योंकि उस ने जब अपने पुत्रको बासस्थल पर नपाया उसने विचारकिया कि यहां से शत्रुसेना निकट है ऐसा न हो कि मेरे पुत्रको कोई बहुरूपिया मारडाले और यह विचार करके वह उसे ढूंढ़नेको चलदी निदान संडीन चपला को आतेहुए देखकर प्रहासम-रुतदत्त वस्त्र ओढ़कर अदृश्य होगया यह देखकर रंतिकालने निश्चयकिया कि यह अवश्य परमेश्वरका आज्ञाकारी कालथा और उधर संडीन चपलाने अपनेपुत्रको पहिंचानकर अपना स्वरूप स्त्रीकासा बनाया और पृथ्वीपर उतरकर पुत्रको हृदय से लगाया और वहां म्लेच्छों की लोथें पड़ीहुई देखकर पूछा कि इनको किसने मारा है यह सुनकर रंतिकालने सब वृत्तांत अपने पकड़ेजाने और देवदूतके आकर छुटानेका कहकरकहा कि वह देवदूत अभी यहांखड़ेथे तुमको आतेहुए देखकरचले गये हैं संडीन चपला यह सुनकर बोली कि वह प्रारब्ध का बड़ा हेटाथा नहीं तौ मेरेसामने आता तौ मैं उसे बहुतसा द्रव्य देकर अयाच्य करदेती रंतिकाल बोला कि वहकोई देवदूत था

खड़े खड़े अन्तर्द्धान होगया मैं पुकारताहूं जो वहअभी यहां होगातो प्रकट होजायगा यहकहकर रंतिकालने पुकारकर कहा कि हे देवदूत यदि आप यहां उपस्थितहैं तो प्रकटहोकर मेरी मातासे भेट कीजिये यह सुनतेही प्रहास ने अपना वस्त्र उतार लिया और प्रकट होगया उसको देखकर संडीन चपलाने उसे दण्डवत्की और कहा कि आप हमारे रक्षक हैं आपकी कृपासे परमेश्वरने दोबार हमारे पुत्रके प्राणबचाये अबआप कृपाकर के हमारे स्थानपर जहां हम टिकेहैं पधारिये मुझसे जो कुछहो-सकेगा मैं आपकी सेवा करूंगी यह सुनकर प्रहासबोला कि बहुतश्रेष्ठ तबसंडीन चपलाने कुछमायाकी कि अकस्मात् एक विमान रत्नजटित उड़ताहुआ आया उसपर प्रहास और रंति-काल दोनों बैठगये और संडीन चपला उसी प्रकारसे चपला की भांति कौंधतीहुईचली और वे तीनों उसबागमें आये जहां संडीन चपलाकी सेना पड़ीथी और प्रहासने उस विमानसे उतरकर उस उत्तम बागकी शोभादेखी जिसमें भांति भांतिके फूल खिलेहुये और फल नानाप्रकारके लगेहुयेथे ॥

चौ० । गंध मनोरम सुखमा छाये। भांति भांति बहुविटप लगाये ॥
नानाजाति रंग बहुफूला । फूलरहे बहु सरवर कूला ॥
शीतल मंद सुगंध बयारी । डोलत तहां रहत श्रमहारी ॥
शुचिपपानकी रासबनाई। जलधारा तिन मध्य सुहाई ॥

उसबागके मध्यमें एकबड़ाउत्तममंदिर बनाथा और वहसब प्रकारके पदार्थोंसेयुक्त परमअलंकृतथा संडीन चपला प्रहासको वहांलेगई और एक उत्तमआसनपर बैठाकर कई स्थाली रत्न और सुवर्णसेभरकर प्रहासकी भेटकी और कहाकि यहभेट य-द्यपि आपकेयोग्य नहीं है तथापि आप इसको ग्रहणकरें और अपनानाम सत्य सत्य जोहो बतलावें यहसुनकर प्रहासबोला किनामतो मैं अपना प्रथमही बतलाचुकाहूं अब दुबारा बत-

लानेसे क्या प्रयोजनहै तब संडीनचपलाने अपनासंदूक मंग-
वाया और उसमेंसे अद्भुतपत्र निकालकर देखा कि यह मनुष्य
देवदूतहै अथवा कोई और है उसमें निकला कि यह निशाकरी
का सहायक प्रहासनामी बहुरूपियाहै यहभेष इसने तेरेपुत्रके
प्राणबचानेको धारण किया है कुछदेकर इसको जानेदे नहींतो
कुछ नकुछ उपाधि उठावैगा और जो बनपड़े तो इसको मार-
डाल क्योंकि यहबड़ाछलीहै यहदेखकर वह प्रहासकीओर क्रो-
धकीदृष्टिसे देखनेलगी तब प्रहासबोला कि क्यातेरीभी दुर्दशा
आईहै जोमेरीओर क्रोधकी दृष्टिसे देखतीहै मैंने तेरेसाथ क्या
बुराईकीहै जो हितकापरिणाम अनहित मिलताहै संडीनचपला
बोली कि जिसको हमप्राणदाता जानतेथे वहप्राणहर्त्ता निकला
तेरानामतो प्रहासहै अच्छाछल तैंनेकिया किमुझको भी छल
मेंलियाहोता अरे महाराज महेन्द्रकेशत्रु अब बता कि तेरी क्या
दुर्दशाकरूं प्रहासबोला किक्यातू बौराईहै अरीयह कहकि बच-
गई और अब जोकुछ तूकरसक्तीहो उसमेंकमी मतकरे वहबोली
कितैंने मेरेसाथ हितकर्म कियाहै अबमैं तेरेसाथ अनहित क्या
करूं जा यह सबद्रव्यलेकर तू यहांसे लंबाबन प्रहासबोला कि
हमचले न जायँगे तोक्या तेरेयहां रहनेको आयेहैं निदान यहां
तोप्रहाससे ये बातें होही रहीथीं कि वहां महेन्द्रने अद्भुतजाल
निकालकर देखा किसंडीन चपला क्या कररहीहै उस पुस्तकमें
निकला कि वह प्रहासको अपनेस्थानपर लाकर उत्तमआसन-
पर बैठायेहुएहै और उसकेसामने भेटकेलिये द्रव्यकी स्थाली
रक्खीहै और वहबार्तालाप प्रहाससे कररहीहै यह देखतेही म-
हेन्द्र क्रोधकेमारे अग्निरूपहोगया उससमय उसकेपास उसकी
प्रिया मायावती बैठीहुईथी प्रकटहोकि आनन्दाकी भांति माया-
वती और निद्रावती दोनोंबहिनेंभी महेन्द्रकी प्रियाहैं इनसे भी
महेन्द्रने कईबार संयोग करनेकेलिये कहाथा परंतु विचित्रमाया

के भयसे उन्होंनेभी उससे संयोग करना स्वीकार नहीं कियाथा और दोनों बड़ी प्रवल मायाकोविदथीं निदान महेन्द्रने क्रोधित होकर कहा कि विचित्रमायाकी सेनाके समीप एक बागहै उस में संडीनचपला प्रहासको लियेहुए बैठीहै तुम जाकर प्रहास को पकड़लाओ और यदि संडीनचपला कुछ बोले तो उसेभी दण्ड देना यह आज्ञा पातेही मायावती मायाकरके वहांसेउड़ी और बहुत शीघ्रतासे उस बागमें आ पहुंची सण्डीन चपलाने उसको बड़े आदरसेलिया और बैठाया परंतु मायावतीने डाटके कहा कि अरी सण्डीन तैंने शत्रुको ऐसे आदरयोग्य स्थानपर बैठायाहै महाराज महेन्द्रको बड़ा क्रोधहुआ है अब अच्छा इसी में है कि प्रहासको मुझे पकड़कर लेजानेदे और द्रोहको मिटाओ नहीं तो प्राणोंपर आपड़ेगी वहबोली अरीमैना इस प्रहास ने मेरे बेटेके प्राण बचाए हैं इससे अब मेरा यहधर्म नहीं है कि इससमय इसको किसी आपत्ति में डालूं वहबोली अरी उधर बैठ महाराजकी ओर देख यह समय धर्मके पालनेका नहीं है अपनेको निरर्थक खोवेगी सो तूचाहे उसके पीछे अपने प्राणखो परंतु मैं तो महाराजकी आज्ञासे विमुख न होऊंगी और इस मरेको पकड़कर लेजाऊंगी उससमय संडीनचपला और मायावतीमें आपसमें विरोधसा होने लगा कि इतनेमें प्रहासने उस सीसी का जल समय पाकर निकाला जो कीर्तलसे मिली थी और उसका एक छींटा मायावती के मारा कि वह मूर्च्छित होकर गिरपड़ी प्रहास खड्गलेकर उसको मारनेको दौड़ा परंतु तत्कालही एकहस्त प्रकटहुआ और वह मायावती को उठाकर लेगया तब संडीन चपला बोली कि हे प्रहास अब तू शीघ्र यहां से चलाजा और मैं भी कहीं भागकर छिपती हूं महेन्द्र अब मेरा शत्रुहोगया अब जहांमुझे पावेगा मरवा डालेगा तुमने यह बड़ाकठिनकर्म किया जो मायावती पर हाथ

चलाया यह सुनकर प्रहास बोला कि तुमने नहींसुना है कि शत्रु जो प्रबल है तो रक्षक प्रबलतम है और कहीं जाकर क्यों छिपती हो मेरेसाथ निशाकरी की सेनामें चलो और आनन्दपूर्वक वासकरो तुमनेदेखाहै कि जोजो हमारे सहायकहैं सबके सब परमेश्वरकी कृपासे अभीतक क्षेमकुशलसे हैं परमेश्वरने चाहा तो थोड़े ही दिनों में यह मायाकृत देश जयहुआ जाता है उससमय महाराज शत्रुञ्जय के सन्मुख देखना कि महाराज जो जो हमारे सहायक हैं उनको कैसे कैसे अधिकार देते हैं और जो तुम यह समझतीहो कि हमलोगों को महेन्द्र जयकरके दण्डदेगा तो उससमय जो गति एककी होगी वही सबकी होगी आगे तुमजानो मेरी समझसे जो उत्तम मंत्रथा वह मैं कहचुका यह सुनकर संडीन चपला बोली कि प्रहासजी तुमसत्य कहते हो चलो हम तुम्हारेहीसाथ चलें भागने और छिपनेसे यहीउत्तम है कि युद्धकरके अपने प्राणदें औरअपने चित्तकी वृत्तीको पूराकरें इसके उपरांत वह सण्डीन चपला विष्णोर्जयति— ऐसाकहि कर उठखड़ीहुई और आज्ञादी कि यात्राके वाद्यबजाए जावें तुरंत वाद्यबजनेलगे सब सेना शीघ्रतयारहुई और डेरे और तंबू लादेगये और सण्डीन प्रहास और रंतिकाल सहित एकविमानमें बैठकर बड़ी धूमधाम से निशाकरीकी सेनाकी ओर चली और उधर उसहस्तने मायावतीकोलेजाकर महेन्द्रकेसन्मुखरखदिया महेन्द्रने मायाकृतजलके छींटेमारकर उसको चैतन्यकिया और जबवह सचेतहुई तब उसने महेन्द्रसे कहा कि मैं संडीनचपलाको बुराभलाकह रहीथी कि प्रहासने मेरेपानीका छीटामारा और उससे मैं मूर्च्छित होगई यहसुनकर महेन्द्रने अद्भुत जालकी पुस्तक निकालकर देखा तो उससे विदितहुआ कि प्रहासने मायाकृतसीसीके जलकाछीटामाराथा जिससे मायावती मूर्च्छित होगई और संडीनचप-

ला अब प्रहासकी सहायकहोकर उसकेसाथ निशाकरीकी सेना कीओर जातीहै यहजानकर महेन्द्रने कुछमायाकरके तालीबजाई उससे एकपुतला प्रकटहुआ महेन्द्रने उसे आज्ञादी कि जाकर अडीन चपलाको बुलाला उसने तुरंत जाकर अडीन चपलाको महेन्द्रकीआज्ञा सुनादी और वह सुनतेही चलीआई महेन्द्रने उसे आज्ञादी कि तुमजाकर निशाकरीकी सेनाको विध्वंसकरो और संडीनचपला निशाकरीकी सेनाकी ओर जातीहै उसे भी पकड़लाओ यहसुनकर अडीनचपला बड़ीधूमधामसे चमकती हुई अपनेसाथ एकलक्ष सेनालेकर चलदी मार्गमें उसने विचारकियाकि संडीनचपला निशाकरीकी सेनामेंतो जातीहीहै मार्ग मेंरोकनेसे कुछ प्रयोजननहींहै वहींचलकर उसको उसकेसहायकोंसहित पकडूं इसमें मेरीप्रशंसाभीहोगी और दुहरा परिश्रम भी नहोगा यह विचारकर वह उसीओर चली और बहुत शीघ्र बड़ेमार्गको उत्तीर्ण करके विचित्रमायाकी सेनाके निकट जा पहुंची विचित्रमाया ने उसका बड़ासत्कार किया डेरे तंबू खड़े हुए सेना उतरी और अडीनचपला अपनी सभाके डेरेमें दिन भर बहुरूपियोंके भयसे चपला बनीहुई कौंधाकी और जब सायंकालहुआ और सूर्यरूपी महाउल्मुक आकाशरूपी मन्दिरसे बुझगई और चन्द्रमारूपी दीपक नभरूपी भवन में प्रज्वलित हुआ ॥

सो० । भयो जोसायंकाल अस्तभये श्रीदिवसमणि ।
कुमुदिनि फूलीं ताल जानि उदय निशिनाथको ॥

तब अडीनचपलाने अपनी सभामें प्रकट होकर युद्धके वाद्य बजनेकी आज्ञादी तुरंत युद्धके घोर वाद्य बजनेलगे और सेनामें कोलाहल पड़गया उस समय मायाकृत पक्षियोंने आकर निशाकरीकोभी सब समाचार सुनाये यहांभी युद्धके वाद्य बजने लगे और दोनों सेनाओंमें युद्धकी तयारीहोनेलगी ॥

चौ०। अतिरणकर्कश म्लेच्छ कराला। सहजनिशंक सुकाय विशाला॥
लगे युद्ध आयुध सब साजन। नारिकेल आदिक दुख भाजन॥
रहैं ज माया कोविद भारी। माया अस्त्र शस्त्र वर धारी॥
तिन मायाके प्रबल प्रयोगा। सिद्धकरे दैवलि आरु भोगा॥

निदान इसी प्रकारसे रात्रिभर तैयारी होतीरही और जिस समय सूर्यने प्राचीदिशामें उदय होकर अंधकारको दूरकिया और अपने निर्मल तेजसे सब नभ और पृथ्वी मंडलको दीप्त कर दिया॥

सो०। जब नभ भयो प्रकास उदये दिनपति तमहरन।
रंग भूमिके पास उभय सेन सजि सजि गईं॥

अडीनचपला मेघकी घटामें कोंधतीहुई एकलक्षसेना सहित और विचित्रमाया रत्नजटित मंडपमें विराजमान अनगिने म्लेच्छोंको साथलिये दोनों रंग भूमिमेंआईं और इधरसे रानी निशाकरी और आनन्दा आदिभी सब सेनाको साथ लेकर रणभूमिमें गईं उस समय दोनोंओर युद्धके बाद्य बजनेसे आकाश गूंजनेलगा और म्लेच्छ योद्धाओंकी गर्जनासे महा कोलाहल प्रकटहुआ प्रथम तो बिजलियां गिराकर बन जलायागया फिर जल वर्षा कर धूल शांतकीगई उपरांत बंदीजनोंने निकल कर सब शूरवीरों को रणका उत्साह दिलानेके पद पढ़े॥

चौ०। हे हे शूर बढ़हु रण करहू। शत्रुन मारि शोक परिहरहू॥
लेहु सुयश करिसंगर भारी। अरिदल नाशहु हे रणचारी॥
करहु युद्ध ताजि जीवन छोभा। मरे स्वर्ग जीते भुवि भोगा॥
अस सँयोग लहिको जगमाहीं। सुयशलेन इच्छाजेहिनाहीं॥

हेशूरवीरो आज इसरणमें कठिन कर्मकरके अपने शूरवीर पूर्व पुरुषाओंका नाम रखलो जब इस प्रकारसे शिक्षाकरके बंदीजन रणभूमिसे हटगये तब अडीनचपला चपलाकी भांति कोंधतीहुई आकाश मंडलमें स्थितहुई और निशाकरीकी सेनासे जो

कोई निकलकर रणकरनेगया उसीपर गिरकर उसने दो टुकड़े करडाले और फिर आकाशमें जाकर चमकनेलगी सबकोई उसकी ओर देखतेथे परंतु केवल चमक चपलाकी दृष्टि आती-थी और कुछ दिखाई नहीं देताथा और जब कई शूरवीर मारे गये फिर कोई उससे युद्धकरनेको सेनासे न निकला तबवह चपला अकस्मात् सेनाके ऊपर गिरी और सहस्त्रोंको उसने भस्म करदिया उस समय जो जो आसुरी मायाके परमवेत्ताथे वे तो कुछ माया करनेलगे और सेनामें भगदड़पड़गई उस समय रानी निशाकरीने अपने शिरपरसे चन्द्रिका युक्त कीटको उतार कर मनमें श्रीविष्णु भगवान्का स्मरण करके विनयकी ॥

चौ० । हे कृपालु प्रभु अंतरयामी । राखहु लाज मोर जग स्वामी ॥
तुम बिन मोर न और सहाई । रक्षणकरहु वेगि प्रभु आई ॥

इधरतो निशाकरीने विनयकी और उधर परमेश्वरकी कृपासे उसी समय संडीनचपला प्रहास और रंतिकाल सहित सेना एक लक्ष लियेहुए आकाश मार्गसे वहां आपहुंची ॥

जयकरीछंद ॥

चपलासम चपला संडीन । कौंधिकौंधि भइ प्रकट प्रवीन ॥
महा प्रबल योद्धा सब संग । अतिरण दुर्मद भरे उमंग ॥
लीन्हें अस्त्र शस्त्र बिकराल । यूथ यूथ आवत तेहि काल ॥
मानहु उमड्यो सिंधु अपार । आवत चल्यो तरंग पसार ॥

निदान संडीनचपला पहुंचतेही रानी निशाकरीकी सेनाके एक ओर आई और चपला रूपधारणकरके अडीनचपलाकी सेनापर आ गिरी और सहस्त्रों म्लेच्छोंको मारकर भस्म कर डाला यह देखकर अडीनचपलाने निशाकरीकी सेनापर गिरना बंद किया और संडीनचपलासे जाकर लिपटगई अबतो दो चपला आकाशमें कलासी खातीहुई दृष्टि पड़नेलगीं और बिजलीकी उग्रछटाके सिवाय और कुछ दिखाई नहीं देनेलगा

प्रतिपद मायाकर्ताका जयकारा म्लेच्छ बोलते थे युद्धके वाद्य बजतेथे ध्वजा और पताकाओंको ऊंचाकरतेथे शंख और भेरी बजातेथे ऐसा कठिन कोलाहलथा कि प्रलयकालमें भी ऐसाही होताहोगा इतनेमें वे दोनों चपला युद्ध करतीहुई पृथ्वीपरगिरीं औ लोटनेलगी उससमय रंतिकाल अपने विमानपरसे कूदा और मायाके बलसे पृथ्वीमें समागया और थोड़ीदेरमें पृथ्वीफटी और रंतिकालने अडीन चपलाके समीप प्रकटहोकर ऐसा अट्टहासकिया कि अडीन चपला बड़ी मायावीहोनेपर भी मूर्च्छित होगई यदि और कोई मायावी म्लेच्छहोता तो उसका शिर अवश्य फटजाता और संडीन चपला उड़कर आकाशमें चली गई और जैसेही उसने घोरगर्जनाकरके चाहा कि अडीन चपला पर गिरूं तैसेही एक हस्त प्रकटहुआ और उसकोउठाकर लेगया इसके पीछे रंतिकाल फिर पृथ्वीमें गुप्तहोकर अडीन चपलाकी सेनामें निकला और घोर अट्टहासकिया कि उससे सहस्रों योद्धाओंके शिर फटगये और सैकड़ों मूर्च्छित होगये और संडीन चपला कौंध कौंधकर अडीन चपलाकी सेनापर गिरनेलगी और योद्धाओंको भस्म करनेलगी क्षणमात्रमें सब अडीन चपलाकी सेनाके पैरउखड़गये यहदेखकर विचित्रमाया ने अपने सेनापतियोंको आज्ञादी कि तुम इनको रोको इतनेमें निशाकरीकी सेना भी बढ़ी और विचित्रमाया और निशाकरी दोनोंकी सेना आपसमें भिड़गई और मायाकृत युद्धहोनेलगा परंतु रंतिकाल प्रतिपद पृथ्वीमें समा समाकर निकलकर अट्टहास करताथा और संडीन चपला बारबार शत्रुसेनापर गर्जि गर्जिकर गिरतीथी उससमय ऐसा कोलाहलमचाथा कि कहनेमें नहीं आसकताहै योद्धा एक दूसरेपर मायाकृतअस्त्रोंके प्रहार करतेथे एकओर आनन्दा बसंतऋतुको उत्पन्नकरके म्लेच्छोंको मोहितकरती थी दूसरीओर रक्तकेशी अपने केशोंको खोलकर

कोई निकलकर रणकरनेगया उसीपर गिरकर उसने दो टुकड़े करडाले और फिर आकाशमें जाकर चमकनेलगी सबकोई उसकी ओर देखतेथे परंतु केवल चमक चपलाकी दृष्टि आती-थी और कुछ दिखाई नहीं देताथा और जब कई शूरवीर मारे गये फिर कोई उससे युद्धकरनेको सेनासे न निकला तबवह चपला अकस्मात् सेनाके ऊपर गिरी और सहस्त्रोंको उसने भस्म करदिया उस समय जो जो आसुरी मायाके परमवेत्ताथे वे तो कुछ माया करनेलगे और सेनामें भगदड़पड़गई उस समय रानी निशाकरीने अपने शिरपरसे चन्द्रिका युक्त कीटको उतार कर मनमें श्रीविष्णु भगवान्का स्मरण करके विनयकी ॥

चौ० । हे कृपालु प्रभु अंतरयामी । राखहु लाज मोर जग स्वामी ॥
तुम बिन मोर न और सहाई । रक्षणकरहु वेगि प्रभु आई ॥

इधरतो निशाकरीने विनयकी और उधर परमेश्वरकी कृपासे उसी समय संडीनचपला प्रहास और रंतिकाल सहित सेना एक लक्ष लियेहुए आकाश मार्गसे वहां आपहुंची ॥

जयकरीछंद ॥

चपलासम चपला संडीन । कौंधिकौंधि भइ प्रकट प्रवीन ॥
महा प्रबल योद्धा सब संग । अतिरण दुर्मद भरे उमंग ॥
लीन्हें अस्त्र शस्त्र विकराल । यूथ यूथ आवत तेहि काल ॥
मानहु उमड़यो सिंधु अपार । आवत चल्यो तरंग पसार ॥

निदान संडीनचपला पहुंचतेही रानी निशाकरीकी सेनाके एक ओर आई और चपला रूपधारणकरके अडीनचपलाकी सेनापर आ गिरी और सहस्त्रों म्लेच्छोंको मारकर भस्म कर डाला यह देखकर अडीनचपलाने निशाकरीकी सेनापर गिरना बंद किया और संडीनचपलासे जाकर लिपटगई अबतो दो चपला आकाशमें कलासी खातीहुई दृष्टि पड़नेलगीं और बिजलीकी उग्रछटाके सिवाय और कुछ दिखाई नहीं देनेलगा

प्रतिपद मायाकर्ताका जयकारा म्लेच्छ बोलते थे युद्धके वाद्य बजतेथे ध्वजा और पताकाओंको ऊंचाकरतेथे शंख और भेरी बजातेथे ऐसा कठिन कोलाहलथा कि प्रलयकालमें भी ऐसाही होताहोगा इतनेमें वे दोनों चपला युद्ध करतीहुई पृथ्वीपरगिरी औ लोटनेलगी उससमय रंतिकाल अपने विमानपरसे कूदा और मायाके बलसे पृथ्वीमें समागया और थोड़ीदेरमें पृथ्वीफटी और रंतिकालने अडीन चपलाके समीप प्रकटहोकर ऐसा अट्टहासकिया कि अडीन चपला बड़ी मायावीहोनेपर भी मूर्च्छित होगई यदि और कोई मायावी म्लेच्छहोता तो उसका शिर अवश्य फटजाता और संडीन चपला उड़कर आकाशमें चली गई और जैसेही उसने घोरगर्जनाकरके चाहा कि अडीन चपला पर गिरूं तैसेही एक हस्त प्रकटहुआ और उसकोउठाकर लेगया इसके पीछे रंतिकाल फिर पृथ्वीमें गुप्तहोकर अडीन चपलाकी सेनामें निकला और घोर अट्टहासकिया कि उससे सहस्रों योद्धाओंके शिर फटगये और सैकड़ों मूर्च्छित होगये और संडीन चपला क्रोध कोंधकर अडीन चपलाकी सेनापर गिरनेलगी और योद्धाओंको भस्म करनेलगी क्षणमात्रमें सब अडीन चपलाकी सेनाके पैरउखड़गये यहदेखकर विचित्रमाया ने अपने सेनापतियोंको आज्ञादी कि तुम इनको रोको इतनेमें निशाकरीकी सेना भी बढ़ी और विचित्रमाया और निशाकरी दोनोंकी सेना आपसमें भिड़गई और मायाकृत युद्धहोनेलगा परंतु रंतिकाल प्रतिपद पृथ्वीमें समा समाकर निकलकर अट्टहास करताथा और संडीन चपला बारबार शत्रुसेनापर गर्जि गर्जिकर गिरतीथी उससमय ऐसा कोलाहलमचाथा कि कहनेमें नहीं आसकताहै योद्धा एक दूसरेपर मायाकृतअस्त्रोंके प्रहार करतेथे एकओर आनन्दा बसंतऋतुको उत्पन्नकरके म्लेच्छोंको मोहितकरती थी दूसरीओर रक्तकेशी अपने केशोंको खोलकर

दीप्तविन्दु बर्षातीथी और वे अग्निरूपीबाण होहोकर शत्रुसेना परगिरते थे तीसरीओर केसरी मायाकरकरके म्लेच्छोंकाबध करतीथी और चौथीओर मारीचने प्रलय पसारीथी॥

भुजङ्गप्रयातछन्द।

मचोघोर संग्राम ताठोरभारी। चढ़ेचावचोखे भिरे युद्धचारी॥
उभै ओरके बीर लैनाम टेरें। थिरो हेथिरो भाषिके बाणप्रेरें॥
बिना शीशके ह्वैकिते बीरडोलैं। किते मारुरे मारुरे मारुबोलैं॥
कटीसेनतेहा नहींसंख्यजाकी। बही रक्तधारा नदीरूपताकी॥

यहदशा देखकर विचित्रमायाने युद्धनिवृत्तकरनेके बाद्यबजवा दिये और आप आकाश में उड़कर चलीगई और वहांजाकर ऐसीमायाकी किआकाशमें अग्निकीनदी प्रकटहोकर अग्निकी वर्षाहोनेलगी तब रानी निशाकरीने युद्धत्यागके बाद्यबजवाये और विचित्रमायाने उसअग्निको शांतकिया और सेनाको लेकर अपनेडेरोंको लौटी और रानीनिशाकरीभी युद्धभूमिसेफिरकर अपनीसभामें आई उससमय संडीनचपला और उसके पुत्ररंतिकालने आकर निशाकरीकोभेटदी निशाकरीने दोनोंका बड़ा सन्मान किया और अपने गलेसे नौलखाहार उतारकर रंतिकाल को पहिराया और बड़ा अधिकारदिया और उत्सव होने की आज्ञादी नृत्यहोने लगा और मद्यपात्र चलनेलगा अब यहां तो यह उत्सव होरहाहै परंतु आगे हिडंबाकी कथा सुनिये जिसपर मायासे वेष्टितहोकर शत्रुंजय महाराजका पार्थ विक्रमनामी पुत्र मोहितहोगयाथा और चित्रांगदके मंत्रसे हिडंबाने आज्ञादीथी कि उक्त राजपुत्रके नामसे युद्धके बाद्य बजवायेजावें निदान एकदिन तेजसांपति अर्थात् दिनमणिने पश्चिम दिशामें अस्ताचलपर बासकिया और तेजप्रधान अर्थात् चंद्रमारूपी मंत्रीने आकर आकाशरूपी देशका प्रबंध किया॥

चौ०। संध्या भई भई निशिकारी। अति भयरूप महा अँधियारी॥
मिटयोतेज भव विमल प्रकासा। निशि सनसन बोलत चहुंपासा।

उस समय अद्भुत मिथ्याईश्वरकी सेनामें पार्थ विक्रम के नामसें युद्धके वाद्य बजनेलगे यह समाचार दूतोंने वैष्णवीसेना के अधिपति श्रीमहाराजाधिराज सुवीरको पहुंचाये उन्होंने भी युद्धके वाद्य बजनेकी आज्ञादी और शूरवीर अपने२अस्त्र शस्त्र आदिको ठीक करनेलगे जिस जिस अस्त्रका युद्ध जो जो जानताथा उसने वही वही अस्त्र लेलिया अस्त्रालय खोलदिया गया और अश्वोंको युद्धकेलिये अलंकृतकिया निदान चारप्रहर रात्रि यही सरंजाम होतारहा जबतड़का हुआ और सूर्यने उदय होकर नभको अपनी रश्मियों से दीप्तकरदिया और चन्द्रमा मलीनहोकर गुप्तहोगया॥

सो०। उदयभये जबभान भयोप्रकाश अकाशमें।
भर्जीसेन भयमान तारागण रूपी सकल॥

उससमय श्रीमहाराजाधिराज अपने शयनमंदिरसे निकले सबसेनापति और अधिकारियोंने आकर दंडवत्की और श्री महाराज परमोत्तम अश्वपर सवारहुये और सिंहासनपर अपने किरीट मुकुटको स्थापितकरके सबसेनापति और शूरयोद्धाओं सहित सेनालियेहुये रणभूमिमेंआये और उधरसे अद्भुत मिथ्या ईश्वर अपनेसाथ हिंडबा और पार्थविक्रमको लियेहुये सबसेना सहित व्याधिकीसमान रणभूमिमेंआया पार्थविक्रम उत्तमअश्व परसवार आगे२था और पीछे उसके और सबसेनापतिथे और हिंडबानेभी मायासे अपनास्वरूप परमसुंदर और मनोहर बनायाथा निदान रणभूमि की समविषमभूमिको समकरायागया और व्यूह रचनाहुई और फिर बंदीजनोंने निकलकर वीररस केपद पढ़पढ़कर सब शूरवीरोंको रणकाउत्साह कराया॥
चौ०। दोऊ नृप अति अमरष बाढ़े। उभय सेन सजिसजिभे ठाढ़े॥

तहँते दोउ अतिगौरव लीन्हें । उभयव्यूह रचना शुचिकीन्हें ॥
सब थरराखि वीर जगजेना । करि सबअँग चतुरंगिनि सेना ॥
तहां वीररस पदसुनि शूरा । रण उछाहसों भरे अक्रूरा ॥

इसके उपरांत पार्थविक्रम मिथ्या ईश्वरसे युद्धकी आज्ञालेकर अपने अश्वको बढ़ाकर रणभूमिमें लाया और वैष्णवीसेना के शूरवीरोंको ललकारकर बोला कि तुममेंसे जिसको मेरेसाथ रण करनेका उत्साहहो वह आकर युद्धकरे इस शब्दकोसुनकर सब वैष्णवी सेनाकेयोद्धा आंखोंमें आंशूभरकर कहनेलगे कि हम अपने राजपुत्रको मारने न जायँगे उससमय श्रीप्रतापवान् अवंतिकाधीश श्रीमहाराज अरिदमनने जो महाराज शत्रुंजयके प्राणप्रिय अनुचर राजाथे और महाराजकेपीछे उनके अधिकार काकार्य करतेथे उन्होंने अपना अश्वबढ़ाकर वैष्णवी सेनाके महाराजाधिराजसे कहा कि मैं जाकर राजपुत्रको समझाताहूं यह कहकर उन्होंने अपनाघोड़ा रणभूमिमें बढ़ाया और पार्थविक्रमके समीपआये उनको देखकर राजपुत्र बोलाकि अरे अवंतिकाधीश तू मुझसे युद्धकरने आयाहै बहुतश्रेष्ठकिया अच्छा प्रथम मुझपर प्रहारकर यह सुनकर अरिदमन बोला किआप से युद्धकरनेकी मेरीसामर्थ्य कहांहै मैं सेवक और आप राजपुत्र परंतु आप इसबातको विचारिये कि आपने एकचांडालिनीम्लेच्छी कुलटामायावी स्त्रीकेपीछे अपनेपिताकी सेनासे युद्धकरनेका विचारकियाहै बड़ेशोककीबातहै किआपने महाराजाधिराजका भीकुछ ध्याननकिया यहसुनकर पार्थविक्रमबोला अरेअरिदमन तैंनें मेरीप्राणप्रिया और अपनी रानीको दुर्वचनकहे अच्छाअब रह मैं देखतो तेरीक्या दशाकरताहूं यहकहकर उसने खड्गनिकालकर अरिदमनकेमारा उसने बेबशहोकर हाथकी थपकीमार करखड्गके प्रहारकोरोका और हाथपकड़लिया तबपार्थविक्रमने दूसरे हाथसे अरिदमनकी ग्रीवापकड़ी और दोनों बलकरके

खींचनेलगे उससमय उनदोनोंके उत्तमअश्व उनके बलको स-हनसके और पृथ्वीपर बैठगये दोनोंवीर उनपरसे कूदपड़े और दोनों एक दूसरेको पकड़कर मल्लयुद्ध करनेलगे और दोनों जने दोमत्तहाथियोंकी भांति लड़नेलगे यहदेखकर हिंडबानेऐसी मायाकी कि अरिदमनके शरीरका बलजातारहा मानो हाथपैरों सेजीव निकलगया तबतो पार्थविक्रमने उसको उठाकर देमारा और बांधकर अद्भुतकी सेनामें देदिया और उनसेनापतियोंने उसेलेजाकर उसीस्थानमें कैदकिया जहांवैष्णवी सेनाके और शूरवीर कैदथे अबमहाराज शत्रुंजयको तो बहुरूपिये प्रथमही पकड़कर अंधकूपमें छोड़आयेथे और दूसरा ऐसाकौनथाजो पार्थ विक्रमको आड़ता निदान वह खड्गलेकर महाराज शत्रुंजयकी सेनासे आकर भिड़गया इससेनाके जोशूरवीर पकड़ेनहींगयेथे वे निराशहोकर उससे युद्धकरनेलगे उधर महाराजाधिराजनेभी अपना घोड़ाबढ़ाया उधरसे मिथ्या ईश्वरकी सेनाभी बढ़ीऔर महाराजाधिराजने गर्जकर कहा कि ॥

दो० । हौंसु वैष्णवी सैनको महाराजअधिराज ।
अरिदल मर्दन कर्णसम हतिहौं सकल समाज ॥

उससमय दोनोंसेना आपसमें भिड़कर घमासान करनेलगीं और योद्धा एक दूसरेको प्रचारि प्रचारिकरि लड़ने लगे उस समय ऐसा घोर युद्धहुआ और दोनों ओरसे ऐसेशस्त्रचलेकि

चौ० । अगणित भटन प्राणबिनुकीन्हे । अगणित अंग भंग करिदीन्हे ॥
बहुहय किये बिगत हय सादी । बहुगज कीन्हे बिगत प्रमादी ॥
बहुबाहन ह्वैह्वै गत बाहक । इतउत भगत फिरे बिनुगाहक ॥
बहु बाहक गत बाहन ह्वैके । लरत भये थिरि महिपै ज्वैके ॥
कीन्हे बिनु ध्वज बहुयुथपनको । दियेअधनुकरि बहुसुभटनको ॥
तिनसैनिक गणको तेहिक्षणमें । रह्योनदिशाज्ञानगुणिमनमें ॥

दो० । हेममयी कोदण्ड अरु भूपनमय दोर्दंड ।
चपल असंख्यन होतहे अथउरअ जेचंड ॥

जानिपरयो तिनको निरखि मनुछन छटाअवेक।
अनुक्षण प्रकटति दुरति फिरि प्रघटतिदुरतिसटेक ॥

वैष्णवी सेनाके शूरवीर राजपुत्र पार्थविक्रमपर प्रहारनहींकरते थे उसके प्रहारको रोकतेथे इससे पार्थविक्रमने सबशूरवीरोंको और महाराजाधिराजकोभी घायलकरदिया और बहुतसीसेना को मारकर यमलोकमें पहुंचाया अंतमें वैष्णवीसेनाकी अजय हुई और सैनिक महाराजाधिराजको सुखपालमें डालकर भागे उससमय बहुरूपियोंने बड़ी शीघ्रतासे महाराज शत्रुंजयके घर की स्त्रियोंको वाहनोंपर बड़ी शीघ्रतासे सवारकराया और उन को लेकर पर्वतपर चढ़गये और सेनापति श्रीमहाराजाधिराज को लेकर पर्वतकी कंदराओंमें आये और डेरेतंबू आदि सब जहांके तहां छोड़गये तब पार्थविक्रमने आकर भास्करी सभा आदि सब डेरोंको घेरलिया और जब कोई रोकनेवाला न मिला तब उनसब डेरोंकोउखड़वाकर जयदुंदुभीबजवाई और भास्क-री सभा आदि सब डेरोंको लेकर सेनासहित लौटआया और कहनेलगा कि कल मैं पर्वतपर धावाकरूंगा जहां वैष्णवी सेना जाकर छिपीहै और एकको भी जीता न छोडूंगा निदान अद्भुत मिथ्या ईश्वर पार्थविक्रमपर द्रव्य न्यौछावर करताहुआ आया और उसे लेकर सभामें प्रवेशकिया सबसेनाने कमरखोली और और आनन्द उत्सव होनेलगा उससमय पार्थविक्रमनेकहा कि मैं भास्करी सभा लेआयाहूं अब मेरा विवाह हिडंबासे होजाय थोड़ेही कालमें शत्रुंजयका भी शिर काटकर लाऊंगा उधर हिडं-बा भी राजपुत्रके संयोगके लिये अधीरथी उसने चित्रांगदसे कहा कि अब देरीमतकरो राजपुत्रसे मेराविवाहकरदो वहबोला कि हे रानी तुम शीघ्रता करके काम बिगाड़ोगी अच्छा आज तुमतैयारी करो कि विवाह तुम्हारा होजाय और राजपुत्र के साथ रमण करने से तुम्हारा चित्तप्रसन्न होजाय यह सुनकर

हिंडवावागमें आई और अपने सेवकों को आज्ञादी किसव प्रकारकी तैयारीकरो और उन्होंने उसवाटिका और उसमहल को भलेप्रकारसे अलंकृत किया ॥

चौ० । उत्तमपट सवथान डसाये । जेवहुमोल सुपरम सुहाये ॥
रत्नजटित आसनवर भाये । शुचिपर्य्यंक तहां विछवाये ॥
मणिकृत पात्र अनूपवनाये । ठौर ठौर तहँते धरवाये ॥
भांति भांतिके फूलसुहाये । और सुगंधितजलमन भाये ॥
मधुघट कंचन निर्मितसोहे । पानपात्र [illegible]भा वोहे ॥
अमलमुकुरअरुभूपणवसना । वर्णिनसकै[illegible]जेहिरसना ॥
सुखअरु भोग वस्तुहैजेती । सकल संभा[illegible] धरीतहँतेती ॥

और भास्करी सभाकेडेरेको खड़ाकरके उसमें राजपुत्र पार्थ-विक्रमके आनन्द और भोगविलास करनेका सरंजामकिया और गंधर्विणी और नृत्यकरनेवाली स्त्रियां बुलाईगईं--

सो० । सभाभास्करी जौन भई अलंकृत तासमय ।
तामधि शोभाभौन सिंहासन शोभितभयो ॥
तापर राजकिशोर पार्थविक्रमी लसतभो ।
आसपास चहुँओर मित्रवर्ग वैठे सकल ॥

वहां राजपुत्र पार्थविक्रम दूलहावनकर सिंहासनपर विराजमा-नहुआसमीप उसके मित्रवर्ग उत्तम उत्तम आसनोंपर आसीन हुए आनन्द उत्सव होनेलगा और मधुमद्यके पात्रचलनेलगे निदान यहांतो यह आनन्द मंगलहै परंतु अववैष्णावी सेनाका हालसुनिये कि महाराजाधिराज और उनके सव प्रधान योद्धा घायल होकर पहाड़पर पड़े थे महाराजाधिराजकी जव मूर्च्छा जगी तव उन्होंने कहाकि मुझको घोड़ेपरवांधदो मैं शत्रुसेना में जाऊंगा इसदशासे तो युद्धमें शरीर त्यागकरना श्रेष्ठ है यह सुनकर सवसेनाजन निराशहोकर रोनेलगे और महाराजकोफिर मूर्च्छा आगई जव दूसरीवार मूर्च्छा जगी तव उन्होंने कहाकि एक प्रहासके नहोनेसे सेनाकी यहदुर्दशाहै नामकेलिये यहांस-

हस्रों वहुरूपियेहैं परंतु किसीसे कुछनहीं होसकता यह ताना सुनकर प्रहासके पुत्र सुवास वहुरूपियेको वुरामालूमहुआ और उसने विचारकियाकियातो चलकर अपने प्राणदो अथवा इस दुर्भगाहिडंवाको मारडालो यहशोचकर वहसव सरंजाम वहुरूप धारिणी विद्यासम्वन्धी लेकर चलदिया और जव अद्भुत मिथ्या ईश्वरकी सेनामें पहुंचा उसने वहपार्थविक्रमके विवाहका उत्सव देखा और एकसेवकका स्वरूप धारणकरके एकमनुष्यसे पूछा कि आजक्या किसका विवाह है यह सुनकर उसमनुष्यने सव वृत्तांत हिडंवाका विवाह पार्थविक्रमसे होनेका वर्णनकिया और कहाकि हिडंवा वागमें है वहांसे विवाह करने आवेगी यहसुनकर सुवास उसवागका पता पूछकर चलदिया और जवउसके निकट पहुंचा उसने अपना स्वरूप एक म्लेच्छकासा वनाया और मिथ्याईश्वरके चित्रोंसे अपनेको अलंकृत किया और माथेपर एक हीरेकी सदृश चमकतेहुए पाषाणके सुन्दर खण्ड कोवांधा उसपर यहखुदाथाकि-अयम् प्रधानो महेन्द्रस्य-और गलेमें फूलोंकेहार और हाथमें त्रिशूल और अग्निवाण धारण करके वागके भीतर चलाआया जिसने उससेपूछा उसने उत्तरदिया किमैं महेन्द्र महाराजके पाससे आयाहूं उन्होंने जाकर हिडंवासेकहा वहतुरंत वाहिर निकलकरआई और वड़े आदर से उसे भीतर लिवालेगई और कहाकि विराजिये तवउसनेकहा कि मुझको वैठनेकी आज्ञानहींहै महाराजने यहपत्र दियाहै इसको देखकर इसकाउत्तर लिखादो यहकहकर उसने एकपत्र निकालकरदिया हिडंवाने उसकोपढ़ा उसमें लिखाथा किधन्यहै हेहिडंवातैंने वड़ाउत्तमकर्म किया जो वैष्णवी सेनाको विध्वंस किया हम मायाकर्ताके वागकोगयेथे और वहांसे थोड़ेसे फललायेथे उनको हमने अपने सव प्रधान सेवकोंको वांटाहै इससे तुमको भी थोड़ेसे फल क्रौंचप्रधानके हाथ भेजे जाते हैं इनके

खानेसे आयुबढ़जाती है क्योंकि मायाकर्ता के बागके फलों में बड़े २ गुणहैं तुमको उचित है और हमारी शपथहै कि जिस-समय पहुंचें उसीसमय खालेना और खाने के समय अपने पास केवल अपने निज सेवकोंकोही रखना और सबको हटा-देना क्योंकि ऐसा नहो किकोई उनमें भ्रष्टहो और किसी पर-छाईं उन फलोंपर पड़ेतो मायाकर्ता का अपमान होगा और अब तुमशीघ्र युद्धसे निवृत्तहोकर आओ तो तुमको बहुत साराज्य और धन पारितोषककी भांति दियाजावै -- यहपढ़कर हिंडंबा बहुत प्रसन्नहुई और सबसेवकोंको बुलाकरकहा कितुम सब बागकेबाहिर जाकरठहरो और जो २उनमेंप्रधानथीं उनको रखलिया और उनसेभीकहा किजोतुम भ्रष्टहोउतो यहांमतठहरो जबयहप्रबंध वह करचुकी तब उसनेकहा किहेक्रौंच लाइये वह फलमुझको दीजिये यहसुनकर सुबासनेकमर खोलकर बहुतसे उत्तमफलनिकाले और एकथालीमें उनकोचुनकर पहिलेदंडवत की और फिर हिंडंबाकोदिये उसनेभी उनकोलेकर अपनेशिर परचढ़ाया और कहाकि महाराज महेन्द्रकी मेरेऊपर बड़ीकृपा है अपनी दासियोंका ध्यान सदैव रखतेहैं और महाराजने जो पत्र में अपनीशपथ लिखीहै इससे हेक्रौंच मैं तुम्हारेसामने ही खातीहूं तुम महाराजसे यहवृत्तान्त निवेदन करदेना यहकहकर उसने वेफल आपखाये और उनदासियोंकोभीदिये परंतुवेफल तो मूर्च्छाकरद्रव्योंसे युक्तथे खातेही हिंडंबाआदि सबमूर्च्छित होगई तबसुबासने सबकेशिर काटडाले और उनके शिरकटते ही महा कोलाहल प्रारंभहुआ और महाअंधकार छागया और म्लेच्छ और म्लेच्छिनी सबबागके बाहिरसे दौड़ीं परंतु उसी अंधकारमें सुबास हिंडंबाके गलेसे महाराज शत्रुंजयकीबासावी मालालेकर बागकी भीतिफांदकर भागआया और म्लेच्छभी सबभयभीत होकर भागे महा उपाधि मचगई उससमय पार्थ

विक्रम जो हिडंबाकी मायासे वेष्टितहोने से दूल्हाबनाहुआ भा-
स्करीसभामें बैठाथा हिडंबाकेमरनेसे मूर्च्छितहोगया और थोड़ी
देरमें जब वह मायासे मुक्तहुआ और मूर्च्छाजगी तो अपनेको
मिथ्याईश्वरकी सभामेंपाया और अपनाभेषभी मिथ्याईश्वरके
उपासकों कासा देखकर उसनेसभासदोंसे पूछाकि यह मेरीक्या
दशाहै वह बोले किआपने परमेश्वर की उपासनाकी है और
आपका आज विवाह है और फिर उन सबने प्रारंभसे लेकर
उससमय तक सबवृत्तान्त कहा उसको सुनकर पार्थविक्रम महा
क्रोधकरकेउठा कि हाय इसनास्तिकोंने मुझसे विष्णुभक्तसे वै
ष्णवीसेना कटवाई और अपनी उपासना करवाई और खड्ग
खींचकर गर्जताहुआ बोलाकि ॥

जयकरीछंद ॥

पारथविक्रम है ममनाम । पार्थसमान विक्रमीआम ॥
गहिअसि अरिदलकोसंहार । करत निमिषमेंप्रलयपसार ॥

निदान उस मिथ्याईश्वरकी सभामें खड्ग चलनेलगा और
बड़ाकोलाहलहुआ हिडंबाके मरनेसे वैष्णवीसेनाके इन्द्रविक्रम
और अरिदमन आदि जोजो शूरवीर उस म्लेच्छी की मायासे
निर्वलहोगये थे सबपराक्रमी होगये और पार्थविक्रमकी गर्जना
सुनकर निगडोंको तोड़डाला और बाहर निकलकर रक्षकोंको
मारा और उनके शस्त्रलेकर सभाकीओर दौड़े उससमय पार्थ
विक्रमभी लड़ताहुआ बाहरआगयाथा सब मिलकर मिथ्याई-
श्वरकी सेनामें घुसपड़े जो बाहर पड़ीहुईथी उससमय सेनाके
योद्धा अस्त्र शस्त्र लेकर युद्धकेलिये तैयारहोनेलगे परंतु उन्हों
ने क्षणमात्रमें सहस्रोंको मारकर गिरादिया और बड़ीहलचल
पड़गई इसी अवसरमें सुवासने पर्वतपर जाकर सबवृत्तान्त
सुनाया उसकोसुनकर जो जोयोद्धा बहुतघायलनथे वेभी अस्त्र
लेलेकर आगये और उधर महाराज शत्रुंजय जिनको बहुरू-

पिया एक अंधे कूपमेंडालआया था एकदिन पीछे चैतन्यहुये और पत्थरको हटाकर बाहिरनिकले परंतुपहाड़में मार्गभूलगये दोदिनतक भूले भूले फिराकिये उसदिन उनको एकअहेरी .....न से मिला उसको कुछदेकर मार्ग बतानेको साथलिया और शिवा केनिकटजबपहुंचे उन्होंने पार्थविक्रमआदिको युद्धकरतेहुएदेखा निदान श्री महाराजभी खड्ग लेकर पहुंचगये और हिंडवाकी सेनाके मायावी योद्धाओंकी मायाको महामंत्रसे दूरकर करके युद्ध करनेलगे अस्त्रशस्त्र चलनेलगे और शिर कटकटकर ओलोंकी भांति पृथ्वीपर गिरनेलगे ॥

गुरुतोमरछंद ॥

अति बेग सों ते जाइकें। भेलरत शायक छायकें ॥
सब पैतरनि पै घूमिकें। भट पार्थविक्रम झूमिकें॥
चरि गरजिगरजिप्रचारिकें। अतिगुरुगदाहि प्रहारिकें॥
पग पाणिअगणित तोरिकें। उरशीश अगणित फोरिकें॥
सबतुरंग सादिन मारिकें। अरु घनेसुभटनि टारिकें॥
फिर और थलपर राजिकें। भौ बाण बर्षत गाजिकें॥

भुजंगप्रयातछंद ॥

बही शोणि तो दान दी ह्वै गहीरी। गहे बेगगाढ़ी नहीं नेकु धीरी ॥
बहें रुण्ड मुण्डें कटे पाणि शुण्डें। सुबेधे हिये के मरे तासु झुण्डें ॥
लसें जाय सेते बसें भारती के। खसे केतु से तेतुसे तार तीके ॥
बहें बाण भल्लें गदा भिंदि पालें। मनो कालके गालके खालचालें ॥

निदान वह मिथ्याईश्वर हारकरभागा और रत्नाकर पर्वतके किलेमें चलाआया और म्लेच्छ सब भागकर मायाकृतदेशको चलेगये और बहुतसे मारेगये उससमय महाराज शत्रुंजय ने शत्रुसेनाका सब सरंजाम लूटलिया और भास्करीसभाको ला कर फिर उसीस्थानपर खड़ाकरायाजहां पहलेखड़ीथी सेना सब आकर उतरी हाटलगगई पर्वतपरसे श्रीमहाराजाधिराज आदि सबनेआकर अपनी२ सिविरोंमें विश्रामकिया जोजो घायल

थे उनसबके घावोंपर औषधीलगाईगई और सुवासने आकर वह वासवीमाला महाराजशत्रुंजयकोदी श्रीमहाराजने उसको बहुतसाद्रव्य पारितोषिकदिया और उधर चित्रांगदने राजामहा बीरसे महेन्द्रकेनाम दूसरापत्र इसआशयका लिखवायाकिहिडं-बा शत्रुंजयके पुत्रपर आसक्त होगईथी इससे परमेश्वरने उस का नाश करादिया अब शीघ्रकिसी औरको परमेश्वरकी सहा-यताकेलिये भेजिये परमेश्वर बाट देखरहेहैं शीघ्र परमेश्वरकी आज्ञाका पालन करना यह पत्र लिखवाकर उस पर्वतपर रख-वादिया और डंकेसे चोटलगाई कि तत्काल एक हस्त प्रकट हुआ और पत्रको उठाकरलेगया परंतु अब कथा मायाकृत देशकी सुनिये कि रणभूमिसे हस्त अडीनचपला को उठाकर महेन्द्रके पास लेगया महेन्द्रने मायाकरके उसको चैतन्यकिया और उसके मुखसे सब वृत्तांत सुनकर लज्जासे उसने अपना शिर झुकालिया और उस चपलाको अपने स्थानपर जानेकी आज्ञादेकर चाहा कि त्रिडीनचपलाको बुलवाऊं और निशाकरी से युद्ध करनेको भेजूं कि इतनेमें एक बड़ा मायावी म्लेच्छ जो सभासद महेन्द्र काथा और जिसको अधिकारभी बड़ाथा महे-न्द्रकी दशा देखकर हंसपड़ा महेन्द्र तौ शोकमें बैठाहीथा उसे हँसतेहुए देखकर बड़े क्रोधसे कहा कि अरे अपमानकारी तू अपने स्वामीकी बुरी दशाको देखकर शोक नहीं करताहै किन्तु हंसताहै उस म्लेच्छका नाम कालखंजथा वह उक्तबातकोसुनकर बोला कि महाराजमें निशाकरी और प्रहासके प्रारब्धको देख-कर हँसताहूं कि कैसे कैसे मायावी म्लेच्छ मायाकर्त्ताओं के उपासक उन लोगोंके हाथसे मारेजातेहैं और नीचा देख देख-कर भागतेहैं सत्य तौ यह है कि प्रहासको जय करना बहुत कठिनहै यह सुनकर महेन्द्र क्रोधके मारे लाल होगया और कालखंजसे कहा कि अरे दुष्टात्मा अबतू यहांसे उठकर चला

जा और आजसे फिर हमारी सभामें मत आइओ तू शत्रुकी प्रशंसा करके हमारे शूरवीरोंके चित्तको छोटा करता और अपने धर्मको छोड़कर बोलताहै वह कालखंजभी था उक्त दुर्वचनोंको सह न सका और बोला कि हे महेन्द्र इसी घमंडके करनेसे मायाकर्त्ताने तुझपर यह विपत्ति डालीहै इतना तो तैंने नीचा देखा और फिरभी तू नहीं मानताहै मैं सत्य कहताहूं कि तू प्रहासका वध न करसकैगा और मुझको तो प्रहासका मतभी सत्य जानपड़ताहै तब महेन्द्र बोला कि मुझे मालूमहुआ कि तूभी प्रहासका सहायकहै जभी उसकी ओर लेकर उसकी प्रशंसा करताहै अच्छा इस अपमान करने का दंडमें अभी तुझे देताहूं देखूं तो प्रहास तुझको कैसे बचाता है यह कहकर उसने सेवकोंको आज्ञादी जो वहां सहस्रोंथे कि इस अपमान करनेवालेको पकड़लो यह आज्ञा पाकर बहुतसे म्लेच्छ दौड़े कालखंजने माया करना चाहा परंतु वह अकेला था और वे बहुतसे मायावीथे कुछ उसका वस न चला और म्लेच्छोंने उसे पकड़लिया तब महेन्द्रने आज्ञादी कि इसको रक्तवाहिनी नदीके पार लेजाओ और निष्प्रभ भवनके सामने प्रत्यक्ष खण्डमें जोबड़ाभारी मैदानहै वहांलकड़ियोंकी बड़ीचितावनाकर इसको निशाकरीकी सेनाके सन्मुख भस्म करदोकि वहभी इसकी दुर्दशादेखें और वहांतक सब बहुरूपिये आसकतेहैं देखूंतो कि इसको क्योंकर छुटालेजाते हैं आजरात्रिभर इसको उसीमैदानमें कैदरक्खो प्रातःकाल हमभी निष्प्रभभवनमें आकर उसओरको बैठेंगे जिधरसे निशाकरीकी सेनादिखाईदेती है और इसके भस्महोने और इसके सहायकोंके मन मारकर रहजानेका उत्सव देखेंगे यह आज्ञापाकर सहस्रों मायावीम्लेच्छ कालखंजको बड़े प्रबन्धसे लेचले सबअदृश्यखंड में यह समाचार फैलगया और कालखंजके घरमेंभी संदेशा

पहुंचा उसकी स्त्री रानी चान्द्रीमाया अपने साथ कई सहस्र दासियों को लियेहुए रोती पीटतीहुई चली कि अपने पतिके अंत समयमें दर्शन करलूं और कालखंजके जितने सेवकथे वे भी वाल वखेरे हुए रोते पीटते चले परंतु माया धीश महेन्द्रके भयसे सब दूर दूर चलेजातेथे कोई निकट नहींजाताथा जब उसकैदीको लेकर मायावी म्लेच्छ नदीके पार उतरे सब प्रत्य-क्षखंडमें भी ये समाचार फैले और मायाकृत पक्षियों ने सब वृ-त्तांत विचित्रमायाको भी जाकर सुनाया वहभी सवार होकर उस उत्सवको देखने चली सब अधिकारी और सेनापतिभी उ-सके साथ साथ होलिये और मायाकृत नगाड़े बजनेलगे और सब प्रत्यक्ष खंडमें यहवात घोषित कराई गई कि महाराजमाया धीशसे जोकोई विरुद्धताकरेगा उसकी यही दशाहोगी होतेहोते यह समाचार रानी निशाकरी की सेनामेंभी पहुंचे और रानी नेसुना कि कालखंज नामी म्लेच्छ हमारा हितोन्वेषी होनेसे ज-लाया जायगा प्रहासनेभी सुना और सुनकर सबके सब अधीर्य होगये उस समय रानी निशाकरीने मायाकृत तूर बजाई और सवसेनाको तयार करके चाहा कि जाकर कालखंजको छीनलावें परंतु प्रहासने कहा कि हेरानी जोतुम मायाकृतदेशके स्वामीकी सेनासे लड़सकतीं तो फिर हमउसको मारही नडालते यहआ-पत्ति क्यों भोगते भलातुम क्योंकर कालखंजको छीनलाओगी इससे उत्तम यहहै कि कुछ सेनापतितो मायासे पृथ्वीमें प्रवेश करजावें और कुछ आकाशमें स्थित होकर छुपेहुएरहें जबमेरी गर्जनासुनें औरमहेन्द्रकी सेना मूर्च्छित होजाय तब तुरंत प्रकट होकर महेन्द्रकी सेनाको विध्वंसकरें और सेना थोड़ी यहांरहे और थोड़ी सेनापतियोंके साथ जाकर छुपै और यह सब प्रबन्ध तुमरात्रिमें करना यहजो दिन रहगयाहै इसको व्यतीत होजाने दो नहींतो सबहाल विदित होजायगा परंतुमैं अभी जाकर कुछ

उपाय कार्य साधन करनेका सोचताहूं यह कहकर प्रहास चलदिया और वनमें पहुंचकर उसने तूरबजाई उसको सुनकर सब बहुरूपिये एकत्रहुए प्रहासने उन सबसे सब वृत्तान्त कहा उसको सुनकर सब बहुरूपियोंने प्रहाससे अपने अपने कार्य साधनाका यत्न पृथक् पृथक् कहा प्रहासने उसको सुनकर सब के उपायोंको अंगीकारकिया वर्णन उनका आगे प्रसंग आने पर होगा निदान सब बहुरूपिये वहांसे चलदिये प्रहासभी एक ओरको चलदिया और इधर म्लेच्छभी कालखंजको लियेहुए उसी वनमें पहुंचे विचित्रमायाभीआई और एकओर ठहरगई अब महेन्द्रकी यह आज्ञाथी कि रात्रिभर कालखंज को कैद रखना इससे जब वह दिन व्यतीतहुआ और अंधकाररूपी शोक वस्त्रोंको संसारने धारणकिया ॥

चौ० । भई निशा जग भयउ अँधेरा । सकै न एक एक तन हेरा ॥
विना इन्दुसोनिशा अचानक । शोक ग्रसित जनु भई भयानक ॥
तारागण नभ मंडल छाये । मनहुं निशाको देख न आये ॥

उस समय कालखंजकी रक्षाके लिये रक्षक नियतहोगये और विचित्रमाया के ठहरनेको डेरे खड़े कियेगये और वह आकर उनमें उतरी और एक मायावी म्लेच्छ तंत्री नामी बन से लकड़ी कटवा कटवाकर ढेरलगवाने लगा और सेना में रक्षक रक्षा करतेहुए फिरनेलगे और उधर निशाकरी अर्द्धसेना लेकर गुप्त मार्गों से चलदी और जब उस स्थानके निकट पहुंची उसने प्रहासके मंत्रके अनुसार सबको पृथ्वी और आकाशमें छिपादिया और बहुरूपिये जोमंत्रकरके चलेथे उनमें से चपला प्रथम उस स्थानके निकट पहुंचा और तंत्रीको लकड़ियोंका प्रबंध करतेहुए देखकर उसने अपना स्वरूप एक लकड़िहारे कासा बनाया और कंधेपर टिंगारी रखकर तंत्रीके पास आकर कहनेलगा कि मैं एक वृक्षको काटरहाथा उसमेंसे एक

अग्निशिखा प्रकट हुई और अप्सरा बनकर नाचने लगी में वहांसे भाग आयाहूं आपभी चलकर देखिये यह सुनकर उस को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह चपलाके साथ होलिया जब एकांतमें पहुंचे चपला ने मूर्छाकर चूर्णकी नास देकर तंत्री को मूर्छितकिया और एक गर्तमें उसे ढककर उसके वस्त्र उतार कर आप धारण करलिये और उसकासा स्वरूप बनाकर चला आया और चारों ओर फिरकर लकड़ी इकट्ठा करनेका प्रबन्ध करनेलगा और उन लकड़ियोंको इस प्रकारसे ढेर कराया कि बीचमें पोल ऐसी रक्खी जिसमें होकर दो तीन मनुष्य उतर कर जिधरचाहें चलेजायं यह तो इसप्रकारसे लकड़ी ढेर कराने लगा और उसी समय उपहास वहां पहुंचकर और लकड़ियों का ढेर देखकर बनमें चलागया और सेंध बांधकर इसप्रकारसे सुरंग खोदने लगा कि उस ढेरके बीचा बीच में जाकर निकले इसी अवसरमें मायावी म्लेच्छोंका सा भेष बनाये वहांउपदेशी औरप्रचंडभीजापहुंचे और उनलकड़ियोंमें मूर्छाकरतैललगाने और उनकेनीचे मूर्छाकरचूर्ण बिछानेलगे निदान ये सबतो अपना२ कार्य करनेलगे परंतु प्रहास जोमंत्र करके चलाथा वह रक्तबाहिनी नदीके किनारे२ होताहुआ एकबागके समीपपहुंचा और देखाकि वहबाग बड़ाअपूर्वबनाहै नानाप्रकारके सुगंधित फूल फूलरहेहैं उनकीगंध बड़ाआनन्द कररहीहै वृक्षनानाप्रकार के रसाल फलोंसे लदेहुये शोभा देरहेहैं लताअनेक प्रकारकी प्रफुल्लितलगीहैं औरपक्षीभांतिभांतिकी मधुरबोलीबोलरहेहैं॥

जयकरीछंद ॥

फटिक परवान बनी दीवार। चित्रित शोभित परम दुआर ॥
नागदंत शुचि बने अनूप। निवसत तिनमें खग बहुरूप ॥
लता बेलि तरु शोभाधाम। फूले फले लगे तहँ आम ॥
बहु प्रकार पक्षी तेहि बाग। मधुर मधुर ध्वनि गावत राग ॥

प्रहासजबउसबागमेंपहुंचा एकस्थानपरठहरकर देखनेलगा वहां कालखंजकी भार्याचांद्रीआकर टिकीहुईथी यहबाग काल-खंज ने इसप्रत्यक्ष खंडमें विहारकरनेके निमित्त बनवायाथा सो उसकी भार्या उसके शोकमें आकर वहांटिकीहुईथी और यह जानकर कि कलमेरापति जलायाजायगा अपनीदासियों सहित बड़ा करुणा विलाप कर रहीथी और कहरहीथी मैं भी अपने पतिके साथअपनेप्राण दूंगी प्रहास जबपहुंचा तब वहस्त्री अ-पनेपतिको स्मरणकरके विह्वलहोगई और फूटफूटकर रोनेलगी॥

जयकरीछंद ॥

चहुँदिशि लखन लगी भर्तार। दुःख शोकसों भरी अपार॥
हा पति हा पति कहि करिशोर। रोदन करणलगी अतिघोर॥
महा त्राससों भरी अचैन। कहति विलाप भरे बहुबैन॥
हिय हनि हाहा नाथ पुकारि। चहुंदिशिलखतिबहतदृगबारि॥
मरी बिनष्ट भई जगमांह। तुम्हें बिना प्रिय पति नरनाह॥
गिरति उठतिफिरिफिरिछबिधाम। दुरतिभीत भरिरोवतिभाम॥
होय शोकसों तप्त महान। रुदति श्वास लैके अतिमान॥

प्रहासने उसस्त्रीके विलापको सुनकर अनुमानकिया कियह कालखंजकी भार्याहै और एकांतमेंबैठकर उसने अपनास्वरूप एक वृद्धास्त्री का सा बनाया शिरपर श्वेतकेश लगाये और कुब-ड़ाबनकर हाथसे लकड़ी टेकताहुआ और हायपुत्र हायपुत्र कहताहुआ उसस्त्रीके पासगया और उसकी बलैयां लेकर बड़ा रुदनकिया और कहाकि मैंने कालखंजको खिलायाहै और जब रोपीटचुकी तबबोली कि हे रानी तुमएकाकी मेरेसाथ बागके द्वारतक चलोमैं कालखंजके छुटानेका कुछउद्योग जानतीहूं तुम भी चलकर उसको सुनलो चान्द्री यह सुनकर सबको वहींछोड़ कर उसवृद्धाकेसाथ हो ली प्रहास उसको एकान्तमें लिवालाया और वहां उसके मुखपर मूर्छाडमारकर उसको मूर्छितकरदिया

और उसके वस्त्र और आभूषण उतारकर उसे थैलीमें डाल लिया और उसका सा स्वरूप अपना बनाकर और उसके वस्त्र और आभूषण पहिरकर अपने स्थानपर आया और वहां आकर उन दासियोंके सन्मुख स्त्री रूप प्रहास पुकारनेलगाकि मैं सतीहूं—मैंसतीहूं— यह सुनकर सब दासियां उसके पैरों पर गिरपड़ीं और बोलीं कि हे सुंदरी अभी तेरी वय बहुत थोड़ीहै यह तेरा कोमल अंग सतीहोनेके योग्य नहींहै तू अपनी विरह की अग्निको शांत कर यह सुनकर चान्द्रीने उत्तरदिया कि॥

दो०। प्रीति न टूटै अन मिले उत्तम मनकी लग्ग।
सौ युग पानी में रहै मिटै न चकमक आग॥

जन्म भर विरहकी अग्निसे अपनेको संताप देनेसे एकवार अपने प्राणपतिके साथ जलकर मरजाना उत्तमहै॥

दो०। दुसह विरह दारुण दशा रहै न और उपाय।
जियत जान ज्यों राखियत पियको नाम सुनाय॥

यह कहकर वह स्त्री फूट फूटकर रोनेलगी और बोली कि-

दो०। लाल तिहारे विरहकी अगिनि अनूप अपार।
सरसें वरसें नीरहू झरहू मिटै न झार॥

और फिर दासियोंको आज्ञादी किहमारा शृंगारपात्र और वस्त्र और आभूषण लाओ जिससे हम अपना शृंगार करके अपने प्राणपतिके साथ परलोक जाने को तयार होरहेहैं यह सुनकर वह दासियां शृंगारपात्र और वस्त्र और आभूषण ले आईं उस समय वह अपने केशोंको खोलकर कंघी करने और मुक्ता पिरोनेलगी उस समय उसके केशोंकी अपूर्व छविथी॥

क०। वाला वार छोरिके निवारतहै वार वार तार तार फैलिरहे चौथिद मुखिन्दुके। लहरत ऐड़िनलों छहरत चूमें भूमि झरझर मोती परें पुंजन जलिन्दुके॥ भनै रघुनाथ किधों जानिके सुधाके बुन्दजात चले मुदित मनोहर मलिन्दुके। मानो चन्द्रमंडल पै कुण्डमें अमीके हेतु धाय गये छौना छाय लाखन फणिन्दुके॥

और दांतोंपर मिस्सीलगाकर तांबूलखाया कि दांतोंकी उ-ज्ज्वलता और मिस्सीकी श्यामता और तांबूलकी ल ई से मुखारविन्दकी शोभा वड़ी मनोहर होगई ॥

क०। कविगंग कहा कहिये उपमा याही विधि राजत ऊरवसीकी।
जादिनसे दरशी मुसक्यान सो कान भई वश तेरी हँसीकी॥
चन्द्रके आननमें तिल राजत ऐसी विराजत दांत मिसीकी।
फूलनकी फुलवारिनमें मनु खेलतहै छौना जलसीकी॥

और रक्त वस्त्र परमोत्तम धारण करके हृदय को उभारकर कंचुकीको कसनेलगी कि सरोज उरोजकीशोभा देखकर किस-का मन मोहित न होताथा ॥

क०। कैधों जगजीति मार दुन्दुभी उलटी दीन्हे कैधों पीन श्री फल छिपाय उर राखेहैं। भनत दिवाकर गयंद मणिहार गंग चक्र वाक तीरमें सिकोर बैठ पांखेहैं॥ कैधों हेमकलश पियूष रस भरि भरि कालेरंग मुख पैसुआधे रंग दाखे हैं। तुंग कुच रुद्रसे करेरे गोरे गोल गोरी पूजन करे में मन काको नाभिलाषेहैं॥

निदान जब उक्तप्रकारसे वह अपना शृंगार करचुकी तब दासियोंने उसको एकबड़ीचौकीपर बैठाया और फूलोंकेहार प-हिराकर सबने सतीकी पूजाकी उपरांत सेवक उसके विमानको उठाकरचले उससमय वहसती बहुतप्रसन्नमन हँसतीहुई हाथ में श्रीफल उछालतीहुई चलीजातीथी जिस मार्गसे उसकाबि-मानजाताथा वहांके निवासी म्लेच्छ और म्लेच्छी उसकेसाथ होजातेथे और फूल चढ़ाचढ़ाकर सतीकी पूजा करतेथे और वरदानमांगतेथे और जबभीड़ अधिक होजातीथी तब सती विमानको खड़ाकरवाकर सबको संसारके नाशमान होनेका उ-पदेश करतीथी और परमेश्वरमें चित्तलगानेकी प्रशंसा वर्णन करतीथी और कहतीथी कियहसंसार एकस्वप्नरूपहै सबपदार्थ इसके नाशमानहैं जोयहां सुखरूपदीखताहै वहअंतमें दुखरूप है इससे इस संसारके विषयोंमें लिप्तहोकर मनुष्यको रहनाउ-

चित नहीं है किंतु उस घट घटव्यापी परमेश्वरसे ध्यानलगाना उचितहै उसकी भक्तिसे किसीपदार्थका मिलना दुर्लभ नहीं है भुक्तिऔर मुक्ति परमेश्वरकी भक्तिसे मनुष्यके करतलपररहती हैं इससेकेवल परमेश्वरका भजनही सुखरूपहै और बाकीसब मिथ्या और दुखरूपहै ॥

चौ० । घटघटव्यापीअलखनिरंजन । निराकारनिर्भयदुखभंजन ॥
अव्ययअक्षय और अकामा । निर्विकारभवतारकनामा ॥

दो० । अलख अगोचरसर्वमय आदि ब्रह्मजगदीश ।
भवसागर के तरन को नौका बिस्वे बीश ॥

निदान वहसती गाजेबाजेसे शिक्षाकरतीहुई आशीर्वाददेती हुई और फूल और भस्मकी प्रसादी बांटतीहुई चलीजातीथी कि इतनेमें वहरात्रि व्यतीतहुई और प्राची दिशामें सूर्यमंडल की प्रभाका प्रकाशहुआ ॥

चौ० । भयेदिवाकरउदयअकाशा । मिट्यो निशातमभयोप्रकाशा ॥
भगवतभजनकेरउरप्रेरक । भयउजे हैं अनन्यहरि सेवक ॥

प्रातःकाल होतेहोते सती उसीस्थानपर पहुंची जहां चिता रचीगईथी औरउधर महेन्द्रभी अपने शयनमंदिरसे उठा और निष्प्रभ भवनमें आकर विराजमानहुआ उससमय वह काल खंजम्लेच्छने निराशाहोकर श्रीविष्णु भगवान्की शरणली और अपनेचित्तको एकाग्र करके विनयकी कि हे प्रभोमेरी रक्षा करो मैं भी निशाकरीकी भांति तेरी शरण आयाहूं ॥

क० । जैसे प्रहलादहेत प्रकटे हैं खम्भफारि हिरनाकुश मारि व्यथा ताकी नशैदई । गजकी सुटेर सुनि ग्राहसों बचायो जिमि ध्रुव से अनाथ को अचल्ल गति देदई ॥ तैसेही नाथ मोहिं शरणागत दीन जानि कृपा करो वेगि आइहों मैं अति भै मई । काहे वेर लावतहो उबारि लेत काहे नहीं करुणानिधान तेरी करुणा कितै गई ॥

निदान कालखंज उक्तप्रकारसे ईश्वरसे प्रार्थना कररहाथा किइतनेमें कोलाहलहुआ और सती वहांआनपहुंची उसे देख

कर सबम्लेच्छ उसकीओर दौड़े और उससे पूछनेलगे कोई कहताथा मेरेपुत्र कबहोगा दूसरा पूछताथा मुझे धन कब मिलेगा सती सबको यथोचित उत्तर देतीथी और चिताकी ओर चली जातीथी कि इतनेमें उसकोलाहलको महेन्द्रने सुना और पूछा कियह क्याहै म्लेच्छोंने विनयकी कि महाराज कालखंज की स्त्री अपने पतिकेसाथ सतीहोनेको आईहै यहसुनकर उसने सतीको बुलाया और उसके मोहिनी स्वरूपको देखकर मोहितहोगया और कहनेलगा किहे सुंदरी तू अपने प्राणमतदे मुझसे धन और राज्य जितना चाहेले और मुझेअपनाभक्त जान यह सुनकर सतीने उत्तरदिया किमहाराज जब हृदयसे पतिका स्नेह और उसके विरहकी अग्नि शांतहो तब धन और राज्य सब अच्छालगे मेरीतो यहगतिहै कि॥

दो०। लकडी जल कोइला भई कोइला जलकर राख।
मैं पापिनि ऐसी भई कि कोइला भई न राख॥

यह कहकर वहचौकीपरसे उतरकर चिताकी ओर चलदी उसपर म्लेच्छ कालखंजको महेन्द्रकी आज्ञासे बैठाही चुकेथे सतीभी वहां पहुंची और चितापर चढ़कर कालखंजको गोदमें लेकर बैठगई उससमय बहुतसेम्लेच्छ सतीके प्रेमकी परीक्षा लेनेकेलिये आये और दीपक प्रज्वलितकरके सतीसे कहा कि अपनी हथेलीपर काजर पाड़कर दिखा जो तेराप्रेम सत्यहै तो तुझको दीपककी अग्निसे पीड़ानहोगी यहसुनकर सतीने अपनी हथेलीपर काजरपाड़कर दिखादिया और बैठीहुई हँसाकी इतनेमें उपदेशी और प्रचंड जोप्रबंध करते फिरतेथे वहांआये और मूर्च्छाकर द्रव्यमिलाहुआघी और तेललकड़ियोंपर छिड़कनेलगे उपरान्त चपला वहांआया और उसने पूलाजलाकर चितामें अग्नि लगादी लगातेही वहअग्नि चारोंओर चिताके फैलगई और ज्वाला निकलनेलगी तब सतीरूपी प्रहासने

कालखंजको जालमें लपेटकर थैलीमें डालदिया और आप उसपोलमेंकूदपड़ा जो चपलाने चितारचनेके समय रखदियाथा और जबवह पृथ्वीपरपहुंचा उपहासने जो सुरंग खोदकरबैठा था पाशमारकर प्रहासको सुरंग के भीतर घसीट लिया और दोनों जने सुरंगमेंहोकर निकलआये इसीअवसरमें अग्निसब चितामें लगगई और उसका मूर्च्छाकर धुआं कईकोस में फैलगया उसकी गंधसे विचित्रसाया और जितने म्लेच्छ वहां खड़ेहुयेथे सबकेसब छींक मारमारकर मूर्च्छितहोगये और गिर पड़े उस समय प्रहास और उपहास खड्गलेकर बड़े शब्दसे गर्जते हुए दौड़े और उन मूर्च्छित हुए म्लेच्छोंके शिर काटने लगे और नथुनोंमें चैतन्य कर तेलके फोए लगालिये जिससे आप मूर्च्छित न होजावें इतने में चपला और उपदेशी और प्रचंडभी दौड़ आये और म्लेच्छोंको विध्वंस करनेलगे और उनकी गर्जनाको सुनकर रानी निशाकरी और आनन्दा और केसरी और रक्तकेशी आदि कोई पृथ्वीसे और कोई आकाश से प्रकट हुई और म्लेच्छोंको मारनेलगीं और नारिकेल और निम्बुक आदि मायाकृत अस्त्रों के प्रहारसे मूर्च्छित म्लेच्छोंके हृदयोंको फाड़ने लगीं उन म्लेच्छों के मरनेसे बड़ा कोलाहल प्रकट होगया आंधियां चलनेलगीं और अग्नि और पाषाण बर्षनेलगे और वह मूर्च्छित करने वाला धुआं ऐसा फैला कि निष्प्रभ भवनके उस स्थानमें जाकर घुटगया जहां महेन्द्र बैठा हुआ शिरझुकाकर उस चिताके समीपके वृत्तांतको देखरहाथा वहभी उस धूमके घ्राण करनेसे मूर्च्छित होगया और निष्प्रभ भवन से ढुलमुलाता हुआ गिरा परंतु उसी समय पृथ्वी से पुतली उत्पन्न हुई और उन्होंने हाथोंपर लेकर महेन्द्रको गिरनेसे रोकलिया इसअवसरमें वह धुआं निष्प्रभ भवनके भीतर भरगया और उससे सबसभासदभी मूर्च्छितहोगये और निशा-

करीकी सेनाने उसीसमय पहुंचकर म्लेच्छोंको मारना आरंभ किया और सेनापति और सेनाने मिलकर क्षणमात्र में उ म्लेच्छों को मारडाला उस समय एक अपूर्व कोलाहलभ्ा॥

जयकरीछंद।

तेहि क्षण निशाकरी वल भार। मायाकृत असि लई निकार॥
गिरिगिरि चपला उठिउठि ज्वाल। मारत म्लेच्छन बड़ी उताल॥
कोलाहल अति कठिन अपार। नभ मंडल छायो भयकार॥
महा उग्र चपला संडीन। गिरि गिरि करत म्लेच्छ गण छीन॥
उठि उठि चमकत गिरत उताल। शत्रुनि बधि बधि करत विहाल॥
तासु छटा गर्जनि लखि घोर। थर थरात नभ धरणि अथोर॥
जेहि थल गिरति भयानक भेस। रहत न तहां दूबको लेस॥
मायाकृत अस्त्रनि झर लाय। वेधत शूरवीर अरि काय॥
कटि काटि कर पग मुंड अपार। वर्षत मनो मेघ जल धार॥

उससमय उन म्लेच्छोंके मरनेसे रुधिरकी नदी वहनेलगी और प्रहास मरेहुए म्लेच्छोंके वस्त्र उतार उतार कर लूट मार करने लगा इसी अवसरमें मायाकृत पुतलीआई और विचित्रमायाको उठालेगई और महेन्द्रको चैतन्य किया उनने जो नेत्र खोलकर देखा सव अपनी सेनाको रक्त और मट्टी में मिला हुआ पाया यह देखकर उसने विचित्रमाया को चैतन्य किया और आप लज्जाकेमारे वहांसे दैवीखंडकी ओर चलदिया परंतु विचित्रमाया जवचैतन्यहुई उसने शीघ्र मायाकृतजल वरसाकर सवको चैतन्य करदिया और युद्धकरनेको उपस्थितहुई उससमय निशाकरी और आनन्दा आदिने विचारकिया कि हमसवतो निष्प्रभभवनके ऊपरजा न सकेंगे और विचित्रमाया जो रक्तवाहिनी नदीको आज्ञादे देगी तोवह हम सवको घेरकर डुवोदेगी उसमेंसे कोई निकल न सकेगा यह विचारकरके उसने जयदुंदुभी वजवाकर सेनाको फेरा वहुरूपियेभी भागगये और सवकेसव म्लेच्छोंका महानाश करके कुशलपूर्वक अपने

डेरोंको लौटआये और सभामेंआकर बैठगये और बड़ाउत्सव करनेलगे उससमय प्रहासने कालखंज और चान्द्रीमायाको अपनी थैलीमेंसे निकाला उन्होंने जो अपनेको उस महा आपत्तिसे अकस्मात् सभामें पाया चकितहोकर चारोंओर देखने लगे तब प्रहासने कहा किअरे कालखंज में सती बनकर तुझ को छुटालायाहूं और यह कहकर उसने उसको सबपूर्व वृत्तान्त सुनाया तबतो कालखंजने उठकर अपनाशिर प्रहासके चरणों पर रखदिया प्रहासने उसेउठाकर हृदयसे लगालिया रानीनिशाकरीको उससे भेटदिलवाई रानीनेउसे सेनापतिका अधिकार दिया और उसकेलियेरहनेको डेराखड़ाकरादिया और वहअपनी स्त्रीसहित उसमें आनन्दपूर्वक रहनेलगा उधर महेन्द्रदैवी खंडसे महाम्लानचित्त फिरकर फिर वदरीउद्यानमें आया और विचित्रमायाने मरेहुये म्लेच्छोंको उठवाकर उनके शरीरों का संस्कार किया और जो सेना बचीथी उसकोलेकर अपनीसभा में आई और चाहाकि निशाकरीसे युद्धकरके वदलालूं परंतु महाराज महेन्द्रकी आज्ञापानेकी बाट देखतीरही किदेखूं महाराजकी इस विषयमें क्याइच्छाहै उधर महेन्द्रजो वदरीउद्यान में आया उसने अपनेमंत्री विश्वमालीको आज्ञादी कि निशाकरीकी सभामेंजाकर प्रहासको पकड़ला और जोकोई तुझको रोके उसे दंडदेना यह आज्ञा पाकर विश्वमाली वहींमायाबल से पृथ्वीमें प्रवेशहोगया और पृथ्वीके भीतर २ इस प्रयोजनसे चलाकि अबकोई बहुरूपिया न मिलेगा अब यहतो पृथ्वीके नीचे २ चलाआताहै परंतु प्रहासकावृत्तान्त सुनिये किवहसभा में बैठाहुआथा अकस्मात् उसको ध्यानआया किआज इतने वड़े मायाधीशको तेरे कारणसे वड़ीलज्जा प्राप्तहुई है अवश्य कोई न कोई तेरे खोजमें आताहोगा यह सोचकर उसने अपनी थैली से काश्मीर देशके एकमल्लको निकाला प्रकटहो कि

प्रहासने अपनी थैली में समयसमयपर बहुतसे मायावी म्ले-
च्छ और नास्तिक डाल लियेथे और वे सब उसीमें थे
और जानतेथे किहम एक नगरमें रहतेहैं और उसथैलीके जो
अधिष्ठाता देवताहैं वे उनको भोजन देतेथे यहथैली प्रहासको
धर्मराजनेदीथी अपूर्व इसका प्रभावथा कि पहलेभी वर्णन हो-
चुकाहै वहएक वटुएकी सदृशथी और उसमें सातनगर बसेहुए
थे निदान प्रहासने उसथैलीमेंसे उस मल्लको निकालकर मू-
र्च्छित किया और उसकास्वरूप अपनासा बनाकर उसे सभाके
एक स्थानमें एकशय्यापर सुलादिया और आपमरुतदत्त वस्त्र
ओढ़कर गुप्तहोगया इसीअवसरमें विश्वमाली पृथ्वीके नीचे२
मायाबलसे निशाकरीकी सेनामें आया और बीचसभामें पृथ्वी
को फोड़कर निकला और बोलाकि--विश्वमालीप्रधानोहम्--
यह सुनकर जो जो बड़े २ मायावीथे वे उसपर निम्बुक और
नारिकेलआदि मायाकृत अस्त्र डालनेलगे परंतु उसने ऐसी कु-
छ मायाकी किशीतलवायु चलनेलगी और उसके स्पर्शमात्र से
सब सेनापति और सेनाके योद्धा अचेत होगये उससमय वि-
श्वमालीने देखा कि प्रहास उससभामें नहींहै तब विचारकिया
कि सब जगह ढूंढ़लो जो यहां न मिले तो फिरवनमें चलकर
ढूंढ़िये यह विचार करके वह प्रहासको सभामें ढूंढ़नेलगा और
थोड़ी देरमें उस स्थानपर पहुंचा जहां प्रहासने उस मल्लका
स्वरूप अपनासा बनाकर सुलादिया था देखतेही उसने उस
मल्लको प्रहास जानकर उठालिया और आकाशमार्गी हुआ
और चलते समय अपनी उस मायाको संहारकिया जिससे सब
अचेत होगयेथे और जबसब चैतन्य होगये तब ऊपरसे पुकार
कर बोला कि अरे अधर्मियो महाराज महेन्द्रने मुझे केवल
प्रहासके पकड़नेकी आज्ञादीथी नहींतो मैं सबके शिरकाट डा-
लता अबकेवल प्रहासको पकड़कर लियेजाताहूं तुममेंसे किसी

को ऐसी सामर्थ्यहै जो उसको छुटाले यहसुनकर सबसेनापति युद्धके लिये सन्नद्ध हुए परंतु प्रहासने जो मरुतदत्त वस्त्र ओढ़े हुए अदृश्य खड़ाथा रानी निशाकरी के कानमें कहाकि मैं यहां उपस्थितहूं तुम सेनापतियोंको रोको लड़ने मतदो यह सुनकर निशाकरीने सबलोगोंको और कहाकि प्रहासका परमेश्वर रक्षक है लेजानेदो कोईरोकटोक न करो यहसुनकर सबसेनापति ठिठुक रहे और विश्वमाली उसको लेकर आकाशमार्ग से शीघ्र महेन्द्र के समीप जापहुंचा और उस प्रहास रूपी मल्ल को महेन्द्रके सन्मुख डालदिया तब महेन्द्रने चांडालों को बुलाकर कहा कि तुम इसको चैतन्य करके मारडालो यह सुनकर उन चाण्डाल म्लेच्छोंने प्रहासरूपी मल्लको जलछिड़ककर चैतन्यकिया जब मल्लकी आंखें खुलीं उसने अपनेको एक बड़े महाराजकी सभा में पाया और घबराकर महेन्द्रको दंडवतकी महेन्द्र ने कहा कि क्यों वे बहुरूपिये तूनेदेखा कि मैंने तुझे कितना शीघ्रपकड़वाकर मँगालिया अब तुझको बुरी गतिसे मरवाऊंगा यहसुनकर वह मल्ल बोला कि महाराजमैं बहुरूपिया नहींहूं किंतु श्रीमहाराज का एक दासहूं और अद्भुत ईश्वरका उपासकहूं महेन्द्र बोला कि अरे अबमैं तेरे छलमें न आऊंगा और यहकहकर चांडा-लोंको आज्ञादी कि इसका वध करो तब उस मल्लने विनयकी कि हे महाराजाधिराज आप अच्छीप्रकार से निश्चय करके न्यायकीजिये मैं काश्मीरका रहनेवालाहूं वैष्णवोंने मुझे पकड़ कर बहुत प्रकारसे चाहाकि वैष्णव होजाय परंतु मैंने उनका मतअंगीकार नहींकिया तब प्रहासने मुझे थैलीमें डाललिया था आज अपनेको मैं यहां देखकर बड़ा चकितहूं कि क्योंकर तो थैलीसे छुटा और क्योंकर श्रीमहाराज तक पहुंचा यह बात सुनकर महेन्द्रको संदेहहुआ और उसने अद्भुत जाल निकाल कर देखा उससे मालूमहुआ कि यह मल्ल सत्य कहताहै प्रहास

ने इसको अपनासा स्वरूप बनाकर सुलादियाथा विडवमाली इसको पकड़ लायाहै यह जानकर उसने जल्दी उसका मुख धुलवाया तो वह बहुरूप धारिणी विद्या संबन्धीरंग जातारहा और उसका निजस्वरूप निकलआया तब महेन्द्रने उसको छुटवाकर पारितोषिक धनदिया और उसको नौकर करलिया और फिर विडवमालीसेकहा कितू कैसाप्रहास पकड़कर लायाथा उसने विनयकी किमैं बहुरूप धारिणी विद्याका ज्ञातानहींहूं प्रहासकासा स्वरूप इसका देखकर इसको पकड़लाया मेरा इसमें कुछ दोषनहींहै यहसुनकरमहेन्द्रने उसकीबातपरविश्वासकिया और एक मायाकृतहस्तको आज्ञादी कि तू जाकर विचित्रमायाकीसेना मेंसे समीररूपा बहुरूपिणीको पकड़ला यहआज्ञापाकर वहहस्त गया और समीररूपाको तुरंतलाकर महेन्द्र के सन्मुख खड़ा करदिया समीररूपाने महेन्द्रको दंडवत्की औरमहेन्द्रने आज्ञा दी कि तूबहुरूपिणी है और प्रहासको पहिंचानतीहै शीघ्रजाकर प्रहासको पकड़करलेआ नहींतो हमतुझको सूली देदेंगे क्योंकि फिरतू किसदिन कामआवैगी देखतो शत्रुसेनाके बहुरूपिये कैसे कैसे कठिनकर्म करतेहैं यह आज्ञापाकर और अपने ऊपर महाराज का क्रोध जानकर वह कंपित और भयभीत होकर वहां से चलदी और जब रक्तवाहिनी नदीके तटपर आई उसको और बहु रूपिणीभी मिलीं और उसने उनसे सब वृत्तांत कहसुनाया उसको सुनकर वे सबभी कुछ उद्योग करने की इच्छासे चलदीं और समीररूपा अपना भेष बदलेहुए रानी निशाकरी की सेनामें पहुंची और इधर उधर फिरनेलगी दैवयोग से रानी निशाकरीकी एकदासी किसी कामसे बाहर आई समीररूपा उसके साथहोली और उससे बोली कि हमकोभी रानीके यहां नौकर करादो वहबोलीकि यह कार्य मेरानहींहै तुम सभामें जाकर जोइच्छाहो विनयकरो तब समीररूपा उस दा-

सीके साथ साथ बातें करतीहुई एक ऐसे स्थान तक आई जहां एकांतथा और कोई आने जानेवालानथा वहांपहुंचकर समीर-रूपाने उस दासीके मुखपर एक मूर्च्छाएड मारा कि वह अचेत होकर गिरपड़ी तब समीररूपाने अपना स्वरूप उसकासाबना-या और उसके वस्त्र उतारकर आप पहिरलिये और रानीनि-शाकरीकी सभामें चली आई उसको देखकर निशाकरीने आ-ज्ञादी कि मैं लघुशंकाको जाऊंगी जाकर जलरखदे यहसुनकर वह जलका लोटालेकर चौकीपर रखनेलगी इतने में वहां रानी निशाकरी भी जा पहुंची समीररूपा ने एकान्तपाकर एक मू-र्च्छाएड रानीनिशाकरी के मुखपरमारा कि उससे निशाकरी मू-र्च्छित होकर गिरपड़ी तब समीररूपाने अपना स्वरूप रानी निशाकरीकासा बनाया और उसके वस्त्र उतारकर धारण किये और उसके हाथ पैर समेटकर ऐसा बांधा कि वह बँधकरएक गठरी सी होगई और उस गठरी को हाथ में लटकाकर वस्त्रा-लयमें आई और वहां के अनुचरों को आज्ञादी कि तुम सब यहांसे हटजावो मैं एक पदार्थ गुप्त रक्खूंगी वह सब हटगये और समीररूपा ने एक सन्दूक खोलकर उसमें रानी निशा-करी को बंदकिया और बाहरआकर सब अनुचरों को आ-ज्ञादी कि देखो अमुक सन्दूकको बिनामेरी आज्ञा कोई न छूने पावे जो कोई हाथभी लगावैगा तोवह माराजायगा यह आज्ञा देकर वह निशाकरीके सिंहासन पर आबैठी और थोड़ी देरमें बोली कि मैं कुछ भोजन करूंगी थालभोजनोंके लाकर अमुक स्थानपर रक्खो यह आज्ञापातेही रसोइये नाना प्रकारके व्यं-जन थालोंमें लगाकरलाये और वहमिथ्या निशाकरी वहां जा-कर बैठगई इसीअवसरमें प्रहासने मरुतदत्तवस्त्र उतारा और सभाके बाहर चलागया थोड़ीदेर में फिर सभामें आया और रानी निशाकरीको सिंहासनपरन पाकर लोगोंसे पूछा कि रानी

जी कहां हैं उन्होंने कहाकि अमुक स्थान में भोजन करनेगई हैं यहसुनकर प्रहास उसस्थानपरगया उसको देखकर उस मिथ्या निशाकरीनेकहा कि आइये प्रहासजी भोजनकीजिये वहबोला कि जयनारायण आपभोगलगावें तब निशाकरीने बहुतप्रकार से कहा कि थोड़ाहीसा भोजनकीजिये उसके कहनेसे प्रहास भोजनकरने बैठगया और जबभोजन दोनों करचुके तबउस मिथ्या निशाकरीने अपना अँगोछा मुख पोंछनेको दिया जिस में मूर्च्छाकर द्रव्योंका बनायाहुआ तैल लगाहुआथा औरदास और दासियों को आज्ञादी कितुम सबबाहिर जाकर ठहरो मुझकोप्रहासजीसे कुछमंत्रकरना है वहसब बाहरचलेगये और प्रहास ने जैसेही उसवस्त्र से अपना मुखपोंछा तैसेही उसउग्र तैलकीगंध उस के ब्रह्मांड में गई और वहछींकलेकर मूर्च्छित होगया तब समीररूपाने उसकी गठरीबांधकर पीठपरलादली और डेरेको फाड़कर निकली और कूदती फांदतीहुई चलदी बाहरजब निकली तो लोगोंने देखा कि निशाकरी एक गठरी लियेहुये चलीजारहीहै परन्तु निशाकरीतो अब महारानीसेना कीथी कोई भयकेमारे कुछबोल न सका और समीररूपा समीर की भांति उड़तीहुई सेना के किनारेपरपहुंची दैवयोगसे उधर से चपला बहुरूपियाबनसे आताथा समीररूपाकी चालसेजान गया कि यह कोई बहुरूपिणीहै किसीको बांधकर लियेजातीहै और यह जानकर वह भुजाली निकालकर उसकीओर दौड़ा समीररूपाने उसे देखकर अपनी भुजाली निकाललली और चपलासे लड़नेलगी और लड़ते लड़ते उसने चपलाके समीप आकर उसकेऊपर पाशफेंकी चपला उछलकर उसकी पाशके कुंडलोंसे निकलगया और शीघ्र उसकेसमीपजाकर एकमूर्च्छांड उसकेमुखपर मारा कि वहछींकमारकर अचेतहोगई और गिरपडी उससमय चपलाने ज्योंहीं चाहा कि उसगठरीको खोलूं

त्योंहीं बनकीओरसे प्राता भुजाली लियेहुये ललकारतीहुईआन पहुंची तब चपला भुजाली लेकर उससे लड़नेलगा परंतुउस ने लड़ते लड़ते बड़ीशीघ्रतासे समीररूपाके समीप जाकर एक चैतन्यांड उसके मुखपरमारा कि उससे समीररूपा चैतन्यहो-गई और इनदोनोंको लड़तेहुये देखकर उसगठरी को जिसमें प्रहास बँधाथा पीठपर लादकर भागी यह देखकर चपलाउस के पीछे दौड़ा परंतु उसको प्राताने आगेबढ़कर रोका तबचप-लाने तूर्य बजाई कि उसको सुनकर कोई बहुरूपिया आजावे परंतु जब समीररूपाने तूर्यसुनी वह सोची अब कोई न कोई बहुरूपिया और आजायगा और मैं घिरजाऊंगी यह सोचकर वह उस धूमसेतकीओरभागी जो रक्तवाहिनी नदीपर बनाहुआ था और उससेत के मध्यखण्ड के समीप जाकर बोली कि हे सेत मायाधीश महाराजमहेन्द्रके कार्यसाधना को जानकर मुझ को मार्गदे यहसुनतेही वह धूमफटगया और मार्गहोगया और चपला मुखदेखताहुआ रहगया और प्रातःभी कूदती फांदती हुई निकलगई तब चपला सेनामेंआया और कोलाहलसुनाकि रानी निशाकरी और प्रहास दोनों भोजन करते करते अंतर्द्धान होगये यह सुनकर चपला बोला कि मालूम होताहै कि समीर-रूपा बहुरूपिणी रानीनिशाकरीका स्वरूपधारणकरके प्रहासको पकड़ लेगई है निश्चय है कि रानीनिशाकरी यहीं कहीं अचेत पड़ी होंगी तब वस्त्रालयके प्रधान अनुचरने आकर कहा कि रानीजी कुछ वस्त्रालयके एकसंदूकमें बंदकरगई हैं उसकोखोल कर देखिये कि क्या है यहसुनकर चपलागया और उस संदूक को जो खोला तो उसमें रानीनिशाकरीको बंदपाया तबउसनेरा-नीको निकालकर चैतन्य किया और सिंहासनपर बैठाया रानी प्रहासके पकड़ेजानेका वृत्तांतसुनकर बहुतमलीनमन हुई और सब सेनामें शोक सम्बन्धी बातें होनेलगीं इतनेमें वहदासीभी

आई जिसको समीररूपाने मूर्च्छित कियाथा परंतु अबसमीर-रूपाकी कथा सुनिये कि वह प्रहासको लियेहुए धूमकेपार निकलगई तब उसने मायाकृत मार्ग होकर चलने का विचार किया जिससे कोई प्रहासको छीन न ले और इसी अवसर में प्रहास भी चैतन्य होगया और देखाकि में गठरी में बंदहूं और मुझे समीररूपा लिये जातीहै परंतु वहमार्ग महा अन्धकार में होकरथा कि जहां भयकोभी भयउत्पन्नहो इससे प्रहास चुपका होरहा और समीररूपा उसको लियेहुए अंधकारसे निकलकर अग्निवनके समीपपहुंची और बोली कि हे अग्निवन महाराज महेन्द्रके कार्य साधनाके अर्थ मुझे मार्गदे उसनेभी मार्ग दिया और समीररूपा आगेबढ़कर एक महाअंधकारमें पहुंची जहां पृथ्वी और आकाश कुछ दिखाई नहीं पड़ता था और मार्ग भी नहींमालूम होताथा समीररूपा वहांठहरगई और थोड़ीदेरमेंएक म्लेच्छ जिसका सबशरीर अग्निकी समान प्रज्वलितथा आया और उसने समीररूपा को उठाकर एकओर को घुमाकर फेंक दिया उस समय प्रहासने डरकेमारे अपनी आंखें बन्दकरलीं और क्षणमात्रमें जब फिर आंखेंखोलीं तौ देखा कि एक माया-कृत पुतला समीररूपा को लियेजाताहै थोड़ी देरमें वह पुतला एक अग्निकी नदीके तटपर पहुंचा और उस नदी में कूदपड़ा भीतर जानेपर उसमें महाअंधकारथा और वह पुतला उसी अंधकारमें चलाजाताथा उस समय प्रहास भयके मारेअचेत साथा और परमेश्वरसे विनयकरताहुआ गठरीमें समीररूपाकी पीठपरबँधाहुआ चलाजाताथाथोड़ीदेरमें जबवहपुतला समीर-रूपाको लियेहुए उसनदीके पारहुआ सामनेसे एक अश्वसवार दृष्टिपड़ा उसने आकर समीररूपा को हाथमें उठालिया और आकाशमार्ग से चलकर एक पर्वत पर पहुंचा और वहां उस ने अश्वसे उतरकर समीररूपा को नीचे डालदिया और वह

कलामुंडी खातीहुईचली उससमय प्रहासने भयसे अपनीआंखें बन्दकरलीं और कुछकाल पीछे जो आंखेंखोलीं तौ देखा कि समीररूपा मुझको लियेहुए एक बागमें आई है इसी बागका नाम बदरी उद्यानहै सब पदार्थ वहांके माया निर्मित हैं भांति भांतिके सुशोभित और सुगंधित पुष्प खिलेहुए हैं नानाप्रकार के वृक्ष और लता फल और फूलोंसे लदेहुए झूमरहे हैं और उनमें प्रकार प्रकार के चित्र विचित्र पक्षी मधुर मधुर ध्वनि से अनेक प्रकार की मीठी मीठी बाणी सुनारहे हैं और कह रहेहैं कि--महेन्द्रोजयति--महेन्द्रोजयति--बायु शीतलमंद सुगन्ध बह रही है और बहुतसे मायाकृत स्थानपरमशोभित और अपूर्व बनेहुएहैं जिनमें भांति भांतिके चित्र बनेहुएह और उनके बीचो बीचमें एक द्वादशद्वारी रत्नोंकी अत्यंत उत्तम निर्मितहै॥

जयकरीछंद॥

भांति भांति फूले कल्हारु। चमत्कार नाना विधि चारु॥
माया निर्मित भीति दुआर। मंदिर अस नहिं जग संसार॥
नाहिंपावक भयनहिं जल शंक। नहिं उष्णा नहिं सीता तंक॥
जो पदार्थ चाहे नर यत्र। तत् क्षण मिलै ताहि सो तत्र॥
मणिकृत जीव अपूर्व अपार। फिरें मंद गति करि संचार॥
दिन पशुतन धरि फिरें अभर्म। निशि नर होय करें नर कर्म॥
मुक्ता लगे अनेक अनूप। दिन मुक्ता निशि दीपक रूप॥
मायाकृत तरु लगे अपार। लगे प्रसून अचिंत्य प्रकार॥
अनहद बाजे वजत उताल। नृत्यगान ध्वनिसह सब काल॥
जबलों खुले रहत सब द्वार। बाजत सब जग वाद्य अपार॥
बंद होंय जब द्वार सुरूप। निकसें राग अचिंत्य अनूप॥
वस्त्र मखमली शोभा धाम। बिछे सुआसन सहित ललाम॥
परदा पड़े अनेक अनूप। खुलें मुदें इच्छा अनुरूप॥

उस द्वादशदरीके बीचोबीचमें एक सिंहासन बिछाहुआथा और महेन्द्र उसपर विराजमानथा आसपास उसके सभासद

आसीनथे और सहस्रों मायावी म्लेच्छ हाथ जोड़े हुए आज्ञा-
भिलाषी खड़ेथे निदान समीररूपाने वहां पहुंचकर महेन्द्रको
दंडवत्की और वह गठरी जिसमें प्रहास बँधाहुआथा उसके
सामने पटक कर बिनयकी कि यह अपराधी आपका उपस्थित
है यह दासी आपकी आज्ञानुसार प्रहासको पकड़कर लेआई
तब महेन्द्रने समीररूपाको बहुतसा धन पारितोषिक दिया और
आज्ञादी कि प्रहासको खोलो परंतु प्रहास खुलने न पायाथा कि
इतने में एक हस्त राजामहावीर का पत्र लेकर आया जिसकी
कथा पूर्वमें बर्णन होचुकी है महेन्द्रने उस पत्रको पढ़कर हिडं-
वाके मारेजानेका वृत्तांत जाना और उसके उत्तरमें यहपत्र लिखा
कि हे श्रीपरमेश्वर अद्भुत महाराज इससमय मैंने प्रहाससे आप
के शत्रुको पकड़ाहै अबआप श्रीचित्रांगदजीको यहां भेजदीजि-
ये कि वे आकर प्रहासको अपने हाथसे बध करें और उन्हींके
साथ मैं मायावी म्लेच्छोंकी सेना करदूंगा कि वह जाकर शत्रु-
जयकी सेनाको नाशकरडालेगी यहउत्तर लिखकर उसने निद्रा-
वतीकोदिया और कहा कि इसको तुम तुरंत श्रीपरमेश्वरके पास
लेजाओ और उधरसे परमेश्वरके पार्षद श्रीचित्रांगदजीको
साथ लेतीआना यह आज्ञापाकर निद्रावती पत्र लेकर आकाश
मार्गीहुई और बड़ीशीघ्रतासे बड़े मार्गको उत्तीर्ण करके रत्नाकर
पर्वतके किलेके भीतर पहुंची और राजद्वारपर खड़ी होकर इस
चिंतामेंथी कि किसीसे अपने आनेके समाचार परमेश्वरके पास
भेजूं दैवयोगसे उस समय वहां प्रहासका पुत्र सुबासभी एक
राज्यसेवककासा स्वरूपबनायेहुए शत्रुकी सेनाके समाचारलेने
दूतभावसे आयाहुआथा और राजद्वारपर खडाथा निद्रावती ने
उससेजाकर कहा किआप जाकर परमेश्वरसे यहसमाचार कह
दो कि मायाकृतदेशसे निद्रावती महाराज महेन्द्रकीभेजीहुई आ-
ईहै और आपकेनाम महाराजका बिनयपत्र लाई है यहसुनकर

सुबास बोला कि आपठहरियेमें जाकर आपके आनेकेसमाचार कहेदेताहूं यहकहकर वहभीतरगया और विना कुछकहेसुनेभीतर से निकलकर निद्रावतीसेबोला कि हे रानी परमेश्वरने जोआज्ञा आपके लिये दी है वहएकांतमें कहने योग्यहै मेरेसाथ आइये वह उसके साथ चलीआई और जबएकांतमें पहुंची सुबासने उसे एकफल निकालकर दिया और कहा कि परमेश्वरने कहाहै कि इसफलको खाकर निद्रावती हमारेसन्मुख आवे उसकासब शरीर इसकेखानेसे तेजयुक्तहोजायगा यह सुनकर निद्रावतीने अद्भुतको नमस्कार करके कहा कि आ हा क्यामेरा उत्तमभाग्य है जो परमेश्वरने मुझसी पतितपर इतनी कृपाकीहै॥

चौ०। मनक्रमवचमें तुम्हरी दासी। देहुभक्ति आपनि सुखरासी॥
मोसीपतित भशावनकीगति। तुमहींहो प्रभुप्रेरकउरमति॥

निदान उसने उक्तप्रकारसे उस मिथ्याईश्वरकी विनयकरके उसफलकोखाया और खातेही यह फलमिला कि मूर्च्छितहोकर औंधेमुख गिरपड़ी फिरतो सुबासकीवनपड़ी उसनेउसकीझोली में से वहपत्र निकाललिया जोमहेन्द्रकेपाससे लाईथी और उस के बदले एकऔर पत्र आप लिखकर उसमें रखदिया और उस्तरेसे उसका शिर मूंड़कर अपनामार्गलिया चारघड़ीपीछेवह चेतकर उठी और अपने चित्तसे कहनेलगी कि जोफल परमेश्वरने मेरेलिये भेजाथा उसका यही गुणहोगा किखानेसे मनुष्यको चेत न रहताहोगा क्योंकि शरीरसे पूर्वकृतमलिनता निकलतीहोगी तबतो कायाकल्प होतीहोगी ऐसी दशामें मनुष्य अवश्यनिश्चेष्टहोजाताहोगा अब निश्चयहै किआज में ऐसीपवित्रहोजाऊं जैसी कि माके पेटसे उत्पन्नहुईथी यहअनुमानकरती हुई और अपने शरीरको तेजयुक्तहुआ जानकर बारबार अपने हाथ और पैरोंको देखतीहुई चली और उसअनुमानमें ऐसी डूबगई किअपने शिरके मुंडित होनेका भी कुछ ध्यान नआया

और वहांसे चलकर अद्भुतकी सभामें गई और अद्भुत अपने ईश्वरको सिंहासनपर विराजमान देखकर दण्डवत् करनेलगी उससमय सब सभासद् यह देखकर कि एक मायावी म्लेच्छिनी परम स्वरूपवान् शिर मुड़ायेहुए आईहै हँसनेलगे और अद्भुतने कहा कि हे मेरी उपासका अपना शिर पृथ्वीसे उठा मैंने तेरे ऊपर अपनी कृपाकी यह सुनकर निद्रावतीने शिर उठाया अद्भुतने अपने समीप उसको आसन बैठनेको दिया और वह उसपर बैठगई उससमय चित्रांगदने सब सभासदोंकी ओर देखकर यह पढ़ा कि ॥

दो०। अंतर जिमिभो रूपमें घटी न तिमि ममप्रीत।
इत मुंडित शिर ह्वैगयो उतदुखगयो न तीत॥

परंतु निद्रावती इस हास्यको भी न समझी और उसने महेन्द्र कापत्र निकालकर अपने परमेश्वरके सामनेरक्खा उसने अपने लेखकको आज्ञादी कि पढ़ो उसने उठाकर उसको पढ़ा परंतु उसमें दुर्वचन लिखेहुए देखकर अपमानके भयसे कहनेलगा कि यहपत्र मायाकृत देशके अक्षरोंमें लिखाहुआहै मुझसे पढ़ा नहीं जाता क्योंकि यहपत्र तो सुत्रासका लिखाहुआथा उसकी बातको सुनकर चित्रांगद बोला कि लाओ मैं पढ़दू लेखक ने वहपत्र उसे देदिया उसको पढ़कर चित्रांगद बहुत हँसा और बोला कि हेपरमेश्वर सुनिये इस पत्रमें लिखाहै कि निर्लज्ज वर्णसंकर, उपहासी, गर्धभ, अयोग्य, वेश्यापुत्र, अज्ञान, भ्रष्ट मान, कपिस्वभावी, गर्धभबुद्धी, असुरस्वरूपी, दुरुत्पत्ती, मति हीन, कज्जललिप्तमुखी, दुष्टात्मा, कुमार्गी, ईश्वर बहिर्मुख अद्भुत मिथ्या ईश्वरको सहस्रों दुर्वचन पहुंचें अरेदुष्ट परमेश्वर तुझको महानरकमें डाले कि तैंने सहस्रोंको परमेश्वरकी भक्ति से हीनकर रक्खाहै और नास्तिक बनाया है तुझको उचित है कि महाराज शत्रुंजयकी शरणमें जाकर श्रीविष्णु भगवान् की

उपासनाकर और अपनेको ईश्वरमानना छोड़दे नहीं तो माया-
वी म्लेच्छोंकी सेना भेजकर इस प्रकारसे तुझको नरकगामी
करूंगा कि तू सदैव पछताता रहैगा और तेरेनामलेवा और
पानीदेवा न छोडूंगा इसथोड़ेलिखेको बहुतजानियो पत्र समाप्त
तेरेऊपर सहस्रों दुर्वाक्य—इसपत्रको सुनतेही वहअद्भुत मिथ्या
ईश्वर क्रोधसे लाल लाल नेत्रकरके मेघकी समान गर्जा और
बोला कि इस दुर्बुद्धि महेन्द्रकी अब कुदशा आईहै मैं अभी
इसके प्रारब्धको मंदकरके नाशकिये देताहूं और उसको नरक
गामी करताहूं इसप्रकारसे उसको क्रोधित देखकर निद्रावती
भयसे वृक्षके पत्तेकीसमान कांपनेलगी और विनयपूर्वक बोली
कि हेपरमेश्वर यहपत्र कदापि महाराज महेन्द्रका लिखा हुआ
नहीं है मालूमहोताहै कि मार्गमें किसीने इसपत्रको बदलदिया
है क्योंकि महाराजने मेरे सन्मुख प्रहासको पकड़वाकर पत्रमें
लेखकसे यह लिखायाथा कि हेपरमेश्वर आप चित्रांगदजीको
यहां भेजदीजिये कि वे यहांआकर प्रहासका बध अपनेहाथसे
करें और मायावी म्लेच्छोंकीसेना अपने साथलेजावें परंतु इस
उक्त आशयके बदले इसपत्रमें दुर्वचन लिखेहैं मुझको बड़ा
आश्चर्यहै कि यह क्या बातहै आप तो परमेश्वरहैं आप सब
जानतेहीहोंगे यह सुनकर चित्रांगद बोला कि इसी कारण से
यहपत्र बदलाहुआहै प्रहासका पकड़ाजाना असंभवहै उसने
किसीको अपनासा स्वरूपबनाकर पकड़ादियाहोगा और आप
तुम्हारे साथ साथ आयाहोगा और किसीस्थानपर समयपाकर
उसने पत्र बदलदियाहोगा और हेनिद्रावती क्या तुम्हारे देश
में यह रीतिहै कि स्त्रियां शिर मुड़ाती हैं यह सुनकर निद्रावती
समझी कि यह हास्य करताहै और यह समझकर बोली कि
हे परमेश्वरके कलि आपका तो यहही कार्यहै कि सबसे हास्य
करैं परंतु मैं तो परमपतित परमेश्वरकी दासीहूं मुझसे हास्य

न कीजिये आपने शिर मुड़ानेकी अच्छी बातौंकही मायाकृत देशमें तौ ऐसी २ स्वरूपवान् स्त्रियां रहती हैं कि जिनके बालों में सहस्रोंके उलझेहुए चित्त कभीनहीं सुलझे और जिन की नागिनसी लटोंके डसेहुयोंने कभी पानीतक न मांगा यह सुन कर चित्रांगद बोला कि फिर तुमने क्यों शिर मुड़ायाहै हाथ रखकर देखो तौ कि एक भी बाल नहींहै मैं इसमें कुछ मिथ्या नहीं कहताहूं क्या तुमने यह मनता मानी थी कि जब मैं ईश्वरके दर्शनोंको जाऊंगी तब अपने शिरके बाल मुड़ाऊंगी तब तौ निद्रावतीने घबराकर हाथसे अपना शिर टटोला और बाल तौ क्या ठूंठी भी न पाई यह देखकर वह रोनेलगी और बोली कि श्रीमान् आपका कहना सत्यहै प्रहास अवश्य मेरे साथ चला आयाहै मार्गमें मुझको अपनेकंधोंपर बोझमालूम होताथा वही निश्चय मेरेकंधोंपर सवारहोगा और एक स्थान पर मुझको एक राज्यसेवकने एक फल खिलाके मूर्छित भी कियाथा और प्रहासने मायाकृत देशमें भी एकबार मेरा शिर मूड़ाथा यह सुनतेही चित्रांगदने पुकारकर कहा कि जयविष्णो-वैष्णवोंकी जयहोय और अद्भुतकी अजयहोय जय क्योंजी निद्रावती तुमने देखा कि प्रहासजी कैसे परमेश्वरके प्यारे हैं अब तुमको उनकेदर्शनहोंगे प्रकटहो कि चित्रांगद यह जानता था कि जहां प्रहासहोताहै वहां जो उसकी प्रशंसा कीजाय तौ वह प्रगटहोजाताहै इससे उसने यह जाननाचाहा कि देखूं प्रहा-स यहांहै अथवा नहीं निदान उक्त प्रकारसे वैष्णवोंकी प्रशंसा करके बोला कि हे गुरूजी जो आप आयेहों तौ अपने दर्शन दीजिये इसबातको सुवासने सुना जो निद्रावतीका शिरमूड़कर चलागयाथा और जो फिर एक सेवकके स्वरूपसे वहांआकर सबवृत्तांतदेख और सुनरहाथा और विचारकिया कि मैं अपना स्वरूप प्रहासकासा बनाकर सबको दिखादूं तौ निद्रावती यहां

से जाकर महेन्द्रसे कहैगी कि प्रहास तौ रत्नाकरपर्वतपरहै यह सुनकर महेन्द्रको शंकाहोगी कि जिसको मैंने पकड़वायाहै वह प्रहास नहींहै और फिर वह प्रहासको छोड़देगा और मेरानाम होगा कि सहस्रों कोससे बहुरूपधारिणी विद्यासंबन्धी यत्नकर के प्रहासको छुड़ादिया यह विचारकरके उसने अपनास्वरूप प्रहास कासा बनाया और जिससमय चित्रांगद प्रहासकी प्रशंसा कररहाथा उसीसमय वह सभाकी सींवांको फांदकर बीच सभा में जाकूदा और चित्रांगदको वामनेत्रका तिल इस प्रयोजनसे दिखाकर कि संदेह किसीप्रकारका नहो कहनेलगा कि हे निद्रावती तू मेरे हाथसे बचगई नहीं तौ मैं तुझको मारडालता निद्रावती प्रहासको देखकरदौड़ी और बोली अरे मरे ठहर तौ तैंने दोबार मेरेशिरको मूड़कर सब मायाकृतदेश और ईश्वरकी सभामें भी मेरी हँसीकराई परंतु जबवह पासआई चपलानेएक मूर्च्छांड उसकेमुखपर मारा कि वह तुरंत मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी और चपला वहांसे छलांगमारकर भागा अद्भुतके सेवक तौ सब बहुरूपियोंके वृत्तांतको जानतेहीथे इसकारणसे किसीने उस का पीछा नहीं किया सब अपने २ स्थानपर बैठेरहे तब चित्रांगदने उपाय करके निद्रावतीको चैतन्य कराया और कहा किहे रानी अब तुम उत्तर लेकर लौटजाओ और यह दुर्वचन भरा पत्रभी लेतीजाओ और महेन्द्रसे सब वृत्तांत कहना और यह पत्र देदेना यहकहकर लेखकसेकहा कि पत्रलिखो और यह उस में लिखवाया कि हमारे मुख्य भक्त मायाकृत देशाधीश महेन्द्र को हमारी कृपासे सम्पन्नहोनेके उपरांत विदित होय कि तुम ऐसे निश्चेतहो कि तुम्हारे सेवकही तुम्हारे साथ छल करते हैं अर्थात् तुम्हारी बहुरूपिणी प्रहास कासा स्वरूप किसीका बना कर तुम्हारे पास लेआई और तुमको कुछ मालूम नहुआ और प्रहास तुम्हारे पत्र लानेवालेके साथ यहां चला आया निदान

कुछ आश्चर्य नहींहै कि इस निश्चेतताका यह परिणामहो कि
वह तुमको किसी दिन मारडालें इससे ऐसे निश्चेतके पास
चित्रांगदका आना उचित नहींहै जब तुम निश्चय करके ठीक
प्रहासको पकड़कर समाचार भेजोगे तब चित्रांगद आवैगा
अब तुमको उचितहै कि अपने परमेश्वरकी सहायता करनेके
लिये मायाकी म्लेच्छोंकी सेना भेजदो नहींतो परमेश्वर तुमसे
अप्रसन्न होकर तुम्हारे देशपर अपनी क्रोधाग्निको जो नाश
करनेवालीहै प्रेरणा करके कहीं चलेजायँगे यह पत्र लिखकर
लेखने बंद किया और हस्ताक्षरसे मुद्रित करके निद्रावतीको दे
दिया उसने उस पत्रको लेकर अद्भुतको दंडवत्की और विनय
की कि हे परमेश्वर मेरे शिरपर बाल उत्पन्न करदीजिये यह
सुनकर अद्भुत बोला कि अरी मेरी सेवकिन तू मेरे पास नूतन
दिवसमें आइयो उस समय मैं तुझको ऐसी सुंदरतादूंगा कि
मेरी अप्सराओंसेभी सुंदरहोजायगी और कभी वृद्ध न होगी
निदान उसको आश्वासन करके विदा किया और वह पत्र ले-
कर वहांसे आकाश मार्गीहुई और थोड़ी देरमें महेन्द्रके समीप
जापहुंची वह इसकी बाट देखरहाथा कि इसने जाकर वह पत्र
दिया और उपहासका लिखाहुआ पत्रभी देकर अपना मुंडित
शिरभी दिखलाया तब महेन्द्र यह अनुमान करके किमेरे कारण
से परमेश्वरने दुर्वचन सुने भयसे कांपनेलगा और निद्रावतीका
शिरमुड़ाहुआ देखकर उसको निश्चयहोगया कि समीररूपा अ-
वश्य अपना कठिन कर्म दिखानेकेलिये किसीको प्रहास कासा
स्वरूप बनाकर लेआईहोगी यहनिश्चय करके उसने आज्ञादी
कि जो प्रहास बंधा हुआहै उसको खोलकर हमारे सन्मुख ला-
वो यह आज्ञा पाकर म्लेच्छ प्रहासको खोलकर महेन्द्रके स-
न्मुखलाये परंतु प्रहास निद्रावतीकी सबबातें सुनकर यह अनु-
मान प्रथमहीसे करचुकाथा कि वहां मेरे किसी पुत्र अथवा

शिष्यने मेरासा स्वरूप बनाकर मुझे छुड़ानेके प्रयोजनसे छल कियाहोगा और इस वेश्याकाशिर मूड़डालाहोगा निदान जब वहमहेन्द्रके सन्मुखआया उसनेपूछाकि तू कौनहै प्रहास बोला किमहाराज मैं प्रत्यक्षखण्डकी रहनेवाली एकवेश्याहूं समीररूपाने मुझसेकहाथा कि मैं तुझको तेरास्वरूप प्रहास कासा बनाकर महाराज महेन्द्रकेपास लियेचलतीहूं तू कहिदीजियो कि मैं प्रहासहूं और जब महाराज कैदमें करदें तबतू घबराइयो मत मैंरात्रिमें तुझेछुड़ालाऊंगी और बहुतसाधनदूंगी यहसुनकर महेन्द्रने म्लेच्छोंको आज्ञादी किइसके ऊपरसे मायाकृत बंधनउतारलो उन्होंने मायादूरकरदी और जबवह मुक्तहुआ महेन्द्रने उसे सत्यकहदेने के कारणसे बहुतसाधन दिया और कहाकि जहां इच्छाहोजा प्रहासने दण्डवत्की और धनलेकर बागकेबाहर निकला और यह अनुमानकरके कि कोई पहँचान न ले अथवा कोई आपत्ति न आयजाय वहांसे मरुतल वस्त्र ओढ़कर चलदिया इसके उपरांत महेन्द्रने आज्ञादी। उस अभद्रा समीररूपाको तो बुलाओ यह सुनकर म्लेच्छदौड़े और समीररूपाके पासगये जोउसी विस्तृतबागमें एकस्थानपर विश्रामकररहीथी और महाराजकीआज्ञा सुनाई सुनतेही वहभय सेकंपती और दौड़तीहुई महेन्द्रके सन्मुखआई महेन्द्रने म्लेच्छों को आज्ञादी किइसको बांधदो म्लेच्छोंने उसे द्वादशद्वारीके एक स्तंभसे बांधदिया और उसपर मारपड़नेलगी तबउसने पुकार करकहा कि महाराज मेराक्या अपराधहै महेन्द्रनेकहा किअरी अभद्रा चांडाली तैंने मुझे परमेश्वर अद्भुतकी सभामें लज्जित कराया देख यहपत्र आयाहै तू एकवेश्याको धनकालोभ देकर उसको प्रहासका सा स्वरूप बनाकर लेआई अब मैं तेरी नाक कटयाडालूंगा यहसुनकर समीररूपा बोलीकि ऐसा कदापि नहीं हुआहै मैं प्रहासको पहँचानकर पकड़करलाईहूं तब निद्रावती

बोलीकि देख मेराशिर प्रहासने मूड़डालाहै भला मैं अपनाशिर अपनेआप काहेको मुड़ाती और तुझे झूंठाबनाती समीररूपा बोलीकि महाराज आप अद्भुतजालमें देखलीजिये और मेरे और किसीकेकहनेपर न जाइये जोमेराकहना मिथ्याहो तोमुझे शूलीदेदीजिये और यों जोकोई अपनाशिर मुड़ाताफिरे और मिथ्याबोलकर पिशुनताकरे अथवा किसीकेपीछे अपनी नाक कटवाता फिरे तोमुझको कुछप्रयोजन नहींहै यह सुनकर निद्रावतीबोली अरीओ चांडाली तूमेरेमुंह मतलगियो एकतोचोरी और दूसरी बरजोरी समीररूपाबोली किजोमुझे चांडालीकहे वही चांडालीहोगी मैं महाराजकेसिवाय दूसरेकीबात नहींसुन सकतीहूं उससमय महेन्द्रने दोनोंपर चिल्लाकर कहा कि हमारे समक्षमें तुम दोनोंको ऐसावार्तालापकरना उचित नहीं है और फिर उसने अद्भुतजाल देखा उससे उसको सब उक्त वृत्तान्त विदित हुआ कि समीररूपा सत्य कहतीहै उसने प्रहासको निरर्थक छोड़दिया और निद्रावतीका शिर सुबासने मूड़ाहै यह जानकर महेन्द्रने समीररूपाको छुटवादिया और उसको बहुतसा पारितोषिक द्रव्यदेकर आज्ञादी कि प्रहास रक्तवाहिनी नदीके पार न जासकैगा तू जाकर उसको पकड़ला यह आज्ञा पाकर समीररूपा प्रहासको पकड़नेको चलदी और महेन्द्रने भी अपनी सभा विसर्जनकी और सब सभासद अपने अपने घर आये परंतु अब समीररूपा को निद्रावती और निद्रावती को समीररूपा से लागपड़गई कि कथा उसकी आगे वर्णनहोगी अब आगेका वृत्तांत सुनिये कि प्रहास जब बदरी उद्यान से निकलकर दूरपहुंचा तब उसने मरुतदत्त वस्त्र अपने ऊपरसे उतारकर अपना स्वरूप एक अघोरी म्लेच्छकासा बनाया अर्थात् एक लंगोटी लगाली शिर मूड़लिया मुरदेकीखोपड़ी हाथ में लेली और मद्यका पात्र कांखमें दबायेहुए बकता झिकता

हुआ आगेको बढ़ा और इसविचारमें था कि कोई म्लेच्छमिल जाय तो उसको मारकर और उसकासा स्वरूप अपना बनाकर रक्तवाहिनी नदीके पार उतरजाऊं कि इतनेमें समीररूपा उस को ढूंढतीहुई वहांआनपहुंची और प्रहासको अघोरीबनाहुआ देखकर पहिंचानगई और ललकारकर कटारी लियेहुए उसकी ओर दौड़ी प्रहास भी उससे लड़नेलगा और थोड़ीही देर हुई थी कि सामनेसे एक म्लेच्छ आता हुआ दिखाई दिया वह म्लेच्छ उसीदेशका रहनेवालाथा जहां प्रहास और समीररूपा लड़रहेथे निदान उसको आतेहुए देखकर प्रहासने कहा कि देख समीररूपा तेरेपीछे कौन आताहै वह पीछे फिरकर देखने लगी कि प्रहासने समीपजाकर एकमूर्च्छौड उसके मुखपरमारा और जैसेही वह मूर्च्छितहोकर गिरनेलगी तैसेही प्रहासने उसे गोदीमें उठाकर अपनी थैलीमें डाललिया और चाहा कि भाग जाऊं परंतु उस म्लेच्छने कुछ माया करके प्रहासको स्तम्भित करदिया और वह खड़ारहगया तब उस मायावी म्लेच्छने समीप आकर कहा कि अरे अघोरी तू किससे लड़रहाथा और मैंने तुझको इस कारणसे स्तंभित करदियाहै कि वह स्त्री जिस से तू लड़रहाथा उसको तैंने क्या किया कहां अकस्मात् अंत-र्द्धान करदी प्रहास बोला कि वह मेरी स्त्री थी मैं भूंखाथा इससे उसको भक्षण करगया यहसुनकर उस म्लेच्छको बड़ा आश्च-र्य हुआ और वह बोला कि मैं आजतक महाराज महेन्द्र की सभामें कभी नहीं गया अब यह अर्थ जानेका अच्छा मिला तुझे महेन्द्रके समीप लियेचलताहूं कि उनकेयहां ऐसा मायावी कोई न होगा कि जिसने मनुष्यको खड़े २ निगल लिया यह कहकर वह प्रहासको उठाकर मायाबलसे आकाशमार्गी हुआ दैवयोगसे महेन्द्रका मंत्री विश्वमाली महेन्द्रके सभा विसर्जन करनेपर अपने बागमें आकर अपनी स्त्री प्रसूती माया सहित

बैठाहुआ मद्य पान कररहाथा कि यह म्लेच्छ प्रहासको लिये
हुए उसी ओरसे निकला और प्रसूनीने यह देखकर कि एक
म्लेच्छ एक मनुष्यकोहाथमें लियेहुए चलाजाताहै अपने पति
से कहा कि इसको बुलाओ और देखो कि कौनहै यह सुनकर
विश्वमालीने कुछ मायाकी कि उस म्लेच्छकी आगे जानेकी
गति रुकगई और यह म्लेच्छ एक प्रजागणमेंसेथा कुछ नामी
मायावी तौथाही नहीं इससे वह विश्वमालीकी मायाको व्यर्थ
न करसका और बेबशहोकर आकाशसे पृथ्वीपर उतर आया
और विश्वमालीको देखकर पहिंचाना और दंडवत्की तबविश्व
मालीने पूछा कि यह कौनहै जिसको पकड़कर तू लियेजाता है
वह बोला कि यह मनुष्य अपनी स्त्रीसे लड़रहाथा और फिर
अकस्मात् उसको भक्षण करगया मुझको आश्चर्य हुआ इस
से मैं इसे महाराज महेन्द्रके पास लियेजाताथा यह सुनकर
विश्वमालीकोभी आश्चर्यहुआ और वह मायाकृत दृष्टिसे प्रहा-
सको देखनेलगा और उसके बड़ेभारी मायावी होने के कारण
से दृष्टिमात्रसे प्रहासका रंग जातारहा और उसका निज स्व-
रूप निकलआया तब विश्वमालीने उसे मायाकृत दृष्टिसे देख-
ना बंद किया और उस म्लेच्छसे कहा कि यह अघोरी नहीं है
किंतु प्रहासहै और फिर प्रहाससे पूछा कि तू किसे खागया है
प्रहास बोला कि मैं अपनी स्त्रीको किसीके सन्मुख नहींहोनेदेता
हू और न उसको अकेला किसी घरमें छोड़ताहूं किंतु अपने
साथ अपनी थैलीमें रखताहूं और वह मेरी स्त्री बड़ी भारी बहु-
रूपिनी है जब उसको मैं बनमें एकांतमें निकालताहूं तब वह
मुझसे लड़ने लगतीहै निदान वह मुझसे आजभी लड़रहीथी
कि इतनेमें यह म्लेच्छ आगया मैंने इसको अनजानता जान
कर अपनी स्त्रीको उठाकर थैलीमें डाललिया भक्षणतो मैंने
किसीको नहीं कियाहै यह सुनकर प्रसूनी बोली कि हमकोभी तू

अपनी स्त्रीदिखादे हमभी देखें कि कैसीहै वह बोला कि मैं दूसरे मरदके सामने अपनी स्त्रीको क्यों निकालूं सबको आप हटादें और मुझको कुछ धनदेंतो निकालूं यह सुनकर प्रसूनी ने सब को हटादिया परंतु विश्वमाली वहां बैठारहा और उसने कहा कि हे प्रहास तू अपनी स्त्रीको हमारे सामने निकालेतो हम तुझको बहुतकुछदें प्रहासनेकहा पहिले धन मँगादीजियेतो ऐसा भीकरूं यह सुनकर विश्वमाली और उसकीस्त्रीने बहुतसा धन मँगाकर प्रहासको दिया तब प्रहास उसबागके एक कोनेमें चलागया और थैलीसे समीररूपाका मुखमात्र निकालकर मुख को बदलदिया और फिर विश्वमालीके समीप आकर समीररूपाको कमर पकड़कर और थैलीसे खींचकर पृथ्वीपर डाल दिया तब प्रसूनी उस कोमलाङ्गीका परमसुंदर स्वरूप देखकर बोली कि प्रहासकी स्त्री तो बहुत सुंदर है अच्छा प्रहास अब इसको चैतन्यकर प्रहासबोला कि यह भागजायगी प्रसूनीबोली कि इसकी क्यासामर्थ्यहै जो मेरेसामनेसे भागजाय प्रहासबोला कि जो भागेगी नहींतो बड़े बहाने करैगी कहैगी मैं समीररूपा हूं और फिर आप मेरेशत्रु होजायँगे तब विश्वमाली और प्रसूनी दोनोंने शपथखाई कि हम इसकी बातका विश्वास न करेंगे तब प्रहासने उसे एक वृक्षसे बांधकर चैतन्यवर्ती घ्राण कराई और वह चैतन्यहोगई और विश्वमाली और प्रसूनीको बैठा हुआ देखकर कहनेलगी हे प्रधान मंत्री आपने मुझको क्यों बंधवाया है इसदुष्ट प्रहासके कहनेपर न जाइयेगा लाइये मैं इसको महेन्द्रके पास लेजाऊं क्योंकि महाराज इसकी खोजमेंहैं यह सुनकर प्रहासबोला चांडाली तू मुझको महाराज अपने यारकेपास लेजाकर क्याकरैगी आज मैं तेरी नाककाटूंगा इस पर जो समीररूपाने बुराभला कहातो सबने जाना कि ये दोनों स्त्री पुरुष हैं और प्रसूनीने कहा कि हे प्रहास तेरीस्त्रीकी जीभ

वड़ी है तब प्रहास समीररूपाके तमाचे लगानेलगा कि क्योंरे मुंडी फिरतू जीभचलावैगी और विश्वमाली और प्रसूनो दोनों हँसनेलगे तब समीररूपाबोली कि यह हँसी अच्छीनहीं है मैं महाराज से कहूंगी आपका मंत्री भी प्रहास मिलगया है वि-श्वमाली बोला कि तू महाराजके पाससे क्योंकर जायगी वह बोली कि मैं समीररूपा बहुरूपिनीहूं महाराजकी सभामें सदैव रहतीहूं तब प्रहासबोला कि देखिये मैंने आपसे पहिलेही कहा था कि यह अपनेको समीररूपा बतावैगी बड़ी छरछंदिनी है और यहकहकर फिर दोतीन तमाचेमारे उससमय समीररूपा ने सबकथा रक्तवाहिनदी के पार प्रहासको लेकर आनेकी जो ऊपर वर्णन होचुकीहै कही और प्रहासको पकड़ेजानेके प्रथम जो मंत्र महेन्द्र ने कियाथा वहभी वर्णनकरके कहा कि जो मैं समीररूपा न होती तौ यहसब वृत्तान्त क्योंकर जानती यह बात सुनकर विश्वमालीको शंकाहुई और उसने बागमेंसे एक फल तोड़कर कुछमायाकी कि वहफल फटा और उसमेंसे एक पक्षी परमसुंदर निकला और उसने मधुरवाणीसे कहा कि यह स्त्री जो बँधीहुईहै समीररूपाहै यहकहकर वहपक्षी तौ उड़कर किसीओरको चलदिया और विश्वमालीने समीररूपाको छुड़ा-कर उसका आश्वासनकिया इसअवसरमें सबकोई तौ समीर-रूपा के आश्वासन करनेमें लगाथा और प्रहास ने मरुतदत्त वस्त्र ओढ़कर अपनेको अदृश्यकरदिया जब समीररूपा छुटी उसने कहा कि, वहदुष्ट बहुरूपिया कहांगया प्रहासबोला कि खड़ेतौहैं यह देखकर विश्वमाली को आश्चर्य हुआ कि शब्द बोलनेका सुनाईदेता है परन्तु प्रहास दिखाई नहींदेता है फिर समीररूपाने कहा कि हमजाते हैं प्रहास बोला कि हमभी साथ हैं निदान समीररूपा उक्तप्रकारसे कहकर बाग के बाहर गई परन्तु प्रहास वहींठहरारहा और विचार किया कि बनपड़े तौ

आज धनलूटूं और म्लेच्छोंका वधकरूं निदान समीररूपा के जानेकेपीछे प्रसूनी ने कहा कि समीररूपा के झगड़े में प्रहास भी हाथसेगया मैंने प्रहासकी बड़ीप्रशंसा सुनीहै जो यहांहोता तो आज उसकेगुणोंकी परीक्षा करती यहसुनकर प्रहासबोला कि हमयहांहैं परन्तु इसकारणसे गुप्तहैं कि तुमसब मायावीहो हमको पकड़कर महेन्द्र के पास लेजाओगे यहसुनकर प्रसूनी बोली कि मैं अद्भुतकी शपथखाकर कहतीहूं कि यहां कोई तेरे साथ छल न करेगा तब प्रहासबोला कि अच्छा कुछद्रव्य मँगा-कर रक्खो तो हमआवें तब प्रसूनी ने द्रव्य मँगाकर रखदिया और प्रहास मरुतदत्त वस्त्रउतारकर प्रकटहोगया तब प्रसूनी ने आदरपूर्वक उसेबैठाया और कहा किहेप्रहास हमकोतुम्हारा गानसुननेकी बड़ीइच्छाहै कुछ गानसुनाओ यहसुनकर प्रहास ने अपनी बांसुरीनिकाली और पाओंमें घूंघरूबांधकर नाचना और बांसुरी में गाना आरम्भ किया और ऐसी मधुरध्वनि से गाया कि सब सुननेवालोंकी सुधिबुधि जातीरही और बाग के सबपक्षी अपनी मधुरवाणीको भूलकर रागसुननेलगे वायुथम गई और उसके थमजानेसे यहजानपड़ताथा मानों सबफूल और पत्ते और वृक्ष चुपचाप खड़ेहुए गानसुनरहेहैं॥

स०। झूमिरहे द्रुम और लता कलितासुकुसुम्भ वितान वनीके।
गुंजत भृंग प्रताप मनोहर फैलिरही मधुगंध सनीके॥
बाजत वीन मृदंग निचै धुनि पूरिरही नभलों धरनीके।
वंक सुनीठ किये कटिको गतिनाचि प्रहास हरै मनतीके॥
बाजिरही मधुरी धुनिसों वंशी उरशालकरे विरही के।
राग अनेक अनूपकढें शुचि छोहन सोहन मोहनजीके॥
आनँद छायरह्यो दिशिमें मोहे नर औ खगवृन्द वनीके।
वंक सुनीठ कियें कटिकों गतिनाचि प्रहास हरैमनतीके॥

निदान प्रहास ने नाच और गाकर सबको मोहितकरदिया और बहुतसा द्रव्यपाया परन्तु उधर महेन्द्र फिर अपनीसभा

में आकर विराजमानहुआ और अद्भुतजालकी पुस्तक निकाल कर देखनेलगा कि समीररूपा कहांहै और क्या उसपर बीती है और उसने प्रहासको पकड़पायाहै या नहीं उसपुस्तकसे उस को समीररूपाका सबपूर्ववृत्तान्त मालूमहुआ और यहभी उस पुस्तकसे उसको विदितहुआ कि विश्वमाली मंत्री अपनेबाग में बैठाहुआ प्रहासका गाना सुनरहाहै यहजानतेही उसने बड़े शोककेसाथ अपनेचित्तसेकहा कि हमारेराज्यका इतनाबड़ा अधिकारी और हमाराप्रधानमंत्री हमारेशत्रुसे इसप्रकारसे मिलकर उसका सत्कारकरे यह विचारकर वह महाक्रोधित होगया और क्रोधके आवेशमें उसपुस्तकको बंदकरके कुछमायाकी कि तत्काल पृथ्वीसे एकपुतला उत्पन्नहुआ महेन्द्र ने उसेआज्ञादी कि तू जाकर विश्वमाली हमारेमंत्री और प्रहासको जो उसके यहां बैठाहुआ गारहाहै दोनोंको पकड़ला वह पुतला आज्ञा पातेही चलदिया परंतु उधर प्रहास गातेगाते ठहरगयाथा कि इतनेमें उसने एकसन्नाटेकासा शब्दसुना और ऊपरकोजोदेखा तो एकपुतले को आतेहुएदेखा प्रहास ने शीघ्रतासे मरुतदत्त वस्त्रओढ़लिया और वहपुतला चमककर वहांगिरा उसने प्रहास को तो न पाया किंतु विश्वमालीको उठाकर लेउड़ा और पुकार कर बोलाकि मैं महाराजमहेन्द्रका भेजाहुआहूं और विश्वमाली को लेकर मार्गीहुआ यहदेखकर प्रसूनी बहुतघबराई कि अब आपत्ति हमारे शिरपरआई और यहां पुतले ने विश्वमालीको लेजाकर महेन्द्रके सन्मुख जा खड़ाकिया महेन्द्र उसेदेखकर कोड़ालेकरउठा और कई कोड़ेमारकर बोला कि क्योंरे अपराधीतू मेरेशत्रुको लेकर इसप्रकारसे अपनेघरमें बैठाथा तबविश्वमाली ने सबवृत्तांत प्रहासके आने और समीररूपाके थैलीमेंसे निकालने का जो ऊपर बरणनहोचुकाहै ज्योंकात्यों महेन्द्रके सन्मुख निवेदनकरके विनयकी महाराज ॥ चौ० ॥ मैं तवअनुचर तुम

सबलायक । क्षमहु जानि मोको निजपायक ॥ हे महाराज मेरे अपराधको क्षमाकरके मुझे छोड़िदीजिये कि मैं जाकर उस छलीको पकड़कर आपके समक्षमें लेआऊं अब ऐसा अपराध मुझसे न होगा यह सुनकर महेन्द्रने उसके अपराधको क्षमा करके उसको छोड़दिया और वह महाक्रोधित होकर प्रहासको पकड़ने चला परंतु प्रहासका वृत्तांत सुनिये कि पुतले के चले जानेके पीछे प्रहासने मरुतदत्त वस्त्र उतारकर प्रसूनी से कहा कि हे रानी जो आप द्वादश द्वारी में मेरेसाथ एकाकी चलौ तौ मैं एक उपाय महेन्द्रके क्रोधशांतीका बतलाऊं यह सुनकर वह उसके साथ होली प्रहासने एकांत में जाकर मूर्च्छाएडमारकर उसको मूर्च्छित करदिया और उसके वस्त्र और आभूषण उतार कर उसे एक कंबलमें लपेटकर उसी द्वादशद्वारी में एकस्थान पर छिपादिया और अपना स्वरूप उसकासा बनाकर और उसके वस्त्र और आभूषणोंको धारणकरके बड़े मानके साथ गद्दीपर आ बैठा उससमय दासियोंने पूछा कि आपके साथ प्रहास जो गयाथा वह कहांहै प्रहास बोला कि उसको अदृश्य होजाने की शक्तिहै न जाने कहां गया सबने समझा कि ऐसाही होगा और सब चुपहोरहीं इतनेमें वहां विश्वमाली आनपहुँचा और उसने अपनी स्त्री जानकर प्रहाससे पूछा कि प्रहास कहां है वह बोला कि प्रहास तौ उसी समय अदृश्य होगयाथा जब पुतला आयाथा तब विश्वमाली बोला कि उस दुष्ट के कारण से आज महेन्द्रने मेरा बड़ा अपमानकिया मैं उसको ढूंढ़नेजाताहूं वह नदीके पार न जासकैगा उसे पकड़कर महेन्द्र महाराजके पास लेजाऊंगा यह कहकर वह मायाबलसे आकाशमार्गी हुआ उसके चलेजानेपर प्रहासने सोचा कि विश्वमाली जब ढूंढ़नेपर मुझको न पावैगा तब मायाबल से विचारैगा और जब मायाबलसे उसको यह विदित होजायगा कि प्रहास तेरी

स्त्रीका स्वरूप बनाहुआ तेरे घरमें बैठाहै तब आकर मुझे प-
कड़लेगा यह विचारकर उसने विश्वमाली की दोनों बेटियोंको
बुलाया और बलैयांलेकर बहुतसा प्यारकिया और मातृस्नेह
बहुत कुछ दिखाकर कहा कि अरी बेटियो तुम्हारा बाप प्रहास
को ढूंढ़ने और उसे पकड़ने गयाहै वह निगोड़ा बड़ा छली है
कहीं ऐसा नहो कि तुम्हारे बापको छलकरके धर्षणादे और
पकड़ाई न दे तो महाराज महेन्द्रका कोप हम सबपर आकर
गिरै इससे चलो हम तुम भी चलकर प्रहासको ढूंढ़ें यहसुनकर
उन दोनोंने कहा बहुत अच्छा माजी चलो तब उस मिथ्या
प्रसूनीने कहा कि अच्छा मायाकृत विमान मँगवाया यह सुन-
कर विश्वमाली की एक बेटीने कुछ मायाकी कि एक धूमप्रकट
होकर आकाशको गया और तुरंत एक विमान उतरकर पृथ्वी
पर आगया उससमय प्रसूनीरूप प्रहास उसपर बैठगया और
विश्वमाली की एक बेटीको अपने पास बैठाकर दूसरी से बोला
कि घरपर रहकर घरदेख वह घरपर रहगई और जिसको साथ
लियाथा उससे कहा कि अरी छोकरी देखूं तू कितना शीघ्र इस
विमानको लेचलती है आज तेरी परीक्षा है कि तू दिनभर खे-
लाही करती है या कुछ मायाके प्रयोग भी सीखती है यह सुन-
कर विश्वमाली की उस बेटीने ऐसी मायाकी कि वह विमान
आकाशमार्ग से उड़ताहुआ शीघ्र रक्तवाहिनी नदीके तटपर
आपहुंचा उससमय प्रसूनीरूप प्रहासने होठोंको चलाकर कहा
कि मेरी कीहुई मायासे मुझे मालूम होताहै कि प्रहास नदी के
पार उतरकर बनमें फिररहाहै अब शीघ्र चलकर उसे पकड़ें
यह सुनकर उस विश्वमाली की पुत्रीने मायाकी और वह वि-
मान उड़ताहुआ रक्तवाहिनी नदी के पार आया परंतु उधर
विश्वमाली जो प्रहासको ढूंढ़ने निकलाथा उसने चारोंओर
फिरकर प्रहासको ढूंढ़ा परंतु जब कहीं नहीं मिला तब उसने

अपने कंठमेंसे एक मूर्त्ति निकालकर उसकी पूजाकी और कहा कि हे मायाकृत चमत्कार कर्त्ता की मूर्त्ति सत्यवता कि प्रहास कहां है वह मूर्त्ति बोली कि प्रहास तेरी स्त्रीका स्वरूप बनायेहुए तेरी अमुक बेटीको लेकर नदी के पार पहुंचा है और तेरी बेटी को मारकर जायाचाहताहै यह सुनकर विश्वमालीने उस मूर्त्ति को फिर कंठमें बांधलिया और आप वहां से बड़ी शीघ्रतापूर्वक चला और इधर प्रहास नदीकेपार उतरकर विश्वमालीकी बेटी को मूर्च्छित किया चाहताथा कि इतने में विश्वमाली आगया और पुकारकर बोला कि ठहर अरे निन्दित बहुरूपिये अब कहां जायगा मैं आपहुंचाहूं यह सुनकर विश्वमाली की बेटी आश्चर्य करके चारोंओर देखनेलगी कि मेरा पिता किसको ललकारता है उससमय प्रहास विश्वमाली की पुत्रीके एक धौल मारकर विमान से कूदपड़ा और मरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर बोला कि अरे अधर्मी ठहर मैं बहुरूपाचार्यहूं॥

जयकरी। होंप्रहास बलभरो विशाल। मायावीम्लेच्छनको काल॥
नृपमायावी प्रबलकराल। तिनहिंकरतहोंअनुबरहाल॥

अरे जा मेरेहाथसे तू और तेरा सब घर बचगया नहीं तो सबको मारकर नरकगामी करता यहकहकर प्रहास तो चला गया और विश्वमाली अपनी बेटीकेपास आकर कहने लगा कि तैंने बड़ाबुरा कामकिया जो प्रहास को नदीके पार उतार दिया वह बोली कि मैंने उसे जानानहीं तब विश्वमाली वहां से निराश फिरकर अपने घरको आया और प्रसूनीको द्वादश द्वारी में ढूंढ़कर निकाला और उसे चैतन्य करके सब वृत्तान्त कहसुनाया और बोला कि प्रहास अपनी सेनामें जाकर प्रकट होगा इससे मैं चाहताहूं कि जाकर उसे पकड़लाऊं यह सुनकर प्रसूनी विश्वमालीके पैरोंपर गिरपड़ी और कहने लगी हे पति आप इन बहुरूपियों के विषयमें न बोलिये और न कुछ

कीजिये जब महाराज महेन्द्र ऐसे उनकेमारे घबराहे हैं तबहम सब तो उनके सामने तुच्छ हैं कहीं ऐसा न हो कि बहुरूपिये खेदित होकर आपको मारडालें अभी २ आपने देखा कि प्रहास कहांथा और कहांसे कहां पहुंचगया और महाराज का बनाया कुछ न बना यह सुनकर विश्वमाली चुपहोरहा और महेन्द्रके पास जाकर प्रहासके निकलजाने का सब वृत्तांत निवेदनकिया उसको सुनकर महेन्द्र चुपकाहोरहा और विचारने लगाकि जो इसको अबमें अधिककुछ ताड़नाकरूं तो ऐसा नहो कि यहभी जाकर निशाकरीसे मिलजाय निदान येसब तो यहां सभामें बैठे और वहां प्रहासभी अपनी सेनामें गया सब सेनापति बड़ी प्रसन्नतासे उससेमिले और आनन्दपूर्वक बिराजमान हुये परंतु समीररूपाका अब वृत्तांतसुनियेकि वह विश्वमालीके बागसे चलकर बाहिर आई और उसने बिचारकिया कि प्रहास तो नदीके पार न जासकैगा और उपहास वनमें रहता है और चपलाआदि औरबहुरूपिये अपनेउद्योगमें गयेहोंगे सो इस समय निशाकरीकी सेना खालीहोगी तू चलकर आनन्दा अथवा निशाकरी आदि किसी बड़े सेनापतिको पकड़ला और जैसा कि प्रहासने आज मुझे लज्जित कियाहै वैसेही मैंभी उसको जलाऊं यह बिचारकर वह नदीकेपार आई और अपना भेष बदलकर निशाकरीकी सेनामेंकुछ कार्यसाधनाके उद्योगमें फिरने लगी और दिनभर इसीप्रकारसे व्यतीतकिया इतनेमें सूर्य पश्चिम दिशामें जाकर अस्ताचल चूड़ावलम्बी हुआ और सायंकालके उपरांत रात्रिके आनेसे आकाशमण्डल तारागणोंसे शोभितहुआ और निशापति ने अपनी दाहहर कौमुदी को संसारपर फैलाया॥

चौ०। तहँ नभमंडल परमसोहायो। तारागणसों अतिछवि छायो॥
शशिसों निशिनिशिसोंशशिसोहै। कामबाण विरहिनमनबोहै॥

उस समय निशाकरीने अपनी सभाको विसर्जनकिया और सब सभासद अपनी अपनी सिविरोंमें आआकर शयन करने लगे अबपूर्वमें यह वर्णन होचुकाहै कि निशाकरीका पुत्र मारीच रानी विचित्रमायाकीपुत्री सुंदरीपरआसक्तथा और सुंदरीमारीच से प्रीतिमान होनेके अपराधसे कैदथी निदान यह मारीच रात्रि को जब अपनी सिविरमें आकर एकाकी होताथा तब अपनी प्रियाके विरहमें व्याकुल होजाया करताथा और रससंबन्धी पद पढ़ा करताथा निदान इस रात्रिकोभी सभाके विसर्जन होनेपर जब वह अपनी सिविरमें आया अपनी प्राणप्रियाके विरहमें महाव्याकुलहोकर रोनेलगा यद्यपि वहरात्रि शीतल और चांदनीथी परंतु उसकेलिये वह अग्निरूपथी ज्यों ज्यों चन्द्रमाको देखताथा त्यों त्यों अपनी चन्द्रमुखी प्रियाके विरहमें विरहरूपी अग्निको बढ़ाताथा और शीतल समीरकास्पर्श उसविरहाग्नि को और दूना करताथा और वह व्याकुलहोकर कहताथा कि यह चन्द्रमा नहीं है किंतु कोई मेराशत्रु उसकारूप धारणकरके मुझेदुःखदेने आयाहै और कभी ये पद पढ़ताथा॥

दो०। हे प्यारी इमि निठुरहोइ करहुन व्याकुल मोहि।
वेगि अंकभरि देहु मुद बिरह बिथामम जोहि॥

स०। साधिकैबानन तानिकमानन हाथन ये हथियारगहे।
जगजीतनहार बिहारहिमें मनुहार करौंनवृथा योंदहे॥
पौरुषकोनमरे फिरमारिबो लातगिरेपर योगनहै।
अजहूंमृगनैनीकीसैन बिंध्यो हियमैनन नेकहुचैनचहै १

क०। उरफूलहार ताहि अहिन निहारि कण्ठकुबलयकण्ठी जिनजहर बिचारैतू। बिरह सन्तापतन तापके तबनहित मलयज पंकनभसम निरधारै तू॥ प्राणते पियारीभई जबते जियारीबाढ़ी व्याकुलताभारी ऐसे जिय जिनिजारैतू। हरप्राणहरभ्रम भूलि विन कामकाम मारनामपाइ हाहा मोहिंमत मारैतू॥२॥

दो०। हेप्यारी तुमकहतिहौ सपने देखो मोहिं।

तुमबिन नींदनआवई कैसे देखौं तोहिं ॥
प्यारी मेरी नींदकी बात तिहारे हाथ ।
आवतिहै तब साथही गई तिहारे साथ ॥
प्रिय प्यारीके विरहमें नागिनिसी यहरैन ।
लम्बी कारी विषभरी देख भज्यो है चैन ॥
तनदुख मनदुख नैनदुख हिये भई दुखखान ।
मानों कबहूं ना हती यासुखसों पहिंचान ॥

उक्तपदोंको पढ़ते पढ़ते उसकाचित्त चौंकउठा और बैठे २ मनमेंतरंग आई किइससमय बाहिरचलकर बनविहार कीजिये औरवहीं एकांतमें अपनेचित्तकी व्याकुलताको दूरकीजिये और अपनी प्राणप्यारीके विरहमें रात्रिको वहींव्यतीतकरके प्रातः-काल सेनामें चलेआइये ऐसाकरनेसे चित्तभी स्वस्थहोजायगा और तुम्हारे प्रेमकोभी कोई नजानेगा यह विचारकर वहअ-पनी सिबिरसे रोताहुआ निकला और बनमेंजाकर चारोंओर फिर २ कर अपनी प्राणप्यारीके विरहमें नीचे लिखेहुये पद पढ़नेलगा ॥

क०। कबहुंक बारिनमें कुंजननिवारिनमें इतउतबेलिनको चौंकिचि-तवतहै। कासनकपासनपै फिरत उदासकबों पल्लवन बैठि बैरदिनरि-तवतहै॥ हरीचन्द बागन कछारन पहारनमें जितलित परयो गुनिनेह हितवतहै। सूखे सूखे फूलनपै तरुगन मूलनपै मालती बिरह भौंरादिन बितवतहै ॥

दो०। प्रेम भरयो अरुदुख भरयो बिरह भरयो मनमोर ।
डोलत इतउत बिकलहोइ लखनप्रिया चितचोर ॥

उक्तपदोंको पढ़ताहुआ वह चलाजाताथा कि इतनेमें समीर-रूपा बहुरूपिणी जो किसीको पकड़ने के उद्योगमें वहां आई हुई थी उसको अकेला जातेहुये देखकर उसकेसाथ होली जब वहबनमेंपहुंचा पर्वतके समीप एक शिलापर बैठगया और वहां के वृक्ष और फूलोंकी शोभा देखकर अपनेचित्तको स्वस्थकरने

लगा समीररूपा तो यहींकी रहनेवाली थी और इसके प्रेमको जानतीथी निदान उसनेअपनास्वरूप राजपुत्री सुंदरीकी एकदासीकासाबनाया और मारीचके सन्मुखआकर दण्डवत्की और कहा कि आपने मुझे पहिंचाना मारीच बोलाकि में क्याजानूं में अपनेकोतो जानताही नहींहूं कि में कौनहूं ॥ चौ० ॥ यदपि रहतबैठो बहुजनमें । को मैं कहां न यहसुधि तनमें ॥ यह सुन कर समीररूपा बोली कि में तुम्हारी प्रिया राजपुत्री सुंदरीकी दासीहूं जबसे वह राजपुत्री कैद होगई है तबसे में बनमें रहा करतीहूं मारीचने जब यह जाना कि यह मेरी प्राणप्यारी की दासीहै तब तो इस दोहेके अनुसार कि ॥

दो० । नल एकाकी रहतजहँ हमहुं जाब तेहि ठाम ।
प्रेमी दोउ एकत्र हुइ भले बसैंगे ग्राम ॥

मारीच और वह दासी दोनों रोनेलगे उससमय उसदासी ने कहा कि हे राजपुत्री के आसक्त तेरे विरहमें राजपुत्रीकी भी यही दशाथी और ऐसी उसकी अवस्था थी कि ॥

सवैया । चैनपरै नहिं मैनदहै दिन नैननिमांझ रहै जलछायो । भावै न भोजन भौन सुहाइ न हाय हिये परिताप तचायो ॥ ऐंचत चीर दुशासन वीर सबेग तऊ जिमि अन्त न पायो । तैसेहि बाढ़त है विरहानल ताकी दशा नहिं जात सुनायो ॥

चौ० । चन्द्रकिरणदहिमरणमनावै । मदनविशिखसों अति बिलखावै ॥
अलिधुनिसुनिकैश्रवणनिमूंदै । दहि विरहानल हियअति रूंदै ॥
बनमें बसति त्यागसुखधामा । निशिदिन जपतिरहतितवनामा ॥
दो० । जबते तब बिछुरनभयो बिछुर गये सब चैन ।
भूखप्यास नींदौ गई ऊर्ध्ववायु भे नैन ॥

मारीच अपनी प्रियाका उक्त वृत्तांत सुनकर उस मिथ्या दासी के गलेसे लिपटगया और फूट फूटकर रोने लगा और बोला कि ॥

चौ० । हाय न मेरो मिट्यो वियोगू । भयो न कबहुं तासु संयोगू ॥

विरहअनल जीवितममदहिहै। प्राण मरेपर चैन न पहिहै॥
प्रिया मिलनकी लीन्हेंआसा। बड़ी कठिनसों जैहै श्वासा॥
आनँद प्रिया संग विन पाये। जहै जिय विन आश पुराये॥

उसकी यहदशा देखकर समीररूपाने अपनी कटिसे एक ताम्बूलपात्र खोलकर निकाला और उस कामातुर के सन्मुख रखकर बोली कि हे राजपुत्रीके भक्त जिस समय राजपुत्री कैद हुई थी उस समय उसने कुछ चिकने पुंगीफल और एला अपने मुखसे जूंठी करके मुझको दीथीं और कहाथा मेरा चाहने वाला प्रीतम जहां कहीं तुझकोमिले उसे ये देदेना और मेरे विरह की व्यथा उसको सुनादेना यहसुनकर मारीचने उसपात्र से एला निकालकर खाई और खातेही मूर्च्छित होगया उस समय समीररूपा उसको गठरीमें बांधकर और पीठपर गठरी को लादकर चलदी इतनेमें वह रात्रि व्यतीत हुई और पूर्व दिशासे सूर्य मण्डलने प्रकाश करके अपनी रश्मियोंकी दीप्त ज्योतिसे समस्त आकाशमंडल और धरणीको पर्वतों सहित प्रकाशित करदिया॥

दो०। भयो प्रकाश अघोर रवि उदये आकाशमें।
पुंडरीक चहुंओर फूलेसब सरवरनिमें॥

उससमय समीररूपा उसगठरीको लियेहुये विचित्रमाया की सभामेंगई और वहगठरी विचित्रमाया के सन्मुख रखदी उसको देखकर विचित्रमायाने बड़ीआतुरतासे पूछाकि किसको पकड़करलाईहै वहबोली कि निशाकरीकापुत्र मारीचहै जोराजपुत्री सुंदरीपर आसक्तहै तब विचित्रमायाने उसे मायाकृत निगड़पहिराकर चैतन्यकिया जबमारीचकी आंखेंखुलीं उसने अपनेको विचित्रमायाकी सभामें कैदहुआ पाकर कहाकि॥

चौ०। होंमैं प्रेम पाशसे बांध्यौ। मोमनलट उरझनसे नाध्यौ॥
नैनसैन बाणनसे बेध्यौ। है ममहिय बहुविधिसे खेध्यौ॥
तापरविरह अनलनितदाहत। तातेनहिंहम जीवितचाहत॥

पीत रक्त नीलाम्बर जेते। नाना वर्ण हेम कृत तेते॥
धारणकरिहोइसविधिअलंकृत। चल्योमंदगतिसोंसोसुखभृत॥
बाहरआइ सो चढ़ि वर यानू। होत निछावरि कौन पयानू॥

दो०। राज कुंवरिवर सुंदरी प्रीतम आगम जानि।
वरशृंगार लागी करन उरअति आनँद आनि॥

चौ०। हेहे वर मधु वेचनहारे। शीघ्र सुधारस मोहिं पिलारे॥
जाते चिंता जाइ नशाई। महदानन्द वसै उर आई॥
आजुप्रियाप्रीतमदोउमिलिहैं। विगत शोकहोइ आनँदभरिहैं॥
विरहविथा तिनकी दुखदाई। आजु इष्ट लहि जाइ नशाई॥
सो सुन्दर सुन्दरी सुनैनी। प्रिय आगमनजानि पिकवैनी॥
लागी करन गेह की रचना। डसवाये अमोल वहुवसना॥
रत्नजटित आसन मँगवाई। ठौर ठौर तहँ दिये विछाई॥
मध्य विछायो शुचि पर्य्यंकू। तहँ वैठी जनु पूर्ण मयंकू॥
वर्ष चतुर्दश की वय पाई। शुक्ल चतुर्दशि शशि सम भाई॥
छवि शोभासों आनन सोहै। सुर नर असुर नाग मन मोहै॥

सो०। तेहि अवसर मारीच मुदित चित्त पहुंचो तहां।
हौं तव भक्त अनीच टेरि सुनायो द्वार थिरि॥

चौ०। सुनि निज प्रीतमकी शुभवानी। मुदित द्वार पै गई सयानी॥
धाय अंक भरि भेटयौ जाई। लाई सादर ताहि लिवाई॥
शुचि पर्यंक ताहि वैठाई। वैठी आप निकट हुलसाई॥
भरे सनेह वचनइमि भाखे। आजु दैव दुख सवरे नाखे॥
नैननि ज्योति हर्ष हिय मोरे। भये पाय प्रभुदर्शन तोरे॥
रही लालसा यह मन माईं। वहुत दिवस सों सुनहु गुसाईं॥
जेहिदिन पुरिहै आश हमारी। नौमिदैव को होव सुखारी॥
वचन सनेह अमिय रस साने। सुनि मारीच परम हरषाने॥

दो०। प्रिया सुवर चित चोरके सुनि मारीच सुवैन।
हर्ष वेग अति घोरसों भयो अचेत अचैन॥

चौ०। यह लखि सो सुंदरि उठिधाई। वेगि सुगंधित जल लै आई॥
कियो मारजन सकल शरीरा। भयो चेत युत तवसो धीरा॥
चक्रित लखन लग्यो आकासू। हौ तेहिसमय अपूर्व सुपासू॥

छिन छिन बाढ़त प्रेम तरंगा। मुद भरि भरि रोवत प्रियसंगा॥
छिनप्रतिरटै सुप्रमुदित काया। धन्य धन्य प्रभ तेरी माया॥
प्रियामिलनकी मोर व्यवस्था। हैं जाग्रत क सुप्तावस्था॥
मोद न मम तन सकतसमाई। प्राण न मम कहुं देइ पलाई॥
तजिपर्यंक उठयोइमिभाखत। गिरयो भूमिपै दुख सबनाखत॥
दंड समान धरणिपै परिके। करी प्रणाम हरिहि मुद भरिके॥
प्रेमविवश ह्वोइरोवनलाग्यो। हिय हरि भक्ति हर्षसों पाग्यो॥

दो०। तबसुंदरी सुसेज तजि कर गहि लियो उठाय।
सादर पुनि पर्यंकपर दियो ताहि बैठाय॥

चौ०। बैठे दोउ तहँ सहित हुलासा। लागे करन सुभोग बिलासा॥
मनोकामना लहि दोउप्रानी। भये प्रसन्न प्रीति उर आनी॥
बिरह जनित जेते दुखशूला। तेहि अवसरते भये अमूला॥
इतलज्जावश सकुचितअंगा। उत छिन छिन नवकामतरंगा॥
तब मारीच कहे इमि बैना। सुंदरि चलहु जहां ममसैना॥
करिबिवाह तहँ सहितउछाहू। निवसें लहैं सुजीवन लाहू॥
यहसुनिबोली सुमुखिसयानी। हों दासी तव हाथ बिकानी॥
तब मारीच सुमाया करिके। रच्योबिमान हृदयमुदभरिके॥
तापर सादर ताहि बिठाई। लखिचहुंओर चढ्योअपुजाई॥
जिहिदिशि निशाकरीकीसेना। रहीचल्यो तेहिदिशिजगजेना॥
लखि मयूरमुंडी यह हालू। धाई आतुर भई बिहालू॥

मयूरमुंडी गुप्तहोकर उनदोनोंको देखरहीथी और बिचित्र-मायाने उससेकहदियाथा कि जब ये दोनोंकाम किलोलकरनेकी इच्छाकरें तबतू मना कीजियो निदान जब उसने उनदोनों को जातेहुएदेखा वह घबराकेदौड़ी और वेदोनों उसबागसे निकल कर एकपर्वतके समीपपहुंचेथे कि उसने जाकर रोका उससमय मारीच बिमानसे उतरकर उससे युद्ध करनेलगा और निम्बुक और नारिकेलआदि मायाकृत अस्त्रचलनेलगे उससमय मयूर-मुंडीने कुछमाया ऐसीकी कि मारीचपृथ्वीमें आधागड़गया और उसने चाहा कि उसको पकड़कर लेजायँ परंतु दैवयोगसे वहां

उससमय प्रचंड बहुरूपिया आगयाथा उसने यहदेखकर दूरसे एक मूलखण्ड कमानसे फेंककर ऐसा ताककर मारा कि मयूर-मुंडीकी नाकमें लगा और वह मूर्च्छित होकर गिरपड़ी तब प्रचंड उसकेपास चलाआया और उसको एक वृक्षसे बांधकर और उसकी जीभको सुईसे सींकर उसको चैतन्य किया और कहा कि जो तू रानी निशाकरीकी आज्ञामें रहना अंगीकार न करेगी तो अभी मारीजायगी और फिर उत्तम वाणीसे उसको संसारके उत्पन्न और पालनकर्ता श्रीभगवान् विष्णुकी महिमा सुनाई उससे उसकेहृदयका अज्ञानरूपी अंधकारजातारहा और उसने हाथसे बताकर बोधकिया किमैं रानी निशाकरीकी आज्ञा में रहना अंगीकार करतीहूं तब प्रचंडने उसे छोड़दिया और उसने मारीचको पृथ्वीमेंसे निकाला और सुंदरीको लेकर सबके साथ होली और निशाकरीकी सेनामें पहुंची प्रचंडने आगे बढ़कर निशाकरीको सब वृत्तांत सुनाया और वह बड़ी प्रसन्नता से बेटा और बहू दोनोंको सभामें लिवालाई सब आकर उनसे मिले और निशाकरीने मयूरमुंडी का आदर करके उसको अपनी सेना में बड़ा अधिकार दिया और आनन्द और उत्सव होने लगा एकदिनकेपीछे यह वृत्तांत विचित्रमायाने सुना सुनतेही उसकेशरीरमें आगलगगई और महा क्रोधितहोकर उसने चाहा कि उसी समय सेनालेकर चढ़जाऊं और सबको मारडालूं परंतु समीररूपा और प्राताबहुरूपिणी उससमय वहां उपस्थितथीं उनदोनोंने कहा कि आपठहरें हमजाकर निशाकरीको पकड़ेलाती हैं आप मारीचकेबदले उसका बधकीजियेगा यहकहकर वे दोनों चलदीं और समीररूपा एक सेवककासा स्वरूप बनाकर निशाकरीकी सेनामें चली आई और प्राता बाहर ठहरीरही यहां सभामें नृत्य होरहाथा प्रहासभी सभा में बैठाथा उसने देखा कि एक सेवक एक कोनेमें खड़ाहुआ चारों ओर

को देखरहाहै प्रहास उसको तुरंत जानगया कि यह बहुरूपिणी हैं और अपने स्थानसे उठकर चला और चाहाकि भुलावा देकर पकड़लूं परंतु समीररूपा उसके चित्तकी वृत्तिको जान गई और तुरंत वहांसे कूदकर बाहिर आई और बोली किमैं समीररूपाहूं और निकलगई और प्राताजो बाहिर खड़ीथी उसको उपहासने बनसे आते समय पहिचान लिया और उसे धोखा देकर पीछेसे गोदमें उठालिया उस समय प्राताने बहुत सा व्यवसाय छूटनेकाकिया परंतु छूटनसकी इसबातको दूरसे समीररूपाने देखा और तुरंत प्रहासकासा स्वरूप बनाकर आई और बोली कि हेउपहास यह तेरीतो प्रियाहै ला मुझे इसेदेदे तोमैं इसको दण्डदूं तुझको इसे धर्षणा करना उचित नहींहै यह सुनकर उपहास ने उसे प्रहासजानकर प्राताको दे दिया तब समीररूपा उसकोलेकरचली और बोलीकिमैं समीर-रूपाहूं उससमय प्रहासभी वहांआगया दोनों उन बहुरूपिणि-योंकेपीछे दौड़े परंतु वे उछलती कूदतीहुई निकलगई और बहुरूपिये फिर आये और समीररूपा दूसरीबार दूसरा स्वरू-पधारण करके सेनामें आई दैवयोगसे एक ओरका निशाकरी की माता चन्द्राननकेडेरा खड़ा हुआथा वह वृद्धाहोनेसे सभा में कमजातीथी सदैव अपने डेरेमें रहतीथी निदान समीररूपा प्रहासका स्वरूप धारणकरके वहांगई चन्द्राननने उसकोप्रहास जानकर बड़ा सत्कारकिया औरएक आसनपर बैठाकर उसके सामने मद्यकेपात्र रखदिये तब समीररूपाने मद्यसे एकपात्रभर कर चन्द्राननको दिया वह बोली कि आपप्रथम पान कीजिये वह बोलीकि हेरानी आपसमें कोईविधि निषेधकी आवश्यकता नहीं है आपतो इसपात्र को पीजिये मैंभी पीताहूं यह सुनकर चन्द्राननने वहपात्र पीलिया और समीररूपाने सबसेवकोंको कुछनकुछ कामसे हटादिया उससमय चन्द्रानन मद्यपीकर मु-

च्छितहोगई समीररूपाने उसेतो कहीं छिपादिया और अपना स्वरूप उसकासा बनाया इस अवसरमें वहदिन व्यतीतहोकर रात्रिहुई और नक्षत्र और चन्द्रमासे आकाश सुशोभितहोगया ॥

चौ० । निर्मल इन्दु सुविमल प्रकाशा । स्वच्छ कौमुदी करत प्रकाशा ॥
प्रभा कलानिधिकी इमिसोहै । जनु समुद्रपारद मन मोहै ॥

समीररूपा चन्द्राननकासा स्वरूपबनाकर निशाकरीके पास आई रानीनिशाकरी सभाको विसर्जनकरके अपने शयनमंदिर में सुंदरशय्यापर लेटीहुईथीकि इतनेमें समीररूपापहुंची निशाकरीनेउठकर उसको बड़ेआदरसे अपनीमाता जानकर शय्या पर बैठाया तब समीररूपा बोली कि बेटा आज सेनामें बहुरूपिणीआई हैं इससे मैं आज तेरेपास अपनीशय्या बिछवाकर तेरेऊपर हाथरखके सोऊंगी ऐसानहो कि कोईबहुरूपिणी आकर तुझकोकष्ट पहुंचावे यह सुनकर निशाकरीने एकरत्नजटित शय्या अपनीशय्याके समीप बिछवाकर उसको अलंकृत करादिया और वह मिथ्या चन्द्रानन उसपर सोगई जब सबकोई सोगया तब उसबहुरूपिणी ने मूर्च्छाकरचूर्ण निशाकरीकेमुखसे मलकर निशाकरीको मूर्च्छित करदिया और उसकीगठरी बांध कर और उसगठरीको पीठपर लादकर डेरेको फाड़करनिकली और सेनाके बाहिर जानेलगी कि इतनेमें उसको रक्षकोंने देख लिया और वे दौड़कर उसको रोकनेलगे परंतु समीररूपा ने अपनाखड्ग निकाललिया और दो एकको घायलकरके निकल गई इतनेमें कोलाहलको सुनकर प्रहास अपनीसिविरसे बाहिर निकलकर दौड़ा परंतु समीररूपा तो निकलगई थी प्रहास ने उसकापीछा न छोड़ा दैवयोग से जब समीररूपा बनमें पहुंची उसको उधरसेआताहुआ उपहास मिलगया और दोनों भुजाखोलकर लड़नेलगे इतने में प्रहासभी जापहुंचा और दोनोंने समीररूपाको घेरलिया परंतु इसीअवसर में उसबनकी शीतल

वायुकेलगने से रानीनिशाकरी चैतन्यहोगई और अपनेको पाशसे बँधाहुआ और एक बस्त्रमें लपेटाहुआ देखकर उसने मायाकी किवह वस्त्र फटगया और वहपाश टूटगई और निशाकरी गठरीसे निकलआई और उसनेमायाकरके समीररूपा को तुरंतपकड़लिया तबसमीररूपाबोली कि मायासे मुझे जब इच्छाहो तभीपकड़लो परंतु मुझको तो बहुरूपियोंसे लड़नेका उत्साहहै यह सुनकर उपहासबोला कि हे रानी निशाकरी यह सत्य कहती है आपइसे छोड़दीजिये परमेश्वर चाहैगा तौ हम इसको बहुरूपधारणी विद्याके बलसेही पकड़ेंगे यह सुनकर निशाकरीने समीररूपाको छोड़दिया और उपहास और समीर रूपा दोनोंखड्ग निकाल निकालकर युद्धकरनेलगे कभी दोनों ओरसे मूर्छाड चलतेथे कभीपाशके कुण्डल फिंकतेथे और रानी निशाकरी और प्रहास दोनों खड़ेहुए देखरहेथे इसबनमें एक मायावी म्लेच्छ महेन्द्रका सेवक जिसका नाम खेटकथा रहाथा वह कोलाहल सुनकर वहां आया उसको देखकर प्रहास और उपहास तौ भागगये और समीररूपा एक ओरको चलदी परंतु रानी निशाकरी वहीं खड़ीरही जब खेटक वहां आया उसने रानीनिशाकरीको पहिंचाना और उसकामानकरके दंडवत् की और पूछा कि आपयहां कैसे आईहैं यह सुनकर निशाकरी ने समीररूपाके पकड़कर लानेका सब वृत्तांत वर्णनकिया तब वह म्लेच्छ बोलाकि श्रीजी मेरी इच्छाहै किमैंभी आपकी शरण में आकर रहूं और आपका साथदूं इससे इससमय आप जो कृपा मुझ अपने दासपरकरके मेरेसाथ पधारें और मेरेघरको अपने चरणारविंदोंसे पवित्रकरें तौमैं आपके साथ अपने सब साथियों सहित चलाआऊं और आपकी शरणमेंरहूं निशाकरीने उसकी विनयको स्वीकार किया और उसके साथसाथ उसके स्थानपर आई और वहां उसने देखा कि एकपर्ब्बतपर

खेटकका घर वड़ाउत्तम कांच और मणियोंके पात्रोंसे अलंकृत वनाहै खेटकने वहां पहुंचकर रानी निशाकरीको वड़ेआदर से उत्तम आसनपर बैठाया और मद्यके घट और प्रकार प्रकार के खाद्य पदार्थ लाकर उसके सामने रक्खे और वड़ीआधीन-ताई की तव रानी निशाकरीने मद्यके एक घटमेंसे दोतीनपात्र भरकरपिये परन्तु खेटकने उसमद्यमें मूर्च्छाकर चूर्णमिला दि-याथा इससे निशाकरी मद्यपीतेही मूर्च्छित होगई तवखेटकने उसको एकसन्दूकमें वन्दकरदिया और कहा कि प्रातःकाल इ-सको महाराजमहेन्द्र और महारानी विचित्रमायाके पासलेजा-ऊंगा परंतु इधर प्रहास और उपहास जो फिरकर सेनामें आये तौदेखाकि रानी निशाकरी अभी नहीं आईहै उन्होंने जाना कि समीररूपा वहींथी कदाचित् फिररानीको पकड़कर न लेगईहो यहविचारकर वे दोनों फिर खोजतेहुए चले और प्रहास एक म्लेच्छकासा रूपधारणकरके विचित्रमायाकी सेनामें आया और उधर समीररूपा भी वनसे फिरकर वहांआगई थी और विचित्रमायाकी सभाके द्वारपर खड़ीथी कि इतने में प्रहास ने जाकरपूछाकि समीररूपाजी आजतो तुमने वड़ाकामकिया कि निशाकरी को पकड़लाई समीररूपाने उसेअच्छीप्रकारसे देख करपहिंचानलिया और कहाकि मैं किसीको पकड़कर नहींलाईहूं प्रहास वोलाकि क्यों तूमुझसे भी छलकरतीहै तव समीररूपाने शपथखाकरकहा किमैं कुछनहीं जानतीहूं यहसुनकर प्रहासवहां से निशाकरीके खोजमें चलदिया राहमें उसको चपलामिलाप्र-हासने उससेभी सव वृत्तांत कहदिया और वहभी निशाकरीको ढूंढ़नेलगा और रात्रिभर सवचारोंओर ढूंढ़तेरहे कि इतनेमें वह रात्रि व्यतीत होगई और अंधकार दूर होकर सूर्यका निर्मल प्रकाश आकाश मंडलमें आगया ॥

चौ०। लखि दिनमणि की प्रभा अनूपा। भयोचन्द्रमा मलिन स्वरूपा॥

प्रात भयो लखि सबजन जागे। निजनिज कार्य करनसब लागे॥

उससमय प्रहास और चपला दोनों निशाकरीको ढूंढनेहुए उसपर्वतपर पहुँचे जहां खेटकरहताथा और अनुमानकिया कि यहांभी देखलेना उचित है कदाचित् यहीं रानीनिशाकरी नहो यहअनुमान कर दोनोंजने एकांतमें ठहरगये परंतु चपला एक मायावीम्लेच्छकासा रूपबनकर खेटक के घरके द्वारपर पहुंचा और वहां एकवृद्धाकोबैठाहुआ देखकर चपला उसके समीपचलागया और बोला कि तुमको आज बहुतदिनोंमेंदेखा कहोअच्छी तोहो यह सुनकर वहस्त्री समझी यहमुझको जानताहोगा और यह समझकर उसनेकहा कि हां अच्छीहूं कहियेआप कैसे हैं चपला बोलाकि मायाकर्त्ताकी कृपासे अच्छाहूं कहोआज तुम यहां अकेली कैसे खड़ीहो वह बोली कि हमारे स्वामीने निशाकरीको पकड़ाहै हम यहां रक्षाकरतीहैं यहसुनकर चपला बातें करते २ उसके समीप चलागया और बोला कि इस पर्वतपर न जाने कैसी घासलगीहै कि बड़ीदुर्गंध आती है मैंनेएकपत्ती जो तोड़ी तो मेरे हाथमें गंध आनेलगी देखो तो यह काहे की गंधहै यहकहकर उसको अपनाहाथसुंघाया सूंघतेही वह मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी तब चपला उसको उठाकर एकांतमें लाया उसके वस्त्र उतारकर अपनास्वरूप उसकासा बनाया और उसके वस्त्रधारणकरके घरकेभीतर चलागया वहांपरखेटकके और सेवकभी थे उन्होंने कहा कि हे रतनी तुम अपनी नौकरीपरसे क्योंचलीआई चपलाबोला कि मैंने रात्रिभरतो रक्षाकी किसीने मेरी सुधिभी नली क्यामैंहीं एकसेवकहूं अब और किसीको भेजो यहसुनकर सबसेवक चुपहोरहे तबचपलाने देखा कि खेटकजगकर शय्यापर बैठाहुआ मद्यपानकररहाहै चपला उसके पास चलागया और खड़ाहोकर उसकेऊपर मोरछल करनेलगा और इधरप्रहासने पहाड़से उतरकर अपना स्वरूप एकगंधर्व कासा

बनाया और बांसुरीलेकर बजानेलगा उसकी मनकर्षण धुनिको सुनिकर खेटकने अपनेसेवकोंसे आज्ञाकी कि इसबांसुरीबजाने वाले को बुलालाओ यह सुनकर वे गये और प्रहासको खेटक के सन्मुख लेआये खेटक प्रहास को एक वृद्ध गंधर्व बड़ी बय रखनेवाले के स्वरूपमें देखकर कहने लगा कि देखिये माया-कर्त्ताकी कैसी मायाहै कि इसकी वय तो इतनीहै और गुण इतना बड़ाहै निदान उसने आज्ञादी कि अपनागुण हमको भी दिखा यह सुनकर प्रहास बांसुरीलेकर बजानेलगा उसको सुन कर खेटक बहुत प्रसन्नहुआ और प्रहासको बहुत कुछ पारितो-षिक देकर बोला कि अरे गंधर्व आज तो मैं तेरा गाना सुनूंगा और कल निशाकरीको लेकर महेन्द्रके पास जाऊंगा यह सुन कर प्रहासने पूछा कि आपने निशाकरीको यहां कैदकिया है खेटकने पहले बतादिया कि उस सामनेवाले संदूकमें बन्द है परंतु पीछे अनुमान किया कि इस गंधर्वको यह पूछनेसे क्या प्रयोजनथा कि निशाकरी को कहां कैद किया है मालूम होता है कि यह कोई बहुरूपिया है यह विचारकरके वह बोला कि अरे बहुरूपिये में तुझे जान गया और यह कहकर और हँस कर उसने कुछ माया करके प्रहास को स्तंभित करदिया यह देखकर चपलाने जो मोर्छल कर रहाथा अपना खड्ग निकाल कर ऐसा मारा कि खेटकका शिर कटकर अलग जापड़ा और उसके मरने से कोलाहल प्रारंभ हुआ उसको सुनकर खेटक के सेवक दौड़े परंतु चपला यहतो सुनही चुकाथा कि निशाकरी अमुक संदूकमें बन्दहै वह उस अंधकारमें झपटकर उस संदूक के पास गया और उसे खोलदिया रानी निशाकरी खेटकके मर नेसे चैतन्य तोहोही चुकीथी तुरंत संदूकसे बाहर निकलआई और मायाकृत अस्त्रोंसे खेटकके सब सेवकोंको मारडाला और प्रहासने जाल मारकर सब घर खेटकका लूटलिया निदान उक्त

प्रकारसे सबका विध्वंसनकरके निशाकरी आदि सब अपनी सेनाकीओर चलदिये मार्गमेंउनको एकम्लेच्छ विचित्रमायाका सेवक मिला उसने इन सबको पहिंचानकर कहा कि तुम सब आज और सुख भोगलो कल सब के सब मारेजाओगे यह सुन कर रानी निशाकरी बोली कि परमेश्वरके सिवाय हमको कौन मारसकताहै तब वह म्लेच्छबोला कि हेप्रहासआजमें रानी विचित्रमायाकी सेनामेंथा वहां महाराजमहेन्द्रकापत्र यहआया कि हेरानी विचित्रमाया हम तुम्हारेपासकल रानी विकालरूपाको भेजेंगे वहजाकर सब शत्रुओंको विध्वंसनकरेगी इससे मैंनेयह कहा कि तुम सब कल मारे जाओगे यह कहकर वह म्लेच्छतो चलागया परंतु विकालरूपाका नाम सुनकर रानी निशाकरीके मुखकावर्ण भयसे श्वेत होगया यह देखकर प्रहासने आश्वासन करके कहा कि हे रानी आपको घबराना उचित नहींहै परमेश्वर रक्षकहै मैं जाताहूं उस विकालरूपाको सेना तकभी न पहुँचनेदूंगा मार्गहीमें देख भाल लूंगा और यह कहकर प्रहास चलदिया और चपलाभी एक ओरको मार्गी हुआ और निशाकरी अपनी सेनामें आई और सबसे मिल भेटकर अपनी सभा में सिंहासनपर विराजमानहुई परंतु अब आगेका वृत्तांत सुनिये कि चपला वहां से चलकर प्रत्यक्षखंडको उत्तीर्ण करके रक्तवाहिनी नदीके तटपर जो बनथा वहां पहुँचा और वहां इस प्रयोजनसे ठहरगया कि विकालरूपा इसीओरसे आवैगी तब में कुछ उपाय करूंगा परंतु उस बनमें एक झूला पड़ाहुआथा और उसपर तीन स्त्रियां परम सुंदरी मनोहररूपा रत्न जटित आभूषण पहिरेहुए झूल रहीथीं उनको देखकर चपलाने विचार किया कि ये कोई मायाविनीहैं ऐसानहो कि मुझको पकड़लें इस से इनसे अलग जाकर ठहरना उचितहै यह विचारकरके वह मार्ग काटकर दूसरी ओरको चलदिया उससमय उन स्त्रियोंने

पुकारकर कहा कि हे चपला हमारे पास आकर झोटा देताजा परंतु चपलाने कुछ न सुना और वहांसे भागकर दोकोस निकल गया परंतु वहांभी उसने वेही वृक्ष और वही झूला और उन्हीं स्त्रियोंको झूलते हुए देखा तब चपला तीसरीओर को भागा और कई कोसपर जाकर ठहरा परंतु वहांभी वही वृत्तांत पाया अर्थात् उन्हीं स्त्रियोंको उसी झूलेपर झूलते हुए देखा तब वह चौथीओर को मार्गीहुआ और जब कई कोसपर आकर बिश्रामकिया तौ फिर उन्हीं वृक्षोंको और उन्हीं स्त्रियों को उसी प्रकारसे झूलतेहुए पाया उससमय उनस्त्रियोंने कहा कि अरे निर्बुद्धी तू क्यों भागाभागा फिरताहै इधरआ और हमको झोटा दे यह सुनकर चपला बेबशहोकर उनके पासगया और कहने लगा कि देखो हम बहुरूपिये हैं हमको कष्टदेना अच्छा नहीं है आगे तुमजानो निदान बहुतप्रकारसे चपलाने उनको भय दिलाया परंतु उनस्त्रियोंने एक न माना और चपलाको पकड़ कर महेन्द्रके पास लेचलीं परंतु अब प्रहासका वृत्तांत सुनिये कि वह विक्रालरूपाको वधकरनेकी इच्छासे वहांसेचलकर एक ऐसे पर्वतीय स्थानपर पहुँचा कि चारोंओरतौ उसके पर्बतथे और उनके मध्यमें एक बन हराभराथा नदियां उसमें तरंगों सहित बहरहीथीं नानाप्रकारके फूल फूलेहुएथे और पक्षीमधुर२ ध्वनिसे गान कररहेथे उसको देखकर प्रहासने अनुमानकिया कि इसबनकी रचनाकरो और यहीं ठहरो कुछ आश्चर्यनहींहै कि इस स्थानपर आकर बिक्रालरूपा ठहरै क्योंकि यह स्थान मनोहरहै यहविचारकर प्रहासने अपनी थैलीमें से मूर्च्छाकर चूर्णमिश्रित सुगंधित जलके पात्रनिकाले और उसजलसे सब स्थानको छिड़का और मूर्च्छाकर बनस्पति मिलाकर फूलों के हार और गजरे बनाकर वृक्षोंकी शाखाओं पर टांगदिया और मर्च्छाकर सुगन्धित तैलसे उस सबस्थानको सुगन्धितकरके

आप अपना स्वरूप एक कुबड़ी वृद्धा स्त्री कासा बनाकर उस स्थानसे बाहरआकर हाथमें लकड़ी लियेहुए बैठगया थोड़ीदेर में उसने दूरसे देखा कि तीन स्त्रियां चपलाको पकड़कर लिये जातीहैं देखतेही वहदौड़कर उनस्त्रियोंकेपासगया और रोरोकर दोहाई देनेलगा तबउससे इनस्त्रियों ने रोनेका कारण पूछातो प्रहास बोला कि भैनाओ मैंयहां विचित्रमायाकी आज्ञासे रहती हूं यहमराचोर तीनबार आकर मेरे तीनतांबूलपात्र चुरालेगया मैं तमालपत्र बिनामरीजातीहूं इसमरेसे मेरे पानदान दिलवाकर इसे मारडालो यहसुनकर उनतीनों स्त्रियोंने कहाकि बतामरे इस वृद्धाके तांबूलपात्र तैंने क्याकिये चपलातो सबबातें सुनही रहाथा जानगया कि यह बुढ़िया नहींहै किंतुगुरूजी हैं मुझको छुटानेके उद्योगमें आयेहैं यहविचारकर वह कहने लगा कि जो मैं तीनों तांबूलपात्र देदूं तो मुझको छोड़दोगी यह सुनकर वे तीनों स्त्रियां उसको मारनेलगीं तब चपला बोला कि अच्छा क्रोध न कीजिये चलिये मैं बताए देताहूं जहां यह बुढ़िया रहती है वहीं एक गर्तहै उसीमें मैंने इसके तीनों तांबूल पात्र चुराकर छिपा दिये हैं तब उन स्त्रियों ने पूछा कि तुम कहां रहती हो वह बोली कि वह जो पर्वतों की गुफा है उसी से आगे बढ़कर मेराघर है यह सुनकर वे तीनों स्त्रियां वहांसे चलकर पर्वतोंकी गुफामें आईं और उस गुफाके आगे जाकर उसबन में पहुँचीं जिसकी प्रहासने रचना की थी और वहां जातेही मूर्च्छाकर गन्धकी घ्राणसे मूर्च्छित होकर गिर पड़ीं उससमय तत्काल प्रहास और चपला ने भुजालियां निकाल कर उन स्त्रियों के शिरकाटडाले उनके मरतेही आग और पत्थरों की वर्षा होनेलगी और ऐसी आपत्ति आई कि ऐसी कभी नहीं हुई थी और वह बन तत्काल नाश होगया और रक्तबाहिनी नदीके रक्षकदौड़े परंतु प्रहास और चपला तो उन स्त्रियोंके

आभूषण और वस्त्र उतारकर भागगयेथे उनरक्षकोंने पहुँचकर उन मायाविनियोंकी लोथें उठालीं और बदरी उद्यानमें महेन्द्र के पास लेजाकर सब वृत्तांत निवेदनकिया और कहा कि बहु- रूपियोंने आज मायाकृत बनोंके रक्षकोंकोभी मारडाला तब महेन्द्रने उन स्त्रियोंके शरीरोंका संस्कार कराया और महा- क्रोधित होकर आज्ञादी कि त्रिकालरूपा तुरंत यहां आवे यह कहतेही आकाशमें एक अग्निका समूह प्रकटहुआ और वह पृथ्वीपर उतरकर ठहरा और उसमेंसे अग्निकासा वर्ण रखने वाली एकपरमसुंदरी मनोहररूपा स्त्री लालवस्त्र और जड़ाऊ आभूषण धारणकियेहुये निकली और महेन्द्रके सन्मुखआकर दण्डवत्करके खड़ीहोगई महेन्द्रने आज्ञादी कि तुमअभी इसी समय अपनेसाथ एकलाखसेना जो तुम्हारे पासहै लेकर रानी विचित्रमायाकेपास चलीजाओ और सबशत्रुओंका विध्वंसन करडालो देखो एकभी न वचनेपावे इस हमारी आज्ञाका पालन पूरापूराकरना हम तुम्हाराअधिकार बहुतबड़ाकरेंगे और शत्रु- ओंको विजयकरनेपर बहुतसाधन और राज्य पारितोषिक देंगे यह आज्ञापाकर वहअपने स्थानपरआई और अपनी एकलाख सेनाको तय्यारकरके अपनेको अग्निकूटमें छिपाकर बड़ीधूम- धामसे चलदी और बड़ेमार्गको उत्तीर्ण करके विचित्रमायाकी सेनाकेनिकट जापहुँची मार्गमें कहींनहींठहरी रानीविचित्रमाया ने उसके आनेका संदेशा सुनकर उसे लेनेको बड़े२ मान्यामा- यावी म्लेच्छोंको भेजा वह जाकर उसको लिवालाये विचित्र- मायाने उसका यथायोग्य सत्कारकरके उसके निवासकेलिये सभा और शयनआदिके लिये पृथक्२ डेरेखड़ेकरादिये और सेनाको उसकी उचितस्थानपरटिकाया त्रिकालरूपाने तब स- भामेंजाकर विश्रामकिया नृत्य उसकेसामने होनेलगा औरवह मद्यपान करनेलगी जब मद्यकेआवेशसे उसका ब्रह्मांड उष्ण

हुआ तब उसने रानी निशाकरीको एकपत्र लिखा आशयउस पत्रका यहथा कि हे निशाकरी मैं त्रिकालरूपा अपनेनामके सदृश मायाकाबल रखनेवालीहूं नाममेरा संसारमें विख्यातहै कि कोई मुझसे सामना नहींकरसकताहै इससे तुझको उचित है कि इसपत्रके देखतेही मेरेपास चलीआ में महाराजाधिराजसे तेराअपराध क्षमाकरादूंगी नहींतो तुझको दण्डदूंगी यह पत्र लिखकर उसने एक मायाकृत पुतले को देकर आज्ञादी कि निशाकरी के पासलेजा वह पुतला उसकी आज्ञानुसार रानी निशाकरी की सभामें आया और निशाकरी को वहपत्र देदिया निशाकरी ने वह पत्र पढ़ा और उसके उत्तर में लिखा कि मैं तो प्रहास महाराजकी दासीहूं उस दुष्ट महेन्द्र और दुर्भगा विचित्रमायाको नहींजानतीहूं तुझसे जोकुछ होसके उसमें कमी मत करै परमेश्वर हमारा रक्षकहै और यह लिखकर उस पुतले को देदिया और वह लेकर त्रिकालरूपा के पास आया वह उस पत्रको पढ़कर क्रोधके आवेशसे लाल होगई और उस दिनभर तो वह चुप चाप रही परंतु जब वह दिन व्यतीत होगया और सूर्य पश्चिम दिशामें जाछिपा और चन्द्रमाने रात्रिके अंधकार में राज्य करनेकी आज्ञा लेकर अपनी कौमुदी रूप मुद्रासे संसारको मुद्रित किया ॥

सो० । अरि सेनामें तब लगे युद्ध बाजे बजन ।
त्रिकालीही यत्र तहांतूर बाजन लगी ॥

मायाकृत पक्षियों ने ये समाचार आकर रानी निशाकरी को सुनाये उसको सुनकर बहुरूपिये सब निकलकर बनमें चलेगये और रानी निशाकरी मायाकृत तूर बजाने लगी और शूरवीर युद्धकी तैयारी करने लगे अस्त्रालय खुलगये और मायावी अपनी२ मायाके प्रयोग तैयार करनेलगे उस समय रानीनिशाकरीने आज्ञादी ॥

चौ०। सुनहु सकल सेवक उपकारी । सकल सेनमें कहहु पुकारी ॥
सर्व पियादे अरु असवारा । शीघ्र अस्त्र गहि होंइ तयारा ॥
धनु असि गदा मुशलअरुबाना । देहु सबनिको अस्त्रप्रमाना ॥
निशिमें अस्त्रक्रिया अनुसारी । प्रातलेहिं यश शत्रु निमारी ॥
लगे करन सब निजनिज काजू । साजनलगे सुनिजनिजसाजू ॥
सूर्य उदय सूचक शुचि रूपा । प्रातरूप ध्वज कढ़ी अनूपा ॥
नभ मंडल रथ परम सुहायो । हय शिशुमार चक्र छबिछायो ॥
रवि प्रचण्ड योधा मनभायो । प्रभा क्रोधगहि तेहि छिनआयो ॥
उग्रतेज धनुगहि उत्कर्षा । रश्मि बाण की कीन्ही वर्षा ॥
तारागण सेना भय पाई । इन्दु शत्रु सहगई पलाई ॥
तेहिअवसरम्लेच्छीबिकरारी । तजिकै निद्रा उठी भुरारी ॥
म्लेच्छसेनको दियो निदेशा । रण हित सन्नध होइँ सुभेशा ॥
तब मँगाय मायाकृत शस्त्रा । लिये प्रयोग सहित सब अस्त्रा ॥
सविधिअंगसबधारणकरिकै । चढ़ी महोरग पै रिसि भरिकै ॥
संग सैन पैदर असवारा । रथी गजी को गनै अपारा ॥
चली महान क्रोधसों पागी । युद्ध हेत अतिशय अनुरागी ॥
रजउड़ितेहिअवसरआकाशा । कीन्हों रविको मन्द प्रकाशा ॥
इत निशाकरीरणहितगाजी । सकलसेननिज विधिवतसाजी ॥
कवच अभेद्य अनूपम भारे । निज निज तन योधावर धारे ॥
असिअरु चर्म धनुपवरबाना । गदा भल्ल आयुध युध नाना ॥
गहिगहि सकल वीररस पागे । भरिभरि रिसिसों गर्जनलागे ॥
हय गजरथ वाहन वर नाना । भये अलंकृत सहित विधाना ॥
तिनपर सकल सैनपति जाई । चढ़े सगर्व क्रोध अधिकाई ॥
इविधि साजि सेना बलवाना । तहँनिशाकरी कीन्हपयाना ॥
भई तहां नभबाणी भाई । मृत्युनिकटअरिगणकी आई ॥
रंगभूमि जब सेना गयऊ । विधिवतताकरिचनाभयऊ ॥

सो० । निकसि सेनसों तब तेहि अवसर विक्रालिनी ।
युद्ध भूमिहीं यत्र गई तहां निज उरगलै ॥

छंद। तहं जाय मन रिसि लाय वचन सगर्व इमि भाषत भई ।
अरि सैन में को प्रबल भट जो आय मम सन्मुख ठई ॥
सो सुनि सकल भटधीर तजि भय पाय हत चेतस भये ।

उत्साह रहित अवाक निश्चल रहे नहिं सन्मुख गये॥

चौ० जिमि२ उरगहि तहांभ्रमावै। तिमि२तिनिउरभयअधिकावै॥
तबमारीच महाभट योधा। तेहिअवसरगहिउरअतिक्रोधा॥
रणउत्साह हर्षि हिय आना। पुनिकीन्हेसिमनमेंअनुमाना॥
प्रिया मोर सुंदरी सुहाई। अधिक प्राण से मोमन भाई॥
आसुर माया परम अनूपा। सो नहिं जानतहै शचिरूपा॥
ताको कोउ एकाकी पाई। अवशि बांधिके गहिलै जाई॥
असविचार करि सोबरवीरा। प्रवल भयंकर भट रणधीरा॥
त्रिया एकही नाम उदासी। आनन्दा माया की दासी॥
दीयो ताहि बुलाइ निदेशा। लैजा सुंदरि को केहु देशा॥
यह निदेश दासी जबपायो। मायासे यक उरग बनायो॥
चढ़ी सुन्दरी तापर जाई। लेतेहि दासी गई पलाई॥
तबमारीच मातुढिग आयो। वोल्यो वचन वीररस छायो॥
मातु मोहिं युध आज्ञा दीजे। लखिशत्रुनि को वधमुदलीजे॥
सुनि वोली निशाकरी रानी। लखे न कठिन युद्धसुत मानी॥
गयो कदाचित् बधिरन माहीं। पुत्र शोकलहि जीहों नाहीं॥
नहिं शासन युधको तेहिदीन्हो। रंतिकाल तबरिसिसोंभीन्हो॥
पदघातनि महि मर्दि सुजाना। प्रविश्यो धरामध्य वलवाना॥
विक्रालिनी समीप प्रघटिके। अट्टहास कीन्हों वल भरिके॥
सुनिसो मूर्च्छितगिरी उरगसों। मायाकरि चेती तब रिसिसों॥
रंतिकाल को तहँ गहि लीन्हो। चाह्यो ताहि प्राणबिनु कीन्हो॥

परन्तु जिस समय विक्रालनीने रंतिकालका वधकरनाचाहा उससमय संडीनचपला दौड़कर विक्रालरूपाके पैरोंपर जापड़ी और वोली किमैं तेरी दासीहूं मेरे पुत्रको छोड़दे यह सुनके उसने दयाकी और उसे छोड़दिया और आप उड़कर आकाश में जाकर स्थित हुई और वहांसे कुछ मायाकरके एक नारिकेलआसुरी अस्त्रछोड़ा किवह निशाकरीकी सेनापर आकर फटा और उसमेंसे सहस्रों नाग निकले जिनके मुखसे अग्निकी चिनगारियां निकलतीथीं और सबसेनामें फैलकर अग्नि उग-

लनेलगे क्षणमात्रमें वह अग्निज्वालारूप होगई और सेनाको भस्म करनेलगी और सेनापतियोंके अङ्गसे लपटने लगी यह देखकर सेनापति मायाके प्रयोगकर करके अपनेको उसज्वाला समूहसे बचाने और जलवर्षाकर उस अग्निको बुझाने लगे परंतु विकालरूपाने फिर दूसरा अस्त्रछोड़ा और अपनी सेना के सेनापतियोंसे पुकार कर कहा कि इन अधर्मियोंको पकड़ो यह सुनकर सब सेना उसकी खड्ग आदि अनेकअस्त्र लिये हुए निशाकरी की सेनापर दौड़ी और दूसरीओरसे रानीवि-चित्रमाया ने जो सेनासहित युद्धदेखनेको विकालरूपाके साथ आईथी घेरलिया तब रानीनिशाकरीने भी सेनासहित बढ़कर युद्धकिया और दोनोंओरसे मायाहोनेलगी और निम्बुक और नारिकेलआदि आसुरी अस्त्र चलने लगे और मायाकृत खड्ग चपलाके समान चमकनेलगे॥

तोमरछन्द॥

तहँ वीर धनुटंकारि। वहु दिव्य अस्त्रप्रहारि॥
दोउसेनमें तेहिकाल। भे करत कर्म कराल॥
वहुभये करपग छीन। वहु भये दशन विहीन॥
वहुवमत शोणितनीर। तहँ खड्डे पूरित पीर॥
गजवाजि सुभटसमूह। वधभये लहि शरजूह॥
तहँ भई अतिशयमार। भौ महा हाहाकार॥

इसप्रकारसे महाघोर युद्धहोनेलगा उससमयआनन्दा और केसरी और निशाकरीने माया कर करके सहस्रोंको यमलोकमें पहुंचाया और अनगिनती योद्धाओंको विक्षिप्त करदिया परंतु विकालरूपाने आकाशसे तीसरामायाकृत अस्त्रछोड़ा किउसके प्रभावसे अग्निकी ज्वाला गिरनेलगी और वह ज्वाला एकत्र होकर बादलकीसमान निशाकरीकी सेनापरछागई औरनीचेको झुकनेलगी यह देखकर आनन्दा और निशाकरी और मारीच

आदि बड़ेबड़े मायावीयोद्धाभागे और सेनाको बड़ी अजयहुई कोई त्रिकालिनीकी उसमायाको दूर न करसका और त्रिकाल-रूपा और विचित्रमाया सेनाको मारतीं और भस्म करतीहुई और उनकापीछा करतीहुई कईकोसतक चलीआई उसदिन रानी निशाकरीकी बहुतसी सेना मारीगई औरसेनाके सेनापति थोड़ीसी सेनासहित एक पर्वतकी कन्दरामें जाछिपे निदान सायंकालको त्रिकालरूपा सहस्रोंको यमलोक में पहुंचाकर लौट आई और बहुतसे दूतोंकोभेजा कि जाकर यहपता लगावें सब शत्रु कहांजाकर छिपेहैं और अपनी सभामें जाकरबैठी और कुछ ऐसी माया की कि चारोंओर उस सभाके एक अग्नि का मंडपहोगया उससमय उसने आज्ञादी किगंधर्विणी आकर नृत्य और गानकरें निदान नृत्य और गान होनेलगा और वह मद्य पानकरने और खाद्य पदार्थोंको खानेलगी इधर अपनी सेनाकी दुर्दशाको वैष्णवी सेनाके बहुरूपियोंने भी देखा और कुछ छल करनेके लिये त्रिकाल रूपाकी सेनाकी ओर चलदिये और उपहास अपने स्वरूप को बदलकर त्रिकालिनी के डेरे के समीप आया और चाहा कि भीतर जाऊं कि इतनेमें वाणीहुई कि देखो उपहास आताहै चौकस होजाओ यह सुनकर उपहास भागा और छलांग मारताहुआ निकल गया और वहांत्रिकालरूपासे सबने पूछा कि यहवाणी कौन बोलताहै वहबोली कि मैंने माया कृत पुतलाबनाकर बैठादियाहै जो कोईआवैगा उसीको नामसहित पुतलाबतलादेगा और जो कोईबहुरूपियामेरेडेरेके समीप आवैगा उसकोभी पुतलानाम लेकर बतावैगा यहसुनकर सब बहुरूपिये जो वहां गयेथे भागकर चलेआये और जहां निशाकरीजाकर छिपीथी वहां पहुंचे और कहनेलगे कि हमलोग जो छलकरने जातेहैं तो जानहीं सकते हैं इससे जानपड़ताहै कि अब कालनिकट हम सबका आगयाहै यह सुनकर सब सेनामें

करुणा विलाप फैलगया इतनेमें प्रहासभी वहांजाकर पहुंचा और अपने शूरवीरोंकी दुर्दशाको देखकर रोनेलगा और सब कोसमझा समझाकर आश्वासन करने लगा परंतु बहुरूपिये फिर छलकरनेके निमित्त चलदिये और इधरविकालरूपा जब नाच देख रहीथी तब उसके पास महेन्द्र का एक पत्र आया उसमें लिखाथा कि हमने अद्भुत जालमें निशाकरीका वृत्तांत देखाथा उससे विदित हुआकि सब शत्रुजाकर अमुक पर्वतकी कन्दरामें छिपेहैं इससे तुमको उचितहै कि सेनालेकर चढ़जाओ और सबको पकड़कर कैदकरलो उसपत्रको पढ़तेही विकालरूपाने मायाकृत तूरबजाई और बड़ी शीघ्रतासे सबसेना को तयारकराके चलदी और उसपर्वतको चारोंओरसे घेरलिया अनचेतेमें कोई भागभी न सका उससमय प्रहासने निशाकरी से कहाकि अबतुम सब यह यत्नकरो कि इस विकालिनीके पैरों पर जाकर गिरपड़ो और विनयकरो कि हमसबका अपराध महाराजमहेन्द्रसे क्षमाकरादो यहसुनकर वहतुमसबको अपनी शरणलेगी फिरमैं समझलूंगा यहमंत्र सबकोअच्छालगा और निशाकरी बहुतसे रत्नभेंटकेलिये लेकर अपनेसाथ सब बड़े २ मायावी योद्धाओंको लियेहुए आगेचली वह विकालरूपा उस गुफाके निकट ठहरीहुईथी और सबसेना पर्वतको घेरेहुएथीकि इतनेमें उसने निशाकरीके आनेकासंदेशा सुना सुनतेही अपने तम्बूसे बाहर निकलआई और देखा कि रानीनिशाकरी और आनन्दा मायाआदि सबहाथ जोड़ेहुए चलीआतीहैं यह देख कर उसने सेनाको युद्धसे निवृत्त रहनेकी आज्ञादी और आगे बढ़ी उससमय रानीनिशाकरी दौड़कर उसकेचरणोंपर गिरपड़ी और जोकुछ मंत्र प्रहासने दियाथा वह कहा उसको सुनकर विकालिनीने सबको अपने हृदयसे लगाया और बहुत प्रसन्नहुई कि मेरे कारणसे यह बड़ाभारी संकटमिटा और सबको अपने

तंबू में लिवालाई और सबको उत्तम आसनोंपर बैठाया उस समय प्रहासभी उस तंबूमें चलाआया और बोला कि महाराज महेन्द्रकी मेंभी नौकरी करूंगा यह सुनकर त्रिकालिनीने प्रहास का भी सत्कारकिया और उसको उत्तम आसनपर बैठाया परंतु आप अग्निकी ज्वाला अपने चारोंओर प्रकट करके गुप्तहो-गई और फिर आज्ञादी कि गंधर्विणी बुलाई जावें तब नाच होनेलगा और मधुमद्यके पात्र चलने लगे उस समय प्रहास बोला कि हे रानी त्रिकालिनी आप भी आकर मद्य पान की-जिये वह बोली कि हे प्रहास में तेरे भयसे अग्निकी ज्वाला में छिपकर रहतीहूं यह सुनकर प्रहास बोला कि जो मेरा वि-श्वासही नहींहै तो मेरा ठहरना व्यर्थहै यह सुनकर वह बोली कि नहीं आप क्रोध न कीजिये में प्रकट होतीहूं यह कहकर वह अग्नि शिखाकी तुल्य उस ज्वाल कूटसे निकली और अपना निजस्वरूप धारण करके एकउत्तमपर्यंकपर आकर बैठगई उस समय सबने देखा कि पर्यंकपर एक परमसुन्दरी स्त्री बैठीहुईहै उस समय प्रहास बोला किजो मुझको आज्ञाहो तो आज में मद्य सबको पान कराऊं और अपने गुण दिखाऊं यह सुन-कर त्रिकालिनी बोली कि मुझको जो मूर्छा कर मद्य देनाचाहते होउ तो वैसीकहो यहसुनकर प्रहासबोला कि राम राम अब मैं कभी मद्यकानामभी न लूंगा निदान यहांतो यहवार्तालापहोरहा था कि वहां महेन्द्रने फिर अद्भुतजाल देखा और उससे उसको विदितहुआकि प्रहास छलसे त्रिकालिनीके समीप आयाहै और समयपाकर उसकावध करेगा यहजानकर उसने एकपत्र लिख-कर एक मायाकृत पुतलेको दिया और आज्ञादी कि त्रिकालिनी के पास लेजा यह आज्ञा पाकर वह पुतला चलदिया और त्रिकालिनीके पास आकर वह पत्र उसको देदिया उसने उसको जो पढ़ातो उसमें लिखाथाकि प्रहास तुम्हारे पास छल करने

आयाहै तुम उसकी वातों में मत आजाना इससमय सब शत्रु तुम्हारे आधीनहैं सबको पकड़कर विचित्रमायाकी सेनामें चली आवो प्रातःकाल हम वहां आकर सबको शूली देंगे उस पत्र को पढ़तेही त्रिकालिनीने ऐसी मायाकी कि प्रहास और रानी निशाकरी आदि सबके चारों ओर ज्वालाकी भीति खड़ी होगई और सब हाथों पैरोंमें मायाकृत निगड़ पड़गये यह देखकर सब बोले कि हे रानी त्रिकालिनी हमारा क्या अपराध है वह बोली कि तुम सब छलीहो देखो महाराज महेन्द्रके पाससे यह पत्र आयाहै उन्होंने मुझको तुम सबके विश्वासघात करने के अभिप्रायसे विदित किया है और यह कहकर उसने सबको कैद करके छकड़ोंपर लदवाया और वहां से विचित्रमायाकी सेनाकी ओर चलदी यह देखकर वह लोग जिनको रानीनिशाकरी पर्वतकी गुफामें धन इत्यादिकी रक्षाके लिये छोड़ आईथी बड़ी करुणासे रोनेलगे और सबको विश्वास होगया कि अब निश्चय सब मारेजायंगे और सबने यह निश्चयकिया अब चल कर त्रिकालिनी की सेनापर गिरिये और अपने प्राण दीजिये यह मंत्र उन्होंने कियाहीथा कि इतनेमें उपहास ने जाकर उन सब को समझाकर निषेध किया और कहा कि तुम सब परमेश्वर जगत् रक्षक से प्रार्थना अपनी करो और मैं जाकर इस दुर्भगा त्रिकालिनी को मारे डालताहूं परंतु तुममें से एक मायावी मेरे साथ चलै निदान उपहास वहां से अपने साथ एकबड़े मायावी म्लेच्छ को लेकर चलदिया और यहां सबके सब उस परमेश्वर सच्चिदानंदरूप विष्णु भगवान् से प्रार्थना करने लगे॥

क०। विश्वावसु विश्वेश विश्वमूर्ति विश्वकृत विभवसी निगमय भूतभव्य भगवान। पादतो धरणिदिशि बाहुदिवसी सुतपवल सत्य धर्म कर्म करतव्य बलवान॥ मूर्तितव सुरकाय शशिसूर चखचारु अग्नितेज

जलस्वेद वायुश्वास सुखदान। आश्विनि करण गिरा जीभि वेदसंस्कार आपुकहे विश्वमय नाथ करुणानिधान॥

सो०। हेप्रभु दीन दयाल लखिदुख भक्तनिकोमहा।
करहुकृपा यहिकाल अरि बंधनसो मुक्तकरि॥

निदान ये सबतो उक्तप्रकारसे परमेश्वरसे विनय कररहेथे और उधर उपहास उस मायावी म्लेच्छको लेकर एक पर्वत की कंदरामें पहुंचा और वहां उससेकहा कितू मायाबलसे एक मयूर बनादे उसने तत्काल मोमका मयूर निर्माण करदिया उपहासने उसको उत्तमवस्त्रोंसे अलंकृतकिया और उसकी ग्रीवा में रत्नजटित आभूषण पहिराकर चंचुमें मुक्ताओंकी माला लटकादी और अपना स्वरूप महेन्द्रकासा बनाकर उसमयूरपर सवारहोगया और उस मायावी म्लेच्छसेकहा किअबतू ऐसी मायाकर कियहमयूर उड़ताहुआ त्रिकालरूपाके समीपजाकर पहुंचे और मायासे अग्नि और पाषाणोंकी वर्षाभी करताचल जिससे यह मालूमहोवे किकोई महामान्य म्लेच्छआता है यह सुनकर उसम्लेच्छने अपना स्वरूप सेवककासा बनाया और सेवककी भांति प्रहासकेसाथ होकर मायाबलसे उसमयूरको उड़ाताहुआ और आग और पत्थर बरसाताहुआ चलदिया उससमय उसकी मायासे घटाउठने और आंधी चलनेलगीं त्रिकालनी सेनासहित चलीजारहीथी किअकस्मात् किसीमान्य म्लेच्छके आगमनकासा चमत्कारदेखकर ठहरगई और जिधर से अग्निकी वर्षा होतीआतीथी उसओरको देखनेलगी और थोड़ीदेरमें उसने देखाकि महेन्द्र क्रीटमुकुट और अद्भुत वस्त्रों से अलंकृत मायाकृत मयूरपर सवारचला आरहाहै निदान महाराज महेन्द्रको देखतेही वहअग्निकूटसे बाहरनिकलआई और सत्कार करनेकी इच्छासे आगेबढ़ी और समीपआकर दंडवत्की उससमय उस महेन्द्ररूपी उपहासने अपना मयूर

ठहरादिया और विक्रालिनीसे कहा किधन्यहैतुमने इसबड़ेयुद्ध को कितनाशीघ्र निवृत्तकिया है और यहकहकर वह उसमयूर परसे कूदपड़ा उससमय उस म्लेच्छने अपनी माया दूरकरके उस आंधी और अग्निकी वर्षाको शांतकिया तब विक्रालरूपा ने बहुतसेरत्नोंको स्थालियोंमेलगाकर भेंटकियेरक्खा और वहां से पांवड़े बिछवातीहुई उपहासको लिवालाई और आज्ञा दी किइसी स्थानपर डेरेलगादिये जावें यह सुनकर सबसेवक डेरे खड़ेकरनेलगे उससमयउपहासनेकहा किहे विक्रालिनीमें माया-कर्त्ताकी समाधिपर गयाथा वहांसे मैं एकनया मायाका प्रयोग सीख आयाहूं उससे बारहवर्ष आगेकाहाल विदित होजाता है जो तुम बैठकर आंखेंबंद करलो और तीनबार यहमन्त्र पढ़ो कि मायाकर्त्रेनमः तो तुमकोभी वह प्रयोग बतला दूं यह सुनकर विक्रालिनी अपने ऊपर महाराज की बड़ी कृपा जानकर बहुत प्रसन्नहुई और ध्यान लगाकर बैठगई और जैसेही उसके मुख से पहिलीबार यह निकला कि माया कर्त्रे नमः तैसेही उपहासने भुजाली मारकर उसका सिर काटडाला और गर्जना करके वहां से भागा और वह दुर्भगा विक्राल रूपा हाथपैरों को पटकतीहुई नरकगामी हुई उसके मरने से महाघोर अंधकार छागया और प्रचण्ड वायु चलनेलगी और प्रलयकाल कासा कोलाहलहुआ उसको सुनकर उसके सेवक दौड़े परंतु उसके मरने से वह अग्निभी शांतहोगई थी जिससे रानीनिशाकरी और आनन्दा आदि घिरीहुईथीं और उनको यह शब्द सुनाईदिया में मारीगई नाममेरा विक्रालरूपाथा उ-सशब्दको सुनकर प्रहासबोला कि हे रानी वह दुर्भगा मारी गई अब उसकी सेना बचकर न जानेपावे यह सुनकर रानी निशाकरी और सब मान्य सेनापति मायाबल से आकाशमार्ग से विक्रालिनीकी सेनापर जापड़े वह सबतो अपनी रानीके

मारेजानेसे बड़े शोकमेंथे कुछ व्यवसाय न करसके और पहि-लीहीवारमें सहस्रों मारेगये और रानी रक्तकेशी ने अपने के-शोंको झड़ादिया उनसे सहस्रों दीप्तकरण निकले और उन्होंने बाणरूपहोकर शत्रुसेनाकावधकिया उधर आनन्दामायाने माया करके फूलोंकाहार फेंकदिया उससे तत्काल बसंतऋतु उत्पन्न होगई वायु शीतल मन्द सुगन्ध चलने लगी प्रकार प्रकारके फूल खिलगये वृक्ष भांति भांतिके फलोंसे लदगये उससे सब शत्रु म्लेच्छ मदोन्मत्तहोगये और मायाकृत असिचलनेलगी–

चौ०। नानातरुफल वेलिसुहाई। बहुप्रकार कुसुमनसों छाई॥
मारुत गंध भरो सुखदाई। लागत जेहि प्रमोदअधिकाई॥
मधुरमधुरध्वनिसोंखगगावें। ठौरठौर मृग वृन्द सुहावें॥
नन्दनवनसमसो वनसोहै। कोअस जासु न लखिमनमोहै॥
सकलम्लेच्छगनकेमनछोभा। भयोदेखि तावनकी शोभा॥
होइप्रमत्ततहँ विचरनलागे। मायावशहोय अतिअनुरागे॥
वज्रबानसम शोभा वनकी। हरतआयु म्लेच्छनकेतनकी॥

विकालिनीकी सेनाके जो म्लेच्छ मारेजानेसे बचे वेरोतेपीट-ते हुए महेन्द्रकेपासचलेगये और निशाकरी और प्रहासआदि के पकड़ेजानेका संदेशा सुनकर विचित्रमायाभी आतीथी परंतु मार्गमें उससे उसकी मंत्रिनि ने मिलकर कहा कि मैंने सुनाहै कि विकालिनी मारीगई और रानीनिशाकरी विजय करतीहुई चली आतीहै यह सुनकर विचित्रमाया लौटकर अपनी सेनामें चलीआई औरउसओर रानीनिशाकरीभीसबकाविध्वंसनकरके अपनी पलायमान सेनाको एकत्रकरनेलगी उस समय वे सेना जन जो पर्वतपर बैठेहुए परमेश्वरसे प्रार्थना कररहेथे विजयके समाचार पाकर चलेआये और जयदुंदुभी वजनेलगी और उस स्थानपर एकदिन वासकरके सेनाको नयेसिरेसे व्यूहित किया और दूसरेदिन सेनानिर्याण वाद्य वजवाकर वहांसे पयानाकिया

और कुछकाल में अपने प्राचीनस्थानपर पहुंचकर डेरे और तंबूखड़े कराये और सिविर रचना करवाकर उनमें सबसेनाके लोग यथायोग्य स्थानोंमें ठहरे और आनन्दमंगल करनेलगे उससमय रानी निशाकरी सभामें सिंहासनपर विराजमान हुई और रानी आनन्दामायासेबोली कितुम्हारी दासी राजकुंवरि सुंदरीको युद्धभूमिसे पर्वतीदेशमें लेगईथी अब उसको बुलालो क्योंकि यहां हमारे सौमित्र और सौशत्रुहैं ऐसा नहो किकोई उपाधि लगजाय यहसुनकर आनन्दामाया उसकार्यको अपनी रानीकाकार्य जानकर आपही उसके ढूंढ़नेकोचलदी परंतु अब वहांका वृत्तांत सुनिये किउदासी सुंदरीको लेकर पर्वती देशमें पहुंचीथी और वहां उसकेसाथ वनविहार कररहीथी किइतने में उनकेपास एकम्लेच्छ आया जिसकानाम नागीथा और जो और प्रजाओंकीभांति वहांरहताथा उसने राजकुंवरिसुंदरी को पहिचाना औरसमीपआकरबोला किअरीउदासी तूतोआनन्दा की एक दासीहै तुझे मैं क्यामारूं और तेरी सामर्थ्य क्याहै जो मुझसेतू बोलसके परंतु मैं राजकुंवरिसुंदरीको अवश्यलेजाऊं-गा यह कहकर उस म्लेच्छने कुछ मायाकी कि उससे एकबड़ा विषधरसर्प प्रकटहुआ और उदासीके शरीरसे लिपटगया वह उसके लिपटतेही मूर्च्छितहोगई तबनागीने सुंदरीको उठालिया और उसेलेकर चलदिया दैवयोगसे उधरसे समीररूपा आ-तीथी उसने विचित्रमायाकी पुत्रीको पकड़ा देखकर अनुमान कियाकि यह नागी इसको लियेजाताहै न जाने क्याकरे कहीं ऐसानहो कि कामासक्तहोकर उसका अपमानकरे इससेलाओ इसेछीनलूं यहविचारकरके वहनागीकेसमीपआई और उसकी नाकमें एकमूठडमारा किवह मूर्छितहोकर गिरा उससमय स-मीररूपाने उसका शिर काटडाला और उसकेमरनेसे यहशब्द हुआ किमैं मारागया मेरा नाम नागीम्लेच्छथा उसके मरनेसे

उदासीको चेतहोगया और वह सुंदरीको ढूंढ़तीहुई चली परंतु समीररूपा राजपुत्रीको मूर्च्छितकरके और उसको वस्त्रमें बांध कर और पीठपर लादकर अपनेडेरेपर लेआई और वहां उस गठरीको उतारकर प्राता और बेधनीसे बोली कि तुम इसगठरी की रक्षाकरो देखो कोई उठा न लेजावे और आप विचित्रमाया की सभामें जाकर विचित्रमायासेबोली कि मैं राजपुत्री सुंदरीको पकड़करलेआऊं जोआप उसकेप्राण छोड़दें विचित्रमाया बो- ली किजा तू उसको शीघ्रले आ वह मेरी बेटीहै मैं उससे कुछ न कहूंगी यह वचनलेकर समीररूपा अपने डेरे में आई और गठरी को उठाकर ले चली कि उससमय उपहास भेष बदले हुये विचित्रमाया की सेनामें फिररहाथा उसने समीररूपा को गठरी लेजातेहुये देखकर अनुमान किया कियह हमारीसेनाके किसी सेनापतिको पकड़कर लाईहै और यह अनुमान करके उसने पुकारकरकहा कि सुना गुरानीजी जो आगे तुमने पैरधरा तो मारही डालूंगा यहसुनकर समीररूपा खड्गनिकालकर उसके सन्मुख आई और सेनामें कोलाहल सा मचगया दैवयोगसे रानी आनन्दा जो सुंदरीको ढूंढ़ने निकलीथी पहिले पर्वतीदेश की ओर गई परंतु वहां नागीकी लोथ पड़ीहुई देखकर समझी कि कुछ उपद्रव अवश्य हुआ है और वहां से उसे ढूंढ़ती हुई विचित्रमायाकी सेना में आपहुंची और समीररूपाको गठरी सहित उपहाससे लड़ती हुई देखकर उसने कुछ मायाकी कि समीररूपा स्तंभित होगई और आप उसकी गठरीको पीठ से लेकर आकाशमार्गी हुई और एक मायाकृत हस्तको भेजा कि वह समीररूपाकोभी उठाकर लेचला और उपहास उस सेना से भागकर चलदिया कि परस्थानपर ठहरना कल्याणकारी नहीं है और रानी आनन्दा जब उस गठरीको लिये हुए बनमें आई तब उसको एक महेन्द्रके सभासदने देखा जोकुछ समाचार ले

कर विचित्रमायाके पास जाताथा देखतेही उसने आनन्दा को ललकारा आनन्दा उसके सन्मुखगई परंतु जब उसने देखा कि मैं आनन्दासे युद्ध करनेकी सामर्थ्य नहीं रखताहूं तब उसने थोड़ीसी मायाकर्ताकी समाधिकी रज आनन्दाके ऊपर डालदी कि उसके प्रभावसे आनन्दा मूर्च्छित होगई और वह उनसब को उठाकर लेचला इस वृत्तांतको दूरसे चपलाने देखा क्योंकि सब बहुरूपियेतो दिन रात्रि फिराही करतेथे निदान देखतेही वह भागा और निशाकरी की सेना में आकर उसने मारीच से सब वृत्तांत कहा उसको सुनतेही उसका धीर्य जातारहा और विक्षिप्तसा होकर वहांसे चलदिया और उसको जातेहुए देख कर स्नेहसे निशाकरीभी अपने पुत्रके साथ होली और थोड़ी ही दूर गईथी कि उनको प्राता बहुरूपिणीने देखा जोसमीररूपा को ढूंढ़ने जातीथी और वहतुरंत अपनास्वरूप उपदेशी बहुरू-पियेकासा बनाकर निशाकरीके पासआई और मूर्च्छाएडमारकर उसे मूर्च्छित कर दिया और वस्त्रमेंबांधकर गठरी पीठपर लाद ली और वहांसे चलदी थोड़ीही दूरगईथी कि उसको उपहास विचित्रमायाकी सेनासे लौटताहुआ मिला उसने जो प्राताको देखा कि गठरीलिये जारहीहै तुरंत भुजाली निकालकर उसकी ओर दौड़ा और वह गठरी फेंककर भागी तब उपहासने जा-कर गठरीको खोलकर निशाकरीको निकाला और चैतन्यकिया और दोनों आगे बढ़े परंतु मारीचने दौड़कर उस महेन्द्रके सभासदको घेर लिया और दोनों माया कर करके युद्ध करने लगे कभी यह पृथ्वीमें प्रवेश होजाता कभी वह आकाशको उड़जाता कभी अग्निकी वर्षा होतीथी और कभी मायाकृत नदी प्रकट कर करके दोनों युद्ध करतेथे उस समय समीररूपाने जो वहांस्थितथी एक मूर्च्छांड मारकर मारीचको मूर्च्छितकरदिया और वह सभासद उसकोभी मायासे स्तंभित करके लेचला

समीररूपा आगेबढ़गई और सभा में आकर विचित्रमाया से बोली कि महाराजका एकसभासद् आपकेपास आताथा उसने सुंदरी और मारीच और आनन्दाकोपकड़ाहै और सबकोलिये हुये आताहै यहसुनकर विचित्रमाया बहुतप्रसन्नहुई और वहां से चली परंतु उस सभासद ने विचारा कि इन अपराधियों के शिर काटकर लेचलूं तो अच्छाहै कहीं ऐसा न हो कि कोई उपाधि आजाय और ये छुटजायँ यह विचार करके वह एक पर्वत पर ठहर गया दैवयोगसे प्रहास अपनी सेनासे मारीच को जातेहुए देखकर चला था वह भी उसी पर्वत पर आ निकला और अपना स्वरूप एक म्लेच्छकासा बनाकर उस सभासद् के सन्मुख आया और उसे डाटकरकहा कि अरेदुष्ट तू कौनहै जो पराई बहू बेटी को पकड़लायाहै तू मुझको कोई बड़ा छलिया जानपड़ताहै यह सुनकर उस सभासदने पूछा कि आप कौनहैं प्रहास बोला कि महाराजकी ओरसे मैं यहां नियत हूं और इस पृथ्वी का स्वामी हूं तब वह बोला कि भाई क्रोध न करो मैं मारीच और सुंदरी और आनन्दाको पकड़कर लायाहूं जो महाराजके शत्रुहैं यह सुनकर प्रहास बोला कि भाई अब मैंने तुमको पहिचाला तुम्हारी स्त्री तो मेरी भावज लगतीहै आओ मेरेघर चलो भोजन करके चलेआना यह सुनकर वह बोला कि भाई इन अपराधियोंको पहिले मारलें तब चलेंगे तब प्रहास बोला कि मैं मारीचको देखना चाहताहूं कि कैसा सुंदर है जो विचित्रमायाकी पुत्री उसके साथ खराबहै उस सभासद् ने माया करके इन सबको अदृष्टि करदियाथा जिससे कोई देख न सकै जब उसने प्रहासकी बात सुनी तब अपनी मायाको दूर करके मारीचको चैतन्य करके प्रकट किया उसको देखतेही प्रहासबोला भाई लाओ मैं इसका शिर काटलाऊं और यह कह कर मारीचका हाथ पकड़कर अलगलेगया और बोला कि हम

चारके पिताहैं और पंचादश माताओंके पेटसे उत्पन्न हुएहैं हमें कुछ दो तो तुम्हें छोड़दें यह सुनकर मारीच चकित हुआ कि सब कोई तो एक मातासे उत्पन्न होताहै यह कौनहै जो कहता है कि मैं पंद्रह माताओं के पेटसे उत्पन्नहूं कदाचित् यह प्रहास हो यह अनुमान करके वह बहुत प्रसन्न हुआ और बोला कि मैं आपको पांचसहस्र मुद्रा दूंगा मुझे छोड़दीजिये यह वचन लेकर प्रहास फिर उस सभासद्के पास आया और बोला कि भाई वह तो आप मररहाहै मुझे तो दया आतीहै तुम कैसे उस को मारोगे वह बोला कि भाई फिर क्या कियाजाय वह महाराज की आज्ञामें रहना भी तो नहीं स्वीकार करताहै यह सुनकर प्रहास बोला कि अच्छा मैं उसको समझाताहूं यह कहकर फिर मारीचके पास आया और बोला कि सुनो जो छुटनेपर तुमने मुझे धन न दिया तो मैं तुम्हारा क्या करूंगा इससे राजपुत्री सुन्दरीके आभूषण मुझको देदो यहसुनकर मारीचको पूर्णविश्वास होगया कि यह मनुष्य अवश्य प्रहासहीहै और अब हम बंधनसे छुटजायँगे यह अनुमान करके उसने कहा कि आप पूछते क्याहैं मैं आपका दासहूं और मेरी स्त्री आपकी दासीहै जाइये सब गहना उतार लीजिये यह सुनकर प्रहास जानगया कि मारीचने मुझे पहिंचानलिया और वहांसे फिर उस सभासद्के पास आकर कहाकि भाई तुम सत्य कहतेथे ये सबबड़े दुष्टहैं आधीनताई स्वीकार नहीं करतेहैं इससे अब इनको इस प्रकारसे मारना उचितहै कि पर्वतके नीचेसे पाषाण उठालाओ और इन सबको बैठाकर पत्थर खींच खींचकर मारो जिससे इनके शिर फटजायँ और कुदशासे प्राण निकलें यह सुनकर वह बोला कि अच्छा आप इनको देखिये मैं नीचेसे पत्थर लाताहूं यहकहकर वह नीचे उतरगया और पत्थर लेकर ऊपरको आता था कि इतनेमें प्रहासने अपनी थैलीमेंसे एक बड़ा भारी पा-

षाण निकालकर ऊपरसेऐसामाराकि उसम्लेच्छका शिरभुट्टासा टूटकर जापड़ा और उसके मरनेसे कोलाहलप्रारंभहुआ और अग्नि और पत्थरोंकी वर्षाहोनेलगी और सबकैदी बंधनसे मुक्त होगये और मारीच अपनीप्रियाको लेकर चला परंतु उसपर्वत पर एक म्लेच्छ दुष्टात्मानामी रहताथा वह कोलाहल सुनकर वहां आया और उसने प्रहासको मायाबलसे स्तंभितकरके बांधलिया उस समय आनन्दा मायाने अग्नि गोलक मायासे वेष्टितकरके दुष्टात्माके मारा कि वह उसके हृदयको फोड़कर पार निकलगया और उसके मरनेसे भी बड़ा भयंकर शब्द प्रकट हुआ और उनदोनों मृत्यकोंकी लोथोंको वायु भ्रमातीहुई आकाश मार्गसे महेन्द्रके पास लेचली और आनन्दा सबको लिये हुए वहांसेचलीथी कि इतनेमें विचित्रमाया कुछ मायावीम्लेच्छों कोलियेहुए वहां आपहुँची आनन्दासे और उससे देखा दाखी हुई और माया युद्ध प्रारंभही हुआ था कि रानीनिशाकरी भी वहां आन पहुंची और फिर मायाकृत युद्ध होनेलगा उस समयआनन्दा ने अपने गले से फूलों का हार उतारकर फेंकदिया उससे तुरंत एक उत्तम बाटिका प्रकट होगई और उसमें बसंत ऋतुने आकर बासकिया नाना प्रकारके सुगंधित फूलखिलगये भौंरें उनपर गुंजार करने लगे और वायु शीतल मंद सुगंध चलने लगी उस सौरंभित बायुके स्पर्शसे विचित्रमायाके सब साथी म्लेच्छकामासक्तहोगये और उसबागमेंभ्रमणकरनेलगे॥

चौ०। हृदमुदकारक बाग सुहायो। मायासे अतिरुचिर बनायो॥
भांतिभांतिके कुसुम अनूपा। फूलिरहे चहुंदिशि सुखरूपा॥
भ्रमर प्रसून लोभसों राते। गुंजतभौंरत मधुरसमाते॥
नानातरु अरु वेलि सुहाईं। फूली फली लगी तेहिठाईं॥

उस समय विचित्रमायाभी कामासक्त होकर झूमने लगी और फूलोंकी प्रशंसा करतीहुई उस बाटिकाके भीतर चलीगई

और एकगुलाबके फूलकोतोड़कर जैसेहीचाहा कि सूंघे वैसेही एक पक्षी उड़ता हुआ आया और उसने उस फूलको अपनी चोंचमें लेकर कहा कि हे महारानी आप मायाकृत देशके स्वामीकी रानी होकर आनन्दाकी मायामें मोहित होतीहो देखना इस वाटिकाके एक एक फूलको कण्टक जानना नहींतो इस फुलवाड़ीकी एक एक बेल धनुषरूप होकर बाणरूपी फूलों से वह आपत्ति प्रतिपाद करेंगी कि फिर इस संसार में रहना दुर्लभ होजायगा उस पक्षी की उक्त शिक्षाको सुनकर विचित्रमाया तुरंत चैतन्य होगई और विचारनेलगी कि जो मैं फूल सूंघलेती तो प्रलयही होजाती निदान वह मायाबल से उस वाटिकाके बाहरनिकलकर फिर आनन्दाके सन्मुख आई और दो एक मायाकृत प्रहार होनेपायेथे कि महेन्द्रको विचित्रमाया से कुछ मंत्रकरनेकी आवश्यकता हुई और उसने एकमायाकृत हस्तभेजा कि विचित्रमायाको उठालावै निदान वह हस्तआया और उस युद्ध करतीहुई विचित्रमायाको उठाकर महेन्द्रके सन्मुख लेगया तब विचित्रमायाने महेन्द्रकोदंडवत्की और सब वृत्तांत कह सुनाया और उधर निशाकरी आदि ने मायाकृत अस्त्रोंके प्रहारसे विचित्रमायाके सब साथियों को मारकर यमलोकमें पहुंचाया और जब कोई रोकनेवाला न रहा तब मारीच और सुंदरी आदिको लेकर सब बहुरूपियों सहित अपनीसेना में आई और सभामें आनन्द पूर्वक विराजमान होकर आनन्द करनेलगी नाच और मधुपान होनेलगा और सब उत्सव मनानेलगे और यहां महेन्द्रने विचित्रमायासे कहा कि मैंने तुम को इस मंत्रके करनेको बुलाया है कि मेरा यह विचारहै कि मैं श्री मायाकर्ता परमेश्वर के पौत्रके पास जाऊं और उनको इस उपद्रव का हाल सुनाऊं क्योंकि जो कोई बात अधिक बढ़गई तो परमेश्वरके पौत्र कहेंगे कि हमारे पास समाचार क्यों नहीं

भेजे इससे अब समाचार उनके पास भेजना अवश्य है और मुझको यह भी विश्वासहै कि वे वहींसे बैठे२ इन सब शत्रुओं का नाश करदेंगे यह सुनकर विचित्रमाया बोली कि महाराज मायाकर्ताके पौत्र श्रीप्रभासजी ऐसेनहीं हैं जो आप उनसे योंहीं कोई बात कहलाभेजिये आपको उचितहै कि उनकी भेटके लिये बहुतसे रत्न और धनलेकर आपही जाइये और वहां कईदिन रहकर उनकी उपासना कीजिये उससमय आपको अपना वृत्तांत निवेदन करनेका समय मिलेगा और जो आप किसी को भेजियेगा तो उसको उनके दर्शन भी मिलने दुर्लभहोंगे इससे श्रेष्ठ यह है कि उनके भाई दासीपुत्र श्रीसैन्धजी को पत्र भेज कर बुलालीजिये उनकी भी मृत्यु किसी के हाथसे नहीं है वह आकर सब बहुरूपियों को पकड़लेंगे वह भी तो मायाकर्ता के पौत्रहैं हां इतना अंतरहै सैन्धजी दासीपुत्र हैं और प्रभास जी मायाकर्ता के पुत्रकी स्त्री से उत्पन्न हैं यह सुनकर महेन्द्रने सैन्ध जी को एक पत्र लिखा और उसमें रानी निशाकरी के विमुख होने और बहुरूपियों के उपद्रव मचानेका सब वृत्तांत निवेदन करके सहायतामांगी और उसपत्रको बहुतकुछ भेटकेसाथ सैन्ध के पास भेजा जब वह पत्र सैन्धने पढ़ा तब महेन्द्रकी दशा पर बहुतसा शोककिया और अपनी सेनाको आज्ञादी कि सब सन्नद्ध होजायँ मैं महेन्द्रकी सहायताको जाऊंगा यह सुनकर उस के पुत्र चित्रकारी ने कहा कि इस युद्ध के लिये मुझे जाने की आज्ञादीजिये किमैं जाकर अपने अभ्यासित मायाके प्रयोगोंकी परीक्षा करूं और शत्रुओंको विजय करूं आपका जाना ऐसी लड़ाई में उचित नहींहै जहां ऐसे क्षुद्र योद्धा थोड़ेसे होवें यह सुनकर सैन्धने उसे निषेध किया परंतु जब वह न माना तब उसे आज्ञादी और उसके साथ मायावी म्लेच्छोंकी असंख्य सेना करदी और महेन्द्रको उत्तर लिखा कि मैंने तुम्हारी सहायताके

लिये अपने पुत्रको भेजदियाहै वह प्रथमतौ जाकर शत्रुओंका नाश करैगा और फिर आपके पास पहुंचैगा निदान उसने वह पत्रतौ महेन्द्र के पास भेजदिया और अपने पुत्र चित्रकारी से कहा कि तू विचित्रमायाकी सेनाके निकट जाकर निशाकरी से युद्ध करियो और जब सबको पकड़ले तब जाकर महाराज से मिलियो और फिर युद्धके ऊंच नीचकी शिक्षा और माया करनेकी सामग्रीके रखनेकी चैतन्यताका उपदेश करके उसको विदा किया ॥

जयकरी छंद ।

महा भयानक सेन अपार । चली लिये अस्त्रनकेभार ॥
रण उत्सुक योधा वर वीर । एक एक सन भाषत धीर ॥
गहि निशाकरी कोहौं लाय । देहौं यमके लोक पठाय ॥
कहत दूसरो हौंरण पाय । करिहौं अतिअद्भुत व्यवसाय ॥
जीवतगहि प्रहासकोलाय । निजविक्रमको देहुं दिखाय ॥
भाषत इमिते बैनसगर्व । गर्जत चले जात तहँ सर्व ॥
मायावी अति प्रबल महान । रण कर्कश अधर्ष बलवान ॥

निदान वह सेनातौ इस ओरसेचली और वह पत्रका उत्तर प्रथमही महेन्द्रके पास पहुंचगया उसे देखकर महेन्द्रने विचित्रमायाको सेनाकी ओरभेजा और कहा कि चित्रकारीकी प्रतिष्ठा बहुत करना और शत्रुसे युद्ध करनेके समय सहायताभी करना यह आज्ञा पाकर विचित्रमाया अपनी सेनामें चलीआई और चित्रकारीके आनेकी बाट देखनेलगी कि इतनेमें सैन्धका पुत्र अपनी सेना सहित बड़े मार्गको उत्तीर्ण करके विचित्रमायाकी सेनाके निकट जापहुंचा उस समय विचित्रमाया उसको बड़े आदरसे अपनी सभामें लिवालाई और उसकी सेनाको टिका कर उसका सब प्रकारका सत्कार किया उसके आने के समाचार मायाकृत पक्षियोंने रानी निशाकरीको पहुंचाये उसको

सुनकर वह बोली कि जो सैन्ध आप आतातौ निस्संदेह भयकी बातथी परंतु इस छोकरेसे क्या डरनाहै परमेश्वर हम सब का रक्षक और शरणहै और फिर युद्धका सरंजाम ठीक करनेलगी और उधर विचित्रमायाकी सभामें दिनभर तो आनन्द और उत्सव होतारहा परंतु जब वह दिवस व्यतीत हुआ और दिनमणिने पश्चिम दिशामें पहुंचकर आकाश मंडलसे अपनी प्रभा युक्त रश्मियोंको खींचकर अंधकार प्रकट किया ॥

चौ०। भई निशातव अतिअँधियारी। महाभयंकर कारी कारी॥
विनसयंकपतिकीउजियारी। श्यामवरणधरिभईदुखारी॥

उससमय दोनों सेनाओंमें युद्धके वाद्यबजनेलगे और सब योद्धा युद्धकासरंजाम ठीककरनेलगे और रानीनिशाकरी और आनन्दाने मायाकृत लेखनीसे अपनी और सबसेना के सेनापति और योद्धोंके चित्रखींचे और अपनीआसुरीमायाके अधिष्ठाता असुरोंको पूजनकरके वे चित्रदेदिये और उनसे विनयकी कि प्रातःकाल चित्रकारी हम सबके चित्र खींचकर मायाकृत कैंचीसे उन चित्रोंको काटेगा उन चित्रोंका जो जो अंग कटेगा वही वहीअंग जिसका चित्रहोगा उसकाभी कटताजायगा सो आप समीप रहकर हम सबकीरक्षाकरें हमारा कोईअङ्गभङ्ग न होनेपावे और न हमपर चित्रकारीकी माया चलनेपावै निदान येतो इस कार्यमेंरहीं औरसेनाके और २ मायावीयोद्धा अपने२ तंत्र सिद्धकरनेलगे और शूरवीर शस्त्रोंको तीव्रकरनेमेंलगे और उधर चित्रकारीने मायाकृत कैंची बनाई और शत्रुसेना के मनुष्योंके चित्र खींचे और हवन करके अपनेतंत्रों को सिद्धकिया और उसकी सेनाके मनुष्योंकी भी यहीदशा रही अंत में वह रात्रि व्यतीतहुई और वह समयआया कि अहर्निशि के चक्र रूपी कैंचीने अंधकाररूपी वस्त्रको विदीर्णकिया और प्रातरूपी कण्ठ काटकर प्रभारूपीवस्त्र सूर्यको पहिराये॥

चौ०। भयो प्रात जब निशानशानी। उदये भानु तेजकर खानी॥
शीतबुन्द कुसुमन पर सोहैं। रश्मि ओपलहि मुक्तावोहैं॥
फूले पंकज विमल तड़ागा। लागे अलिमर्दन सुपरागा॥
तेहिअवसरकरिलोहितईक्षण।चित्रकारिभरिरणरिसितीक्षण॥
कियो स्वम्लेच्छ शैननिर्यानू। बहुभुकआवतमनहुँ कृशानू॥
तब निशाकरी लोहित अङ्गी। आई साजि सैन चतुरङ्गी॥
धीरवीर योधा युत सोहै। प्रलयरूप शत्रुन मन छोहै॥

उससमय शूरवीरोंकी गर्जना और मायावीम्लेच्छोंके माया कृत चमत्कारोंकी सूचनासे ऐसा भयंकरशब्द पृथ्वीसे आकाश पर्यंत छागया कि प्रलयकासा काल मालूम होनेलगा निदान जब युद्धभूमि निष्कंटक होगई और सेना दोनोंओर व्यूहित कीगई तब वंदीजन निकलकर वीररससुनानेलगे और पिछले शूरवीर और योद्धाओंके शूरता और रणकेकर्मोंको सुनाकर सब के हृदयको ऐसा वीररससे भरदिया कि जो कायरथे वे भी रण का उत्साह करनेलगे उससमय चित्रकारी अपने सहोगंको युद्ध भूमिमें बढ़ाकरलाया और मायाकृत अनेकचमत्कार दिखाकर ललकारा औरबोला कि अरेअधर्मियो देखो तो मैंतुम्हारीक्या गतिकरताहूं और किसप्रकारसे तुमसबको मारताहूं यह सुन-कर रानी निशाकरी अपने मायाकृत विमानको बढ़ाकर आगे लाई और बोली कि अरेछोकरे तू क्या बकताहै थोड़ीदेरमें तू यमलोकमें बिना संसारका कुछ देखे पहुंचजायगा यह सुनकर चित्रकारी को क्रोधआया और उसने निशाकरीके स्वरूपका एक पुतला मायासे बनाकर छोड़ा और कहा कि जा मायाकर्ता की आज्ञा से निशाकरी को पकड़ला वह पुतला निशाकरी की ओर लपका परन्तु निशाकरी ने तुरन्त कुछ माया करके उस पुतले को हाथ में उठालिया और कहा कि देखो इसपुतले का सब शरीर तो चित्रकारीकासा है परंतु शिरनहींहै वह मैं बना-

कर लगाये देतीहूं यह कहते २ उस पुतले का स्वरूप चित्र-
कारी कासाहोगया और वह चित्रकारी को पकड़ने दौड़ा तब
चित्रकारी ने मायाका संहार करके उसपुतले को अपनी झो-
ली में डाल लिया इस के पीछे रानी निशाकरी माया करती
जातीथी और वह माया को रोकता जाता था और मायाकृत
लेखनी से निशाकरी का चित्र बनाता जाता था निदान इस
का ध्यान तो इधर लगाथा और जानताथा कि जब निशाकरी
को मारलूंगा अथवा पकड़लूंगा तब कोईदूसरा मुझसे युद्धकर
ने आवेगा इस भुलावेमें उसको ध्यान रहित देखकर रंतिकाल
कूदकर पृथ्वी में प्रवेशहोगया और उसकी माता संडीनचपला
अपने पुत्रकी इच्छाकोजानकर मायाबलसे आकाशमें उड़गई
चित्रकारी खड़ाहुआ मायाका प्रयोग और संहारकररहाथा कि
इतनेमें रंतिकाल पृथ्वीको फाड़कर चित्रकारीके समीपनिकला
और ऐसेबलसे चिंघारा कि चित्रकारी मूर्च्छितहोकर महोर्गसे
पृथ्वीपर गिरपड़ा और उसकी सेनाके सेनापति उसे उठानेको
दौड़ेहीथे किसंडीनचपला चमककर आकाशसे उसकेऊपर गि-
री और उसकेदो टूककरती हुई पृथ्वीमें प्रवेशकरगई और चि-
त्रकारी पंचत्वको प्राप्तहुआ उसके मरने से बड़ा भयंकर शब्द
प्रकटहुआ और आकाशवाणी हुई कि मुझको मारडाला मेरा
नामचित्रकारीथा तबतो रानीनिशाकरीकी बनपड़ी तुरंत माया
कृतअस्त्र चलाती हुई आगे बढ़ी और उधरसे चित्रकारी की
सेना अपने स्वामी के बधेजानेसे म्लानचित्त और क्रोधितहो-
करचली और दोनोंओरसे मायाकृत अस्त्र चलनेलगे किसीने
ऐसी मायाकी कि शत्रु रुधिर थूकनेलगा दूसरे ने वहमायाकी
उसके साथकायोद्धा खड़ा२ मरगया किसीने मायासे सर्प प्रकट
किये किसीने मायाकृत मेघों से आकाश को आच्छादित करके
अग्नि और जलकीवर्षाकी निदान उसयुद्धमें शिर मेघकीभांति

बर्षतेथे और धड़ रुधिरकी नदीमें तैरतेफिरतेथे एकमहान् युद्ध था जिधरदेखा तिधर अस्त्रोंकी वर्षाहोतीथी निदान जब माया कृत युद्धसे सबतृप्त होगये तब शस्त्रलेलेकर मानुषी युद्धकरने लगे और खड्ग और गदा और बाणोंकी वृष्टि एक दूसरेपर करने लगे--

भुजङ्गप्रयात ॥

मचोघोर संग्राम ताठौर भारी। घनेवीरयोधा मरे युद्धकारी ॥
घने खड्गमारे घनेवाण डारे। घनेतेगदा आयसी लैप्रहारे ॥
लिये अस्त्रकेते तहां रुण्डडोलें। धरो मारुरे मारुरे मारुबोलें ॥
करीसेन संख्या नजाकीसकारी। भईशोणितोदानदीउग्रभारी ॥

निदान चित्रकारीकी सेना बड़े खोजसे चित्रकारी की लोथ लेकर भागी विचित्रमाया उससमय अपनी सेनालियेहुए युद्ध देखरहीथी उसनेचाहाकि युद्धकरूं परन्तु फिर यहविचारकर कि अब इससमय लड़ाई बिगड़गई वहांसे युद्धनिवृत्तीके बाद्यबज-वाकर लौटगई और इधर रानीनिशाकरी जयदुंदुभी बजवाकर सब सेना सहित लौटी और स्नान और आहारादिक क्रिया करके बड़े आनन्दसे आकर अपनी सभामें सिंहासनपर विरा-जमान हुई और सब सभासद आकर अपने२ योग्य आसनों पर बैठगये और वह शत्रुसेना रोती पीटती हुई महेन्द्र के पास गई और चित्रकारीकी लोथ उसके सन्मुख डालदी यह देखकर महेन्द्र बड़ा म्लानचित्त हुआ और कहनेलगा कि बड़े शोककी बातहै कि सैन्धरजी के एकही पुत्रथा और वह युद्धमें मारागया अब उनसे में बहुत लज्जित हुआ अंतमें उस लोथको तो महे-न्द्रने भस्म करादिया और चित्रकारी के स्वरूपका एक पुतला बनाकर कुछमायाकी जिससे वहपुतला सजीव दीखनेलगा और उसको बचीहुई सेनासहित बड़ी धूम धामसे सैन्धरके पास भेज दिया और एकपत्र लिखा कि हे मायाकर्ताके पौत्र आपका पुत्र

बड़ी वीरता रणमें करके श्रीमायाकर्ताके पास चलागया अर्थात्
मारागया मैंने आपकेपास आपके पुत्रके स्वरूपका पुतला भेजा
है वह चालीस दिनतक सजीवरहेगा आप उसको भली प्रकार
से प्यार करके अपने चित्तको सावधान करलीजिये निदान वह
सेना उक्त पत्र लेकर उस पुतलेके साथ वहांसे चलदी और
उधर महेन्द्रने विचारकिया कि चित्रकारीके बधकर्ताकोभी पकड़
कर सैन्धके पास भेजदूं जिससे वे उसको अपने हाथसे बध कर
के अपने पुत्रका बदला लेलें निदान उसने समीररूपाको बुला
कर आज्ञादी कि रंतिकालको पकड़कर लेआ यह सुनकर वह
बोली कि मैं अभी जाकर लातीहूं और यह कहकर वहांसे चल
दी और अपना स्वरूप बदल कर रानी निशाकरीकी सेना में
आई और अपनी घातमेंलगीहुई खड़ीथी कि इतनेमें एक दासी
कुछ कार्य से बाहर निकली समीररूपा भी उसके साथ होली
और एकस्थानपर एकांतपाकर उसको मूर्च्छाडमारकर मूर्च्छित
करदिया और अपना स्वरूप उस दासीकासा बनाकर सभा में
चली आई और रंतिकालके पीछे खड़ी होकर उसका मोर्छल
करने लगी उस समय प्रहासकी दृष्टि उसपरजापड़ी और वह
देखतेही समीररूपाको पहिंचान गया और अपने स्थानपरसे
इस प्रयोजनसे उठा कि इसको छल करके पकड़लूं परंतु समीर
रूपा भांप गई कि प्रहासने मुझको पहिंचानलियाहै और यह
अनुमान करके वहांसे उछलती कूदतीहुई भागी उस समय
प्रहासने पुकार कर कहा कि ओ दासी कहांभागी जातीहै यह
सुनकर वहबोली कि अरे दास क्या तुझको कुछ कुदशाने घेरा
है तेरेबापकेभी कभी दासीथी तब प्रहास उसकेपीछेदौड़ा परंतु
वह निकल गई तब रानी निशाकरी ने पूछा कि यह प्रहासजी
को दुर्वचन बोलने वाला कौनथा प्रहास बोला कि समीररूपा
रंतिकालको पकड़ने आई है छल करके पकड़ लेजायगी इस

से सबको चैतन्य रहना उचित है यह सुनकर सबने अपना२ प्रबंधकर लिया और रात्रि रक्षकों कोभी चैतन्य रहनेकीआज्ञा देदी निदान जब सभा विसर्जनहुई तब सब सभासद अपने २ डेरों में आये परंतु रानी निशाकरी और आनन्दा बहुरूपिणियों के भय से जागती रहीं कि इतने में समीररूपा संडीन चपलाका रूप धारण कियेहुए सेनामें आई और रंतिकाल के डेरेपरजाकर सब सेवकोंसे कहा कि तुम सब निश्चेतहो मैं आप यहां रहकर अपने पुत्रकी रक्षाकरूंगी यह कहकर वह डेरे के भीतर चलीगई और सोतेहुए रंतिकालको मूर्च्छितकरके चतुरताके कारणसे उसको बांधा नहीं योंहीं कंधेपर लादकरलेचली रक्षकोंने उसे देखकर लीजियो लीजियो का कोलाहल मचाया उसको सुनकर प्रहास उठा और यह अनुमान करके कि समीररूपा वनकी ओर गई होगी उसी ओर को चल दिया जब समीररूपा ने देखा कि सब कोई आगे दौड़े चलेजाते हैं तब आप एक डेरेकी आड़में खड़ी होगई और जब सब आगे निकलगये उसने रंतिकाल को एक वस्त्र में बांधकर पृष्ठभार बनाया और पीठपर लादकर चलदी जब वनके समीप पहुंची तब प्रहास ने उसे रोका जो वनकी ओर से आताथा उसको देखतेही समीररूपाने अपनी तूरबजाई उसको सुनकर प्राता दौड़ी हुई आई परंतु प्रहास ने बड़ी चतुरता से तुरंत उस के मुखपर मूर्च्छांडमारकर उसको मूर्च्छित करदिया उस समय चपला भी वहां आगया परंतु समीररूपा ने चतुरता से उसके मुखपर मूर्च्छांडमारकर उसको मूर्च्छित करदिया और प्रहाससे लड़ने लगी और पीछेको हटते हटते दूर निकल गई और भागी उधरसे कहीं उपहास आताथा उसने जो समीररूपाको देखा तुरंत अपनी भुजाली निकालकर दौड़ा और चाहा कि प्रहारकरूं कि इतने में प्रहासने पुकारकर कहा कि हां हां क्या

करताहै देख यह मेरी प्रिया है क्या तू अपनी गुरानीको भूल-गया यह सुनकर उपहासने अपनाहाथ थामलिया और समी-ररूपा पृष्ठभार को फेंककर भागी कि अब बहुरूपियों ने घेर-लिया है जो रंतिकालको न छोडूंगी तौ पकड़ी जाऊंगी निदान वह तौ भागकर चलीगई और उपहासने रंतिकालको चैतन्य किया और उधर चपला और प्राता भी चैतन्यहुए और अ-पनी अपनी ओर चल दिये और प्रहास और उपहास दोनों रंतिकालको सेनामें लाये और कहा कि अब बहुतचैतन्यरहना निदान सब फिर अपने अपने डेरोंमें जाकर शयनकरने लगे उससमय समीररूपा अपनास्वरूप एक कलवारिनकासा बना-कर फिर आई माथेपर टीकादिये आंखोंमें सुरमा लगाये दांतों में मिस्सीदिये पानकी बीड़ीरचाये नाकमें नथ और पाओंमें अनवट और बिछियां पहिरे लहँगा बड़ा उत्तम धारण किये ओढ़नीकी गाती लगाये हाथ में मद्यके भरेहुए पात्रलिये छल बल करतीहुई सेना में आई॥

दो०। भाल लाल बेंदी छये छुटे बार छवि देत।
गह्यो राहु अतिग्राहकरि मनुशशि सूरसमेत॥

निदान इसप्रकारसे अपना सुंदरस्वरूप बनाकर रंतिकाल के डेरेके समीप पहुंची उसको देखकर सब रक्षकों ने पुकारकर कहा कि अरी कलवारिन थोड़ीसी मद्य हमको भी देतीजा यह सुनकर समीररूपा वहां आई और मद्य के पात्रों को रखकर सबको अपना सुंदरस्वरूप दिखलाया कि देखतेही सब कामा-सक्तहोगये और कहनेलगे कि कलवारिनजी तुम्हीं अपनेहाथसे सबको एक एक मद्यका पान पात्र भरके पिलादो क्या बात है एक तौ मद्यपीने को मिले और फिर पिलानेवाला स्वरूपवान् स्त्रीहो निदान समीररूपाने एक २ पानपात्र सबकोपिलाया प-रंतु वह मद्यमूर्च्छाकर चूर्णयुक्तथी सबपी पीकर मूर्च्छितहोगये

तब समीररूपाने एकओरसेडेरेकोकाटा और मूर्च्छाकर चूर्णको लेकर भीतरप्रज्वलित दीपकोंपरफेंका उसकेजलनेसे जोधूमउठा वह भीतरके सेवकोंके मस्तकमें पहुंचा और वेभी मूर्च्छितहोगये तब समीररूपाने झांककर देखा और जब सबको मूर्च्छितपाया तब आपभीतर चलीगई और रतिकालकी शय्या के निकट जाकर उससोतेहुएकी नाकमें वहमूर्च्छाकर चूर्णनलिकासे फूंकदिया और उसे मूर्च्छितकरके और उसका पृष्ठभार बांधकर लेचली रक्षकर्ता सबमूर्च्छितथे कोईरोकनेवालानरहा और वह उसेलेकर निकलगई और उसेमहेन्द्रके पासलाई उसनेआज्ञादी किइसको ज्योंकात्यों सैन्ध्रजीके पासपहुंचादे यह सुनकर वह वहांसे उस पृष्ठभार को लादकर निवातनगर की ओर चलदी परंतु अब हालवहांका सुनिये किवह चित्रकारीका तादृशी पुतला महेन्द्रके पत्र और उस सेना सहित सैन्ध्रके पास पहुंचा और वह पत्र सैन्ध्रकोदेदिया जब उसके पढ़नेसे उसको विदितहुआ कि मेरा पुत्रमारागया तब वहांएक अपूर्व करुणा विलाप फैलगया और सैन्ध्रके लेखिन्या कर्षक और उल्कामुखी और अलूप आदि सभासदोंने शोकवस्त्र धारण करलिये और चित्रकारीकी माता सुमुखी अपने पुत्रका मरणसुनकर पछाड़खाकर गिरपड़ी और महाकरुणा विलाप करके कहनेलगी कि हायपुत्र तू मेरी दृष्टि के आगेसे कहांचलागया॥

चौ०। लगी करन रोदन महतारी। हाय पुत्र हा पुत्र पुकारी॥
बिलपति चखन बहतिजलधारा। लेतश्वास हियहनिबहुबारा॥
हाय पुत्र कहि कहि रटलावै। कौनेहु विधि नहिं धीरज आवै॥
लखियह सब दासीअरुदासा। रोदनकरत सकल रनिवासा॥

इसप्रकारसे बहुतसा रुदन करके उसने उस पुतलेको अपनी गोदमें बैठाया और बहुतसा दुलारकरके कंठसे लगाया और फिरमहेन्द्रको पत्रलिखा कि हमने इस पुतलेको भलेप्रकारसे

प्यारकरलिया और अपने मृतकपुत्रको देखकर आपनी आंखें ठंढीकरलीं अब हम इसको आपके पास भेजतेहैं इसको आप ही रखिये और हम सेनालेकर शत्रुओंको विध्वंस करनेआतेहैं यह पत्रलिखकर महेन्द्रकेपास भेजदिया और उसीके साथ उस पुतलेको भी लौटादिया उपरांत उसने अपनी दासियोंको मार्ग चलनेका सबसरंजाम ठीककरनेकी आज्ञादी और दोएकदिन पीछे डेरेतंबू लदवाकर प्रलयरूपसेना अपनेसाथलेकर वहांसे विचित्रमायाकी सेनाकीओर चलदी उसकी एक पुत्रीथी नाम उसकाउर्वशीथा जबउसने अपनीमाताके जानेकाहालसुना तब वह उसकेपासआई और बोली कि मैंभीचलूंगी औरअपनेभाई के मारनेवालेका वधकरूंगी यहसुनकर सुमुखीउसकीमाता सम-झानेलगी कि तू अभी लड़किनीहै मायाभी नहींजानतीहै इस से अपने घरपर आनन्दसेरह वहां युद्ध और संग्रामहोंगे वहां तू मतचले परंतु उसने एक न माना और तब उसकी माताने बेबश होकर उसकोभी अपने साथलेलिया और बड़ीधूमधामसे वहांसेचली और उसके चलेजानेकेपीछे सैन्धबनेभी अपनीसेनाको निर्माण किया और वहांसे विचित्रमायाकी सेनाकीओर वह भी चला परंतु उसकीभार्या सुमुखी जो प्रथमचलीथी वह बड़ेमार्ग को उत्तीर्णकरके विचित्रमायाकी सेनाकेनिकट जापहुंची कि वहां से वह एकदिनका मार्ग रहजाताथा वहां उसने डेरे तम्बू खड़े कराये और कहाकि अब यहांसे चलकर विचित्रमायाहीकी सेना में जाकर उतरूंगी निदान सबसेना पर्वत और बनमें उतरी तब मिष्टान्न और पक्वान्न और मांसकेभोजन बनाने और खाने लगे नाचहोनेलगा और सब आनन्द विहारकरनेलगे उसीस-मय समीररूपा रंतिकालको पीठपर लादेहुये उसबनमें पहुंची और महादल सेनाको वहां उतराहुआ और डेरेतंबू खड़े हुये देखकर उसने एकसेनाजनसे पूछा कि इससेनाका कौन स्वामी

है उसने कहा कि यह सेना चित्रकारीकी माता सुमुखीकीहै नि-
शाकरीसे युद्धकरने जातीहै यहसुनकर समीररूपा बहुत प्रसन्न
हुई कि अब मुझको दूर जाना न पड़ा रंतिकालको इसे देकर
यहींसे लौटजाऊंगी यह सोचकर वह सुमुखीकी सभामें जाने
लगी परंतु सेवकों ने उसे रोका और पूछा कि कहां जाओगी
तब वहबोली कि तुम जाकर रानी सुमुखीसे कहदो कि आप
के पास समीररूपा आईहै यह सुनकर वहगये और सुमुखीसे
उसके आनेके समाचार कहे उसने समीररूपाको अपने सन्मु-
ख बुलवाया और समीररूपाने जाकर देखा कि सुमुखी सिंहा-
सनपर विराजमानहै और सहस्रों मायावीम्लेच्छ और म्लेच्छी
उसके ओरपास उत्तमउत्तम आसनोंपर स्थितहैं और नृत्यहो
रहाहै समीररूपा सुमुखीके सन्मुखगई और दंडवत् करके वह
पृष्ठभार उसके सामने रखदिया और कहा कि मैं रंतिकाल आ-
पके अपराधीको पकड़कर लाईहूं वह इसपृष्ठभारमें बंधाहै यह
सुनकर सुमुखीबहुतप्रसन्नहुई और समीररूपाको उत्तमआसन
पर बैठाकर बहुत सा धन पारितोषिक दिया और बड़े सत्कार
से उसे बिदाकिया और आज्ञादी कि उर्वशीको बुलालाओ
कि वह आकर अपने भाईके बधकर्ताका बधकरे क्योंकि वह
केवल इसी प्रयोजनसे आईहै यह सुनकर बहुतसेदास उर्वशी
को बुलानेगये वह सातसौ सहेलियों सहित उस उत्तम बनमें
बनविहार कररहीथी कि इतने में दासोंने जाकरकहा कि आप
को आपकी माता बुलातीहैं वह सुनतेही अपनेको अलंकृतकर
के अपनी माके पासगई मा अपनीबेटीकी सुंदरताको देखकर ब-
हुत प्रसन्नहुई और बड़ेस्नेहसे उसे पास बैठाया और मा-
यासे रंतिकालके सब अंगोंको स्तंभितकरके उसको चैतन्य
किया और अपने सामने बुलाकर उसको दुर्बचन कहनेलगी
परंतु उर्वशीने देखा कि एक युवानअवस्थाका परमसुंदर शोभा-

यमान पुरुष स्तंभित हुआखड़ाहै मुख उसका चन्द्रमाको भी लज्जित कररहाहै भुजदण्ड उसकेवड़े पुष्ट लंबेलंबेहैं और उस के शरीरकी पुष्टता और नेत्रोंकी दृष्टिसे यह जानपड़ता है कि यह वड़ा शूरवीरहै ॥

चौ०। तप्त हेम सम रुचिरशरीरा। हृष्ट पुष्ट जासम नहिं बीरा॥
अंगअदोपसकल शुचिसोहैं। जेहिलखिवरकामिनिमनमोहैं॥
चन्द्रविम्ब सम आननसोहै। भाल विशाल नारि मनकोहै॥
नैनदोऊ मानो अर विन्दू। भृकुटी युगजनुपांति मलिन्दू॥
चंचलचपलतिरीछीताकन।हरिमनतियनस्ववशकरिराखन॥
पलकरत्न सम्पुट समसोहैं। वरुणीकर विलास मन मोहैं॥
अमलमुकुरसमगोलकपोला। लोलुपकरततियनमनलोला॥
श्रवण सीपसमअतिमनभाये। मुख अनुरूप सुरुचिरवनाये॥
कीर नासिका परम सुहाई। तियमन कर्षन अधरललाई॥
अतिद्युतिवंतदंतशुचिराजत। जेहिलखिचपलाकीद्युतिलाजत॥
प्रभाभरी अतिचिबुकललामा। ग्रीवा अद्भुत शोभा धामा॥
पुष्टसचिक्कन भुजा विशाला। वृपभकंध केसरि कटि आला॥
कदली सदृश जंघयुग थूला। पुष्ट मनोहर शोभा कूला॥
कुंजलाल नखशिखलोंशोभा। वरणनकरत कविनमनक्षोभा॥

निदान उसके सुन्दर स्वरूप को देखतेही उर्वशी तन मन धन से मोहित होगई और प्रेमके फंदेमें फँसकर धीर्य उसका जातारहा और वह रतिकाल का मुख ताकने लगी हृदय उस का भर आया चित्त और का और होगया अंतसे रहा न गया और प्रेमकी उमङ्गसे नेत्र डबडबाआये और मुक्ताओंकी सदृश आंसू उसके सुन्दर कपोलों परसे ढलक ढलककर गिरने लगे--

चौ० प्रेम वानसों वेधित ह्वैके। भई अचैन धीरता ग्वै के॥
मननाहिंरह्यो स्ववशमेंताके। अंकुर उपजे व्याकुलताके॥
चितमें वसीसुमूरतिवाकी। मनवच भई सो चेरी वाकी॥
वाढी अंग अनङ्ग उमङ्गा। मारि मारि मनरहै सुअङ्गा॥
रुकैनमननहिं मनैमनाई। जिमिपारदनहिंअग्निथिराई॥

अंतमें उसने अपनेमनमें विचारकिया अरी बौरही तेराध्यान कहांहै कहांतू और कहां यह इससे तेरा संगमहोना असंभवहै इसविचारमें उसका मन भर आया और वह रोनेलगी यह देखकर उसकी मा समझी कि यह अपने भाई के मारनेवाले को देखकर अपनेभाईका स्मरणकरके रोतीहै और यहसमझकर उसने उर्वशीको हृदयसे लगालिया और समझानेलगी कि बेटी तेरा भाई रोनेसे अब नहीं आवैगा तू उसका शोक व्यर्थ करके अपनेको दुःखमें डालतीहै उसकेरोनेसे सबकोई उसकीओर देखनेलगे कोई उसको आश्वासन करनेलगा और कोई उसकी बलैयां लेनेलगा निदान चारोंओरसे कलकल शब्द होनेलगा उस समय रतिकालने जो अपने पकड़ेजानेके शोकमें शिर नीचेको झुकायेहुए खड़ाथा कलकल शब्दको सुनकर सिर ऊपर को जो उठाया तौ उसकी आंखें उस परमसुंदरी उर्वशी के नेत्रोंसे दोचारहुईं और प्रेमका तीर उसके हृदय को बेधकर पारनिकलगया उस समय उसने बड़ी अपूर्व सुन्दरता उसकी देखी कि उसके केशोंकी श्यामता रात्रिके अंधकारकोभी लज्जित करतीथी कपोल उसके अपनी द्युतिके सामने सूर्यकी प्रभाको भी निंदाकरतेथे अधर पतले पतले ऐसे कोमलथे कि छुईमुईके पत्रोंको भी संकोचितकरतेथे और उनकी ललाई के सामने लालभी लजाताथा और अपने भाईके शोकमें जो कृष्णाम्बर धारणकियेथी उनसे ऐसा जानपड़ता था मानों अंधकारके तड़ागमें छुपीहुईहै निदान वहछवि और शोभा और सुकुमारता की रूपथी और संसारमें कोई स्त्री उसके अनुरूप नथी क्या वर्णन उसका कियाजाय–

चौ०। कोमल केश भुजङ्गम कारे। जो लखि नाग जगतके हारे॥
नाग डसेको भिषज उबारें। ये जिहिडसें अवशि तेहि मारें॥
केशन बिचही मांग सम्हारी। जिमिघनमें दामिनि उजियारी॥

द्युति ललाटकर असउजिआरा। जिहिलखिसकुचैशशिअरुतारा॥
रहै न ज्ञान प्रान तेहि केरा। द्युति जोतिहि ललाट की हेरा॥
प्रेम भरे रतनारे नैना। चितवनमें जनु डारत टौना॥
भृकुटी धनुपरूप शुचि सोहै। तासु विलास मुनिनमनमोहै॥
शुक नासिका मनोहर राजै। बदन सजांग महा छवि छाजै॥
अधर अलौकिक अतिरतनारे। बांड़ी रचे अधिक रँग भारे॥
शुचिकपोल कोमल अरुणारे। पुण्डरीक युग दैव सम्हारे॥
तापरतिल जनु भ्रमरलुभाना। बैठि अचल वह तजै न थाना॥
दाड़िम दशन कहूं केहिभांती। रतन लगे जनु पांती पांती॥
सोहतविहसनिइमिकामिनिकी।जिमिघनबिचदमकनिदामिनिकी॥
श्रवनानिसीप कहूं जस लोने। रचे अनूप दीप दुइ कोने॥
कमल नाल युगभुजा सुहाई। उरअति सुभग बरणिनहिंजाई॥
पीनपयो धर कठिन अडोला। कंचनवरण सचिक्कन गोला॥
कदली थंभ सदृश दोउ जंघा। शोभाअति विचित्र सबअंगा॥
कुंजलाल लखिछवि असमाना। रंतिकाल शर विद्धिसमाना॥
तीछन काम बानसों वेध्यो। ठाढ़ो रह्यो चित्र समखेध्यो॥
रति सम मूरतिवर छविताकी। देखनलग्यो सुइकटकताकी॥
कह्योजो होइ मोर प्रारब्धू। होइ मोहिं यह भार्या लब्धू॥
दैव जो देहि मोहिं असवामा। सेवा करौं तासु सब जामा॥

उस समय सुमुखीने रंतिकालको सूलीदिलवाना चाहा परंतु दैवयोगसे उसीसमय एक पत्र सैन्धका भेजाहुआ आया जिस में यह लिखाथा कि हमने सुनाहै कि रंतिकाल पकड़ा गया है जो ऐसा हुआहो तौ उसको यहां बध न करना विचित्रमायाकी सेना समीपहै वहां लेजाना हमभीआते हैं वहां सब शत्रुओंको दिखाकर मारेंगे और जोकोई उसकी सहायता करने आवैगा उसकाभी वध करेंगे इस पत्रको पढ़कर सुमुखीने आज्ञादी कि अभी इसको सूली न दीजाय और अपने एक अनुचर लोहाङ्गीसेकहा कि तू आजके दिन इसको कैदरख यहसुनकर लोहांगी रंतिकालको पर्वतकी एक कंदरामें लेगया और वहां उसको

मायाकृत निगड़ पहिराकर बैठाया और आप वाहिर आकर ऐसी माया की कि उस कंदरा के चारोंओर अग्निका प्राकार खड़ा होगया और धूआं ऐसा वढ़ा कि वह सब स्थान उससे अदृष्टहोगया और फिर लोहाङ्गी उसकेसमीप अपनातंबू खड़ा कराकर उसमें अपने अनुचरों सहित रक्षा के लिये ठहर गया परंतु जब रंतिकालको लोहाङ्गी उर्वशी के सन्मुख से कैदकरके लेगया तब वह उसके विरहमें वहुत व्याकुल हुई और थोड़ी देरमें अपनीमातासे आज्ञामांगी कि अब मैंभी अपनी सभामें जाकर विश्राम करूंगी उसकीमाताने कहा अच्छाजा तब उसने अपनासुखपाल मँगवाया और उसमें बैठकर चलदी और उस के साथकी सहेली और दासियां उसके साथ होलीं और उस को नृत्य सिखानेवाला नंदी नाम नपुंसकभी एक घोड़ेपर चढ़ा हुआ उसके साथ साथ होलिया निदान यहां कीतो यह व्यवस्थाथी परंतु अब प्रहासकी सेनाका वृत्तांत सुनिये कि जब रंतिकाल के अनुचर चैतन्य हुए तब उन्होंने रंतिकालको वहां न पाकर रानी निशाकरी से जाकर विनयकी कि महारानी रात्रि को रंतिकाल को कोई उठा लेगया यह सुनकर रंतिकाल की माता संडीन चपला अपने पुत्रके शोकमें महाकरुणा विलाप करनेलगी तबप्रहासने उसका आश्वासन किया और कहा कि समीररूपा उसको पकड़कर लेजानेके उद्योगमें फिररहीथी वही लेगईहोगी मेंजाकर छुड़ायेलाताहूं तुमशोकमतकरो यहकहकर वहचलदिया मार्गमें उसको चपलामिला उससे भी उसने सब वृत्तांतकहा तबवहभी चल दिया और ढूंढ़ताहुआ सुमुखी की सेनामें पहुंचा और वहांसेनाके म्लेच्छोंका उतराहुआ देखकर उसने अपना भेषबदला और सेनामें आकरचारों ओर फिरने लगा और थोड़ीदेरमें रंतिकालको कैदकरने के लिये लोहाङ्गी कोदेखा उससमय वहकुछ छलसोचनेलगा कि जिससेरंतिकाल

छुटजाय और इसीसोचमें था कि फिर उसने उर्वशीकी सवारी सुखपालमें जातीहुईदेखी चपलाभी उसके साथ होलिया और उसके साथियोंमेंसे एकसेपूछा कि यह किसकीसवारीहै और उस से उसे विदितहुआ कि सैन्धककीपुत्री उर्वशी जातीहै तब चपला यह विचारकरके साथहोलिया कि जो बनजाय तो इसको पकड़लेचलूं निदान इसी विचारमें साथ साथ चलाजाताथा कि उसने देखा कि नंदी नपुंसकका एक दास एक स्थानपर ठहर कर धूम्रपानकरने का यंत्र अर्थात् हुक्का भररहाहै चपला उसके पास आया और बोला कि देखो उधर क्या है यह सुनकर जैसेही उसने मुखमोड़ा तैसेही चपलाने मूर्छाडमारकर उसको मूर्च्छित करदिया और उसकासा स्वरूप बनाकर हुक्काभरकर नंदी नपुंसक के पास आया और उसको हुक्का देकर कहा कि सबको आगे जानेदीजिये और थोड़ीदेर यहां ठहर जाइये मैंने आपके विषयमें एक बुरीबात सुनीहै उसको मैं एकांतमें आप से कहना चाहताहूं यह सुनकर वह ठहरगया और जब सवारी उर्वशीकी कुछदूर निकलगई तब चपलाने मूर्च्छाकर चूर्ण उसके मुखसे मलकर उसे भी मूर्च्छितकरके घोड़ेसे गिरादिया और उसे बहुतसा मूर्च्छाकर चूर्ण सुंघाकर अपनास्वरूप उसकासा बनाया और घोड़ेपर चढ़कर चलदिया इसी अवसरमें उर्वशी अपने डेरोंमें पहुंची जो उसके निवास और विहार के लिये सेनासे पृथक् बनमें खड़ेकिये गये थे और वहां जाकर वह सब सहेली और सखी और दासियोंसे बनकी ओर अलग जाकर एकांतमें बैठगई और अपने प्रीतमका स्मरण करनेलगी कभी रोतीथी कभी दैवको निर्दयी बनातीथी कभी विक्षिप्तों की भांति बकतीथी कभी वायुसे बातकरने लगतीथी और कभी नीचे लिखेहुए पद पढ़ती थी ॥

क०। इननैननिमें वहप्रीतमभूरति देखत आनि अरी सो अरी।

अवतौहै निवाहिवो याकोभलो हरिचन्दजू प्रीतिकरीसोकरी॥
उन खंजनके मदगंजनसों अँखियां ये हमारी लरींसों लरीं।
अव लोग चवावकरें तौ करें हम प्रेमके फंद परीं सो परी॥

क०। जकिजकिजातगात लेखनीलखतनैन थकिथकिजात पेखि पंक-जके पातरी। भरिभरि आवै देह नेहके झकोर जोर करिकरि आवत न क्योंहू मुखवातरी। एरीमेरी वीर पीर विरह विथाकी अंग कैसेहू न काहूसों कछुक कहिजातरी। कीजे कहा राम काम वैरीकी अकसमोहिं झूंठ हूं संयोगको न योग दरसातरी॥

निदान उर्वशी उक्तप्रकारसे अपने प्रीतम के विरह में उसकी याद कररही थी कि चपला वहां पहुंचा और यह देखकर कि उर्वशी म्लानचित्तसे अकेली बैठीहै वह उसके पीछे छुपाहुआ खड़ा होगया और उसके विरहकी व्यथाको सुनने लगा कि उर्वशीने श्वांसभरकर कहा कि अरे रंतिकाल तैंने मुझको अपना स्वरूप दिखाकर मेरे प्राणलिये और मैं तेरे मिलनेकी आशाही में इस संसार से गई यह सुनकर चपला समझगया कि यह रंतिकाल के स्वरूपपर आसक्त है और तुरंत उस के सन्मुख चलागया उसको देखकर उर्वशी चुपहोगई और आंसूपोंछकर अपना मुख रूखासा वनालिया तव चपला ने झुककर उसके कानमें कहा कि मुझको तुम्हारे आसक्त होनेकाहाल मालूमहै मुझ से व्यर्थ तुम छिपातीहो मैंतो तुम्हारे घरका दास हूं जो आज्ञादीजिये तो आकाशसे तारेभी तोड़लाऊं तुमअपना सव हाल मुझसेकहो और मुझसे चाहे शपथलेलो जो किसीसे कहूं मैं यत्नकरके तुम्हारे प्रीतम को तुमसे मिलादूंगा यह सुनकर उर्वशीने अपने आसक्तहोनेकी सवकथा कहसुनाई उसको सुन कर चपला प्रसन्नहुआ और वोला कि हे राजपुत्री जहां रंतिकाल तुम्हारा प्रीतम कैदहै वहांचलो और रक्षकोंसे कहो कि मुझको अपने भाई के मारने वालेसे कुछ पूछनाहै इसवहाने से जव वहां तक पहुंच होजायगी तव मैं छुड़ालूंगा मैं वहुरू-

पियाहूँ रंतिकालको छुटाने के लिये आयाहूं उर्वशी इस प्रिय वाणी को सुनकर फूलकी भांति खिलगई और खिलखिलाकर हँसी और बोली कि ॥

सो० । यदपि प्राणभय होय तदपि अहै करतव्य यह ।
विरह व्यथा सबगोय उभयभांति हुइहोंसुखी ॥

निदान उर्वशी सुखपाल मँगवाकर सवारहुई और वहां से चलदी और चपला क्लीवकासा रूप धारण कियेहुए उसकेसाथ होलिया और वेदोनों लोहाङ्गीके डेरेमेंपहुँचे लोहाङ्गीने उर्वशीका उठकर सत्कारकिया उससमय उर्वशीने वहीबात उससेकही जो चपलाने उसे सिखादीथी तब लोहाङ्गीने वह मायाकृत अग्नि का आकार दूरकरदिया और उर्वशी रंतिकालके पास जाकर अपने प्रीतमको देखकर प्रसन्नहुई परंतु चपला लोहाङ्गीकेपास बैठारहा वह चपलाको उर्वशीका अनुचर जानकर कुछ मद्य और संस्कार कियेहुए मांसखंड देनेलगा चपलाने प्रथम तो निषेध किया परंतु जब उसने बहुत कहा तब उसने मद्यपात्र हाथमें लेलिया और पानपात्रको मद्यसे भरकर और आंख बचाकर उसमें मूर्च्छाकर चूर्णमिलाकरलोहांगी को निवेदन किया और कहा कि प्रथम आप पानकीजिये पीछेसे मैंभी पीऊंगा यह सुनकर लोहांगी तुरंत उस पानपात्रको लेकर मद्यपीगया इसके पीछे चपलाने उसके अनुचरोंकोकिसीको मूर्च्छाकर चूर्ण मिलीहुई मद्य पिलाई और किसीको मूर्च्छाकर फल यह कहकर खिलाये कि ये फल उर्वशीके खानेके हैं निदान वे सब खा पीकर मूर्च्छितहोगये तब चपलाने तुरंत सबके शिर काटडाले उनके मरने से महाअंधकार छागया और बड़ा भयानक शब्द होने लगा और रंतिकाल मायाकृत कैद से मुक्त होगया उससमय उर्वशी उस शब्दको सुनकर यह अनुमान करके भयभीत होगई कि नजाने क्या आपत्ति आती है परंतु रंतिकाल ने

अपने को वन्धनसे मुक्त पाकर उर्वशी से कहा कि हे राज-पुत्री तुमतो मुझको यहां देखतीही रहीं और वहां किसी ने लोहांगी को मारडाला यह सुनकर उर्वशी को आश्चर्य हुआ कि बहुरूपिये ने कितना शीघ्र सबकाम तमाम कर दिया और वह इसी आश्चर्यमें थी कि इतनेमें चपला वहां आया और बोला कि तुम दोनों प्रियाप्रीतम अब यहां से शीघ्रचले चलो ऐसा न हो कि उर्वशीकी माता सुमुखी यहवृत्तांत सुनकर तुमको आपत्ति में डाले क्योंकि वह यहां से केवल एककोस परही टिकी हुईहै यह सुनकर उर्वशी बोली कि हे चपला मेरे डेरे सेनाके समीप और सेनासे पृथक्वनमें खड़ेहैं वहां कोई नहीं आताहै वहां चलकर हम और रंतिकाल क्षणभर बैठें और अपना सरंजाम लेलें तब निशाकरी की सेना की ओर चलें यह सुनकर चपला बोलाकि सरंजाम बहुत होरहैगा यहां पर अब ठहरना उचित नहींहै परंतु उर्वशी ने नमाना तब च-पला बेवश होगयाऔर उर्वशी रंतिकाल को अपने डेरों में लाई और उसको उत्तम पर्यंकपर बैठाया और मद्य और मांस और अनेक प्रकारके भोग और विहारके पदार्थ लाकर सामने रक्खे और दोनों प्रीतिपूर्वक मद्यपानकरनेलगे ॥

चौ० । लहि विश्राम ठाम तेहिकाला । बैठेदोउकरि प्रीति विशाला ॥
विघ्न रहित उत्तम थल पाई । प्रकटयो मदन दोउनउरआई ॥
लागे करन प्रीतिरस बातें । करिकरि काम केलिकी घातें ॥
प्रीतम जन निजकरहि बढ़ावै । प्रिया लाजवश अंग दुरावै ॥
ताको इमि कामातुर देखी । बोली तियहिय हर्ष बिशेखी ॥
यहां न उचित काम संयोगू । चलिनिज सैनकरब सुखभोगू ॥
प्रीतम यहसुनिभयो निरासा । चहयो करनमधुपानसुपासा ॥
यहसुनि सो सुंदरि उठिधाई । वरमधु मद्य पात्र लै आई ॥
तासों भरि भरि पात्र सुहाये । पीवन लगे दोऊ छबिछाये ॥
लहि आवेश दोऊ हरषाई । दयो सकल संकोच विहाई ॥

लगे परस्पर सुखसँग लेटन। भरि भरि अंकलगे दोउ भेटन ॥
मर्दन खंडन चुंबन केला। करत परस्पर लहि रति वेला ॥
निज निज करसोंमधुभरिलेहीं। एकहि एक पिवाय सुददेहीं ॥
मधु अरु मदन रसनि सों भीन्हें। भये मगन अति आनँद लीन्हें ॥
परतेहि आनँद में दुखदाई। परयो विघ्न इक तहवांमाई ॥
मातुउर्वशी सुमुखी नामा। माया सो जान्यो सो वामा ॥
रंतिकालजिमिलुटयो भयानक। रक्षक जिमि वधिगयोअचानक ॥
जो उर्वशी प्रेम अनुरागी। कीन्हों रंतिकाल हित लागी ॥
सोसब जानि क्रोधकरि तीक्षण। भयदकराल लाल करिईक्षण ॥
चली महा रिसभरी उताला। जहँ उर्वशी रही तेहि काला ॥

उससमय उर्वशी की जितनी दासी और दास थे सब भयभीत होकर भागगये और सुमुखी ने जो भीतर जाकर देखा तो उन दोनों प्रिया और प्रीतमको लिपटेहुए पड़े पाया देखतेही क्रोधसे लाल होगई और ऐसी माया की कि जिस स्थानपर वे दोनों परस्पर प्रीतिमान पड़े हुए थे उस स्थान की पृथ्वी उखड़ी और वह भूमि का खण्ड आकाशमार्ग से चला और सुमुखी आपभी मायाबलसे उसके साथ साथ आ-काशमार्गी हुई और चपला जो बाहर खड़ा हुआ था वह यह दशादेखकर रोताहुआ उसपृथ्वीकेखंडके नीचेनीचे चला इतने में रंतिकाल और उर्वशीकी आंखें खुलीं और रंतिकालने चा-हा कि उर्वशीको लेकर उड़जाऊं परंतु माया करनेका प्रयोग विस्मरणहोगया तब वह उर्वशीसेबोला कि मैं जानताहूं कि हम तुम दोनों बन्धनमें आगये यह सुनकर उर्वशी रोनेलगी और दैवको दोषदेकर कहनेलगी कि तुझको हम दोनोंका क्षणमात्र संगभी न रुचा जो तुरंतही यह दशा दिखलाई इस प्रकारसे वह सुलोचना कभी दैवको दोष देतीथी और कभी अपने प्रीत-मके गलेसे लिपट कर रोती थी और अधीर होहोकर सहस्रों प्रकारसे बिलाप करती थी और यह पद पढ़तीथी ॥

दो०। हाय देव कैसी करों कासों करों पुकार।
नाजाने केहि दोषसे बिछुरत मम भरतार॥

वह सुंदरी तो इस प्रकारसे विलापही कररहीथी कि सुमुखी ने फिर कुछ मायाकी और उससे उस पृथ्वीके खंडके दो खंड होगये एकपर रतिकाल रहगया और दूसरेपर उर्वशी बैठीरहि गई और वे दोनोंटुकड़े पृथक् पृथक्होकर एकएकदिशाको और दूसरा दूसरीदिशाको चले तबतो उन दोनोंकी औरही दशा होगई दोनोंके नेत्रोंसे आंसुओंकी धारा चलनेलगी कि जिसके लिखनेसे द्विजिह्वालेखिनी भी विदीर्ण होकर कालेआंसूछोड़ती है चित्त से धीरता जातीरही और विरह जनित अग्नि दोनोंके हृदयको भस्म करनेलगी॥

सो०। दृगटकटकी लगाय दोऊ दोउनकों लखत।
भई ओट जबआय बिछुड़े दोऊ विकलहोइ॥
तब उर्वशी कराहिं दीन दुखी बोली वचन।
हायदेव मोहिंपाहि किमि निर्दयता गहतअस॥
भरिभरि हियमेंदाप विकल होतितजि धीरता।
करतिअनेकविलाप तलफतिविनजलमीनइव॥

निदान वे दोनों तो उक्तप्रकारसे विषाद करते हुए बिछुड़ेऔर चपला जोनीचे नीचे चलाजाताथा वह उन दोनोंको बिछोहा देखकर चिंताकरनेलगा किअबमें किसके साथ जाऊं और किस को अकेला छोडूं परंतु जब कुछ उपाय न सूझा तब अपनीसेना की ओर भागा और आकर संडीन चपलासे सब वृत्तांत कहा वहतो अपने पुत्रके शोकमें मनमलीन बैठीहुई थी यह वृत्तांत सुनतेही मायाबलसे उड़ी और बड़ी शीघ्रतासे उर्वशी के पास पहुँचकर कड़कती हुई गिरी और उर्वशी को हाथ में उठाकर चली यह देखकर सुमुखी तुरंत उसके समीप पहुँची और ऐसी मायाकी कि सहस्रों पुतले प्रकट होकर उड़ते हुए गये और

संडीन चपला से लिपट गये तब संडीन चपला ने अनेक प्रकार की मायाकी परन्तु सब माया व्यर्थ होगई और वह छुट न सकी तब सुमुखी उसको अपने माया बल से कैद करके एक बड़े भयानक बन में लेआई और वहां आकर उस ने कुछ माया करके आकाश की ओर देखा कि तुरन्त वह पृथ्वी का टुकड़ा जिसपर रंतिकाल था उड़ता हुआ वहां आगया सुमुखी ने उसको उतारा और फिर कुछ लिखकर एक पुतले को दिया कि वह अन्तर्द्धान होगया और क्षण भरमें पृथ्वी फटी और उसमें से एक म्लेच्छ निकला और उसने सुमुखी को दण्डवत् की उसे देखकर सुमुखी बोली कि अरे करालदन्त मैंने तुझे इस प्रयोजनसे बुलाया है कि तू इनतीनों को अपने मायाबल से कैदरख सेनामें इनका रखना लज्जा की बातहै क्योंकि यह मेरी बेटीका झगड़ाहै सब किसी को यह बात मालूम होती कि सुमुखीकी बेटी किसी पुरुषपर आसक्त होनेके कारणसे कैदहै और इसके सिवाय भी वहां शत्रु सेनाके बहुरूपिये आकर इनको छुटालेजाते इस कारणसे मैं यहां ले आईहूं और तुझे सौंपेजातीहूं यह कहकर वह करालदंतको उन्हें सौंपकर अपनी सेनाकी ओर चलदी और उस म्लेच्छने मायाकृत एक गुम्मट बनाया और उसमें उन तीनोंको कैद किया इस गुम्मटकी कथा इनतीनोंके बन्धनसे मुक्त होनेके समय वर्णनकी जायगी और सुमुखी अपनी सेनामें पहुंची और आज्ञादी कि चलने की तय्यारी कीजाय आज्ञा देतेही डेरेतंबू सब लदगये और सब सेना सन्नद्ध होकर चलदी और विचित्रमायाकी सेनाके निकट पहुंची और मायाकृत पक्षियोंने विचित्रमायासे जाकर कहा कि सैन्धकी भार्या सुमुखी सेना लेकर आतीहै यह सुनकर विचित्रमाया मान्य म्लेच्छोंको साथ लेकर आगौनीके लिये आगे गई और पांवड़े बिछवाती हुई

बड़े आदरसे सुमुखी को लिवाकर अपनी सभामें आई और सेनाको अपनी सेनाके निकट उतरवाकर सब भक्ष भोज्य पदार्थ उनकेलिये भिजवा दिये तब सब सेनाके म्लेच्छ वहां उतरकर विश्राम करनेलगे और यहांसुमुखीने विचित्रमायासे कहा कि मैं रतिकाल और उर्वशीको कैद करके आईहूं तुम्हारी बेटी सुन्दरी तो निशाकरीके पुत्रपर आसक्तहै और मेरी बेटी रतिकालपर मोहित हुईहै निदान हमारी तुम्हारी यहीमतिहै कि एक तड़ागमें सब नहैं सो हे विचित्रमाया आज सायंकाल को युद्धके वाद्य बजाये जावें कि मैं सब शत्रुओंको मारकर अपने पुत्रका बदलालूं निदान दिनभर तो विचित्रमाया उसके सत्कारमें रही परंतु जब सूर्य अस्त हुआ और सायंकालने रात्रिके अंधकार का आना सूचित किया॥

सो०। होतसूरके अस्त निशि प्रकटी नखतन सहित।
वरियो दिवस प्रशस्त अंधकार छायो जगत॥

उससमय सुमुखी की आज्ञासे युद्धके वाद्य बजनेलगे यह समाचार मायाकृत पक्षियोंने रानी निशाकरी को विनय पूर्वक सुनाया सुनतेही वैष्णवी सेनामें भी मायाकृत तूर बजनेलगी योद्धा लोग अस्त्र शस्त्रोंको कार्यसाधक बनानेलगे और मायाकृत प्रयोगोंको सिद्धकरने लगे प्रकट हो कि इस ग्रंथमें सहस्रों युद्धोंका वर्णन हुआ है उनको पूर्वा पर सहित लिखने से ग्रंथ बहुत बढ़जाता इसकारणसे जो जो मुख्य युद्ध हुए हैं उनका वर्णन तो विस्तार पूर्वक किया गयाहै और जो छोटेमोटे युद्धहैं उनको संक्षेपमात्र वर्णन कियाहै निदान रात्रिभर दोनोंओर युद्धका सरंजाम होतारहा और जब प्रातःकालहुआ और सूर्य ने अपना प्रकाश आकाशमंडलमें किया॥

सो०। लखि रवि तेज अपार तम भाग्यो कादर सदृश।
सहम्योशशिभयधार तिमिजिमिमृगसिंहहिंनिरखि॥

फूले कमल प्रशस्त शुचि तड़ाग सरवरनिमें।
भई कुमुदिनी अस्त क्षीण भये नक्षत्र सब॥

उससमय सुमुखी और विचित्रमाया दोनों बड़ी धूमधाम से अपनी सेनाको लेकर रणभूमिमें आई और एकओर से रानी निशाकरी और आनन्दा आदि भी सब शूरवीरोंको लेकर पहुंचीं उससमय युद्धभूमि निष्कंटक कीगई मायाकृत बादल बरसाकर धूलको शांतकिया बंदीजनोंने वीररस सब शूरवीरों को सुनाया सेना दोनोंओर की व्यूहितहुई उससमय सुमुखी अपने महोर्गको बढ़ाकर रणभूमि में आई और गर्जनेलगी वैष्णवी सेनासे रानी आनन्दा निकलकर उसके सन्मुखगई उसे देखकर सुमुखीने कुछ मायाकी कि उससेपरछांईकी समान सहस्रों चित्र प्रकट होकर आनन्दाके शरीर से जालिपटे तब आनन्दाने अपने गलेका हार उतारकर आकाश की ओर फेंका और मायाकी उससे पृथ्वीसे आकाश पर्य्यंत एक मोतियोंकी माला खड़ीहोगई आनन्दा उस मालापर चढ़गई और ऊपरसे ऐसी मायाकी कि सूर्य्यके तेजकीसमान प्रकाश कूट आकाश से गिरा और उसने उन सब चित्रोंको भस्मकर दिया यह देखकर सुमुखीने एक चित्र बनाकर फेंकदिया वह पृथ्वीपर गिरा और सीधा होकर मुखसे ज्वाला छोड़नेलगा कि उससे वह मोती की माला भस्म होगई और आनन्दा पृथ्वी पर गिरी परंतु माया बलसे फिर सँभलगई और उसने तुरंत अपने शिरके बाल नोचकर फेंके कि वह पाशरूप होकर उस चित्रको बांधकर आनन्दा के सन्मुख लेआये उसने उस चित्रको कैंचीसे काटडाला औरएक फूलोंकागुच्छालेकर सुमुखी परमारा कि उससे सुनहली और रुपहरी फूलोंकी वर्षा होनेलगी और सुमुखी और उसकी सेना मदोन्मत्तहोकर झूमनेलगी और आनन्दा की प्रशंसा करनेलगी उससमय पृथ्वी फटी

और उसमेंसे बहुत सी पुतली प्रकट हुईं और फूल बीनने लगीं और पुकारकर बोलीं कि हे रानी सुमुखी आप सेंधजी की भार्या होकर एक छोकरीकी मायासे मोहित होगईं अब चैतन्य होजाइये यह सुनतेही सुमुखी चौंकसी पड़ी और खड्गलेकर आनन्दाके ऊपर आपड़ी और दोनोंजनी माया-कृत खड्ग युद्ध करनेलगीं उससमय विचित्रमाया ने अपने सेनापतियोंको ललकारा और वह सेनालेकर आगेचले और उधरसे रानी निशाकरी ने अपनी सेनाको बढ़ाया और दोनों सेना मिलगईं और महाभयंकर युद्धहोनेलगा बादलोंकी काली काली घटाउठतीथीं प्रचंड वायुचलती थी अग्नि और पत्थरों की वर्षाहोतीथी और बड़ाभयंकर शब्दहोताथा म्लेच्छ अपने अद्भुत मिथ्या ईश्वर और मायाकृत चमत्कारों को रचनेवाले की जयबोलतेथे और लोथपर लोथ गिरतीथी मायाकृत अस्त्र चलतेथे और महाघोर शब्दहोताथा॥

जयकरीछंद। उभयसेनमें माच्योशोर। धनुटंकार बाद्यधुनिघोर॥
सुभटनिकीगरजनिअतिचण्ड। गजहयहाँसनिमहाउमण्ड॥
मारुमारु मारयोधुनिभूरि। गई सकलदिशिमें तहँपूरि॥
भल्लशक्ति तोमर वरवाण। गदापरश्वधयष्टि कृपाण॥
आयुध भिंदिपालदे आदि। वर्षततहां प्रमादि प्रमादि॥
मच्यो महानघोर संग्राम। कटे असंख्यनभटतेहियाम॥

निदान इसीप्रकार से दिनभर युद्धहुआ और जब सूर्य ने पश्चिम दिशा में जाकर अस्ताचल चूड़ापर वासकिया और आकाशको निशापतिके लिये खाली करदिया और निशापतिने नभमंडल में उदय होकर अपनी कौमुदी रूपआज्ञाको संसार में फैलादिया तबदोनों सेनापृथक् पृथक्होकर अपने २ डेरोंपर फिर गईं और आहारादिक क्रिया करनेलगीं उससमय सुमुखी ने विचित्रमाया से कहा कि मैं आजसबके चित्रबनाती हूं अब

किसीको जीतानछोड़ूंगी क्योंकिआजइसआनन्दाछोकरीनेमुझे रणभूमिमें बहुत लज्जितकिया है विचित्रमाया बोली कि जो उचितजानिये सोकीजिये निदान दोनोंजनी इसप्रकारसे आपस में वार्तालाप कररहीथीं कि इतने में पृथ्वीफटी और उसमें से एकपुतला एकपत्रलियेहुए निकला उसने वहपत्र विचित्रमाया को दिया विचित्रमायाने उसेपढ़ा तो उसमें महेन्द्रने यहलिखाथा कि तुम निष्प्रभभवनमें आओ मुझको तुमसे कुछमंत्रकरनाहै और सुमुखीसे कहदो कि अभीयुद्धनकरें यहपढ़कर विचित्रमायाने उसपुतले से कहा कि जाकर श्रीमहाराजाधिराजसे कहदे कि आपकी आज्ञाके अनुसार जैसा आपनेलिखा है वैसाही कियाजायगा यहकहकर उसने अपना शृंगारकिया और निष्प्रभभवनकी ओरचली परंतु चलतेसमय सुमुखी से बोली कि अभीतुम युद्धमतकरना और समीररूपा से कहा कि तू बहुरूपिनीहै देखऐसानहो कि कोई बहुरूपियाआकर सुमुखीजीकोछल सें लावे और कष्टदे यहसुनकर समीररूपाबोली कि यहांआनेकी किसीकीसामर्थ्यनहींहै निदान विचित्रमाया सबप्रकारका प्रबन्ध करके चलीगई और समीररूपा वहां रक्षाकरनेके निमित्त ठहरी रही परंतु जिससमय दोनोंसेना फिरकर चलीआईथीं उसीसमय वैष्णवीसेनाके बहुरूपियेयह विचारकरके चलचुकेथे कि बनपड़े तो आज सुमुखी को मारडालो और अपना २ भेष बदले हुये विचित्रमायाकी सेनामें आये और प्रहास एकसेवक कासा स्वरूपबनाकर सुमुखीकी सभामें आकर दीपकोंकी जलीहुई बत्तियोंकोकाटता और दीपकोंपर मूर्च्छाकरचूर्ण इसप्रयोजनसे डालताहुआ फिरनेलगा कि उसके धूमसे सब मूर्च्छित होजायँ परंतु समीररूपा उसको पहिंचानगई और सुमुखीके पासजाकर धीरे से बोली कि वहसेवक जो जलीहुई बत्तीकाटता फिरताहै प्रहास है यह सुनकर सुमुखीने ऐसी मायाकी कि उससे दोपुतले प्रकट

होगये और वेप्रहासको पकड़कर उसकेसन्मुखले आये उससमय सुमुखीने उससे पूछा कि तू कौन है प्रहासबोला कि मेरानाम म्लेच्छोंका कालहै वहबोली कि तुझे यहां आतेहुए अपने प्राणोंका कुछ भयनहुआ प्रहासने कहा कि सिवाय परमेश्वरके हमको कोई नहीं मारसकताहै यहसुनकर सुमुखीको क्रोधआया और उसनेचाहा कि प्रहासके शिरकाटनेकीआज्ञादे परंतु समीर-रूपाबोली कि आपमुझे देदीजिये मैं इसको विचित्रमायाके पास लेजाऊं यहसुनकर वह बोली कि अच्छालेजा परंतु प्रहास जिस समय पकड़ागयाथा उसीसमय सबसेनामें यह कोलाहल मच-गयाथा कि प्रहास पकड़ागया निदान यहबात और बहुरूपियोंने भीसुनी जो वहां आयेथे और उनमें से चपलाने तुरंतअपना स्वरूप प्राता बहुरूपिनीकासा बनाया और सुमुखीकी सभाकी ओर चला राह में उसको समीररूपा मिली जो प्रहासकोलिये जातीथी देखतेही चपलाने उसको दंडवत्की और पूछा कि इस बहुरूपियेको आप कहांलेजायँगी वह बोली कि निष्प्रभभवनमें लेजाऊंगी यहसुनकर प्राताबोली कि इसे मुझेदीजिये मैं लेजा-ऊं और आपसेनाकी रक्षाकीजिये समीररूपाने उसको अपनी मंत्रिणि समझकर प्रहासको देदिया और चपला उसको लेकर चलदिया जब दूरनिकलगया तबउसने उसके बंधनछुड़ायेऔर उससेकहा कि गुरूजी मैंआपका शिष्य चपलाहूं यह सुनकर प्रहास प्रसन्नहोगया और फिर अपनास्वरूप प्राताकासाबनाकर सभामेंगया उसको देखकर समीररूपा बोली कि क्योंरी प्राता तू इतनीशीघ्र प्रहासको निष्प्रभभवनमें पहुंचाआई प्रहास बोला कि मैं लियेजातीथी परंतु एकमायाकृत हस्त आया और वह प्रहासको लेगया और उससमय यहवाणीहुई कि महेन्द्रका भेजा हुआहूं यहसुनकर समीररूपा चुपहोरही तबप्रहासने कहा कि सुनोजी समीररूपा मेरे पैरमें दरदहोताहै इससे मैं जाकर सो-

तीहूं और यह कहकर एकस्थानपर जालेटा परंतु चपला जो प्रहासको छुड़ाकरचला तो आगे उसको प्रातामिली चपलाने तुरंत अपनारूपसमीररूपाकासा बनाया और उसके पासजाकर वार्तालापकरनेलगा और दृष्टिबचाकर कुछमूर्च्छाकर चूर्ण उसकेमुखपरमारा कि वहमूर्च्छितहोगई तब चपलाने अपना स्वरूप प्राताकासाबनाया और सेनामें आया परंतु उधर प्राता जो थोड़ीदेरपीछे चैतन्यहुई तो उसने अपनास्वरूप उपदेशी बहुरूपियेकासा बनाया और चपलाको पकड़नेचली चपलासेनाके किनारे खड़ाहुआथा कि इसने वहांजाकर चपलाको पुकारापरंतु वहइसको पहिचानगया और भुजालीलेकरदौड़ा उससमय प्राता ने एकतीरमारा चपला उससे बचनेकोउछला परंतु उसतीरने उसकेपैरकेअंगूठेको घायलकरदिया और वह उसकेपीछें दौड़ा परंतु वह भागकर सभामें चलीगई उसको देखकर समीररूपा और सुमुखी आश्चर्य करनेलगीं कि एक प्रातातौयहां सोरही है और एकयह दूसरीआई निदान उसको पकड़लिया तब उसने बहुतसीगुप्तबातें ऐसीबताईं कि उससे निश्चयहुआ कि यहीप्राताहै यहदेखकर प्रहास जो प्राताका रूपबनाकर लेटाहुआथा भागा समीररूपा और प्राताने उसका पीछाकिया और उसे घेर लिया उससमय प्रहासने कईमूर्च्छाकर अग्नियंत्र छोड़े ये दोनों पीछेकोभागीं परंतु उनअग्नियंत्रोंका धूआं उनके ब्रह्मांडमें जा चुकाथा इससे एकतो एकझीलके तटपर और दूसरी पर्वतके नीचेजाकर मूर्च्छितहोकर गिरपड़ीं उससमय प्रहास अपनारूप समीररूपाकासाबनाकर सभामेंआया और सुमुखीसे बोला कि आपमेरेसाथचलें तोमैं आपको एकअपूर्वकार्य दिखाऊं वह उस को समीररूपा जानकर उसके साथहोली और वहउसको लिवा कर सेनाकेबाहर आया और मूर्च्छाएडसे उसेमूर्च्छितकरके और बांधकर पीठपरलादलिया और वहांसेचलदिया उधरजब समी-

रूपा और प्राताचैतन्यहुई तबवेदोनों अपनीसेनामेंआई परंतु वहांआकर सुना कि रानीसुमुखीको कोई चुरालेगयाहै सुनतेही दोनों उसको ढूंढ़नेकोदौड़ीं और यहां जैसेही प्रहासने चाहा कि सुमुखीको मारडालूं तैसेही पृथ्वी कांपनेलगी और भयंकरशब्द होनेलगे यहदेखकर प्रहासने जाना कि यहकोई बड़ी मायाविनी है यहएकाकी नमारीजायगी चलो इसको अपनी सेनामें लेचलो वहां और मायावियोंकी सहायतासे इसेमारेंगे यह विचारकर अपनीसेनाकी ओर चलादिया परंतु समीररूपा जो चलीथी उसने प्रहासका पीछा छोड़दिया और सीधी निशाकरीकी सेना में आई और अपना रूप चपला बहुरूपियाकासाबनाकर निशाकरीके पासगई और बोली कि सेनाके बाहर प्रहास खड़ा हुआ आपको बुलारहा है यहसुनकर रानी निशाकरी उस के साथहोली और सेनाके बाहरआई जब एकांतमेंपहुंची समीररूपाने मूर्च्छाडमारकर निशाकरीको मूर्च्छितकरदिया और वहीं वनमें कहीं छिपादिया और उसकासारूप अपनाबनाकर और उसके वस्त्र उतारकर और पहिरकर सभामें आई और सेवकों से बोली कि मैं अमुकस्थानपर जाकर लेटती हूं प्रहास आवें और मुझेपूछेंतो बतादेना और यह कहकर उस स्थानपरजाकर लेटरही इतनेमें प्रहास सुमुखीको लेकरआया और पूछा कि रानी निशाकरी कहां हैं लोगोंने कहा कि सामनेकी सिविर में लेटीहुई हैं यहसुनकर प्रहासने उससिविरमें जाकर उसमिथ्या निशाकरीकोजगाया और यहकहकर कि मैं सुमुखीकोबांधलाया हूं वह पृष्ठभार जिसमें सुमुखीबँधीथी उसकेसामनेरखदिया यह सुनकर वहबोली कि प्रहासजी यहबड़ीमायाविनीहै बड़ीकठिनतासे मरेगी तुमभीतर जाकर मेरे पूजाके स्थानपर जो झोली रक्खीहै उसे उठालाओ उसमें एक लोहमयी अग्निगोलकहै उसीका प्रयोगकरके मैं इसेमारूंगी यहसुनकर प्रहासतो झोली

लेने चलागया और समीररूपाने उस पृष्ठिभारको पीठपर लादलिया और खड्गसे सिविरको काटकर वाहर निकलआई और दूरजाकर पुकारकर बोली कि मैं समीररूपाहूं सबकी आंखों में धूलडालकर सुमुखीको लिये जातीहूं छलइसका नाम है यह सुनकर सेनाके लोग दौड़े और प्रहासभी उनका शब्द सुनकर वाहरआया और सुना कि समीररूपा रानी निशाकरी कासा स्वरूपबनाकर आईथी और वही उसपृष्ठिभारको लेगई जिसमें सुमुखीबँधीथी सुनतेही प्रहासका वर्णपीलापड़गया और यह अनुमानकरके क्षिप्तसा होगया कि समीररूपाने रानी निशाकरीको मारडालाहै तबतो इसस्वतंत्रतासे सोरहीथी और फिर धैर्य छोड़कर समीररूपाके पीछेभागा परंतु सेनाके लोग जो पीछेपीछे समीररूपाके गयेथे उन्होंने चाहा कि मायाकरके उसको पकड़लें यह देखतेही समीररूपाने सुमुखीको चैतन्य करदिया और चैतन्य होतेही उसने देखा कि बहुतसे म्लेच्छ लेना लेना पुकारतेहुए चलेआते हैं और प्रहासभी आरहा है यह देखतेही वह कुछमाया करनेलगी तबप्रहासने अपनीसेना के लोगोंसे कहा कि तुम सबभागजाओ नहीं तो मारेजाओगे क्योंकि यह बड़ीमायाविनीहै यहसुनकर बहुतसेतो पृथ्वीमें प्रवेशकरगये और बहुतसे मायाबलसे आकाशमें उड़कर भागगये और प्रहासभीभागा परंतु यहकहतागया कि हेसमीररूपा मैं महाराजके अन्नोदककी शपथखाकरकहताहूं कि जोतैंने रानी निशाकरीकोमारडालाहोगातो मैं तुझकोजीतानछोडूंगा समीररूपाने कुछउत्तरनदिया परंतु प्रहासभागाहुआ चलागया और एकसेवककासा स्वरूपबनाकर सुमुखीकीसभाके द्वारपरजाखड़ा हुआ कि इतनेमें सुमुखी और समीररूपाभी पहुँचीं और सुमुखीनेपूछा कि क्यों समीररूपा तैंने निशाकरीको क्याकिया वह बोली कि उसे मूर्च्छितकरके छोड़आईहूं सुमुखीने कहा कि जा

उसे लेआ यहसुनकर समीररूपा चलदी और प्रहासभी चला और जब समीररूपा सेनासे निकलकर बाहर आई तबप्रहास ने उसे ललकारा कि कहां जातीहै यहसुनतेही वह भयभीत होकर भागी कि प्रहासने शपथखाई है मारहीडालेगा परंतु प्रहास ने दौड़कर पाशफेंकी और समीररूपा उसके कुंडलोंमेंसे उछल कर निकलनेलगी परंतु उसके शिरमें एकवृक्षके गुद्देकी ऐसी टक्करलगी कि वह गिरपड़ी तबप्रहासने उसे बांधलिया और खड्ग निकालकर मारनाचाहा परंतु समीररूपाने प्रहासकी ओर देखकर कहा कि मेरामरना तुम्हारेहाथसे अनुचितनहींहै प्रहास तो उसपर मोहितहीथा यहसुनतेही अपनी आंखोंमें आंसूभर लाया और समीररूपासे बोला कि बता रानीनिशाकरी कहां है समीररूपा इसबातका उत्तर नहीं देनेपाईथी कि इतने में एक मायावी म्लेच्छ जो वहींका रहनेवालाथा एकपर्वतकी गुफामें से निकलकर वहां आगया और उसने मायाकरके प्रहासको पकड़ लिया और समीररूपाको पहिचानकर छोड़दिया तबसमीररूपा भयके मारे भागी और एककोसपर जाकरठहरी परंतु ठहरीही थी कि उसके कानमें यहबाणी सुनाईपड़ी कि कहां भागकर जायगी और फिर उसने उपहास को भुजाली हाथमें उठायेहुए आते देखा निदान घबराकर वहांसेभी भागी परंतु उपहासवहीं ठहरगया इसी अवसरमें वह म्लेच्छ प्रहासको लियेहुए उस मार्गमे निकला उसको देखकर उपहासने अपनारूपएकमायावी म्लेच्छकासा बनाया और पुकारकर बोलाकि अरेतूकौनहै जो यहांचलाआताहै यह भूमि मेरी है वह बोला कि भाई अप्रसन्न न होउ मै श्री महाराज के अपराधी प्रहास को पकड़कर लिये जाता हूं यह सुनकर उपहास उसके समीप गया और बोला कि यह दूसरा तुम्हारे पीछे पीछे कौन है उसम्लेच्छ ने पीछे फिरकर ज्योंही देखा त्योंही उपहासने एक भुजाली ऐसी मारी

कि उस म्लेच्छका शिर कटकर भुट्टासाजापड़ा और कोला-हल होनेलगा प्रहास तब उसके बन्धनसे मुक्तहुआ और एक ओरको चलदिया आगे बढ़करदेखा कि रानी निशाकरी जिसमें बँधीहै वह पृष्ठभार तो रक्खाहै और चपला और प्रातासे युद्ध होरहाहै क्योंकि जहां रानी निशाकरी मूर्च्छित पड़ीथी वहां प्राता जानिकलीथी और निशाकरीको मूर्च्छितपाकर बांधलाई थी और लियेजातीथी कि उसको चपला मिलगया और उन दोनोंका युद्धहोनेलगा निदान प्रहास जब वहां पहुंचा प्राताका ध्यान बँटा और प्रहासकी ओर गया कि इतनेमें चपलाने एक मूर्च्छांडमारा कि वह मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी उसको उसने बांध-कर डालदिया और रानी निशाकरीको खोलकर चैतन्य किया और कहा कि आप सेनामें जाइये और अब किसीके छल में न आइयेगा निदान रानी निशाकरी तो वहांसे अपनी सेनामें चलीआई और प्रहासने अपनारूप तो प्राताकासा बनाया और चपलाकारूप रानी निशाकरीकासा बनाकर और उसको बांधकर और पीठपर लादकर सुमुखीकी सभामें आया और विनय पूर्वक बोला कि यह निशाकरी आगई यह सुनकर सुमु-खीने प्रसन्नहोकर बहुत कुछ पारितोषिक दिया और कहा कि इसको चैतन्यकरो यहसुनकरप्रहासने चपलाको चैतन्यकरदिया इतनेमें सुमुखी लघुशंका करनेगई मार्ग में दाहिनेहाथकी ओर रानी विचित्रसागरकी मायाकृत सातपुतली एकस्थानपर मिलीं उनमेंसे एकपुतलीबोली कि आज सुमुखी बहुतप्रसन्नहै दूसरी बोली कि प्राता बहुरूपिनी रानी निशाकरीको पकड़कर लाईहै इससे सुमुखी प्रसन्नहै तीसरीने कहा कि कुछप्रसन्नहोनेकी बात नहींहै चौथी बोली कि कहो तो मैं सबहालकहदूं पांचवींबोली कि लो मैं बतलायेदेतीहूं छठीबोली कि तुम क्या बतलाओगी सातवींने कहा कि तुमने क्या बकबक लगारक्खीहै जो होनाथा

सो हुआ न प्राताहै न निशाकरीहै वह तो प्रहास है चपलाको निशाकरीका स्वरूप बनाकर लायाहै यह बात सुनकर सुमुखी शीघ्र लघुशंका करके फिरी परन्तु प्रहास भी सभामेंसे पुतलि-योंकी बात सुनरहाथा तुरंत उसने अपना स्वरूप समीररूपा कासा बनाया और जब सुमुखी सभाके भीतर आई प्रहासने चपलाको सैनसे बताया और वह उठकर भागा उस समय प्रहासने कहा कि रानीजी लेना वह जाताहै मैं समीररूपाहूं और प्रहास पहिले भागकर निकलगया यह सुनकर सुमुखी चपलाके पीछे २ भागी और प्रहास भी समीररूपाका रूप बनायेहुए उसकेसाथ २ भागाआया जब दूरआगये तब प्रहास ने मूर्च्छांड मारकर सुमुखीको मूर्च्छित करदिया और उसकोबांध कर और पीठपर लादकर बड़ी शीघ्रतासे रानी निशाकरी के समीप लेगया रानी निशाकरीने आज्ञादी कि सब सेनापति आकर इसका वधकरें यह आज्ञा पाकर सब सेनापति वहां आकर एकत्र होनेलगे परंतु समीररूपा जो फिरकर अपनी सेना में गई वहां उसने सुना कि रानी सुमुखी को कोई पकड़ कर लेगया सुनतेही वह दौड़ी और एक सेवककासा रूप ब-नाकर रानी निशाकरी की सेनामें पहुंची यहां सुमुखी के मारने की तयारी होही रहीथी कि समीररूपा सभा में पहुंची और उस पृष्ठभार के समीप जाकर जिसमें सुमुखी बँधी थी उसने चैतन्यचूर्ण उसके मुखपरमारा कि वहचैतन्यहोगई और उसने एकअग्निगोलक रानीनिशाकरीके मारा और मायाबलसे आ-काशमेंउड़कर राज्यासिंहासनपर बिजलीकीभांति चमककरगिरी उससमय निशाकरी पृथ्वीमेंप्रवेशकरगई औरमारीचनेएकनारि-केल अस्त्रमारा कि उससे सुमुखीका पैर घायलहोगया परंतु वह हाथमें समीररूपाको उठाकर उड़गई और अपनी सभामेंआई उस समय रानी विचित्रमाया जो निष्प्रभभवन को गई थी

लौटकरआई सुमुखीने उससे कहा कि कलजबसे तुमगई हो बहुरूपियोंने बड़ा उपद्रव मचाया है समीररूपा ने बड़ाभारी कार्यकिया नहीं तौ मैं अवश्य मारीजाती यह सुनकर विचित्र-मायाने समीररूपा को बहुतसा पारितोषिक द्रव्यदिया औरसब वृत्तांतसुना उसीसमय एकपुतलेने एकपत्र लाकर विचित्रमा-याको दिया उसमें लिखाथा कि महाराज महेन्द्रआते हैं उसको पढ़कर विचित्रमाया आगोनीके लियेगईऔर थोड़ीदेरमें महेन्द्र की सवारी बड़ीधूमधामसे आई सबने उठकर बड़ासत्कार किया और महेन्द्रने सिंहासनपरबैठकर सबवृत्तांत युद्ध और बहुरूपि-योंका सुनकरकहा कि हे सुमुखी तुमनिरर्थक आपत्ति में पड़तीहो अपने घर जाकर बैठो और यहकहके उसने कुछ मायाकी कि पृथ्वी को विदीर्ण करके एक मायावी म्लेच्छ निकला और उस ने महेन्द्रको दण्डवत् की महेन्द्र ने उसे आज्ञादी कि हे मेघ-नाद तुम जाकर निशाकरी की सेना को विध्वंस करदो और सुंदरी राजपुत्री को पकड़कर क्षारनदी पर लेजाओ वहां एक हिंडोला पड़ाहुआहै उसपर उसको बैठाआओ यहआज्ञा देकर महेन्द्र थोड़ीदेरतौ वहांबैठारहा उपरांत वहांसे चलकर बदरीउ-द्यानमें पहुंचाऔर उधर मेघनादने अपनी सेनाको सन्नद्धकरना आरंभकिया और उसकी सिविर और सभाके डेरेपृथक् खड़े होनेलगे और वहआप रानी निशाकरीकी सेनामें चला आया और एक कुरसी खाली बिछीहुई थी उस पर बड़ी ऐंठसे बैठ गया और बोला कि तुमसब अपना धर्म छोड़कर महाराज महेन्द्रसे विमुख होगये हो इससे मैं तुमसबको दण्ड देनेआया हूं यहसुनकर प्रहासने उठकर उसके बांधनेको पाशफेंकी परंतु वह मायाबलसे बादल होकर पाशके कुंडलोंमेंसे निकला और बड़ी गर्जनासे गिरकर सुंदरी को उठाकर लेचला उस समय वैष्णवी सेनाके योद्धाओंने बहुतसे आसुरी अस्त्रमारे परंतु वह

किसीके रोकनेसे न रुका और सुंदरीको लेकर क्षारनदीके बनमें पहुंचा और वहां उसको मायाकृत हिंडोले पर बैठादिया यह देखकर मारीचकी बुरी गति होगई और वह अपनी प्राणप्यारीके वियोगमें रोने पीटने और रसके पदपढ़नेलगा तब प्रहास ने उसेआश्वासनकिया और रानीनिशाकरीसे पूछा कि यह कैसी मायाकरता है वहबोली कि यह मेघनादहै जलकी वर्षा करता है जिसपर जलकी बूंद पड़ती है वहवृक्ष होजाता है परंतु यह रंतिकाल और संडीनचपला का सदैवसे अनुगामी रहा है वे दोनों इसके स्वामीथे जो वे दोनों होते और कैद न होजाते तो यह भागजाता प्रहास बोला कि अच्छा मैं उनको छुटाने जाता हूं और जो बनसकेगा तो सुंदरी को भी छुटाकर लाता हूं यह कहकर प्रहास सेनाके बाहिरआया और वहां उसने छल विद्या संबन्धी तूर्य बजाई उसको सुनकर सब बहुरूपिये इकट्ठे होगये तब प्रहासने सबसेकहा कि रंतिकाल और संडीन चपला के खोजनेका यत्नकरो यहसुनकर सब बहुरूपिये चलदिये परंतु मेघनाद क्षारनदीसे लौटकर अपनी सेनामेंआया और महेन्द्र की आज्ञानुसार युद्धकीतयारी करनेलगा और जिससमय सूर्यरूपी नदी बहतीहुई पश्चिम दिशारूपी समुद्रमें मिलकर गुप्त होगई और इन्दुकौमुदीरूपी तरंगिणी आकाशमंडलमें तरंगों सहित बढ़ने लगी॥

चौ०। दिनमणि अस्तभये जब जाई। कढ़ी कौमुदी अति सुख दाई॥
शीतल निर्मल स्वच्छ अनूपा। उपमा नहीं जासु अनुरूपा॥

उस समय मेघनादकी सेनामें मायाकृत तूर और २ युद्धके वाद्य बजनेलगे उनके बजने का वृत्तांत रानी निशाकरीने सुन कर अपनी सेनामें भी युद्धके वाद्यबजायेजानेकी आज्ञादी और दोनों सेनाओंमें तूर और भेरी आदि वाद्यबजनेलगे योद्धा युद्ध की तयारी करनेलगे सब आयुधोंको तीव्रकिया मायाके प्रयोग

जगाये हवनकिये बलिदान दिये निदान रात्रिभर इसीप्रकारसे युद्धका सरंजाम होतारहा और जब वह रात्रि व्यतीत होगई और आकाशमण्डल सूर्यके उदयहोने से प्रभासितहुआ और अंधकार पलायमान हुआ॥

चौ०। प्राचीदिशि उदये शुचि भानू। लहै न समता कोटि कृशानू॥
तासु तेजलखि नखतलुकाने। सैन सभीत समान पराने॥

उस समय दोनोंओर से सेना सज सजकर बढ़ी और रण-भूमिमें आई इधर रानीनिशाकरी और उधर मेघनाद दोनों अपनी २ सेनाके मध्यमें थे पहिले युद्धभूमि निष्कंटक कीगई फिरसेना व्यूहितहुई उपरांत युद्धप्रारम्भ करनेके बाद्यबजे और मेघनादकी सेनामेंसे एकमायावी म्लेच्छ निकलकर रणभूमिमें आया उससे युद्धकरनेको रानीरक्तकेशीगई और उसने एक अ-ग्निगोलकका प्रयोगकियाकि वह उसम्लेच्छकी कायाकोविदीर्ण करताहुआ पारनिकलगया इसीप्रकारसे मेघनादकीसेनाके कई योद्धा मारेगये तब मेघनादक्रोधितहुआ और रणभूमिमें आप चलाआया और ऐसीमायाकी किअकस्मात् पहाड़ोंसे बड़ीबड़ी घटा मेघकी उमड़ीं और रानीनिशाकरीकी सेनापरछागईं और जलकी वर्षाकरनेलगीं जिसपर जलकी बुंद पड़तीथी वही वृक्ष होजाताथा और उसमें हरे २ पत्ते लगजातेथे वैष्णवी सेनाके प्रबल मायाविओंने उससमय अनेकप्रकारके प्रयोगकिये परंतु वहमाया किसी से नाश न होसकी तबरानी आनन्दा हाथ में फूल लेकर रणभूमि में आई उसको देखकर मेघनादने सोचा कि जो यहमायाकरेगी तो मैं विक्षिप्त होजाऊंगा यह सोचकर वह उड़कर आनन्दाके पासआया और उसके ऊपर थोड़ीसी मायाकर्त्ताकी समाधिकी भस्मडालदी उससे आनन्दा मूर्च्छित होकर गिरपड़ी उस समय मेघनाद ने फिर माया कुछकी कि पानी बड़े बेग से बरसनेलगा और सब सेनाकेलोग मूर्च्छित

होकर वृक्षवनगये और भगदड़ पड़गई और युद्धभूमि में कोई न रहगया और मेघनाद जयदुंदुभी बजवाकर फिर आया और विचारकिया कि बहुरूपिये मेरे मारने को अवश्य आवेंगे इससे मैं सेनामें न ठहरूं यह विचारकरके वह अदृश्य खण्डके समीप चलागया और वहां मायासे एक सरोवर रचकर उसमें गुप्तहोकर निवासकिया अब बहुरूपियोंने जो दूरसे अपनी सेना की यहदशा देखी उन्होंने विचारकिया कि रतिकाल और संडीन चपलाको अबकहां ढूंढ़नेजायँ चलकर इस मेघनादको मारना चाहिये यह विचारकरके सब बहुरूपियेचले मार्ग में उन को प्रातामिली इसप्राताको प्रहास और चपला बांधकर डाल गयेथे और प्रहास उसकासारूप बनाकर सुमुखी को पकड़ने गयाथा सो यह बँधीहुई पड़ीथी जब चैतन्यहुई तब इसने आने जानेवालोंसे कहा कि मुझको चोर बांधकर डालगये हैं तुमखोलदो किसीने उसको खोलदिया और वह वहां से आरहीथी कि बहुरूपिये उसकोमिले वे सबतो अपनीचिंतामेंथे इससे चलेगये परंतु चपला उनमें से कतराकर उसके समीपआया और उसने पाशफेंककर मारी उसमें उलझकर प्रातागिरी परंतु गिरतेगिरते उसने चपलाके एक मूर्च्छांड मारा कि चपलाभी मूर्च्छितहोकर गिरा थोड़ी देरमें जब चैतन्यहुआ तो उसने देखा कि पाशका कुण्डल प्राताके गलेमें कसगया है यहदेखकर वह उसकुण्डलको यहविचारकर खोलने लगा कियहउपहासकी प्रियाहै कहीं मरन जाय जब उसने पाश खोलली तब प्राता बोली कि हाय मेरा हाथटूटा तब चपलाने घबराकर उसकोछोड़दिया और वह उछलतीहुई भागगई तब चपलाभी मेघनादके मारनेका उपाय सोचताहुआ वहां से चलदिया परंतु पहिले प्रहास और उपदेशी मेघनादके सरोवरपर पहुँचे वहांजाकर उपदेशीने एकपत्थर उस सरोवर में फेंका उसमें से एक म्लेच्छ निकला उपदेशी उसे

देखकरभागा परंतु उस म्लेच्छने मायाकरके उसके पैरोंको स्तं-भित करदिया और उसे पकड़कर सरोवरके भीतर मेघनादके सन्मुख लेगया मेघनाद ने उसका बधकरना चाहा परंतु उसी समय उसके पास एक पत्र महेन्द्र का भेजाहुआआया उसमें लिखाथा कि हे मेघनाद जिनलोगोंको तुमने पकड़ाहै उन सब को निशाकरी सहित लेकर रक्तवाहिनी नदी के तटपर चले आओ वहां उनकोछुड़ाने प्रहासभी अवश्य आवेगा तबहमउस को वहां पकड़लेंगे और अद्भुत परमेश्वरके कलि चित्रांगदको बुलवावेंगे कि वह आकर प्रहास का बधकरें क्योंकि हमकलि को पहिलेभी बुलाचुकेथे और हमको बड़ी लज्जाहुईथी इस से हम चाहतेहैं कि हम उसलज्जाके कारणको मिटावें उस पत्र को पढ़कर मेघनाद उससरोवरमें से निकलकर अपनी सेनामें आया और सेनाको चलनेकी आज्ञादी उससमय रानीनिशा-करी आदि सबयोद्धा और सेनाजनजो वृक्ष होगये थे सबछकड़ों पर लादेगये और उनकेसाथ रक्षक नियतकरके सबसेना वहांसे चलदी जब रक्तवाहिनीनदीपर पहुँची तब उस नदी के तटपर सेनाने वासकिया और सभा और शयन आदि करने के पृथक् पृथक् डेरेखड़े कियेगये और वहसब कैदी वृक्षबनेहुए ज्योंकेत्यों छकड़ोंसे उतरवाकर पृथ्वीपर डालदियेगये और उपदेशीभीउ-न्हींमें मूर्च्छितकरके डालदियागया और उनसबपररक्षक नियत करके मेघनाद आप आकर अपनी सभामें आसीनहुआ परंतु वहुरूपिये मेघनादके मायाकृत सरोवरसे निकलकर सेनासहित चलनेपर उसीके साथ साथ दूररहतेहुए चलेगयेथे और जब सेनाने निवासकिया तब उनमेंसे प्रचंड बहुरूपिया एक मायावी म्लेच्छका रूपबनाकर मेघनादकी सभामेंगया परंतु जैसेही वह सभामें पहुंचा तैसेही मेघनादने उसे पहिचानलिया और माया बलसे उसे भी अचलकरके जहां और सब कैदथे वहीं उसको

भी कैद करादिया और एक विनयपत्र महेन्द्रको लिखा कि मैं आपकी आज्ञाके अनुसार सब कैदियों को लेकर रक्तवाहिनी नदीके तटपर आगयाहूं जब यहपत्र महेन्द्रके पासपहुंचा तब महेन्द्रने निद्रावतीसे कहा कि मायाकर्ताकी कृपासे सब शत्रु पकड़ेगयेहैं परंतु प्रहास और दो तीन और बहुरूपिये रहगयेहैं सो यह प्रहास तुम्हारा शिर मूंड़चुकाहै तुमउसको पहिंचानती हो इससे जैसे बने और जहांहो वहांसे तुम प्रहासको पकड़ लाओ जब तुम कलिको लेनेगईथी तब परमेश्वरके सामने तुम को लज्जा प्रहासके कारणसेहुईथी अब जो तुम उसको पकड़ लाओगी तो मेरी और तुम्हारी दोनोंकी लज्जाका कारण मिटिजाय यह सुनकर निद्रावती बोली कि बहुत अच्छा मैं जाकर और ढूंढ़कर प्रहासको लातीहूं उससमय महेन्द्रने निद्रावतीकी बहिन मायावती से कहा कि तुम भी अपनी बहिन के साथ जाओ और प्रहासकोढूंढ़ो इनदोनोंकावृत्तांत पहिले वर्णनहोचुकाहै कि ये दोनों महेन्द्रकी प्रियाहैं परन्तु विचित्रमायाके भयसे महेन्द्र के साथ रमण करनेसे निषेध करतीहैं निदान दोनोंबहिनें आज्ञा पाकर प्रहासको ढूंढ़ने पृथक् पृथक् मार्गलेचलीं और निद्रावती जब रक्तवाहिनीनदीके पारउतरकर मेघनादकी सेनाके निकटप-हुंची तबउसने प्रहासकोदेखकरपहिचाना जो म्लेच्छरूप धारण कियेहुए फिररहाथा और पुकारकर कहा कि हेआर्य कहां जाते हो थोड़ीदेर ठहरजाओ कहो कुशलपूर्वक तो हो प्रहासने यह सुनकर और उसेदेखकर अनुमानकिया कि यहतुमको जानगई है और वह शीघ्र मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर अदृश्यहोगया निद्रा-वती उसको चारोंओर देखती फिरी जब भलेप्रकार ढूंढ़लिया और वह न मिला तब थककर मेघनादकी सभामेंआई उसने उसको बड़े सत्कारसेलिया और परमोत्तम आसनपर बैठाकर आगमनका कारण पूंछा तब निद्रावतीने अपने आनेकाकारण

और प्रहासको ढूंढ़नेका वृत्तांत वर्णनकरके कहा कि मुझ को एक चन्दनकी चौकी मँगवादो में बैठकर कुछ मायाकरूंगी उस से प्रहास आप चलाआवेगा यह सुनकर मेघनादने अपने अनुचरोंको चौकीलानेकी आज्ञादी और निद्रावती उठकर स्नान आदि करनेलगी परन्तु प्रहास जो मरुतदत्त वस्त्र ओढ़कर गुप्तहोगयाथा आगे चलागया और वहांजाकर उसने उसवस्त्र को उतार लिया आगे बढ़करदेखा कि एक सेवक चलाजाताहै प्रहासने बढ़कर उससे पूंछा कि भाई कहां जातेहो वह बोला कि में मेघनादके द्वारपर नियतहूं अब वहांकी नौकरी बदला कर अपने घरको जाताहूं यह सुनकर प्रहासने अपनी कमरसे एक फल निकालकर दिया और कहा कि भाई इसेखाकरदेखो कि कैसा स्वादिष्ट है ऐसा स्वाद किसी फलमें नहींहै इसबनमें ये फल बहुत लगेहुए हैं यह प्रशंसा सुनकर उस सेवकने वह फल लेकर खालिया खातेही मूर्च्छितहोगया तब प्रहासने उस के वस्त्र उतारकर पहिर लिये और उसकासारूप बनाकर उसे एक गर्तमें डालदिया और आप आकर मेघनादकी सभाके द्वारपर ठहरा उससमय सभाके भीतरसे एक म्लेच्छ निकला प्रहासने उससे पूंछा कि कहिये कुछ मेरेलिये आज्ञाहै वह बोला कि भाई रानी निद्रावती एक चन्दनकी चौकीमांगती हैं उसपर बैठकर कुछमाया करेंगी जिससे प्रहास अपनेआप चलाआवेगा यहसुनकर प्रहास चुपकाहोरहा और जबवह म्लेच्छ चौकी लेकर भीतर जानेलगा तब आप भी मरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर उसके साथ होलिया और भीतर जाकर खड़ारहा निद्रावतीने स्नान किये और उस चौकीपर बैठी और अग्नि और लोहबान और फूल और लकड़ी और मोहनभोग और रक्त और खोपड़ी आदि मायाकरनेकी सामग्रीलेकर बैठगई और बाराह का बलिप्रदान करके और मद्यदेकर कुछ मंत्र जपनेलगी उस

समय प्रहास जो मरुतदत्तवस्त्र ओढ़ेहुए खड़ाथा उसके पीछे चौकीपर जाबैठा वह प्रयोग इसीबातका था कि प्रहास चला आवै परंतु जब प्रहास वहींथा तब वह मंत्र क्या बात दिखाता इससे उसको कुछपता प्रहासका न मालूमहुआ यहीबात प्रयोग में भासितहुई कि प्रहास यहींहै अंतमें उसनेकहा कि हेमेघनाद प्रहासका कहीं पता नहीं लगताहै यह सुनकर मेघनादने कहा कि भला वह क्या कोई ऐसा वैसा मनुष्यहै जो तुम्हारी मायाके बलसे चलाआवैगा वह भी बड़ा सिद्धपुरुषहै हमारेमायाकर्ता ने उसकी प्रशंसा अपने अद्भुतजाल में लिखीहै निदान यहां तो यह बातें होरही थीं और वहां वह सेवक जिसको प्रहास मूर्च्छित करआयाथा चैतन्यहुआ और सोचनेलगा कि अभी तो मेरी वह दशाथी और वह सन्सनाहट शरीरमें थी कि जो प्राण निकलनेके समय होतीहै और फिर मुझको कुछ चेत न रहा इससे जानाजाताहै कि मैं मरगयाथा और जैसा कि संसार में लोग कहाकरतेथे कि मरनेके पीछे फिर मनुष्य जीताहै सो वही दशा मेरीहै मैं इससमय मरकर सजीवहुआहूं यह सोच कर उसने अपने हाथ और पैर हिलाये और फिर घबराकर उस गर्तसे बाहरनिकला और चारोंओरको चकितसा देखता हुआ चला और फिर सोचा कि मुर्दे तो चलते नहीं हैं और यह सोचकर पृथ्वीपर लोटगया थोड़ीदेरमें फिर उठा कि अब तो मैं चैतन्यहूं चलो यहां कबतक लेटेरहोगे और उठकर चला परन्तु उसीप्रकारसे नंगाथा क्योंकि वस्त्र तो उसके प्रहासउतार लेगयाथा जब वह मेघनादकी सेनाके निकटपहुंचा तब उसको उसका एक मित्रमिला और उसनेपूछा कि भाई नंगे क्यों फिरते हो यह सुनकर उसको और भी शंकाहुई कि मैं तो कपड़े पहिरे हुएथा जबसे निश्चेतहुआ तबसे मैं आप भी अपनेको नंगा पाताहूं और यह भी मुझे नंगा बताताहै इससे अवश्यहै कि मैं

मरगयाहूं मुझको किसीने बिना वस्त्र पहिराये योंहीं गर्तमेंडाल दियाथा निदान अपनेको मराहुआसमझकर उसने अपने मित्र की बातका कुछ उत्तर न दिया कि मुर्दे बोलते नहीं हैं तब उस के मित्रने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया कि भाई तुम नंगे चलेजातेहो और बात जो पूछतेहैं तौ उसका उत्तर नहीं देतेहो तब वह बोला कि तुमको मैं दिखाईदेताहूं मित्रने कहा वाह भाई वाह अच्छा अंधाबनाया अरेभाई सामने तौ तू नंगा खड़ाहै वह बोला कि भाई मैं मरगयाहूं तुम मेरेमित्रहो तुमको क्या सताऊं और कोई होता तौ मारडालता यह सुनकर वह मित्र भयभीत हुआ और यह अनुमानकरके भागा कि आज कल सहस्रों मनुष्य नित्य मारेजातेहैं कुछ आश्चर्य नहीं है जो यह भूतहो और उसके भागनेसे उस सेवकको और भी निश्चय होगया कि मैं मुरदाहूं निदान वह उसी प्रकारसे नंगा मेघनाद की सभामें चलागया मेघनाद उस सेवकको नंगादेखकर बहुत क्रोधित हुआ और वहां पर जितनी म्लेच्छी बैठी हुईथीं सब पुरुषको नंगा देखकर अपनी २ आंखें बन्द कर करके उठगईं तब मेघनाद ने उससे घुड़क कर कहा कि अरे निर्लज्ज यह क्या बातहै वह बोला किआप पहिले यहबताइये कि मैं जीता हूं या मरगयाहूं यह सुनकर मेघनाद और सब सभासद मारे हँसीके लोटने लगे और अधिक हास्य होनेके प्रयोजनसे उसे बनाने लगे परंतु मेघनाद ने कहा कि इसका पित्त बिगड़ कर बात बढ़ गई है और सद्वैद्यों का यह मत है कि जब पित्तके कारणसे बात बढ़जातीहै तब मनुष्यका चित्त चलविचल होता है वह कभी रोताहै कभी हँसता है कभी गाताहै कभी आसक्त बनताहै कभी मूर्च्छित होजाताहै और चित्तसदैव उसका डामा डोल रहता है और जब बात का बेग होता है तब जिस कार्य्य में उसकी रुचि उससमय होती है वही कर्म्म वह करने लगता

है इस समय इसको कोई दुख हुआहै इसीसे इसकी यह गति हुईहै यह कहकर उसने उस सेवकको प्रीति पूर्वक अपने पास बुलाया और पूछाकि तू किसहालमें रहताहै और तुभपर कोई आपत्तितौ हालमें नहीं पड़ी यह सुनकर वह बोला कि अभी मैं जारहाथा राहमें एक मनुष्य मुभकोमिला उसने मुझे एक फल खानेको दिया उससे मैं मरगयाहूं यह सुनकर वह बोला कि निद्रावती तुमनेदेखा कि यहप्रहासके दियेहुए फलके खानेसे मूर्च्छित होगयाथा परंतु बातरोगके कारणसे कहताहै कि मैं मर गयाहूं परंतु बड़ा आश्चर्य यह है कि प्रहास इतना समीप तुम्हारेथा और तुम्हारी मायाके प्रयोग बलसे न आया यह कैसा प्रयोगथा यहसुनकर निद्रावती लज्जितसी हुई और मेघनादने उस सेवक की शंकाको बढ़तेहुए देखकर आज्ञादी कि इसको लेजाकर अग्निमें जलादो अथवा खड्गसे मार डालो जिससे दूसरोंको यहरोग उत्पन्न नहो निदान जब लोग खड्ग लेकर उसको मारनेको आये तब उस सेवकने बिचार कियाकि जो मैं मुरदा होता तौ अभी अन्तर्द्धान होजाता और ये मुभको मारने न पाते इससे मैं अवश्य जीताहुआहूं निरर्थक मेरे प्राण जायँगे इससे मुझे उचित है कि मैं बिनय करूं यह बिचारकर के वह बड़ी आधीनताई से बिनय करने लगा तब मेघनाद ने कहा कि देखा जब इसको भयभीत किया गया तब उसकी भय जनित वायु प्रबल होगई और उससे वह विक्षिप्त वायु जाती रही और अब यह चैतन्यहोगया यह देख कर सब सभासद उसकी प्रशंसा करने लगे और उस सेवक को कुछ द्रव्य देकर समभाया कि तुभको बहुरूपिये मूर्च्छित कर गयेथे यह सुनकर वह अच्छा होगया और सभाके बाहिर चला आया और प्रहासभी मरुतदत्त वस्त्र ओढ़ेहुए सभासे निकलकर वनमें चला आया परंतु निद्रावती जो लज्जित हुई

उसन मायाबलसे धूम प्रकट किया और आज्ञादी कि जहां प्रहासहो वहांसे उसे पकड़ला यह सुनकर वह मायाकृत धूम चला और प्रहासने वनमें आकर मरुतदत्त वस्त्र उतार लिया था कि यह धूम वहां गया और प्रहाससे लपिट कर उसे चक्र कीभांति भ्रमाताहुआलेचला और मेघनादकीसभामें निद्रावती के सन्मुख लाकर खड़ाकरदिया उसको देखकर निद्रावतीबोली कि क्योंरे प्रहास तैंने सहस्रों म्लेच्छ मारे और मेरा शिर मूड़ा अब बता कि तेरी क्या गति बनाऊं प्रहास बोला कि मेरा यही काम है कि जो मुझको नौकर करै और धनदे उसके साथमें प्राणदूं मुझको मेरे स्वामी महाराज शत्रुंजयने इसी लिये भेजा है कि इसमायाकृत देशके रहनेवालोंको मारूं और विध्वंसकरूं अभी जो तुम मुझको नौकर रखलो तो तुम्हारी आज्ञाकाभी वैसेही पालन करूं यह सुनकर निद्रावती बोली कि तू मुझसे ही छल करताहै मैं तुझको महाराजमहेन्द्रकेपास लियेचलतीहूं वहां परमेश्वर का चित्रांगदनामी कलि आकर तेरा वध करेंगे यह सुनकर प्रहास भयभीतहुआ परंतु फिर चित्तको सावधान करके बोला कि अरी दुर्भगा तू क्या बकती है मैं जानताहूं कि महेन्द्रका काल मुझे वहां लिये जाता है और तबकी दफै तो मैंने तेरा शिरही मूड़ाथा अबकी मैं नाकही काटलूंगा यहसुनकर निद्रावती क्रोधितहोगई और उसने उठकरप्रहासके एकथप्पड़ मारा कि प्रहास मूर्च्छित होकर गिरपड़ा तब निद्रावती ने उसे बांध लिया और कंधे पर उठाकर और मेघनादसे बिदाहोकर चलदी यह देखकर और बहुरूपिये जो आयेहुएथे वे प्रहासके पकड़ेजाने का वृत्तांत सेनाजनोंसे सुनकर निद्रावतीके पीछे हो लिये इन बहुरूपियोंमंसे उपदेशी और प्रचंड तो पकड़हीगयेथे केवलचपला और उपहास रहगयेथे सो ये दोनों पृथक् २ मार्गोंसे चले थोड़ी दूर चलने पर चपलाको समीररूपा और

प्राता और तीव्रा तीन बहुरूपिणी मिलीं उन्होंने चपलाको घेर लिया चपला उनसे लड़नेलगा परंतु यह अकेला और वेतीन थीं इससे समीररूपाने चपलाको मूर्च्छाएड मारकर मूर्च्छितकर दिया और उसको बस्त्रमें बांधा परंतु उसीसमय एकहस्त बिजलीकीभांति चमककर गिरा और तीनों बहुरूपिणियोंको चपला सहित उठाकर लेगया और सुमुखीकी सभामें लाकर खड़ा कर दिया उन्होंने सुमुखीको दंडवत्की और कहाकि हमको आपने किस कार्यके लिये बुलायाहै सुमुखी बोली किहे समीररूपा तैंने मेरे साथ बड़ा उपकार कियाथा और मुझको बहुरूपियों से बचाया था तब से मैंने तेरी रक्षाके लिये तेरेसाथ एक मायाकृत हस्त करदिया था कि जबकभी तुझको बहुरूपिये घेरें तबवह तुझ को उठालावै और शत्रुओं से बचावै यह सुनकर समीर रूपा बोली कि आपकी कृपामें कुछ संदेहनहीं है परंतु हम सबतौ बहुरूपिणी हैं नजाने किसकिस कार्यके उद्योगमें हम फिराकरती हैं जो हस्तहमको योंहीं उठालाया करैगा तौ हमसे काहेको कोई कामहोगा इससे आपहस्तको निषेधकरदीजिये कि अब उठाकर नलावै नहीं तौ हमनौकरी नहीं करसकती हैं यह सुनकर सुमुखी लज्जितहोगई और उसने उसहस्तको उनकेसाथ रहनेसे निषेध करदिया और फिर चपलाको बुराभला कहकर कुछमायाकी कि अकस्मात् एक म्लेच्छ उड़ताहुआ आया उस से सुमुखी ने कहा कि हे करालदन्त इस अपराधीको भी लेजा कर वहींकैदकर जहां रतिकाल और संडीन चपलाकैदहैं यहसुनकर करालदंत चपलाको लेकरउड़ा और दैवयोगसे उसीबन के मार्ग से वहचला जिसमें मेघनाद उतरा हुआथा यहांउपहास उपस्थितथा और उसनेदेखा कि एक म्लेच्छ चपलाको लियेहुए उड़ा चलाजाताहै यहदेखकर उपहास नीचेनीचे उस के साथहोलिया और थोड़ीही दूरगयाथा कि उसने बहुरूपिणि-

योंको आतेहुए देखा और बिचारकिया कि इससमय इनसे मत बोलो क्यों कि सबतौ कैदहोगये हैं केवल एक तुमहीं रहगयेहो ऐसानहो कि तुमभी पकड़ेजाओ और यह विचारकर वहराह-कतराकर चला यह देखकर समीररूपा ने अपनी साथिनियोंसे कहा कि उपहासतौ हमको देखकर कभीनहींभागा आजक्याहै जो मार्ग छोड़कर चलाजाता है अच्छा अबइसको जानेदो तुमभी मतबोलो यहकहकर वे बहुरूपिणी एक ओरको चलदीं परंतु उपहास करालदंत के साथ साथ एकबड़े भयानक बनमें पहुंचा और वहां देखा कि एकमठ बड़ा विस्तृत बनाहै वहां जाकर उसम्लेच्छने कुछमायाकी और उसके प्रभावसे उसमठ में एक द्वार प्रकटहुआ और वहम्लेच्छ चपलाको लेकर उस द्वारमें घुसगया और वह द्वारफिर बन्दहोगया और उपहास बाहिर रहगया परंतु एक छल करना विचारकर उसने अपना स्वरूप एकक्षिप्तकासाबनाया और शरीरपर धूलडालकर और लंगोटी लगाकर उसमठके सामने आबैठा और हाथमें मट्टीका ढेलालेकर खाने और बकनेलगा कि इसमठपर कपोतबैठा है परंतु मृगभक्षण कररहा है मृगकी लांगूलपर ऊंट बैठा है और घोड़ाहाथी खाताहै चीलहलियेजाती है मुझपर गर्दभ व सवारहै लीजियो लूलूहै अरे उधर देखो वाहरे मुरदे तूतौ अच्छानाच-ताहै एक कानपर सबघरहै सेरभर शय्या खाचुका है बायुकी ऋतु फिरी कालने अंडेदिये हैं मृत्युगाभिनहुई है रात्रिने अंडा दिया दिनने छिपकलीसे भोगकिया यहबातें जो करालदंतनेसुनी तुरंत मठके बाहिर निकलआया कि यहकौनहै जो विक्षिप्तोंकी भांति बकरहा है और पास आकरदेखा कि एकमनुष्य विक्षिप्त सा बकरहाहै और कहाकि अरेतू क्याबकरहाहै क्यों निरर्थक तैंने कोलाहल मचारक्खाहै यह सुनकर उपहास बोला कि आंखेंहों तौ तुमदेखो तुम तौ अंधेहो लो यह ढेलाखालोतौ आंखेंतुम्हारी

खुलजायँ यहसुनकर करालदंतने यहविचारकर वहढेलालेलिया कि यहकोई महात्माहैं और उसे जो जिह्वापररक्खा तो वहमीठा जानपड़ा तबतो उसनेजाना कि अवश्य यहकोई महात्माहैं जो ढेलादिया और मिष्ठान्न होगया और उससबको खागया और मूर्च्छितहोकरगिरपड़ा क्योंकि उपहासने मूर्च्छाकरचूर्ण मिलाकर ढेले के अनुरूप मिष्ठन्नका मोदक बनायाथा तबउपहासने उसे मारडाला उसके मरनेसे बड़ा कोलाहलहुआ और वह मठनष्ट होगया उससमय उपहासने देखा कि चपला और संडीन और रंतिकाल और उर्वशी चारों मूर्च्छितपड़ेहैं उपहासने उनके मुख-पर पानी छिड़का सबचैतन्यहोगये और उपहाससे पूछा कि आप किसप्रकारसे यहां आये उपहासबोला कि मैंने करालदं-तको मारा है और फिर सेनाकाभी सबवृत्तांत कहाकि मेघनाद सबको पकड़करलेगया है और उसने सबसेनाको नष्टकरडाला है यह सुनकर संडीनचपला क्रोधकरके बोली कि देखो महेन्द्र कैसा स्यानाहै कि जब हमकैदहोगयेतब मेघनादको भेजाहै और मेघनादभी अपने को मायावी वीर जानता है मेरे सन्मुखनहीं आयानहींतोमेरेकोदिखादेती अबउसकीमृत्युआईहै मेघनादतो केवलहमारे बलपरथा भलाअबमैं चलतीहूं देखूं वह क्याकरता है मैं अपने धर्मकी शपथखाकर कहतीहूं कि जो जातेही उसको न मारडाला तो आजसे मेरानाम संडीनचपलानहीं यहकहकर संडीन चपला और रंतिकाल दोनों चलदिये और उपहासने उर्वशी को मूर्च्छितकरके और उसे बांधकर अपनी पीठपरला-दलिया और चपला सहित मेघनादकी सेनाकी ओर चलदिये और उधर महेन्द्रनेमेघनादको लिखा कि सब अपराधियोंको नदी के इसपार लेआओ यहांहम उनका बधकरेंगे यह आज्ञा पाकर मेघनादने नौकामँगाकर सेवकोंकोआज्ञादी कि सबअप-राधियोंको चढ़ाओ और सब सरंजाम लादकर रक्षापूर्वक पार

उतरचलो निदान वह नदीके तटपर खड़ाहुआ प्रबन्धकररहा था अभी कोईपारनहीं उतराथा कि इतनेमें संडीन चपला आ-पहुंची और रतिकालगर्जा उससमय मेघनादनेदेखा कि चपला चमकतीहुई आरहीहैं और रतिकाल गर्जताहुआ चलाआरहा है यह देखकर मेघनाद भयभीतहोकर भागा परंतु रतिकाल तुरंत कूदकर पृथ्वीमें प्रवेशकरगया और मेघनादकेसमीप नि-कलकर ऐसा अट्टहासकिया कि वह मूर्च्छितहोकरगिरपड़ा और उसके मूर्च्छित होतेही संडीन चपला कड़ककर उसपर गिरी और उसके शरीरके दोटुकड़ेकरतीहुई पृथ्वीमें प्रवेशकरगई उसके मरने से अंधकारछागया और बड़ाकोलाहल होनेलगा और रानी निशाकरी के सबसेनापति और सेनाकेयोद्धाजो वृक्ष होगयेथे फिरयथावस्थितहोगये और आयुध और अस्त्रतोसबके पासथेही क्योंकि सबयुद्ध भूमिसे पकड़ेगयेथे सबकेसब मेघनाद की सेनापर गिरे उससमय आनन्दाने मायाकरके बसंतऋतुको उत्पन्नकरदिया तत्काल उसवनमें नानाप्रकारके वृक्षनवीनपत्रों से युक्त उत्पन्नहोगये भांतिभांतिके सुगंधित फूल खिलगये नि-र्मलजलधारा बहनेलगीं भ्रमर गुंजारनेलगे पक्षी नानाभांतिकी मधुर मधुर बाणी सुनानेलगे बायु शीतल मंद सुगंध बहने लगी और शुक सारिका और मयूर आदि पक्षी प्रमत्तसे एक वृक्ष से उड़कर दूसरे वृक्ष पर बैठने लगे अपूर्व आनन्दथा॥

क०। औरै भांति कुंजनमें गुंजरत भौंरभीर औरैडौर झौरनमेंबौरनके ह्वैगये। कहै पदमाकर सुऔरै भांति गलियान छलिया छबीले छल औरै छबि छ्वैगये॥ औरै भांतिबिहंग समाजमें अवाजहोत ऐसी ऋतुराज के न राज दिन द्वैगये। औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग औरै तन औरै औरै बन ह्वैगये॥

मेघनादकी सब सेना उस आनन्दसे मोहितहोगई और सब द्या माया करना भूलकर प्रमत्तहोगये और उनपर नारिकेलि

आदि आसुरी अस्त्र पड़नेलगे रानीनिशाकरीने अग्नि गोलक और रानी केसरीने मायाकृत बाणोंकी बर्षाकी क्षणमात्रमें उस रक्त वाहिनी नदीके तटपर दूसरी रक्तकी नदी बहनेलगी लोथ पर लोथ गिरनेलगी मायाकृत अस्त्र शस्त्रोंके प्रहारसे क्षणमात्र में वह महा सेना नाशहोगई और एक प्रलयकाल सा दीखने लगा॥

भुजंगप्र० किते रुण्ड बैठेलहैं तौन झेलैं। कितेशत्रुके मुण्ड लैकुंड मेलैं॥
किते औरकेमुण्ड लैमुण्डलावैं। कितेखड्गलीन्हेंचहूं ओरधावैं॥
किते रुण्डके पाणिमो पांयडोलैं। कितेक्रुद्धवाहैंकिएउद्धओलैं॥
किते युद्धकी सुद्धिकैरुद्धि बैठैं। जुपैठे चहैं से गहैं ऐंड़ि ऐंटैं॥

क०। केते मेदमज्जा मांसशोणितके कीचपरे डरे दावानलबीच दारुसे लखात हैं। केतेनके गातचलैं ऊरध रुधिर धार रँगवारि भारसे फुहारेसे विभातहैं॥ केते झटकत पटकतगातमरेजात जैसेचटकत जेउपल अबी पात हैं। कितने सुफब परे शोणित में ऊबिऊबि ढब ढब करिकै वेढबडूगि जात हैं॥

निदान एककोभी जीता न छोड़ा परंतु मायाकृत नदी का तटथा और इधर बड़े २ प्रबल मायावी रहतेथे इस कारण से सबको विध्वंस न करके बहुत शीघ्र सब वहांसे अपने बास स्थलकी ओर चलदिये और प्रहासके सिवाय और सब बहु-रूपिये भी उनके साथ होलिये प्रहासका हाल आगे बर्णन होगा परन्तु इनसब को मेघनाद की सेनाको मारने और विध्वंस करनेमें रात्रि होगईथी और चंद्रमा तारागणोंकी सेना लेकर आकाशमें चढ़आयाथा और उसके भयसे सूर्य पश्चिम दिशामें जा छिपाथा इस कारणसे दशबारहकोस आनेपर रानी निशाकरी मार्ग भूलगई और कहनेलगी कि यहां के सब स्थान अदृश्यखंड केसे दीख पड़तेहैं जो इस खंडमें हम पकडेगये तो फिर छूटना दुर्लभ होगा यह सुनकर आनन्दा बोली कि तुम सत्यकहतीहो शीघ्रचलो निदान वह मार्गछोड़कर सब दाहिनी

ओरको मुड़पड़े और मायाबल से शीघ्रतापूर्वक चले और दशकोस पर आकरदेखा कि एक बड़ाउत्तम प्रासाद बनाहुआ है परदे लाल हरे और पीले मखमलके पड़ेहैं किवाड़ चन्दन के जड़ेहैं छानें हेममयी बनीहैं झालरें मोतियों की लटकी हैं स्तम्भ सोने और रूपेके विचित्रता सहित मनोहर बनेहैं मणि नानाप्रकार की अपने २ योग्य स्थानोंमें जटितहैं पात्र रत्नों के बनेहुए स्थापितहैं प्रासादके सामने कोसोंतक स्फटिककी क्यारियां चित्रविचित्र बनीहुईहैं उनमें नानावर्णके सुगंधित फूलोंके वृक्षलगेहुए हैं बीच बीचमें वैक्रांतिके कुंडबनेहुएहैं उनमेंनिर्मल जलभरा हुआहै और पुंडरीक और कह्लारजाति के कमलखिले हुए हैं चारों ओर उसके पर्वतहैं और बीचमें वह प्रासाद है उनपर्वतोंकी डांगोंमें मयूर आदि पक्षी मंद मंदचालसे डोलरहे हैं चारों ओर निर्मलजलकी धारा बहरहीं हैं पहाड़ों में झिरना झिररहे हैं निदान वह स्थान परमशोभायमान और मनोरम ऐसाथा कि उसका वर्णननहीं होसकता है॥

छंद। कनक चित्र विचित्रमणि कृतचारु थलसो सोहहीं।
शोभा अनूप अपार अकथअचिंत्यमुनि मनमोहहीं॥
बहुद्वार मणिमय हेम अंतर पटनि सहित सुहावहीं।
अरु रत्नजटित वितान बहुविधि तने मुदअधिकावहीं॥
बहुमोल्यपट अरु चारु आसन भांति भांतिनके बिछे।
पर्यंकशुभ शुचिबसनयुत तहं हेमडोरिनसों खिंचे॥
वनबाग सरवर कूपबापी फटिक निर्मितबहुबने।
बहुभांति नानाजातिके खगमधुर धुनि बाणी भने॥
जसदिव्य भवन सुदीप्तरविसम अरु प्रभायुतही मही।
तसकुंजलाल महाल्पबुधिपै जात किमि सबसकही॥

इसमनोरम और उत्तमस्थान में सबके सब ठहरगये कि अकस्मात् यह बाणीहुई कि हे मायावी म्लेच्छो तुमयहां कहां फिर रहेहो यहस्थान महाराज महेन्द्रके विहारकरनेकाहै तुमको

उचितहै कि किसी एकांतमें ठहरकर रात्रिको निवासकरो यह सुनकर रानी निशाकरी संडीनचपला से बोली कि परमेश्वर जाने यह किसकाघर है और कौन बोलरहा है हमने अबतक इसस्थानको नहींदेखाथा मैंजानतीहूं कि हमसब मायाके चमत्कारोंमें आफंसे हैं इससे जहांतक होसके यहांसे भागना उचित हैं यह कहकरसब वहां से मायाबल से उड़े और एकसन्नाटे में बारहकोसनिकलगये परंतु जहांतकगये वहीचमत्कार और पर्वतपाये और जब इसीप्रकारसे बारहयोजनतक देखते चलेगये तब थककरबेबशीसे एकस्थानपर ठहरगये उससमय रानी आनन्दाने रानी निशाकरीसे कहा कि भैन आजयहींठहरजाओ प्रातःकाल राहपूछकरचलेंगे जो परमेश्वर चाहेगा सोहीहोगा हमसबभीतो मोहनभोगनहीं हैं जोकोईउठाकरभक्षणकरजायगा निदान यही बातें होरहीथीं कि सन्मुखसे एकम्लेच्छ प्रकटहुआ और बोला कि हे रानीमें तुमसबको पहिचानगयाहूं तुमसबमहाराज महेन्द्रसे विमुखहो अच्छा आजयहां ठहरो कलचली जाना मुझकोतुमसे कुछ द्वेषनहींहै निशाकरीबोली कि यहांकुछ भोजन कोभी मिलसकता है वहबोला कि हां सबपदार्थ मौजूद हैं यह कहकर वहचलागया और उत्तमोत्तम खाद्यपदार्थ और सुंदर बारुणीलेआया तबरानी निशाकरी और आनन्दा आदि उसी पर्वतपर बिछौने बिछवाकर बैठगई और मद्यपानकरके भोजन किये और उसम्लेच्छसे पूछा कि आपकौनहैं और यहकौनसा देश है वहबोला कि यह चीनपर्वत है और महाराज महेन्द्र माया कृतदेशाधिपके बिहार करने का स्थान है प्रत्यक्ष खंडसे लेकरअदृश्य खंडकी सींवातक सहस्रोंयोजन इसीप्रकारकीमाया कृत शोभा चलीगई है और रक्तबाहिनी नदी इसी पर्वतकी गुफामेंहोकर निकलीहै और जहां तुम बैठीहो यह स्थान अभी प्रत्यक्ष खंडमेंहै और मैंइसी स्थानमें रहताहूं नाममेरा यहीकहै

निदान बहुत देरतक वह म्लेच्छ बैठारहा उपरांत अपने घर को चलागया और अपनी माता सुक्तिका मायासे जाकर रानी निशाकरीके आनेका सब वृत्तांत कहा वह बोली किबेटा तू इन सबको यहां मत ठहरा ऐसा न हो कि महेन्द्र यह सुनेकि हमारे शत्रुओंको टिकायाहै और हमसब उसके क्रोधके बन्धनमें पड़ जायँ बेटा बोला कि वह सब आप प्रातःकाल चले जायंगे हम को उनसे क्या कार्यहै और महेन्द्रसे कौन कहने जायगा यह सुनकर वह चुप होरही परंतु उसने एकपत्र गुप्त लिखकर एक पुतलेके हाथों रानी विचित्रमायाके पास भेजा और उसमें सब वृत्तांत निशाकरीके आनेकालिखा उसकोपढ़तेही उसने अपनी मंत्रिणि माया रत्नसे कहा कि ऐसा मालूम होताहै कि मेघनाद मारागया परंतु श्रीमहाराजका वह प्रतापहै कि निशाकरी आदि जितनेहैं सब चीन पर्वतपर बैठेहैं भला वहांसे अबकहां जायं-गे यह सुनकर मायामणि और मायारत्न दोनोंने कहा कि महा-राजने कुछ मायाकीहोगी वही उनकोघेरकर वहां लेगईहै निदान विचित्रमाया मयूरपर सवार होकर महेन्द्रके पासगई और उस के वामांगमें बैठकर वह पत्र सुक्तिका मायाका भेजाहुआ देदिया उसको पढ़कर महेन्द्र बोला कि मायाकृत पुतलोंने मुझेभी यह समाचार सुनायेथे कि मेघनाद मारागया और सब कैदी छुट गये परंतु अब मालूम हुआ कि चीन पर्वत परहैं अब मैं उन को पकड़वाताहूं यह कहकर महेन्द्रने कुछ मायाकी किएक म्ले-च्छ महाभयानकरूप श्यामवर्ण प्रकटहुआ महेन्द्रने उसे आज्ञा दी कि सब शत्रु चीन पर्वतपर हैं तू जाकर सबको पकड़ला यह सुनकर वह उधर चलदिया और फिर महेन्द्रने दूसरे म्ले-च्छसेकहा कि तू जाकरपांचों बहुरूपिणियोंसेकहदे कि चीनपर्वत की ओरजाकर उस म्लेच्छकी रक्षाकरें उसने वैसाहीकिया और वे बहुरूपिणीभी उसीओरकोचलीं और उधर रानीविचित्रमाया

सेभी महेन्द्रने कहाकि हम रत्नकूपपर मेलाकरके सब शत्रुओं का वध करेंगे इससे तुमभी अपनी सेनामें जाओ और हमारी आज्ञा पानेकी बाट देखो यह सुनकर विचित्रमाया विदाहोकर अपनी सेनामें चलीआई और वह म्लेच्छ चीनपर्वतपर पहुंचा और गर्जता हुआ बोला कि अरे धर्म घातियो अब कहां बच कर जाओगे और एकआसुरी अस्त्र मायाकरके छोड़ा उसअस्त्र से चालीस पुतले उत्पन्नहुए और पुकारे कि अरे धर्मध्वंसियो तुम्हारी मृत्यु तुमको यहां लाईहै यह सुनकर रानी आनन्दाने माया करके उत्तर दिया कि तुम धर्मघाती और धर्मध्वंसी किसको कहतेहो हम सब तौ मायाकृत चमत्कार कर्ताओं के सेवक और महाराज महेन्द्रके अनुचरहैं वह म्लेच्छ बोला कि जो तुम धर्मघाती न होते तौ तुमपर यह विपत्ति नपड़ती यह कहकर उसने पुतलोंको आज्ञादी कि उन्होंने सबको घेर लिया और फिर उसने दूसरा अस्त्र छोड़ा कि उसके प्रभाव से रानी निशाकरी आदि सब आधे आधे पृथ्वीमें गड़गये उस समय उन सबने अनेकप्रकारकी मायाकी परंतु किसीसे कुछ न हुआ और उन पुतलोंने सबको एक लोहकी जंजीरमें बांध लिया और लेकर चले परंतु संडीनचपला और रतिकाल ये दोनों सबसे पृथक् एक सरोवरके तटपर सोरहेथे इससे कैद होनेसे बचगयेथे जब उनकी आंखेंखुलीं वे उठकर वहां आये जहां औरसबथे परंतु जब वहां किसीको नपाया तबदोनों वहांसे उड़ कर चले और मार्गमें उन्होंने देखा कि सबके सब एक जंजीर में बंधे हुएहैं और एक म्लेच्छ उनको लिये जाताहै यह देख कर रतिकाल कूदकर पृथ्वीमें प्रवेशकरगया और उस म्लेच्छ के समीप निकलकर ऐसा अट्टहासाकिया कि वह मूर्च्छितहोकर गिरा और संडीनचपला उसके ऊपर कड़ती हुई गिरी और उसके शरीरको दो टूक करती हुई पृथ्वी में प्रवेश कर गई

उसके मरनेसे भयंकर शब्दहुआ और यह वाणीहुई कि मुझ
को मारडाला मेरानाम सिद्धतंत्रीथा और वे मायाकृत चालीसों
पुतले नष्टहोगये जंजीर खुलगई और सब उसआपत्तिसे मुक्त
होकर अपनी सेनाकीओरचले इसअवसरमें प्रातःकालहोगया
और सूर्यने उदयहोकर प्रकाशकिया सबको मार्ग दीखनेलगा
और सब म्लेच्छ इकट्ठेहोकरचले परंतु बहुरूपिये इसविचार
से पृथक्होकर चले कि यदि कोई आपत्ति आवैगी तौ हम
सहायताकरेंगे निदान जब ये सब वहांसे चले तब मायाकृत
पुतलों ने महेन्द्रको समाचार सुनाये कि सिद्धतंत्री मारागया
यह सुनकर महेन्द्रने उसीसमय बीडीनचपला को बुलाकर
आज्ञादी कि तू जाकर सब शत्रुओंको मारडाल एकभी जीता
न बचने पावै और जो तू ऐसा न करैगी तौमें दंडदूंगा यह
सुनकर बीडीन चपला बड़ा क्रोध करके वहांसे चली परंतु
बहुरूपिणी जो चली थीं उन्होंने मार्गमें रानी निशाकरी आदि
को देखा और शीघ्र अपने स्वरूप उनकी सेनाके बहुरूपियों
केसे बनाकर उनमें आनमिलीं और बातें करतीहुई चलीं परंतु
आंख बचाकर मूर्च्छाकर चूर्णउड़ाती जातीथीं वह चूर्णजो मार्ग
की धूलके साथ उड़कर हरएकके मुखपरपड़ा सब अचेत होकर
गिरपड़े तब उन बहुरूपिणियों ने वस्त्र फैला कर अपने २ बलके
अनुसार दोदो तीनतीनको बांधकर पृष्ठभार बनाये और उनको
लादकर लेचलीं और सबको झाड़ियों में बांध बांध कर इस
प्रयोजनसे छिपादिया कि फिर आकर लेजायंगी निदान जब
ये बांध कर लेगईं तब बीडीनचपला भी वहां पहुंची परंतु वहां
किसी को उसने नहींपाया और क्रोधितहोने के कारण से एक
पर्वतपर जाकर गिरी और उसे जलाकर कोलाकरदिया इस
पर्वत के समीप कहीं चपला बहुरूपिया भी मौजूद था उसने
देखा कि एक म्लेच्छी जिसके बालोंकी एकलट सुनहली और

दूसरी रुपहरी है चपला बनकर एक पर्वतपर गिरीहै देखतेही
उसने तुरंत अपनारूप एक मायावी म्लेच्छकासा बनाया और
गले में झोली डालकर उसका बध करनेकी इच्छासे उसके
सन्मुख गया और बोला कि श्रीजी यह कैसाकोप है कहिये
क्षेम कुशल तो है विडीनचपला ने उसे मायावी म्लेच्छ जान
कर सब वृत्तांत कहा और बोली कि अब में बेबश हूं लौटी
जातीहूं महाराजसे कहदूंगी निशाकरी आदि निकलगई जो
आज्ञा होय तो उनको उनकी सेना से पकड़लाऊं यह सुनकर
चपला बोला कि सत्यहै श्रीजीआपऐसीही हैं परंतु अबआप
बड़ी दूरसे चलीहुई आई हैं इससे थोड़ीदेर ठहरकर विश्राम
करलीजिये और मेरे पास कुछ मेवाहै जो आज्ञाहोतो निवेदन
करूं उस को खाकर जल पीलीजिये यह सुनकर वहबोली कि
अच्छा लाइये कुछबुरी बातनहीं है हम और आपतो एकही
हैं तबचपलाने अपनी झोलीमें से अनेक प्रकारकीमेवा मूर्च्छा
कर चूर्णमिलीहुई निकालकर सामने रक्खी विडीनने उन को
अच्छी प्रकारसे देखा और उसको मायाबलसे विदितहुआ कि
इनमेवोंमें मूर्च्छाकर चूर्ण मिलाहै इनको खाना उचित नहीं है
यह जानकर वह क्रोध से चपलाको हाथमें दबाकरउड़ी और
महेन्द्र के सन्मुख लेआई और बोली कि और तो कोई नहीं
मिला यह बहुरूपिया मिलाथा उसको लेआईहूं यह सोचकर
महेन्द्रने अनुमानकिया कि इसने अपनी सुकुमारता के कारण
से सब शत्रुओंको नहींढूंढ़ा नही तो न मिलनेकी क्याबात है
सब शत्रु मार्गहीमेंथे ऐसा संभव नहीं है कि इतनी थोड़ीदेरमें
वे सब अपनी सेनामें पहुंचगये हों यह अनुमान करके उसने
क्रोध करकेकहा कि अरे दुर्भगा मैंने यह कबतुझसे आज्ञादी
थी कि तू एक बहुरूपिये को पकड़लाई है तैंने अपनी मौसियों
को क्यों नहींढूंढ़ा जा मेरे पास से उठजा और इस बहुरूपिये

को विचित्रमायाके पास पहुंचादे यहसुनकर वीडीनचपलाडरी और चपला को लेकर विचित्रमायाके पासआई उसने इसका सत्कारकिया और बैठनेको आसनदिया और पूछाकि इसबहु-रूपिये को क्योंकरलाई वहउसको जैसेही उत्तर देनेकोहुई तैसेही एक म्लेच्छने आकर कहा कि बहुरूपिणी पृष्ठभार लादेहुए आई हैं यह सुनकर विचित्रमायाने मायारत्नसे कहाकि समीर-रूपाके डेरेमें जाकर खबर लाला कि किसको लाई हैं वहगई और यह समाचारलाई कि रानी निशाकरी को उसकी सेना के सेनापतियों सहितलाई हैं यह सुनकर वीडीनचपला ने वि-चित्रमायासे विनय की कि महाराज महेन्द्र मुझपर इन धर्म घातियों के न पकड़े जाने से क्रोधित होगये हैं इससे जो आप इनसब को समीररूपासे मुझे दिलादें तो मैं महाराजके पास इनको लेजाकर अपना अपराध क्षमाकराऊं और सबको उनके सन्मुख बधकरूं विचित्रमाया बोली कि अच्छा क्याडर है जाओ ले लो यह सुनकर वीडीनचपला वहां से उठकर समीररूपाके पासआई और बोलीकिला अपराधियों को मुझे देदे मैं महाराजके पास लेजाऊं यह सुनकर समीररूपा बोली कि वाह आपने तो वही बातकही कि कपोत तो प्राणदे और कागखांय आप इनके लेजानेवाली कौनहैं हम आपलेजायंगे यह सुनकर वीडीनचपला क्रोधित होकर दुर्वचन कहनेलगी तब समीररूपाने प्रातासे कहा कि इसकोलेतो उसने तुरंतएक मूर्च्छांड उसकेमारा कि वह मूर्च्छित होकर धमसे नीचे गिर पडी तब समीररूपा उसको पृष्ठ भारमें लादकर विचित्रमायाके पास लेगई और उससे सब वृत्तांतकहा तब विचित्रमाया उस पर क्रोध करके बोली कि अब तेरी ऐसी सामर्थ्य होगई कि तू राजपुत्रियों का अपमान करनेलगी शीघ्र इसको चैतन्यकर यह सुनकर समीररूपाने वीडीन को चैतन्य करदिया और वह

चैतन्य होतेहीपुकारी अरीसमीररूपामैं अभी चमककरगिरती हूं तेरे दो टुकड़ेकरे डालती हूं यह सुनकर विचित्रमाया बोली कि हांहां यह क्या करती हो इन बहुरूपिणियों का कुछ अपराध नहीं है इन्होंने अपने प्राण बेचकर यहकर्म किया है यह सुनकर बीडीन बोली कि अपने अपने दिन सबको भूलजाते हैं तुमजो सिंहासनपर बैठीहो तो तुम्हारी आंखोंकेआगेकाला वस्त्र पड़ा है अबयह सभा बैठने के योग्य नहीं है यह कहकर वह उड़कर चलदी और चलते समय चपलापर से अपनी मायाका वेष्टन दूरकरतीगई और कहगई कि देख समीररूपा महाराज महेन्द्रसे तेरा वृत्तांत कहकर तेरा क्याहालमैं करती हूं यह सुनकर समीररूपा भयभीतहुई और विचित्रमाया के पैरों परगिरपड़ी उसने उठाकर उसको छातीसे लगालिया और धैर्य देकरकहा कि मेरा शिर तेरे शिरके साथहै और फिर चपलासे बोली कि बताअबतेरा क्याहालकरूं उससमय चपला अपनेको मायाके वेष्टनसे मुक्तदेखकर बोला कि हमयहां क्या आयेहैं दोचारकी मृत्युआईहै यह सुनकर मायारत्न बोली कि अरेमरे तू क्या बकता है क्या तुझको तेरी दिनदशाने घेराहै चपलाबोला कि हमसत्यकहतेहैं जहां हमारे चरणगये दशबीस काशिर काटलिया और दोचारको लूटा और चलदिये यहसुन कर विचित्रमायाने क्रोध करके जैसेही चाहा कि निम्बुक अस्त्र का प्रहारकरै तैसेही चपला समीररूपा के एकधौल लगाकर और फलांगमारकर भागा समीररूपा उसके पीछे दौड़ी और कोलाहल हुआ कि लेना जाने न पावै और चपलाजो बाहिर निकला यह कहता हुआ भागा कि भागो शत्रुकी सेना आन पहुंचीहै यह सुनकर सेनामें भगदड़ पड़गई और दूकानें बन्द होने लगीं बणिक अपने धन पर औंधे पड़ गये कि पहिले हमको कोई मारले तब हमारा धन ले स्त्रियां अपने २ पुरुषोंसे

लिपट करशेने लगी कि तुम डेरेके बाहिर मत निकलो और पुरुष कहनेलगे कि जो यहां आवैगा उससे हम लड़ेंगे वहां जाकर क्याकरेंगे निदान एक कोलाहल मचगया और चपला भागा हुआ जब वनमें आया उसको समीररूपा ने घेरलिया और दोनोंसे लड़ाई होने लगी उससमय चपला ने यह विचार करके कि गुरुआनी का हाथ न कटै पटकरके एक भुजाली समीररूपाके हाथमें मारी उसके प्रहारसे समीररूपाके हाथकी अँगूठियां उतरकर गिरपड़ीं समीररूपा झुककर उन अंगूठियोंको उठाने लगी कि इतनेमें चपलाने पाश फेंकी और समीररूपा उसमें उलझगई परंतु उसीसमय विचित्रमाया हस्त बनकर आई और समीररूपाको पाशमें बंधीहुई देखकर चमक कर गिरी और घबराहटमें चपलाका पीछा न किया जो भागा था केवल समीररूपा को उठालेगई और उसे सेनामें न लाई किंतु रक्तबाहिनी नदीके उसओर लेगई तब चपलाने वेअंगूठी उठालीं और उसनदीको उल्लंघन करताहुआ पारकोचला और जब भूमसेतपर पहुँचा तब उस नदीने अंगूठी समीररूपाकी पासहोनेसे मार्गदिया परंतु एकनदीका रक्षक उसकेपीछे दौड़ा और बोला कि अरेबहुरूपिये वहअंगूठीदेताजा जो महाराजने समीररूपाको दीहै नहीं तो मैं तुझे मारडालूंगा यह सुनकर चपलाने एक अंगूठी जिसपर महेन्द्रका नाम खुदाहुआ था फेंकदी और फिर जो आगेकोचला उसनदीसे अग्निकी ज्वाला निकलनेलगी और भयानक शब्दहोकर मार्ग बन्दहोगया तब चपला वहांसे फिरा कि अब चलकर अपनी सेनाके अधिकारियोंको छुड़ाऊं वह सुन तो चुकाही था कि समीररूपा पकड़ कर लाईहै बस उसने अपनारूप समीररूपाकासा बनाया और उसके डेरेमें आया वहां प्राता पृष्ठभार लियेहुए बैठीथी उसने देखा कि समीररूपा पसीनोंमें भीगीहुई और हांपतीहुई आई

है भुजालीमें दांते पड़गयेहैं और पैरोंके फूलभी टूटगये हैं यह देखकर उसने पूछा कि हे राजपुत्री यह क्या तुम्हारी दशा है वह बोली कि तुमने नहीं सुनाहै मुझसे और चपलासे खूब भुजाली चलीथी अबला इनअपराधियोंको विचित्रमायाकेपास लेजाऊं यह कहकर उसने उनपृष्ठभारोंको खोलकर सबको चैतन्यवर्ती सुंघाई सूंघतेही रानी निशाकरी और आनन्दा आदि चैतन्य होगईं और प्राता उनको देखकर वहांसे भागी और ये दश पांच सेनापति जो चैतन्य हुए और सबहाल सुना सब मायाकृत अस्त्र लेलेकर विचित्रमायाकी सेनापर आपड़े इसी अवसरमें वे सबभी जिनको बहुरूपिणी मूर्च्छितकरके झाड़ियों में छिपाआईथी चैतन्यहोकर वहां आगये और रानीनिशाकरी आदिको युद्ध करतेहुए देखकर ये भी त्रिशूल आदि मायाकृत अस्त्रलेकर टूटे रानी विचित्रमायाकी सेनाके लोग तो पहिलेही से डरेहुएथे और सुनचुकेथे कि शत्रुसेना आतीहै निदान इस लड़ाईमें वे घबराकर भागे परंतु जो उनमें शूरवीर और माया कोविदथे वे लड़नेलगे खड्ग दोनों ओरसे बिजली बनबनकर गिरनेलगे और रक्तकी नदी बहनेलगी कि उसमें म्लेच्छों के शिर और धड़ डूबते उछलतेहुए बहे चलेजाते थे कहीं अग्नि की वर्षाहोती थी कहीं मायावी म्लेच्छोंके मरनेका कोलाहल होताथा कहीं रंतिकाल पृथ्वीसे निकलकर अट्टहास करताथा संडीनचपला गिरकर म्लेच्छों को भस्म करतीथी एक प्रलय काल मचाथा कोई अपना पराया नहीं चीन्हताथा सब युद्धमें जो आगे आताथा उसको मारते थे॥

वसुकलाछन्द॥

तेसुभटशुद्ध। करिघोरयुद्ध॥ भरिरुधिरगात। भे अतिविभात॥ बढ़ि डाटिडाटि। धनुकाटिकाटि॥ धनुधारिधारि। शरमारिमारि॥ जयऊटि

ऊटि। हटिटूटिटूटि॥ थिरुटेरिटेरि। रथफेरिफेरि॥ तनचाहिचाहि। शर वाहिवाहि॥ कीन्हे भमान। संगरमहान॥

निदान पहिले जो सेनाके लोग भागगयेथे वेसब इस युद्ध की व्यवस्था सुनकर आनेलगे और विचित्रमायाकी सेनापराजित होकर हटगई और रानी निशाकरी सब सामग्री युद्ध की और डेरे तंबू आदि जो मेघनादके युद्धमें लुटगयेथे उनसबको विचित्रमायाकी सेनासे लूटकर अपने प्राचीन वासस्थल पर आई और फिरसे डेरेतंबू खड़ेकियेगये हाटलगगई रक्षक नियतहोगये प्रबन्धहोनेलगा और जो जो सभासदथे वे सभामें आकर विराजमानहुए और रानीनिशाकरी सिंहासनपर विराजमानहोगई सभा आनन्दसे छागई गंधर्विणी गाने और वेश्या नृत्य करनेलगीं और जो जो उनमें मद्यपीनेवालेथे उनको मद्य पानक उत्तमोत्तम मद्यपान करानेलगे उससमय प्रहासकोछोड़कर सब बहुरूपिये भी सभामें आये रानीनिशाकरीने उन सब को बहुतसा पारितोषिक द्रव्यदिया और प्रहासके लिये विनय की कि हे विष्णु भगवान् प्रहास निद्रावतीके हाथसे मुक्तहोकर शीघ्र आवें उससमय चपला बोला कि मुझको समीररूपा की अंगूठी मिलगई थी उनमें एकअंगूठी ऐसीथी कि उसके कारण से रक्तवाहिनी नदीने मुझे जानेको मार्गदिया परंतु मैं उसपार इसकारणसे नहीं गयाथा कि मुझको आप सबको छुड़ाना था परंतु मैं अब जाताहूं यह कहकर वह चलदिया और बहुरूपिये भी प्रहासको ढूंढ़नेकेलिये मार्गीहुए परंतु वहां विचित्रमाया जो समीररूपाको नदीके पार लेकरगई एकस्थानपर ठहरगई और बोली कि अरी समीररूपा इससमयमें ऐसी घबरागई कि चपलाके बदले तुझे पकड़कर लेआई मैं अब महाराज के पास जातीहूं कहीं ऐसानहो कि चपला कुछ उपद्रव मचावै इससे तू सेनाकी ओरजा यह सुनकर समीररूपासेनामें चलीआई और

विचित्रमाया महेन्द्रके पासगई परंतु यहांआकर उसने जाना कि वीडीनचपला अपने घरको चलीगई महाराजके पास नहीं आई तब उसने समीररूपा और वीडीनचपलाके झगड़ाहोने का सबवृत्तान्त कहा उसको सुनकर महेन्द्र बोला कि मुझको मायाबलसे सब वृत्तान्त पहिलेहीसे मालूमहोगयाथा हेविचित्र- माया जब दिनदशा आती है तब ऐसाही होता है आपस में फूट पड़जातीहै और बुद्धि भृष्टहोजाती है भला मैं पूछताहूं कि वीडीन जो सबको मांगतीथी तौ उसमें क्या बुराईथी अब अ- च्छाहुआ कि चपलाने सब शत्रुओंको चैतन्य करदिया उन्होंने सब तौ तुम्हारी सेना लूटली और अब पहिलेकीभांति अपनी सेनामें आनन्दपूर्वक विराजमानहैं देखोएकतौ सब शत्रुछुटगये दूसरे वीडीनचपला बुरामानकर चलीगई तीसरेतुम्हारी सेनाके लोग अलग नाशहुए ये सब बातें केवल इस समीररूपा के कारणसे हुई हैं और तुम्हारा कैसा प्रबन्धथा जो तुमने बहुरू- पिणीके कहनेसे आपत्तिके आनेका विचारनहींकिया यदि हमारे अनुचर अपने धर्मपर आरूढ़ होते तौ यह शोचते कि अप- राधियोंको जैसे हम लेगये तैसेही जो कोई दूसरा लेजाय तौ क्या अनुचितहै प्रयोजन तौ यहहै कि सब शत्रु जिस प्रकारसे होसके मारेजावें परंतु ऐसा विचार किसीनेनहींकिया अब तुम जाओ और अपनी भागी हुई सेनाको इकट्ठाकरो मैं निद्रावती और मायावतीकी राह देखरहाहूं कि वेप्रहासको पकड़करलावें तौ मैं परमेश्वरके कलिको बुलवा कर प्रहासका वध करवालूं फिर और सबके मारनेकाभी उपाय करूं क्योंकि सबसे बढ़कर प्रहासही उपद्रवीहै यह सुनकर विचित्रमाया लज्जितहुई और अपनी सेनाकी पराजय सुनकर बड़ी शीघ्रतासेअपनी सेना में आई और डिंमाडिंम पिटवाकर सब भागेहुए सेना के म्लेच्छों को फिर इकट्ठा किया डेरेखड़े कराये और हाटें लगवादीं और

अपनी लज्जाको दूर करनेके प्रयोजनसे आज्ञादी कि नाचहोय और वहांभी नृत्य होने लगा अब समीररूपाका वृत्तांत सुनिये कि वह नदीके पार आकर यह विचार करती हुई चली कि मैं निशाकरीकी सेनामें जाकर किसी बहुरूपियेका भेष धारण कर के कुछ छल करूं क्योंकि चपला जो छूटगया है उसने अवश्य अपनी सेनाके सेनापतियों को छुड़ायाहोगा यह विचार करके उसने अपना स्वरूप प्रहासकासा बनाया और थोड़ीदूर आगे गईथी कि उसको एक स्थानपर कुछ म्लेच्छ बैठेहुएमिले उन्हों ने इसे देखकर जाना कि यह कोई शत्रु सेनाका बहुरूपिया है यह जानकर उन्होंने समीररूपाको मायाकरके पकड़लिया तब उसने कहा कि मैं बहुरूपिणीहूं मेरानाम समीररूपाहै मैं महा-राज महेन्द्रकी नौकरहूं परंतु म्लेच्छोंने एकन माना और चाहा कि शिर काटलें परंतु चपलाजो प्रहासके खोजमें चलाथा उधर आनिकला और देखा कि म्लेच्छ एक बहुरूपियेको मारनाचाह-तेहैं जब समीप आया तब देखा कि प्रहासहै परंतु जब अच्छी तरहसे दृष्टिकी तब पहिचानाकि समीररूपाहै और अपने चित्त से कहाकि यह हमारे गुरूकी प्यारीहै इसकोभी छुड़ाना उचित है निदान उसने अपना स्वरूप एक म्लेच्छकासा बनाया और दूरही से पुकारकर बोला कि भाई तुमने बड़ा काम किया जो इसछलीको पकड़ा शीघ्र इसका शिरकाटलो यह सुनकर समीर-रूपा चकितहोगई कि यह दूसराशत्रु कौन प्रकटहुआ इतनेमें चपला समीप आ गया और बोला कि मैं आज इसको टुकड़े टुकड़े करके खाऊंगा इसने सहस्रों म्लेच्छोंको माराहै और इस के प्रेतको वशमें करनाचाहिये बड़ेकाम आवैगा यहकहताहुआ समीररूपाके पास चलागया और बोलाकि गुरानीजी कहो तो तुमको बचालूं मैं चपलाहूं यह सुनकर समीररूपा बोली कि अरे मरे तू गुरानीभी कहताहै और अपना अनुग्रहभी जता-

ताहै जो मैं अभी कहदूं कि यहभी मेरेसाथका बहुरूपियाहै तौ अभीतू माराजाताहै यहसुनकर चपला घबराया कि देखो इस की कृतघ्नता कि और उलटा धमकातीहै परंतु अपने गुरूकी प्यारी जानकर उसने उसका छुड़ाना उचित समझा और वह उस म्लेच्छकेपास गया जिसने उसे पकड़ाथा उससमय और म्लेच्छ चलेगयेथे चपलाने उसे बातोंमें लगाकर एक मूर्च्छा-डमारा कि वहम्लेच्छ मूर्च्छित होगया तब चपलाने उसकाशिर काटडाला उसकेमरनेसे कोलाहलहुआ और समीररूपा बन्धन से छुटकरभागी तब चपलाने पुकारकरकहा कि गुरानीजी अपने माथेपर कोई चिह्न बनवाओ अथवा नाककी पुनग कटवाडालो जिससे लोग बहुरूपिया और बहुरूपिणीमें भेदजानाकरें तब समीररूपा बोली कि अरेमरे तू मुझसेभी ठट्ठाकरता है क्या तेरी दिनदशाने घेराहै संसारकी कहावत है कि माछोड़मौसी से ठट्ठा चपलाबोला कि गुरानीजी क्रोधनकीजिये मुझसे अपराधहुआ परंतु यह बतादीजिये कि गुरूजी को कौन पकड़ लेगया है समीररूपा बोली कि निद्रावती पकड़कर अदृश्य खण्डमें महेन्द्रके पास लेगई है ऐसे स्थानसे प्रहासका छूटना दुर्लभ है चपलाबोला कि परमेश्वर रक्षकहै यह कहकर समीर रूपा एकओर को और चपला दूसरी ओरको चलदिये॥

इतिश्रीआगरापुरनिवासिचौरासियागौड़वंशावतंसश्रीपण्डितमोहनलालात्मजपण्डितकुंजबिहारीलालकविनाविरचिते अद्भुतचरित्रे प्रथमखण्डे सप्तमोध्यायः॥

आठवाँअध्याय॥

छल विद्याधिप श्री प्रहासका अदृश्यखण्ड में महेन्द्र के पास पहुंचना चित्रांगदका प्रहासके मारनेको मायाकृत देशमें आना प्रहास का छल करके महेन्द्रकी सभाका लूटना और

अदृश्य खण्डमें भ्रमण करना और बड़े २ मायावी म्लेच्छोंका वध करना और बहुत दिनोंकेपीछे मायाकृत नदीको उल्लंघन करके अपनी सेनामेंआना और भीमविक्रमके पुत्रपर आसक्त होनेके कारणसे मायावती का प्रहासकी सहायता करना और प्रहासका अदृश्य खण्डमें बिहारकरना ॥

जयकरीछंद ॥

हे प्रभु वरदायक वागीश। बिनवोंतोहिं नाइमहिशीश ॥
करोंप्रणाम बहोरि बहोरि। मांगों यही निहोरि निहोरि ॥
देवहु मोहिं मधुर मकरन्द। वरप्रज्ञाकर आँनँद कन्द ॥
जाते लहै चित्त आनन्द। भ्रमतजि होयबुद्धि स्वच्छन्द ॥
बागरूप मायाकृत देस। चमत्कार तहं फूल असेस ॥
होंमधुकरहोइतामधिजाय। करिबिहारतेहिलखोंसचाय ॥
तेहिलखिबिवरणनकरोंअनूप। दरशावों ताको सवरूप ॥
ताके शुभपाठ अरुछन्द। नरपढ़ि लहहिं परमआनन्द ॥

इस मनको आह्लाद देनेवाली कथा को सौरभ महाराजने इस अध्यायमें इस प्रकार से वर्णनकिया है कि जब निद्रावती उस छलरूपी मदसे मदोन्मत्त अर्थात् प्रहासको मेघनाद की सभासे लेकर मायाबलसे आकाशमार्गी हुई तब रक्तवाहिनी नदीके पार आकर ताम्राचल और लोहाचल और हिमाचल और चन्द्राचल आदि पर्व्वतोंपर होतीहुई चली ये सब पर्वतभी उसी प्रकार से अलंकृत थे जिस प्रकार से चीन पर्व्वत था जिस का वर्णन पूर्व में होचुका है निदान जब इन सब पर्वतों की शोभाको देखतीहुई वह आगे बढ़ी तब केसर बन में पहुंची यह बन किशोर केसरी मायाके विहार करनेका स्थान था यह किशोरकेसरी महेन्द्रकी भानजी थी और उस बन से केसरी दुर्गतक जो देशहै उसकी यह रानीथी इस बनमेंजितने पर्वत और नदी और तड़ागथे उनसबको किशोरकेसरी ने बहुत प्रकारसे अलंकृत करायाथा और वहस्थान बड़ाउत्तम और

मनोरमथा निद्रावती वहां पहुँचकर वहांकी शोभा देखने लगी कोसोंतक वृक्षशोभायमान और फूले फलेहुए लगेहुएथे मोतियोंके जाल पड़ेहुएथे केसरकी क्यारियां खिलीहुईथीं पहाड़ोंकी डांगमें पीतवर्णकी मणियों की नाँदें बराबरसे रक्खीथीं उनमें नानावर्ण और नानाजातिके फूलोंके फूलेहुये वृक्ष लगेथे उनके और पास प्रकार प्रकारकेवृक्ष उगेहुये अपूर्वशोभा देतेथे भांति भांति के पक्षी भांति भांतिकी मधुर वाणी बोलते थे और एक उड़कर दूसरेपर बैठ बैठकर अपूर्व आनन्द देरहेथे मृग नानावर्णके उछलते कूदतेहुये फिररहेथे और फूलों की आभा पड़ने से उनकावर्ण बड़ाही अपूर्व दिखाई देताथा निदान वह वन नन्दनवनकी शोभाकोभी लज्जा देनेवालाथा और यहमालूम होताथा कि वसंतऋतुके रहनेका यहीस्थानहै ॥

क० । फूले प्रकार प्रकार घनेद्रुममंजुलता वनछायरहीं ।
कंजजुही वरफूलनकी शुचिगंध तहां सरसायरहीं ॥
कीरकपोत सुकोयलियां मधुरी धुनिसोंसवगायरहीं ।
आनँदसोनहिंजातकह्यो सुखशोभासबै उमँगायरहीं ॥

और पहाड़पर एकओरको एक चालीस स्तंभका प्रासाद बनाथा और उसके सामने एक मन्दिर मणिजटित बड़ा मनोहर बनाथा उसमें मखमली परदेपड़ेथे उत्तमवस्त्र पृथ्वीपर डसे थे उनपर एक आसन मुक्ताओंसे अलंकृत बिछाथा सबपदार्थ भोगविलासके रक्खेथे पात्र नानाप्रकारकी मणियों के बने हुए स्थापितथे और किशोरकेसरी केसरिये वस्त्र धारणकियेहुए हाथ में रत्नोंकी बनीहुई छड़ीलिये पद्मरागके सिंहासनपर बड़ीशोभा सहित विराजमानथी और चारोंओर उसके परमसुंदरी दासियां केसरिये वसन पहिरेहुए उसकी उपासना कररहीथीं नाचहोरहाथा सब आनन्दमें मग्न और मद्यके आवेशमें निर्लज्जथीं ॥
चौ० नूतन रत्नजटित एक आसन । बिछोतहां अतिशय द्युतिभासन ॥

तापर धरे अमित उपधाना। शोभा भरे चढ़े पट नाना॥
मणिभाजन बहुभांति सुहाये। प्रभाभरे चहुं दिशि धरवाये॥
चन्द्रमुखी बहु दासी सोहैं। चंचल चपल फिरें मनमोहैं॥
काहूको अलवेली नामा। कोऊ रही न वेली वामा॥
कोऊ बोलति टेरें श्यामा। काहुक नाम रहयोछविधामा॥
ते सब हंसे चहूंदिशि डोलें। करि करि केलि परस्परबोलें॥
तिनमधि शुचि आसनआसीना। रही सो सुंदरि बालनवीना॥
क०। इन्दु सो आनन कंचन सोतन रूपमनोहर की छवि छाजै। औ अरविन्दसी आंखिनकी बरताकनि ताकत वाननसाजै॥ दांतन कीद्युति कौनकहै लखि जाहि सु दामिनि की द्युतिलाजै। रूपभरी छवि रूपखरी रतिरूप लजावति सो तियराजै॥

निदान निद्रावती जब उक्तशोभाकोदेखतीहुई चली जातीथी तब एक दासीने उसे जातेहुए देखा और अपनी रानीसे कहा कि रानी निद्रावती एकपृष्ठभार लियेहुए कहींको जारहीहैं यह सुनकर किशोरकेसरी उठी और पुकारकर बोली कि क्योंजी निद्रावती हमारे पहाड़के नीचे नीचे होकरजाना और हमसे भेटभी न करना तुम बड़ी कठिनहो मानो हमसे तुमसे कभी की जान पहिंचानहीनहीं थी यहसुनकर निद्रावती हाथ जोड़कर बोली कि इससमय मेरा अपराध क्षमा कीजिये मैं एकबड़े आवश्यक काममेंहूं फिर तुम्हारे दर्शनोंको आऊंगी किशोरकेसरीने कहा कि तुमको मेरी सौगंदहै खड़ीखड़ी एकपात्रमद्य पीतीजाओ और एक बीड़ीपानकी खाके चलीजाओ यह सुन कर निद्रावती बोली कि बहुतअच्छा आतीहूं निदान वहपर्वत पर आई किशोरकेसरीने उसे आदरपूर्वक बैठाया और पूछा कि ऐसी शीघ्रताका क्या कामहै और यह पृष्ठभार कैसाहै वह बोलीकि महाराज मेरी बाट देखरहेहोंगे उन्होंने मुझको प्रहास के पकड़ने को भेजाथा सो मैं उसे लियेजातीहूं इस पृष्ठभारमें वही बंधाहुआ है किशोरकेसरी बोली हां मैना मैंनेभी उसकी

बड़ाई सुनी है मेंभी तो उसका स्वरूपदेखूं कि कैसाहै इस पर उसकी मंत्रिणी चन्दनी बोली कि हां श्रीजी इसपृष्ठभारको खोलिये मेरी भी इच्छा है कि देखूं यह कैसा बहुरूपियाहै यह सुनकर निद्रावती विनयपूर्वक बोली कि यह बड़ाभारी छली है इसपृष्ठभार के खुलते ही या तो भाग जायगा अथवा कोई प्र-पंचरचैगा मेरासबपरिश्रम व्यर्थ होजायगा और श्रीमहाराजा-धिराज मुझपर और आपपर अप्रसन्नहोंगे इससे इसको न खोलिये इस निषेधको सुनकर उसकामन उदास होगया और वह बोली जानेदो जी क्या आवश्यक है हम इसलायक कहां हैं जो हमारा कोई सेवक हमारा कहामाने अच्छाजी निद्रावती लेजाओ जिसमें तुम अपना श्रेष्ठ समझो वहीकरो जब निद्रा-वतीने देखा कि श्रीमहाराजकी भानजी अप्रसन्न होतीहैं तब उसने वेबशीसे उस पृष्ठभारको खोलकर प्रहासको चैतन्यकिया परंतु मायासे ऐसा वेष्टित करदिया कि वहचल फिर नसके नि-दान जब प्रहास की आंखेंखुलीं तो उसने अपनेको एकपरमो-त्तम स्थानपर सुंदरी सुकुमारी छबीली स्त्रियोंमेंपाया और आ-श्चर्य करनेलगा कि मैं कहांथा और कहांआगयाहूं परंतु कि-शोरकेसरीको देखकर उसने साष्टांग दण्डवत्की और विनय पूर्वक कहनेलगा कि श्रीमहारानीजी की मायाकृत चमत्कार कर्ता रक्षाकरै प्रताप श्रीमहारानी का अखण्डरहै सुख और संपत्ति बनीरहै विपत्ति का नाशहोय मेरे बड़ेभाग्यहैं जो मुझे श्री महारानीजीका दर्शनहुआ आज मेरे सबमनोरथ पूरेहोंगे और जो मांगूंगा सो पाऊंगा॥

चौ० बहु वासर वितये दै आसा। आशा बशमन रहयो सुपासा॥
पायकालगति गयो उसासा। मन रहिगयो सुनिपट निरासा॥

प्रहासने उक्त चौपाइयों को ऐसे मधुर स्वरसे गानकरके कहा कि किशोरकेसरी का धीर्यजातारहा और उससे चन्दनी

ने कहा कि श्रीजी मैंनेसुनाहै कि यहगाता बहुत अच्छा इससे गवाइये तब वहबोली कि हे प्रहास हमको तेरागाना सुननेकी बड़ी इच्छा है अपना कुछ गानासुना यह सुनकर प्रहासबोला कि श्रीजी मेरानाम ऐसेही बातोंसे तौ बदनामहै लोगोंने मुझे मायावी और अधर्मी म्लेच्छोंका विध्वंसनकर्ता विदितकरदिया है मैंनेतौ आजतक चींटीतककोभी नहींमाराहैश्रीरानी निद्रावती कहती है कि मेरा शिर मूड़डाला भला इसलाञ्छन का क्या ठिकाना है आप मुझसे गवाती हैं ऐसानहो कि कहीं दो चारके शिर मुड़जायें निद्रावती की नाक कटजाय और दश पांच मारे जाय इससे यही श्रेष्ठहैकि मुझे जाने दीजिये और गाने बजाने की चरचा न कीजिये शिर मुड़ने की बातसुनकर निद्रावती लज्जितहुई और किशोरकेसरी बहुतहँसी और फिर बोली कि हे प्रहास कुछ अपना गानासुना प्रहास बोला कि महारानी जी इससमय मेराजी ठिकाने तौ हैही नहीं निद्रावतीजी मुझे मरवाने लियेजातीहैं मेरेहाथ पाओंमें नेकभी बलनहींहै मृतक-प्राय में पड़ाहुआ हूं क्या गाऊं और क्या बजाऊं यह कहकर प्रहास रोनेलगा और ऐसा करुणा विलाप किया कि किशोर-केसरीभी रोनेलगी और चन्दनीने उसकी दशापर सोचकिया और सबकी सब निद्रावती से कहने लगीं इस परसे मायाका बेष्टन दूर करदे उसने बहुत प्रकारसे सबसे कहा कि यह बड़ा प्रपंची है तुम सबको धोखा देकर चला जायगा परंतु किसीने उसका कहा न माना अंतको उसने परबशहोकर अपनी माया का बेष्टन उसपरसे दूर करदिया और वह बैठा होगया और किशोरकेसरीको बहुतप्रकारसेआशीर्वाद देनेलगा तब किशोर-केसरी बोली कि मायाकर्ताकी सौगंद प्रहास मैं तुझको बहुत कुछ दूंगी और महेन्द्रके पास लेजाकर तेरा अपराध क्षमा करा-दूंगी और तुझको खान पानको पृथ्वी और बड़ा अधिकार

दिवाऊंगी अब तू अपना गाना सुना यह सुनकर प्रहास बोला कि बहुत श्रेष्ठ जो कुछ मुझको आताहै वह मैं श्रीजीको सुनाताहूं परंतु मुझको एक तीयल परमोत्तम रत्नजटित मंगवादीजिये किमैं अपना शृंगार करके नाचूंभी और गाऊंभी और यह नसमझियेगा कि मैं तस्करहूं नमें आपकी तीयल बदलूंगा और नचुराऊंगा नाचने के पीछे ज्योंकी त्यों फेरदूंगा हांजो आपकी कोईदासी सच्ची तीयल बदलकर झूंठी रखदे तो मेरा कुछ अपराध नहींहै यह सुनकर किशोरकेसरी बोली कि नहीं प्रहासजी तुम बडेयोग्य पुरुषहो और समयके बड़ेसे बड़ेके साथ सत्संग करनेके उपयुक्तहो यह कहकर उसने आज्ञादी कि उत्तमोत्तम वस्त्र और आभूषणले आओ दासियां तुरंत ले आईं तब प्रहासने एकांतमें बैठकर अपना स्वरूप एक सुंदरी स्त्रीकासा बनाया और उनवस्त्र और आभूषणोंको धारण करके किशोरकेसरी के सन्मुख आया उसने पहिले जो इसका रूप देखाथातौ इसको एकनिपट दुर्बल और असामर्थ्य पुरुष जाना था परंतु अबजो उसके मोहनी स्वरूपको देखातौ चकितहोकर कहनेलगी कि मायाकर्ताने इसको कैसी सामर्थ्यदी है कि कभीतौ मनुष्यहै और कभी अप्सराहै और बड़ी देरतक उसके सुंदर स्वरूपको देखतीरही ॥

क० । मोतिनकी वेंदी वर कनक जरावजड़ी पाटी विच मांग मेरे मनको मोह्यो करै । भारे कजरारे अनिआरे वे तिहारे नैन रैनदिन मरे हियरेईको गह्योकरै ॥ मीठे वे सुअधर कपोल मुसक्यान लीन्हे मन्द मन्द मोहिं कछु बातसी कह्यो करै । जितै जितै लखों तितै तितै सुनि चन्द्र मुखी आनन तिहारो आंखि आगेही रह्योकरै ॥

निदान प्रहासने प्रथम तौ बजाने वालों से संगतकी उपरांत गति नाचकर सब देखने वालोंके चित्तको मोहित करलिया और फिर बांसुरी निकालकर बजानेलगा और उसमें अनेक

प्रकारकी तानोंसे मनाकर्षक पदगानेलगा उसको सुनकर सब चित्रकेसेलिखेहोगये और प्रहासनेअष्टपदीगानाप्रारम्भकिया॥

अष्टपदी रागपरज तिताला।

उरपर अरपित हार उदारा। शोभा अति कृशतन परभारा॥ राधिका विरहे तवकेशव १॥ध्रु०॥ मलयजपंकसरसयसिलावन। करत गरलजिमि अति तनु तावन॥ २॥ दीरघश्वास लेति निशिवासरज्वलितहोतिश्रति मदन दहनवर॥ ३॥ दिशि दिशि भरत सजल कणजालसु। नयन नलि नमनुविगलितनालसु॥ ४॥ किशलय शयन नयनके आगे। बूझत मनो हुताशन जागे॥ ५॥ करतलते नहिं तजति कपोलहि। नवशशि जैसे सांझअडोलहि॥ ६॥ हरि हरि जपत सकाम पियारी। मरण विरह वश जानि विचारी॥ ७॥ श्री जयदेव भणित यह गीतम्। केशवपद मुख करहु पुनीतम्॥ ८॥

इस अष्टपदीका गानाथा कि सबके सब प्रेममें मग्नहोकर रोनेलगे इसीअवसरमें सूर्यदेवने अपने तेज और प्रभारूपी वस्त्रोंको पश्चिम दिशारूपी घरमें जाकर उतारा और आकाश रूपीसभामें चन्द्रमारूपी राजाके सन्मुख नक्षत्ररूपी सभासद आ आकर अपने उचित स्थानोंपर बैठनेलगे अर्थात् दिन व्यतीतहुआ और रात्रिआई॥

सो०। अथये जब दिननाथ भई निशा बीत्योदिवस।
नक्षत्रनके साथ उदयो इन्दु प्रकाश युत॥

सायंकाल होतेही उस सबवनमें दीपक प्रज्वलित होगये वृक्षोंमें मणियोंके दीपक जटितथे और मन्दिरोंमें रत्नोंके पात्र जाज्वल्यथे स्फटिकके कमलोंमें कपूर की बत्तियां प्रज्वलितकी गईं और सुवर्ण के त्रिशूल और पंचशूलोंपर मोमकी बत्तियां लगाकर जलाईगईं उससमय प्रहासने अवसरपाकर मूच्छांकर पतंग निकाल कर कुछतो अपनी कमरमें रखलिये और कुछ हाथकी मुट्ठीमें दबालिये और नाचते नाचते जब किसी दीपक

के पास पहुंचताथा तब उनपतंगोंको भाव बतानेमें उन दीपकों के ऊपर दृष्टिबचाकर डाल देताथा उनके जलनेसे मूर्च्छाकर धूमफैला और सबके ब्रह्माण्डोंमें प्रवेशकरगया और उनसबके शिर घूमने लगे उन्होंने जाना कि मद्य अधिक पीनेके कारणसे ऐसा हुआहै और विचारकिया कि ठंडी वायुमें बाहिर टहलेंतो यह बात जातीरहैगी निदान किशोरकेसरी उठी कि जाकर जल से मुख धोऊं परंतु जैसेही उसके शीतल वायुलगी तैसेही वह मूर्च्छित होकर गिरपड़ी यहदेखकर चन्दनी और निद्रावती उस को उठानेकोउठीं परंतु वेभीवायुके लगतेही मूर्च्छित होकरगिर-पड़ीं फिरतो जो उठा उसीकी ऐसीही गति होगई निदान एक घड़ीमें सब सभाकी सभा मूर्च्छित होगई केवल प्रहासही एक रहगया क्योंकि उसने अपनी नाकमें दो फूल उन औषधि-योंके बनेहुए रखलिये थे जिनसे मूर्च्छाकर चूर्ण विकार उत्पन्न न करसके प्रकट होकि जहांकहीं ये बहुरूपिये मूर्च्छाकर चूर्णका धूआं प्रकटकरते थे तहां अपनेको इसी यत्नसे सचेत रखतेथे इसकारणसे अबआगे जहांकहीं इसप्रकारकी कथाआवैगी वहां यह वृत्तांत न वर्णन कियाजायगा पढ़नेवाले इसको उक्ति से समझलें निदान जबसब मूर्च्छित होगये तब प्रहास ने अपना जाल निकालकरमारा और वहां के सबपदार्थ लूटलिये बस्त्र आभूषण आसन बिछोना मणियों के पात्र रत्नों के पात्र परदे झालर वन्दनवारआदि कुछ न छोड़ा यहांतक कि पानी पीने को भी कोई पात्र न रहनेदिया और फिर खड्ग निकाल कर किशोरकेसरी और निद्रावती आदिको मारनेदौड़ा कि उसी समय महेन्द्रने अपनी अद्भुतजालकी पुस्तक निकालकरदेखा कि निद्रावती अबतक नहींआईहै देखूंउसपर क्याबीताहै और उससे उसको विदितहुआ कि प्रहास केसर वनमें सबका बध कियाचाहताहै यह जानतेही उसने कूटमायाकी उससे एकहस्त

प्रकटहुआ महेन्द्रने उसे आज्ञादी कि तू जाकर सबको प्रहास
के हाथसेबचा निदान यहां प्रहास निद्रावती का शिरकाटनाहीं
चाहताथा कि वहहस्तप्रकटहुआ और निद्रावतीकोलेकर पृथ्वी
में प्रवेश करगया तब प्रहास दूसरीबार किशोर केसरी के मारने
को दौड़ाकि उसका शिरकाटडालूं कि इतने में वहां मायावती
आगई जो प्रहासको ढूंढ़ने निकलीथी और जिसकावर्णनपूर्व
मेंहोचुकाहै और उसहालको देखकर ललकारबोली कि ठहरतो
तू यह क्याकररहाहै उसको सुनकर प्रहासनेचाहा कि भागजाऊं
परंतु उसीसमय निद्रावती पृथ्वीसे निकली और उसने माया
बलसेप्रहासके शरीरको स्तंभित करदिया और किशोरकेसरीको
चैतन्य करदिया और मायावतीने मायाकरके जलकी वर्षा की
कि उससे सबदास और दासियां चैतन्य होगईं परंतु सबनंगी
थीं उन्होंने उठकर दूसरे२ वस्त्र धारणकिये उससमय किशोर-
केसरीने मूर्च्छित होनेका सब वृत्तांतसुना और अपनी सभाको
उजाड़पाया तब निद्रावतीनेकहा कि क्यों राजपुत्री तुमनेदेखा
और अब आपको मेरे कहने का विश्वासहुआ मायाकर्ताने
बड़ी कुशलकीकि सबके प्राणबचगये नहींतो यहतो अपनाकाम
पूराही करचुकाथा और देखिये कि न कुछइसने खिलाया और
नकिसीको कुछपिलाया केवल बातोंहीं बातों में सबको मूर्च्छित
करदिया मुझेइसनेजाना कि यहकिसीको मद्यनपीनेदेगी इससे
मद्यकानामभी न लिया परंतु नजाने क्यामायाकी कि सब मूर्च्छि
तहोगये इसकेगुण अद्भुत जालमें लिखेहैं यह आपत्तिऔर छल
कारूप है यह सुनकर किशोरकेसरी बोली कि अब तुम इसको
शीघ्र यहांसे लेजाओ मैं भी यहां नठहरूंगी अपने महलों में
जातीहूं कहीं इसदुष्टके चरणोंके यहां आनेसे सबबन मूर्च्छाकर
चूर्ण कासागुण रखनेवाला न होगयाहो यह सुनकर निद्रावती
उससेविदाहुई और प्रहासकोमूर्च्छितकरके और उसकोबांधकर

पृष्ठभार बनाया और उसे लादकर चली उससमय मायावती बोली कि भैना इसका महेन्द्रके यहां लेजाना श्रेष्ठनहीं है प्रथम तो यहहै कि यह वहां जाकर कुछ उपद्रव न करे दूसरे बहुरू- पियोंको अपना शत्रु बनाना मुझको श्रेष्ठ नहींमालूम होताहै आगे जो तेरी इच्छाहो सोकर परप्राणबचने दुर्लभ पड़जायंगे उचित तो यहहै कि इसको मायाकृत नदीके पार छोड़आ और महाराजसे चलकर कहदे कि प्रहास मार्गमें छूटगया यह सुन कर निद्रावती क्रोधित होकरबोली भैना मायावती तेरीदशातो मुझको कुदशा दिखाई देतीहै मायाकर्ता कुशलकरै तू मुझको बहुरूपियोंसे बहुत धमकातीहै और उनकापक्ष लेतीहै अच्छा तुम्हारी जो इच्छाहो सोकरो परंतु मैंतो जिसका अन्नखातीहूं उसके विमुख न होउंगी यह कहकर वहपृष्ठभार लियेहुए चल दी और मायावतीभी किशोरकेसरी से विदाहोकरचली परंतु विचारकरनेलगी कि तैंने प्रहासको पकड़वातो दियाहै परंतु उस के चित्तमें तेरीओरसे बुराई होगईहोगी ऐसानहोकितुझे कुछ दुख पहुंचावे और दूसरे तू यह गुप्तवार्ता भी जानती है कि इनमायाकृत चमत्कारोंकी आयु पूरी होगई है और यह किसी से मारा न जायगा किंतु जो इसके विमुखहोगा वही माराजाय गा इससे अब उचितहै कि प्रहासको छुड़ाकर उससे अपना अपराध क्षमाकराल्लूं कि मेरेसाथ कुछ बुराई न करै यह विचार करके वह निद्रावतीके पीछे पीछे होली और मार्गमें एकपर्वत की कंदरामें बैठकर कुछमायाकी कि उससे एकबादल प्रकट हुआ और निद्रावतीके ऊपर जाकर बर्षनेलगा जो वनमेंचली जातीथी और वह यहतो जानतीही नहींथा कि मेरे ऊपरकोई माया करैगा इससे उस मायाकृत जलकी बूंदोंके पड़तेही वह मूर्च्छितहोगई तबमायावती वहांआई और प्रहासको खोलकर उसको चैतन्य करके हाथजोड़कर बोली कि मैं आपकी दासीहूं

मुझपर कृपादृष्टिरखियेगा मैं इससमय और कुछवृत्तांतनहीं कह सकतीहूं और इससमय निद्रावतीको भी नमारिये क्योंकि मेरी बदनामीहोगी और इससमय में आपको मायाकृत नदीकेपारभी नहीं लेजासकतीहूं क्यों किसमय थोड़ारहगयाहै मैं और आप दोनों पकड़े जायंगे इससे यह श्रेष्ठहै कि आप भागजाइये यह कहकर मायावती एकओर को चलदी और प्रहासभी भागकर एकस्थानपर छुपरहा और मायावतीने दूरजाकर अपनीमायाका बेष्ठन निद्रावती परसे दूरकरदिया और वहचैतन्य होगई और प्रहास को छूटकर गयाहुआ और अपनेको अपने आपसे मूर्च्छित होजाना देखकर भयभीतहुई और मायाबलसे आकाश में उड़कर प्रहासको ढूंढ़तीहुई मायाकृत नदीके पारहोकर विचित्रमाया की सभामें पहुंची और विचित्रमायासे सबवृत्तांत वर्णन करके कहा कि मैं अकेली श्रीमहाराजके पास जाऊंगी मार्गमें कुछ तो उपद्रवहै जो मैं मूर्च्छित होगई और दूसरेजब मैं जाऊंगी तो श्रीमहाराज मुझपर अप्रसन्नहोंगे कि तू प्रहास को क्यों नहींलाई निदान वह येबातें कहही रहीथी कि इतनेमें वहां महाराज महेन्द्रकी सवारी बड़ी धूमधामसे आई क्यों कि जब निद्रावतीके जानेमें विलम्बहुई तब महेन्द्रसेनाकी ओर चलाआया कि देखूं वहां क्या होरहाहै निदान विचित्रमाया ने सबमान्य म्लेच्छों सहित बढ़कर महेन्द्रकी आगौनी की और वह सभामें आकर सिंहासनपर विराजमानहुआ उससमय निद्रावतीने सब पूर्ववृत्तांत ज्योंका त्यों निवेदनकरके कहाकि महाराज अमुकस्थान पर मैं अपने आप मूर्च्छितहोगई और प्रहास निकलगया महेन्द्रबोला कि कोई बहुरूपिया प्रहासके छुड़ाने को मायाकृत नदीके पार उतरगयाहोगा वहीं घातमेंहोगा और अवसर पाकर तुमको मूर्च्छित करके उसे लेगयाहोगा अथवा यह नहींतो अदृश्य खण्डमें प्रहासका कोई मित्रहोगा और उस

ने तुमसे अनजानमें उसेलेलिया होगा परंतु जो वहनदीके पार है तो वहांसे उसका छूटना असंभव है और मेरे सिवाय उसको पार नदीके कोई नहीं लासकताहै परंतु जो कोई मायाकी गुप्त वार्ता जानताहोगा वहचाहे पहुंचादे इससे अब चित्रांगदको बुलवाना उचित है प्रहासको मैंजबचाहूंगा तभी अदृश्य खण्ड के मायाकृत वनसे पकड़वा मंगवाऊंगा यहकहकर महेन्द्रने कुछमायाकी कि उससे एकसिंह और सिंहनी दहाड़तेहुए सभा में आये महेन्द्रने उनको एकपत्र लिखकरदिया उसमेंलिखाथा कि हे परमेश्वर अपनी सभाके कलि चित्रांगदको मायाकृतदेश में भेजदीजिये कि इस देशको भी देखें और अपनेशत्रु प्रहास को भी मारें यह पत्र सिंहको देकर फिर कुछमायाकी कि एक श्वेत वर्णका गृद्ध उड़ताहुआ आया और पर खोलकर साम्हने बैठगया तब उसने उसके ऊपर एक रत्न जटित चौकीरेशमकी डोरियोंसे बंधवाई और चौकीपर महान् उत्तम वस्त्र बिछवाकर सिंहसे कहाकि मायाकृत देशकी सींवातकतौ परमेश्वरके कलि को तू अपनीपीठपर बैठाकर लेआइयो और वहांसे यहगृद्ध उन को अपने ऊपर बैठाकर मेरे पास अदृश्यखण्ड में लेआवैगा क्योंकिप्रत्यक्षखण्डमें बहुरूपियेहैं इससे वहांसे उड़करही आना अच्छा है ऐसा न हो कि उनको बहुरूपियोंसे किसी प्रकारका दुःख पहुंचे निदान वे सिंह सिंहनी पत्रलेकर चलदिये और वह गृद्धभी उड़कर रत्नाकर पर्व्वतकी ओरचला और महेन्द्र भी वहांसे चला कि बदरीउद्यानमें जाकर प्रहासको पकड़वाऊं और वहां आकर वहरात्रि आनन्द मंगलकेसाथ काटी कि इत-ने में चन्द्रमा तारागणों सहित आकाशका राज्य छोड़कर भाग गया और सूर्यने सहस्र किरणोंसहित प्रकटहोकर राज्यशासन किया अर्थात् रातबीती और दिनहुआ॥

चौ० मिटीइन्दुकी प्रभा अपारा। विकस्यो भानुतेज सागारा॥

तारागण सब द्युतिअनुहारे। रविकेबिकसतसकलसिधारे॥

उससमय महेन्द्र शयनमन्दिरसे उठकर किरीट मुकुटधारण कियेहुए सभामेंआकर सिंहासनपर बिराजमानहुआ और चार सहस्र बड़े २ मायावी सभासद्भी आकर उपस्थितहुए और दण्डवत् करकरके अपने २ योग्य आसनोंपर जाकर बैठगये उस समय महेन्द्रने आज्ञादी कि प्रहास अदृश्यखण्डमें आया हुआ है कुछ मायावी म्लेच्छजायँ और उसको पकड़लावें यह आज्ञा पाकर म्लेच्छ वहांसे चलदिये परंतु अबकथा उसछल विद्याके आचार्यकी सुनिये कि जब मायावती उसको छुड़ाकर चलीगई तब वहभी भागा और रात्रि के होनेसे एक बृक्षपर चढ़कर बैठरहा जब प्रातःकाल हुआ तब म्लेच्छोंकासा भेष बनाकर आगेकी राहली और कईकोसचलने के पीछे एकबड़े मनोहर बनमें पहुंचा जिसकी शोभा अमरावतीको भी लज्जा देनेवालीथी और उसमें एक भवन परमशोभायमान और निर्मल बनाथा प्राकारउसका बड़ामनोहर और प्रभामानथा और उसमें ऐसी चमकथी कि दृष्टि नहींठहरतीथी उसभवनमें सहस्रों द्वारथे और सबमें रत्नजटित कपाटलगे थे और प्रत्येक द्वारपर परदे सुबर्णके से पड़ेथे उनके बांधनेकी डोरियां हेमसूत्रकीथीं और सामने उस भवन के फुलवाड़ी बड़ी उत्तम लगीथी और यद्यपि वृक्ष और बेलि और कुसुम और फल और पक्षी सब नानाप्रकारके रत्नों के बनेहुएथे तथापि वह परमशोभायमान देवनिर्मित मालूम होते थे निर्मल जलकीधारा बहरहीथीं ऐसे स्फटिक की बड़ी उत्तम बनीथीं और उनपर नानाजाति और बर्णके पक्षी धीमी चालसे डोलरहे थे संक्षेप यह है कि शोभा वहांकी अकथथी॥

चौ०। परमसुभग अति उत्तमठामा। इन्द्र भवनसम शोभाधामा॥
लगी मनोहर तहँ फुलवारी। बिबिध भांतिके रत्न सँभारी॥

भांति भांतिके खगमृग सोहैं। विचरैं केलैं अरु मनमोहैं॥
अतिरमणीय सुशोभाताकी। बरणनकरतकविनमतिथाकी॥

उस भवनके एक द्वारपर एक म्लेच्छ बैठाहुआथा उसको देखकर प्रहासमार्ग काटकर दूसरीओरचला परंतु जिधरगया और जहांतकगया उसको वहीभवन और द्वारपर वहीम्लेच्छ बैठाहुआ मिला अंतमें फिर एकओरको चला तबवह म्लेच्छ पुकारा कि अरे तू कौनहै जो यहांआताहै यह भवन मायादेशाधिप श्रीमहाराज महेन्द्रके विहार करनेका स्थान है यहसुनकर प्रहासबोला कि भाई क्या मैं नहीं जानताहूं कि यह भवन महाराज महेन्द्रका है परंतु मैं एककाम को जाता हूं वहबोला कि इस स्थानको सहस्रद्वारी कहते हैं यहां जो कोई आता है वह चिह्न लेकर आता है और मुझे दिखलाताहै तब उसकोजाने को मार्ग मिलताहै और उससे यह भी मालूम होताहै कि यह मनुष्य जाननेवाला अदृश्यखण्ड का वासी है निदान जो तेरेपास चिह्न है तो जहांचाहे तहां विचर नहीं तो तू कोई अन्य पुरुषहै और ऐसीदशा में तेरा पकड़ाजाना उचित है यह सुनकर प्रहास बहुत हँसा और बोला कि तू बड़ा दुर्बुद्धी है भला यहां विना चिह्नके कोईभी आता है जो मैंहीं आता मेरे पास चिह्न मौजूदहै वह बोला कि लामैंदेखूं प्रहास मूर्च्छाकर चूर्ण मुट्ठीमें लेकरगया और बोलाकि लो देखो वह झुककर देखने लगा तब प्रहासने उसचूर्ण को उसके मुखपर डालदिया कि उसके मुखनाक कान और आंखोंमें वहचूर्ण भरगया और वह मूर्च्छित होकरगिरा तबप्रहासने उसे औरभी अधिक मूर्च्छित करके कहीं बागमें छिपादिया और अपना स्वरूप उसकासा बनाकर और उसके कपड़े उतारकर और पहिरकर उसीद्वारपर जाबैठा और थोड़ीही देरहुईथी कि सामनेसे एकमहोर्ग अग्नि की ज्वाला छोड़ताहुआ प्रकटहुआ उसपर एकम्लेच्छ और

एक म्लेच्छी बैठेथे और दोनोंवस्त्र और आभूषणोंसे अलंकृत थे निदान वे उतरकर वहां विहार करनेलगे तब प्रहासने पुकार करकहाकि अरेतुम कौनहो पहिलेमुझे चिह्नदिखादो फिरआगे पैररखना यह सुनतेही दोनोंने अपनी झोलीसे एक कागजका टुकड़ा निकालकर दिखाया उसने देखा कि उसपर महेन्द्र का चित्रबनाहै उसको देखकर प्रहास चुपहोरहा और समझगया कि यहांका यही चिह्नहै और वह दोनों विहार करतेहुए एक ओरको चलेगये उनकेपीछे फिरएक म्लेच्छ और एकम्लेच्छी आये प्रहास यहांका सब वृत्तांततो जानताही न था हालयहाँ का यहथा कि जबकोई महेन्द्रका सम्बन्धी अथवा कोई बड़ा मान्य म्लेच्छ आताथा तो वह चिह्न कोई नहीं दिखाताथा और उसकेआनेपर वहद्वारपर बैठनेवाला उठकर बड़ासत्कार करताथा और साष्टांग दण्डवत्भी उसको करनी पड़तीथी निदान ये दोनों म्लेच्छ और म्लेच्छी जो आयेथे दोनोंबड़ेमान्य और प्रतिष्ठितथे प्रहासने उनका सत्कार कुछनकिया और उन सेभी चिह्नमांगा तब उन्होंने मायाकरके तुरंत प्रहासको पकड़ लिया तबवहबोला कि कुशलतोहै मेराक्या अपराधहै क्यों मुझ को आपने कैद कियाहै वहबोले कि तैंने हमारी अप्रतिष्ठा की हमारासत्कारनहींकिया तबप्रहासबोला कि क्यामैं दस्तूर नहींजानताहूं परंतुमैं क्याकरूं मेरे दोनोंघुटनोंमें बड़ीपीड़ाहै मुझसे बड़ी कठिनतासे उठा बैठाजाताहै और फिर उस म्लेच्छीसेकहा कि क्यों आपनेदेखाहोगाकि मैं उठताथा परंतुगिरपड़ा उठानहींगया यह सुनकर वहम्लेच्छी प्रहासके आंखमिलाकर कहनेसे बोली कि हां मैंने देखा कि यह उठताथा परंतु इससे उठानहीं गया तबउस म्लेच्छने अपनी स्त्रीकी बातपर विश्वास करके प्रहास कोछोड़दिया परंतुपूछा कि तूने दूसरीबात क्योंनकी प्रहासबोला किमारेडरके मेराचित्त ठिकानेनहीं रहा औरमैं भूलगया तबवह

बोला किअच्छा अबयादहै प्रहासबोला किहाँ यादहै वहीउठकर दण्डवत्करना और सत्कारकरना वहबोला कि और दूसरीबात तब प्रहासनेकहा कि छीछी कैसीमेरी धारणाहै अभीयादथी फिर भूलगया थोड़ीसी बातभी यादनहींरहती तबवह म्लेच्छबोला कि अब यादरखना नहींतो नौकरीतुम्हारी जातीरहेगी वहबात यह हैकि दोनोंहाथजोड़कर खड़ाहोना तबप्रहासबोला कि वाहजीयह तो मैं पहिलेही बताचुकाहूं कि दंडवत्करना और सत्कार करना इन दोनों में सबबातें आगईं इससमय आपने मुझे चक्करमें डालदिया निदानवेदोनोंभी विहारकरके चलेगये उपरांत अकस्मात् आंधी उठी और अंधेरा होगया और थोड़ी देरमें एक म्लेच्छ बड़ा लंबाचौड़ा भयंकरस्वरूप तिमिरांगीनाम वहां आया प्रहासने जाना कि यह कोई बड़ाभारी प्रतिष्ठित म्लेच्छ है उठकर इसका सत्कारकरो ऐसानहो कि यहभी कुछ पूछे ताछे यह समझकर प्रहास खड़ाहोगया और दोनों हाथजोड़कर उस म्लेच्छको दंडवत्की तिमिरांगी बहुत प्रसन्न हुआ और उसने प्रहासको दश रुपये इनामदिये प्रहासने रुपये लेकर विचार किया कि बनपड़े तो इसका बधकरूं यह सोचकर उसने उस म्लेच्छ से कहा कि श्रीनिधि आइये और कुछ काल विश्राम कीजिये यह सुनकर तिमिरांगी उसे घूरनेलगा और बोला कि आज तूने नित्यके विपरीत बात क्योंकी और मुझे विश्रामकरने को क्यों कहा प्रहास बोला अवश्य मुझसे अपराध हुआ क्षमा कीजिये और चलेजाइये तिमिरांगी बोला कि यह बातभी तेरी विपरीतहै मेरी जबइच्छाहोगी तब जाऊंगा तब प्रहासने सोचा कि यहां बातभी करना दुर्लभहै इससे चुपहोरहो यह अनुमान करके वह चुपहोरहा और वह म्लेच्छ भी विहार करताहुआ चलागया उसके पीछे एक स्त्री परमसुंदरी निर्दोष अंगी चन्द्र मुखी कुरंगशावनयनी कोमलांगी शोभायमान रत्नजटित आभू-

पण अंग अंगमें धारणकिये बड़े उत्तम वस्त्र पहिरे ऊर्ध्ववस्त्रका आंचल शिरपर डाले घोड़ेपर सवार वहांआई और प्रहाससे पूछनेलगी कि अरेम्लेच्छ इधरहोकर कोईम्लेच्छ तो नहींगया प्रहासबोला किमैंनहीं जानताहूं यहसुनकर उसचन्द्राननीने माया करके प्रहासको पकड़लिया और उसेघोड़ेपर बैठालिया और बोली कि अबतेरी इतनी प्रतिष्ठा बढ़गई किहम बात पूछें और तूकहै किमैं नहीं जानताहूं अब तुझको मैंमहाराज के पास ले चलकर दंडदिलवाऊंगी यह कहकर उसे घोड़ेपर बैठायेहुए वह चली प्रहास पीछेतो उसके बैठाहीहुआथा तुरंत उसनेपाश उस के गलेमें डालकर गला घोटदिया और भुजालीसे उसका शिर काटडाला उससमय तोएक प्रलयकालसा होगया पृथ्वी और पर्व्वत कांपने लगे और महाकोलाहल मचगया तब प्रहास घोड़े परसे कूदकर भागा और एक पर्व्वतपर चढ़कर एकवृक्ष पर चढ़गया दैवयोग से वह वृक्ष आमकाथा इसने पत्ते तोड़ तोड़कर एक घोंसलासा बनालिया और उसमें छुपकर बैठरहा परन्तु उस स्त्रीका कटा हुआ शिर उड़ताहुआ बदरीउद्यान में महेन्द्र के पास गया और पुकारा कि मुझे प्रहास ने मारडाला यह सुनतेही महेन्द्र क्रोध से लाल होगया और एक म्लेच्छ करालांगी नामाको आज्ञादी कि प्रहास सहस्रद्वारी में है तू शीघ्र जाकर उसको पकड़ला वह म्लेच्छ आज्ञापातेही सहस्र द्वारी में गया और प्रहास को ढूंढ़नेलगा और ढूंढ़ते ढूंढ़ते उस पर्वतपर पहुंचा जहां प्रहास वृक्ष के ऊपर पत्तोंमें छिपा बैठा था प्रहास ने देखा कि एक म्लेच्छ चारोंओर को कुछ ढूंढ़ताहुआ सा फिररहाहै यह देखतेही उसने अपनी थैलीमेंसे एक पुतला रुईका बनाहुआ निकाला जिसका स्वरूप प्रहासहीकासा था और जब वह म्लेच्छ दूर निकलगया तब प्रहासने उतर कर उस अपने स्वरूपी पुतलेको एक वृक्षके नीचे सुलादिया और

उसपर एक वस्त्र उढ़ाकर आप फिर उसी वृक्षके ऊपर पत्तोंमेंजा छिपा थोड़ी देरमें वहम्लेच्छ फिर ढूंढ़ताहुआ उसओरकोआया और दूरसे किसी मनुष्यको चादर ओढ़कर वृक्षके नीचे सोता हुआ देखकर पहिलेतो उसने ऐसी मायाकी कि वह हिलझुल नसकै अर्थात् उसका शरीर स्तंभित होजाय और फिर उसके निकट आकर वस्त्रको उघाड़ा और प्रहासका चित्र निकालकर चित्रसे उसपुतलेका स्वरूप मिलाया जब स्वरूप मिलगया तब वह म्लेच्छ प्रसन्नहुआ और उसपुतलेको प्रहास जानकर उठा लिया और आकाशमार्गसे महेन्द्रके पास आकर विनय पूर्वक बोला कि महाराज इसको मैं बड़ी कठिनतासे मायाकृत जाल में फंसाकर लायाहूं सबसभासदोंने उसकी प्रशंसाकी और महेन्द्रने आज्ञादी कि इसको चैतन्य करो तब उसने अपनी माया उसके ऊपरसे दूरकरदी और उसको बहुत प्रकारसे झकझोड़ा परंतु वह चैतन्य नहुआ तब एकम्लेच्छने उठकर उसके लात मारी और कहाकि कैसा श्वास खींचकर पड़ाहै उठतानहीं उस की लात पुतलेके पेटमें घुसगई तबतो सब चकित होगये और महेन्द्रने उसपर पानी छिड़कवाया तब उस पुतले का ऊपरका कागज़ गलकर फटगया और रुई निकलआई तब सबने जाना कि रुईका पुतलाथा और महेन्द्रने कहा कि अब सभासद मेरे साथ हास्यकरतेहैं किप्रहासके पुतले बना बनाकर लातेहैं और यहकहकर करालांगीको मार पीटकरके और दुर्वचन कहकेसभा से निकलवादिया और एक दूसरे म्लेच्छ मुशलांगीसेकहा कि तू जाकर प्रहासको पकड़ला यह म्लेच्छ तो बुद्धिमान्था उसने विचारकिया किप्रहासका मिलनातो कठिनहै ऐसानहो किमेरी भी दशा करालांगीकीसी होय इससे अच्छाहै कि मैं महाराजसे पहिलेहीसे कुछ बहाना करूं यह विचार करके उसने विनयकी कि महाराज प्रहास बहुरूपियाहै और बहुरूपिया बहुरूपियेको

सुगमतासेपहिचानलेताहै इससेआप समीररूपाकोभेजिये और उसकेसाथ किसी म्लेच्छको करदीजिये कि वह प्रहासको पकड़वादे महेन्द्रने इसमंत्रकोस्वीकारकिया और मायाबलसे एकहस्त निर्मितकरके उसको आज्ञादी कि समीररूपा जहांहो तहां से उठाकरलेआ यहआज्ञापाकर वह मायानिर्मित हस्त चलदिया परन्तु अब समीररूपाका हालसुनिये कि जब उसने निद्रावती से प्रहासके पकड़ेजानेका वृत्तान्त सुना तबवह अपनास्वरूप प्रहासकासा बनाकर निशाकरी की सभामेंआई यहां जबसे प्रहासके पकड़ेजाने का वृत्तांत सुनाथा सबको बड़ाकष्टथा और उसके छुटनेकेलिये नित्य सब परमेश्वर से प्रार्थनाकरतेथे जब समीररूपा वहां पहुँची तब सब उसको प्रहाससमझकर बहुत प्रसन्नहुए और उठउठकर सबमिले और बोले कि परमेश्वर ने बड़ीकृपाकी कि आपको बन्धन से मुक्तिदी यह सुनकर समीररूपा ने छलपूर्वक कहा कि मैंही ऐसाथा जो म्लेच्छोंको धोके देदेकर चलाआया परमेश्वरने मेरादूसरा जन्मकियाहै जोदूसरा कोईहोता तो अवश्य माराजाता यहकहकर उसनेपूछा कि सब बहुरूपिये कहांगयेहैं उनकोभी देखनेको चित्तचाहता है यहसुन कर निशाकरी बोली कि आपहीको ढूंढ़ने गये हैं अब आतेही होंगे यहकहकर समीररूपापर बहुतसाधन निछावरकिया और नृत्यहोने की आज्ञादी तुरन्त सभाजमगई परमसुन्दरी वेश्या आकर नृत्यकरनेलगीं और बहुतसी चन्द्रमुखी दासियां मद्य और पानपात्रलेआई और मद्यपान होनेलगा तब समीररूपा अपनेहाथसे सबको मद्यपानकरानेलगी और दृष्टिबचाकर उस ने मद्यमें मूर्छाकर चूर्णमिलादिया और उसमद्यको सब सभासदोंको पिलाया तब सबमूर्छितहोगये और समीररूपाने खड्ग निकालकर चाहा कि सबके शिरकाटडालूं क्योंकि प्रहास तो पकड़ाहीगयाहै मैं यहां सब सेनाकाकाम समाप्तकरूं और जैसे

ही खड्गलेकर बढ़ी तैसेही महेन्द्रका भेजाहुआ मायाकृत हस्त गिरा और समीररूपा को उठाकर लेगया उसी समय चपला भी बनसे लौटकर आया और प्रहास के आनेकाहाल सुनकर बहुत प्रसन्नहुआ परन्तु जब सभामेंआया और सबकोमूर्छित पड़ापाया और समीररूपाके आनेके चिह्नपाये तबतो समझा कि आज तो प्रलयही होगईथी और फिर सबको चैतन्यकरके पूछा कि यह क्याबातथी सबने जो वृत्तान्तहुआथा कहा तब चपलाबोला कि अब जो कोईआयाकरै उसे पहिले अपनेमाया बलसे जानलियाकरो कि कौनहै तब आनेदियाकरो आजतुम सबको परमेश्वरहीने बचाया नहींतो आज सबसमाप्तथे निदान यहां फिर आनन्दमंगल होनेलगा और उधर वह हस्त समीररूपाको महेन्द्रकेसन्मुख लेगया समीररूपा ने महेन्द्रको दण्डवत्की और सब वृत्तांत वर्णनकरके बोली कि बड़ेशोककी बात है कि इससमय मैंने आपके सब शत्रुओंको समाप्तहीकरदिया था परन्तु हस्तके उठालानेसे सब बचगये यह सुनकर महेन्द्र बोला कि हे समीररूपा मैं इनशत्रुओं को जब चाहूं तभी एक क्षणमें नाशकरसक्ताहूं परन्तु बड़ीभारी आवश्यकता बहुरूपियों के वधकरनेकीहै और उनमेंसे उसमहान्छली प्रहासका पकड़ा जाना मुख्यहै इससे तू जाकर पहँचानकर प्रहासको पकड़ला यहसुनकर समीररूपा महेन्द्रको दण्डवत्करके चलीगई परन्तु अब प्रहासका वृत्तान्तसुनिये कि वह उसवृक्षसे उतरकर पर्वत के नीचेआया और मार्ग न मिलनेसे पर्वत और बनोंसेंभटकता हुआ फिरनेलगा कभी मायाकृतनदीके तटपरजाता और पार उतरनेका यत्नकरता परन्तु जबकोईयत्न न लगता तब फिर आताथा और दूसरी दिशाको चलाजाताथा और म्लेच्छोंके सहस्रोंघर और बाग देखताथा और जो म्लेच्छ कामकाज करतेहुए फिरतेडोलते मिलते उनसे अपनेको छिपाताहुआ

चलाजाताथा और नानाप्रकारके मायाकृत खग और मृग और बनदेखताथा न कभी ऐसे खग देखेथे और न ऐसे मृग ही कहींथे और बनभी ऐसे अपूर्व कहींनहीं देखेथे निदान इसी प्रकारसे सब स्थानोंको देखताहुआ एक अद्भुतबनमें पहुँचा और देखा कि वहां पांचम्लेच्छ महेन्द्रके सेवक पगड़ीबांधे उत्तम वस्त्रपहिरे हाथोंमें रत्नोंके कड़ेडालेहुए कहींको चलेजारहे हैं उनको देखकर प्रहास ने विचारकिया कि इनके कपड़े और आभूषण लेनाचाहिये यह विचारकर उसने एककोने में बैठकर अपनास्वरूप एक वृद्धास्त्रीकासा बनाया और ऐसाकरलिया कि शिर हिलताहुआ लकड़ी हाथसे टेकताहुआ हाथमें मिष्टान्नका दोनालिये एकवस्त्रओढ़े धीमे धीमे आगे बढ़ा और पुकारकर बोलाकि बेटा थोड़ीदेरठहरजाओ मुझअसहायकाभी कामकरते जाओ वह आगे बढ़गयेथे जब इसकी दीनबाणी सुनी पांचों फिरे और देखा कि एकबुढ़िया पुकाररही है और उसको दीन जानकर उसके समीप चलेआये और बोले कि कहो बूढ़ा क्या कहतीहो वह बोली कि बेटा बुढ़ापेके मारे चलानहीं जाता है इतनीदूर ढूंढ़ती हुई आईहूं कोई मायाकर्त्ता का भोगलगाने वाला नहींमिला अबतुम मिलेहो लोबेटा इसमिठाई का माया-कर्त्ताका भोगलगादो मैंने प्रसादबोलाथा यह सुनकर उन म्लेच्छोंने मिठाई लेकर कुछपढ़ा और दण्डवत्करके बोले कि लो भोगलगगया तब प्रहासने उस मिठाई मेंसे थोड़ाथोड़ा पांचों को प्रसाददिया वे पांचों उसमिष्टान्नको वहींखागये कि थोड़ीसी मिठाईको कहांबांधें और क्यालेजायँ और खातेही मूर्च्छितहो-कर गिरपड़े तब प्रहासने वस्त्र और आभूषण और जोकुछ उनके पासथा सब उतारलिये और उनमें जो मुद्राथी उसको जो पढ़ा तो उसमें लिखाथा कि महाराज महेन्द्रकेसेवक उससे मालूमहुआ कि ये महेन्द्रके अनुचर हैं तब प्रहासने एकपत्र

लिखकर उनमेंसे एकके गले में बांधदिया आशय उसपत्रका यहथा कि हे महेन्द्र मैं मायावी म्लेच्छोंकाकाल प्रहासनामीहूं जो तू अपनाभलाचाहताहै तो मुझे मायाकृत नदीकेपार भेज-वादे नहींतो तेरे सबराज्यको भ्रष्टकरदूंगा और सहस्रों मायावी दानव और म्लच्छोंको मारूंगा और घर और बागोंको लूटूं-गा और उजाडूंगा अरे निर्बुद्धी शत्रुको कोई भी अपनेघरमें बुलाताहै मेरेयहां रहनेमें तेरे सबराज्यमें चलविचल पड़जाय-गी और बुराईके सिवाय कुछ अच्छा न होगा आगे तेरी राजी है निदान जब इसपत्रको बांधचुका एकस्थानपर छुपकर बै-ठगया थोड़ीदेरमें जब वे चैतन्यहुए तब अपनेको नंगा देखकर कहनेलगे कि वहबुढ़िया कोई आपत्तिथी हमारा सबमाल ले-गई अच्छा यही बहुतहै कि हमारे प्राणछोड़गई और फिरवहां से मायाकर्त्ता को मनातेहुएचले आगेबढ़के एकने उससे कहा जिसके गलेमें पत्रबंधाथा कि यहकागदतुम्हारे गलेमें कैसाबंधा है यह सुनकर उसने वहपत्र गले से खोललिया और उसको लियेहुए महेन्द्रकेपास चलागया और सबवृत्तांत निवेदनकरके वहपत्र देदिया उसे पढ़तेही महेन्द्रको बड़ा क्रोधहुआ परंतुकुछ उसका बसनथा इससे रिसको मनमें मारकर रहगया और यहां प्रहास फिरताहुआ दूसरीबार रक्तबाहिनी नदीके किनारे पहुंचा और चाहाकि छलांग मारकर नदीकेपार उतरजाऊं यह विचार कर उसने पहिले एकपत्थरफेंका वह उलटा फिरआया नदीका पाटबढ़गया महाकोलाहल होनेलगा और एकएक तरंग पर्वत की समान उठनेलगी तब प्रहास भागकर एक पर्वतकी कंदरामें चलागया और अपना स्वरूप एक म्लेच्छ दंडीकासा बनाया अब समीररूपा जोप्रहासकोढूंढ़नेचलीथी मार्गमें उसको माया-बनीमिली उसनेपूछा कि समीररूपा कहां जातीहो वहबोली कि एकबड़े आवश्यककामके करनेकोजातीहूंवहजानगई कि प्रहास

को पकड़नेजातीहै इसकेसिवाय और क्या आवश्यककाम इसको होगा परंतु यह टालकर नदीकीओर चलीगई और समीररूपा फिरतीहुई उस स्थानपर पहुंची जहां प्रहास म्लेच्छदंडी बना हुआ बैठाथा वहदेखतेही पहंचानगई और बोली कि कहियेदंडी जी कुशलतोहै इससमय आपकेध्यानमें क्याआताहै आप कैद होजाइयेगा या खुलेबंधे फिरियेगा यहसुनतेही प्रहासने समझ लियाकि समीररूपा मुझेपहिंचानगई और वह संभलकरबोला कि अरेसमीररूपा मुझसे दीनपर दयाकरना उचित है क्योंकि मैं अपने मित्रवर्गों से दूरयहां अकेला भटकरहाहूं और दुःखी और सहाय रहितहूं और ऐसी जगह आकर फंसाहूं कि जहांसे निकलना कठिन दीखताहै यहसुनकर समीररूपाबोली कि तुम से दीन और दुःखियोंपर दयाकीजाय तौ मायाकृत चमत्कार तौ एकओर है सब संसारके मायावी म्लेच्छों का नाशहोजाय तुम पथिकहो या मायाकृत चमत्कारोंके नष्टकरनेका उत्साह रखतेहो और जो निर्धन और दीनभीहो तो क्या है किस मुहँसे अपनेको दीन और निर्धन कहतेहो जबकि तुम मायाकृत देशको नष्टकर-ने आयेहो अबतौ आप महेन्द्रके घरमें पधारेहैं वह भी एकअ-जय और असह्य आपत्तिरूपहै संसारकी कहावतहै कि या मैं नहीं या तू नहीं सोयातौ महेन्द्रने तुम्हारावधकिया अथवा तुम ने महेन्द्रकोमारा प्रहासबोला परमेश्वर चाहैगातौ हमीं उसका वधकरेंगे उसकी मृत्युही हमकोयहांलाईहै समीररूपा बोली कि यहबात असंभवहै तुम उसको कहांपाओगे वह अपनाप्रतिरूप बैठाकर अंतर्द्धान होजायाकरताहै और मायाकृतदर्पण में रहता है प्रहासबोला कि बड़े२ मायावीआये कोईअग्निमेंरहताथा कोई पानीमें परंतु बधकरनेकेसमयमैंनेकैसाउनको प्रकटकरलियाइसी प्रकारसे इसदुष्टकाभी बधकरूंगा और यदि वहमायाकृत दर्पण में होगा तौ मैं पत्थर मारूंगा यहसुनकर समीररूपा बोली कि

अच्छा अब बातेंहोचुकीं अब आप सँभलजाइये आपके पकड़े जानेका समय निकटआगया प्रहास हँसकर बोला कि क्या तेरी कुदशा आईहै तू मेरी प्यारी होनेके कारणसे बचती चली गईहै नहीं तो अबतक कबकी यमलोकमें पहुंचजाती यह सुनकर समीररूपा भुजालीलियेहुए आगेबढ़ी औरबोली कि चल तुझे महेन्द्रकेपास लेचलूं और तेरी ओरसे बहुत कुछ कह सुनकर तुझे छुड़ादूं कुछ मैं पूरा विश्वास तो नहीं देतीहूं परंतु कहूंगी बहुत कुछ आगे मानना न मानना महाराजके आधीन है प्रहास बोला कि वह वर्णसंकर क्या है और क्या उसकी सामर्थ्य है तू मुझे मायाकृत नदीकेपार पहुंचादे जिस समय महाराज शत्रुंजय इस देशमें पधारेंगे वह तेरा कल्यान करेंगे यह सुनकर समीररूपा हँसी और बोली कि शत्रुंजय का आना सुआगमहोय परंतु उनका आना उस समयमें होसकता है जब दर्पणीमायाखण्ड और सहस्रमायाखण्ड और विष्मयीमायाखण्ड आदि मायाकृत देशोंको जय कियाजाय यह कहकर समीररूपाने प्रहासपर पास फेंकी उस समय प्रहास ने विचार किया कि इससे लड़ने में कुछ फल नहींहै कोई न कोई मायावी म्लेच्छ आजायगा और तुमपकड़ेजाओगे इससे ऐसे स्थानपर चलकर छिपो जहां अपना कुछप्रयोजन निकले यह विचारकर प्रहासने उसके प्रहारको रोका और पैतरा काटकर मरुतदत्त वस्त्र ओढ़लिया और गुप्तहोगया तब समीररूपा लाचारहोकर फिरकर महेन्द्रकेपास आई और विनयपूर्वक बोली कि मेरेसाथ कोई मायावी म्लेच्छ करदीजिये तो प्रहास शीघ्र पकड़ लिया जावै नहीं तो बड़ी विलम्ब होगी क्योंकि वह बड़ा बलवान् है बड़ी कठिनतासे हाथ आवेगा यह सुनकर महेन्द्रने एक म्लेच्छी जिसकानाम कुसुमामाया था आज्ञादी कि तुम इसकेसाथ जाओ परंतु कोई चिह्न अपना ऐसा देतीजाओ जिससे यदि तुम

पर कुछ आपत्ति पड़े तो मुझको उसकाहाल मालूम होजाय यह सुनकर कुसुमाने अपने गलेकी मालामेंसे एक अक्ष नि-कालकर पृथ्वी में गाड़दिया तुरंत उसमें से कुल्ला फूटकर वह एक वृक्ष होगया पल्लव हरे हरे होआये और कुसुम खिल गये तब वह बोली कि महाराज यह वृक्ष मेरी प्राणमूलहै जब तक मैं जीतीहूंगी यह वृक्ष हराभरा बनारहैगा और जब मैं मारी जाऊंगी तो यह वृक्ष नष्ट होजायगा यह कहकर वह स-मीरस्वरूपा के साथ होली परंतु अब प्रहासका वृत्तांतसुनिये कि वह मरुतदत्त वस्त्रओढ़ेहुए एक पर्वतपर चढ़गया और वहांसे चारोंओरको देखनेलगा कि कहीं नगरहोयतो वहांजाऊं दोचार को मारूं और दशपांचके घर लूटूं जिससे महेन्द्र भी यादकरे कि प्रहासका बुलाना ऐसा होताहै निदान चारोंओर को देखने लगा और एकओरको एक दुर्ग बड़ाऊंचा दिखाईदिया प्रहास पर्वतसे उतरा और उसीओरकोचलदिया जिधरवहदुर्गथा और जब उसकेसमीपपहुंचा तो उसदुर्गको परमही शोभायमानपाया प्राकार उसका स्फटिकका बनाथा और नीलमणि और पद्मराग और वैडूर्य आदि रत्नोंके सहस्रों कंगूरेबनेहुएथे और द्वार और कपाट रत्नजटित परम प्रकाशमानथे प्राकारके चारों ओर परि खा बनेथे और उनकी दीवारें माणिक्य और गोमेदकी बनीथीं और चमकतीथीं और द्वारमें जानेकेलिये परिखाके ऊपर लोह की शिलाबिछीथीं और वहांसहस्रों मायावी म्लेच्छ नानाप्रकार के वस्त्रोंसे अलंकृतबैठेथे और उस दुर्गके चारोंओर फुलवाड़ी बड़ी मनोरम लगीथी उसमें हरेरी लहलहा रहीथी॥

क०। हरीबेलिहरी भूमि हरेद्रुमरहेझूमि हरीहरीकुंजहरे बागनसघनमें।
हरेहरेपल्लव बिभाति हरीहरीदूब फूल भांतिभांति लागे हरेही द्रुमननें॥
हरी हरी आभा जो परातिजल धारनिमें हरोहरोनीर सुलखातद्रुमगनमें।
हरे खग हरे मृग हरे हरे जीवजंतु कुंज लाल झलकें सु हरे हरे बनमें॥

अच्छा अब बातेंहोचुकीं अब आप सँभलजाइये आपके पकड़े
जानेका समय निकटआगया प्रहास हँसकर बोला कि क्या
तेरी कुदशा आईहै तू मेरी प्यारी होनेके कारणसे बचती चली
गईहै नहीं तो अबतक कबकी यमलोकमें पहुंचजाती यह सुन
कर समीररूपा भुजालीलियेहुए आगेबढ़ी औरबोली कि चल
तुझे महेन्द्रकेपास लेचलूं और तेरी ओरसे बहुत कुछ कह
सुनकर तुझे छुड़ादूं कुछ मैं पूरा विश्वास तो नहीं देतीहूं परंतु
कहूंगी बहुत कुछ आगे मानना न मानना महाराजके आधीन
है प्रहास बोला कि वह वर्णसंकर क्या है और क्या उसकी सा-
मर्थ्य है तू मुझे मायाकृत नदीकेपार पहुंचादे जिस समय महा-
राज शत्रुंजय इस देशमें पधारेंगे वह तेरा कल्याण करेंगे यह
सुनकर समीररूपा हँसी और बोली कि शत्रुंजय का आना सु-
आगमहोय परंतु उनका आना उस समयमें होसकता है जब
दर्पणीमायाखण्ड और सहस्रमायाखण्ड और विष्मयीमाया-
खण्ड आदि मायाकृत देशोंको जय कियाजाय यह कहकर स-
मीररूपाने प्रहासपर पास फेंकी उस समय प्रहास ने विचार
किया कि इससे लड़ने में कुछ फल नहींहै कोई न कोई मायावी
म्लेच्छ आजायगा और तुमपकड़जाओगे इससे ऐसे स्थानपर
चलकर छिपो जहां अपना कुछप्रयोजन निकले यह विचारकर
प्रहासने उसके प्रहारको रोका और पैतरा काटकर मरुतदत्त
वस्त्र ओढ़लिया और गुप्तहोगया तब समीररूपा लाचारहोकर
फिरकर महेन्द्रकेपास आई और विनयपूर्वक बोली कि मेरेसाथ
कोई मायावी म्लेच्छ करदीजिये तो प्रहास शीघ्र पकड़ लिया
जावै नहीं तो बड़ी विलम्ब होगी क्योंकि वह बड़ा बलवान् है
बड़ी कठिनतासे हाथ आवैगा यह सुनकर महेन्द्रने एक म्लेच्छी
जिसकानाम कुसुमामाया था आज्ञादी कि तुम इसकेसाथ जा-
ओ परंतु कोई चिह्न अपना ऐसा देतीजाओ जिससे यदि तुम

पर कुछ आपत्ति पड़े तो मुझको उसकाहाल मालूम होजाय यह सुनकर कुसुमाने अपने गलेकी मालामेंसे एक अक्ष निकालकर पृथ्वी में गाड़दिया तुरंत उसमें से कल्ला फूटकर वह एक वृक्ष होगया पल्लव हरे हरे होआये और कुसुम खिल गये तब वह बोली कि महाराज यह वृक्ष मेरी प्राणमूलहै जब तक मैं जीतीहूंगी यह वृक्ष हराभरा बनारहेगा और जब मैं मारी जाऊंगी तो यह वृक्ष नष्ट होजायगा यह कहकर वह समीररूपा के साथ होली परंतु अब प्रहासका वृत्तांतसुनिये कि वह मरुतदत्त वस्त्रओढ़ेहुए एक पर्वतपर चढ़गया और वहांसे चारोंओरको देखनेलगा कि कहीं नगरहोयतो वहांजाऊं दोचार को मारूं और दशपांचके घर लूटूं जिससे महेन्द्र भी यादकरे कि प्रहासका बुलाना ऐसा होताहै निदान चारोंओर को देखने लगा और एकओरको एक दुर्ग बड़ाऊंचा दिखाईदिया प्रहास पर्वतसे उतरा और उसीओरकोचलदिया जिधरवहदुर्गथा और जब उसकेसमीपपहुंचा तो उसदुर्गको परमही शोभायमानपाया प्राकार उसका स्फटिकका बनाथा और नीलमणि और पद्मराग और वैडूर्य आदि रत्नोंके सहस्रों कंगूरेबनेहुएथे और द्वार और कपाट रत्नजटित परम प्रकाशमानथे प्राकारके चारों ओर परिखा बनेथे और उनकी दीवारें माणिक्य और गोमेदकी बनीथीं और चमकतीथीं और द्वारमें जानेकेलिये परिखाके ऊपर लोह की शिलाबिछीथीं और वहांसहस्रों मायावी म्लेच्छ नानाप्रकार के वस्त्रोंसे अलंकृतबैठेथे और उस दुर्गके चारोंओर फुलवाड़ी बड़ी मनोरम लगीथी उसमें हरेरी लहलहा रहीथीं॥

क०। हरीबेलिहरी भूमि हरेद्रुमरहेभूमि हरीहरीकुंजहरे बागनसघनमें।
हरेहरेपल्लव बिभाति हरीहरीदूब फूल भांतिभांति लागे हरेही द्रुमननें॥
हरी हरी आभा जो परातिजल धारनिमें हरोहरोनीर सुलखातद्रुमगनमें।
हरे खग हरे मृग हरे हरे जीवजंतु कुंज लाल झलकें सु हरे हरे बनमें॥

प्रहासने वहांपहुंचकर बनमेंसे घासछीलकरएकगट्ठा बांधा और अपना स्वरूप एक घसियारे कासा बनाकर गट्ठा घासका शिरपर रखलिया और उस दुर्गका रास्ता लिया और लोहकी शिलाओंको उल्लंघन करके जैसेही उस दुर्गके द्वारमें पैरदिया तैसेही एक पक्षी प्राकारके ऊपरसे बोला कि प्रहास आया यह सुनकर म्लेच्छ उसकेपीछेदौड़े परंतु प्रहास घासकागट्ठा फेंककर नगरके भीतरको भागा उस समय उन मायावी म्लेच्छों ने मायाबलसे नगरके द्वारको प्रहासकी दृष्टिसे अदृष्टकरदिया और उसको ढूंढ़नेको चले और उनमें से एक रानी किशोरकेसरी के पास इस वृत्तांतके कहनेको गया क्योंकि यह दुर्ग उसीका था और जिस समय कियह प्रहासके हाथसे मूर्छित होगईथी और बन विहारके स्थानसे अपने दुर्ग में चली आईथी तबसे इसने मायाकृत पक्षी और मायावी म्लेच्छ बैठादियेथे कि कदाचित् प्रहासआवे तौ मुझकोभी उसके आनेका वृत्तांत मालूमहोजावै निदान मायाकृत पक्षीभी उड़कर उसके पास गये और उन्होंने भी प्रहासका आना सुनाया तब चन्दनी माया उसकी मंत्रिणि ने कहाकि महारानी शीघ्र माया करके आकाश और पृथ्वी के मार्गोंको रोक दीजिये जिससे वह महान् छली निकलने न पावै यह सुनतेही उसने तुरंत कुछ मायाकी कि उस दुर्गका प्राकार और ऊंचा होगया और उसपर अग्नि जलने लगी और सब मार्ग बंद होगये और जितने निकलनेके द्वारथे सब दृष्टिसे अलख होगये इस प्रकारसे प्रबन्ध करके वह प्रहासका खोज लगानेके यत्नमें अनुरक्त हुई परंतु प्रहास भागा हुआ नगरकी बीथिन में स्वरूप बदले हुए फिरनेलगा उस नगरको अतिही अपूर्व बना हुआ पाया गृह सब ऊंचे ऊंचे और उत्तम बनेहुए थे मार्ग सब निर्मल और सुशोभितथे दोनों ओर हाटलगीहुई थी वहां नानाप्रकारके वस्त्र और आभूषणोंसे अलंकृतस्त्री और

पुरुष क्रयविक्रय कररहेथे सबपदार्थोंकी हाटैं पृथक् पृथक् लगीं थीं कहींमेवाकी हाटथी कहींमिठाईकी चाटथी कहीं जौहरियोंकी चमकथी कहीं वस्त्रोंकी दमकथी और उन प्रत्येक हाटोंमें परम सुन्दरी स्त्रियां और स्वरूपवान् पुरुष लेनदेन कररहेथे कोई जाताथा कोईआताथा कोईलेताथा कोईदेताथा निदान उसनगरकी शोभा अमरावतीसे भी अधिकथी॥

छन्द। सो परमरम्य अनूपनगर सुरेश पुरसम सोहहीं।
रतिसदृश वनितनसहित शोभितरसिकजन मनमोहहीं॥
वहुचारु वीथिन सहिततकी परमशोभा अतिवनी।
कुंजलाल न जाति सम्यक् सो मनोरमता भनी॥

उसको देखकर प्रहासने विचारकिया कि आजवनपड़े तौ सबनगरको लूटलीजिये और इसनगरकी शोभाको भ्रष्टकरदीजिये यह विचारकर वहएक जौहरीकी दुकानपरगया और उससे पुखराग और वैडूर्यके नगमांगे उसने प्रहासके भेषको देखकर प्रथम तौ निषेधकरदिया फिर विचारकिया कि हमको तौ लाभसे प्रयोजनहै दिखलानेमें क्या बुराईहै निदान उसने माणिक और मुक्ता और वैडूर्य और पुखराग आदि रत्ननिकालकर दिखलाये प्रहासने उनको तौ उठाकर अपनीथैलीमें डाल लिया और अपनेपाससे बड़े २ झूठेनग निकालकर देदिये और कहा कि येरत्न कामकेनहींहैं मैं न लूंगा उसजौहरीने झूठे नग देखकर कोलाहलकिया और प्रहासकी ग्रीवामें हाथडाल कर पुकाराकि इसछलीने मुझको लूटलिया दौड़ो मुझेबचाओ यहसुनकर चारोंओरसे लोगदौड़े और बड़ाकोलाहल मचगया तब प्रहास बोलाकि यह मुझको मिथ्या लियेमरताहै मैं एक दीनमनुष्य रत्नोंको लेकर क्याकरूंगा और इसने भलामुझे रत्न क्यों दिये मैं रत्नोंके लेनेयोग्यहूं यहसुनकर लोगोंने कहा कि यह सत्यकहताहै और उसजौहरीसे पूछनेलगे कि तुमने इस-

को रत्न क्योंदिये दूसरा बोलाकि लालाजी किसी धनवान्को
लेमरते तो कुछ लाभभीहोता इसदीनसे क्या मिलेगा तीसरेने
कहाकि इससे कुछ पुरानीशत्रुता लालाजीसे होगी चौथाबोला
सत्यतौहै ऐसा दीन मनुष्य ऐसे २ बड़े नग कहांपावैगा जोबदल
लेगा निदान जबसबने उस जौहरीकोही कहासुना तबवह बोला
कि मैंने अभी इसको दशबनियोंके सामने रत्नादियेथे और तुम
सब उलटे मुझहीको समझातेहो तब सबने कहा कि अच्छा
यह कहींगयातौ नहींथा वह बोलानहीं तब सबने कहाकि अच्छा
इसकी नंगाझोरी लेलो यह सुनकर प्रहासने अपनी नंगा-
झोरी देदी वे रत्नतौ थैलीमेंथे और वह थैली प्रहासके पकड़े
जाने अथवा नंगाझोरी लियेजानेके समय अदृश्य होजायाकर
तीथी क्योंकि वह तौ एक देवदत्त दिव्य पदार्थथा निदान रत्नोंका
कुछ पता नचला तबतौ प्रहासने उस जौहरीको सहस्रों दुर्वचन
कहे और मारनेकोदौड़ा तब लोगोंनेकहा कि अब जानेदो यह जौ-
हरी बड़ा प्रपंचीहै निदान वह जौहरी बिचारा चुपहोकर बैठरहा
और जो लोग बीच बिचाउ करतेथे वेभी चलेगये तब प्रहासने
फिर उसीजौहरीके पास आकर कहाकि वेरत्न तुम्हारे कितने मो-
लकेथे जोजातेरहे वह बोला कि बीस सहस्र मुद्राकाथा प्रहास
बोला कि जो दश सहस्र मुद्रा मुझकोदोतौ मैं तुम्हारे रत्नदेदूं यह
सुनकर जौहरीने बिचारकिया किजोधनजाता देखिये आधादीजे
बांट दशसहस्र मुद्रादेना स्वीकार किया तब प्रहासने अपनी
थैलीमेंसे जैसेरत्न उस जौहरीकेथे वैसेहीरत्नमिसरीके बनेहुए नि-
काले और दशसहस्र रुपयोंकी सुवर्णखण्ड अर्थात् अशरफी
लेकर उसको देदिये और आपवहांसे चलदियावहजौहरी जब
अपनी दुकान बन्द करके अपने घरआया उसने सबवृत्तांतअ-
पनी भार्यासेकहाकि आज एकठगइसप्रकारसे मुझसेदशसहस्र
रुपयेठग लेगया तबवह स्त्रीबोलीकि वहजवाहिर जो वहफेरकर

देगयाहै उसमेंभी कुछ न कुछ छलहोगा लाओमेंतोदेखं यहसुन कर जौहरीने जो जवाहिरोंका डिब्बाखोला और उसरुईको देखा जिसमें उसने प्रहासके दियेहुएरत्नोंको लपेटकर रक्खाथातोवह मिसरी गरमी पाकर पिघलगईथी उसमेंरत्नोंका पतानमिलातब तो वे दोनों रोनेपीटनेलगे और पुकारतेहुए रानीकिशोर केसरी के यहांगये और द्वारपर खड़े होकर अपने शिरफोड़नेलगे तब किशोरकेसरी ने उन्हें बुलवाकर सबवृत्तांत पूछा और पूछकर कहाकि तुमसच्चेहो यहकाम प्रहास बहुरूपियेकाहै जबवहपकड़ा जायगा तुम्हारे रत्नतुमको दिलवादिये जायंगे और आज्ञादीकि सब नगरके जौहरी आकर हमारे बागमें इकट्ठेहों जिससे इसका पतालगायाजावे यह आज्ञापाकर सबजौहरी वहां जानेलगे तब प्रहासने एक म्लेच्छसे पूछा कि यह क्या बातहै औरउससेउस को विदितहुआ कि जिसके तुमनेरत्नलिये हैं उसने किशोरके- सरीके यहां पुकारकी है इसीसे सबजौहरी वहां जारहे हैं निदान यहवृत्तांत सुनकर प्रहासने अपनाभी स्वरूप जौहरियोंका सा- बनाया लट्टू और चक्करदार पगड़ी शिरपर पहिरी जामापहिरा उपानहबहुमोल के धारण किये और हाथोंकी उंगलियों में रत्न जटितअंगूठियां पहिरेहुए सबजौहरियोंके साथ २ आपभी रानी किशोर केसरीके बागमें आया और बागकी शोभादेखी आहा क्यावर्णनकियाजाय जिसकानगर ऐसामनोरम और उत्तमबना था उसकी फुलवाड़ीकावर्णन क्योंकरहोसकता है द्वारपररत्नोंके बनेहुएफूललगेहुएथे कि विश्वकेफूलोंकी शोभाकोलज्जितकरते थे चौखट द्वारकी जांबूनदहेमसे निर्मितकीहुईथी परिकोटवैडूर्य मणिका बनाथा कि जिसके देखनेसे मनको आह्लाद होताथा और बागके भीतर सबवृक्ष काटकर ठीककियेहुए लगेथे उनके थाले स्फटिकके बनेथे शाखा उनकी सोने और चांदीके पत्रोंसे मढ़ीथीं रोसें परम शोभायमानबनीथीं अपूर्व आनन्दआताथा

नानाप्रकारकेफूल फूलरहेथे और गंधऔर प्रफुल्लताकेबोझसे झूमरहेथे जलधारायें मुक्तासे निर्मलजलयुक्त वहरहीथीं और भांतिभांतिकेपक्षी मधुरमधुरध्वनिसों गारहेथे चारोओर ऊंचे २ मन्दिरबनेथे वृक्षउनकी चोटीतक पहुंचेहुएथे और इसप्रकारसे बनेथे कि उनमन्दिरोंमें लेटे लेटे जिसवृक्षके फलकोखाना चाहो तोड़करखालो और उनमें वस्त्रअनेकवर्ण और प्रकारकेबिछाए हुएथे बागके बीचाबीचमें एकबितान शोभायमान खिंचाहुआ था उसके नीचे एक सिंहासन माणिकका बना हुआ अमोल्य वस्त्रोंसे अलंकृत स्थापितथा चारों ओर उसके नाना प्रकारके अपूर्व आसनबिछे हुएथे और भांतिभांति के सुगंधित फूलोंके गुच्छे भांति भांतिके रत्नोंके पात्रोंमें स्थापितथे निदान वहांकी शोभा इन्द्रपुरीकी शोभाकोभी लज्जित करतीथी॥

चौ०। कुसुमित द्रुम अरु बेलिसुहाईं। भांतिभांति अतिसघन लगाईं॥
भ्रमर गुंजरत कुसुमनिकोलें। करि मकरन्द पान तहँ डोलें॥
बरतड़ाग शुचि फटिक बनाये। निर्मल स्वच्छ नीर भरवाये॥
तिनमें भांति भांतिके कंजू। लगे अमित सौगंधिक मंजू॥
शीतल मंद सुगंध बयारी। डोलत तहां सदा श्रमहारी॥
परसत जो उपजावत अंगा। अतिशय मदन बिकार उमंगा॥
नाना जाति भांति खग सोहैं। मधुर मधुर ध्वनि सों मनमोहैं॥
कुंज लाल शोभा बरताकी। बरणन करत जाति मति थाकी॥

निदान जब सब जौहरी इकट्ठे होगये रानी किशोरकेसरी माया अपनी सखी सहेली और दासियों सहित नानाप्रकारके वस्त्र और आभूषणों से अलंकृत वहांआई और उससुवर्णवर्ण बितानके नीचे सिंहासनपर बिराजमानहुई और एक २ जौहरी को बुलाकर वृत्तांत पूछनेलगी यहांतक कि प्रहाससे पूछनेकीभी बारी आई और उसने उससेपूछा कि जो मनुष्य इस जौहरीके रत्न छल करके लेगया है वह कभी तुम्हारे पासभी आयाथा अथवा तुमने कभी उसको देखाथा प्रहास बोला कि एक दिन

पांचसहस्रका मेराभी धन वह छलकर लेगयाथा परंतु मैंने कुछ गुहार पुकार नहींकीथी अबजो वह पकड़ कर आवैगा तौ मैंभी अपना धन लूंगा तब किशोरकेसरीने कहा कि मंने तुम सबको इसप्रयोजनसे बुलवायाहै कि इस दुर्गमें एक बहुरूपिया आया है वह बड़ा छलाहै सबका धन लूटता फिरैगा तुम सब अपना अपना धन युक्तिसे रक्खो और जोकुछ तुम्हारा गयाहै वह इस समय राज्य कोषसे लेलो आगे जो तुमलोग अपनेधनकी रक्षा नकरोगेतौ राज्यमें तुम्हारीसुनवाई नहोगीयहकहकर चन्दनीको आज्ञादी कि पच्चीस सहस्रमुद्रालाकर इनदोनों जौहरियोंको देदो वह तुरंत रुपियेलेलाई उसमेंसे पांचसहस्र प्रहासको और बीस सहस्र उस जौहरीको देदिये इस न्यायको देखकर सब जौहरी रानीको आशीर्वाद देनेलगे इसके पीछे आज्ञादीकि जोकुछ रत्न तुमलोग अपनेसाथ लायेहो वहसब हमारे सन्मुखलाओ हम भी मोल लेंगे तब सब जौहरियोंने अपने अपने रत्न दिखाये परंतु प्रहास चुपका खड़ा रहा उससेभी कहाकि तूभी अपने रत्न दिखा प्रहासबोला कि मेरेपास अच्छे रत्ननहींहैं तब आज्ञाहुई कि अच्छादिखातौ कदाचित् हमारेपसन्द आजायं तब प्रहासने मुसकुराकर कमरखोली और एक डिबियामेंसे एक मुक्ताकुक्कुटां-डकी बराबर निकालकर हाथपर रखके दिखलायाउस मुक्ताकी प्रभासे वह स्थान दीप्तसा होगया रानीकिशोरकेसरी उस मुक्ता को देखतेही सिंहासनपर खड़ी होगई और बोली कि अरे जौ-हरी यहमुक्ता एकही है अथवा इसकीजोड़ीभी तेरेपासहै प्रहास बोला महारानीजी आपने यह अच्छी बात पूछी एकतौ किसी राजाने देखाहीनहोगा जोड़ीकी आपने एकहीकही किशोरकेसरी बोली कि सत्यहै इसके विषयमेंजो नकहाजाय थोड़ाहै यह कह कर उसने सब जौहरियोंकोतौ बिदा करदिया और प्रहास को आदरपूर्वक बैठाकर बोली कि जो इसका मोल ठीक ठीक करो

तौ मैं यह मोती लेकर अपने मामा श्रीमहाराज महेन्द्रके पास भेजदूं प्रहास बोला कि इसका मोल कोई क्याकरैगा और क्या देगा यह हमाराही कामथा कि हम इसकी जोड़ीको पीसकर खा गये यह सुनकर किशोरकेसरी बोली कि उसको क्यों खायाथा इसके गुणतौ कुछ कहो प्रहास बोला कि महारानीजी मैंने देशाटन बहुत कियाहै एकसमय शंखद्वीपमेंभी गयाथा कथातौ बड़ी है परंतु संक्षेप यहहै कि वहां एक महात्माके साथमें अमरावती पुरीमें गयाथा और वहां मुझको इन्द्रने दो मुक्ता दियेथे और कहाथा कि जोकोई एकमोतीको खालेगा उसकी सातसौ वर्षकी आयु होजायगी और बूढ़ा नहोगा सो एक मोतीतौ मैं खरल करके खागया और दूसरा यहहै यहसुनकर किशोरकेसरी लोट पोट होगई और चन्दनीसे कई अर्ब रुपये मंगाकर प्रहासको दिये और बहुत कुछ कह सुनकर बड़ी कठिनतासे उसे देनेपर उद्यत किया तब प्रहास बोलाकि इस रुपये के रत्न मुझे मंगवा दीजिये मैं इतना धन कहां लादकर लेजाऊंगा और आप द्वादशद्वारीके भीतर चलिये किमैं इसके खानेकी विधि आपको बतलादूं निदान उसरुपयेके रत्नोंको लेकर प्रहास उनदोनोंको साथ लेजाकर द्वादशद्वारीके भीतर गया और उस मुक्ता को खरल कराके दोनोंको खिलादिया दोनों खातेही मूर्छित होगईं और प्रहासने खड्ग निकालकर जैसेही उनका शिर काटनाचाहा तैसेही पृथ्वी फटी और उसमेंसे एकसिंह निकला उसको देखतेही प्रहासने चन्दनी को उठाकर अपनी थैलीमें डाललिया और जैसेही किशोरकेसरीपर हाथ डालनाचाहा तैसेही सिंहने गर्जनाकी और उससे वह चैतन्य होगई उससमय सिंह तौ अंतर्द्धान होगया और उसने प्रहासको पकड़लिया और कहा कि अरेदुष्ट तैंने मारहीडालाथा और उसको पकड़कर द्वादशद्वारी के बाहर लेआई और चन्दनीको चारोंओर ढूंढ़ा परंतु उसका

कुछ पता न लगा तब प्रहाससे उसने पूंछा कि सत्यव्रता तैंने चन्दनीको क्याकिया वह बोला कि रानीजी मैं म्लेच्छोंका मांस बड़ेस्वादसे खाताहूं इससे मैं उसे भक्षण करगया क्योंकि मैं भूंखाथा वह बोली कि तू झूंठाहै जो तू चन्दनीको खालेता तो यह चन्दनका वृक्ष जो तेरे सामनेलगाहै यह सूखजाता क्योंकि जब कोई मायावी मरजाताहै तो उसकी मायाके बनायेहुये सब पदार्थ नष्टहोजातेहैं प्रहासबोला कि सत्यतोयहहै कि मैंने उसको अपनीथैलीमें रखलियाहै यह सुनकर किशोरकेसरीको और भी भयहुआ और वहबोली कि अरे प्रहास जो तू चन्दनीको छोड़दे तोमैं तुझे इसदुर्गके बाहिरकरदूं प्रहासबोला कि जोतुम मुझको रक्तबाहिनी नदीकेपार पहुंचादो तो मैं अवश्य चन्दनीको देदूं वहबोली कि मुझको नदीकेपार लेजानेकी सामर्थ्य नहीं है यह सामर्थ्य महाराजहीको है तब प्रहास बोला कि अच्छा दोलक्ष मुद्रादो और इसदुर्गके बाहिर निकालदो तोभीमैं चन्दनी को देदूं यह बात किशोरकेसरीने स्वीकारकी और दोलक्ष रुपया मंगवादिया और दुर्गके बाहिर करदेनेकी शपथखाई तब प्रहास द्वादशद्वारीके भीतर चलागया और वहां उसने अपनी थैली मेंसे एक स्त्री मायाविनी निकाली और उसका स्वरूप चन्दनी कासा बनाकर उससे कहा कि देखतू थैलीके बन्धनसे छुटती है और रानी किशोरकेसरीकी मंत्रिणि कहावेगी इससे देखतू अपनेको चन्दनीके सिवाय और कुछ मतबतलाइयो उसको बन्धनसे छुटनेका बड़ाहर्षहुआ और उसने प्रहासका कहना मनसे स्वीकारकिया तब प्रहास उसको लेकर किशोरकेसरीके सन्मुख आया और उसने उसस्त्रीको चन्दनी जानकर उठकर अपने हृदयसे लगाया और प्यारसे पास बैठाकर उसकी पीठपर हाथ फेरा परंतु किशोरकेसरी इतनीबड़ी मायाविनी थी कि हृदयसे लगाने और पीठपर हाथ फेरनेसे उस स्त्रीके शरीरमें दाहहोने

लगा और वह उसको न सहकर भागी तब वह बोली कि क्यों चन्दनी तुझको मायाके मंत्र भूलगये क्या जोतू भागती है उस समय प्रहासने बात बनाई कि रानीजी थैलीमें जानेसे माया भूलजातीहै क्योंकि जोमाया न भूलै तोफिर मायावी उसमें कैसे रहैं यह सुनकर किशोरकेसरीने कहा कि हायमैंने बड़ीकठिनता से इसे माया सिखाईथी अच्छा अब फिर सिखलालूंगी निदान ये बातें होहीरहीथीं कि अकस्मात् आंधीआई और अग्निकी वर्षा होनेलगी और थोड़ीदेरमें एकबिजली कौंधतीहुई आका-शसे नीचेउतरी और पृथ्वीपर लोटकर एक परमसुंदरी स्त्री बन गई और परसोत्तम रत्नजटित वस्त्र और आभूषण धारणकरके किशोरकेसरीके सन्मुखगई वह उसको पहिचानकर उठी और उससे मिली इसकानाम अबडीनचपलाथा और किशोरकेसरी की भैनेलीथी और उससे मिलनेको आया जाया करतीथी नि-दान दोनों प्रीतिपूर्वक मिलकरबैठीं और वार्तालाप करनेलगीं उससमय किशोरकेसरीने प्रहासका सब वृत्तांत कहा और च-न्दनीको दिखलाया उसनेभी उठकर अबडीन चपलाको दंडवत् की उसको देखकर अबडीनने कहा कि यह चन्दनी नहीं है प्रहास बड़ाछली है उसने बड़े बड़े उग्रमायावियोंको मारा है हमारे परमेश्वर मायाकृत चमत्कारकर्ताने उसकी प्रशंसा अपने मायाचरित्रनामी अपने ग्रंथमें लिखीहै भला वह ऐसाहै कि चन्दनीको देदेगा यह सुनकर किशोरकेसरीने उस स्त्रीको भय देकर पूछा कि सत्यबता तू कौनहै वहबोली कि मैं कामरूदेश की रहनेवालीहूं प्रहासने मुझे अपनी थैलीमें कैदकर लियाथा इससमय उसने मुझे चन्दनी बनायाहै यही सरी कथाहै आगे मैं आपके आधीनहूं यह सुनकर वहबोली कि भैना अबडीन तू सत्य कहतीथी इसमरेने मेरेसाथ छलकिया प्रहासभी खड़ाहुआ येसब बातें सुनरहाथा बोला कि अरे दुर्भगा तैंनेभीतो मेरेसाथ

छलकिया मुझे छोड़देनेको कहाथा सो कहां मुझको छोड़ा भले
को मैंने चन्दनीको नहींछोड़ा नहींतो माराहीजाता यह सुनकर
अवडीनचपला बोली कि अरे प्रहास तू बड़ाश्रेष्ठ पुरुष है मैं
तुझको अपने साथ लेचलूंगी तू चन्दनीको देदे यह सुनकर
प्रहास बोला कि मेरेऊपरसे मायाकृत वेष्टन उतारलो और बाग
के बाहिर जानेका मार्ग दीखै तब मुझको विश्वासपड़े कि तुम
छोड़दोगी अभीतकतो तुम अपनी सब प्रकारकी पुष्टता किये
हुएहो और मुझसे चन्दनीको मांगतीहो यह सुनकर किशोरके-
सरीने अपनी माया दूरकरदी और मार्गभी खोलकर कहा कि
लाअब चन्दनीको देदे तब प्रहास कमर टटोलनेलगा और
कहताजाताथा कि देताहूं सब चकित होकर उसकी ओर देख
रहेथे कि इतनेमें प्रहास मरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर अदृश्य होगया
यह देखकर किशोरकेसरी घबराई और बोली कि देख भैना
मराछल करके चलागया अवडीन बोली कि कहीं गया नहीं है
यहीं है इतनेमें प्रहास जालमारकर लूटनेलगा और क्षणमात्र
में वस्त्र और आसन और शय्या और पानपात्र और तांबूल
पात्र और अंतरपट और वितान आदि सब पदार्थ लुटगये
और एक कोलाहल मचगया उससमय प्रहासने पुकारकरकहा
कि हम जातेहैं यह सुनकर दासियां डरकर पुकारनेलगीं कि
कोई कहताहै कि हम जाते हैं एकबोली हमतो इसी आनेजाने
में लुटगये दूसरी बोली भैना मेरीतो गठरीतक निगोड़ेने नहीं
छोड़ी निदान क्षणमात्रमें वह सबघर लूटकर साफ़करदिया और
बागसे निकलकर चलदिया और द्वारपर जोदास और दासि-
यां नियतथीं उनकाभी सब असबाब लूटलिया और उनसे भी
कहा कि हम जातेहैं और नगरके समीप जोग्रामहैं उधर चला
और एक ग्राममें पहुंचकर अपना स्वरूप एक राजदूतकासा
बनाकर विश्रामकिया उधर किशोरकेसरीने मायाबलसे एकपक्षी

बनाया और उसको आज्ञादी कि जहां प्रहासहो वहां देखकर
मुझसे आकरकह यह सुनकर वहपक्षी उड़कर चला और वह
एक मायाकृत यंत्र मँगाकर देखनेलगी कि प्रहास किस भेषमेंहै
इतनेमें वहपक्षी उसग्राममेंपहुंचा जहां प्रहासथा और उसे देख-
कर आया और पुकारा कि प्रहास केसरपुरग्राममेंहै यहसुनकर
और मायाकृत यंत्रदेखकर कि प्रहास एकराजदूतकासा भेषबना
येहै वह वहांसे मायाबलसेउड़ी कि जाकर प्रहासको पकड़लाऊं
और जब उसग्राममेंपहुंची उसने उसपक्षीसेपूछाकि कहांहै उसने
पुकारकरकहा कि वहवृक्षके नीचे बैठाहुआहै वह उसओरको
लपकी परंतु प्रहासनेभी उसपक्षीकी वाणी सुनी और वहशीघ्र
मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर वहांसे भागा तब वह वहींठहरगई और
उसपक्षीकोफिर भेजा कि अबदेखकरआ कि प्रहास किधरगया
वह वहांसेचला और प्रहास एक स्थानपर मरुतदत्त वस्त्र
उतारकर बैठाथा कि वहपक्षी आकर उसके ऊपर थर्राया और
फिर लौटकर किशोरकेसरीके पासगया तब प्रहास समझगया
कि यही पक्षीतेरे होनेका संदेशापहुंचाताहै और मरुतदत्त वस्त्र
ओढ़कर वहांसेभी चलदिया और उसपक्षीने वहां जाकरकहा
कि प्रहास अमुकस्थानपर है किशोरकेसरी वहां आई परंतु
वहां किसीको न पाकर फिर उसपक्षीको भेजा आगे जाकरजहां
प्रहासने वस्त्र उतारा वहीं वहपक्षी उसको देखकर लौटा और
जाकर उसके स्थितहोने का संदेशाकहा वहभी तुरंतवहींपहुंची
परंतु जबतक पहुंचै पहुंचै तबतक प्रहासने मरुतदत्त वस्त्रओढ़
करआगेकीराहली अब आगे २ प्रहास और पीछे २ किशोरके-
सरी चले जाते हैं इसीप्रकारसे दो प्रहरहोगये अंतमें प्रहास
थककर एक गर्तमें बैठगया और मरुतदत्त वस्त्र उतारकरगर्त
के ऊपर वारुण जाल लगादिया इतने में वहपक्षी आया और
देखकर लौट गया उससे संदेशा पाकर किशोरकेसरी उड़ी और

उसगर्तपरआई और प्रहासको बैठा देखकर पुकारकर बोली
अरे वर्णसंकर अबतू कहां जायगा प्रहास बोला कि अरीदुर्भगा
कुलटाआतौ सही यहसुनकर किशोरकेसरी क्रोधितहोकरहस्त
बलकरगिरी और गर्तमें जाकर वारुणजालमें फंसगई तबप्रहास
ने तुरंतउसे खींचकर अपनी थैली में डाललिया और गर्त से
निकलकर आगेका मार्गलिया परंतु किशोरकेसरी अभी सजी-
वथी और उसके मायाकृत चमत्कारभी ज्यों के त्यों बनेथे इस
कारण से बहुतसे मायाकृत पुतलोंने प्रहासको आकर घेरलिया
और उससे कहा कि तू हमारी रानीको छोड़दे प्रहास भागता
जाताथा और कहताथा कि तुमसबके क्यों दुर्दिनआये हैं जो
तुमसुझको अधिक सताओगे तौ मैं तुम्हारी रानीको मारडा-
लूंगा यहसुनकर वे पुतलेडरे और अबडीन चपला उसकीबहने-
ली से आकर सब वृत्तांतकहा उसको सुनकर वह बहुतसेमाया-
वी म्लेच्छ और मायाकृत पुतलों को लेकर दौड़ी बड़ाकोला-
हलहुआ सबकेसब प्रहासके पीछे पीछे चिल्लातेहुए चलेजातेथे
परंतु कोई हाथ नहींडालताथा इसभयसे कि कहीं प्रहास कि-
शोरकेसरीको मारनडाले. प्रहास भागाहुआ वनसे नगरमें आया
और गली गली में भागता फिरा परंतु जब किसीप्रकारसे उन
म्लेच्छ आदिने उसका पीछानछोड़ा तब प्रहासने विचारकिया
कि किशोरकेसरीको मारडालूं और इसी चिंता में था कि आगे
जाकर उसने देखा कि एक हलवाई कढ़ाईमें तेल औटारहा है
प्रहासने उसको देखकर अपनीथैलीका मुखखोला और किशोर-
केसरीको जालमें रखके बाहिरखींचा उससमय उनपुतलों और
म्लेच्छोंने चाहा कि लपिटकर छुटालें परंतु प्रहासने उसजाला
को तुरंत उस कड़ाहु में झाड़ दिया कि किशोरकेसरी उस में
जलकर भस्महोगई बड़ा कोलाहल मचगया और अंधकारछा
गया और वे मायाकृत पुतले जोप्रहासको घेरे हुएथे उसके मर

तेही नष्ट होगये और म्लेच्छ यह देखकर भागे और अवडीन
चपलाभी भयभीत हुई कि प्रहास आपत्तिरूप है ऐसा नहो मैं
भी पकड़ी जाऊं यह सोचकर वहभी भाग कर अपने स्थानकी
ओर चलीगई और प्रहासने इस अंधकारमें दुकानोंको लूटना
आरंभकिया वणिक सब हाहाकरकर करके अपनी दुकानें बन्द
करते जातेथे और नगरवासी भागते फिरतेथे एकमहा आपत्ति
काल होगयाथा कि इतनेमें आकाशसे वाणीहुईकि मैं मारीगई
मेरा नाम किशोरकेसरी मायाथा और जिस माया से वह दुर्ग
आवृतथा वह दूरहोगई मार्ग सब खुलगये तब प्रहास भागकर
उस दुर्गके बाहिर निकलगया और बनका मार्गलिया इसप्रयो-
जनसे कि किसी प्रकारसे रक्तबाहिनी नदी के पार उतर जाऊं
अब समीररूपाका वृत्तांतसुनिये जो कुसुमामायाके साथ प्रहास
के पकड़नेको चलीथीं वह प्रहासको ढूंढ़तीहुई उसी बनमें आ
पहुंची जहां प्रहास फिर रहाथा निदान प्रहासने दूरसे देखा कि
समीररूपा किसीको ढूंढ़तीहुई एक मायाविनी म्लेच्छी के साथ
चली आरही है यह देखकर वह उनसे कोसभर आगे निकल
गया और वहांजाकर प्रकटहुआ उससमय समीररूपा बोली कि
हेकुसुमी माया देखो वहप्रहास खड़ाहुआहै यहसुनकर प्रहास
झाड़ीमें जाछिपा परंतु समीररूपा भुजाली लेकरदौड़ी औरप्र-
हास झाड़ीके भीतरहीभीतर चलकर एकगर्तमें उतरगया और
समीररूपा उसके पादचिह्नोंको देखतीहुई झाड़ी में चली इत
नेमें कुसुमी बोलीकि भैना कहीं श्वांस लेने कासा शब्द आता
है तब समीररूपा चारों ओर देखती हुई चली उधर प्रहासने
एक महान्नाग कागदका बनाकर गर्तके बाहिर निकाला आंखें
उसकी माणिककीलगादीं किजो दीपककीभांति प्रज्वलितदिखाई
देतीथीं और उसके मुखसे अग्निकीसी ज्वाला निकलती मा-
लूमहोतीथी उसकोदेखकर समीररूपा और कुसुमी दोनों भागीं

और प्रहासभी उनके पीछे उस गर्तसे निकलकर चला और विचारकरता जाताथा कि अवसरपाऊं तो दोनोंको पकड़लूं दैव योगसे एकस्थानपर कुसुमीको लघुशंकालगी और वह समीर-रूपासे पृथक्होकर झाड़ीमेंगई तबप्रहासने पीछेसेजाकर उसके गलेमें पाश के कुंडल डालकर बांधलिया उसने घबराकर पीछे फिरके देखा प्रहासने उसकेमुखपर मूर्छाडमारा कि वह मूर्च्छित होगई तब प्रहासने उसकासा अपनास्वरूप बनाया और उसके वस्त्रउतारकर आप पहिरलिये और समीररूपा के पास आकर उसकेसाथ साथ आगेचला थोड़ीदूरपरजाकर प्रहास मरुतदत्त वस्त्रओढ़करअदृश्यहोगया उससमय समीररूपानेजानाकि कुसु-मी बड़ीमायाविनीहै मायाबलसे अदृश्य होगईहै परंतु प्रहासने दूरसे एकम्लेच्छको आतेहुएदेखाथा इसकारणसे अदृश्य होगया और दौड़कर उसम्लेच्छके पासगया और वह मरुतदत्तवस्त्रको उतारकर प्रकटहुआ वह म्लेच्छ अदृश्यखण्डका वासीथा और प्रतिष्ठित म्लेच्छथा उसने कुसुमीको पहिंचानकर दण्डवत्की और पूछा कि आपकहां फिररही हैं प्रहासबोला कि मैं प्रहास के खोज में फिर रहीहूं परंतु तुमसे कुछ कहना है यहकहकर वहउसके समीपगया और उसके मुखपर मूर्छाकर चूर्ण डाल कर मूर्च्छितकरदिया और उसको उठाकर एकझाड़ी में लेगया और वहां उसको औरभी अधिकमूर्च्छितकरके बांधलिया और उसकारूप अपना सा बनाकर और पीठपर लादकरचला यहां समीररूपा चकित थी कि कुसुमी अंतर्द्धानहोकर कहांचलीगई और उसेढूंढ़तीफिरतीथी कि एकओरसे उसने कुसुमीको प्रहास को लादेहुए लाते देखा समीररूपा झपटकर उसके पासगई और बोली कि आपने इसको कहींदेखाहोगा इससे आपअदृश्य होगईथीं परंतु परिश्रम आपका ठिकानेलगा आपनेइसको भले प्रकारसे पकड़ा नहीं तो इसका हाथ लगना कठिनथा परंतु

अबआपसे मेरी यह बिनयहै कि महाराजके सन्मुख यह न कहियेगा कि प्रहासको मैंने पकड़ाहै कि तुमयहकहियेगा कि समीररूपानेपकड़ाहै क्योंकि बहुरूपियेका पकड़ना हम बहुरूपिनियोंहीका कामहै और इस बहुरूपियेको मुझे देदीजिये कि मैं इसकोबांधकर पृष्ठभारबनाकरलेचलूं यहसुनकर कुसुमीरूपी प्रहास ने कहा कि मेराचित्त चाहता है कि इसको चैतन्यकरके कुछहालपूंछूं वहबोली कि ऐसाकदापि न कीजियेगा क्योंकि यह चैतन्यहुआ और कुछ न कुछ आपत्तिआई और फिर तुरंत छूट जायगा और फिर पकड़ा न जायगा आप इसको मुझे देदीजिये आपके कारणसे मेरीप्रतिष्ठा होजायगी आगेआपकी जोइच्छा हो तब कुसुमीरूपी प्रहास ने उसकी बिनयको स्वीकार किया और उस मिथ्या प्रहासको उसेदेदिया तब समीररूपा ने उस प्रहासरूपी म्लेच्छको पाशसे बांधकर वस्त्रमेंलपेटा और पृष्ठभार बनाकर लादलिया और वहांसे प्रसन्नतापूर्वक चली और आगे बढ़कर उसने कुसुमीरूपी प्रहाससे मंत्रकिया कि मायाकृत मार्गसेचलेंतो अच्छा है ऐसानहो कि दूसरे मार्गसे चलने में कुछ बाधालगे निदान दोनों मायाकृत मार्गकी ओरचलीं और एक बनमें पहुंचीं वहबन सब सुवर्णकाथा सबबनमें अग्निसी लगीहुई दृष्टि आती थी सबवृक्ष और घास और पृथ्वी तक वहांकी सुवर्णकीथी ऐसाजान पड़ताथा किमायाने पृथ्वीको सुवर्णकेवृक्ष और घासकेआभूषण पहिराये हैं अथवा बसंत ऋतुने पीत पुष्परूपी वस्त्रोंको उतारकर सुनहरीवस्त्र धारण कियेहैं उनवृक्षोंके फूल और फल सूर्यरूपी फूलको भी लज्जित करतेथे और ईर्षाकरके डाहकी अग्निमें जलाते थे सब वृक्ष फूलेफले अपूर्व चमत्कार दिखातेथे धन्य है उस परमेश्वरकी मायाको जिसने आसुरी मायाकृत ऐसेऐसे अद्भुत चमत्काररचे जो जलकी धारा बहतीथीं वेभी सुनहले रंगकीथीं और तरंग

उसजलकी ऐसीशोभा देतीथीं जैसे स्वर्णकारकी कुठालीमें सुवर्ण चक्रखाताहुआ दृष्टि आता है और सुनहलीघास हरितदूब कीभांति लहलहातीहुई आकाशके तारागणोंको लज्जित करती थी चारोंओर उस बनके सुवर्णके पर्वतथे और उनमेंसे झिरने झरतेथे और उनके ऊपर केसरिये फूल फूलेहुए परम शोभा देते थे कुछ अपूर्वही वहांकी शोभाथी जो कहनेमें नहीं आसकती है ॥

क० कंचनकेद्रुम कंचनवेलि प्रसून सुकंचनके अतिनीके।
कंचनकेखग कंचनकेमृग शोभितवारिज कंचनहीके॥
कंचनकोजल कंचनकोथल कंचनभौंर भ्रमैंहरहीके।
कुंजलालबर कंचनके शुचिमन्द्रबने सुप्रमोदकजीके॥

दो० शोभावर बैकुंठ सम तहँकी बरणि न जाय।
बरणतचकभकहोतिमति वाणीसकतनगाय॥

प्रहास कुसुमी बनाहुआ समीररूपाके साथ साथ उस बनकीशोभा देखताहुआ चलाजाताथा और सोनेके बनकोदेखकर मनहीमनमें कहताथा कि कोई उपाय मिलेतो बनके बन लेकर अपनी थैलीमें रखलूं परंतु फिर सोचताथा कि यह सब मायाकृत चमत्कारहैं देखनेहीभर सोनेकेहैं इनका लालचकरना अनुचितहै निदान इसीप्रकारकी बातें चित्तमें विचारता हुआ चलाजाताथा कि इतनेमें उस सुवर्णके बनकीसीवां समाप्त हुई और वह एक मुक्ताके बनमें पहुंचा वहांघास और वृक्षोंके पत्ते पन्नेके बनेथे और उनमें फूल प्रकार २ के रत्नोंके और फल मोतियोंके लगेथे और सब बनस्पतियोंकी नोकपर मुक्तालगे हुए रात्रिके दीपककीभांति चमकतेथे निदान वहबन मुक्ताओंसे जगमगाताहुआ ऐसा मनोहर और शोभायमान बनाथा कि बर्णन नहीं होसकता है ॥

चौ० पन्नानिर्मित सुचि हरियारी। लहलहाति तहँ शोभाभारी॥
गंधभरे अति सुखमाभारे। रतननि बने प्रसून संभारे॥

मुक्ताफल लघुदीरघ सोहैं। लखेंजेभाइ तिनहिंते मोहैं॥
अतिविचित्र शोभामनभाई। ता वन वरकी कही न जाई॥

जब उसस्थानसे और आगे बढ़े देखा कि एक स्फटिककी भीत पृथ्वीसे आकाशतक ऊंची बनीहुई है कोसोंतक उसमेंद्वार बनेहुए चलेगयेहैं और सामने उसके सहस्रों स्फटिकके पुतले हाथमें खड्ग और चर्म लियेहुए खड़ेहैं और उसभीतके बीचो बीचमें एकमूर्त्ति चित्रकीभांति खड़ीहुईथी समीररूपा उसकेपास गई और बोली कि हे मायाकृतमूर्त्ति मायाधीश महेन्द्रके कार्यके लिये मुझेमार्गदे तब उसमूर्त्तिका पेटफटगया और उसमेंसे एक द्वार दिखाईपड़ा प्रहास और समीररूपा उसमें घुसगये और घुसनेके पीछे एक शब्दहुआ और वहद्वार बन्दहोगया प्रहास और समीररूपा आगे बढ़े और एक बड़े मनोरम वनमें पहुंचे जो प्रकार प्रकारके अपूर्व फूलोंसे फूलाहुआथा वायु वहांकी महान् सुगंधित और मन प्रमोदकथी और फूलोंमेंसे गंधधारा प्रवाहकी समान निकलतीथी और एकउत्तमता यहथीकिचारों ओर घटा घिरी हुईथी कि उनसे वर्षाकाल सदैव वहां मालूम होताथा मानों सावन भादोंका समयहै कहीं जलकी फुहारें पड़ रहीथीं घटा घनघोर छाईथीं दामिनी चमकतीथी और महान् आनन्द छाया हुआथा॥

क० बरसें बन कुंजन पुंजलता सिक मंजु मयूरनिको सरसें। मधुघोर किशोर करें घनये चपला चल चारुकलादरसें॥ अलिहो बल तू चलि वेगि हहा उत तो बिन प्राण पियातरसें। उमड़े द्रुमड़े घुमड़े घन आजु मिही बुंदियान मड़ौ बरसें १॥ पवन झकोरै झकझोरै झोरै बुन्दबोरै घनेघनघोरै बोरैदौरैचहुं ओरैरी। बिज्जुछटाकोरे बिनयोरै जीरसाल कोरै आवतआषाढ़भारी ठौरै ठौरै खोरैरी। जोरै प्रेमभोरे चित धीरज बिथोरै नाहिं मानत निहोरै कानदादुर ये फोरैरी। तोरैलाज छोरै कुलकानि बरजोरै बीरमोरनिकी शोरै मोरे मनहिमरोरैरी २॥

इसअपूर्व बनमें यद्यपि वर्षा होतीथी परंतु शरीरपर एकबूंद नपड़तीथी समीररूपा और कुसुमीका रूपधारणकिये हुए प्रहास दोनों उस बनमें बिहारकरते हुए एक ऐसेस्थानपर पहुंचे जहां आठ हिंडोले खड़ेथे ये दोनोंजाकर एक हिंडोलेपरबैठगईं कि अकस्मात पृथ्वी फटी और उसमेंसे दोहस्त प्रकटहुए और वे इनदोनोंको उठाकर उड़े और एकहरे भरे बनमें उनदोनोंको उतारकर अंतरधानहोगये वह बनभी परम शोभायमान और रमणीकथा हरीहरीदूर्बा हरीहरीलता हरेहरेद्रुम लगेहुएथे अपूर्व उनका हरित बर्णथा कि जैसा देखा नसुना फूल नाना भांति के खिले हुएथे भ्रमर उनपर गुंजार कररहेथे पक्षी भांति भांति की मधुर बोलियां बोलरहेथे तड़ागोंमें चित्र बिचित्र कमल फूलेथे जलधारा बहरहीथीं और बड़ी अपूर्व शोभा देरहीथीं झीलें निर्मल नीरसे भरीहुई शोभायमान थीं और उनके किनारे की हरेरी चित्तको परमानन्द देतीथी॥

क०। फूल अनेकनि फूलिरहे द्रुम बेलिनिमें अतिसुंदर ताके।
चंपाचमेली गुलाब जुही बिकसे शुचिकंजमनोहरताके॥
बेलाऔ कुंद कुमोदिनके-बरराजत फूल सुमंजुलताके।
कुंजलाल छबिताकीभलीअति अंगअनंगजगावतिताके १॥

निदान येदोनों उसमनोरम बनमें बिहारकरतेहुए चलेजाते थे कि सामनेसे कुछशब्द प्रकटहुआ और एकप्रतिष्ठित म्लेच्छ की सवारी बड़ी धूमधामसे आतीहुई दृष्टिपड़ी आगेआगे बहुत से सेवक हाथों में सुनहले रुपहरी लकुटलियेहुए चले जाते थे और सहस्रोंदास उत्तम उत्तम बस्त्र धारणकिये हुए साथथे और एक बिमानपर वहम्लेच्छ बैठाहुआ चलाआताथा नाम उसका कालखंजथा बंदीजन उसकीस्तुतिकरते आतेथे समीररूपाने आगे बढ़कर उसको दंडवत्की और उसने पूछा कि कहो समीररूपा कहां चली वह बोली कि प्रहासको पकड़कर

महाराज महेन्द्र के पासलिये जाती हूं कालखंज बोला कि मैं भी वहीं जाताहूं चलो हमारे साथचलो सवारी मौजूद है इस पर चढ़लो समीररूपा बोली कि श्रीमान् हम बहुरूपिनी हैं सब स्थानों में फिराकरती हैं जो हम सवारी ढूंढ़ाकरें तो हमारा काम क्योंकर चलै इससे आप आगे चलें मैं आप के पीछे २ आती हूं यह सुनकर वह म्लेच्छ आगे बढ़ा और समीररूपा और कुसुमी भी चली और जब उस बनके मार्ग को उत्तीर्ण करके आगे बढ़ीं तब उनको एक त्रिपोलिया मिला और उसके आगे एक स्फटिककी भीति बनीहुईथी समीररूपा ने वहां जाकरकहा कि मायाकृत देशाधिप के कार्य के निमित्त मुझको मार्गदे यह सुनतेही वहभीतफटी और समीर रूपा और कुसुमी उसमें होकर आगेबढ़ीं और देखा कि एक सेना म्लेच्छोंकी उतरी हुईहै डेरेखड़ेहैं तंबूतने हैं कढ़ाउ चढ़े हैं सब म्लेच्छ अपना २ सुपासदेखकर उतरेहुएहैं और नाना प्रकारके आसन बिछायेहुए कोई नहारहा है कोई भोजनकर रहा है कोई भोजनबना रहाहै कोई अपने मतके अनुसार पूजा करहा है कोई आसुरी मायाकी शिक्षाकर रहा है साधक उस को सीखरहाहै कोई रक्तकीआहुति अग्निमें देरहाहै कोई मृदंग बजारहा है कोई बीणामें तानउड़ारहाहै कोई बांसुरी में अलाप रहाहै कोईनृत्य देखरहाहै कोई मद्यपीरहाहै कोई हास्यकररहाहै कोई जपकररहा है कहीं मल्लयुद्धकी शिक्षा कहीं खड्गयुद्धकी शिक्षाकहीं गदायुद्धकी शिक्षा और कहीं बाणबिद्याका अभ्यास होरहाहै निदान जब समीररूपा वहां पहुंची उसको प्रबन्धाधिपने रोका और कहा कि क्या कारणहै जो तू दृश्यमार्गकोछोड़कर मायाकृत मार्गसे आई है इसमें कुछ भेदहै यह सुनकरसमीररूपाने प्रहासके पकड़ेजाने और उसके छुटजाने के भयसे दृश्यमार्ग से न आने का वृत्तांतकहा तब वहबोला कि आप

थोड़ीदेर ठहर जाइये मैं महाराजसे आपके भीतरजाने की आ-
ज्ञालेलूं यहसुनकर समीररूपाठहरगई और उसने एकम्लेच्छ
को महेन्द्रके पासभेजा उसने जाकर महेन्द्रसे समीररूपा और
कुसुमीके आनेका वृत्तांतकहा तब वहां से आज्ञाहुई कि उनको
रोको मत आनेदो उस म्लेच्छ ने आकर वह आज्ञा प्रबन्धा-
धिपको सुनाई और उसने उनदोनों को भीतरजाने की आज्ञा
दी निदान वे दोनों भीतरगईं औरबदरी उद्यान की पृष्ठि उन
को दिखाई पड़ी इस उद्यान के इसओरभी रत्नजटित परमसुं-
दर द्वार बनाहुआथा और सहस्रों म्लेच्छ रक्षाकरतेहुए खड़ेथे
समीररूपाने कुसुमा अर्थात् प्रहास सहित उस में प्रवेशकिया
प्रहास इस उद्यान में पहलेभी आचुकाथा परंतु वह उससमय
सन्मुख के द्वारसे आयाथा और अबकी बार मायाकृत मार्ग
से पृष्ठिकी ओर से आयाहै इसओर उस उद्यानको उसने स-
न्मुखकी ओरसे द्विगुणशोभायमान और अलंकृतपाया और
यह स्थान महेन्द्रके रहनेका है इसकारण से नित्यप्रति इसकी
अलंकृतता और शोभा बढ़ती जाती है नित्यही सहस्रों अलं-
कार और मायाकृत चमत्कारों से वह युक्त किया जाता है नि-
दान इस समय जो प्रहासने उस उद्यानको देखा तो चकमक-
सा होगया और मूलमंत्र पढ़नेलगा और उसको वह स्थान
बैकुंठ की समान दृष्टिपड़ा वृक्षवहां नीलमणि पुखराग पद्मराग
और बैडूर्यके लगे थे और पृथ्वी सोनेकी और उसमें भांति २
के रत्न जटित थे और लाल और गोमेद और शिल्पक आदि
रत्नों के नगीने लगेथे उनकी द्युति आकाश के तारागणों को
लज्जित करती थी क्यारियां उस बागमें माणिक की बनी थीं
और उनके चारोंओर पन्नेके कटहरे लगेहुए परमशोभा देतेथे
उनमें लालरंग के फूल ऐसे उत्तम प्रकाशमानथे कि उदयादि-
त्यभी उनकी समताको नहीं पासकताथा बायु वहां परमसुगंधित

मंद मंद चलतीथी मानों उनफूलों के स्पर्शके घमंडसे इतराती थी और रसिकोंके हृदयमें बाणरूपी पंचबांणको उत्पन्नकरतीथी और लालोंके बृक्षोंमें मुक्ताओंके गुच्छे लटकतेहुए ऐसेदीखतेथे मानों सूर्यके बृक्षमें तारागण लटकेहुएहैं और तड़ाग नाना प्रकारके रत्नोंसे जड़ेहुएथे और उनमें भांति२ के नवीन सुगंधित जलभरेथे और नीलमणिकी शाखाओंसेआच्छादितथे औरअनेकप्रकारकेरत्नोंके बनेहुएजलपक्षी उनमें पैरते फिरतेथे और गोतेलगालगाकरकिलोलकररहेथे अपूर्वउसस्थानकीशोभाथी॥

सो० हौसो अद्भुतठाम बरणिसकै तेहिकौन कबि ।
जनुरचिकेनिज धाम शोभाकरतिनिवासतहँ॥

आहा क्या प्रशंसा उसस्थानकी कीजाय नैनभी उसकीशोभा को नहींजानसक्के थे उस उद्यानको जो नन्दनवन का दीपक अथवा बैकुंठको लज्जित करनेवाला कहाजाय तौभी उचितहै॥

क० बागअनूपबनो अतिसो द्रुमभूमिरहे सब रत्नसंभारे।
रत्न बनेसुप्रसून लगे द्युतिमें चमके नभके जिमितारे॥
गंधभरी शुचि पौन चलै उपजावति अंग अनंगतरारे।
रत्ननिकी द्युति छायरही जनुछूटतहैं बहुतेजफुहारे १॥

निदान समीररूपा और कुसुमा दोनों उसबागमें होतीहुई एक बड़े महल में पहुंचीं जहां महेन्द्र बड़े अद्भुतसिंहासन पर परमअलंकृत बिराजमानथा और ओरपास उत्तमोत्तम आसनोंपर सहस्रोंम्लेच्छ बैठेथे और वहपछिआर जिसमें वहम्लेच्छ बंधाहुआथा जिसका स्वरूप प्रहासने अपनासा बनादियाथा महेन्द्रके सन्मुख रखदिया और प्रहासके खोजलगाने और उसके पकड़ने में व्यवसाय करने का अपना कर्मबड़ी बाहुल्यता के साथ बर्णन किया उसको सुनकर महेन्द्र ने उसको बहुतसा पारितोषिक दिया इसके पीछे कुसुमाने भी बढ़कर दंडवत् की महेन्द्र ने उसे बैठने को उत्तम आसन दिया और आज्ञादी कि

उससे उसके देश का कर आजसे न लियाजावे इसके पीछे महेन्द्र ने मायावतीसे कहा कि मैंने सिंह सिंहनी और गृद्धको परमेश्वर के कलिके लानेके लिये भेजाथा परन्तु न जाने क्या कारण है जो अभीतक नहीं आये इससे तुम इतना परिश्रम करो कि रत्नाकर पर्वतपर चलीजाओ और परमेश्वरके कलि चित्रांगद नामीको लेआओ और मेरी ओर से उन से कह देना कि वह कुत्सितकर्मी प्रहास पकड़ा गया है आप शीघ्र चलकर उसका बध कीजिये बिलंब न कीजिये यहसुनकर मायावतीने प्रथमतो निषेध किया कि महाराज पहिले मेरी बहिन निद्रावती वहांजाकर अप्रतिष्ठित होचुकीहै मैं वहां न जाऊंगी परंतु जब महेन्द्रने न माना और दूसरी और तीसरी बेर कहा तब वह वहांसे चलकर अपने स्थानपर आई और दो सहस्र रत्नजटित वस्त्रोंसे अलंकृत दासियोंको साथलेकर आपभी उत्तमोत्तम वस्त्र और आभूषण धारण करके मायाकृत बिमान पर बैठी और चलदी वहां रत्नाकर पर्वत पर सिंह और सिंहनी पहुंचेथे और लोग उनको देखकर घबरारहेथे कि इतनेमें सुनहली घटा उठी और रत्नोंकी बर्षा हुई उसको देखकर वहां के म्लेच्छोंने कहा कि मायावती कासा आगमन जान पड़ताहै वे यह बात कहही रहेथे कि इतनेमें मायावतीका बिमान पृथ्वीपर उतरा और वह उसपरसे उतरकर सिरसे पाउंतक रत्नजटित आभूषण और परमोत्तम बस्त्रधारणकिये दोसहस्र सुंदरदासियों सहित अद्भुत मिथ्या ईश्वरके सन्मुखआई और उसको साष्टांग दंडवत्करके उसकीपूजाकी अद्भुतने उसेबैठनेको आसनबताया और वह उसपर हाथ जोड़ेहुए बैठगई तब अद्भुतने उससे पूछा कि अरी मेरी सेवक तेरे आनेका क्या निमित्तहै वह बोलीकिहे परमेश्वर प्रहास पकड़ागयाहै महाराज महेन्द्रने उसकाबधकरनेके लिये चित्रांगदजीको बुलायाहै औउनके लेजानेको सिंह

और सिंहनी और गृद्धको भेजाहै यह सुनकर चित्रांगद बहुत हँसा और बोला कि प्रहासका पकड़ा जाना बड़ा कठिन कर्म है मैं मायाकृत देशमेंजाकर अपने प्राण न दूंगा प्रहास बड़ा गुरूहै उसकी मृत्यु किसीके हाथसे नहींहै यदि वह पकड़ाभी आता है तो दो एकके शिर काट कर और लूट मार करके चला जाताहै जो उसको महेन्द्रने पकड़वायाभी होगा तो जबतक मैं पहुंचूंगा तबतक वह महेन्द्रका सिर काटकर चलाभी जायगा यहसुनकर मायावती बोली कि श्रीमानमायादेशधिप उस समय तक मारा नहीं जासकताहै जबतक वहदेश बिजय न करलियाजावे आप चलिये निदानबहुत कुछकहनेसुननेसेचित्रांगद सिंहपरचढ़कर चला और गृद्धउसके साथसाथ होलिया कि आगेजाकर उसके ऊपर बैठकर चित्रांगद जायगा परंतु यहां मायावती जो अद्भुत से बिदामांगकर चली उसने बिचार किया कि मैं इतनी दूरतो आईहीहूं चलो महाराज शत्रुंजयकी भी सेना देखती चलूं यह बिचारकरके वह किले के बाहिर आई और शत्रुंजय की सेना की ओर गई और एक ऊंचे स्थानपर अपना विमान उतार कर सनो को देखने लगी और देखा कि हरएक सेनापति की सिबिरके आगे हाटलगीहुईहै कहीं सुवर्णका क्रयहै कहीं रत्नों का बिक्रय है कहीं चीन देशियों की हाट है कहीं गौरंडीय देश के बणिकोंकी बाटहै यदि इनहाटों का पूरावर्णन कियाजाय तो ग्रंथबहुत बढ़जाय इससे संक्षेप यह है कि एक ओर उसनेभा- स्करी डेरेको देखा कि उसपर सहस्रोंसोने के कलश चढ़ेहुएथे और हरएक के ऊपर रत्नोंके मयूर अपनीचोंचोंमें मुक्ताओंकी माला लियेहुए बैठेथे उसके दोनोंओर मार्गरत्नों को कुटवाकर बनायेथे और मार्गोंकेदोनोंओर हाटेंलगींहुईथीं राजसेवकचांदी केघटोंमेंजलभरभरकर उनमार्गोंपर जलछिड़करहेथे और सुन- हले बस्त्रधारण कियेहुएथे सेनापति अपनी २ सिबिरोंसे निकल

निकलकरभास्करी सभामें जातेथे और महाराजकी सेना दृष्टि की अवधितक पड़ीहुई दिखाईदेतीथी और ऐसा जानपड़ताथा मानोंसेनारूपी समुद्र पूर्वसे पश्चिम और उत्तरसे दक्षिणतक लहरें लेरहा है और सेना में नानाप्रकार के भक्ष्य और भोज्य पदार्थ बनरहेथे मांसके लिये पशुमारे जातेथे कहीं शूरवीरखड्ग युद्धका अभ्यासकररहे थे कहीं बाणविद्या की परीक्षाहोरही थी कहीं विष्णुभगवानका पूजनहोताथा कहीं गानहोरहाथा निदान मायावती उसकोदेखकर चकितहोगई और उससेनाके शूरवीरों की गणनाको मनमें पूजकर कहनेलगी कि महाराज शत्रुंजय का प्रताप पृथ्वीमें आकाशपर्यंतछाया है इनसे युद्धकरनेकी किसकी सामर्थ्य है धन्य है इससेनाको और इसके शूरवीरोंको और इसके नेताकोभी धन्यवाद है॥

चौ॰ चतुरंगिनीसुदुर्ग मसेना। अतिशय महाउग्र जगजैना।
शूरविक्रमी अतिरनकर्कस। सोहैं लिये धनुपसरतर्कस॥

मायावती उससेनाको खड़ीहुई चकितहोहोकर देखरही थी कि इतनेमें एकओरसे हटियो बचियोका शब्द सुनाईपड़ा और आगेआगे सेवक सुगंधित जल छिड़कतेहुए निकले उनके पीछे बहुतसे सुंदर स्वरूपवान लड़के हाथोंमें सोनेकी अंगीठियांलिये और उनपर अगर तगर आदि सुगंधितद्रव्योंको सिलगातेहुए आये और उनके पीछे सेवक हाथोंमें सुनहली रुपहरी लकुटि लिये हुए प्रकटहुए उनके पीछे अश्वसादी सुनहले वस्त्रधारण किये हुए आये उपरांत बहुत से सेवक रत्नों के बनेहुए वृक्ष और फूलोंको हाथों में लियेहुए निकले जिनवृक्षों में मोतियों के गुच्छे लटके हुएथे और उनके उपरांत एक परमोत्तम वायुवेगी अश्वपर सवार श्रीमत्महानुभाव महाराज शत्रुंजय सूनु श्री वीराधिराज श्रीभीमविक्रम पुत्र श्री राजकुंवर रुद्रविक्रमकी सवारीआई उसके चारोंओर बहुतसे वीर राजपुत्र जिनको उस

राजपुत्रने युद्धमें जयकियाथा घोड़ोंपर सवारथे उनमें से मुख्य मुख्य शांतनुके पुत्र चक्रदत्त और शूरसेनके पुत्रसह्यथे इनके पराजितहोने और आज्ञामें रहना स्वीकार करनेकी कथा ग्रंथ के पूर्वार्ध में वर्णितहै निदान मायावती उसके सुंदर स्वरूपको देखतेही चकित होगई क्योंकि वह राजपुत्र परम स्वरूपवान् कामदेव कीसी मूर्तिथा उसके मुखारविन्दके तेजसे सूर्यका तेज भी लज्जित होताथा और पराक्रमी ऐसाथा कि भीमसेन भी उसकी समताको नहीं पहुंचताथा॥

चौ० नूतनतरु सम पुष्टशरीरा। वयकिशोर सुंदर बल बीरा॥
वसन अनूपम रुचिरसुहाये। अंगअंग प्रति ते छबि छाये॥
मुखमण्डलशुचिभरोप्रभाको। लसैलसै जिमिइन्दु निशाको॥
भाल विशाल महाछबिछायो। तप्त हेमसम रुचिर बनायो॥
भ्रकुटी सुभग अनूप सुहावैं। अरिलखिभयतियलखिमुदपावैं॥
नैन विशाल कंज रतनारे। तियमन हर रिपुउर भयकारे॥
दीर्घ मनोहर उन्नत नासा। वर कंचनसम जासु प्रकासा॥
पुष्प प्रफुल्लितसम मुख सोहै। अधरवरण कामिनिमनमोहै॥
शुभ्रदंत दुति यविधि विभांती। जिमि सोहै मुक्तनिकी पांती॥
सुंदर मंजुल चिवुक ललामा। प्रभा भरी अति शोभा धामा॥
वृषभ कंध अति बाहु विशाला। पुष्ट पीन शत्रुन कर काला॥
युगल जंघ कदली सम सोहैं। लखिशोभा कामिनि मनमोहैं॥
ताकी अनुपम छवि सुघराई। कुंज लाल पै वरणि न जाई॥
मनहुं शूरता अरु सुंदरता। विधिमिलाइ प्रकटी नूतनता॥
लखि सुंदरतातिय अनुरागें। देखि वीरता अरिभय पागें॥

निदान मायावती उस राज कुंवरके वीरता भरे हुए सुंदर शोभायमान स्वरूपको देखकर तनमनसे उसपर मोहितहोगई और उसकाधीर्य जातारहा और मूर्च्छाआगई उससमय दासियों ने सुगंधित जल छिड़क कर उसको चैतन्य किया इतनेमें उस राजपुत्रकी सवारी निकलगई और वह उसके शोकमें हाथमल

कर रहगई कुछ उसका बस न चला और अंतमें अपने हृदयमें विरहाग्निको स्थापित करके वहांसे रोती हुई मायाकृत देशकी ओर चलदी और चित्तमें कहने लगी कि बिना प्रहासके मेल किये प्राण प्यारेसे मिलना असंभवहै दूसरे यहभी अनुचितहै कि तू मायाकृत देशमेंरहकर महाराज शत्रुंजयके अनुचर प्रहास की सहायता न करे जब मुझको मेरा प्राण प्यारा मिलेगा और उससे प्रहास मेरे सहायता न करनेकी बुराई करेगा तब मुझको बड़ी लज्जा होगी इससे उचितहै कि यहांसे चलकर प्रहासको मायाकृत नदीके पार लेआऊं और रानी निशाकरीकी आज्ञा में रहूं निदान वह इस प्रकारकी बातें सोचतीहुई और राजपुत्र के विरहमें मन मलीन होकर नीचे लिखे हुए पद पढ़ती हुई चली जातीथी ॥

क० सदा व्याकुलहीरहैं आपुबिना इनकोहू कछूकहिजाइयेतो।
इकबारहुताहिंनदेख्यो रूभूतिनको मुखचन्ददिखाइयेतौ॥
हरिचन्दजूये अंखियां नितकोहैं वियोगिनिइन्हेंसमुझाइतौ।
दुखियानको प्रीतमप्यारे कभों वहरायके धीरधराइयेतौ १॥
कोनघड़ी करिहैं विधिनाजब रूएअंदिल दार विबीनम्।
आनन्द होय तभै सजनी दरसोहबत यारे निगार नशीनम्॥
प्राणपियारोमिलै जबहीं दरबागे वस्लगुल् ऐश विचीनम्।
मूरत मित्र चित्तबसी कविगंग कहैं चूनकुशेनगीनम् २॥

इसप्रकारसे राजकुंवरके विरहमें व्याकुल होतीहुई वह मायाकृत देशमेंआई और उधर चित्रांगद सिंहपर सवार होकर मायाकृत देशमें पहुंचा और वहांसे गृद्धपर सवारहुआ और उस देशके अनेक मायाकृत चमत्कारोंको देखता हुआ चला उसके आनेका संदेशा मायाकृत पक्षियोंने महेन्द्रकोपहुंचाया और वह बड़े बड़े प्रतिष्ठित म्लेच्छोंको लेकर उसकी आगौनीको गया और बड़ी धूमधाम से उसे प्रथम विचित्रमायाकी सेना दिखाने को प्रतक्षखंडमें लाया विचित्रमायाने बड़े२मान्य म्लेच्छों सहित

राजपुत्रने युद्धमें जयकियाथा घोड़ोंपर सवारथे उनमें से मुख्य मुख्य शांतनुके पुत्र चक्रदत्त और शूरसेनके पुत्रसह्यथे इनके पराजितहोने और आज्ञामें रहना स्वीकार करनेकी कथा ग्रंथ के पूर्वार्ध में वर्णितहै निदान मायावती उसके सुंदर स्वरूपको देखतेही चकित होगई क्योंकि वह राजपुत्र परम स्वरूपवान् कामदेव कीसी मूर्तिथा उसके मुखारविन्दके तेजसे सूर्यका तेज भी लज्जित होताथा और पराक्रमी ऐसाथा कि भीमसेन भी उसकी समताको नहीं पहुंचताथा॥

चौ० नूतनतरु सम पुष्टशरीरा। वयकिशोर सुंदर बल बीरा॥
वसन अनूपम रुचिरसुहाये। अंगअंग प्रति ते छबि छाये॥
मुखमण्डलशुचिभरोप्रभाको। लसैलसै जिमिइन्दु निशाको॥
भाल विशाल महाछविछायो। तप्त हेमसम रुचिर बनायो॥
भ्रकुटी सुभग अनूप सुहावैं। अरिलखिभयतियलखिमुदपावैं॥
नैन विशाल कंज रतनारे। तियमन हर रिपुउर भयकारे॥
दीर्घ मनोहर उन्नत नासा। वर कंचनसम जासु प्रकासा॥
पुष्प प्रफुल्लितसम मुख सोहै। अधरवरण कामिनिमनमोहै॥
शुभ्रदंत दुति यविधि विभांती। जिमि सोहै मुक्तनिकी पांती॥
सुंदर मंजुल चिबुक ललामा। प्रभा भरी अति शोभा धामा॥
वृषभ कंध अति बाहु विशाला। पुष्ट पीन शत्रुन कर काला॥
युगल जंघ कदली सम सोहैं। लखिशोभा कामिनि मनमोहैं॥
ताकी अनुपम छवि सुघराई। कुंज लाल पै बरणि न जाई॥
मनहुं शूरता अरु सुंदरता। विधिमिलाइ प्रकटी नूतनता॥
लखि सुंदरतातिय अनुरागें। देखि वीरता अरिभय पागें॥

निदान मायावती उस राज कुंवरके वीरता भरे हुए सुंदर शोभायमान स्वरूपको देखकर तनमनसे उसपर मोहितहोगई और उसकाधीर्य जातारहा और मूर्च्छाआगई उससमय दासियों ने सुगंधित जल छिड़क कर उसको चैतन्य किया इतनेमें उस राजपुत्रकी सवारी निकलगई और वह उसके शोकमें हाथमल

कर रहगई कुछ उसका बस न चला और अंतमें अपने हृदयमें विरहाग्निको स्थापित करके वहांसे रोती हुई मायाकृत देशकी ओर चलदी और चित्तमें कहने लगी कि बिना प्रहासके मेल किये प्राण प्यारेसे मिलना असंभवहै दूसरे यहभी अनुचितहै कि तू मायाकृत देशमेंरहकर महाराज शत्रुंजयके अनुचर प्रहास की सहायता न करै जब मुझको मेरा प्राण प्यारा मिलैगा और उससे प्रहास मेरे सहायता न करनेकी बुराई करैगा तब मुझको बड़ी लज्जा होगी इससे उचितहै कि यहांसे चलकर प्रहासको मायाकृत नदीके पार लेआऊं और रानी निशाकरीकी आज्ञा में रहूं निदान वह इस प्रकारकी बातें सोचतीहुई और राजपुत्र के विरहमें मन मलीन होकर नीचे लिखे हुए पद पढ़ती हुई चली जातीथी॥

क० सदा व्याकुलहीरहैं आपुविना इनकीहू कछूकहिजाइयेतौ।
इकबारहुताहिंनदेख्यो कभूतिनको मुखचन्ददिखाइयेतौ॥
हरिचन्दजूये अंखियां नितकीहैं वियोगिनिइन्हेंसमुझाइतौ।
दुखियानको प्रीतमप्यारे कभों वहरायके धीरधराइयेतौ १॥
कोनघड़ी करिहै विधिनाजब रूएआंदिल दार बिबीनम्।
आनन्द होय तभै सजनी दरसोहबत यारे निगार नशीनम्॥
प्राणपियारोमिलै जबहीं दरबागे बस्लगुल् ऐश बिचीनम्।
मूरत मित्र चित्तबसी कविगंग कहैं चूंनकुशनगीनम् २॥

इसप्रकारसे राजकुंवरके विरहमें व्याकुल होतीहुई वह मायाकृत देशमेंआई और उधर चित्रांगद सिंहपर सवार होकर मायाकृत देशमें पहुंचा और वहांसे गृद्धपर सवारहुआ और उस देशके अनेक मायाकृत चमत्कारोंको देखता हुआ चला उसके आनेका संदेशा मायाकृत पक्षियोंने महेन्द्रकोपहुंचाया और वह बड़े बड़े प्रतिष्ठित म्लेच्छोंको लेकर उसकी आगौनीको गया और बड़ी धूमधाम से उसे प्रथम विचित्रमायाकी सेना दिखाने को प्रतक्षखंडमें लाया विचित्रमायाने बड़े२मान्य म्लेच्छों सहित

आगे बढ़कर सत्कारकिया मायाकृत बाद्यबजायेगये रानीनिशा-
करीकीभी सेना दिखाई और सब वृत्तांतकहा और सभामें बड़े
आदरसे उसे बैठाकर वेश्याओंको बुलाया और नृत्यहोनेलगा
उस समय महेन्द्रने आज्ञादी कि जबतक चित्रांगदजी यहां
बिराजमानहैं तबतक कुछ लोग जाकर बदरी उद्यानमें उनके
अर्चनकी तयारी करें उद्यानके सब मंदिर अलंकृत कियेजावें
नवीन आसन बिछाये जावें और मणि और रत्नोंसे सबस्थान
युक्त कियेजावें और भक्ष्य भोज्य और पेयआदि पदार्थ बनाये
जावें प्रकटहो कि महेन्द्रके साथ साथ प्रहासभी जो कुसुमीका
रूप धारण कियेथा इस प्रकारसे आयाथाकि कुसुमीके जितने
सेवक और दासथे वे सब प्रहासको कुसुमी जानकर उस की
आज्ञामेंथे निदान उसने उन सेवकोंको आज्ञादीकि मैं थकीहुईहूं
प्रहासके पकड़नेमें मुझको बड़ापरिश्रम पड़ाहै इससे तुम लोग
मेरे लिये एक मायाकृत बिमान निर्मितकरो मैं महाराज के साथ
जाऊंगी जो थकी न होती तो मैं आपही विमान मायासे निर्मित
करलेती यह सुनकर उन दासोंने मायासे बिमान बनाया और
प्रहास उसपर चढ़कर महेन्द्रके पीछे होलिया जब महेन्द्र रक्त-
बाहिनी नदीके तटपर पहुंचा तब उसने कहाकि हे नदी मुझको
और मेरे साथियोंको पार जानेका मार्गदे निदान इस प्रकारसे
प्रहास रक्तबाहिनीनदीकेपार आगयाथा और वहांसेउसनेइच्छा
कीथी कि अपनी सेनामें चला जाऊं परंतु जब उसने सुना कि
चित्रागदके अर्चनकी सामग्री बदरी उद्यानमेंहोगी तब उसने
बिचारकिया कि बनपड़ैतो चलकर सब सामग्रीको लूटिये और
इस चित्रांगद अधर्मीकी जो तुम्हारा बध करनेको आया है
जूतियोंसे मार कर अप्रतिष्ठा कीजिये यह बिचार करके अपने
आसन परसे उठा और महेन्द्रके सन्मुख जाकर हाथ जोड़कर
बोला कि मैं आपकी दासी जाकर अर्चनकी सामग्री करती हूं

महेन्द्रतो उससे प्रसन्नहीथा क्योंकि वह जानताथाकि प्रहासको यह पकड़कर लाईहै इससे उसने कहा कि बहुतअच्छा तुमजाकर सब प्रबन्धकरो हमने सब कार्योंका प्रबन्धक तुमकोही किया देखें तुम कैसा इसकार्यको पूराकरतीहो और हमकोप्रसन्न करकेहमसे धन और राज्यपारितोषिकलेतीहो यहसुनकर कुसुमीरूपी प्रहास दंडवत् करके चल दिया उस समय महेन्द्रने कुछ मायाकी कि उससे रक्तवाहिनी नदीके रक्षकोंको कुसुमीके पार जानेका हाल विदित होगया निदान प्रहास कुसुमीका रूपधारणाकियेहुए रक्त-वाहिनीनदी पर पहुंचा और दासियोंसे अपना विमान उड़वाकर बदरी उद्यानमें पहुंचा और वहांके अधिकारी अर्थात् पाकाध्यक्ष मद्याध्यक्ष और भंडारी आदि को बुलाकर महाराजकी आज्ञा सुनादी और सबको बहुत कुछपारितोषिक मिलनेकी आशादी निदान वेसब लोग उसउद्यानको अलंकृत बड़ी शीघ्रतापूर्वक करनेलगे सबस्थानोंमें बहुमोल्य नवीन उत्तम आसन बिछवाये गये परदे सुनहली रत्नजटित डलवादिये सिंहासन परमोत्तम वस्त्रोंसे अलंकृत कियागया रत्नोंका बनाहुआ छत्रलगाया गया मणि और रत्नोंकेपात्र यथायोग्य स्थानोंपर स्थापित कियेगये मणियों के पात्रोंमें कमल प्रज्वलित कियेगये परमसुन्दरी दा-सियां उत्तमोत्तम वस्त्र और आभूषणोंसे अलंकृत सेवाकेलिये स्थान स्थानपर नियतकरदीगईं तड़ाग और कुंडोंमें सुगंधित जलभरवादिये सुगंधित जल धारायें छोड़दीगईं वृक्षोंको सुन-हली रुपहरी गोटे से मढ़वायागया नानाप्रकार के फूलों के गुच्छे और वृक्ष अनेक अनेकप्रकारकी मणियोंके पात्रोंमें लगा कर यथायोग्य स्थानोंपर स्थापितकिये गये सहस्रधारा छोड़ने वाले यंत्र अर्थात् फुहारे छोड़दियेगये निदान कोई सामग्रीऔर कोई ऐसापदार्थ नथा जो वहां मौजूदनथा ॥

दो० शोभातेहि उद्यानकी कापै बरणी जाय।

इन्द्र पुरी समलसतहो सकल पदार्थनपाय ॥

चौ० सुकुमारी अति सुंदरनारी । डोलें पहिरे उत्तम सारी ॥
करत विहारमहाछविछाजें । लखिलखि तिन्हें अप्सरालाजें ॥
कनक भवन अति सुंदरसोहैं । मणिकृत चित्रजडेमनमोहैं ॥
कुसुमअनेक भांति के फूले । डोलत पवनतहां जनुभूले ॥
कहूं प्रसून केतकी फूले । कहुंकह्लारु खिले सरकूले ॥
कहुंसरनील सरोरुह विकसे । अरुणकंजकहुं कहुं हैं निकसे ॥
चंपा खिले कहूं वहु राजें । कहुंकुमुदिनी के दलछाजें ॥
कहूंचमेली खिली सुहावै । गंधजुही की कहुंसरसावै ॥
कहूंमोतिया अरकहुं वेला । कहूं सुवर्ण पर्ण के केला ॥
अमियस्वादफललगेरसाला । तिनसोंशोभितविटपविसाला ॥
वेलिनिके वहुवने विताना । सोहैं तिनमें कुसुमउताना ॥
नाचत वरमयूरवहुडोलें । वहुखग मधुर मधुर धुनिवोलें ॥

सो० सरिता एक सुरूप निर्मल जलयुत सोहहीं ।
तेहितरवन्यो अनूप भवन सुहावन चारुअति ॥

चौ० शोभातासु न जाइ वखानी । लखि दिवतजेंअप्सरामानी ॥
वरनों कहामैं तासु उंचाई । छोरतासु नहिंपरतलखाई ॥
अतिसुहावने द्वारवनाये । धनुपाकार सुपरमसुहाये ॥
रत्नजटित वहुसोहैं खंभा । लखिजेहि दिवको त्यागेरंभा ॥
परदा द्वारनिपड़े सुहावें । इन्दुरश्मिसम द्युतिदरसावें ॥
वहु मणिजटितसुलगे किवारा । शोभा कोकहिसकै अपारा ॥
मणिकृत भाजन परमसुहाये । ठौर ठौर हे तहंधरवाये ॥
नानाभाड़ सु रत्न वनाये । हेम जंजीरनि सों लटकाये ॥
तिन की प्रभा अनूप सुहाई । निरखिजाइ रविमतिबौराई ॥

सो० अति सुंदरकमनीय चित्रवने वहु भांतिके ।
लखिस्वरूपलवनीय तिनको लाजेंअप्सरा ॥

आसन विविध भांति डसवाये । वरमखमलके वसनविछाये ॥
तिनको हरित वरन द्युतिलीन्हे । मोदै सुपनेहु दरशनकीन्हे ॥
नागदंत वहुवने विशाला । तिन में धरे पदार्थ रसाला ॥
नीर सुगंधित कहुं भरवाये । कहुं मधुमय पात्र धरवाये ॥
विछे अलंकृत वहु पर्य्यंकू । जिनपर सोवन चहै मयंकू ॥

तिनके आगे आसननाना। सो हैं बिछे सहित उपधाना॥
मणिदीपनकी लखिद्युतिभारी। लाजत चन्द्रसूर उजियारी॥
अद्भुत अकथ अनूपम शोभा। बरणन करत होत मनक्षोभा॥

निदान जब सब भवन अलंकृत होचुके तब प्रहासनेमद्या-लयको आप जाकर अलंकृतकिया और मद्यमें सरों मूर्च्छाकर चूर्णमिलादिया और मद्यालयाध्यक्ष से कहा कि मैंने मद्यको उत्तम और तीव्र करनेकी यह औषधी बनाई है इसको मद्यमें मिलादो वह तो इसकी आज्ञाहीमेंथा जो इसनेकहा वही उस ने किया और फिरपाकशालामें चलागया और हरएक भोज्य पदार्थ में मूर्च्छाकरचूर्ण मिलादिया और जो किसीनेदेखा भी तो उससेकहा कि मैंने बड़ाद्रव्य खरच करके यह गरमसाला बनाया है आज महाराजको भोजनकास्वाद मिलैगा और मेरे कारणसे सब रसोइये को पारितोषिक धन मिलैगा निदान जब अपनी सब क्रियाकरचुका तब महाराज महेन्द्रके आगमनकी बाट देखनेलगा वहां महेन्द्रदिनभरतो चित्रांगदको सेनादिखा-तारहा और जब सूर्य पश्चिम दिशा में जाकर अस्त होगया औरचन्द्रमाने अपनी मलीनता को त्यागकर प्रकाश करना आरम्भकिया॥

चौ०। रविके अस्त भई निशिकारी। कढ़ी चन्द्रमा की उजियारी॥
सकुचे वारिज जगत मझारी। विकसीं कुमुदिनिआनंदकारी॥

उस समय महेन्द्र चित्रांगदको बड़ी धूमधामसे लेकरबदरी उद्यानमें पहुंचा और उसको अद्भुत प्रकारसे अलंकृत देखकर कुसुमरूपीप्रहाससे बहुतप्रसन्नहुआ और चित्रांगदको बीचसिं-हासनपरबैठाया उससमय सम्पूर्ण उद्यानमें दीपकप्रज्वलितहुए और नृत्यकरनेवाली बुलाईगईं इसअवसरमें मायावतीभी वहां आपहुंची और उस नृत्यमण्डलीमें आकरनाच देखनेलगी और विचित्रमायाभी अपनीसेनाको सेनापतियोंको सौंपकर आप भी

उस अर्चन भवनमें चलीआई निदान जबसब आगये तब महेन्द्रने उसम्लेच्छको जिसका स्वरूप प्रहासने अपनासा बनादिया था और जो पृष्ठभारमें बंधाथा सन्मुखलानेकी आज्ञादी और जब वह आगया तब उस पृष्ठभागको खुलवाकर चित्रांगदके हाथमें खड्ग देदिया और कहा कि आप इसकावध कीजिये प्रहास की बाईं आंखमें एक तिलथा और उसीसे उसकी पहिचान होतीथी निदान महेन्द्रके उक्त बचनोंको सुनकर चित्रांगद ने उस म्लेच्छके बाम नेत्रको देखा और जब उसमें वह पहिचानका तिलनपाया तब अकस्मात् खड़ाहोकर नाचनेलगा और बोला कि विष्णोर्जयति विष्णोर्जयति अद्भुत मिथ्याईश्वरहै हे महेन्द्र अब मुझको शीघ्र यहां से बिदा करदे यहां अब कोई आपत्ति आयाही चाहतीहै मैं पहिलेही कहताथा कि उस महान् गुरूको कौन पकड़ सकताहै इसी अवसरमें मायावती बोली कि चित्रांगदजी आपको केवलभ्रमहै शीघ्र इसका शिर काटडालिये यह प्रहासहीहै महाराजने बड़ेयत्नसे इसे पकड़वायाहै तिलका क्या देखनाहै कहीं वह गया होगा तब चित्रांगद बोला कि मैंतो वैष्णवहूं एकोविष्णुर्द्वितीयोनास्ति मुझसे हिंसाकर्म न होगा और तुमलोगभी क्यों किसीविचारे अपने भाईके प्राणलेना चाहतेहो उस बहुरूपाचार्य प्रहासके शत्रु पकड़ेजावें यह प्रहास नहीं है तुमहीमें का कोई म्लेच्छ है और इसकेभी सिवाय अब मेरे शिरमें एकभी बाल नहीं रहाहै जो मैं जूतियां उसमहानुभाव प्रहासकी खाऊं यहकहकर अपनेशिरपरसे पगड़ीउतारकर शिर दिखाया तोनिश्चय सब शिरखल्वाटथा यहसुनकर महेन्द्र और सब सभासद हंसनेलगे कि निश्चय यह कलिहीहै और महेन्द्रने मायावतीसेकहा कि इसेबकने देतूप्रहासका शिरउड़ादे चित्रांगद बोला कि अभी तो तुमहंसतेहो परंतु थोड़ीदेरमें रोओगे निदान उसकाकहना किसीने नसुना और मायावतीने महेन्द्रकी आज्ञासे

उस बनेहुए प्रहासका शिर काट डाला उससमय चित्रांगद अपनी आंखें बन्दकरके बैठगया और उस म्लेच्छके मरनेसे कोलाहल उत्पन्नहुआ और आकाशसे वाणीहुई कि मैं मारा गया मेरा नाम धुन्धीथा और अग्नि और पाषाणोंकी वर्षाहुई उससमय चित्रांगद उछला और कूदा और बोलाकि व हमारा मैं न कहताथा कि श्रीमत् बहुराचार्य धर्मप्रतिपालक हमसे दीनोंके रक्षक प्रहासजीको कौन पकड़ सकताहै तबतौ महेन्द्र बहुत लज्जितहुआ और उसने उठकर उस वृक्षको देखा जिस को कुसुमी अपनी प्राणमूल बनाकर लगागईथी परंतु कुसुमी अभी जीतीहुई मूर्च्छित बनमेंपड़ीहुईहै इसकारणसे वहवृक्ष उस को हराभरा मिला इससे उसने समझा कि यह कुसुमी जो यहां मौजूद है यह तो निश्चयवहीहै जिसकी प्राणमूल यह वृक्ष है परंतु उसने प्रहासको पकड़ते समय धोखाखाया है निजप्रहास को नहींपाया यातौ अपना नामकरनेको किसीको प्रहासकासा स्वरूप बनाकर लेआई है अथवा प्रहास किसीका स्वरूपअप-नासा बनाकर उसके हाथसे निकलगया यह विचारकरके महे-न्द्र चुपहोरहा और उस मायाकृत वृक्षके हरेहोनेसे यह शंका उसको नहुई कि प्रहास कुसुमी का रूपधारण कियेहुए यहां मौजूदहै और प्रबन्ध कर्ताहै निदान आकर अपने सिंहासनपर बैठगया और बोलाकि चित्रांगदजी आप सत्य कहतेथे प्रहास नहीं पकड़ागया परंतु आप भोजन अब कीजिये मैं प्रहास को पकड़वाताहूं वहबोला कि मैं भोजनकरचुका आप मुझको पर-मेश्वर के पास भिजवादीजिये तब महेन्द्रने विनयकरके बहुतप्र-कारसे कहसुनकर रोका और आज्ञादी कि खानेपीनेकी सामग्री लाओ यह सुनकर वहांके प्रबन्धकर्ता कुसुमीरूपी प्रहासने उत्त-मोत्तममय मूर्च्छाकरचूर्णमिलीहुई मँगवाई और परमसुंदरी दा-सियां हाथोंमें पानपात्रलियेहुए सन्मुखआई पहिले तौ चित्रांगद

ने वह मद्यपी और पीछे और सबसभासदोंने पानकी उससमय महान्सुंदरी वेश्या बड़ी मधुरवाणी से गाने और नाचनेलगी एक अपूर्वही समाबंधगया कि जिसको देखकरपक्षीभी अपना बसेराभूलगये उससमय महेन्द्रको उसमद्यका आवेश जो आया तौ उसने अपने दोनों हाथोंको देखा एकहाथसे उसके सुदशा और दूसरेसे कुदशा सूचितहुआ करतीथी निदान उसको वाम हस्त के देखनेसे विदितहुआ कि इससमय दोचारघड़ी तेरीदशा बुरीहै जो यहां बैठारहैगा तौ प्रतिष्ठामें अंतर आवैगा इससे थोड़ी देरकोचलाजा नहीं तौ बुराईहोगी यह जानकर मद्यके आ-वेश में और कुछ अधिक न विचारसका तुरंत उससभामें अपने स्थानपर अपने प्रतिरूपको बैठाकर आप अदृष्ट होगया और कुछ देरमें जब मूर्च्छाकर चूर्ण ने अपना गुण प्रकटकिया तब मूर्च्छित होगया उधर सबसभासद भी जो खानपानकर रहेथे थोड़ीदेर पीछे मूर्च्छित होनेलगे उससमय कुसुमीरूपी प्रहास ने एकपात्र मद्यसे भराहुआ सब सेवकोंकोभी दिया और कहा किपरमेश्वरके कलिके अर्चनमें महाराजने आज्ञादी है कि कोई ऐसा न रहजाय जिसको खानेपीने को नमिले इससे यह मद्य तुमलोग भी पानकरो और नाचदेखो यहसुनकर सबछोटे बड़े प्रसन्नहोगये और मद्यपान करनेलगे और फिरउसने सबसभा सदोंसेकहा कि जिसकिसीको भोजनोंकी इच्छाहो वहबिनारोक टोक पाकशालामें जाकर जो इच्छाहो सो भोजनकरै निदान थोड़ीदेरमें सब छोटेबड़े लड़ते झगड़तेहुए मूर्च्छित होगयेपरंतु महेन्द्र का प्रतिरूप मूर्च्छित नहीं हुआ और दर्प्पण के भीतर बैठारहा प्रहास उसको देखकर घबराया और मद्यका पात्र भर कर उसके सामनेभी रक्खा परंतु उसने उसको ग्रहणनहींकिया तब प्रहासने उसको दंडवत्की उसने हाथ उठाकर माथेपररख लिया परंतु मुखसे कुछ नबोला तब प्रहासने अनुमानकिया कि

समयको जाने नदो जो कुछ करनाहै करलो जो होनीहोगी सो होगी यह विचार कर उसने पहिले चित्रांगदको चैतन्य किया उसकी जो आंखें खुलीं देखा कि प्रहास नंगा खड्ग लिये खड़ा है और सब सभासद मूर्च्छित पड़ेहैं देखतेही खड़ाहोगया और प्रहासको दंडवत् करके बोला कि श्रीमहाराज मैं तो आपका दासानुदासहूं जो आज्ञाहो सो करूं प्रहास बोला कि चित्रांगदजी बातें मत बनाओ तुम यहां तो मेरा बध करने को आयेहो आज तुम बचोगे नहीं अच्छा लो यह खड्ग लेकर इन पापी म्लेच्छोंके शिर तो शीघ्रतासे काटडालो वह बोला कि बहुत श्रेष्ठ ये सब इसी योग्यहैं और सब बध्य हैं यह सुनकर प्रहासने एक जूता उतार कर मारा और कहा कि अरे दुष्ट तू बातेंतो बनाताहै और जो कहा उसको नहीं करता है जूतेके लगनेसे उसके शिरमें कील समा गई और रुधिर निकलने लगा परंतु चित्रांगद ने अपनी चांदको सहला कर कहा कि आज मुझसे बेटेके भाग्य धन्यहैं जिसको पिता इस प्रकारसे मार कर शिक्षा करै इतने दिनोंसे मैं रत्नाकर पर्वत पर रहताथा मुझे यह आनन्द कभी नमिला मेरेशिरको सदैव इस जूतेकी कीलोंके लगनेकी कांक्षा रहतीथी सो आज मेरे प्रारब्ध ने बल किया इस शिरको आपकी पादत्राणों तक पहुंचाया यह सुनकर प्रहास हँसा और बिचारने लगा कि यह ऐसीही बातें कर करके समयको व्यतीत करैगा तुम अपना काम करो यह शोचकर उसने द्वारके पट बन्द करदिये और अपनी थैलीमेंसे कई कैदी निकाले जिनको किसीसमय उसने कैद कियाथा और उनको आज्ञादी कि तुम यहांकी सब सामग्री बड़ी शीघ्रता पूर्वक इकट्ठा करो देखो आसन पात्र शय्या आदि कुछ नरहने पावे और जो ऐसा नकरोगे तो मैं मार डालूंगा निदान वे सब पदार्थ इकट्ठे करने लगे जो जो पदार्थ इकट्ठे होते जातेथे उन

को प्रहास वरुणदत्त जाल मारकर अपनी थैलीमें डालताजा-ताथा और आपभी चारों ओर फिर कर पदार्थोंको लूटताफिर-ताथा और चित्रांगद भयकेमारे म्लेच्छियोंके आभूषण शीघ्रता से उतार २ कर इकट्ठा करता जाताथा निदान दो घड़ी में सब बागको उजाड़ करके म्लेच्छियोंके शिर मूंडने आरंभकिये और अपने कैदियोंको मसी देकर कहा कि सबका मुख कालाकरदो जब शिर मूंडते मूंडते मायावतीके समीपआया तब उसको उस का कर्म यादआया कि इसने मुझे निद्रावतीसे छुटायाथा निदान उसके नतो वस्त्रउतारे और न शिर मूंडा और बाकी सबका शिर मूंडकर मुख काला करदिया और गलेमें सबके पादत्राणों के हार पहिरा दिये और जो दासियांथीं उनको तंत्र अर्थात् तांत से बांधकर दूसरा सिरा तांतका वृक्षोंसे बांधदिया और किसी का स्वरूप स्त्री कासा बनाकर किसीके पास सुलादिया और किसीको बानर नचाने वाले कासा स्वरूपबनाकर हाथ में डौरू देदिया और किसीका स्वरूप रीछ नचानेवालेकासा बनादिया जब इन सबकर्मोंसे निवृत्तहुआ तब उसने चित्रांगद को पटिना आरंभ किया कि शीघ्र इन म्लेच्छोंको मार और इनके शिर काट तब वह बेबश होकर म्लेच्छोंकी छाती पर चढ़कर उनके शिर काटने लगा और महा कोलाहल उनके मरने से प्रारंभ हुआ उससमय प्रहासने थैलीसे श्वान चर्म निकाला जिसपर बड़े बड़े बालथे और पेटकी ओर घुंडियां लगीथीं उसको उसने पहिर लिया और पृथ्वीपर गिरकर पश्चिमीय श्वानों की भांति कूदकर बागके एक कोने में जा खड़ा हुआ और चलतेसमय एकपत्र लिखकर महेन्द्रके बैठनेकी जगहपर डालता गया जिसमें लिखाथा कि यह काम प्रहास काहै थोड़ी देरमें जब महेन्द्र चैतन्यहुआ तब अपने उद्यानकी ओर चला परंतु उसके वहां आनेके पहिले एक और अद्भुत बात हुई

वह यहहै कि वह कुसुमी जिसको प्रहास मूर्च्छित करके बनमें छोड़ आयाथा चैतन्यहुई और चारों ओर को समीररूपा को ढूंढ़नेलगी और प्रहासकोभी ढूंढ़तीरही परंतु जबकहीं पता न लगा तब समझी कि समीररूपा प्रहासको पकड़कर लेगईहोगी यह विचारकर वह बदरी उद्यानकी ओर चली और वहां उस समय पहुंची जब प्रहास जाचुकाथा और चित्रांगद प्रहासके भय से म्लेच्छोंका शिर काटता फिरताथा वहांपहुंचकर उसने सभा की दशा देखी और समझी कि प्रहास जो पकड़कर आया है उसीनेअवसर पाकर सबको मूर्च्छित करदियाहै और वही सब के शिर काटता फिरताहै निदान देखतेही उसने कुछ मायाकी कि चित्रांगदके हाथ और पैर स्तंभित होगये और फिरपास आकर मायाकृत चाबुकसे चित्रांगदको मारना आरंभकिया उस ने प्रहासको इसीके रूपमें देखाथा इससे समझा कि प्रहासही मारताहै और बोला कि मतो आपहीकी आज्ञाका पालन कर रहाहूं बहुतेरोंके शिरतो काटडाले मुझको न मारिये यह सुनकर उसने औरभी अधिक मारना आरंभ किया तबतो चित्रांगद दुहाई देनेलगा कि महाराज महेन्द्रकी दुहाईहै मुझे घरमें बुला- कर अच्छी मेरी पूजाकी कि भोजनकरानेके बदलेमें मारखिलाई क्यों मुझको मारेडालतेहो निदान वह अनेक अनेक प्रकारसे चिल्लातारहा परंतु कुसुमीने उसकी एकबात नसुनी और उसको पीटतीहीरही और वह दुहाई देतारहा कि इतनेमें महेन्द्र वहां आया और देखाकि सब सभा निश्चेष्ट पड़ीहै और कुसुमी चि- त्रांगदको माररहीहै यह देखकर वह समझा कि प्रहास कुसुमी का रूप धारण किये हुए यहांथा उसीने सबको मूर्च्छितकियाहै और अब परमेश्वरके कलिको मार रहाहै यह अनुमान करके महेन्द्र क्रोधसे लालहोगया और कुछ माया करके उंगली उठा दी कि अकस्मात् एक बिजली चमककर कुसुमीपर गिरी और

उसको मारकर पृथ्वीमें प्रवेश होगई उसके मरनेसे एककोला-
हल प्रकट हुआ और आकाशवाणी हुई कि बड़े शोककीबात
है कि मैं मारीगई मेरा नाम कुसुमी मायाथा यह वाणी सुनकर
महेन्द्र घबराया कि यहतो कुसुमीहीथी और बागमें आकर उस
के प्राण मूल वृक्षको देखा कि वहभी उसके मरतेही भस्म हो-
गयाथा तब उसने अपनेको धिक्कार देकर विचारकिया कि और
सबतो मूर्च्छितहैं परंतु परमेश्वर का कलि चैतन्य है कहीं यही
प्रहास नहो यह विचारकर वह चित्रांगदकी ओर क्रोधकीदृष्टि
से देखनेलगा तब चित्रांगद बोला कि अभी तो यह चांडाली
मुझे पीट रहीथी जो नरकगामीहुई अब तू क्रोधकी दृष्टिसे देख
रहाहै क्यों मुझको मेरा पूजन करनेके बहानेसे घरमें बुलाकर
शत्रुतापर कमर बांधीहै और कबका मुझसे बदला निकालाहै
हे महेन्द्र अब तैंने प्रहासके छलको देखा अबउचितहै किमुझे
परमेश्वरके पासभेजदे महेन्द्र उसका बध करनेकोथा परंतुउक्त
बातोंको सुनकर रुकगया कि अभी एकधोखा खाचुकाहूं ऐसा
न हो कि फिर धोखाखाऊं और शोक और लज्जाउठाऊं परंतु
फिरभी चित्रांगदको मायासे वेष्टितकरके मायाकृत जलकीवर्षा
की कि उससे सबसभासद चैतन्यहोगये परंतु किसीने जोस्त्रीको
अपनेपासलेटेपाया प्राणप्यारीप्राणप्यारीकहके उससेलिपटगया
किसीने जो अपने मुखपर हाथफेरना चाहा हाथमेंजूता बंधाथा
वह तेंड़से मुखपरलगा कोई अकस्मात् जो उठनेलगातो तांत
से बंधाहुआ होनेसे झटका खाकर आहिमरा कहकर गिरपड़ा
किसीनेजो हाथउठायातो हाथमें जोडोरू बंधाथावहबजनेलगा
निदान ऐसीहँसीकी दशा सबकीथी कि महेन्द्र आपभी हँसपड़ा
और सबको डाटा कि देखभालकरउठो इससमय तुम्हारीदशा
दूसरी है तबसबने जोअपनी अपनी दशादेखीतो सबलज्जित
हुए और मायाकरके तांनको खोलखोलकर सब संभल संभल

करउठे और स्त्रियां अपने अंगोंको हाथोंसे छिपाकर हूहू करती हुई भागीं उससमय मायावती भी उठी और सबके शिरमुड़ेहुए देखकर उसने अपनेशिरपरभी हाथफेरा तो शिरको अपने मुड़ा न पाया और एकांतमें जाकर जो दर्पण देखातो मुखभी अपना काला नपाया और अपने वस्त्र और आभूषणों को भी ज्योंका त्यों पाकर समझी कि तेंने प्रहासको जो एकबार छुटादियाथा उसका यहकारणहै निदान महेन्द्रने सबको चैतन्यकरके अद्भुत जालकी पुस्तक निकालकर देखी कि यहचित्रांगदही है अथवा बहुरूपिया है उससे विदितहुआ कि चित्रांगदही है तब उसने बहुत प्रकारसे अपराध क्षमाकराके उसे बैठाया और आज्ञादी कि नयेसिरेसे सबसामग्री लाईजावे यहआज्ञापाकर सहस्रोंम्ले-च्छ दौड़े और उन्होंने क्षणमात्रमें शय्या और आसन और मणि और रत्नोंके पात्रलाकर उस स्थानको अलंकृत करदिया और जो मद्यपहिलीथी उसकोफिंकवादी और दूसरीउत्तममद्यमंगाई । गई और खाद्यऔर भोज्यपदार्थभी दूसरे बनायेगये और इस कामके करने में लोग भीतर और बाहर आने जानेलगे और प्रहास उसीप्रकार से कुत्ता बनाहुआ उस उद्यानके द्वारसे नि-कलकर वनमें चलागया जब सबसामग्री होचुकी तब महेन्द्रने आज्ञादी कि कुछ म्लेच्छ जाकर प्रहासको ढूंढ़कर लेआवें यह सुनतेही चित्रांगद उठकर महेन्द्रके पैरोंपर गिरपड़ा औरपुकार कर बोला कि मुझको अबमारखानेका बलनहींहै मुझे परमे-श्वर के पास शीघ्रभेजदो और अपनाशरीर खोलकर दिखाया और कहा कि देखो लोहूलुहान होगयाहै तुम फिर अब प्रहास के पकड़ने का उत्साह करतेहो तब महेन्द्र ने बहुत प्रकार से समझाकर उसे रोकनाचाहा परंतु उसनेनमाना उससमय दो चारघड़ी रात्रितो रहहीगईथी वहमायाकृतदेशके अलभ्यपदा-र्थोंके मंगानेमें व्यतीत होगई और जब रात्रि के व्यतीतहोने से

सबतारागण अस्तहोगये और सूर्यप्रतीची दिशामें उदयहुआ॥

सो॰ उदयभये जबसूर तारागण सब अस्तभे।
भयो अंधेरो दूर क्षीणभई शशिकी प्रभा॥

उससमय चित्रांगदको मायाकृत पक्षीपर बैठाकर रत्नाकर पर्वतपर भेजदिया और शीघ्रताके कारणसे जो सेना महाराज शत्रुंजयसे युद्धकरने को भेजनेवालाथा वहभी नहीं भेजसका और उसके चलेजानेके पीछे विचित्रमायाकोभी सेनाकी ओर भेजदिया और अपने सभासदोंसे बोला कि अबमुझकोउचित है कि प्रहासकोजीता जोपकड़कर परमेश्वरके कलिके पास भेजदूं जिससे जोकुछ उनका यहां अपमानहुआहै उसका बदला वह लेलें और मेरीभी आंखें सामनेहों परंतु अबप्रथमतो मुझको इसदुष्टा समीररूपाको दंडदेनाहै कि यहकैसा प्रहासको पकड़कर लाईथी यह समीररूपा महेन्द्रके साथ साथही बदरी उद्यानमें आईथी और उसने बहुरूपिनी होनेसे सबको दृष्टिकरके देखाथा परंतु कोई बाहरका उसको नदीखा और कुसुमी रूपी प्रहासतो पृथक्ही पृथक्रहाथा अपने हाथसे किसीको खानेपीनेकोभी नहीं लायाथा और मद्यआदि पदार्थों में मूर्च्छाकरचूर्ण पहिलेहीसे मिलचुकाथा इससे वहप्रहासको पहिंचान न सकी और सबके साथमें आपभी मद्यपीकर मूर्च्छितहोगई जबसबको चेतहुआ तबइसकोभी चेतहुआ और उस समय उसने प्रहासके छल और उपद्रवको देखकर अनुमानकिया कि महाराज महेन्द्र अवश्य मुझपर क्रोधकरेंगे कि तूकैसा प्रहास को पकड़कर लाईथी इसभयसे वहभागकर बनको चलीगई निदान उससमय महेन्द्रने मायाकृत हस्तको आज्ञादी कि समीररूपाको उठालाओ एकहस्त आकाशमार्गसे गया और समीर रूपाको बनसे उठालाया जब वह सामने आई तबमहेन्द्र उसपर कोड़ालेकर उठा कि क्यों दुर्भगा ऐसेही प्रहासको

कैदकरके लाते हैं तबसमीररूपा ने हाथजोड़कर विनयकी कि महाराज कुसुमीने इसको पकड़ाथा और यह कहकर पैरोंपर गिरपड़ी और बोली कि महाराज अबमैं निजप्रहासको अवश्य पकड़कर लाऊंगी निदान बड़ी विनयकरनेपर महेन्द्र ने उसका अपराध क्षमाकिया और वह दूसरीबार प्रहासको पकड़नेको चली और जब बागसे आगेबढ़ी दूरसे प्रहासने उसे जातेहुए देखा और विचारकिया कि इससे बोलना कुछआवश्यक नहींहै जानेदो और अबम्लेच्छोंको प्रहासकाऐसा भयहोगया कि एक स्थानपर एकम्लेच्छ कुसनामीने प्रहासको जातेहुए देखा देखतेही भयसे कांपनेलगा और मार्गकाटकर चलागया कि यह महाआपत्ति रूपहै इसके सन्मुखजाना अच्छानहीं है निदान प्रहासतोवहींहै परंतु अबमायाकृत देशाधिपके प्रबन्धकी कथा सुनिये कि समीररूपाके चलेजानेकेपीछे उसने अपने एकपरमप्रियसभासदसे जिसका नामकालखंजथा काहा कि जबतक मैं प्रहासको पकड़वाऊं तबतक तुमजाकर निशाकरी आदि सब शत्रुवर्गोंका शिरकाटकर लेआओ कि मैं परमेश्वरके पास प्रहास सहित भेजदूं यहसुनकर कालखंज दंडवत्करके चल दिया और उसके जानेपर महेन्द्रने एकपत्र सैन्धको जो मायाकर्त्ताका पौत्रथा लिखा आशय उसपत्रका यहथा॥

दो॰ आसुरि माया जगतमें यावत है सविधान।
तेहि सबके ज्ञाता परमहौतुम परमसुजान॥
सो॰ तुमसम अन्यनकोय मायापतिके पौत्रतुम।
माया सब सिधिहोय नाम तुम्हारोलेतहीं॥
तुमहिं सकैकोजीत प्राणसहस आधीनतव।
अद्भुत कूपअभीत तुमतेरहत सभीत सोउ॥

प्रथम आप अपने देशसे इसओरको आनेवालेथे परंतु देर जो हुईतो कारण उसका प्रसन्नतासे अन्यथानहोय मैं चरणसेवक

सबतारागण अस्तहोगये और सूर्यप्रतीची दिशामें उदयहुआ॥

सो० उदयभये जबसूर तारागण सब अस्तभे।
भयो अंधेरो दूर क्षीणभई शशिकी प्रभा॥

उससमय चित्रांगदको मायाकृत पक्षीपर बैठाकर रत्नाकर पर्वतपर भेजदिया और शीघ्रताके कारणसे जो सेना महाराज शत्रुंजयसे युद्धकरने को भेजनेवालाथा वहभी नहीं भेजसका और उसके चलेजानेके पीछे विचित्रमायाकोभी सेनाकी ओर भेजदिया और अपने सभासदोंसे बोला कि अबमुझकोउचित है कि प्रहासकोजीता जीपकड़कर परमेश्वरके कालिके पास भेजदूं जिससे जोकुछ उनका यहां अपमानहुआहै उसका बदला वह लेलें और मेरीभी आंखें सामनेहों परंतु अबप्रथमतो मुझको इसदुष्टा समीररूपाको दंडदेनाहै कि यहकैसा प्रहासको पकड़कर लाईथी यह समीररूपा महेन्द्रके साथ साथही बदरी उद्यानमें आईथी और उसने बहुरूपिनी होनेसे सबको दृष्टिकर के देखाथा परंतु कोई बाहरका उसको नदीखा और कुसुमीरूपी प्रहासतो पृथक्ही पृथक्रहाथा अपने हाथसे किसीको खानेपीनेकोभी नहीं लायाथा और मद्यआदि पदार्थों में मूर्च्छाकरचूर्ण पहिलेहींसे मिलचुकाथा इससे वहप्रहासको पहिंचान न सकी और सबके साथमें आपभी मद्यपीकर मूर्च्छितहोगई जबसबको चेतहुआ तबइसकोभी चेतहुआ और उस समय उसने प्रहासके छल और उपद्रवको देखकर अनुमानकिया कि महाराज महेन्द्र अवश्य मुझपर क्रोधकरेंगे कि तूकैसा प्रहास को पकड़कर लाईथी इसभयसे वहभागकर बनको चलीगई निदान उससमय महेन्द्रने मायाकृत हस्तको आज्ञादी कि समीररूपाको उठालाओ एकहस्त आकाशमार्गसे गया और समीर रूपाको बनसे उठालाया जब वह सामने आई तबमहेन्द्र उसपर कोड़ालेकर उठा कि क्यों दुर्भगा ऐसेही प्रहासको

कैदकरके लाते हैं तबसमीररूपा ने हाथजोड़कर बिनयकी कि महाराज कुसुमीने इसको पकड़ाथा और यह कहकर पैरोंपर गिरपड़ी और बोली कि महाराज अबमें निजप्रहासको अवश्य पकड़कर लाऊंगी निदान बड़ी बिनयकरनेपर महेन्द्र ने उसका अपराध क्षमाकिया और वह दूसरीबार प्रहासको पकड़नेको चली और जब बागसे आगेबढ़ी दूरसे प्रहासने उसे जातेहुए देखा और बिचारकिया कि इससे बोलना कुछआवश्यक नहींहै जानेदो और अबम्लेच्छोंको प्रहासकाऐसा भयहोगया कि एक स्थानपर एकम्लेच्छ कुंभनामीने प्रहासको जातेहुए देखा देख-तेही भयसे कांपनेलगा और मार्गकाटकर चलागया कि यह महाआपत्ति रूपहै इसके सन्मुखजाना अच्छानहीं है निदान प्रहासतोवहींहै परंतु अबमायाकृत देशाधिपके प्रबन्धकी कथा सुनिये कि समीररूपाके चलेजानेकेपीछे उसने अपने एकपरम-प्रियसभासदसे जिसका नामकालखंजथा काहा कि जबतक मैं प्रहासको पकड़वाऊं तबतक तुमजाकर निशाकरी आदि सब शत्रुवर्गोंका शिरकाटकर लेआओ कि मैं परमेश्वरके पास प्रहास सहित भेजदूं यहसुनकर कालखंज दंडवत्करके चल दिया और उसके जानेपर महेन्द्रने एकपत्र सैन्धवको जो माया-कर्त्ताका पौत्रथा लिखा आशय उसपत्रका यहथा॥

दो० आसुरि माया जगतमें यावत है सबिधान।
तेहि सबके ज्ञाता परमहौतुम परमसुजान॥
सो० तुमसम अन्यनकोय मायापतिके पौत्रतुम।
माया सब सिधिहोय नाम तुम्हारोलेतही॥
तुमहिं सकैकोजीत प्राणसहस आधीनतव।
अद्भुत कूपअभीत तुमतेरहत सभीत सोउ॥

प्रथम आप अपने देशसे इसओरको आनेवालेथे परंतु देर जो हुईतो कारण उसका प्रसन्नतासे अन्यथानहोय मैं चरणसेवक

सबतारागण अस्तहोगये और सूर्यप्रतीची दिशामें उदयहुआ॥

सो० उदयभये जबसूर तारागण सब अस्तभे।
भयो अंधेरो दूर क्षीणभई शशिकी प्रभा॥

उससमय चित्रांगदको मायाकृत पक्षीपर बैठाकर रत्नाकर पर्वतपर भेजदिया और शीघ्रताके कारणसे जो सेना महाराज शत्रुंजयसे युद्धकरने को भेजनेवालाथा वहभी नहीं भेजसका और उसके चलेजानेके पीछे विचित्रमायाकोभी सेनाकी ओर भेजदिया और अपने सभासदोंसे बोला कि अबमुझकोउचित है कि प्रहासकोजीता जोपकड़कर परमेश्वरके कलिके पास भेजदूं जिससे जोकुछ उनका यहां अपमानहुआहै उसका बदला वह लेलें और मेरीभी आंखें सामनेहों परंतु अबप्रथमतो मुझको इसदुष्टा समीररूपाको दंडदेनाहै कि यहकैसा प्रहासको पकड़कर लाईथी यह समीररूपा महेन्द्रके साथ साथही बदरी उद्यानमें आईथी और उसने बहुरूपिनी होनेसे सबको दृष्टिकर के देखाथा परंतु कोई बाहरका उसको नदीखा और कुसुमी रूपी प्रहासतो पृथक्ही पृथक्रहाथा अपने हाथसे किसीको खानेपीनेकोभी नहीं लायाथा और मद्यआदि पदार्थों में मूर्च्छा करचूर्ण पहिलेहीसे मिलचुकाथा इससे वहप्रहासको पहिंचान न सकी और सबके साथमें आपभी मद्यपीकर मूर्च्छितहोगई जबसबको चेतहुआ तबइसकोभी चेतहुआ और उस समय उसने प्रहासके छल और उपद्रवको देखकर अनुमानकिया कि महाराज महेन्द्र अवश्य मुझपर क्रोधकरेंगे कि तूकैसा प्रहास को पकड़कर लाईथी इसभयसे वहभागकर बनको चलीगई निदान उससमय महेन्द्रने मायाकृत हस्तको आज्ञादी कि समीररूपाको उठालाओ एकहस्त आकाशमार्गसे गया और समीर रूपाको बनसे उठालाया जब वह सामने आई तबमहेन्द्र उसपर कोड़ालेकर उठा कि क्यों दुर्भगा ऐसेही प्रहासको

कैदकरके लाते हैं तबसमीररूपा ने हाथजोड़कर विनयकी कि महाराज कुसुमीने इसको पकड़ाथा और यह कहकर पैरोंपर गिरपड़ी और बोली कि महाराज अबमैं निजप्रहासको अवश्य पकड़कर लाऊंगी निदान बड़ी विनयकरनेपर महेन्द्र ने उसका अपराध क्षमाकिया और वह दूसरीबार प्रहासको पकड़नेको चली और जब बागसे आगेबढ़ी दूरसे प्रहासने उसे जातेहुए देखा और विचारकिया कि इससे बोलना कुछआवश्यक नहींहै जानेदो और अबम्लेच्छोंको प्रहासकाऐसा भयहोगया कि एक स्थानपर एकम्लेच्छ कुंभनामीने प्रहासको जातेहुए देखा देखतेही भयसे कांपनेलगा और मार्गकाटकर चलागया कि यह महाआपत्ति रूपहै इसके सन्मुखजाना अच्छानहीं है निदान प्रहासतौवहींहै परंतु अबमायाकृत देशाधिपके प्रबन्धकी कथा सुनिये कि समीररूपाके चलेजानेकेपीछे उसने अपने एकपरमप्रियसभासदसे जिसका नामकालखंजथा काहा कि जबतक मैं प्रहासको पकड़वाऊं तबतक तुमजाकर निशाकरी आदि सब शत्रुवर्गोंका शिरकाटकर लेआओ कि मैं परमेश्वरके पास प्रहास सहित भेजदूं यहसुनकर कालखंज दंडवत्‌करके चल दिया और उसके जानेपर महेन्द्रने एकपत्र सैन्धको जो मायाकर्त्ताका पौत्रथा लिखा आशय उसपत्रका यहथा ॥

दो० आसुरि माया जगतमें यावत है सविधान ।
तेहि सबके ज्ञाता परमहौतुम परमसुजान ॥

सो० तुमसम अन्यनकोय मायापतिके पौत्रतुम ।
माया सब सिधिहोय नाम तुम्हारोलेतही ॥
तुमहिं सकैकोजीत प्राणसहस आधीनतव ।
अद्भुत कूपअभीत तुमतेरहत सभीत सोउ ॥

प्रथम आप अपने देशसे इसओरको आनेवालेथे परंतु देर जो हुईतो कारण उसका प्रसन्नतासे अन्यथानहोय मैं चरणसेवक

आजकल प्रहास बहुरूपियाके अदृश्यखंडमें आनेसे अत्यंतदु-खीहूं इससे विनयहै कि आप अपने तेजको प्रकटकरके अदृश्य-खंडका प्रबन्धकरें और मैं प्रत्यक्षखंडका प्रबन्धकरूं अथवा आप प्रत्यक्षखंडमें रहिये और मैं अदृश्यखंडमेंरहूं और जोकुछ और वृत्तांत है वह आपके चरणारविन्दके दर्शनों के समय निवेदन होगा निदान यहपत्र लिखकर महेन्द्रने एक मायाकृत पक्षी को दिया और वह लेकर चलदिया इससैन्धका वृत्तांतपूर्वमें वर्णन होचुका है कि चित्राङ्गीके मरनेका संदेशा पाकर अपने घरसे चलाथा परंतु मार्गमें उसकोस्मरणहुआ कि आजकल मेरेदिन मायाकर्ताकी पूजा और व्रतकरनेकेहैं इसकारणसे वह वहींठहर-गया और पूजा और व्रतयह अनुमानकरके करनेलगा कि व्रतों के समाप्तहोनेपर जाऊंगा निदान उसपक्षीने महेन्द्रका पत्रले-जाकर उसकोदिया उसको पढ़कर वह बहुत प्रसन्नहुआ और पत्रोत्तर निम्नभांतिसे लिखा ॥

सो० श्रीपति श्रीमहराज मायाकृत देशाधिपति ।
नहिं असजगमें काज जोअसाध्य है आपुसों ॥

आपकाप्रेमपत्र आया वृत्तांत जोलिखाथा विदितहुआ हम प्रत्यक्षखंडमें जाते हैं सबशत्रुओं का काम समाप्तकरके तुमसे आकर मिलेंगे हमपरभरोसा रक्खो यहपत्रलिखकर मायाकृत पक्षीको दिया वहलेकर महेन्द्रके पासगया और उसने वहां से कूंचकिया और बड़ेमार्गको उत्तीर्णकरके प्रत्यक्षखंडके समीप जापहुंचा और जबमायाकृत पक्षीने पत्रलेजाकर महेन्द्रकोदिया तबवह उसको पढ़कर बहुत प्रसन्नहुआ और उसीसमय एक पत्रविचित्रमायाको लिखा कि मायाकर्ताके पौत्र आतेहैं उनका पूजा और सत्कारमें किसी प्रकारकीकमी नहो विचित्र माया उसपत्रको पढ़कर मान्य और प्रतिष्ठित म्लेच्छोंको अपनेसाथ लेकर सैन्धकी आगौनीकोगई और उधर कालखंज अपनी

सेनाकोलेकर बड़ीधूमधामसे रक्तवाहिनीनदीके पारउतराउसकी आगौनीके लिये विचित्रमायाने अपनी मंत्रिणि मायामणिको भेजा उसनेजाकर कालखंजका सत्कारकिया और इधर विचित्र-मायाने सैन्धके समीप पहुंचकर उसके तेजको देखा ॥

दो० । गजसमान दीरघ उरग छोड़त मुखसोंज्वाल ।
तापर बैठ्यो लसतसो मनहुं प्रलयकोकाल ॥

निदान एकओरसे कालखंज और दूसरीओरसे सैन्ध महा-भयानक सेनालेकर विचित्रमायाकी सेनामें प्रवेशहुए उनके आ-नेका एकहुल्लड़ होगया रानीनिशाकरीकोभी यह संदेशा पहुंचा और वह अपने सेनापतियोंसहित खड़ीहोकर उनदोनोंकीसेना के आगमनको देखनेलगी ॥

चौ० । अस्त्र शस्त्र नाना तिनकेरे । चमकत चपला सदृश घनेरे ॥
हयहींसनजनु मेघननर्दन । सिंधु सदृश आवत अरिमर्दन ॥

निदान दोनोंसेना आकर उतरीं और डेरे और तंबूखड़ेकिये गये और सुमुखी आकर अपने पति सैन्धसे मिली कालखंज भी वहांगया और सबकोई सभामें बैठे उससमय सैन्धने काल-खंजसेकहा कि हम तुम दोनोंमिलकर शत्रुसे युद्धकरें वह बोला कि मायाकर्त्ता की सहायताके सिवाय मुझको किसीकी सहाय-ताकी आवश्यकता नहीं है यहबात सैन्ध और उसकी स्त्री सुमु-खी दोनोंकोबुरीलगी परंतु वेचुपहोरहे और विचित्रमायानेदोनों का पूजन और सत्कार किया और मद्यपानभी होतारहा और जिससमय दिन व्यतीत होकर सायंकालहुआ और आकाश तारागणोंसे जटित होगया ॥

चौ० । अथयोरवि अरुनिशिजबआई । निशापतीनिकस्यो छबिछाई ॥
तासु कौमुदी भाति सुखकारी । फैलिगई जगमें श्रमहारी ॥

उससमय कालखंजने युद्धके वाद्य बजनेकी आज्ञादी और नगाड़े युद्धके घड़घड़ घड़ड़ घड़ड़ करके बजनेलगे मायाकृतपक्षी

ओर बहुरूपियोंने यहहाल रानीनिशाकरीसे जाकरकहा वहांभा मायाकृत तूरबजनेलगी और दोनों सेनाओं में रात्रिभरयुद्धकी तय्यारी होतीरही मायाविदोंने रात्रिमें अपने. २ प्रयोगजगाये ओर शूरवीरोंने अस्त्र शस्त्रोंपर धार धराई अंतको वहरात्रि व्यतीत हुई और चन्द्रमा अपनी तारागणों की सेना सहित भागगया और सूर्यका आकाश मण्डलमें उदयहुआ॥

सो०। भयो चन्द्रमा अस्त रवि निकस्यो आकाशमें।
तेहि छिन सैनसमस्त चलतभईरणभूमिको॥

दोनोंओरसे टीड़ीदलसेना चलकर रणभूमिमें आई और सेनाके आनेमें कोलाहल प्रकटहुआ॥

चौ०। चलीसेनकरि टोलीटोली। अचलविचलभये अरुमहिडोली॥
चढ़ी अपार गगनआकाशा। भयो सु रविको मन्द प्रकाशा॥

जब सेनादोनों रणभूमिमें आगई तब व्यूहरचना होनेलगी और सेनापति व्यूहके द्वारोंपर स्थित होकर धनुष टंकोरनेलगे उससमय कवियोंने सेनासे निकलकर शूरवीरोंको पुकारा और संसारके नाशमान होनेकी शिक्षाकरके ऐसेपदसुनाये कि हरएक प्राणदेनेको उद्यत होगया॥

चौ०। महिधन दारादिक सुखजेते। जगके नाशमान हैं तेते॥
रोगग्रसित मरिवेतें भाई। रणमें मारिबो परम भलाई॥
जियें मिलत यश मरिदिवधर्मा। उभय प्रकार श्रेष्ठ रणकर्मा॥
अस जिय जानि युद्ध रचि भारी। लेउ सुजयशत्रुनको मारी॥

आज रणभूमि में अपनी अपनी शूरता दिखाओ और शत्रुओंको मारकर अजयदो और संसारमें अपना यशकरलो बड़ेभाग्यके उदय होनेपर ऐसा संयोग मिलता है निदान इस शिक्षाको सुनकर शूरवीर वीररससे भरगये और कायरोंके मुख मलीन होगये उससमय कालखंज अपने उरगको मायाबलसे उड़ाकर रणभूमि में लाया और शत्रुओं को ललकारनेलगा

तबतो वैष्णवी सेनासे रानी रक्तकेशी निकलकर उसके सन्मुख गई और उसने एक नारिकेल अस्त्र मायाकरके मारा काल-खंजने उसको व्यर्थ करदिया और कुछ माया ऐसीकी कि तुरंत दो सिंह प्रकट होगये और वे रणभूमिमें खड़े होकर दहाड़ने लगे कालखंजतो पृथक् खड़ारहा परंतु जो कोई युद्धको गया उसीको सिंहोंने भक्षण करलिया यहदशा देखकर निशाकरीपै न रहागया और वह अपनी सब सेनासहित कालखंजकी सेनापर आपड़ी उससमय दोनोंसेना भिड़कर महाघोर युद्ध करनेलगीं कोई अग्नि बरसाताथा कोई जल उत्पन्नकरके अग्निको शांति करताथा कोई पाषाणोंकी वर्षा करताथा और कोई अस्त्र शस्त्र वर्षाताथा महाकोलाहल छागया शूरवीर मरमरकर गिरनेलगे और मायाकृत युद्धछोड़कर खड्ग और बाणयुद्ध होनेलगा॥

जयकरी छंद। लागे चलन सुशस्त्र अथोर। मचो चहूंदिशि संगर घोर॥
बाणवृष्टि झरिकरि भटचंड। मारतशत्रुन करिकरिखंड॥
घूमि घूमि करि गदा प्रहार। एक एकको डारत मार॥
मंडल करिकरि खड्ग चलाय। एक एककी भेदतकाय॥
इविधिकठिन संगरको पाय। कटेअसंख्यन भट समुदाय॥

परंतु कालखंज और विचित्रमायाकी सेना बहुतथी इससे वैष्णवी सेनाके योद्धाओंके पैर उखड़गये और भगदड़ पड़गई और जो जो नामी सेनापतिथे उनको वे मायाकृतसिंह निगल गये सायंकालको कालखंज विजय पाकर बड़ी प्रसन्नतासे लौटा और अपनी सिविरमें आकर आनन्द करने लगा और उसकी सेनानेभी आकर कमर खोली परंतु बहुरूपिये उसके मारने के उद्योगमेंचले और चपला अपना स्वरूप बदलकर शत्रु सेना में गया और देखा कि कुछ म्लेच्छ एकतंबूमें मद्यकेपात्र रखरहे हैं इसने वहां जाकरकहा भाई विरोचनहैं यहसुनकर एक उनमें से बोला कि किसविरोचनकोपूछतेहो वहबोला कि मेरेभाईहैं काल

और बहुरूपियोंने यहहाल रानीनिशाकरीसे जाकरकहा वहांभा मायाकृत तूरबजनेलगी और दोनों सेनाओं में रात्रिभरयुद्धकी तय्यारी होतीरही मायाविदोंने रात्रिमें अपने २ प्रयोगजगाये और शूरवीरोंने अस्त्र शस्त्रोंपर धार धराई अंतको वहरात्रि व्यतीत हुई और चन्द्रमा अपनी तारागणों की सेना सहित भागगया और सूर्यका आकाश मण्डलमें उदयहुआ॥

सो०। भयो चन्द्रमा अस्त रवि निकस्यो आकाशमें।
तेहि छिन सैनसमस्त चलतभईरणभूमिको॥

दोनोंओरसे टीड़ीदलसेना चलकर रणभूमिमें आई और सेनाके आनेसे कोलाहल प्रकटहुआ॥

चौ०। चलीसेनकरि टोलीटोली। अचलविचलभये अरुमहिडोली॥
चढ़ी अपार गगनआकाशा। भयो सु रविको मन्द प्रकाशा॥

जब सेनादोनों रणभूमिमें आगईं तब व्यूहरचना होनेलगी और सेनापति व्यूहके द्वारोंपर स्थित होकर धनुष टंकोरनेलगे उससमय कवियोंने सेनासे निकलकर शूरवीरोंको पुकारा और संसारके नाशमान होनेकी शिक्षाकरके ऐसेपदसुनाये कि हरएक प्राणदेनेको उद्यत होगया॥

चौ०। महिधन दारादिक सुखजेते। जगके नाशमान हैं तेते॥
रोगग्रसित मरिवेतें भाई। रणमें मारिवो परम भलाई॥
जियें मिलत यश मरिदिवधर्मा। उभय प्रकार श्रेष्ठ रणकर्मा॥
अस जिय जानि युद्ध रचि भारी। लेउ सुजयशत्रुनको मारी॥

आज रणभूमि में अपनी अपनी शूरता दिखाओ और शत्रुओंको मारकर अजयदो और संसारमें अपना यशकरलो बड़ेभाग्यके उदय होनेपर ऐसा संयोग मिलता है निदान इस शिक्षाको सुनकर शूरवीर वीररससे भरगये और कायरोंके मुख मलीन होगये उससमय कालखंज अपने उरगको मायाबलसे उड़ाकर रणभूमि में लाया और शत्रुओं को ललकारनेलगा

स्वरूप प्राताकासा बनाया और कालखंजके पासजाकर बोला कि विचित्रमायाने कहाहै कि जिसबहुरूपियेको तुमने पकड़ा है उसको हमारे पास भेजदो वह बोला कि अच्छा लेजाओ तब प्राताहूपी उपदेशीने कहा कि श्रीमान्‌तो जानतेहैं कि यहबहुरूपिनी माया नहींजानती हैं यह मायासे वेष्टितहै इससेमैं इसे न लेजासकूंगी आप अपनी माया इसपरसे दूरकरदीजिये यहसुनकर कालखंज ने अपनी माया दूरकरदी और उपदेशी चपला को पकड़ेहुए बाहर लेआया और छोड़दिया दोनों बहुरूपिये अपना नाम सुनाकरभागे यहवृत्तांत कालखंजने भी सुना कि बहुरूपियेको बहुरूपिया आकर छुटालेगया यहसुनकर उसने रात्रिभर जगकर चौकसीकी और जिससमय प्रातःकाल हुआ और सूर्य ने आकाशमंडलको अपनेतेजसे दीप्तकरदिया उस समय कालखंज अपनीसेना लेकर रणभूमिमें आया और उधर से रानी निशाकरीभी अपनीसेना लेकर आई उससमय कालखंजने मायासे सिंह निर्मितकरके रणभूमिमें छोड़दिये और वे वैष्णवी सेनाके म्लेच्छोंको निगलनेलगे उससमय उपहासने रानीनिशाकरीको एकमंत्रदिया और उसने उसमंत्रके अनुसार पुकारकर कहा कि हेकालखंज जो तुमहमारेपासआकर एकांत में हमारी बातसुनो और उसको पूराकरदो तो हम महाराज महेन्द्रसे विमुखता छोड़कर उनके आज्ञावर्ती होकररहैं यहसुनकर कालखंज रानीनिशाकरीकी ओरचला और रानीनिशाकरीभी सेनासे निकलकर आगेबढ़ी और बोली कि हमतुम बनमें चलें कि वहां न मेराडर आपकोहो और न आपकाभय मुझको हो क्योंकि वहां न मेरेसाथ सेनाहोगी न आपकेसाथ होगी यह बात कालखंजको बड़ीप्रियलगी और वहरानीनिशाकरीके साथ साथ बनकीओरचला मार्गमें उपहासने गर्तखोदकर पाश बिछादीथी और तृणोंसे ढकदियाथा कालखंज उसपाशमें उलझ

खंजके यहां नौकरहैं तब वे बोले कि हम नहीं जानतेहैं आगे जाकरपूछो चपला बोला कि भाई मुझको सुमुखीको मद्यपानक-रानेवालेकाडेरा बतलादो मेरेभाईभी वहींहैं तबउन्होंने उसेपता बतलाया परंतु चपलाबोला कि भाइयो इतनी बड़ीसेनामें पतेसे पतालगना कठिनहै जो तुममेंसे कोई कृपाकरके मेरेसाथचलकर बतलादे तोमैं बड़ा कृतकृत्यहोऊंगा यह सुनकर एकको दयाआई और वह उसके साथ होलिया मार्गमें चपलाने एक मद्यकापात्र निकाला और कहा कि यहकेतकी की मद्य मैंने बनाई है अपने भाईको लेजाकरदूंगा उसने उसमद्यकी गंध और वर्णकी प्रशंसा की तब प्रहासबोला कि अच्छाथोड़ीसी पीकरभी देखो कि कैसीहै उसने थोड़ीसी उसमेंसे लेकर पीली और पीतेही मूर्च्छितहोगया तब चपलाने उसकेवस्त्र उतारलिये और अपनास्वरूप उसकासा बनाकर वे वस्त्रधारणकरलिये और उसको खींचकर एककिनारे डालदिया और वहांसे आप चलकर कालखंजके डेरेमें बेधड़क घुसाहुआ चलागया वह सिंहासनपर बैठाहुआथा जब चपला ने दंडवत्की उसने पूछा कि तू कौनहै वहबोला कि मैं श्रीमान् का मद्यपानकहूं यह सुनकर कालखंजबोला कि ला मुझे मद्यपि-ला यह सुनकर चपला ने पहिले तो स्वच्छमद्यका एकपात्रभर करदिया और फिर दूसरापात्र मूर्च्छाकर चूर्ण मिलीहुई मद्यसे भरकरदिया उसने उसपात्रको पीयानथा कि प्राताबहुरूपिनी वहां आगई और उसने चपलाको पहिंचानकर कालखंजसे पुकार कर कहा कि यह बहुरूपिया है इसकीदीहुई मद्य न पीजियेगा यह सुनकर चपलाभागा परंतु कालखंजने मायाकरके उसको पकड़लिया उससमय प्राता यहकहकर चलीगई कि मैं जाकर विचित्रमायासे इसके पकड़ेजानेका संदेशा कहतीहूं और चप-ला के पकड़ेजानेका वृत्तांत सबसेनामें विदितहोगया वहां उप-देशी बहुरूपियाभी आयाहुआथा यहहाल सुनकर उसनेअपना

स्वरूप प्राताकासा बनाया और कालखंजके पासजाकर बोला कि विचित्रमायाने कहाहै कि जिसबहुरूपियेको तुमने पकड़ा है उसको हमारे पास भेजदो वह बोला कि अच्छा लेजाओ तब प्रातारूपी उपदेशीने कहा कि श्रीमान्‌तो जानतेहैं कि यहबहुरूपिनी माया नहींजानती हैं यह मायासे वेष्टितहै इससेमैं इसे न लेजासकूंगी आप अपनी माया इसपरसे दूरकरदीजिये यहसुनकर कालखंज ने अपनी माया दूरकरदी और उपदेशी चपला को पकड़ेहुए बाहर लेआया और छोड़दिया दोनों बहुरूपिये अपना नाम सुनाकरभागे यहवृत्तांत कालखंजने भी सुना कि बहुरूपियेको बहुरूपिया आकर छुटालेगया यहसुनकर उसने रात्रिभर जगकर चौकसीकी और जिससमय प्रातःकाल हुआ और सूर्य ने आकाशमंडलको अपनेतेजसे दीप्तकरदिया उस समय कालखंज अपनीसेना लेकर रणभूमिमें आया और उधर से रानी निशाकरीभी अपनीसेना लेकर आई उससमय कालखंजने मायासे सिंह निर्मितकरके रणभूमिमें छोड़दिये और वे वैष्णवी सेनाके म्लेच्छोंको निगलनेलगे उससमय उपहासने रानीनिशाकरीको एकमंत्रदिया और उसने उसमंत्रके अनुसार पुकारकर कहा कि हेकालखंज जो तुमहमारेपासआकर एकांत में हमारी बातसुनो और उसको पूराकरदो तो हम महाराज महेन्द्रसे विमुखता छोड़कर उनके आज्ञावर्ती होकररहें यहसुनकर कालखंज रानीनिशाकरीकी ओरचला और रानीनिशाकरीभी सेनासे निकलकर आगेबढ़ी और बोली कि हमतुम बनमें चलें कि वहां न मेराडर आपकोहो और न आपकाभय मुझको हो क्योंकि वहां न मेरेसाथ सेनाहोगी न आपकेसाथ होगी यह बात कालखंजको बड़ीप्रियलगी और वहरानीनिशाकरीके साथ साथ बनकीओरचला मार्गमें उपहासने गर्तखोदकर पाश बिछादीथी और तृणोंसे ढकदियाथा कालखंज उसपाशमें उलझ

कर गर्तमें गिरपड़ा ऊपरसे निशाकरीने मायाकृत निम्बुकअस्त्र मारा और उपहासने गर्तसेनिकलकर एक भुजालीमारी कि कालखंजका शिरकटगया और वहपंचत्वको प्राप्तहुआ उससमय महाअंधकार छागया आंधी चलनेलगी कोलाहल प्रकटहुआ और वे मायाकृत सिंह अदृश्य होगये और जिन जिन शूरवीरों को उनसिंहों ने निगल लियाथा वे सब प्रकटहोगये यहदेखकर औरअपनेस्वामीका मरणसुनकर कालखंजकीसेना रानीनिशाकरीकी सेनापर दौड़ी इतने में रानीनिशाकरी भी आगई और अपनी सेनाको लेकर उनके सन्मुख चली दोनों दल मिलगये और भयानक मायाकृत युद्धहोनेलगा और निम्बुक और नारिकेलआदि मायाकृत अस्त्र चलनेलगे और खड्गोंके प्रहार ऐसे हुए कि सहस्रों कटकर यमलोकको गये और उनके रुधिर से रक्तकी नदी बहनेलगी॥

चौ०। डाटि डाटिके खड्ग प्रहारें। रणहित एकहि एक प्रचारें॥
माचो तुमुलयुद्ध तेहिठाहीं। निजपरकोऊचीन्हतनाहीं॥
कटे असंख्यनहयगजसादी। मरे अनगिने शूरप्रमादी॥
तिनके रुंड मुंडसों धरणी। भई भयानकरूपविवरणी॥

अंतमें कालखंजकी सेनाकेपैर उखड़गये उससमय लौंडियों पकाड़ियोंका शब्दसुनकर विचित्रमाया सवारहुई परंतु उसने सुना कि लड़ाईबिगड़गई और कालखंजमारागया इससे अपनी सभामें लौटकर चलीआई और सैन्ध्र को तो कालखंज से द्वेपथा क्योंकि उसने कहाथा कि मुझको किसीकी सहायताकी आवश्यकतानहींहै इससे सैन्ध्र अपनी सिविर में बैठारहा और उसके मारेजाने का कुछध्यान न किया निदान रानी निशाकरी जयप्राप्तकरके अपनी सेनासहित लौटकर अपने डेरों में आई और विचित्रमाया ने युद्धकी सब व्यवस्था लिखकर महेन्द्र के पास भेजी उसको देखतेही महेन्द्र क्रोधमें भरगया और एक

दूसरे महामायावी म्लेच्छको जिसकानाम महाकालथा नामले-
कर पुकारा उससमय पृथ्वी कंपायमानहुई और फटगई और
उसमेंसे महाकालनेनिकलकर महेन्द्रकोदण्डवत्की उसेमहेन्द्र
ने आज्ञादी कि तू इसीसमय जाकर सबशत्रुओंके शिरकाटला
और अपनेसाथ सेनालेताजा यह आज्ञापाकर महाकाल एक
लक्ष भयानक सेनालेकर बड़ी धूमधामसे चला और बड़ेमार्ग को
उत्तीर्णकरके रक्तवाहिनी नदीकेपारउतरा विचित्रमायाने उसकी
आगौनीके लिये प्रतिष्ठित म्लेच्छ भेजे परंतु उसने कहलाभेजा
कि मैं उससमय विश्रामकरूंगा जब निशाकरी और उसकेसाथि-
योंका वधकरलूंगा और यहकहकर निशाकरीकी सेनापरचढ़आ-
या और युद्धके बाजे बजवाकर अपनीसेनाको व्यूहितकरनेलगा
उससमय रानीनिशाकरीभी निकलआई और युद्धके वाद्य बज-
वाकर अपनी सेनाको उसके सन्मुखलेआई बहुरूपिये सबबनमें
निकलगये और कवीश्वर शूरवीरोंको रणकाउत्साह दिलाकर
हटगये उससमय महाकालनेऐसीमायाकी कितत्काल महाकाली
पीली आंधीउठी और उसने निशाकरीकी सेनाको चारोंओरसे
घेरलिया सबकी आंखोंमें अकस्मात् कंकड़ी उड़कर पड़ी और
सबकीदृष्टिजातीरही सेनामें खलबली पड़गई जो जो नामीमाया-
कोविदथे उन्होंने अनेक अनेकप्रकारकी मायाकी परंतु किसीसे
महाकालकी मायादूरनहोसकी अंतमें रानीनिशाकरीने पुकारकर
कहा कि हे महाकाल हमसबको महेन्द्रकी आज्ञामें रहनास्वीकार
है तुम महाराजसे हमारा अपराध क्षमाकरादो यहसुनकर महा-
कालबोला कि हे निशाकरी तैंने कालखंजको छलकरके मारडाला
इससे मैं तेराविश्वास नहींकरसकताहूं अच्छा मैं तेरीसेनापरसे
अपनीमाया दूर कियेदेताहूं परंतु तुझको इसीप्रकारसे अंधाब-
नायेहुये महाराजके पासलेचलूंगा यहकहकर उसने फिर कुछ
मायाकी कि उससे एकघटा प्रकटहुई और जलबर्षनेलगा उस

मायाकृत जलकी बर्षासे सबसेनाकी आंखेंखुलगईं, परंतु जो जो नामी मायाकोविदथे अर्थात् रानी आनन्दा और केसरी और निशाकरी और संडीनचपला उनपर एकबूंदभी उसजल की न पड़ी और वे अंधीकीअंधी बनीरहीं उससमय पानीपड़ता हुआ देखकर बहुरूपिये जो निकलगयेथे भेषबदल बदलकर सेनामें चलेआये और उसजलको भरलेनेका उद्योगकरनेलगे कि वह रानीनिशाकरीके कामआवेगा और सबसेनापतियों की आंखोंमें दृष्टि उत्पन्नकरेगा निदान प्रकार प्रकारका उद्योगकिया परंतु वहजल उनको प्राप्त न होसका और महाकालने आकर सबसेनापतियोंको कैदकरलिया और सबको लेकर जयदुंदुभी बजवाताहुआ लौटआया और कैदियोंको एक डेरेमें मायाकृत निगड़ पहिराकर रक्खा और उनकी रक्षाकेलिये म्लेच्छनियत करदिये और आप अपनी सभाका डेरा खड़ा कराकर उसमें उतरा और बिश्रामकिया और उसकी सेनाने भी कमरखोली और नाचहोनेलगा और मद्यपानक पानपात्रोंमें मद्य भरभरकर देनेलगे उससमय चपला मद्यपानक का भेषबनाकर सभामें गया और बिनयपूर्बक बोला मुझको रानी बिचित्रमाया ने उत्तममद्यदेकर भेजाहै महाकालबोला कि ला देखूं वहकैसी मद्य है और कैसा उसका स्वाद है तब चपलाने एक पानपात्र भर कर निवेदनकिया उसने मायाकीदृष्टिसे उसमद्यको इसप्रकारसे देखा कि वहमद्य अग्निशिखा होकर उड़गई यह देखकर उसने एक कुक्कुटांड पृथ्वीपर फेंकदिया और कहा कि मैं जानगया तू चपलानामी बहुरूपियाहै अच्छा उसअंडेको उठाला मैंतेरा अपराध क्षमाकरदूंगा तबचपला उसको उठानेकोलपका परंतु उसमेंसे ऐसाबुराधूआं निकला कि उसकेलगतेही चपलाअंधा होगया महाकालने उसेभी पकड़लिया और कैदकरके फिरमद्य पीनेलगा उसकेपीछे उपदेशी बहुरूपिया भेषबदलकर महाकाल

की सभामें गया और उसको दंडवत् करके बोला कि मुझको सैन्धने आपकेपास भेजाहै और पत्र दियाहै यहसुनकर महाकालने फिरएकमायाकृत अंडाफेंका और कहा कि इसकोउठा करऐरेपासआ औरपत्रदे उपदेशी उसअंडेकोउठानेकेलिये जैसेही झुका तैसेही उसमेंसे धूमनिकला और वहअंधाहोगया महाकालने उसेभी पकड़वाकर कैदकरलिया और आप फिर बैठा हुआ मद्यपान करनेलगा थोड़ीदेरमें वहांकी पृथ्वीफटी और उसमें से एक पुतला निकला और उसने महाकालको एकपत्र दिया उसने उसको पढ़ातौ महेन्द्रकी ओरसे उसमें लिखाथा कि हे महाकाल धन्यहै तुमने बड़ाभारी कार्यकिया हमने ऊर्द्ध-नेत्रको डेरे और सभाके तंबू और वस्त्र आदि पारितोषिक लेकर भेजाहै वह रक्तवाहिनी नदीके तटपर पहुंचैगा तुम सब कैदियोंको लेकर वहीं आजाओ और जो सभाका डेरा हमने भेजाहै उसीमें टिको उसमें टिकनेसे तुमको बड़ाआनन्द प्राप्त होगा और उसमें बहुरूपियों का छल भी न चलैगा हम भी प्रहासको पकड़कर वहीं आवेंगे और सब शत्रुओंके शिरकाट कर परमेश्वर अद्भुत के पास भेजेंगे इसपत्रको पढ़कर उसने पुतलेको विदाकिया और उसीसमय सबकैदियों को छकड़ों पर सवार कराके रक्तवाहिनी नदीकी ओर चलदिया उसकी सेनाको जातेहुए उपहासने देखा और अपनास्वरूप एकम्लेच्छकासा बनाकर सेनामें चलागया और सेनाजनों से कहा कि भाइयो मैं विचित्रमायाका सेवकहूं इससमय तुमलोग सब कहां जातेहो वे बोले कि भाई ठीक ठीकतौ हमसब भी नहीं जानते कि महाकालकी क्या इच्छा है परंतु इतनासुनाहै कि रक्तवाहिनी नदी के किनारे कोई म्लेच्छ डेरालाताहै यहसुनकर उपहास वहांसे बड़ीशीघ्रता से चला और रक्तवाहिनी नदीके किनारे जापहुंचा वहां ऊर्द्धनेत्र सब सरंजाम लिये हुए महा-

कालके आनेकी बाट देखरहाथा कि उपहास म्लेच्छोंकासा रूप बनायेहुए उसके पासगया और बोला कि जब तुम महाराज महेन्द्रके पाससे चलेआये तब उनको और एकबात याद आई सो उन्होंने मुझे भेजाहै सो तुम एकांतमें चलो तो मैं उस गोप्यबातको तुमसे कहदूं यहसुनकर ऊर्द्धनेत्र उसकेसाथ साथ एकाकी होलिया और जब दोनों एकांतमें आये तब उपहासने मूर्च्छाकरचूर्णसे उसे मूर्च्छित करदिया और वहीं एकगर्त खोदकर उसको गाड़दिया क्योंकि मारडालनेसे कोलाहलहोता और उसके साथी जानजाते पृथ्वीके भीतर गड़ाहुआ आपही मरजायगा निदान उसको गाड़कर और उसकासा स्वरूप अपना बनाकर और उसके वस्त्र धारण करके उसके साथियोंके पासआया और आज्ञादी कि महाकालके लिये सभाका डेरा खड़ाकरो यह सुनकर सेवकों ने उसको खड़ाकिया उपहास ने उसमें एकशय्या रत्नजटित बिछवादी और आसन परमोत्तम बिछवादिये और जितने वस्त्र और उपधान थे उनमें मूर्च्छाकर सुगंधित तैल लगादिया और शय्या और आसनोंके सन्मुख फूलोंके गुच्छे मूर्च्छाकर चूर्णसे परिप्लुत रखवादिये और आप पृथक् जाकर ठहरगया दोप्रहरके उपरांत महाकाल वहां आकर पहुंचा और कैदियोंको अलग ठहराकर सबको मायासे वेष्टितकरदिया उससमय ऊर्द्धनेत्रने आकर कहा कि जो सभा का डेरा महाराजने आपकेलिये भेजाहै वह सामने खड़ाकरा दियाहै आप उसमें जाकर विश्राम कीजिये महाकाल यहसुनकर उस डेरे में चलागया और एक आसनपर जा बैठा और जोजो म्लेच्छ उसके साथी और इष्टमित्रथे वे भी वहां जाकर और पास बैठगये और सेना सब उसडेरेसे पृथक् ठहरी उस समय ऊर्द्धनेत्ररूपी उपहासने महाकालके सब सेवकोंसे कहा कि तुमलोग सेनाके भीतर मतजाओ क्योंकि बहुरूपिये तुम

में मिलकर भीतर चलेजायँगे यह सुनकर वे सब बाहर ठहरे रहे और इस अवसरमें महाकाल अपने साथियों सहित मूर्च्छाकर सुगंधित तैलकी गंधको घ्राणकरके मूर्च्छितहोगया उपहास उन सेवकोंको बिदाकरके जो भीतर आया तौ सबको मूर्च्छितपाया उसीसमय खड्गलेकर उसने सबके शिर काटडाले उनके मरनेसे महाकोलाहल प्रकटहुआ अंधकार चारों ओर छागया और आँधी चलनेलगी उसको देखकर सेनाके म्लेच्छ दौड़े और उपहास गर्जताहुआ भागकर निकलगया परंतु रानीनिशाकरी और उसकी सेना और सेनापति जो पकड़ेहुए यहां आयेथे और अंधेथे वे सब महाकालके मरतेही छुटगये और नेत्रों से सबको पहिले की भांति दृष्टपड़ने लगा छुटतेही वे सब मायाकृत अस्त्रलियेहुए महाकालकी सेनापर दौड़े और यद्यपि महाकालकी सेना की संख्या बहुतथी परंतु वैष्णवी सेनाके सब सेनापति बड़े प्रबलथे उन्होंने ऐसी ऐसी मायाकीं कि सहस्रों मारेगये कभी रानीनिशाकरीने अग्निगोलक मारे और अग्निकी नदी प्रकटकरके शत्रुओंको जलादिया कभी आनन्दाने बसंतऋतुको उत्पन्नकरके म्लेच्छोंको मोहितकिया जिसओरको दृष्टिजातीथी नानाप्रकारके सुगंधित फूलहीफूल दृष्टिआतेथे और पत्ते एक दूसरेसे स्पर्शकरतेहुए ऐसे दीखतेथे मानों प्रसन्नहोहोकर तालियां बजाते हैं कलियां खिलतीहुई अपूर्व शोभादेतीथीं भ्रमर उनपर गुंजारकरतेहुए झौंरकरतेथे कहीं लताझुकीहुई परमशुभ दीखतीथीं और कहीं बेलेंचढ़ीहुई आनन्द दिखातीथीं पक्षी उनमें बैठेहुए गानकरतेथे निदान जिसने उसमायाकृत बागमें पैररक्खा वही आनन्दा मायापर तन मन धनसे मोहितहोगया कहीं योद्धा खड्गप्रहार करकेशत्रुओंके शिरकाटतेथे पृथ्वीसबवहांकी रक्तहोगईथी और जहांदेखो तहां रुंड मुंडही पड़े दिखाई देतेथे॥

चौ० । मान्यो तहां घोर घमसाना । लग्यो होनअसि युद्धमहाना ॥
कोउमण्डलकरिअसिवाहें । चर्म रोपि प्रति योधा पाहें ॥
कोउ करि करि उर्द्धप्रहारा । दरशावत बलबुद्धि अपारा ॥
सव्यासव्य मंडलनिकरिकें । करत प्रहार परस्पर भिरिकें ॥
यहिविधिअसियुधतुमुललराई ! करि जूझेयोधा समुदाई ॥
रुंड अनेकनिकर असिलीन्हें । धावतगिरतपरतनहिंचीन्हें ॥

निदान शत्रुकी सेना भयभीत होकरभागी और रानीनिशाकरी अपने वासस्थलकी ओरचली और यहां महेन्द्रने निद्रावतीसे कहा कि तुमजाकर महाकालसे कहदो कि शूलियां खड़ी करारक्खे और चांडालोंको आज्ञादेदे कि वहांशूली देनेको उपस्थितरहैं कलहम आकर सबको शूलीदेंगे और उनकेशिर परमेश्वरके पास भेजेंगे यह आज्ञापाकर निद्रावती वहां से चली और रक्तवाहिनी नदीकेतटपरआई वहांप्रहास मार्गढूंढ़ताहुआ फिररहाथा उसने निद्रावतीको दूरसे देखकर विचारकिया कि इस चांडालीको मूर्च्छित करके और इसकासा स्वरूपबनाकर नदीकेपार उतरचलो और जो पार न जासको तो नसही परंतु इसको लज्जिततो करो और यह जानताहीथा कि यह म्लेच्छी बड़ीकामिनीहै निदानतत्कालउसने अपनास्वरूप एकसुंदर किशोर अवस्थावाले पुरुषकासा बनाया और मुक्ताओं से जटित टोपी लगाकर और परमोत्तम वस्त्र धारण करके एकस्थानपर जहांसे उसने अनुमानकिया कि निद्रावती नदी के पारजायगी चलागया और वहांएकवृक्षकी डालीपकड़कर खड़ाहोगया और रोरोकर विरहके पद पढ़नेलगा ॥

दो० । पजरै आगि वियोगकी बहै विलोचननीर ।
आठो याम हियेरहै उठ्यो उसाससमीर ॥
पावक झरतें मेहझरि दाहक दुसह विशेख ।
दहै देह वाके परस याहि दृगनही देख ॥

निद्रावती जब वहांपहुंची उसकेपास चलीआई और उस

के हाथको झकझोर के बोली कि अरे नवीनअवस्थाके पुरुष तेरेरोनेका क्याकारणहै प्रहासने आंखेंखोलकर उसकी ओरदेखा औरऔर भी अधिकरोनेलगा जब निद्रावतीने बहुतप्रकारसेपूछा तब प्रहासने कहा कि रानी आनन्दामायापर मोहितहूं और वह प्रहासकी संगीहै मेराकुछबशनहींहै पहिले महाराजकेभयसे उस से कुछ कहनहींसकताथा परंतु उसके दर्शनकरलिया करताथा परंतु अबतो दर्शनमिलनाभी दुर्लभहोगये कोईचित्तको आनन्द देनेवाला नहीं मिलताहै फिररोऊं नहीं तो क्याकरूं यहसुनकर वह बोली कि अरे अज्ञानी नायकको प्रीतिमान नायका मिलना इससंसारमें ऐसाहै जैसे रक्तगंधकका मिलना दुर्लभहै तू क्यों मदोन्मत्त उसकेपीछे हुआहै यहसुनकर प्रहासबोला कि तुमने जो मेराहालपूछा है तोतुम्हींको मेरेऊपर कृपाकरना उचित है तुम्हींमुझको अपनीसेवामें अंगीकारकरो मेरेपास धनबहुत है और मेरे आगेपीछे कोईनहींहै मैं प्रेमके फंदेमें पड़कर मारामारा फिरताहूं यहबातें सुनकर निद्रावती हँसनेलगी तबतो प्रहासने उसका हाथपकड़लिया और गलेसेलिपटालिया वहबोली कि देखो कोई आजायगा तो मैं अयशकीभागी होऊंगी तुमतोबड़ी-शीघ्रतासे आनन्दमें आगये उंगली पकड़तेही झटपहुंचापकड़ लिया प्रहास बोला कि हे प्राणप्यारी तुमने नहींसुना है कि ॥

दो०। एकघड़ी आधी घड़ी आधीहूकी आधि।
मिलैसोजुरिमिलिबैठिये खड़ीबियोगिनिब्याधि॥

यहकहकर प्रहासने उसको गोदमेंउठालिया और एकांतमें लाकर एकचादर बिछाई और उसपर उसको बैठाया और कमर से एकडिबिया निकालकर कहा कि मुझको तांबूल खानेका व्य-सनपड़गयाहै लो तुमभी एकबीड़ीखाओ निदान निद्रावतीबीड़ी खाके मूर्च्छितहोगई प्रहासने उसकेसबआभूषण उतारलिये और बालोंमें मोती पिरोयेहुए होनेसे उसने उसका शिरमूंडकर बालों

में से मोती निकाललिये और जैसेही चाहा कि उसकोमारडालूं तैसेही बड़ीभारी आँधीउठी प्रहास उसको देखकरभागा और वहआँधी निद्रावतीकोउड़ाकरमहेन्द्रकेपासलेगई महेन्द्रनेअपना वस्त्र उसकेऊपरडालकर उसको चैतन्यकिया तबउसने विनयकी कि प्रहास मुझको कईबार लज्जितकरचुकाहै अब मैं जातीहूं जहां मुझे मिलेगा वहीं उसको पकड़कर मैं उसका बधकरूंगी महेन्द्रबोला कि अच्छाठहरो मैं उपाय उसकेबधकाकरताहूं यह बातेंहोहीरहीथीं कि अकस्मात् कुछमायाकृतपक्षी उड़तेहुएआये और बोले कि महाराज महाकाल और ऊर्द्धनेत्रदोनों मारेगये और सबकैदीछूटगये यहसुनतेही महेन्द्रक्रोधकेमारे कांपनेलगा और अपने एकसभासद से जिसकानाम प्रकंपथा बोला कि निशाकरीआदि छुटकर अपने डेरोंको जाते ह तुमजाकर उनको पकड़लाओ यहसुनकर वहम्लेच्छ मायाबलसे आकाशमार्गी हुआ और बड़ीशीघ्रतासे वैष्णवीसेनाकेपासपहुंचकर एकमाया-कृतअस्त्र छोड़ा वहअस्त्र पृथ्वीमें समागया और पृथ्वीकंपितहुई और उसकेकारणसे निशाकरीआदि सबयोद्धा गिरपड़े परंतु रंतिकालने अपनेको मायाकरके सँभाला और पृथ्वीपरकूदकर पृथ्वी में प्रवेशकरगया और संडीनचपला चपला बनकरआ-काशमें उड़गई क्षणमात्रमें रंतिकाल पृथ्वीमें से प्रकंपके समीप निकला और ऐसेवेगसे अट्टहासकिया कि प्रकंपमूर्च्छितहोकर गिरपडा उसके गिरतेही संडीनचपला उसपर चमककर गिरी और उसको भस्म करतीहुई पृथ्वीमें प्रवेशकरगई उसके मरने से महाकोलाहल प्रकटहुआ और रानी निशाकरी आदि सब सँभलकर आगेबढ़े परंतु थोड़ीहीदूरगयेथे कि सामनेसे एक म्लेच्छ उरगभक्षी नामी प्रकटहुआ और पुकारकरबोला कि अरे अधर्मियो तुम मेरे रहने क स्थानपर प्रकंप को मारकर चलेभी जाओगे और ऐसी मायाकी कि सहस्रों सर्प अग्नि

की ज्वाला मुखसे छोड़तेहुए प्रकट होगये और उन्होंने चारों ओरसे सब वैष्णवी सेनाको घेरलिया रानी निशाकरी आदिने अनेक अनेक प्रकार के मायाके प्रयोग किये परंतु किसी से वे सर्प नष्ट न हुए और सब कोई निराश होकर रोनेलगे उस समय उपहास पर्वतसे अपनी सेनाकी उक्तदशा देखकर म्लेच्छका भेष बनाकर उरगभक्षीके पास आया उसने पूछा कि तू कौनहै वह बोला कि हम उपहासहैं तब उसने चाहा कि माया करके उपहासको पकड़लूं परंतु उपहासने चमककर एकभुजाली ऐसी मारी कि उरगभक्षीका शिर कटकर भुट्टासा जापड़ा उसके मरते बड़ाकोलाहल प्रकटहुआ और वे मायाकृत सर्प सबनष्ट होगये और रानी निशाकरी आदि आगेको बढ़े इसअवसरमें महेन्द्रको प्रकंप और उरगभक्षीके मारेजानेके समाचारभी पहुंचे सुनतेही उसने अपने दोनोंहाथ जंघापर देमारे और पुकारा कि हे कृष्णाक्षी माया आओ यह कृष्णाक्षी मायाकर्ताकी दासी करके प्रसिद्धहै और इसीप्रकारसे इन आसुरीमायाके चमत्कारों को निर्मित करनेवालेकी सात दासियां हैं उनकी कथा उनके प्रसंग आनेपर वर्णन की जायगी निदान एकम्लेच्छी आकाश में प्रकटहुई महेन्द्रने उससे कहाकि तुम जाकर प्रहासको पकड़ लाओ वह बोली कि मैं आकाशसे नित्य देखतीहूं कि प्रहास दौड़ादौड़ा फिरताहै जबकहो तभी पकड़लाऊं परंतु इससमय में न जाऊंगी किसी और को भेजो महेन्द्र इसको मायाकर्ताकी दासी जानकर बहुत मानताथा इसकारणसे उसके निषेध करनेपर चुपका होरहा और वह चली गई उसके पीछे महेन्द्र ने दूसरी दासी व्याधिमायाको पुकारा वहभी उड़तीहुई आई उससे कहा कि तू जाकर प्रहासको पकड़ला वह बोली कि हे महेन्द्र हमको मायाकर्ताकी आज्ञा नहीं है कि हम बहुरूपियेसे सामनाकरें दूसरे मायाकर्ताकी दासियोंका मान यहीहै कि तुम हमको

युद्धकरनेकी आज्ञा देतेहो तुमको हमलोगोंकी पूजाकरना उचित है यह कहकर वहभी चलीगई महेन्द्रतौ उससमय क्रोधमेंभरा हुआहीथा औरभी लाल होगया और तीसरी दासी रक्तभक्षी मायाको पुकारा वहभी उड़तीहुई आई महेन्द्रने उससे कहा कि तू जाकर निशाकरी आदिको कैदकर मैं प्रहासको किसी और से पकड़वाऊंगा इसदासीने कुछ उत्तर न दिया और उसीसमय रानी निशाकरीकी ओर चलदी परंतु रानीनिशाकरी जो उरग भक्षीसे बचकर चली एक पर्वतके समीप पहुंची और देखा कि वह पर्वत बीचमेंसे फटा हुआहै और उसमें एक मन्दिर परम सुंदरबनाहै और छोटासा बागभीहै परंतु अच्छीप्रकारसे अलं- कृतहै चारोंओरको तौ चार प्रासाद बनेहैं और बीचमें एकद्वा- दशद्वारीहै वह परम शोभायमान है रानी निशाकरीको दिनभर चलते और लड़ते भिरते बीताथा इससे इसस्थानको रमणीक पाकर वहीं ठहरगई और रात्रिभर वहीं विश्रामकिया प्रातकाल होनेपर जबचली थोड़ीदूरपर रक्तभक्षीने आकर ललकारा और कहा कि मैं मायाकर्ताकी दासीहूं मुझसे बचकर कहां जाओगे यह सुनकर रानी निशाकरी ने एकलोहका गोला मायाकरके मारा परंतु वहतौ मायाकर्ता की दासीथी इससे वहगोला उसके सामने जातेही मोमका होगया तबरानीआनन्दाने एकफूलों का गुच्छा मायाकरकेफेंका उससे तत्काल बसंतऋतु उत्पन्न होगई चारोंओर प्रकार प्रकारके फूलखिलगये और लता और वेल और वृक्ष प्रकार २ के प्रकटहोगये तबरक्तभक्षी मुखसे एकफूंक मारी कि उससे अग्नि उत्पन्नहुई और उससे वहबसंतकी सब सामग्री भस्महोगई तब रंतिकालने रक्तभक्षी के समीप प्रकट होकर अट्टहासकिया और संडीनचपला चमककर उसपरगिरी परंतु उसने मायाकृत पाश से बांधकर दोनों को पकड़लिया निदान इसीप्रकारसे सबने अपने २ मायाकृत प्रहारकिये परंतु

किसीसे कुछनहुआ अंतमेंरक्तभक्षीने मायाकी उससे पृथ्वीफटी और उसमेंसे सहस्रोंपुतले निकले और सब वैष्णवी सेना के सेनापति और योद्धाओंसे लिपटगये और उनकोपकड़कर रक्तभक्षीके सन्मुखलेआये बहुरूपियेतो पहिलेही भागगयेथे इससे वे बचरहे और और सब पकड़ेगये और उनसबको लेकर रक्तभक्षी महेन्द्रके पासचली बहुरूपिये भी दूरदूर सेनाकेसाथ होलिये और आगे जाकर चपलाने एकबुढ़ियाका भेषधारणकिया श्वेतबार शिरहिलताहुआ कमरभुकीहुई और लाठीटेकताहुआ रक्तभक्षीके सन्मुख गया और दुहाई देनेलगा कि हेरानी येमेरे बहुरूपियेमेरा सबघर लूटलेगये मुझको भिक्षुककरदिया आप चलकर देखियेरक्तभक्षी उसकी बिनयसुनकर बोली कि मैं किसी के घरनहींजाती और मायाकरके बुढ़ियाकोभी पकड़कर बांधलिया तबबुढ़ियाने कहा कि एकतो मेराघर लुटगया और दूसरे मैं कैदहोगई वहबोली कि मैं तुझे महेन्द्रकेपास लियेचलतीहूं वह तेराघर फिर से बनवादेगा अरेछली तूजानताहै कि मैं नहीं जानती मुझसे तेराछल न चलैगा यह कहकर आगेचली इसके पीछे उपदेशीने अपना स्वरूप एकग्रामीणकासा बनायाजांघतक कड़ी धोतीबांधी शिरपर अंगौछा लपेटलिया और हाथमें गोफन लेकर एकखेतकेकिनारेखड़ाहोगया और पक्षियोंको बिड़ारनेलगा जब रक्तभक्षी वहां पहुंची उपदेशीने पुकारकर कहा कि देखो इधर मतआना तुम्हारे साथ बहुत मनुष्यहैं मेराखेत उजड़ जायगा यहसुनकर रक्तभक्षी बोली कि भलामरे मैंने तुझको पहिंचानलिया मैं उधरहींसे आतीहूंतब उपदेशी जानगयाकि इस नेमुझको पहिंचानालिया और वहांसेखेतमें कूदकरभागा और फिर एकम्लेच्छका रूप धरकरआया और बोला कि मुझको महेन्द्रने भेजा है और कहाहै कि पहिले जो बुढ़िया बनकर आयाहै वह चपला बहुरूपियाहै उसके छलमें मतआना और

मार्गमें देखभालकरआना रक्तभक्षी बोली कि मैंऐसा देखभाल
कर चलतीहूं कि तुझे भी न छोडूंगी यहकहकर माया करके
उपदेशीकोभी पकड़लिया और जिसरस्सीमें सबबँधेथे उसीमें
उसकोभी बांधकर आगेकोबढ़ी यहसबहाल दूरसे उपहासने
देखा कि दो बहुरूपिये पकड़ेगये तब आपअपने निजस्वरूपसे
रक्तभक्षीके पासचलागया और उसकेपैरोंपर गिरकरबोला कि
मेरेदोभाई तुमनेपकड़लिये और गुरूजीमेरे अदृश्यखंडकेमाया
जालमें फंसेहैं और सेनाभी सबतुमने कैदकरली इससेमुझेभी
बांधलो और लेतीचलो मैं यहाँअकेलारहकर क्याकरूंगा महे-
न्द्रमेरेप्राणोंका भूंखाहै यहसुनकर रक्तभक्षीबोली कि हेउपहास
तू बड़ा सिद्धपुरुषहै तैंनेबड़ाअच्छाकिया जोमेरेपास चलाआया
मैं तेराअपराध महाराजसेक्षमा करादूंगी तबउपहासबोला कि
देखिये एक बहुरूपिया आपके पीछे और खड़ा है वहपीछे फिर
करदेखनेलगी उपहास ने तत्काल एकभुजाली ऐसीमारी कि
रक्तभक्षी का शिरकटकर दूरजापड़ा महानकोलाहल होनेलगा
और अंधकार छागया थोड़ीदेरमें वहउपाधि मिटी और बैष्णवी
सेना उसबन्धन से मुक्तहोकर अपने डेरोंकी ओरचली परंतु
मायाकृत पक्षिने उसके मारेजानेके समाचार महेन्द्रको पहुंचाये
सुनतेही महेन्द्रझुंझलाकर उठखड़ाहुआ और चाहा कि आप
जाकर शत्रुओंको पकडूं और दंडदूं परंतुउससमय सभामें एक
म्लेच्छकरालाक्षनामी स्थितथा उसने उठकर बिनयकी कि आप
से महाराजको यहकब उचित है जोऐसे छोटे छोटेसेवकोंसेयुद्ध
करनेको जायँ मैं जाकर सबको दंडदेताहूं और बांधकर आपके
सन्मुख लियेआताहूं उसकेकहने से महेन्द्ररुकगया और उस
म्लेच्छने सभासे बाहर निकलकर बारहसहस्र मायावी म्लेच्छ
लिये और मायासे एक बिमानरचा जब सबसरंजाम करचुका
तब महेन्द्रसेजानेकी आज्ञालेनेगया महेन्द्रने उसे सत्कारपूर्वक

विदाकिया और वहउसमायाकृत विमानपर बैठा यहम्लेच्छबड़ा भयंकर रूपथा आंखें इसके चारथीं और चारोंउल्काकी समान जलाकरतीथीं और मुखकंठतक फैलाहुआ और भयानककराल दंतोंसे भीषणथा॥

चौ०। कृष्णबरण अतिदीरघकाया। जानत बहुप्रकारकीमाया॥
अतिदीरघ बहुदशनकराला। अति बिस्तृतमुखभीषणभाला॥

निदानवहम्लेच्छ बिमानपर बैठकरचला और बारहसहस्र मायावीम्लेच्छ उसकेबिमानके साथबाजेबजातेऔर मायाबलसे चमत्कार दिखातेहुएहोलिये यहांरानीनिशाकरी सबसेनासहित बड़ेमार्गको उत्तीर्णकरके अपनेडेरोंके समीपपहुंचीथी कि अकस्मात् रंगबिरंगीघटा और अग्नि और पाषाणोंकी बर्षाहोती हुई दिखाईपड़ी उसको देखकर रानीनिशाकरी ठहरगई और जब बिमान करालाक्षकादीखा तब निशाकरीने उसे पहिंचान कर कहा कि परमेश्वर कुशलकरे परंतु क्या करसकती थी तुरंत अपनी सेनाको व्यूहित करनेकी आज्ञादी और उधरकरालाक्षने अपनी सेनासे कहा कि सबको घेरलो देखो कोई बचकर नजानेपावे और आप आगेबढ़कर ललकारकर बोला कि मुझसे कौन युद्ध करना चाहता है यह सुनकर चान्द्री जिसके पतिको प्रहासने सती बनकर बचायाथा और जो उससमयसे वैष्णव होकर अपने पतिकेसाथ वैष्णवीसेनाकी साथीथी आगे बढ़ी और अपने गलेसे हार उतारकर फेंका कि वह महानाग बनकर करालाक्षकी ओर दौड़ाउसको देखकर करालाक्ष घबरागया और मायाकर्ताकी समाधिकी भस्म उसने शीघ्रतासे निकालकर उस नागपर डालदी कि उसके प्रभावसे वह जल होकर बहगया इसके पीछे करालाक्ष मायाबलसे उड़कर आकाश में चला गया और वहांसे उसने थोड़ीसी वही भस्म फेंकी कि उससे एकआंधी प्रकटहुई और वह भस्म उड़कर सबके ऊपर

मार्गमें देखभालकरआना रक्तभक्षी बोली कि मैंऐसा देखभाल
कर चलतीहूं कि तुझे भी न छोडूंगी यहकहकर माया करके
उपदेशीकोभी पकड़लिया और जिसरस्सीमें सबबँधेथे उसीमें
उसकोभी बांधकर आगेकोबढ़ी यहसबहाल दूरसे उपहासने
देखा कि दो बहुरूपिये पकड़ेगये तब आपअपने निजस्वरूपसे
रक्तभक्षीके पासचलागया और उसकेपैरोंपर गिरकरबोला कि
मेरेदोभाई तुमनेपकड़लिये और गुरूजीमेरे अदृश्यखंडकेमाया
जालमें फंसेहैं और सेनाभी सबतुमने कैदकरली इससेमुझेभी
बांधलो और लेतीचलो मैं यहाँअकेलारहकर क्याकरूंगा महे-
न्द्रमेरेप्राणोंका भूंखाहै यहसुनकर रक्तभक्षीबोली कि हेउपहास
तू बड़ा सिद्धपुरुषहै तैंनेबड़ाअच्छाकिया जोमेरेपास चलाआया
मैं तेराअपराध महाराजसेक्षमा करादूंगी तबउपहासबोला कि
देखिये एक बहुरूपिया आपके पीछे और खड़ा है वहपीछे फिर
करदेखनेलगी उपहास ने तत्काल एकभुजाली ऐसीमारी कि
रक्तभक्षी का शिरकटकर दूरजापड़ा महानकोलाहल होनेलगा
और अंधकार छागया थोड़ीदेरमें वहउपाधि मिटी और वैष्णवी
सेना उसबन्धन से मुक्तहोकर अपने डेरोंकी ओरचली परंतु
मायाकृत पक्षिने उसके मारेजानेके समाचार महेन्द्रको पहुंचाये
सुनतेही महेन्द्रझुँझलाकर उठखड़ाहुआ और चाहा कि आप
जाकर शत्रुओंको पकडूं और दंडदूं परंतुउससमय सभामें एक
म्लेच्छकरालाक्षनामी स्थितथा उसने उठकर बिनयकी कि आप
से महाराजको यहकब उचित है जोऐसे छोटे छोटेसेवकोंसेयुद्ध
करनेको जायँ मैं जाकर सबको दंडदेताहूं और बांधकर आपके
सन्मुख लियेआताहूं उसकेकहने से महेन्द्ररुकगया और उस
म्लेच्छने सभासे बाहर निकलकर बारहसहस्र मायावी म्लेच्छ
लिये और मायासे एक बिमानरचा जब सबसरंजाम करचुका
तब महेन्द्रसेजानेकी आज्ञालेनेगया महेन्द्रने उसे सत्कारपूर्वक

विदाकिया और वहउसमायाकृत विमानपर बैठा यहम्लेच्छवड़ा भयंकर रूपथा आंखें इसके चारथीं और चारोंउल्काकी समान जलाकरतीथीं और मुखकंठतक फैलाहुआ और भयानककराल दंतोंसे भीषणथा॥

चौ०। कृष्णवरण अतिदीरघकाया। जानत बहुप्रकारकीमाया॥
अतिदीरघ बहुदशनकराला। अति विस्तृतमुखभीषणभाला॥

निदानवहम्लेच्छ विमानपर बैठकरचला और बारहसहस्र मायावीम्लेच्छ उसकेविमानके साथबाजेबजातेऔर मायाबलसे चमत्कार दिखातेहुएहोलिये यहांरानीनिशाकरी सबसेनासहित बड़ेमार्गको उत्तीर्णकरके अपनेडेरोंके समीपपहुंचीथी कि अकस्मात् रंगविरंगीघटा और अग्नि और पाषाणोंकी वर्षाहोती हुई दिखाईपड़ी उसको देखकर रानीनिशाकरी ठहरगई और जब विमान करालाक्षकादीखा तब निशाकरीने उसे पहिंचान कर कहा कि परमेश्वर कुशलकरै परंतु क्या करसकती थीं तुरंत अपनी सेनाको व्यूहित करनेकी आज्ञादी और उधरकरा लाक्षने अपनी सेनासे कहा कि सबको घेरलो देखो कोई बचकर नजानेपावै और आप आगेबढ़कर ललकारकर बोला कि मुझसे कौन युद्ध करना चाहता है यह सुनकर चान्द्री जिसके पतिको प्रहासने सती बनकर बचायाथा और जो उससमयसे वैष्णव होकर अपने पतिकेसाथ वैष्णवीसेनाकी साथीथी आगे बढ़ी और अपने गलेसे हार उतारकर फेंका कि वह महानाग बनकर करालाक्षकी ओर दौड़ाउसको देखकर करालाक्ष घबरा-गया और मायाकर्ताकी समाधिकी भस्म उसने शीघ्रतासे निकालकर उस नागपर डालदी कि उसके प्रभावसे वह जल होकर बहगया इसके पीछे करालाक्ष मायाबलसे उड़कर आकाश में चला गया और वहांसे उसने थोड़ीसी वही भस्म फेंकी कि उससे एकआंधी प्रकटहुई और वह भस्म उड़कर सबके ऊपर

पड़ी पड़तेही सब मूर्च्छित होगये तबउसने मायाकृततंबू बना-
कर उसमें सबको कैद करदिया और विचित्रमाया से मिलकर
और रक्षाकेलिये कुछ म्लेच्छ लेकर आया और सबको छकड़ों
पर लदवाकर चलदिया और रक्तवाहिनी नदीके तटपर पहुंचा
जबसे यह म्लेच्छ चलाथा तबसे इसने कहीं विश्रामतो किया
ही नहींथा और आने जानेमें श्रमितभी होगयाथा इससे उस
ने आज्ञादी कि आज रात्रिको यहां विश्रामकरो मैं महाराजको
पत्रलिखकर पूछताहूं कि कैदी कहां रहेंगे अर्थात् नदी के इसी
पार उनका बध कियाजाय अथवा आप के पास वहां सब को
लेआऊं निदान डेरे तंबू खड़े कियेगये सेनाने कमरखोली और
वह अपनी सभा में बैठकर मद्यपान करनेलगा बहुरूपिये भी
सेनाको बन्धनसे मुक्त करनेके उद्योगमें उसके पीछे पीछे आये
थे निदान जब वह अपनी सभामें गया तब चपला एक म्ले-
च्छका रूप धारण करके करालाक्षके पासगया और हाथजोड़
के बोलाकि महाराजमें आपका नाम सुनकर आयाहूं आधसेर
आटेसे कहींलगादीजियेमैं बडादीन और दुखीहूं और मायाकर-
नाभी बहुतअच्छा जानताहूंपरंतु प्रारब्धमेरे ऐसेबुरेहैं कि कहीं
धन्धानहींलगता है यहसुनकर कालखंजबहुत प्रसन्नहुआ और
चपलाको बुलाकर अपनेपासबैठाया और उसको अपनासभा-
सदबनाया तबचपलाने उसकी प्रशंसाकेपद बनाकरपढ़े और
उसकेहृदयमें अपनेलिये स्थानबनाया निदानयहतो उसकेबध
करनेके उद्योगमेंथा और वहांमहेन्द्रने अद्भुतजालकीपुस्तक नि-
कालकर देखा और उससे उसकोविदितहुआ कि करालाक्षसब
को कैदकरके नदीके तटपरलेआयाहै और बहुरूपिया उसकाबध
करनाचाहताहै यहजानतेही उसनेएक म्लेच्छीछीहमुखी नामीसे
कहा कितू शीघ्रजाकरकरालाक्षसेकहदे कि सभासदजिसकोबना-
याहै वहचपला नामी बहुरूपियाहै इसको पकड़लो और बहुरू-

पियोंसे चौकन्नेरहो प्रातःकाल जैसी मेरीआज्ञाहो वैसाकरना यह सुनकर ह्रीह मुखीचली और करालाक्षके पासपहुंची उसनेउसका वडासत्कारकिया परंतु उसनेआतेहीमायाकरके चपलाकोस्तंभित करदिया और जोकुछ महेन्द्रने कहाथा वहसब कहा तब करालाक्षने चपलाकोभी मूर्च्छित करके वहीं भेजदिया जहां और सबथे और ह्रीहमुखीको पासबैठाया उपहासभी उससमय सेनामेंथा जब उसने चपलाको पकड़ाहुआ देखा एक म्लेच्छका रूप धारण करके सभाके डेरेके पासगया द्वार डेरेके खुलेहुएथे और उजेरा दीपकोंका ऐसा होरहाथा कि दिनसा जानपड़ताथा ह्रीहमुखीने उपहासको देखकर करालाक्षसे कहा कि वहम्लेच्छ उपहासनामी बहुरूपियाहै उसने उसको पकड़ना चाहा परंतु उपहास उसके मनकी इच्छाको जान गया और भागकर निकलगया उस समय एक पुतलेने एक पत्र महेन्द्रके पास से लाकर दिया उसमें लिखाथा कि रानी ह्रीहमुखी तुमकोबहुरूपिये आकर सतातेहैं इससे हमने इस पुतलेको एकमंत्र सिखाकर भेजा है उससे तुम उस मंत्रको सीख लेना उसके पढ़नेसे तुमको जो बहुरूपिया आवैगा मालूमहोजायगा उस मंत्रका असुर तुमको बहुरूपिये के आनेका संदेशा देगा और करालाक्ष से कहदेना कि कैदियों को लियेहुए वहीं ठहरें बहुरूपिये अब तुमको न पासकेंगे मैंप्रहासको पकड़वाकर वहींआताहूं वहींप्रहास आदि सब शत्रुओंके शिर काटूंगा इस पत्रको पढ़कर ह्रीहमुखीने उस पुतले से वह मंत्र सीख लिया और उसे विदाकिया और करालाक्षकोभी पत्रका आशय सुनाकर निर्भयहोकरबैठे और उधर महेन्द्रनेभी सभाको विसर्जन करके रात्र्यानन्दकिया और जिस समय भगवन् कुमुदिनीनायकने आकाशरूपी सभासे तारागणरूपी सभासदोंको विदाकरके सभा विसर्जनकी और दिनमणि उस सभामें आकर अपने तेजसे संसार को दीप्त करता हुआ

विराजमान हुआ अर्थात् रात्रिव्यतीतहुई और सूर्योदयहुआ॥

दो०। होत उदय दिन नाथके जगमें भयो प्रकाश।
क्षीण सकल तारा भये निशिपति तज्यो प्रकाश॥

उससमय महेन्द्र निद्रात्यागकरअपनीसभामें आकरआसीनहुआ और आज्ञादी कि समीररूपा जबसे प्रहासको पकड़ने गई है तबसे अबतक उसको पकड़कर नहीं लाई इससे तुममें से एक जना जाकर समीररूपाको ढूंढ़कर उसके साथसाथरहै और जिसको वह बतावै कि यह प्रहास है उसको पकड़ कर हमारे सन्मुख लेआवै यह आज्ञा पाकर निद्रावती जो प्रहास की पूर्ण शत्रुथी और कईबार प्रहासने जिसका शिरमूड़ाथा खड़ी होगई और बोली कि महाराज यह आप की दासी जाती है और उस छली को पकड़कर लाती है यह कहकर वह चलदी समीररूपा प्रहास को ढूंढ़तीहुई वनवन और पर्वत पर्वत देखतीहुई चलीजारही थी कि इतने में निद्रावती आकाशमार्ग से उसके पासपहुंची और उसके साथ साथ होली अब प्रहास का वृत्तांत सुनिये कि निद्रावतीका शिरमूड़कर वहएक दिशाको चलदिया आगे बढ़कर एकग्राममें पहुंचा और देखा कि वहां एक स्थानपर बहुतसे म्लेच्छ इकट्ठेहैं बाजे बजरहे हैं और मद्य उड़रही और एक म्लेच्छ दूल्हाबना बैठा है उसको देखकर प्रहासने विचारा कि किसीका विवाहहै चलो आज विवाहकी सामग्रीलूटो यह विचार करके उसने अपना स्वरूप एक म्लेच्छकासा बनाया और बरातके पासजाकर वहांके म्लेच्छोंसे नमस्कारकी उनसब ने जाना कि यह यहींकहीं का रहनेवालाहै विवाहके कारणसे भाइयों कासाथ देनेको आया है यह अनुमानकरके उनलोगोंने प्रहासको आदरपूर्वक बैठाया तबप्रहास ने मद्यका पात्र लेकर उसमें से एक पानपात्रभरा और बरातियोंमेंसे एकको निवेदनकिया वहबोलाकि मैं तो पानकर चुकाहूं

आप पीजिये प्रहासबोला कि यहकभी नहोगा मैं जबसब को आपने हाथसे पिलालूंगा तब आप पीऊंगा निदान प्रहास के बहुत कहनेपर उसने वहपात्र पीलिया फिरतो मद्यपान प्रारंभ होगया और प्रहासनेमूर्च्छाकरचूर्ण मिलीहुईमद्य सबको पिलाई और उसको पीकर सब आपसमें लड़भिड़कर मूर्च्छित होगये उससमय प्रहासने बरुणदत्त जाल मारकर सब सामग्री वहां की लूटकर थैलीमें डाललीं और तनपरके वस्त्रतक न छोड़े जब सबलूटचुका तबखड्ग निकालकर एकएक का शिरकाटनाआरंभकिया उनकेमरेसे बड़ाकोलाहल प्रकटहुआ और दिशाओं में शब्द होनेलगे दैवयोगसे वहीं कहीं समीप में समीररूपा और निद्रावती दोनों चलीजारहींथीं उसकोलाहल को सुनकर वहांआईं और देखाकि प्रहास म्लेच्छोंके शिरकाटरहाहै देखते ही समीररूपाने निद्रावतीसे कहाकि देखो वह प्रहासहैजो अमुक म्लेच्छकी छातीपर बैठाहुआ उसकाशिरकाटताहै यहदेखकर निद्रावती गृद्धबनकर अकस्मातूटी और अपने पंजे में प्रहासको दाबकर लेउड़ी तब प्रहासने पुकारकरकहा कि इस दुर्भगा समीररूपाने मुझको पकड़वायाहै भलादेखतो कैसातुझे ठीकबनाताहूं और इसचांडाली निद्रावती की अबकी नाककहीं काटूंगा निदान निद्रावती तो प्रहासको लेकर आकाशमार्गीहुई और समीररूपा दौड़कर पहिले से महेन्द्रकेपास पहुंची और दण्डवत् करके बोली कि आपकी दासीने प्रहास को पकड़वादियारानीनिद्रावती लेकर आतीहैं यहसुनकर महेन्द्रबहुतप्रसन्न हुआ और समीररूपाको पारितोषिक धनदेकरआज्ञादी कि तू यहींरह जबमैं प्रहासका बधकरलूं तबजाइयो यहआज्ञा पाकर समीररूपा वहींठहररीरही इसअवसरमें निद्रावतीभीआगई और मायासे प्रहासके हाथपैरोंको स्तंभितकरके महेन्द्रके सन्मुखडालदिया और कहा कि यहअपराधी म्रियमान है तब महेन्द्रने

पूछा कि क्यों प्रहासतुझको यहभीयादथा प्रहासबोला कि महा-
राजमेरा इसमें क्याअपराध और दोष है मुझेआपके अद्भुत
ईश्वरने क्योंयहांभेजा है मैं कईवार आपसे कहचुकाहूं कि परमे-
श्वरने मुझेम्लेच्छोंका वधकरनेकी आज्ञादी है महेन्द्रबोला कि
तैंने मुझेपरमेश्वरके कलिकेसन्मुख बहुतलज्जित कियाथा इस
कारणसे अबमैं तेरा और तेरेसाथियोंका शिरकाटकर परमेश्वर
के पासभेजूंगा प्रहासबोला कि जो परमेश्वरने मेरीमृत्यु तेरेहाथ
मेंदीहै तौतू जोचाहेसोकरियोऔर जो तेरीमृत्युमेरेहाथमेंदीहै तौ
मैं तेरावधकरूंगा निदानजो परमेश्वरकी इच्छाहोगी वहीहोगा
महेन्द्रबोला कि अच्छा अबमैं परीक्षाकरताहूं कि हमदोनोंमें से
किसकेहाथमें किसकीमृत्यु है यहकहकर आज्ञादी किहेनिन्द्रा-
वतीइसको नदीकेपारलेचलो मैंभीवहीं आताहूं परंतु निद्रावती
ने जैसेहीचाहा कि प्रहासको लेकरचलूं तैसेही समीररूपानेउठ-
करविनयकी कि जो नदीकेपार यहजायगा तौ वहां और बहु-
रूपिये आकर इसको छुड़ालेजायंगे और फिरइसकाहाथ आना
कठिनहोगा इससे श्रेष्ठयहीहै कि इसका शिरयहीं काटलीजिये
और और अपराधियोंका वहांजाकर बधकीजियेगा महेन्द्रने
इसमंत्रकोस्वीकारकिया और शूलीदेनेवाले चांडालको बुलवा-
या यहदेखकर मायावती जोराजकुंवर रुद्रविक्रमपर मोहितहुई
थी घबराई और चित्तमें कहनेलगी कि प्रहासजो माराजायगा
तो मेराप्राणप्यारा मुझसे अप्रसन्नहोगा यहविचारकर वहतुरंत
महेन्द्रके सन्मुखआई और हाथजोड़करबोली कि महाराजपर-
मेश्वरके कलियहांसे बड़ीलज्जा उठाकरगयेहैं और मदोन्मत्तता
के कारणसे आपने उनकाअर्चनभी अच्छीप्रकारसे नहींकिया
अबआपके प्रतापसे सबशत्रु पकड़गयेहैं इससे अबकीवार पर-
मेश्वरके कलिको फिरबुलाइये और उनकेहाथसे सबकाबधकर-
वाइये ऐसाकरनेसे आपकाबड़ायशहोगा आगे जोइच्छाआपकी

हो सोकीजिये यहसुनकर महेन्द्रने कहा कि तैंने बड़ी श्रेष्ठबात कही और एकपत्र अद्भुत मिथ्या ईश्वरकोलिखा आशय उसका यह था कि हे परमेश्वर मैं आपकासेवक आपके कलिसे बहुत लज्जितहूं क्योंकि कलि यहां आये और अपमान पाकर चले गये मैं उनकी कुछसेवा न करसका अब मैंने उनके शत्रुप्रहास और उसके सबसाथियोंको अच्छीतरह पहिंचानकर पकड़ाहै इससे मेरी विनयहै कि कलि यहां आकर मेरेस्थानको अपने चरणारविन्दोंसे पवित्रकरें और सबशत्रुओंकावध अपनीआंखों से देखकर प्रसन्नहों मुझको विश्वासहै कि मेरी इसप्रार्थनाको आप अंगीकारकरेंगे यह लिखकर महेन्द्रने निद्रावती को ले-जानेके लिये दिया परंतु उसने विनयकिया कि मैं पहिलेगई थी सोमुझे बड़ीलज्जा प्राप्तहुई थी इससे अबकीबार किसी औरको भेजिये और मुझपर कृपारखिये यह सुनकर महेन्द्रने वहपत्र एकदूसरी मान्यम्लेच्छीको दिया जिसका नाम तूर्यमा-याथा और उसे आज्ञादी कि तू जाकर परमेश्वरके कलिको ले-आ यह आज्ञापाकर तूर्यमायाने अपनेको अलंकृतकिया और मायाकृत विमानपर बैठकरचलदी और रत्नाकर पर्वतके निकट जापहुँची यहांपर महाराजशत्रुंजयके बहुरूपिये जिनकीसंख्या एकलाख चौरासी सहस्रथीं उनमेंसे दश बीस अद्भुत मिथ्या ई-श्वरकी सेनामें दोचार दुर्गमें और दशपांच अद्भुतकी सभा में सदैव भेष बदलेहुए बनेरहतेथे निदान उससमय श्लोलसकेपुत्र सुबासने देखा कि एकम्लेच्छी अद्भुतकी सभाकी ओर चली आरहीहै मनमें विचारकिया कि इसको लज्जितकरना चाहिये यह विचारकरके उसने तत्काल अपनास्वरूप चित्रांगदकासा बनाया और तूर्यमायाकीओर चला मायाकृतदेश में हो आनेके कारणसे चित्रांगदको सबप्रतिष्ठित म्लेच्छ और म्लेच्छी पहिं-चानतेथे इससे तूर्यमायाने पूछा कि श्रीकलिजी आप कहांजाते

हैं सुवासबोला कि परमेश्वरके कुछभक्त पर्वतकी कंदराओंमें बैठे हुए परमेश्वरका ध्यानकररहेहैं सो मैं उनको परमेश्वरकी जूंठन देनेजाताहूं इसमेंसे थोड़ासाभी खालेनेसे सौवरसआयु बढ़जाती है यह परमेश्वर की सीतप्रसादी परमदुर्लभ है परमेश्वर नित्य इसको उन्हीं के लिये भेजते हैं जो संसारको छोड़कर उनका ध्यान करतेहैं यहसुनकर तूर्यने प्रार्थनाकी कि इसमें से थोड़ासा मुझेभी दीजिये कि मेरीभी आयुबढ़जाय निदान जब उसने बहुतप्रकार से प्रार्थना की तबसुवास ने अपने पास से थोड़ा सा मिष्टान्न निकालकर उसको दिया उसने बड़ेआदरसे उसेलिया और खाकर मूर्च्छितहोगई तब सुवासने उसके वस्त्रों को टटोला और उनमें से महेन्द्रका भेजाहुआ पत्र निकालकर पढ़ा और फाड़कर फेंकदिया और एकदूसरापत्र लिखकर उसी प्रकार फिरउसके वस्त्रों में बांधदिया और उसका शिरमूंड़कर और मुखकालाकरके चलदिया और अद्भुत की सभाके समीप जाकर अपना स्वरूप प्रहासकासा बनाया और एक कोने में छुपकर खड़ा होगया कि कोई पहिंचान न ले जबतूर्य मायाकी मूर्च्छाजगी वहचकित होकर अद्भुतकी सभामेंआई सुवासभी प्रहास बनाहुआ वहां चलाआया उसम्लेच्छीने जाकर अद्भुत की पूजाकी अद्भुतने उसे बैठनेको आसन दिया और तब उस पत्रको उसने निकालकर अद्भुतके लेखक को दिया उसने उस पत्रको खोलकरपढ़ा और उसमें अद्भुतको दुर्वचन लिखेहुए देखकर उसने चित्रांगदको देदिया कि आपइसको पढ़िये मुझ से पढ़ा नहीं जाता है चित्रांगद उस को पढ़कर बहुत हँसा और तूर्यमायाकी ओर देखा और उसका शिर मुंडित देखकर बोला कि हे रानीतूर्यमाया यहपत्रतुमसे किसीनेबदलकर तुम्हारा शिरमूंड़डाला है अबतुम अपनेमुखसे वर्णनकरो कि महेन्द्र ने तुमको किसप्रयोजनसे भेजा है यह सुनकर तूर्यमाया घबराई

और अपना शिर जो टटोला तोउसको मुड़ाहुआ देखकर रोने लगी और अंतमेंबोली कि श्रीमान्आपको महाराजने बुलाया है प्रहास वहां पकड़ाहुआ आया है यहसुनकर चित्रांगदबोला कि तुम क्या प्रहास प्रहासकहतीहो उसको बहुरूपाचार्य अथवा विश्वछलाचार्यकहो भला वे ऐसे महात्मानहींहैं जोपकड़ेजावें और जो पकड़कर आयेभीहोंगे तो दोचारके शिरकाटके और घरको लूटकर चलेजायँगे ये बातें होहीरहीथीं कि अकस्मात् वाणीहुई कि--अहं प्रहासोस्मि--और सुवासकूदकर अद्भुत के सिंहासनपर आपड़ा और उसम्लेच्छोंके परमेश्वरके एकधौल मारकर और उसकामुकुट उतारकरभागा तबअद्भुतने पुकारकर कहा कि इसअपमान करनेवाले भक्तको लेना यहसुनकर तूर्यमायादौड़ी परंतुसुवासने शीघ्रमूर्च्छाकरचूर्ण उसकी नाकपरमारा कि वहमूर्च्छितहोकर गिरपड़ी लोगउसकोतौ उठानेकोदौड़े और सभासदसब लेनालेनापुकारतेरहे परंतुइसभयसेकि रात्रिकोबहुरूपिये आकर हमसबका शिरकाटडालेंगे किसीने सुवासपर हाथ नहींडाला निदानसुवास उछलकर चित्रांगदके पासगया और उसको अपने वामनेत्रका तिलदिखलाया उसको देखकर चित्रांगदको विश्वासहोगयाकि प्रहासयहीहै औरसुवासने तिलदिखलानेके पीछे चित्रांगदके दोचार उपानहलगाये तबतौ अद्भुत के सबसेवक दौड़े उससमय सुवासनेभी खड्गनिकाललिया और दोचारको घायलकरके दशपांच के शिरकाटडाले जबऊर्ध्वपात किया पांचसातके शिरउडादिये औरजबअधोपातकिया दशपांचके पैरकाटडाले निदानसभामें एककोलाहल मचगया इतनेमें तूर्यमाया चैतन्यहुई और चकितहोगई कि यह कैसाकोलाहल है एक प्रहासतौ वहां है और दूसरेने यहांआकर उपद्रवमचाया है इसी शोचविचारमें उसने निम्बुक अस्त्रलिया और मायाकर के सुवासको मारनेको आगेबढ़ी कि इतनेमें सुवास फांदकर

भागा लोगोंने उसका पीछाकिया जो पासगया उसको खड्गसे घायलकरदिया और आपचपलाकी भांति चमककर क्षणमात्र में वायु वेगसे भागकर दृष्टिकी अवधि से बाहर निकलगया निदान इस उपद्रवके शांतहोनेपर चित्रांगद ने तूर्यमाया से कहा कि तुमने प्रहासको देखा अबजाकर मायाकृत देशाधिपसे सबवृत्तांतकह देना मेराजाना वहां किसीप्रकारसे न होगा यहां घरबैठे तो जूतियां पड़ती हैं और प्राणबचाना कठिन है वहां जाकर क्या अपने प्राणदूंगा निदान तूर्यमाया यहांसे बिदा होकर चली और महेन्द्रके पास आई उससमय उसका शरीर थर्रारहाथा महेन्द्र और उसके साथियों ने उसकी यहदशा और शिर मुंडाहुआ देखकर समझा कि इसपर कोई दुख पड़ा है और पूछा कि कहो कुशलतो है तुम्हारा चित्त विचित्त क्यों है वह बोली प्रहास मेरे साथ साथ परमेश्वरकी सभा तक गया मार्गमें मेराशिर उसने मूंड़ा और परमेश्वरका मुकुट उतारलिया और कालिके जूतेमारे सो कालिने कहाहै कि अब मेराआना नहीं होगा यह सुनकर महेन्द्रने कहा कि वह प्रहास जो यहां कैदहै उसको लाओ जबवह आया महेन्द्रने उससे पूछाकि सत्यबता तू कौनहै प्रहास समझगया कि किसीने तूर्यमाया का शिरमूंड़ कर तेरे प्रहासही होनेमें शंकाडालदी है और यह समझकर बोला कि महाराज मैं एक दीन दुखी आपकी प्रजामेंसेहूं नदी के तटपरखड़ाथा कि दोस्त्रियांपहुंचीं और मुझे मारनेलगीं और बोलीं कि तू प्रहासहै और फिर मेरे मुखपर कुछ रंग लगाकर मुझे बांधलिया और यहांलेआईं और मार्गमें धमकाती आईं कि अरे जो तू अपना नाम प्रहास न बतावैगा तो तुझको हम मारडालेंगी यह सुनकर महेन्द्र अग्निरूपहोगया और बोला कि उस चांडाली समीररूपाको बुलाओ और क्योंरी निद्रावती तूने कैसे प्रहासको पकड़ाहै वह बोली कि महाराज मैं आपके

लवणकी शपथकरके कहतीहूं कि मैंने इसको उससमय पकड़ा था जब यह सभामें म्लेच्छोंके शिरकाटरहाथा यहसुनकर तूर्य-माया बोली कि अरी बैठ झूठके सेतुमतरचै भला जो तुम प्र-हासको पकड़लेती तो मेरे साथ कौन जाता जोमैं झूठभी कहूं तो परमेश्वरतो झूठ न बोलेंगे उन्होंने और कलिने अपनी आंखसेदेखा और दशपांचमनुष्य मारेभागये यहसुनकर महेन्द्र ने कहा कि अरी तूर्यमाया तू सत्यकहतीहै परमेश्वर भला कैसे झूंठ बोलेंगे यह इन्हीं दोनों समीररूपा और निद्रावतीका रचा हुआ कर्महै यह कहकर उसने कुछ मायाकी कि प्रहास मुक्तहो-गया और आज्ञादी कि इस दुखीको बारहसहस्र रुपये देकर जानेदो इसअवसरमें समीररूपा वहांआई प्रहासने समझा कि यह कोई उपाधि उठावैगी इससे महेन्द्र दंडवत्करके चलदिया मार्गमें म्लेच्छ रुपये लेकर आये प्रहासने उनको लेकर थैली में डाललिया और इधर समीररूपाने महेन्द्रसे कहा कि प्रहास को विना अद्भुत जालकी पुस्तक देखे नछोड़ियेगा यह सुनकर महेन्द्रने अद्भुतजाल निकालकरदेखा और उससे उसको विदित हुआ कि यही प्रहासथा जिसको तैंने छोड़ दियाहै इधर प्रहास बागके द्वारपर जब पहुंचा देखा कि कई म्लेच्छ महेन्द्रके वस्त्रों की गठरी लिये बैठेहैं उसने कहा कि महाराज गठरी वस्त्रों की मांगतेहैं उन्होंने गठरीदेदी और प्रहास उसको लेकरआगे बढ़ा था कि महेन्द्रने पुकारकर कहाकि लेनाइसको जाने नपावै म्ले-च्छ यह सुनकर उसकेपीछे दौड़े परंतु वह मरुतदत्त वस्त्र ओढ़ कर अदृश्य होगया और म्लेच्छ उसको ढूंढ़कर फिर आयेकहीं उसकाखोजनलगा उससमय महेन्द्रनेक्रोधकरके एक अस्त्रमाया करके पृथ्वीपरमारा और आप उठकर खड़ाहोगया उसीसमय सहस्रोंतारे चमकनेलगे और म्लेच्छ सूर्य और चन्द्रमाबनकर पक्षियोंकी भांति प्रहासको ढूंढ़नेचले और उससमय सबनेदेखा

कि महेन्द्रकास्वरूप औरही होगया और वह कड़ककर पृथ्वीपर उतरा और एक आसनपर बैठगया क्या स्वरूप उसका उस समय होगयाथा कि कृष्णवर्ण पुष्टबाहु किशोर अवस्था मुकुट धारणकिये उत्तम वस्त्र पहिरे मुक्ताओंकी माला गलेमें पड़ी डुपट्टा अनमोल धारण किये परम शोभायमान था उससमय मायाकृत सहस्रों घंटे और २ बाजे बजनेलगे और सबको विदितहुआ कि आज महेन्द्र मायाकृत दर्पणमेंसे निकलकर बाहर आसनपर आसीनहै आजतक उसका स्वरूप किसीने न देखाथा इससे सहस्रों म्लेच्छ दौड़े और वहांआ आकर उसकी पूजा करनेलगे और क्षणमात्रमें वहां सुवर्ण और रत्नोंकेढेर होगये उससमय प्रहासनेभी सुना कि म्लेच्छ जाजाकर सुवर्ण और रत्न महेन्द्रपर चढ़ाते हैं और बहुतसा धन इकट्ठाहुआहै निदान सुनतेही उसके मुखमें पानी भरआया और मनमेंकहने लगा कि छिपे कबतक रहोगे चलोभी यातौ मायादेशाधिप को मारो अथवा अपनेही प्राणदो यह विचारकर प्रहासने मरुतदत्त वस्त्र उतारलिया और प्रकट होकर चला महेन्द्रने उसे आतेहुए देखकर कहा कि देखो प्रहास आताहै कितना निर्भय छली है यह सुनकर म्लेच्छ बोले कि उसकी क्यासामर्थ्य है जो यहांआवै महेन्द्र बोला कि तुमसब चैतन्यरहो वह इस धनको लेने आवैगा इस अवसरमें प्रहासने वहां पहुंचकर उस रत्न और सुवर्णके ढेरपर जालमारा महेन्द्रने कहा देखो वहलेगया म्लेच्छ उसके पीछेदौड़े परंतु प्रहास फिर अदृश्य होगया उसी समय एक मायाकृत हस्त एकपत्र लेकर प्रकटहुआ उसको लेकर जो देखातौ मालूम हुआ कि अद्भुत परमेश्वरका भेजा हुआ पत्रथा उसमें लिखाथा कि हे महेन्द्र तैंने न किसीको हमारी सहायताके लिये भेजा न आपआया और हमारे कलिको वहां बुलाकर प्रहासके हाथसे उसका अपमान कराया अबजो

प्रहास पकड़ाजावे तो उसका शिरकाटकर शीघ्र मेरेपास भेजना और किसी औरको भेजो जो यहां आकर शत्रुंजयका विध्वंस न करे यहपढ़कर महेन्द्रने कहा कि निस्संदेह परमेश्वरके कलिका बड़ा अपमान हुआहै अच्छा में प्रहास को पकड़कर वहीं भेजेदेताहूं कि कलि उसका वध अपने हाथसे करके प्रसन्न हों यह कहकर महेन्द्रने अपने शिरपर हाथफेरा फेरतेही प्रहासकी ग्रीवा और कटिमें एक बन्धन धूमकासा पड़गया प्रहास ने अनुमान किया कि हम अब कैदहोगये अच्छा चलो जो कुछ श्री विष्णुभगवान् की इच्छाहोगी वहहोगा यह अनुमान करके वह एकओरको चला परंतुदेखा कि उधर केवल अंधकारहै तब दूसरीओर को फिरा उधरभी अंधकारपाया तबतीसरीओर को चला उधर कुछ सुझाई न पड़ा तब चौथी ओर को मुड़ा जिधर महेन्द्रथा और देखा कि उधर उजेला है और मार्ग दिखाईदेताहै तबतो प्रहास वहीं ठहररहा कि में कहीं न जाऊंगा उससमय उसनेदेखा कि कोई मुझको ढकेलताहुआ लियेजाता है उस समय प्रहास गिरता पड़ताहुआ श्रीविष्णु भगवान्का स्मरणकरताहुआचला और कहताथा कि हेदीनानाथ तेरेसिवाय मेरा कोई मित्र यहां नहींहै ॥

श्लोक। त्वमेवमाताचपितात्वमेव त्वमेवबन्धुश्चसखात्वमेव।
त्वमेवविद्याचगुरुस्त्वमेव त्वमेवशरणंममदेवदेव ॥

निदान प्रहास महेन्द्रके सन्मुख पहुंचा देखतेही महेन्द्र उससे कहनेलगा कि अरेमहाछली तू बहुतदिनोंतकउड़ाहुआफिरा रानीनिशाकरीको तैंने बहकाया और बड़े २ मायावीम्लेच्छोंको मारा अबभी कोई प्रपंच तुझेयादहै प्रहासबोला कि महाराज मेरा अपराध क्षमाकीजिये ॥

दो०। क्षमापात्र यद्यपि नहीं है प्रभु म्लेच्छाधीश।
तद्यपिनिजगुणअनुसरहुकरहुकृपामहिईश ॥

परंतु महेन्द्रने उसकी एक प्रार्थना न सुनी और अद्भुतजाल की पुस्तक निकाली कि देखूं यहप्रहासही है या नहीं अबकी भी धोखा तो नहींहै निदान उसपुस्तकमें निकला कि यहप्रहासहीहै इसकीबातोंमेंनआना और न इसकेछलमें पड़नाइसकारखनाअच्छानहींहै क्योंकि इसकीमृत्यु तेरेहाथसेनहींहै कुछनकुछ छलकर के छूटजायगा इससे उचितहै कि इसकेवधका कोईउपाय विचार और बखेड़ेकोमिटा निदान उसपुस्तकसे उक्तआज्ञापाकर महेन्द्र ने तुरंत एकमायासे विमान बनाया और उसपर प्रहासको बैठा कर अपने दो सेवकोंको जिनकानाम वेष्टन और परिवेष्टनथा आज्ञादी कि तुमसाथ सहस्रसेना लेकर परमेश्वरके पासजाओ और उनके शत्रुओंका विध्वंसनकरो और अपनेसाथ प्रहास को लेतेजाओवे जिसप्रकारसे उचित समझेंगे इसका वधकरेंगे तुम इसकेवध और शत्रुंजयकी पराजयका वृत्तांत हमको लिखकर भेजदेना जिससे निशाकरीआदि और शत्रु जो पकड़े गयेहैं उनको मैं मारूं और सबकानाम संसारसे मिटादूं यह आज्ञापाकर वेदोनों बाहर चलेआये औरसाथ सहस्रम्लेच्छों को चलनेकी तय्यारी करनेकी आज्ञादी उससमय तय्यारीहोने लगी और अनेकप्रकारके वाद्यबजनेलगे उससमय मायावतीने जो राजपुत्र इंद्रविक्रमपर मोहितथी विचारकिया कि यदि इससेनासे वैष्णवी सेना पराजितहुई और मेरे प्राणप्यारे पर कोई संकटआपड़ा तो मुझको उसके दर्शनभी न मिलेंगे इससे उचितहै कि मैंभी इससेनाकेसाथजाऊं और अपने प्राणप्यारेके दर्शनकरआऊं यहविचारकर उसने दोनोंहाथ जोड़कर महेन्द्र से विनयकी कि जो आपकी आज्ञाहो तो मैं भी जाकर परमेश्वरके दर्शन करआऊं यह सुनकर महेन्द्रने उसेभी जानेकी आज्ञादी इसकेउपरांत उस कृष्णपुरुषके शरीरमें जोआसनपर बैठकर आज्ञादेरहाथा अकस्मात् अग्नि लगगई और वह

जलकर अदृश्यहोगया तबतौ सहस्रोंघंटे अपनेआप बजनेलगे और यहवाणी अंतरिक्षसे आई कि महाराज मायाकृत दर्पणमें चलेगये महाराज आप न थे किंतु वह महाराजका प्रतिरूपथा केवल प्रबन्धकरनेभरको आयाथा निदान जब मायाकृत देशाधिप मायाकृतदर्पणमें प्रवेशकरगया और सभा विसर्जनहोगई तबम्लेच्छ अपने २ स्थानोंपरगये और मायावतीभी अपनेघर आई और चलनेकी तय्यारी करनेलगी और साथलेचलने को चालीसदासियां परमसुंदरीछांटीं और अपनेकोभी रत्नोंसेअलंकृतकिया और उत्तमोत्तमवस्त्रोंको धारणकरके हाथोंपैरोंमें मेहँदी लगाई और दांतोंमें मिस्सी लगाकर पानकी लालीजमाई॥

चौ०। अधरलालअतिशयमनमोहैं। उदिततीजशशिदुइजनुसोहैं॥
चमकतअतिसमदशनसँभारे। जनुमुख मंदिर राजततारे॥
देखतजाहि ध्यानमुनि त्यागें। सुरनरसकल पेखिअनुरागें॥
ताकन भापन ताकत ताके। उपजहि परमप्रेम नहिं काके॥

निदान इसप्रकारकी सजधजसे अपनेको अलंकृतकरके वह मायाकृत विमानपरचढ़ी और बड़ीधूमधामसेचली उसकी सुंदरताको देखकर कोई प्राणी ऐसा न था जो मोहित न होजाय॥

चौ०। कहाकहों ताकी छबिशोभा। रतिहूको मनजोलखिलोभा॥
आगे आगे संग सहेली। चलीजाति सुंदर अलबेली॥

दो०। छुटी न शिशुताकीझलक झलक्यो यौवनअंग।
दीपति देहदुहूँनमिल दिपति ताफता रंग॥

और इसप्रकार से अपना विमान चलाया कि जो म्लेच्छ प्रहासको लेकर आनेवालेथे वे चलेभी न थे कि यहआकरपहिलेसे वहांपहुंचगई और वेम्रन और परिवेष्ठनभी प्रहास और साठसहस्र सेनाकोलेकर बड़ीधूमधामसे बाजेबजाते और मायाकृत चमत्कार दिखातेहुएचले॥

जयकरीछंद। उरग अनेकनपै असवार। कंठपड़े नागनिके हार॥
गदामुशल पट्टिशतरवार। लीन्हें अस्त्र अनेकप्रकार॥

भल्लचर्म धनुशायकहात। करमें उग्र त्रिशूलविभात॥
चलेजातगहि मगआकाश। मायावलकोकरतप्रकाश॥
सवलउग्र योधा अतिचंड। लीलन चहतमनहुंब्रह्मंड॥

इधर मायावती अपनेमनसे बातेंकरतीथी कभीरोतीथी और कभी हंसतीथी चित्तउसका डामाडोलथा मनमें खटकालगाथा कि देखिये इसप्रेमका परिणाम क्या होताहै प्राणजातेहैं अथवा प्राणप्यारा मिलताहै निदान इसीप्रकारसे मार्गमें विश्रामकरती हुई म्लेच्छोंकेसाथ आपत्तिमेंपैरधरतीहुई मायाकृतदेशके बाहिर आई और अधिकम्लानचित्त होगई मनमें प्राणप्यारेको देखने की धुनिसमाई बुद्धिनेप्रेरणाकी कि एकाकीचलकर अपनेप्रियको देखिये सबकेसाथजाना अच्छानहींहै गुप्तप्रेमतेराप्रकटहोजायगा और उसका हाल सबको विदित होजायगा यह शोचकर वेष्ठन से कहा कि तुम्हारे साथ बखेड़ा बहुतहै मैं आगे चलकर परमेश्वरको तुम्हारे आनेका संदेशा पहुँचातीहूं यहकहके वहअपने बिमानको आगे बढ़ाकर चली और दासियों को भी आज्ञादी कि तुमभी पीछे आओ जब परमेश्वरकी सभामें मैं पहुंचजाऊंगी तब तुमको बुलवालूंगी यहसुनकर दासियां ठहरगईं और वह आगे बढ़ी और जब अकेली होगई तब उसका भ्रमररूपी चित्त कुसुमरूपी प्राण प्यारे के दर्शनों की लालसा में अधीर्य होगया और वह उसको न सहकर विरह विलाप करती हुई रसके पद पढ़ने लगी॥

क०। कोमल शरीर सब रोम उठिआये शुचि सोमसे वदनतम तुमहिं चितौतिहौं। ऊरध उसास प्रति सांसत उदास अति आंसुनतें आंसभरी आंखिनि रितौतिहौं॥ बकति बितन व्यथा वेदन विरह भरी बात एक तेरे हित हेतकी हितौतिहौं। हे हेप्राण नाथ प्राणप्यारे विरह तेरेमें बिलखि बिलखि निशि बासर चितौतिहौं॥

स०। बाहर जाऊं तौ बाहरही घरआऊंतौ आवत संग लगेही। भौन के कोनमें बैठि रहौं प्रिय बैठिरह्यो हियमें पहिलेहीं॥ नींदहूमें नकवानी

करै छिनहीं छिन आवतहे सपनेही। सोवत जागत रैन दिना मनमोहन सोहन चैन न देही॥

निदान इसप्रकारसे विरहाग्निसे व्याकुल वह मायावती महाराज शत्रुंजयकी सेनाके समीप पहुंची और एक ऊंचेस्थानपर स्थित होकर अपने प्राणप्यारेको दृष्टिसे ढूंढ़नेलगी परंतु वह राजपुत्र रुद्रविक्रम उससमय सभामें महाराज शत्रुंजयके पास बैठाथा इससे मायावतीको उसका कुछ पता न मिला और मायावतीको यहभी डरथा कि ऐसा न हो कि कोई बहुरूपिया वैष्णवीसेना का आयजाय और तुझको म्लेच्छी समझकर तेरीभी वही गति न करै जो निद्रावती और तूर्यमायाकी कीथी और लज्जित करै अथवा मारडाले तौभी अच्छा नहीं है यह विचार करके वह अद्भुतकी सेनाकी ओर चलीगई वह मिथ्या ईश्वर ईश्वरीय सिंहासनपर बैठाथा कि अकस्मात् सुनहले रंग का बादल प्रकट हुआ और सुनहरे फूलोंकी वर्षाहुई यह देख कर चित्रांगद बोला कि परमेश्वर आपका कोई मुख्यसेवक आताहै बताइयेतो कि आपने क्या होतव्य रचीहै अद्भुत बोला कि हमारी मायामें किसीको कुछ शंका करना अथवा पूछना ताछना उचित नहीं है जोकोई होगा आप सामने आजायगा निदान येबातें होहीरहीथीं कि वह बादलफटा और उसमेंसे मायावती का विमान निकलकर उतरा चित्रांगद उसे देखकर उठकर खड़ा होगया और उसका सत्कारकिया और उसने आगे बढ़ कर चित्रांगदको नमस्कारकरके अद्भुतको साष्टांग दंडवत्की और उसकी पूजनकरके हाथजोड़कर बोली कि महाराज महेन्द्रने दो म्लेच्छ बड़ेमायावी साठसहस्र सेनालेकर शत्रुंजयसे युद्ध करनेके लिये भेजेहैं और वे दोनों प्रहासकोभी पकड़कर लायेहैं यहसुनतेही अद्भुतने घमंडसा मानकर अपने मुकुटको कुछ टेढ़ासा करलिया और बोला कि हे मेरेसेवको तुमने मेरी

मायाकोदेखा और उधरचित्रांगदभी सँभलकर बैठा और बोला कि हे रानी तुम्हारेदर्शनोंको मेरीआंखें तरसतीथीं अच्छा अब चलिये मैं और आप चलकर इनमहेन्द्रके भेजेहुए म्लेच्छोंको लिवालावें वह बोली कि आप क्योंश्रम उठातेहैं मैंजाकर सबको लिवायेलातीहूं यह बहानाकरके वह दूसरीबार फिर अपनेप्राण-प्यारेको देखनेकोचली और उसके जानेकेपीछे चित्रांगदने अद्भुत से कहा कि हे परमेश्वर इससमय मैं और आप अकेलेहैं मुझे अपने रचेहुए भविष्यको बताइये कि प्रहास जो पकड़ाहुआ आ-नाहै उसके प्रारब्धमें आपने मरनालिखाहै अथवा नहीं वह बोला कि नब्बेसहस्रवर्ष पहिलेसे मैंने उसकी प्रारब्धमें लिखदियाहै कि जब वह मायाकृतदेशसे पकड़ाहुआ आवैगा तब माराजायगा निदान यहांतो उस मिथ्याईश्वर और उसके मिथ्याकलिसे उक्त प्रकारकीबातें होतीरहीं और उधर मायावती फिर वैष्णवीसेना की ओरगई परंतु बहुरूपियोंके भयसे सेनाके भीतर न जासकी और चारोंओरको दृष्टिकरकरके अपने प्राणप्यारेको देखतीथी और अपने चित्तमें कहतीजातीथी कि कब वह धन्य समयहोगा जबमैं उसके प्रियदर्शन पाऊंगी निदान चारोंओर बहुतप्रकार से देखा परंतु उसका स्वरूप उसको कहीं दृष्टि न पड़ा तब निरा-श होकर चेष्ठनके समीप चलीगई और उससे कहा कि परमे-श्वरकी आज्ञाहै कि शीघ्र प्रहासकोलेकरचलो यह सुनकर सब म्लेच्छ शीघ्रतासे चले और जब रत्नाकर पर्वतके दुर्गके निकट पहुंचे तब राजामहावीरने बढ़कर उनकी आगौनीकी और म्ले-च्छोंकी सेनाको उत्तमस्थानपर उतरवादिया डेरे और सभाके तम्बू खड़ेकियेगये और उनके सामने हाटें लगवादीगईं और सेनाका आगमन सूचित करनेवाले वाद्य बजनेलगे उससमय वैष्णवी सेनाके बहुरूपिये भेष बदलबदलकर सबहाल वहांका लेनेको आये कुछतो म्लेच्छोंकी सेनामें ठहरगये और थोड़ेसे

दुर्गके भीतर चलेगये परंतु वेष्ठन और परिवेष्ठन प्रहासको ले-
कर अद्भुतके सन्मुख आये और उसकी पूजनकी वहां उनको
बैठनेको उत्तम आसन मिले और वे उनपर बैठगये उससमय
अद्भुतने प्रहाससे कहा कि क्योंरे मेरा अपमान करनेवाले और
मेरी भक्तिसे हीन नष्टजन अब बता कि तुझको किसदुर्गति के
साथ मारूं प्रहास बोला कि आपतो परमेश्वरहैं सब जानतेहैं
बताइये मेरा क्या अपराधहै आपने मुझे वह शक्तिदीहै कि मैंने
आपहीकी डाढ़ी अपने पेशाबसे मूड़ीहै आजभी आपने कुछ
ऐसाही भविष्य रचाहोगा वही चरित्र फिर हुआ चाहताहै यह
बातें सुनकर अद्भुत क्रोधितहोगया और चित्रांगदने कहा कि हे
परमेश्वर अबवही प्रारब्ध इसकारचिये जो अभीआपने मुझसे
कहाथा यहसुनकर प्रहासने चित्रांगदकी ओरघूरकर कहा कि
क्योंजी क्यातुम मुझको नहीं जनतेहो कि मैं कौनहूं अहंप्रहा-
सोस्मि जोमेरेसामने ऐसी बातेंबनातेहो अच्छा समझाजायगा
यहसुनकर चित्रांगद घबरागया और गिरद फिरनेलगा और
पुकारकरबोला कि हे बहुरूपाचार्य सत्यमार्गगामी मैं इसबर्णसं-
कर ईश्वर विमुखअद्भुतसे बहुतप्रकारसे कहताहूं कि नास्तिक
और म्लेच्छों की डाढ़ीउखाड़नेवाले को कष्ट न पहुंचै परंतु यह
नष्टबुद्धि नहीं मानताहै इससे यह आपही अपने दण्डकोपहुं-
चैगा यहसुनकर अद्भुतबोला कि अरेबर्णसंकर तू क्याबकरहाहै
चित्रांगदबोला कि मैं सत्यकहताहूं कि श्रीसर्वोपमायोग्य हमारे
त्राणकारक राजाओंके महाराजा श्रीप्रहासजीको तू प्रतिष्ठापूर्व-
कछोड़दे नहीं तो शिरमुंड़ैगा उपानहपड़ेंगे और नाककटैगी यह
सुनकर अद्भुत क्रोधमें भरगया और आज्ञादी कि शीघ्रचांडा-
लकोबुलाओऔरइसकठोरभाषी चित्रांगदकोभी शूलीदिलाओ
तबचित्रांगद बोला कि मैं सत्यकहताहूं जो आपने मुझेकलि
बनाया है तो मैं ऐसेहीकहूंगा नहींतो यह आपकी कुमार्गकी

मालामौजूद है इसेलेकर किसी और को पहिराकर उसकोकलि-
युगबनाइये तबअद्भुतने चित्रांगदको छोड़दिया और प्रहासका
बधकरनेकीआज्ञादी उसीसमय शूलीदेनेवालाआया और प्रहा-
सको शूलीदेनेके स्थानमें लेगया रत्नाकरपर्वतके सामने जोबनहै
उसीमें यहस्थान बनाहै वहांशूली गाड़ीगई और शूलीदेनेवाले
खड्गलियेहुए खड़ेहोगये और फिरनेलगे अद्भुतकी सबसेनात-
य्यारहुई एकओर वेष्ठनके साठसहस्र म्लेच्छ तय्यारहोकरख-
ड़ेहोगये दूसरीओर अश्वसादी भल्लादिक अस्त्रलियेहुए ठहरे
तीसरीओर पदादी खड्गआदि अनेकअस्त्र धारणकियेहुए उप-
स्थितहुए और बड़े २ बाणैतभी धनुषोंमें बाणोंकोयोजितकरके
सन्नद्धहोगये कि यदि कोई प्रहासका रक्षकआवे तो बचकर न
जानेपावे उससमय प्रहासकी दशादेखकर सब किलेकेस्त्री और
पुरुष हँसतेथे परंतु जोबुद्धिमान् और चतुरथे वे कहतेथे कि यह
प्रहास शत्रुंजयको प्राण के सदृश प्याराहै और वह है जिसने
संसारके मायावीम्लेच्छ और असुरोंका बधकरके अपनेकोछल-
विद्याचार्य बनायाहै परंतु देखो आज वहभी बेवश है न कोईउस
का मित्रहै न सहायक दूसरेकहतेथे कि भाई इसीपर क्याहै इस
संसारचक्रने बड़े २ नामियोंको अपमान के साथ बधकराया है
और सहस्रों थोड़ी थोड़ी बयके शूरवीरों को उनकी सबआशा-
ओं सहित विनाशाहै देखिये आज न रावणहै न कुंभकर्ण है
और न भीम है न अर्जुन है यह संसार केवल एक स्वप्न का-
सा चमत्कार है जो यहांआया कैसाही क्योंनहो एकदिन बिना
मरे नहींबचा॥

क०। बलि विक्रम वेणु दधीचिगये भौगये पारथ जिन भारतठाना।
बालिगये बलरूपगये जिनकी कखरी दशकंठ दबाना॥ गये दुर्योधनजंग
जुरे जिन चौंसठकोसमें छत्रविताना। धराकोप्रमाण यहीतुलसी जोफरा
सोझरा जोबरा सोबुताना१ झूठसों बध्योहै जालताहीतेग्रसतकाल काल

विकालव्याल सबहीको खातहै। नदीको प्रवाह चल्योजातहै समुद्रमाहँ जैसे जगकालहीके सुखमें समातहै ॥ देहतौ ममत्वताते कालभयमानत है ज्ञानउपजेते वह कालहू बिलातहै। सुंदरकहत परब्रह्महै सदाअखण्ड पादि मध्यअंतहीन सोही रहिजातहै २ ॥

निदान चारोंओर कोलाहल मचाथा छोटे और बड़े सब वहां मौजूदथे और एक ओर मायावती भी अपनी दासियों सहित खड़ीथी परंतु अपनेको धिक्कार देरहीथी कि तू इसहिंसा-कर्ममें निष्प्रयोजन साथीहुई यदि तू यहां मायाकृतदेशसे न आती तो यहबुराई न उठाती अब प्राणप्यारेसे लज्जित होगी किंतु एक प्रलयहोगी वह यही शोचरहीथी कि अद्भुत हाथीपर सवार होकर निकला और शूली देनेवालों ने प्रहासको शूलके नीचे बैठाया और अद्भुतके सन्मुख आकर पूछनेलगे कि हे पर-मेश्वर इस अपराधीके विषयमें क्या आज्ञाहै वह गिड़गिड़ाकर बोला कि लाख आज्ञाओंकी एक आज्ञा यहीहै कि इस अपरा-धीका शिर शीघ्र काटकर लेआओ यह सुनकर शूली देनेवाले प्रहासके पासआये और बोले कि अरे अपराधी जो कुछतुझे खानाहो सोखाले पीनाहो सो पीले और कहनाहोसो कहले अब तेरी आयु पूर्णहुई क्षणमात्रमें तू यहांसे चलकरयमलोकमें पहुं-चेगा यहसुनकर प्रहासने उसेतो कुछ उत्तर नहींदिया परंतु अप-ने चित्तको परमेश्वरमें लगाकर एकाग्रकिया और विनयकी कि हे विष्णुभगवान् तू सबकीगतिहै तेरानाम दीनानाथ है करुणा-सिंधुभी तुही है भक्तोंका रक्षाकरनेवाला तेरे समान कौन है तू सर्वव्यापी है मुझको बरदान तैंनेदिया था कि जब तू तीनबार अपने मुखसे मृत्यु मांगेगा तब तू मरैगा सो आजमें शत्रुओं के बीचमें इसप्रकारसे बँधाहूं तेरेसिवाय न कोई मेरा मित्रहै न सहायकहै इससे हे कृपाल हे दयाल हे सर्वव्यापी हे अंतरात्मा अपने इसदीन और दुखीभक्त की रक्षाकरो और इन नास्तिक

और म्लेच्छों के हाथसे अपने भक्तके प्राणों को बचाओ ॥

दो०। नहिं असाध्य तुमसों कछू तुमसम नहिं कोउ आन।
पाय कृपाहों रावरी हरे म्लेच्छगण प्रान ॥
जापर नाथ कृपा करहु ताहि न कछू अलभ्य।
करतल होत पदार्थ सब नशत घोर भवतव्य ॥
महि दिवआदिक लोकसब रचत तुमहिं भगवान।
कृपा रावरी अब करहु रक्षहु हमरे प्रान ॥

उक्तप्रकारकी प्रार्थना सुनकर श्रीविष्णुभगवानकी कृपा उसी समय सूचितहुई अर्थात् जो बैष्णवी सेनाके बहुरूपिये भेषबदलकर वहांका वृत्तांत लेनेआयेथे वे सब उसहालको देखकर गिरते पड़तेहुएदौड़े और भास्करीसभामें जाकर विनयपूर्वक महाराजा धिराजसे बोले हे श्रीमहाराजाधिराज सन्मार्ग प्रवर्त्तक सर्व पाखंडोन्मूलक ॥

दो०। धर्मिष्ठ न्यायी यशी तुमसम नहिं जगआन।
दिनमणिसमयश धवलकी कोकरिसकतबखान ॥
वीरनिमें अतिवीर तुम तुमसम नहिं कोउवीर।
जगअपने वशकरलियो जीति जीति नृपभीर ॥

आजकुछ मायावीम्लेच्छ प्रहासको मायाकृतदेशसे पकड़कर लायेहैं और अद्भुत मिथ्याईश्वर उनको शूलीदेकर उनकेशरीर का अंतकरना चाहताहै यहसुनतेही महाराजा धिराजने महाराज शत्रुंजयकी ओर देखा और देखनेके साथही महाराज शत्रुंजय हाय मेरेसत्यमित्र ऐसाकहकर उठखड़ेहुए उनकेखड़ेहोतेही उनके सबपुत्र और पौत्र और सेनापतिभी खड़ेहोगये और सेना कोसन्नद्धहोनेकी आज्ञादीगई परंतु महाराजशत्रुंजयने किसीकी बाट न देखी सभाके बाहरआतेही सुग्रीवनामीघोड़ेपर सवारहोकर चलदिये और उनकेपीछे इन्द्रविक्रम और पार्थविक्रम और रुद्रविक्रम आदि उनके बेटे और पोते और अरिदमन आदिक सेनापति भी युद्धकरनेकोचले और एकओरसे चतुरंगिनी

सेना रथी हाथी घोड़े और पैदरों सहित युद्धके बाद्यबजातीहुई और गर्जतीहुई चली और बहुरूपियेभी सब अपने सरंजामको लेकर साथहुए उनके पीछे श्रीमहाराजाधिराजभी बहुतसे वशी-भूत राजाओं सहित विमानपर बैठेहुए निकले और कार्तिकेयी भेरी आदि बाद्य बजनेलगे कि उनका शब्द समस्त आकाशमें पूरित होगया॥

जयकरीछंद। रणउत्सवसों भरेअखंड। चलेबीरयोध्य अतिचंड॥
धनुषबाण असिगदाप्रशस्त। आयुधधरेंअनेकसमस्त॥
भरे बीररससों सबबीर। अतिरण दुर्मदअतिरणधीर॥
सतमारग कोकरनप्रवृत्त। चलेजात सबयुधउन्मत्त॥

निदान उस शत्रु सेनापर जो प्रहासको शूली देनेके लिये अद्भुतने नियत कीथी उसपर प्रथम महाराज शत्रुंजय खड्ग खींचकरचले और अहं शत्रुंजयोस्मि ऐसाशब्द सबको सुना कर सेनामें घुसगये और म्लेच्छोंका बध करनेलगे उससमय शत्रुंजयका नाम सुनतेही सबसेनाके योधा भयभीतहोगये और चित्रांगद तो विष्णोर्जयति विष्णोर्जयति ऐसा पुकारने लगा और अद्भुतसे कहनेलगाकि अरे मिथ्या ईश्वर मैं तुझसे पहिले ही कहताथाकि तू अपनेको परमेश्वर कहना छोड़कर श्रीवैष्णव होजा परंच तैंने मेरीशिक्षा न मानी अबदेख शत्रुंजय तेरी क्या गति करतेहैं और मैंतो प्रथमहीसे श्रीवैष्णवहूं यह देख कर अद्भुतने आज्ञादीकि प्रहासको शीघ्रशूलीदो और राजदूत उस की आज्ञाका पालन करनेको दौड़ेहीथे कि मायावर्तीने छिपकर कुछ ऐसी मायाकी कि सब स्तंभित होगये और कोई आगे न बढ़ सका और महाराज शत्रुंजय शत्रुओंको पशुकी भांति बध करने लगे उस समय वेष्ठन और परिवेष्ठन दोनों मायाकर कर के नारिकेलि आदि अनेक मायाकृत अस्त्रोंका प्रयोग करनेलगे परंतु महाराज शत्रुंजय महामन्त्रसे सब आसुरी मायाको नष्ट

करते हुए और शत्रुओंको मारते हुए बढ़े चले आतेथे इसी अवसरमें इन्द्रविक्रम वहां पहुंचा और गर्जकर बोलाकि॥

तोमर छं०। मम इन्द्रविक्रम नाम। हों इन्द्र सम बल धाम॥
जो भिरत शत्रु महान। तेहि करतहों बिन प्रान॥

और अस्त्रोंकी वर्षा करके बड़े २ वीर म्लेच्छोंको यमधाम में पहुंचानेलगा उसीसमय राजपौत्र रुद्रविक्रमभी आकर गर्जा और बोला॥

तोमर छं०। हों रुद्रविक्रम वीर। नहि तजत रणमें धीर॥
ममबाहुबलअतिघोर। अरिसकत नहिंसहिथोर॥

इसके उपरांत एकके पीछे दूसरा वीर आकर गर्जने लगा और असि युद्ध होनेलगा और उधर अद्भुतकी आज्ञासे नाना देशके म्लेच्छ राजाओंकी सेनाभी प्रहार करनेलगीं और दोनों ओरसे अस्त्र शस्त्र चलनेलगे अकस्मात् दोनोंओरसे घनघोर घटाकी समान सेनाउमड़ी और चपलाकी सदृश अस्त्र शस्त्रोंके गिरनेसे रुंडमुंड कटनेलगे और रुधिररूपी जलकी वर्षा होने लगी और उससे एकनदी बहनिकली जिसमें हाथी और घोड़ों के कटेहुएअंग और रुंडमुंड कूर्ममत्स्य और मकरआदि जीवों की सदृश मालूम होने लगे निदान महाघोर युद्धहोनेलगा कि उसका वर्णन नहीं होसकताहै॥

तोमर छं०। तहं वीर धनु टंकारि। बहु दिव्य अस्त्र प्रहारि॥
अरि सैनमें तेहि काल। भे करत कर्म कराल॥
बहु किये करपग छीन। बहु किये शिशविहीन॥
बहु बधे ग्रीवाछारि। बहु बधे काय विदारि॥
शरवज्रसरिस विचारि। प्रतिभटनिके उरमारि॥
गत प्राण करि पणधारि। भेदेतमहि पै डारि॥
धुनि महाआरत छाय। भगिचले अरिसमुदाय॥
बहु वमत शोणित नीर। तहं खड़े पूरित पीर॥
तहं धीर योधा पर्म। थिरि कियो जो रण कर्म॥

नहिंजात भाखौ तौन। मनचहत रहिवौ मौन॥
तहं रुद्र विक्रम वीर। अरु पार्थ विक्रम धीर॥
गज वाजि सुभट समूह। भे वधत तजि शरजूह॥

उस समय मायावती अपनी दासियों को लेकर एकांतमें जा खड़ीहुई और म्लेच्छोंपर माया करनेलगी जिससे उनम्लेच्छों की कीहुई माया उसके प्राणप्यारे राजपुत्र रुद्र विक्रम और उसकी सेनापर न चलसके निदान इसकारणसे जोकोईम्लेच्छ राजपुत्र रुद्र विक्रमके सन्मुख जाताथा वह जीता न बचताथा उधर वैष्णवी सेनाके बहुरूपियोंने आपस में मंत्रकिया कि हमारी सेनामें सिवाय महाराज शत्रुंजयके और कोई ऐसानहीं है जोम्लेच्छोंकी कीहुई मायाको नष्टकरे इससे ऐसानहो किहमारी सेनाके योधामायामें फंसकर पकड़ेजावें चलो हमसब भी युद्ध करनेचलें यहमंत्रकरके एकलक्ष और अस्सी सहस्र बहुरूपिये अपना २ सब सरंजाम लेकर बाजे बजातेहुए चले और वहां आकर पहुंचे जहां म्लेच्छों की सेनाथी और वे म्लेच्छ मायाकर करके अस्त्र प्रहारकर रहेथे निदान उनबहुरूपियोंने वायुकेवेग की ओरसे अग्नि और धूम प्रकट करनेवाले यंत्रछोड़े और वे एकलक्ष अस्सी सहस्र यंत्र म्लेच्छोंकी सेना में जाकर पड़े उनसे अग्नि धूम ऐसा प्रकटहुआ कि सबम्लेच्छ उससे व्याकुल होकरभागे कोईझुलसगया कोई जलगया किसीके वस्त्रोंमेंआग लगगई और कोई नाकमें धूमजानेसे अचेतहोगया उसीसमय बाणविद्याका परमवेत्ताकृपभी अपने चालीससहस्र धनुषधारियों को लेकरबढ़ा और बाणोंकी वर्षाकरके म्लेच्छोंको मारमारकर गिरानेलगा दैवयोगसे वेष्टन आकाश मार्गसे भागकर चलाथा कि कृपने एकबाण कानतक खींचकर ऐसामारा कि वह उसकेशरीरके पार होगया और वह कलामुंडी खाताहुआ पृथ्वीपर गिर पड़ा और मरगया उसके मरतेही महाकोलाहल मचगया और

प्रहास उसकीमायासे मुक्तहोगया उधरयोद्धाभी लड़तेभिड़तेहुए प्रहासके निकट जापहुंचेथे उन्होंने प्रहासकी हथकड़ी और बेड़ी काटदीं और प्रहास घबराकर खड़ाहोगया और फलांगमारकर अद्भुत के सिंहासनपर जापहुंचा और अद्भुतके शिरमें एकधौल बड़ेबलसेलगाकर उसकामुकुट उतारलिया उससमय चित्रांगद बोला कि लीजिये यहमाल आपहीकाहै और अपनीमुद्रा और कपड़े सब उतारकरदेदिये प्रहासने उसको लेलिया और जिस किसीने उसेपकड़नाचाहा उसको उसनेखड्गसे मारकर यमलोक में पहुँचाया निदान जबमायावीम्लेच्छोंकी पराजयहुई औरपरिवेष्ठनआदि कुछम्लेच्छजीते बचकर भागगये उससमय वैष्णवी सेनामें जयकारे का बड़ाभारी शब्दहुआ प्रहास भी उससमय लड़ताहुआ महाराजशत्रुंजयके समीप पहुंचा और उनके चरणारविंदको अपने माथेसे लगाया तब महाराज घोड़े से उतर पड़े और उन्होंने प्रहासको हृदयसेलगालिया उससमय प्रहास ने विनयकी कि महाराज अभीयुद्धकी विजय नहींहुई है आप घोड़ेपरसवारहूजिये में आपकेसाथहूं यहसुनकर महाराज शत्रुंजय फिर घोड़ेपर सवारहुए और विष्णोर्जयति ऐसाबड़े शब्दसे कहकर शत्रुओंपर प्रहारकरनेलगे तबतो एक अपूर्वही कोलाहल मचगया और बड़ाघोर युद्धहोनेलगा॥

चौ० महाराज शत्रुंजययोधा। अरिसेनाको करि अवरोधा॥
लगेप्रहारनखड्गगरजिके। गिरतशत्रुदल उरभिलरजिके॥
भागन चहैं नमारगपावैं। गिरि २ रुंदि रुंदि प्राणगवांवैं॥
क्षणभरिमें सो दुस्सहसैना। भई पराजितअतिजगजैना॥

इसप्रकारसे जबयुद्धकरते२ महाराज शत्रुंजय अद्भुतके सिंहासनके समीप पहुंचे चित्रांगदने युद्धनिवृत्त करने के बाद्यबज वादिये महाराजका यह नियमथा कि जबयुद्धमें शत्रुशांतिबाद्य बजवाताथा तो यह अनुमानकरके कि शत्रुरक्षा चाहताहै फिर

उससे युद्धनहींकरतेथे निदान जिससमय युद्धशांति बाद्य बजे दोनों ओरकी सेना अपनी अपनीओरको फिरकर चलीं और महाराजभी फिरकर अपने डेरोंकीओरचले और सेनापति उन पर द्रव्यनिछावर करनेलगे उससमय प्रहासने पुकारकर कहा कि भाई इसद्रव्यको क्योंव्यर्थ खोतेहो मैं बहुतदीनहूं मुझेदेदो यहसुनकर महाराज हंसे और बोले कि आपकेलिये और बहुत कुछहै प्रहासबोला कि यह और वहदोनों मिलकर जोमुझेमिल-जाता तौ बहुतअच्छाथा यहकहकर उसने वरुणदत्त जालमारा कि सबधन समिटकर उसमें आगया और लूटनेवालोंको एक कपर्दिकाभी नमिली यद्यपि सबशूरवीर रुधिरमें भरेहुए और श्रमितथे परंतु प्रहासके कारणसे सबहंसते और प्रसन्नहोतेहुए सभामेंआये उससमय प्रहाससबसे यथायोग्य मिला और बड़े उत्तमआसनपर बैठा महाराजाधिराजभी बहुतप्रसन्नहुए और महाराज शत्रुंजय और महाराजाधिराज दोनोंने बहुतसे रत्न मंगवाकर प्रहासकोदिये उससमय प्रहासने सबवृत्तांत जोअब तक मायाकृत देशमेंहुआथा यथावत् वर्णनकरके कहसुनाया उससमय महाराजने बहुरूपियोंके छलप्रयोगोंको सुनकर सबके लिये पृथक् पृथक् पारितोषिक द्रव्यदिया और कहदिया कि हमारी ओरसे यहधन उपहास और चपला आदिको देदेना प्रहास बोला कि मैं उनछोकरोंको धन देकर बिगाडूंगातौनहीं परंतु कहदूंगा कि महाराजने तुम्हेंभी पारितोषिक धनदियाथा उत्सवकेदिनतुमको मिलैगा यहसुनकर महाराज शत्रुंजयआदि सबहंसने लगे तबप्रहासने सबमालथैलीमें रखलिया और कहा कि अबमैं जाताहूं यहसुनकर महाराज आंखोंमें आंशूभरलिये और बोले कि भाईएकदिनतौ ठहरजा प्रहासबोला कि फिरमैं जानसकूंगा इससमयतौ सबम्लेच्छजातेहैं उनके साथ साथ अच्छीप्रकारसे चलाजाऊंगा यहकहकरउठाकि चलकर अपनी

स्त्रीसे मिलआऊं और शत्रुंजयकी रानियोंसेभी मिललूं निदान रनिवासमें गया उसको देखकर सबरनिवास प्रसन्नहुआ और बहुतकुछ उसकोधनदिया और सबने मायाकृत देशकाहालसुना प्रहासकी जोस्त्रियांथीं वेही महाराजकी रानियोंकी मंत्रिणीथीं उन्होंने प्रहासकोघेरा औरकहा कि आप इतनेदिनोंपीछे तौ मायाकृतदेशसेआये और हमारेलिये कुछसौगात नलाये अच्छा जो कुछधन उपार्जन आपनेकियाहै वहतौबताइये और कुछतौ दीजिये प्रहासबोला कि उसमायाकृतदेश में मेराही लाखोंरुपिया खर्चहोगया अबतौ में दीन और महारंकहूं और चाहता हूं कि तुम्हारेआभूषण बेचकर अपनी निर्धनताको मिटाऊं यहसुनकर रनिवासमें बड़ाहास्यहुआ और स्त्रियोंने प्रहासको चारोंओरसे घेरलिया कि हमतौतुमसे कुछ अवश्यलेंगी तब प्रहासने अपनी थैलीमेंसे कुछ झूंठे नग एक आध हरिद्राकी गांठ और दोएक चीमटे निकालकर दिये और कहा कि घरवालियां ऐसी होती हैं कि नदुखको जानतीहैं न निर्धनताको समझतीहैं इनको तौ जहांसे बने तहींसे दो चाहे चोरीकरो पर इनको अवश्यदो यह सुनकर सब हंसने लगीं और प्रहास घबराकर उठखड़ा हुआ कि जो यहां ठहरूंगातौ लुट जाऊंगा और वहांसेउठकर अपनी उस स्त्रीके घर गया जो उसको बहुतप्यारी थी उसने प्रहासको बड़ेआदरसे बैठाया और वहांबैठकर प्रहास अपनी उसस्त्रीसे प्रीतिपूर्वक वार्तालाप औरमद्यपानकरता और करातारहा और उधर जब अद्भुत मिथ्या ईश्वर पराजित और लज्जित होकर अपनी सभामेंआकरबैठा उसकीभागीहुई सेना फिरआई और अपने स्थानमें उतरी उस समय परिवेष्टन मायावी भी थोड़ेसे म्लेच्छोंको साथलेकर जो मरनेसे बचेथे अद्भुतमिथ्या ईश्वरके पास आया और बोला कि हे परमेश्वर अब म्लेच्छोंकी सेना मारीगई सभी बिदाहोताहूं जोकुछ कहिये सो जाकर मायाकृत

देशाधिपसे कहदूं वह बोलाकि तुम महेन्द्रसे कहदेना कि मेरा चित्त तुझसे मिलनेको बहुत चाहताहै परंतु मेरे उत्पन्न किये हुए इन मेरे मनुष्योंने मुझे बहुतही सता रक्खा है इनको मैंने मद्यके आवेशमें उत्पन्न कियाथा और उस समय इनकी मृत्यु लिखना भूलगया इससे ये मुझसे विमुखहैं और मेरी उपासना नहीं करतेहैं इससे काहिदीजियो कि किसी बड़ेबलवान् मायावी को मेरी सहायताके लिये भेजें अबकीवार मैं उस मद्यके आवेशके रचेहुए भविष्य को फेरदूंगा और इन दुष्टों की मृत्युको उत्पन्न करूंगा यह सुनकर चित्रांगदबोला कि हे परमेश्वर आपने प्रहासकी मृत्युभीतो आजहीकी रचीथी सो उसकीतो मृत्यु न हुई और उसके बदले और सहस्रों जीव मारेगये यह कैसा भविष्य आपने रचाथा अद्भुत बोला कि यह सब मेरी माया है जिधर मैंने प्रेरणाकी उधरही चलीगई मैं परमेश्वर हूं तुझको मेरीमाया में बोलना उचित नहींहै यह सुनकर चित्रांगद चुप होरहा और परिवेष्टन विदाहोकर बाहिरनिकला इसी अवसर में मायावती भी आई और अद्भुत मिथ्या ईश्वर से विदाहोकरबाहिर आई उससमय सबमायावी म्लेच्छ अपने २ मायाकृत सर्प और पक्षियोंपर सवारहुए यहभी मायाकृत मयूरपरबैठकर चली और जबवह मयूर आकाशमें पहुंचा तबवैष्णवी सेनाको देखतीहुईचली यहांपरजब प्रहास महलोंमें चलागया तबमहाराजने सभाको विसर्जनकरादिया और सबसभासद उठउठकर अपने२डेरोंमें जाकर विश्रामकरनेलगे और राजपुत्र रुद्रविक्रम भी आकर अपनी सिविरके द्वारपरखड़ाहुआ उससमय इसको उस विरहाग्निसे व्याकुल परमप्रीतिमानरानी मायावतीने देखा देखतेही उसपर रहानगया और अपनीदासियोंसेकहा कि चलकर पर्वतकी गुफामें ठहरो मैं अभी आतीहूं यह आज्ञापाकर दासियां चलीगईं और वह प्रेमकी प्रेरणासे अपने मयूरको फेर

कर आकाशसे रुद्रविक्रमकी सिविरके समीपउतरी और साम-
ने आकर पुकारी कि हे प्राणप्यारे प्रेम करनेका फल यहींहै कि
हमतौ बन बन मारी फिरें और तुमको हमारी सुधभी नआवै॥

क०। तजिके कुलकी कुलकानिसबै तुमसों हमआनिके प्रीति करी। भुवनेश अहो भई हौं सबमें बदनाम सोऊ मनमें नधरी॥ निबहीन सोई अबतौ तुमसों लगी तोरिबे में नहिं एकौ घरी। परमेश्वरही अब जानत हैं कहते न बनै हमपै जो परी॥

यह सुनकर राजपुत्रने जो आंखउठाई तो देखा कि एकपरम-
सुंदरी शोभायमान निर्दोषअंगी कोकिलबयनी कुरंगशावनयनी
स्त्री मुझसे कुछ कहरही है मुख उसका चन्द्रमाको लज्जितकर
रहाहै और रत्नजटित वस्त्र और आभूषणोंसे अलंकृत ऐसी
शोभायमानहै कि मानों शोभा और छवि स्त्रीका रूप धारणकर
के आईहै निदान उसके उसमोहनी स्वरूपको देखतेही राजपुत्र
उसपर मोहित होगया और उसका सब ज्ञान जाता रहा॥

क०। रूप मनोहर नीक बन्यो मुखकी समता नहिं इन्दुहु पावै। नागगती दोऊ यौवन जोर सो नैन महावत हूलत आवै॥ ध्यान डिगै मुनि ज्ञानिन के जब कामिनि नैनके बाण चलावे। घायलसे घुमरें कितने विधना यह नैनके वाण बचावे १॥ यौबन जोति जगामग होति शृंगार प्रभा सरसावतहै। रीझि रहैं लखि लाल के लोचन मोदहिये भर आवत है॥ सोहत टीको जराव जर्यो तिये भाल महा छवि छावत हैं। मानहुं चन्द्रके मण्डलमें दिन नायक शोभा बढ़ावत है॥ २॥

दो०। रूप भरा अरु छवि भरी खंजन गंजन नैन।
चितवत मोहत जगतको बोलत मधुरे बैन॥

निदान राजपुत्र मोहित होकर उस सुंदरीके समीप आया
उसको देखकर मायावतीने मुसकुराकर मुख अपना फेरलिया
और बोलीकि चलो अब मुंह देखी प्रीति मत जताओ मैं तुम
से निठुरसे बात नहीं करती यह कहकर वह लौटपड़ी और

चलदी उससमय राजपुत्र उसके कटाक्षोंके बाणोंसे घायल हो कर अधीरतासे पुकारा कि हे सुंदरी हे प्राणप्यारी ॥

बरवा ॥

हेवरभामिनि देमांहिं लोचनलाहु। विरह विकलता ममतुमदेखति जाहु॥
विरहअगिनि उरबसी देखिके तोहि। अबनहिंबचिहैं देखति जावहुमोहि॥

हे प्राणप्यारी इसतेरे भावको धन्य है यह क्या अप्रसन्नता मेरेऊपरहै कि आपही तो अप्सराकीभांति आकर मुझको मोहित किया और फिर दृष्टि अपनी फेरली निदान इसप्रकार से राजपुत्र अनेक बातें कहताहुआ और रससम्बन्धी पद पढ़ता हुआ उसके पीछे पीछे चलाजाताथा परन्तु वह सुंदरी उस को कुछउत्तर न देतीथी और चलते चलते एक पर्वतकी गुफा में पहुंची और वहां ठहरगई जब राजपुत्र उसके समीप पहुंचा तब मायावतीने अपनी त्योरी चढ़ाकर कहा कि कहिये आपने मुझदुखियाका क्यों पीछापकड़ाहै लो अच्छा मैं ठहरीहूं कहिये क्या आप कहतेहैं राजपुत्रबोला कि हेप्राणप्यारी थोरीदेर ठहर कर मेरेचित्तको स्वस्थकरो तेरे विरहमें मेरी यह दशाहै ॥

दो०। मरन भलो वरविरहते यहविचार चित जोय ॥
मरे मिटै दुख एकको विरह दुहूं दुख होय १
प्यारी तेरे विरहकी अगिनि अनूप अपार ॥
सरसें बरसें नीरहू झरहू मिटै न झार २
मान करत काहे अरी हैं मम व्याकुल अंग ॥
हौं तो अपने प्राणतें रहत आपही तंग ३

यहकहकर राजपुत्र रोनेलगा उसकेरोने से मायावती दुखी हुई और हँसकर अपनेहाथसे उसके आंसू पोंछने लगी और बोलीकि मुझसी बेठीक ठिकानेवाली स्त्रीसे प्रीतिकरना अच्छा नहींहै क्योंकि मायावी म्लेच्छों के राजा महेन्द्र के फन्देसे मेरा निकलना कठिनहै इससमय मैं तुम्हारे देखनेको म्लेच्छोंकेसाथ साथ बहाना करके चली आईथी राजपुत्र बोला कि क्या तुमभी

आसुरी माया जानतीहो वह बोली कि हां यह सुनतेही रुद्र-विक्रम सुन्नहोगया उसकेसुन्नहोतेही मायावतीने अनुमानकिया कि यह इस कारण से चुप होगयाहै कि इसने तेरी सुंदरताको केवल मायानिर्मित जानाहै यहअनुमान करके वह हँसी और मधुर बाणी से बोली कि हे प्राणप्यारे मैं उन मायाविनी म्लेच्छियोंमें नहीं हूं जिनकी बय दो दोसौ बरसकी होती है और वे मायाबलसे अपना स्वरूप तरुणस्त्रीकासा बनालेतीहैं मेरी अवस्था अभी चौदहबर्ष की है यह सुनकर राजपुत्र प्रसन्न हुआ परन्तु फिर उसको यह ध्यान आया कि महाराज अपने बेटों और पोतोंका बिवाह किसी मायाविनी के साथहोना स्वीकार नहीं करतेहैं इससे तेरा बिवाह इसके साथ होना कठिनहै और तेराचित्त इसपर मोहित हुआ है देखिये प्रारब्धमें क्या लिखा है यहविचारनेसे उसके मुखकावर्ण मुरझासागया उस को देखकर मायावतीने विचारा कि मेरी कम अवस्था सुननेसे राजपुत्र प्रसन्न हुआथा परंतु नजाने अब क्या चिंता इसको व्यापी है कि इसके मुखारबिन्दकाबर्ण दूसराहोगया यहशोच कर राजपुत्रसे परमप्रीतिमान होनेके कारणसे उसकाभी चित्त उदासहोगया और उसने अपनाबस्त्र वहांबिछाकर राजपुत्रको उसपर बैठाया और उसके गलेमें बाहेंडालकर कहनेलगी कि हे प्राणप्यारे तेराचित्त उदासक्योंहोगया हमसे अप्रसन्न किस बातपर होगये ॥

चौ०। भरत मोर मनभावत प्यारे। बैठीहों बहुविधि तेहिमारे॥
केहिकारण मनभयो बिषादू। मारहुहमहिंजोममअपराधू॥
निजअपराधसुननहमचाहत। तवबिषादमम उरकोदाहत॥
तवमनहै रतिलागि मलीना। कै कछुममअपराध नवीना॥
कहतनक्योंहमसोंमुखबोली। लाजछांड़िकिनकरतठठोली॥
बूझहु कहहु जौन मनभावै। लड़हु भिरहु जैसे चितभावै॥

करहु प्रसन्नचित्त प्रियमोरे। क्षमहु चूकमें करहुनिहोरे॥
आपन चूक आपहमओढ़त। काहेको प्रियतुम मुखमोड़त॥
मानसहनसों मानकरतसब। मोहितमनजनताहिसहतअब॥
जोबिछोह है दुखको कारन। तौ प्रभुकरि है ताकोवारन॥
उचितनछलहमसोंहेस्वामी। हमहैं भक्त तोर अनुगामी॥

दो०। रूठनको कारण सकल हमजान्यो हियजोय।
हमहिं खिझावन चहतहौ हमहूं रूठबरोय॥

निदान उसने इसप्रकारसे राजपुत्र को मनाया कि उसको जो आगेकी चिन्ताथी वह जातीरही और वह अपने आपेमें न रहकर हँसपड़ा तबतो मायावती ने अपनी त्योरी चढ़ाली और रूखासा मुख बनाकर गलेमेंसे बाहें निकालली और अलग सरककरबैठगई तब राजपुत्र उससेलपटगया और बोला कि हेप्राणप्यारी मैं तुझसे अप्रसन्न न था किंतु यहशोचता था कि मेरे पितामह महाराजशत्रुंजय जबयहसुनेंगे कि यह मायाविनीहै तब तेरेसाथ विवाह मेरा न करैंगे मायावती हँसकर बोली कि वाह आप अभीसे विवाहकीभी चिन्ताकरनेलगे पहलेअपनामुखतौ बनवाओ और अपनीबुद्धिके नखछिलवाओ भला कहां मैं और कहांतुम और कैसाविवाह बस यह देखादाखीही बनीरहै हम तुमको देखलें तुम हमकोदेखलो और आगे सब झगड़ा है मुझे और बातों से तिरस्कार है राजपुत्र बोला कि यह तिरस्कार अच्छानहीं और न इसका कुछप्रमाण है वह बोली कि मैं और तो कुछ नहीं जानती परंतु मेराचित्त विष्णु भगवान्की भक्ति करनेको चाहताहै सो जब मायाकृतदेश विजय होजायगा तब मैं मायाके कर्मोंको छोड़कर वैष्णव होजाऊंगी आजकल मुझको मायारचितदेशमें प्रहासकी सहायता करनाहै और महेन्द्रके बन्धनसे निकलना है नहीं तो मैं अभी वैष्णव होजाती यहसुनकर राजपुत्र को विश्वासहुआ कि जब

यह प्रहासकी सहायता करेगी और अपने सत्यमन से बैष्णव होजायगी तब इसके हित और शुभकर्मोंके पलटे में महाराज शत्रुंजय मेरा विवाह इसके साथहोना निषेध न करेंगे यह अनुमान करके उसने बड़े प्रेमसे अपनी दोनों विशाल भुजाओं को फैलाकर मायावती को पकड़ लिया और बड़ेप्रेम से उसे लिपटाकर प्यारकिया तब मायावतीबोली कि हटोहटो तुमवही हो जिन्होंने अपनीदृष्टि तोतेकी भांति फेरलीथी और मुखसेभी नहीं बोलतेथे और हमको तो आठ आठ आंसुओंसे रुलाया और आपके मनपर मैलभी न आया अब झूठमूठका प्रेमजतानेलगे तबराजपुत्रने उसकी बहुतसी प्रार्थनाकी और वेदोनों परस्पर प्रीतिमान आपस में प्रीतिपूर्वक बैठकर कामकलोल करनेलगे परंतु अबकथा प्रहास की सुनिये कि वह अपनीस्त्री से मिलकर बिदाहुआ कि ऐसा न हो कि सब मायावीम्लेच्छ चलेजावें और मैं टापता रहजाऊं निदान वहसेनासे निकलकर बनमेंआया और अपने प्रयोजनके खोजमें चारोंओर फिरने लगा कि अकस्मात् उसनेदेखा कि एकस्थानपर कुछस्त्रियांबैठी हुई आपसमें कुछहास्य बिनोद कररहीहैं और पर्वतकीगुफा की ओर उंगली उठाउठाकर वार्तालाप कररही हैं प्रहास म्लेच्छों कासा स्वरूप बनाकर उनके पासगया और बोला कि हैं तुम सबअभी यहींबैठीहो परिवेष्ठन आदितो सबचलेगये और मैंभी अबजाताहूं यहसुनकर वेस्त्रियांबोलीं कि हम रानीमायावतीकी दासीहैं रानी हमारी इसपर्वतकी कंदराकीओर किसीकार्यसेगई हैं वे आजावैं तो हमसबभी मायाकृत देशको जायँ यहसुनतेही प्रहास प्रसन्नहुआ और परमेश्वरको धन्यवाद देनेलगा कि तेरी बड़ीही कृपाहै कि मेरेजाने के निमित्त कारणभी उत्पन्नकरदिया अबचलकर एकबार शत्रुंजय को और देखिआऊं परंतु फिर शोचा कि ऐसानहो कि येचलीजायँ और मैं रहजाऊं इससेजाना

उचितनहीं है परंतु शत्रुंजयसे परमप्रीति होनेकेकारणसे उससे रहा न गया और दौड़ताहुआ उनकेपासगया और पैरोंपरगिर-पड़ा महाराजने उसेउठाकर हृदयसे लगालिया अंतमें बिदाहो-कर फिर म्लेच्छोंकासा भेषबनाये उन्हीं स्त्रियोंकेपासआया और एकस्त्रीसेकहा कि यहांमेरे एकभाईका घरहै सो तुममेरेसाथचलो में वहांसे मद्य और मांसइनकेलिये भेजदूं येसबयोंहीं बैठी हैं यहसुनकर वहस्त्री उसके साथहोली और प्रहासउसको लेकर जबबनमें दूर निकलआया तबउसने मूर्च्छाकरचूर्ण उसकेमुख से मलकर उसे मूर्च्छितकरदिया और उसके वस्त्रउतारकर आप पहिरलिये और उसकासास्वरूप अपना बनाकर कईएकमद्यके पात्रलियेहुए उनस्त्रियोंके पासगया और बोला कि लो उसम्लेच्छ ने यहमद्य तुमसबकेलिये भेजी है निदान उनसबोंने वहमद्यले-कर पी और प्रहासको उन्हें मूर्च्छितकरना नथा इससे उसमद्यमें मूर्च्छाकरचूर्ण नहींमिलायाथा निदान ये सबवहां बैठीहुई माया-वतीके आनेकीबाट देखनेलगीं और वहांमायावती ने राजपुत्र से ठंढीश्वासलेकर कहा कि लीजिये परमेश्वर तुम्हारी रक्षाकरै अबमें बिदाहोतीहूं मुझे बिलम्ब बहुतहोगईहै मायारचितदेशा-धिप मेरीराह देखरहाहोगा जब और म्लेच्छ वहां पहुँचजायँगे औरमैं वहां न होऊंगी तो बड़ीआपत्तिहोगी यहकहकर वहउठ खड़ीहुई उसके जानेसे राजपुत्रकी आंखोंमें आंसूभरआये और वहभीरोनेलगी फिरतोदोनोंप्रिया और प्रीतमकी अपूर्वदशाथी॥

दो०। बिछुरत दोउनकेभये गदगद रूपशरीर।
दोऊ दोउनकों लखत बहतबिलोचननीर॥

निदान दोनोंजने प्रेमकेआंसू बहातेहुए एक दूसरेसे बिदा होकरचले मायारचित देशको चलतेसमय मायावतीने कहा॥

दो०। हमकोमती बिसारियो हंप्राणनिआधार।
मनतेरेढिगछोड़िहौं जातिलिये तनभार॥

इसप्रकारसे राजपुत्र तो हे प्राणप्यारी हे प्राणप्यारी कहता हुआ अपनी सेनाकीओरगया और मायावती हा प्राणप्यारे हा प्राणप्यारे कहतीहुई अपनी दासियोंके पासआई और मायाकृत मयूरपर बैठकरचली उसकी दासियांभी अपने२ मायाकृत बाहनोंपर बैठ बैठकर उसके साथहोलीं उससमय प्रहासभी उसदासीके मयूरपर बैठकर उनकेसाथहोलिया जिसको वहमूर्च्छितकर आयाथा क्योंकि मायाके कर्मोंका यहनियम है कि मायाकरनेवाला जबतक जीतारहता है तबतक उसकी मायाका निर्मित कर्मभी बनारहता है और जबवह मायाकरनेवाला मरजाता है तब उसकीमायासे बनेहुए सबपदार्थभी नष्टहोजाते हैं निदान मायावती राजपुत्रके बिरहमें रोतीहुई अपनी दासियोंसहित बड़े भारीमार्गको उत्तीर्णकरके अदृश्यखंडमें पहुंची जहां वहरहतीथी वहमायाकृतमयूर प्रहासको भी लियेहुए अदृश्यखंडमें आया उसने बहुत कुछचाहा कि मैं प्रत्यक्षखंडमें रहजाऊं परंतु वह मायाकृत मयूर पृथ्वीपर न उतरा और येसब बदरीउद्यानमें पहुंचे वहां उन्होंनेदेखा कि परिवेष्ठन भी वहां पहुंचगयाहै और उसकेसाथी उतररहे हैं परंतु अभी महेन्द्रके सन्मुख नहींगया है निदान मायावती वहीं उतरपड़ी और दासियोंसे बोली मैं महाराजसे मिलकर आतीहूं तुममार्गसे श्रमितहो इससेघरचलो निदान दासियां वहांसे चलदीं प्रहासभी उनके साथ होलिया और एकपर्वतको उल्लंघनकरके एकबनमें पहुंचा और उसके उपरांत एकनगरके निकटआया और देखा कि उसकाद्वार बड़ा ऊंचा लोहनिर्मित मतवाले हाथीकीसमान झूमरहा है सहस्रों म्लेच्छ रक्षाके लिये वहां नियतहैं परकोटा उसनगरका चित्र विचित्र पाषाणोंका परमशोभायमान बनाहै चित्रनानाप्रकारके उसमें खुदेहुएहैं और संपूर्ण प्राकार दर्पणकी समान सचिक्कन और निर्मल है प्रहास उनदासियोंके साथ साथ नगरकेभीतर

आया और उसको बड़ाअद्भुत बनापाया सब मन्दिर और प्रासाद उसमें उत्तमोत्तम रंगबिरंगे पाषाणों के बनेथे और बड़ेशोभायमानथे दुकानें परम अलंकृत चारोंओर को खुलीहुई थीं और उनमें प्रकार प्रकारके अद्भुतपदार्थचुनेहुए थे और वणिक उत्तम उत्तम वस्त्रधारण कियेहुए बैठेथे निदान वह नगर ऐसा सुंदर और शोभायमान बनाथा और ऐसा रमणीकथा कि उस का वर्णन करने को एक ग्रंथचाहिये इससे संक्षेपमात्रयह है कि मानों दूसरा वैकुंठथा॥

छंद। पाषाण निर्मित सकल मारग चारुपुर बहुविधि बना।
बहुहाट रुचिर बजार बीथिन सहित सोहतअतिघना॥
कहुंबने बागसुबाटिका अति रुचिर कहुँ उपवनलगे।
कहुं कूपबापी भवन सोहत कहूं सर सुखमापगे॥

दो०। अति रमणीक सुपुरबन्यो शोभा वरणिनजाय।
मनहुंपुरी अमरावती दूजी दई बनाय॥

वे दासियां इसनगरमें आकर उतरीं और उनकेवाहन कहीं उड़कर चलेगये प्रहास भी उनके साथसाथ होलिया और वे सब नगरकी शोभा देखतीहुईं राजमन्दिरके समीप पहुँचीं यह राजमन्दिर ऐसा ऊंचाबनाथा कि आकाश से बातें कररहाथा और शोभा उसकी ऐसी अपूर्व थी कि उसकी समताकी कोई उपमा न थी॥

सो०। बने रुचिर प्रासाद प्रभाभरे चमकत सकल।
देखत मिटत विषाद लखिपदार्थ तहँकेविमल॥

प्रहास उनदासियोंके साथसाथ उसमन्दिरमेंगया औरदेखा कि एकसिंहासन परमोत्तम अनेकप्रकारसे अलंकृत बीचाबीच में बिछाहै और उसपर खाली मुकुट रक्खाहुआ है और चारों ओर उसके मंत्री और सभासद उत्तमोत्तम आसनोंपर विराजमान हैं और सबके सब बड़ेमायावी हैं पृथ्वीकेऊपर उत्तमवस्त्रों के बनेहुए बिछौने बिछेहैं चारोंओर मणियोंके पात्रसजेहैं और

एकओरको परदा पड़ाहुआ है वहां सहस्रोंम्लेच्छ रक्षाके लिये नियतहैं निदान वे दासियां बिनारोकटोक उसपरदेको उठाकर चलीगईं वहांजाकर प्रहासनेदेखा कि वह रनिवासथा अनगिने प्रासाद और मन्दिर वहां बनेहुए थे और सामने एक फाटक रत्नजटित लगाहुआथा और उसपर एक अंतरपट परम शोभायमान पड़ाथा और बहुतसेम्लेच्छ रत्नोंकेकड़े हाथोंमेंडाले सुनहरी लकुटि हाथमें धारणकिये खड़ेथे वहांभी पहुंचकर उन दासियोंने परदा उठाया और प्रहासभी उनकेसाथ भीतरगया और कुछ औरहीदेखा अर्थात् उसको वैकुंठकी समान शोभायमान एकबाग दृष्टिआया आहा क्या शोभाहै क्या रमणीकताहै कि जिसका वर्णन होना दुर्लभहै॥

चौ० भांति भांति के फूल सुहाये। बरक्यारिनमें प्रचुर लगाये॥
नाना द्रुम अरु लता सुहावें। बरतड़ागसरमनहि लुभावें॥
फल पेयूप स्वाद सम नाना। लागे तहँ कोकरै बखाना॥
खगगण भांति भांतिके सोहैं। मधुरमधुर धुनिसों मनमोहैं॥

सो० डोलत सुखद समीर गंध भरी मन भावनी।
जहँतहँ भौंरन भीर पियत फिरत मकरन्द तहँ॥

निदान वहां जो द्वादशद्वारी बनीथी उसमें जाकर सब दासियांठहरीं और वहां जोस्त्रियांथीं उनसबसे मायावतीका आगमन कहकर अपना अपना काम करने लगीं वे स्त्रियां अपनी रानीका आगमन सुनकर उस महलको नाना पदार्थोंसे अलंकृत करनेलगीं उत्तम उत्तम बिछौने बिछाये और गद्दोंपर उपधान लगाये आसन डसाये पर्य्यंक बिछाये और दर्पण और ताम्बूलपात्र सुगंधपात्र शृंगारपात्र पानपात्र और मद्यपात्र आदि पात्र यथायोग्य स्थानोंपर स्थापितकिये और भांतिभांति के सुगंधित फूलों के गुच्छों से युक्त पुष्प पात्र रख दिये और मणि और स्फटिक के बने हुए कमल दीपक प्रज्वलित करने

के लिये लगादिये और अन्न और मांसके बनेहुए नानाप्रकार के भक्ष्य और भोज्य पदार्थभी तय्यार किये इसप्रकारसे सब सरंजाम ठीककरके वे सबस्त्रियां मायावतीके आनेकी बाट देखने लगीं परंतु अब उस विरहाग्निसे व्याकुल मायावती का वृत्तांत सुनिये कि वह बदरीउद्यानमें भीतरजाकर महेन्द्रको दंडवत् करके आसनपर बैठिगई उससमय उसकी बहिननिद्रावती ने उसे गलेसे लगाया और बलैयांलेकर पूछा कि भैन तेरामुख उतराहुआ क्योंहै तेराचित्त कैसाहै वह बोली कि भैन मैं मार्ग की चलीहुई आईहूं मुझे मार्गचलनेका अभ्यास नहीं है इसी से मेरा मुख उतराहुआहै निदान वह यह कहहीरहीथी कि परिवेष्ठनने वहां आकर महेन्द्रको दंडवत्की और प्रहासके छुटजाने और वेष्ठनके मारेजानेका सब वृत्तांत वर्णन किया यहसुनकर महेन्द्र बोला कि मुझको सबवृत्तांत मालूमहै और फिर बड़ेक्रोध से बोला कि अरी मायावती इधरतो आ मायावती घबराकर उठी और महेन्द्रके सन्मुखआई उसने कहा कि क्योंरे निर्लज्ज जब तू परमेश्वरके पासगईतो पहिलेतो चारोंओर अपने प्रीतम को ढूंढ़तीफिरी और जब वैष्णवोंसे युद्ध प्रारंभहुआ तब अलग खड़ी रही और ऐसीमाया करतीरही कि वैष्णवोंपर म्लेच्छों की माया न चले और अंतमें यह किया कि चलतेसमय पर्वत की कंदरामें अपने प्रीतमको साथ लगाकर लेआई और वहां उसके साथ रमण करतीरही अब सत्यबता कि यह क्या बात थी प्रकटहो कि जब मायावतीने महेन्द्रसे अद्भुत मिथ्याईश्वर के पासजानेकी आज्ञा मांगीथी तब महेन्द्रने आज्ञादेदीथी परंतु फिर यह विचारकिया कि अभी तो यह ईश्वरके पास एकबार हो आईहै अब यह अपनेआप क्यों जानाचाहतीहै यहजानने के लिये महेन्द्रने मायासे एकपुतला निर्मितकरके उसके साथ गुप्त लगा दियाथा कि वह सबवृत्तांत देखतारहे और उससे

मुझे भी विदित करे निदान जिससमय मायावती राजपुत्र रुद्रविक्रमको पर्वतकी कंदरामें लिवाकर लाईथी उससमयतक वह पुतला उसके साथथा और फिर वह सबवृत्तांत देखकर मायावतीके आनेसे पहिले महेन्द्रके पास चलाआया और उस से उसने सबवृत्तांत कहा और जिससमय प्रहासने मायावती की दासीको अचेतकरके अपना रूप उसकासा बनायाथा उस समय वह पुतला मायावतीके साथ पर्वतकी कंदरामेंथा इससे प्रहासका हाल महेन्द्रको कुछ न खुला नहीं तो प्रहासके आने का हालभी प्रकटहोजाता निदान जब महेन्द्रने बड़ेक्रोधसे डाट कर मायावतीसे पूछा तब वह रोनेलगी और हाथबांधकर बोली कि मुझ आपकी दासीने नतो वैष्णवोंके बचानेकी माया कीथी और न मैं किसीको ढूंढ़ती फिरीथी परंतु इतनाअपराध मुझसे अवश्य हुआथा कि जब मैं लौटनेलगीथी तब मैंने शत्रुंजयकी सेनाके बहुतसे मनुष्य एकस्थानपर खड़ेदेखे मैं उनको देखने चलीगई उनमेंसे एक सुंदरपुरुष मेरे सुंदरस्वरूपको देखकर मेरे पीछे दौड़ा मैं भागकर पर्वतकी कंदरामें चलीगई वहभी मेरे पीछे २ वहां लगाआया और उसने मेरा वृत्तांत पूछा मैंने उससे अपना हाल कहा और जैसेही मैंने चाहा कि मायाकर के उसे पकड़लूं तैसेही वह भागकर अपनी सेनामें चलागया और मैं यहां चलीआई अब मेरी प्रार्थनाहै कि आप मेरेऊपर कृपाकरके मेरे इतने अपराधको क्षमा करदीजिये यह सुनकर महेन्द्र बोला कि देख तेरा झूठ और सत्य अभी प्रकटहुआजा-ताहै यहकहकर महेन्द्रने मायावतीकी भुजाओंकी ओर कराल दृष्टिसे देखा उसकी बाहोंपर नीलमणिके बड़े २ नग सुवर्ण में जटित बँधेथे और उनपर चित्र खुदेहुएथे निदान महेन्द्रके देख-नेसे वे दोनों चित्र बाहोंसे खुलकर गिरपड़े और महेन्द्रने उन से कहा कि हे मायाकृत चित्रो सत्यकहो कि यह किससे बातें

करतीथी और किसके प्रेममें फँसीथी वे चित्र क्याथे मानों इस की बाहोंपर दोशत्रुबँधेथे उन्होंने सबवृत्तांत जो कुछ मायावती ने किया कराया था वर्णनकिया और कहा कि महाराज माया-वती उस पुरुषके सामने अपना प्रेम जतानेके लिये रोईभीथी यह सुनकर महेन्द्र हँसा और बोलाकि अरी दुर्भगा तैंने सुना कि इन चित्रोंने क्या कहा वह बोली कि महाराज युद्धमें जो सहस्रों म्लेच्छमारेगयेथे उनकेलिये मैं रोईथी और यहकहकर महेन्द्रके चरणोंपर गिरपड़ी और बोली कि मेरा अपराधक्षमा कीजिये महेन्द्र बोला कि मैं सौकोड़े मारकर तेराअपराध क्षमा करूंगा यह कहके उसने कुछमायाकी कि पृथ्वीफटी और उस मेंसे दोम्लेच्छ भयानकरूप हाथमें चाबुकलियेहुए निकले और उसकोमलांगीको मारनेलगे चाबुकोंके लगनेसे उसके कोमल शरीरसे रुधिर बहनेलगा वस्त्र सब तारतार होगये और वह मूर्च्छित होकर गिरपड़ी और उसकी दांती बैठगई उससमय उसकी बड़ीबहिन निद्रावतीउठकर महेन्द्रके सन्मुखआई और कहनेलगी कि महाराज आपके चित्तमें जो आताहै सोई आप करते हैं और हमारी किसीकी प्रतिष्ठा कुछनहीं समझते वह बोला कि तेरेसामने तो चित्रोंने सबवृत्तांतकहा फिरभी तू मुझ को दोषदेतीहै निद्रावती बोली कि न जाने ये चांडाली पुतलि-यां क्या बकतीहैं आप क्या मेरीबच्ची के प्राणलीजियेगा और यह कहकर रोतीहुई मायावतीके ऊपर गिरपड़ी तब महेन्द्रने उन कोड़ामारनेवालोंसे कहा कि अबमतमारो वे यह आज्ञा पातेही पृथ्वीमें समागये उससमय महेन्द्रने कहा कि हे नि-द्रावती मैंने इसको इसकारणसे दंडदियाहै कि दूसरोंके हृदय में डरहोय नहींतो मुझको क्याप्रयोजनहै जिसका जिससे मन रुचै उससे वह प्रीतिकरै अथवा उससे शत्रुताकरै परंतु जो मेरे शत्रु हैं उनसे प्रीति न करै वहबोली कि भला हमदासियों

की यह सामर्थ्यहै जो आपकी आज्ञाके विपरीत कामकरें यह कहकर मायावती को गोदमें उठाकर बाहर बागमें आई और मायासे एकविमान बनाकर उसपर मायावती को लेकरचढ़ी और वहांसे चलदी और क्षणमात्र में उसमंदिर में आपहुंची जहांप्रहास दासीका रूप बनाहुआ मौजूदथा उससमय माया-वतीभी चैतन्य होगई और उससे निद्रावतीने पूछा कि बहिन मुझेतौ सत्य बतादे कि तैंने क्या कियाथा मायावती बोली कि इस दुष्ट महेन्द्रकी कुदशाआईहै हमारी जोइच्छाथी सो हमने किया मैं क्या किसीकी दासीहूं वह अपना राजपाट रखछोड़े अब में अपने तनमनसे प्रहासकी साथीहूं यहसुनकर निद्रावती ने बहुत कुछ उसे समझाया कि बहिन राजासे बिगाड़कर हम कहां रहेंगे तैंने यह कहावत नहीं सुनीहै कि नदीमें रहना और मगरसे बैर मायावती बोली कि अरी भैना तू अपना कामकर और अपनी समझ अपने पासरख वह निगोड़ा मेरा क्या कर लेगा अंतमें आनन्दाका उसने क्या करलिया कड़ेसे सबदबते हैं में राजपुत्रीहूं कुछ शूद्र नहींहूं जो मारखाकर चुपकी होरहूं मैंभी प्रतिष्ठारखतीहूं और मेरानाम मायावती नहीं जोमैं अपने प्रीतमके हाथसे इसका चर्म न उड़वादूं हां जबतक में यहांहूं तबतक निस्संदेह बेबश और परबशमेंहूं और जितना उसके मनमें आवै मारले निद्रावती बोली कि तुम जानो तुम्हारा कामजानें तुमको तौ बड़ सबारहै यह कहकर वह बिदाहोकर चलदी क्योंकि उसके रहनेका दूसरा स्थान था ये दोनों बहिनें दोकिलोंकी रानीथीं निदान निद्रावती महेन्द्रकी सभामें पहुंची और मायावती मारपड़नेकीपीड़ा और अपनेप्राणप्यारेके विरह केदुखसे महाव्याकुलहोगई और अधीर्यहोकर रोतीहुई अपने बागमेंआई और जो चबूतरा बागके बीचमें स्फटिकका बनाथा और जिसपर उत्तमोत्तम बस्त्रबिछेथे उसपर आकर बैठगई कि

चित्तको कुछस्वस्थताहो परन्तु बागमेंआनेसे उसकीविरहाग्नि और भी अधिकहोगई और वह कोमलाङ्गी उसके कारणसे विकल होगई और जब उसको अपनेप्यारेके स्वरूपकी यादआई उसको सरोकेवृक्ष शूलीकीभांति दिखाई देनेलगे नेत्रोंकास्मरण करतेही कमलदुखरूप मालूमहुए केशोंका ध्यानआतेही लता कुरूप दिखाईदीं वृक्ष सब शोकरूपहोगये फूलोंको उसने अपने हृदयका खण्डजाना शीतल मन्द सुगन्धवायुको कुदशाका आगमन माना लालेके फूलको हृदयकाघाउ समझी हरियारी को चित्तको दुखदेनेवाला समझी निदान उसका भ्रमररूपी चित्त विरहरूपी कमल में बन्दथा जिधर देखतीथी उसको दुखऔर शोककीघटा छाईहुई दिखाईदेतीथी वहबाग उसेअँधेरादीखता था और उसमें उसका एकाकीहोना विक्षिप्तता के लक्षण प्रकट करताथा उससमय उसकी यहदशा थी ॥

क० । चोथतें चकोरैं चितचोरैं चहुँओरैंचेति चकित चितचिंतासों चमकि चमकिजात । झुकि झझकोरि झोरि झटित झरोखेझांकि झारिझार झौरनसों झमकि झमकि जात ॥ भुवनेशलोने लोने लोचदार लोचननि ललित लतानि लखि लमकि लमकिजात । तपिततरुणि तियतीखे तन तापनिसें ताकिताकि तारापति तमकि तमकि जात ॥

दो० । क्षणबैठै क्षण उठिचलै क्षणक्षण ठाढ़ी होय ।
घायलसी घूमति फिरै मरमन जानै कोय ॥

और अपनेसेआपको सम्बोधनकरके कहतीथी कि हे मायावती ये फूल फूलेहुए नहींहैं किन्तु हृदयकेव्रणोंके अंकुरहैं और उनकीललाई रुधिरकी ललाईहै और ये सरोकेवृक्ष दीपक की शिखाके अनुरूप हैं इनकी शाखा ग्रीवाकेलिये खड्गरूप हैं यह हरेरीकी लहराहन सांपकेडसेकीसी लहरें लिवातीहै देख ये फूल रक्तवर्णके नहीं हैं किंतु रुधिरमेंभरे हैं इनकाआसक्त भ्रमरनहीं है इसीसे ये मलीनहैं ये पुण्डरीक सूर्यके विरहमें दुखरूपीसिंधु

से अचेतहैं इननीलोत्पलोंकावर्ण नीलानहींहै किंतु इन्होंने रवि के वियोगमें कालेवस्त्र धारणकियेहैं निदान वह सुकुमारी कोमलांगी अपनेप्राणप्यारे राजपुत्रके विरहमें महामलीनमन और दुखीहुई और अन्तमें ॥

दो०। विरहअनलबाढ़तानिरखि प्रतिपदजहँजहँजाय।
लौटी द्रुमतर बिलपिके बाग बिहार बिहाय॥

अर्थात् वह सुन्दरी वहांसे अपनी द्वादशद्वारामें चलीआई और पर्यंकपरगिरपड़ी और उसको विरहरूपीज्वर अधिक चढ़ आया कि उसके कारणसे उसको लोक और परलोक का कुछ ध्यान न रहा उसरात्रि और दिनभर मृतकतुल्य पड़ीरही अन्त में उसके दुखके कारण से संसार में अंधकार छागया अर्थात् आपत्तिरूप वियोगकी प्रथमरात्रि आई॥

दो०। दुखदायी सबसुख हरन आपति रूप कराल॥
विरही मनको विकलकर निशिवियोगकी काल १
विरह घटा कोंधासुरत क्षणक्षण कोंधतआहि॥
नयन नीर वर्षालगी गरजनि आह कराहि २

यह दशा देखकर कुछ दासियोंने दीपकोंको प्रज्वलित कर के नाचनेवाली स्त्रियां बुलवाईं कि इससे मायावती का चित्त कुछ स्वस्थहोय और कईएक पर्यंकके पास बैठकर उसके हाथपैर दबानेलगीं और उसको परमस्वस्थता करनेवाली वाणीकेसाथ जगानेलगीं कि आज आपका चित्त क्यों उदासहै आपकेशत्रु मरैं और आपकी आपत्तिको लेकर हममरजायँ कुछहमको भी तौ बताइये कि आपके चित्तपर क्या दुखपडा है जिससे हमसब उसका यत्नकरैं और जो किसीसे मन तुम्हारा लगा हो तौ उसको वशीकरैं मायावती उससमय अपने प्राणप्यारे को स्वप्नमें देखरही इनकी उक्तबातों के शब्दसे उसकी आंखें खुलगईं और आंखें खुलने पर देखा कि न वह प्राणप्यारा है

और न वह उसका साथहै किंतु अकेलीरातहै यह देखतेही वह घबराकर पुकारी॥

क०। केहि पापसों पापीन प्राणचलैं अटके कितकौन विचारलयो। नहिं जानपरै हरिचन्द कछू बिधिने हमसों हठको न ठयो॥ निशिआजहु की गई हाय बिहाय बिनापिय कैसे न जीवगयो। हतभागिनी आंखिनिको नितते दुख देखिबेको फिर भोरभयो॥

इसप्रकारकी अधीर्यता को देखकर उसकी दासियां उसके पैरोंपर गिरपड़ीं और बड़ीदीनतासे उसकाहाल पूछनेलगीं यह सुनकर उस प्रेमरससे मस्त मायावतीने बड़ेशोकसे दोनोंकरों को मींजकर कहा कि मुझसे बड़ीभारी चूकहुई कि मैं प्रहासबहुरूपियेसे कईबारमिली परंतु मैंने उससे अपने हृदयकी दशा न कही और निरर्थक उसको अपनेहाथसे खोया जोपहिलेही उस के साथ चलीजाती तौ ऐसी अप्रतिष्ठा मेरी काहेको होती अब क्या होसकता है जो समय चलागया वह फिर नहीं आता है प्रहास इससमय रत्नाकरपर्वतपर है उसको मैं कहां पाऊं जो अपने हृदयव्रण उसे खोलकर दिखाऊं यहसुनकर प्रहास जो दासी बनाहुआ वहां मौजूदथा मायावतीके पासगया और मुसकराकर बोला कि हे रानी मुझदासीने कभी अपने प्राण आप के निमित्त देनेमें आरनहीं की और अब भी मेराशिर आप के कामके लिये मौजूद है यह सुनकर मायावती बोली कि अरी नवेली तू क्या बातें बकरही है मैं प्रहासकी बातें कहरहीहूं तू कहती है मेरा शिर आपके लिये मौजूद है इस ऊटपटांग उत्तरका क्या अभिप्राय है प्रहासबोला कि प्रहास कहांगया है जहां वहथा वहीं अबभीहै जोगयाथा तौ चलाभी आया मायावती बोली कि क्यातू विक्षिप्त होगईहै तूभीतौ मेरेसाथ अद्भुत कीसेनामेंथी जहां प्रहासको शूलीदियेजानेकी आज्ञाहुईथी और जहांसे महाराज शत्रुंजय उसे छुड़ालेगयेथे क्या तू बातेंबनाकर

मुझे खिझातीहै प्रहासबोला कि आपकाकहना सबसत्यहै परंतु जो कुछद्रव्य आप मुझेदें तौमें प्रहासको अभी बुलालाऊं मायावती बोली कि तू क्यों झूंठी बातें बनातीहै अच्छा जो तू प्रहास को बुलालावे तौमें तुझको पांचसहस्र रुपयेदूं प्रहास बोला कि जो तुम शपथ खाओतौ अभी बुलालाऊं वहबोली अच्छा मुझको अपने इष्टदेवकी शपथहै जोतू प्रहासको बुलालावेगी तौमें तुझको पांचसहस्र रुपयेदूंगी और प्रहासकी सेवा तन मनसे करूंगी और उसको बहुतसा धनदूंगी यह शपथ लेकर प्रहास बोलाकि रानीजी मैंहीं प्रहासहूं वह बोली कि तू मुझसे ठठोली करतीहै क्या तू बौरागई है उससमय प्रहास एक कोने में चलागया और अपना निजस्वरूप प्रकटकरके उसकेपास आया और बोला कि लोआपने प्रहासको पाया अब जो आपने देने कहाहै सोदो यह देखकर निद्रावती चकित होगई और कहने लगी कि प्रहासजी तुम क्योंकर यहां आये यह सुनकर प्रहासने अपने आनेका सब वृत्तांत वर्णन किया उसीसमय वह दासीभी वहां आकर पहुंची जिसको प्रहास मूर्च्छित कर आयाथा वह वहीं पड़ीहुईथी जब चैतन्यहुई तब पहले तौ मायावतीको ढूंढ़ने लगी और जब उसका कुछ पता न चला तब मायाबलसे उड़कर यहां चलीआई उससमय मायावतीने उस दासीको लंगोटी लगाये और अपने शरीरको पत्तोंसे छिपाये हुए देखकर विश्वास कियाकि प्रहासही यहांपरहै क्योंकि उस ने दासीको मूर्च्छितकरके उसके वस्त्र उतारलियेथे नहींतौ यह नग्न क्यों आती निदान यह निश्चयकरके उसने प्रहासको बड़े आदरसे बैठाया और पांचसहस्र रुपयेही नहीं किंतु बहुतसे अनमोल रत्नदिये अब महेन्द्रका वृत्तांत सुनिये कि जब उसने मायावतीको दंडदिया और निद्रावती उसे उसके घर पहुंचा गई तब उसने मायावतीपर आनन्दाकी भांति मोहित होनेके

कारणसे अपने क्रोधजन्य कर्म करनेका बहुत पछतावा किया और विचारकिया किजो यहभी आनन्दाकी भांति रानी निशाकरीके पास चलीजायगी तो श्रेष्ठ न होगा यह विचारकर उसने एक म्लेच्छको आज्ञादी कि तू जाकर मायावतीसे हमारी नमस्कार कहियो और पूछियो कि क्याआज रात्रिको आप यहां आकर मेरीसभाको पवित्रनकरेंगी यहआज्ञापाकर वहम्लेच्छ वहांसे चलकर मायावतीके नगरमें पहुंचा और राजमंदिरपर जाकर अपने आगमनके समाचार मायावतीके पास भेजे यह सुनकर प्रहासतो मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर अदृश्य होगया और मायावतीने उसम्लेच्छको अपनेसन्मुख बुलाया उसने महाराज की आज्ञा सुनाई और उसेबहुतकुछ समझाया यद्यपि मायावती महेन्द्रसे महाअप्रसन्नथी परंतु साथही उसके बुद्धिवान् भी बड़ी थी उसनेविचारा कि जो मैं नजाऊंगी तो महेन्द्र मेराखोजकरैगा और अद्भुतजालदेखैगा उसके देखनेसे उसको प्रहासके मिलने का सबवृत्तान्त विदितहोजायगा और फिर यहांसे निकलनादुर्लभहोगा और चलेजानेसे महेन्द्रबेसुधरहेगा और तुझको सभाका सबवृत्तांत भी विदित होतारहेगा यह विचारकरके वह तुरन्त मायाकृत विमानपर उसम्लेच्छकेसाथ बैठकरचलदी और प्रहास फिर एकदासीकासा रूपबनाकर बागके एकस्थानमें ठहरारहा कि जब मायावती आवे तब कुछकार्यसधै और इधर मायावती सभामेंपहुँची उसके चलेआनेसे महेन्द्र बहुत प्रसन्नहुआ और बोला कि मायावती अब तुम अपने चित्तसे क्रोधदूरकरो तुम मुझको प्राणोंसेभी अधिकप्यारीहो मायावतीबोली कि मैं आप की प्रजाहूं आप हमारे महाराजहैं मेरी जोअप्रतिष्ठाहुई उसको मैं अपनी परमप्रतिष्ठा मानतीहूं यहसुनकर महेन्द्रने उसेउत्तम वस्त्र और कईदेशोंका राज्यदिया और वह उनवस्त्रों को धारण करके अपने आसनपर जा बैठी इसकेपीछे महेन्द्रने निद्रावतीसे

कहा कि नदीके किनारे जो शत्रु कैदहोकर आये हैं उनकेविषय में मेरामनहै कि उनको बुलाकर समझाऊं परन्तु फिर यह विचार करताहूं कि इनदुष्टोंने मेरेराज्यमें उपद्रव मचायाहै इनको मारहीडालना उचितहै निद्रावती बोली कि मेरा तो यहीमंत्रहै कि इनसबकाबध कियाजावै आगे जो आपकीइच्छाहो सो कीजिये यहसुनकर महेन्द्रने बड़ेशब्दसे पुकारकरकहा कि हेकालकारी शीघ्रयहांआवो उसीसमय एकभयंकररूप म्लेच्छ हाथमें खड्ग बड़ाभारीलिये प्रकटहुआ और उसने महेन्द्रको दण्डवत् की महेन्द्र ने उसेआज्ञादी कि तुमजाकर झीहमुखीकी सहायता करो और जितने शत्रुकैदहुएहैं सबके शिरकाटलो देखो किसी पर दया न करना निशाकरी और आनन्दाआदि सबका बध करडालना यह आज्ञापाकर कालकारी वहांसे विदाहोकर चल दिया और रात्रि अधिकगईथी इससे महेन्द्रने अपनी सभाका बिसर्जनकिया और सबसभासद उठउठकर अपने अपने घरों को पधारे मायावतीभी चली परंतु चित्तमें कहती जातीथी कि हाय प्रहास मेरे यहां अब एकाकी रहगया यही सोचती हुई वह अपने घरमेंआई उससमय प्रहास उसके पास चला आया परंतु उसको मलीन मन चित्तद्विचित्त देखकर पूछनेलगा श्रीमहारानीजी आपका चित्तकैसाहै मुझको आपका इन्दुरूपी मुख मलीन और चिंताग्रस्तसा दीखता है यह सुनकर मायावतीने एक श्वासलिया और बोलीकि॥

दो०। प्रबल काल गति अमिटहै प्रबल गती संसार।
होत भविष्य अवश्य है चलत न नर उपचार॥
नर चाहत जो करनको गहे अनेकन आश।
दैव करत विपरीतसो होत आशको नाश॥
पौरुषकरि नरचहत कछु दैव चहत कछु और।
दैवचहत सो नहिं टरत होत औरको और॥

अब मुझ अभागीसे कुछ बन नहीं पड़ता है संसारमें मुझ को सब अपकीर्तिदेंगे किप्रहास निद्रावतीके यहां बैठारहा और निशाकरी की सब सेना मारीगई यह सुनकर प्रहासने घबरा-कर पूछा कि कुशलतो है निशाकरीपर क्या आपत्ति आई है यदि कोई किसी प्रकारकी बातसुनी हो तो उसे शीघ्रकहो यह सुनकर मायावतीने सभाका सब वृत्तांत और कालकारीको नि-शाकरी आदिका वध करनेको भेजने का हालकहा प्रहासका चित्तसुनतेही भरआया और रोनेलगा कि हाय मैं यहां माया-कृत देशमेंरहा और मेरे मित्रवर्ग इसप्रकारसे मारेगये माया-वती बोली कि जो मैं आपकी सहायताभीकरूं तौभी तो कुछ न होसकेगा क्योंकि जो कुछ होनाथा सो होगया प्रातःकाल होतेही वहां मृत्युका बजार खुलजायगा और सबकेप्राण बिकजायँगे मैं यह सोचतीहूं किजो मैं आपकेसाथ चलकर कालकारीसेयुद्ध करूं और उसेयुद्धमें मारभीडालूं तौभीतो कोई बचाउकाढंग नहीं दीखताहै क्योंकि रत्नकूपपर बड़े२मायावी म्लेच्छोंकी भीड़हैहोगी विचित्रमाया सब इष्टमित्रोंसहितहोगी और विश्वमाली और कुसुमी माया आदि सबबड़े२ मायावी म्लेच्छ और म्लेच्छी वहां होंगी फिर उससमय क्या किसीकी सामर्थ्यहै जोमहेन्द्रकासाम-ना करसकें प्रहासबोला कि दूरके ढोलही सुहावने होतेहैं जो मैं नदीके पार पहुंचजाऊं तो फिरतुमको कौतुक दिखादूं कि क्षण भरमें न कालकारीही रहजायगा और न प्लीहमुखी एककोभी जीता न छोड़ूंगा और रानी निशाकरीको छुड़ालूंगा तुम बैठी रहो जब तुम्हारी इच्छाहो तब आकर हमारा साथ देना यह सुनकर मायावती बोलीकि मैं आपको नदीके पार इस नियम के साथ भेज सकतीहूं कि प्रथमतो आप मुझको भूल नजायं और दूसरे आप महाराज शत्रुंजयसे कहकर मेरा बिवाह उन के पौत्रसे करादें प्रहास बोला कि यह कितनी बड़ीबातहै जहां

भीमविक्रम का विवाह मोहनी चित्र से और भानुविक्रम का चन्द्रचूड़ासे होगा तहां तुम्हारा विवाह रुद्रविक्रमसे होगा निदान प्रहाससे उक्त प्रकारसे नियम करके और वाचा लेकर मायावतीने अपने पाससे एक चक्की वैडूर्यकी निकालकर दी और कहा कि इसचक्कीको तुम नदीकेकिनारेपर सातवार फिराना इसमेंसे एक डोरा निकलैगा और नदीमेंसे एक महा नाग प्रकटहोगा यह डोरा उस नागसे लपिटजायगा तब तुम शनैः शनैः उस डोरेको खींचना और जब वह नाग तुम्हारे समीप आजाय तब उसपर सवार होजाना वहनाग तुमको लेकर नदी में कूदपड़ेगा और तुम्हारी आंखें बंद होजायंगी परंतु क्षणमात्रमें तुम नदीके उस तटपर जा पहुंचोगे परंतु देखना कि यह चक्की जानेनपावे सहस्रों म्लेच्छ इसके ग्राहकहैं जो यह जाती रहैगी तौ महेन्द्र मुझको जीता नछोड़ैगा प्रहासबोला कि जब तुम मंगा भेजोगी उसीसमयमें इस चक्कीको आपके पास भेज दूंगा और तुम मेरी परमहितूहो मैं तुम्हारे साथ कभी बुराई न करूंगा तब मायावती बोली कि प्रहासजी रात्रितौ बहुत थोड़ी रहगईहै और मार्ग बड़ाकठिन और मायावी म्लेच्छों से आकीर्णहै तुम प्रातःकाल तक क्योंकर नदीके किनारे पहुंचोगे और अपने मित्रवर्गों को छुड़ाओगे और दूसरे जिसओरसे सब मायावी पार जातेहैं वह घाट दूसराहै तुमने उसको देखा भी न होगा और इस मार्गमें सहस्रों मायावी म्लेच्छ रक्षाके लिये नियत हैं और मार्गभी कठिन और अगम्य है और जो और किसी घाटसे उतरनेकी इच्छाकरोगे तौ नदीमें कोलाहल मच जायगा और महेन्द्रको तुम्हारा हाल विदित होजायगा क्योंकि नदीके रक्षक यह जानेंगे कि यह कोई नयामनुष्य पार जानेवालाहै जो अमार्ग से पार जाना चाहता है और घाटसे पार जानेमें कोई न पूछैगा यह सुनकर प्रहास बोला कि फिर

मैं क्या करूं परमेश्वरका नाम लेकर जाताहूं वही सबका रक्षक और भूले भटकेको मार्ग दिखानेवाला है मायावती बोली कि अब जो सहायताहीकी तो पूरी सहायता करना चाहिये लो थोड़ीदेर ठहरो मैं तुमको घाटतक पहुंचाये देतीहूं यह कहकर मायावतीने कुछ मायाकी कि अकस्मात् एकहस्त प्रकट हुआ और प्रहासकी कमरसे लपिटगया उससमय मायावती बोली कि प्रहासजी परमेश्वर तुम्हारी रक्षाकरें और मनोकामना को पूराकरें और शत्रुओंपर विजय देय देखो मुझको भूल न जाना और सदैव अपनीदासी समझना यहसुनकर प्रहासनेभी बहुत कुछ कहकर उसका आश्वासन किया अंतमें वह हस्त प्रहासको लेकर उड़ा और क्षणमात्र में प्रहासको नदीके पार जाने के घाटके किनारे ला खड़ाकिया और चलागया तब प्रहासने उस चक्कीको फिराया नदीकेतटपर एकमहानाग निकलकर ठहराथा कि उस चक्कीमेंसे डोरा निकलकर उस सर्प के लपिटगया तब प्रहासने डोरेको शनैःशनैः खींचा कि वह नाग उसके समीप आगया प्रहास उसको देखकर भयभीतहुआ क्योंकि उसके मुख से अग्निकी ज्वाला निकलती थी और फुंकार का बड़ा शब्द होताथा परंतु अपने प्राणोंपर खेलकर वह उसपर सवार होगया सवार होतेही वह नाग नदी में कूदपड़ा और प्रहासकी आंखें बन्दहोगई पूर्वमें वर्णनहोचुका है कि इस नदीपर धूमका सेत बंधाहुआ है और उसमें तीन खंड हैं और उनमें बहुत से असुर दिन रात्रि लड़ाकरते हैं और अप्सराएं मोती उछालतीरहती हैं निदान प्रहास उन असुरोंके लड़ने और शिरोंके कटनेकाशब्द सुनताथा और बेर बेरनदीमें हाथ इसप्रयोजनसे डालताथा कि उनअप्सराओंके फेंकेहुएमोती मेरे हाथपड़जावें परंतु जबवहहाथ डालताथातभी उसकेहाथमें गीलीमट्टी हाथआतीथीयहदेखकर प्रहासकहताथा

कि नामबड़े और दर्शनथोड़े मायाकृतनदी मायाकृतनदी इस को सुनतेथे पर इसमेंतो मोती मूंगाआदि कुछभी द्रव्यनहीं है निदान थोड़ीदेरमें उससर्पने प्रहासको नदीकेपारलाकर उतार-दिया और वहचक्कीकाडोरा छुटगया और सर्प अंतर्द्धानहोगया उससमय प्रहासने परमेश्वरको धन्यवाद करके दंडवत्की और आगेबढ़कर देखा कि करालाक्षीकी सेना दूरतक पड़ीहुईहै और ह्लीहमुखी अपनी सिविरमें बैठीहुई पहरादेरहीहै इसीअवसरमें कालकारीभी अपनीसेनालेकर नदीकेपार उतरा उसके आने के समाचार पाकर करालाक्षी और ह्लीहमुखीने उसकी आगौ-नीकी और बड़ीधूमधामसे उसको लिवाकर सभामें लाये और सेनाभी उसकी उतरी अबजो रात्रिरहगईथी उसमें काल कारी ने यहप्रबन्धकिया कि शूलियां खड़ीकराईं और उनके पास रेत के चबूतरे बनवाये और उनपर मृत्यु आसन बिछवाये और शूलियोंकी जंजीरोंसे रानीनिशाकरी आदि सब वैष्णवीसेना के सेनापति और योद्धाओंको बांधकर उलटा लटकादिया और कहा कि प्रातःकाल होतेही तुमसबका आयुरूपी दीपक खड्गरूपी वायुसे बुझकर तुमसब इससंसारसे सदैवकेलिये चले जाओगे और यह कहकर आप अपनेडेरेमें जाकर मद्यपान करनेलगा उधर सबकैदी अपने जीवितसे निराशहोगये और चपला बहुरूपियेने कहा कि हाय हम मरते समय अपने गुरू प्रहासकोभी न देखनेपाये यह सुनकर सबरोनेलगे और उनके विलापकरनेका बड़ाशब्दहुआ उससमय जोम्लेच्छ वहांमौजूद थे उनकी दुर्दशाको देखदेखकर हँसतेथे परंतु वहरात्रि सांइ सांइकरतीथी और वायुरूपी दुखसे सबवृक्ष शिरधुनते और पल्लव हाथमलतेहुए दिखाई देतेथे नदीकी तरंगें किनारोंपर शब्दसे टकरातीहुई ऐसीजानपड़तीथीं मानोंशोकसे शिरटकरा रही है और जो घासउगीथी वहशरीररूपी पृथ्वीके रोंगटेखड़े-

हुए जानपड़तेथे चारोंओर विलापका शब्दपूर्णथा और सिवाय परमेश्वरके कोई रक्षक दृष्टि न पड़ताथा अंतमें इसी शोकसमुद्रमें पड़े २ रात्रिव्यतीतहुई और प्रातःकालहुआ और सूर्यने उदयहोकर आकाशमें प्रकाश किया ॥

सो० । सूरजमुखी प्रसून विकस्योलखिरविकोउदय
जनुविलोकि दुरजून शोक विवशपीरोपरयो

उससमय अरुणोदयकी वेलाको देखकर सब वैष्णवीसेना के सेनापति श्रीविष्णु भगवान्का ध्यान करनेलगे और ऐसा दीखनेलगा कि पत्तापत्ता उस विश्वंभर विश्वकर्त्ता के ध्यानमें मानों मग्नहैं उससमय चपलानेकहा कि तुमलोग एकाग्रचित्त होकर अपने को बन्धनसे मुक्तहोनेके निमित्त श्रीपरमेश्वर जगत् कर्ता विष्णु भगवान्का ध्यान करो उसकी मायासे कुछ आश्चर्य नहीं है कि कृपारूपीवायु चलै और कुसुमकली रूप मनोरथको विकासित करदे और गंधरूपी सहायताके आनेसे हृदयके दुःखको दूरकरै यह सुनकर सबने हाथ जोड़कर विनय की कि हे विश्वंभर हे भक्तवत्सल हे करुणानिधान हे दीनोद्धर हे परमेश्वर हे त्रिलोकीनाथ हे सर्वव्यापी हे सर्वसामर्थ्यवान् हम तेरीशरणहैं तूही हमसबका रक्षकहै ॥

क० । हैं हमअनाथ नाथतूही एकनाथप्रभु दूजो और कौन जाकोराखें कछुभावरे । धर्मअर्थकाममोक्षचारोंको दातासुनिताहीसों हमहिं तवचित्त वढ्यो चावरे ॥ सब जगनायक वरदायक सदाके आप तेरीही आशपरएतौ सब उछावरे । शर्णागततेरी हमदीनजन आयेसब शत्रुसों रक्षहु प्रभुमेरे गुणआगरे ॥

निदान उक्तप्रकारसे सबवैष्णवीसेनाके सेनापति स्तुतिकर रहेथे कि ईश्वरकी कृपारूपीवायु मनोरथ रूपी पुष्पकी कलीको विकासित करनेलगी अर्थात् प्रहासने अपना स्वरूप मायावतीकासा वनाया और एक स्थाली में वहुतसे फल चुनेहुए

लेकर उन म्लेच्छोंकी सेनामें आया प्रकटहो कि प्लीहमुखीने जो बहुरूपियेका आगमन जाननेके निमित्त मंत्र सीखाथा उस को पढ़कर रात्रिभरतो उसने पहरादिया और जब प्रातःकाल हुआ तब उसने यह अनुमान करके अब सब चैतन्य हैं अब किसीका भय नहीं है उस मंत्रको विसर्जन करदिया कि इतनेमें सबको मायावतीके आनेके समाचार पहुंचे सबने उठकर आदर पूर्व्वक उसकोलिया और सभामेंलेगये तब प्रहासने कहा कि महाराजने ये फलदियेहैं कि लेजाकर सब कैदियोंको खिला दो क्योंकि सबने कईदिनसे नहींखायाहै किसीको भूखा प्यासा मारना उचित नहींहै और ये तीनफल तुमतीनोंको दियेहैं और कहाहै कि यह महाप्रसादीहै इसको तुरंतखालें और बिगाड़ेंनहीं यहसुनकर कालकारीआदिने बड़े आदरसे उनफलोंको लेलिया और एक एक दोदो सबकैदियोंको दिये कि लो महाराजकी यहकृपाहै इनको खालो अंतमें तो क्षणभरपीछे मारेहीजाओगे वेसबतो परमेश्वरके स्मरणमें मग्नथे उन्होंने वेफललेकर फेंक दिये और उसीप्रकारसे ध्यानावस्थितरहे आये और यहां मायावतीरूपी प्रहासने हठकरके वे फल करालाक्ष और प्लीहमुखी और कालकारी और उनके सब इष्टमित्रों को खिलादिये थोड़ीदेरमें सबकाकण्ठ सूखनेलगा उससमय करालाक्षने कहा कि यह कैसे फलहैं जिनसे मद उत्पन्नहोता आताहै प्रहास बोला कि ये फल महेन्द्रके बागकेहैं वहांकेवृक्ष मद्यसे सींचेजातेहैं इतनेमें सबकीजिह्वा ऐंठनेलगी और उन्होंने समझा कि यह मायावती नहींहै किंतु कोई बहुरूपिया है जिसने हमको मूर्च्छाकर चूर्ण खिलादियाहै यह समझकर सब प्रहासकीओर क्रोधकीदृष्टिसे देखनेलगे तबतो प्रहासनेभी अपनी लालपीली आंखें दिखाईं और कहा कि अरेदुष्टो मैं म्लेच्छों के शिरोंका मुण्डन करनेवाला प्रहासहूं यह सुनतेही वे म्लेच्छ प्रहासकी

और लपके परंतु उठतेही मूर्च्छित होकर गिरपड़े उस समय प्रहासने खड्ग निकालकर उनकी ग्रीवामें मारे परंतु खड्ग उचटगया और व्रणतक न हुआ यह देखकर प्रहास जानगया इन्होंने मायासे अपने शरीर अष्टधातुके बनालियेहैं यह जानतेही प्रहासने अपनीथैलीमेंसे अग्नि और कड़ाही और और नाग निकाला और नागको गलाकर जलता हुआ तीनों का मुख चीर चीरकर भरदिया पेटमें जाकर उस सीसेकी उदरसे मुख पर्यंत एक शलाका होगई और उससे उन म्लेच्छोंका हृदय भस्म होगया और श्वासके रुकजानेसे वे बिल बिला बिल बिलाकर मरगये फिरतो काली पीलीआंधियांउठीं अग्नि और पाषाणोंकी वर्षा हुई और महा कोलाहल प्रकटहोकर वाणीहुई कि करालाक्ष और प्लीह मुखी और कालकारी मारेगये उस समय प्रहासने जाल मारकर सब सामग्री लूटली और बड़ी शीघ्रतासे दौड़ा और उस कोलाहलको सुनकर वे म्लेच्छ जो कैदियोंकी रक्षाकेलिये नियतथे भागे परंतु इन तीनोंके मारेजानेसे रानी निशाकरी और आनन्दा आदि मायाकृत बन्धन से मुक्तहोगईं और मायाबलसे हथकड़ी और बेड़ियोंको तोड़कर शत्रु सेनापर आपड़ीं और शत्रु सेनाको मारकर लोथपर लोथ गिराने लगीं संडीनचपला आकाशमें चपलारूपसे चमक चमक कर शत्रुओंपर गिरने लगी और उसकापुत्र पृथ्वीमें प्रवेश करके और प्रकटहोकर गर्ज गर्जके शत्रुओंको मूर्च्छित करने लगा इसी प्रकारसे रानी निशाकरीने अग्नि गोलकका प्रयोग करके सर्पोंकी वर्षाकी और शत्रुसेनाका विध्वंसन किया एक ओर आनन्दा मायाने बसंतऋतु को प्रकटकरके शत्रुओं को मोहितकिया और उनके जीवित को संसार से मिटादिया महाकोलाहल चारोंओर मचगया और ऐसामालूम होनेलगा मानो प्रलयका काल है॥

जयकरीछंद। माचो शत्रुसेन में शोर। धनुटंकार वाद्यधुनि घोर॥
सुभटनकीगरजनअरिचण्ड। गजहयहींसनमहाउमण्ड॥
मारुमारु मारयो धुनिभूरि। चहुं दिशिरही सेनमेंपूरि॥
सेनवैष्णवी के तहँवीर। लगेहनन शत्रुन धरिधीर॥
वधेरथी हय हाथी जूह। वधे पदादी सुभट समूह॥
पुरुषसिंह इंछतजय पर्म। अरि समूहके मर्दतमर्म॥
हयगजरथ भटजूहवढ़ाय। भिरतशत्रु सों शायकछाय॥
भल्लशक्ति तोमर वरवाण। गदा परिइवध यष्टि कृपाण॥
आयुध भिन्दिपालदै आदि। वर्षत वीर प्रमादि प्रमादि॥
तेहिक्षणभयोतहांअतियुद्ध। लसे कालसम वीर सक्रुद्ध॥
गयोशत्रुदल वलसों रीत। भाग्यो गहै महा भय भीत॥
इविधि प्रहारि वैष्णवीसैन। करी पराजित अरिकी सैन॥
मिल्योप्रहाससवनिसोंआय। ते सब भेटत तासों धाय॥

इस प्रकार से शत्रुओंको विजयकरके और उनकी युद्धकी सामग्री और वस्त्र आसन आदिको लूटकर प्रहास ने सवसेनापतियोंसे कहा कि इस युद्धकेसमाचार महेन्द्रको पहुँचेंगे और कुछकाल में कोई आपत्ति आवैगी इससे यहां ठहरना उचित नहीं है सब के सब पृथक् पृथक् भागकर सेना में चलो में भी आता हूं यह सुनकर सब सेना के वीर आकाशमार्गी हुए और वहुत से पृथ्वी में प्रवेश करके चले और वहुरूपिये भी कोई किसी ओर और कोई किसी ओर भागे और प्रहास भी एक ओर को भागकर चला परंतु अब महेन्द्रकी व्यवस्था सुनिये कि वह प्रातःकाल होते ही मायाकृत दर्पण में आकर आसीन हुआ और सब सभासद भी आकर अपने२ स्थानोंपर विराजमानहुए उससमय महेन्द्र ने कहा कि सब शत्रुओं के शिर कटे हुए आनेवाले हैं यह वात वह कहही रहाथा कि दो पक्षी उड़ते हुए आये एक का वर्ण हरा और दूसरे का लाल था और उन्होंने आकर विनयकी कि महाराज प्रहास मायाकृतन-

दीके पार उतरगया और उसने डीहमुखी आदि सबका बध किया सब कैदी छुटगये और युद्ध ऐसा हुआ कि आपकीओर के बहुतसे लोग मारेगये यह कहकर वे पक्षी वहीं अदृश्य हो गये और महेन्द्रने अपने हाथोंको क्रोधसे मलकर जंघा पर दे मारा और बोला कि इसबहुरूपियेने अपमानपै अपमानकिया है और नीचा दिखायाहै मुझकोबड़ा आश्चर्यहै कि यहतो परमेश्वर के यहां गयाथा और वहां से शत्रुंजय इसे छुड़ा ले गया था फिर वह मायाकृत देशमें कैसे आया और वहांभी अदृश्य खंडमें क्योंकर पहुँचा और जो यह अनुमान कियाजाय कि परिवेष्ट्र के सेवकों में मिलकर चला आया तो फिर उसे मायाकृत नदीकेपार किसने पहुँचाया इससे जान पड़ताहै कि हमारे यहांका कोई बड़ा प्रतिष्ठित मायावी म्लेच्छ जो सब बातों का जानने वालाहै वह प्रहाससे मिलगया है बिना ऐसी बात हुए वह नदी के पार नहीं जा सकता था अच्छा अब मैं इसगुप्त वार्ताको जानने के पीछे ऐसा दंडदूंगा कि नदी के मत्स्य और वन के पक्षीतक उसकी दशापर रोवेंगे यह कहकर वह मायानिर्मित दर्पण से अदृश्य होगया और जो जो बड़े २ मायावी सभासद् वहां विराजमान थे सब भयसे कांपनेलगे कि देखिये अब किसपर आपत्ति आती है उससमय सभामें मायावती भी मौजूद थी महेन्द्र के उक्त वाक्यों को सुनकर वह भी थर्राने लगी परंतु फिर अपने चित्तको दृढ़करके सोचनेलगी कि जिस समय तुझसे कुछ पूछे तू भी बराबर प्रश्नोत्तर कीजियो उसकी मोल की ली हुई तो तू हैही नहीं यही बात है कि वह राजा है तो तू प्रजा है अंत में जो कुछ प्रारब्ध में होगा और जो ईश्वरकी इच्छा होगी सो होगा यह सोचकर महेन्द्र के अंतर्द्धान होजाने पर वह भी अपने घरको चलीआई और अपने मायाकरने के तंत्रों को सिद्ध किया और मायाकृत अस्त्रों को

निकालकर देखा भाला कि मायाकृत देशाधिप से लडूंगी ॥

इतिश्रीआगरापुरनिवासिचौरासियागौड़वशावतंसश्रीपण्डितमोहनलालात्मजपण्डितकुंजविहारीलालकविनाविरचितेअद्भुत चरित्रेप्रथमखंडेऽष्टमोध्याय: ८ ॥

अध्यायनवां

महेन्द्रका प्रहासके पकड़नेको एक मायाजाल बनाना प्रहास का उसमें फंसना और छलकरके उससे छुटना और मायावती का वृत्तांत प्रकटहोना और प्रहासका साथ देनेको निशाकरीकी सेनामें चलाआना और मायावतीके निमित्त बहुरूपियों का म्लेच्छोंसे अनेक छल करना ॥

जयकरीछंद। उत्तम कर्म करत नर जौन। पावत स्वर्गलोक को तौन ॥
पीवत तहां मधुर मकरंद। सदा वसत तहँ भरे अनंद ॥
सो मकरंद देहु वागीश। मांगों नाइ धरणि पै शीश ॥
जासे करे सुबुद्धि प्रकाश। होय अविद्या सकल विनाश ॥
निर्मलवाणी शुचि रमनीय। होय सप्रेम सरस कमनीय ॥
दिव्य दृष्टिसों लखों सुतार। मायाकृत जे चरित अपार ॥
जौन जौन हों निरखों तत्र। सरस गिरासों भाषों अत्र ॥
देखिजाहि आदरहिंसुजान। सहअनुराग सुकरहिं बखान ॥
बाग रूप यह बने प्रसंग। विहरें जन तहँ हर्षित अंग ॥
गिरा मोर फूलनि वर्षाय। देय कथा को बाग बनाय ॥
तरु लेखनी गिरावर फूल। विकसें नदी कथा के कूल ॥
श्रोताभ्रमर करहिं रसपान। पावहिं सकल सुहर्ष महान ॥

सौरभमहाराजने इसअध्यायमें कथाको इसप्रकारसे प्रकाशितकियाहै कि जबमहेन्द्र म्लानचित्तहोकर मायाकृतदर्पणसे अंतर्द्धानहोगया तबवह मायाकृत नदीकेपारचलाआया और रानीनिशाकरीकी सेनाकेवासस्थलसे नदीपर्य्यंतमायाबलसे एक मायाकृत चमत्कार खंडरचदिया और उसमें वहीचमत्कारउत्पन्नहोगया जोविस्मयी मायारचितदेशके प्रत्यक्ष और अदृश्यखं-

डमेंहैं और उसखंडमें बड़े २ मायावीम्लेच्छोंको नियतकरदिया और आपअंतर्द्धानहोगया परंतु इसनवीनमायाखंडके रचेजाने के पहिलेही रानीनिशाकरी अपनेसेनापति और इष्टमित्रों सहित अपनेवासस्थलपर आगईथी वहांआकरउसने अपनी भागीहुई सेनाको एकत्रकिया डेरेखड़ेकराये हाटेंलगवादीं और सबसेनाउसकी विचित्रमाया और सैन्धकी सेनाकेसन्मुखउतरी और विजयप्राप्तहोनेसे नृत्यआदिक आनन्दमंगलहोनेलगे इनकेलूटआनेसे विचित्रमायाको बड़ाआश्चर्यथा कि उसीसमय समीररूपाआई और उसनेविचित्रमायासे युद्धकीव्यवस्था और अपराधियोंके बन्धनसेमुक्तहोनेका वृत्तांतवर्णनकरके कहा कि श्रीमहाराज महेन्द्र इसओरआयेहैं और आनन्दवाटिकामेंगये हैं आपभीवहींको पधारें वहबोली कि मैं तो इसचिंतामेंहूं कि जोमहाराज मुझेआज्ञादेंतोमैं इनसबशत्रुओंसे युद्धकरकेसबको मारडालूं और महाराजकेबिनाबुलाये मैंकहींनहीं जासकतीहूं यहसुनकरसमीररूपाचुपहोरही परंतुअबप्रहासकावृत्तांतसुनिये कि वह और दूसरे और बहुरूपियेभी बनमेंठहरतेहुए सेनाकी ओरचलेजारहेथे और उनकोजानेमें इतनीविलम्बहुई कि महेन्द्रमायाकृत चमत्कार खंडबनागया और वेसबके २ उसी खंडमेंरहगये अबइसमायारचित खंडका वृत्तांतसुनिये कि प्रहासबनमें चलाजाताथा उसनेदेखाकि चारोंओर बड़े २ पहाड़ बनेहुएहैं और मार्गकहींनहींहै केवलएकपर्वतमें होकरमार्गदीखताहै प्रहासउसी पर्वतकीओरगया और उसकीकंदरामेंहोकर जो मार्गथा उसमेंघुसगया जबउसके बाहिरआया देखा कि एक बनबड़ारमणीक हराभरालगाहै और उसमें दोमंडपबड़ेऊंचे ऊंचे एकदाहिनी और दूसरा बाईंओरबनेहैं उनकीशोभा और सुंदरताकावर्णन नहींहोसकताहै फलफूल और बेलें और प्रकार प्रकारकेचित्र उनमें बड़ेअद्भुतखुदेहुएथे और अपूर्वशोभादेतेथे

शिखरउनमंडपोंकी आकाशसेबातें कररहीथी और ऐसीशोभा-यमानथी कि सुमेरुपर्वतकी शिखरभीलज्जितथी उसकीछतकी बनावटकीसमता आकाशसेदेनेमें आकाशकीबड़ाईहोतीहै और उसकेद्वारोंकी गोलाई और चमककी उपमादूजके चन्द्रमासे देनेमें चन्द्रमापूर्णेन्दुहुआजाताहै चारोंओर उनमण्डपोंके परदे पड़ेहुएथे कि जिनका वर्ण आकाशके वर्णको लज्जितकरता था छतेंउनमें चित्रविचित्रवस्त्रोंकीलगीथीं और उनके आगेसुन-हरी वस्त्रोंके वितानसुनहरी डोरियोंसे खिंचेथे स्तंभसववैडूर्य आदिरत्नोंकेबनेथे और उनमें पुषराज और नीलमणि आदि के नगजड़ेथे और उन मण्डपोंकेभीतर कड़ोड़ोंरुपयों के मोल केनानाप्रकार के दुर्लभ पदार्थ क्रमसे धरेथे और दोनों मंडप रत्न और मणियोंसे जगमगारहेथे॥

दो० मणिमुक्ता रतननिजड़्यो मंडपबन्यो अनूप।
देवपुरी अमरावती सो न तासुअनुरूप १॥
शोभाभरेसुसुखभरो निर्मल अतिकमनीय।
जिनकीसमतिहुंलोकमें नहिंकोउथलरमनीय॥

प्रहासने वहां के पदार्थों को देखकर चित्तमें कहा कि—

दो० होतजोनप्रारब्धमें मिलतअवसिसोआइ।
रोकेहूनहिंरुकतसो भागेहू पछिआइ॥

इनमंडपों में जोपदार्थ हैं वे सब परमेश्वर ने तेरेही निमित्त भेजे हैं फिर॥

चौ० जाकों राम जौनही देई। ताकों सो क्योंकरनहिंलेई॥

अबपूछनाक्याहै चल और ले यहकहकर मंडपकेभीतरगया और वहांकोई रक्षकउसका न पाया तबतो उसनेवरुणदत्तजा-लमारकर रत्नपात्रशय्या आसन और वस्त्रआदिसब पदार्थ लूटकरथैलीमें डाललिये और आगेकामार्गलिया कि इतनेमें एकओरसे सुनाईपड़ा कि कोई कहताहै कि कहांलेकरजाओगे

अबतो आफंसेहो यहसुनकर प्रहासवहांसेभागा और एकपर्व-
तके समीपआकरपहुंचा और देखा कि वहां मौलसिरी के वृक्ष
लगेहुएहैं और उनकी छायाबड़ीशीतलहै और एकवृक्षकेनीचे
एकम्लेच्छबैठाहुआहै जिसकेगलेमें मोतियोंकाहारपड़ाहै और
भुजाओंपर रत्नोंकी मूर्ति बनीहुई बंधी हैं प्रहास उसको देख
कररहकतराकरचला कि अकस्मात् पृथ्वीसे एकपुतली प्रकट
हुई और पुकारी कि अरे अश्वमुखदेख यहतस्करभागाजाता है
यहसुनकर प्रहास ने अनुमानकिया कि अबमैं भाग न सकूंगा
चलो इसम्लेच्छकाभी धनलो अथवा अपनेको पकड़वाओ इन
दोनोंबातोंके सिवायअब और कुछनहीं होसकताहै जोपरमेश्वर
की इच्छाहोगी सोहोगा यहसोचताहुआ उसम्लेच्छके पासप-
हुंचा और बोला कि भाई तुमकौनहो वहम्लेच्छ उत्तर न देने
पायाथा कि पुतलीबोली कि इसीमरेने इसमायाकृत खंडका सब
मंडप लूटलियाहै चोरतौ केवलधनहीलेताहै परइसमरे ने परदे
और आसनतक नहीं छोड़े यह सुनकर अश्वमुखने चाहा कि
प्रहास को पकड़लूं कि इतने में प्रहास ने कहा कि अरेअंधेतू
किसीको पहचानता भी है चोर कोई और होगा मैं तो साहूकार
हूं अश्वमुख बोला कि यह पुतली तो तुम्हींको बताती है प्रहा-
स बोला कि यह चांडाली झूंठी है वह बोला कि मैं इस बात
को नहीं मानता हूं यह मायानिर्मित पुतली मिथ्या नहीं बोल
सकती यह कहकर उसने ऐसी कुछ मायाकी कि प्रहासके पैरों
को पृथ्वीने पकड़लिया तब प्रहास बोला कि भाई मैं भी सच्चा
हूं और यह पुतलीभी सच्चीहै अश्वमुखने कहा कि तू क्योंकर
सच्चा है प्रहास बोला कि सुनो मैं चार लक्ष रुपये का ऋणीहूं
इससे म मायाकर्ता से विनय करता चला आता था कि मुझे
धन दे सो मायाकर्ता ने मेरी विनय को सुना और ये दो मंडप
धन से संचित मुझको दिये फिर इसमें इस पुतली और तेरे

बापका क्या है सो तैंने मुझे पकड़ाहै यहसुनकर अश्वमुख हँ-
सा और बोला कि मायाकर्ता चाहते तो दो तीन पहाड़ सोने
के करदेते अथवा अपने गुप्तकोष से तुझे देते परायाधन मा-
याकर्ता देनेवाले कौनथे तू सबझूंठ बोलताहै तब प्रहासबोला
अच्छा अब आप अप्रसन्न न हूजिये जो कुछमाल मैंने लूटाहै
सब एकगर्त में रख आयाहूं आप मेरे साथ चलिये और ले
लीजिये यह सुनकर वह म्लेच्छ चलनेपर उपस्थित हुआ प-
रंतु उसी पुतलीने फिर कहा कि अरे मरे तू क्यों छलकी बातें
बोलताहै तू गर्तमें कब सब मालको ले गयाथा तू तो वहीं मेरे
सामने सब खागयाथा और सब अपने पेटमें रखलिया हे अ-
श्वमुख तू इसके प्रपंचमें मत आइयो ऐसा न हो कि यह मरा
तुझको धर्षणाकरे अश्वमुख बोला कि अरी पुतली तू क्या ब-
कतीहै भला यह वस्त्र आसन परदा और शय्या आदिको क्यों
कर खागया वह बोली कि मायाकर्ताकी शपथ इसने सब पदा-
र्थ अपने पेटमें रख लियेहैं तब प्रहास बोला कि हे अश्वमुख
तुही सत्य बता कि कहीं मनुष्य ऐसे ऐसे पदार्थोंको खासकतेहैं
भलायहचांडाली पुतलीझूंठीहै या नहीं यहसुनकर अश्वमुख
चकितहुआ और बोला कि तू सत्यकहताहै अच्छा चल मैं तेरे
साथ चलता हूं यह कहकर उसने प्रहासके ऊपरसे अपनी
माया दूर करदी और प्रहास उसको साथ लेकर एक गर्त पर
पहुंचा और बोला कि इसमें उतरो और जैसेही वह उतरनेलगा
तैसे ही प्रहासने एक भुजाली ऐसी मारी कि उसका शिर कट
कर गिरपड़ा और कोलाहल उत्पन्नहोकर बाणी हुई मैं मारा
गया मेरा नाम अश्वमुख था इसके पीछे प्रहास ने उसके पास
का सब धन लेलिया और वहां से चलदिया परंतु थोड़ीहीदूर
गया होगा कि एक भयंकर शब्द प्रकट हुआ और एक और
मायावी म्लेच्छने आकर मायाबलसे प्रहासकोपकड़लिया और

वहांसे उसेलेकरचला इसमायानिर्मितखंडमें औरभी बहुरूपिये फँसे थे निदान उससमय उपहास उसओरको आनिकला और प्रहासको पकड़ाहुआ देखकर उसने अपना स्वरूप एक म्लेच्छ कासा बनाया और उसम्लेच्छके पासआया उसनेपूछा कि तू कौ-नहै वहबोला कि हमहैंसोहैं तुझेक्या जाअपना कामदेख तेरेपीछे यहकौनखड़ाहै जोतुझे मारनाचाहता है यहसुनकर उस म्लेच्छ ने पीछेफिरकेदेखा और इधरसे उपहासने एकभुजाली ऐसीतान के मारी कि उस म्लेच्छका शिरभुट्टासा उड़गया आंधियां आईं और वाणीहुई कि मैं मारागया मेरानाम रक्तवाहीथा तब प्रहास ने उपहासको हृदयसे लगालिया और उपहासने कहा कि गुरू महाराज मैं चारों ओरको फिरताहूं परंतु मार्ग नहींमिलता है भयसे मेरा हृदय अपनेआप धड़कताहै परमेश्वर बचावै ऐसा जानपड़ताहै कि हम किसीमायाकृत स्थानमें आफँसे हैं यहकह-त कहते अकस्मात् छलांग मारकर भागा और एक पर्वतकी कंदरामें जाकर गुप्तहोगया यह देखकर प्रहास चकित होगया कि आगे पीछे तौ कोई आयाही नहीं यह भाग क्यों गया वह इसी शोचमेंथा कि एक म्लेच्छने आकर दंडवत्की और कहा कि अरे प्रहास क्या तू सब संसारको मारडालैगा अरे निर्दयी थोड़ीसी दया तौकर यहदेश मायावी म्लेच्छोंसे भराहुआहै उन को तू कहांतक वध करैगा अंतमें वहीहोगा कि सवदिन चोर के तौ एकदिन साहुका कभी न कभी तूभी पकड़ा जायगा उस की बातको सुनकर प्रहासनेअपनेचित्तमें कहा कि येतौ भलेशि-क्षक हमकोमिले अब इनसे बात न करो और अपना कार्यसाधो यहसमझकर वह मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर अदृश्य होगया और दूर जाकर उस वस्त्रको उतारकर आगे बढ़ा और एक ऐसे स्थानपर पहुंचा जहां रेणुकाके सिवाय और कुछ न था और जहांसे वह रेणुका प्रारंभहुईथी वहां एकदर्पणके कांचकी शिला

लगीहुईथी और चारोंओरसे मार्ग बंदथा यह देखकर प्रहास घबराया कि अब किधरजाऊं परंतु फिर लाचारहोकर एकछलां-गमारी और उस कांचकीशिलाको फांदकर रेतियामेंजापहुंचा प्रकटहो कि महेन्द्रने जो मायानिर्मितखंड बनायाहै उसका यह अंतरीयखंडहै इसमेंसे निकलना उससमय तक दुर्लभ है जब तक महेन्द्र अपनी मायाका संहारनकरे निदान प्रहास उस रे-तियामें परमदुखी और मलीनमनहोकर फिरनेलगा चारोंओर कोभटकता फिरताथा और कहींसे मार्ग न पाताथा और चित्तमें कहताथा कि आजतो आफँसाहूं वह म्लेच्छ जो शिक्षा करताथा सत्य कहताथा मेरीसमझमें उसका यहीप्रयोजनथा कि तू ऐसी जगहमें जानेवालाहै जहां कैदहोजायगा निदान जब और कुछ दूरगया तब उसकी जीभ प्यासके मारे बाहर निकलआई तब उसने थैलीमें से जल निकालकर पिया उसके पीनेसे और भी अधिक प्यासलगी तबतो वह महादुखी होकर अपनी कुदशा पर आंसू बहानेलगा और शोचताथा कि अरेप्रहास तू थैली मेंसे कहांतक पानी निकालकर पीवेगा कंगाल होजायगा महा-राज शत्रुंजय जबकभी बनमें पियासे होतेथे तोमैं एकपात्र जल सवालाख रुपयेको बेचताथा सो आज बड़े शोककी बातहै कि पानीतो पानीभोजनभी थैलीहीसे निकालने पड़ेंगे यह लाखों रुपयेकी हानि मेरीहोगी इसीध्यानमें वह चलाजाताथा परंतु प्यास बहुत बुरीहोती है अबकीबार उसने हिममें रक्खाहुआ जलका पात्र निकाला और पानीपिया तबतो उसको पहिलेसे भी अधिक प्यासलगी और वह बलबलाकर भागा और देखा कि एकजगह थोड़ेसे सघनवृक्षलगेहैं और उनकेनीचे हरीदूब उगीहुई है जिसके देखनेसे दृष्टिको आनन्द होता है प्रहास दौड़कर उस हरीदूबपर गिरपड़ा कुछ प्यासभी कमहुई और शीतल बायुके लगनेसे चित्तभी कुछ ठिकानेसे हुआ फिर जो

एकओरको दृष्टिउठाकर देखातो एकभीति गंगायमुनी सोने चांदीकी बनीहुई दृष्टिआई जिसमें एकद्वारभी सोनेका बनाथा जिसके दोनोंपटोंमें शीशेजड़ेथे और भीतरकी ओर बागलगा हुआथा प्रहास वहांसे उठकरचला कि देखूं यह किसका बाग है और जब समीपगया तो शीशोंमेंसे देखा कि वहबाग क्याथा कि एक बैकुंठ बाटिकाथी कहीं पुंडरीकलगेथे और कहीं कल्हार फूलेथे जलकीधारा तरंगें भररहीथीं कहीं फूलोंपर भौंरों की भीड़ेंथीं और कहीं वसंतकी समीरथी उसबागके बीचोबीच में एकचबूतरा स्फटिकका बनाथा उसपर वितान तनाथा और वैडूर्यकेकलश उसपर चढ़ेहुएथे और उनपर नीलमणिके मयूर बैठेहुए चंचुमें मुक्ताओंकीमाला लियेहुएथे उस वितानके स्तंभ प्रकार प्रकारके रत्नोंसे जटितथे और चारोंओर उसके मोतियों की झालर लटकीहुईथीं और वायुसे हिलतीहुई ऐसी दीखती थीं मानो मुक्ताओंका समुद्र लहरारहा है और उस वितानके नीचे उत्तमवस्त्र बिछेहुएथे और उनपर एक सिंहासन परम शोभायमान स्थापितथा और उसपर महेन्द्र विराजमान था आहा क्याशोभाथी॥

चौ०। सोहैं पुष्पित वेलि नवेली। भ्रमर भीर छाई तिन भेली॥
डोलति पवन तहां उतकर्षा। प्रतिपद करत फूलकी वर्षा॥
निर्मल नीर बहैं जलधारा। सहित सुहावनि तरँग अपारा॥
नारि सुन्दरी नवलकिशोरी। करत विहार फिरैं चहुँ ओरी॥
मन्दिरअमितसुफटिकबनाये। लसैं तहां शोभा सों छाये॥
पद्मराग के खम्भा सोहैं। नीलमणी के पट मन मोहैं॥
माणिक की चौखटें सुहाईं। झालर मोतिन की लहराईं॥
मणिके दीपक सुभग सुहावैं। जगमगजगमगज्योतिदिखावैं॥
रत्नकूट के बने फुहारे। मुक्ताइव जल द्रवैं सुधारे॥

प्रहास इस आनन्दको देखकर समझगया कि यहसब सरंजाम तेरे पकडनेकेलिये किया है महेन्द्र यहां बैठाहुआ है यहां

तुम न ठहरो यद्यपि चलेजानेमें इसबड़े द्रव्यके हाथसे जानेकी हानिहै परंतु भयकास्थान है सबको छोड़ो और चलो यह विचारकर छलांगमारताहुआ भागा और उस रेतियामें कोसों तक चलागया परंतु रेतके सिवाय और कुछ दृष्टि न आया तब उसने अपने चित्तको एकाग्रकरके कहा कि हेईश्वर मुझे सुमार्ग मिलनेकाउपाय बतला इसीप्रकारसे जब और दूरनिकलगया तो वहां रेतियां नीचेसे और ऊपरसे सूर्य तपनेलगा॥

क०। जीवनको त्रासकर ज्वालाको प्रकासकर भोरहींतेभासकर आसमानछायोहै। धमका धमकधूप सूखत तलाब कूप पौनको न गौन भौन आगिमें तवायोहै॥ तकि थकिरहे जगसकल बिहालहाल ग्रीषम अचर चर खचर सतायोहै। मेरेजान काहू वृषभानु जगमोचनको तीसरो त्रिलोचनको लोचन खोलायोहै १॥

उससमय प्रहास ऊष्माके मारे पसीनोंमें भीगगया और इतना प्रस्वेद उसके शरीरसे बहा कि रेतभी गीलाहोगया निदान इसक्लेशमें तो वहथाही इसपर यह दूसरादुख उत्पन्नहुआ कि एक सुनहरीरंगका मयूर उड़ताहुआ आया और यहकहता हुआ चलागया कि बहुत क्षुधितहूं और प्यासाभीहूं यहकहने पर प्रहासको ऐसी क्षुधा उत्पन्नहुई कि वह भूखकेमारे बिलबिलानेलगा और चारोंओर वृक्षोंको ढूंढ़नेलगा कि कोई वृक्ष मिलजाय तो उसकी पत्तीखाऊं परंतु वहां वृक्षकहां और जो एकआधथाभी तो सूखासाखा ढुंडमुंडथा तब निराश होकर उसने अपनी थैलीमें से फुलका निकाले परंतु थैलीके बाहर आतेही वेसब मट्टीकेहोगये और प्रहासने उनको फेंकदिया कि इसमट्टी को क्याखाऊं इसकेपीछे प्रहासबोला कि हे धर्मराज अपनी दीहुई थैलीमें से वह मिष्टान्न दीजिये जोमैंने कालकारी को मारकर उसके बजारमें लूटाथा यहकहतेही थैलीमेंसे मिठाई निकली परन्तु मुखमें डालतेही मट्टीहोगई और मुख किरकिरा

होगया तब उसने उसेथूंकदिया इसीप्रकारसे जब पियास अधिकलगी तब थैलीमेंसे पानी निकालकर पिया परन्तु उसके पीनेसे औरभी अधिक ऊष्माबढ़ी तब प्रहास उठकरभागा कि कहीं सुपासमिलै परन्तु सुपासकहांथा अबकी ऐसीनिर्जन और निर्बनरूपति रेतीमें पहुंचा कि जहांबायुसे रेतकेबबूले उठउठकर भयानकरूपदीखतेथे वहस्थान प्रलयकानिवास मालूमहोताथा पृथ्वी प्रचंडअग्निकीसमान तप्तथी और धूप ऐसीथी कि वस्त्रों में अग्निलगजाती थी और बायुकाझोका अग्निकी लपटकी समान शरीरमें लगताथा निदान उसस्थानपर ऐसीऊष्मा प्रलयकारीथी कि किसीनरककीभी ऐसीअग्निनहोगी जहांजाओतहांअग्निकीसी ज्वालादृष्टिआतीथी किसीजीवकावहांनामनथा॥

क०। चण्डकरझारन झकोरतसरोषपौन तोरततमालगनमंदिनभारोसो। धर्षकैधरणिगिरि तमकैप्रतापजाके देखतमजेजरेज जगतनिदारोसो॥ तरुक्षणिछायासर सूखतसमुद्रबन करणबिचारिदेखो आतपअंगारोसो। छावतगगनधूर धावतधधातआवै चापचढ़ोग्रीषम गयन्दमतवारोसो १ चंडअतितापसों जलकीजिकर जीभजरयोजात जगतजलाकनिकेजोरते। ॒पसरसरितासुखाय सिकतातेभई धाईधूरिधौरन धराधरकेओरते॥ वेनीकिविकहत अनातपचहतसब अग्निसोंआतप प्रकाशचहूंओरते। तापसोंतपत धरामंडलअखंडलसुमारतंडमंडल दवासोंहोतभोरते२॥

अंतमेंथककर एकस्थानपर गिरपड़ा और भूंख और प्यासकेकारणसे अचेतहोगया तब फिर अपनेआप शरीरमें शीतलताउत्पन्नहुई और उसकी आंखेंखुलीं तो देखा कि पृथ्वीफटी और उसमेंसे एकस्त्रीनिकली और वहकहनेलगी कि अरेप्रहास यहांसे उसबागके द्वारपरजा जहां महाराज महेन्द्रबैठेहैं और वहांजाकर पुकार कि मुझको महाराजपर उतारीहुई रोटीमिलै तब तुझको भोजनमिलैगा और पियासबुझैगी यहसुनकर प्रहासने अपने मनमें कहा कि हाय अब मुझको महेन्द्रपरका

उताराभोजन खानापड़ा और एकश्वासभरकर आकाशकीओर देखा और रोनेलगा ौरबोला॥

दो०। बिनअहारइहजगतमें जीवनजीवतएक।
क्षुधालगेनहिं रहतहै मनमेंएकविवेक॥

निदान वहांसे उठकर कराहताहुआ उसबागके समीपआया उससमय महेन्द्रने दोदासियोंसे कहा कि प्रहासआताहै जाओ उसकी दुर्दशाको देखो मुझको उससे कुछपूछना न होता तौमैं इसीमायाखण्ड में उसे थकाथकाकर मारडालता अब जबतक मेराजीवितहै तबतक यह मायाखण्डभीहै और मेरेजीतेजी इस मायाखण्डका संहार मेरे सिवाय दूसरा नहींकरसक्काहै और न ये बहुरूपिये छुटसक्ते हैं यहकहके उनदोनों दासियों को भेजा और वे उसकीआज्ञासे बागकेद्वारपरआई और प्रहासको देख कर हँसीं औरपूछा कि अरेतूकौनहै और यहांक्योंआया है उस समय प्रहासको अपनानाम बतातेहुए लज्जाआई कि मैं महाराज शत्रुंजय का बहुरूपिया होकर इसदशासे यहां उपस्थित हूं क्या अपनानाम बताऊं निदान कहनेलगा कि मेरानाम क्या पूछतीहो मैं बिचारा एकदीनदुखी भूंखाप्यासा दिनदशाकामारा हुआ बटोही मार्गभूलकर यहां आनिकलाहूं और तुमसे अनुग्रहीतहोने की आशारखताहूं यहसुनकर उनदासियोंने आपसमें मुसकुराकर विनोदकिया कि देखरी आप क्या दीन और शांतरूप बनते हैं मानो कुछभी नहीं जानतेहैं यह तौ नहीं कहते कि हमारेचोटे पड़तक नहींरहे और हमारेकाटेहुएका मंत्र नहींहै और फिर प्रहाससे बोलीं कि जबतक तुम अपना निज नाम न बतलाओगे तबतक तुम्हारेसाथ किसीप्रकारका अनुग्रह न कियाजायगा यद्यपि हमजानती हैं कि आप वहमहात्मा हैं जिनका नाम ग्रामग्राममें विख्यात है और म्लेच्छोंके हृदय पर लिखाहै परन्त महाराज की आज्ञाहै कि नामपूंछलो इससे

जो तुम अपनानाम बतलाओ तो भोजन जलखानेपीनेको तुम को दियाजाय जिससे तुमतृप्तिहो यहसुनकर प्रहासने अनुमान किया कि महेन्द्रको तुझे लज्जितकरना है नहींतो जानबूझकर नाम पूंछने से क्या प्रयोजन है इससे चाहै कुछी होजाय तूभी अपना नाम मत बता॥

श्लोक-शठंप्रति शठंकुर्यात् आदरंप्रति सादरम्।
त्वयामम्लहृताःपंखाः मयातेमुण्डितंशिरः॥

निदान प्रहास इसीशोच बिचारमें था परन्तु परमेश्वर को उसकीबात रखनीथी इससे दोदासियां और आईं और बोलीं कि महाराज प्रहासको बुलातेहैं और कहतेहैं कि कुछनाम इत्यादि न पूंछो यहां उसको लिवालाओ यहसुनकर प्रहास को भयहुआ कि देखिये आज यहदुष्ट क्याकरता है मैंने ब॰तसे म्लेच्छोंको माराहै और कईबार इसका अपमानकरके इसको लज्जितकियाहै और इसकी प्रियाका शिरमूड़ाहै और बहुतसे म्लेच्छोंको वैष्णवकरके अपनासाथी बनाया है अब जो कुछ बुराई यह मेरेसाथ न करै वहथोड़ीहै आज तू बहुत नष्टस्थान में फँसा॰ यहांसे बचना दुर्लभहै क्योंकि थैली भी खानेपीनेकी सहायता नहीं करतीहै अच्छा जोही ईश्वरकी इच्छाहो आज यातो में और मेरी बातंही नहींरहैंगी अथवा यहदुष्टमहेन्द्रही न रहिजायगा और उक्तबातों को मन में बिचारताहुआ बाग के भीतर आया॥

चौ०। भयदरूपसोबागलखान्यो। फूलनिकोकंटकसमजान्यो॥
खिलतकलीजनुदांतबिरावै। करतप्रहारलताजनुआवै॥

निदान महेन्द्रके सिंहासनके सामनेआया और उसकोदंड॰ वत्‌की उसनेभी पूछा कि कहिये प्रहासजी आप अच्छे हैं वह बोला कि उसपरमेश्वरको धन्यबाद जो मुझे यहांलाया है तब महेन्द्रबोला कि हे प्रहास मैं तुझसे एकबात पूंछनाचाहताहूं तू

उसको सत्यसत्य कहदेगा प्रहासबोला कि क्या आप मुझको झूंठाजानतेहैं मैंने अपनी आयुभरमें एकबातभी झूंठनहींकही अच्छा पूछिये जोकुछ मैं जानताहूंगा आपके सन्मुख कहदूंगा उसको मानना न मानना आपकेआधीनहै यहसुनकर महेन्द्रने कहा कि यदि तू सत्यकहदेगा तो मैं तुझे इस अपनेबनायेहुए मायाखंडके बन्धनसे मुक्तकरदूंगा नहींतो इसीप्रकारसे भूंखा प्यासारखकर मारडालूंगा किसीकी सामर्थ्य नहींहै जो मेरेजीते जी तुझे कोईछुड़ासके प्रहासबोला कि आप कुछ पूछियेगाभी अथवा धमका धमकाकेही मारडालियेगा मैंनेतो कहदिया कि जो मुझको मालूमहोगा मैं कहदूंगा और जो आपको विश्वास-ही हमारा नहीं है तो हमसे नपूछिये महेन्द्रबोला कि नहीं तू सच्चाहै हमने केवल निश्चयकरने को येबातें कहीथीं अब मुझ को तुझसेपूछना यहहै कि तुझको रक्तबाहिनी नदीकेपार किस नेउतारा और तूनों रत्नाकरपर्वतपर परमेश्वरके पासथा फिर तू यहां क्योंकरआया यहसुनकर प्रहासहँसा और बोला कि महा-राज यहबाततो कोई गुप्तकरने के योग्यनथी आपने व्यर्थ मुझ से नियमछोड़ने नछोड़नेका कियासुनिये मैं अपने परमेश्वरका प्याराभक्तहूं जब मैं नदीकेइसपार किसीप्रकारसे नआसका तब मैंने प्रार्थनाकी परमेश्वरने मेरेलिये बैकुंठकी एकअप्सरा भेज दी उसने मुझे कंधेपरचढ़ाकर नदीके इसपार उतारदिया तब महेन्द्रनेपूछा कि तेरापरमेश्वर कौनहै यहसुनकर प्रहास बहुत हँसा और बोला कि मैंने आपसे कईबारकहा है मैं अद्भुत पर-मेश्वरका मुख्यगणहूं और उन्होंने मुझे दालबनाकर इसमाया कृत देशमें भेजाहै और फिरभी आप पूछतेहैं कि तेरापरमेश्वर कौनहै वहीएक हमारापरमेश्वरहै उसकीबराबर कोईनहींहै और नवह किसीमें मिलसकता है मैंतो केवल उसी एकपरमेश्वरको मानताहूं और उसीकी पूजाकरताहूं और बाकी और जो पौने

दोनों परमेश्वरहोगये हैं उनमेंसे में किसी को नहीं मानताहूं और इसबात को आप क्याजानें कि परमेश्वर से मेरी क्या गुप्त वार्त्ता है अब इससमय मैं आप से कहता हूं कि परमेश्वरको मायाकृत देशके रचने वालोंकी पूजा करनी अच्छी नहीं लगती इससे मुझको आज्ञा दीहै कि तू जाकर उनके उपासकों का वधकर परमेश्वर ऊपरे मनसे तुम सबके साथ कृपा करतेहैं परंतु तुमसे अंतःकरण से प्रसन्न नहीं हैं प्रसन्न वे उससे रहते हैं जो केवल उनहींका उपासक होताहै क्योंकि उनका यह वाक्य है कि जो परमेश्वर मरगया उसकी शक्ति और मायारूपी परमेश्वरता भी मरगई महाराज आप इतनेही में जानलीजिये कि मैं एक छटांक भरका और आप सहस्र मन के मेरी आपकी क्या समताहै परंतु यह परेमश्वरकी अप्रसन्नताही का कारण है जोमें सदैव आपको नीचा दिखाता हूं यह सुनकर महेन्द्र बोला कि तैंने जोकुछ कहाहै सब सत्यहै अब यह बता कि वह बैकुंठकी अप्सरा तुझको आकाश मार्गसे उड़ाकर लेगई थी अथवा नदी में गोतालगाकर पार लेआई थी प्रहास बोला कि वह अप्सरा मुझको लेकर उड़ी और उसने बीच नदीमें गोता लगाया तबमैं रक्तके नाले में डूबनेलगा उस समय उस नदीमें एक नौका प्रकटहुई अद्भुत परमेश्वर उसपर बैठेथे उन्होंने मुझको निकालकर नौकापर बैठालिया और पार लेचले उस समय मुझको परमेश्वर के शरीर से ऐसी बुरी गंध आई कि मैं चक्करखाकर अचेत होकर गिरपड़ा और मेरी आंख जो खुली तौ मैंने अपनेको नदीके पार पाया तब महेन्द्रने पूछा कि परमेश्वर के शरीर मेंसे दुर्गंध आनेका क्या कारण है वह बोला कि परमेश्वर दश दश दिनतक तौ शौच होकर जल नहीं सांचते मुखतौ कभी धोतेही नहीं हैं दांतों में फँफूंद लग गईहै जब बात करते हैं तौ ऐसी बुरी गंध मुख में से आती है

मानो संडासका द्वार खुलाहै और कारण इसका यहहै कि उन
को संसारी जीवोंके कार्यसे सावकाशनहीं मिलताहै कहीं किसी
को मारना किसीकोजिलाना किसीकाधन हरवाना किसीको धनी
बनाना और इसीप्रकारसे अनेककामहैं फिर आपही बतावें कि
कब शौचकरें और मुखधोवें यहसुनकर महेन्द्रबोला कि यद्यपि
तैंने अयोग्य बातेंकहीं परंतु कहींसबसत्य क्योंकि जब हमलोग
एक थोड़ेसे मायाकृत देशके प्रबन्धकरनेमें वे सावकाश रहतेहैं
और मुखतक नहीं धोतेहैं तो फिर परमेश्वरको तो सब संसार
का प्रबन्धकरना पड़ताहै मारना भोजन पहुंचाना आदि नाना
कामहैं उनकोतो क्षणमात्रका सावकाश न मिलताहोगा महेन्द्र
यहबात कहही रहाथा कि एक दासीने कहा कि महाराज आप
किसकी बातोंमें लगेहैं यह छलीहै भला इससेपूछिये कि रक्तवा-
हिनीनदीमें नाला कहांसेआया यहसुनकर महेन्द्र ने क्रोधकरके
कहा रंडातूक्याजानतीहै जो बीचमें बोलतीहै नदीमेंरक्तबहताहै
उसीको यहरक्तकानाला कहताहै इसमें मिथ्याक्याहै यहसुनकर
वहदासी चुपहोरही और महेन्द्रने फिरपूछा कि हेप्रहास यहतो
हमनेजाना कि तू परमेश्वरका मुख्यगण है परंतु तुझसे प्रत्यक्ष
में क्यों परमेश्वर अप्रसन्न हैं और कलि तेरा पूर्णशत्रु क्यों है
और यहभीकह कि परमेश्वरको कभीपहिले सावकाशभी मिला
था अथवा अबकभी मिलताहै तुझको यहसबबातें विदितहोंगी
प्रहासबोला कि कारण यह है कि परमेश्वरको एकसमय प्रहर
भरका सावकाश मिलाथा उससमय परमेश्वर ने विचारकिया
कि मैं कोई ऐसाकर्मकरूं जिससे मेरे उत्पन्न कियेहुए संसार में
एक कलिउत्पन्नहो निदान उससमय कुछकार्यतो परमेश्वरको
थाहीनहीं बैठे २ निन्दितकर्मोंको करनेलगे उससे कलिउत्पन्न
होगया और वह अपनेयुगमें मनुष्योंसे निन्दितकर्म करानेलगा
तब परमेश्वरने शोचा कि अब कोई ऐसाजीव उत्पन्नकरूं जो

इसकलिकाभी शिरकूटे और मेराभी अपमानकरे और मेरेपिता
की सदृशहो निदान परमेश्वर एकलाखवर्षतक चकलगाके मुझ
को उत्पन्नकिया और अपना पिता मुझेबनाया यहीकारणहै कि
मैं परमेश्वरकी दाढ़ीतक मूड़डालताहूं और कलि मुझसे इस
कारणसे शत्रुतामानता है कि मैं उसकाशिर कूटनेवालाहूं और
परमेश्वरने मुझसेकहदियाहै कि हेप्रहास तू मेरा पिताहै बहुत
बार तू मुझपर और मैं तुझपर प्रबलहोंगे और तू मेरे उपानह
लगावेगा और मेरी डाढ़ीमूड़ैगा परंतु आजकल मेरा यह अ-
धिकार जातारहाहै अब मुझको मायावी असुर और म्लेच्छोंके
कालका अधिकार मिलाहै और अबभी जबकभी परमेश्वरको
कलिकाअपमान और अपनी डाढ़ीमुड़ानेकी आवश्यकताहोती
है तो मुझे बुलालेतेहैं महेन्द्र इनबातों को सुनकर सुन्नहोगया
और बोला कि बताओ भला अब क्याकियाजाय सत्य है कि
परमेश्वरकी मायाको कोईनहींजानताहै अच्छा प्रहास अबएक
बातयहबतला कि परमेश्वर जो तुझको पारउतारगये हैं तो
अबक्या भविष्यरचगये हैं प्रहासबोला उससमयतो कुछनहीं
कहाथा परंतु कल एकपत्र उनकापार्षद मेरेपासलायाथा जो मैं
उसकेअनुसारचलूं तो सब मायाकृतदेश नष्टहोजाय परंतु यह
मेरीसामर्थ्य नहींहै कि उसपत्रमें जोआज्ञादी है उसकाप्रतिपा-
लन थोड़ाभी न करूं यद्यपि मेरीप्रतिष्ठा परमेश्वरकेसामने बड़ी
है तथापि मैंभी उनकीकोपाग्निसे भयभीतरहताहूं यहसुनकर
महेन्द्रबोला कि उसपत्रका आशयक्याहै मुझसेभीकह प्रहास
बोला कि मैं इतनी गुप्तबातेंतो परमेश्वरकी मेरे मुखसे निकल
गईं अब आगे कुछकहनेकी आज्ञानहींहै और मुझकोभी ऐसा
करना उचितनहीं है अब जोकुछ तुम्हें मेराकरनाहो सोकरो
और मैंभी परमेश्वरकी आज्ञाका पालनकरताहूं देखें आज तुम
मुझपर प्रबल रहतेहो अथवा मैं तुमको लज्जितकरताहूं यह

सुनकर महेन्द्रबोला कि हेप्रहास क्रोधमतकरै जहां इतनीबातें तैंनेबतलाईहैं तहां यह औरबतादे कि पत्रमें क्यालिखाहै प्रहासबोला कि आप मेरेपीछेनपड़ें में बतलायेदेताहूं उसमें लिखाहै कि मायाकृतदेशके नामी मायावियोंका वधकरना और महेन्द्र ने हमारीसहायताकीहै इससे उसे न मारना और उसकीआज्ञा मेंरहना परंतु मुझको इसआज्ञाके पालनकरनेमें यह संदिग्धताहै कि यदि मैं आपकी आज्ञामें रहना भी चाहूं तौ आपतौ मुझको परमशत्रुमानतेहैं आप मुझे अपनहित और आधीन काहेको समझेंगे और दूसरे जब में आपके आधीनहोगया तौ फिर बड़े २ मायावियोंको क्योंकरमारसकताहूं यदि मैं उनका वधकरूंगा तौ आप मुझको छली और प्रपंची जानेंगे और कहेंगे कि प्रहासने छलकिया तौफिरबताओ कि क्याकियाजाय महेन्द्रबोला कि जो तू मेरीआज्ञामें तनमनसेरहना अंगीकार करै और परमेश्वरके पत्रकेअनुसारभी मुझे पत्रदिखाकरचलै तौ मैंभी तुझसे निष्कपटहोजाऊं और तेरा बड़ाभारी अधिकारकरूं प्रहासबोला कि मैंने आपसे मिथ्या नहींकहा है पत्र मेरेपास मौजूदहै लीजिये देखिये यहकहकर उसने अपनीथैली से एकपत्र जिसपर अद्भुत के हस्ताक्षर मुद्रितथे और प्रहास कानाम उसकेअधिकार और प्रतिष्ठासहित लिखाथा निकाल कर महेन्द्रकोदिया उसने उसको बड़ेआदरसे हाथमेंलिया और शिरपरचढ़ाकर पढ़ा तौ उसमेंलिखाथा कि अरेप्रहास तू महेन्द्र की आज्ञामेंरहकर उसकी आधीनता स्वीकारकर और उसके साथ कोईप्रपंच अथवा छल मतकरै और अपनेसाथ निशाकरी और आनन्दा और रक्तकेशी और केसरीमाया और संडीनचपला और रतिकालआदि सबसेनापति और उपहास और चपलाआदि बहुरूपियों को लेकर महेन्द्रके पास जाना और महेन्द्रकोभी उचितहै कि इसकार्यकी साधनाके बदलेमें प्रहास

को बहुतसाधन पारितोषिकदे और उसको अपना मित्रसमझे
और अब प्रहास बड़े २ मायावियों का बधकरे जो दर्परूपी
मद्यसे प्रमत्त हैं उसपत्रको पढ़कर महेन्द्रने बारहसहस्रसुवर्ण
खंड अर्थात् अशर्फी और बारहसहस्र तारखंड अर्थात् रुपये
और बारहपात्र रत्नोंसेभरे मँगाये और सब प्रहासकोदेकर उसे
बैठनेको एक उत्तम रत्नजटित आसनदिया और कहा कि अब
तू जाकर अपने आधीन के सबप्रधानों को लेआ प्रहासबोला
कि मैं इसबनमें से जानहींसकता हूं क्योंकर उन्हें यहां लाऊं
यहसुनकर महेन्द्र ने उसीसमय कुछमायाकी कि उससे वह
कांच की शिला जो रेती में लगी थी टूटगई और उधर और
बहुरूपिये जो मारे २ फिररहेथे उन्हें मार्गमिला कि वे उछलते
कूदतेहुए रानी निशाकरीकी सेनामें चलेगये और यहां महेन्द्र
ने कहा कि अबमार्ग खुलगया कोई रोकनेवाला अब नहीं है
अबतूजा और सब शत्रुओंको मेरेपास लिवाला प्रहास बोला
कि महाराज ऐसा न हो कि मैं फिर मार्गभूलजाऊं आप किसी
म्लेच्छको आज्ञादीजिये कि वहमुझे मायाकृत विमानपर बैठा
कर पहुंचादे यह सुनकर महेन्द्रने एक म्लेच्छको उसके साथ
करदिया और वह प्रहासको लेकर निशाकरीकी सेनाके समीप
पहुंचा और बोला कि हे प्रहास महाराजसे जो कहआयेहो उस
को भूल मतजाना और बैठ न रहना नहीं तो महाराज फिर
तुझे पकड़वालेंगे प्रहास बोला कि हमने जो कहा सोकहा अब
हम नाहीं थोड़ाही करेंगे तुम जाओ हम आते हैं यह सुनकर
वहम्लेच्छ चलागया और प्रहास सभामें आया सबलोगों ने
उसे भेटदी और बड़े प्रेमसे उससे मिले और प्रहास अपने
स्थानपर आसीनहुआ उससमय रानी निशाकरीने बहुतसाधन
प्रहासपर नौछावरकिया और प्रहास वहां बैठकर अदृश्य खंड
का सब वृत्तान्त कहनेलगा और कुछ प्रपंच रचने का उद्योग

शोचतारहा परंतु उधर महेन्द्रने विचित्रमायाको पत्र लिखा कि तुम आनन्द वाटिकामें चलकर तय्यारीकरो हमभीआतेहैं जब यहपत्र विचित्रमायाकेपास पहुंचा और उसने चलनेकी तय्यारीकी तब सबसेना में यहबात प्रकट होगई और रानी निशाकरीनेभी सुना कि विचित्रमाया जाती है तब उसने प्रहाससे कहा कि अब अवश्य कोईआपत्ति आवैगी प्रहासबोला कि जो होगा देखलेंगे अभीसे चिंता करना क्याआवश्यकहै निशाकरी बोली कि हेप्रहास श्येननदी और चक्रवाकनदी और मयूरनदी ये तीनों बड़ेप्रबल नदहैं इनका हाल कोईनहीं जानता है और रक्तवाहिनी नदीतो आप देखआये हैं इसीप्रकारसे मायाकृत देशाधिपके मायाकृत बागभी अनेकहैं कि उनमें पुतलियां सब कार्य अप्सराओंकी भांति किया करती हैं यदि महेन्द्र उनमें से एक पुतलीकोभी आज्ञादे तो वह हमसबको पकड़लेजावे इससे जानपड़ता है कि आनन्द वाटिकामें महेन्द्रने विचित्रमायाको इसीनिमित्त बुलवायाहै प्रहास बोला कि नहीं मैं यहकहिआया हूं कि जोजो आपसे विमुखहैं मैं उनसबको प्रसन्नकरके आपके पास लाताहूं मालूमहोता है कि यह उसीकी तय्यारीहै निदान यहांतो आपसमें सबवार्तालाप कररहेहैं और सब बहुरूपियेभी सभामें हैं परंतु विचित्रमाया जाकर आनन्द वाटिका में पहुंची और उसने महेन्द्रके आने के कारणसे उसबागको नानापदार्थ और अलंकारोंसे अलंकृत कराया और महेन्द्रकीसवारी बड़ी धूमधामसे वहांआई साथमें सत्तरसहस्र म्लेच्छी परमसुन्दरी सबबसंतीवस्त्र धारणकियेहुएथीं और उसकेविमानकेऊपरऊपर रक्तवर्ण का बादल छत्रकीसमान मुक्ताओं की वर्षाकरताहुआ चलाजाताथा विचित्रमाया उसको देखकर उठखड़ीहुई और बागमें जो प्रासादबनाथा उसमें बारहसौद्वारथे और प्रतिद्वार में एकएकघंटा और एकएक शंखलटके हुए थे महेन्द्रके वहां

जानेपर वे सबघंटे और शंखबजनेलगे और विचित्रमाया ने ग्यारहसौ सुवर्णखण्ड भेटदिये और महेन्द्र वहांआकर सिंहासनपर विराजमान होगया और उसके चारोंओर अठारहसौ रत्नजटित आसनबिछगये और मंत्री और सभासद सबआकर वहांबैठगये इसबागमें जो नहरेंबहतीथीं वे नदीकेतुल्यथीं और जितने फुहारे इसबागमें चलतेथे वे सब सजीवमत्स्यों के मुख से छूटतेथे और मायाकृत पुतलियां वहांकी परमसुन्दरीस्त्रियों की समान थीं और उत्तमोत्तमवस्त्र और आभूषण धारणकिये हुए चारोंओर कामकाज करती फिराकरतीथीं कोई जलालय में जलके पात्रों को लगातीथीं और उनको शीतल करती थीं कोई मद्यालयमें मद्यकेपात्रोंमें उत्तमोत्तम मद्यभरभरकर रखती थीं कोई पाकशालामें मांसके व्यंजन स्थालियोंमें रखतीथीं निदान सब अपने २ कामों में लगी थीं और बहुतसी पुतलियां अपना शृंगारकरके विचरतीहुई ऐसीसुन्दरी और मनोहर मालूमहोतीथीं कि किन्नरी और अप्सराभी उनपरमोहितहोजायँ॥

क०। चरणधरें न भूमि विहरें जहांहींतहां फूले फूल फूलन बिछाये पर्य्यंकहें। भारके डरन सुकुमार चारु अंगनमें अंगनालगावें राजकेसरको पंकहें॥ कविमतिराम लखि बालापन बीचमुख आतप मलीनहोत बदन मयंकहें। कैसे सुकुमार वह बाहर विजनआवें बिजनबयारि लागे लचकत लंकहें॥

निदान वहां महेन्द्र आकर सिंहासनपर बैठगया और उस के वामाङ्ग में विचित्रमाया बैठी और पुतलियां सामने आकर नाचनेलगीं उससमय समीररूपा अपनी चारों बहुरूपनियों सहित वहां स्थित थी महेन्द्र ने मुसकुराकर उसकीओर देखा औरकहा कि लो समीररूपा अब तुम्हारी तौ प्रपंचविद्या अस्त हुई क्योंकि अब बहुरूपधारिणी प्रपंच और छलविद्या के आचार्य प्रहास ने हमारी आज्ञामेंरहना स्वीकार किया है अब मैं

उसकी वह प्रतिष्ठाकरूंगा कि जिसको देखकर संसार के राजा और महाराजा ईर्षाकरेंगे और तेराविवाह भी उसकेसाथ कर-दियाजायगा समीररूपाबोली कि उसमरेको अपनी एंड़ीचोटी पर नौछावर तौ में करडालूं वहमूत्र में अपना मुखतौ देखले श्रीमहाराज मुझसे ऐसा हास्य न करें जो श्रीमहाराजको मेरा अपमान करनाहो तौ मेराशिर मौजूद है और श्रीमहाराजको इस महाछलीका विश्वासथा और अबभी है उसे तौ मैं जानती हूं कि वह परमछली है महेन्द्रबोला कि वह आपसे तौ कमही छलकरताहै श्रीअद्भुत परमेश्वरने उसकी ऐसीही प्रकृतिबनाई है और ऐसीप्रतिष्ठा उसकी रक्खी है कि वैकुंठकी अप्सरा आकर उसको पीठपर चढ़ाकर मायाकृत नदीकेपार उतारगई और परमेश्वर आपभी आयेथे ॥

सो०। यह प्रहास छलरूप है अद्भुतको मुख्यगन।
मायातासु अनूप कोज्ञाता है सर्वथा॥

तेरीयह सामर्थ्यहै कि तू उसको नौछावर करसके वहनिशा-करी आदिको लेनेगया है और अबकी उसने भल मनसाईके साथ नियम कियाहै यहसुनकर समीररूपा बहुतहँसी तब महे-न्द्रने क्रोधकरके कहा कि अरे कुलक्षणी तू मेरीबातपर हँसती है क्यामुझे झूंठाजानती है यहसुनकर समीररूपाने दोनोंहाथ बांधकर कहा कि महाराज मुझदासीकी क्यासामर्थ्य है जो मैं आपपर हँसूं प्रहास एकबारक्या दोबार सबशत्रुओंको लावैगा महेन्द्रबोला कि तू व्यंगबात बोलकर मुझको बनाती है जो प्रहास न भी लावैगा तौ मेरेहाथसे बचकर कहांजायगा समीर रूपाबोली श्री महाराज आपचाहें मेरेदोसौ उपानहमारें चाहे मेरावधकरें परंतु मैं यही कहूंगी कि वह छलकरके निकलगया कभीकिसीको न लावैगा उससमय विचित्रमाया बोली कि अरी समीररूपा तुझको क्याहोगया है जोतू श्रीमहाराजकी बातको

दुलखती है और व्यर्थबातें करती है तू नहीं जानती है कि ॥

दो०। होतिबुद्धि नरपतिनकी सब बुद्धिनकी इन्द्र ।
हमतबकीबुधिनिशिसदृश नृपकीबुधिजिमिचन्द्र ॥

इससे तुझको उचितहै कि तू चुपरह तब महेन्द्रबोला कि हे विचित्रमाया देखो मैं अभी इसमृतकरूपाको झूठा बनाताहूं और इसके मुखमें खेहदेताहूं यह कहके उसने एक पुतली को बुलाया और कहा कि अरीरक्तनेत्रा मुक्तांगी इधरआ यह सुन कर एकपुतली परमसुन्दरी रत्नोंके आभूषण धारण कियेहुए आई महेन्द्रने उससे कहा कि तू निशाकरीकी सेनामें जा और प्रहाससे हमारा आशीर्वाद कहिके कहियो कि आपकी कुशल पूछी है और कहाहै कि हम आनन्दवाटिकामें तुम्हारी बाटबड़ी देरसेदेखरहेहैं इससे शीघ्रआकर अपने चरणारविंदसे इसवाटि-काकोपवित्रकीजिये और जोकुछआप वचनदेगयेथे उसको पूरा कीजिये अर्थात् अपनेसाथ सबको लेतेआइये यहसुनकर वह पुतली रानीनिशाकरीकी सेनामेंगई उसकोदेखतेही सब घबरा गये और अपने २ मायाकृतअस्त्र सँभालनेलगे परंतु उसपुत-लीनेकहा कि मैं युद्धकरने नहींआईहूं कि श्रीमहाराज परममान्य सर्वोपमायोग्य छलविद्याचार्य श्रीप्रहासजी के पास महाराजम-हेन्द्रका संदेशा लेकरआईहूं यहसुनतेही प्रहासकामन धड़कने लगा कि देखिये अब क्याहोता है और उसपुतलीने उसके समीपपहुंचकर कहा कि महाराजने आपको आशीर्वादकहा है कुशलपूछी है और कहा है कि हम बाटदेखरहेहैं आप आकर अपनावचन पूराकीजिये इसअवसरमें उपहास भुजालीतानकर उस पुतलीकी पीठकी ओर आखड़ाहुआ परंतु प्रहासने सैनसे उसे निषेधकिया और पुतलीसे बोला कि तुम अलगचलो तो मैं उत्तरदूं और उठकर उसको एकांतमें लिवालाया औरकहा कि महाराजसे मेरी साष्टांगदण्डवत् कहना और मेरीओरसे

विनयकरना कि मैं आपकेप्रतापसे सबको उपस्थितकरचुकाहूं कल लेकरआऊंगा यहउत्तरपाकर वहपुतलीतो चलदी और इधर प्रहासने शोचा कि जो क्षणटला सोहीसही और उसपुतलीने जाकर जोकुछ प्रहासने कहाथा सब महेन्द्रसे कहा तब महेन्द्रनेकहा कि क्योंसमीररूपा तेंनेदेखा कि मेरेमित्र प्रहासने क्याकहलाभेजा है यहसुनकर समीररूपाने विनयकी कि महाराज सत्यहै वह अवश्य सबकोलावैगा और यहकहके प्राताको और देखकर बहुतहँसी यहदेखके महेन्द्र क्रोधसे लालहोगया और उधर प्राताने हँसीको बहुतरोका परंतु नहींरुकी और वह भी हँसपड़ी तबतो महेन्द्रबोला कि इस अपमानकरनेका दंड तुमको देनायोग्यहै परंतु कल दोनोंको निश्चयकराके दंडदूंगा और जो प्रहासआया तो फिर बहुतहीठीक तुमकोकरूंगा समीररूपाबोली कि महाराज आपतो हमारे स्वामीहैं जोचाहे सो कीजियेगा परंतु हम बहुरूपिनी हैं इससे बहुरूपियोंके छलको पहचानतीहैं भला कलक्याहै और आज क्याहै जो सब उपस्थितही हैं तो क्यों लेकर नहींचलाआता यहसुनकर महेन्द्र बोला कि अच्छामैं तुझे अभी निश्चयकरायेदेताहूं और यहकहके उसने उसीपुतलीको फिर बुलाकरकहा कि तू प्रहासके पास फिरजा और मेरीओरसे आशीर्वादकहके कहियो कि जैसाही कल और जैसाही आज॥ तबसमीपकछुदुर्लभनाहीं॥ अभी सबकोलेकर पधारिये और जो इसमें कुछछल अथवा प्रपंच होगा तो मायाकर्त्ताकी शपथखाकर कहताहूं कि तेरेशरीर के खंडखंडकरके श्वानोंको खिलादूंगा यहआज्ञापाकर वह पुतली फिरगई और जब सेनाकेनिकट पहुंची प्रहासको उसकेआनेका संदेशापहुंचा और वह सुनतेही कांपनेलगा कि अब इसका आना उत्पातसे व्यतिरिक्त नहींहै कुछरंग कुरंग दिखाईदेता है इस अवसरमें उसपुतलीने आकर संदेशासुनाया उसकोसुनकर

प्रहासने कहा कि तुमजाकर मेरीओरसे विनयकरदो कि मैं आनन्दवाटिकामें नआऊंगा निष्प्रभभवनकेनीचे प्रत्यक्षखंडमें जो मखमलीडेरोंकी सभा आपकी खड़ीहै वहां आपआइये वहीं मैंभीआताहूं यहसुनकर पुतलीचलीगई और उसनेसबवृत्तांत महेन्द्रसेजाकर कहा तब महेन्द्रनेकहा कि क्यों समीररूपा अब सबआतेहैं अबबता कि तेरा क्याहाल कियाजाय समीररूपा यह सुनकर चुपहोरही और महेन्द्रने दासियोंको आज्ञादी कि तुम जाकर सभाके मखमलीडेरेको अलंकारोंसे युक्तकरो हमभीआते हैं यहआज्ञापाकर दासियां चलीं और महेन्द्रने फिर प्रहासकेपास समाचारभेजे किअच्छा हम मखमलीसभाके डेरेमेंचलतेहैं और वहीं आज तुमसब भोजनकरना यहसमाचारपाकर प्रहासने निशाकरी और आनन्दाआदि सबप्रतिष्ठित मायाविनीरानियोंसे कहा कि मैं महाराज महेन्द्रको वचनदे आयाहूं कि जितने मेरे आधीनहैं उनसबको मैं आपकेपास लाऊंगा इससे तुमसब मेरे साथचलो और महाराज महेन्द्रके पाओंपरगिरो यहसुनकर-निशाकरीबोली कि हमसे यह कभी न होगा हमको लड़कर मर जाना स्वीकारहै तब प्रहासने उत्तरदिया कितुम्हारीहानि क्या है जब तुमसबजाकर पाओंपरगिरोगे तब महेन्द्र चलाजायगा और इसकामकेबदलेमें मुझपर कृपाकरके भीमविक्रमाको छोड़ देगा तुमसब फिर विमुखहोजाना और मैं अपने राजपुत्रकोले-कर इसमायाकृतदेशसे चलाजाऊंगा कहावतहै कि आपजीता तो जगजीता और जो तुमको लड़नाहीहै तो बिगाड़करते क्या कुछदेरलगतीहै और जो तुमसब मेराकहना नमानोगी तो मैं महाराज महेन्द्रकेपास जाकर कहदूंगा कि मेराकहना कोईनहीं मानताहै आप जानें और वेजानें ऐसाकहनेसे मेरेप्राण बचजा-यँगे और तुमसब मारीजाओगी यहसुनकर रानी निशाकरी बोली कि हमकोमरना स्वीकारहै परंतु उसदुष्टकेपास हमनजायँ-

गी प्रकटहो कि प्रहासको कुछ प्रपंचरचनाथा इससे ऐसी बातें अपनीसेनाके सेनापतिआदिसे कहताथा जिसमें महेन्द्रका कोई दूत जो सुनताहो तो वह महेंद्रसे जाकरकहै और महेन्द्रको वि-श्वासहोजाय कि प्रहास निश्चय हमारीओरसे सबको लानेका उद्योगकररहाहै और यहनअनुमानहो कि कुछ छलकरनाचाह-ताहै और दूसरे यहभी देखनाथा कि देखूं इनसब लोगोंकेचित्त युद्धकेनिमित्त दृढ़हैं अथवा नहीं निदान जब उसनेसबकेचित्तको दृढ़पाया तब रानी निशाकरीआदिसे परोक्षमेंकहाकि मैं तुमसब केचित्तके विश्वासकोदेखताथा अबतुम सबको उचितहै कि सेना में बिनाजताये तुमसब सभासद और सेनापति एकएकांतडेरेमें चलकर ठहरोक्योंकि यहांकुछ न कुछ आपत्तिआवेगीयहकहकर प्रहास सबके समक्षमें यहकहकर कि मैं महाराजके पासजाताहूं जिसकोमेरेसाथ आनाहोआवो आप एकडेरेमें चलागया रानी निशाकरीआदि तो उसके प्रपंचरचनेकाहाल जानतीहीथीं इससे उन्होंनेभी कहाकि हमसब आपकेआधीनहैं जहां आपलेचलिये-गा वहीं चलेचलेंगे यहकहकर सब एकांतमेंआये चारोंबहुरू-पियेभी उनकेसाथथे जब सबआये तब प्रहासनेकहा कि चलते तो सबहैंही आवो थोड़ीथोड़ीसी मद्यपीलें यहकहकर प्रहासने बहुरूपियोंसे मद्यलानेको कहा औरवे मूर्च्छाकर चूर्णमिलीहुई मद्यले आये और वहीं सबकोपिलादी उसकेपीनेसे रानीआनंदा और मयूरतुण्ड और रतिकाल और संडीनचपला और रानी निशाकरी और मारीचआदि कईसौ सेनापति मूर्च्छितहोगये प्रहास ने उनसबको उठाकर अपनीथैलीमें रखलिया और इस थैलीका वृत्तान्त पूर्वमें वर्णनहोचुका है कि उसमें सातनगर हैं और सम्पूर्ण संसारकोचाहो तो उसमें रखलो क्योंकि वहथैली प्रहासको श्रीमहानुभाव धर्मदेवने दीथी और उनकीदीहुईथैली में ऐसाप्रभावहोना कोईआश्चर्यनहींहै निदान उनसबको थैली

में रखने के पीछे प्रहासने और बहुरूपियों से कहा कि सेनाके कुछ योद्धाओंको बुलालाओ यहसुनकर वे कईसौम्लेच्छ और म्लेच्छियोंको बुलालाये प्रहासने उनकोभी मद्यपिलाके मूर्च्छित करदिया और सबका स्वरूप रानी निशाकरी और आनन्दा आदिकासा बनाया और सबको चैतन्यकरके कहा कि तुमसब मेरेसाथ चलो महेन्द्र के यहां में चलताहूं वहां तुमसब अपने को रानीनिशाकरी और आनन्दाआदि जिसका जो स्वरूप है सोही बताना और महेन्द्रके पैरोंपरगिरकर कहना कि जो कुछ अपराध हमसे हुए हैं उनको आप अपनी कृपादृष्टि से क्षमा कीजिये देखो इसकहनेमें जीभ न रुकनेपावे और जो ऐसा न होगा तो मैं सबको मारडालूंगा यहसुनकर वे बोले कि हमसब आपके आधीनहैं जैसा आपकहतेह वैसाहीकहगे निदान सबके सबमायाकृत विमान निर्मितकरके सवारहुए और उपहासने तो कहा कि ऐसाछल मुझको नहींआता है में नहीं जाऊंगा और और सबबहुरूपिये मायाकृत विमानोंपर बैठकर प्रहासके साथ होलिये और वहांसे नानाप्रकारके बाद्यबजवाते और बंदीजनोंसे स्वस्त्ययनसुनते बड़ीधूमधामसे चले सबके शिरोंपर मायाकृत पक्षी छायाकरतेजातेथे और आगे२ प्रहासकाविमान और उस के पीछे और सबमायाकृत विमानोंपर बैठेहुए चलेजातेथे और वहां रानीविचित्रमाया ने महेन्द्रकी आज्ञासे आकर मखमली सभाको नानाअलंकारोंसे अलंकृत कियाथा उत्तमवस्त्र बिछवा दिये स्फटिकके कंवलों में दीपक प्रज्वलित कराये चारोंओर सुगंधित द्रव्योंको रखवादिया पुष्पपात्र नानाप्रकारके सुगंधित फूलोंसे युक्त स्थापित कराये सिंहासनके चारोंओर वैडूर्य और माणिक और गोमेद और पुषराज आदि रत्नोंके बनेहुए सहस्रों आसन बिछवादिये नृत्य और गान करनेको परमसुंदरी स्त्रियां बलवाई चारोंओर सुगंधित जलका छिड़काउ करायागयासेवक

गी प्रकटहो कि प्रहासको कुछ प्रपंचरचनाथा इससे ऐसी बातें अपनीसेनाके सेनापतिआदिसे कहताथा जिसमें महेन्द्रका कोई दूत जो सुनताहो तो वह महेंद्रसे जाकरकहै और महेन्द्रको विश्वासहोजाय कि प्रहास निश्चय हमारीओरसे सबको लानेका उद्योगकररहाहै और यहनअनुमानहो कि कुछ छलकरनाचाहताहै और दूसरे यहभी देखनाथा कि देखूं इनसब लोगोंकेचित्त युद्धकेनिमित्त दृढ़हैं अथवा नहीं निदान जब उसनेसबकेचित्तको दृढ़पाया तब रानी निशाकरीआदिसे परोक्षमेंकहाकि मैं तुमसब केचित्तके विश्वासकोदेखताथा अबतुम सबको उचितहै कि सेना में बिनाजताये तुमसब सभासद और सेनापति एकएकांतडेरेमें चलकर ठहरोक्योंकि यहांकुछ न कुछ आपत्तिआवैगीयहकहकर प्रहास सबके समक्षमें यहकहकर कि मैं महाराजके पासजाताहूं जिसकोमेरेसाथ आनाहोआवो आप एकडेरेमें चलागया रानी निशाकरीआदि तो उसके प्रपंचरचनेकाहाल जानतीहीथीं इससे उन्होंनेभी कहाकि हमसब आपकेआधीनहैं जहां आपलेचलियेगा वहीं चलेचलेंगे यहकहकर सब एकांतमेंआये चारोंबहुरूपियेभी उनकेसाथथे जब सबआये तब प्रहासनेकहा कि चलते तो सबहैंही आवो थोड़ीथोड़ीसी मद्यपीलें यहकहकर प्रहासने बहुरूपियोंसे मद्यलानेको कहा और वे मूर्च्छाकर चूर्णमिलीहुई मद्यले आये और वही सबकोपिलादी उसकेपीनेसे रानीआनंदा और मयूरसुण्ड और रतिकाल और संडीनचपला और रानी निशाकरी और मारीचआदि कईसौ सेनापति मूर्च्छितहोगये प्रहास ने उनसबको उठाकर अपनीथैलीमें रखलिया और इस थैलीका वृत्तान्त पूर्वमें वर्णनहोचुका है कि उसमें सातनगर हैं और सम्पूर्ण संसारकोचाहो तो उसमें रखलो क्योंकि वहथैली प्रहासको श्रीमहानुभाव धर्मदेवने दीथी और उनकीदीहुईथैली में ऐसाप्रभावहोना कोईआश्चर्यनहींहै निदान उनसबको थैली

में रखने के पीछे प्रहासने और बहुरूपियों से कहा कि सेनाके कुछ योद्धाओंको बुलालाओ यहसुनकर वे कईसौम्लेच्छ और म्लेच्छियोंको बुलालाये प्रहासने उनकोभी मद्यपिलाके मूर्च्छित करदिया और सबका स्वरूप रानी निशाकरी और आनन्दा आदिकासा बनाया और सबको चैतन्यकरके कहा कि तुमसब मेरेसाथ चलो महेन्द्र के यहां मैं चलताहूं वहां तुमसब अपने को रानीनिशाकरी और आनन्दाआदि जिसका जो स्वरूप है सोही बताना और महेन्द्रके पैरोंपरगिरकर कहना कि जो कुछ अपराध हमसे हुए हैं उनको आप अपनी कृपादृष्टि से क्षमा कीजिये देखो इसकहनेमें जीभ न रुकनेपावे और जो ऐसा न होगा तौ मैं सबको मारडालूंगा यहसुनकर वे बोले कि हमसब आपके आधीनहैं जैसा आपकहतेहैं वैसाहीकहेंगे निदान सबके सबमायाकृत विमान निर्मितकरके सवारहुए और उपहासने तौ कहा कि ऐसाछल मुझको नहींआता है मैं नहीं जाऊंगा और और सबबहुरूपिये मायाकृत विमानोंपर बैठकर प्रहासके साथ होलिये और वहांसे नानाप्रकारके वाद्यबजवाते और बंदीजनोंसे स्वस्त्ययनसुनते बड़ीधूमधामसे चले सबके शिरोंपर मायाकृत पक्षी छायाकरतेजातेथे और आगे२ प्रहासकाविमान और उस के पीछे और सबमायाकृत विमानोंपर बैठेहुए चलेजातेथे और वहां रानीविचित्रमाया ने महेन्द्रकी आज्ञासे आकर मखमली सभाको नानाअलंकारोंसे अलंकृत कियाथा उत्तमवस्त्र बिछवा दिये स्फटिकके कंवलों में दीपक प्रज्वलित कराये चारोंओर सुगंधित द्रव्योंको रखवादिया पुष्पपात्र नानाप्रकारके सुगंधित फूलोंसे युक्त स्थापित कराये सिंहासनके चारोंओर वैडूर्य और माणिक और गोमेद और पुषराज आदि रत्नोंके बनेहुए सहस्रों आसन बिछवादिये नृत्य और गान करनेको परमसुंदरी स्त्रियां बलवाईं चारोंओर सुगंधित जलका छिड़काउ करायागयासेवक

हाथोंमें हेमदंड लियेहुए आज्ञाभिलाषी खड़ेहोगये और सभाके भीतर परमसुंदरी दासियां डोलफिरकर अनेकप्रकारके पदार्थों का प्रबन्ध करनेलगीं ॥

जयकरीछंद । दासीसब तहँ आज्ञापाय । कीन्हीरचना सकल बनाय ॥
फरशअनूप अनेकन लाय । क्रमसों तहँ दीये डसवाय ॥
अलंकार मणिवनेमँगाय । सबथरसबदिशि दियेलगाय ॥
कियेप्रज्वलित दीपकबाम । जगमगहोन लग्योसोठाम ॥
वरफूलनिके गुच्छालाय । मणिपात्रनिमें दये धराय ॥
इविधि नवेली सुंदरिबाम । कियोअलंकृत सोशुचिठाम ॥
शोभापरम अनूप सुहाय । अचरजकरै लखै जो जाय ॥

जब सबप्रकारसे वहसभा अलंकृत होचुकी तब महेन्द्रसे कहलाभेजा और वह उसीसमय सहस्रों दास और दासियोंसे आवृत बड़ी धूमधामसे उस मखमली सभामेंआया और सिंहासनपर विराजमानहुआ और सबसभासदभी आकर अपने अपने आसनोंपर बैठगये इस अवसरमें नगाड़ोंके बजनेका शब्द सुनाई दिया और मायाकृत पक्षियोंने आकर समाचार सुनाये कि छलविद्याचार्य प्रहासजी रानी निशाकरी आदिको साथ लियेहुए आतेहैं यह सुनतेही महेन्द्रने प्रतिष्ठित म्लेच्छों को उनकी आगौनीकेलिये भेजा और वेसब प्रहास आदिको आदर सहित सभामें लिवालेगये जिससमय वेसब महेन्द्रके सन्मुख पहुंचे सबकेसब दौड़कर उसके चरणोंमें गिरपड़े और अपने अपराधोंकी क्षमा चाहकर विनयपूर्वक बोले कि हे महाराज हमसब आपके अनुचर और दास हैं हमारे अपराधोंको क्षमाकीजिये और जो आप हमको क्षमायोग्य न समझें तौ जो इच्छाहो सो दंडदीजिये हम दासोंको उसदंडके ग्रहण करने में कुछ शंका न होगी ॥

चौ० । हमहैं अनुचर दासतिहारे । करहुक्षमा अपराध हमारे ॥
आपनजानि शरणअबदीजै । यहअतिसुयश जगतमेंलीजै ॥

उससमय महेन्द्रने सबको उठाकर हृदयसे लगालिया और सबकी पीठपर कृपाकाहाथ फेरकरकहा कि तुम्हारा कुछ अपराध नहींहै परमेश्वरने जोकुछ मेरेप्रारब्धमें लिखाथा वहहुआ जैसा कि कहाहै कि॥

श्लोकचरण॥

यन्नभवतितन्नभाव्यस् भवतिचभाव्यस् विनाप्रयत्नेन॥

यहकहकर महेन्द्रने सबकोपारितोपिकदिया और प्रहासको बहुतसा धनदेकर कईपात्र रत्नोंसे भरेहुएदिये और सब सेना पति अपने २ योग्यस्थानोंपर बैठगये और प्रहास महेन्द्रके समीप बैठा समीररूपा तो पहिलेहीसे इसबातको नहीं मानती थी कि प्रहास सबको लिवाकर लावेगा और महेन्द्रसे इस विषयमें कहासुनीभी हुईथी निदान उसने रानी निशाकरी और आनन्दा आदिको भलेप्रकारसे देखा और पहिंचानगई कि ये सेनापति स्वयंनहीं हैं किंतु उनका स्वरूप बनाकर दूसरेलोग आये हैं यह जानकर उसने प्रातासेकहा कि देखतो वह जो आनन्दा बैठीहै उसके दांतपरदांत चढ़ाहुआहै और आंखोंके नीचे जो गाड़के चिह्नहैं वे बनायेहुए हैं क्याही अद्भुत स्वरूप बनाये हैं यहसुनकर प्राताबोली भैन तुमने अच्छापहिचाना मैं शपथखाकर कहतीहूं कि मुझसेतो थोड़ाभी नहीं पहिचानागया उससमय प्रहास उनदोनोंको बातें करतेहुए देखकर उनके अधरोंकी चालसे जानगया कि येदोनों आपसमें यह कहरही हैं कि प्रहास इनसबके स्वरूप बदललायाहै यह जानतेही उसने डाटा कि हे समीररूपा तू बेरबेर सबकामुख देखतीहै मेरीजान में तुझको यह संदेह कि मैंने कुछ छलकियाहै सो मुझसे ऐसी बात महाराज मायाकृत देशाधिपके सन्मुख नहीं होसकती है भलाकहीं सूर्यकेसामने दीपककाभी उजेरा होताहै जबयहवार्तालाप महेन्द्रने सुना तब वहतो पहिलेहीसे समीररूपाको झूंठा

बनारहाथा उसने अनुमानकिया कि यह समीररूपा द्रोहके भावसे मेरेचित्तमें शंकाडालना चाहतीहै और दोनोंका एककर्म होनेसे प्रहासकी उन्नती नहीं चाहती है यह विचारकर उसने कहा कि हेसमीररूपा अब जोतू कुछकहैगी तौदंडपावैगी तुझे लज्जानहीं आती कि बहुरूपिनी होकर तेरासब कहना मिथ्या हुआ समीररूपा महेन्द्रको क्रोधमें देखकर चुपहोरही इसअव-सरमें प्राता किसीकार्य के निमित्त सभाके बाहरगई उसको जातेहुए देखकर चपलाभी उसके पीछे २ बाहर चलागया इस प्रयोजनसे कि समीररूपा सबखेल बिगाड़ना चाहती है मैं कुछ उपाय ऐसाकरूं कि यह बिगाड़ने नपावै निदान बाहर जाकर उसने देखा कि प्राता दूरचलीगई है और अभीदेरमें आवैगी यह देखकर उसने तुरंत अपना स्वरूप प्राताकासा बनाया और सभाकीओरचला और यहां समीररूपापर खड़ेखड़े फिर न रहागया और चित्तमें बिचार करनेलगी कि आज इसदुर्बुद्धी महेन्द्रकी कुदशाआई है इससे किसीप्रकारके समझानेसे नहीं समझताहै परंतुतैंने बहुतदिनोंसे इसकाअन्नखायाहै इससेतुझे उचित है कि एकबार फिर उसको चितादे यह बिचारकर वह आगेबढ़ी कि महेन्द्रके पासजाकर कानमें प्रहासके छलकरनेका हाल शपथखाकरकहदूं परंतुवह महेन्द्रकेसमीप पहुंचनेनहींपाई थी किइतनेमें चपला प्राताकारूप धारणकियेहुए वहांआगया और उसने समीररूपाको बुलाया कि इधरआओ और जब वह समीपआई तब उसका हाथपकड़कर कहा कि मेरेसाथ बाहर चलो मुझे कुछ मंत्रकरनाहै समीररूपा उसके साथसाथ बाहर आई और जब एकांतमेंपहुंची चपलाने मूर्च्छाकरचूर्ण उसके मुखपरमारा उससमय समीररूपाने सम्हलनाचाहा परंतु चप-लाने तत्काल पाशमारी कि उसमें वह उलझगई और मूर्च्छा करचूर्णके प्रभावसे मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी तब प्रहास उसको

उठाकर वनमेंलेगया और वहां उसको चैतन्यकरके उसके हाथ पैर बांधदिये और कहा कि क्योंरी दुष्टा गुरानी तू बहुरूपियों को पकड़वानाचाहतीहै अब कहैतो तेरी नाककाटलूं यहकहकर चपलाने उसके दोतीनथप्पड़मारे औरकहा कि तू नहीं जानती है कि हमारेगुरू विनाउनके कोईकाम नहींकरते हैं और फिर भी तू उसमें बाधाडालतीहै तबतो समीररूपा मारखाकर कोसनेलगी कि अरे मरे नारकटामने तू क्यों मुझे मारेजाता है तेरे गुरूको जीताजी पृथ्वी में गड़वाऊं और तेरा मोहनभोग बनाकर खाऊं नपूते तेरे हाथटूटें और तू मरे और संसार में कुछ सुख न देखनेपावै यहसुनकर चपलाने कुछउत्तर नहींदिया और उसे एकवृक्षसे कसके बांधदिया और कहा कि तू यहां पड़ी २ अब टर्रायाकर और आप फिर सभाकी ओर चलदिया अब सभाका वृत्तांत सुनिये कि प्रहासने बैठे२ उसको नानाप्रकारके अमोलपदार्थोंसे अलंकृत देखकर विचारकिया कि इससबधन और पदार्थोंको लेनाचाहिये और जोबनपड़े तो महेन्द्रकोनरकगामी करना चाहिये यह शोचकर कुछ गुनगुनानेलगा उसकी वाणी तो बरदानीथीही उसकोसुनतेही महेन्द्रके हृदयमें उसका गानसुननेकी प्रीति उत्पन्नहुई और वहबोला कि हे प्रहास जो चित्तअप्रसन्ननहो तो कुछगाओ और हमको कृपापात्रबनाओ यहसुनकर प्रहासबोला मेरागाना आपको क्यों रुचैगा गाना तो चन्द्रमुखी स्त्रियोंकाहीहै कि उनकास्वरूप भी देखते जाइये और अपनेमनकी उमङ्गको भी निकालतेजाइये मुझ विचारे वृद्ध कुरूपमनुष्य का गानाक्याहै यह सुनकर महेन्द्र बोला कि आपको बहाना न करनाचाहिये मैंने आपको गातेहुए बहुत वार सुनाहै इसदेशमें तो आपकीसमान कोईगातानहीं है प्रहास बोला कि यहसब आपकीबड़ाई है जो मुझसे क्षुद्रकी आप प्रशंसा करतेहैं मैंने तो बहुरूपियों का कर्मकरने के कारणसे कुछ

थोड़ासा सीखलियाहै सो जो आप उसको सुनना चाहते हैं तो मुझको उसके सुनाने में कोई विचारनहीं है और यहकहकर खड़ाहोगया और बोला कि आप नृत्यकरने के रत्नजटित वस्त्र मँगवादीजिये और आप एककोनेमें जाकर अपनास्वरूप एक परमसुंदरी मनोहर स्त्रीकासा बनाया कि जिसको देखकर रति भी लज्जितहोजाय ॥

चौ०। ताकी परम मनोहरताई। छवि सुंदरता बरणिनजाई॥
दीपकेश निशासमकारे। इन्दुखंडसम गालसुधारे॥
कुरँगसमानसुतीछनईछन। विशिखरूपहोतासुनिरीछन॥
मुखमयङ्करूपी मनमोहन। धनुषरूपभृकुटीगतिसोहन॥
बाणकटाक्ष जासुउरलागे। तासु मूरछा कबहुँनजागे॥
लखिलटविषधरजगकेहारे। सुधरकपोलअरुणरँगभारे॥
देखत नैनकरैं जनुटौना। होतविलोकतहीमनमौना॥
कुंजलालछवि शोभाधामा। रहीमनोहर अतिसोवामा॥

उसके उसस्वरूपको देखकर महेन्द्रका धीर्य छूटगया और उसने नृत्यकरने के उत्तमवस्त्र और आभूषण मँगाकर प्रहास कोदिये वह उनको धारणकरके नाचनेलगा और महेन्द्रने बाजे बजानेवालों को बुलवाया और वे मृदंग आदि वाद्यबजानेलगे उससमय प्रहासने ऐसी २ अद्भुतगतिनाचीं कि उसकोदेखकर मनुष्यतो क्या पक्षीभी खड़ेहोकर चित्रकेसे लिखेहोगये॥

स०। छायरही छविज्योतिमहा झलकें कलभूषण अंगकनीके।
स्वेदचलै मुख मंजुमहा सुहरै गति चंचलभै विधिहीके॥
बाजत बीन मृदंग निचै धुनि पूरिरही नभलोंधरनी के।
नाचत मंडल मंडि प्रताप बजै कलपायल पांयन तीके॥

उक्त प्रकारसे अद्भुतनृत्यकरके जबसबके चित्तोंको मोहित करदिया तबवहबांसुरी निकालकर बजानेलगा और उसमें ऐसे अद्भुत और मनोहरस्वरोंसे षटपदी और पंचपदी गानकीं और ऐसे २ रागगाये कि सबसभा के लोग मोहित होकर रोनेलगे

और किसी को ज्ञान न रहगया और महेन्द्रभी आश्चर्य में आकर चित्रकासालिखा बैठारहा और प्रहास सबके कहने से यहराग गानेलगा॥

ठुमरी। मनलैगई सुंदरमारपलक दिखलाके मोहिंको एकझलक॥ धु०॥उलटि पलटि बलखात अलक सखि जियबिचवाके मुखड़ेकीझलक। मझधार सलिलयमुनाकी छलक जैसे ज्योति चन्द्रकीजाति चमक॥ भूलतहै नहिं एकघरी ताकी सोहनिमूरति प्रेमभरी। बिरहानल उरमें आइअरी रोताहूंमें निशिदिन बिलक बिलक॥

निदान उक्तप्रकारसेगाते गाते वहदिन समाप्तहुआ और आकाशरूपी नृत्यकने सितरिदार नृत्यवस्त्र धारणकिये चन्द्रमा भी उससभामें नृत्यदेखनेको उदयहुआ और उसकीप्रियारात्री संसारमें छागई॥

दो०। विकसतपूर्णमयंकके छायोजगतप्रकास।
निशाभईअतिशोभनी करनहेतुसुविलास॥

उससमय प्रहासने गानानन्दकरदिया और बैठकर बिलक बिलकके रोनेलगा तब महेन्द्र ने अधीर्य होकर रोनेका कारण पूछा वह बोला कि महाराज इससमय मुझको महाराज शत्रुंजयकीसभा स्मरणहोआई जबकभी मैं उनकीसभामें नाचकरताथा तो लाखों रुपये पारितोषिकपाताथा और उसदिन मैंही प्रकार२के दीपक प्रज्वलितकरके सबको प्रसन्नकरताथा महेन्द्र बोला कि दीपक प्रज्वलितकरनेमें क्या अद्भुतता प्रकटहोती है प्रहासबोला चमत्कारदीखतेहैं एकदीपकसे सहस्रोंप्रकारके फूल झड़तेहुए मालूमहोतेहैं नदी बहतीहुई दृष्टिपड़तीहै और फले फूलेहुए बाग दिखाई देते हैं यहसुनकर महेन्द्र ने चकितहोकर पूछा कि इसप्रकारकीभी दीपककी ज्योतिहोती है प्रहासने कहा कि महाराज यह सबबातें शत्रुंजयतकहीथीं न ऐसा कोई गुण ग्राहकहोगा न मैं उनदीपकों को प्रज्वलितकरूंगा महेन्द्र बोला

कि आपकेलिये यहां करोरोंरुपिया मौजूद हैं आज उनदीपकों
को प्रज्वलित करके हमको भी दिखाइये और यह कहकर कई
लक्ष रत्नमँगवाकर प्रहासकोदिये तबतो प्रहास हँसताहुआउठा
और सेवकों से मोमी और कपूरी वर्त्तिका लेकर अपने पाससे
बहुतसी वर्त्तिका निकालकरदीं और कहा कि इनवर्त्तिकाओंको
कंवलोंमें प्रज्वलितकरो और सिंहासनकेसामने जो कंवल प्रज्व-
लितथे उनमेंअपनेहाथसे वर्त्तिकालगाईं और सिंहासनकेचारों-
ओर फूलोंके गुच्छोंसे युक्तपात्र और सुगंधित वनस्पति रक्खीं
प्रज्वलितहोने के पीछे उनवत्तियोंसे रंग विरंगे फूलझड़नेलगे
किसीवत्तीकी ज्योति सुनहरीथी किसीकीश्वेतथी किसीकी नीली
थी किसीकीहरीथी और जोवत्ती जिसरंगकीथी उसमेंसे उसीरंग
केफूलझड़तेथेउससमयउनफूल और वत्तियोंकीशोभा ऐसीसुंदर
थी कि यहजानपड़ताथामानों प्रकाशमानफूलोंकीफुलवाड़ीखिली
हुईहै सबसभासद उसको देखकर आश्चर्यकरते थे और कहते
थे कि हमने ऐसीदीपकोंकी ज्योति कभी नहींदेखी है उससमय
प्रहास महेन्द्र के सन्मुख नाचनेलगा और उनवत्तियों का धूम
जिनमें मूर्च्छाकरचूर्ण मिलाथा सभामेंघुटगया और उससे सब
सभासदों को आवेश अर्थात् नशाहोगया और वे आपस में
लड़ने झगड़नेलगे रानीविचित्रमाया ने महेन्द्रसेकहा कि इन
दीपकोंकी ज्योतिसे सुनहरीसर्प निकल निकलकर मेरे मुखपर
चढ़ेआते हैं महेन्द्रबोला कि चढ़ेनहींआते हैं किंतु तुम्हारामुख
चूमतेहैं और प्रहाससे पूंछा कि अब इसकेपीछे कौनसा चेटक
दिखाओगे प्रहास बोला कि इसके पीछे अंधेरा है क्षणमात्र में
दीपक शांतिऔर पगड़ीकी भ्रांतिहोगी यद्यपि प्रहासने ठीकही
कहाथा परंतु उस आवेशमें किसीने प्रहासके भावको नहींजाना
इतनेमेंएकसभासद बोला कि देखोयेसेवक कैसेदुर्बुद्धि हैं कि आ-
सनउलटे बिछागयेहैं यहकहकरउठा और सीधेबिछेहुए आसन

को उसने अपनीसमक्षमें सीधाकरके उलटाविछाया और फिर जो उसपर बैठनेलगा तो गिरपड़ा और मूर्च्छितहोगया संक्षेप यहहै कि महेन्द्र और विचित्रमाया सहित जितने म्लेच्छ उस सभामेंथे सबकेसब मूर्च्छितहोगये तब प्रहास और दूसरेबहुरूपियोंने वहांके सबसभासदोंके वस्त्र और आभूषण उतारे और अपने यहांके म्लेच्छों को चैतन्यचूर्ण देकर चैतन्यकरदिया वे सब भी प्रहास की आज्ञा से सब सरंजाम उठाउठाकर एकत्र करनेलगे जब सब असबाब इकट्ठाहोगया तब प्रहास ने जाल मारकर आसन शय्याभूषण वसन और पात्र आदि सब को अपनी थैलीमें डाललिया और दूसरे बहुरूपियों ने सब सभासदोंका मुखकाला करके सबके स्वरूप और के और बनादिये किसीको व्याधबनाया किसीको चांडालकिया किसीको रीछनचानेवाला और किसी को कपिनृत्यक बनाया और किसी का स्वरूप स्त्रीकासा बनाकर दूसरे के साथ सुलादिया और उधर प्रहास महेन्द्रका शिरकाटनेकी इच्छासे खड्गलेकर सिंहासन कीओरचला परंतु जब समीप पहुंचा तब किसीने उसको ढकेलदिया निदान प्रहासने लाख लाख यत्न किये परंतु सिंहासन तक न जानेपाया तब वह निराशहोगया और बोला कि हायमैं क्याकरूं और क्योंकर इसका वधकरूं वह इसीशोचमें था कि अकस्मात् आकाशसे वाणीहुई कि मैं मायाकृत देशाधिप महेन्द्रहूं और आकाशमें एक बादल प्रकटहुआ प्रहास उसशब्द को सुनतेही मरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर अदृश्य होगया और और बहुरूपिये छलांग मारते हुए भागे और जो साथी म्लेच्छ थे जिनको प्रहास निशाकरी आदि बनाकर लायाथा वे मायाबल से पृथ्वी में प्रवेश करगये और उससभामें बड़े बेगसे चपला कड़ककर गिरी और जितने म्लेच्छ वहांथे सबको उठाकर ले उड़ी प्रहास वहांसे भागकर दूरनिकलआया और पर्वतकी एक

कंदरामें आकरबैठा और विचारनेलगा कि जो महेन्द्र मुझको पकड़वावेगा तो मेरीथैली में जो रानीनिशाकरी आदि हैं वेभी कैदहोजायँगी इससे सबको थैली से निकालदूं यह विचारकर उसने एकवस्त्र बिछाया और उसपर सब सेनापतियोंको थैली से निकालकर सुलाया और पानी छिड़ककर सब को चैतन्य किया जब वे चैतन्यहुईं तब उन्होंने पूछा कि हे छलविद्याचार्य हमसबतो अपने डेरोंमेंथे यहां क्योंकरआये तब प्रहासने सब पूर्व वृत्तांत कहा उसको सुनकर सब हँसनेलगे और बोले कि आपने जोकिया सो अच्छाकिया परंतु पहिलेतो आपने उसको वचन दिया था कि मैं अपने सब अनुगामियों सहित आपकी सेवामेंरहना स्वीकार करताहूं सो वह वचन तो जहां तहां रहा आपने इतनाभारी उत्पात किया कि उसको मूर्च्छित करके सब सभा उसकी लूटलाये इससे अब वह बड़ा उत्पात करैगा पीछा न छोड़ैगा कुछ न कुछ आपत्ति आयाही चाहतीहै प्रहासबोला कि हम आपत्ति से तो नहीं डरते हैं परंतु यह तो बताओ कि इस महेन्द्र और विचित्र माया का वध क्यों कर हो यहसुनकर आनन्दा बोली कि जबतक मायान्वेषणी चक्र न मिलैगा तब तक महेन्द्र न मारा जायगा वह न जाने कहां रहता है आज तक उसको किसीने नहीं देखाहै और विचित्रमायाका प्रतिरूप जबतक न माराजायगा तबतक उसका भी वध नहीं होसक्ता है प्रहास बोला कि अच्छा समझा जायगा अब चलो अपने डेरों को चलें यह कहकर सब वहां से मायाबल से उड़े और अपने डेरों में आकर सभामें विराजमान हुए और आनन्द मंगल करनेलगे वेश्याओं का नृत्य होनेलगा और सब आनन्द पूर्व उत्तम मद्यका पान करनेलगे थोड़ी देर में और बहुरूपिये और वे म्लेच्छ जिनको प्रहास स्वरूप बदलकर लेगया था वे भी आगये और सभामें बैठकर सब के साथ मद्यपान और

आनन्द करनेलगे और वह बिजली विचित्रमाया आदि सब को उठाकर बदरी उद्यानमें लेगई वहां दो महेन्द्र के स्वरूपथे एक तो चैतन्यथा और दूसरा मूर्च्छित पड़ाथा जो चैतन्यथा उसने सबको चैतन्य किया और अंतर्द्धान होगया और दूसरा स्वरूप उसका मायाकृत दर्पणमें जाबैठा परंतु महाक्रोधमें भरा हुआथा और जो म्लेच्छ चैतन्यहुए देखा कि सबकेमुखकाले हैं और नग्नहैं और किसीका मुखछीकासा और किसीका पशूका-साहै निदान वे एक दूसरेको देखदेखकर हँसतेथे और विचित्र-माया चैतन्यहोकर हायहायकरतीहुई द्वादशद्वारी में चलीगई और जोजो और म्लेच्छीथींवेभी अपनेको नग्नदेखकरभागीं निदान सबने जाकर अपनेमुखसे कालकछुड़ाई और नवीन भूषणवसन धारणकरके सभामें आये उससमय महेन्द्र बोला कि हे विचित्रमाया मैं ऐसीसामर्थ्य रखताहूं कि इसछलीबहु-रूपियेको इसीक्षण पकड़बुलाऊं परंतु मैं देखताहूं कि न जाने मायाकर्त्ताकी क्याइच्छाहै कि मैंने उसको कईबार पकड़ा परंतु सदैव वह मेरा अपमानकरके और मुझेलज्जितकरके निक-लगया और अबकीबार तो उसने मुझे बहुतही लज्जितकिया है समीररूपा सत्यकहतीथी मैंने बुराकिया जो उसका कहा न माना उसका दंड मैंनेहीपाया यहकहकर उसने अद्भुतजालकी पुस्तकदेखी और उससे उसको विदितहुआ कि समीररूपा एक वृक्षसे बँधीहुई है यहजानकर उसने हस्तभेजकर समीर-रूपाको खुलचा मँगाया और बहुतसा धनदिया और फिर कुछमायाकी कि उससे पृथ्वी कँपी और एक म्लेच्छ प्रकट हुआ यह म्लेच्छ रुंडथा और मुंड अपना हाथमेंलियेथा उस से महेन्द्रने कहा कि हे रुंडांगी तू निशाकरीकी सभामें जाकर प्रहासको पकड़ला तब विचित्रमाया बोली कि जो वह निशा-करीकी सभामें न हो महेन्द्र बोला तो जहांहो तहांसे पकड़ला

देखियो छोड़ियोमत यहआज्ञापाकर रुंडांगी दंडवत्करके चल दिया और उसके जानेके पीछे महेन्द्रने विचित्रमायासे कहाकि मुझको यह नहीं जानपड़ताहै कि मायाकर्त्ता और अद्भुत आदि परमेश्वरोंने प्रहासकी मृत्यु क्योंकर लिखीहै इससे चलो आज प्रमाताजीके यहां चलकर उनसे पूछें वे सब हाल जानतीहोंगी जैसे वे इसका बध करना बतावेंगी उसीप्रकार से इसका बध किया जायगा यह कहकर उसने सभा को विसर्जन करदिया और विचित्रमायाका हाथ पकड़कर बिमानपर सवारहुआ और चल दिया और बिना किसी संग साथीके उस मायाकृत देशमें योजनों तक चलागया और अनेक बन और पर्वतोंको उत्तीर्ण करके एक पर्वत के समीप पहुंचा जो सुवर्ण का बना हुआथा और उसपर चार सोनेकी पुतलियां परमसुंदरी चन्द्रमुखी स्त्रियों की भांति वस्त्र और रत्नजटित आभूषणों से अलंकृत खड़ीथीं और उस पर्वत के सामने बारह कोसतक बाग लगा हुआ था उसमें नानाप्रकारके फूल खिलेहुएथे और वृक्ष सब गोटेकिनारीसे मढ़ेथे उनवृक्षोंमें रत्नोंकी हांडिया टंगीथीं मोतियोंके जाल पड़ेथे घास जो पृथ्वीमें उगीथी उसपर गोटेकेतार महीन कतरे हुए पड़ेथे निर्मल जलकी अनेक जल धारा तरंगें लेतीहुई बह रहीथीं उनके घाट वैडूर्यके बनेथे और दोनों तटोंपर फुहारे चढ़े हुएथे उनकी फुहारें सावन भादोंकी झड़ीको लज्जित करतीथीं वृक्षोंपर रत्नोंके पक्षी बैठे हुए मधुरमधुर ध्वनिसों गानकररहेथे चारोंओरसे बसंतऋतुकासा आगमन दीखताथा और पहाड़ से लेकर संपूर्ण बागपर ऊदीघटा छाईहुईथी और उसमें चमकतीहुई चपला ऐसी दीखतीथी मानो ऊदे वस्त्र में लचके की गोट लगीथी बिमल सरोवरोंमें नीलसरोरुहप्रफुल्लितथे और उनपर भ्रमर गुंजार कररहेथे॥

दो०। फूले द्रुम फूलींलता फूलीं वेलि अपार।

भांति भांतिके फूल तहँ विकसे अति मुदकार ॥
कोयल कूकत मधुर ध्वनि भ्रमर करत गुंजार।
पीवनको मकरंद तहँ करत फिरत संचार ॥

महेन्द्र जब उसपर्व्वतके और निकटपहुंचा तब वे पुतलियां खिल खिलाकर हँसीं और उनमेंसे एकबोली कि महेन्द्र आया है दूसरी बोली अब क्यों न आवेगा तीसरीने कहा प्रयोजन ऐसाही होताहै चौथी बोली कि जो आयाहै तौचला क्यों नहीं आताहै रुक काहेको रहाहै यहसुनकर महेन्द्र विचित्रमायाका हाथ थामकर उसपर्व्वतपरचढ़गया वहां उसपर्व्वत के ऊपरएक मन्दिर परमशोभायमान ऐसा ऊंचा कि आकाश से बात कर रहाथा बनाहुआ था उसकी भीतें स्फटिककीबनीथीं और दर्पण केसमान निर्मल और सचिक्कण थीं और चारों ओरको सहस्रों तिदरीं और द्वादश द्वारीं परम शोभायमान बनी थीं ॥

चौ०। अति रमणीक बनो सो थानू। चमक जासु लखि लाजै भानू ॥
बरणिन जाय तासुशुचिशोभा। जेहिलखिअमरनिकोमनलोभा ॥
द्वारनि चौखट पट लगवाये। तार हेम के रुचिर बनाये ॥
भांति भांति के चित्र अनूपा। फूल बेलि सह खुदे सुरूपा ॥
अंतर पट तहँ पड़े सुहाये। हेम सूत्र पट के बनवाये ॥
तिनपर हेम बेलि अतिसोहैं। शोभा सों सब के मन मोहैं ॥
रत्ननि के कण जड़े सुहावैं। नभ नखतनि कों परम लजावैं ॥
कुसुमप्रफुल्लित चमकतऐसें। पूर्ण इन्दु चमकै नभ जैसें ॥
शोभा तासु अनूप सुहाई। कुंजलाल कछु बरणि न जाई ॥

महेन्द्र वहां जाकर उस प्रासाद के द्वारपर खड़ा होगया और भीतर भय के कारण से न जा सका थोड़ी देरमें एक कड़क कासा शब्दहुआ और ऐसी आंधी उठी कि संसार में अंधेरा छागया और क्षणमात्र में एक विमान उड़ता हुआ दृष्टि आया उसपर एक म्लेच्छी विराजमान थी जिसके मुख में एक दांत न था और पेटकी आंतें सूखगई थीं कईसौ वर्षकी उसकी

आयु थी मुखपर झुर्रियां पड़ी हुई थीं दोनों स्तनसूखकर छाती में बैठगये थे कमरझुकी हुई थी मानों खोये हुए यौवन को ढूढ़तीथी शिरपर पीतपट बांधे और नीलाम्बर ओढ़ेहुएथी जबवह समीपआई महेन्द्र और विचित्रमाया दोनोंने उसे साष्टाङ्ग दण्डवत्की उसकानाम आपत्ति मायाथा और वह महेन्द्र की दादीथी महेन्द्रके दण्डवत् करनेपर उसने चिरंजीव रहने का आशीर्वाद दिया और दोनोंहाथ फैलादिये महेन्द्र उसके पास चलागया और उसने उसको छाती से लगाकर बहुत सा प्यारकिया और जब वार्तालाप हुआ तब उस वृद्धा म्लेच्छीके अंगोंसे अग्नि निकलनेलगी और स्वरूप उसका भयंकर होगया और वह क्रोधित होकर बोली कि क्यों रे लड़के तुझ से मायाकृत देशका प्रबन्धन होसका जोतू घबरागया महेन्द्रबोला कि अरी दादी मैं क्या करूं अद्भुत परमेश्वरकीही यह इच्छा है कि प्रहास मुझसे प्रबल रहे नहींतो मैंने उसे नदीके इसपार बुलवा लियाथा परंतु परमेश्वर ने आप आकर और स्वर्ग की अप्सरा भेजकर उसे नदीके पार उतारदिया यहसुनकर आपत्तिमाया बहुतहँसी और बोली कि अरे लड़के बेटातू क्याबकता है अद्भुत क्या किसीका प्रारब्ध रचेगा वहतो आप भागाभागा फिरता है और बहुरूपियोंसे क्या क्या अपमान नहीं पाता है परंतु उससे कुछभी नहीं होसकताहै तुझे तो अपने घरकीभी बातनहीं मालूमहै कि कौन किस उद्योगमें है अरे तेरी प्रिया मायावतीने प्रहासको नदीके पारउताराहै और यहकहकर उसने सबवृत्तांतकहा जो मायावती और प्रहासके बीचमेंहुआथा और फिर समझाया कि सुनचाहे पृथ्वी और आकाश चलायमानहोजाय और यह मायाकृतदेश उजड़जाय और सबम्लेच्छभीमारे जायँ परंतु तू ये चारबातें मतकरियो एकतो मायाकी नीति में भेदमतडालियो दूसरे सप्तव्याधिभवनको न खोलयोतीसरे ग्या-

रहमहीने पीछेभानुविक्रम मायानष्टकर्ताकावधकरियो और बीच में उसेमारनेकी इच्छामतकरियो नहींतो मायाकी नीतिमें वल आजयगा चौथे चाहेजैसी आपत्तिआवे और कैसाही कठिन युद्धक्यों न आकरपड़े परंतु तू लड़नेके लिये उनइक्कीस महान् प्रतिष्ठित म्लेच्छोंको जोमायाकर्ताके देखनेवाले हैं मतभेजियो और प्रहासअभी मारा न जायगा तुमनेजो रुंडाल्लीको उसके पकड़नेकोभेजा है सुनलेना कि वहमाराभीगयाहोगा बअतूजा और रत्नकूपपर मेलाकर वहांनिशाकरी और आनन्दा और मारीचआदि सबहोंगे वहांतूयुद्धकासामानकरियो परंतु प्रहास से तूबचारहियो वहवहांभी छलकरेगा और जोतू प्रहासकी मृत्युका हालपूछने आया है कि कब है और क्योंकर है सो मैं इसबातको उसीसमय से जबसे प्रहासआया है मायाकर्ता कृत और २ ग्रंथोंमें देखरहीहूं परंतु कहींकुछपतानहीं चलता है और यहनिकलता है कि प्रहास मायावीम्लेच्छों का बधिक है इससेहे बेटा तूइसछलीसे निश्चिंतहोकर मतबैठियो और बच- करहियो नहींतोमाराजायगा अच्छा अबतूजा और मैंभीजा- तीहूं उससमय महेन्द्र और विचित्रमायाने उसे दंडवतकी और उसने जोहुंकारकिया तो उसकाविमान आकाशमार्गी होगया उससमय वेहीचारोंपुतलियां बोलीं एकनेकहाजानाहै तोजाओ दूसरीबोली चलतेहो तोचलो तीसरीबोली कि क्यामोमहै जो पिघलजायगा चौथीबोली पहाड़में आगलगजायगी तबमहेन्द्र शीघ्रविचित्रमायाको लेकरनीचेउतरगया कि पुतलीनेकहाहै आ- गअवश्यलगेगी और वहीहुआ कि नीचेउतरतेही सबबाग और स्थानमें आगलगगई और वहप्रज्वलितहोगया फिरमहेन्द्रनेपी- छेफिरकेनदेखा और क्रोधसे लालहोकरकहा कि इसचांडालीमा- यावतीकोदेखो किसदुर्दशासे मारताहूं और इसीक्रोधमें कदली उद्यानकी ओरचला और वहांजाकरपहुंचा यहउद्यानभी उसी

प्रकारकाबनाथा जैसे और सबबाग और उद्यान इसमायाकृत देशमें बनेथे जिनकीकथापूर्वमें वर्णनहोचुकीहै उसमें संसारके शोभायमानपदार्थथे भीतरबागमें रत्नोंके छायादारवृक्षलगेथे परंतु सबमायाकृतथे एक एकवृक्षमें सातसात प्रकारकी शाखा लगीथीं और प्रतिशाखामें अनेक २ वर्ण और स्वरूपकेफल और फूललगेथे भ्रमरउनपरगुंजार कररहेथे और कोयलें कूक रहींथीं निदान वहरत्नोंकेफल और फूलोंसेफूलाफला उद्यानपर-म शोभायमान था ॥

छंद । सोवागअतिरमणीकशोभित चहूंदिशि बहुविधिबना ।
द्रुमवेलि फूली फलीलागीं जाइ कापर शोभना ॥
बहु चित्ररंग विचित्रफूल सुगंधयुततहँ सोहहीं ।
गुंजरत भौंरतभ्रमर डोलत मनहुंफूलनि जोहहीं ॥
शुक सारिकादिक विहंगनाना भांति बाणी बोलहीं ।
करिमधुरध्वनिसों गानकोयल सकलजनमनमोहहीं ॥
शीतलसुगंधित मंदगतिसों पवननिति तहँडोलई ।
विरहीजननिके हृदयमेंसो भल्लइव अतिहूलई ॥
जलधारपूरित नीर निर्मल वहुतरंगनसों वहीं ।
शोभाअपूरव कुंजलाल न जात काहूपै कही ॥

उसबागके बीचमें एक द्वादशद्वारी बनीथी चारोंओर रत्नोंसे जड़ीथी मानों रत्नोंकी खानिथी और ऐसीऊंचीथी कि आकाश से बातेंकरतीथी ॥

दो० । शोभाअति ताभवनकी कापैवरणीजाय ।
वरशोभा वैकुंठकी सो लखिजाय लजाय ॥

उसद्वादशद्वारीके सबद्वारोंमें अंतर्पट अर्थात् पर्देपड़ेथे और चारसौदासियां परमसुंदरी चन्द्रमुखी वहां सेवाकेलिये नियत थीं उनमेंसे दोसौतो द्वादशद्वारी के भीतर कामकरतीथीं और दोसौ बाहिर स्थितरहतीथीं जो भीतर रहतीथीं वे कभीबाहिर न निकलतीथीं और इसी से उनको किसी ने देखानथा और उस

द्वादशद्वारी के भीतर का हालभी कोई न जानताथा कि उसमें क्यापदार्थथा उससमय महेन्द्रके आने से बाहिरकी दासियोंने उसप्रासादके परदेउठाकर बांधदिये मानोंमायाके गुप्तकार्य को प्रकटकरदिया अर्थात् परदों के उठातेही भीतरकी दासियों के चन्द्रमास्वरूपीआनन प्रकाशकरनेलगे और उनकी सुंदरताके आगे बाहिरकी स्त्रियोंके मुखारविंद फीकेपड़गये और उनकेको-मलकपोलोंकेवर्णको देखकर बागकेफूलोंकावर्ण पीलापड़गया॥

चौ०। प्रभाभरे आननसनसोहैं। मनहुंतेजकी मूरतिसोहैं॥
सुंदरता छविअद्भुतछाजे। जेहिविलोकिरतिकीछबिलाजै॥
रागवरुणता भरीनवेली। चंचलचपल चतुरअलवेली॥
भ्रूविलाससोंमनहरिलेहीं। लटनागिनिविषसमदुखदेहीं॥
हरतप्राणचितवनसोंताके। कुंजलाजजो उनदिशिताके॥

उनसबदासियोंने महेन्द्रको दंडवत्की और अपने २ सेवाके स्थानोंपर खड़ीहोगई तबमहेन्द्र आगेबढ़कर उसभवनके बीच में जाखड़ाहुआ वहांभी परदापड़ाथा जबदासियोंने उसपरदेको भी उठायातबआगे एकसिंहासन बिछाहुआ दृष्टिआया जो रत्नों का बनाथा और परमशोभायमानथा उससिंहासनपर एकपुतला पाषाणका महेन्द्रके स्वरूपका बैठाहुआथा महेन्द्रनेउसकोहाथसे बुलाया कि हेसनामी हमारेपासआओ यहसुनकर वहपुतला उसके पास चलाआया और महेन्द्रने उससेकहा कितुम हमारे सनामीहो हमारी तुम्हारी एकही बातहै इससे तुम जाओ और मायावतीको पकड़लाओ यहसुनकर वह पुतला पृथ्वीपरगिरप-ड़ा और धूम्रांहोकर आकाशमार्गीहुआ और अदृश्यहोगयातब महेन्द्र उसी सिंहासनपर जाकर बैठगया और विचित्रमाया को अपने वामाङ्गमें बैठाया और कुछ मायाकी कि उससे उसबाग के सबफूल खिलगये और उनसे छोटे छोटे पक्षी उत्पन्न होकर पृथ्वीपर गिरपड़े और लोट पोटकर अप्सराओं कासा स्वरूप

वन गये जिनके स्वरूप परमसुंदर और मनोहरथे और वस्त्र रंग विरंगे धारण कियेथे वे स्त्रियां महेन्द्रके सन्मुख आकर नृत्य करने लगीं और जो दासियां वहां नियतथीं वे उत्तम वारुणीके पात्र कर कमलोंमें ग्रहण करके मद्य पान कराने लगीं निदान महेन्द्रतो यहां मायावतीके आनेकी बाट देखरहाहै परंतु अब प्रहासका वृत्तांत सुनिये जिसके पकड़नेके लिये रुंडाङ्गी चलाथा वह छलविद्या चार्य उसरात्रिको महेन्द्रकी सभा भंग करके पर्वतकी कंदरामेंआया और वहांसे रानीनिशाकरी आदि सबको लेकर अपनी सेनामें पहुंचा और वहां रात्रिभर तोनृत्य और गान होतारहा और जिससमय आकाश देशाधिप प्राचीदिशासे उदय हुआ और अपने तेजसे सब संसारका राज्य करनेलगा और स्वप्नरूपीसेना संसारके नेत्रोंसे भागगई॥

दो०। उदय होत दिननाथ के निर्मल भयो अकाश।
निज निज कारज सब लगे पाय सुविमल प्रकाश॥

उससमय रानी निशाकरीभी जय दुंदुभी बजवाकर सभामें आई और सिंहासनपर आसीन हुई और सब सभासद भी आये और दण्डवत्कर करके अपने२योग्य स्थानोंपर बैठगये उससमय प्रहासभी अपने आसनपर मानपूर्वक बैठा था कि उसको अकस्मात् कुसमय क्षुधालगी यह देखकर उसने चित्त में विचारकिया कि तुझको अपने आप कुसमय क्षुधालगनेका क्याकारण है मालूम होताहै कि मायाकृत देशाधिपने यातोतेरे ऊपर कुछ माया तुझे पकड़नेको कीहै अथवा किसी मायावी म्लेच्छको मुझे पकड़नेकेलिये भेजाहै यह विचारकर वहखड़ा होगया उससमय रानी निशाकरीने उससे कहा कि प्रहास जी कहां चले आजकल आपका बाहिर जाना श्रेष्ठ नहींहै क्योंकि महेन्द्र आपके पकड़वानेके उद्योगमें होगा प्रहास बोला कि मेरा चित्त घबराताहै थोड़ीदेर घूम फिरकर आताहूं यह कहकर वह

चलागया और उसकेपीछे पृथ्वीकँपी और रुंडाङ्गी प्रकटहुआ उससमय रानी निशाकरी आदिने अपने २ मायाकृत अस्त्र संभाले परंतु रुंडाङ्गी बोला कि अरे अधर्मियो तुमसबकी क्या सामर्थ्यहै जो मुझसेलड़ो क्षणमात्र में मैं तुम सबको भुनगेकी भांतिचुटकीसे मीड़ डालूंगा परंतुमैं बेबशहूं कि महाराजने मुझे तुमसे युद्धकरनेकी आज्ञा नहींदी है जिस कामको मुझेभेजा है उसका प्रबन्ध करके चला जाऊंगा इस से तुम सब अपने २ स्थानोंपर बैठीरहो जो मुझको छेड़ोगे तो तुम्हारेलिये अच्छा न होगा यहसुनकर सबसभाचुपहोरही और रुंडाङ्गी चारोंओर को दृष्टिकरके प्रहासको ढूंढ़नेलगा यहम्लेच्छ रानीआनन्दाकी एक दासी परमोहितथा जिसका नाम मयंकमुखीथा और जब आनन्दा अदृश्य खंडमें रहतीथी तभीसे यह उसपर आसक्तथा और वह दासीभी इससे परमप्रीतिमानथी परंतु आनन्दाके भय से उससे मिल नहीं सकतीथी और वह म्लेच्छभी यहजानकर कि दासीसे प्रीति होना एक क्षुद्रकर्म गिनाजायगा उसको रानी आनन्दासे मांग न सकताथा निदान दैवयोगसे वह दासी उस समय एक खंभकी आड़में खड़ीथी प्रहासको ढूंढ़नेके समय उस कीदृष्टि उसओरकोगई और उसनेदेखाकि मेरीप्रिया मयंकमुखी शृंगार कियेहुए खड़ीहै और उसे देखदेखकर हँसरही है स्वरूप उसका उस समय बड़ा शोभायमानहै केशोंका जूड़ा बांधे हुए है दांतोंमें मिस्सीलगायेहै उंगलियोंकी पोरपोरमें रत्नजटित मुं-दरीपहिरेहै माथेपर बेंदी दियेहै और अपनी छातीको उभार करस्तनोंको दिखा रहीहै उससमय उसकी यह दशाथी कि ॥

दो० । गौर वरण सुंदर परम कुच भाति कठिन अडोल
निश्चल ठाढ़ी लखतिजनु रतिमूरति अनबोल ॥

जब रुंडाङ्गीकी दृष्टि उसकी ओर पड़ी वह अपने प्रीतमको देखकर इठलइयां करनेलगी कभी छिप जातीथी और कभी

सामने होकर त्यौरी चढ़ाकर शिर हिलातीथी कभी मटक कर बैठ जातीथी और छलांग मारकर इधरसे उधर दौड़तीथी कभी अपनी ग्रीवा खोल देतीथी और कभी अपने स्तनों के पटको उघार देतीथी कभी आंचलको उलट कर शिरपर डालतीथी और मुखको प्रीतमसेछिपाकर लाजकरतीथी इनभावोंको देखकर रुंडाङ्गी मृतक तुल्य होगया और चित्तमें कहने लगा॥

चौ०। काके अस छलबल गति नैना। काके सुधा भरे अस बैना॥
प्रियामोर जससुघर सलोनी। असतिय नहिं अबजगमें होनी॥

निदान इधर तो यह उस दासीके प्रेममें फँसाथा और उधर उस दासीने अनुमान किया कि बहुत दिनोंमें तेरा प्रेमी मिला है यहां आनन्दा मायाके सामने दाल न गलेगी बाहिर चलकर दो दो बातें करलूं यह बिचारकरके वहटालाबाला देतीहुई और अनेक भावोंसे कटाक्ष करतीहुई सभाके द्वारपरआई और पीछे फिरकर देखा कि देखूं मेरा प्राणप्याराभी आताहै या नहीं और इधर उधर जब किसीको न पाया तब खखार कर द्वारके बाहिर सभाके पीछे आड़में जा खड़ीहुई जब रुंडाङ्गीने उसके खखारनेका शब्दसुना समझा कि मुझे आड़ में बुलातीहै और आप भी बाहिर निकलकर उसदासीके पासगयाऔर बोलाकि कहिये चित्ततो आपका प्रसन्नहै वह बोली कि परमेश्वर आपकोसदा प्रसन्न रक्खे कहिये आप तो प्रसन्नहैं यहां कैसे कैसे आये वह बोला कि मैं आयातो प्रहासके पकड़नेकोथा परंतु तुम्हारेदेखने कीभी बड़ीलालसा लगी हुईथी॥

दो०। प्यारी तेरे रूपको खिंचो चित्र उर माहिं।
चाहें तुम भूलोहमहिं भूलिसकत हम नाहिं॥

हे प्राण प्यारी जिस समय तुम्हारी रानी श्री महाराज से विमुख हुईथी तुम मेरे पासचली आईहोतीं और तुम्हारी रानी को ऐसी क्या आवश्यकताथी जो प्रहाससे आकर मिल गई

यह सुनकर मयंकमुखी बोली कि देखो तुम मेरी रानीको कोई बात न कहो वह मेरी स्वामिनि हैं और मैं क्या ऐसी मस्तानी फिरतीथी जो तुम्हारे यहां चली आती और अपनी रानी को छोड़देती मरदोंकी प्रीतिका क्या बिश्वासहै जो तुमको मेरा प्रेम होता तो आज तक मेरे पास न आते अब आज बातें बनाते हो यह सुनकर वह बोला कि हे प्राण प्यारी जैसे तुम दूसरेके वशमेंहो इसी प्रकारसे मैंभी परवशीहूं दूसरेकी सेनामें क्योंकर आता परंतु तेरे बिरहमें मेरी यह दशाथी कि॥

दो० प्यारी तेरे बिरहमें कटत न दिन अरु रैन।
रोवत बीतत काल सब परत न क्षणभर चैन॥

हे प्यारी अब उराहने को छोड़कर साम ने के पर्वतकी गुफा में थोड़ी देरको चल और रतिदान करके मेरे बिरही चित्तको आश्वासन कर यहसुनकर मयंकमुखी बोलीकि मुझको अकेले में जानेसे क्या प्रयोजनहै तू हरामुष्ट और कामातुरहै वहां जाने से तू मेरी प्रतिष्ठा भंगकरेगा मैंने तुमको देखलिया और तुमने मुझे देखा इतनाही बहुतहै और किसी कामकी इच्छा मतकरो यह सुनकर रुंडांगी बोला कि हे सुंदरी हे प्राणप्यारी फिर मेरा आना यहां काहेको होगा आजका मेरा आना दैवयोगसे जान कर मेरेमनोरथको पूराकर एक घड़ी हम तुम बैठकर मद्यपान और काम कलोल करें हे प्यारीआज तो मेरी यहबिनयहै कि॥

दो० जोचुंबनके दानमें मुखमोड़हु सकुचाय।
तो मुखमोड़हु आपनो चूमैं हमहरषाय १
प्रीतमहमको मानिके आवत तुमहिंजोलाज।
तो निजसेवक समुझिके करहुहमारो काज २

यह सुनकर मयङ्कमुखी बोली कि चल बातें मतबना मुझे इधरउधरकी बातोंसे मतफुसला हाय मैंतो अपनीरानीके काम को बाहिरआईथी सो यहांआकर आपत्तिमें पड़गई यहकहकर

यह आगेबढ़ी और रुंडाङ्गी उसके साथ हो लिया तब उसने पीछे फिरकर और मुसकुराकर कहा कि अरे मेरेपीछे मतआ नहींतो मैं बदनाम होजाऊंगी निदान इसीप्रकारसे बातेंबनाती हुई वह उसपर्वतकी कंदरामेंआई उसका प्रीतमभी उसकेसाथ साथआया और वहां वेदोनों प्रेमकी बातें करनेलगे उससमय मयङ्कमुखीने अपना डुपट्टाउतारकर बिछादिया और इसमिस-से उसने अपने सबआभूषण उसकोदिखाये कि मुझको केवल दासीही मतजानना मेरेपास आभूषणभी हैं अब कभीतो वह इठलाती है कभी ठिनकती है और कभी अपनाशिर उसकी जंघापररखके लेटजातीहै और चित्तसे कहतीथी कि आज जो मैंहूं सो रानीभी नहीं है इतनेमें प्रहासभी उसओर आनिकला जो सभासे पहिलेही उठकर चलागयाथा और आनन्दाकी दासीको एकम्लेच्छसे हँसते बोलते और उसके साथ मद्यपान करतेहुए देखकर अनुमानकिया कि यह आनन्दाकीदासी हमारे किसी सेनाके योद्धासे फँसी है चलो इसको धमकाकर इसके आभूषणलेलो यहविचारकर उसने तुरंत अपनास्वरूप एक वृद्धास्त्रीकासा बनाया कि बालसब श्वेत कूबरनिकलाहुआ शिर हिलताहुआ हाथ में लकड़ीलिये खटखट लकड़ी टेकताहुआ उसपर्वतकी कंदराकी ओरगया उसशब्दको सुनकर वहदासी झझककर अलगहोगई और रुंडाङ्गीसेबोली कि कोईआताहै उसने जो शिरउठाया तो देखा कि एकवृद्धास्त्री आती है और उधर उसवृद्धानेभी दूरसे आशीर्वाददेना प्रारंभकिया कि माया कर्त्ताकरै यह जोड़ी बनीरहै राजपाटबढ़ार है दूधों नहाओ पूतों फलो सुहागसदारहै सदा हंसोबोलो तुम्हारी आई दशा मेरे ऊपर पड़ैऔर फिर कराहकरबैठगई तबतो मयङ्कमुखीके शरीरमें प्राणआये और यहसमझकर कि यह कोई हमारे वृत्तांतकी ज्ञाता नहींहै पूछा कि अरीबुढ़िया तू यहांकहांआईहै और इस

वनमें क्योंफिरतीहै वहबोली कि बेटा इससत्यानासी पेटकेकारण मारीमारी धूलछानतीं फिरतीहूं इससमय सेना में भीखमांगने जातीथी तुम्हाराबोल सुनकर इधर चलीआईहूं मायाकर्त्ता तुम्हारीप्रतिष्ठा चौगुनीकरै यहांसे मेराघरपासहै वहींचलके हंसो बोलो यहसुनकर रुंडाङ्गीबोला कि मुझको इतनासावकाश नहीं है मैं महाराज महेन्द्रकी आज्ञासे प्रहासको पकड़नेआयाहूं यहां सेउठूं तो उसेपकड़कर लेजाऊं बुढ़ियाबोली कि उसमरेकोपकड़ना कौनबड़ीबात है निपूता कल मरेघरभी आयाथा सो मैंने एकघिन्नीउठाकर मारी निपूतेकी टांगही जानतीहोगी और यह कहकर वहबुढ़िया बोली कि मायाकर्त्ताकरै तुम्हारीकुआई मेरे ऊपरपड़े मुझे बहुतदिनोंसे मद्यनहींमिली है तब उस दासीने मद्यका एकपात्र उसबुढ़ियाको देदिया और वह उन्हें आशीर्वाद देकर पानपात्रमें मद्यउड़ेलने और भरनेलगी इसफेरफारमें बुढ़ियाने मूर्च्छाकरचूर्णकी पुड़िया जो हाथकीगाईमें दबीथी मद्य मेंमिलादी और कहा कि इतनीमद्य मैं क्याकरूंगी तुमदोनोंभी पीओ और कामकलोलकरो मैंतो वृद्धाहूं मुझसे क्यालज्जा है अपनी युवावस्थामें मैंनेभी सैकड़ों सुंदरपुरुषों के साथ विहार किया और कालेशिर का एकनछोड़ाथा यह सुनकर वह दासी हँसी कि यहबुढ़िया बड़ीहँसोड़ीहै और दोनोंजने बुढ़ियाकेहाथकी दीहुई मद्यपीकर मूर्च्छितहोगये तब प्रहासने वह मद्यकाघटतो अपनी थैलीमें रखलिया औ रुंडाङ्गीको मारडालनाचाहा परंतु उसने मायाबलसे अपनाशरीर लोह का बनालियाथा इससे प्रहासने अपनीथैलीमें से नाग और कलछुल निकालनाचाहा परंतु उपहास जो बनमें रहाकरताथा और सेनामें कमजाताथा दूरसे यह सबवृत्तांत देखरहाथा उसने वहींसे पुकारकर कहा कि गुरूजी आप परिश्रमनकीजिये मैं आनपहुंचताहूं और समीपआकर एकहाथ भुजालीका ऐसालगाया कि रुंडाङ्गीके दो

टूकहोगये और कोलाहलहुआ कि रुंडाङ्गीमारागया इसकेपीछे
प्रहासने अपना निजस्वरूप प्रकटकरके मयङ्कमुखीको चैतन्य
किया उसने जो प्रहासकोदेखा भयकेमारे कांपनेलगी और उस
केचरणोंमें गिरकर विनयपूर्वक बोली कि प्रहासजी यहवृत्तांत
मेरीरानी से न कहियेगा यहसुनकर प्रहासने अपनी थैलीमेंसे
कोड़ानिकालकर उसकोमारना आरंभकिया आरकहा कि चांडा-
ली हमारेशत्रुओंको लगाकर लेआतीहै और अब बातेंबनाती
है निदान अच्छीतरहमारकर उसका सबशृंगार धूलमें मिला-
दिया और झोंटापकड़कर लेचला कि चलतो आनन्दाभायाके
सामने वहां मैं तेराभी वधकरूंगा तब वह बहुतदीनहोकर कह
नेलगी जितनीइच्छाहो और मारलीजिये परंतु वहां नलेजाइये
और मेरे प्राण बचालीजिये तब प्रहासबोला कि जोकुछ तेरे
पास धनहै और जितना तैंनेइकट्ठाकियाहै वहसब मुझको देदे
तो बचेगी यहसुनकर मयङ्कमुखीबोली कि चारतीयल और सौ
रुपयेतो मेरेडेरेपर हैं और यहगहना मेरेपास है तब प्रहासने
सबगहना उतारलिया और कहा कि जो आनन्दापूछैगी कि
गहना क्याकिया तो क्याबतावेगी वहबोली कि मैं कहूंगी कि
गहनाउतारकर नदीके किनारे रखकर मैं नहानेलगी कि कोई
चुराकरलेगया प्रहासबोला कि दोरुपयेका पीतलका गहनाले-
कर पहिरले काहेको ऐसीबात कहतीहै जिसमें पूछताछहो वह
बोली कि मैं बातबनालूंगी आप चलियेतो और चित्तसेकहती
थी कि अपनीरानीका धनचुराकर सबकुछकरलूंगी इससमयतो
प्राणबचें निदान वहांसे दोनों सभामेंआये उससमय रानी नि-
शाकरीने पूछा कि प्रहासजी कहांगयेथे प्रहासबोला कि कुछ
बोहनीकरने गयेथे दो चार कौड़ियां जो प्रारब्धकीथीं मिलगईं
इन मयंकमुखीजीकी सहायतासे हमने रुंडाङ्गीकोभी मारडाला
और जो प्रारब्धकाथा सो मिल भी गया यहसुनकर वह दासी

कांपनेलगी कि प्रहास कहीं सब हाल कहनदे परंतु प्रहास उठ कर उसदासीके पासगया और बोला कि जो आधा मुझे देने कहे तो मैं रानी आनन्दासे तुझे बहुतसा पारितोषिक धन दि-लवाऊं वह बोली कि अबआप कृपाकीजिये म बहुत आपको देचुकीहूं तब प्रहासने कहा कि तू नहीं मानतीहै तो ले म सब तेरा वृत्तांत कहेदेताहूं यहसुनकर वहदासी उसके पैरोंपर गिर-पड़ी और बोली कि जो कुछ मिले आप सब लेलीजियेगा यह सुनकर प्रहास अपने आसनपर आबैठा उससमय रानीआन-न्दाने कहा प्रहासजी जो आपने मेरीदासीको अंगीकृतकियाहो तो मैं उसको आपके अर्थ निवेदन करतीहूं इस मरीके भी ऐसे भाग्य खुले कि आपसे एकांतमें वार्तालाप करती है प्रहास बोला कि आनन्दाजी यह आपकी दासी मेरी सहायकहै और इसने मेरेप्राण बचाये क्योंकि यहमुझको खबरकरकेआप रुंडा-ङ्गीको साथलगाकर पर्वतकी गुफामेंलेगई और मने वहांजाकर उसका बधकरडाला परंतु उस हुल्लड़में इसबिचारीका गहना जातारहा सो इससमय मुझको पृथक्बुलाकर यही कहती थी कि रानी से मुझे गहना और दिलवादीजिये यहसुनकर आ-नन्दाने प्रसन्नहोकर उसको कईतोड़े रुपयोंकेदिये और अपने पहरनेके जड़ाऊगहनेभी मंगवाकरदिये तबतो वहदासी माला मालहोगई और प्रहासने उसके स्थानपरजाकर आधाधनबांट लिया और फिर सभामेंआकर आनन्द करनेलगा वहां उत्तम वारुणीके पात्र चलरहे थे गानहोताथा वेश्या नाचरहीथीं और सब आनन्द में मग्नथे परंतु अब इनसबको इसी अवस्था में छोड़कर उस कोमलाङ्गी रानी मायावती का वृत्तांतसुनिये जो विरहकी अग्निसेव्याकुल अपने प्रियतमके वियोगमें विकलथी जब वह प्रहासको नदीकेपार उतारचुकी तब अपने प्राणप्यारे के वियोगमें बहुत घबरागई और उधर प्रकारप्रकार के ध्यान

उसकेहृदयमें आये कभीकहतीथी कि जब चक्कीकेदेनेका वृत्तांत महेन्द्रको विदितहोगा तब क्या कुछ बुराबहनकरेगा तू पकड़ी जायगी सबदेशमें तेरी बुराईहोगी और तेरेप्राण आपत्तिमेंपड़ेंगे और फिर अपनेको समझातीथी कि हेमायावती प्रीतिकेफंदेमें पड़कर जोकुछनहो थोड़ा है पांवभी बेड़ियांपहिरनेकी लालसा रखतेहैं और कान उनकेशब्दको सुनाचाहतेहैं बदनामीतो इस मार्गमें भरीहुईहै जितनी अप्रतिष्ठाहो सब पूर्णप्रतिष्ठाकी तुल्य है प्रेमके मतवालोंके येसबबातें आभूषणके तुल्यहैं ॥

क० । सबआसतो छूटी पियामिलिबेकी नजाने मनोरथ कौनसजें । हरिचन्दजू दुःख अनेकसहैं पैअड़े हैं टरैना कहूंकोभजें ॥ अबसों निरशंक है बैठिरहे सोनिरादरहूसे कछूनलजें । नहिं जानीपरै कछुयातनकी केहि मोहते पापीनप्राणतजें ॥

इसप्रकारसे कभीतो वह अपनेभवन में पर्य्यंकपर मृतकतु-ल्य जापड़ती थी और कभी बागमें आकर विरहकी अग्नि से व्याकुलहोजातीथी और विकलताकेसाथ यहपद पढ़तीथी ॥

क० । जोमैंहोतीन प्रीतिकेफंदपरी विरहानलतापसखि क्यों दहती ।
कुंजलालजू एतोजोदुःखहमेंहियके परितापको क्योंसहती ॥
इन नैननकी गति ऐसी भई जलधार निशा दिनहै बहती ।
अब सूझिपरै न कछू हमको वह मूरतिही चखमें रहती ॥

निदान वह इसप्रकारसे व्याकुल थी कि अकस्मात् एक तड़ाकाहुआ और महेन्द्र पृथ्वीमें से प्रकटहुआ मायावती ने तुरंत उठकर दंडवत्की और विनयपूर्वकबोली कि श्रीमहाराज का मुझ दासीपर परम अनुग्रहहै जो श्रीमहाराजने मेरेस्थान को अपने चरणारविन्दसे पवित्रकिया वह पुतलातो महेन्द्र का केवल एकरूपथा और महेन्द्रने उसे कदली उद्यानसे उस के पकड़नेको भेजाथा इससे उसने कुछ उत्तर नहीं दिया और मायावतीकी कमरमें हाथ डालकर उसेलेउड़ा और क्षणमात्र में महेन्द्रके सन्मुख लाकर खड़ाकरदिया और महेन्द्रको दंडवत्

करके अंतर्द्धानहोगया उससमय मायावती ने देखा कि महेन्द्र और विचित्रमाया दोनों सिंहासनपर विराजमान हैं परंतु क्रोध में भरेहुएहैं तब महेन्द्रबोला कि क्योंरी चांडाली निर्लज्ज मैंने तेरा क्या बिगाड़ाथा जो तूने प्रहासको नदीके पार उतारदिया मायावती बोली मुझसे बहुतसे लोग ईर्षाकरतेहैं और शत्रुता मानतेहैं इससेकिसीने यह झूठलगादियाहोगा नहींतोमैं प्रहास को मायाकृत नदीकेपार क्यों उतारदेती वह मेरा कौनथा और मुझको उससे क्या प्रयोजन था महेन्द्रबोला कि अच्छा तेरा झूठ और सच्च अभी विदित हुआजाताहै यह कहकर उसने कुछ मायाकी कि अकस्मात् एकविमान आकाशमें उड़ताहुआ आया और उसपर एक म्लेच्छ हाथमें मद्यका घट और पान पात्र लिये बैठाथा महेन्द्रने उससे कहा कि एकपात्र भरकर विचित्रमायाकोदे उसने तुरंत एकपानपात्रभरकर विचित्रमाया को दिया और उसने मायावतीको देकरकहा कि जो तुम सच्ची हो तो इस मायाकर्त्ताकी मद्यकेपात्रको पीजाओ मायावती उस पात्रको लेकर पीगई तब महेन्द्रने कुछ मायाकी और कहा कि तुमजाओ और कर्मसाक्षी म्लेच्छी आओ यह सुनकर वह म्लेच्छ तो चलागया और पृथ्वीमेंसे एकपुतली हाथमेंलेखनी और मसीपात्र और कागद लिये हुए निकली महेन्द्र ने वह लेखनी इत्यादि मायावती को देदी और कहा कि जो कुछ कर्म तैंने कियाहै उसकोलिख उससमय उसमद्यके पीनेसे मायावती अपने आपेमें न रही और यद्यपि वह सब जानतीथी तथापि उसने उसकर्मको दूसरेकाकियाहुआ अनुमानकरके सबवृत्तांत राजपुत्र रुद्रविक्रमपर मोहितहोने और प्रहासको घरमें रखने और उसको मायाकृत नदीके पार उतार देनेका लिख दिया और जब सब लिखचुकी तब महेन्द्रने कुछ मायाकी कि उससे वह मद्यका गुण विलगहोगया और वह अपने आपेमें आई

तब महेन्द्रबोला कि देख यह तैंने अपनेहाथसे क्यालिखाहै तब उसआश्चर्य्ययुक्त और प्रीतमवियोगिनीने अपना सबवृत्तांतदेखा और समझी कि अब सबहाल खुलगया अबकोई उत्तरनहीं है चुपहीरहनाचाहिये क्योंकि अब अपनेअपराधका कोईउत्तर नहीं है यह विचारकर वह चित्रकीसीलिखी चुपचाप खड़ीरही तब महेन्द्रने फिर कुछमायाकी कि वह पुतली लेखनीआदिलेकर अंतर्द्धानहोगई और पृथ्वीमेंसे दोम्लेच्छ भयानकरूपी हाथ में कोड़े लियेहुए प्रकटहुए और मायावतीपर मारपड़नेलगी और उस कोमलाङ्गीका सबशरीर और वस्त्र विदीर्णहोगये जब सौकोड़े उसपरपड़चुके तब उसकी ऐसी दशाहोगई कि केवल प्राणही निकलनेरहगयेथे और वह इससंसारसे थोड़ीमार और पड़नेपर पधारहीजाती परंतु विचित्रमायाने महेन्द्रसे हाथजोड़ कर कहा कि महाराज मेरेकहनेसे अब इसकेप्राण छोड़दीजिये यह अपनेदंडको पहुंचगई तब महेन्द्रने उसको पिटवाना बन्द करादिया और कुछमायाकी कि चारपुतलियां एकविमानलेकर आई महेन्द्रने उनसे कहा कि इसअपराधिनीको इसके घरपर पहुंचादो इसके पीछे वे कोड़ामारनेवाले म्लेच्छ पृथ्वी में समागये और पुतलियां मायावतीको विमानपरडालकर उसके घर लेगई और वहां उसकोछोड़कर आप विमानसहित चलीआई वहां मायावतीकी दासी और सहेलियां उसके पासआई और उसकीदशाको देखकर रोनेलगीं और उस मृतकतुल्यको एक शय्यापरडालकर चारोंओर उस चन्द्रमुखीको घेरकर बैठगई और कोई पट्टीसे टकरानेलगी कोई रोनेलगी किसीने उसके सुंदरमुखारविंदकी बलैयांलीं किसीका धीर्यछुटगया और किसीने महेन्द्रको दुर्बचनकहे कि देखो इसदुष्ट महेन्द्रने इस कोमलाङ्गीकी युवावस्थापरभी दयानकी हायउसने इसकोपिटते कैसे देखाहोगा कोई मायावती के मुखपर हाथफेरकर कहतीथी कि

दारी कुछतोबोल तेरे इसदुःखका कोसा इस मरेमहेन्द्रके प्राणों पर पड़ेगा जिसने तुझे घायलकियाहै और मृतकतुल्य करदि-याहै हाय तेरेप्रारब्धने तुझे किसवधिकके पालेडाला एकनेकहा कि सेना औ हमारी इसरानीने इस खोजमिटे महेन्द्रका क्या बिगाड़ाहै यहीनहीं है कि एकमनुष्यपर वह मोहितहोगई फिर इसमें इसका क्याअपराधहै और इसमार्ग में उनकीतो चलही नहींसकती जिनकीआज्ञासे आकाशखड़ाहै तो यहदुष्ट क्याकर सकताहै वह पहिले अपनीस्त्रीकीतो चौकसीकरले जो चारोंओर हेहड़ाभारतीफिरतीहै निदानयेसबइसप्रकारसे बातेंकरहीरहींथीं कि इतनेमें मायावतीने दोतीनहिचकीली और हाथपैर पटकने लगी मानो कोई श्वासतोड़ताहै तबतो सारारनिवास नीचेऊपर होगया और एक करुणाविलाप छागया सब छोटेबड़े पछाड़ें खानेलगे और सब मायावतीकी शय्याके चारोंओर फिरफिर कर कहतेथे कि ॥

चौ०। हायदेव कैसो यह कीन्हो। अंतकाल यहिकुलको कीन्हो ॥
देव न तोसो कछू बसाई। याने मृत्यु अकालहि पाई ॥
जाके अंग न फूल छुआयो। ताको कोड़नसों पिटवायो ॥
इविधि मार कोड़नकी मारी। सब तन पड़ी लालहैं धारी ॥
सकीनसहि तेहिकोमलअंगी। प्राणपयान करत बिनसंगी ॥
हाय बिपति यहकासों भाखें। किविधि हाय धीरज उरराखें ॥

निदान किसी ने उसको अच्छाकरने के लिये मायाके तंत्र रचे किसीनें केवड़ेका जल उसके मुखमें डाला किसीने उसपर गुलाबजल छिड़का इसीप्रकारसे सबदास और दासियां उस की चिकित्सामें अनुरक्तहुई देखाचाहिये कि इस शारीरकदुःख की निवृत्तीपर यह क्या करतीहै और कहांजाती है परंतु वहां इसके चलेआनेके पीछे मायाकृत पक्षियों ने महेन्द्रसे जाकर कहा कि रुंडाङ्गी जो प्रहासको पकड़ने गयाथा मारागया यह

सुनकर महेन्द्र क्रोधाकुल होकर उठखड़ाहुआ और वहां से बदरी उद्यानमें आया यहां सब सभासद स्थितथे सबने उठकर सत्कार पूर्वक लिया और वह आकर सिंहासनपर विराजमानहोगया उससमय सहस्रों घंटे और शंख अपनेआप बजने लगे और महेन्द्रने अपने विश्वमाली नाम मंत्रीको आज्ञादी कि तू शीघ्र जाकर प्रहासको पकड़ला यह मंत्री पहिले प्रहास से नीचा देखचुकाथा इसकारणसे वह जानेमें विचारकरनेलगा यह देखकर महेन्द्रने उसकीओर बड़े क्रोधसे देखा और उससे उसने भयभीतहोकर विचारा कि कहीं ऐसानहो कि मेरी भी गति मायावतीकीसीहो क्योंकि मेरे विलम्ब करनेसे महेन्द्रको अनुमानहोगा कि यहभी प्रहाससे मिलाहै तबतो विलम्ब कररहाहै यहविचारकरके वहवहांसे तुरंतचलदिया और उसके चले जानेकेपीछे महेन्द्रने विचित्रमायासे कहा कि अबतुमभीअपनी सेनामें जाओ मैं रानी निशाकरीसे युद्धकरनेकेलिये किसी म्लेच्छ अथवा म्लेच्छीको भेजूंगा यह आज्ञापाकर विचित्रमाया भी चलदी और चलते समय अपने दो तीन सेवकोंको छोड़ती गई कि जब प्रहास पकड़ाहुआआवै तुमसब मुझको भी खबर करना मेरेजीमें भी आगकेलूकेसे उठरहेहैं मैं अपनेहाथसे उसके दो तीन तमाचे मारूंगी निदान वहांसे चलकर वह अपनी सेनामें पहुंची सबने उसका आदरकिया और वह अपनीसभा में आकर सिंहासनपर विराजगई यहां समीररूपा और प्राता भी थीं उन्होंने पूछा कि हेमहारानी श्रीमहाराजने प्रहासके पकड़वानेका क्या मंत्र कियाहै विचित्रमायाबोली कि अरी समीररूपा वह निगोड़ा न जाने कोई भूतहै कि प्रेत है अथवा कोई छलावाहै कि पकड़ाजाताहै परंतु फिर ऐसा अलोपहोजाता है कि पताही नहींलगताहै अबकीबार विश्वमाली उसको पकड़ने को गया है देखिये वह पकडाजाता है अथवा अब की भी

कुछ उपद्रव करता है परंतु अबकी जो वह मरा हाथलगा तो महाराज उसे बिना बधकिये न छोड़ेंगे परंतु मुझे यह बड़ा परेखा है कि तुम बहुरूपिनियों से कुछ न होसका कभी ऐसा छल नकिया कि महाराज प्रसन्नहोते यहसुनकर समीररूपा बोली कि हमतो उसको कईबार पकड़लाये परंतु वह छलकर के छूटगया इस में हमारी छलविद्याकी क्याकमी है अब हम अपनेदेशको जाती हैं वहांसे लौटकर फिर उसके पकड़ने का यत्नकरेंगी और तबतक विश्वमालीका वृत्तांतभी विदितहोजा-यगा यहकहकर वे चलदीं मार्गमें चपलाने उन्हें जातेहुएदेख-कर अपना स्वरूप तीव्रा बहुरूपिनीकासा बनाया और पास जाकरपूछा अब कहांजानेकी इच्छा है समीररूपा बोली कि मैं बहुतदिनोंसे घरनहींगईथी आज मेरी इच्छाहै कि घरहोआऊं तूभीचाहै तोमेरेसाथचल यहसुनकर चपलाउसकेसाथहोलिया राहमें समीररूपाने कहा कि बहिन तुमने औरभी कुछसुना है अरी अबकी विश्वमाली महाराजको पकड़नेगया है यहसुनतेही चपलाके मुखकावर्ण पीलापड़गया और वह चुपकाहोगया उ-सके मुखकेवर्णके बदलने और चुपकेहोजानेसे वह तुरंत जान गई कि यह तीव्रानहींहै किंतु चपलाबहुरूपियाहै और झुंझ-लाकर बोली कि अरेमरे तू मेरेसाथ मुझसे छलकरनेको क्यों चलाआताहै जा दूरहो अपनेबाबासे कहदे कि बचारहे विश्व-माली बड़ाभारीमायावीहै चपलाबोला कि गुरानीजी तुम इतना क्रोध क्यों करतीहो हमतो कभीकभी तुम्हारी प्रीतिके कारणसे चलेआतेहैं सोतुम मुखसेभी सीधा नहींबोलतीहो यहसुनकर समीररूपा बोली कि तेरीप्रीतिमें आगलगाऊं और तेरीगुरानी के शिरमें लूकालगाऊं जा निपूते यहांसे चलाजा देखो निपूतेने क्या हँसीलगाई है जबदेखो तब गुरानीबनाता है और बातें चिकनाताहै तेरीगुरानीको मंगल इतवारको बुहारीसेमारूं जा

निपूते चलाजा चपलाकोतो विश्वमालीके आनेकीखबर प्रहास
को करनीथी इससे उसे क्रोधमें देखकर वह चलाआया और
सभामेंआकर प्रहाससे कहा कि आपको पकड़नेकेलिये विश्व-
माली आयाचाहता है प्रहासबोला कि परमेश्वर रक्षक है तब
रानी निशाकरीनेकहा कि प्रहासजी तुमछिपरहो वह ढूंढ़कर च-
लाजायगा प्रहासबोला कि ऐसेसमयपर मैं नछिपाहूं और नछि-
पूंगा एकसमयतो मैंने विश्वमालीका वधकरते २ छोड़दिया था
और बहुतकुछ उसका मानभंगकियाथा अब फिर उसकी कुद-
शाआईहै यहकहकर वह एकांतमें चलागया और वहांजाकर
उसने अपनीथैलीमेंसे एकम्लेच्छनिकाला क्योंकि उसने बहुत
से स्थानोंपर म्लेच्छोंको थैली में कैदकियाथा उसको निकाल-
कर प्रहासने उसकास्वरूप अपनासा बनाया और उसे चैत-
न्यकरकेकहा कि देखमैं तुझको अपनीथैलीकीकैदसे इसनियम
पर छोड़ताहूं कि तुझको चाहेकोई कितनाहीमारे अथवा धम-
कावै परंतु तू अपनानाम प्रहासही बतलाइयो और दूसरीबात
मतकरियो ऐसाकरनेसे तेरी प्रतिष्ठाबढ़ेगी और तुझको सुख
मिलेगा नहीं तो जो तैंने दूसरी बातकही तो तू जानताही है
मैं तुझ को मारही डालूंगा इसप्रकारसे उसे समझाबुझाकर
कहा कि जा भीतर सभाके चलाजा वहजो आसन सिंहासनके
पास बिछाहै उसपर जाकर बैठजा मेरे बैठनेका वही आसन है
यह कैदी सोंचलदेशका निवासीथा और बहुत दिनों का भूखा
था क्योंकि थैलीमें कैदियोंको दिनभर काम करनेके पीछे सूखे
टुकड़े खानेको मिलतेथे निदान वह वहां जाबैठा और यथेच्छ
मद्यपानकरके बोला कि मैं भूखाहूं यह सुनकर रानी निशाकरी
ने उसे प्रहास जानकर आज्ञादी कि सामनेकीसिविरमें प्रहास
जीके लिये उत्तम उत्तम खाद्यपेय आदि पदार्थ लाकर परोसो
यह आज्ञापाकर दासोंने तुरंत सब भोजन परोसदिये और यह

बनाहुआ प्रहास वहां जाकर बहुत दिवसका भूंखाहोनेसे हाथ मारनेलगा और बड़े २ ग्रास मारकर कईसेर भोजन खागया जब अच्छीप्रकारसे तृप्तहोगया तब थोड़ीदेरमें उसको आलस्यआया और उसने कहा कि मैं सोऊंगा यह सुनकर सेवकोंने वहीं एकशय्या बिछादी और वह उसपर जासोया और खर्राटे लेनेलगा उससमय चपला जो खबरकरके चलागयाथा फिर सभामें आया और पूछा कि गुरूजी कहां हैं रानी निशाकरी बोली कि सामनेकी सिबिरमें सोरहेहैं चपला वहां आया और परदाउठाकर जो घुसा तो देखा कि खर्राटे चलरहेहैं यह देखकर चपलाने विचारकिया गुरूजी ऐसे अचेत होकरतो कभी नहीं सोतेथे लाओ इसको जगाकर देखूं कि कौनहै यह विचारकर उसने उसम्लेच्छ को जगाकर पूछा कि तुम कौनहो उसने कहा कि मैं प्रहासहूं चपला पहिंचानतो चुकाहीथा कि गुरूजी नहीं हैं इससे उसने हँसकर कहा कि वाह हमनेही तो बनाया और हमींसे ये बातें वहबोला कि फिर जानतेनोहो पूछते क्योंहो मैं वही सोचलदेशका मल्लहूं तब चपला बोला कि अच्छा सोइये और चित्तसे यह कहताहुआ चलागया कि वाहगुरूजी आप अच्छे अलग होगये और इसको फँसाया और फिर प्रहासको ढूंढ़नेको चलदिया परंतु चलतेसमय रानी निशाकरीसे कहता गया कि जोकोई गुरूजीको पकड़नेआवै उससे युद्ध मतकरना पकड़कर लेजानेदेना गुरूजी यहींकहकर सोयेहैं और यहकहकर आप चलदिया उसकेजानेके पीछे विश्वमाली मायाबलसे पृथ्वीमें प्रवेश करके चला और उसीस्थानपर जाकर निकला जहां वहम्लेच्छ प्रहास बनाहुआ सोरहाथा परंतु उसके आनेसे वायुगरम चलनेलगी और निशाकरी आदिके रोंगटेखड़े होगये तब निशाकरीने कहा कि हे आनन्दा सामनेकी सिबिरमें कोई न कोई आया है देखो पृथ्वी हिलरही है यह सुनकर आनन्दा

बोली कि तुम सत्य कहतीहो मुझेभी मायाबलसे ऐसाही जान पड़ताहै इसअवसरमें विश्वमालीने उसम्लेच्छको देखकर कहा कि अरे छली तूयहां छिपाहुआ आनन्दसे सोरहाहै आअपनी मृत्युको नहींजानताहै और यहकहकर उसको मायाबलसे हाथ में उठाकर आकाशमार्गी हुआ और पुकारा कि मैं विश्वमालीहूं यहशब्दसुनकर रानीनिशाकरीने सेवकोंसेकहा कि अरेउससास-नेकी सिविरके परदेउठाकर बांधदो मैंदेखूं कि प्रहासकेपास कौन आयाहै और जब परदोंके बांधेजानेपर देखा कि प्रहासके सोने की शय्या खालीपड़ीहै तबसबरोकर कहनेलगे कि हाय अबकी महेन्द्र उसको जीता न छोड़ैगा क्योंकि उसका प्रहासके हाथसे बड़ा अपमानहुआहै और वह प्रहासका परमशत्रुहै सो हे रानी निशाकरी जब ऐसा मित्र माराजाय तब संसारमें रहनाव्यर्थ है इससे उचितहै कि हमसब चलकर अपनेको मायाकृत नदी में गिरादें यह कहकर रानीनिशाकरी मायाकृत मयूरपर सवारहुई और एकलक्ष म्लेच्छ उसके साथहुए सबसेनामें एक कोलाहल मचगया और सब सेना और सेनापति मरने को तय्यारहोगये उससमय चपला वहां चारोंओर फिर फिराकरआया जो प्रहास को ढूंढ़नेगया था और सबको चलनेकी तय्यारी करतेहुएदेखकर पूछा कि कहांजानेकी इच्छाहै निशाकरी बोली हमको प्रहासके लिये प्राणदेना स्वीकारहै इससे हमसबजाकर रक्तवाहिनी नदी मेंगिरेंगे और अदृश्यखंडपर धावाकरेंगे यहसुनकर प्रहासबोला कि तुम्हारे साहसकोधन्यहै मित्रताऔर प्रीतिइसीकानामहै परंतु गुरूजीयहांहीहैं उनके शत्रुपकड़ेजावें तुमसबचिंतामतकरो और बैठकर आनन्दकरो और फिर सबवृत्तांत छलकरनेका सुनाकर कहा कि इसबातको गुप्तरखना और जब प्रहासकी चर्चाहो तब अपना शोक प्रकटकरना जिससेसबकोई जानतारहै कि प्रहास पकड़ागयाहै और फिरतुमदेखना कि परमेश्वर क्याकरताहै यह

सुनकर रानीनिशाकरी अपनी सिविरमें चलीआई और चपला के कहनेकेअनुसार करनेलगी परंतु अबप्रहासका वृत्तांतसुनिये कि वह उस लोंचल देशके मल्लको सभामें भेजकर चलदिया और कई कोसजाकर एक बनमें पहुंचा वहां एक स्थान बना हुआथा और उसके द्वारपर एकस्त्री मायाविनी बैठीहुईथी और दो लड़के खेलरहेथे उसको देखकर प्रहास एक बुढ़ियाका रूप धारणकरके उसकेपासगया और बोला कि मायाकर्त्ता तेराभला करै मैं बहुत भूंखीहूं कुछ भोजनहोसके तो दे और पुण्यले तब उसम्लेच्छीने घरमेंजाकर उसबुढ़ियाको अन्नदिया और बुढ़िया ने आशीर्वाद दिया कि मायाकर्त्ता तेरे पुत्रोंको सुखीरक्खे जैसा तैंने भूंखेका पेटभराहै यहसुनकर वह म्लेच्छीबोली अरीबुढ़िया तेरे कोईहै वह बोली कि मुझ मंदभागिनीके कोई नहींहै मैं सब को खागई तुम मुझको भोजनदो तो मैं तुम्हारेहीयहां रहाकरूं और फिर पचास अशर्फियां निकालकर उसकोदिखाई तब तो वह म्लेच्छी उसकेपास आबैठी और बोली तुम इनका क्या करोगी बुढ़िया बोली कि मैंने अपने बुरे भले समयकेलिये लगा रक्खीहैं तीन तीन दिन बिना अन्नके होजातेहैं परंतु मैं इन को खर्च नहीं करतीहूं और इनसे पृथक् और भी धन मेरेपास है तुम एकांत में चलो तो मैं बतादूं यहकहकर वह उसम्लेच्छीका हाथथामकर एक कोठरीमें लेगया और मूर्च्छाकरचूर्ण उसकेमुखपर मलकर उसे मूर्च्छितकरदिया और अपनी थैलीमें डाललिया और उसकासा स्वरूप अपना बनाकर और उसके वस्त्र पहिरकर बाहर निकलआया और जो दोएकसेवकथे उनसे कहा कि यहवृद्धा बड़ीछलिनीथी कोठरीमेंजाकर पृथ्वीमेंसमागई अब जोकोईआवै तो यहांआने नपावै और एकदासीसे कहा कि रसोई शीघ्रबना हमारे पति आतेहोंगे यहसुनकर वहबोली कि मांसतो बनगयाहै अब केवल रोटी बनानाहै निदान प्रहासतो

यहां गृहस्थीके धंधेमें फंसाहै परंतु अब उस सोंचलदेशीयमल्ल कावृत्तांतसुनिये कि जब बिद्युमाली उसकोलेकर बदरीउद्यानमें पहुंचा तब वह मल्ल उसमायाकृत बाग और मायाधीश महेन्द्रकी सभाको देखकर चकित होगया कि शंख आदि अनेक प्रकारके बाजे अपने आप बजरहे हैं और सब स्थान जगमग जगमग होरहाहै और बड़ेबड़े म्लेच्छ उत्तम उत्तम आसनोंपर बैठेहुएहैं यह देखकर उसमल्लने सबको दण्डवत्‌की तब महेन्द्रबोला कि क्योंप्रहास तैंने जो मेरेसाथ कियाहै वहभी तुझको यादहै अबमैं उसका बदला तुझसेलेताहूं मल्लबोला कि आगे जोहुआ सोहुआ अबमुझे आप भोजन दीजिये मैं यहीं रहाकरूं यह सुनकर महेन्द्र बोला कि क्योंरे वर्णसंकर दुष्टात्मा तू फिर मुझसे छलकीबातें करनेलगा यह सुनतेही वह मल्लक्रोध में भरगया और बोला कि बर्णसंकर तू और तेरा पिताहोगा सज्जनलोग सत्पुरुषोंसे ऐसेदुर्बचन नहींबोलाकरतेहैं यहसुनकर महेन्द्रने क्रोधकरके कहा कि अरेचांडाल तू अपनीनीचतासे बिमुख नहींहोताहै रहतो तेरीऐसीतैसीकरूं यहसुनकर वहबोला कि नीच और चांडाल तू और तेरीसातपीढ़ी तू क्याबढ़कर बोलताहै अभी तेरीगरदन उखाड़करफेंकदूंगा यहदेखकर सब सभासद कहनेलगे कि भाई यहांसे चलदेनाही ठीकहै आज तो प्रहास भी बिगड़ाहुआ मालूमहोता है इससे आज यह बड़ाही उपद्रवकरेगा यह सुनकर एक म्लेच्छने कहा कि तुम सब बड़े डरपोकहो अरेभाई यह मुखसे दुर्बचनबोलनेके सिवाय क्याकरेगा हाथपैरतो बँधेहीहुएहैं एक केवल मुख खुलाहै उसी से बकरहाहै वह बोला कि हमतो देखचुकेहैं क्षणमात्रमें मनुष्य पुरुषसे स्त्री होजाता है उपानह शिरपर पड़तेहैं और मुखकाला होजाता है यह कहकर दोएक म्लेच्छ उठकरचले और जिस किसीने पूछा कि कहांजातेहो तो उत्तरदिया कि लघुशंका करने

जाते हैं परंतु फिर लौटकर नहींआये और उधर महेन्द्रने आ-
ज्ञादी कि हे विश्वमाली इस अपमान करने वालेका शिर शीघ्र
काटले यह सुनकर वह मल्ल पुकारकर बोला कि धन्यहै नाम
बड़े और दर्शन थोड़े एकतो मैं वर्षोंतक थैलीमें कैदरहा दूसरे
अब ये मेराशिर काटते हैं यह नहीं हुआ कि मुझपर अनुग्रह
करते और धनदेते कि यहां से और सोंचलदेशतक यशहोता
जहांकामें निवासीहूं यहसुनकर महेन्द्रबोला कि इसकी बातका
विश्वासमतकरो शीघ्र इसकाशिर धड़से पृथक्करदो यहसुनकर
विश्वमाली खड्गहाथमेंलेकर चला परंतु उसकीभुजापर एकके-
यूरबँधाथा और उसमें मायाकर्त्तादत्त पाषाणजड़ाथा उसकीओर
जो उसकी दृष्टिगईतोदेखा कि उसपरलिखगयाहै कि यहमनुष्य
प्रहास नहींहै किन्तु सोंचल देशीय मल्ल है यह देखकर वह
रुकरहा और लज्जितहुआ कि प्रहास छलकरके निकल गया
अब महेन्द्र मुझकोधर्षणाकरेगा और नीचऊंच कहेगा निदान
उसके रुकनेसे महेन्द्रने पूछा कि विलम्ब क्यों करताहै तुझको
क्या संदेहहै वह बोला कि मायाकर्त्तादत्त पाषाणपर लिखगया
है कि यह प्रहास नहींहै और यह कहकर वह केयूर महेन्द्रको
दिखलाया उसको देखकर महेन्द्रको भी विदित हुआ कि यह
प्रहास नहींहै किंतु सोंचलदेशका मल्लहै यहजानकर वह बड़े
क्रोधसे बोला कि इस दीनजनको छोड़दो मैं उसदुष्ट बहुरूपिये
को विना पकड़े न रहूंगा और यह कहकर उसने कुछ मायाकी
कि पृथ्वीसे एक म्लेच्छी निकली जो शिरफकेरेंहुए बड़ीभयानक
थी और हाथमें एक दर्पण लेरहीथी उसनेनिकलकर महेन्द्रको
दंडवत्की और सामने खड़ीहोगई महेन्द्रने उसके हाथसे दर्पण
लेलिया और उसका वेष्टन जो मखमलकाथा उतार कर कुछ
और मायाकी कि दो स्त्रियां और पृथ्वीसे प्रकटहुईं एककेहाथ
में पिचकारी और दूसरे के हाथमें वस्त्रथा महेन्द्रने उनसे कहा

कि इसदर्पणको निर्मलकरो यह सुनकर पिचकारीलिये जो स्त्री थी उसने जलसे उसदर्पणको धोकर उसकीधूल दूरकरदी और वस्त्र जिस्केपासथा उसने वस्त्रमे पोंछकर वह दर्पण महेन्द्र के सन्मुख लगादिया तब महेन्द्रनेकहा कि हे विश्वमाली इसदर्पण में देख जहां कहीं प्रहासहोगा वहां दृष्टिपड़ेगा तबविश्वमाली उसमें देखनेलगा परंतु अब प्रहासका वृत्तांत सुनिये कि वह जो उसम्लेच्छकी स्त्रीका रूप धारणकरकेबैठा थोड़ीदेरमें उसकापतिआया और उसको अपनी स्त्रीजानकर बोला कि जोकुछ भोजनबना हो लेआओ मैं बहुत क्षुधितहूं यहसुनकर प्रहासने उसकेहाथ धुलाये और भोजनपरोसकर उसकेसामने रखदिया और आप हाथमें चमरलेकर ढोरनेलगा तबउसम्लेच्छने प्रहासको अपनी स्त्रीजानकर हाथपकड़कर बैठालिया और कहा कि तुमभी हमारे साथबैठकरभोजनकरो तब प्रहासभी बनावटकेसाथ भोजनकरने बैठगया निदान विश्वमालीने उसीसमयउसदर्पणमेंदेखा कि एक हरेभरे बनमें एकस्थान बनाहुआ है और उसमें स्त्री पुरुष बैठे हुए भोजनकररहेहैं यहदेखकर उसनेकहा कि महाराज मुझको इसदर्पणमें प्रहास नहींदीखताहै महेन्द्रबोला कि प्रत्यक्षबातको क्या बतायाजावे अरे दुर्बुद्धीदेख यहजो स्त्री पुरुषकेपासबैठीहुई भोजन कररही है उसको नहीं देखताहै कि ग्रास तोड़ तोड़कर वस्त्रमें छिपातीजाती है और खातीनहीं है यह वहीछली प्रहास है क्योंकि इस दर्पणका यही प्रभावहै कि जिसको ढूंढ़ो उसके रहनेकास्थान दिखादेता है आगे अपनी समझहै सोतुम सीधे अब चलेजाओ इसम्लेच्छसे सबवृत्तांत कहकर उसकी स्त्रीको पकड़लाओ मैं उसको यहां प्रहास बनाऊंगा यह सुनकर वि-श्वमाली मायाबलसे वहांसेचला और पलभरमें उस स्थानपर जापहुंचा उसकोदेखतेही वहम्लेच्छ खड़ाहोगया और बहुतसा आदर सत्कारकरके बोला कि आज मेरे धन्यभागहैं जो प्रधान

मंत्री श्रीमहाराज के आये और मेरे स्थानको पवित्रकिया यह सुनकर विश्वमालीने उसकीबातकानो कुछउत्तर नहींदिया और कुछमायाकरके एकउरद उसकीस्त्रीकी गोदमें डालदिया उस समय प्रहासनेचाहा कि भागजाऊं परंतु मायासे उसका आधा शरीर स्तंभितहोगया और वह अकस्मात् पृथ्वीपरलोटनेलगा कि हाय हाय मेरेशरीरमें बड़ीपीड़ाहोतीहै वहम्लेच्छ अपनीस्त्री की यहदशा देखकर घबराया और बोला कि हे प्रधानमंत्री मायाबलसे मेरीस्त्रीकी पीड़ाको दूरकरदीजिये मैं अपनी स्त्रीसे परमप्रीतिमानहूं यहसुनकर विश्वमालीबोला कि अरेबुद्धिहीन यह तेरी स्त्री नहीं है तेरीस्त्रीको तो इसने अंतर्द्धान करदिया है यह प्रहास बहुरूपियाहै महाराजने मुझे इसकेपकड़नेको भेजा है यहसुनकर वहम्लेच्छ शिरपीटकर रोनेलगा तब प्रहास उस काहाथ थामकरबोला कि आप क्योंरोते हैं मैं आपकीभार्या तो हूंही इसको बकनेदो यह झूंठा है जब विश्वमालीने सुना कि यह मुझको झूंठाबनाता है तब उसने कुछमायाकी उससे एक बादलप्रकटहुआ और उसके जलकीबूंदोंके पड़नेसे प्रहास का वह स्त्रीस्वरूप दूरहोकर उसका निजस्वरूप प्रकटहोगया यह देखकर वहम्लेच्छ पछाड़खानेलगा और बोला कि हे प्रहास अपने ईश्वरकोजानकर मुझेबतादे कि मेरीस्त्री कहां है प्रहास बोला कि उसेतो मैं भक्षणकरगया और जो विश्वमाली नआ-जाता तो मैं तुझेभी खाजाता यहकहकर वह विश्वमाली से बोला कि तू मुझे महेन्द्रके सन्मुख लेचल तुझे एकबारका अपना अपमानहोना यादनहीं है जो मुझको कष्टपहुंचाने को उद्यतहै निश्चयजानियो कि जो मुझको कष्टपहुंचावेगा अपने जीवितसे निराशहोगा मैं संसार के मायावीम्लेच्छों का कालहूं इससे जो तू अपना कल्याणचाहै तो मेरेपीछे मतपड़े यह सुन-कर विश्वमाली भयभीतहुआ और मायाकर्त्ता दत्तपाषाण को

देखा जो केयूरमें जड़ाथा और उसपर उसने यह लिखापाया कि यह जो कहताहै सत्यकहताहै यह मारा किसीसे नजायगा परंतु इससमय इसकोछोड़जानेमें महेन्द्र तुझको धर्षणाकरेगा तुझको इसकेखोजमें वहींसेआना उचितनथा यहपढ़कर विश्व-माली अपने आने से परम लज्जितहुआ और बेबशहोने से प्रहासको हाथमेंपकड़कर आकाशमार्गीहुआ तब प्रहास बोला कि हे विश्वमाली तू थोड़ीदेर ठहरजा और मेरी एकबात और सुनले वह ठहरगया और प्रहासनेकहा कि जोतू मुझे अदृश्य खंडमें लियेचलताहै तो इतनाकाम औरकर कि मुझको बांध कर पृथ्वीके ऊपरचल जिससे मैं अपनेइष्ट मित्रोंको और मेरे इष्ट मित्र मुझे मायाकृत नदीतकके मार्गमें परस्परदेखलें और जब नदीकेतटपरपहुंचो तबजैसे तुम्हारीइच्छाहो वैसेलेचलना और मैं महाराज शत्रुंजय के लवणकी शपथखाकर कहताहूं कि जो मेरा यहकहना नमाना तो मैं तुझको जहांपाऊंगा मार-डालूंगा यहसुनकर विश्वमाली बोला कि तू यह जानता है कि नदीतक पैरोंपैरोंजानेमें मुझे और बहुरूपियेआकर छुडालेजा-यँगे सो यह कभी न होगा म ऐसावैसा नहींहूं जो किसीके छल में आजाऊं अच्छा अब म तेराहीकहा करताहूं यहकहकर वह पृथ्वीपर उतरा और प्रहासको पैरों२ लेकर चला परंतु इसको तो पहुंचने में बिलम्बहोगी तबतक महेन्द्रकी सभाकावृत्तांत सुनिये कि महेन्द्रबैठा२ उस मायाकृत दर्पणमें सबवृत्तांत देखा किया और जब विश्वमाली प्रहासको लेकरचला तबउसने सब सभासदोंसेकहा कि प्रहास वह पकड़ागया यहहाल जो विदित हुआतो रानी विचित्रमायाके सेवकोंनेभीसुना जिनको वह छोड़ गईथी और उन्होंने जाकर विचित्रमायासे वहवृत्तांतकहा और बोले चलिये प्रहास पकड़ागयाहै यहसुनकर विचित्रमाया प्र-सन्नहुई और अपनी सेनासे चलकर महेन्द्रकी सभामें पहुंची

और उसके वामाङ्गमें जावैठी तब महेन्द्रने उससे सबवृत्तांत कहकर कहा कि अब विद्युमाली प्रहासको लायाहीचाहता है निदान वेसब विद्युमालीके आनेकी बाट देखरहे थे कि अकस्मात् घटा आकाशमें ऐसी छागई कि अंधकारहोगया और भयानकशब्द होनेलगे और थोड़ीदेरमें मायाकृत विमानप्रकट हुआ जिसपर एकम्लेच्छी भयंकररूपा बड़े २ विषधरसर्पोंको अंगमेंलपेटे बैठीथी और उसकेसाथमें दोलक्षम्लेच्छ नानाप्रकारके बाद्यबजाते और मायाकर्त्ताकी जयबोलतेहुए चलेआते थे उसको आतेहुएदेखकर महेन्द्रने अद्भुतजालकी पुस्तकदेखी और उससे उसको विदितहुआ कि विभूतमाया तीव्रमाया की बेटी जो तेरेराज्यमें एकदेशकी अधिपतिहै वह रानी निशाकरी से युद्धकरनेकी इच्छासे आती है यहदेखकर उसने पुस्तक को बन्दकरदिया इतनेमें विभूतमाया भी उतरकरआई और महेन्द्रकोदंडवत्की महेन्द्रनेपूछा कि कहो तुम्हारीमाता कुशलपूर्वक है वह क्यों नहींआई वहबोली वहभीआतीहै परंतु मैं पहिलेसे इसकारणसे आईहूं कि जबतक माताजीआवें तबतक मैं सब शत्रुओंका बधकरडालूं इससे मैं चाहतीहूं कि श्रीमहाराज मुझ कोआज्ञादें कि मैं निशाकरीकी सेनाकी ओर जाऊं यहसुनकर महेन्द्रबोला कि तुमअभीतोचलीआतीहो थोड़ीदेर विश्रामकरो और अपनीमाताको बुलाभेजो वहसबमायाकृतयुद्धमें परमप्रवीणहै और तुम एकाकीमतजाओ वहबोली कि अच्छाजोआपमुझको बोदाजानतेहैं तोमैं अपनेघरजातीहूं नहींतोमुझको जाने कीआज्ञादीजिये यहसुनकर विचित्रमायाबोली कि महाराज यह सदैवसे विक्षिप्तसीहै आपका कहा न मानेगी इससे आप इस को जानेकी आज्ञादीजिये अच्छातोहै उधर तो प्रहास पकड़ा हुआ आताहै और इधर यह जाकर रानी निशाकरीको ग्रहण करे सबका काम एकही समयमें पूराहोजाय यहबात महेन्द्रको

अच्छीलगी और उससे कहा हे विचित्रमाया तुमभीजाओ और निष्प्रभ भवनकेनीचे डेरे खड़ेकराकर विभूतमायाके लिये सब आनन्द और विहारकी सामग्री इकट्ठी करादो वह बोली कि मैं सब प्रबन्ध यहींसे करायेदेतीहूं यह कहकर उसने अपनी दोनों मंत्रिणियों से कहा कि हे मायामणि और मायारत्न तुम दोनों जाकर शीघ्रडेरे खड़ेकराकर मांस और अन्नके सब भक्ष और भोज्य पदार्थोंका प्रबन्धकरादो देखो किसीप्रकारका दुख न होने पावे यह सुनकर वे दोनों चलीं और सेनामें आकर उन्हों ने सेवकोंको सब प्रबन्ध करने की आज्ञादी उनकी आज्ञा पाकर सेवकोंने विचित्रमायाके डेरों से पृथक् निष्प्रभ भवनके समीप उत्तमडेरे और वितान जिनमें मोतियोंकी झालरें लगीहुई थीं खड़ेकराये उनमें बिछौने मखमलके बिछवाये और सुनहरी रुपहरी वितान रत्नजटित बनवादिये और संपूर्ण भक्ष भोज्य आदि पदार्थोंका प्रबन्धकरादिया उससमय विभूतमाया बड़ीधूम धाम से चली बाजे नानाप्रकारके बजतेहुए मायावी म्लेच्छ अनेक प्रकारकी मायाकेचमत्कार दिखातेहुए क्षणमात्रमें मायाकृत नदी को उल्लंघनकरके प्रत्यक्ष खंडमें आनपहुंचे यहांमायारत्न और मायामणि पहिलेहीसे मौजूदथीं उन्होंने आगौनीके लिये मान्य म्लेच्छोंको भेजा और वे विभूतमायाको लिवाकर सेनामें आये विभूतमायाने प्रथम तो आकर सैन्धको दंडवत्की और दोनों चरणोंको छूकर कहा कि आप मायाकर्त्ताके पौत्रहैं कल मेरेयुद्ध को देखियेगा कि मैं इन शत्रुओंका वध किस सुगमतासे करती हूं यह कहकर वह अपनेडेरेमें चलीगई और वहां विश्रामकर के मद्यपान करनेलगी और उसकी सेनाभी उतरकर आहारादिक क्रिया करनेलगी और जिससमय दिनकररूपी अश्वसादी प्रकाशरूपी अश्वसे उतरकर पश्चिमरूपी सिविरमें प्राप्तहुआ और वहां जाकर उसने अपने रश्मिरूपी वस्त्रोंको उतारकर

विश्राम किया और संसारकी दृष्टिसे अलोपहोगया तब सब जगतमें रात्रिरूपी मायाविनी म्लेच्छीके आनेसे अंधकार छा-गया और उस मायाविनी के आकाशरूपी नीलवर्ण के डेरे में मयंकरूपी दीपक प्रज्वलितहुआ ॥

सो०। विकस्यो विमल मयंक तमसावृत आकाशमें।
मनहुं प्रभाकोलंक खोलि विछायो जगतपर ॥

उससमय विभूतमाया ने युद्धके वाद्यबजवाये और नगाड़े गड़गड़ानेलगे मायाकृत पक्षियोंने यह संदेशा रानी निशाकरी को पहुंचाया और कहा कि एक म्लेच्छी विभूतमायानामीआई है और युद्धकी इच्छासे उसने युद्धके वाद्यबजवायेहैं यहसुनकर रानीनिशाकारी ने कहा कि परमेश्वर हमाराभी रक्षकहै अच्छा हमारी सेनामें भी युद्धके वाद्यबजायेजावें यह आज्ञापाकर युद्ध के वाद्य बजनेलगे और सब योद्धा युद्धकीतय्यारी करनेलगे जो जो मायावीथे वे अपने २ मायाके प्रयोग सिद्ध करनेलगे और जो शूरवीरथे वे अपने अस्त्र शस्त्रोंको ठीककरतेरहे निदान इसी प्रकारसे रात्रिभर दोनों सेनाओंमें तय्यारीरही और अंतमें वह समयआया कि सूर्यके तेजरूपी युद्धोत्सुकराजाने आकाशरूपी रणभूमिमें आकर अंधकाररूपी शत्रुकोमारकर भगादिया और संसारको अपनी प्रभासे व्याप्त करदिया ॥

सो०। रवि तव आय अकाश तेजरूप असि वाहिके।
तम अरि दियोविनाश गहे रश्मि गुरुतापरम ॥

उससमय दोनोंओरसे सेना दो समुद्रोंकी भांति उमड़कर रणभूमिमें आई मायावी सब महानागोंपर सवारथे और माया करनेके अस्त्रलियेहुए युद्धकेलिये सन्नद्धथे दोनोंओर सेना भांति भांतिकी पताकाओंसे विचित्रथीं दो॑ ोरसे सेना व्यूहितहुई मायाकृताघटाछागई और चपला कड़ककड़ककर चमकनेलगी सेनापति अपनी २ सेनाके व्यूहके मुखपर आकर स्थितहुए

रानीनिशाकरीका विमान सेनाके मध्यमें रहा और विभूतमाया एकबड़ेउग्रनागपर बैठीहुई अपनी सेनाकेआगेआकर स्थितहुई उससमय कवीश्वरोंने निकलकर कड़ककड़ककर वीररसके पद योद्धाओंकोसुनाये और युद्धके मरणकीश्रेष्ठता और यशपानेकी प्रशंसासबशूरवीरोंको सुनाकर सबको रणकाउत्साहकरादिया ॥

जयकरीछंद । हेहे शूरवीर बलसींम । सुनहु हमारे वचन अथींम ॥
अहै न रहो न होवनहार । है मिथ्या यह सबसंसार ॥
अक्षयरहतसुयशजगमांह । सोयशलेहु जीतिअरिठांह ।
मरेंस्वर्ग जातें भुविभोग । यहिसम नाहिंदूसर संयोग ॥
कुंजलाल गुनिकेनिजधर्म । शत्रुनिमारि लेउजयपर्म ॥

इस शिक्षाको सुनकर सब शूर वीरोंके हृदय वीररससे भर-गये उससमय विभूतमाया अपने नागको उड़ाकर रणभूमि में आईऔर मायाबलसे अग्नि और पाषाण वर्षानेलगी और महा भयानक रूपसे युवावस्थाकी तरंगोंमें भरीहुई मायाकृत चमत्कार दिखानेलगी उससमय उसकी यह दशाथी ॥

चौ० । अरुणनैन दीरघ विकरारे । तनपर लपटे विषधर कारे ॥
मुखसोंतजतअग्निकीज्वाला । रूपभयंकर अति विकराला ॥
इमि विभूतमाया तहँ आई । बालीवचन इविधिसमुझाई ॥
रानी निशाकरी सुनिलेहू । त्यागि आपनी शठतादेहू ॥
नाहिंतो ममप्रभाव तुमजानत । ममकृतमाया प्रलयपयानत ॥
क्षणमें सबहि कालवशकरिहौं । कानएककी नहिंउरधरिहौं ॥
यहसुनि निशाकरीनिहिंसाहिके । बोलीवचन क्रोधसानहिके ॥
बोलत वचन अरीतें कासन । छेरिबधिककरकौनसंभाषन ॥

यहसुनकर विभूतमाया क्रोधसे लालहोगई और बोली कि अच्छाभेज किसको तू मेरेसाथ युद्धकरनेको भेजतीहै यहसुन-कर रानीनिशाकरीका एकसेनापति संभीरनामी अपनेमायाकृत गृद्धवाहनको उड़ाकर उसके सन्मुखगया उसने एक नारिकेल अस्त्र मायाकरकेछोड़ा और वह संभीरके हृदयको बेधकर पार

निकलगया यहदेखकर रानी निशाकरीने अपना विमान आगे कोबढ़ाया परंतु उसीसमय सब सेनापतियोंने आकर घेरलिया और विनयकी कि हमसब प्राणदेनेको तयारहैं तब रानी निशाकरीने सबको आश्वासन किया और युद्धके बाद्यबजवाकर अपनाविमान आगे बढ़ाया और रणभूमि में आकर स्थितहोगई उसको देखकर विभूतमायाने कुछमायाकरके अपनेहाथ अपनी आंखोंपर रखलिये कि रानी निशाकरीके नेत्रोंकीदृष्टि जातीरही तब विभूतमाया ने खड्गनिकालकर उसका शिरकाटनेचाहा परंतु निशाकरीने तुरंत कुछमायाकी कि दोहस्त प्रकटहुए और निशाकरीको विभूतमायाके सन्मुखसेउठाकर लेगये यहदेखकर विभूतमायाहँसी और बोली कि लो वह भागीजातीहै यहबात रानी आनन्दाको बुरीलगी और उसने मायाकरके एक फूलों की गेंदफेंकी परंतु विभूतमायाने अपनी दोउँगली आकाशकी ओर उठादीं कि उससे वहगेंद कटगई और बसंतऋतु प्रकट न हुई और गेंदके कटजाने से उसके फूल बिखरकर पृथ्वीपर गिरपड़े तब उसनेकहा कि हे आनन्दा अब अपनेफूलोंका आनन्ददेखो यहसुनकर आनन्दा अपने मयूरपरसे उतरकर उन फूलोंके पास जाबैठी और झूमनेलगी तब विभूतमाया खड्ग लेकर उसका शिरकाटनेकोचली परंतु उसीसमय रतिकालने पृथ्वीको पैरोंसे मर्दनकरके पृथ्वी में प्रवेशकिया और तत्क्षण अचानकही विभूतमायाकेसमीप निकलकर ऐसा अट्टहासकिया कि विभूतमाया जो आनन्दाका बधकरने उसीकी ओर ध्यान लगाये आरहीथी मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी और उसके गिरतेही संडीनचपला आकाशसे कड़ककर उसके ऊपरगिरी और उसके दोखंडकरके पृथ्वीमें प्रवेशकरगई और फिर पृथ्वीसेनिकल कर विभूतमायाकी सेनाकीओर चलीगई उधर विभूतमाया के शरीरके दोनोंखंड उछलकर मिलगये और उड़कर एकओरको

आकाशमार्गीहुएऔर अंतरिक्षमेंशब्दहुआ कि म मारागई मेरा नाम विभूतमायाथा उससमय रंतिकाल उक्तप्रकारसे अट्टहास करकरकेसेनाके योद्धाओंको मूर्च्छितकरनेलगा और संडीनचपला उनपर गिरगिरके उनका बधकरनेलगी उधर रानीआनन्दा और निशाकरी भी विभूतमायाकी माया से मुक्तहुईं और सब सेनाको लेकर शत्रुसेनापर जापड़ीं और दोनोंओरसे मायाकृत युद्ध होनेलगा ॥

चौ०। विविधभांति मायाकरिकरिके। करतयुद्धडाटत अड़िअड़िके ॥
नाना विधिसों अस्त्र प्रहार। घोरयुद्ध करि अरिन सँहारें ॥
कोउबाण वृष्टि भरिलावै। कोउ असिगहि हनिबे धावै ॥
वीरअनेक क्रोधभरिभरिके। करहिंयुद्ध अतिशय भिरिभिरिके ॥
जूटिजूटि थिरिथिरिकेलरईं। छूटिछूटि पुनिभुनि रिस भरईं ॥
नानाविधि माया विस्तारें। करिप्रहार तहँप्रलय पसारें ॥
इविधिघोर भीषण संग्रामा। भयोतहां अतिशय तेहियामा ॥
कटेअसंख्यन रण करियोधा। रहयोन निजपरकर कछुबोधा ॥

क्षणमात्रमें सहस्रों योद्धा शत्रुदलके मारेगये और उनके रुधिरसे नदीबहकर तरंग लेनेलगी अंतमें विभूतमायाकी सेना पलायमानहुई और निशाकरीके योद्धा उनको मारतेहुएचले उससमय सैन्धव क्रोधकरके आगेबढ़ा प्रकटहोकि यह इसप्रकारकी माया करताथा कि प्रथम शत्रुसेनाके सब योद्धाओंके चित्र मायाकृत लेखनीसे खींचलेताथा और फिर युद्धकेबाद्य बजवाकर रणभूमि में उन चित्रों के शिरकाट डालताथा इसप्रकारसे जिसके चित्रकाशिर काटताथा उसमनुष्यकाभी शिरधड़से पृथक् होजाताथा सो जबसे वह यहां आयाथा तभीसे चित्र शत्रुसेना के योद्धाओंके खींचरहाथा इसकेयुद्धकी कथा आगे वर्णनहोगी इससमय जो उसने शत्रुसेनाको समुद्रकी भांति उमड़तेहुए देखा तुरंत कुछ ऐसी मायाकी उससे धुआंप्रकटहुआ और उस की एकभीति बनकर सेनाकामार्ग रोककर खड़ीहोगई और जो

कोई आगेवढ़ा उसके शरीरसे एकचित्रपर छांई की भांति उस धूमकीभीतिसे निकलकर लिपटगया यह देखकर रानी निशाकरीने युद्ध निवृत्त करनेके वाद्य वजवादिये और विजय प्राप्त करके सेनासहित अपने डेरोंको लौटआई जोमाल शत्रुसेनाका लूटाथा वह सबको विभागपूर्वक देदिया और रणभूमि से मरे हुए योद्धाओंको उठवाकर उनका ऊर्ध्वदेहिक कर्मकिया और फिर अपनी सभामें आकर सिंहासनपर आसीन होगई और नृत्य गीतादिक आनन्द देखनेलगी निदान येसवतो विजयपाकर आनन्दमें मग्नह परंतु विभूतमायाकीलोथ उड़तीहुई महेन्द्रकेपास पहुंची और मायाकृत पक्षियोंने उसके वधहोनेकी सब व्यवस्था सुनाई उसको सुनकर महेन्द्रने बड़ा शोककिया दोनों हाथ अपने जंघापर देमारे और कहा कि मैं इसीदिनके कारण से उसको निषेध करताथा परंतु उसने हठकरके मेरा कहा न माना और अपने प्राण गँवाये अबमुझको उसकी माताके सन्मुख लज्जितहोना पड़ेगा अब मैं रत्नकूपपर मेलाकरके अवश्य सब शत्रुओंका वधकरूंगा अब पहिले प्रहासकावध करलूं तब और यत्न करूंगानजाने यह विश्वमाली कहां बैठरहा जोप्रहास को अभीतक नहींलाया इनवैष्णवोंसे बुरा पालापड़ाहै कि नतो कुछ मायावियोंसेहोताहै और नकुछ मुझसे बनपड़ताहै नित्यप्रति मुझको लज्जितहोना पड़ता है अब म क्या उपायकरूं जिससे येप्रबल वैष्णव मारेजायँ निदान वह यही संकल्प विकल्प मनमें कररहाथा कि एकमायाकृत हस्त एकपत्रलेकर आया उसको देखातो अद्भुतका भेजाहुआ पत्रपाया तुरंत उसने खड़े होकर दण्डवत्‌की और उसपत्रको शिर और आंखोंपर चढ़ाकर खोलातो उसमें लिखाथा कि हे मायावी म्लेच्छाधीश॥

सो०। धन्यतोर बलसेन धन्यधन्य पुरुषार्थ तव।
तोहि कहत जगजैन तेहुजगमें धन्यनर॥

तव प्रतापको धन्य धन्यतोर ऐश्वर्यता।
तोसमनाहिं जगअन्य सवप्रकारसोंधन्यतू॥

बड़ेआश्चर्यकी बातहै कि तू हमारा भक्तहोकर इसप्रकारसे अपने परमेश्वरको भूलजाय हमको महान्शोकहै हमने अपनी परमकृपासे अठारह सहस्र देशोंको छोड़कर तेरेराज्यमें आकर विश्राम किया केवल इसीप्रयोजनसे कि तेरी प्रतिष्ठाबढ़े और इनवैष्णवोंको जोहमसे विमुखहैं और हमको अपना परमेश्वर नहीं मानतेहैं उनको तेरेहाथसे बधकरावें परंतु तैंने इसका कुछ ध्यान न किया अब हम प्रारब्धको फेरकर तेरेमायाकृत देशको नष्ट करदेंगे और दीप्तपर्वतकी ओर चलेजायँगे क्योंकि अबये धर्महीन वैष्णव हमको बहुत सतातेहैं और तुझसे हमारी कुछ सहायता नहीं होसकती है यह पढ़कर महेन्द्रने कहा कि परमे श्वरका उलहना सत्यहै क्योंकि निश्चय मुझसे उनकी कुछसेवा नहींहोसकी नतो यहां प्रहासही पकड़ागया और न यहांसे ऐसा कोई मायावी भेजागया जो वहां जाकर सब वैष्णवोंका बध कर डालता अब में ऐसे म्लेच्छको भेजताहूं जोजातेही शत्रुंजयको सेना सहित बधकरडाले यह कहकर महेन्द्रने कुछ मायाकी कि उससे पृथ्वी कँपी और एक महानाग प्रकटहुआ और उसने एक मायाविनी म्लेच्छीको अपनेमुखसे उगलदिया उसम्लेच्छी का सब शरीर अग्निकी समान दीप्तथा और आंखें माणिककी भांति लाललाल चमकतीथीं और उसकेचलनेमें उसके शरीर से चिनगारियां उड़उड़कर गिरती थीं महेन्द्र ने उसे आज्ञादी कि हे अनिलांगी तुम म्लेच्छोंकी सेनालेकर परमेश्वरके पास जाओ और शत्रुंजयकी सेनाका विध्वंसकरो देखो कोई वैष्णव क्षत्री जीता न बचे यह आज्ञापाकर वह म्लेच्छी महेन्द्रको दंड- वत् करके फिर उसीनागके मुखमें प्रवेश करगई और वहांसे चलकर अपने स्थानपरआई और म्लेच्छोंकी सेनाको युद्धकी

तयारी करने की आज्ञादी आज्ञा पातेही अस्सी सहस्र म्लेच्छ सन्नद्ध होकर सवारहुए वाद्य बजनेलगे और त्रिशूल आदि अस्त्र चपलाकीभांति चमकनेलगे उससमय अनिलांगी माया-कृत विमानपर बैठकर आगेआगे हुई और उसके पीछे २ सब सेनाहोली और वहांसे बड़ी धूमधामके साथ रत्नाकर पर्वतकी ओरचली उसकेजानेकेपीछे महेन्द्रने फिरकुछमायाकी कि अक-स्मात् बड़ीभारीआंधीआई और एकम्लेच्छ उसमेंसेप्रकटहुआ जिसके दोदांतआगेके हाथीके दांतोंकी सदृश बाहिरको निकले हुएथे जब उसम्लेच्छ ने बढ़कर महेन्द्रको दण्डवत् की तब महेन्द्रनेआज्ञादी कि हेनागदंष्ट्र हमने अनिलाङ्गीको परमेश्वरके पासभेजाहै तुमभी वहींजाओ और पांचपात्र रत्नोंके भरेहुएदिये कि ये मेरीओरसे परमेश्वरको भेटकरना और एक विनयपत्र भी लिखकरदिया जिसमें यहलिखाथा कि हेश्रीकृपाल तेजस्वी परमेश्वर आपका कृपापत्र आया उससे मेरेतेज और बलकी वृद्धिहुई इससमय आपकी इच्छानुसार आपके रचेहुएके अनु-सार जो कुछ मेरी व्यवस्था यहां है उसको लिखूं तो आप के अचिंत्य प्रबन्धका भेदककहलाऊंगा अब म आपके पास दो म्लेच्छ महामायावी भेजताहूं उनका वृत्तांत और उनके नाम आपको उनके वहां पहुंचनेपर प्रकाशितहोजायँगे और वे आप के शत्रुओं का विध्वंसनकरेंगे निदान नागदंत उसपत्र और रत्नों के पात्रोंको लेकर वहां से चला और उसकी आज्ञा में जो चालीससहस्र म्लेच्छथे वे भी साथहुए और बड़ीधूमसे अद्भुत मिथ्या ईश्वरके स्थानकी ओरचले परंतु अनिलाङ्गी प्रथम मा-याकृत देशसे निकलकर रत्नाकर पर्वतकेसमीपपहुंची उससमय अद्भुत अपने महलों में था कि अकस्मात् आकाश में लाखों बादल रंगबिरंगे प्रकटहुए और मायावी म्लेच्छोंके आगमनके चिह्न सूचितहोनेलगे अर्थात् अग्नि और पाषाणोंकी वर्षा होने

लगी उसको देखकर अद्भुतने प्रसन्नहोकर कहा कि मेरा कोई सेवक आताहै और वह यहकहहीरहाथा कि अनिलाङ्गी विमान से उतरकर आई और अद्भुतकी पूजा और परिक्रमाकरके साष्टांग दण्डवत्की और आसनपर बैठगई और राजामहावीरने उसकी सेनाको दुर्गके बाहिर उतरवाया उससमय चित्रांगदने अनिलाङ्गीसे कहा कि तुम्हारे आनेसे हमको बड़ा दुःखहुआ वह बोली कि श्रीमान्को मुझ दासीसे क्या दुःखपहुंचाहै चित्रांगद बोला कि मुझको तुम्हारे बधहोनेका शोक है कि तुम्हारा शरीर तो अग्निकी समानहै और बड़ीधूमधामसे आईहो परंतु दो चारही घड़ीकी महिमानहो हाय बड़े शोककी बातहै कि यह सब तेज और पराक्रम क्षणमात्रमें धूलमें मिलजायँगे यह सुन कर वह बोली हेश्रीमान् परमेश्वरके कलि क्या वैष्णव बड़ेप्रबल हैं जो आप मुझको अभीसे मृतक समझरहेहैं मृत्युके आनेके पहिलेही रुदनकरना आपहीका कामहै यह सुनकर चित्रांगद बोला कि वैष्णव तो ऐसे प्रबलहैं कि उनकेमारे परमेश्वर भी भागे भागे फिरते हैं अच्छा अबतुम आईहो क्षणमात्र पीछे जो कुछ होनाहै वहहोगा हेअनिलाङ्गी तुम बहुरूपियोंका हाल तो मायाकृत देशमें देखती और सुनतीहीहोगी यहां वैसेही बहुरूपिये एकलाख और चौरासी सहस्र हैं इससे तुम्हारा बचना असंभवहै वहबोली कि मैं शत्रुंजयकी सब सेनाको कलही नाश करदूंगी तुम क्या कहतेहो मेरे बहुरूपिये मुझे कहांपावेंगे अब तुम दुर्गके बाहिरचलो वहांयुद्धके वाद्यबजायेजावें और प्रातःकाल युद्धहोय तबचित्रांगदने फिर उसको समझाया और कहा कि हेश्रीजी शीघ्रता मतकर कुछदिन संसारमें रहकर यहांका चरित्रदेखलो नहींतो फिरहम कहां और तुमकहां तबअनिलांगी बोली कि आप अब बहुतबातें नबनाइये और बाहिरचलेचलिये यहसुनकर चित्रांगद और अद्भुतआदि सब वहांसे चलकर

सेनामेंआये सभाकेडेरे खड़ेकियेगये और आनन्द और विहार करनेके सबपदार्थ स्थापितहुए उस सभाकेभीतर सिंहासनपर वह मिथ्याईश्वर जाकर बैठगया और नृत्यहोनेलगा और सब मद्य पानकरनेलगे और जब अनिलाङ्गीका मस्तक मद्यकेआ-वेश से उष्णहुआ तब उसने आज्ञादी कि युद्धके वाद्य बजाये जावें और उसकीआज्ञासे म्लेच्छ भेरीआदि वाद्य बजानेलगे उससमय वैष्णवी सेनाके जोदूत वहांथे वेसब वृत्तांतको पूछ ताछकर महाराज शत्रुंजयकी सभामें गये उससमय सभा में महाराजाधिराज सिंहासनपर विराजमानथे और सब शूरवीर और सभासद अपने २ स्थानोंपर आसीनथे कि इतनेमें इन दूतोंने जाकर साष्टांग दंडवत्की और बिनयपूर्वक बोले ॥

सो०। तेजप्रताप अखंड वयपौरुष ऐश्वर्यता।
यावतयह ब्रह्मंड तावतसबअक्षयरहैं ॥

हेश्रीमहाराज शत्रुसेना में एक अनिलाङ्गीनामी म्लेच्छी आईहै उसने युद्धकेवाद्य बजवायेहैं प्रातःकाल उसकी युद्धकरने की इच्छाहै परमेश्वर श्रीमहाराजको सदैव शत्रुओंपर विजयदे यहकहकर दूत चलेगये और श्रीमहाराजने कार्त्तिकेयी भेरीके बजानेकी आज्ञादी आज्ञापातेही प्रहासके पुत्र सुवासने वाद्या-लयको खोला और उस महाभेरी को बजाया उसका घोररव चौंसठकोसमें छागया उसकोसुनकर सब संसारीजीवोंका हृदय भयसे धड़कनेलगा शूरवीर प्रसन्नहोकर युद्धमें प्राणदेने अथवा विजययशलेने को सन्नद्धहोगये आकाश उसकेघोषसे पूरितहो गया और पर्वतों से भयंकर प्रतिशब्दहोनेलगा उससमय वह-दुस्सहशब्द प्रलयकालके शब्दकीसमान दीखनेलगा ॥

सो०। महाघोररवतासु छायोसबदिशि विदिशिमें।
मनहुं पापभयत्रासु नभधरणीचिंघरहितहैं॥

उसकोसुनकर सबशूरबीर युद्धकेलिये अपने अस्त्रशस्त्रोंकोठीक

करनेलगे और जिससमय दिनपतिने निशापतिके आगमन को सुनकर नभरूपी सिंहासन छोड़दिया और उससिंहासनपर निशापति अपनेसभासदरूपी तारागणोंसहितविराजमानहुआ॥

दो०। होतअस्त दिननाथके तमछायो चहुंओर।
भई प्रभातव इन्दुकी निर्मल अमल अथोर॥

उससमय महाराजाधिराजने अपनीसभाको विसर्जनकिया और आज्ञादी कि सबयोद्धा और सेनापति अर्द्धरात्रिके पहिले पहिलेतक सब आवश्यकक्रियाओंसे निवृत्तहोकर पिछली रात्रि में युद्धकी तयारीकरें निदान दोनोंसेनाओंमें युद्धकीतयारी होने लगी म्लेच्छोंकी सेनामें जो मायावीम्लेच्छथे वे अपने माया के प्रयोगोंको सिद्धकरनेलगे कोई खरमुख असुरको बाराह का वलिप्रदानकरता था कोई मांस के पिंड वनाकर अश्वकर्ण को भोगलगाताथा और कोई मायाकर्ताकी पूजाकरके कुछ आसुरी मायाके मंत्रको जपताथा और विनय करताथा॥

चौ०। वर्षदिवसलों शौचनलैहों। विनमुख प्रच्छालनहीं रहिहों॥
पांच वर्षलों विना नहाये। करिहों तव सेवा गुणगाये॥
अवकीमोर लाजरखलीजे। शत्रुनिमार विजय वरदीजे॥
नहिंतव महिमाहै कछुगांई। तुमसमान नहिंहै जगकोई॥

निदान चारोंओर वड़ी धूमधामथी कवीश्वर वीररससे भरे हुए पद चारोंओर योद्धाओंको सुनाते फिरतेथे उनको सुनसुनकर शूरवीर वीरतामें भरकर युद्धको परम उत्सव मानतेथे और युद्धमें शरीरको त्यागकरके स्वर्गमें जाने अथवा विजय प्राप्त करके संसारमें यशपानेकी आशामें प्रफुल्लित हृदय होकर युद्ध की सामग्रीको इकट्ठा करतेथे कोई उत्तम खड्ग और चर्मको बांधताथा कोई धनुषको लेकर बाणोंको पैनापैनाकर तरकसमें भरताथा कोई शिलापर भल्लोंको तीव्र करताथा इसप्रकार से रात्रिभर युद्धकी तयारीरही ७ ामें प्रातःकालकी समीर तीरकी

भांति सनसन चलनेलगी और आकाशरूपी वाटिकामें सूर्य-रूपी पुष्प प्रफुल्लितहुआ ॥

दो०। नृपतिरूप शुचिभानुके उदय कालको पाय।
तारारूपी शत्रुदल क्षणमें गयो पलाय ॥
सो०। तारापतिसो देखि भयोमलीन तजीप्रभा।
प्रबलशत्रु अवरेखि करिनसक्यो व्यवसायकछु ॥

श्रीमहाराज शत्रुंजय ने अरुणोदयसे पहले उठकर शौच आदि क्रियाकी और फिर अपने आसनपर बैठकर श्री विष्णु भगवानका पूजन किया और विनयकी कि हे ईश्वर तूहीलज्जा रखनेवाला है आज इन शत्रुओंको विजय करनेका वरदानदे और अपने भक्तकी लज्जा रखले निदान शत्रुंजयतो यहांपूजा में बैठेथे और उधर सबसेना के सेनापति और शूरवीर नाना आयुधोंसे अलंकृत होकर श्रीमहाराजाधिराजके शयन मन्दिर पर जाकर इकट्ठेहुए और सबसेना ध्वजा और पताकाओं से विचित्र और रथ हाथी और घोड़ाओंसे शोभायमान रंगभूमि कीओर निर्याण करनेलगी थोड़ीदेरमें श्रीमहाराजाधिराज शयन मन्दिरसे उठकर सेवकोंसे आवृत बाहिर आये सब सेनापति और शूरवीरोंने साष्टांग दण्डवत्की और श्रीमहाराजाधिराज परम शोभायमान विमानमें बैठकर उनसब शूरवीर और सेना-पतियोंसे आवृत रणभूमिकी ओरचले यह सँदेशा बहुरूपियों ने आकर महाराज शत्रुंजयसे कहा महाराज सुनतेही उठ खड़े हुए और अपनेको अस्त्र शस्त्रोंसे अलंकृत करके सुग्रीवनामी घोड़ेपर सवारहुए और श्रीमहाराजाधिराजके पासआकर दंड-वत् करके सेनापति होकर सबसेनाके आगे२ रणभूमिकी ओर चले उससमय उस सेनाके निर्याणकी अपूर्व शोभाथी ॥

चौ०। चलेजात रथभट धनुधारी। होतशब्द अस्त्रनको भारी ॥
बाजे दुंदुभि शंख अनेका। गहे शस्त्र सबसुभट सटेका ॥

रथी गजी हयसादी योधा। सुभट पदादी धीर सक्रोधा॥
सजिसजिचलेव्रतअतिगाढ़े। भरे वीररस अमरष बाढ़े॥
वीर चंड शत्रुंजय राजा। चलेजातइमिसाजिसमाजा॥
सैनमध्य शोभित भे कैसे। उडुगणअधिराकापतिजैसे॥

निदान बड़ीधूमधामसे वह सेना समुद्रकीभांति उमड़तीहुई आकर रणभूमिमें स्थितहुई उनकेचलनेसे आकाशमें धूलछा-गई और घोड़ोंकी हींसन हाथियोंकी चिंघार घंटोंका घोष शंखोंकी ध्वनि बीरोंकी गर्जना और वाद्योंके रवसे महान शब्ददिशा और विदिशोंमें व्याप्तहोगया सब सेना व्यूहितहोकर रणभूमिमें युद्धकेलिये खड़ीहुई इसीअवसरमें सामनेसे म्लेच्छोंकी सेना आतीहुई दृष्टिपड़ी वहअद्भुतमिथ्याईश्वर एकबड़ेहाथीपरसवार था वह हाथी परम अलंकारों से अलंकृतथा और उसके चारों ओर लाखों म्लेच्छ नानाप्रकारके अस्त्र शस्त्रलिये चले आतेथे और एकओर वह अनिलाङ्गी म्लेच्छी एक महानागपर सवार साथमें सहस्रों मायावी म्लेच्छोंको लिये आरहीथी निदान युद्ध सेवकोंने शीघ्रतासे ऊंची नीची पृथ्वीको समानकिया और जल छिड़ककर धूलको शांतकिया इसकेपीछे कवीश्वरोंने बढ़कर सब योद्धाओंसे कहा कि यह संसार मिथ्या और स्वप्नरूपहै इसमें केवल यश अथवा अयशही रहजाताहै इससे आज पराक्रम करके शत्रुओंको विजय रो और संसारमें अपना यशकरलो रणकी समान कोई यज्ञ और जप नहीं है इसमें उभय प्रकारका लाभहै मरनेसे स्वर्गकेभोग और जीनेसे विजययश और पृथ्वीके भोग प्राप्तहोतेहैं॥

जयकरीछंद। असजियजानि सुनहु हेवीर। करहुपराक्रम धरिकेधीर॥
करलाघव करि बर्षहु बान। मिलै न जासों शत्रुहित्रान॥
करिकरिमंडलअसिदोवाहि। देहुसकलमिलिअरिदलढाहि॥
गदापाणिले प्रलयअरोपि। बर्षहु वीरसबअरिदल कोपि॥

कवीश्वरोंके उक्तबचनों को सुनकर शूरवीर वीररसमें छकित होगये और कायर भयभीतहुए उससमय अनिलाङ्गी वैष्णवी सेनाके शूर वीरोंको देखकर चकितथी और मनमेंकहतीथी कि इनसे युद्धमें विजयपाना दुर्लभहै उससमय चित्रांगदने कहा कि हेरानी अब तुम किस चिंतामेंहो बढ़कर युद्धकरो वह बोली कि श्रीमानस्त्रियोंको पुरुषोंसे लड़वाना आपहीकाकामहै एक मल्ल आनेवालाहै वही युद्धकरेगा यहकहकर उसनेकहा कि हेमहेन्द्र मायाके अश्वसादी शीघ्रआओ यहकहतेही एकशब्दहुआ और बनकी ओरसे एक युवावस्था रखनेवाला हृष्ट पुष्ट शरीर म्लेच्छ प्रकट हुआ उसने आकर अद्भुत को दंडवत्की और युद्धकरनेकी आज्ञामांगी उसनेकहा कि जा मैंने सब बैष्णवों का मरण तेरेस्वाधीनकिया यहसुनकर वह रणभूमिमें आया और अपनी अस्त्रशिक्षा को दिखाकर गर्जनेलगा और बोला कि ॥

जयकरीछंद । हौंमैंबीरसमीरसमान । मोसमनहिं कोउशूर महान ॥
चहौंतोनिजविक्रमदरशाय । देहुंजगतमेंप्रलयपसाय ॥

अरे वैष्णवो तुममें कोई ऐसाशूरबीर है जो आकर मुझसे युद्धकरे यहसुनकर दाहिनेअंगसे राजपुत्र रुद्रविक्रमने निकल कर अपनाघोड़ा दौड़ाया और महाराजाधिराजके सन्मुखआ-कर युद्धकरने की आज्ञामांगी कि आप आज्ञादीजिये मैं इस दुष्टकोबांधकर आपकेसन्मुखलेआऊं अथवा अपनेप्राण आप केअर्थ रणमें त्यागकरूं यहसुनकर महाराजाधिराजने आशी-र्बाददेकर उसको युद्धकरनेकी आज्ञादी और वह अपनेघोड़ेको बढ़ाकर उसम्लेच्छके सन्मुखआया उससमय राजपुत्रके घोड़ेके भयसे उसम्लेच्छका घोड़ा सातपद पीछेहटगया और राजपुत्र काघोड़ा उतनाही आगेबढ़गया राजपुत्रने उससमय उसम्ले-च्छके प्रताप बखानकरनेके उत्तरमेंकहा कि ॥

जयकरीछंद । शत्रुंजयकुलमें उत्पन्न । हौंमैंविक्रमसों सम्पन्न ॥

ममबाणनकी झरिकोपाय। पहुंचिनसकतसमीरहुधाय॥
ममसन्मुखमहेन्द्रहूआय। करिनसकतकछु रणव्यवसाय॥

अरे तू क्याप्रलाप कररहाहै जोकुछ विक्रमरखताहो सो सन्मुखरणमेंदिखा यहसुनकर उसम्लेच्छनेएकभल्ललेकर राजपुत्र परछोड़ा राजपुत्रने क्षुरप्रबाणसे उसकोतीनखंडकरके गिरादिया तब उसम्लेच्छने एकशक्ति पूर्णबलसे राजपुत्रका शिरताककर मारी परंतु राजपुत्र ने शक्तिमारकर उसकीशक्तिको गिरादिया तब वहम्लेच्छ क्रोधकरके खड्गलेकर राजपुत्रकीओर चला और समीपजाकर उसका प्रहारकिया राजपुत्र ने मंडलकरके उसकेप्रहारको व्यर्थकिया और तीनबाणमारकर उसकेतीनखंड करदिये यहदेखकर अनिलाङ्गीम्लेच्छीने ऐसीमायाकी कि राजपुत्रके नीचेकाधड़ निर्जीवहोगया उससमय उसम्लेच्छने राजपुत्रका हाथपकड़कर खींचा राजपुत्रनेभी बलकिया परंतु अर्द्धाङ्गसे निर्जीवहोने के कारणसे उसका कुछ बसनचला और उस म्लेच्छने उसे पृथ्वीपरगिराकर बांधलिया और अपनी सेना में लेगया अद्भुतने उसको कैदकरलिया उसकेपीछे उसम्लेच्छ ने फिर रणभूमिमें आकर कहा कि अब कौन मुझसे आकर युद्ध करसकताहै तब राजपुत्ररुद्रविक्रमकेसेनापति एककेपीछे दूसरा उसम्लेच्छसे युद्धकरनेकोगये परंतु अनिलाङ्गी के मायाकरनेके कारणसे जोगया वही कैदहोगया इसप्रकारसे सायंकाल तक चालीसशूरबीर पकड़ेगये कि उससमयअनिलाङ्गीने युद्धनिवृत्त करनेकेबाद्य बजवादिये और सेना दोनोंओरकोलौटनेलगी उस समय अनिलांगीने पुकारकर कहा कि हे वैष्णवो आजमें और छोड़े देतीहूं कल जो तुमने श्रीअद्भुत परमेश्वरकी पूजननकीतो सबकोमैं मारडालूंगी यहसुनकर शूरवीरोंने कहा कि अरेदुष्टा तू क्याबकतीहैपरमेश्वरने चाहातोकलतुझको हमनरकगामीकरेंगे और बहुरूपियोंने कहा कि तुझको हम आज रातिको हीजीता

न छोड़ेंगे निदान दोनों ओरकी सेना लौटकर अपने २ डेरोंमें आई कमर सब योद्धाओंने खोलीं और विश्रामकिया और अद्भुत अपने डेरेमें बड़ीप्रसन्नता पूर्वक आया और नृत्यहोनेकी आज्ञादी निदान नाच होनेलगा उससमय चित्रांगदने कहा कि हे अनिलांगी आज तुम चौकस रहना देखो बहुरूपिये अवश्य आवेंगे और इस बातपर भरोसा मतरखना कि परमेश्वरने वैष्णवोंकी मृत्यु तेरेआधीनकी है क्योंकि परमेश्वरतो ढुलतेपासे हैं और थालीके बैंगनहैं तुरंत प्रारब्ध पलट देतेहैं यह सुनकर अद्भुत बोला कि हे अनिलांगी मैं तेरी रक्षाकेलिये देवदूतों को नियत करदूंगा चित्रांगद बोला कि आप धर्मराजको इसकी रक्षाकेलिये आज्ञा दीजिये तब अनिलांगी बोली कि आज फिर युद्धकेवाद्य बजवाइये कि मैं सबको पकड़कर मायाकृत देशको चलीजाऊं चित्रांगद बोला कि शीघ्रता न कीजिये शनैः शनैः कार्य अच्छा होता है संसारमें कहावत है कि न दौड़कर चलै और न गिरै आज ठहरजाओ कलफिर युद्धकरना परंतु अनिलांगीने उसकाकहा न माना युद्धकेवाद्य बजवादिये यह संदेशा दूतोंकेद्वारा महाराज शत्रुंजयकोभी पहुंचा उन्होंनेभी कार्तिकेयी दुंदुभी बजानेकी आज्ञादी उससमय सुवास बोला कि आजमेरे नामसे युद्धकेवाद्य बजवायेजावें कल मैं उस म्लेच्छसे युद्धकरूंगा महाराज शत्रुंजयबोले कि मैंतुझको प्रहासकीसमान जानताहूं जानबूझकर क्योंकर तेरावध कराऊं क्योंकि तेरेपास प्रहासको समान देवदत्त चमत्कारीय पदार्थ नहीं है तब सुवास महाराजके चरणोंपर गिरपड़ा और बोला कि महाराज मुझको बड़ी लज्जाहोगी अबतो जो मेरेमुखसे निकलगयाहै वही होनेदीजि और मेरेनामसे युद्धके वाद्य बजाये जावें यह सुनकर महाराज शत्रुंजयने आज्ञादी कि आजयुद्धकेवाद्य सुवासके नामसे बजायेजावें यह आज्ञाहोतेही नगाड़े बजनेलगे और सब सेनामें

यहबात फैलगई कि कल सुवास युद्ध करेगा देखिये परमेश्वरने क्या भविष्य रचाहै जब यहखबर अद्भुतकी सभामें पहुंची तब चित्रांगद खड़ाहोकर नाचनेलगा और पुकारा कि वह मारा लोकल गुरुपुत्रजी युद्धकरेंगे अब उस अंतरिक्षवासी म्लेच्छ का बचना कठिनहै यहबातें होहीरहीथीं कि वह म्लेच्छभी सभा में आया और उससे कहागया कि तू बहुत चौकस रहियो अब तेरा बचना दुर्लभ है वह बोला कि मैंतो अंतरिक्षमें जाकर रहूंगा मुझे बहुरूपिये कहांपावेंगे यहकहकर वह उड़कर आ-काशमें चलागया और दोनों सेनाओं में युद्धकी तयारी होने गी और सभाओंका बिसर्जनहुआ उससमय सुवास और बिचक्षण बहुरूपिये अपना २ भेषबदलकर म्लेच्छोंकी सेनामें गये और एकम्लेच्छसे पूछा कि वह अंतरिक्षवासी अश्वसादी कहांहै हम उससे मिलनाचाहतेहैं वहबोला कि वहतो आकाश में जाकर रहाहै कल उससे और सुवाससेयु–होगा यहसुनकर सुवास घबराया अ्ौर चित्तमें कहनेलगा कि तैंने अपनेनामसे ब्यर्थही युद्धके वाद्यबजवाये अब प्रातःकाल तू महाराज शत्रुं-जयको क्यामुखदिखलावेगा बड़ीलज्जाकी बातहै उसम्लेच्छका मिलना असंभवहै अच्छा चलो चित्रांगदसे उसकाहाल पूछो यहबिचारकर वह उसओरकोचला उससमय अद्भुतने अपनी सभा बिसर्जनकीथी और सबसभासद अपनी २ सिविरोंमेंजा-कर बिश्रामकररहेथे निदान चित्रांगदभी अपनेडेरेमेंथा सुवास उसके डेरेकेद्वारपरगया और द्वाररक्षकोंसे कहा कि तुम जाकर चित्रांगदसे कहदो कि सुवास आपकेपास आयेहैं द्वारपालकने जाकरकहा सुनतेही चित्रंगदघबराकर उठखड़ाहुआ और बोला कि अरे तुमने उनको क्योंरोकाहै जावोआदरपूर्बक उनकोलिवा लाओ लोगदौड़े और सुवासकोलिवालेगये चित्रांगदने उठकर प्रणामकी और बोला कि आजआपने बड़ा अनुग्रहकिया जोमेरे

स्थानको अपनेचरणारविंदोंसे पवित्रकिया मैंतो इसयोग्य नथा
यह आपका अनुग्रह है तब सुवास उसके पास बैठगया और
बोला कि श्रीमान हमारे पिताको जबकभी कोई आवश्यकता
होतीथी तब आपकेपास आते थे सो आज हमभी तुमसे कुछ
पूछनेआये हैं परंतु यह समझलीजिये कि सत्यहीबात बताना
ऐसाकरनेसे आनन्दमेंरहोगे नहींतो हमारी इसभुजालीकोदेख-
लो हम हथछुट बड़ेभारी हैं यहसुनकर चित्रांगद बोला कि मैं
तो आपके दासोंका दासहूं जो आज्ञादीजिये सोकरूं वहबोला
कि वह अश्वसादीम्लेच्छकहांहै जो युद्धकरताथा चित्रांगदबोला
कि जो आपको मुझे लज्जितकरना है तो लज्जितकरिये अथ-
वा और जोकुछ दुर्दशा आपको मेरीकरनीहो सो करलीजिये
परंतु मैं अपने सत्यगुरु अर्थात् आपके पिताकी शपथखाकर
कहताहूं कि मुझको यह नहींमालूमहै कि वह कहांरहता है हां
इतनासुनाहै कि वह आकाशमें रहताहै सो इसमें आपको क्या
दुर्लभहै आपकेलिये पृथ्वी और आकाश एकहै आप बायुपर
चढ़कर आकाशमेंभी जाकर उसकाबध करसकतेहैं यहसुनकर
सुवासने बिचारा कि यह सत्यकहता है इसको उसकाहाल वि-
दित नहीं है नहींतो यह मेरे पिताकी शपथ न खाता अंतको
वहांसे निराशहोकर चला इस अवसर में रात्रिभी ढरगई थी
उस समय उसने बिचारकिया कि अब चलकर अनिलाङ्गीको
मारडालो वहम्लेच्छतो उसीकेबुलानेसे आताथा जब वह मारी
जायगी तब वहम्लेच्छ भी न आवैगा यहीविचार करताहुआ
वह अनिलांगीके डेरेके पास आया उस दुर्भगाने अपनीशय्या
डेरेके बीचमें बिछाईथी और दूर दूरपर म्लेच्छोंको चौकसी के
लिये बैठादियाथा और कुछ मायाकरके आप सोगईथी कि वह
आप तो पड़ीहुई निश्चेत सोरहीथी और मायाके प्रभावसे उस
का शरीरकेवलदहकतीहुई अग्निकीसमान दीखताथा निदान

सुवासने जब दूरसे वहां प्रज्वलित अग्निके सिवाय और कुछ न देखा तब वहांसे भी निराशहोकर फिरा कि अब किसको तो मूर्च्छितकरूं और किसका बधकरूं इसअवसरमें प्रातःकालकी बेलाहुई और तारागण पतझाड़के फूलोंकीसमान आकाशरूपी बाटिकामें मुरझागये और प्रातःकालरूपी फूलकीकलियां खिल गईं और नीलबर्ण आकाशरूपी फुलवाड़ी में सूर्यरूपी उत्तम फूल फूलगया ॥

दो०। प्राची दिशिमें तेहिसमय बिकसे भानु अकाश।
जगे चराचर जीव सब भयो सुअमल प्रकाश॥

प्रातःकालहोतेही दोनोंदल यूथ यूथ वाहिनी वाहिनीहोकर रणभूमि में आये उससमय महाराज शत्रुंजय भी प्रातस्मर्ण से निश्चिंत्यहोकर और अस्त्रशस्त्रोंको धारणकरके श्रीमहाराजाधि-राजके शयनमंदिरपर आये वहां और भी सेनापति और योद्धा आयेथे उन्होंने दंडवत्की फिर श्रीमहाराजाधिराज भी शयन मंदिरसे बाहिरआये सबने यथायोग्य दंडवत् प्रणाम की और वहांसे सबकेसब श्रीमहाराजाधिराजके विमानकेसाथ साथरण-भूमिकीओर चले और बड़ीधूमधामसे रंगभूमिमें पहुंचे वहां पर प्रथम तो रणभूमिकी सम विषमताकोयुद्ध सेवकोंने दूरकिया उपरांत जलका छिड़कावहुआ कि जिससे सबधूलबैठगई और फिर कवीश्वरोंने अनेक वीररसके पद सुनाकर सब योद्धाओं को रणका उत्साह दिलाया इतने में अद्भुतकी सेना भी आकर दूसरी ओर स्थितहोगई दोनोंओर व्यूह रचनाहुई और जब दोनों सेना युद्धकेलिये उपस्थितहुईं तब महाराज शत्रुंजय ने अपनी सब सेनाकीओर दृष्टिकी तो देखा कि सब बहुरूपिये अपने २ स्वामीके साथ स्थितहैं पर सुवासनहींहै तबमहाराज ने बहुरूपियोंसे पूछा कि सुवास कहांहै उन्होंनेकहा कि आताही होगा यह सुनकर महाराज बोले कि ऐसा जानपड़ताहै कि वह

लज्जाके कारणसे छिपरहाहै अथवा खड्ग मारकर मरगया है
वह उस अश्वसादी म्लेच्छसे लड़ न सका यह बड़ीलज्जा मुझ
को हुई यह सुनकर सब बहुरूपिये बोले कि महाराज हम सब
तो लड़ने मरनेको स्थितहैं एक बहुरूपिया न हुआ न सही महा-
राज बोले युद्धके वाद्य तो उसीके नामसे बजे थे इससे बात में
तो अंतर आगया निदान महाराज यह कहहीरहेथे कि अनि-
लांगी मायावी म्लेच्छोंकी सेना सहित रणभूमि में आई और
उसने आकाशकी ओर देखा देखतेही वह म्लेच्छ अश्वपर
सवार आकाश से एक महान आपत्तिकी समान उतरा और
रणभूमिपर स्थितहोकर युद्धकरनेको वैष्णवी सेनाके प्रतियोधा
को बुलानेलगा उससमय सेनाके दाहिने पक्षकेयोद्धा कहनेलगे
कि कल हमारा राजपुत्र पकड़ागयाथा आज हम लोगही इस
के सन्मुख जायँगे परंतु इससे युद्ध न करैंगे यह कहहीरहेथे कि
अकस्मात् बनकीओरसे धूलउड़तीहुई दृष्टिपड़ी और देखा कि
एक सवार वायुवेगी अश्वपर चढ़ाहुआ कीटबांधे खड्ग हाथ
में लिये घोड़ेको उड़ायेहुए चलाआताहै महाराज शत्रुंजयने उस
कीओर देखा और वहभी महाराजकी ओर देखकरमुसकुराया
तबतो महाराज शत्रुंजयने पहिचाना किसुवासहै और फिर पर॰
मेश्वरसे प्रार्थनाकी कि आज इसकी लज्जारखियो और सुवास
उस म्लेच्छके सन्मुख रणभूमिमें गया और ललकारकर बोला
कि मैं महाराज शत्रुंजयका एक दास हूं यह सुनकर उसम्लेच्छ
ने हंसकर कहा कि तू अभी मेरेसामनेका छोकराहै चल मैं तुझ
को अपना मद्यपानक बनाऊंगा यह सुनकर सुवास बोला कि
अरे निर्लज्ज तू क्या बकता है तेरी आयुका पात्र पूर्ण होचुका
है मैं तेरा कालरूपी मद्यकापानकहूं आ मुझपर प्रहारकर और
अपना पराक्रम दिखा यह सुनतेही उस म्लेच्छने क्रोधकरके
एक खड्गमारा सुवासने स्थानसे चलितहोकर उसके प्रहारको

व्यर्थकिया और एक मूच्छींड मारा कि वह उसकीनाकपर पड़ा और उसको घ्राणकरतेही वह छींकमारकर मूर्च्छित होगया तब सुवासने एक खड्ग मारा कि उसका शिरकटजाय परंतु वह खड्ग उचटगया क्योंकि उसम्लेच्छने मायासे अपनाशरीर पाषाण की भांति कड़ा बनालियाथा यहदेखकर सुवासने जैसेही वह अश्वसे गिरने चाहताथा पाशफेंककर उसको बांधलिया और अपने घोड़ेको दौड़ाया वह म्लेच्छ भी उसकेसाथ खिंचाहुआ चला और वृक्ष और पत्थरोंमें टकरानेसे उसका शिर फटगया और वह मरगया उससमय भयंकर शब्दहुआ और यहबाणी सुनाईपड़ी कि मैं अंतरिक्षबासी अश्वसादी मारागयायहदेखकर अनिलांगी का बरण श्वेतहोगया और चित्रांगद नाचने लगा और पुकारा कि इस अद्भुतको सब दुर्वचन पहुंचै उससमय वैष्णवी सेनाके शूर वीर और म्लेच्छी सेनाके मायावी म्लेच्छ दोनोंओरसे लेनालेना कहतेहुएबढ़े और महाराज शत्रुंजयभी महामंत्र पढ़तेहुए आगेबढ़े जिससे म्लेच्छोंकीमाया अपना विकार उत्पन्ननकरसकै फिरतोदोनोंसेना भिड़कर युद्धकरनेलगीं॥

चौ०। लगे लरन दोऊ दल भारे। दोउन निज निज अस्त्र प्रहारे॥
भई बाण बर्षा तेहिपल में। जनु घनबर्षत जलदोउ दल में॥
असि अरुगदा भल्लकी वर्षा। भई तहां तेहि क्षण उत्कर्षा॥
तिनसोंबेधितसहसनयोधा। मरे जे लरतरहे करि क्रोधा॥
रुंड मुंड सहशोणित धारा। कर पग कटि कटि बही अपारा॥

उससमयसहस्रोंमायावीम्लेच्छ और अद्भुतउपासकमारेगये और वैष्णवीसेना बढ़तीहुई आगेकोचली तब चित्रांगदने युद्ध निवृत्त करनेके वाद्यबजवादिये और अपनी सेनाको लौटाकर फिरगया तब महाराज शत्रुंजयभी विजयपाकर अपने डेरोंको लौटआये और सुवासको पारितोषिक द्रव्यदिया और आनन्द पूर्वकसभामें विराजमानहुए और बहुरूपिये आपसमें मंत्रकरके

अनिलांगीका बधकरनेको चले यहां अद्भुत आदिक सब अपनी सभामेंठहरेथे कि अकस्मात् आकाशमें बादल प्रकटहुआ और बिजली चमकनेलगी उसको देखकर चित्रांगदबोला कि हे परमेश्वर यहक्या चमत्कार आपने प्रकट किया है यहसुनकर अद्भुत बहुतहँसा और बोला कि हमारी मायाको कौनजानसकता है हमने उस अंतरिक्षवासी अश्वसादीपर कृपाकरके उसे स्वर्ग में भेजदिया है और वहां वह विहार कररहाहै यहसुनकर सब सभासद कहनेलगे धन्य है तेरीमाया तू परमेश्वरहै जो चाहेसो करै निदान सबयों कहरहेथे परंतु चित्रांगद चुपकेचुपके कहता था कि मिथ्यावादीपर धिक्कार है इसीअवसरमें वहबादल समीप आया और उसमेंसे नागदंत म्लेच्छ जिसको महेन्द्रनेभेजाथा निकलकर वहांआया और अद्भुतकी पूजा और परिक्रमाकरके वे रत्नोंकेपात्र और वहपत्र जो महेन्द्रने दियेथे अद्भुतके सन्मुख रखदिये और राजामहावीरने जाकर उसकी सेनाको उतरवाया उससमय चित्रांगदने अद्भुतपरसे सातबारपानी उतारकर नागदंतको पीनेको दिया और कहा कि हमारे इसउपकारको याद रखना इसकेपीनेसे नित्य दसबर्षकी आयु बढ़तीजाती है और शीतलता रहती है यहसुनकर नागदंतबोला कि आपका कहना सत्यहै मेरा शरीर शीतलहोगया है तब चित्रांगदने चुपकेसे कहा कि जो आताहै झूठाहीआताहै निदान वह नागदंत आकर अनिलांगीके बराबर बैठगया और सबने देखा कि उसके शिरपर तीनजूड़े बँधेहुए हैं एकसे अग्नि निकलती है दूसरेसे धूमचक्र रूपहोकर निकलताहै और तीसरेसे सर्पमुख निकलतेहैं और उसका ऐसाभयंकर स्वरूपथा कि उसको देखकर कालखंज दैत्यभी भयमानतेथे निदान जब वह बैठगया मद्यपानकने मद्यसे पानपात्र भरकरदिया वह उसको पीगया और फिर उसने सबवृत्तांत पूछा तब चित्रांगदने उस अंतरिक्षवासी

अश्वसादी के मारेजाने का सब वृत्तांत वर्णन करके कहा कि रानी अनिलांगीके उसका बड़ाशोक है यह सुनकर नागदंत बोला कि हेरानी तुम इतनी बड़ी मायाकोविदहोकर तुमसे बड़ा आश्चर्य है कि कुछ नहोसका अबतुम बैठो मैं इन बैष्णवोंका वध करेडालताहूं यहसुनकर अनिलांगीकोभी क्रोधआया और बोली कि अब परमेश्वर दुर्गके ऊपर चलकरबैठें और कुतूहल देखें में इनबैष्णवोंको मारूंगी उसके कहनेसे अद्भुत अपने सब सभासदों सहित रत्नाकर पर्वतके दुर्गपर जाबैठा और अनिलांगीने नारिकेल आसुरी अस्त्रका प्रयोगकिया वहअस्त्र आकर बैष्णवी सेनामेंगिरा यहबैष्णवीसेना बीसकोसकेगिरदेमेंपड़ीहुई थी और उससमय सुवासबहुरूपिया चतुर्मार्गीहाटके बीचाबीच में खड़ाथा और विचक्षणका हाथपकड़ेहुए बातकररहाथा उस अस्त्रको गिरताहुआ देखकर वह भागा और दोकोसपर जाकर ठहरा और वहांसे उसने देखा कि उस अस्त्रसे भयंकरशब्द प्रकटहोते हैं और प्रतिशब्दके साथ एक अग्निकी ज्वाला का समूह उत्पन्नहोता है और वहसमूह पहिलेके समूहमें मिलकर एक ज्वालाका कूट होताचलाजाता है और उसकूटसे ज्वाला धाररूप निकलकर सब बैष्णवीसेनापर फैलतीजाती है सुवास यह आपत्ति देखकर भागा और सेना के वासस्थल के बाहर निकलगया और विचक्षणआदिभी कईबहुरूपिये भागकर बाहरनिकलगये और बाकी सब सेनाको उसज्वालाकी धारा ने व्याप्तकरलिया एक केवल भास्करीसभा बचीरही क्योंकि उस पर मायाकाप्रयोग नहीं चलताथा और न उसमें कोई मायावी आसक्ताथा और यदि कोई चलाभी आवे तो भस्महोजाताथा निदान सेनाकेमनुष्योंको ऐसीउष्मा मालूमहुई कि उनकी जीभ मुखसे बाहर निकलआई और उसज्वालाकी धारासे लपटेंनिकलनेलगीं महाराज शत्रुंजय और श्रीराजाधिराज और और

जो भास्करी सभामें थे वहसबतो बचेहुएथे और जितने उसके बाहरथे वे सब आपत्ति से घिरे थे उससमय महाराज शत्रुंजय ने जलकेपात्रों को महामंत्र से मंत्रित करके आज्ञादी कि इस जलको जहां अग्निकी लपटआती है वहां छिड़कदो जिससे भस्महोने से बचो परंतु जबतक वहजल छिड़काजाय तबतक सहस्रों सेनाके मनुष्य और उनके रहनेके स्थान भस्महोगये और सेनामें हलचलपड़गई उसजल के छिड़कनेसे पृथ्वीतो शीतलहोगई परंतु वह अग्निधारा इससमय ऊंचीहोकर सब केऊपर ऐसीफैलगई कि सब उसकीअग्निसे तचेजाते थे और मंत्रितजलफेंकनेसे उसतक नहींपहुंचसकताथा इससे सबकेसब परमघोर आपत्तिमें ग्रसितथे॥

क०। मायाकृतआगि बढ़ीतबहीं धरणीनभज्वालन पूरिगये।
अधऊरध और चहूंदिशि में सोकृशानुकेछाय बितानभये॥
द्रुमकीसुलता इमि जानिपरें जनुअग्निके अंकुरहोत नये।
कुंजलालव्यथानाहिंजात कही अनिलानिधिमेंजिमिदुःखलये॥

निदान सेनाके लोग भागभागकर भास्करीसभामें छिपने लगे परंतु उससभामें सबसेना क्योंकर समायसकती थी उस समय शत्रुंजयने अनेक जलकेघटोंको महामंत्रसे मंत्रितकरके दिया और कहा कि इसजलको पीवो और शरीरपरमलो जिससे मायाकृतअग्नि अपनाविकार उत्पन्ननकरै निदान वैष्णवी सेनातो इसप्रकारसे अग्निसे घिरीथी और उधर अद्भुत बैठा हुआ सबसे कहताथा कि हे मेरेउपासको तुमने मेरीमाया के बलको देखा यहसुनकर अनिलाङ्गीबोली कि हेपरमेश्वर तेरी बड़ी सामर्थ्य है कि तैंने एक मुझसी क्षुद्रदासीको ऐसीशक्ति दीहै अब मैं सबवैष्णवोंको मारडालतीहूं एकशत्रुंजय महामंत्र के जानने के कारणसे बचरहेगा सो इष्टमित्रों के नाशहोने से वह बिनाहीमारे आपही मरजायगा यहसुनकर चित्रांगदबोला

कि यहसबतो सत्य है परंतु प्रथमतो वैष्णवोंको मरनेका अ-
भ्यास नहीं है दूसरे उसअग्नि में परमेश्वरकी धेवती है और
परमेश्वरका ामात्र इन्द्रविक्रम है कहीं परमेश्वर दयाकरके
फिर अपनेरचेहुए भविष्यको न पलटदें यहसुनकर वह मिथ्या
ईश्वरबोला कि अबकी मैंने जो भविष्यरचाहै उसको मैं कभी
नफेरूंगा इसकेपीछे सब उसदुर्गसे उतरकर सभामेंआये और
नृत्यदेखने और आनन्दमनानेलगे और मद्यपान आरंभहुआ
उससमय चित्रांगदबोला कि देखिये यहीआनन्द नित्यरहताहै
अथवा आजहीतकहै क्योंकि ये वैष्णव ऐसी २ बहुतसी बिपत्ति
उठाचुकेहैं परंतु उनका परमेश्वर बड़ाप्रबल है क्षणमात्रही में
सबआनन्द भ्रष्टहुआचाहता है निदान यहीवार्त्तालाप होरहा
था कि सुबास अपनी सेनाकी विपत्तिको देखकर रोताहुआ
चला और अपनास्वरूप एकसेवककासा बनाकर अद्भुत मि-
थ्याईश्वरकी सभामें आया परंतु उसके आतेही मायाबल से
अनिलाक्षी को उसकाआना विदितहोगया और वहबोली कि
एक बहुरूपिया यहांआयाहै चित्रांगदबोला कि तुमने क्योंकर
जाना वहबोली कि जब कोई मेराशत्रु आवेगा मुझको माया
बलसे उसकाआना भ्यासितहोजायगा और मेरीआंख फड़कने
लगेगी यहसुनकर सुबासने अनुमानकिया कि जो यहां ठहरोगे
तो पकड़ेजावोगे यहदुष्टा तुझको पहिंचानलेगी यह शोचकर
वह सभाके बाहरआया और द्वारपर विचक्षणकोभेष बदलेहुए
खड़ाहुआ देखकर उसको एकांतमेंलेगया और सबवृत्तांत कह
सुनाया परंतु सेनाके दुखीहोनेके कारणसे उनकाचित्त न माना
और दोनोंजने फिर दूसराभेष धारणकरके सभाके भीतरगये
तब अनिलाक्षी चित्रांगदसे बोली कि श्रीमान येबहुरूपिये नि-
स्संदेह बड़े दुष्टहोते हैं पहिले एकआकर चलागयाथा अबकी
मरा एक दूसरेको साथलेकर आया है यहसुनकर चित्रांगद

बोला कि हेरानी येबहुरूपिये परमविपत्तिरूपहैं तुमको जीता न छोड़ेंगे सो जो जीवहै तो जगहै तुम किसी ऐसेस्थानपर जाकर रहो जहां कोई देवताभी नजासके मुझको तुम्हारी यहरात आनन्दपूर्वक कटतीहुई नहींजानपड़ताहै प्रातःकालतक पैरपसार कर सोतीहोगी और हमलोग तुम्हारेशोकमें होंगे वह बोली कि श्रीमान जोबातें आपनेकहीं सब मेरीआंखों के आगेआई अपनी रक्षा अपनेहीसे अच्छी होतीहै सत्यहै कि जो मैं अपनी रक्षा आपही न करूंगी तो दूसरा कौन करेगा यहांसे दो कोस पर एक बागहै कि वह माया निर्मित है और उसके समीप के उद्यान भी मायाकृतहैं वहां कोई न जासकेगा और जो जायगा वही पकड़ाजायगा मैं वहीं जाकररहूंगी और अपने मायाबलसे शत्रुजयके महामंत्रको लोपकरके सब वैष्णवों का वध करूंगी यह सुनकर चित्रांगद बोला कि श्रीजी उपाय तो अच्छा विचाराहै परंतु वहां रहनेसे न तुमको हमारी न हमको तुम्हारी सुध मिलैगी हां यहांसे चलेजानेमें प्राण बचजायँगे वह बोली कि अच्छा मैं तुमसे मिलनेका उपाय कियेदेतीहूं और यहकहकर उसने दो म्लेच्छियोंसे कहा कि चित्रांगदजी जो आज्ञादें सोही करना यह सुनकर उन म्लेच्छियोंने अपने शिरके बाल नोचकर चित्रांगदको दिये और कहा कि इन बालों को जब आप अग्निपर रक्खेंगे तभी हम आकर जो आज्ञा आपदेंगे हम करलावेंगे तब चित्रांगदने वह बाललेलिये और वे दोनों म्लेच्छी अनिलाङ्गीसहित मायाबलसे उड़कर चलीगईं सुबास और विचक्षण यह सुनकर और उन म्लेच्छियों को जातेहुए देखकर वनमें चलेआये और मंत्र करनेलगे कि उस मायाकृत बागमें चलकर अनिलाङ्गीको मारें उससमय सुबासने कहा कि मैं जाकर इस चित्रांगदको मारेडालताहूं क्योंकि सब उपाधि इसीकी उठाईहुई है विचक्षण बोला कि ऐसा कभी न करना

प्रहासजी इस कर्म के करने से अप्रसन्नहोंगे क्योंकि वह डाढ़ी मूंडने और उपानह मारनेका कर इससे लियाकरते हैं इससे वह कहैंगे कि हमारी वृत्तिखोई सुवास बोला कुछही क्यों नहो मैं जाताहूं यह कहकर एक सेवककासा अपना भेषबनाकर चल-दिया उधर चित्रांगद भी उन म्लेच्छियोंके चलेजाने के पीछे सभासे उठकर अपनेडेरेको आताथा सुवास उसकेसाथहोलिया और जब वह अपने डेरेपर पहुंचा सुवास बाहिर जहां और सेवकथे ठहरगया चित्रांगदने डेरेमेंजाकर मद्यपानकिया भोजन खाया और शयनकरना चाहताथा कि उसको लघुशंका लगी और उसने सेवकको पुकारकर कहा कि जललाकर चौकीपर धरो यहां सुवासने जलमें मूर्च्छाकर चूर्ण मिलाकर उसके सब सेवकोंको मूर्च्छितकरदिया था इससे जब चित्रांगदने जललाने की आज्ञादी तब आप जललेकर चौकीपरगया उसको देखकर चित्रांगद उठकर वहांआया और खड़ाहोगया कि जबयह सेवक चलाजाय तब मैं लघुशंकाकरूं परंतु उस सेवकरूपी सुवासने कहा कि श्रीमान आपने हगा सोतो हगा पर मूतोगेतो मारही डालूंगा यहसुनकर वहघबराया और बोला कि क्यों बे वर्णसंकर स्वामीसे ऐसेही वचन बोलतेहैं सुवास बोला कि हम ऐसे स्वा-मीका मुख मोरीमें देदेतेहैं यहसुनकर चित्रांगद घबराकर बोला कि बाहिर कोईहै तब सुवासबोला कि हमारेसिवाय कोई नहींहै और मृत्यु सदैव साथरहती है इनबातों को सुनकर चित्रांगदने अनुमानकिया कि प्रहास मायाकृत देशसे आगयाहै और यह जानतेही उसने उठकरप्रणामकिया और कहा कि आपमायाकृत देशसे कबआये यहसबमाल जो मेरे डेरेमें है उसको मैं आपकी भेट करताहूं यहसुनकर सुवास बोला कि यहमेरे किसकामकाहै जो पिताजी होतेतो अपनीथैलीमें रखलेते मुझको महाराज श-त्रुंजय सहस्र मुद्रा नित्य देतेहैं वही मेरा खर्च है मैंतो तेरेपास

इसलिये आयाहूं कि प्रहासका सदैव तैंने उपकारकियाहै और जो कुछ कठिनता उसपर पड़ी वह तेरे कारणसे सुगम होगई इससे तुझको अद्भुतकी शपथहै सत्यबता कि मैं अनिलांगीके पास क्योंकरजाऊं सुवासने तब अनेकप्रकारसे दीनहोकर पूछा परंतु चित्रांगदने न बताया तब सुवासने उसको मूर्च्छित कर दिया और बांधकर पर्वतकेऊपर लेगया उसका चित्ततो अपनी सेनाका दुःख देख देखकर दुखीहीथा तुरंतही लकड़ियां इकट्ठीकरके अपनी थैलीसे अग्नि प्रकटकी और उन लकड़ियोंको प्रज्वलित करके उनपर तैल गरमकिया और चित्रांगद को चैतन्य करदिया वह जो चैतन्यहुआ तो देखा कि मैं बँधा हुआहूं और उधर सुवासने थोड़ासा जलताहुआ तैल उसके अंगपर छोड़दिया उससे वह बिलबिलागया और तब सुवास ने क्रोधपूर्वक उससे कहा कि अरे कलिजन्य शीघ्रबता कि अनिलांगी कहां है नहींतो मारही डालूंगा जहां वैष्णवी सेनापर यह विपत्ति पड़ीहै तहां तुझेभी मारकर नरकमें भेजदूंगा और इसीतेलमें तलूंगा वहबोला कि जोमुझे खोलदो तोमैं बतलादूं यह सुनकर सुवासने उसे खोलदिया और कहा कि जो कुछभी धूर्तताकीतो जाने रहियो कि मैं नहींहूं यह सुनकर चित्रांगदने विचारा कि जो जीवहै तो जगहै और इसीअवसरमें सुवासने एकछींटा तैलका और मारा उसके पड़तेही वह बिलबिलागया और उसने बड़ी शीघ्रतासे बाल निकालकर अग्निपर रखदिये और रखतेही वेदोनोंम्लेच्छी वहां आपहुंचीं चित्रांगदने उनसे कहा कि रानी अनिलांगीको बुलालाओ यह सुनतेही वे दोनों उस मायाकृत बागमेंआईं और अनिलांगीसे कहा कि आपको चित्रांगदजी पर्वतपर खड़ेहुए बुलारहेहैं यहसुनतेही अनिलांगीने अनुमान किया कि मुझको अकेले में परमेश्वरके कलिने बुलायाहै तो इससे मैं जानतीहूं कि यातो परमेश्वरकी मायाका

कुछ चमत्कार दिखावेंगे अथवा मुझसे कुछ गुप्तमंत्र करेंगे यह शोचकर उसने अपनी दासियोंसे कहा कि तुम यहीं ठहरो मैं अकेलीही जाऊंगी और यहकहकर वहउड़ी और पर्वतपर चित्रांगदकेपास पहुंची उसको देखकर सुवासतो छुपगया और चित्रांगद दौड़कर उसके पैरोंपर गिरपड़ा और चुपकेसे सब वृत्तांत कहकर बोला कि मुझको बहुरूपिया पकड़ लायाहै यह सुनकर अनिलांगी चारोंओरको देखनेलगी तब सुवासने उसको चारोंओरको देखतेहुए देखकर अनुमान किया कि चित्रांगदने सब वृत्तांत कहदियाहै और अपनी गोफिनमें एक बड़ा भारी पाषाण रखकर ठहरारहा और अनिलांगीने जब चारों ओर देखनेपर कहीं बहुरूपियेको नहीं पाया तब चित्रांगदकी ओर देखा उसने हाथ उठाकर बताया कि ऊपरकी ओर गया है तब अनिलांगी ऊपरकीओरचली कि पकड़लाऊं परंतु सुवासने तुरंत अपनी गोफिनको भ्रमित करके उस पाषाणको छोड़ा कि उसके लगनेसे अनिलांगीका शिर फटगया और वह बैठगई परंतु उसने अपना शरीर ऐसा कठोर मायासे बनालियाथा कि मरीनहीं तबतो सुवास घबराया और शीघ्रतासे ऊपर जाकर एकशिला सहस्र मनकी ढुलकादी अनिलांगी उससमय उठकर चलीथी कि अकस्मात् वहशिला उसके ऊपर आकर गिरी और वह उसके नीचे दबकर कुचलगई उसके मरतेहीं अंधकार छागया और अंतरिक्षमें वाणीहुई कि मैंमारीगई मेरा नाम अनिलांगीथा उससमय चित्रांगद भागकर पर्वतकी कंदरामेंजाछिपा कि कहींमुझपर कोई आपत्ति न आवै और सुवास पर्वतपरसे उतरकर उसको ढूंढ़नेलगा कि आज इसको अच्छी प्रकारसे दंडदूं क्योंकि इसने मेरा वधकरानेमें कोईबात उठा नहींरक्खी निदान चारोंओर फिरकर उसकोढूंढ़ा और जबकहीं पता न मिला तब प्रसन्न चित्तहोकर अपनी सेनाकीओर चला

यहां वह मायाकृत अग्निकी ज्वाला शांतहोगईथी और सब सेनाजन उस आपत्तिसे मुक्तहोगयेथे उससमय महाराज शत्रुंजयने परमेश्वरका धन्यवाद किया और सुवासने आकर महाराजको दण्डवत्की और सब वृत्तांत कह सुनाया महाराजने उसे बहुतसाधन पारितोषिक दिया और आज्ञादी कि उत्सव सबप्रकारका कियाजाय और नृत्य आदि उत्सव होनेलगे और उधर चित्रांगदभी उसकंदरासे निकलकर अपनी सेनामेंआया उसके सब सेवक उसको ढूंढ़ते फिरतेथे देखतेही वहसब प्रसन्न हुए और चित्रांगद अद्भुतकी सभामें आया और बोला कि हे परमेश्वर वह अग्नि वैष्णवी सेनाकी शांतहोगई और अनिलांगी मारीगई और यह कहकर सब वृत्तांत कहसुनाया तब अद्भुत बोला कि हमको फिर शत्रुंजयपर दयाआगई इससे हम ने जो भविष्य पहिले रचाथा उसको पलटदिया निदान येबातें होहीरहीथीं कि नागदंत म्लेच्छ अपने डेरेमेंसे निकलकर सभा में आकरबैठा और कहनेलगा कि नजाने रानीअनिलांगी कहां गई हैं चित्रांगदबोला कि रानीतो वैकुंठवासीहोगईहैं यहसुनकर नागदंत बोला कि श्रीमान् आप अपने मुखसे अयोग्य शब्द न निकालिये वह बोला कि मैं योग्य और अयोग्य कुछनहीं जानताहूं परंतु मुझीसे बुलवाया और मारडाला देखो हमारे शरीरपर भी उसके कारणसे छाले पड़ेहुएहैं और यह कहकर उसने अपना तन खोला और तेलके जलनेके छाले दिखला कर सब वृत्तांत कहा नागदन्त उसको सुनकर चकित होगया और यह अनुमानकरके कि बहुरूपिये बड़ेप्रबलहैं वह हतचेतसहोगया तब चित्रांगद बोला कि अब जो तुम अपना भला चाहो तो युद्ध मतकरो और परमेश्वरकेपासरहो और जब अवसर पाओ तब समझलेना यह सुनकर नागदंतने विचारा कि यह तो सत्य कहताहै परंतु मायाकृत देशका स्वामीकहैगा कि

तुझसे कुछ न होसका इससे श्रेष्ठ यहहै कि पहिले एक विनय पत्र महाराज महेन्द्रकेपास लिखकर भेजूं वहांसे जैसा उत्तर आवै वैसाकरूं निदान उसने विनयपत्र लिखा और उसमें सब वृत्तांतवर्णनकिया और अद्भुतनेएकपत्रलिखा कि तुमजिसमायावी म्लेच्छको भेजतेहो वही अभिमान करताहै और हमको उसे नाशकरना पड़ताहै इससे अबकी कोई बड़ाही भारी मायावी भेजो कि वह हमको प्रसन्नरक्खे और इन वैष्णवोंका विध्वंसन करे निदान ये दोनों पत्रलेजाकर पर्वतपर रखवादिये और नगाड़ा बजाया कि एक हस्त प्रकटहोकर उनपत्रोंको महेन्द्रके पास लेगया उसने उनदोनोंपत्रोंकोपढ़कर चिंतमनकिया कि अबकी किसको भेजूं जिसका हृदय शुद्धहोवै और वह इन वैष्णवों का विध्वंसन करै अब कोई ऐसा म्लेच्छजाय कि बहुरूपिये उस को धर्षणा न करसकें और मूर्च्छित न करनेपावें निदान महेन्द्र तो अब इसीचिंतामें मग्नहै परंतु अब वृत्तांत उस महानुभाव बहुरूपाचार्य प्रहासका सुनिये कि उसकोविश्वमाली पकड़कर लेचला और मार्गमें एक बागमें पहुंचा जो उसने अपने विहार करनेको बनवायाथा यहां चारसौ दासियां परम सुंदरी नियतथीं उन सबोंने विश्वमालीको दंडवत्की और वह प्रहासको माया बलसे स्तंभितकरके आप एक उत्तमआसनपर बैठकर विश्राम करने और उन दासियोंसे हंसनेलगा उनमें से जो दो एक दासियां मुँहलगीथीं उन्हों ने पूछा कि यहमनुष्य जो पकड़ाहुआ है कौनहै उसने कहा कि यह प्रहास नामी बहुरूपिया है तब उनमेंसे एक बोली कि आपने इसको व्यर्थ पकड़ाहै इससे जो कोई शत्रुताकरता है वहमाराजाता है आप इसको छोड़दीजिये इसने बड़े २ नामी म्लेच्छोंको माराहै और बड़ेबड़ोंके शिरकाट लियेहैं आप महाराजसे कहदीजियेगा कि मुझको प्रहास नहीं मिला यह सुनकर विश्वमालीने क्रोधितहोकर उसदासीके एक

थप्पड़मारा और कहा कि मैं अधर्मी नहींहूं कि अपने स्वामी की आज्ञासे मुखफेरलूं उससमय अवसरपाकर प्रहासने भी कहा कि हेविश्वमाली मुझसे शत्रुताकरना अच्छानहीं है मेरा कुछ नजायगा मैं एकदोपैसे का सेनाजनहूं मारागया तो क्या और जीतारहा तोभी क्या परंतु जो तूमारागया तो फिर कैसीहोगी निदान प्रहासतो यहबातें कहरहाथा कि इतनेमें एकपक्षी वहां आया और वहांका सबवृत्तांत जानकर उड़ताहुआ महेन्द्र के पासगया और उससे सबवृत्तांत यहांका जाकहा उसकोसुनकर महेन्द्रनेकहा कि मेरा प्रधान धार्मिक है वह प्रहासको अवश्य पकड़कर लावेगा पांचचारमनुष्य हमारे छँटेहुए हितूहैं उन्हींमें से वहभीहै निदान वहतो विश्वमालीकी प्रशंसाकररहाथा और इधर विश्वमाली प्रहासकोलेकर फिर वहांसेचला परंतु अब कथासुनिये कि चपला बहुरूपियाभी वनमें प्रहासको ढूँढ़ताहु-आ फिररहाथा कि देखूं विश्वमालीसे और उससे कैसी बीती और उसको फिरतेहुए देखकर एकम्लेच्छने पकड़लिया और पकड़कर लेचला और मार्गमें उसके एकमित्रका घरथा वहां वह चपलाकोलाया वहमित्र एक परमसुंदरी स्त्रीथी नाम उसका चन्द्रवदनी था वह चपलाको देखतेही उसपर मोहितहोगई और विनाकुछकहेसुने उसने पीछेजाकर एक मायाकृत नारिके-लअस्त्र उसम्लेच्छके मारा कि वह मरगया और बड़ाकोलाहल हुआ इसकेपीछे उसस्त्रीने चपलाकाहाथ पकड़कर बैठाया और अपने मोहितहोने का वृत्तान्त उससे कहा चपलातो बड़ा उग्र छली था उसको अपनेऊपर मोहित देखकर अपनाभी उससे परम प्रीतमानहोना प्रकटकिया और उससे मद्यमँगवाकर उस में आंखबचाकर मूर्च्छाकरचूर्ण मिलादिया और एकपात्र भर कर उसको पानकरनेकोदिया वहम्लेच्छी उसे पीतेही मूर्च्छित होगई तब चपला ने उस के वस्त्र और आभुषण उतारलिये

और उसकाशिर काटडाला और फिर उसीकासा स्वरूप बना-
कर चलदिया मार्गमें उसनेदेखा कि विश्वमाली प्रहासकोलिये
जाता है यह देखकर वह मार्गकाटकर शीघ्रतासे नदीकी ओर
चलागया और वहांसे इसप्रकारसेआया कि जैसे नदीकोउतर
कर कोईआताहै और विश्वमालीको प्रणामकरके एकपत्र महे-
न्द्रकी ओरसे लिखाहुआ दिया और कहा कि आपने मुझेतो
काहेको पहिचानाहोगा मैं महाराज महेन्द्रकी दासीहूं मुझे
आपकेपास महाराजने भेजाहै और कहाहै कि हम प्रहास को
पकड़नेके लिये आपको भेजाथा सो आपने बड़ी विलम्बलगाई
अब शीघ्र लेकरआओ हम यहां वाटदेखरहे हैं यह सुनकर
विश्वमाली ने अनुमानकिया कि अभीतो जब मैं बाग में था
पक्षीसब हालदेखकर महाराजकेपास गयाहीथा फिर इसदासी
को क्योंभेजा इसमेंकुछछल अवश्यहै यहअनुमानकरके विश्व-
माली ने हूंकरदिया कि चपला पृथ्वीपर गिरकर लोटनेलगा
और विश्वमालीने उससेपूछा कि तू सत्यबता कि कौनहै चपला
बोला कि सत्यतो यहहै कि सामने पर्वतकेनीचे मेराघरहै और
मैं एकम्लेच्छी महाराजकी सेवकहूं यहबात बदलीहुई सुनकर
विश्वमालीको औरभी संदेहहुआ और उसने एकचुटकी मट्टी
की कुछमायाकरके चपलाके ऊपर डालदी कि उससे चपला
कमरतक पृथ्वीमें समागया तब विश्वमाली ने कहा कि जो तू
सत्यसत्यबातबतादेगी तो मैं तुझे छोड़दूंगा नहींतो मायाकर्त्ता
की शपथखाकर कहताहूं कि मैं मारडालूंगा चपलाने देखा कि
अबकी झूंठबोले और पृथ्वीमें समागये निराशहोकर कहा कि
मैं चपलाबहुरूपियाहूं अपनेगुरू प्रहासको छुड़ानेआयाथा सो
आपही पकड़ागया उस के सत्यबोलनेपर विश्वमाली ने कुछ
मायाकी कि दोम्लेच्छ प्रकटहुए और उन्हों ने चपलाकी भुजा
पकड़कर पृथ्वीमेंसे खींचलिया परंतु मायासे उसकेपैरोंको स्तं-

भितकरदिया कि भागनजाय और एकपत्र महेन्द्रको लिखकर उनम्लेच्छोंको दिया कि इसकाउत्तर लेआओ उसपत्रमें उसने चपलाका सबवृत्तांत लिखकर पूछाथा कि उसेभी साथलेता आऊं यानहीं निदान वहम्लेच्छ उसपत्रको महेन्द्रकेपासलेगये महेन्द्रने उसकेउत्तरमें लिखा कि और बहुरूपियोंसे कुछप्रयोजननहींहै तुमने चपलाको बचनभी सत्यबोलनेपर छोड़देनेका दियाहै इससे उसको छोड़कर उसे अनुग्रहीतकरो और प्रहास को यहां लेआओ जब यहउत्तर विश्वमालीके पास पहुंचा तब उसने पढ़कर चपलासे कहा कि तुमसबका पकड़ना कुछ बड़ी बात नहींहै परंतु मैं तुझपर अनुग्रहकरके छोड़देताहूं जा फिर ऐसा मतकरियो यहकहकर उसने अपनीमायाका संहारकरदिया चपलाबोला कि मैंनेतो तुझेमारडालनेमें कुछ उठानहींरक्खा था परंतु तेरी मृत्यु नथी और गुरूजीके प्रारब्धमें पकड़ाजाना लिखाथा इससे तू बचगया परंतु कुछचिंता नहींहै जीवितहैं तो बहुतकाम पड़ेगा और जो मरगये तो चलेगये यहसुनकर विश्व मालीने कहा कि तेरेसाहस और धीरताको धन्य है और यह कहकर वह प्रहासका हाथपकड़कर आकाशमार्गीहुआ और चपला रोताहुआ वहांसेलौटा और वह प्रहासकोलेकर महेन्द्र के सन्मुखपहुंचा और विनयकी कि यहअपराधी आपका आगया तब महेन्द्रने हँसकरकहा कि हेप्रहास॥

जयकरीछंद। अबतोपकड़िगयेयहिदेश। अबतबजीवनरहिहैशेष॥
जौनजौनकीन्हेउअपकार। तिनकरअबचाखहुफलभार॥

अबतू क्षणभरेकामहमानहै प्रहासबोला कि हेमहाराज आप को सबसामर्थ्यहै मुझछोटेसे मनुष्यका क्याबल आपके सामने चलसकताहै अबकी बार मुझे और छोड़दीजिये और मेरेअपराधोंको क्षमाकीजिये मैं इसउपकारको सदैवमानूंगा महेन्द्रबोला कि मैंने कईबार तुझको छोड़दिया परंतु तैंने मुझे नीचाही

दिखाया इससे अबकीबार तुझे जीता न छोडूंगा प्रहासबोला कि आप सत्यकहतेहैं बदरीउद्यानमें श्रीमहाराजको बड़ीलज्जा प्राप्तहुईथी परंतु जो व्यतीतहुआ सो होगया उसकोजानेदीजिये अद्भुत परमेश्वरने जो रचाथा सो होगया यह सुनतेही महेन्द्र के हृदयमें दया आई परंतु विचित्रमायाने देखा कि बड़ा बुरा हुआ कि प्रहास बातेंबनाकर छूटाजाताहै शीघ्र महेन्द्रकेपास से उठकर वह आई और प्रहासके दो थप्पड़मारकर लातऊंचे को उठाकर बोली कि मेरे छलिया तू महाराजसे धूर्तता करता है क्या तैंने हमको मोमकाकरपायाहै कि जबचाहै तभी पिघला लिया तेरी बातको सुननेवालेको क्या कोसूं मेरेदेख तुझेमें किस प्रकारसे बधकरतीहूं यहदेखकर प्रहास रोनेलगा और चित्तमें भगवान्से प्रार्थनाकी कि प्रभो तू सर्वव्यापीहै अबमुझे अधिक लज्जित मतकरै मैं तेरेही पूजन और भक्तिको स्थापनकरनेको यहां आयाहूं और इन नास्तिक म्लेच्छोंका बध करताहूं इससे हे नाथ मेरी रक्षाकरो यह प्रार्थना करतेही प्रहासका चित्त हरा और उसके मुखका वर्णप्रकाशमान होगया तब महेन्द्रने कहा कि क्यों प्रहास अभीतो तू मृतकतुल्यपड़ाथा परंतु अब प्रसन्न मन क्यों मालूमहोताहै प्रहास बोला कि मेरे परमेश्वर ने मेरा आश्वासनकियाहै महेन्द्रनेपूछा तेरापरमेश्वरकौनहै वहबोला कि मेरा परमेश्वर एकसर्वव्यापी सच्चिदानन्दरूपहै जिसने इसमाया कृत देश और सब संसारको अपनी शक्तिसे रचाहै और तुझ से मायावी और नास्तिकको ऐसा अधिकार दियाहै कि तू उस के परम भक्त और उपासकोंको धर्षणदेता है अब इस समय मुझको उसीसच्चिदानन्दने प्रेरणाकीहै कि तू घबरावे मत तेरा कोई कुछ न करसकैगा और तू महेन्द्रको मारैगा और जो मैंने इस दुर्भगा विचित्रमायाको बड़ी बुरी दुर्दशासे न मारा तो मैं अपना नाम न रक्खूंगा यह सुनकर विचित्रमाया भयभीतहुई

परंतु चित्तको कड़ाकरके बोली कि अरे मरेअली तू मुझको धमकाताहै पहिले अपना भला तो मना प्रहास बोला कि अरे दुष्टा तू दासीहोकर वस्त्र और आभूषण पहरकर इतरागई है तो मेरा नाम प्रहास जो मैं तुझको लंगोटीलगाकर न नचाऊं दैवयोगसे महेन्द्रने विचित्रमायाके पिताको कुछ धनदिया था सो उससमय प्रहासने जो उसेदासीकहा तो वह बहुतलज्जित हुई और बोली कि अरे ऐसे तैसे तू मुझे दासी कैसे कहताहै प्रहास बोला कि अपने माबापसे पूछलीजो तब तो विचित्रमाया और भी लज्जितहुई और क्रोध के मारे थरथर कांपने लगी तब प्रहासबोला कि दासी को दासी कहने से दासी रोती है और रानीको दासी कहने से रानी हंसती है सो तेरा रोना इस समय प्रकट करता है कि तू दासी है रानी नहीं है यहसुनकर नाग प्रस्फुर और शीत प्रेरकने कहा कि हे रानी यह चुप उस समय होगा जब माराजायगा इससे आप इसका वध कीजिये और इसके मुख न लगिये तब विचित्रमाया बोली कि हे महाराज इसका शीघ्र वध कीजिये यहसुनकर महेन्द्रने अद्भुत जालकी पुस्तक निकालकर देखी कि प्रहासका वध किसप्रकार से कियाजाय उस पुस्तक में निकला कि प्रहास को विचित्रमा-याको देदो कि वह उसको उस देश में लेजाय जो तूने उसके स्वाधीन किया है और वहां अपने निजस्थानपर ले जाकर वह प्रहास का वधकरै क्योंकि जहां इसका रक्त पड़ैगा वह सबदेश उजड़ जायगा यासतक उस देश में न रहैगी यह प्रहास मायाकर्ताका इतना भारी अपराधी है कि श्रीमाया कर्ता परमेश्वर जहां इसका रुधिर पड़ैगा वहांकभी अपनी कृपा न करेंगे यह देखकर उसने विचित्रमायासे कहा कि तुम देखोतो कि इसपुस्तकमें क्या लिखाहै विचित्रमायाने तब मुसकुराकर आंखोंसे कटाक्षकिया और अँगड़ाई लेकर झुककर उसपुस्तक

को पढ़ा और उसमें जो लिखाथा उसको पढ़कर बोली कि प्र-
हासको मुझे दीजिये मैं लियेजातीहूं इतने में सभासदोंने कहा
कि महाराज हमको मूर्च्छाकर चूर्णके उड़नेकीसी दशा दिखाई
देतीहै किसीने कहा कि मेरामुख सूखता चलाआता है महेन्द्र
बोला कि गंधतो कुछकुछ मुझकोभी आतीहै प्रहास बोला कि
शूरवीरकी धाक मारतीहै तब विचित्रमाया बोली कि मायाकर्ता
ऐसाहीकरै मेरे चित्तमें आता है कि इस मरेका शिर काटडालूं
और यही आज्ञा अद्भुतजालमेंभी लिखी है प्रहास बोला कि
तुम्हारा मायाकर्ता वहीनीचहै जिसका मृतकशरीर एकचालीस-
सहस्त्र लंबेयंत्रमें लटकाहुआहै और उसयंत्रके भीतरसे कोई
प्रेत बोला करताहै और उसके मठपर पांचकोसतक सुवर्णका
आकाशबनाहुआहै यहसुनकर विचित्रमाया और महेन्द्र घब-
राये और पूछनेलगे कि तू मायाकर्ताको क्या जानताहै प्रहास
बोला कि मैंइनपरमेश्वरोंकेपास नित्यजाताहूं और जोकुछवेआ-
ज्ञादेतेहैं उसीकेअनुसार तुम लोगोंकेसाथ वर्तावकरताहूं इतना
जानताहूं कि विचित्रमायाकी मृत्यु निकट आई है यह सुनकर
विचित्रमाया उठी और बोली कि कुछीक्यों नहो में आज तेरा
बध बिनाकिये न रहूंगी और चाहाकि प्रहासको पकड़कर उड़
जाय परंतु महेन्द्रने कहा कि हेंहें तुम्हारी प्रतिष्ठा ऐसी नहीं है
जोतुम इसे उठाकर आपलेजाओ मायामणि और मायारत्नसे
कहो वह इसको लेजायँगी और तुम यहांसे अपनी प्रतिष्ठाके
अनुरूपजाना और इसका वध करना यहसुनकर विचित्रमाया
प्रसन्नहुई और बोली कि आपसे मेरी प्रतिष्ठा बढ़ानेवाले जब
तक पृथ्वी और आकाशहै तबतक बनेरहें अच्छा मायामणि तू
इसको लेचल और मेरेबागमें बड़ी चौकसीसे रखियो मैंभी
पीछेसे आतीहूं आकर इसका वध करूंगी और हे मायारत्न तू
इसके साथसाथ चौकसी करतीहुई जा देखियो किसी छलावेमें

मत आजाइयो यहआज्ञा पातेही उनदोनोंने शीघ्र एक विमान मायाबलसे बनाया और प्रहासके सर्व शरीरको स्तंभित करके उस विमानपर डाललिया और वहांसे चलदीं उससमय प्रहासकी आंखेंतो खुलीरहीं और जिह्वासे बोलभी सकताथा परंतु और सब शरीरके अंगोंसे कुछ नहीं करसकताथा निदान वह वन उपवन और पर्वतोंको देखताहुआ और श्रीविष्णुभगवान का स्मर्ण करताहुआ चला जाताथा और चलते चलते एक नगरके निकट पहुंचा और देखा कि उसनगरका प्राकार दर्पणी कांचका बनाहै और उन कांचके खंडोंमें बाग और बन और उनके स्वामियोंके चित्र बनेहुए हैं कहीं स्त्रियोंके झुंड खड़ेहुए रंग खेलरहेहैं कहीं राजाओंके अहेर खेलनेके उपवनोंके चित्र परम शोभित खिंचेहैं और वहांएक दुर्गभीहै जिसका द्वारबड़ा ऊंचा और श्रेष्ठबनाहै और उसपर कंगूरे ऐसे सुंदर और ऊंचे बनेहैं कि आकाशसे मिलेहुएहैं और दृष्टि और मनगति उनकी शिखातक नहीं पहुंचती हैं॥

चौ०। अतिसुंदर सुबन्यो प्राकारू। सहित चित्रशोभा आगारू॥
अनगिन रुचिर कँगूरासोहैं। देखि देखि मनसबके मोहैं॥
परैंभानु दुतिकरैं प्रकाशा। अतिऊंचेजनु छुवत अकाशा॥
सुंदर आकृततासु सुहाई। कविमति लघुपै जात न गाई॥

द्वारउसका खुलाहुआथा और वहां सहस्रों म्लेच्छ रक्षाके लिये नियतथे निदान मायामणि और मायारत्न दोनोंने उस नगरमें प्रवेशकिया आहाक्या परमशोभा उसकीथी कि जिसके सामने आकाशमें तारागणोंकी बस्तीभी उजाड़ दीखतीथी हर एक वहांका स्थान बैकुंठके स्थानोंको लज्जित करताथा बणिक वहां के सब उत्तमोत्तम वस्त्र धारण कियेहुए अपनी दूकानों पर रत्न जटित चौकियां बिछाये बैठे थे और दूकानों में अपूर्व और विलक्षण प्रकार के पदार्थ लगायेहुए क्रय विक्रय कररहे

थे और मनुष्य इधर से उधर लेते देते हुए फिर रहे थे॥

चौ०। वन्योसुसुंदर रुचिर वजारू। शोभासींव मनोहर चारू॥
कहुंवहु फुलवेचा रसभीने। धरे दुकाननि फूल नवीने॥
मधुरमधुरइमि वचनउचारत। लेउहारयह रसिक प्रियारत॥
धरे शाक कहुंशाक बनैनी। वंचत शाक मनोहर वैनी॥
कहूंतमोलिनि अतिअलवेलीं। वेचतबीड़ी रुचिरनवेलीं॥
बोलतवैन भरतजनुफूला। देखिरसिकमन उपजतशूला॥
कहूंवनिकजन धरेतमाला। वेचतकहिकहि वचनरसाला॥
कहूं सुगंधित तैल मनोहर। वेचतसुंदर सुघर वनिकवर॥
सो०। जासुगंधको घ्राण उपजावत हियहर्ष अति।
होतप्रफुल्लित प्राण तजिहियकी सबम्लानता॥
चौ०। मद्यसुमद करजाति अपारा। वेचतधरे कहूं कलवारा॥
वनितावहुतहँ रंगरगीलीं। डोलतरतिसम रुपछवीलीं॥
धूमपानके यंत्र सुहाये। वेचत कहूं वनिक मनभाये॥
कहूं औषधी वेचन हारे। रुजहर औषधि वेचत प्यारे॥
कहूं दुकाननिमें पटहारे। वैठेवहुविधि पटनि सँभारे॥
गूंधतगहने परमसुहाये। जसजेहि तियके मनमें भाये॥
जड़ियावहुनगधरेनवीना। जड़तभूषननि परमप्रवीना॥
वैठे कहूं शराफसमाजा। करत शराफीके सब काजा॥
कोऊकहूं सखारतहुंडी। काढ़तद्रव्य खोलिकै कुंडी॥
यूथयूथमिलिफिरैंदलाला। पूछतभाव सबै नतराला॥
रुचिरवनो जौहरी वजारू। परमअलंकृत शोभितचारू॥
वैठेकहूं अनेक वजाजा। करतवस्त्र वेंचनको काजा॥
थालनिसजे घनेकमिठाई। वैठं वेंचत कहुँ हलवाई॥
दो०। शोभितअति रमणीकसब वन्योसो नगरमझार।
वरणिसकै को जसबन्यो तामधि रुचिर वजार॥

निदान प्रहास उसनगरकी शोभा देखताहुआ और चित्त में यह विचारकरताहुआ कि इसनगरको अच्छीप्रकारसे लूटूंगा एकबागके समीपपहुंचा मायामणि और मायारत्न अपनेविमान को उसबागके भीतरलाईं यहबाग मायाकृतदेशाधिपके विहार

करने का स्थानथा इसकी शोभाका क्याकहनाथा बागका द्वार रत्नोंसे जटितथा और भीतर फुलवारी रत्नमयी परमसुंदर थी सबवृक्ष फले फूले और हरेभरेथे रौसेंसब उसकी पद्मरागआदि मणियोंसे जटितथीं और मेहँदीकी टट्टियां पुखराज और मरकतमणिकीसी दिखाईदेतीथीं॥

चौ०। निर्मलनीरभरीं जलधारा। तहां निरंतरबहैं अपारा॥
सौरभपवन बहै सुखदाई। मंदमंद शीतल मनभाई॥
परसतकरत प्रमोदअपारा। उपजावत तनमदनविकारा॥
नानातरु बरबेलि लगाईं। फूली फलीं सुपरमसुहाईं॥
जनुबसंतऋतुसदा सुहाई। बसति निरंतर तहां लुभाई॥

उसबागमें सहस्रोंमहल भांतिभांतिके पाषाणोंके बनेहुए थे और उनपर रत्नोंकाकाम होरहाथा बड़ीहीअपूर्व उसकी शोभा थी परंतु विचित्रमायाके यहां नरहनेसे वहस्थान अलंकृतनथा और जोदासी और सेवक वहांनियतथे वे अपने २ स्थानों पर रहाकरतेथे मायारत्न और मायामणिके आनेसे वे सबचलीआईं और सबोंने उनको दंडवत्की उनदोनोंने कहा कि श्रीमहारानी विचित्रमाया यहां आनेवाली हैं बड़ीशीघ्रता से इसस्थान को अलंकृतकरो तुमने सबघरबासी डालरक्खा है बुहारीतक नहीं दीहै देखोतो महारानीआकर तुमसे कैसी अप्रसन्नहोतीहैं यह सुनतेही उनदासियोंने उसस्थानको बिछौनाआसन और शय्या आदि नानाअलंकारोंसे अलंकृतकिया और क्षणमात्रमें उसबाग कीशोभा इन्द्रपुरी के उद्यानकीसी बनादी तब मायामणि और मायारत्नने प्रहासके ऊपरसे मायाकावेष्टन दूरकिया और उसको एककोठरी में बन्दकरकेउसमें तीनतालेलगादिये और कुछ ऐसी मायाकरदी कि उनकोठरियोंके चारोंओर अग्निजलनेलगी और बड़े२ नाग मुखोंको फैलाफैलाकर वहांबैठगये निदान इसप्रकारसे प्रहासको महाकारागारमें बन्दकरके आपभी दोनों

उसस्थानकेसजानेका प्रबन्धकरनेलगीं और उसको नानाप्रकार के शोभितपदार्थों से युक्तकर के बागके बीचमें जो स्फटिक का चबूतरा बना था उसपर उत्तम वस्त्र और आसन बिछवाये और दोनों वहां बैठकर विचित्रमायाके आनेकी बाटदेखनेलगीं परंतु प्रहास जो उस कारागारमें बन्दहुआ उसने मनसा वाचा कर्मणासे श्रीविष्णु भगवानको दंडवत्‌की कि तेरीही कृपासे में इन दुष्ट म्लेच्छोंके हाथसे मुक्तहुआ और कुदार अपनी थैली से निकालकर पृथ्वीको खोदनेलगा परंतु उसनेदेखा कि पृथ्वी वहांकी पत्थरकी है और बज्रसे भी अधिक कठिन है तब तो वह घबराया और उसी घबराहटमें परमेश्वरसे प्रार्थनाकी कि हे प्रभो अब मुझे ऐसी बुद्धिदीजिये जिससे में कोई ऐसा छल रचूं कि यहांसे छुटजाऊं इसप्रार्थनाके करनेसे तुरंत उसकेहृदय में एकउपाय भाषितहुआ और उसने अपनी थैलीमेंसे एक अपराधीको निकालकर मूर्च्छित करदिया और उसकी जीभमें कोई औषधी ऐसी लगादी कि जिह्वा उसकी मुखकेभीतर फूल कर पथरागई और उसकी बोली बन्दहोगई और फिर उसका स्वरूप अपनासा बनाकर वहीं उसको लिटादिया और आप मरुतदत्त वस्त्र ओढ़कर उसकोठरी के द्वारपर कोने में बैठगया और यहां मायामणि और मायारत्न विचित्रमाया के आनेकी बाट देखरहीथीं थोड़ीदेरमें विचित्रमाया बड़ीधूमधामसे अपने उस स्थानमें आई और उसके देशके सब मान्य म्लेच्छ भेट लेलेकर वहां पहुंचे उसने आतेही पूछा कि प्रहासकहांहै माया मणि बोली कि हमनेउसे कोठरी में बन्दकरदियाहै यहसुनकर वह क्रोधकरकेबोली कि तुमनेबहुत बुराकिया वहछली निकल-गयाहोगा वह बोली कि उसकी क्या सामर्थ्यहै जो निकलजाय हमने बड़े प्रबन्धकेसाथ उसको बन्दकियाहै यहसुनकर विचि-त्रमाया उनके साथ साथ उसकोठरीके द्वारपर आई उन दोनों

ने अपनी मायाका संहारकरके उस अग्नि और नागोंको दूर किया और तालाखोलकर कोठरीको खोला प्रहास वहीं द्वारके समीप बैठाहीथा और मरुदत्त वस्त्रओढ़नेके कारणसे अदृश्य था इससे कोठरी खुलतेही वह अचकसे बाहिर निकल आया और उस बागमें ठहरगया और उधर विचित्रमायानेदेखा कि प्रहास लेटाहुआहै देखतेही कहा कि देखो मूड़ीकाटा कैसा छल करके लेटाहै जानो मरगयाहै और मायामणिसे बोली कि जा इस छलियाको भीतरसे निकालला मायामणि भीतरगई और विचित्रमाया सबकोलिये हुए द्वारको घेरेरही और मायाकरती रही कि उठकर भाग न जाय अंतमें मायामणि मायाबलसे उस को हाथमें लेकर बाहिर आई और विचित्रमायाने आज्ञा दी कि चांडालको शीघ्र बुलाओ आज्ञाहोतेही चांडाल बुलाया गया और विचित्रमाया ने आज्ञादी कि इस अपराधीका शिर शीघ्र काटडाल यह सुनतेही चांडाल ने दौड़कर उस बनेहुए प्रहास की ग्रीवापर एक खड्ग मारा कि शिरउसका धड़ से पृथक् होगया रुधिर की धारा चलनेलगी और उसका धड़ बिलबिलाने लगा उससमय विचित्रमाया ने आज्ञादी कि इस के धड़को किसी निर्जनबन में फेंकदो और फिर शिरको एक टिपारीमें बन्दकरके उसकेऊपर सुनहरी वस्त्र मढ़ाया और उस को मायामणि और मायारत्नको देकर कहा कि इसे महाराजके पास लेजाओ और मेरीओरसे इस आनन्दकालकी भेटदेकर पूछना कि प्रहासके मारेजानेका उत्सव कहांहोगा क्योंकि जैसी महाराज आज्ञादेंगे वैसेही कियाजायगा यहआज्ञापाकर माया मणि और मायारत्न उस टिपारीको एकदासी के शिरपररखवा-कर वहांसे चलीं और बदरीउद्यानमें पहुंचीं उससमय महेन्द्र और उसके सब सभासदोंने उन दोनोंको टिपारीलियेहुएआते देखकर अनुमानकिया कि विचित्रमायाने अपने बागके फल-

भेजेहैं फिर विचारा कि प्रहासका शिरकाटकरभेजाहै परंतु यह भी अनुमानकिया कि प्रहासका माराजाना कठिनहै निदान वह सब इसप्रकारसे मनमेंसंकल्पविकल्प करहीरहेथे कि इतनेमें मायामणि और मायारत्नेआकरमहेन्द्रको दंडवत्की औरकहा कि महारानीने आपके लिये यहविचित्र सौगातभेजी है इसटिपारी को खोलकर देखिये महेन्द्रने उसको अपने हाथसेखोला और उसमें प्रहासका कटाहुआ शिर देखकर मारेहर्षके खड़ाहोगया और रत्नाकर पर्वतकी ओर मुखकरके अद्भुतको दंडवत्की और कहा कि हे अद्भुतपरमेश्वर तेरा बारबार धन्यवाद है जो तैंने मेरे हाथसे ऐसे परमशत्रुका वध कराया मैं इसयोग्य नथा तैंने मुझको बड़ाईदी सब संसार इसकेमारे दुखीथा और कोई उस का वध न करसक्ताथा आज उसकादेहांतहुआ यहसुनकर सब सभासद बोले कि यह श्रीमहाराजका प्रतापहै तब महेन्द्र बड़े शब्दसे हँसा और अपना क्रीट उतारकर उछलने लगा और सबसे बोला मेरेसाथ सबकोई देरतक प्रसन्नहोहोकर हँसो यह सुनकर सब हँसनेलगे और आहा हा हा हू हू का शब्द प्रकट हुआ जो म्लेच्छ वहां आताथा महेन्द्र उसको अपने गलेसे लगाताथा उससमय मायामणिने विचित्रमायाकी भेजीहुई भेट दी और पूछा कि प्रहासके वधहोनेका उत्सव किसदिन होगा यह सुनकर महेन्द्रबोला कि उत्सव आजही रात्रिकोहोगा और रानी विचित्रमायासे कहदो कि आनंद वाटिकामें चलकर उत्सवका प्रबन्धकरें क्योंकि वह स्थान परम अलंकृत है और वहां स्थान बहुतहैं सब मायाकृत देशवासी वहां बैठसकतेहैं यहआज्ञा पाकर मायामणि और मायारत्न चलदीं और उसीसमय महेन्द्रभी बड़ीधूमधामसे सवारहुआ आठसहस्र म्लेच्छी परम सुंदर वस्त्र धारण कियेहुए उसकेसाथ होलीं जिनका चलना आकाशमें तारागणों कीभांति दिखाईदेता था बहुतसी महेन्द्र

काचमरढोरतीजातीथीं और बहुतसीगुलाल और अबीरउड़ाती जातीथींमायाकृत बादलसे मुक्ताओंकीवर्षा होतीजातीथीसत्रह सौम्लेच्छी अप्सराओं कीभांति उसकेशिरपर उड़तीहुई छाया किये जातीथीं और सत्रहसौआगेआगे प्रबन्धकरतीहुईचलती थीं और सत्रहसौपीछेपीछे नानाप्रकारके मायाकृतवाहनोंपरस-वारचलीजातीथीं और सतचपलाओंमें से जो शेषरहगईथीं वे महेन्द्रके दक्षिण और वामभागमें चमकतीजातीथीं उनसे महेन्द्र एक तेज कीमूर्त्ति दीखपड़ताथा॥

चौ०। मायाकृत देशाधिपराजा। चल्योइविधिसोंसाजिसमाजा॥
दमकतिदामिनिचिलकिचिलकिके। बाजतबाजेबलकिबलकिके॥
सहसनदासीचतुरनवेली। चलीजात सुंदर अलवेली॥
शोभानूतनपरमसुहाई। कविमति लघुप बरणिनजाई॥

निदान यहांसेतो महेन्द्र इसधूमधामसे चला और उधर मायामणि और मायारत्नने सबवृत्तांत विचित्रमाया से जाकर कहा सुनतेही वहभी सबम्लेच्छियोंको साथलेकर चलदी और महेन्द्रके पहुंचने से पहिलेही वहां जापहुंची और स्नानकरके अपना शृंगारकिया और रत्नजटित भूषण और बसन धारण किये और आज्ञादी कि अग्निदीक्षा अर्थात् आतशबाजी बना-कर बागमें सन्मुख लगादीजाय और बागके वृक्ष गोटेसे मढ़ दियेजावें और पल्लवोंपर सुनहले कामकी थैलियां चढ़ादीजावें निदान वहसबदिन उस आनंद बाटिकाको नानाप्रकारके अलं-कारों से अलंकृत करने में व्यतीतहुआ जिसका वर्णन आगे होगा और आकाशरूपी बाटिकामें चन्द्रमारूपी राजा दिनरूपी शत्रुके अस्तहोनेसे तारागणरूपी सभासदों सहितआकर आ-सीनहुआ और निशाके आगम और गमनरूपी नृत्यको प्रकाश रूपी आह्लादसे देखनेलगा॥

दो०। नारि निशापति इन्दुको समय आगमनजानि।
शय्यानभ साजत भई उडुगण फूलनि धानि॥

सायंकाल होतेही विचित्रमाया ने कुछ मायाकी कि उससे एकम्लेच्छ प्रकटहुआ और उसने प्रकट होकर ऐसी मायाकी कि अकस्मात् उसबागकी घासके प्रत्येक त्रणमें माणिकके वर्ण केपुष्प खिलगये और गजमुक्ताकी भांति जगमगाने लगे और उस बागके चारों ओरकी भीत दर्पणरूपी होगई कि जो कुछ बागके बाहिरथा वहभी दीखने लगा और संपूर्ण वृक्षोंमें मणि और रत्नों के बनेहुए कमल लगादिये गये कि उनसे उसबाग की शोभा औरही अपूर्व होगई और उसमें जो राजमन्दिर बनेथे उनमें मणि और स्फटिकके कमल और हंडिका आदि नानाप्रकार के दीपक प्रज्वलित कियेगये उससमय महेन्द्रकी सवारीभी आपहुंची रानी विचित्रमाया ने आगे जाकर उसको दण्डवत् करके उसका यथायोग्य सत्कार किया परंतु महेन्द्र ने बागके बाहिर स्थितहोकर कुछ माया की कि उसबागका द्वार जो दिखाई नहीं देताथा अब दीखनेलगा और उसपर परमोत्तम वस्त्रका परदा पड़ाहुआ दृष्टि में आया उसीसमय अप्सराओंका सा स्वरूप रखनेवाली चार पुतलियां प्रकट हुईं और उस परदे को उठाकर खड़ी होरहीं उससमय महेन्द्र ने फिरकुछ मायाकी कि सहस्रोंफूल चमकतेहुए आकाशसे बर्षने लगे और महेन्द्र बागके भीतरगया और विचित्रमायाका हाथ पकड़कर बिहार करनेलगा जितने म्लेच्छ उसकेसाथ आयेथे उनमेंसे जो जो प्रतिष्ठितथे वेतो साथरहे और शेष बागके बाहिर ठहरेरहे यह मायाकृत वाटिका जिसका वर्णन पहिलेभी होचुकाहै कई कोसके बीचमें बनीथी और उसदिन उत्सवहोने के कारणसे उसकी रचना बड़ीअपूर्व कीगईथी रौंसरौंसपर रत्न छिटकेहुएथे और सब संसारके फूल रत्नोंके बनेहुए लगेथे थामले उनके स्फटिकके रचेथे और बहुतसे उनमें मणि निर्मितभी थे अंगूरकी टट्टियां रत्नजटित बनीथीं और प्रतिपल्लवपर सुन-

हरी थैलियां चढ़ीथीं और हेमसूत्रसे कसीथीं एकवृक्ष जोपृथ्वी से उत्पन्नहुआ लगाथा तो उसके सामने दूसरा वैसाही रत्नोंका बनाथा मृग उसमें नानाजातिके कूदते फिरतेथे और उनकेसींग सोने और चांदीसे मढ़ेथे वृक्ष सब सुनहले रुपहरे गोटेसे मढ़े थे और प्रत्येक वृक्षकेनीचे स्फटिकके चौतरे बनेथे और जल-धारा और तड़ाग निर्मल नीरसे परि पूरितथे और उनमें अनेक वर्णके मत्स्य कलोल करतेथे मेहँदीकी टट्टियोंपर अनेकप्रकार की बेलें चढ़ीहुईथीं और रौंसोंपर सुनहरे और रुपहरे कण पड़े हुए चमकरहेथे वृक्षोंमें सुनहली गेंद और कुमकुमे लटकेहुएथे सरोंके वृक्ष सीधेएकडौल बनेहुए लगेथे और उनके ऊपर मोर नाचरहेथे और अठारहसौ मालिनि परमसुंदरी रत्नजटित भूषण और वस्त्रोंसे अलंकृत गाती बांधेहुए हाथोंमें सोनेचांदीकी खुर-पियां लियेहुए उसबागमें काम करती फिरतीथीं कोई रौंसोंकी घास छीलतीथी कोई फूलोंके गहने बनातीथी और कोईडाली लगातीथीं जहां तहां परम मनोहर स्त्रियां नृत्य करतीथीं सैकड़ों महल और मन्दिर बनेथे और उनमें सहस्रों अप्सरारूपी दा-सियां नियतथीं कोई आसन बिछातीथी कोई दीपक जलातीथी और कोई शय्याको अलंकृत करतीथी कहीं मणियोंके कमल रक्खेथे कहीं फूलोंकेगुच्छे पात्रोंमें रक्खेहुए स्थापितथे कहीं सुगं-धित तैलकेपात्र रक्खेथे और पानपात्र शृंगारपात्र और तांबूल पात्र आदि अनेकप्रकार के पात्र अद्भुत बनेहुए धरेथे भीतों में मनोहर नागदंत बनेथे और उनके ऊपर दर्पण परमसुंदर चढ़ेथे और मखमलीपरदे जिनपर सुवर्ण का कामहोरहाथा पड़ेहुए परम शोभा देतेथे कहीं चांदी और सोनेकी तीलियों की बनीहुई चिकें पड़ीथीं सिंहासन और चौकियां रत्नजटित बिछीथीं और चन्द्रप्रभा वस्त्रकी चांदनी खिंचीथी और बारह सौ दासियां परमसुंदरी अनेकप्रकारके सुगंधित जललियेहुए

क्रिड़काव कररहीं थीं बीचा बीच बागमें एक चबूतरा रत्नज-
टित बनाथा और उसपर एक वितान सुनहरीतनाथा झालर
उसमें मोतियों की लटकती थी और वह रत्नजटित आठसौ
स्तंभोंपर स्थितथा और हरएकस्तंभपर रत्नोंकेबनेहुए मोरनाच
रहेथे मेखें सोने और चांदीकी गढ़ीथीं और उनमें वितान की
सुनहरी डोरियां कसीथीं और जो झालर उसवितानकीथी वह
मणिदीपकों की आभासे सूर्यकी किरणोंकी भांति चमकती थी
उसकेनीचे एक रत्नजटित सिंहासन बिछाथा और चारोंओर
मरकत और वैडूर्य आदि रत्नोंके बनेहुए नौसौ आसन बिछेथे
और अनेक गद्दियां रुपहरी कामकी बिछीथीं और नील और
लालमणिकी स्थालियोंमें स्फटिक और वैडूर्यके पात्रोंमें भरीहुई
परम स्वादिष्ट मद्यस्थापितथी नानाप्रकारकी सुगंध वहां बसाई
गईथी और कर्पूरी वत्तियां कमलोंमें प्रज्वलितथीं निदान महेन्द्र
रानी विचित्रमायाका हाथ पकड़ेहुए उस बाटिकामें विहारकरता
हुआ वहां आया और उस वितानकेनीचे सिंहासनपर आसीन
होकर आज्ञादी कि आजके परमउत्सवमें कोईमंगलीय अथवा
आनन्दीय कर्मउठा न रक्खाजावे और हमारे सन्मुख सबकर्म
कियेजायँ यह आज्ञापातेही अस्सीसहस्र मायावीम्लेच्छ झूलों
पर जाकर बैठगये और पेंग बढ़ाबढ़ाकर मल्हार गानेलगे और
झूलोंकी पटरियोंमें घूंघरू बांध दियेगयेथे उनका शब्द मल्हार
के साथ ठेकासा देताहुआ होनेलगा और महेन्द्रके सन्मुख भी
परमसुंदरी वेश्या नाचने और मनोहर गान गानेलगीं सबबाग
में अबीर उड़नेलगा और अप्सरा कुमकुमे एकएकके ताकताक
कर मारनेलगीं पिचकारियां रंगकी चलनेलगीं और मृदंग और
झांझ औरडफ और मंजीरा और मुहचङ्ग और जलतरंगआदि
अनेक बाजे बजनेलगे और रुनझुनका शब्द सब बागमें फैल-
गया उससमय सबने मद्यपानकरना आरंभकिया और उसके

आवेशमें उस बागके कमलोंके दीपदान और कुमुदकी कौमुदी की शोभा उनको अपूर्व मालूम होनेलगी और बागकेबाहिर भी कोसोंतक म्लेच्छ आनन्दसे छकितहोगये उससमय आज्ञाहुई कि अग्निर्दीप्ता अर्थात् आतशबाजी छोड़ीजावें यह आज्ञा होतेही अग्निगर्भा चक्रोंमें अग्नि लगाईगई और अग्निकुंभ अर्थात् अनार छोड़ेगये उनसे सुनहरे रुपहरे और नीले नाना भांतिके दीप्तफूल झरनेलगे आहा क्या आनन्दका उत्सवथा॥

चौ०। अनिलगर्भ बहुयंत्र सुहाये। छुटनलगे अतिशय मनभाये॥
झरतफूल तहँ इविधि सुहाये। तारागण जनु महिपै आये॥
नील पीत सित अरुण सुरूपा। तिनसों कढ़त अलौकिकधूपा॥
नाचत तहां अनेक सुनैनी। सुंदर रूप मनोहर बैनी॥
गाय मधुरध्वनिमन हरि लेहीं। रसिक जननको आनंद देहीं॥
दासी परम सुंदरी सोहैं। सैनन सों सबके मन मोहैं॥
मधुकृतमद्यपानि सों लेहीं। सभासदन भरि भरिके देहीं॥
तासों होइ सब मत्त स्वरूपा। देखत उत्सव आनँद रूपा॥

उससमय देखनेवाले सब डरगये और ठाट बंधगया गाने वाली स्त्रियां अनेक अनेक प्रकारके मंगलगान गानेलगीं और म्लेच्छ मद्य पी पीकर ताने उड़ानेलगे और प्रहासके बधका ऐसा आनन्द मनाया कि धन और धरणी याचकोंको देनेलगे उससमय उन सुन्दर गान करनेवाली वेश्याओंने अपने गानसे महेन्द्रके चित्तको मोहितकरलिया और उसआनन्दकालमें नीचे लिखेहुए पदोंको गाना आरंभ किया॥

होली। करिहौं कौनबहाना गवन हमरा नगिचाना॥ टेक॥ सब सखियनमें चुनरि मोरी मैली दूजे पियाघर जाना। तीजे डर मोहिं सासु ननदको चौथे पिया देहैं ताना १ प्रेमनगरकी राहकठिनहै वहां रंगरेज सयाना। एकओर दैदियो चूनरमें तासे पियापहिंचाना २ राहचलतसत गुरू मिलें जब उनकाहे नाम बखाना। उनकी कृपा ह्वैहै जब मोपर तब लगि जैहै ठिकाना ३॥

ठुमरी। सखीरी मगहेरत दृगहारे॥ टेक॥ राति दिना छिन छिन

जिय व्याकुल गिनत गगनके तारे। यह नैना दरशनके प्यासे नवसरोज रतनारे॥ कंज खंज मृग मीन लजावत हैं सबके उजियारे। कहैं सरदार अधिक जिय लरजै आवो प्राण पियारे॥

निदान जब इसप्रकारसे आनन्दहोनेलगा और सबको धन बटने लगा तब मायाकृत देशाधिपने आज्ञादी कि आज हमसे जो कोई कुछ मांगेगा वही हम उसको देंगे यह सुनकर विचित्र माया सन्मुख आकर हाथ जोड़हुए विनयपूर्वक बोली कि यदि आपकी आज्ञाहो तो मैं कुछ मांगूं यह सुनकर महेन्द्रने उसको गलेलगाकर उसका चुंबनलिया और कहा कि मैं मायाकर्त्ताकी शपथखाकर कहताहूं कि जो कुछ तुम मांगोगी सो तत्कालही दूंगा विचित्रमाया बोली कि आज बड़े उत्सवका दिन है इससे मेरी प्रार्थनाको अंगीकार करके आप मायावतीका अपराध क्षमा करके उसको भी इस उत्सवके देखनेको बुलावें यह सुनकर महेन्द्रने उसकी प्रार्थनाको स्वीकार किया और एक म्लेच्छको आज्ञादी कि तू जाकर मायावतीको आदर पूर्वक लिवाला यह आज्ञापाकर वह म्लेच्छ चलदिया परंतु अब वृत्तांत उस परम पीड़ित मायावतीका सुनिये कि जब महेन्द्रने उसकोताड़नाकरके उसके घर भिजवादियाथा थोड़ेदिनोंमें उसकोआरामहोगया और वह अपने चितचोर राजपुत्र रुद्रविक्रमका स्मर्ण करके उसके विरहमें व्याकुल रहनेलगी और रात्रि और दिन उसका भ्रमर रूपी चित्त अपने प्रीतमके कंजरूपी मुखके स्मर्णमें मग्न रहकर और नेत्र उसके उसप्रियदर्शनकी लालसामें अश्रुपातों की धारा छोड़तेरहते थे॥

क०। ढुरि ढुरि परत मोती मांगहूते बार बार लुरि लुरि परत बेनी जंघनलों आवती। सरकि सरकि जात कंचुकी कुचनपर थरकि थरकि गात भृंगनउड़ावती॥ छूटिछूटिजात बेंदी भालते फरकिअंगटूटि टूटि जातमाल विरहबढ़ावती। गिरिगिरिजात कीलपायलकी शिवनाथफिरि फिरि विलोकैद्वार सगुनमनावती १॥

दो०। प्रियबिछुरत बिछुरेसबै तनमनके सुखचैन।
घरबाहरनसुहातकछु तलफिकटत दिनरैन १
तेरे बिछुरतही पिया उलटगयो संसार।
चन्दन चन्दा चांदनी भये जरावनहार २

निदान इसीविरहकी दुखदद्शामें उसनेसुना कि आज सब मायाकृत देशमें आनन्दका उत्सवहोरहा है जब पुछवाया तब उसको मालूमहुआ कि प्रहासके मारेजानेका उत्सव महेन्द्र ने करायाहै और उससे मायाकृतदेशवासी परमप्रसन्नहैं यहसुनतेही वह अचेतहोकर गिरपड़ी और जब फिर चैतन्यहुई तब बड़ी करुणासे रोकरपुकारी कि अरेनिर्दयी दई तैंने मेरी सबआशा तोड़दी अब मैं किसकेद्वारा अपने मनहरणके पास पहुँचूंगी और जब उसचितचोरसे सामनाहोगा तब मुझको कैसीलज्जा होगी हाय मैं जीतीरहूं और प्रहास माराजाय हाय जब वह पकड़ागयाथा तभी उसकी सहायताकरके उसके साथही कैद होजाती और अपनेप्राण देदेती तो अच्छाथा अब मैं बदरी उद्यानमें चलकर पूछूं कि वहदुखिया किसप्रकारसे मारागया यह विचारकर उसने श्वेतवस्त्र धारणकिये और कुछ दासियों को साथलेकर चलनेहीकोथी कि इतनेमें वह महेन्द्रका भेजा-हुआ दूतपहुंचा और उसनेआकरकहा कि हेरानी अबप्रसन्न होउ रानी विचित्रमायाके प्रार्थनाकरने से महाराज महेन्द्र ने तुम्हाराअपराध क्षमाकरके तुमको प्रहासकेमारेजानेका उत्सव देखनेको बुलाया है यहसुनतेही उसको जाना तो आपही था तुरंत चलने को उद्यतहोगई और कुछबहाना न किया और मायाकृत विमानपर बैठकरचलदी और आनन्दवाटिकामें पहुं-ची वहां जाकर उस महानउत्सवकी तयारीको देखकर उसके चित्तमें बड़ाखेदहुआ और कहनेलगी हाय प्रहासकेमारेजाने का यह उत्सवहै मैं अपनेमित्रके मरनेकाउत्सव देखरहीहूं क्या

करूं जोकुछ दैवदिखावे वह अवश्यही देखनापड़ताहै यहकह-
कर वह अपने विमानपरसे उतरी और बागके भीतरजाकर
महेन्द्रको दंडवत्की विचित्रमायाने उसको महेन्द्रके पैरोंपर
गिरादिया वहतो उससे चित्तसे प्रेमरखताथा तुरंत उसने उस
काशिर उठाकर अपनेहृदयसे लगालिया तब उसनेभी प्रहास
के मरने का मङ्गलवचन कहा और महेन्द्रको भेंटदी और सिं-
हासनके दाहिनीओर जाखड़ीहुई और चमरढोरनेलगी उस
समय महेन्द्रने मायाकृत पक्षियों को आज्ञादी कि तुमजाकर
सबदेशमें सबसेकहदो कि आज कोई अयाच्य नरहजाय जि-
सको हमसे मिलनाहो अथवा जोकुछ हमसे मांगनाहो वह
आकर हमसेमिलै और मांगै यहसुनकर वेपक्षीउड़े और माया-
कृतदेशमें चारोंओर उड़कर उक्तवार्त्ता सबदेशवासियोंसे कहि-
आये और क्षणमात्रपीछे बड़े २ नामीम्लेच्छ वहां आनेलगे
और अंतरिक्षमें काले और पीलेबादल प्रकटहुए और उनमें
से पांचम्लेच्छ बड़े २ उत्तमवस्त्र पहिरेहुए निकले नाम उनके
येहैं घननाद १ व्याघ्रप्रेरक २ करालनोचन ३ दुर्धर्ष ४ और
दुर्प्रहर्ष ५ और इनकेपीछे दोदेशाधिप जो महेन्द्रको कर देते
थे आये उनके नाम यहथे हरिताङ्गी १ और कालज्ञ २ और
उनकेसाथ सत्रहसौ लोहनिर्मित मायाकृत पुतले अस्त्रधारण
कियेहुए आये और दोजलकीधारा अंतरिक्षमें बहतीहुई दृष्टि
पड़ीं जिनमें आठसौमत्स्य उछलतेहुए चलेआतेथे और कुछ
काल वायुमें स्थितरहकर उन जलकीधाराओं से कूदपड़ते थे
और उन दोनों देशाधिपोंके शिरपर दोमयूर अपने सुबर्णवर्ण
पक्षोंसे छायाकियेहुए थे निदान येसब बागके भीतरगये और
महेन्द्रको भेंटदेकर अपनेयोग्य आसनोंपर बैठगये और बोले
कि महाराज आजकादिन धन्यहै कि आपकेहाथसे वह माया-
वी म्लेच्छोंकेशिरका मुंडवन और वधकरनेवाला प्रहास मारा-

गया श्रीअद्भुतपरमेश्वर और मायाकर्त्ता ईश्वरकी बड़ीकृपा है
क्योंकि यह वहमनुष्यथा जिसकेभयसे संसार के मायावीम्लेच्छ
छिपतेफिरते थे अब संसार में आपकानाम होगया अद्भुत ने
आपकेऊपर बड़ी कृपाकी है परंतु आपने इस बड़ेउत्सवमें श्री
मायाकर्त्ता के पौत्र सैन्धरजीको क्योंनहीं बुलाया है यहसुनकर
महेन्द्रबोला सैन्धरजी शत्रुसेना से युद्धकरनेकेलिये उतरेहुएहैं
और शत्रुओंके चित्र बनारहे हैं और दूसरे सबके मान्य और
वृद्धहोनेसे उनको जानेआने में परिश्रमपड़ताहै और दुखहोता
है और विचित्रमायाभी यहीं है जो उनको बुलालेता तो वहां
सेनाबिना किसीसेनापतिके कैसेरहती इससे उनको नहींबुला-
याहै यहसुनकर घननादआदिने कहा कि श्रीमहाराजकाकहना
सत्य है परंतु सेनाके प्रबन्ध के लिये किसीको यहांसे भेजकर
उनको अवश्य बुलवाइये और इसमायाकृत देशके कुछअपूर्व
पदार्थ और एकविनयपत्र श्रीपरमेश्वरके पास भेजकर उनका
धन्यवादकीजिये क्योंकि उन्होंने बड़ी कृपाकरकेहम अपनेउपा-
सकों के प्राणबचाये हैं यहसुनकर महेन्द्रबोला कि यहबात
श्रेष्ठहै मेरीइच्छाहै कि प्रहासका शिरभी भेजदूं कि परमेश्वर
काकालि उसकोदेखकर प्रसन्नहोय और शत्रुंजयकी सेना निरा-
शहोकर बिनामारे मरजाय यहसुनकर सबने कहा कि बहुत
श्रेष्ठ है यहीकरना उचित है निदान उसीसमय पांचमायावी
म्लेच्छ बुलायेगये और प्रहासका शिर एक रत्नजटित सुवर्णके
पात्रमेंरखकर उनकोदिया और कहा कि इसको परमेश्वर के
पास लेजाओ और कुछ मायाकृतदेशके अलभ्यपदार्थ भेंटके
लियेदेकर एक विनयपत्रभी लिखकर उनकोदिया जिसमें यह
लिखाथा कि मुझ दासपर आपका बड़ाअनुग्रहहै कि आपकी
कृपासे मैं प्रहासको मारकर सबप्रकारसे सुखीहोगया अब उस
केमारेजानेका उत्सवकरनेके पीछे मैं यहांसे म्लेच्छोंको भेजूंगा

जो वहांजाकर शत्रुंजय कोभी सेनासहित अस्तकरदेंगे आपभी वहांअपनेकलि और उपासकोंसहित प्रहासकेमारजानेका उत्सवमनाइये निदान वे म्लेच्छ प्रहासका शिर और उक्तविनयपत्र लेकरचलदिये और एकपत्र सैन्धकोभी लिखा कि हेमायाकर्त्ता के पौत्रआपकी कृपासे प्रहास मारागया इससेआप सेनाकाप्रबन्ध किसीबड़ेमायावी म्लेच्छको सौंपकर यहांपधारिये और इस महोत्सवकोआकरदेखियेयहपत्रभी एकम्लेच्छलेकरचला परंतु वे पांचोंम्लेच्छशिरलियेहुए सप्तवर्णाचल और सप्तवर्णीनदीको उत्तीर्णकरके रत्नाकरपर्वतपर पहुंचे अद्भुत अपनी सभामें बैठा था कि येम्लेच्छभी जापहुंचे चित्रांगद वहपात्र सुवर्णका देखकर समझा कि महेन्द्रने मायाकृतदेशके फलभेजे हैं और बोला कि हेपरमेश्वर आपने यह क्यारचा है बतलाइये कि इसपात्र में क्याहै वहबोला कि मैं जानताहूं परंतु हम अपने भेदको बतलातेनहीं हैं तब चित्रांगदने अपने चित्तमेंकहा कि तू जानता हीक्याहै जो बतावेगा इतनेमें उन म्लेच्छों ने पहुंचकर अद्भुत को दंडवत्की और पूजाकरके वहपात्रआदि सब सामनेरखदिये और वह विनयपत्रदिया उससमय चित्रांगदने उनपांचों म्लेच्छों को हारपहिरे और गुलाललगायेहुए देखकर पूछा कि महेन्द्रने क्याभेजाहै वहबोला कि आपके शत्रुकाशिर है प्रहास मारागया यहसुनतेही चित्रांगद खड़ाहोकर नाचनेलगा और बोला कि यहबात तुम सत्य कहतेहो या मुझे प्रसन्न करने को कहतेहो वहबोले कि आप पत्रकोपढ़िये उससे आपको सब विदितहोजायगा तबउसनेउसपत्रकोपढ़ा और अद्भुतका धन्यवाद करके बोला कि हे परमेश्वर तुझको धन्यहै कि तूने ऐसा भविष्यरचा कि मेरामनोरथ पूराहुआ यहकहकर उसनेअपनीपगड़ी को प्रसन्नतापूर्वक उछाला और बोला कि आजके दिनसे बढ़कर कोईदिन श्रेष्ठ न होगा जो आज मैंने यह परम हर्ष करने

वाला संदेशासुना निदान ये सब तो प्रसन्नथे परंतु वैष्णवीसेना के दो बहुरूपिये जो भेष बदलेहुए वहां स्थितथे उसवृत्तांतको सुनकर आंखोंसें आंशू भरलाये और आपसमें कहने लगे कि चलकर महाराज शत्रुंजयसे यहवृत्तांत कहनाचाहिये परंतु फिर आपसमें मंत्रकिया कि प्रहासका शिर इन म्लेच्छोंसे लेतेचलो संक्षेप यहहै कि ये तो अपने उद्योगमें थे और उधर वह पात्र खोलकर प्रहासका शिर चित्रांगदने निकाला और सबकोदिखा कर कहा कि देखो यह वही मनुष्यहै जिसने मेरे पिताको मार कर अग्निपर भूनाथा और मेरा मोहनभोग बनानेके उद्योगमें था और मेरेशिरमें उपानह मारकर मुझसे द्रव्य मांगताथा कि हमारे उपानह शिरपर पड़नेसे तेरे शिरमें बाल नहीं जमते हैं इससे जो द्रव्य तू वर्षभरमें नाईको दियाकरताहै वह मुझ को दियाकर परंतु मुझको बड़ाआश्चर्य यहहै कि इसकापरमेश्वर तोबड़ाप्रबल है और उसनेइसमनुष्यकोवरदियाथा कि जबतक तू अपनी मृत्यु अपने मुखसे तीनबार न माँगेगा तबतक न मरेगा सोनजाने यह कैसेमारागया और मुझको यहभी विश्वा-सहै कि उसका परमेश्वर झूठानहीं है यह कहकर उसने उस शिरको अपने गोदमें रखकर बाईआंख उसकीचीरी और प्रहा-सके बामनेत्रमें जो तिलथा उसको देखनेलगा क्योंकि प्रहास जबकभी अपना भेष बदलकर आताथा तो चित्रांगदको अपने बायें नेत्रका तिल दिखाया करताथा और उससे यह प्रहास को जानलिया करताथा निदान जब अच्छीप्रकारसे देखनेपर भी उसने आंखमें वहतिल नपाया तबतो शिर हिलानेलगा यह देखकर अद्भुत बोला कि अरेक्याहै वहबोला कि अजी क्याकहूं कि क्याहै इस महेन्द्रका सत्यानाशजाय नजाने किसका शिर काटकर भेजदियाहै अद्भुत बोला कि तूक्या बकताहै तूक्याजानै कि प्रहासका शिर नहीं है वह बोला कि आंखका तिल दिखाई

नहीं देताहै तब अद्भुत बोला कि प्रहास हमारा निज पार्षदहै
हमकोभी भासित होताहै कि वह मारानहीं गया यह सुनकर
चित्रांगद बोलाकि तेरा सत्यानाशजाय और तेरी ईश्वरतापर
पत्थरपड़ें तूऐसा प्रारब्ध रचता है कि मैं प्रसन्नहोकर फिर दुखी
होताहूं यहसुनकर अद्भुतने उसका आश्वासनकिया और कहा
कि मैं तेरी प्रसन्नताके लिये अबकी दृढ़प्रारब्ध रचूंगा यह सुन
कर उन म्लेच्छोंको बड़ा आश्चर्यहुआ और चित्रांगदने उनसे
पूछा कि इससमय मायाकृत देशाधिप कहां हैं वहबोले कि आ-
नन्द वाटिकामेंहैं तब उसने कहा कि अब तुम जाकर खबरलो
अबतक वह बाग उजड़गयाहोगा और महेन्द्र माराभी गया
होगा और सब मायाकृत देशमें त्राहित्राहि पड़ीहोगी प्रहासके
शत्रु मारेजायँ उसको कौन मारसकताहै और जोतुमको विश्वा-
स नहोतो तो देखलो यहकहकर उसने गरमपानी मँगाकर उस
शिरकोधोया धोनेसे सबरंग छुटगया और उस थैलीसे निकाले
हुए मनुष्यका स्वरूप प्रकट होगया तब उन म्लेच्छोंको उसे
दिखाकर कहाकि तुमने देखा अबतुम यहां से शीघ्र चलेजाओ
नहींतो तुम्हारे शिर लेकर आनेका वृत्तांत जो महाराज शत्रुं-
जयको विदितहोगा तो वह चढ़आवैगा परमेश्वर पिटेंगे और
तुम्हाराजाना दुर्लभ होजायगा वह एकको जीता नछोड़ैगा यह
सुनकर वेम्लेच्छ शीघ्रतासे मायाकृत देशको चलदिये और वे
बहुरूपिये सबहाल देख सुनकर महाराज शत्रुंजयके पासआये
और सब वृत्तांत कहा उसको सुनकर सब सभासद हँसनेलगे
और महाराज शत्रुंजयने कहा कि प्रहासका रक्षक परमेश्वर है
उसकी कृपा होगी तो प्रहासको विजय प्राप्तहोगी निदान यहां
तो रात्रिके अधिक व्यतीत होने से महाराजने सभाको विसर्जन
किया और सब अपने अपने डेरों में जाकर सोनेलगे और ये
म्लेच्छ आकाश मार्गसे उड़तेहुए बड़ीशीघ्रता पूर्वक महेन्द्रके

पास पहुंचे वह उससमय विचित्रमायाके पास बैठाहुआ उससे हास्य कररहाथा और प्रतिपद मुखको उसके चुंबन करताथा और विचित्रमाया बिगड़ रहीथी कि आप सबके सामने मुझे निर्लज्ज न कियाकीजिये देखिये आप हमारी कंचनी न खोलिये मैंतो पसीनेमें भीगगई वाह आप कुछलाज नहीं करतेहैं अपने कामसेही काम है दूसरेको चाहे कुछहो निदान इसीअवसरमें वहम्लेच्छभी पहुंचे परंतु घबरायेहुएथे और मुखका वरणश्वेत होगयाथा उनके इसस्वरूपको देखकर महेन्द्रने अनुमानकिया कि प्रहास परमेश्वरका मुख्य गणथा उसके मारेजानेके कारण से परमेश्वर अप्रसन्न हुएहोंगे नहींतो इनलोगोंकेहाथ मुझको कुछ प्रसादी अपनी अवश्य भेजते और इनकोभी निहाल कर देते अच्छा पूछौंतौ कि क्याबात है यह अनुमान करके उसने पूछा कि कहो कुशलतो है वहबोले कि क्या कुशलहै लीजिये अपने भेजेहुए शिरको देखिये यह कहकर उन्होंने उसपात्रको खोलकर शिर निकाला और सब वृत्तांत वहांका कहा महेन्द्र उसको सुनतेही विचित्रमायाकी ओर घूरनेलगा और मायावती उसको सुनतेही प्रसन्न होगई और विचित्रमाया बोली कि महा राज आप मुझे क्याघूरते हैं आपने जोआज्ञा मुझेदी वह मैंने किया और जिसको आपका मंत्री पकड़कर लाया उसीका वध मैंनेकिया मैं जानतीहूं कि जिसको विश्वमाली पकड़कर लाया था वह मनुष्य प्रहास नहोगा यहसुनकर विश्वमाली बोला कि मैं मायाकर्ताकी शपथ करके कहताहूं कि मैं बड़ीचौकसीसे उसे लायाथा और मैंने मायाबलसे अच्छीप्रकारसे जान लियाथा जो कुछ अब बलपड़ाहै वह यहीं आनेपर पड़ाहै तब महेन्द्रने विचित्रमायासे कहा कि मेरेशिरपर हाथरखकरतौ कह कि मैंने कोई छल नहीं कियाहै तब विचित्रमायाने महेन्द्रकी सौगन्द खाई और मायारत्न और मायामणिसे कहा कि सत्यतौ बताओ

कि यह क्याहुआहै वहबोली कि हमने जो इसमें कुछछलकि-
याहो तो आप हमारे कान और नाककटवाकर हमको गधेपर
बैठाकर नगरके बाहिर निकालदीजिये यहसुनकर महेन्द्रनेकहा
कि जबतुम प्रहासको लेकरगईथीं तबकहीं मार्ग में ठहरी थीं
वहबोलीं कि महाराज हममार्ग में कहींनहीं ठहरीथीं इनसब
बातों को सुनसुन कर मायावती मन में बहुतप्रसन्नहुई कि
अब इसनिगोड़े महेन्द्रको मालूमहोगा कि प्रहासका पकड़ना
ऐसा होता है निदान महेन्द्र ने मायामणि और मायारत्न से
कहा कि मैं तुमको मारडालूंगा नहीं तो जो कुछहो सत्य सत्य
बताओ कि प्रहास क्या हुआ उन्हों ने विनयकी कि महाराज
हमने उसको कोठरी में बन्द करदियाथा महेन्द्र बोला कि
अच्छा जब कोठरी खोलीगई तब तुमने वहां दो प्रहासपाये
अथवा एकही पाया वहबोली महाराज एक मरेने तो यह आ-
पत्तिबो रक्खीहै जो दो होते तौ तो प्रलयही आजाती यहसुन
कर सब सभासद हँसनेलगे और महेन्द्रसे हाथजोड़कर बोले
कि आप अद्भुत जालकी पुस्तकदेखें तब तो महेन्द्रने अपने
हाथ दोनोंजंघाओंपर देमारे और कहा कि हमारीबुद्धिपर पत्थर
पड़गये हैं जो पहिलेही पुस्तक देखलेते तो परमेश्वरके सन्मुख
लज्जित न होते हां जब विश्वमाली उसको पकड़कर लायाथा
तब मैंने पुस्तकदेखी थी और उससे मुझको विदित हुआ था
कि प्रहासही पकड़ाहुआ आयाथा इसमेंविश्वमालीकाकुछअप-
राधनहींहै मैं इसधोखेमेंरहा कि मेरीभार्यानेतो अपनेहाथसे उस
को माराहै इसमें संदेहकरना क्याहै परंतु अबइसमें कुछ संदेह
नहीं है कि प्रारब्धका लिखाहुआ अमिट है यह कहकर उसने
एक फूल तोडकर बागकी ओर फेंकदिया और कुछ माया की
उससेतुरंतही एकमयूर उड़ताहुआआया महेन्द्रने उसेआज्ञादी
कि अद्भुत जालकी पुस्तकलेआ वह तुरंतही उस पुस्तकको लें-

आया और महेन्द्रने उसे खोलकर जो देखा तो उसमें लिखाथा कि प्रहास जब कोठरीमें बन्दकियागयाथा तब उसपरसे माया कृत वेष्ठन दूर करदिया गयाथा यह निर्बुद्धिता तेरेकार्यकर्त्ताओं कीहै निदान उसने मायाके वेष्ठनसे मुक्तहोकर उसकोठरीमें अपनी थैलीमेंसे एकपुरुषको निकालकर उसकास्वरूप अपनासा बनाकर लिटादिया और आप मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर निकल गया अभी वह विचित्रमायाके नगरहीमेंहै परंतु थोड़े दिनों में चलाजायगा यहदेखकर उसने उसपुस्तकको बन्दकरदिया और पूछा कि अब रात्रि कितनीरहीहै लोगोंनेकहा कि प्रातःकालहोने वालाहै तब उसने आज्ञादी कि सभाअब विसर्जनकीजावे और विचित्रमायासे कहा कि तुम अपने नगरमें जाकर नगरकेचारों ओर मायाकी प्राकार खड़ाकरदो कि प्रहास निकल न जाय मैं थोड़ी देर विश्राम करके आताहूं यह सुनकर सब मान्य म्लेच्छ जो सभासदथे उठ उठकर अपने २ घरगये और विचित्रमाया मायामणि और मायारत्न सहित अपने नगरकीओरचली और महेन्द्रने वहीं विश्रामकिया कि इतनेमें निशापति रूपी राजाने अपनेतारागणरूपीसभासदों को बिदाकरसभाविसर्जनकी और मार्तण्डरूपी महामायावी राजाने अन्धकाररूपी शत्रुकोपकड़ने केलियेरश्मिरूपीआयुधोंसहितआकाशरूपीदेशमेंपयानकिया॥

सो०। होय तेजहत इन्दु अलख भयो रवि तेजमें।
जिमिजलमें जलविन्दु परत न पुनि सो लखिपरत॥

उससमयमहेन्द्र निद्रात्यागकरउठा और जानेकेलिये यान अर्थात् सवारीमांगीपरंतु अभीसवारनहुआथा कि इतनेमेंसैन्ध्र की सवारी आपहुंची क्योंकि इसकेपास महेन्द्रका पत्रगयाथा जिसकावर्णन ऊपरहोचुका है निदानजब वहवहांपहुँचा महेन्द्र ठहरगया और सैन्ध्रको आदरपूर्वक बैठाकर सबवृत्तांत कहसुनाया उसको सुनकर सैन्ध्रबोला कि मैं जाकर प्रहासकोअभी

पकड़ेलाताहूं महेन्द्रबोला कि आपयहीं विश्रामकीजिये आपके कारणसे मैं भी न जाऊंगा यहकहकर उसने कुछमायाकी कि आंधी बड़ेवेगसेउठी संसारमें अंधेराछागया और थोड़ीदेरमें दोमायावीम्लेच्छ आकाशमें उड़तेहुए वहांआये और आकर महेन्द्रको दंडवत्की महेन्द्रनेकहा कि हेलोष्टाङ्गी तुमतो विचित्र मायाके नगरमेंचलेजाओ विचित्रमायाभी वहीं है तुमप्रहासको पकड़कर विचित्रमायाको देदो और हेघनघोप तुमजाकररानी निशाकरीकी सेनाका विध्वंसनकरो यहआज्ञा पाकर दोनों मायावीम्लेच्छ वहांसे चलदिये घनघोषने अपने स्थानपर जाकर दो प्रयोगसिद्धकिये एकतो अंतरिक्ष प्रयोग और दूसरामेघ प्रयोग और जबदोनों प्रयोगसिद्धहोगये तबवह अपनेसाथचाली ससहस्रमायावी म्लेच्छों की सेनालेकर रानीनिशाकरी पर चढ़करचला और उधर लोष्टाङ्गीने अपनेस्थानपर जाकरघ्राण प्रयोगसिद्धकिया जिसका प्रभाव यहथा कि पृथ्वीकी मृत्तिका सूंघनेसे जिसपदार्थ को चाहे जानजाय कि अमुक स्थानपर है निदान वहभीउसप्रयोगको सिद्धकरके मायाकेरचेहुएविमानपर बैठकरविचित्रमायाके नगरकीओर चलदिया उधर विचित्रमाया ने वहांपहुंचकर विश्राम नहींकिया और सहस्रों म्लेच्छों को बुलाकर आज्ञादी कि तुमसबमिलकर प्रहासको ढूंढ़ोवहजीता हुआ इस नगरमें छिपाहै और नगरके द्वारके कपाटबंदकरादो जो कोई उसको पकड़करलावेगा उसको मैं बहुतसा धन और धरतीपारितोषिकदूंगी यहआज्ञा होतेहीसबनगरमें प्रबन्धहोने लगा और म्लेच्छचारोंओर फिरकर प्रहसाको ढूंढ़नेलगे कोई पक्षीबनकर चला और कोई गर्त और कोनोंकी ओर गया घर घरमें ढुंढेरापरगया नगरके सबद्वारोंपरतीन तीन पहरे बैठगये और गलीगली म्लेच्छ फिरनेलगे नगर प्रबंधकने सबस्थानों पर चौकियां नियत करदीं और आप उसका खोजलगानेलगा

और नगरवासी भी इधरसे उधर फिरनेलगे कि देखें प्रहास क्योंकर पकड़ाजाताहै निदान यहांतो यह प्रबंध होरहा है परंतु अब प्रहासका वृत्तांत सुनिये कि वहमरुतदत्त वस्त्रओढ़कर कोठरीसेजबनिकला बागमेंठहरारहा और जब विचित्रमाया आनन्दवाटिकाको उत्सवदेखनेको चलीगई तबवहांकुछएक दासियां रहगईं उससमय रात्रिकातो समयहीथा प्रहासने अवसरपाकर दीपकोंपर कुछमूर्च्छाकर पतंगछोड़दिये उनकेधूमसे सबदासियां मूर्च्छितहोकर सोरहीं और प्रहासने जालमारकर वहांका सब असबाब लूटकर थैलीमें डाललिया और सब दासियोंके वस्त्र और आभूषण उतारकरवहांसेबाहिर निकलआया और अपना स्वरूप म्लेच्छोंकासा बनाकर उसनगरमें फिरनेलगा और एक स्थानपर टूटे फूटे घरपड़ेहुएथे और उनमें एक गर्त भी था उस में वह जाकर बैठरहा और विचारने लगा कि यहां बड़े २ मायावी म्लेच्छ रहतेहैं तू छिप न सकैगा और तू मरुतदत्त वस्त्र ओढ़कर छिपारहा तो बहुरूपधारिणी विद्याकाहोना निष्फलहै क्योंकि यह मरुतदत्त वस्त्र तो इसकामकाहै कि जहांकहीं ऐसा ही दबाव आकरपड़े कि वहांसे निकलनादुर्लभहो तो तहां इस वस्त्रको ओढ़कर निकलआना उचितहै यह विचारकर उसने नगर वासियोंके मकानोंको वहींसे बैठे २ गणितकरके नापलिया और उसीगर्तमें बैठकर सुरंगखोदना आरंभकिया और एकम्लेच्छके घरमें सुरंग जालगाई और उसकामुख जो फोड़ा तो उस घरकी एक कोठरीमें सुरंग फूटी और वहां उसने देखा कि गेहूं आदि अन्नके बोरेचुनेहुएहैं उनकोदेखकरउसनेजाना कि यहकिसी वणिकका स्थानहै और जालसेदोतीन बोरोंको उठाकर सुरंग के मुखपर धरदिया और नीचेसे काटदिया कि उनका अनाज सब सुरंगमें चलागया फिर उसने अनाजको दहिनेबायें हटाकर मार्गकिया और भीतर बैठकर दूसरीओरको सुरंग खोदना आ-

रंभ किया और जो मिट्टी खोदताजाताथा सब थैली में डालता जाताथा यहांसे तो सब नगरवासियोंके घरसमीप २ थे अबकी सुरंग एक हलवाईके घरमें फूटी प्रहासने अपना शिर उसमेंसे निकाला तो देखा कि सुरंग एकदालानमें फूटीहै और घरकेसब मनुष्य सोरहेहैं यह देखकर उसने एककोठरीको बन्दपाया और उसीकीओर सुरंग खोदनेलगा और जब वह सुरंग कोठरी में फूटी तब देखा कि वहां नानाप्रकारकी अन्नकी मिठाइयां बनी हुई थालोंमें धरी हैं और वस्त्र उनपर ढकाहुआहै उसको देखकर प्रहास प्रसन्नहुआ कि अच्छे स्थानपर आये इसकेपीछे उसने उस सुरंगके मुखपर शिलाका खंड लगाकर लीपदिया कि ऊपर से सुरंग लगीहुई नदीखैं में जब आऊं तो शिलाको हटाकर चला आऊं जब यह प्रबन्ध करचुका तब उसने तीसरीओरको सुरंग लगाना प्रारंभ किया और एक कलवार के घर में सुरंग जाफोड़ी उसेतो उसने बन्दकरदिया और उसकलवारके घरकी जो दुकानकी कोठरीथी उसमें सुरंग फोड़ी वहां उसने देखा कि नानाप्रकारकी उत्तम उत्तम मद्योंसे भरेहुए पात्र रक्खेहैं उनको देखकर उसनेयहांभी सुरंगकामुख शिलासेढककर लीपपोतदिया और चाहा कि चौथीओरको सुरंगलगावै परंतु इतनेमें उस कोमनुष्योंकी बोलचालका शब्दसुनाईदिया और उसने समझा कि रात्रि व्यतीतहोगई और सूर्य आकाशरूपी पृथ्वी में सुरंग लगाकर पूर्वदिशाकीओर निकलआया अबछिपरहना उचितहै नहींतो सबहाल प्रकटहोजायगा यहसमझकर वहसुरंगकीराह से उसगर्तमें चलाआया और वहां विश्रामकरके अपनेरात्रिके परिश्रमकी थकावटको उतारनेलगा पहरडेढ़पहर अच्छीप्रकार से सोया औरगर्त्तके मुखपरजालतानदिया कि यदिकोई मुझको पकड़नेआवै तो इसमें फंसजावै परंतु इधर कोईभी नआया और वहजोसोकरउठाथैलीमेंसे जलनिकालकर शौचआदि नित्यकर्म

किया जबक्षुधालगी सुरंगकेमार्गसेहलवाईकी दुकानमें चलागया वहांसे मिठाईली और कलवारकीदुकानसे उत्तममद्यलाकर मद्य पानकिया और भोजनकरके आनन्दपूर्वक बैठानिदानवहांबैठाहु आम्लेच्छोंकी वाणीसुनताथा कोईकहताथा पकड़ियो कोईकहता था लीजियोलीजियो घंटेबजतेथे और लोगचारोंओरकोदौड़ते फिरतेथे निदान यहां तो यहहोतारहा परंतु आगेका वृत्तांतसु-निये कि विचित्रमाया रात्रिकोतो प्रबन्धमेंरही और प्रातःकाल जोदेखातो अपना सबघरलुटाहुआपाया उसकोदेखकर वहमहा क्रोधितहुई और उसने चाहा कि प्रहासको आपढूंढने निकले परंतु उसीसमय उसनेसुना कि लोष्टाङ्गी महाराज महेन्द्रका भेजाहुआआया है यहसुनकर उसनेमायामणि और मायारत्न को उसके लेनेकोभेजा और वहजाकर उ॰ आदरपूर्वक लिवा-लाई उसनेवहां आकर विचित्रमायाको दडवत्‌की और उससे हालपूछा विचित्रमायाने सबवृत्तांतकहसुनाया और बोली कितुम देखो तो कि वहकहांछिपाहुआहै यहसुनकर उसने बागकेबाहिर आकर पृथ्वीसे मट्टीउठाई और सूंघकरकहा कि मुझको ऐसा मालूमहोताहै कि वहपृथ्वीकेभीतर एक गर्तमें बैठाहुआहै अब में उसको पकड़नेजाताहूं यहकहकर वह पृथ्वीसूंघताहुआचला और जब नगरमें पहुंचातो म्लेच्छोंकी भीड़उसकेसाथहोली उसनेसाथआनेसे सबको निषेधकिया और और कहा कि मेरे साथमतचलो नहींतो प्रहासतुमलोगोंका शब्दसुनकर भागजा-यगा यहसुनकर सबलोग ठहरगये और वहअकेलापृथ्वी सूंघ-ताहुआ उसगर्तकेसमीप आपहुंचा जिसमें प्रहास छिपाहुआ बैठाथा इसीअवसरमें प्रहासनेभी देखा कि एकम्लेच्छ चला आताहै जोयहां आजायगातो इसगर्तकाहाल खुलजायगा और फिर बैठनेकाभी ठिकानानरहेगा यह विचारकर वह बाहिरनि-कला और खुलीपृथ्वीपर वस्त्रओढ़करलेटगया और अपना

सबशरीर मृतककासा बनालिया आंखेंनटेरीहुई कनपटीबैठीहुई मुखटेढ़ाकिये शरीरकड़ाकरलिया और मुखमें मूर्च्छाकरचूर्णभर लिया इसके उपरांतलोष्टाङ्गी वहांआया और मृत्तिकाको सूंघकर मायाबलसे उसकोमालूमहुआ कि प्रहासयहांहै वहवहां चारोओर देखनेलगा और एकमनुष्यको वस्त्रओढ़ेहुए लेटाहुआपायादेखतेही दौड़ा और समीपआकर मयाकरनेलगा कि भागनजाय परंतु फिर यहअनुमानकरके कि यहसोरहाहै इससे इसका शरीरस्तब्धपड़ाहै उसकेऊपरका वस्त्रउठालिया औरउस को मृतकरूपदेखकर आश्चर्य करनेलगा औरउसकेपासबैठकर उसेअच्छी प्रकारसे देखनेलगा और जिससमय उसने मुखकी ओरताका उसीसमय प्रहासने अपनेमुखसे मूर्च्छाकर चूर्णफूँका कि वहउसके मुखकंडलपर पड़ा और वहछींकमारकर मूर्च्छित होगया प्रहासनेउठकरतुरंत उसका शिरकाटडाला और कोलाहलमचगया और अंधकार छागया और प्रहास उसकेवस्त्र उतारकर उसीगर्तमें कूदपड़ा और सुरंगमें जाबैठा उसकोलाहलको सुनकर नगरवासी दौड़े और उसम्लेच्छकी लोथको उठाकर विचित्रमायाके पासलेचले वहभी कोलाहलसुनकरचलीथी और बागके द्वारतक नहींपहुँचीथी कि इतनेमें नगरवासी उसलोथको लियेहुएपहुंचे और बोले कि महारानी लोष्टाङ्गीको प्रहासने मारडालाहै यहसुनकर विचित्रमाया शोकसमुद्र में डूब गई और मायाकृत यानपरउसकी लोथको रखवाकर कुछम्लेच्छोंके साथमहेन्द्रके पासभेजदी उससमय महेन्द्रसैन्धसे बात चीतकररहाथा कि इतनेमें येम्लेच्छ लोथलेकर पहुंचे और बोले कि महाराज लोष्टाङ्गी मारागया उसकी लोथहमलाये हैं यहसुनकर महेन्द्रको महानक्रोधने व्याप्तकिया और वहबोलाकि मैंघनघोषकी राहदेखरहाहूं कि वहनिशाकरीकीसेनाकाबधकरके और सबशत्रुओंके शिरकाटकरलेआवै वहआजायतोमें जाऊं

और प्रहासको पकडूं निदान महेन्द्रतो घनघोषकी राहदेखरहा था और वह जब रक्तवाहिनी नदी के पारहोकर इसओरको आया और निशाकरीकी सेनाके निकट पहुंचा तब उसने अनुमान किया कि जो में यहांपर शत्रुसेनाके सन्मुख ठहरूंगा तो बहुरूपिये आकर सतावेंगे और शत्रु भी सब चौकसहोजायंगे इससे उचितहै कि इसीसमय शत्रुओंपर चढ़चलूं और उनके आनन्दको भ्रष्टकरके सबके शिर काटकर महाराज महेन्द्र के पास लौट चलूं॥

चौ०। गहों अचानक शत्रुन जाई। तबनहिं सकिहैं एक पलाई॥
शत्रुन सहजमारि जयलैहों। सहित हर्ष निजपुरको जैहों॥

यह विचार करके उसने अपने सब अधिकारियोंको अपना विचार सुनाया और सब सेना सहित रानी निशाकरीकी सेना की ओर चला यहां सब सेनाकेलोग चपलासे प्रहासके पकड़े जाने का वृत्तांत सुनकर श्रीविष्णु भगवान से प्रार्थना कररहे थे कि अकस्मात् मायाकृत तूरके बजनेका शब्द सुनाई दिया और मायाकृत पक्षी और बहुरूपिये जो बनमें दूतभावसे भेद लेनेको फिररहेथे उस सेनाको अपनी सेनाकीओर आते हुए देखकर भागतेहुए आये और प्रार्थना पूर्वक बोले॥

जयकरी छंद। हेहे निशाकरी शुचिरूप। रहै अखंड तेजको यूप॥
रहैं सदैव शत्रु आधीन। रणमेंपावहु विजय प्रवीन॥
म्लेच्छएकबलवीर सुजान। संगलिये अतिसेनमहान॥
संगरकी इच्छा उर धारि। आवत इतै करनको रारि॥

यह सुनतेही रानीनिशाकरी खड़ीहोगई और युद्धके वाद्य बजनेकी आज्ञादी सब सेनाशीघ्रतासे तयारहोनेलगी कि ऐसा नहो कि शत्रु अचानकमेंआघेरे नगाड़े धड़धड़ाकर बजनेलगे मायावीलोग मायाके रचेहुए वाहनोंपर सवारहुए मान्यम्लेच्छ मायाकृत विमानोंपर चढ़लिये और जो मायाविदनथे वे घोड़े

और रथोंपर नानाप्रकार के आयुध लियेहुए सवारहुए चारों ओर प्रलयकालकासा कोलाहल होनेलगा और क्षणमात्र में सबसेना तयारहोकर निर्याणकरनेलगी एकओरसे पैदलों की अनी अस्त्रशस्त्र धारणकियेहुए निकली ॥

चौ० । वीरसधीर शूरवरबांके । अतिशयप्रबलवीररसछाके ॥
अस्त्रनकरप्रहारदर्शावत । चलेसुरणहितहियहर्षावत ॥

दूसरीओरसे अश्वसादी अपनेघोड़ोंको चमकाते और नचातेहुए अस्त्रशस्त्र धारणकियेहुए निकले ॥

चौ० । चलेअश्वसादीसबयोधा । वीर प्रचंडभरे हिय क्रोधा ॥
वायुवेगवरबाजिनचावत । भल्लत्रिशूल प्रहारदिखावत ॥
रणउत्सुकहियभरेउछाहू । चलेवीरहिय गनत न काहू ॥

तीसरीओरसे मायानिर्मित गजोंकी सेना आकाशमें उड़ती हुईनिकली जिनपर बड़े२मायावी योद्धा नानाप्रकारके वस्त्रधारणकियेहुए बैठेथे ॥

चौ०। मायाकृतवर गजमतवारे । दीरघकायक भीषम कारे ॥
कठिनकरालदंतमुखसोहैं । लखिजिनकोनरभयवशमोहैं ॥
करिकरिकरउन्नतचिंघारत । चलेजात नभमारग धारत ॥

और चौथीओरसे सब मायाविनी म्लेच्छी माया के बनेहुए विमान और अनेकबाहनोंपर बैठीहुई गातियांबांधे मायाके प्रयोगकी सामग्रीलिये परमसुंदर स्वरूपबनाये मायाकृत निम्बुक और नारिकेलआदि अस्त्रोंके प्रयोगको दिखातीहुई रानीनिशाकरीकेविमानको मध्यमेंकियेहुए आकाशमार्गसेचलीं कोई माया बलसे अग्निसे जलप्रकटकरती थी और कोई जल से अग्नि निकालकर दिखातीथी ॥

चौ० । हयहींसनि गजगर्जनिभारी । रथघंटनकी ध्वनि विकरारी ॥
मायाअस्त्रजनित रवघोरा । प्रलयकालसम दुस्सहशोरा ॥
नभमंडलको पूरितकीन्हो । शब्दपरस्पर जातन चीन्हो ॥
वर्षावत बहु अनिल अँगारे । चली सेन बहु आयुध धारे ॥

यह दान जब उक्तप्रकारसे सेना निर्याणकरके चली और दो
के निकलगई तब शत्रुसेनादिखाईपड़ी उसकोदेखतेही घन-
निने पुकारकर कहा कि देखो शूरवीरो इनअधर्मियोंको चारों
ओरसे घेरलो देखो कोई बचकर नजानेपावै और नकहीं त्राण
पावै यहसुनतेही उसकीसेना व्यूहितहोनेलगी और यह समा-
चार विचित्रमायाकी सेनामेंभी पहुंचे यहां सैन्ध अपनीओरसे
दीर्घकाय म्लेच्छको सेनाकाप्रबन्ध सौंपगयाथा वहभी सेनाले-
कर घनघोषकी सहायताको आपहुंचा फिरतो दोनोंसेनाओं में
शंख भेरी तूर्य और नगाड़ेआदि युद्धकेबाजे गहगहे बजनेलगे
उनकाशब्द सबदिशाओं में पूरितहोगया और उसको सुनकर
सबशूरवीर अपने२ अस्त्रशस्त्रोंकोलेकर रणकेलिये सन्नद्धहोगये
उससमय दोनों सेना नानाप्रकारकी ध्वजा और पताकाओं से
विचित्र दीखनेलगीं और कवीश्वर बड़ेऊंचेस्वरसे वीररसकेपद
पढ़कर शूरवीरोंको रणकाउत्साह दिलानेलगे और यशके नित्य
रहने और संसारके नाशमानहोनेकी शिक्षाकरनेलगे॥

क०। वीरसधीरसुनो हमरी जगजन्मलिये कहकौनभलाई।
जोक्षत्री तनपाय यहांयशलीन्हकछून न कीन्हलराई॥
जन्मभयो जाकोजगमेंपुनि सोलहि कालहिजातनसाई।
निश्चय जानि यही हेवीर करो रणकर्मतजो कदराई॥

दो०। मरेस्वर्ग जीयेसुयश असस्संयोग नहिं आन।
ताते तजिके प्राणभय करहुयुद्धसविधान॥

सो०। रणसमान नहिंयज्ञ क्षत्रिहि मुक्तप्रद सुनहु।
हो तुमसब धर्मज्ञ जानि तौन अवरणकरहु॥
शत्रुनवधि यहियाम लेहुसुजय भोगहुमही।
सकलवीर बलधाम रणकर्कस तुम चातुरे॥

इनपदोंको सुनकर सबशूरवीर वीररससे छकितहोकर चुप
चाप चित्रकेसेलिखे होगये रणभूमि सनसनकरनेलगी और
फिर थोड़ीदेरमें सबकेसब गर्जने और धनुषोंको टंकोरनेलगे उस

समय घनघोष अपने मायाकृतनागको रणभूमिमें बढ़ाक
प्रथमतो वह महाअपावन स्वरूपथा और उससमय उस
पनास्वरूप मायाबल से औरभी भयंकर करलियाथा नि
उसने रणभूमिमें आकर मायाकृत अनेकचमत्कार दिखाये अ
फिर रानी निशाकरीकी ओर फिरकर क्रोधपूर्वककहा कि अर
निर्बुद्धिनी कहां तू और कहां महाराज महेन्द्र ॥

दो० । कहांसिंह कहँ नीचमृग कहँ तलाव कहँ सिन्धु ।
उनकी सरवरिजनिकरहु नहिं मरिहोसहबन्धु ॥

तू महाराजकी कहांतक बराबरीकरैगी और उनके सेनापति-
योंमें से किसकिसका बधकरैगी इनथोड़े से विमुखमनुष्यों पर
घमंड मतकरै जो तेरे पास इकट्ठेहुए हैं तुझको उचितहै कि
अपने हितू और सम्बन्धियों से मंत्रकरके मेरी शरणमें आकर
मेरेचरणोंमें गिर ॥

दो० । धन सेना अरु अस्त्रको तजिके सकल घमंड ।
आयशरण मोरी गहहु करहु सुराज अखंड ॥

यदि तू मेरीशिक्षा मानैगी तो मैं तेरा अपराध महाराज से
क्षमाकरादूंगा और जो मेराकहा नमाना तो तुमसबको उचित
दंडदूंगा तेरासहायक प्रहास अब मायाकृतदेशमें कैदहै इससे
तूभी सद्मार्गको अंगीकारकरके अपनेप्राणबचा अरी विचार
तो कि मायाकृत देशाधिपको परमेश्वर मायाकर्त्ता ने कैसी
सामर्थ्यदी है ॥

दो० । निजमायासों रचिसकत जलथलनभनरअन्य ।
ताकी सरवरि को करै ताहि सदा है धन्य ॥

देख श्रीमहाराजका यह परमअनुग्रहहै कि तुझसी अपरा-
धिनीको इससमयतक जीतारक्खाहै इससे हेअपमानकरनेवाली
तुझको यहकरना कब उचितहै जैसा कि ॥

सो० । करिबिडालसोंवैर मूशतासुवध चहतभो ।
नाखतचखमें पैर प्राणगंवाये आपने ॥

यह सुनकर रानी निशाकरीने अपनी जिह्वारूपी खड्गसे उस के वाक्यरूपी शत्रुको काटकर उसका तिरस्कार करके कहा कि अरे निर्लज्ज ॥

सो०। प्रबलशत्रुको पाय हम न करत भय नेकहू।
करिरणमें व्यवसाय तासु बधन हित प्रण करत ॥

घनघोषने यहवचन सुनकर एक नारिकेल अस्त्रमाया कर-के छोड़ा और वह महाउग्र धूम छोड़ता हुआ रानी निशाकरी की ओर चला और समीपथा कि वह अस्त्रभटकर कोई नवीन उग्र आपत्ति प्रकट करता कि इतनेमें रानीनिशाकरीने कुछ मा-याकी कि उससे एक हस्त प्रकट हुआ और वह उस अस्त्रको पकड़कर अंतर्द्धान होगया यह देखकर घनघोष महा क्रोधित होकर मायाकृत खड्ग लेकर दौड़ा परंतु आनन्दाने अपना मयूर रणभूमिमेंबढ़ाया और बोली कि हे घनघोष तुमको उचित है कि हम सब अनाथोंकी रक्षा करो और शूरताभी यहीहै कि असहायकी सहायताकरें इससे तुम आकर हमसबसे मिलजा और ऐसे अन्यायी और दुष्ट राजाकी आधीनताको छोड़दो क्योंकि ऐसे राजाके यहां रहना बुद्धिके विपरीतहै यह महेन्द्र बड़ा अन्यायी और दुष्टहै देखो हमने कैसी कैसी उसकी सेवा की परंतु अंतमें हमको क्या मिला जो अब तुमको मिलजाय-गा इससे श्रेष्ठयहीहै कि हम सब मित्रोंके साथ रहकर आनन्द करो उस महेन्द्रके यहांतो तुमसे बहुतसे युद्ध करनेवालेहैं हां हम निश्चय असहायहैं इससे तुमको उचितहै कि ॥

चौ०। शूरनिकीयहरीति सुहाई। रक्षत सदा अनाथहि जाई ॥

यह सुनकर घनघोष बोला कि मैं तेरी समान अधर्मी नहीं हूं कि अपने धर्मको छोड़कर अपनेस्वामीके विमुख होजाऊं यह सुनकर आनन्दाबोली कि अच्छा अबचौकस होजा और यह कहकर उसने एक खड्ग मायाकृत उसके मारा परंतु उसम्ले-

च्छने अपना शरीर अष्टधातका बनालिया इससे वह खड्ग उचटगया तब आनन्दाने दूसराप्रहारकिया परंतु वहभी व्यर्थ गया तब घनघोषने एक नारिकेल अस्त्र मायाकरके छोड़ा और उससे सहस्रों तीर निकलकर निशाकरीकी सेनाके योद्धाओंके शिरमें प्रवेश करके पैरोंकी ओरसे निकल गये और उससे सहस्रों म्लेच्छ मारेगये यह देखकर आनन्दा फूल लेकर बढ़ी परंतु उसको आतेहुये देखकर घनघोषने विचारकिया कि अब यह वसंतऋतुको प्रकट करके सबको मोह लेगी और सबका नाश करदेगी इससे उचितहै कि मैंभी मायाकर्त्ताकृत पदार्थोंसे काम लूं यहविचारकर उसने एकचक्र निकालकर मारा और वह आनन्दाके गलेमें पड़कर कस गया और वह मूर्च्छित होगई तब उसने आनन्दाको तो पकड़लिया और उस चक्रको लेकर आगे बढ़ा तब रानीनिशाकरीने उसे ललकारा कि अरे नपुंसक कहां आताहै उसने वह चक्रमारा और रानीनिशाकरी की भी गति आनन्दाकीसी होगई उस समय उसने उन दोनों प्रयोगोंको किया जो घरपर सिद्धकियेथे अर्थात् अंतरिक्ष प्रयोग और मेघ प्रयोग उनके करतेही महा धूमउठा और रानी निशाकरीकी सेना के ऊपर आकाशमंडलकी समान छागया और उसकेनीचे २ बादल प्रकटहोकर जलवर्षानेलगे जिसके शरीरपर उसजलकी बूंदपड़ती थी बाणकाकाम करती थी जो जो उनमें बड़ेमायावी थे वे मायाकृत छत्रबनाकर उसजलको रोकतेथे चारोओर कोलाहल मचगयाथा उससमय संडीनचपलाने अपने पुत्रसे कहा कि हेरंतिकाल इसवर्षामें हम और तुमही नहींहै अर्थात् न विद्युच्छटाहै नगर्जनाहै चलो हम तुम भी अपना कामकरें यहसुनतेही रंतिकाल पृथ्वी में प्रवेशकर गया और संडीनचपला चपलारूपहोकर आकाशमें चलीगई और उनबादलोंमें जाकर चमकनेलगी उसकोदेखकर घनघोष

ने अनुमानकिया कि जहां जलबर्षता है वहां बिजली अवश्य चमकतीहै इससे यह चपला जो चमकरहीहै सो मेरे सिद्धकिये हुए प्रयोगहीका अंगहै इसविचारसे वहतो चुपरहा और वह और सब उसके साथी उसचपलाकी चमकको देखरहे थे कि अकस्मात् रंतिकाल पृथ्वी से निकला और ऐसे अट्टहास के साथ गर्जा कि बहुतसे म्लेच्छोंके तो शिरफटगये परंतु घन-घोषका शिर उसके प्रबलमायावी होनेके कारणसे नहीं फटा परंतु वह मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा और ऊपरसे जो संडीनचप-ला चमककर गिरी तो उसके शरीरको दोखंडकरके पृथ्वी में उतरगई उससमय प्रलयकालकासा कोलाहल मचगया और वह धूमका आकाश फटकर घनघोष और विचित्रमाया की सेनापरपड़ा उससे दबकर सहस्रोंम्लेच्छ मरगये और रानी विचित्रमाया और आनन्दा छुटगईं और रानी निशाकरी की सेना पिलपड़ी फिरतो यहदशाहुई ॥

चौ०। गर्जिगर्जिके अस्त्रप्रहारैं। डाटिडाटि के शत्रुनिमारैं ॥
हाहाकारमचोचहुंओरा। माचोकठिनयुद्धअतिघोरा ॥

रंतिकाल बारबार पृथ्वी में प्रवेशकरके निकलताथा और शत्रुओं को अपने अट्टहाससे मूर्च्छितकरताथा और संडीन-चपला उनपर गिरगिरकर उनकेशरीरोंको भस्मकरतीथी उसस-मय ऐसाजानपडताथा किमानो पर्वतफटतेहैं और पृथ्वीकांपती है संडीनचपला ८०हाथके बीचमें बारंबार आड़ी और तिरछी होहोकर गिरतीथी और एकबारके गिरने में दोदोसौम्लेच्छों को भस्मकरती थी इसप्रकारसे क्षणमात्र में चालीस पचास सहस्रम्लेच्छोंको भस्मकरदिया अंतमें विचित्रमायाकी सेनामें युद्धनिवृत्तकरने के वाद्यबजवायेगये बहुतसे म्लेच्छ भागगये और बहुतसे पकड़ेगये और बहुतों ने वैष्णवीमार्ग स्वीकार किया और रानीनिशाकरी जयदुंदुभी बजवाकर उक्तप्रकार से

सबका बधकरके लौटआई और अपनी सभामें आकर सब सभासदों सहित आनन्दमनानेलगी और सबसेनानेभी कमर खोलकर विश्रामकिया और घनघोषकी सेनाभागकर नदी के पारगई उससमय महेन्द्र सैन्धसे यहवार्तालाप कररहाथा कि मैं आजतक बहुतक्षमा करतारहा कि येलोग किसीप्रकार से सीधे मार्गपरआजायँ नहींतो मेरे क्रोधकरनेपर कोई रक्षकन मिलेगा परंतु उन्होंने नहींमाना अबदेखो घनघोष सबके शिर काटकर लाताहोगा निदान यहबात होनेनपाईथी कि घनघोष की सेनाके म्लेच्छोंने वहां जाकर कोलाहल किया उसको सुन कर सेवक दौड़े और उन्हें महेन्द्रकेसन्मुख लेआये तब उन्हों-ने सब वृत्तांत घनघोषके मारेजाने और सेनाके पराजय होने का वर्णन किया उसको सुनकर महेन्द्र शोकसमुद्रमें डूबगया और सर्पकी समान श्वास लेकर बोला॥

दो०। हाय उपाय न कछु चलत भयोवाम प्रारब्ध।
नित नूतन दुखहोतहै भई बुद्धि अस्तब्ध॥

और उन सबसे पूछा कि घनघोषको किसने माराहै वह बोले कि सर्डीनचपलाने उसका बध कियाहै परंतु यहभी सब कहते जातेथे कि इस दुष्ट महेन्द्रने घनघोषको भेजकर बध करायाहै यहसुनकर सब सभासद मुखमोड़ मोड़कर हँसनेलगे परंतु सीत प्रेरकमंत्रीने उससमय कहा कि अरे दुर्बुद्धियो सब तो यह कहतेहीथे परंतु तुमतो अपने मुखसे मत कहो संसार का यहचलनहै कि राजा और उसके अधिकारियोंको बुराभला कहा करतेहैं और दुर्बचनभी कहतेहैं परंतु कोई राजाके साम-नेभी ऐसा कहताहै यह सुनकर महेन्द्र बोला कि अबजो मैं इन को दंड देताहूं तो लोग यही कहेंगे कि रानी निशाकरीसे तो कुछ बस नहीं चला अब अपने सेवकोंका बध करतेहैं इससे जबतक इन शत्रुओंका बध नहीं होताहै तबतक मैं चुपहूं जो

कुछ कोई कहैगा सुन लूंगा चन्द्रमापर धूल डालनेसे चन्द्रमा मैला न होगा जैसाहै वैसाहीरहैगा इससे उनकेकहनेसे मैं ज्यों कात्यों रहूंगा यह कहकर उसने कुछ मायाकी कि उससे एक पुतला उत्पन्नहुआ महेन्द्रने उसे आज्ञादीकि तू जाकर समीर-रूपा वहुरूपिणीको जहांहोयपकड़ला यह आज्ञापातेही वह पुत-ला आकाश मार्गसे उड़ता हुआ चला उससमय समीररूपा विचित्रमायाकी सेनामें अपने डेरेमें बैठीथी और प्राता कहती थी कि यह निगोड़ा प्रहास बड़ा कठिनहै जबसे आयाहै सब मायाकृत देशमें उपद्रव मचायाहै अब विचित्रमायाके नगर में है परंतु किसीके हाथ नहीं आताहै यहसुनकर समीररूपा बोली कि हां बहिन तेराचित्त जानता होगा जैसा प्रहासहै परंतु उस-का चेला उपहास कैसा उग्रहै जिसने तेरे चित्तको घायलकिया है यह सुनकर प्राता खिसियानी होकर बोली कि जो आपको बुरालगताहै तो मैं अब प्रहासका नामभी न लूंगी निदान ये बातें होहीरहींथीं कि इतनेमें वह पुतला आकर समीररूपाको उठाकर लेचला यह देखकर समीररूपाने अनुमान किया कि संडीनचपलाने जो घनघोषको माराहै तो निशाकरीने मायाबल से मुझे इस प्रयोजनसे पकड़वायाहै कि मैं जाकर कुछ छल न करूं यह अनुमान करके बकनेलगी कि हम तो बहुरूपिणी हैं हम माया जाननेवाले म्लेच्छोंसे युद्ध नहीं करती हैं परंतु उस पुतलेने कुछ न सुना और रक्तवाहिनी नदीकी ओर लेकरचला उससमय वह समझी कि महेन्द्रने मुझे बुलवायाहै यही कहैगा कि घनघोष मारागया और तुझसे कुछ न होसका सो कहनेदो मेरेभी जो चित्तमें आवैगा सो कहूंगी निदान वह इसी विचार में थी कि उस पुतलेने उसे लेजाकर महेन्द्रके सन्मुख जाखड़ा किया उसने दंडवत्की और हाथ जोड़कर सन्मुख खड़ी होगई उससमय महेन्द्र बोला कि हे समीररूपा तैंने कईवार हम से

कहा कि मैं प्रहासको पकड़लाऊंगी परंतु आज तक पकड़ नसकी यह सुनकर वह बोली कि महाराज यह दासी आप की तो उसे कईबार पकड़ पकड़लाई परंतु उसकी मृत्यु नथी इससे छूट छूट गया तब महेन्द्र बोला कि अच्छा अब जाकर रंतिकाल और संडीन चपलाको पकड़ला और दोनोंको विचित्रमायाके पास पहुंचादे यह सुनकर समीररूपा महेन्द्रको दंडवत् करके चलदी और उधर महेन्द्रने विचित्रमायाको एक पत्र लिखा कि तुम घबराओ मत मैं प्रहासके पकड़नेको एक बड़े मायावीको भेजताहूं और आपभी आताहूं परंतु समीररूपा जो रंतिकाल और संडीनचपलाको पकड़करलावे तो तुम दोनोंके शिर तुरंतही काटडालना इसपत्रको एकपुतला लेकर विचित्रमायाके पास गया और दूसरा पुतला समीररूपाको उठा कर फिर उसके डेरेमें पहुंचागया प्राता उसके जानेके पीछे बड़ी चिंतामेंथी जब वह फिर वहां आगई तब उसने पूछा कि कहो राजपुत्री आप कहांगईथीं यह सुनकर समीररूपाने सबवृत्तांत कहा और बोलीकि चलो रंतिकाल और संडीनचपलाकोपकड़ लावैं यह कहकर उनदोनोंने अपने २ सामने दर्पणरखके अपने स्वरूपोंको बदला एकतो वे दोनों योंहीं परमसुंदरी स्त्रियांथीं अब उन्होंने जो अपना स्वरूप बनाया तो दोनों मोहनीरूप बारह बारह वर्षकीसी लड़कियां दीखनेलगीं और ऐसी छबिउनकी थी कि उनके मुखमंडलके आगे पूर्णचंद्रमा भी लज्जित होता था और उनके कपोल और भालकी द्युतिके आगे सूर्यकी भी प्रभासमताको न पातीथी रूपउनका बड़ाही मनोहर और छबीलाथा॥

क०। जासुकी दीपति दपिते सौगुनी दामिनि कुन्दन केसरि आइका।
कामकी खानि सदा मृदुबानी सनेहछकी क्षितिमें छबि छाइका॥
अंग अनूपम को बरणों सब अंगन पीतम को सुख दाइका।

मानों रची छवि मूरति मोहनी श्री पर ऐसी बखानत नाइका ॥

इस प्रकारसे अपने स्वरूपको सुंदर और छवियुक्त बनाकर दोनों ठहरीरहीं कि रात्रिकोचलकर अपनाकाम बनावें यहांतक कि सूर्यअस्ताचल पर जाकर छिपरहा और रात्रिने संसारको अंधकाररूपी वस्त्रसे ढकदिया ॥

सो० । अस्त भये जब सूर मिटी प्रभा आकाशते ।
अंधकार गयो पूर क्षितिमंडल सर्वत्र में ॥

उससमय दोनों अपनेडेरोंसे चुपके निकलकर चलदीं और रानीनिशाकरीकी सेनामेंपहुंचीं उनको जिसनेदेखा वही मोहित होगया और रसकेपद पढ़नेलगा युवावस्थाके लोग उनको अपने प्रेमके वाक्य सुनानेलगे कोई कहताथा कि मैंतो इसीचन्द्रमाका चकोरहूं दूसरा बोलताथा किमैं इसीफूलका भ्रमरहूं ॥

दो० । छुटे छुटावन जगततें सटकारे सुकुमार ।
मन बांधत बेनी बँधे नील छबीले बार ॥
बेधक अनियारे नयन बेधत करन निषेध ।
बरबट बेधत मोहियो तो नासाको बेध ॥

कोई अधीरहोकर उनकेपीछे लगलेता और कहताथा कि हे प्राणप्यारी हमारी ओरभी तो चितयदे कितेरे नयनोंकेकटाक्षसे बिंधेहुए चित्तको धीर्यआवै और तेरेभक्तके प्राणबचें ॥

बरवा॥हेमनभामिनिममनमोहनहार।भक्तजानिचितबहुममदिशिइकबार।
फेरि लईकिमि डिठितुम हे सुकुमार। नैनबाणतव दीन्हों हीयो फार ॥

किसीने उनकी चंचलता और चपलताको देखकर चित्तसे आशीर्वाद दियाकि ॥

दो० । दैव करै बीते तुमहिं बर्ष चौदहों शांत ।
कला इन्दु की घटति है चौदह दिन उपरांत ॥

निदानउससेनामें जिसओरको वहजातीथीं उसीओरसेलोग उनके साथहोतेथे इसप्रकारसे वहदोनों सेनाको नांघकर रानी निशाकरी की सभाके द्वारपरपहुंचीं और द्वारपालकोंसे कहाकि

तुम जाकर रानीनिशाकरीसे कहदो किदो लड़कियां आईहैं द्वा-
रपालक बोलेकि तुम कहांसे आईहो वह बोलीं किहम कुछ से-
नासाथ लेकर तो आईहीनहींहैं जो तुम पूछापाछी करतेहो तुम
जाकर महारानीसे हमारी खबरदो जहांसे हमआईहैं आपही
प्रकट होजायगा यह सुनकर वे चुपहोरहे और उनमेंसे एकने
जाकर महारानी निशाकरी से विनय की कि श्री महारानी
जी द्वारपर दो लड़कियां उपस्थितहैं और आपसे मिलने की
इच्छारखतीहैं यह सुनतेही निशाकरीने कहा कि अच्छा यहां
लिवालाओ सेवक दौड़े और दोनों को सभामें लिवालाये वहां
आकर उनदोनोंने रानीनिशाकरी को दंडवत्की उनको जिसने
देखा वही उनके सुंदर स्वरूपपर मोहित होगया और आनन्दा
और केसरी और रक्तकेशी आदिने कहाकि हाय देखोतो अ-
भीतो बहुतही छोटी उमरकीहैं हाय इननिगोड़ियोंपे क्याआफत
पड़ी जोघरसे निकलकर आईहैं एकम्लेच्छी बोलीकि भैना
इनका रूपतो देखो कैसा भोलाभालाहै किसीबड़े मनुष्यकी बे-
टाहैं दूसरीने कहा भैनाअभी अल्हड़हैं कुछ सहूरनहींहै देखो
बालयोंहीं मौंपरपड़ेहैं निदान सबकोई अपनी२ कहतीथी और
उनके स्वरूप पर सबमोहित थीं सत्यतो यहहै कि उन्होंने रूपही
अपना ऐसा बनायाथा कि कुरतियां बाहोंतक पहिरे गलेमें हार
डाले और नाकमें एकएक मुक्तापड़ीहुई नथें पहिरेथीं परंतु उन
का स्वरूप ऐसासुंदर बनाथा कि संसारकी छवि शोभा उनके
सामने मलीनदीखती थीं जो देखता था मोहित होजाताथा वर्ण-
न उसकी सुंदरता का क्या किया जाय॥

दो०। अंग अनंग न जगमगति दीप सिखासी देह।
दिया बढ़ाये हूरहै बड़ो उजारोगेह १॥
चुनरी श्याम सतार नभ मुखशशिकी उनहारि।
नेहदबावत नींद लों निरखि निशासी नारि २॥

उनको देखकर रानीनिशाकरी ने बड़े प्रेमसे उनको बैठनेको आसन अपने सिंहासनके समीपदिये और उनका हाल पूछा वे दोनों तब रोनेलगीं और मुक्तारूप आंशू उनके सीपरूपी नेत्रों से बह बहकर उनके कपोलों पर गिरनेलगे निदान अच्छी प्रकारसे धारमधार रोईं उनके रोनेसे रानीनिशाकरी को बड़ी करुणाआई और उसने उन्हें पासबुलाकर उनके आंशूपोंछे और फिर उनको धीर्य देकर बैठाया तब उन्होंने कहाकि हम दोनों शंखज म्लेच्छकी पुत्रीहैं बाप और मा दोनों हमारेमरगये हैं हमहीं अकेली रहगई हैं रोटी देनेवालातौ कैसा हमपर कोई हाथरखनेवाला भी नहींहै इधर उधर फिरकर सबका कामकाज करके पेटभरलेतीहैं और पड़रहती हैं परंतु निगोड़ा पीलाचर्म हमारा ऐसाहै कि जो देखताहै वहीहमारे धर्मको बिगाड़नेकी इच्छाकरताहै जितने मनुष्यहैं सब हमको ताकते झांकतेहैं और बोलियां बोलतेहैं हमको अनाथजानकर जिसकी जो इच्छाहोतीहै सो कहलेताहै इससे हम आपकेपासआईहैं किहमको आप अपनी टहलनियोंमें रखलीजिये और संडीनचपला और रंतिकालकीचेली करादीजिये कि हमको उनकी माया का प्रयोग रुचताहै हम उनकेघरकी टहल करेंगी और उनसे मायासीखेंगी जो आपके कहनेसे वे हमको अपनी सेवामें रखलेंगी तौ आपका बड़ा अनुग्रहहोगा यहसुनकर रानीनिशाकरीने संडीन चपला और रंतिकाल की ओर देखा और रंतिकाल अपना नाम उनके मुखसे सुनकर उनकी ओर देखनेलगा और देखा कि दोनों परमसुंदरी बड़ी छबीली थोड़ी बयकीहैं कुचोंका उभारअभी प्रारंभहुआहै हाथोंमें मेंहदीरचीहै पोरपोरमें छल्ले पहिरेहैं पैरोंमें नूपुर धारणकियेहैं ग्रीवामेंहारपड़ाहै कानोंमें बाले पड़ेहुएहैं कि बातेंकरनेमें दोनों द्युतिमान् कपोलोंको हिल हिल कर स्पर्शकरतेहुए परम शोभादेते हैं ॥

सवैया। वह कंचन बेलिसी बालकी देहकी दीपतिको बरनै कबिहै।
अरुताहि मिली द्युति कंचुकी कीसो अनूपम ओपरही फबिहै॥
कछुजात कही नहिं अंगप्रभा अरुचीर मिले जो भई छबिहै।
वह आंगी गई दबि अंगकी ओपमें आंगीमें अंगकहा दबिहै॥

निदान देखतेही रंतिकालकाचित्त हाथसेजातारहा और वह विनय पूर्बक बोला कि हे रानीनिशाकरी मैं अपनेतनमनसे इन को माया सिखाऊंगा और संडीनचपलाने कहाकि आपदेखेंगी कि मैं इनको ऐसा करदूंगी कि दशपांचही दिनमें महेन्द्र का सामना करनेलगेंगी और इसमायाकृत देशमें जोचपलाहैं उन-का सामना येही करेंगी और मेरे दाहिने और बायें ओर रहकर चमका करेंगी और आपकी सेनामें मुझ सहित तीन चपला होजायगीं यह सुनकर निशाकरीने कहाकि अच्छा इनको अपने डेरेमें लेजाओ इसका सब ब्यय हमारेकोषसे मिलैगा और दे-खो माया सिखानेमें इनको मारपीट मतकरना यह समझलो कि दोनों बे मा बापकी बेटीहैं वहबोली कि मैं इनको अपनी बेटियां समझूंगी और जब आपही बीचमें पड़तीहैं तब इनको कोई दुखनहोनेपावैगाओरइनकोमायाऐसीबिधिसेसिखाईजायगीकि-

दो०। जिमि पारस के परसते धातु कुधातु सुहाइ।
तिमिप्रबीण करिहौं इनहिं मायासकल सिखाइ॥

निदान रंतिकाल और संडीनचपला उनदोनोंकोलेकर अप-ने डेरेमेंआये और रानीनिशाकरीने भी सभाका विसर्जन किया रात्रिका समयथा सब सभासद अपने २ डेरोंमें गये संडीनच-पलाने रत्नजटित शय्या उनदोनोंके लिये बिछवाकर कहाकि आज भोजनकरो मद्यपीवो और विश्रामकरो कलमैं तुम्हारे लिये दासी और दास नियत करादूंगी यह सुनकर वेदोनों श-य्यापर जाकर बैठगईं और रंतिकाल भी उनके पास जाबैठा और उनके स्वरूपकी सुंदरताको देखनेलगा उस समय संडीन

चपलाने कहा कि बेटातू इनको कैसी कुदृष्टिसे देखता है तेरा बश नहीं है नहींतो तूइनको दृष्टिही दृष्टिमें पीजाना चाहता है वह बोलाकि मातातू मेरी माँ तुझसे मेरा क्या छिपाव है मेरा चित्त इनपर मोहित होगया है और यह कहकर उसने अपने हाथ संडीनचपला के गलेमें डाल दिये और बोला कि मेरीअम्मा मैंतेरे पैरछूताहूं अपनाशिर नवाताहूं तब संडीनने त्योरी चढ़ाकर कहाकि अरे लड़केतू क्या बकताहै तेरी बुद्धि कहांहै मुझे तेरी ये बातें अच्छीनहीं लगतीहैं ऐसी बातेंतू और किसीसे जाकर कहलो और देखो न छुटाईरही न बड़ाई वाहरे तूतो अच्छा चलनिकलाहै अबतो मुझसेभी लाजनहीं रक्खी मरे निलज्ज तुझे कहतेहुए भी लाज न आई संसारमें कहावत है कि जिनजायेउन्हेंलजायेसो वहीतैंनेकिया अभीकलकी बात है कि लंगोटीलगाये फिरताथाआज ऐसाहोगया कि वेश्यागामी भीहोगयाचलयहांसेदूरहो निकलजाक्यातू मुझेरानीनिशाकी के सामने नीचादिखावैगा इसप्रकारसे क्रोधकरने पर रंतिकाल अपनी माताके पैरोंपर गिरपड़ा और बोला कि मेरी अम्मा तू इसबातमें मतबोलै मैंजानूं औरये जानेंअंतमें वह माताहीउस कीथी उसके रोनेपर दया आगई और चुप होरही परंतु आप उन लड़कियोंके पास इस प्रयोजनसे आबैठी कि ऐसा नहो कि रंतिकाल लड़कियोंको सतावै और ये अप्रसन्न होजावें और उधर समीररूपा रंतिकालकी अधीर्यताको देखकर घबराई कि ऐसा नहोकि यह हमारे ऊपर हाथचलावै तो हम इसका कुछ न करसकेंगी यह विचारकर उ अपने पाससे एक अंडानिकाला और कहा कि हम मायातो नहीं जानतीहैं परंतु हमको एक स्थानपर यह अंडा पड़ाहुआमिला जिसको दिखाया उस ने यही कहा कि तुम्हारे बड़ेप्रारब्धहैं जोतुमको यहअंडामिला यह अंडा मायाकर्ताके स्येनकाहै इसमें प्रकार प्रकारकी सुगंध

आतीहैं यह सुनकर रंतिकाल बोलाकि लाओ मैंतोदेखूं समी-रूपानेउसको वह अंडा देदिया तबरंतिकाल बोला कितुमभी अंडा देनेलगीं लड़कियां बोलीं कि तुमतौ ठट्ठा करतेहो तब संडीलचपला बोलीकि बेटा तैंने इनसे क्याकहा उसने माकोतो कुछ उत्तरनहीं दिया और आप हंसीकेमारे लोटनेलगा और उस अंडेको आपभी सूंघा और अपनी मांकी नाकसेभी लगा लगादिया उस अंडे में बड़ाउग्र मूर्च्छाकर चूर्णथा इससे दोनों सूंघतेही मूर्च्छित होगये और रंतिकालने अपने आशक्त होने केकारणसे एकांततौ करहीरक्खा था इससे कोई सेवकभी वहां न था समीररूपा और प्राताने उन दोनोंको पृष्ठभारों में बांधा और पीठपर लादेहुए वाहिर निकलीं परंतु जिस समयये रानी निशाकरी की सभामें आई थीं उस समय बहुरूपिये बनमेंथे और जब फिरकर आये तब उन्होंने सुना कि दो लड़कियां आ-ईहैंसो रंतिकाल और संडीनचपलाकेडेरेमें हैं यहसुनकर चपला ने उपदेशीसे कहा कि चलकर उन लड़कियों को देखनाचाहिये और यहकहकर दोनों रंतिकालके डेरे में आये परंतुउस समय वे दोनों जाचुकीथीं इससे डेरेको खालीपाकर दोनों ने अनुमान कियाकि निस्संदेह येलड़कियां बहुरूपिणीथीं घनघोषकाबधकर-नेके कारणसे इन दोनों को बांधकर लेगई हैं यह अनुमानकरके दोनोंजनेबनकीओर दौड़े और उधरबहुरूपिणीभी उठतीबैठती कभीकुत्तेकी और कभी बिल्लीकी चाल चलतीहुई उनदोनोंको लियेहुये बनमेंपहुंची इधरबहुरूपिये भी जापहुंचे और उन्होंने पुकार कर कहा कि भला कहां जाओगी हमभी आ पहुंचे हैं यह सुनकर दोनों बहुरूपिणी भयसे बड़े बेगसे भागीं और एक ऐसे स्थानपर पहुंचीं जहां कौड़ियाला फूल रहाथा और हरी हरी दूबलहलहा रहीथी तालाब सब निर्मल जलसे भरेथे और बायु शीतल चल रहीथी चांदनी छिटक रहीथी उस बन में

उपहासथा बहुरूपियोंकी बोलीको सुनकर दौड़ा और उधर से तीव्रा बहुरूपिणी समीररूपाकी सहायताको आईथी और एक स्थानपर छिपीबैठीथी चपला और उपदेशी जो दौड़े हुए आ-तेथे दोनों उसकी फेंकीहुई पाशमें उलझ कर गिरे उपदेशीकी तो ग्रीवा बंधगई परंतु चपला उछलकर उसकी पाशके कुंडल से निकलगया तब तीव्राने उपदेशीको मूर्च्छाकर चूर्णसे मूर्च्छित करके बांधलिया और चपलाने उपदेशी के पकड़े जानेका कुछ ध्यान न किया और समीररूपाके पीछे दौड़ा चलागया और उस हरे भरे बनमें पहुंचा और पुकार कर बोला कि वाहजी गुरानीजी तुमने तो बड़ाहीअच्छाछल किया परंतु मैंभी अपने प्राणबेचकरआयाहूंअबकहाँ जानेदेताहूं यहसुनकरसमीररूपाने पलटकर उत्तरदिया कि अरे तेरेगुरूनेभी कभी रोकाथा जो तूरो-केगा यहकहकर समीररूपा और प्राता दोनों भुजाली लेलेकर चपलापरआ पड़ीं उससमय चपलाभी चपलाकी भांतिचमक-ताथा एक चोट समीररूपापर और दूसरी प्रातापर लगाताथा कभी उनके प्रहारको रोकताथा और औसर पाकर अपना प्र-हार करताथा निदान भुजालियोंकी झंझनाहट होनेलगी और दोनों ओरसे मूर्च्छांड चलनेलगे उससमयतीव्राभी उपदेशीको पृष्ठभारमें बांधे आ पहुंची और उसनेभी चपलाको घेरा उस समय चपला मण्डल बांधकर लड़ने लगा समीररूपाने उसके मूर्च्छांड मारा उसने उछल कर उसको व्यर्थकिया परंतु जैसेही पृथ्वीपर उतरा तैसेही प्राताने मूर्च्छाकर चूर्ण फेंका चपला ने लोटलगाकर उसकोभी व्यर्थकिया और संभलने न पायाथा कि तीव्राने दौड़कर भुजालीलगाई परंतु तिसपरभी चपला छलांग मारकर दूर जापड़ा और वहांसे फिर संभलकर दौड़ा और इनतीनोंको रोका किसीपर पाश फेंकी किसीपर भुजालीचलाई और किसीको झकझोर डाला निदान उनके उस अपूर्व युद्धसे

महान् शब्द प्रकटहुआ और उसको सुनकर उपहास भुजाली ताने हुए दौड़ा हुआ आपहुंचा उसको देखकर प्राता बोली कि भैना वह मरा कालियाभी आता है इतने में उपहास प्राता के ऊपर आपहुंचा उसने उसे हटानेके लिये बहुत कुछयत्न किये और कई प्रहार किये परंतु उपहासने एक न माना और बढ़ा हुआ चलागया और चाहा कि उसको गोदमें उठालूं परंतु प्राता चिल्लातीहुई भागी और बोली कि भैन समीररूपा मैंतो भागती जातीहूं परंतु यहमेरापीछा नहींछोड़ताहै उसके पुकारने से समीररूपा और तीव्राने उधर ध्यानही कियाथा कि इतनेही अवसरमें चपलानेदाहिने हाथसे एकभुजाली समीररूपाके पृष्ठ भारपर और बायें हाथसे दूसरी भुजाली तीव्राके पृष्ठभारपर मारी उससे दोनोंके पृष्ठभार फटगये और संडीन चपला और उपदेशी दोनों पृथ्वीपर गिरपड़े तब चपलाने दौड़कर दोनोंके मुखपर चैतन्य चूर्ण मारा कि दोनों चैतन्य होगये यह देखकर समीररूपाने अनुमान किया कि कहीं ऐसानहो कि संडीन चपला क्रोधकरके हमपर गिरै और हमारे दो दो टुकड़ेकरडाले यह अनुमानकरके वह भयभीतहोकर तीव्रासहित भागी और उधर उपहासके भयसे प्राताभी अपने पृष्ठभारको फेंक कर भागगई तब बहुरूपियोंने रंतिकालकोभी चैतन्य किया इसके पीछे संडीन चपला समीररूपाके छल करनेके हालको सुनकर महा क्रोधितहुई और बोली कि इस बहुरूपिणीकी अब यहसामर्थ्य होगई कि हमसेभी छल करने आई मैं अभी इसको भस्मकिये देतीहूं यहकहकर वह चमककर चलीहीथी कि उपहासनेपुकार कर कहाकि हांहां यहप्रहासकी प्रियाहै जो कोई इसका बधकरेगा उसको प्रहाससेसामनाकरनापड़ैगा और प्रहासउसकोजीता न छोड़ैगा यहसुनकर संडीनचपला भयभीतहोकर फिर आई और उपहास आदि सब साथ साथ अपनी सेनामें आये उससमय

संडीन चपलाने बहुतसा धन सामने रखकर चपलासे कहा कि इसको लीजिये आपके कारणसे मेरे प्राण बचेहैं वह बोला कि मेरी क्या सामर्थ्यहै में एक तुच्छ भक्त उस परमात्माकाहूं वही सबके प्राणोंका रक्षा करनेवालाहै वह बोली कि आपका कहना सत्यहै परंतु आप लोगोंके कारणहीसे हम लोगोंका बचाउ है नहीं तो कहां राजा महेन्द्र से विमुख होकर रहना और बड़े २ मायावी म्लेच्छोंसे लड़ना और कहां बहुरूपिणियोंके छल से बचना हम सबभी मरने मारनेको उपस्थितहैंनिदान बहुरूपिये वहांसे विदाहोकर चलदिये और जबबनमेंपहुंचेतो देखाकि एक मनुष्य खड़ा हुआ बड़े करुणा विलापसे रो रोकर अश्रु पातों की धारा छोड़रहाहै और अपनी प्रियाके विरह में व्याकुलहो कर अपने हृदयको उसकेदाह से भस्मकर रहाहै और मुखसे यह पढ़ताहै ॥

वरवाछंदाहेप्यारीतवविरहेअसगतिमोरानिशिदिनअँखियांरोवतअंशुवनवोर
सोवतनीरवहतनैननिसोंघोर। जिमिनिकसतहैसोताधरनीफोर॥

चपलाजब उस विरहव्याकुलके समीपगया तो पहिंचाना कि मारीचहै अपनी प्राणप्यारी सुंदरीके विरहमें रात्रिभर इसीप्र-कारसे व्याकुलरहाकरताहै उसकी प्रियाका वृत्तांत पहलेवर्णन होचुकाहै कि उसको महेन्द्रने रक्तवाहिनी नदीके समीपके बनमें एक मायाकृत हिंडोलेपर बैठादियाहै और वह उसपर बैठीहुई झूलाकरती है निदान चपलाने उसे आश्वासन किया और कहा कि मैंतेरी प्रियाको छुटाने जाताहूं यहकहकर वह रक्तवा-हिनी नदीकीओर चलदिया इस अवसरमें कालचक्रने अपने कालेवस्त्रोंको धोकर श्वेतकिया और प्रभाके समुद्रमें सबतारा-गण गोतेलगाने लगे और सूर्यकी प्रभारूपीनदीमें रश्मिरूपी तरंगें उठने लगीं ॥

दो०। महिनभ तटके बीचमें प्रभा समुद्र अपार।

रश्मि तरंगनसों बढ्यो भयो प्रात सुखकार ॥

उस समय चपला श्री विष्णु भगवान्‌का ध्यान करताहुआ रक्तवाहिनी नदीके तटपर पहुंचा और चिंताकरने लगाकि किसउपायसे नदीके पारजाऊं और उस सुंदरीका पतालगाऊं निदान यहतो इस चिन्तामें खड़ाथा कि इसको समीररूपाने देखा जो भागकर वहांगई थी और नदीकेपार नहीं उतरीथी उसनेदेखकर अपनेचित्तमें कहाकि कल इसने मुझकोघेराथा और पृष्ठभार छीनलियेथे आजमेंभी इससे अपनाबदलालेलूं यहविचार कर उसने अपना स्वरूप प्रहासकासा बनाया और राह काट कर चपलाके सन्मुख आई जिससे यह भासितहो कि नदीके पारसे उतरकर आताहै निदान जब चपलाने देखाकि गुरूजी आरहेहैं दौड़कर पैरोंपर गिरपड़ा और बोलाकि आजदिनको धन्यहै इसघड़ी व बेला व इस मुहूर्त्तको धन्यहै जिसमें आपके दर्शनहुए और उसपरमात्माको बारंबार धन्यहै जिसकी कृपासे आपमहान् मायावी म्लेच्छोंमेंसे निकलकर यहां आये और हमने आपके दर्शनपाये तब समीररूपाने उसे उठाकर छाती से लगाया और लगातेसमय अपने मुखसे मूर्च्छाकर चूर्णफूंका जो प्रथमसे मुखमें भररक्खाथा वह चूर्ण चपलाके ब्रह्मांडमें चलागया और वह मूर्च्छितहोगया तब समीररूपाने उसे पृष्ठभार में बांधलिया और पीठपर लादकर आगे बढ़ी मार्गमें उसने विचारकिया कि महाराज महेन्द्रने बहुरूपियोंके पकड़नेकी आज्ञादी नहींहै इससे कहीं महाराज यह न कहें कितू बहुरूपियों को लाकर मायाकृतदेशके मार्ग दिखातीहै तो मेरेलिये भलाई न होगी यह विचारकर नदीकेपार नहींगई उस पृष्ठभारको लिये हुये अपने डेरेमें आई और विचारकिया कि प्रथम इसके पकड़े जानेके हालसे श्रीमहाराज महेन्द्रको विदितकरूं फिर जो महाराज आज्ञादें तो लेजाऊ और वह इसीचिंतामेंथी कि तीव्रा

और वेधिनीभी वहांआ पहुंचीं उनको देखकर समीररूपा बो-
ली कि तुम अभी मेरेपास मत आओ पहिले हाथ और मुख
धोलो जिससे मैंजानलूं कितुम कोई बहुरूपियातो नहींहो यह
सुनकर उनदोनोंने अपने २ हाथ और पैर धोकर उसका संदेह
दूरकिया और सब संकेतकी बातेंभी बताईं तब समीररूपाने
उनसे कहाकि तुम इस प्रष्ठभारको लेकर यहां ठहरी रहो मैं
महाराजकी सभामें जाकर इसके लेजानेके विषयमें पूछआऊं
यह सुनकर वहबोली कि आपकुछ भोजन करलीजिये तब
जाना क्योंकि कलसे आप बड़ापरिश्रम कररहीहैं यह सुनकर
समीररूपा ठहरगई और मारीचदिन निकलनेपर रोधोकर अ-
पने डेरेमें गया और वहांसे सभामें जाताथा मार्गमें उसे उपदे-
शीमिला उससे उसने कहाकि चपला मेरीप्रियाको छुड़ानेगया
है सो अभीतक नहींआयाहै यह सुनकर वह रक्तवाहिनी नदी
की ओर चला और वहां उस समय पहुंचा जब समीररूपा
चपलाको प्रष्ठभारमें बांधरहीथी उसको देखकर उसने अपना
स्वरूप एक म्लेच्छीकासा बनाया अर्थात् नीलकाटीका माथे
पर लगाया साड़ी बड़ी मोलकी पहिरी अंग अंगमें गहने धारण
किये स्वरूपको अपने ऐसासुंदर बनायाकि उसके आगे चन्द्र-
माभी लज्जितहोताथाकपोलों पर ऐसा रङ्ग भरा कि दोगुलाब
फूले हुए दृष्टि पड़तेथे और गाती मारे हुए परम शोभायमान
दीखता था॥

चौ०। सुन्दर रूप बन्यो सुठि जैसो। कापै वरणयो जाय सुतैसो॥
छबि शोभा सौंवासो बामा। बनी मनो सुन्दरता धामा॥

निदान इसप्रकारसे बनठनकर वह समीररूपाके डेरेकेपास
आया और छलांग मारकर डेरेकी कनातोंको फांदकर भीतर
चला गया जिससे यह प्रकटहो कि कोई मायाविनी म्लेच्छी
उड़ती हुई आईहै उससमय समीररूपा बहुरूपिणियोंसे बातें

कररहीथी जब उसने अपने आंगनमें उसको देखा पूछनेलगी कि श्रीजीके आनेका क्या कारणहै वह बोली कि मैं श्री महाराज महेन्द्रकी सभासे आतीहूं महाराजने पुस्तक देखीथी उस से उनको विदित हुआ कि चपला बहुरूपिया पकड़ा गया है इससे मुझे भेजाहै और कहाहै कि उस कैदीको तुम लेकर शीघ्र चलो मैंतो चिंतामेंहूं और तुमको भोग विहार सूझा है यह सुनकर समीररूपा बोली कि भोग विहार किसका मैं अभी अभी आपके साथ चली आतीहूं वह बोली कि अबमें ठहर नहीं सकतीहूं मैं जातीहूं तुम कैदीको लेकर आओ और यह कहकर फिर छलांग भरकर कनात फांदकर डेरेकेबाहिर चला आया और यहजा वहजा निकलगया उसकेजानेकेपीछे समीररूपाने अनुमान किया कि यह म्लेच्छी निस्संदेह महेन्द्रकी प्रेरितथी क्योंकि जो बहुरूपियाहोता तो चला न जाता मुझसे पृष्ठभार अवश्यमांगता कदाचित् सेतरक्षकोंने महाराजसे चपलाके कैद होनेका वृत्तांत कहाहोगा इससे महाराजने इस म्लेच्छीको भेजाहोगा इससे अब चलना उचितहै यह विचारकर उसने सब साथकी बहुरूपिणियोंसे कहाकि तुम यहीं ठहरीरहो मैं इस कैदीको देआऊं निदान वे सबतो ठहरी रहीं और यह पृष्ठभारको पीठपर लादकर चलदी उधर उपदेशीने नदीके तटपर पहुंचकर पृथ्वीको खोदकर अपने सब शरीरको पृथ्वी में छिपादिया अर्थात् पृथ्वीपर लेटकर सब शरीरपर मिट्टीडाल ली और पृथ्वीकी बराबर होगया और अपने चारोंओर पाश के कुंडल फैलाकर उनकोभी धूलसे ढकदिया और उसपाशका सिरा अपने हाथमें थामकर हाथकोभी रेतसे ढकदिया केवल नाक और आंखें खुलीहुई रक्खीं और समीररूपाके आने की बाट देखने लगा थोड़ी देरमें समीररूपा नदीके किनारे आकर पहुंची और चाहतीथी कि उछलकर पुलपर चढ़जाऊं कि इतने

में उसका एक पैर पाशके कुंडलमें पड़ा पड़तेही उपदेशी ने झटका मारकर खींचा उस कुंडलमें उसका पैर उलझगया और वह डिगमिगाकर गिरपड़ी तब उपदेशी बड़ी शीघ्रतासे उठा और अपना नामसुनाकर समीररूपाकी छातीपर जाचढ़ा उस को देखकर समीररूपा बोली कि अरे मरे तू कहांथा वह बोला कि गुरानीजी म्लेच्छी बनके कौन गयाथा तुमने इतना भी न पहिचाना और यहकहकर उसने समीररूपाको मूर्च्छित करदिया और उसके पृष्ठभारको खोलकर चपलाको चैतन्य किया और सब वृत्तांत उससे कहा इसके पीछे समीररूपाको बांधकर उसकोभी चैतन्य किया और कहा कि मैं तेरा वध करूंगा वहबोली कि मैं तेरेवशमेंहूं जोचाहे सोकर वहबोले कि हमारे गुरू जो तुमको नचाहतेहोते और जो हमको घोड़े का दाना तुमसे दलवाना इच्छित न होतातो अवश्य जीता नछो-ड़ते समीररूपा हँसकर बोली कि अरे मरे मैं दाल दलने के योग्यहूं न जाने तुमलोगोंके मनमें क्या क्या समायाहै निदान दोनों बहुरूपिये उसको लेकर रानी निशाकरीकी सभाकी ओर चले और कुछ दूर गयेहोंगे कि एक हस्त प्रकट हुआ और समीररूपाको उठा कर आकाशमार्गी हुआ और बहुरूपिये भागकर पृथक् पृथक् होगये यह हस्त महेन्द्रका भेजा हुआ था क्योंकि जब इन बहुरूपिणियोंको देरी हुई तब उसने माया कृत हस्त भेजाथा कि जहां समीररूपाहो उठालावे निदान वह हस्त समीररूपाको महेन्द्रकी सभामें लेगया और उसने दंडवत् करके सब वृत्तांतकह सुनाया महेन्द्र उसको उत्तर नहीं देने पायाथा कि विचित्रमायाका पत्रआया उसको जो देखातो लिखाथा कि आपने प्रहासके पकड़नेके लिये कुछ आज्ञा नहीं दिया तो आपही पधारें अथवा अपने किसी मुख्यगणको भेजें जिससे यह पकड़ा जाय उसको पढ़कर महेन्द्रने कुछ माया

की ओर पुकारा कि हे नभानिलाङ्गी शीघ्र आकर हमारे समक्ष में स्थितहो यह कहतेही तुरंत एक आकाशसा अंतरिक्षमें प्रकट हुआ उससे अग्नि बरसने लगी थोड़ीदेरमें वह आकाश फटा और उसमेंसे एक म्लेच्छ अग्निरूप निकल कर पृथ्वी पर आया उसकी आंखें मसालकी समान जलतीहुईथीं वरण उसका नीलाथा मुखसे धुआं निकलताथा और ऐसा अपावन और भयानकरूपीथा कि ॥

चौ० । हांड़ी समकपाल अति औंड़ा । कृष्ण भयंकर अतिशय भौंड़ा ॥
नैना युगल मनहुं दुइ भट्टी । पलक ढपी तिनिपैजनु टट्टी ॥
नासामनहुं सालरूर लट्ठा । युगल छिद्र सहपीन बरिष्ठा ॥
सोहत दांत मनहुं बहु कड़ा । धरे पांतिमें बड़ा बड़ा ॥
युग कपोल सोहें जनु कंडा । अथवा दग्ध पूर बरबंडा ॥
कारे अधर लसतइमिताये । जिमि कदलफिल सड़े सड़ाये ॥
सोहत ताके श्रवण अनूपा । लाजैं जिनै देखिके सूपा ॥
चर्म अंगकोहो अस कैंड़ा । मनहुं चर्म बदरी बन गैंड़ा ॥
इमिताको सोरूप विलक्षण । बरणि सकतनहिं बुद्धिविचक्षण ॥

उसने आकर महेन्द्रको दंडवत्की महेन्द्रने उसे आज्ञादी रानी विचित्रमायाके नगरमें प्रहास दो तीन दिनसे छिपाहुआ है तुम जाकर उसको पकड़ लाओ यह आज्ञा पाकर वह म्लेच्छ उड़कर फिर अपने मायाकृत आकाशमें गुप्त होगया और वह आकाश विचित्रमायाके नगरकी ओर चला निदान यह अंतरिक्षगामी आपत्ति तो प्रहासके लिये जातीहै परंतु अब प्रहासका हाल सुनिये कि वह उस गर्तमें बेखटके बैठाहुआथा और अपने चित्तमें विचारताथा कि परमेश्वरको धन्यवादहै कि जिसने कुछकाल इधर उधर फिरनेके दुःखसे तो बचाया सत्य है कि दुष्ट मनुष्योंकी संगति विषकेतुल्य होतीहै ॥

दो० । सबसों न्यारेही भले परे अँधेरे कूप ।
दुख सुख जगके त्यागिके अब भये आनँदरूप ॥

निदान इसी अवस्थामें उसने दूरसेदेखा कि एक रजक अ-
र्थात् धोबी बैलपर लादीलादे कांधेपर मलिनवस्त्रोंकी गठरीबांधे
जैसी कि संसार में कहावत है कि धोबिकाछैला आधा उजला
तो आधा मैला हाथोंमें चांदीके कड़े डाले बिरहा गाताहुआ
चलाआताहै और उसके पीछे२ औरभी धोबी बैलोंपर कपड़े
लादेहुए चलेआतेहैं उन बैलोंके गलेमें कंठियांबँधीथीं किसी
किसीबैलपर धोबिनेंटांगफैलायेहुए बैठीथीं औरनाथकी बँधीहुई
डोरीकोघुमाघुमाकरबैलोंको हांकतीजातीथीं किसीकिसी बैलपर
पाटा और वस्त्रसुखानेके बांसलटकेहुएथे और उनकेपीछे२ कई
कईधोबी नांद और पतीलोंको शिरोंपर औंधाये लड़कोंके हाथ
पकड़ेहुए भय्या भय्या कहतेहुए चलेआतेथे उनको देखकर
प्रहासको लोभने सताया और वह मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर बा-
हिरआया और उनके समीप जाकर उस समय तक चुपकारहा
जबतक वे धोबी बीचाबीच बजारमें न पहुंचे वहां पहुंचनेपर
उसने मरुतदत्त वस्त्रउतारलिया और थैलीका मुखखोलकर
आगे बढ़गया और जो लादी सबसे भारीथी उसपर जालमारा
और उसे थैली में डालकर अलग जाखड़ा हुआ धोबी ने
जो लादी न देखीदोचार मनुष्यकोपकड़ा और कहा कि तुमनेही
मेरी लादी उतारीहै सब धोबी इकट्ठे होगये और उन मनुष्यों
को गाली गलोजकरने लगे औरबोले कि मारेघूंसोंके तुम्हारा
परथन निकालदेंगे एकबोला कि ऐसाधप्पा जमाऊंगा कि भेजा
निकल आवेगा दूसरेनेकहा कि अरेभांड़ के भांड़ ऐसा थप्पड़
दूंगा कि मुख बिगड़ जायगा मुझेभी क्या टालमटोलकरके कोई
और बनाया है किमाल उड़ादिया और लादी टहलादी में मार
ते २ चमड़ी उधेड़दूंगा यह झगड़ा जो होनेलगा तो सबनगर
वासी और दूकानदार घिरआये औरधोबी और धोबिनें और
लड़के बैलोंकोठहराकर इनसबके ओरपास खड़ेहोगये उससमय

अवसरपाकर प्रहासकतराकर बैलोंकीओरगया और जालमार
कर उनबैलोंको लादियोंसहित थैलीमें डाललिया और मरुत-
दत्त वस्त्र ओढ़कर एक स्थान पर ठहरगया उधर वे भले मानुष
बड़े चक्करमें थे और कहतेथे कि हे परमेश्वर हमको किस आ-
पत्तिमें डालदिया लोगोंके उनके ऊपर जमघटेथे एक कहताथा
कि यह बड़े भारी तस्करहैं कि दिनधौरे इतनी भारीलादी उ-
ड़ालेगये दूसरा कहताथाकि अरेचोट्टो इन विचारे धोबियोंपर
कृपाकरो ये मरजायँगे बड़ेदीनहैं तीसरा कहताथा कियह विचि-
त्रमायाका धोबीहै इसकामाल चुरानाहँसीनहींहैकैदमेंपड़े २हड्डी
तक गलजायँगी इसप्रकारसे हरएकमनुष्य अपनी २ कहताथा
और वे भलेमनुष्य खड़ेखड़ेसुनतेथे इसअवसरमेंएक धोबीनेजो
उसओरकोदेखा जिधर बैलखड़ेथे तौबैलोंको न पाकर इधरउधर
देखनेलगा कि कहींचले नगयेहों परंतु जब कहीं पतानमिलातब
लौटकर सब धोबियोंसे बोलाकिभाइयो अबकी बैलोंसहित कोई
लादियां लेगया यहसुनतेही सब धोबीदुहाई देनेलगे और ऐसा
कोलाहलमचाया कि उसको सुनकर नगर प्रबन्धकर्त्ता अपने
अनुचरों सहित दौड़ाहुआ आया और सब वृत्तांत सुनकर
उन मनुष्योंको जिनको पकड़ाथा और सब धोबियोंको लेकर
विचित्रमायाके पास चला जब उसके बागके समीप पहुंचे तब
सब धोबी पुकारे श्रीमहारानीके शरणागतहैं हमको आपके
स्थानके समीप लूटलिया आपके वस्त्रभी चोरीगये ऐसा अंधेर
इस मायाकृत देशमें कभी नहीं हुआथा उनके कोलाहल को
सुनकर विचित्रमायाने पूछा कि यह क्याहै वह यह पूछही रही
थी कि द्वारपालकोंने जाकर विनयकी कि नगरका प्रबन्धकर्ता
आपके पास आना चाहताहै तब विचित्रमायाने उसको अपने
सन्मुख बुलाया और सबवृत्तांत सुनकर उन पकड़ेहुए मनुष्यों
से पूछा कि तुमने यह क्या कर्म किया यहसुनकर वे मनुष्य

रोने लगे और विनयपूर्वक बोले कि महारानी चाहे हम उपासे रहिजायँ परंतु हम चोरी कभी न करेंगे उनके नाहीं करनेपर विचित्रमायाने पृथ्वीपर एक लात मारी कि उससे एक पुतला उत्पन्न हुआ उससे पूछा कि इन धोबियोंके वस्त्र किसने लियेहैं उसने हँसकर कहा कि महारानीजी तुम तो दिन दिन अपनी बुद्धि खोती जातीहो भला प्रहासके छोड़कर और कौन चीरहर-ने वालाहै इससे हेमहारानी आपको अब चौकसरहना उचित है क्योंकि आपके नगरमें वह मनुष्य आयाहै जिसके गुणगण कहना दुर्लभहै ॥

दो०। अमृतको जो विष करत विषको अमृत बनाय।
बिन मारे मृतसम करत तनमें धरत लुभाय ॥

यह कहकर वह पुतला पृथ्वीमें समा गया और विचित्र-मायाने नगर प्रबन्धकर्तासे कहा कि ये मनुष्य निरपराधहैं इनको छोड़दे लादी धोबियोंकी प्रहास बहुरूपिया लेगयाहै इन धोबियोंको हमारे कोपसे धन दिवादे कि येलोग बैल और लेलें और जिन जिनके वस्त्रगयेहैं उन उनको वस्त्रोंका मोलदेदें यह आज्ञा पाकर नगर प्रबन्धकर्ताने उन धोबियोंको धन दिवा दिया वे धन लेकर अपने २ घर गये और नगर प्रबन्धकर्ता अपने स्थानपर आकर अपना कार्य करने लगा इस अवसर में प्रहास एक म्लेच्छका रूप धारण करके एक बजाजकी दु-कानपर गया और उससे देखनेको अच्छे अच्छे थान मांगे बजाजने बहुतसे थान लाकर सामने डाल दिये प्रहासने उन-को देखते देखते गुप्त करदिया वह बजाज हल्ला मचाने लगा और उसनेचाहा कि प्रहासकोपकड़लूं परंतु प्रहासमरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर अंतर्द्धान होगया तब वह बजाज अपनी दुकान और दुकानके बणिकोंको सौंपकर प्रहासको ढूंढ़नेचला उसकेजानेपर प्रहासने बड़ीशीघ्रतासे अपना स्वरूप उस बजाज कासा बना-

या और उस दुकानपर आकर सब दुकानका माल अपनी थै-
लीमें डाल लिया और सबके देखनेको ताला लगादिया उन
दुकानकेबणिकोंनेसमझा कि यहदुकान बढ़ाकर चोरके ढूंढ़नको
जाताहै इससे किसीने कुछ न पूछा और प्रहास वहांसे हटकर
फिर मरुतदत्त बस्त्र ओढ़कर गुप्त होगया और एक स्थानपर
ठहरारहा इस अवसरमें वह बजाज चोरको ढूंढ़कर आया और
दुकानका ताला जो खोलकर देखातो सब माल दुकान से
गयाहुआपाया यहदेखकर वह अपना शिरपटकताहुआ बाहिर
निकला और अपनेपड़ोसीबणिकोंसे लड़नेलगाकिमें दुकानतुम
को सौंपगयाथा तुमनेही मेरामाललियाहै वह बोलेकितू अभी तो
पलटकर आयाथा और फिर दुकान बन्दकरके चलागया हम
क्याजाने कितेरा माल क्याहुआ वहबोला कि मैंतो आयाही
नहीं तुम मिथ्याक्यों बोलतेहो तुमकोही मेरामाल देनाहोगा
निदान यहांतक झगड़ाबढ़ा कि सब बजाज और जौहरी अ-
पनी २ दुकानोंसे उठ उठकर उसको मारनेलगे तब प्रहासने
दुकानोंको खालीपाकर मरुतदत्त बस्त्रउतारा और जालमारकर
सब खाली दुकानोंका माल लूटकर थैलीमें डाललिया और
फिर मरुतदत्त बस्त्र ओढ़कर अपना मार्गलिया परंतु जब सब
बणिक लड़भिड़के अपनी दुकानोंपर आये तो दुकानोंका सब
माल गयाहुआ पाया और उन्होंने महा कोलाहल मचाया तब
फिर नगर प्रबन्धकर्ता दौड़कर आया सब हाल सुना और सब
को लेकर फिर विचित्रमायाके पास गया वह एक बारतो पुत-
लेसे सबहाल सुनहीचुकी थी इससे उसने सब बजाजोंको
अपने कोषसे धन दिलवादिया और आज्ञादी तुमसब अपनी
दुकानें बन्दरक्खो क्योंकि इस नगरमें एक चोर ऐसाआयाहै कि
वह सबको देखताहै और उसेकोई नहीं देखसकताहै इससे जो
अबतुम लोग अपने मालकी रक्षा आप न करोगे तो यहांसे

कुछ न होगा और नगर प्रबन्धकर्ता को आज्ञादी कि तू सब नगरमें ढिंढोरा पिटवादे कि जोकोई अपने मालकी रक्षा अपने आप न करेगा और उसकामाल चोरी जातारहेगा तो राज्या-लय में कुछ सुनवाई न होगी हां राज्यसे उस चोरके पकड़ने का उद्योग हो रहा है जबवह पकड़ाजायगा तबचाहे कुछ चोरी का माल मिलजावे इससे उचितहै कि जबतक वह पकड़ा न-जाय तब तक सबकोई अपने अपने धन और माल की आप रक्षाकरें यह आज्ञा पाकर नगरप्रबन्धकर्ता लौट आया और उसने उक्त आज्ञा को घोषित कराया और सब नगर में बाजे बजाकर सबको उक्तआज्ञासे विदित करदिया अबतो सबनगर में हलचल पड़गई वणिकों ने दूकानें सब बन्द करदीं प्रजाओं ने सब अपना माल भूआलयों में बंद करदिया स्त्रियोंने आ-भूषण उतार उतार कर पृथ्वी में गाड़दिये सब नगरमें सन्नाटा होगया कुत्ते गली गलीमें भूँकनेलगे और सहस्रों म्लेच्छ प्र-हास के ढूंढ़नेको निकले कोई कहीं घातलगाकर बैठगया और कोई सौ पचास मनुष्य साथ लेकर चारोंओर फिरनेलगा यह देखकर प्रहास फिर उसी गर्तमें चला आया और सुरंगके मा-र्गसे हलवाई की दुकानसे मिष्टान्न और कलवारकी दुकान से मद्यलाकर मद्य पी और भोजन किये और तानकर लेट रहा निदान यह तो इस प्रकार से निर्विघ्नतापूर्वक अपनेगर्त में वि-श्राम कर रहाथा और वहां विचित्रमाया चिंताग्रस्त बैठीहुई थी कि अकस्मात् विचित्र मायाके बागके ऊपर एक आकाश आकर घटाटोप होगया और उसमेंसे नभानिलाङ्गी निकलकर पृथ्वी पर उतरा विचित्रमाया ने उसका सत्कार किया और उसे आदरपूर्वक लाकर बैठाया और मद्यका पात्र भरकर पीने को दिया वह बोला कि महारानी मैं प्रहासको पकड़ने आया हूं उसको पकड़नेके पीछे विश्राम करूंगा अभी मद्य भी न पी-

ऊंगा वह बोली अच्छा हुआ जो आप आये मुझको विश्वास है कि तुम उस छलीको ढूंढ़लोगे मैं तो सहस्रों म्लेच्छोंको भेज चुकीहूं परंतु उसकापता कहींनहीं लगताहै वहबोला किआप तो मायाकृत देशके स्वामीकी भार्या हैं जो आपही को उसका पता नहीं मिलताहै तो मैं क्या कर सकूंगा वह बोली कि इस में कुछ आश्चर्य्य नहीं है एक काम हम से न बना तुम्हींसेठीक आया हम और तुमतो एकही हैं कुछ भिन्नता नहीं है यह सुन कर नभानिलाङ्गी उठा और बागके एक ऐसेस्थानमें गया जहां बड़े सघन वृक्ष लगे हुए थे और वहां अशौच होकर बैठगया और माला और फूल लेकर कुछ जप सा करनेलगा थोड़ीदेर में बोला कि हे विचित्र माया प्रहास आकाशमें नहीं है और फिर कुछ मंत्र सा पढ़नेलगा और क्षणमात्र पीछे फिर बोला कि पृथ्वी के ऊपर भी नहीं है और कुछपाठ सा करने लगा और तत्कालही कहा कि पृथ्वी के नीचेहै और फिर कुछ और तंत्र विधान साधकर कहा कि पूर्व दिशामें एक गर्त में बैठाहुआ है यह कहकर वह उठ खड़ाहुआ कि अबजाकर पकड़ेलाताहूं तब विचित्रमायाने यहसमझकर कि यहभी मारा न जाय उससेकहा कि मैं भी चलती हूं और साथ हो ली और उस के चलने से मायामणि और मायारत्नादि बहुतसी म्लेच्छियों की समाज साथ होली तब नभानिलाङ्गी ने कहा कि प्रहास भीड़ देखकर भाग जायगा अच्छा मैं एक प्रयोग माया का करता हूं उससे प्रहास जहांहोगा बिलबिलाकर बाहर निकलआवैगा और तब उसको म्लेच्छ पकड़लेंगे यह कहकर वह सबको साथलेकर बाग के द्वार पर आया और एक फल कुछ माया करके अपने मायाकृत आकाश की ओर फेंका उससे वह आकाश घूमने लगा और उसमेंसे एक अग्निकी धारा प्रकट होकर सर्वत्र फैल गई और पृथ्वी में समागई उसके कारणसे पृथ्वी में से

धुआं निकलनेलगा और उसगर्तमें प्रहासको ऐसी ऊष्मा मालूमहुई कि स्वांस रुकनेलगा और प्यास बड़ीभारी लगी तब प्रहासने थैली में से पानी निकालकर पिया और उसगर्तमें धूम घुटगया तब प्रहास वहां ठहर न सका और सुरंग के मार्ग से वनियें के घरमें जाकर कोठरी में आया और देखा कि वहांकी पृथ्वीभी तप्त हो रहीहै तब प्रहास गेहुंओं के बोरों में जा बैठा और बैठनेकी जगह पहलेही बना आयाथा उसमें बैठनेसे वह ऊष्मा कमहुई और प्यास मिटी क्योंकि नभानिलाङ्गी ने माया जो कीथी वह पृथ्वीको तप्त करनेकी थी और बोरेपृथ्वीसे ऊंचे थे परंतु पृथ्वी नीचेसे ऐसी गरमहुई कि भट्ठी होगई और उस में से धूम इस प्रकारसे निकलताथा जैसे जाड़ोंमें कूपके जलसे भाप निकलतीहै और वह धूम चारों ओरको फैलगया और सब पृथ्वी अग्निरूप होगई यह देखकर वहांकी सबप्रजा घबरागई और त्राहित्राहि करनेलगी उससमयपृथ्वीसेतो धूमनिकलताथा और ऊपरसे अग्निकीधारा पड़तीथी और पृथ्वीमें प्रवेश करती जातीथी वायु बड़ी गरम चलतीथी और मनुष्य भूआलय आदिमें छिपते फिरतेथे परंतु मरते न थे कूप सब वहांके सूख गयेथे अपूर्व दशाथी ॥

दो० धरणीसों आकाशलों छाई अग्नि विशाल।
तपन लग्यो सो थल मनहुं रौरवनर्क कराल ॥

जो जो बड़े मायावीथे वे अपने प्राण माया करके बचाये हुएथे और ऐसे वैसे तो सहस्रों मरगये चारों ओर रोने पीटने का शब्द फैल गया उसको सुनकर विचित्रमायाने कहा कि हे नभानिलाङ्गी शीघ्र इस माया का संहार कर वह बोला कि प्रहास अब अग्निमें जलकर मरगयाहोगा विचित्रमाया मुसकुरा कर बोली कि प्रहासका बालभी बांका न हुआहोगा उस को ऐसा वैसा मत समझना शीघ्र उसके पकडनेका यत्न करो

तुम्हारे इस मायाके प्रयोगसे मेरी प्रजा मरी जातीहै यह सुन
कर उसने उस अग्निको प्रकट करनेवाली मायाका संहार कि-
या और एक एकांत स्थानमें बैठकर कुछ माया करने लगा
थोड़ी देरमें उस मायाके प्रभावसे बहुतसे पुतले प्रकट होगये
और वे आकर उसके सामने स्थित हुए उनको उसने आज्ञा
दी कि तुम पृथ्वीमें प्रवेशकरके हरएकस्थानमें प्रकटहोकर प्र-
हासको देखो और जहां वह हो हमसे आकर कहो देखो कोई
स्थान कूप गर्त तड़ाग आदि बाकी न रहिजावै यह आज्ञापा-
कर सौ पुतले पृथ्वी में प्रवेश करगये और नगरवासियों के घरों
में प्रकट हो होकर प्रहासको ढूंढ़नेलगे दैवयोगसे जिस कोठरी
में प्रहासथा उसीमें उस घरके बनियेंके धन रखनेका संदूकभी
रक्खाथा और उसलमय वह वणिक उससंदूकमें कुछधन रख-
कर बाहर आयाथा प्रहास उसकोधन रखतेहुये देखकर चौंक-
पड़ा और जबवह चलागया तबचोरेंमेंसे निकलकर उससंदूक
पर जालप्पारा और थैली में डाललिया और फिर जैसेही बोरे
में जानाचाहा तैसेही वहांभी पृथ्वीसे एकपुतला निकला प्रहास
उसको देखकर उसपरभी जाल मारनेचला परंतु वह बहुतशी-
घ्र पृथ्वी में समागया यह देखकर प्रहासने विचारा कि यह पु-
तला जो देखकर गयाहै तो अवश्य कुछ न कुछ आपत्ति आ-
वैगी यह विचारकर वहबोरे में होकर सुरंगमें चलाआया और
उसके मुखको मट्टीसे बन्दकरके हलवाईकेघर चलाआया और
कोठरीमें छुपकर बैठरहा उधर उस पुतलेनेजाकर नभानिलाङ्गी
से कहा कि प्रहास अमुक बनियेंके घरकी कोठरीमें है मेरेसम-
क्ष में उस बनियेंका धनलेकर वह बोरेमें घुस गयाथा यह सुन
कर नभानिलाङ्गीं ने विचित्रमायासे कहा कि आप ठहरी रहिये
में उसे पकड़े लाताहूं और वहांसे उस पुतलेके साथ साथ उस
वणिक्के घरपर आया उसको देखकर बनियां समझा कि यह

कोई बड़ा अधिकारीहै दो चार मन अनाज लेगा यह समझ
कर बोला कि श्री निधि आप क्या लेंगे मैं आपको सबसेकम
भावसे दूंगा उसने बनियेंकी बातका कुछ उत्तर न दिया और
दर्राता हुआ घरके भीतर चलागया तबतो बनियें ने अनुमान
किया कि आजकल नगर में अंधेर तो मचाहीहै यहभी लूटने
आयाहै यह अनुमान करके वह दुहाई देनेलगा कि मेरा घर
लूटे लेतेहैं दिन धाड़े डांका पड़ता है बड़ा अंधेर है मारे डाल-
ते हैं चलियो बचाइयो उस की पुकार को सुनकर सब बनियें
दौड़े और पुतलेने उनसेकहा कि अरे बनियेंतू पुकार क्योंकर-
ताहै जब हम तेराघर लूटते तबहींतू चिल्लाता तेरेघरमें चोर
बैठाहै तेराधन उसने लियाहै उसीको पकड़नेहम आयेहैं अब
तेरी पुकारको सुनकर संदेह नहींहै किवह भागगया हो यहसुन
कर वहबनियां चुपका हुआ और नभानिलाङ्गी कोठरी खोल
करभीतरगया औरउसनेपुतलेसेपूछा कि वहकिसबोरेमेंहै पुतले
ने बताया किउसमेंहै तबउस म्लेच्छने प्रथमतो उसबोरेके चारों
ओर माया करदी किप्रहास निकलन जाय और फिर बोरेको
लौटकर खूबदेखा और उसपुतलेसे कहाकि क्यावह कोईसुईथी
जो दिखाईनहींदेतीहै तूकैसा देखगयाथा वहबोला कि मैं देखतो
अवश्य गयाथा अबचाहै वह चलागयाहो तब नभानिलाङ्गीने
और बोरोंको फाड़कर नाजहटा हटाकर देखा परंतु जबकहीं पता
न मिला तब क्रोधकरके कुछ ऐसीमायाकी किवह पुतला भस्म
होगया और आपकोठरीके बाहिर निकल आया उससमयवह
बनियां अपना अनाज लुटाहुआ देखकर रोनेलगा कि हायचोर
मेरा सबधन चुराकर लेगया और फिर उसने अनाजको बोरों
में भरकर बोरे खड़े करदिये और बाहिर चलाआया औरचकित
हुआ कि भीतर चोर कहांसे आया उधर हलवाईकी कोठरीमें
भी एक पुतला निकला उसको देखकर प्रहासने मरुतदत्तवस्त्र

ओढ़लिया परंतु पुतलाभी उसेदेखचुकाथा उसने जाकर नभा-
निलाङ्गीसे कहाकि प्रहास हलवाईके घरमें कोठरीमेंथा मुझको
देखकर छिपगया यहसुनकर वह उस पुतलेके साथसाथ उस
हलवाईके घरआया वहभी उन्हें देखकर चिल्लाने पुकारनेलगा
पुतलेने उससेकहा कि भाई पुकारे मत तेरेघरमें चोरहै यहसुन
कर हलवाईने कोठरी खोली परंतु प्रहास पहिलेही पुतले को
देखकर कलवारके घरमें सुरंगकी राहसे चलागयाथा उससमय
नभानिलाङ्गीने अच्छी प्रकारसे देखा परंतुजब प्रहासकापता न
पाया तब क्रोध करके पुतलेसे बोला कि मुझको दौड़ाता फिर-
ताहै और ठीक बात नहीं कहताहै यह कहकर उसने कुछमाया
की कि वहभस्म होगया और आप कोठरी से बाहर आकरकुछ
और माया करनेकी चिंता करनेलगा इतनेमें एक दूसरे पुतले
ने आकर कहा जो प्रहासको कलवारके घरमें देखआयाथा कि
आप मेरेसाथ चलियेमें बतादूं जहां वहहै यहसुनकर वहपुतले
केसाथ होलिया परंतु प्रहास वहांभी पुतलेकोदेखचुकाथाइससे
वहवहांसेचलकर फिर सुरंगकीराहबनियेंकेघरमेंचलागया और
एकबेरेकोकाटकरउसमें छिपकरबैठगयाइसअवसरमें वहपुतला
न भानिलाङ्गीको लेकर कलवारके घरपर पहुंचा उसने कहाकि
श्रीनिधि आज क्याहै जोआप स्वामीहोकर सबके घरमें घुस-
ते फिरतेहैं वह बोला कि तेरीकोठरीमें चोरबैठाहै उसकोपकड़-
ने आयेहैं उसनेकहा कि तुम्हारी अच्छी बनपड़ीहै इसीबहाने
से लूटते फिरतेहो मैंने सुनाथा अभी बनियांदुहाई देरहाथायह
सुनकर उसको बड़ा क्रोधहुआ परंतु उसने क्रोधको रोककर
चारवणिक् और बुलाये और कहा कि मैं इसकी कोठरी में
जाताहूं तुमसब साक्षी रहना कि इसकी कोई वस्तुमैंने नहींली
निदान वह कोठरीके भीतरगया और चारों ओरदेखा परंतुजब
प्रहासको नपाया तब क्रोधकरिके मायाबलसे उसपुतलेकोभी

भस्म करदिया और वहांसे निकलकर एक और स्थानपरठहर कर कुछमायाकी कि एकमोरउड़ताहुआआया उससे उसनेपूछा कि प्रहासका पता नहींमिलताहै तूबताकि कहांहै यह सुनकर मोर अपनी चोंचको खोलकर बहुतहंसा और बोला किप्रहास ने सुरंग पृथ्वीके नीचे खोदीहैं एकतौ कलवारके घरमेंहै दूसरी हलवाईके यहांहै और तीसरी सुरंग बनियेंके घरमें लगीहै इस से जबतू उसे ढूंढ़नेजाताहै तब वह एक स्थानसे दूसरे स्थानको चला जाताहै अब इससमय वह बनियेंके घरमें बोरे के भीतर बैठा हुआहै यह कहकर वह मायाकृत मयूर उड़गया और न-भानिलाङ्गी ने कुछ मायाकी कि उससे बड़ २ विषधरसर्प उत्प-न्न होगये उसने उनसर्पोंको आज्ञादी कितुम अमुकगर्त में घुस कर जिधर जिधर सुरंगगईहो उधरउधर जाकर सब सुरंगों के मुखपर बैठकर उसके मार्गको रोकदो यहसुनकर सब सर्प्प उस गर्त में घुसगये और सुरंगके मुखपर मार्ग रोककर ठहरे और इधर नभानिलाङ्गी ने सब पुतलोंको बुलाया और साथमें लेकर फिर उस बनियेंके घरपर आया उसे देखकर बनियां बोला कि आप अभी तौ देखही गये थे फिर क्यों आये हैं नभानिलाङ्गी बोला कि चुपरह चोर फिर भागकर तेरेही यहां आया है ब-नियां बोला कि यहचोर बड़ा प्रबलहै जब देखो तब इरफिरके मेरेही घरमें आताहै एकबारतौ सबधन लेगया अबकी देखिये क्या लेता है यह कहकर उसने कोठरी का तालाखोला प्रहास ने जो उसकी पैंचट सुनी चाहा कि सुरंग की राह से भागजाऊं परंतु जैसेही सुरंगके मुखपर पैररक्खा सर्पने फुंकारमारी प्रहास ने शीघ्रही पैर खींच लिया और अनुमान किया कि मायाबल से मार्ग सुरंग के रोकदियेगये हैं यह अनुमान करके वह फिर बोरेमेंघुसगया और करवटकेबल लेटकर अपनी थैलीकी चौरा-सियो घुंडियोंको खोलकर थैलीकामुखफैलादिया जिससे बाहर

ओढ़लिया परंतु पुतलाभी उसेदेखचुकाथा उसने जाकर नभा-
निलाङ्गीसे कहाकि प्रहास हलवाईके घरमें कोठरीमेंथा मुझको
देखकर छिपगया यहसुनकर वह उस पुतलेके साथसाथ उस
हलवाईके घरआया वहभी उन्हें देखकर चिल्लाने पुकारनेलगा
पुतलेने उससेकहा कि भाई पुकारे मत तेरेघरमें चोरहै यहसुन
कर हलवाईने कोठरी खोली परंतु प्रहास पहिलेही पुतले को
देखकर कलवारके घरमें सुरंगकी राहसे चलागयाथा उससमय
नभानिलाङ्गीने अच्छी प्रकारसे देखा परंतुजब प्रहासकापता न
पाया तब क्रोध करके पुतलेसे बोला कि मुझको दौड़ाता फिर-
ताहै और ठीक बात नहीं कहताहै यह कहकर उसने कुछमाया
की कि वहभस्म होगया और आप कोठरी से बाहर आकरकुछ
और माया करनेकी चिंता करनेलगा इतनेमें एक दूसरे पुतले
ने आकर कहा जो प्रहासको कलवारके घरमें देखआयाथा कि
आप मेरेसाथ चलियेमैं बतादूं जहां वहहै यहसुनकर वहपुतले
केसाथ होलिया परंतु प्रहास वहांभी पुतलेकोदेखचुकाथाइससे
वहवहांसेचलकर फिर सुरंगकीराहबनियेंकेघरमेंचलागया और
एकबोरेकोकाटकरउसमें छिपकरबैठगयाइसअवसरमें वहपुतला
न भानिलाङ्गीको लेकर कलवारके घरपर पहुंचा उसने कहाकि
श्रीनिधि आज क्याहै जोआप स्वामीहोकर सबके घरमें घुस-
ते फिरतेहैं वह बोला कि तेरीकोठरीमें चोरबैठाहै उसकोपकड़-
ने आयेहैं उसनेकहा कि तुम्हारी अच्छी बनपड़ीहै इसीबहाने
से लूटते फिरतेहो मैंने सुनाथा अभी बनियांदुहाई देरहाथायह
सुनकर उसको बड़ा क्रोधहुआ परंतु उसने क्रोधको रोककर
चारबणिक् और बुलाये और कहा कि मैं इसकी कोठरी में
जाताहूं तुमसब साक्षी रहना कि इसकी कोई वस्तुमैंने नहींली
निदान वह कोठरीके भीतरगया और चारों ओरदेखा परंतुजब
प्रहासको नपाया तब क्रोधकरिके मायाबलसे उसपुतलेकोभी

भस्म करदिया और वहांसे निकलकर एक और स्थानपरठहर कर कुछमायाकी कि एकमोरउड़ताहुआआया उससे उसनेपूछा कि प्रहासका पता नहींमिलताहै तूवताकि कहांहै यह सुनकर मोर अपनी चोंचको खोलकर बहुतहंसा और बोला किप्रहास ने सुरंग पृथ्वीके नीचे खोदीहैं एकतो कलवारके घरमेंहै दूसरी हलवाईके यहांहै और तीसरी सुरंग वनियेंके घरमें लगीहै इस से जबतू उसे ढूंढ़नेजाताहै तब वह एक स्थानसे दूसरे स्थानको चला जाताहै अब इससमय वह वनियेंके घरमें वोरे के भीतर बैठा हुआहै यह कहकर वह मायाकृत मयूर उड़गया और न-भानिलाङ्गी ने कुछ मायाकी कि उससे बड़े २ विषधरसर्प उत्प-न्न होगये उसने उनसर्पोंको आज्ञादी कितुम अमुकगर्त में घुस कर जिधर जिधर सुरंगगईहो उधरउधर जाकर सब सुरंगों के मुखपर बैठकर उसके मार्गको रोकदो यहसुनकर सब सर्प्प उस गर्त में घुसगये और सुरंगके मुखपर मार्ग रोककर ठहरे और इधर नभानिलाङ्गी ने सब पुतलोंको बुलाया और साथमें लेकर फिर उस वनियेंके घरपर आया उसे देखकर वनियां बोला कि आप अभी तो देखहीं गये थे फिर क्यों आये हैं नभानिलाङ्गी बोला कि चुपरह चोर फिर भागकर तेरेही यहां आया है व-नियां बोला कि यहचोर बड़ा प्रबलहै जब देखो तब इरफिरके मेरेही घरमें आताहै एकवारतो सबधन लेगया अबकी देखिये क्या लेना है यह कहकर उसने कोठरी का तालाखोला प्रहास ने जो उसकी पैंचट सुनी चाहा कि सुरंग की राह से भागजाऊं परंतु जैसेही सुरंगके मुखपर पैररक्खा सर्प ने फुंकारमारी प्रहास ने शीघ्रही पैर खींच लिया और अनुमान किया कि मायाबल से मार्ग सुरंग के रोकदियेगये हैं यह अनुमान करके वह फिर वोरेमेंघुसगया और करवटकेवल लेटकर अपनी थैलीकी चौरा-सियो घुंडियोंको खोलकर थैलीकामुखफैलादिया जिससे वाहर

से थैलीके भीतरका सब वृत्तांत दीखे और अपने शरीरकोअ-नाजमें छुपाकर चुपहोरहा और नभानिलाङ्गी सब बोरोंके अ-नाजमें देखताहुआ उस बोरे पर आया जिसमें प्रहासथा और जैसेही थोड़ासा अनाजहटाया प्रहास तौन दिखाईदिया परन्तु देखता क्याहै कि एक बनहराभरा परमशोभायमान बड़ा लंबा चौड़ा बनाहै और उसमें नानाप्रकारके सुन्दरवृक्ष खड़ेहुएझूम से रहेहैं दूब हरी हरी लहलहा रहीहै पक्षीभांति भांतिकी बोली बोलरहे लता फूलीहुई शोभा देरहीहैं तड़ागोंमें नाना प्रकारके फूल फूलेहुए हैं और उन के किनारे जलपक्षी परम मनोहर क्रीड़ा कर रहे हैं ॥

चौ०। अमिय नीर पूरित जलधारा। परम मनोहर बहे अपारा॥
शीतल मंद सुगन्ध बयारी। डोलति तहां सदाश्रमहारी॥
अतिशोभा कछुबरणि न जाई। देखतही मनजात लुभाई॥

और जो तड़ागउसमें बनेथे सबस्फटिकके थे उसमें निर्म्मल नीर भरा हुआ शोभा देरहाथा और फूलेहुए भांतिभांति के कमल बड़ी शोभा देरहेथे उनकेतटोंपर अप्सराओं की कन्या परम सुंदरी नखशिखसे अद्भुत भूषण और बसन धारण किये हुए बिहारकररहींथीं उनके मुखारबिन्दकी प्रभाके आगे चन्द्र-माभी लज्जितहोताथा और ऐसी सुंदरी सुलोचना और शुभा-ङ्गीथीं कि उनके दर्शनमात्र से संसारमें कोई ऐसा मनुष्य नथा जो मोहित न होजाय आहा क्या सुंदरताहै क्या छबिहै॥

क०। चंपकचमक चारु कुंदनमें कहाओजु केसरी कुसुमकी जुसेंध करें गातकी। कोकिलाकी कूकहूते पावपियूषहूत मधुरमयूषहूत मधुराई बात की॥ मैन काहू मैन छबि मैन द्युतिरहीदबि मैन गिरिधर ऐसी नैन बनि तातकी। देखि दृगभास मृगजात पछितात मनजलजात लजिजात जलिजातजातकी॥

और उस बनके सामने कई नगर परमशोभायमान बसे हुए दिखाई देतेथे उनमें लोगोंके चित्र बिचित्र स्वरूप दिखाई

देतेथे कहीं कोई विहारकर रहाथा कहींकोई कुछ लेरहाथा कहीं दुकानें सजी सजाई बनीथीं कहीं परम सुंदरी स्त्रियां हँसी कर रहीथीं नगरवासियों के घर बड़े ऊंचे २ और रमणीक बने थे यह देखकर नभानिलाङ्घी मारे हँसी के लोटगया और कहने लगा कि प्रहासभी बड़ा भारी मायावीहै जिसने अपनी माया के बलसे इस बोरेमें ऐसा अद्भुत मायाकृत देश रचिदियाहै इस से जाना जाताहै कि वह इसी मायाकृत स्थानमें जा छिपा है परंतु मैंभी तो ऐसा छोटा मायावी नहींहूं जो उसके बनाये हुए मायाकृत देशमें न जासकूं और वहांसे उसको ढूंढ़कर न लेआऊं यह विचार कर वह उस बोरेपर चढ़गया और उस नगरकी ओर जो दिखाई देताथा ताककर धमसे कूद पड़ा और उस थैली में चला गया तब प्रहासने उस थैली की घुंडियां बन्दकरलीं और सँभल कर बैठगया और सोचा कि जबतक यहदुष्ट मारा न जायगा तबतक सुरंगके मार्ग बन्द रहेंगे और तू निकल न सकेगा यहसोचकर उसने पहिले उसका शिरथैलीके बाहिर निकाला और उसके मुखमें मूर्च्छा कर चूर्ण मलकर उसे मू-र्च्छित करदिया और फिर थैली से बाहिर खींचकर तुरंत उस का शिर काटडाला तब तो ऐसा घोर शब्द बढ़ा कि यह जान पड़ताथा कि आकाश फटगयाहै उस कोठरी में आग लगगई वह पुतले सबभस्म होगये और सबनगरपर पत्थर वर्षनेलगे उस समय सर्पोंके भस्म होजानेसे सुरंगके मार्ग खुलगयेथे इस से प्रहास शीघ्र सुरंगमें कूदकर उस गर्त में चला आया और अपना स्वरूप म्लेच्छों कासा बनाकर उस गर्तके बाहिर निक-ला और बनिये की कोठरी में जो आग लगी और कोलाहल हुआ बनियां समझा कि कोई आपत्तिआई इससे घबराकरअप-नी स्त्री और लड़कोंको लेकर भागा और कहता जाताथा कि भागो बड़ीआपत्ति आईहै हाय मारडाला और लूटलिया और

सब घरबार फूंकदिया निदान इसके भागनेसे सबप्रजातो पहि-
लेहीसे भयभीत होरहीथी और ढिंढोराभी सुन चुकीथी सबको
यही अनुमान हुआ कि यातो डांका पड़ाहै अथवा प्रहासके
सहायक उसकी सहायताके लिये आयेहैं और सबका वधकर-
तेहैं यह समझ कर सब नगरमें भगदड़ पड़गई सब घरों के
द्वार वन्द होगये लोग दुकानें छोड़ छोड़कर भागे और प्रहास
जो गढ़ेसे निकलकर नगरमें आया और दुकानोंको सूना पाया
जाल मारमारकर सब पदार्थ लूटने और थैलीमें डालने लगा
और जो एक अथवा दो चार म्लेच्छोंको जाते देखातो लल-
कारा कि ठहरो कहां जाओगे और उछलकर एकके कंधेपरजा-
चढ़ा और खड्गसे दूसरे का शिर काटलिया जिसके कंधेपर
चढ़ाहुआहै उसको भयके मारे न माया करते बनपड़ती है और
न प्रहासको पकड़हीसक्ताहै इसप्रकारसे प्रहासने जहां जिसको
पाया वधकिया अब भागनेवालोंने जो उन मृतकोंकीलोथें वी-
थियों में देखीं सबके जीछूटगये और जिसने जिधरको मुखउठा-
या भागा चलागया म्लेच्छी उससमय मुख ढांप ढांपकर रोती
थीं और कहतीथीं कि हे मायाकृतदेशके रचनेवाले प्रहासके
हाथसे हमारी और हमारे स्वामियोंके प्राणबचे निदान थोड़ी
देरतक प्रहासने नगरको अच्छीप्रकारसे लूटा और बड़ाकोला-
हल जो हुआ विचित्रमाया नंगेपैर और नंगेशिर अपने बाग
से निकलकरदौड़ी और देखा कि नगरमें जहांतहां आगलगी
हुई है और प्रजा सब भागीजातीहै घरघरमें रोनापीटनामचाहै
एक आपत्तिरूपसा दिखाईदेता है इसी अवसर में कुछ म्लेच्छ
रोते हुए आये और विचित्रमाया से बोले कि महारानीजी प्र-
हासने नभानिलाङ्गीका वधकरके सब नगरको लूटलिया यह
सुनतेही वह शिर धुनने और रोनेलगी और बोली कि वहतो
श्री महाराज महेन्द्रका परमाज्ञियपार्षद था हाय अब में महा-

राजको अपनामुख क्योंकर दिखाऊंगी उसकीलोथको तो बता-
ओ कि कहां है कुछ म्लेच्छोंने कहा कि वह बनियेकेघरमें मारा
गया है यह सुनकर विचित्रमाया उसीओरको गई परंतु भयसे
अपने चारोंओर मायासे रक्षाकरली और उधर नगर प्रबन्धक
ने नगारे बजवाकर सब नगरवासियों को आश्वासन किया कि
अपनेअपनेघरमें आनन्दपूर्वकरहैंप्रहासकेसिवाययहांऔरकोई
शत्रु नहींहै सो वहभी अब पकड़ाजाता है यह सुनकर प्रहास
मरुतदत्त बस्त्र ओढ़कर उसीगर्त में चलागया और उससमय
उन नगरवासियोंके चित्त स्वस्थसेहुए और विचित्रमायाने उस
बनियेकेघरपर जाकर नभानिलाङ्गीकी लोथ उठवाई और उस
को एक मायाकृत बिमानपर रखकर आपभी बिमानपर बैठी
और अपने साथ मायारत्नको लेकर रोती पीटतीहुई महेन्द्रके
पास चली और मायामणिको नगरका प्रवन्धकरनेको छोड़गई
परन्तु इस बखेड़ेमें वहसबदिन व्यतीतहोगया और रात्रिरूपी
दैत्य अंधकाररूपी वस्त्र धारणकरके संसारपर राज्यशासनकर-
ने लगा और कालरूपी उसके सेनापतिने तारागणरूपीध्वजा-
ओंको आकाशरूपीदेशमेंलगादिया ॥

दो० अँथवत दिनमणि भानु के भयो निशा मुखकाल।
धरणी सों न भलो भयों पूरिततमकोजाल ॥

उस समय प्रहास कालेवस्त्र धारणकरके उस गर्तसे निक-
ला और विचित्रमायाके बागकामार्ग तो जानताहीथा क्योंकि
वहां से भागकर तो उसगर्त में आयाही था निदान वहां गया
और पाश लगाकर बागके प्राकारपर चढ़गया और देखा कि
सम्पूर्ण बागमेंदीपदानहोरहाहै और मायामणि सिंहासनपरबैठी
हुई है और सैकड़ों राजकाजी म्लेच्छ उसकी उपासना कररहे
हैं दासियां हाथजोड़ेहुए सन्मुख खड़ी हैं और हरजगह प्रहास
के भयसे रक्षक नियत हैं और सभासद बैठेहुए मायामणिसे

अपना अपना मंत्रप्रहासके पकड़ने के विषयमें देरहे हैं प्रहास यह देखकर चुपके से पाशलटकाकर बागके भीतर कूद आया और वृक्षोंकी आड़में ठहरारहा दैवयोग से एकदासी किसी कामको बागके द्वारपरगई थी और वहां से फिरकर आते हुए प्रहासके समीप होकर निकली प्रहासने उसके ऊपर पाशफेंकी और वह उसकेकुंडलोंमेंउलझकरगिरी और चाहतीथी कि पुकार मचावैं कि इतने में प्रहासने मूर्च्छाकर चूर्ण उसकेमुखपर मार कर उसे मूर्च्छितकरदिया और वहीं बैठकर अपनास्वरूप उसका सा बनाया और उस के वस्त्रधारण करके और उसे वहीं छोड़कर उसद्वादशद्वारी में चलाआया जहां और सबदासियां थीं और कामकाजकरनेलगा परंतु इधरउधर फिरफिराकरमूर्च्छाकरपतंगदीपकोंपर डालताजाताथा क्षणमात्रपीछे उनकामूर्च्छाकर धुआं उठा और मायामणि आदि सब वहां के सभासदोंके कपालमें प्रवेश करगया और उससे वेसब मूर्च्छित होगये और जितनी दासियां वहां बैठी थीं वहभी मूर्च्छितहोगईं उससमय प्रहासने देखा कि बागद्वारसे द्वादशद्वारीतकजितने रक्षकखड़े हैं वहसब खटका सुनतेही दौड़आवैंगे यहजानकर वहशनैःशनैः मायामणिके पासगया और उसे उठाकर एककोठरी में लेगया और उसके वस्त्र और आभूषण उतारकर आपधारणकरलिये और अपना रूपउसकासा बनाकर उसे एकसंदूकमें बन्दकर छिपा और आपबाहिरआया और पानीसबपर छिड़ककर सब को चैतन्यकिया और पूछाकि यहक्याकारणहै जोतुमसब अचेत होगयेथे वहबोले हम सबकोभी यहीचिंता है हमनहींजानते हैं कि क्याकारण है तबमायामणिरूपी प्रहासने कहा कि यहमैंने अपने मायाके प्रयोगकी परीक्षालीथी अबमें यहींसेबैठे २ प्रहास को अचेतकरके ढूंढ़लाऊंगी और उसको पकड़कर कैदकरूंगी यहसुनकर सबउसकी प्रशंसाकरने लगे कि यहमायाका प्रयोग

तौ नवीनहीं है इसके पीछे प्रहासने सबरक्षकोंको बुलाकर आज्ञा दी कि तुमसबजाकर नगरके सब महाजन और धनाढ्यबणि-कोंको बुलालाओ यह आज्ञा पाकर वेसबगये और अपने साथ सबको लिवालाये और उनसबसे कहा कि आजरात्रिको हमसे और प्रहाससे फिरसामना है इससे जो प्रहास प्रबल रहातौ सबनगर के लुटजानेकी शंकाहै इससे तुमसबको उचित है कि जो कुछ धनतुम्हारे पासहो सबलाकर यहां जमाकरदो जोयहां से लुटजायगा तौ तुमको धनहम देंगे नहीं तौ तुमजानो और तुम्हारा कामजाने हमसे कुछप्रयोजननहीं है यहसुनकर जो जो महाजन इसकहावत परथे कि पैसा गांठका वहतौ चुपरहे बाकी और सबोंने अपने २ घरजाकर जोकुछ धनउनके पासथा उसे भेजना आरंभकिया प्रहासने उससबधनको एक स्थानपर ढेरकराया और सबदास दासी और सेवकोंको आज्ञादी कि आजआकरहमारेपासबैठो और मद्यपानकरो और कुछइसबात की चिंतानकरो कि हमस्वामीहैं और तुमसेवकहो क्योंकि मद्य-पानकरने पीछे तौ यहविवेक आपही जातारहता है यहआज्ञा पाकर सबसेवक और दास और दासी वहांआकरबैठगये और उस मायामणिरूपी प्रहासने मद्यके घटमँगाकर उसमें आंख बचाकर मूर्छा करचूर्णडालदिया और सबकोमद्य बांटनेलगा जबवेसब मूर्छितहोगये तब प्रहासने प्रथमतौ वहधन जोमहा-जनोंने भेजा था उसेजाल मारकर थैली में डाललिया उपरांत खड्गलेकर म्लेच्छोंके शिरकाटनेलगा उससमय विचित्रमायाके बागमें अग्निउठी और ऐसा कोलाहल मचाजैसा प्रलयकाल में होता है उसको सुनकर सबसेनापति सेनासहित बागके द्वार परआये नगरवासी भयके मारेनगर छोड़करभागे सबनगर में कोलाहलमचगया कोई कहता था अरे प्रहास आगया दूसरा बोलताथा बड़ाबुराहुआ कि विचित्रमायाको मारडाला तीसरा

बोला कि यह दुर्भगातो अपने खसमके पासगई है जोवहदुष्टा मारी जातीतो श्रेष्ठही था जिसने प्रहासको यहां लाकर सबनगर का बधकराया है चौथा बोला कि मायामणितो मारीगई निदान जो जिसके समझमें आताथा वही वहकहता था उस समय बहुतसी स्त्रियां भयसे कुओं में गिरपड़ीं और जिन्होंने अपना धनभेजदिया था वे और भी म्लानचित्त होकर विक्षिप्त से इधर उधर फिरतेथे कि जबमायामणि मरगई तो अबहमारे धनकोकौनबतावेगा और विचित्रमायाकहैगी कि जबमेरीमंत्रिणिहीमारीगई तबतुम्हारा धनकैसानिदान नगरमें तो यहगड़बड़ीथी और उधरसेनाने आकर बागको घेरलिया और म्लेच्छ बागके भीतर आये उससमय तकप्रहासने सबम्लेच्छोंका बध करडाला था परंतु कोठरी में मायामणिके बधकरनेको न जासका म्लेच्छोंको आतेहुएदेखकर मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर अदृश्य होगया और बागसे निकलकर चलदिया उनम्लेच्छोंने भीतर आकर उनमरेहुए म्लेच्छों की लोथें उठवाईं और देखा कि सबबाग लुटाहुआ पड़ाहै जितने राज्यके प्रबन्धकर्त्ताथे सबमरे पड़े हैं उनके सम्बन्धी उनकी लोथों को लेकर रोते पीटतेहुए अपने घरोंको गये निदान वह रात्रि सबको विलाप करतेबीती घर घर रोना पड़ाथा कि इतने में तारानाथ ने लज्जा के मारे अपना मुख छिपाया और दिन नाथने विजय पाकर अपनी रश्मिरूपी ध्वजाको आरोपित किया ॥

दो० । उदय होत दिननाथ के त्यागो इन्दु प्रकाश ।
तमसमूह मिटिजात भो प्रभा कढ़ीआकाश ॥

उस समय प्रहास अपने मार्गको उत्तीर्ण करके अपने गर्त में आया और मार्गमें सबस्थानोंपर सन्नाटा पाया कि घरोंके द्वार बन्दथे और नगरबासी सब भागेहुए थे यह देखकर प्रहास कहताथा कि हमारा आना ऐसाही है कि कोई चैनसे न रहने

पावैगा निदान जब अपने गढ़े में पहुंचा प्रातःक्रिया और विष्णुपूजन से निश्चिंत्य होकर वहीं सोरहा अब यह उपाधी तौ सोया परंतु विचित्रमायाका वृत्तांत सुनिये किवह नभानिलाङ्गीकी लोथलेकर विमानपर बैठीहुई दैवी आपत्तिकी समान आकाशमार्गसे महेन्द्र के पास पहुंची और उसको दंडवत् करके वह लोथ उसके सामने रखदी और आपमेघकी समान अश्रुपातोंको बहाने लगी यह देखकर महेन्द्रने पूछा कि हे सुंदरी इसके जीवितको प्रहासने किसप्रकारसे नाशकिया यह सुनकर विचित्रमाया बोली कि मेरे कष्टकापार नहींहै और फिर रोरोकर सब वृत्तांत कह सुनाया और बोली कि आपतो यहां चुपके बैठेहैं और वह दुष्ट इसीप्रकारसे सब मायाकृत देशको नष्टकरेगा और हाथ न आवैगा यह सुनकर महेन्द्रने बड़ा शोककिया परंतु फिर यहअनुमानकरके कि मेरे शोककरनेसे सबका धीर्य छुटजायगा वह विचित्रमायाको समझानेलगा कि हेरानी लड़ाई में दोनोंहीओरके योद्धामारेजातेहैं इससे तुम अब नभानिलाङ्गी की लोथलेजाकर इसका संस्कारकराओ मैं दूसरा उपायकरताहूं और मैं भी चलताहूं यह आज्ञापाकर म्लेच्छ उस लोथकोउठाकर लेगये तब महेन्द्रने फिर विचित्रमायासे कहा कि मुझको बड़ा भयहै कि प्रहासकुछ तुम्हारा अपमान न करै इससे तुम थोड़े दिनोंतक मेरे पासरहो और मैं किसी औरको उसनगरमें प्रबन्ध करनेको भेजताहूं कि वहप्रहासके पकड़नेका अच्छीप्रकारसे प्रबंधकरै यहकहकर उसने कुछ मायाकरके आकाशकी ओर देखा आकाशके गणोंने निशाकराल म्लेच्छसे जाकर कहा कि तुझको महाराज महेन्द्र बुलातेहैं वह अपने स्थानसे चला और इधर महेन्द्रने पुकारा कि निशाकरालआओ पुकारतेही एक तड़ाकेका शब्दहुआ और वह म्लेच्छ आकाशसे उतरा उसका स्वरूप ऐसा भयंकरथा कि यमदूत सा जानपड़ताथा चारों

आंखें उसकी भट्ठीके समान जलती थीं और मुखसे उसके वा-रंवार अग्निकी लपटें निकलती थीं॥

चौ०॥ दीरघ दंत नैन थरुकेशा। महा कुरूप भयानक भेशा॥
पीनपुष्ट अतिदीरघकायक। अति मायावी नभपथ धायक॥

जब उसने आकर महेन्द्रको दण्डवत्‌की तब महेन्द्रने कहा कि हम तुझको विचित्रमायाके नगरका राज्य इस निबन्ध परदेते हैं कि तू वहां जाकर प्रहासको पकड़कर हमारेपास भेजदे वह किसीके हाथ नहीं आताहै यह कहकर उसको महेन्द्रने राज्या-भिषेक किया और वह अभी जाने नहीं पायाथा कि थोड़ेसे म्लेच्छ रोते पीटतेहुए आये और विनयकी कि महाराज माया-मणिका पता नहीं है और प्रहासने सब राज्य प्रबन्धकर्त्ताओं को मारकर सब नगरके महाजनोंका धन लेलिया है निदान जब वह सब वृत्तांत कहचुके तब विचित्रमायारोनेलगी कि न जाने प्रहासने मेरी मंत्रिणिको क्याकिया उसके रोनेपर महेन्द्र ने अद्भुत जालकी पुस्तक निकालकर देखी और उससे मालूम हुआ कि मायामणि कोठरीमें संदूकके भीतरबन्दहै और प्रहास एक गर्तमें सोरहाहै यह देखकर महेन्द्रबोला कि यदिकोई इस समयजाता तो प्रहास बिना प्रयासके पकड़लियाजाता क्योंकि वह सोरहाहै और यह कहकर चाहा कि मायाकृत पुतला भेजूं परंतु निशाकरालने कहाकि मैं जातेही उस छलीको पकड़कर भेजदूंगा और जो आप पुतलाही भेजतेहैं तो फिर मेरेजानेकी क्या आवश्यकताहै यहसुनकर महेन्द्र ने पुतले को नहीं भेजा और विचित्रमायाने मायारत्नको उसकेसाथ करदिया कि वहां जाकर मायामणिको संदूकखोलकर निकाले निदान निशाकरा-ल एक महोर्गपर सवारहोकर चला और बड़े मार्गको उत्तीर्ण करके विचित्रमायाके नगरमें पहुंचा वहां मायारत्नने सब सेना-पतियोंसे कहा कि महाराज महेन्द्रकी आज्ञाहै कि विचित्रमाया

की जगह इन निशाकरालको अपना स्वामी जानना यह सुन कर वे सब निशाकरालको आदरपूर्वक राजभवनमें लेगये और सिंहासनपर बैठाकर सबनेउसका राज्याभिषेककिया बारहसहस्रघंटे और शंखोंकीध्वनिहुई चारोंओर सुगंधित द्रव्यसुलगायेगये उनकी महक फैलगई सुगन्धित तैलोंके पात्र स्थापित कियेगये सबने भेंटदीं और वेश्या आकर सामने नृत्यकरने लगीं और सब बैठकर उत्तम वारुणीका पानकरने लगे॥

चौ०। उत्तम मधुसों सविधिबनाई। मधुरवारुणी परम सुहाई॥
भरि भरि पानपात्र सबरंजन। करतपानहुइ होयमगनमन॥

सब नगरमें नगाड़े बजवाकर वह राज्याभिषेक इसप्रकारसे घोषित करायागया कि संसार ईश्वरका देश श्रीमहाराजका प्रबन्ध निशाकरालका जो कोई समयके राजाकी आज्ञा न मानेगा माराजायगा और दंडपावैगा आजसे विचित्रमायाका राज्यगया यहांका राजा अबनिशाकराल है उस शब्दके सुननेसे प्रहासजगपड़ा और मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर बाहिरआया और सब नगरको सजाहुआ पाया नये राजाके राज्यपर बैठनेके कारणसे नगरकोअपूर्वही रचाहुआदेखा प्रहासके भयसे सब दुकाने नगरकी बन्दथीं परंतु इस नयेराजाके राज्यपर बैठनेके कारणसे फुलबेचा और तंबोली और सुगंधित द्रव्यके बेचने वालोंने अपनीदुकाने खोलीथीं और फूलोंके प्रकार प्रकारके गहने तांबूलकी बीड़ी आदि पदार्थले लेकर लोग राजमंदिरकी ओर जातेथे प्रहासभी अपना स्वरूपबदलकर उनकेसाथ हो लिया और राजमंदिरमें पहुंचकर एक स्थानपर ठहरगया और देखा कि जिस जिसने फूलोंकी डालियां लेलेजाकर निवेदनकी उनको अशरफियां वहांसे मिलीं सुवर्णको देखतेही प्रहासको लालचने सताया और वह कोई उपाय छलकरनेका सोचने लगा परंतु निशाकराल जब उक्तप्रकार से राज्यपर बैठचुका

तब उसने आज्ञादी कि बजारमें एक घरबड़ाउत्तम मेरेरहनेको खालीकरायाजावै जिसमेंसे मैं चारोंओरको देखसकूं जिससे जहां वह छलीहोवै मेरेमायाबलसे आपसे आप वहां चला आवे यह आज्ञापाकर राजकाजियोंने बीचोबीच नगरमें एक द्वादशद्वारी खालीकराई और उसको सबप्रकारके पदार्थोंसे अलंकृतकराया गद्दी और उपधान लगादियेगये उत्तम आसन बिछवादिये और शय्यापरमअलंकृत दसवादीं जबइसप्रकारसे उसे अलंकृत करचुके तब उन्होंनेआकर निशाकरालको खबर की वह दिनभरतो राजकाज करतारहा और जिससमय दिवा-करने राज्यकरके अंधकाररूपी परदा संसारपर लटकादिया और अपने घरमें तारागणरूपी दीपक प्रज्वलित किये और इन्दुरूपी कमलको आकाशरूपी सभामें दीप्तकिया ॥

सो० । भई निशा जेहि याम तम छायो आकाश में ।
दीपक निजनिजधाम सबजग जन जोरतभये ॥

उस समय निशाकराल चार सहस्र मायावी म्लेच्छोंको ले कर उस द्वादश द्वारीमेंगया प्रहासभी अपनाभेष बदलेहुये उस स्थानके द्वारपर ठहरारहा और वहां जाकर निशाकरालने आ-ज्ञादी कि भोजन लाओ कि खानेपीनेसे निश्चिन्त होकर माया करूं यह आज्ञा पातेही नानाभांति के पटबिछाये गये और उसपर सुवर्ण के थारोंमें भांतिभांति के खाद्य और पेय पदार्थ लाकर स्थापित कियेगये किसी पात्रमें मृगमांसथा किसीमें अ-जामांस था किसीमें अभक्ष था किसीमें फुलका किसी में पुर्तकी रोटी किसी में पूरी कचौड़ी किसी में खीर किसी में शाक इस प्रकार से सहस्रों खाद्य और पेय पदार्थ थे ॥

चौ० । व्यंजन भांति भांतिके नाना । षटरस भोजन अरु बहु पाना ॥
बहु प्रकार के मांस सुहाये । सकल सविधि सों तहां धराये ॥

जब सबपदार्थ रखदियेगये तब निशाकराल अपनेमित्रवर्गों

सहित बैठकर भोजन करनेलगा उससमय प्रहासने भोजन के पदार्थों को लाते और लेजातेहुये देखकर अनुमान किया कि इससमय निशाकरलाल भोजनकरेगा यह जानतेही उसने एक कोनेमें ठहरकर अपनास्वरूप एकपरसैया कासावनाया अर्थात् नोकदार उपानहपहिरे शिरसे मुड़ाइसाबांधा शरीरमें ऊर्द्ध्व वस्त्र ढीलाढाला पहिरा नीचेके अंगमें अधोवस्त्र धारण किया और हाथमें एक थाललिया और उसमें अनेक व्यञ्जन रक्खे उनमें कुछ कचौड़ियां भी रक्खीं उन कचौड़ियों में सौसौ पुरत लगेथे एकपुरतके खोलनेसे सबपुरत पृथक्होजातेथे और सब पुरतोंका स्वाद अलग अलगथा पहलापुरत सलोनाथा दूसरा मीठा तीसरा रसभरा चौथा खट्टाथा इसीप्रकारसे सबपुरतोंका पृथक्पृथक् स्वादथा और इसीप्रकारसे उसमें खजलेभी एकसौ एक पुरतकेबनाकर रक्खे हरएकपुर्तमें अमृतके समान स्वादिष्ट मिष्टरस भराहुआथा और बरफी और पेड़े और लड्डू और मिरचौनियांऔरपापड़औररेवड़ीऔरगूंझा औरगुझियां औरपेठाऔर हलुआसोहन और तिनगिनी और मिष्टखण्ड अर्थात् शकरपारे और अमृती और जलेबी और नुकती और गजक और लुच लुचैयां और मोहनभोग और नानाप्रकारके अचार और मुरब्बे उसथालमें रक्खे और सब व्यञ्जनोंका वरण ऐसा उत्तमथा कि उनकी आभाके सामने रत्नोंकी आभा लज्जित होतीथी ॥

चौ० । कंचनवरण सुथाल सुहायो । रत्न अनेकनि सों जड़वायो ॥
तामेंधरे सुव्यञ्जन नाना । जिनकरस्वादसुअमियसमाना ॥
बरफी श्वेत अपूर्वसुहाई । लखि जिनको मनजात्तलुभाई ॥
मोदक को खावै जोकोई । रससों पृथक अन्नहिं होई ॥
पेड़ा अद्भुत स्वाद बनाये । जो नाहिं चिपकत मुखमें खाये ॥
औरहु लीन्हें व्यंजननाना । तिनकर कहँलग होइबखाना ॥

निदान उक्तप्रकारसे थालको सजाकर सब पदार्थों में ऐसा

विष मिलाया कि खाना तो दूरहै उसके सूंघने और देखने से मनुष्यको मूर्च्छा आजाय और फिर उसथालको हाथमें लेकर उसद्वादशद्वारीके भीतरगया और निशाकरालको दंडवत्करके वह थालउसके सामने रखदिया उससमय निशाकराल आदि ने उनअपूर्व पदार्थोंकी आभाको देखकर उसकी प्रशंसाकी और पूछा कि अरेपरोसैया क्यातू रानी विचित्रमायाका सेवक है वह बोला कि मैं एकपरमेश्वर का सेवकहूं और किसीका सेवकनहींहूं और मुझेकौनअपनी सेवामें रखसकताहै मेरेपदार्थों को तो दीनमनुष्यखाते हैं और उननिर्द्धनोंहीसे मुझको धनमिलताहै धनाढ्योंकातो नामहीनामहै आपनेसुनाहोगा वहीकहावतहै कि ऊंचीदुकान और फीकापकवान॥

दो०। पालौ मति प्रभुडारियो अबुधधनीसों जाय।
जौनखुशामदमें रहत सोनरहौ व्यौसाय॥

आजमैंने श्रीमान्की गुणग्राहकताको सुनकर अपनीस्त्रीका गहना बेचबाचकरये पदार्थबनाये हैं अबमेरी पाकशिक्षाकेगुण की ग्राहकताकरना आपके आधीनहै निशाकराल यहसुनकर हँसा और बोला कि बड़ा स्पष्टवक्ता है क्योंनहो तू अपने गुणमें पक्काहै और यहसंसार का चलन है कि जोकोई पंडित और गुणीहोताहै उसका स्वभावभी अच्छाहोताहै यह कहकर उसने प्रहासको कई सौ अशरफीदीं और उसथालमें से कई प्रकारके व्यंजन उठाकर एक और उत्तमथालमें रक्खें और उन पर सुनहला वस्त्रढककर मायारत्नको बुलाया वह मायामणि को संदूककेभीतरसे निकालकर उससे विचित्रमायाके म्लान चित्त और दुखीहोनेकी बातें कररहीथी निशाकरालके बुलाने परदोनोंजनी चलीआईं उनसे निशाकरालनेकहा कि यहमिठाई का थाल मेरीओरसे श्रीमहाराजको लेजाकर देदेना और विनयकरना कि येपदार्थ दुर्लभहैं इनको आपअवश्यभोग लगावें

और विचित्रमायाकोभी खिलावें यहसुनकर वेदोनों उसथालको लेकरमायाकृतविमानपरसवारहुई और चलदीं और उसनेबाकी जो व्यंजनरहे उनकोलेकर आपखाया और अपनेमित्रवर्गोंकोभी दिया उसको खाखाकर चारोंओरसे सबप्रहासकीप्रशंसाकरनेलगे कि ऐसेस्वादिष्टपदार्थ आजतकनहींखाये उससमय प्रहाससब प्रशंसाकरनेवालोंको हाथजोड़जोड़कर नम्रतादिखानेलगा इस अवसरमें एकनेप्रहाससेकहाकहोजी तुम्हारानामक्याहैवहबोला कि नामतोमेरा स्वादपाकीहै परन्तु लोगमुझे तीव्रपाकीके नाम से बुलाते हैं यहसुनकर वहबोला धन्यहै यथानाम तथागुणः एक बोलादेखियेतो येमिष्टान्नके पक्षी कैसे अच्छेबनायेहैं दूसराबोला कहोजी स्वादपाकी तुमऐसाभी मिष्टान्नकापक्षी बनासकतेहो जो उड़भीसके वहबोला कि हां श्रीमान्‌में ऐसेपक्षी मिष्टान्नकेरचसकताहूं कि वेआपकेसाथघरतक उड़तेहुए जायँ यहसुनकरसब बहुतहँसे और बोलेयहस्वादपाकी तो बड़ागुणी मालूमहोताहै निशाकरालबोला कि यहमनुष्यरत्नोंसे तोलनेकेयोग्यहै परंतु देखो कि ऐसागुणीहोकर फिरभी निर्धनरहै सत्यहै कि (भाग्यं फलतिसर्वत्र नचविद्यानचपौरुषम्) निदान इसीप्रकार से बातेंबनाबनाकर सबव्यंजनखागये और फिर उठकर सबनेहाथ और मुखप्रक्षालन किया और तांबूलखाकर धूम्रपानकरनेलगे उससमय निशाकरालने प्रहाससेकहा कि जो तुझकोमेरीसेवकाईकरना स्वीकारहो तो मैं तुझको पांचसौरुपिया मासिकपर नौकरकरसकताहूंयहसुनकर प्रहासबोला कि जोआपबचजायँगे और आपका जीवितरहैगा तो मैं आपकीनौकरी करूंगा यह सुनकर सबके कानखड़ेहोगये और पूछा कि अरेतैंने यह क्या बातकही प्रहास बोला कि श्रीमान्‌आप प्रहासको पकड़नेआये हैं और वहमहाछली है इससे मैंनेकहा कि आपइसबड़ेकार्य से निवटलें और यहकहकर दंडवत्‌करके बाहरचलाआया और

मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर अदृश्यहोगया और वहींठहरारहा कि देखूंअव परमेश्वर क्याकरता है उससमय विषने अपना गुण प्रकट करना आरंभकिया और निशाकराल का चित्त घूमने और मचलानेलगा और उसने चाहा कि मैं जाकर लेटरहूं परंतु उससे उठा न गया और उसने और म्लेच्छों से कहा कि मुझपरउठानहींजाताहैमेरीदोनोंवगलोंमें हाथदेकरमुझेउठाओ और शय्यापरपौढ़ादो यहसुनकरम्लेच्छोंने कहा कि और वहुत साखाले और उसकी वगलोंमें हाथडालकर उसेलेआये और एकशय्यापर लिटादिया उससमय उसने पूछा कि क्यों भाई क्यामैं कुछअधिक भोजनकरगयाहूं लोगोंने खुशामदसे कहा कि नहीं महाराज लोगइससेभी अधिक अधिकखाते हैं आपने क्याखाया है निदान उसकेसामने तो योंकहा और आपसमें कहनेलगे कि इसदरिद्री दासने ऐसेपदार्थ काहेको कभी खाये थे मारेहोंकेसेरों उड़ागया अववातें वनाता है अव इसकेलिये कोई चूर्णचाहिये ॥

दो० । अधिक न भोजनकीजिये वेदनिकोमतजोय ॥
पाचन तासुनहोतहै विषसमान सो होय १
स्वल्प अहार जेनरकरत सुखीरहत सवकाल ॥
अमिय सदृशसो गुणकरतपचिअहारसोहाल २

इधर इसकी तो यहगति थी और उसकेमित्रवर्गोंकी यह दशाहुई कि सवलोटनेलगे कोई तो अचेतहोगया और किसी को अतीसारहोगया और वहुतोंके पेटफूलगये उससमय निशा-करालका भी पेटफूलकर तोंवाहोगया और जीभऐंठगई यह देखकर सवसेवकदवादारूकेलिये दौड़ने फिरनेलगे परंतु उनका काम पूर्णहोगया अर्थात् निशाकराल कईसौ म्लेच्छों सहित पंचत्वको प्राप्तहोगया उनकेमरतेही महाभयंकरशब्द प्रकटहुये और अग्नि और पत्थरोंकी वर्षाहोनेलगी यहदेखकर सवन-

गरवासी अचेत से होगये और सबप्रबन्धकर्ता उसस्थानको छोड़कर भागे उससमय प्रहास अपना भेष एक म्लेच्छकासा बनाकर उसस्थानके भीतरचलागया और सबमरेहुएम्लेच्छों के वस्त्र और आभूषणोंको उतारकर जालमारकर सबअसबाब वहांकालूटलिया और सबको थैली में रखके चलदिया और मार्ग में जो दुकान मिली उसे लूटलिया और जो म्लेच्छमिला उसका वधकिया इसप्रकारसे क्षणमात्रमें एक आपत्ति खड़ीकर दी और सब नगरकी शोभा धूलमें मिलादी दुहाई तिहाई मचगई सब नगरमें अंधेरागुप होगया और वह उस अंधेरमें नगरको लूटताफिरा नगर प्रबन्धकर्ताभी भयभीत होकर भाग गया निदान इसी लूटपाट में वह रात्रि व्यतीतहुई और सूर्य-रूपी बहुरूपिया रश्मिरूपीपाशलेकर आकाशरूपी नगरमें आ-या और कृष्णमुखी रात्रिने लज्जितहोकर अपनेको छिपाया॥

सो०। उदयभये आकाश मारतंड दिनमणियदा।
फैल्यो विमल प्रकाश चहुंदिशि सबरेजगतमें॥
भयो निशाको नास क्षीण ज्योति तारा भये।
कमलनिकियो विकास नीर भरे सरवरनि में॥

उससमय प्रहास उसीगर्त में उतरगया और श्री विष्णु-भगवान्का पूजनकरके वहीं चुपचाप बैठगया और चित्त से कहनेलगा कि मैं वह विरक्तहूं कि जो अपनी पनहीभी फेंकदूं तो राजालोग उसको अपने शिरपर रखलें धन्य है श्रीविष्णु-भगवान्को कि इस एकाकी अवस्था मेंभी मुझको द्रव्यदेता है निदान यह तो यहांरहा परन्तु अब आगेकी कथा सुनिये कि मायामणि और मायारत्न वह मिष्टान्न और और व्यंजनलेकर महेन्द्रके पासपहुंचीं और दंडवत्करके वह थाल सामने रख दिया और सब वृत्तांत वर्णनकिया महेन्द्र उन अद्भुत पदार्थों को देखकर बहुत प्रसन्नहुआ और विचित्रमाया से बोला कि

देखो ये पदार्थ तुम्हारे रसोइये ने बनाये हैं तुम इतनेदिनोंतक तो वहांकी रानीरहीं परन्तु ऐसे पदार्थ कभी हमको न भेजे विचित्रमाया बोली कि मेरारसोइया ऐसा प्रवीण नहींहै जो ऐसे पदार्थ बनासके यह सुनकर मायारत्नने कहा कि मैंनेसुनाहै कि उसका नाम स्वादपाकी है और वह किसीका नौकर नहींहै यह सुनकर महेन्द्रने कुछ मिठाई थालमेंसे उठाकर चाहा कि खायँ कि इतने में सैन्धने महेन्द्रका हाथ पकड़लिया और कहा कि हमने स्वादपाकीका कभी नामभी नहींसुना वहां प्रहासहै कहीं ऐसानहो कि यह सब उसीका प्रपंचहो यह सुनकर सीतप्रेरक मंत्रीनेभी कहा कि यह सत्य है क्योंकि हमकोभी इतनेदिनहुए और सहस्रों की संख्याका धनभी खर्चकिया परन्तु आजतक इतने पुतोंका खजला नहींदेखा यहसुनकर महेन्द्रबोला कि प्रहास क्या रसोइयाहै जो तुम सब उसकी शंकाकरते हो सीतप्रेरकबोला कि वह बहुरूपियाहै सबकाम जानताहै आप अद्भुत जालकी पुस्तकदेखिये उससे सबहाल खुलजायगा यह सुनकर उसने उस पुस्तकको मँगवाकर जो देखातो उसमें लिखाथा कि यह सबकर्म प्रहासका है उसने निशाकरालको मारडाला जो तू इस मिठाईको खालेता तो तुरन्त मरजाता देख फिर ऐसी भूल कभी न करियो यहदेखकर महेन्द्र क्रोधकेमारे कांपनेलगा और आज्ञादी कि इन व्यंजनोंको पृथ्वीमें गाड़दो उसकी आज्ञासे उस थालके सबव्यंजन पृथ्वीमें गड़वादियेगये औरफिर महेन्द्रने एक पत्र लिखकर एक मायाकृत पुतलेकोदिया और आज्ञादी कि इसको प्रबुद्ध म्लेच्छके पासलेजा वह उसको एक पहाड़की गुफा में लेगया जहां वह म्लेच्छ रहताथा और वह पत्र उसको देदिया उसने उस पत्रको आंखोंसे लगाया शिरपर रक्खा और फिर खोलकर जो पढ़ातो उसमें लिखाथा कि हे प्रबुद्ध म्लेच्छ तुम हमारेपास शीघ्रचलेआओ हमजानाचाहते

हुँ पड़तेही वह म्लेच्छ विमानपर बैठा वह विमान वैडूर्यका बनाथा जब वह आकाशमें मायाबलसे उड़ा यह जानपड़ताथा कि सूर्य निकला है निदान क्षणमात्रमें महेन्द्रके पास जापहुंचा वहां जाकर उसने दंडवत्‌की और भेटदी महेन्द्रने उसे वस्त्र और मानसेपूजा और कहा कि महास विचित्रमायाके नगरमें कईदिनसे है तुम मेरेसाथ चलकर उसे पकड़ो वह बोला कि मैं आपका दास उपस्थितहूं चलिये यहसुनकर महेन्द्रने माया-कृत विमान मँगवाया और उसपर सैन्य और विचित्रमाया और प्रबुद्धसहित बैठकर उसी धूमधामसे जैसा कि प्रथम में वर्णनहोचुका है वहांसे चलदिया थोड़ीदेरमें आगे एक अंधेरी पर्वतोंकी गुफापड़ी वहांपहुंचकर महेन्द्रने कुछ मायाकरके कहा कि हे मयङ्क म्लेच्छ उजियाराकरो यह कहतेही दो चन्द्रमा प्र-कट होगये और उनकी प्रभासे दूरतक उजेराहोगया वहां से महेन्द्रकाविमानआगेबढ़ा और कुछकाल नबीताथा कि विचित्र मायाके नगरमें आपहुंचे उससमय विचित्रमायानेकहा कि महा-राज मैं इसमार्गसे कभी नहींआई आपतो बहुतही शीघ्रआगये महेन्द्रबोला कि यह मायाकृत मार्गथा इसमार्गसे मेरेसिवाय कोई नहीं आसक्ता है निदान जब नगरमेंपहुंचे सब नगरवासी और वहांकेमान्य म्लेच्छलेनेकोआये सबनेमहेन्द्रकीपरिक्रमाकी और विनयकिया कि महाराज हमारेघर लुटगये और सनबन्धी मारे गये हमलोग सब प्रकारसे बिगड़गये आज आपने हमसबपर कृपाकीहै अब हमको विश्वासहै कि हमारान्याउकियाजाय और हम सब अपनेशत्रुको पकड़ाहुआ और दुःखसे पीड़ित देखें॥

चौ०। देश प्रजाको पालन रक्षन। है नृपतिनको धर्म सनातन॥
शरणागतअरुदीनहिपाहत। जे नृपते आनँद अवगाहत॥

तब महेन्द्रने सबको आश्वासितकिया और राजमन्दिर में आया वहां सेवकोंने निशाकराल और २ म्लेच्छोंकीलोथें उठवा-

कर सब भवनको झाड़बुहारकर निर्मलऔर अलंकृतकिया उस समय महेन्द्रनेआज्ञादी किसब नगरमें ढिंढोरापिटवादियाजाय कि सबलोग अपनी २ दुकानेंखोलें और घरखोलकर आनन्द पूर्वक अपना २ कार्यकरें और किसीबातका भयनकरेंऔर जो कुछ उनका मालगया है अथवा अब जायगा वहसब राज्यसे मिलेगाऔर प्रहास अपनेदंडकोपहुँचेगा यहआज्ञापाकर नगर में ढिंढोरापीटागया लोग उससे प्रसन्नहुयेऔर अपनी२दूकानें खोलकर अपना अपना कामकरनेलगे फिरसे नगरकी नवीन रचनाहुई और महेन्द्र विचित्रमायाका हाथपकड़कर दुबारा सिंहासनपरबिराजमानहुआ उससमय विचित्रमायाने मुसकुरा-कर कहा कि॥

दो०। घरसे परहि निकासिके हमहिं बुलायो मित्र।
हमरे राजा करत नित खंडन मंडन चित्र॥

महेन्द्रबोला कि हे प्यारीतुमइसबातसे अपने चित्तमें ग्लानि मतमानो तुमतौ मेरेप्राण और मनकी स्वामिनहो और सब मा-याकृत देशकी रानीहो इससे जबकभी ऐसीबात प्रबन्ध देशके करनेके प्रयोजनसे कीजावे तबतुमको चित्तमें ग्लानता न कर-नीचाहिये यह सुनकर विचित्रमायाने लज्जित होकर आंखोंसे कटाक्षकिया और फिर दृष्टिको भ्रमाकर शिर नीचेको झुकालि-या महेन्द्र उसके इसभावपर मोहितहोगया॥

दो०। जोप्रिय चितको प्रेमसो निरखहि बोलहि बैन।
काको मननहिं हरहिसो कोनहिं पावै चैन॥

निदान सबने आकर महेन्द्रको भेटेंदीं उससमय महेन्द्रवि-चित्रमाया और अपने मित्रवर्गों सहित उठकर बागमें आया और सिंहासनपर बिराजकर आनन्दपूर्वक नाचहोनेकी आज्ञा दी आज्ञा होतेही नाच होनेलगा॥

सो०। परम प्रफुल्लित गात बैठे आनँद मग्न सब।

देखि देखि हर्षात पुर युवतिन कर नृत्य तहँ ॥

निदान इसी आनंद में महेन्द्र बैठाहुआथा कि एक माया-कृतहस्त ने एकपत्र लाकर दिया महेन्द्र ने उसे खोलकर पढ़ा सत्यकलाने लिखाथा कि हेपुत्र मेराचित्त तेरे देखने को बहुत चाहताहै इससे मेरेपास आकर मुझे अपना स्वरूप दिखाजा जिससे मेराचित्त स्वस्थहोवै यहपढ़कर महेन्द्रबोला कि हेप्रबुद्ध मैं देवीखण्ड में अपनी नानी के पास जाताहूँ तुमभी ऐसामत करना कि निशाकरालकी भांति पकवानके लोभमेंआकर अपने प्राण गंवाओ किंतु इसीसमय प्रहासको पकड़कर उसकावध करो और हे रानी विचित्रमाया तुमभी कुछशोच विचार न करना जिससमय वह छली प्रपंची पकड़ाजाय उसीसमय उसका शिर काटडालना निदान सबको अच्छी प्रकारसे चौकसकरके वह चलदिया और उसकेजानेके पीछे प्रबुद्धी ने अपनीमायाकी अर्थात् अपने शरीरके रुधिरसे मृत्तिकाको गूंधकर उसने एक मूर्त्ति बनाई और फिर कुछ ऐसीमायाकी कि वह मूर्त्ति सजीव होगई उससमय प्रबुद्धीने उससे पूछा कि कहो प्रहाससे लड़ने के विषयमें तुम क्याकहतेहो वहमूर्त्ति बोली कि उससे लड़नेको जो एकमन मायाकीजाय तो दशमन बुद्धिचाहिये उसकासन्मुख अच्छेअच्छे तो करहीनहींसक्तेहैं तुम्हारी किनमेंगिनतीहै मुझसे कहो तो मैं आकाशके तारेतक तोड़लाऊं परंतु प्रहासको मैं नहीं पकड़सकताहूं यद्यपि मैं जानताहूं किवहगर्त में बैठाहुआ है परंतु मेरीसामर्थ्य उसकेपासजानेकी नहीं है यहसुनकर प्रबुद्धी निराशहोगया और कहनेलगा कि प्रहासपर कोईमाया न चलेगी और वह पकड़ा न जायगा मेरी मायाके अधिष्ठाता देवता नेभी जवाबदेदिया अब क्याउपाय कियाजाय इसीचिंतामें वह बैठाहुआ था कि अकस्मात् उसके चित्तमें ध्यान आया कि प्रहास लालची बड़ाहै इससे उसमहान् बुद्धिमान् और छली

प्रहास रूपी पक्षीको रत्नरूपी अनाजके लोभसे यत्नरूपी जालमें फँसाना उचितहै ॥

सो० । प्रबल शत्रुको पाय बुधिवर करत उपाय सब ।
करि थोड़ो व्यवसाय छलसों अरिकोबसकरत॥

निदान एकबात नवीन शोचकर उसने आज्ञादी कि मेरेलिये पालकीलँआओमें उसपरबैठकर सबनगरमें भ्रमणकरूंगा और सबप्रजा कईबार लुटीहै इससे गली गलीमें फिरकरमें रत्नऔर अशर्फियां लुटाऊंगा यह आज्ञा पातेही विचित्र मायाके कहार उत्तमोत्तम वस्त्रधारणकिये कांधेपर पालकी लियेहुए आये वह उसपर सवारहुआ और साथमें असंख्य सुवर्ण और रत्नोंसे भरेहुये संदूकसेवकोंकेशिरपर रखवाकर चलदिया और उसमृत्तिकाकी मूर्त्तिकोभी अपनेसाथ लेलिया और वह पालकीकापाया पकड़ेहुए बातें करताहुआ साथहुआ जबबीचाबीच नगरमेंपहुँचा तबदोनों हाथसे अशर्फी और मुक्ता भरभरकर लुटानेलगा उससमय सबदीन और निर्धनी आकर वहां इकट्ठेहोगये और सब नगरवासी उसधनके सरोवरकी खबर पाकर जल पक्षियों की भांति वहां आनेलगे और मुक्तापानेके लालचमें अपनेमुखरूपी सीपको खोलकर खड़ेहोनेलगे और आशाको पकड़ेहुये टकटकी लगाकर देखने लगे सबकी दृष्टि उसी ओरथी और एक अपूर्व कोलाहल मचा हुआ था ॥

चौ० । लूटहु लूटहु धन यह लेहू । धनसोंहीन रहहु जनिकेहू ॥
होहुअयाच्य आजु धनलेके । मेटहु सकलदुःखमुदगहिके ॥

प्रहासनेजो यहकोलाहल सुना मरुतदत्तवस्त्र ओढ़करउस गर्त्त से निकला और एक अपूर्व बातदेखी कि एक म्लेच्छपीनसपर बैठाहुआ मुट्ठीभरभरकर रत्न और अशर्फियां फेंकरहाहै और यह जानपड़ताहै कि सुनहरी बूंदोंसे मेघ वर्षरहाहै यहदेख

तेही प्रहासके मुखमें पानीभर आया और चित्तसे कहनेलगा कि इस धनको लेनाचाहिये उससमय बुद्धिने बहुतकुछ प्रेरणा की कियह जालतेरेही लिये बिछाया गयाहै और तेरेही फँसाने को यहकूप खोदागयाहै बुद्धिमान् ऐसेधनकी इच्छा कभी नहीं करतेहैं और अपनेको ऐसेधनके लालचमें डालकर नहींफँसाते हैं देखचौकसहो आगेमतबढ़ो जहां फूलहोताहै कांटाभीवहांअ-वश्यहोताहै और जहां धनकाकोषहैवहां बिषधर सर्पभीहोताहै॥

चौ०। जबलगि प्राप्तकाल नहिंहोई। तबलगि वस्तुमिलति नहिंकोई॥
प्राप्तकाल जाको जबआवत। दुखसुख लाभालाभ करावत॥

यद्यपि बुद्धिने बहुत प्रेरणाकी कि इससे दूररह परंतु लोभ कब मानताहै और प्रहास अशर्फियां देखकरकब किसीकी सुन ताहै चित्तसेकहताथा कि जोदुःख नहींउठाताहै वह सुखभी कभी नहीं पाताहै चलोडरना क्याहै तेराकोई क्या करलेगा॥

श्लोक। उद्योगिनंपुरुषसिंहमुपैतिलक्ष्मी दैवेनदेयमितिकापुरुषावदन्ति। दैवंनिहत्यकुरुपौरुषमात्मशक्त्या यत्नेकृतेयदिनसिद्ध्यतिकोत्रदोषः १॥

यहबिचारकरके उसने अपनास्वरूप एक म्लेच्छकासा बनाया और जहां सबम्लेच्छ लूटरहेथे वहीं चलागया और जैसेही प्र-बुद्धीने रत्न और अशर्फियांफेंकी और लोगउसे लेनेकोगिरे तैसे-ही प्रहासने जालमारा कि सबधन और लोगोंकी पगड़ी और टोपीतक उसमें आगई और जोलोग झुके हुयेथे उन्होंनें नीचेसे रत्न और सुवर्ण उठाया परंतु जैसेही सीधेहुये और मुट्ठीखोल कर देखनेलगे कि क्यापायाहै तैसेही देखा कि हाथमें सिवायमट्टी के कुछनहींरहा निदान चकितहोकर देखनेलगे कि कौनलेगया औरवहमूर्ति जो प्रबुद्धीकेसाथथी उसनेभीदेखा कि अबकीकिसी नें कुछनहीं पाया यह देखतेही वह जानगई कि प्रहास आगया और प्रबुद्धीउसमूर्तिसे क्षणक्षणमें पूछताजाताथा कि प्रहासआया या नहीं अबकी जोउसनेपूछा तो उसमूर्तिने कहा कि अशर्फियां

शीघ्रता से लुटाओ प्रहासआयाहै यहसुनतेही उसने अनर्गल धनफेंकना प्रारम्भकिया और कहा कि लोभाइयो लूटोसबलोग मुट्ठियां बांधकर पृथ्वीपर झुके और प्रहासनेभी झुककर जाल मारा उस मूर्तिने प्रहासको जालमारतेहुये देखकर अच्छीप्रकार से पहिंचाना और प्रहासअभी सीधा न होनेपायाथा कि वहमूर्ति उछलकर प्रहासकेऊपर जा चढ़ी फिर तो वही हुआ कि ॥

दो०। लोभ सदृश रिपु जग नहीं लोभ महादुख दाय।
बुद्धिमान खग लोभसों फँस्यो जाल में जाय॥

जब प्रबुद्धीने उसमूर्तिको प्रहासकेऊपर सवारदेखा तब वह हँसा और अपनी पीनसको फिरवाकर बागमें विचित्रमाया के पासआया और वहपुतला प्रहासको घोड़ाबनाये एड़ियांमारता हुआ बागकी ओर लेचला उससमय प्रहासने बहुत चाहा कि पुतलेपर जालमारूं परन्तु उसकाहाथ न उठसका औरजो और किसीओरको जानाचाहता तो वहभी नहींहोताथा अन्तको निराशहोकर बागहीकीओरचला और चित्तसेकहा कि तेरेलालच ने तुझको फँसायाहै और चित्तको समझाताभी था कि घबड़ावे मत परमेश्वर तेरा रक्षकहै तू मारा न जायगा॥

दो०। आपति सों जो डरत नहिं परहित जो तन देत।
सो शूरनमें मुकुटमणि भुक्ति मुक्ति दोउ लेत॥

इसी प्रकारसे चित्तको समझाताहुआ विचित्रमायाके बाग के समीप पहुँचा उधर प्रबुद्धीको हँसतेहुये देखकर विचित्रमाया बोली कि तुमतो ऐसे प्रसन्न आयेहो मानों प्रहासको पकड़लायेहो वहबोला कि महारानीजी मायाकर्ताकी कृपासे ऐसाहीकुछ है जैसा आप कहती हैं विचित्रमाया का उसकाविश्वास न पड़ा इतने में वहपुतला प्रहासको लेकरबाग में आया और सबने देखा कि पुतला एकम्लेच्छको हांकताहुआ लियेआताहै विचित्रमायाने उससे पूँछा कि त कौनहै प्रहासबोला कि मैं अद्भुत

परमेश्वरका दूतहूं उनका एकपदार्थ पृथ्वीपर गिरपड़ाथा उस
के ढूंढ़नेको मैं यहां आयाहूं प्रबुद्धीबोला कि महारानी आप
इसके प्रपंचमें मतआइयेगा यह प्रहासहै मैं ने अच्छीप्रकारसे
पहिंचानकर इसको पकड़ाहै यह कहकर उसने कुछ मायाकी
कि एक बादल उमड़कर आया और जल वर्षनेलगा प्रहास
पर जो उसकी बूंदें पड़ीं उससे उसका वहकृत्रिमस्वरूप नष्टहोग-
या और जो निजस्वरूप था वहप्रकटहोगया उसको देखतेही
विचित्रमायाने पुकारकरकहा कि क्योंरे प्रहास फिरहमहमी हैं
और तू केवल एक प्रपंची बहुरूपियाहै अबतुझको तेरेछल
करनेका फलमिलैगा जैसा कि कहाहै ॥

सो० । करिसुकर्म सहिकष्ट अकरमकरहु कदापिनहिं ।
अकरमको फलनष्ट होतसदादोउलोक में ॥

देख तो अब तेरा क्याहालहोताहै प्रहासबोला यह सब एक
स्वप्न कीसी बातहै अरी विचित्र माया तुझसी नचनी न जाने
मैं ने कितनी नहीं मारडालीं देख सूर्याङ्गी को मारा और प्रभा-
करी का शिर काटडाला अब तेरी और महेन्द्रकी बारी है यह
बातें जो सभासदोंने सुनी सब घबरागये क्योंकि सबकोई यह
बात अच्छी प्रकारसे जानतेथे कि जब कभी वह पकड़ा हुआ
आताहै म्लेच्छोंकी दुर्दशा और उनका बधकरके चलाजाताहै
उस समय बहुतसे म्लेच्छ बोले कि भाई आज फिर कोई आ-
पत्ति आया चाहती है यहांसे चलो ऐसा न हो कि हमारे शिर
मूड़ेजाय और दुर्दशासे मारे जायँ एक बोला कि प्रबुद्धीजी प्र-
हासको पकड़कर तो लायेहैं परन्तु जो जीतेहुये बच जायँगेतो
हम उनको दण्डवत करेंगे दूसरेनेकहा भाई तुम यथार्थ कहतेहो
मुझेतो विचित्र मायाभी बचती नहीं दिखाई देतीहै भाई हम तो
अभी से घरको जाते हैं जब इस प्रकारकी भयभीत बातें प्रबुद्धी
ने सुनी तब अनुमान किया कि यहां बड़े २ मायावी इकट्ठे हैं

परन्तु प्रहासके पकड़े जानेसे सब काँपतेहैं इससे निश्चयहै कि मैं भी माराजाऊं यह समझकर उसके पेटमें भी पानी हो गया परन्तु विचित्र मायाने प्रहासको माया करके स्तंभित करदिया और वहपुतला उसके ऊपरसे उतरपड़ा उससमय प्रहासबोला कि कलरातको मुझसे अद्भुतने कहाथा कि प्रबुद्धी माराजायगा सो मुझको अबयह आश्चर्यहै कि न जाने प्रबुद्धीका बधहोगा अथवा मेरा शिर काटाजायगा यह सुनकर प्रबुद्धी रोने लगा और सभासद सब एक एक करके उठगये उससमय मायारत्न ने कहा कि हे रानी विचित्रमाया यह प्रहास नहींहै इसको आप छोड़दीजिये वह बोली कि क्या तू बावली हुई है जो मेरे प्राणों पर आजायगी तोतो मैं छोडूंगीही नहीं और एकपत्र प्रहासके पकड़ेजाने के विषयमें लिखकर एक मायाकृत पुतलेके हाथों महेन्द्रके पास भेजा वहपुतला पत्रलेकर दैवीखण्डमेंगया और महेन्द्रकोदिया वह उससमय अपनी नानीसे वार्त्तालाप कररहा था पत्र पढ़तेही क्रोधित होगया और बोला कि मैं उस दुर्भगा से कहआया था कि पकड़तेही प्रहासको मारडालना फिर पत्र भेजनेकी क्या आवश्यकताथी क्यों इतनी विलम्बकी और यह कहकर उसने अपने साथके एकम्लेच्छ हिमध्वी नामसे कहा कि तुमजाकर प्रहासका बधकरो देखो विलम्ब मतकरना यह आज्ञापाकर हिमध्वी वहांसेचला और वहपुतला जो पत्रलेकर गयाथा फिरकर विचित्रमाया के पासआया और बोला कि प्रहासकेबध में आपके विलम्बकरनेके कारणसे महाराज बहुत अप्रसन्नहुये और आपको बुराभलाभी कहा और हिमध्वी को भेजाहै वह आयाही चाहताहै यहसुनकर विचित्रमायाने आज्ञा दी कि बागके बाहिर जो मैदानहै उसमेंशूली खड़ीकीजाय और सब नगरमें ढिंढोरा पीटदियाजावे कि वहां आकर इसदुष्ट बहुरूपियेकी दुर्दशाको देखें और अपनेमनके दुःखकोदूरकरें और

सबसेना वहां आकर सबस्थान को घेरकर खड़ीहो यह आज्ञा होतेही तुरंतशूली खड़ीकीगई सेनासब सन्नद्धहोकर आगई और सब नगरमें ढिंढोरापीटागया और चारोंओर देखो देखो और चलोचलोकाशब्दमचगया इसीअवसरमें हिमाध्वीभी आपहुंचा और प्रहासको शूलीके समीपलेचले उससमय विचित्रमायाभी अपना शृङ्गार करके सवारहुई बाजे बजनेलगे नगरमें गली गली और दुकान दुकानपर स्त्री और पुरुषों के ठट्ठलगगये कोई कहताथा कि भाई इस बहुरूपिये ने हमारे घरके घरनाश करदियेहैं बस्तियांकी बस्तियां उजाड़दी हैं आज माया कर्त्ताको धन्यहै कि यह पकड़ागया दूसराबोला कि अभी क्याहै जबइस का बधहोजाय और फिर सजीव न होवे तबजानो कि मायाकर्त्ता ने इसके उपद्रवोंसे हमको बचाया किसीने कहा कि अभीकल कीबातहै कि इसनेसब जगहकैसा उपद्रवमचायाथा कि त्राहित्राहि पड़गईथी आज वहीबिनाकिसी सहायकके पकड़ाहुआहै निदान इसी प्रकारकी बातें कहकहकर सब म्लेच्छ प्रसन्न होतेथे परंतु उनमें जो बुद्धिमान् दूरदर्शीथे वह ज्ञानकीबातें कहतेथे कि भाई सुनो चाहे मित्रहो अथवा शत्रु हमतो जो बातयथार्थ होगीवही कहेंगे देखोयह बिचारने की बातहै कि यह प्रहास बहुरूपधारिणी विद्याका आचार्य और महाराज शत्रुंजयका मित्र और परम मंत्रीहोकर आज शत्रुओंके बशमें पड़कर इसप्रकारसे माराजाय कि उसकी देहका संस्कारभी नहो और चील और काक उसके मांसकोखायँ यहसब इससंसार चक्र और कालगतिका कारणहै कालकीगति बड़ीप्रबलहैउसकोकोई उल्लङ्घननहींकरसकताहै॥

क०। पृथुनल जनक ययातिमानधाता ऐसेऐसे भूपभये यश क्षितिपर छाइगे। कालचक्रपरे शक्रसेऊर न होत जात कहांलों गनावों विधिवासर बिताइगे॥ बेनीसाज सम्पतिसमाज सजिसेना कहां पायन पसारि हाथ खोले मुखबाइगे। क्षुद्र क्षितिपालनकी गनतगनावे कौन रावणसे बलीते

वुल्लासे विलाइगे ॥ १ ॥ बन्धुबिरोधकरो सिगरो झगरोनितहोत सुधारस चाटत । मित्रकरै करनी रिपुकी धरनीधर देखि न न्याउ निपाटत ॥ राम कहै विपहोत सुधाघर नारि सतीपतिसों चित फाटत । भा बिधिनाप्रति कूलजवै तव ऊंट चढ़ेपर कूकरकाटत ॥ २ ॥

निदान नगरवासीतो इस प्रकारसे वार्तालाप कररहेथे और प्रहास ईर्षासे उनका मुख ताकताथा और चित्तमें कहताथा कि हे विश्वम्भर हे शरणागतभक्त वत्सल क्यामेराकाल इसीनगर में लिखाथा कि जिसके कारणसे मेरा ऐसा अपमान होरहाहै हायमैं अपने स्वामी महाराज शत्रुंजयके दर्शनभी न करनेपाया हायअब रानी निशाकरी आदिका सहायक सिवाय परमेश्वरके कोई नहीं रहा और यहां कौन ऐसामेरा मित्रहै जो मेरीइसदशा का वृत्तांत मेरे मित्र वर्गोंसे जाकर कहै अथवामेरे दुःखको देख कर करुणा करै हां एक मायावतीहै परंतु न जाने वह कहांहै और किस कष्टमेंहै ॥

चौ० । अंतकाल ममपुरजन जानी । ममवध देखनआये मानी ॥
चलौंचलौ भाषत चहुंओरा । ममवध उत्सव आजअथोरा ॥
जानति है वह अथवा नाहीं । कहैजाय कोऊ तेहि पाहीं ॥
लखनयोग तव उत्सव आजू । देखनचलहुत्यागिसव काजू ॥

निदान यहांतो प्रहास मायावतीकी याद कररहाथा और उधर वह सुंदरी जब महेन्द्रसे अपराध क्षमाकराके अपने घरगई अपने प्राण प्यारेके विरहमें अधीर्यहोकर रोनेलगी और फिर उसीप्रकार से विकलहोकर नीचे लिखीहुई अष्टपदी अर्थात् ग़ज़ल पढ़नेलगी ॥

अष्टपदी ग़ज़ल ॥

विरहतेरेमें ऐ प्यारेदशा ऐसी हमारीहै । नहींहैचैन कुछतनमें नयनसे नीर जारीहै ॥ दो० ॥ तन अकाशमें उठतहै विरहघटाघन घोर । नैननीर वर्षत रटत पिय पपीय जिय मोर ॥ नहीं विधिवामसों वशहै लिखायहही लिलारीहै । दो० ॥ सूख्योतन पंजरभयो रह्योन नेकहुमास । कुंजलालतव

दरशहित बैठिभरतहैं सांस ॥ तरसखाके दरसदो अबाकै चलनेकी तयारी है। दो० ॥ नैन न नींद न भूखतन गयेसूखिहैं प्रान। कुंजलाल जबतें चुभे नैन सैनके बान ॥ बिनातेरे अरे प्यारेहमें अब जानभारीहै। दो० ॥ कहा करों कासों कहों बिथामोर अतिघोर। कोऊ मेटन हारनहिं बिनमेरे चितचोर ॥ जिसैहो प्रेमरूपी रुजदवा उसकी नियारीहै। दो० ॥ पहिले प्रीति लगाइके जियलीनों ठगिमोर। बिरह अग्निमें डारिके अबकत भये कठोर ॥ नजानें क्याहुआहै हमसे अब अपराध भारीहै। दो० ॥ अग्निदाह ते अधिकअति दहति चांदनी मोहि। बिरह अगिनि तनमें उठति दुसहक ठिनतेहि जोहि ॥ लगीहै तनमें अबतौ प्रेमकी फाँसी तुम्हारीहै। दो० ॥ अग्नि झारते मेहझरि अधिक जरावंत गात। वाके परसत जरततन यहि देखत बिलखात ॥ तुम्हारे नेहके बशमें परीजान अबहमारी है। दो० ॥ प्यारे तेरे दरशहित अबलगि राखेप्रान। वेगिआइ अबदो दरश नहिंतो करत पयान ॥ कहो कुंजलालसे जाकर कि अबतौ जानआरी है।

निदान इसी बिकलतामें उसको स्मरणहुआ कि प्रहास वि-चित्र मायाके नगरमें पकड़ा गयाथा और फिर छुट गयाथा परंतु अबनहीं मालूम कि उसकी क्या दशाहै चलकर उसकी खबर लेनाउचित है परंतु फिर यह अनुमान करके कि मेरेजानेमेंबद-नामीहोगी उसने मायासे दोपुतले बनाये और उनको आज्ञादी कि तुम वहांजाओ जहां प्रहासहै और जो कुछ उसका हालहो वह हमसे आकरकहो यह आज्ञापाकर वे पुतले विचित्र माया के नगरमें जाकर ठहरे और वहांजो कुछप्रहास उपद्रव करता था उसका वृत्तांत वह पुतलेआकर मायावतीसे कहतेथेवह उस को सुनकर प्रसन्न होती थी और प्रहासकी प्रपंच रचनाको जानकर चकित होतीथी कि बड़ाही प्रबल छली है जिसने मायावी म्लेच्छोंकी नाकमें दमकररक्खा है इसके उपरान्त एक दिन पुतलों ने प्रहासके पकड़ेजाने और उसके बधकी तैयारी होनेकावृत्तांत आकरसुनाया सुनतेही उसके मुखकावर्ण उड़गया चित्त मलीनहोगया और हृदयधड़कनेलगा और रोकर आकाश

की ओर देखा और चित्त से कहा कि जो प्रहास मारागया तो प्राणप्यारे से मिलने का सहारागया ॥

दो० । बिनजाये नहिंचैनतन चलिवेको बलनाहिं ।
उभय प्रकार न बनत कछु कहांजाउँ केहिपाहिं ॥

अन्त में लाचारहोकर वहबहुतरोई और मायाकृत विमान पर बैठकर बड़ीशीघ्रता से वहां आकरपहुंची वहां प्रहासशूली के पास बैठा था और सहस्रों स्वार्थी म्लेच्छ वहां इकट्ठे थे और चांडाल वधिक अपने खड्गोंको शिलापर पैनारहे थे और बहुतसे किलकिलाते थे और विचित्रमायासे मारने की आज्ञा पानेकी इच्छासे खड़ेथे और यहसबको सुनातेथे ॥

दो० । पक्षीकणके लोभसे फंसें जालमें जाय ॥
चिड़ीमारको कहहुतब कहादोषहै भाय १
जाकरआयो कालढिग अवशिमरैगोसोय ॥
नृपआज्ञासोंवधकरत वधिकदोषनहिंकोय २

इसी अवसरमें हिमाध्वी विचित्रमाया से आज्ञालेकरगया और खड्गको नंगाकर प्रहास के शिरपर आकरखड़ाहुआ उससमय प्रहासने अपना मुखउत्तरकीओर फेरलिया और अपना मरणकालजानकर एकाग्रचित्तकरलिया और श्रीविष्णुभगवान् का स्मरणकरके उसी जन्ममरणसे रहित सच्चिदानंद के ध्यानमें लयहोगया ॥

क० तोसों एकतूही और दूसरो न राजारामतेरेहरिवे हैं लोक सुरनरनागरे । सोई नरधन्य जिनकीने तपयज्ञजापसोई बड़भागजासों तोसों अनुरागरे ॥ आपतन देखियेनदेखोकर तूतमेरी अधम उधारिबेकी तेरे शिरपागरे । मोसेअपराधी हैं न तोसे हैं सहनहारमोसे निरगुणी हैं न तोसेगुणआगरे ॥

निदान प्रहास तो परमेश्वरके ध्यानमें लीनथा और उधर हिमाध्वीने जाकर खड्गनिकालकर जैसेही हाथमारनेको ऊँचा किया तैसेहीमायावतीने मायाकरके बड़ेऊँचेसे एकचक्रभ्रमाकर

मारा कि वहहिमाध्वीकी भुजाको काटकर खड्गसहित दूरलेगया यहदेखकर सबसेना चकितहोकर देखनेलगी कि यह आपत्ति कहांसेआई उसीसमय मायावतीने कुछऐसी मायाकी कि बिजली ऐसेतेजसे कौंधी कि सबकी आँखें बन्दहोगईं और उसी अवसरमें वहहस्तरूपहोकर गिरी और प्रहासको लेकर आकाशमार्गी हुई यह देखकर विचित्रमाया और प्रबुद्धी आदि माया बलसे उड़तेहुए उसके पीछेदौड़े जबदूर निकलगये तब मायावती ने प्रहास के स्वरूप का एकपुतला बनाकरडालदिया और वह कलाखाताहुआ पृथ्वीकी ओर चला उसको देखकर विचित्रमायाने अनुमान किया कि मेरी मायाके प्रभाव से जो कोई प्रहास को लियेजाता था उससे छूटगया है यहअनुमान कर के उसने उसे रोका और पकड़कर अपने बाग में ले आई और वधिकोंको देकर आज्ञादी कि इसका शिरशीघ्रकाट डालो उन सबके लौटजानेपर मायावती बड़ीशीघ्रतासे उड़ती हुई अपने बागमेंआई और अपनी दासियोंसे खड़ेखड़े कहा कि मैं प्रत्यक्षखण्ड में अपनीमौसी कमलांगीके यहांमिलूंगी तुमसब मेरामाल और सबधनलेकर वहीं आजाओ यहकहकर वहमाया कृत बिमान परबैठी और प्रहासको जो मायाकृत वेगके कारणसे मूर्च्छित होगयाथा चैतन्यकिया और उसे लियेहुए मायाकृत नदीकी ओर चली ॥

दो०। सोबिमान सुंदरपरम रत्नजटित द्युतिधाम।
मायाबलसों चलतभो वायुवेग समग्राम ॥

जब मायाकृत नदीपर पहुँचे तब मायावती प्रहासको हाथमें लियेहुए उसनदीमें कूदपड़ी इस नदीके पारजानेके कईमार्ग हैं एकतो वहहै कि जहांहोकर समीररूपा प्रहासकोलेकर गईथी जिसकीकथा ऊपर वर्णनहोचुकी है और दूसरी राहयहहै परन्तु पहलीराहको तौ सब मान्यमायावी जानते हैं और इस दूसरी

राहको विचित्रमाया और महेन्द्र और मायावतीके सिवाय और कोई नहीं जानताथा इसके सिवाय मायावती और भी बहुतसी गुप्तबातोंको जानतीथी कि उसका प्रसंगआगे वर्णनहोगा निदान उससमय मायावती जो मायाकरके उसनदीमेंकूदी कुछ कालतक हिलती भुलतीहुई चलीगई उपरांत एकऐसेस्थानपर पहुँची कि वहां प्रहासकीआंखें खुलगई और उसने देखा कि चारोंओर पानीभरा हुआहै और ऊपरभी नदी है नीचेभीजल अथाह वहरहाहै परन्तुजहां वहखड़ा हुआहै तहां थलहै उस जलमें सहस्रों म्लेच्छ मत्स्यरूपी भ्रमणकररहे हैं और नदीभी बड़ी बड़ी तरंगें लेरही है और जल अत्यन्तनिर्मलहै और पानी के बीचमें एकलोहका फाटक लगाहुआहै और उसमें बड़ाभारी एकताला पड़ाहुआहै मायावती ने एकताली अपने पाससे निकाली और उसतालेको खोलकर फाटकके इसपारआई पार आतेही वहफाटक फिर बन्दहोगया उससमय प्रहासकीआंखें फिर बन्दहोगईं और फिर क्षणमात्र पीछे जो आंखें खुलीं तो उसने अपनेको नदीके उसपार प्रत्यक्ष खण्डमेंपाया और अपने सामने मायावतीको खड़ाहुआपाया प्रहासने उससमय श्रीविष्णु भगवान्‌को बड़ीभक्तिसे बारम्बार दण्डवत्‌की उससमय मायावती अपने मुखारबिन्दसे मधुरबाणीकेसाथ इसप्रकारसे बोली कि मैंने प्रेमके कारणसे इतनाअपमान सहाहै मैं आपकी दासी आपको नदीकेपारलाईहूं अबआपमुझको राजपुत्र इन्द्र विक्रम के पास पहुँचादेनेका नियमकीजिये और मुझे वियोगके दुःखसे बचाइये क्योंकि मैंने राजपुत्रके प्रेमकेकारणसे अपना घरबार छोड़दिया औरसबहितू और कुटुम्बियोंसे सम्बन्धतोड़दिया अब देखिये कि प्रारब्ध क्यादिखाताहै और कौनआपत्ति आतीहै ॥

क० तबतौबखानीमिजबीरता प्रमाणीकै प्रेमकेनिबाह भारगरबगरूरेहौं ।
जानसो पियाकै कह्यो प्रथम पयान हरिचन्दअबबैठेकित दुरि दूरिदुरेहौ ॥

हायप्राणनाथ विनुभोगत अनेकविथाखोई सुखआशालागिअवलेमजूरेहो।
लाजौंतनतजिकैनजाओलजवाओमोहिंहाहामेरेप्राणनिरलज्जतुमपूरेहौ॥

प्रहासने उसके परमप्रेमकीउमंग और राजपुत्रके दर्शनों की अत्यन्त लालसाको देखकर राजपुत्रकेसाथ संयोग और मिलाप करानेका वचनदेकर उसके चित्तको प्रसन्नकिया और बहुतसा धैर्यदेकर कहा कि हे मायावती थोड़ेही कालमें तुम्हारा प्राण-प्यारा तुमसे मिलैगा और तुमको बड़ाआनन्द प्राप्तहोगा अब तुमरानी निशाकरीकी सेनामें चलकर निवासकरो॥

दो०। चलिअबसबसे मिलहुतुम रहहु प्रेम भरपूर।
विरह विथाको करहुकम प्रिय मिलबोनहिंदूर॥

यदि संसारमें जीवन शेषहै तो एक दिन अवश्य तुम्हारा प्यारा तुमको मिलैगा चित्तको मलीनकरना व्यर्थ है॥

दो०। यहजग एकसराइ है इकआवत इकजात।
हिलिमिलिरहिबो उचितयहँ सुनहुहमारीवात॥

प्रहासके उक्तशिक्षायुक्त और आश्वास न करनेवाले वाक्यों को सुनकर उसपरम सुंदरीके हृदयसे विरहजनितज्वर दूरहोगया और उसका मुखारविन्द प्रफुल्लित कंजकी भांति विकासित हो-गया उससमय उसने अपने कमलदलरूपी अधरोंको मृदुतासे चलायमानकरके मकरन्दरूपी वाक्योंको इसप्रकारसे प्रहासको पानकराया कि इससमय मेराजाना निशाकरीकी सेनामें श्रेष्ठ न होगा क्योंकि प्रथमतो महेन्द्र मेरापीछा करैगा दूसरे मेरे सब मनुष्य मेरीमौसीके यहां आवेंगे और जो मुझको वहां न पावैंगे तो बहुतव्याकुल और विकलहोंगे इससे उचितहै कि आपभी वहीं चलिये थोड़े दिनों में अवसरपाकर निशाकरी की सेनामें चले आवैंगे प्रहासको भी यह मंत्ररुचा और विचारकिया कि इसकी मौसीभी हमारी साथी होजायगी परन्तु फिर भी संदेह दूरकरनेको पूछा कि ऐसा तौ नहो कि तुम्हारी मौसी भी तुमसे

छलकरै मायावतीबोली कि नहीं मुझको अपनी मौसीपर पूर्ण
विश्वासहै निदान ये बातेंहोहीरहीथीं कि एकओरसे एकबड़ाभयं
करम्लेच्छप्रकटहुआ यहम्लेच्छइसबनकानिवासीथा और नाम
उसका चित्रदन्तथा उसनेजो प्रहास और मायावतीकोबातेंकरते
देखासमझा कि मायावती प्रहाससेमिलगई है यहअनुमानकरके
वह ललकारकरबोला कि अरे दुष्टातू महेन्द्रसेविमुखहोकर इस
बहुरूपियेकेसाथ निकलआईहै अबमेरेहाथसेकहांबचकर जाय-
गीउसको सुनकरप्रहासभागा और जो पर्वतनिकटमेंथा उसपर
चढ़गया और मायावती ने उससे कहा कि अरे दुष्टतू क्यों अपने
प्राण खोना चाहताहै हमसे बात मतकरै जा अपनारास्तापकड़
यहसुनकरचित्रदन्त डाटकरबोला कि मैं तुझको कदापि न जाने
दूंगा किन्तुपकड़कर महाराज महेन्द्रकेपास लेचलूँगा तबमाया-
वती ने कहा कि तू अपनीस्त्रीको क्यों रांड़ कियाचाहताहै अच्छा
जो तेरी यही इच्छाहै तौ जोकुछ तुझसे होसकै सोकर अपनेबल
भर कुछउठामतरक्खे यहसुनतेही उसनेमायाकरके नारिकेलि
अस्त्रकाप्रयोगकियामायावतीने उसको व्यर्थकरडाला औरमाया
करके अग्निगोलकमारा उसनेभीउसकोरोका और उड़कर पहाड़
पर चलागया वहांप्रहासबैठाहुआ था परंतु उसनेप्रहासको नहीं
देखा युद्धकीघातोंमें उसकामन लगाहुआथा जबउसने मायाव-
तीकी प्रयोग चञ्चलतादेखी तब सोचा कि यह महाराजमहेन्द्र
की प्रियाहै यों न मारीजायगी इसकावध खड्गसे करना उचित
है यहसोचकर वह खड्ग निकालकर आपड़ा उससमय प्रहासने
देखा कि स्त्री और पुरुष की लड़ाई है खड्गयुद्ध में मायावती
हारजायगी यह सोचकरउसने एकपाषाणको गोफनमेंरखकर
भ्रमितकिया और ताककर ऐसामारा कि उसके लगनेसे चित्र-
दन्तका शिरभुट्टासा कटकर दूरजापड़ा उसकेमरनेपर महाको-
लाहलमचा और बाणीहुई कि चित्रदंत मारागया यहदेखकर

मायावती बहुत प्रसन्नहुई और गोफनको देखकर बोली कि यह झींकाकैसाहै प्रहासबोला कि यहभी एक युद्धकरनेका अस्त्रहै इसकेपीछे दोनोंने मंत्रकिया कि अब कहींछुपरहैं और रात्रिको मायाकृत विमानपर बैठकर चलैंगे और एकपर्वतकी कन्दरामें छुपकर बैठरहे और जब सूर्य्य आकाशमण्डलके मार्गकोउत्तीर्ण करके पश्चिमदिशामें जाछिपा और पूर्वकीओरसे चन्द्रमण्डल ने प्रकाश किया ॥

सो०। छिपेजायजब भानु निशिछाई तब जगतमें।
रक्तवरण कुरुशानु चन्द्रबिम्ब विकसत भयो॥

रात्रिको दोनों मायाकृत विमानपर सवारहोकरचले और एक देशमें पहुंचे जो मायाकृतदेशके प्रत्यक्षखण्डका एकबड़ालम्बा चौड़ाखंडथा इसदेशके वासीहृष्टपुष्ट और प्रसन्नथे और नगरोंमें चित्रविचित्र और अपूर्व घरबनेहुयेथे शोभावहांकी देवनगरी कीसीथी निदान दोनों उसशोभाको देखतेहुये राजमन्दिरमेंआये वहां रानीकमलांगी सिंहासनपर विराजमानथी मायावतीने उसको दण्डवत्की और उसनेउठकर उसकोकण्ठसे लगाया प्यार किया और पूछा कि बेटी तेराआना क्योंकरहुआ यहसुनकर उसने अपने मधुरेवाक्यरूपी फूलोंसे सम्पूर्ण वृत्तांतरूपीबाग को प्रफुल्लितकरदिया और सबहाल कहकर अपनीपीठ दिखाई औरकहा किमेरे वस्त्रोंको नुचवाकर महेन्द्रने मेरी यहदशाकीथी उसको सुनकर कमलांगी बहुतरोई और बोली उस मरे महेन्द्र को मैंजीताजी पृथ्वीमें गाडूं और जहां तेरीदाईने हाथधोयेहों वहांसातबार उतारूं जिननिगोड़ेने तुझेमाराहै वह वर्णसङ्कर अपने राजपर घमण्डकरताहै लोदेखो मेरीबेटीको ऐसामाराहै कि लोहू लुहानकरदियाहै निदान अच्छीप्रकारसे बकझककर वह मायावतीको अपने बागमें लाई और वहां प्रहासके लिये एक उत्तमस्थानपर रत्नजटित शय्याबिछवादी और उसकीसेवा

केलिये दासियां नियतकरदीं और मायावतीसे कहा कि यहांसे मायाकर्ताका मठ समीपहै चलो हमतुम चलकर आजअपने मायाके प्रयोगोंको सिद्धकरें और आज रात्रिको वहींरहें क्योंकि महेन्द्रसे युद्धकरनापड़ेगा मायावतीबोली किअच्छा चलो और उसके साथहोली और दोनों मायाकर्ताके मठकीओर चलीगई उससमय प्रहासने यह अनुमानकरके कि इनके पीछे जोकोई म्लेच्छआया तो मुझको पहिंचानकर पकड़लेजायगा उसने अपना स्वरूप एकम्लेच्छकाला बनालिया और आनन्दपूर्वक उसशय्यापर लेटरहा अब विचित्रमायाका हालसुनिये किजब वह प्रहासके स्वरूपके पुतलेको लेकरआई और उसका शिर-कटवाया तो देखा कि वहकेवल एकमृत्तिकाका पुतलाथा यह देखतेही वहक्रोधसे लालहोगई परंतु अबक्या करसकतीथी प्रबुद्धीसेबोली कि बड़ाबुराहुआ वहछलीछूटगया उससमय सब नगरवासी उसहालको जानकर मनमलीन होगये महेन्द्रभी इस अवसरमें अपनी नानीके यहांसे लौटकरआगया और विचित्र माया आदिको मलीनचित देखकर पूछा कि इस उदासीका क्या कारणहै विचित्रमायाने सब वृत्तांत कहसुनाया उसकोसुनकर महेन्द्रने आज्ञादी किएक म्लेच्छजाकर देखआवे कि मायावती अपने घरपरहै अथवानहीं यह आज्ञापाकर कई म्लेच्छमाया-वतीके स्थानपरगये और वहां उसको न पाकर दासियोंसे पूछा कि मायावतीकहांहै उन्होंने कहा किहम कुछनहीं जानती हैं क-लसे कहींको गईहुईहै यह सुनकर म्लेच्छ महेन्द्रके पास आये और सबवृत्तांत कहा उसको सुनकर महेन्द्रबोला कि हेविचित्र-माया यहमायावतीका कामहै तुमने उसका अपराधमुझसे क्षमा करवाकर यहलज्जाउठाई अबमुझको उसका वधकरना सबसे पहले उचितहै क्योंकि वह मायाकृत देशके बहुतसे गुह्यमार्गों कोभी जानतीहै इसीअवसरमें मायाकृत पक्षियोंने आकर कहा

कि महाराज चित्रदन्तने मायावती और प्रहासको रोकाथा प-
रंतुवह मारागया यहसुनकर पूर्णविश्वास हुआ कि मायावतीभी
राजसे विमुखहोगई उससमय नागप्रस्फुरमंत्री बोला कि प्रहास
कात्रुटना बड़ाबुराहुआ अब युद्धकठिनहोगा तब महेन्द्रने अ-
द्भुतजालकी पुस्तक देखी और उससे विदितहुआ किमायावती
कमलांगीकेयहांगईहै यहजानतेही उसनेअपनी सभाकेम्लेच्छों
मेंसे एकम्लेच्छ खड्गप्रहारीनामसे कहा कि तू जाकर उस दुर्भ-
गामायावतीकोपकड़ला वहआज्ञापातेही चलदिया और उसके
जानेपर महेन्द्रने दोर्दंडनामी म्लेच्छसे कहा कितूभी जाकर खड्ग-
प्रहारीकी सहायताकर क्योंकि मायावती बड़ीप्रबलमायाविनी
है कदाचित् खड्गप्रहारी से पकडी न जासके यह आज्ञापाकर
यहभी चलदिया परंतु खड्गप्रहारी वहां पहिले पहुंचा प्रहास
उससमय शय्यापर लेटाहुआथा और दासियां उसकी सेवाकर
रहीथीं उनसे जाकर खड्गप्रहारीने पूछाकि मायावती कहांगईहै
वहबोली किवहतो यहां नहींआईहै उसनेकहा कि अच्छामुझ
से छिपकर कहांजायगी मैं बिनाउसे पकड़े न जाऊंगा औरवह
दुष्ट प्रहास न जाने कहांहै जिसने उसे खराबकररक्खाहै यह
सुनतेही प्रहास रोताहुआ शय्यापरसे उठा खड्गप्रहारीनेपूछा
कि क्याहै प्रहासने कहा कि यहांस्त्रियोंको पुरुषतो मिलतेनहीं हैं
कमलाङ्गी मुझको पकड़लाई है और रात्रि दिन मुझको अपनी
सेवामें रखतीहै आप कृपाकरके मुझकोयहांसे लेतेचलिये और
दोनोंहाथोंसे उसकी बलैयांलेकर मूर्च्छाकर तैलउसकेमल दिया
वहउसके प्रभावसे मूर्च्छितहोगया और प्रहासनेखड्गनिकालकर
चाहा कि उसकाशिर काटडालें किइतनेमें दोर्दंडवहांआगयाऔर
प्रहासको खडगनिकालेहुये देखकर हस्तरूपहोकर गिराऔरप्रहा
सको लेउड़ा यह देखकर वहांकी दासियोंने हल्लामचाया कि वह
मरालियेजाताहै परन्तु इसीअवसरमें प्रहासने उसीखड्गको जो

उसने खड्ग प्रहारीके मारनेको उठायाथा दोर्दंडकी भुजामें मारा उसकी भुजा कटगई और प्रहास छुटकर पृथ्वीपर गिर और मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर अदृश्यहोगया और अपनास्वरूप मायावती की दासियोंकासा बनाकर वहां फिर चलाआया इसी अवसर में दोर्दण्डभी वहां आया और खड्गप्रहारी को जो मूर्च्छितपड़ाथा उठाकर लेगया इतने में थोड़ीरात्रि रहगई और मायावती और कमलाङ्गी मायाकर्ता के मठसे लौटकर आईं और उन्होंने दासियोंसे पूछा कि प्रहास कहांहै वह बोली कि उनको एकम्लेच्छ पकड़कर लेचलाथा परन्तु उन्होंने खड्ग से उसकीभुजा काटकर अपनेको छुड़ालिया और फिरउड़कर कहीं चलेगये यहसुनकर मायावतीने कहा कि मैं उनको ढूंढ़ने जाती हूं कहीं ऐसा नहो कि वे किसी आपत्तिमें पड़जायँ यह कहकर जानाचाहती थी कि प्रहासने उसका हाथ पकड़कर कहा कि मैं दासीका रूप धारण कियेहुये यहांही हूं तुम अपना उपायकरो उससमय कमलाङ्गीबोली कि मेरा एक मायाप्राकारहै वहांचलकर आज रात्रिमें विश्रामकरो जो महेन्द्रभी आवैगा तोभी एकबार न पासकैगा यहकहकर वे दोनों प्रहाससहित चलदीं और उधर दोर्दण्ड खड्गप्रहारीको लेकर एकपहाड़परआया वहां उसको उसने चैतन्यकिया और सब वृत्तांत कहकरबोला कि प्रहास तुमको माराही चाहताथा कि मैं यहां उठालायाहूं अबचलो हम तुम प्रहासको ढूंढ़ें वह मेराभीहाथ काटगयाहै यह कहकर दोनों जने प्रहासको चारोंओर ढूंढ़तेहुए फिर मायावतीके मकानपर आये परन्तु सबघर खालीपाया यह देखकर उन्होंने मंत्रकिया कि अब ढूंढ़ते कहांफिरें लाओ इसघरमें आगलगादें जहांकहीं कमलाङ्गी और मायावतीहोंगी अपनाघर जलतादेखकर आप आजायँगी उससमय हमपकड़लेंगे यहमंत्रकरके उन्होंने आग लगादी मायावती और कमलाङ्गी घर जलताहुआ देखकर

दौड़ीं और मायावलसे जलवर्षाकर अग्निको शान्तकिया उधर दोर्दण्ड और खड्गप्रहारी उनसेलड़नेकोबढ़े उससमयएकदासी ने मायावतीसे कहा कि तुमघबराहट में प्रहासको मायाप्राकार में छोड़आईहो ऐसा नहो कि वहांउनपर कोईआपत्ति आजाय दैवयोगसे यहबात खड्गप्रहारीने सुनी और विचारकिया कि दोर्दण्डको यहीं छोड़ो और मायाप्राकारमें चलकर प्रहासको पकड़ लाओ क्योंकि वह वहां एकाकी है यह विचारकर वहमायावल से आकाशमें ऊंचा चढ़ाचलागया और वहां से मायाप्राकारको पहिंचानकर मायावलसे उसस्थानपर उतरा जहां प्रहास खड़ा हुआथा और उसेपकड़कर लेउड़ा दोचार दासियां यहदेखकर चिल्लानेलगीं कि लियेजाताहै उसको सुनकर मायावती श्येनबन कर दौड़ी और अपनी दासियोंसे सबवृत्तांत सुनकर खड्गप्रहारी के पीछेहुई कमलांगीनेभी उसकेसाथ जानाचाहा परन्तु वहबोली कि हे मौसी तू दोर्दण्ड से लड़ और अपनेघरका प्रबन्धकर मैं पकड़ेलाती हूं यह सुनकर दोर्दण्डने अपने चित्तमें कहा कि बड़ा बुराहुआ खड्गप्रहारी अपनाकाम करके प्रहासको लेगया अब उसीकानाम होगा और महाराजसे पारतोषिक पावैगा यहसोच कर यहभी उसकेपीछे हुआ इसी अवसरमें वहरात्रि व्यतीतहुई अंधकारदूरहुआ और सूर्यकानिर्मलप्रकाश आकाशमेंछागया॥

सो०। अस्त निशा पतिजान सकुचीं कुमुदिन सकल जग।
उदय भानु को मान खिले कमल सरवरनि में॥

दोर्दण्ड जो वहांसे चला उस ओरको जानिकला जहां उपहास म्लेच्छकारूप धारणकियेहुये पर्वतकेसमीप बैठाथा उसने पूँछा कि भाई सवेरेही सवेरे कहांचले यहसुनकर दोर्दण्डभी नीचे उतरआया और बोला कि भाई तुमने और भी कुछसुना है मैंने खड्गप्रहारी के प्राण प्रहासके हाथसे बचाये और वह मुझी को धोखादेकर प्रहास को पकड़करलेगया और मुझे खबरतक नहीं

की उपहास उससे सबवृत्तांत सुनकर बोला कि वह बड़ाछली है चलो मैं उसको चलकरपकडूं यह कहकर उपहासने उसका हाथपकड़लिया और उसको लेकरचला और उधर खड्गप्रहारी जो प्रहासको लेकरचला मार्गमें उसको एक म्लेच्छी महा मायाविनी नाम मिली उसकेहाथमें एकमायाकर्ताकृतदण्डथा उस दण्डका यह प्रभावथा कि जो पृथ्वीमेंमारे तो पृथ्वीको पाताल तक फोड़दे और जो आकाश में ऊंचाकरे तो आकाश हिलने लगे निदान उसनेदेखा कि एकम्लेच्छ एकमनुष्यको लटकाये हुये आकाशमार्गसे जारहाहै देखतेही उसने उसदण्डको ऊंचा किया वहदण्ड खड्गप्रहारीकी टांगमें जाअड़ा और उसके कारणसे वहआगे न बढ़सका किन्तुवहीं उतरआया तबउसनेपूँछा कि तू कौनहै और यहकिस बनमानुपको तू बनसे पकड़लाया है वहबोला कि यह प्रहास बहुरूपियाहै मैं ने इसको मायावतीके पाससे पकड़ाहै वहबोली कि अरे मरे तू क्या विक्षिप्तहोगयाहै मायावती प्रथमतो महाराजकीप्रियाहै दूसरेवहमायाविनी इतनी भारी है कि मैं उसका सामना नहीं करसकती हूं तू क्योंकर प्रहासको उसके पाससे पकडलाया चल झूठे दूरहो यहकहकर उसने छड़ी जोउठाई खड्गप्रहारीका कुछ बश न चला और प्रहासको छोड़करभागा और महेन्द्रकेपासआकर सबवृत्तांतकहा उसकोसुनकर महेन्द्रने क्रोधकिया और कहा कि अब मैं ऐसे म्लेच्छको भेजताहूं जोदोनोंको पकड़लावै उससमय नागप्रस्फुर और सीतप्रेरक मंत्रियोंनेकहा कि हमको आज्ञाहो तो हमजायँ उसनेकहा कि तुमठहरो और एकम्लेच्छ चित्रकाल नामी से कहा कि तुमजाकर महा मायाविनी और प्रहास दोनोंको पकड़ लाओ यहसुनकर वह आकाशमार्ग से उडकरचला परन्तु यहां महामायाविनी ने अपनी दासियों को आज्ञादी कि उत्तमबस्त्रों को बिछाकर फूलोंकेपात्र सन्मुख स्थापितकरदो और खानपान

की सामग्रीलाकर धरो यह आज्ञापातेही उनदासियोंने रचना करके उसपर्व्वतको बाग बनादिया अर्थात् रंगबिरंगे फूलोंसेयुक्त पात्रोंको इसप्रकारसे चुनचुनकर लगाया कि उसकी शोभा बड़ी अपूर्व्व होगई ॥

चौ० तरुवर फूले फले सुहाये। पांति पांति बहु भांति लगाये ॥
फूलनिकीरचना बहुकीनी। सुंदर शोभितपरम नवीनी ॥

जब उक्त प्रकारसे वह स्थान अलंकृतहोचुका तब महा मायाविनी की आज्ञासे प्रहास वहां बैठगया उससमय उसने पूछा कि हे प्रहास तैंने बड़े२ मायावियोंको किसप्रकारसे मारा है प्रहास बोला कि मेरी क्या सामर्थ्य है अद्भुत परमेश्वर जो चाहते हैं सो करते हैं उन्हों ने मेरेसाथ अपने मुख्यगण कर दिये हैं पहिलेभी एकगणने मुझको पानी में पहुंचायाथा और दूसरेने पानीकोचीरकर हटायाथा तब मैं सूर्यप्रभाकेपास पहुं-चाथा और वहां मैंने उसकावधकिया अबभी मेरेसाथ चालीस गण हैं वेही मेरीसहायता करते हैं निदान ये बातें होरहींथीं कि मायावती वहांआपहुंची सब दासियोंने उसे प्रणामकिया और महा मायाविनीभी उसका सत्कारकरनेकोउठी और उसको आ-दरसे बैठाकर पूछा कि आपके महेन्द्रसे विमुखहोने का क्या कारण है वह बोली कि उसमरेने थोड़ीसीबातके पीछे मेरेकोड़े लगवाये और फिर सब वृत्तांतकहकर बोली कि तुमभी हमसे मिलजाओ देखो आनन्दा और निशाकरीका महेन्द्रने क्या कर लिया यह सुनकर उसने ऊपरसे कहा कि अच्छा परन्तु चित्त में बिचार किया कि इसको और प्रहासको धोखे से पकड़कर महेन्द्रकेपास लेजाऊं यह बिचारकर उसनेमायावतीसेकहा कि अबतो मैं तुम्हारी साथीहूं अब मेरे यहां जोकुछ दालदलिया बनाहै उसको खाकर मुझे आनन्ददीजिये मायावती बोली कि मुझे भोजनकरने में कुछ निषेधनहीं है मंगवाइये यह सुनकर

वह भीतरउठकरगई और भोजन में मूर्च्छाकर चूर्ण मिलाकर दासियोंसे लिवालाई और थारों में प्रकार २ के व्यंजन अपने हाथसे चुनकर कहा कि भोगलगाइये तब मायावतीने प्रहास के सामने थाररखकर शपथदिवाई कि आप भोगलगावें प्रहास ने चुपके से कहाभी कि इस भोजन में कुछ छल है परन्तु वह बोली कि कुछ चिन्ता नहीं है परमेश्वर रक्षक है निदान दोनों जने उस भोजनको खाकर मूर्च्छितहोगये उससमय महामाया-विनीनेचाहा कि दोनोंको मायाकृत बिमानपर बैठाकर महेन्द्रके पास लेजाऊं परन्तु चित्रकाल जो वहांसेचलाथा सो वहां आ पहुंचा और ललकार बोला कि अरी महामायाविनी तेंने महा-राज महेन्द्रके अपराधीको छीनलियाहै अब मैं तेरे झोंटे पकड़ कर लियेचलताहूं महामायाविनी ये बातें सुनकर बोली कि अरे दुष्ट तेरी यह सामर्थ्यहै अभीजो दासियोंको आज्ञादेदूं तो मारे उपानहोंके शिरपर एक बाल न रहे यहसुनकर चित्रकाल ने नारिकेल अस्त्रका प्रयोगकिया उसने उसेरोका और अग्नि-गोलक मारा और दोनों में लड़ाईहोनेलगी परन्तु दैवयोग से मायावतीभी चैतन्य होगई और उठकर बोली अरे चांडाली कुलटा देखतो तेरी क्या दशाकरतीहूं तैंने मेरेसाथमें छलकिया यह सुनकर महामायाविनी घबराई और चित्रकालसे बोली कि तू मुझसे क्या लड़ता है मायावती और प्रहास दोनों वह मौ-जूद हैं हम तुम दोनों मिलकर इनको पकड़ें निदान चित्रकाल और महामायाविनी दोनों मायाकृत अस्त्रलेकर मायावती की ओरचले उससमय मायावतीने एक स्फटिककापात्र निकालकर कुछ मायाकी और उसपात्रको आकाश में उछाला उछालतेही तत्काल एक तड़ाके का शब्दहुआ और चारोंओर से बादल घिरआया वायु परमशीतल चलनेलगी और एक बिमान आ-काशसे चक्करखाताहुआ पृथ्वीपरउतरा उसपर एकस्त्री चतुर्दश

वर्षकीवयकी परमसुंदरी उत्तमवस्त्र धारणकियेहुए बैठीथी और हाथ में पानपात्रलिये और सामने मद्यके घट स्थापितकियेथी सुंदरता उसके स्वरूपकी क्या बर्णनकीजाय वह निर्दोषअङ्गी गौरवर्णी कुरंगशावकनयनी चन्द्राननीछवि और शोभाकी धाम थी उसके मुखारबिन्दकीप्रभा सूर्यकी आभाकोभी मलीनकरती थी अधर उसके महामृदु और ऐसे रक्तथे कि लालमणि और माणिक उनके सामने काले दीखपड़तेथे दांतों की पंक्ति महा मनोहरथी और उज्ज्वलता ऐसीथी कि गजमुक्ताओंकी द्युतिभी उनके सामने अस्तहोजाती थी ॥

क० । चन्द्रमुखी चपलाली ललीलखि लालमनोजकी मों जब बाढ़ै । दैरसहासके कूप कियौं पतिप्रेमके पूरनको यह खाढ़ै ॥ यौंरघुनाथ बिलोकिबसै मुसिक्यातही देती सुधाजनु काढ़ै । मोहती मोहनके मनको मन मोहनीकी ये कपोलकी गाढ़ै ॥

वह सुंदरी आकर वहां स्थितहुई और उसने एकही कटाक्ष में चित्रकालका चित्त मोहितकरलिया और महामायाविनी को विक्षिप्त बनादिया और वह दोनोंजने प्रेमसम्बन्धीपद उसके सामने आकर पढ़नेलगे ॥

दो० । नेह न नैननिको कछू उपजी बड़ी बलाय ।
नीरभरे नित प्रतिरहैं तऊ न प्यास बुझाय ॥

क० । एक पलो न लगें पलकें लखकें लखिवे केहि लागी चटी । नीर भरी निशिद्यौसरहैं न मिटैं तऊ भूरि तृषा उपटी ॥ आठहुयामतपैं तरपैं उपचारहूसों न घटै न घटी । यह प्रीतिलगी नाहिं आंखिनको कोउपापकी व्याधिप्रलय प्रकटी १ कहा कहौं प्यारीजू वियोगमें तिहारेचित विरहअनल लूकभरकि भरकिउठै । कैसे कै बिताऊं दिन योजनके हाहा कामकर लै कमानमोपै तरकि तरकि उठै ॥ भूलै नाहिं हँसनि तिहारी हरिचन्द तैसी बाँकी चितवन हिय फरकि फरकिउठै । बेधि बेधि उठत विशीखे नयन बान मेरेहियमें कटीली भौंह करकि करकिउठै २ ॥

जब वे दोनों उसकेपासआये तब उस स्त्री ने एक पानपात्र

भरके चित्रकालकोदिया वह उसको पीगया पीतेही उन्मत्तहो गया और ताली बजाबजाकर नाचनेलगा इसकेपीछे उससुंदरी ने दूसरा पानपात्रभरकर महामायाविनीको दिया वहभी पीगई और पीतेही बुद्धिहीनहुई और दोनोंजने एक दूसरेके गले में हाथ डालकर नाचनेलगे और उन्मत्तहोकर बकनेलगे॥

जयकरी

आजु मद्य सब पी वहु आय। मद्यसदृशनाहकछु सुखदाय॥
जे नहिं पीवत यह मकरन्द। लहतनते कबहूं आनन्द॥
मद्यहि निन्दत ये नर यत्र। अपगति पावत ते सर्वत्र॥
मद्य सदृशनहिं कछु जगआन। पीवहु पीवहु छोंड़ि प्रमान॥

इसप्रकारसे बकतेझिकते चित्रकालने महामायाविनीकोनग्न करडाला और वहउसकेसाथ रमणकरनेपर उद्यतहुई उससमय उससुन्दरीने जो विमानपर विराजमानथी बोली कि हमसे प्रेम करके तुम दोनोंने दूसरेसे क्यों प्रेमकियामेरातो वहवाक्यहै कि॥

चौ०। सहबजो करिहौ लाख बुराई। लड़िहौं जो कहुँ आंख लड़ाई॥

इससे अबतुम दोनोंलड़कर मरजाओ और हमारेप्रेमियोंमें अपना नामकरजाओ यहसुनतेही चित्रकालने नारिकेलिअस्त्र का प्रयोगकिया और उधरमहामायाविनीने निम्बुकअस्त्रका प्रयोगकिया निदान उन दोनोंकेअस्त्र एकदूसरेकेहृदयमें प्रवेशकर गये और दोनों उसीसमय मरगये मरतेही उसपहाड़पर आग लगगई और बड़ाकोलाहल हुआ और महामायाविनी ने जो जो स्थान और पदार्थ मायासेरचेथे वे नष्टहोगये और जो घर मायारचित न थे और दासियांरहगईं और वहस्त्री जो मायावती की मायासे प्रकटहुई थी वहअन्तर्द्धान होगई प्रहासने मायावतीकी बड़ी प्रशंसाकी और जालमारकर सबअसबाब महामायाविनीकेघरका लूटलिया इसके पीछे मायावती प्रहास को मायाकृत विमानपर बैठाकर अपनीमौसीकेघरआई यहां माया-

वतीकीदासी और दास उसका सबअसबाबलेकर आईहुईथीं उनको देखकर मायावतीने अपनीमौसीसेकहा कि अबआपभी अपनासब असबाब और धनलेकर निशाकरीकी सेनामेंचलिये यहसुनकर उसने अपने सेवकोंको आज्ञादी कि सबअसबाब लदवाकर रानीनिशाकरीकी सेनाकी ओरचलो आज्ञा पातेही उन्हों ने सबअसबाब छकड़ोंपर लदवाया और निशाकरीकी सेनाकी ओरचले और कमलाक्षी और मायावती और प्रहास मायाकृत विमानपर बैठकरआकाश मार्गीहुये उससमय प्रहास ने कहा कि हे मायावती मैं प्रत्यक्षखण्डमें बहुत दिनोंसेहूँ परन्तु मैंने महेन्द्रकाकोष आजतक नहींपाया वहबोली कि जो आपको द्रव्यकालोभहोतो मैं चालीससहस्र अशरफीआपकी भेटकरती हूँ और जब लड़ाई होजायगी और महेन्द्र माराजायगा तब मैं आपको महेन्द्रका कोषबतलादूंगी उसमें नीलमणिके मयूर हैं और उनके पेटमें मोती और लालभरे हुयेहैं और रत्नोंके बने हुए पुतले हैं जिनके पेटमें सुवर्ण भराहुआहै और महेन्द्रका एक और कोषभी मैं जानती हूँ जिस में अस्सीसहस्र घोड़ोंके आभूषण अर्थात् जीनइत्यादि सुवर्णके बने हुये रक्खे हैं और जिन घोड़ोंका वहअसबाबहै उनके तबेलेको भी मैं जानती हूँ परन्तु हे प्रहास इसमायाकृत देशका विजय होनाकठिनहै जबतक कि मायान्वेषणीचक्र मिलेगा तबतक विजय न होगा प्रहासबोला कि हे मायावती वह ईश्वर उसचक्रकाभी पतालगादेगा और चालीससहस्र अशरफी पाकर बहुत प्रसन्नहुआ और इतनेबड़े कोषकावृत्तान्त सुनकर उसकेमुखमें पानीभरआया और वहांसे प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप करतेहुये निशाकरीकी सेनाके ओर चले परन्तु यहां मायाकृत पक्षियों ने चित्रकाल और महामाया विनीके मारेजानेकाहाल महेन्द्रसे जाकरकहा उसको सुनकर महेन्द्रकोबड़ा दुःखहुआ और उसने एक म्लेच्छतरंगी नामको

आज्ञादी कि तू जाकर इतना देखिआ कि मायावती निशाकरी
की सेनालेगई अथवा नहीं जोजातीहो तौ उसे रोकियो और
जो न गईहो तौ देखकर चलेआइयो तू उससे युद्धमत करियो
क्योंकि वहबड़ीमायाविनी है उसे पकड़नेको मैं आपजाऊंगा यह
सुनकर तरङ्गीचलदिया दैवयोगसे जबवह नदीकेपारआया राह
में उसे दोर्दंड और उपहास मिले जो खड्गप्रहारीका पीछाकरने
गयेथे और उससे दोर्दण्डनेपूछा कि हे तरङ्गी उसछलीका हाल
तौ कहो कि वहप्रहासको लेकर महाराजके पासगयाहोगा और
अपनी सुघर भलाई जताताहोगा देखो भाई यहकैसे प्रपंचका
समय आयाहै कि हमने तौ उसकेप्राण बचाये प्रहासके हाथसे
छुटाया उसके पीछे अपनाहाथ कटवाया और वह हमसे चाल
करके चलागया यहसुनकर तरंगीबोला कि तू क्याबकताहै प्र-
हासको कौनलेगयाहै यहमायावतीने आपत्तिमचाईहै कि चित्र-
कालकोमारा और महामायाविनीका वधकिया और अब उस
दुष्ट बहुरूपियेको लियेहुए भागीजाती है यह कहकर उसने सब
वृत्तान्त विस्तार पूर्वककहा उसको सुनकर उपहासने चित्तमें
कहा कि यह गुरूजीको मारनेजाताहै इसकावध यहीं करना उ-
चितहै यह विचारकर उसनेकहा कि हे दोर्दंड अब खड्गप्रहारी
का पीछाकरना तौगयाचलो अबमेरे घरचलो थोड़ी देर विश्राम
करलो थोड़ीमद्यपीलो और कुछभोजनकरके महाराजके पास
चलेजाना यह सुनकर तरंगी ने पूछा कि यह कौनहैं वहबोला
कि इनका नाम तौ बनखण्डी है परन्तु ये बड़े श्रेष्ठपुरुषहैं बड़ी
देरसे प्रीतिकेकारणसे मेरेसाथसाथ खराबहैं आओ तुमभी मेरे
साथ थोड़ी देरठहरकरचलेजाना वहबोला कि महाराज महेन्द्रने
मुझसेखबर मँगवाई है जो देरहोगी तौ महाराज अप्रसन्नहोंगे
यह सुनकर उपहासने हाथपकड़ लिया और कहा कि वाहवाह
क्षणमात्रमें क्याहुआजाताहै कभीकभी हमसे दीनोंपरभी दया

कियाकीजिये नहीं तौ फिर हमकहां और तुमकहां यह सत्संग भी यादरहैगा यह कहकर दोनोंको साथलियेहुये उसस्थानपर आयाजहांआपरहा करताथा और दोनोंको आसनोंपर बैठाकर सामनेउनकेमूर्च्छाकर चूर्णमिलेहुए मद्यकेघटरखदिये और दोनों को मद्यभरभरके पानकराई दोनोंने यथेच्छमद्यपान किया और मूर्च्छितहोगये तब उपहास ने भुजालीमारकर पहिले तौ तरंगी का शिरकाटडाला उसके मरनेसे कोलाहलहुआ और फिर चाहताथा कि दोर्दंडका शिरभी छेदे परन्तु उसीसमय आकाशसे एक हस्तगिरा और दोर्दंडको उठाकर लेगया तबउपहास वहांसेभागा और कईकोस निकलगया और देखा कि बहुतसेछकड़े सोनाचांदीरत्न और नानाप्रकारके गृहीपदार्थोंसेलदेहुए जारहेहैं और बहुतसेदास और दासीउनकेसाथहैं उपहास म्लेच्छकारूप तौ धारणहीकियेथा उनसेजाकर उसनेपूछा कियहकिसकाधन है और कहांजाताहै वह बोले कि यह माल मायावतीका है रानी निशाकरीकी सेनामेंजाता है उपहास हालतो सब तरंगीसे सुन हीचुकाथा समझा कि यह सब हमाराहीमाल है इसको रक्षापूर्वक पहुंचाना चाहिये यह समझकर वह साथहोलिया मार्ग में एक म्लेच्छ मदान्धनामी पर्व्वतपर बैठाहुआ मिला उसने पूछा कि यह किसका असबाबहै लोगोंने उसे बतलादिया जब उसने सब वृत्तांतसुना तो ललकारकर बोला कि ठहरोतो तुम सब महाराजसे विमुखहोकर उनकाघर नष्ट करकेजातेहो मैं तुम्हें जीता न छोडूंगा यह कहकर उसने कुछ मायाकी कि उससे अंधकारछागया और मायावती के सब सेवक अन्धेहोगये उपहास उसकी ललकारकोसुनकर पहिलेही भागगयाथा और दूरसे उस अंधकार और आपत्तिकोदेखकर अपनास्वरूप एक मान्य म्लेच्छकासा बनाया और उसकेपासजाकर उसकी माया के प्रयोगकी प्रशंसाकी धन्य धन्य क्या आपका कहनाहै आप

तो मायाकर्त्ताओंकी समान प्रयोगकरते हैं मेरीजानमें तो उन सेभी ऐसा प्रयोग न होताहोगा मदान्ध अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्नहुआ और नम्रतासे उसने शिरझुकाकर प्रणामकी परंतु उपहास उसके पास तो पहुंचहीचुका था जैसेही उसने शिर झुकाया तैसेही उपहासने एक भुजाली ऐसी मारी कि मदान्ध का शिरकटकर पृथक् जापड़ा और कोलाहलहोकर वाणीहुई कि मदान्ध मारागया वह अंधकार सब दूरहोगया और मायावतीके सब सेवकयथावस्थितहोगये तब उपहास उनकेपासगया और बोला कि चलेचलो किसी की सामर्थ्य नहीं है जो तुमसे आंख मिलासके वह सब बोले कि आपकौन हैं आपने हमारे साथ बड़ाउपकारकिया उपहास बोला कि मैंभी मायावती का सेवकहूं उन्हों ने मुझे भेजा है कि असबाबको अच्छेप्रकार से पहुंचादो निदान इसीप्रकार से रक्षाकरतेहुये कुछकाल में रानी निशाकरीकी सेनामेंपहुंचे परन्तु इनसेपहिले मायावतीका विमान पहुंचचुकाथा और वहां पहुंचनेपर प्रहासनेकहा कि पहिले मुझको सेनाकेकिनारे उतारदो उसनेविमानको ठहराकर प्रहासको उतारदिया वह सभामेंगया और सबसे मायावती के आनेका वृत्तांत कहा सुनतेही रानीनिशाकरी ने आज्ञादी कि सब मान्य म्लेच्छ और म्लेच्छीलेनेकोजायं और सेनाभी सबतयार होकर आदरपूर्वक लिवाकरलावैं यह आज्ञाहोतेही जयदुंदुभी बजी सेना सबतयारहोकर आगेबढ़ी और रानीआनन्दा और केसरी और रक्तकेशी और मयूरमुण्डी और कालखंज और चान्द्री और रंतिकाल और संडीनचपलाआदि सबमान्य म्लेच्छ और म्लेच्छी मायाकृत विमानोंपरबैठकर उत्तम२वस्त्र धारणकियेहुए मायावतीके लेनेकोचले वाद्य आनन्दकारीबजनेलगे सबलोग आनन्दमङ्गलके शब्द उच्चारणकरनेलगे और कवीश्वर विजय को वर्णनकरते हुए मधुरवाणीसे नाना पद्पढ़नेलगे ॥

सो० विजयकीर्तिवल शील तेज प्रताप सुनृपतिको।
अरि उरसालहिकील जिमि जिमि नितपावहि विराधि॥

इसप्रकारसे सबकोई मायावती के समीपपहुंचे वहभी इन को देखकर मायाकृत विमानसेउतरी सबने पाद्यअर्घ आदि देकर उसका सत्कारकिया उससमय मायावती सबसे मिली सब ने स्वागत सुनाकर जयशब्दका उच्चारणकिया और उसे साथ लियेहुए मणि और मुक्तालुटातेहुए सभाके समीपआये वहां रानीनिशाकरी द्वारपर उसकेलेनेकोखड़ीथीं उसेदेखकर मायावती आदि सब उतरकर पैदलचले और मायावतीने आगे बढ़कर रानीनिशाकरीको दंडवत्की निशाकरीने उसे कंठसे लगाया और कहा कि अरीबेटी तेरेआने से मेरी सेनाको बड़ा बलहोगया और मेरेचित्तको बड़ाभरोसापड़ा यह कहकर उस ने मायावतीको रत्नजटित बड़ेमोलकेवस्त्रदिये और फिर इसके पीछे रानीनिशाकरी कमलाक्षी से मिली और उसकाभी यथायोग्य सत्कारकरकेआज्ञादी कि राजमन्दिरकेसमीप रानी मायावतीकेलिये डेरेखड़ेकियेजायं और उनमें सोनेबैठने और खाने पीने आदिके सब पदार्थ स्थापितकरायेजावें यह आज्ञापाकर प्रबन्धकर्ता प्रबन्धकरनेलगे और रानीनिशाकरी मायावतीको अपनीसभामेंलाई और अपने सिंहासनकेसमीप उसको बैठने को उत्तमआसनदिया उससमय मायावतीने उठकर रानीको भेटदी और निशाकरीने और सबव्ययसेवाद पांच सहस्रमुद्रा उसके खानपानकेनिमित्त नियतकिया और आनन्दउत्सवहोने की आज्ञादी आज्ञाहोतेही परमसुंदरी कोकिलबैनी स्त्रियां नृत्य करनेको आगई और सुराउत्तमलाकर सभामें रखदीगई बाजे मनोहर बजनेलगे सभाकेडेरे के सब द्वारखोलदियेगये और नृत्यहोनेलगा और सबलोग उत्तमवारुणी का पानकरनेलगे उससमय सभाकेद्वार खुलजानेसे एक अपूर्वशोभा उस मध्यके

आवेश में सबकोदिखाईदेतीथी कि चारोंओर हरेरी लहलह
रहीथी पर्वतोंसे झिरनेझिरतेथे और उनसे जलधाराबहतीथें
फूल और फलोंसेलदेहुए वृक्ष बड़ेशोभायमानदीखतेथे उसबन
की परमशोभाको देखतेहुए सब सभासद आनन्दपूर्वक मद्य
पानकरते थे और गाते थे ॥

चतुर्वेदी। प्रसन्नकारी सुवारुणी ने किया है मनको प्रसन्नमदसे
हुआ प्रफुल्लित हमारा मन है नहीं है कुछ दुख हमारे तनमें ॥ हमारे
मित्रो हमारी सुनलो सुवारुणीको यथेच्छ पीओ। समान इसके नहीं है
जगमें पदार्थ कोई किसीही पनमें ॥

निदान ये सबतो उक्तप्रकारसे आनन्दकरनेलगे और उप-
हासभी माल और असबाब लेकरआगया और मायावतीके सब
दास और दासी वहांआकर आनन्दपूर्वकबसे परन्तु अब आगे
के अध्यायमें म्लानचित्त महेन्द्रकावृत्तांत वर्णनकियाजायगा॥

इति श्री आगरापुरनिवासि चौरासिया गौड़वंशावतंस श्रीपण्डित
मोहनलालात्मज पण्डित कुंजविहारीलाल कविनाविर-
चिते विचित्रचरित्रे प्रथमखंडेनवमोऽध्यायः ९॥

अध्याय दशवां॥

महेन्द्रका मायावतीको पकड़नेकेलिये विलक्षणानामीकुटनी
को भेजना प्रहासके हाथसे उसकामाराजाना,फिरमायावती का
पकड़ाजाना और प्रहासका उसकोछलकरके छुटाना फिर अद्भुत
के पाससे महेन्द्रकेपास पत्रआना और महेन्द्रका बड़े २ मायावी
म्लेच्छों को महाराजशत्रुंजयसे युद्धकरने के लियेभेजना राज-
पुत्र इन्द्रविक्रम का उनसे युद्धकरना और एक म्लेच्छी पर
आसक्तहोजाना और फिर आसुरी माया का नाश और म्ले-
च्छोंका बधहोना॥

जयकरीछंद। ब्रह्मज्ञानको जेनरपाय। तनतजिबसतअमरपुरजाय॥
पावतदेव गणनिसोंमान। मधुमकरंद करत नितपान॥
तासोंछकितहोयसबकाल। धारत उरआनन्द विशाल॥

सोई मधुरमधुर मधुअच्छ। हेवागीश देहु मोहिंस्वच्छ ॥
पानकरत उघरहिं मुदकारु। हियके विमलविलोचनचारु ॥
तिनसों देखों आनँदरूप। मायाकृतजे चरित अनूप ॥
लिखिसो सवको देउंसुनाय। भाषावृत्ति छंदमें गाय ॥
इमिनरपढिकेंरहेंलुभाय। जिमिअलिकुसुमप्रफुल्लितपाय ॥
वरप्रसंग रूपी मकरन्द। करिके पान लहहिंआनन्द ॥
कुंजलालतिनकी लखिनृत्य। आपुनकोमाने कृत कृत्य ॥

सौरभ महाराजने इसअध्याय में कथाको इसप्रकारसेआ-रंभकियाहै कि वहम्लेच्छाधिप महेन्द्र बैठाहुआ मायावती का संदेशा पानेकी बाट देखरहाथा कि इतनेमें दोर्दंडको मायाकृत हस्तलेकर पहुंचा जिसको वह उपहासके सामने से उठालेगया था और उसनेतरंगीके मारेजानेका वृत्तांतकहा उसको सुनतेही महेन्द्र शोकसमुद्र में डूबगया उसीसमय विचित्रमायाके सेना पतिका भी पत्रआया उसको जोपढ़ा तो लिखाथा कि मायावती निशाकरीकी सेनामेंआई है और उसको शत्रुओंने बड़े आदर भावसे लेकर निवासकरायाहै उसको पढ़कर महेन्द्रने आपमा-यावतीको पकड़नेके लियेजानेकी इच्छाकी परंतु उसको सैन्धवने ऐसाकरनेसे निषेधकिया और कहा कि आपकाजानाअच्छानहीं है क्यों कि प्रहासने यहांआकर क्या क्या उपद्रवमचाया था कहीं ऐसानहो कि वहांजानेपर आपका किसीप्रकारका अपमा-नहो यहसुनकर महेन्द्रने अपनेआनेकी इच्छाको चित्तसे दूर किया और समीररूपाको बुलाकर बहुतकुछ बुराभलाकहा कि तुमसे कुछ नहीं होसकता है जबतक वहुरूपिये यहां नहीं आयेथे तबतक तो बहुत कुछ बड़मारकरती थी अबवहसब विद्याकहांगई वहबोली कि महाराजमैं पहिलेभी प्रहासकोपकड़ करलेआई थी और अबफिर जातीहूं और पकड़ेलातीहूं यह कहकर वहचलदी परंतु महेन्द्र का चित्तउसकेजानेसे कुछस्व-स्थनहुआ और विचित्रमायासे कहा कि तुम्हारेयहां जो पांच

कुटनियां रहतीं हैं उनकोबुलवाओ यहसुनकर विचित्रमाया ने एकदूतउनके बुलानेको भेजा उसनेजाकर कुटनियोंसेकहा और वह अपने छलके वस्त्रलेकर महेन्द्रके पासआईये पांचोंकुटनिय छल और प्रपंचकारूप थीं और विश्वासघात आदिप्रपंचरचन में बड़ीनिपुणथीं निदानउन्होंने आकर महेन्द्रकोदंडवत्‌की और उसने उनसेपूछा कि तुम क्या क्या कर्मकरसकतीहो उनकुट- नियोंने जोमहेन्द्रको अपनेपरप्रसन्न पाया तुरंत उसके समीप चलीगईं और बलैयां लेकरबोलीं कि महाराज हमारे कामका हालआपक्यापूछते हैं हमने सैकड़ों घरबरबादकरदिये लाखों को भुलाकर और फुसलाकर बेचडाला सहस्रों व्याहकरदिये बहुतसों की प्रीतिछुटाकर भेदकरादिया सैकड़ों परस्परप्रीत मानोंको एकदूसरेके परमशत्रुबनादिया सहस्रों बहूबेटियों को जिनकापटतक किसीने नहींदेखा था नो नो मनुष्यों से मिला दिया और बड़े बड़े महाजनों के घरकाभेद लेकर चोरोंसे चोरी करादी जहां वायुभीनहीं जासकतीथी वहांकाभेद हमनेलादिया अबकोईछल और प्रपंच संसारमें ऐसानहीं है जोहमको न आताहो हमआगलगाकर पानीकोदौड़तीहैं और मित्रबनीरह कर शत्रुताका कामकरतीं हैं हमारेकाटेका मंत्रहीनहीं हैं आपकहें तो पृथ्वी तकमें हमसमाजायं और पातालकी स्त्रियोंकोलेआवें अथवा आकाशमेंजाकर सूर्यकेरथका सुवर्णलेआवें आकाशको फाड़करथेगरी लगाना हमारेबामहस्तका कर्तबहै यहसुनकर महेन्द्रनेपूछा कि तुममेंसबसेबढ़कर गुणीकौनहै यहसुनकर उन्हों ने एकको बतलाया कि यहसबसे भारीगुणीहै वहकुटनीसबसेबद्ध थी और नामउसका विलक्षणाथा और उसको कलिकालकी मौसी भी कहाकरतेथे उसनेबहुतसी ठगविद्या और कुटनियोंको सिखाई थी महेन्द्र ने उस विलक्षणा कुटनी की प्रशंसा सुनकर कहा कि मायावती यहांसे भागकर निशाकरीकी सेनामें चली

गई है इससे मेरी इच्छाहै कि तू उसको वहांसे निकालला और मेरे पासतक पहुंचादे यद्यपि मैं बड़े मायावी म्लेच्छों को भेजकरउसको पकड़वासकताहूं परंतु मायावीम्लेच्छोंको बहुरूपिये मारडालतेहैं ये बहुरूपिये बड़ेछलीहैं और छलीसे छलीहीजीततहै इससे मैं तुझको भेजताहूं जो तू कामपूरा २ करलावेगी तो मैं तुझको धनसे अयाच्यकरदूंगा और ऐसी प्रतिष्ठातेरी बढ़ाऊँगा कि लोगदेखदेखकरईर्षा करेंगे ॥

सो० । करिपयान तुमआजु शत्रुसेन में जाय के ।
साधहु हमरोकाजु मुदित करहुनिजकर्मसों ॥

महेन्द्रकी उक्तबातोंको सुनकर वहमहाप्रपंचिनि विलक्षणा कुटनीबोली कि महाराजयहकौनसी बड़ीबातहै जिसकेलिये श्री महाराज इतनाकहते हैं ऐसे ऐसे काम तो मेरी छोकरियांकरलियाकरतीहैं और मेरीतो कलाही अपूर्वहै जो मैं प्रहास और मायावती आदिको बांधकर न लेआऊँतो अपनानाम विलक्षणा न रक्खूं आपपूर्ण विश्वास रखिये यहसुनकर महेन्द्रने सब कुटनियोंकोधनदेकरविदाकिया और एकम्लेच्छको आज्ञादी कि विलक्षणाको रक्तवाहिनीनदीके पारपहुंचादे उसने उसकुटनीको मायाकृत विमानपरबैठालिया और वहांसेचलदिया और उसके जानेकेपीछेमहेन्द्रभी विचित्रमाया और सैन्यसहित बदरीउद्यान में चलाआया और विचित्रमायासेकहा कि तुमभीअपनीसेनामें जाकर युद्धकेलिये सेनाकोसन्नद्धरक्खो और युद्धकाअवसरपानेकी बाटदेखो यहसुनकर विचित्रमायाभी सवारहोकर अपनीसेना कीओर चलीआई इसीअवसरमें एकमायाकृत हस्तअद्भुत मिथ्याईश्वरका पत्रलेकरआया उसको जो पढ़ा तो उसमेंलिखा था कि अब बहुतकाल व्यतीतहोगया परन्तु कोईम्लेच्छ हमारी सहायताको नहींआया इससे तुमको उचितहै कि इसपत्र के देखतेही किसी बड़ेभारीमायावीको हमारीसहायताकेलियेभेजो॥

दो०। जे अनन्य मम भक्तहैं ते न तजत निज भक्ति।
दुख सहि मम सेवा करत पावत तनमें शक्ति॥

यहपढ़कर महेन्द्रने खड्गप्रहारीसे कहा कि तुम पहिले मायावती को पकड़नेगये थे परन्तु महामायाविनी के भयसे भाग आयेथे अब बताओ कि परमेश्वरकी सहायता करनेजाओगे वहबोला कि महाराज आपका प्रतापचाहिये मेरा क्या जानाहै और क्या न जानाहै जो आपआज्ञादें वहबोला कि अच्छातुम अपनेसाथ अपनेभाई गदाप्रहारी को भी लेलो और बहुतसी सेना साथमें लेकर परमेश्वरकी सहायताकरो यह आज्ञापाकर वे दोनोंभाई चलनेको उद्यतहुये और उन्हों ने म्लेच्छोंकीसेना को चलनेकी तैयारी करने की आज्ञादी तत्काल बारह सहस्र म्लेच्छ अस्त्रशस्त्र धारकरके मायाकृत पक्षियों पर सवारहोगये बाजे नानाप्रकारके बजनेलगे और सेनापति महोरगोंपर बैठ २ कर चलनिकले उन महोरगोंके चलनेसे आकाशमें ऐसा दीखता था मानों जलकी धारा लहरातीहुई चली जा रही है॥

चौ०। प्रकटत गुप्तहोत बिप धारे। चले जात बिपधर बिकरारे॥
काय पसारत जनु जलधारा। कबहुं क होत कुंडलाकारा॥

इस प्रकारसे बड़ेमार्गको उत्तीर्ण करके वे मायाकृत देशकी सींवाके बाहिर होकर अद्भुतकी सीनाके समीप जापहुँचे राजा महावीर और चित्राङ्गद म्लेच्छसेना के आगम सूचित करने वाले चिह्नों को देखकर सेनाको लेने के लियेगये और खड्ग प्रहारी और गदाप्रहारी से भेटकरके म्लेच्छोंकी सेनाको उतरवाया और उन दोनोंको आदर पूर्वक सभामें लिवालाये उन दोनोंने वहांआकर अद्भुतकी पूजाकी और आसनोंपरबैठे उस समय अद्भुतने उन्हें उत्तम वारुणी पानकराई और वहां नृत्य होनेलगा जबमद्यके आवेशसे उन दोनोंका कपाल तप्तहुआतब उन्होंने शत्रुंजयकी सेनाका हाल पूछा यह सुनकर चित्राङ्गदने

महाराज शत्रुञ्जयकी उत्पत्ति अर्थात् राजा विशल्य के समय से अपने वार्त्ताकरने के समयतक का सब वृत्तान्त कहसुनाया और कहा कि एककारण इनवैष्णवोंके विजयपाने का यहभी है कि परमेश्वरकेजामातृ और दौहित्र और बेटियां शत्रुंजयकी सेना में मौजूदहैं परमेश्वरतो संसारकेस्वामी हैं और नित्यप्रति सहस्रों मनुष्यके प्रारब्धको रचतेहैं परंतु परमेश्वरकी जो बेटियांहैं उनकोभी प्रारब्ध रचनेकी सामर्थ्यहै इससे जो कोई शत्रुंजयसेयुद्ध करने जाताहै वह उसकी कर्मरेखाको फेर देतीहैं और वहमारा जाताहै और उनहीके कारणसे जो कोई मायाकृत देशमें प्रहास का सामना करताहै वहभी नाशहोजाताहै और परमेश्वरकी बड़ी बेटीके स्वामी राजपुत्र भीमविक्रम मायाकृत देशमें कैदहैं इससे परमेश्वर चाहतेहोंगे कि मायाकृत देश नष्टहोजाय और राजपुत्र छुटजाय यहसुनकर खड्गप्रहारी और गदाप्रहारी दोनोंके होश उड़गये और बोले कि फिर हमारायुद्ध करना निरर्थकहै हमको उचितहै कि हम शत्रुंजयकी उपासनाकरैं चित्राङ्गदबोला कि परमेश्वर यहकदापि नहीं चाहतेहैं किजो हमारा विमुखहो उसकी उपासना कोई उनका सेवककरै सत्यतो यहहै परमेश्वर की बातें अलखहैं इससे उचित यहहै किजो परमेश्वर कहैं सो मनुष्यकरै और सदैव परमेश्वर से कृपारखनेकी विनय किया करैं क्योंकि॥

दो०। पाप पुण्य सब जगतमें परमेश्वर आधीन।
लीनहि करै अलीनवह अरुअलीनको लीन॥

निदान दोदिनतक इसीप्रकारसे दोनों वार्त्तालाप करते रहे और मार्गके श्रमसे विगतहुये उपरान्त एकदिन जिससमय सूर्य अस्ताचलावलम्बी हुआ और रात्रिका अंधकार सब संसारमेंछागया॥

सो०। देखि कलहको काल रबितेजहि गोपितकियो।

निशिआई विकराल अंधकार छायोजगत॥

उस समय उनदोनों म्लेच्छोंने युद्धके बाद्य बजनेकी आज्ञा दी जिससे सबको विदित होजाय कि कलयुद्ध होगा और विन युद्ध किये कोई न बचैगा आज्ञा पातेही म्लेच्छोंकी सेनामें बाद्य बजनेलगे यह देखकर वैष्णवी सेनाके दूत महाराजाधिराजकी सभामें आये और साष्टाङ्ग दण्डवत् करके विनयपूर्वक बोले॥

सो०। धन बल तेजसुराज अरुप्रताप ऐश्वर्यता।
रहै अखण्ड समाज महाराज अधिराजके॥

हे महाराजाधिराज दोमायावी म्लेच्छ खड्ग प्रहारी और गदाप्रहारी नामी मायाकृत देशसे कईदिनसे आये हुयेथे आज उन्होंनेयुद्धके बाद्य बजवायेहैं उनकी इच्छा युद्धकरनेकीहै और सब आनन्दमंगलहै यहकहकर वे दूतफिर म्लेच्छोंसे नायेंसमाचार नवीनलानेकोचलेगये औरश्रीमहाराजाधिराजने तूर्यआदि युद्धके बाद्य बजाये जानेकी आज्ञादी आज्ञाहोतेही प्रहासके पुत्र सुवासने बाद्यालयकोखोला वहांकेप्रबन्धकर्त्ताने सुवासकोभेटदी सुवासने उसको प्रहासकेलिये रखलिया और देवदत्त महादुन्दुभी को बजाया उसका शब्द पृथ्वीसे आकाशतक पूरित होगया और पर्वतोंकीकंदराओंमें गूंजनेलगा और पृथ्वीकंपितहोगई॥

दो०। प्रलय काल सम शब्द सो व्याप्यो नभमहि माहि।
कँपी धरणि विचले अचल डरपे शत्रु कराहि॥

उससमय सबशूरवीर युद्धकी सामग्री एकत्र करनेलगेमहाराजाधिराजने सभाको शीघ्र विसर्जन किया सब शूरवीर उठ उठकर अपने अपनेडेरोंपरआये अस्त्रालय खुलगये और अस्त्र निकलनेलगे और अश्वोंके साज ठीक होनेलगे सब शूरवीर कवच रुचिके अनुरूप ले लेकर धारणकरनेलगे और इधर म्लेच्छ अपने मायाके प्रयोगों को सिद्ध करनेलगे कहीं हवन होताथा और कहीं मंत्र जपाजाताथा और कवीश्वर दोनोंसेना

ओंसे फिरफिरकर वीररस सुनासुनाकर शूरवीरोंको रणकाउत्साह करते थे चारिप्रहररात्रि यहीरहा अन्तमें वह निशाव्यतीतहुई और पूर्वदिशामें मार्तंडमण्डलके उदयहोनेसे अंधकारदूरहुआ॥

दो० । उदयहोत रवि नृपतिके उडुगण शत्रुविलान ।
मित्र चक्ररूपी कमल खिले हरषउर आन ॥

प्रातःकालहोतेही दोनोंओरसे सेनायूथयूथ और अनीअनी होकर रणभूमि को चलनेलगी उससमय महाराज शत्रुञ्जय श्री विष्णुभगवान् का पूजनकरके प्रार्थना रणभूमि में शत्रु से विजयपानेकी कररहेथे और यहविनय करतेथे कि ॥

चौ० । हेप्रभु तवगुण गणनि अशेषा । वरणि सकत नहिं शारदशेषा ॥
क्षणमें करहुजो चहहु कृपाला । को तुम सम प्रभु दीन दयाला ॥

हेप्रभो आज रणभूमिमें मेरी लज्जारखियो और शत्रुपर विजयदेकर आपत्तिसेबचाइयो इसीअवसरमें सेनाके रणभूमिमें जानेकीखबरसुनी सुनतेही महाराज पूजनपरसेउठे और सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंको धारणकरके सुग्रीवनामी अश्वपर सवारहुये और वहांसे चलकर श्री महाराजाधिराज के डेरोंपर आये यहां सब सेनापति और मान्यशूरवीर एक एककरके आतेगये और महाराज शत्रुञ्जयको दण्डवत्करके खड़ेहोगये थोड़ीदेरमें महाराजाधिराजके शयनमंदिरके पटखुले और महाराज शत्रुञ्जय आदि सब शूरवीर अपने २ योग्यस्थानोंपर खड़ेहोगये क्षणमात्रपीछे परमसुन्दरी स्त्रियां हाथोंमें सुवर्णकेकलश और मंगल वस्तु लियेहुये गानकरतीहुईनिकलीं और उनके पीछे नाना आभूषणोंसे अलंकृत लड़के चमरहाथमेंलिये सुगंधित धूपदेतेहुये बाहिर आये फिर रनिवासके प्रबन्धकरनेवाली सुन्दरीदासियां सबकोहटातीहुई और मार्गकरतीहुईनिकलीं और उनकेपीछे श्री महाराजाधिराज उत्तम विमानपर आसीन बाहिरआये सेवकोंने विमानको उठालिया और सूत और मागध यशगानकरनेलगे॥

जयकरीछंद। नृपति तेजतव रहै अखंड। होयसुयश छादित ब्रह्मण्ड॥
शत्रुसदैव रहैं भयभीत। पावहिं मित्रवर्ग जयजीत॥

उससमय महाराज शत्रुञ्जयआदि सब सेनापति और शूर वीरोंने यथायोग्य महाराजाधिराजको प्रणाम और साष्टांगदंड वत्की और उनके बिमानको मध्यमें करके रणभूमिकीओरचले उससमय सेनाके चलनेसे चारोंओर बड़ा शब्दहोनेलगा और धूलउड़कर गगनमें छागई॥

सो०। गज गर्जनि अतिघोर हयहींसन अति प्रबलतम।
रथघण्टनि को शोर छायो सकल दिशानमें॥

चौ०। तापरभट गर्जनि अतिभारी। अरुधनु टंकोरन भयकारी॥
सिंहनाद शूरनि की घोरा। शंखनिको रव प्रबल अथोरा॥
हांकडांक डाटनि अरुडपटनि। अरुअश्वनिकीविविधवतरपटनि॥
प्रकटकीन्ह अस शब्दकराला। डोली महिरिपु भयेबिहाला॥

जब रणभूमिमें पहुंचेदेखा किवह अद्भुत मिथ्याईश्वर गज मण्डपमें बिराजमान बड़ीधूमधामसे रणभूमिकी ओर आर-हाहै चित्रांगद उसके समीप सेवामें स्थितहै और चमरढोर रहाहै और चारोंओर शूरवीरोंकीसेनाहै और एकओरसे माया-वीम्लेच्छोंकी सेनाचलीआरहीहै और म्लेच्छ चपलाकी भांति अपनेखड्गचमकाते और मायाकेबलसे अग्निकीवर्षाकरतेहुये चलेआरहे हैं नानाप्रकारके बाजोंका घोरशब्दहोरहाहै निदान क्षणमात्रमें सेवकोंने बढ़कर रणभूमिको निष्कंटककरदिया और जलछिड़ककर सबधूलको शांतकिया इसके उपरांत व्यूहरच-नाहुई और और कवीश्वरोंने कड़ककड़ककर शूरवीरोंके कानों में वीररसभरा और यह शिक्षाकी॥

जयकरीछंद। हेहे सकल शूरवरवीर। शिक्षाहमरी सुनहु सधीर॥
रणसमान नहिंकछुजगअन्य। रणउत्साह करतते धन्य॥
जियेलहत नरयश अभिराम। मरिनर पावत सुरपुर धाम॥
ताते युद्धयज्ञ को पाय। जयहितकरहुसकलव्यवसाय॥

इसकेपीछे गदाप्रहारी रणभूमिमें बढ़कर आया और माया-
बलसे अग्नि और पाषाणोंकीवर्षाकरके ललकारबोला कि अरे
वीर वैष्णवो तुममेंसे जिसको मरनेकी इच्छाहो वह बढ़कर मेरे
साथ युद्धकरे यहसुनकर राजपुत्र इन्द्रविक्रमने अपने वायुवेगी
अश्वकी बागडोर उठाई कि मैं जाकर इस म्लेच्छ से युद्धकरूं
परंतु उसीसमय दक्षणारिण्यआदि देशों के जो बशवर्ती राजा
खड़े थे उन्हों ने कहा कि हमलोग जबतक सजीव हैं तबतक
आपको युद्ध न करने देंगे किन्तु अपने प्राणदेंगे यह कहकर
चित्रवीर्यने अपनाघोड़ाबढ़ाया और महाराजाधिराजसे युद्धकी
आज्ञा मांगी महाराज ने उसे आज्ञा दी और वह गदाप्रहारी
के सन्मुख आया उसे देखतेही गदाप्रहारीने भल्लमारा चित्र-
वीर्यने शक्तिसे उसके दोखण्डकिये फिर उसने एकतोमर चला
या उसकोभी चित्रवीर्यने काटदिया और क्षुरप्रबाणमारकरउस-
के हाथकी गदाको दोटुकड़े करडाले यह देखकर वहम्लेच्छ ल-
ज्जितहुआ और उसने मायाकरके उसगदाके खण्डको उसपर
चलाया मायाबलसे एक अग्निकी ज्वालाप्रकटहुई और उससे
चित्रवीर्य अचेतहोगया तब उसम्लेच्छने उसे पकड़कर अद्भुत
की सेनाके मनुष्यों को बुलाकर देदिया अद्भुत ने आज्ञा दी कि
इसको एकडेरेमें लेजाकर कैदकरो तुरन्त उसकी आज्ञासे चित्र-
वीर्यके हाथों पैरोंमें भारीभारी निगड़ डालदियेगये और उसको
कैदकरलिया इसकेपीछे गदाप्रहारीने फिर ललकारकरकहा कि
और जिसकिसीको मरनेकी इच्छाहो वहमेरे सन्मुखआवे यह
सुनकर चित्रवीर्यका भाई सुवीर्यनामी महाराजाधिराजसे आज्ञा
लेकर उसके सन्मुखगया परन्तु उसकी भी वही गतिहुई और
वहभी कैदकरलियागया उसके पीछे तीसरा और चौथा करके
शायंकालतक पच्चीस शरवीरराजा जिनको राजपुत्र इन्द्रविक्रम
ने जयकरके अपनेआधीन कियाथा पकड़ेगये अर्थात् जोगया

वहहीमायाके कारणसे अचेतहोगया और उसम्लेच्छनेउसेपकड़कर कैदकरलिया उससमय राजपुत्र इन्द्रविक्रम ने आप उस म्लेच्छसे युद्धकरनेकीइच्छाकी परन्तु शायंकाल होगयाथा और वहसमयथा कि अन्धकाररूपीराजाकी सेनाका आगमजानकर सूर्यरूपी राजा पलायमानहोकर पश्चिम दिशाको भागगया और पूर्वदिशासे अन्धकारका आगमन प्रारम्भहुआ॥

दो०। इविधि लरतसन्ध्यानिरखि त्यागि युद्ध उपचार।
उभयसेन निज दिशफिरीं करन अहार विहार॥

गदाप्रहारी ने सेनाको लौटातेसमय पुकारकरकहा कि अरे वैष्णवो जो तुमलोगोंने आजरात्रिको आकर हमारे अद्भुतपरमेश्वरकी पूजा न की तो प्रातःकालका दिन तुमअपना देहान्त काल जानना कोई कलजीता न बचैगा यहसुनकर वैष्णवीसेना के शूरवीरों ने भी अद्भुतको दुर्वचनकहे और दोनों सेनाओं ने अपने अपने डेरोंपर आकर कमरखोली और विश्राम और आहारादिकक्रियाकी जबअन्धकारअधिकहुआतबरक्षकनियत करदियेगये और सबबहुरूपिये अपनेअपनेस्वामियोंके स्थानों परआकर रक्षाकेलिये स्थितहुए रात्रि को श्रीमहाराजाधिराज सभामेंआकर विराजमानहुए सबसभासद्भी आकर अपने २ स्थानोंपर बैठगये और मद्यपानहोनेलगा परन्तु राजपुत्र इन्द्रविक्रमके साथियोंकेपकड़ेजानेके कारणसे श्रीमहाराजाधिराजका चित्तप्रसन्न न था इसकारणसे कुछनृत्यआदिहोनेकीआज्ञा नहीं हुईपरन्तु उधरअद्भुतने अपनेडेरोंपर पहुँचकरनृत्यऔर उत्सव होनेकीआज्ञादी आज्ञाहोतेही परमसुन्दरीवेश्याआई और बड़ी मधुरध्वनिसे नाचने और गानेलगीं और मद्यपानप्रारम्भहुआ सबसेनामें रक्षक नियतकियेगये और जहां वैष्णवीसेनाके शूरवीरकैदथे वहांमायावीम्लेच्छों ने मायाबलसे मायाकृत प्राकार बनादिया जिससे कोईबहुरूपिया आकरछल न करसकै जबय-

ह प्रबन्धहोचुका तब चित्रांगदने गदाप्रहारीसेकहा कि शत्रुको समयदेना उचित नहीं है आजही युद्धकेवाद्य बजवाकर सब शत्रुसेनाका विध्वन्सन करो क्योंकि परमेश्वरका ऐसा स्वभाव है कि शीघ्रकर्मरेखाको पलटदेतेहैं आजतो तुम्हारी विजयरची है परन्तु फिर जो उनको कहीं दयाआगई तौतुरन्त शत्रुओंकी विजय रचिदेंगे इससे इससमयको धन्यमानकर अपना काम करो यहसुनकर गदाप्रहारीने युद्धकेवाद्य बजायेजानेकी आज्ञा दी और मायानिर्मितवाद्य बड़ेशब्द से बजनेलगे वैष्णवीसेना के दूतों ने यहसमाचार महाराजाधिराजको आकरसुनाये और श्रीमहाराजाधिराज अपने मुखारबिन्दसे कुछआज्ञा युद्धकेवाद्य बजनेकी न देनेपायेथे कि राजपुत्र इन्द्रविक्रम अपने इन्द्रासन कीतुल्य आसनसे उठकर महाराजाधिराजके सन्मुखगया और बिनयपूर्वकबोला कि॥

सो०। हे हे श्री महराज चमरछत्रपति भूपमणि।
नहिं असाध्य कछुकाज तुमसों यहि संसारमें॥

आजमेरेनामसे युद्धके वाद्यबजनेकी आज्ञादीजावै मैंहींअपनी सेनासहित शत्रुओंसे कल युद्धकरूंगा और कोई युद्धकेलिये न जाय क्योंकि मेरे बहुतसेमित्रवर्ग आज कैदहोगयेहैं इससेमें चाहताहूं कि गदाप्रहारीको भारी दण्डदूं और उसका शिरकाटकर श्री महाराजके पासलाऊं अथवा जहां मेरेमित्रवर्गहैं वहीं मैंभी जाकर उनके दुखमें साथदूं॥

दो०। जिन मित्रनके संगमें भोगत है सुखग्राम।
तिनको संगम रुचतमोहिं सुखदसुकाराधाम॥

यह बिनयसुनकर श्रीमहाराजाधिराजने कहा कि हे राजपुत्र वह बड़ा प्रबल मायावीहै तुम्हारा और उसका युद्धक्याहै इससे उचितहै कि साहस मतकरो परमेश्वर करैगा तौवहसमय भी आवैगा कि ये म्लेच्छ मारेजायँगे और तुम्हारे मित्रै छूट

कर आवेंगे निदान श्रीमहाराजाधिराज ने अनेक प्रकारसे उस को समझाया परंतु उसने एक न सुनी और यही प्रार्थनाकरतारहा कि जो मेरी इच्छाहै उसे पूर्णकीजिये और जो मेरी प्रार्थना स्वीकार न होगी तौमैं अपने प्राण त्यागदूंगा अंतकोश्री महाराजाधिराजने आज्ञादी कि आजयुद्धके वाद्य राजपुत्रइन्द्रविक्रमके नामसेबजायेजावें अर्थात् सबसेनाको यहविदितकराया जावे कि कलराजपुत्र इन्द्रविक्रमकोछोड़कर और कोई युद्धकरने का उत्साह न करे यह आज्ञापाकर सुबासने वाद्यालयमें जाकर कार्तिकेयी दुंदुभीको राजपुत्र इन्द्रविक्रमके नामसे बजाया॥

सो०। तासु शोर अतिघोर प्रलयकालके शब्द सम।
फैलिगयो चहुंओर दिशा और विदिशानमें॥

उसशब्द को सुनकर दोनों सेनाओं को विदित होगया कि राजपुत्र इन्द्रविक्रम युद्धकरेगा यह सुनतेही चित्राङ्गदबोला कि विष्णोर्जयति हे गदाप्रहारी अबतुम दोनोंभाई बचतेहुये नहीं दीखतेहो क्योंकि आज परमेश्वरके जामात्रने अपने नामसेयुद्ध के वाद्य बजवायेहैं भला परमेश्वर यहकाहेको चाहेंगे किजामात्र माराजाय और उनकी बेटी रांडहोजाय और उधर परमेश्वर की बेटीभी तेरीकर्मरेखाको फेरदेगी यहसुनकर गदाप्रहारी घबराया और अद्भुतकी ओर दीनता से देखनेलगा तब अद्भुतने कहा कि तुम घबराओ मत और इस कलिके कहने पर मत जाओ यहतुमको बहकाताहै इसकाकार्य यहीहै कि संसारी जीवोंको धर्म पर न चलनेदे मैं आज भविष्यको अपनी मुट्ठी में बन्द किये लेताहूं प्रातःकाल जैसा उचितहोगा वैसी रचनाकरूंगा निदान दोनों सेनाओंमें युद्धकी तय्यारी होनेलगी वैष्णवी सेनाके श्रीमहाराजाधिराजने सभाको विसर्जनकिया और सब शूरवीर अपनेअपने डेरोंपर आये राजपुत्र इन्द्रविक्रमजब अपने डेरेमें पहुंचा तब उसके चित्तमें यह ध्यान आया कि कल युद्धका

दिनहै उसमेंदोमेंसे एकबात अवश्यहोगी किया तो मैं माराजाऊं-
गा अथवा पकड़ा हुआ अद्भुतके सन्मुख पहुंचूंगा तबवह परमे-
श्वरकाशत्रु मुझको बड़ी दुर्दशासे बध करावेगा इससे उचितहै
कि इसनाशमान संसारपर कुछभरोसा न करो और आज इसके
संपूर्ण भोग्यपदार्थोंको भोगकर उनका आनन्ददेखलो क्योंकि
इससंसारमें सैकड़ोंमनुष्य युवावस्थाके मनके मनोरथोंको साथ
लियेहुए चलेगये और सहस्रोंआशाओंसे पूर्णभरगये हाय यहां
सेकोईनिवृत्तहोकर नहींगया मरणसमयतक कुछ न कुछ आशा
लगीहीरही ऐसा किसीको न हुआ कि जिसने इससंसारके भोगों
में प्रवृत्तहोकर सुखभोगरूपी वृक्षसे आशारूपी फूलको निकलते
देखाहो और मनोरथरूपी फलको तोड़कर सदैव खायाहो॥

चौ०। जगयहरीति सदाचलिआई। हंसतकोउ कोउरोवतजाई॥
बसनअमोल कोऊ तनधारे। कोऊ डोलत फिरें उघारे॥
कोऊ करत भवनमें बासा। तरुतरबसिकोउरहतनिरासा॥
सोवतकोउ पर्य्यंक बिछाये। पड्योकोऊ तृणधरणि डसाये॥

निदान राजपुत्रने अपने चित्तसे संसार को नाशमान समझ
कर विचारकिया कि आज सब संसारके भोगोंको एकत्र करके
भोगलूं यह विचार करके उसने अपनेसाथी बहुरूपिये पांचा-
ली नामको बुलाकर कहा कि वैष्णवी सेना जहांतक टिकीहुईहै
उस स्थानसे पांचकोस आगे जाकर किसी नदीके तटपरहमारा
काश्मीरी डेराखड़ाकियाजावै और वहांकेबनकेजितनेवृक्षहों सब
को गोटेसे मढ़वादो कोसोंतक दीपक प्रज्वलितकरादो और वहां
सुन्दरी वेश्याचलकर नृत्यकरें आजरात्रि को हम चांदनीरात्रि
का आनन्द देखेंगे और अपने चित्तको प्रसन्न करेंगे यहआज्ञा
पाकर पांचालने प्रबन्ध करना आरम्भ किया सेनाका सहस्रों
मनुष्य दौड़पड़ा और सेनासे दूरनिकलकर पर्वतके समीप जो
उत्तम बनथा उसको झाड़ बुहारकर साफ कराया और उसपर्व-

त के वनमें एक परमोत्तम स्थान ढूंढ़कर वहांडेरा काश्मीरी खड़ा कराया निस्संदेह वहपर्वतीयस्थान बड़ामनोत्सुकथा और परमेश्वरकी जल और थल रचनाका परम प्रकाश करताथा एकतो वहस्थान बहुत ऊंचाथा दूसरे निर्मलजलकी धारा बहती हुई परमशोभा देरहीथीं और पर्वतोंके शिखरोंकी परिक्रमाकरतीहुई ऐसी दीखतीथीं मानों वह पर्वत रजतमयी श्वेतवस्त्रका डुपट्टा ओढ़े हुयेहै और चारों ओर को हरीभरी दूबके उगनेसे वह पर्वत हरेवस्त्र धारण कियेहुये शोभा देताथा और नाना वर्ण और नानाजातिके जो फूल खिलेहुएथे उनसे यह जानपड़ताथा कि उस वस्त्रपर नानाप्रकारका काम कियाहुआ है उनफूलों को स्पर्श करतीहुई शीतलवायु कामोद्दीपन और चित्तको प्रफुल्लितकरती थी नाना सरोवरों में खिलीहुई कुमोदिनी अद्भुत चमत्कार दिखातीथीं कहीं कहीं निर्मल जल भरेहुये उसचांदनी में ऐसे दीखतेथे मानों प्रभा भरेहुए श्वेतवस्त्र बिछे हैं और उनके किनारे नानाजलपक्षी विहारकरतेहुये अत्यन्तशोभादेते थे और नानावर्ण और जाति के मृग वहां चांदनी में कलोलकरते हुए विचररहे थे पक्षी भांतिभांति के सुरीली ध्वनि से गान करते थे और सुननेवालों के चित्तको मोहतेथे कहीं कहीं प्रफुल्लित फूलोंपर ओसकीबूंदें पड़ीहुई चन्द्रमाकी किरणोंके पड़नेसेमुक्ता की भांति चमकती थीं और उनसे उन फूलों की शोभाअनूप दिखाई देतीथी आहा क्या वर्णनकियाजाय वहशोभातो अद्भुत अपूर्व और अनूपथी ॥

रोलाछंद। क्रौंच हंस समेतलक्षित तहां शरद स्वरूप।
विमल अति आकाश दरशत सुधासिंधु अनूप॥
कुमुद कानन भरे सुंदर सुधासे अभिराम।
फुल्लि वारिजरहे नाना रंग के छवि धाम॥
भई रजनी सुधासी धरि सुधासिंधु प्रकाश।

सुमन फूले श्वेत सब चहुँ ओर फूले काश ॥
मत्त नाना भांति के बहुविहँग बोलत राव ।
भ्रमर गूंजत रहत कूंजत भरे कोकिल चाव ॥

निदान उसरमणीकस्थानपर राजपुत्रका काश्मीरी डेराखड़ा कियागया और सबभक्ष और भोगके पदार्थ रखवादियेगये ॥

चौ०। उत्तम उत्तम बसन डसाये। तिनपर शुचि पर्य्यंक बिछाये ॥
खान पान भोजनके नाना। धरे पदारथ बहुत विधाना ॥

जलधाराओं में स्फटिकके कमल प्रज्वलितकरके छुड़वा-दिये गये और वृक्षोंकी शाखागोटे से मढ़वादीगई और ऊंचे ऊंचे भाड़ रखदियेगये और नदीकेकिनारे उत्तमबसन बिछवा दिये और एकओरको उत्तम मद्यके पात्र और पानपात्रस्थापित कियेगये और दूसरीओर परमअलंकारोंसेयुक्त रत्नजटितशय्या बिछादीगई सुंदरस्वरूपवान् युवान स्त्रियां वहां आकर ठिठोलि-यां करनेलगीं जलतरंग आदि बाजे मधुर मधुरध्वनिसे बजने लगे वह स्त्रियां नानाप्रकारके रत्नजटित बस्त्र और आभूषणों से अलंकृत बड़ी शोभायमान और स्वरूपवान्थीं चारों ओर गुलाल और अबीर उड़नेलगा नाच नदीके तटपरहोनेलगा रंगकीपिचकारियांचलनेलगीं आहा बड़ाही अद्भुतआनन्दथा॥

चौ०। कंचनबरन बसनको तम्बू। कियो भेट हां जो नृप जम्बू ॥
अतिवि तरितसोतहांलगायो। कंचनडोरिनसोंखिचवायो ॥
उत्तम बरण बितान सुहाये। अग्रभाग में तहँ तनवाये ॥
मुक्ता भालर परम सुहाई। चहूं ओर ताके लगवाई ॥
परदा परम अनूप बनाये। द्वार द्वार प्रति तहां बँधाये ॥
भांति भांतिके बसनअनूपा। बिछवाये अति सुन्दर रूपा ॥
नदी कूल जे दीपक बारे। सोहैं जनुजल उगे सितारे ॥
उड़तअबीर तहांइमि सोहै। टूटततारा नभ जिमि वोहै ॥
फटिककँवलतरुलटकेचारू। जनुफल लगे तेजसा गारू ॥
परम सुंदरी तीय सुनैनी। गावत गीत मनोहर बैनी ॥

जब सब उक्त सरंजाम ठीकहोगया तब राजपुत्रको खबर

कराईगई सुनतेही राजपुत्र इन्द्रविक्रमने बड़े उत्तमवस्त्र धारण किये और उस रमणीकस्थानपरपहुंचकर नदीतटपर उत्तम आसनपरजाकर बैठगया सामने उसके परमसुंदरी स्त्रियां नाच करनेलगीं और रसभरेहुए गीत गानेलगीं उनके गानेसे अपूर्वही समय बँधगया एक तोसन्नाटा दूसरे वनकीशोभा तीसरे हरीभरी पृथ्वीपर चांदनीका छिटकना अपूर्व शोभादेताथा और जल औथलके फूलोंपर चन्द्रमा और तारागणोंकी आभापड़ने से उस स्थानकी पृथ्वीकी निरालीही सुंदरताथी उससमय वायुकी शीतलता और फूलोंकी महकने सबके चित्त में महा आनन्द उत्पन्नकरदियाथा और उस आनन्दमें उन कोकिलबैनी सुंदरी स्त्रियोंने जो बिहागकाराग ऊंचे स्वरों से लहककर गाया सब चराचरजीवोंको उन्मत्त बनाया ॥

चौ० । मधुरगानध्वनिसुनितेहिकाला । खगमृग सबरेभयेबिहाला ॥
त्यागो अली पान मकरन्दू । तज्यो चकोर ताकिबो चन्दू ॥
मारग भूलि भये मृग ठाढ़े । पूरित प्रेम चित्र के काढ़े ॥
तरुशाखनि खग बैठेआई । भूलिबास तहँ रहे लुभाई ॥
शीतल मंद सुगंध समीरा । भ्रमनलगीतहँ थिरहोइधीरा ॥
निर्मल चन्द्र चांदनी सोहै । तामें बन शोभा मन मोहै ॥
नीर भरे सर तहां सुहाये । प्रभाभरे जनुवसन डसाये ॥
इन्द्रप्रभालहितरुफलफूला । भये प्रकाश मान सुख मूला ॥
गिरिसों बहुतरु झुके सुहाये । जनु शोभाको निरखन आये ॥
बहुकुसुमिततरु शोभा बाढ़े । लसैं मनहुं निरखें छवि ठाढ़े ॥
तहँकी शोभा परम सुहाई । कुंजलाल कछु बरणिनजाई ॥

उससमय मद्य पिलानेवाले सेवकोंने राजपुत्रको उत्तम वारुणीसे पानपात्र भरकरदिया राजपुत्रने उस उत्तमसुराको पान किया और जब उसका आवेशहुआ तब राजपुत्रकेचित्तमें यह ध्यानआया कि इससमय कोई सुंदर नवीन अवस्थाकीस्त्री मेरे पासहोती तो क्याबातथी इस ध्यानके आतेही एक अपूर्वयोग

प्रकटहुआ अर्थात् यहांसेसमीपमें मायाकृतदेशकी सीवांपरएक कमलाचलनामी पर्वतहै और उसपर्वतपर एक नगर बसाहुआ था और वहां एकदुर्गभीवनाथा और राजा वहांका एकम्लेच्छ मुचुकुन्दनामीथा यहराजामहेन्द्रके मुख्यसभासदोंमेंसे था और सदैव मायाकृतदेशमें रहाकरताथा और महेन्द्रको करदेताथा यद्यपि यह नगर मायाकृतदेशसे पृथक्था तथापि इस नगरमें मायावीम्लेच्छही रहतेथे और वहमहेन्द्रकेही स्वाधीनथा परंतु मुचुकुन्दके मायाकृतदेश में रहनेकेकारणसे यहां का राजकाज उसकी स्त्री सुनैना नामकरतीथी उसके एकबेटी ऐसी सुंदरीथी कि उसकीसमान स्वरूपवान् स्त्री संसारमें तो क्या देवता और गंधर्वों मेंभी नथी उसकी सुंदरताके आगे रतिभी लज्जितहोती थी नाम उस निर्दोषअङ्गीका कलावतीथा वह सदैवबन उपबन पर्वत और समुद्रतटपरजाकर अपनी सहेलियोंके साथ बिहार कियाकरतीथी आजरात्रिके समय वह मायाकृत विमानपर बैठ कर अपनी दासी और पद्मावती नाम सहेलीसहित बनविहार को जाती थी दैवयोगसे इस ओरको आनिकली जहां राजपुत्र इन्द्रविक्रम ने आनन्दकररक्खा था और वहां की शोभा और गानेके मधुरशब्द और दीपकोंकी ज्योतिकोदेखकर उसने इच्छा की कि मैंभी चलकर देखूं और पूछूं कि यह आनन्द किसनेकर रक्खा है परन्तु पद्मावती ने उसको निषेधकरके कहा कि दूसरे की सभामेंजाना ठीकनहीं है उचित यहहै कि इसस्थानकेसामने एक स्थानपर आपभीउतरें में मायाबलसे सबपदार्थ मँगाढूंगी आपभी वहां बैठकर नाचदेखिये उसको देखकर जिसकिसी ने यह उत्सव करायाहै वह आप पूछेगा और आपकेपास आवेगा उससमय उससे मिलकर आपको सब हाल विदित होजायगा और जिसकेपास आप जानाचाहतीहैं वह आपही आजायगा यह बात कलावती को रुची और पद्मावतीने उस मायाकृत

विमानको एक स्थानपर उतारकर ऐसी मायाकी कि वह विहंगम वन एक परम रमणीक बागकी तुल्य होगया ॥

चौ०। नाना तरु अरु लता नवेलीं। मायाकृत प्रकटीं बहु वेलीं ॥
फूल अनेक भांति के नाना। खिले तहां को करै बखाना ॥
कोकिलपिक मयूरखगनाना। मधुरमधुरध्वनि गावतगाना ॥
अमियरूप जल निर्मलधारा। लगीं बहन सतरङ्ग अपारा ॥
डोलनलगी सु त्रिविधवयारी। गन्धभरी अतिशय सुखकारी ॥

जब इसप्रकार से वह स्थान मायाबलसे परम रमणीक बन चुका तब वह सुन्दरी आकर एक स्थानपर अपने विमानपर नदीके कूलपर बैठगई और उसकी दासियां बाजे अनेकप्रकार के बजाने और मधुरीध्वनिसों प्रेम सम्बन्धी गीत गानेलगीं ॥

ठुमरी। सखीरीउनबिन पड़तनहिंचैन ॥ ध्रु० ॥ गुजरतसारीरैनश्रवण नित चाहत सुनत मीठेबैन। दरश बिन तरसिरहे मोरे नैन ॥ भूलतनहीं प्यारे तिहारी सैन। विरह विपति में कटत दिनरैन १ ॥

दूसरीठुमरी। पियाबिनकैसे सखीधरोंधीर ॥ ध्रु०॥ जबतेगयेमोरीसुधिहु न लीन्हीं ऐसेनिठुर वेपीर। पियाबिन० ॥ खानपान भूषण हमत्यागे त्यागे तनसे चीर। पिया बिन० ॥ निशि दिन मदन सतावत हमका याते ना जिय धीर। पिया बिन ० ॥ कहैं सरदार विकल सब सखियां वेग मिलो यदुवीर। पिया बिन ० २ ॥

रागविहाग। सँवलियाको कौने बन ढूंढन जाऊं ॥ ध्रु० ॥ गोकुलढूंढ़ वृन्दावनढूंढा ढूंढ़ि फिरी नँदगाऊं। सँवलिया० ॥ सूरश्याम मोहिं आनि मिलावहु चरणनिके बलिजाऊं। सँवलिया० ॥

दादरा। अरे सइयां हमसेकरो जनिप्रीति ॥ ध्रु०॥ न्यारेफिरत अलबेले मतवाले तुमकेहिके हो मीत। अरे हां रे सइयां ० ॥ सौतिनके घरआवत जातहो कौन तुम्हारी रीत। अरेहांरे सइयां० ॥

इस गानेका शब्द जब राजपुत्र इन्द्रविक्रम के कानमें पड़ा तब वह अपने आसनपरसे खड़ाहोगया और मैदानमें आया और चांदनी तो छिटकही रहीथी देखा कि दूरपर कुछ सुन्दर

स्त्रियां गानकररही हैं देखतेही चकितहोगया कि यह कैसा उत्सवहै और येकौनहैं मानुषी हैं अथवा कोई देवकन्याहें या अप्सरा स्वर्ग से उतरकरआई हैं अंतमें विचारकिया कि समीप चलकर इसको देखिये और यह विचारकरके वह उनस्त्रियोंकी ओर गया और जब समीप पहुँचा तो देखा कि ॥

चौ० । वनमें सोथल परम सुहायो । जनु वसन्त ऋतु आपु बनायो ॥
फटिक चौतरा बन्यो अनूपा । तासु अग्र सर सुन्दर रूपा ॥
तापर वर विमान इकराजै । तामें सुन्दर नारि विराजै ॥
ठाढ़ी चहुँदिशि वाम सुरूपा । उरगण मधि जिमि इन्दुअनूपा ॥
वनमें कोऊ करति विहारू । धरति कंचुकी मणिकोउहारू ॥
डोलिडोलिकोउकरतठठोली । मधुर बैन कोउ बोलतबोली ॥
कोऊ तरुतर खड़ी नवेली । नदी कूल पै कोउ अलवेली ॥
झूलि झूलिझूला कोउगावै । कोऊ स्वरभरि तान लगावै ॥
दो० । कोऊ सुन्दर भामिनी लीन्हे हाथ सितार ।
गति अद्भुत इरशाद के गावति राग मल्हार ॥

चौ० । वय किशोर सबसुन्दर वामा । अङ्ग अनङ्ग भरी छवि धामा ॥
चतुर सुघर सुनै न सुकुमारी । छलबल भाव भरी सबनारी ॥
यौवन छवि अरजाके लागै । तासु मूर्च्छा कवहुँ न जागै ॥
तिन मधिसो सुन्दरी विराजै । जासु रूप लखि रति छविलाजै ॥
यौवन भरी सुघर सुकुमारी । सहजहिं मुनिमन मोहनहारी ॥
चितवनमें जग वशकरराखै । कुंजलाल किमि उपमा भाखै ॥

सत्यतो यहहै कि उस सुन्दरी के स्वरूपको देखकर किसी के चित्तको क्योंकर धैर्य्य रहसकताथा जिसके मुखारविन्द की द्युति चन्द्रमाकी छटाको भी मलीन करती थी और केशोंकी श्यामता निशाके कृष्णवर्णको लज्जादेती थी भौंहें ऐसी धनुषाकार बांकी और नेत्रों के कटाक्ष ऐसे तीक्ष्ण बाणरूपीथे कि मनुष्यके हृदयमें प्रवेशकरके जो काम वे करते थे वह गांडीव धनुषसे मुक्त शायक भी नहीं करसकते थे ॥

क० । बदन विलोकिशशि समता लहे न क्योंहूं लोचन विलोकि जल-जातहू लजातहै । नागर नवेली नख शिखलों निकाई भरीबानक विचित्र लखि लोचन सिरातहै ॥ कृष्ण प्राणप्यारे अतिउज्ज्वल लसतवाके मुकुर से गात महाशोभा सरसातहै । अंग अंग प्रति प्रतिबिम्ब परिकैऊठोर एक एक भूषण अनेक जाने जातहै १ ॥

राजपुत्र इन्द्रविक्रम उससुन्दरीको देखतेही मोहित होगया और ऊंचेस्वरसे पुकारकर बोला कि ॥

दो० । क्यों न हाय मम मन करै क्यों नहिं करे पुकार ।
लखि उरभ्यो निकसत नहीं छरे छबीले बार ॥

इस बाणीको राजपुत्री की दासियोंने सुना और राजपुत्रके मुखारबिन्दको देखकर सब चकितहोगईं परन्तु लज्जायुक्त होकर अपने अपने मुखको वस्त्रसे ढककर भागीं और अपनी २ सहेलियोंसे इठला इठलाकर हाथ पर हाथ रखकर और दांतों में उँगली दबाकर कहने लगीं ॥

चौ० । राजपुत्रको लखि अलवेली । एक एक सन कहत नवेली ॥
कछु लज्जावश दूरपरानी । झझकि ओट करि बोलतबानी ॥
को यह पुरुषरूप छबिधामा । आयो यहां कौन से कामा ॥
तो नहिं हमहिं न हमतेहि जाने । सो चिन्हार सम आपुहि माने ॥
युवारूप अरु परम ढिठाई । लखिहों हियमें जाति सकाई ॥
उरमें कहा जानि यह भायो । कारण कवन याहि बन लायो ॥
निडर ढीठ निज लाजगँवाई । निरखतहै टकटकी लगाई ॥
इमिकहि एक सखी गोहराई । बोली बचन करत इठ लाई ॥
हे हो बुधि तव कहां परानी । नारिनिमें जिनि आयेहु मानी ॥

येबातें सुनकरपद्मावतीनेउनदासियोंसे घुड़ककरकहाकिअरी उनमातियो तुम किससे ऐसीबातेंकररहीहो दासियांबोलीं कि देखिये यहसामने कौनखड़ाहै कैसाढीठहै कि कहनेसेभी नहीं हटताहै यह सुनकर इन्द्रविक्रमहँसा और बोला कि ॥

दो० । हमचाहैं तौ द्वारको तोड़ घुसें बरजोर ।
रहै प्रीति परदाकिये जहांरहत चितचोर ॥

पद्मावतीबोली कि आपका क्याकहनाहै आपऐसेही हैं परंतु यहांकोई मदमातीनहींहै ऐसीबातें आपकहीं और जाकर कीजिये हम सबपरतो कृपाकीजिये निदान इनसबबातोंका शब्द राजपुत्री कलावतीके कानोंमेंभीगया और वहबोली कियह क्याहै जो सबकीसब एकजगह गोलबांधकर खड़ीहो और चिल्लातीहो यह सुनकर एकबोली यहां एकपुरुष घुसआयाहै यहसुनकर वह उठी किदेखूं कौनहै और वहां आई जहांराजपुत्र खड़ाथा वहां आकर जो राजपुत्रके कामदेवकेसे सुन्दरस्वरूपको उसनेदेखा एकप्रेमरूपी तीरउसके हृदयके पारहोगया और उसके परमासक्तहोजानेके कारणसे वहविह्वलहोगई और उसको किसीप्रकारका ध्यान न रहगया और राजपुत्रके सुन्दरस्वरूपको देखने लगी उससमय उसने देखा कि एकपुरुष युवावस्था का खड़ा है मुखमण्डल उसका उसरात्रिमें ऐसादीखताहै मानोंसूर्य्य ने उदयकियाहै उसकेपरमसुन्दर मुखकीछटाचारोंओरको फैली हुईहै कपोलगोल और अरुणारहैं नासिका परममनोहरहै नेत्र बड़ेबड़े और वीरता सूचितकरनेवालेहैं भालऊंचा औरतप्तकांचनकीसमानदीप्तहै चिबुक परमशुभ्रहै भुजा परमपुष्ट और दीर्घ हैं शरीरसब हृष्टपुष्ट और निर्दोषहैं ॥

दो०। अंग अंग शोभा परम सुन्दरताको धाम।
मनहुंधारिनिज रूपको आयोतेहिथलकाम ॥

वह राजपुत्री उसकोदेखकर गिरपड़ी और मूर्च्छित होगई और राजपुत्रकी भी यहीदशाहुई उससमय पद्मावतीने दोनोंपर सुगन्धितजल छिड़ककर दोनोंको चैतन्यकिया जब राजपुत्रकी आंखेंखुलींऔरउसनेराजपुत्री कलावतीको अपनेसमीप चैतन्य होकरखड़ाहुआ पाया झट उसकाहाथ पकड़लिया राजपुत्री लज्जितहोगई और दोनोंजनेवहांसेचलकरवहांआये जहांराजपुत्री पहिले बैठीथी और वहांदोनोंजने बैठगये उससमय पांचालने

देखा कि सब सरञ्जाम उत्सवका ठीकहै परन्तु राजपुत्रनहींहै यह देखकर वह चारोंओरको देखनेलगा और एकओर कुछ स्त्रियोंका झुंडदेखकर उसीओरकोचला और समीपपहुंचकर राजपुत्रको एक परमसुन्दरी स्त्रीकेपास बैठाहुआ पाया और देखा कि पद्मावती उनदोनोंकी सेवामें स्थितहै पाञ्चल उसपर आसक्तहोगया औ अपने राजपुत्रके पास चलागया यह पाञ्चाल प्रहासका पुत्रथा और प्रहासके स्वरूपका वर्णन ऊपर होचुकाहै उसीप्रकारका स्वरूप इसकाभीथा निदान उसके अपूर्व स्वरूप को देखकर पद्मावती बहुत हँसी और बोली कि आपइधर तो देखिये आपके शिरपर बनमानस खड़ाहै यह सुनकर पाञ्चलबोला कि मुझकोतो पीपलके पेड़ोंपरसे भुतनियां उतरकर बैठीहुई दीखतीहैं यहसुनकर सबबड़ेशब्दसे हँसीं और राजपुत्रने पांचालको पास बैठालिया निदान पद्मावतीके कहनेसे उस राजपुत्रीने पानपात्रमें उत्तम वारुणी भरकर राजपुत्रको निवेदनकी राजपुत्र बोला कि हे सुन्दरी हेसुलोचना तुम किस सौंदर्यताकी फुलवाड़ी की फूलहो किसकीपुत्रीहो क्या तुम्हारानामहै और किसकी उपासनारखतीहो जोतुमवैष्णवहोगी तोहमतुम्हारीदीहुई मद्यपीवेंगे नहीं तोतुम कहां और हम कहां यहसुनकर वहबोली कि आप अपना नाम बताइये मुझे तो सबसंसारजानताहै कि मेरानाम कलावतीहै और यह कहकर उसने अपना सबवृत्तांत वर्णन किया उसको सुनकर राजपुत्रबोला कि मैं महाराज शत्रुञ्जयका पौत्र और राजपुत्र पार्थविक्रमकापुत्रहूं नाममेरा इन्द्रविक्रमहै हम लोग दूसरे मतके मनुष्यसे प्रीति और सम्बन्ध नहीं करते हैं इससे जोतुमको हमसे प्रीति करनाहै तो मायाकरना छोड़दो और अद्भुत आदि मिथ्याईश्वरों की उपासनामतकरो क्योंकि ये सब मनुष्यहैं और इनसबका उत्पन्न करनेवाला केवल एक वही परमात्मा सच्चिदानन्दहै जिसनेअपनी अनन्तमाया और

अनन्त शक्तिसे सब संसारको रचा है मायाकृत देशका रचने वाला भी वही है उसकी महिमा अनन्त है भुक्ति और मुक्ति का दाता वही है वह अंतर्य्यामी और घट घटव्यापी है और क्षण मात्रमें जो चाहे सोकरसकता है सब संसारी जीवों को केवल उसी परमात्माकी उपासनाकरना उचितहै यह सुनतेही उस राजपुत्रीके चित्तसे अज्ञानरूपी अन्धकार तत्काल दूरहोगया और उसने उस सत्यईश्वरको पहिंचान कर कहा कि आपइ-तना अप्रसन्न क्योंहोते हैं मायातो मैंजानतीही नहींहूं हांमाया-कर्ता और अद्भुतको मानतीथी सो आजसे उन शिरकटों को भी न मानूंगी यह सुनकर राजपुत्रने जब उसकी प्रीतिवैष्णवी मतमें देखी तुरंत उसको विष्णु भगवान्‌की महिमा सुनाई और वैष्णव मन्त्रका उपदेश किया वह राजपुत्री और उसकी सहेली पद्मावती और सब दासियां उन मिथ्या ईश्वरोंकी उपासनाको छोड़कर वैष्णव होगईं उस समय राजपुत्रने उस सुन्दरीके हाथसे पानपात्र लेकर मद्यपान किया और कहा कि ॥

कुंडलिया। जो अभिलाषा उररही दैवदई सो आजु।
सो समान को धन्यहै सिद्ध मनोरथ काजु॥
सिद्ध मनोरथ भयो आजु मोहिंमिली पियारी।
रूपराशि छविधाम अङ्गअँगमें द्युतिभारी॥
प्रीति धारि उर मोहिं पियावत मद्यनवेली।
कसनहिं पीवों ताहि देइ जो वह अलबेली॥

निदान दोनों प्रीतिपूर्वक मद्यपानकरनेलगे और पद्मावती को पांचालनेछेड़ना आरंभकिया और कहा कि हेरानीकलावती आपकीसहेली मुझसे सैनमेंयहकहती हैं कि आओहमतुम पर्वत की कन्दरामें चलकरकामकेलिकरैं यहसुनतेही पद्मावतीने एक दुहत्तड़मारी और बोली अरेमरे रामजी तेरानाशकरे क्यो झूंठ बोलताहै लेभैनाऐसी कौनसीमेरी खाटकटीथी जोइसनिगोड़ेसे

में सैनों से बात करती मैं तो इससे अपना लोटाभी न उठवा-
ऊंगी यह बैठा बैठा यों ही अपने मन की निकालरहा है अरे
हत्यारे तू इसीआशा में मरजायगाऔर मैं तुझपर थूकूंगीभी
नहीं पांचाल बोला कि सबके दिखाने को मुंहसे तो ऐसी बातें
करतीहो परंतु अपनीछातीपर हाथरखकर मुझसे कहतीहो कि
अकेलेमें चलकरयों लपटाऊंगी उससमय पद्मावती दोनोंहाथ
छातीपर बांधेहुये खड़ीथी पांचालकेकहनेसे उसने जो दोनोंहाथ
गिराये सब देखकर मारेहँसीके लोटगये और पांचालने सबकी
आंख बचाकर उसको चुटकीसे नोचलिया तब पद्मावती फिर
उसे कोसनेलगी उससमय पांचालनेकहा कि देखिये मैं न बोल-
ताहूं न चालताहूं यह स्त्री बड़ी कामोन्मत्तहै जोमैं इसका कह-
ना नहीं करताहूं तो यहमुझे कोसतीहै निदान उसको पांचाल
ने इतनासताया कि वह अंतको रोनेलगी और खिसियाकर
माथा कूटनेलगी और कलावतीसे बोली कि मैनातेरी सौगन्द
सहस्रों भोग सुनाऊंगी नहीं इसे मनाकरदे ऐसी हँसी अपनी
मा बहिनसे जाकरकरै यह अपने जीमें समझा क्याहै तबराज-
पुत्रने पांचालको निषेधकिया जब वह चुपहोरहा तब पद्मावती
उसकी ओर देखकरहँसी और मुंह फिराकर वस्त्रसे ओट कर-
ली तब पांचालने कहा कि रानी कलावती अब आपने देखा
वहबोली कि सचतोहै निगोड़ी तू आपतो सैनाकानी करतीहै
और खिली जातीहै और उस बिचारेको दोष लगातीहै निदान
इसी प्रकारसे आनन्दमें थोड़ीरात्रि रहगई और सबकोईमद्य
के आवेशमें उन्मत्तहोगया उससमय राजपुत्रने पांचालसे कहा
कि आजतुम कुछ गाओ और चित्तको बहलाओ वहतो प्रहास
का पुत्रथा सो प्रहासकी निपुणतातो गानविद्यामें बरपानेके का-
रणसेथी वह वैसातो नथा परन्तुतौभी गानविद्यामें बड़ा प्रवीण
था और अच्छा गाताथा निदान राजपुत्रके कहनेसे उसनेहाथ

में वाद्यलेकर ऐसागाया और बजाया कि सब सुननेवाले मोहित होगये पिछली रातका समयथा चांदनी ओसके पड़नेसे निर्मल होगईथी कलियां फूलफूलकर खिलती जातीथीं निशा भीगती जातीथी वायुशीतल मन्द और सुगन्ध चलतीथी दीपकसब झिलमिला झिलमिलाकर बुझगये थे और जो कोई प्रज्वलितभी था वह बुझने को लहरा रहाथा चकोर चन्द्रमा को देख देखकर दौड़तीथी मोर पहाड़पर नाचरहेथे फूलोंकी महक चारों ओर छाईथी सबको रातभरके जगने और मद्यके आवेशका आलस्यथा आंखोंमें लाललाल डोरेपड़ेथे जमुहाई लेतेथे दीपकोंकेकमलोंमें पतङ्गोंके ढरहोगयेथे बिछेहुये वस्त्रोंपर झोलपड़गयाथा उससमय राजपुत्र और राजपुत्री दोनों एकदूसरेको चुम्बन करनेलगे और पांचाल पद्मावतीके साथ बिहार करने लगा और सबदासियां हटकरआपसमें हँसी करतीहुई लेटरहीं॥

क०। करति कलोलगहि चूमति कपोललोलनथ घनबोलबोल बोलतिहै रसकी। त्यों त्यों पीयहीय लपटायके दिवाकरजू दाऊ कुचछातीसों लगायकर मसकी॥ घस कि घस कि सुख फेरि फेरि हेरिहेरि लचकि लचकि कटि छोड़ति न चसकी। कोककी कलानिते करति चुम्बनादि कर्म सोरह शृँगार किये सोरहबरसकी॥

उससमय राजपुत्रीके मस्तककाटीका मिटगया केशखुलगये गलेकेहार टूटगये कंचुकी मसकगई दोनोंने स्त्री सत्सङ्गके सिवाय अच्छी प्रकारसे बिहारकिया फिरजो दोनोंचैतन्यहुये पांचाल को सन्मुख बुलाया पद्मावतीभी अपने बिहारके स्थानसे वहां आई तो देखा कि राजपुत्रीके शिरके बालखुलेहुये हैं कपोलोंपर चुम्बनके निशान बनेहैं कञ्चुकी ऊपरको चढ़गईहै आंखें लज्जा से नीचे कियेहैं निदान जबवे दोनों सामनेआये राजपुत्रनेकहा कि हे पांचाल अब फिर कुछ सुनाओ यहआज्ञापाकर वहफिर गाने लगा॥

भैरवी ॥ बाबुल मेरानैहर छूटाजाय। जब डोलिया दरवजवाँपै आई अपना बिराना छूटाजाय ॥दो० ॥ चँगनातौ पर्वतभयो देहरीभई विदेश। लेबाबुलघर आपना जातपियाके देश॥ बाबुल०॥दूसरीभैरवी ॥ केहुविधि मिलिजावें गिरिधारी। ऐसोकोउ यतनबतावोरीवारी॥ गोकुलढूंढ़ावृन्दा-वन ढूंढ़ा ढूंढ़ी मथुरा सारी। केहुविधि० ॥

निदान इसी आनन्दसें वहरात्रि व्यतीतहुई और दिनमणि सूर्य्यने प्राची दिशासे उदयहोकर सबसंसारको अपने निर्मल तेजसे व्याप्तकरदिया और वह रात्रिका अन्धकार और चन्द्रमा की चांदनी दूरहोकर प्रातःकाल होगया ॥

दो० । होत उदय दिननायके भयो निशातम दूर।
क्षीणज्योति चन्दा भयो गयो तेजजग पूर ॥

उससमयका अपूर्वही आनन्दथा एकतो प्रातःकाल दूसरे सुन्दर शीतलवायु तीसरे फूलोंकी कलियोंका उसवायुके स्पर्श से खिलना चौथे सूर्य्यकी किरणोंका पर्वतोंकी जड़ोंसे फूटकर वृक्षोंकी चोटियोंपर पड़ना और उससे पीतवर्णका प्रकटहोना यह जानपड़ताथा मानों वसन्तऋतु बसंती वस्त्रोंको धारणकर-के यहांनिवासकरतीहै उससमयपक्षी अपनेअपनेघोंसलोंसेचह-चहातेहुये निकलतेथे और वृक्ष और पर्वतके ऊंचेनीचे स्थानों पर बैठ बैठकर मधुर मधुर वाणी बोलतेथे और जलपक्षी नदी और सरोवरों के तटपर उड़उड़कर जलमें गोता लगातेथे और कलोलें करतेथे ॥

सो० । फूले कुसुम अनेक डोलति धीर समीर तहँ।
खगबहु जाति सटेक बोलतबोली मधुरसुठि ॥

ऐसे समयमें प्रियसे वियोगहोना कालरूपीथा ॥

दो० । प्रियको गमन विदेशको कहहुन हमहिं सुनाय।
प्रियअरु प्राणनिको गमन हुइहै साथहि धाय ॥

निदान उससमय राजपुत्र और राजपुत्री दोनों एकदूसरेसे मिलकररोनेलगे औरराजपुत्रनेकहा कि हेप्राणप्यारी कभीकभी

तुमने अपने भक्तोंपर कृपाकरके इधरआना और हमारे कुसुम रूपी चित्तको प्रफुल्लित करजाना यह सुनकर वहबोली कि हे प्राणनाथमें दिनभरतो वियोगरूपीशिला अपने हृदयपर रखकर सायङ्कालकी बाटदेखूंगी और उससमय इसी स्थानपर आकर अपने वियोगके दुखको तुम्हारा दर्शन करके दूरकरूंगी इन्द्र-विक्रमने यह प्रेमरूपी वाक्य सुनकर कहाकि ॥ मोहिंछिनव्यर्थ तोर आगमनू ॥ हे प्राणप्यारी आजतो हमारेप्राणोंकेजाने का सामानहै वेष्णवी सेनामें गदाप्रहारी और खड्गप्रहारी नामम्ले-च्छोंनेआकर उपद्रवमचायाहै उसनेमेरेदशमित्रोंको युद्धमेंजीत-कर पकड़लिया है इससे मैंने आज अपनेनामसे युद्धके बाजे बजवायेहैं मेरा और उनका आज युद्धहोगा परन्तुमें मायानहीं जानताहूं इससेनिस्संदेह यातो माराहीजाऊंगा अथवा कैदहोजा-ऊंगा राजपुत्री यह सुनतेही अधीरहोगई और पद्मावतीकीओर देखनेलगी वहभी पांचालके वियोगकेकारण से नेत्रोंमें आंसू भरेहुए म्लानचित्तखड़ीथी राजपुत्रीकी बातसुनकर बोली कि ये तो हमारेप्राणनाथहैं अब इनसे अधिक कौनसीवस्तु प्यारी इस संसारमें है इनको वह मायाविध्वंसिनी खड्गदेदीजिये येतो दिनभर रणभूमि में अहेरखेलें और हम दोनों स्थानकोसजावें ऐसा करनेसे हम दोनोंका वियोगकालकटजायगा और सायं-कालको ईश्वर फिर दोनोंको मिलायेगा जो परमेश्वरकी कृपा होगी तो शीतमसे फिर भेटहोगी यह सुनकर राजपुत्रीने एक दासीसेकहा कि ला वह मायाविध्वंसिनीखड्गसुभेद उसने राज-पुत्रको वह खड्गदेदिया और कहा कि यह खड्ग मायाकृतदेशके उत्तम पदार्थोंमेंसेहै महाराज महेन्द्रने मेरेपिताको किलेकीरक्षा करनेकोदियाथा मेरीमाता मुझकोजानती है कि यह वनविहार करनेकी बड़ी इच्छारखती है और रात रातभर अकेली फिरा करती है कहीं ऐसा न हो कि अकेले में कोईमायावी मिलजाय

और हमारी प्रतिष्ठाभंगकरै इससे इस खड्गको साथकरदेती हे इस खड्गका यह प्रभावहे जिसकेपासहोगा उसपर मायाकृत प्रयोग न चलेगा और कैसाहीवड़ा मायावी क्यों न हो इसके प्रहारसे दो खंडहोजायगा निदान राजपुत्र उस खड्गको पाकर बहुत प्रसन्नहुआ और उसे कोषसेनिकालकरदेखनेलगा और उसके वर्णको अपूर्वदेखकर फिर मियानमेंकरलिया और कमर से बांधलिया उससमय राजपुत्री कलावती अपनी दासियों सहित रोतीहुई विमानपर बेठकरचलदी और राजपुत्रके वियोग से अधीरहोकर यह कहतीथी ॥

दो०। विरह अग्नि तनमें घुसी छिन छिन जारति गात।
प्रीति किये फल यह मिल्यो अब नहिं कछू सुहात॥

उससमय राजपुत्रने विनयपूर्वक कहा कि हे प्राणप्यारी हे सुंदरी हे सुलोचना आजरात्रिको अवश्य फिरयहांआकर मुझ अपने भक्तकी विरहअग्निको शांतकरियो और जो तुमने आने में देरीकी तो फिर यहीहोगा कि ॥

चौ०। जो तवदर्शन मिल्यो न प्यारी। तोहुइहैं मम प्राण दुखारी॥
सो दुख कैसहुं सह्यो न जैहै। करि अधीर प्राणनि लैजैहै॥

निदान जब राजपुत्री चलीगई तब इन्द्रविक्रम सब सामग्रीको उसीप्रकारसे छोड़करचलदिया और सेवकोंकोआज्ञादी कि आज शोभा और भोगविहारका कोई अलंकार न रहजाये मैं रणभूमिसे लौटकर यहांआऊंगा और अपनेचित्तकोबहलाऊंगा निदान यहआज्ञादेकर वह वहांसेचलदिया और सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रोंको धारणकियेहुए उत्तम अश्वपर सवारहोकर रणभूमिकी ओरका रास्तालिया उधर पांचालने जाकर राजपुत्रके जो साथीयोद्धाथे उनसेकहा कि युद्धकी सबसामग्रीलेकर राजपुत्रके पासचलो यह आज्ञापातेही वह सबलोग अश्वोंपरसवार होकर ध्वजा और वाद्यआदि अनेकरणके अलंकारोंको लेकर

राजपुत्र इन्द्रविक्रमसे आमिले और वह उनसबकोलेकर वहांसे रणभूमिकीओरचला और इधर महाराजशत्रुंजयनेभी रात्रिभर सेनानिर्याणकरनेका प्रबन्धकिया और प्रातःकालमें नित्यकर्मसे निवृत्तहोकर अस्त्र शस्त्रोंकोधारणकिया और सुग्रीवनामी घोड़ा पर सवारहोकर श्रीमहाराजाधिराजके शयनमन्दिरपरगये और वहांसे श्री महाराजाधिराजको बीचोंबीचमेंकरके सेनासहित रणभूमिकीओर चले॥

तोमरछंद। सो सैनअति बलवान। लीन्हे सुअस्त्र महान॥ बहुध्वजनि सों सुविचित्र। धरिक्षात्र धर्म पवित्र॥ बहुयुद्ध वाद्य बजाय। रणभूमि पहुंचिआय॥ तहँलसे वीरसुभप। जनुकाल रूप अशेप॥ असिगदा लीन्हे पानि। करलिये धनु अरुबान॥ सबव्यूह रचनाबद्ध। ठाढ़ेभये सन्नद्ध॥ यहदेखि अरि रिसपाय। निजसेनको बढ़वाय॥ करिताहि व्यूहित तत्र। आयो सुरणथल यत्र॥ रणहेत शूर सधीर। ठाढ़ेभये तेवीर॥

जब दोनों सेना लड़नेपर तुलगईं तब गदाप्रहारी रणभूमिमें आया और अपना चमत्कारदिखाकरबोला कि जिसको मेरेसाथ रणका उत्साहहो वह आकर युद्धकरै अभीवैष्णवी सेनासे कोई उससे युद्धकरनेको नहींगयाथा कि अकस्मात्बनकीओरसे गर्द उड़ी सबउसओरको देखनेलगे और देखा कि आगे आगे एक हाथीपर बड़ीभारी ध्वजा फहरातीहुई चलीआती है उसकेपीछे सत्रहसौ बाजेबजानेवाले नानाभूषणोंसे अलंकृत अनेकप्रकार के बाजेबजातेहुए चलेआरहे हैं उनबाजों का घोरशब्द आकाशमें छायाहुआहै और उनकेपीछे कईसहस्र शूरवीर बड़े २ बलवान अश्वोंपरसवार नानाप्रकारके अस्त्र शस्त्र धारणकियेहुए आरहे हैं और उनके आगे आगे राजपुत्रइन्द्रविक्रममहाबलिष्ठ वायुवेगी घोड़ेपरसवार चलाआरहा है वह घोड़ाश्यामकर्ण घोड़ोंकी जातिमेंसे था और अपने असवारके चित्तकी वृत्तिके अनुसारचलता था निदान राजपुत्रके सवारहोने से वह उछलता कूदता और अनेकप्रकारकी गतिदर्शाताहुआ चलाआताथा॥

सो० । सोहय परम कुलीन अधिक वायु सों वेग धर ।
चलत सु चाल नवीन युद्ध भूमि नियरत भयो ॥

श्री महाराजाधिराजसे युद्धकरने की आज्ञा तो वह पहलेही से लेचुकाथा उससमय रणभूमिमें पहुँचकर उसने महाराजाधि-राजको प्रणामकी और घोड़ेको बढ़ाकर रणभूमिमें गदाप्रहारीके सन्मुख आया और उसकेसाथके शूरवीर पंक्तिपूर्वक खड़ेहोगये उससमय महाराज शत्रुंजय अपनेपौत्रकी विजयहोनेकी प्रार्थना श्री विष्णु भगवानसे मांगनेलगे और उधर चित्रांगदने अद्भुत मिथ्याईश्वरकोगरमाया कि हे परमेश्वर आजआपकेजासात्रबड़े वेगसेरणभूमिमेंआयेहैं इससमयवी म्लेच्छकोबिनामारे न छोड़ेंगे आपअपनी भविष्यरचनाको सँभालिये यहसुनकर वह मिथ्या-ईश्वरबोला कि मैंने आजयहीरचाहै कि इन्द्रविक्रम माराजायगा निदानयेवातें होहीरहीथीं कि राजपुत्रइन्द्रविक्रमने बढ़करगदाप्र-हारीसेकहा कि पहिले तू अपनाप्रहारकरउसनेसुनतेही मायाकृत गदाराजपुत्रके मारी राजपुत्रने माया विध्वंसिनी खड्गसे उस गदाको दोखण्डकरडाला और उसखड्गके प्रभावसे उस म्लेच्छ की मायानेभी कुछ राजपुत्रपर असर न किया यह देखकर गदा-प्रहारीने झुँझलाकर मायाकरके असिकाप्रहारकिया राजपुत्रने उसे मण्डलकरके खालीदिया और उस मायाविध्वंसिनी खड्ग को हाथमें लेकर उस म्लेच्छको कटिपर प्रहारकरना दिखला-कर बड़ीलाघवतासे शिरपर प्रहारकिया उसने मायाकृत चर्म अपनी रक्षाकेलिये सामने की परन्तु वह खड्ग उस चर्मको का-टकर उस म्लेच्छके शरीरको दोखण्डकरता हुआ पृथ्वीपर उत-रगया और उसके मरने से महा कोलाहल प्रकटहुआ और वैष्णवी सेनामें विष्णोर्जयतिका शब्द पूरगया और चित्रांगद पुकारा कि ऐसेभी बली न देखेहोंगे कि जिनपर न माया कुछ करतीहै न परमेश्वरकी प्रारब्धरचना कामदेतीहै वाह वाहक्या

कहताहै हे परमेश्वर अवतुम अपनी कर्मरचनाको अपने पास रक्खो तुम्हारी कर्मरचना कुछ कामनहीं देतीहै गदाप्रहारी के मारेजानेके पीछे उसका भाई खड्गप्रहारी क्रोधित होकर राजपुत्र के सन्मुखआया और मायाकरके खड्गकाप्रहारकिया राजपुत्रने उसके प्रहारको रोककर मायाविध्वंसिनी खड्गसे उसेभी यम-लोकमें पहुँचाया फिरतो महा कोलाहल मचगया आंधियां काली पीली ऐसी छागईं कि महा अन्धकार होगया उस समय उस मिथ्याईश्वरकी यह दशाहुई कि ॥

दो० । लोटत महि अति विकल हुइ तनकी दशा भुलाइ ।
बिलखि बिलखि रोदन करत हाहा हाय सुनाइ ॥

इसके पीछे उसने उठकर अपनी सेनाको मेघकी समान गर्ज कर ललकारा और कहा कि देखो शत्रुञ्जयका पौत्र जीता न जानेपावै उसकी सेना अपने परमेश्वरकी आज्ञा पाकर लेना लेना पुकारतीहुई दौड़ी और मायावी म्लेच्छोंकी सेनाभी माया कृत प्रयोगकरती हुई बढ़ी कभी अग्निकी वर्षाहुई कभी पत्थर गिरे कभी सर्प उत्पन्न हुये परंतु उस मायाविध्वंसिनी खड्गके कारणसे सब माया व्यर्थ होगई उस समय राजपुत्रने गर्जकर उस समुद्ररूपी शत्रुसेनामें गोता लगाया और कहा ॥

तोमरछन्द । मम इन्द्रविक्रम नाम । जो होत मोसन वाम ॥
बधि ताहि यमके धाम । हौं भेजिदेत सुदाम ॥

उधर महाराज शत्रुञ्जय महा मन्त्रको पढ़तेहुये खड्गहाथ में लेकर मायावीम्लेच्छोंपर चले और वैष्णवी सेना बढ़कर उस मिथ्याईश्वरकी सेनाके सन्मुखगई उससमय दोनों दलमिलकर तुमुल युद्ध करनेलगे और नानाप्रकारके अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षाहोने लगी और दोनों दलोंमें युद्धके वाद्य बड़ेघोर रवसे बजने लगे ॥

तोमरछन्द । तेहिठौर तब तेहि काल । भो युद्ध अति विकराल ॥
दुहुं ओर के भट जूटि । सबविजयनिजनिजऊटि ॥
तिमि लरे विक्रम भौन । नहिं बनत भापत तानें

महि बही शोणितधार । कटि मरे बीर अपार ॥
दो० । ह्वै बेधित तन त्यागि के चले सुभट समुदाय ॥
जोहि तिन्हैं लै अप्सरा यानन पै बैठाय ॥
भीषम सरिता रुधिर की उमगि चली तेहिकाल ॥
रुण्ड मुण्ड करपग लसे जिमि जलजन्तु कराल ॥

इन्द्र बिक्रमपर मायातो चलतीही न थी उसने मायावी म्लेच्छों का बधकरके ढेर लगादिया और उधर वैष्णवी सेना ने उस मिथ्याईश्वर की सेनाको मारकर भगादिया दोनों दलों में महाघोर युद्धहुआ सहस्रोंवीर और मायावी म्लेच्छ मारेगये उनकेमरनेसे सायङ्कालतक कोलाहल और अग्निकीबर्षारही ॥

दो० । बढ़िबढ़ि भट द्वौ दलनके मिलि युग समुद समान ।
अति विक्रम करि करि तहां किये घोर घमसान ॥

सो० । युद्ध यज्ञ दिन पाय यहि विधि को संग्राम भो ॥
जो न सविधि कहि जाय कहो चाहि कवलों कहैं ॥

सायङ्काल होनेपर चित्रांगदने युद्ध निवृत्तहोने के बाद्य बजवादिये और वह मिथ्याईश्वर पराजितहोकर रणभूमिमें स्थित न हो सका किन्तु भागकर रत्नाकरपर्वतके किले में चलागया और खाई के मार्गको खोलकर किलेका द्वार बन्दकरालिया उस समय वैष्णवी सेनाने शत्रुके डेरे और तम्बू आदि सब युद्धकी सामग्री लूटली और महाराज शत्रुंजय विजयपाकर राजपुत्र इन्द्र बिक्रमकेऊपर सुवर्ण निछावर करतेहुये अपनेडेरोंको लौटकर आये और वैष्णवी सेनाके जो बीरमारेगये थे उनको उठवाकर उनका ऊर्ध्व दैहिककर्म करायागया उससमय उन मायावी म्लेच्छोंके मारेजाने के कारणसे जो जो वैष्णवी सेनाकेवीर कैदहो गयेथे सब छुटगये और वे निगड़ोंको तोड़कर राजपुत्र इन्द्रविक्रमके पास चलेआये कोई उनको रोकनेवाला न रहा क्योंकि वह मिथ्याईश्वर तो भयभीतहोकर अपनी सबसेना सहित

भागही गयाथा जब डेरोंपर पहुंचे सब शूरवीरों ने स्नानकरके वस्त्रबदले और सब आकर भास्करीसभा में अपनेअपने योग्य स्थानोंपर बैठगये उससमय महाराजाधिराज ने उत्सव होनेकी आज्ञादी तुरन्त उत्सवहोनेलगा और सबलोग आनन्द पूर्वक बैठकर नृत्य देखने और गाना सुननेलगे परन्तु राजपुत्र इन्द्र-विक्रमने स्नानकरके उत्तमवस्त्र धारणकिये और पांचालकोसाथ लेकर उसी वनकीओर चलदिया जहां राजपुत्री कलावती से भेटहुईथी यहां राजपुत्रकी आज्ञासे सेवकोंने विछौने बदल दियेथे और जो जो सरंजाम पहले दिनथा आज उससे कहीं अधिक था अर्थात् सब वनमें सुगंधित जलसे छिड़कावकिया गयाथा और प्रकाशमान मणियोंको पृथ्वी में जटितकरके ऐसा करदिया था कि वह पृथ्वी आकाशकी समान रात्रिमें दीखती थी निदान वह स्थान जगमगाता हुआ बड़ा रमणीक और शोभित था राजपुत्र जब वहांपहुंचा गद्दीपर आनन्दपूर्वक आ-सीन होगया परन्तु उसका चित्त उस प्राणप्यारी सुन्दरी के वि-रहमेंमलीनथा और उसका स्मरणकरकरके कहताथा कि देखिये वह सुन्दरी आज आती है या नहीं जो वह न आई और उस के जी में निर्दयताही भाई तो फिर मेरा जीना दुर्लभ है कभी कहता था कि॥

दो०। प्यारी तेरे विरह में नदी भये मम नैन।
तनमन कटिकटि यों गिरत ज्यों करार दिन रैन॥
सुन्दरि तुम्हरे दरश बिन तलफत हों दिन रैन।
कबलों प्यारी आइहो पन्थ निहारत नैन॥

और कभी खड़ाहोकर चारोंओर को देखता था और जो पत्ताभी खड़कताथा तो उसका चित्त प्रसन्नहोजाता था परन्तु जब किसीको आतेहुये न देखता था तो उदास मनसे निराश होकर यह पढ़ताथा॥

दो०। प्राण प्रिया आवन कहेहु भावहु करहु न देर।
प्राण मोर अकुलात हे दरशन देउ सबेर॥
मग जोवत वहु काल गत भयो सुन्दरी वाल।
पूरण करि अपनो वचन मेटहु मम दुख शाल॥

निदान राजपुत्र तो उक्तप्रकारसे राजपुत्री के विरहमें विकल था परन्तु अब राजपुत्रीका हाल सुनिये जो माया विध्वंसिनी खड्ग देकर और अपने प्रीतमकी भृकुटीरूपी असिका स्मरण चित्तमें लेकर चलीगई थी वह वहांसे चलकर थोड़ीदेरमें अपने बागमें पहुंची जो कमलाचलके दुर्ग के बाहर बनाहुआथा परंतु वह कई दिनसे अपने मा बापके पास नहीं गईथी इससे उसकी माता सुनैना उसे देखनेको उस बागमें रातसे आईहुई थी जब यह वहां पहुंची इसने माताको दण्डवत्की और उसने इसे घुड़क कर कहा कि अरी छोकड़ी अबतो तैंने अच्छीबात सीखी है रात रातभर घर नहीं आती है न घरका कुछ ध्यानहै न कुछ संसारको समझतीहै दश दशदिन बागमें अकेले रहतेहुये होजाते हैं और न जाने कहां कहां मारीमारी फिराकरती है सत्य बता कि तू कहां गई थी वह बोली अम्मा तेरी सौगन्द कोई कोसभर पर एक बनहै वहां मैं रातको चन्द्रमाकी चांदनी देखती देखती सोगई फिर मेरी आंख सबेरेको खुली नहींतो मैं रातही को आजाती यहसुनकर सुनैना चुपतोहोरही परन्तु उसने देखा स्वरूप उसका औरही ढबका होरहाहै मुखकावर्ण फीकाहोरहा है नुची खुचीसी दीखती है पैर कहीं धरती है और कहीं पड़तेहैं कुच रात्रिही भरमें उभरसे आये हैं जैसे किसी पुरुषका हाथ लगाहो आंखोंका पानी मराहुआ सा दीखताहै चारोंओर को चक्कर मकर देखती है जिससे जानाजाता है कि किसीको ढूंढ़ती है यह देखकर उसने एकांत में जाकर उसकी साथकी दासियों से धमका के और दम दिलासा देकर पूँछा कि सत्य बताओ

राजपुत्री कहां गईथी वे सब राजपुत्रीसे परम प्रीति रखती थीं इसकारणसे सबनेकहा कि हमें अपनी आंखों की सौगन्द है राजपुत्री वनविहारकरने के सिवाय कहींनहींगई थी तब सुनैनाने अनुमानकिया कि ये सब बड़ीचारवाक हैं कभीसत्य न बतावेंगी परंतु कुछ दालमें काला अवश्य है आजसे लड़की को बाहर न जानेदेनाचाहिये यह शोचकर उसने कलावतीको गले से लगा कर कहा कि बेटी मैं तेरेहितकी कहतीहूं सगाई तेरी होगई है अब तू परायेघरकी है जो तेरादूल्हा सुनैगा तौ क्या कहैगा अब तू घरसे बाहर मत जायाकरै यहांहीं क्याकम विहारकरने को है मायाकर्ताकी कृपासे जो तू चाहै सो यहीं होसकताहै बेटी मैंने तौ तुझपरकभी तांसनहीं की जो तू चाहतीरही सो करती रही परंतु अब संसारकी बातेंसुनसुनकर जी डरताहै देखचन्द्रचूड़ा ने महाराजका कैसानामनिकाला है भानुविक्रमपर आसक्तहोकर अपना सत्यानाशकियाहै राजछोड़ापाटछोड़ा और आनन्दछोड़कर अपनेधर्म को बिगाड़ा मुझेभी यह खटकाहै कि बैष्णव क्षत्रियों की सेनायहां से समीप टिकीहुई है और ये लोग निगोड़े स्वरूपवान्भीबहुतहैं फिर युवानी तौ दीवानीहोतीही है कोई ऊंच नीचबात होगई तौ हमाराजगमें कालामुखहोजायगा इससे श्रेष्ठयह है कि जबतक ये मरे क्षत्री यहां से मरकर न चलेजायँ तबतक तू बाहर मत जायाकर अरी बेटी अब तुझको अधिक क्या समझाऊं तू आपसमझदार है इन मेरीबातों को गिरहमें बांधले यह सुनकर राजपुत्री कलावती रोनेलगी और बोली कि अम्मा तुमने तौ अच्छा सुग्घम मुग्घम में मुझको छिनालबनाया मेरेजानेसे तौ लोग बहुत दिनों से जलतेथे कि हाय यह ऐसाआनन्दकरती फिरती है परंतु अब तौ मेरे शत्रुओं के मनका मनोरथ पूराहुआ अब वे अपनेघरमें घीकेदीपक जलावें कि हमराशत्रुकैदहुआ हेमायाकर्ता जिसने मेराबुराची-

ताहो उसकामुख दोनोंलोकमें कालाहो और जिसने मेरीअम्मा से लगाया भरायाहो उसकी युवानीमिटजाय उसका कियाकराया उसकीआंखोंके आगेआवे उसकीआश औलादपरपड़े वह भी कैदहो मरेके पैरों में बेड़ियापड़ें इस संसार से कल्पताहुआ जाय मायाकर्ता उसके अरमें मरीफैलावे जो मुझकोउड़ावे और लाञ्छनलगावे उसकेघरमें कोईनामले वा और पानीदेवा न रहे निदान जब राजपुत्री ने अपना आंचल उठाकर उक्तप्रकारसे कोसना आरंभकिया तब सुनैना ने उसे घुड़ककरकहा कि चल चुपरह कतर कतर तेरीजीभचलीजातीहै देखजो अब तैंने कहीं बाहर पैरदिया तो मुझसेबुरा कोई न होगा उसके क्रोधको देख कर राजपुत्री चुपहोगई और अपनेप्रीतमके दर्शनपानेकी आशाजातीरही आंखोंसे आंसुओंकी नदी बहनेलगी वह रात्रिका आनन्द जो चित्तमें बसाथा और पहलेही पहिल प्रीति लगाई थी इससे उसका धीर्य जातारहा और जी छूटगया॥

बरवाछंद। निशि आनँद उरबस्यो लहौ जिमि चैन। प्रियको कंठ लगावन अरु प्रियबैन॥ पहिलि पहिलिकी प्रीति रीति रसभाव। अंग अनंग उमंग पियाकर चाव॥ नई अवस्था नईप्रीति नवमान। तेहिबिच होव वियोग न असदुख आन॥ कुंजलाल कोउ प्रीतिकरो जनि भूल। बिछुरत निशि दिन उठत करेजवा हूल॥

निदान उसने अपनी मासेकहा कि चाहेमेरेप्राणजायँ अथवा रहैं अबतो मुझको बनविहारकरने का लपकालगगया है मुझ पै घरमें घुटकरकभी न बैठाजायगा मैं तो अवश्यजाऊंगी यही नहीं कि एकहीबारमरना है चाहे परमेश्वरमारे तब मरूं चाहे और कोई मारडाले तुम जो मुझेकाटभीडालोगी तो भी मैं बिना जाये न रहूंगी और जिन्होंने तुमको भड़कायाहै उन्हें भी मैं अच्छीप्रकारसे जानतीहूं फिर अच्छाक्याहोगा मैं उनको रातदिन जलाऊंगी सबकोई यहीकहैगा कि कलावती एकाएक बैठरही

किसीकेसाथ पकड़ीगई थी सो मानेदवोदवोकरके उसके लांछन को छुपालियाहै अब वहबेटी को बाहरनहीं निकलनेदेती है यह कहकर वह बड़े २ आंसुओं से रोनेलगी तब तो माको भी उस की दयाआई और एकआधी बूढ़ी बड़ी जो वहां बैठीथी उसने कहा कि सचतो है पहलेतो उसे विहारकरने और अकेलेरहने का लपकालगादिया अब एकाएक रोकनेसे क्या होता है यही होगा कि कोई न कोई रोग लगजायगा और नयादुख खड़ाहो-जायगा यहसुनकर सुनैनाबोली कि अच्छा जब यहबाहर जाया करे तो अपनेसाथ अपनी धायको लेजायाकरै और धायको बु-लाकर उसनेआज्ञादी कि आजसे यह लड़कीतुम्हारे आधीन है जहांकहीं यह जाय तुम इसकेसाथ छायाकीभांति रहाकरो दे-खोकभी इसको अकेली मत छोड़ना नहीं तो मैं बुरेपेशआऊंगी यह जो राजपुत्रीने सुना बहुतरोनेलगी और बोली कि ऐसीकैद न मैंनेकभीउठाई थी और न मुझसे उठैगी भला अब धायमेरे साथरहैगी मैं तुम अपनी माताका तो दबाउ सहहीनहींसकती हूं धाय जो मेरेसाथरहैगी तो हरबात में पुटपुटबोलेगी फिर मु-झसे काहेको रहाजायगा कुछ न कुछ मेरेमुखसे भी निकलजाय-गा और मैं निगोड़ी बदनाम होजाऊंगी इससे तो फटपड़ै वह सोना जिससेटूटैकानजो मैं ऐसीहीविश्वासपात्रनहींहूं कि धायको साथ साथलिये फिरूं तो जाना भाड़मेंजाय चूल्हेमें पड़ें मैं कहीं नहीं जाऊंगी यहीं अपने प्राणदूंगी और जो जाऊंगी तो इसबु-ढ़िया निगोड़ी को न लेजाऊंगी यह सुनकर उसकी मा बोली कि जो तू अकेली जायगी तो मारे मारके तेरीखाल उधेड़दूंगी ले भैना अब तो यह मुझे भी बातों में उड़ानेलगी ऐसी तू आपा आपी होगई कि कोई बड़ी बूढ़ीभी तेरेसाथ न जाय अब तेरे लिये चाहे जो होय और तू चाहेमरो अथवा जीओ परंतु धाय अवश्य तेरेसाथरहैगी निदान कलावतीने अनेकप्रकारकी बातें

बनाई कि अकेले जानामिलै परंतु किसी बातसे कुछ न हुआ और उसकी माताने वहां धायकेलिये पलँग बिछवादिया और वह वहां आकर ठहरगई और सुनैना अपनेकिले को चलीगई अब तो राजपुत्री अपने पीतमके मिलापसे निराशहोगई और वह रमणीकस्थान उसके कंटकरूपमालूमहोनेलगा वहांसे घबरा कर वह बागमें चलीआई और एकांतमें टहलनेलगी और वहां नानाप्रकारकीकली और फूल औरद्रुम और लता औरबेलि और तड़ाग और निर्मलजलकी धाराओंकोदेखनेलगी कि किसीप्रकार से चित्तको स्वस्थताहो परन्तु उसप्राणप्यारे राजपुत्रके स्वरूप रूपीबागकीशोभा उसकेचित्तमेंऐसीबसीथी कि उसकीयादमेंउस को फूल बाणकी समान द्रुमपञ्चशूल और त्रिशूलकी समान लता गदारूप बेलें पाशरूप जलकीधारा खड्गकी धारकीसदृश और सम्पूर्ण बागकी शोभा कण्टकरूप दीखती थी उससमय वह अधीर्यहोकर राजपुत्रके बिरहमें नीचे लिखेहुए पद पढ़तीथी॥

ठुमरी। दरश बिन तरसि तरसिरहे नैन ॥अन्तरा॥ घरि घरि छिन पल मोहिं नभावै परतनहीं दिलचैन। एकतोसखी विरहकीमारी दूजेसतावत मैन॥ जबते गोकुल तज़िगयो सांवरो कहि न गयो कछुबैन। कहें सरदार श्याम बिनदेखे कटत नहींदिनरैन॥ दूसरी ठुमरी॥ बिरहकर आगिलगी तनमें॥ अन्तरा॥ जरतगात दरशनबिन पियके लूक उठतिं मनमें। घर बाहर मोहिं कछु न सुहावै जानचहति बनमें॥ पियप्यारी मूरति नहिं बिसरै चित मनमोहनमें। वेगि दरश मोहिं देउनहींतौ तजबप्राणछनमें॥

इसीप्रकार से पद्मावती भी पांचालके बिरहमें दुखीथी पल पल कटना भारीथा जिससमय उसका हास्य उसको याद आ-ताथा चित्तडामाडोल होजाताथा और ऐसा जानपड़ताथा मानों हृदयपर कोई छुरियांलगारहाहै और वह महादुखीहोकर अपने चित्तसे कहतीथी कि तैंने बैठेबिठाये क्यों यह रोग मोललिया हाय नतू किसीसे प्रेमकरती न तेरी यह गतिहोती निदान इसी प्रकारसे वह मलीनमन राजपुत्रीके पासगई और उसे अपनेसे

अधिक उदास और वियोगके दुखसे दुखीदेखकर बलैयांलेकर बोली कि अब दिन थोड़ासाही रहगयाहै चलकर स्नान और शृङ्गारकीजिये यहसुनकर राजपुत्रीने ठण्ढेश्वासलेकर कहा कि॥

दो० । विरह अनिल उर जासु वसि किये भस्म सब गात ।
भूषण बसननिको व्यसन ताहि न कछू सुहात ॥
प्रेमपंथ अति कठिन है प्रिय बिन कछु न बिभात ।
यामें प्रिय दर्शन मिलब भूषण यही सुहात ॥

पद्मावती बोली कि तुम उठकर अपना शृङ्गार तो करो परमेश्वर कोई न कोई उपाय प्राणप्यारेसे मिलनेका निकालेगा मैं तुमको जैसेबनैगी लेचलूँगी यह सुनकर राजपुत्री फूलकीसमान प्रसन्नतासेफूलगई गयेहुएप्राण फिरआये और वहबोलीकि॥

दो० । धन्य रैन वह धन्य दिन धन्य घड़ी छिन काल ।
भेंटि अंक भरि पीयको मेटब उर दुख शाल ॥

पद्मावती बोली कि हे राजपुत्री इसधायको मद्यमें मूर्च्छाकर चूर्ण मिलाकर पिलादीजिये जब यह अचेतहोजायगी तब चले चलेंगे और प्रातःकालतक चलेआवेंगे कोईकानोंकानतक नजानेगा और हमारा आपका कामहोजायगा यहसुनतेही राजपुत्री प्रसन्नतासेफूलगई और बोली कि धन्यहै मैना तैंनेअच्छाउपाय शोचा क्या कहनाहै यह कहकर वह उठी और स्नानकरके शृङ्गार पात्र मँगाया और रत्नजटित भूषण और बसन धारण करके अपना शृङ्गारकिया उससमय उसके अंग अंगकी छबि ऐसी होगई कि उसकी समता को कामदेवकी रति भी नहीं पहुँच सकती थी ॥

क० । वर कमखाव लाल ललित जरी सों जगो बूटा बेल बेसभरो रतन अथोरीको । बनत बिशाल जालदार मणि मोतिनकी नहिं उपमान है त्रिलोक तिहि जोरीको ॥ भनै रघुनाथ ताहि देखत शचीहूलची मोही रतिमान गयो धनपति गोरीको । राजत रसीलो चटकीलो कटि केहरिमें शोभा पुञ्ज घूमदार घाघरो किशोरीको १ ॥ नीलरङ्ग वारी जरतारी जरी

हीर लाल लोहित किनारहिरीमणि नगसी है कै । कैधौं चक्रवाकनपै छाई है छपाकी छवितापं नखतावलिकी ज्योतिही लसी है कै ॥ भन रघुनाथ किधौं सघन घटापटमें दरशत दीप्तवान युगल शशी हेकै। सम्पुट सरोजन पै आभा है मनोज किधौं उनित उरोजन पै कंचुकी कसी है कै २ ॥

जब अच्छीप्रकारसे शृङ्गार करचुकी तब दासियों से बोली कि आज मैं कहीं न जाऊँगी यहीं रहकर आनन्दकरूंगी शीघ्र जाकर मद्य और भक्ष्यपदार्थ लेआओ और नाचनेवालियों को भी बुलाओ और धाय अम्मासे कहो कि वहभी यहां आकर बैठे और मेरापहरादें कहींऐसानहो कि मैं किसी अपनेप्रीतमको बुलालूं यह आज्ञा पातेही दासियों ने सब सरञ्जाम तुरन्त कर दिया और वह धायभी पास आकर बैठगई उससमय पद्मावती ने मद्यमें बहुत सा मूर्च्छाकर चूर्ण मिलादिया और उसको एक पान पात्रमें भरकर राजपुत्रीको दिया उसने कहा कि अरी धाय अम्माको पहलेदे पीछे मैं पीउंगी उसने राजपुत्रीके कहनेसे वह मद्यपीलीराजपुत्रीने फिरउसेकईपात्र और भरभरकेपिलाये और वह उन पात्रोंकोपीकर अचेत होकर पड़रही इस अवसरमें सूर्य पश्चिमदिशामें जाकर छिपरहा और रात्रि का आगम न हुआ ॥

दो० । दैव मनावत दिन कट्यो मिट्यो देहको दाह ।
पिया मिलनको काल लखि उरमें भरयो उछाह ॥

निदान उस धायको और अधिक अचेतकरके वह मायाकृत विमानपर पद्मावतीसहित सवारहुई और कुछ दासियोंको साथ लेकर उसस्थानकीराहलीजहांउसको उसकाचित्तचोरमिलाथा॥

दो० । पीय मिलन उत्साह चित कहत मनहिं मन माहिं ।
सत योजन जो पीय गृह द्वै पगहू सो नाहिं ॥

थोड़ी देरमें उस स्थानके समीप जापहुँची और वह उत्तम बन जहां पिछली रात्रिको आनन्द बिहारकिया था दीखनेलगा निदान वह सुन्दरी वहां पहुँचकर मायाकृत विमान से उतरी

और अपनी सहेली और दासियों के साथ साथ शनैः शनैः
लाती हुई आगे को बढ़ी उधर राजपुत्र इन्द्र विक्रमतो बड़ी
देरसे चारोंओरको निहार निहार कर उसकी बाट देखही रहा
था जैसेही उसने उसअपनी प्राणप्यारीको आतेहुएदेखा प्रस-
न्नहोकरदौड़ा और बोला कि ॥

दो०। प्यारी तेरे दरशहित तरसत हैं दृगमोर।
छिनइत छिनउत ताकिताकि जोवतहैं मगतोर ॥

निदान जबवह उससुन्दरीके निकटपहुंचा उसने उसे दौड़-
कर गोदमें उठालिया राजपुत्री ने भी अपनाकपोल उसके क-
पोलपर रखदिया और लिपटगई उधर पांचाल ने भी अपनी
प्रियाको गलेसे लगाया और परमेश्वरका धन्यवादकिया उप-
रान्त राजपुत्री ने रोरोकर सबवृत्तान्त वर्णनकिया और कहा
कि आज तुमसे मिलनेकी कुछभी आशानथी परन्तु परमेश्वर
पद्मावतीका भलाकरे इसने उसे अन्तकरनेका उपाय निकाला
और परमेश्वर ने तुमसे फिर मिलाया तब राजपुत्रने कहा कि
हे प्राणप्यारी अबतुम यहां से मतजाना मैं तुम्हारे मा बापको
देखलूंगा पद्मावतीबोली कि जैसाहोगा देखलियाजायगा रात
थोड़ीहै अब आनन्दकीजिये और दोदोबातें हँसीखुशीकीकरो
यहसुनकर इन्द्रविक्रम ने वेश्याओंको आज्ञादी और गानहोने
लगा और मद्यपानकरनेलगे उससमय राजपुत्र और राजपुत्री
आपसमें प्रीतिभावसे एक दूसरेको आलिंगन करकरके चुम्बन
आदि क्रियाकरनेलगे और मद्य के आवेश में लड़खड़ातेहुए
दोनोंजने शय्यापरजालेटे उधर पांचाल भी अपनी प्रियाको
एकान्त में लेगया और दोनों परस्पर प्रीतिमान एक दूसरे से
मिलकर आनन्द करनेलगे ॥

क०। भरसोहैं नैनाकरिकरि सोहैं मुसकात त्योंत्यों अकुलात ज्यों ज्यों
होत हेले प्रातरी। दोऊवे परस्पर पीवत अधररस चूमि चूमि चटकीले

मुखजलजातरी ॥ भनत कवीन्दु भरि भरि अंकह्वै निशंक नेहभरे दोऊ फिरि फिरि बतरातरी। बिछुरनकाजरी दुहूंके गात बीतेदोऊ लपटि लपटिजात नेकुना अघातरी १॥

निदान दोनों आपस में प्रीतिभाव करतेहुए सोगये परन्तु किसीकी उक्तिहै कि ॥

सो०। प्रथमहोत संयोग प्रीतिरीति रससों भरो।
तदुपरिकालविवोग आवत दुखदायी दुहुन॥

कलावतीकी माता संदेहभरीहुई तौ गईहीथी जब वह कमलाचल के दुर्गमेंगई उसका धायके छोड़आनेपर कुछभरोसा न रहा और वह आधीरातको वहां से चलकर कलावती के बाग में आई यहां कुछदासियां जो रातका पहरा देरहीथीं वहतौथीं बाकी सबबागमें सन्नाटाथा उसने वहांआकर पहरेवाली दासियोंसे पूछा कि कलावती कहां है वहबोली कि सायंकालसे कहींको चलीगईहैं वहबाली कि धायभी साथगईहै यानहीं उन्होंने कहा कि धाय तौ द्वादशद्वारीमें सोरहीहै वहवहां चलीआई और उसधायको झकझोर झकझोरकर जगाया परन्तु जबवह न जगी तब उसने दासियोंसेकहा कि दीपक जलाकर तो लाओ कहीं धायको विषदेकर तो नहीं सुलादिया है दासियां दीपक बालकरलगईं और उसनेदेखा कि वह श्वासतो लेतीहै परन्तु अचेत है यहदेखकर उसने जलकाभीगाहुआ वस्त्र उसके माथेपररक्खा उससे उसको छींकआई और वह चैतन्यहोगई तब सुनैनाबोली कि तूतो अच्छी छोकरीकी रक्षाकररहीहै वहबोली कि भैना मैं याकरूं तुम्हारी बेटाही ऐसीहो तौ काई क्याकर सकताहै लगीबुरीहोती है जो वह मुझको विषदेकर चलीजाती तौभी कुछ आश्चर्यनथा मैं ऐसी चौकसाई से धाई पूरी अबतू जान और तेराकामजाने अपनी बेटीकी आप चौकसीकरो यह सुनकर सुनैना क्रोधसे लालहोगई और अपनी बेटीको ढूंढनेके

लिये आका में चढ़गई और बहुतऊंचेपर जाकर मायाबलसे चारोंओरको देखनेलगी और देखा कि एकस्थानपर बहुत से दीपक प्र ॒ लितहैं उसको देखकर वहसमझी कि कलावती यहीं होगी और यहसमझकर वह वहांआई और वहां अपूर्व सजावटपाई कि बीचोबीच बनमें फलोंकाबिलान तना है उसकेनीचे एकउत्तम शय्याबिछीहै उसशय्याके चारोंओर सुगन्धितजलों केभरेहुए पात्रधरेहैं कईमनुष्य दूरखड़ेहुए हरादेरहेहैं और उस शय्यापर वह राजपुत्री एक परमस्वरूपवान् दर्शनीय पुरुषकी बाहँपरशिररक्खे उ का हाथ उसकी छातीपर और उसकाहाथ उसकेस्तनोंपर रक्खेहुये सोरही है और उसकेवस्त्र कुछ बँधे हैं कुछ खुलगये हैं और ु छ अधखुलेहैं॥

क०। अधखुलीकंचुकी उरोजअध आधेखुले अधखुलेबेप नखरेखनके झलकें। कहै पदमाकर नवीन अध नीबी खुली अधखुलेछहरि छराक छोरछलकें॥ जेवरजराऊ अधखुले होइ सरकिगे सारीजरतारी अधखुलीहोइ ललकें। आंखें अधखुली खुली बेसरि की गूँजखुली अधखुले आननपै अधखुली अलकें २॥

यह देखतेही वह क्रोधमें भरगई और ऐसीमायाकी कि ठंढी बायु चलनेलगी और जितनेपहरुये थे सब उसके प्रभावसे अचेतहोगये तब वह उनदोनों परस्पर प्रीतिमानोंका बियोगकरनेवाली नके समीपआई और राजपुत्रीको उसके प्राणप्यारेसे पृथक्करके बोली कि अरी कुलकलंकिनी तैंने यह क्या दुष्कर्म किया जो अपनेकुलको कलंक लगाया यह सुनकर राजपुत्रीकी आंखें खुल ई और राजपुत्रभी जगपड़ा और अकस्मात् उस म्लेच्छीको देखकर चकितहोगया परन्तु बड़ी शीघ्रतासे उसने हाथमें मायाबिध्वंसिनी खड्गलेलिया उसको देखनेही सुनैना घबरागई और कलावती को पकड़कर मायाबलसे उड़ी और बोली अरे कलंकिनी तैंने मायाबिध्वंसिनी खड्गभी अपने

यारको देदिया रहतो सही देख क्या तेरीदशा मैं करती हूँ यह सुनकर पद्मावती भी जागपड़ी और पांचाल के पाससे उठकर दौड़ी उसको आतेहुये देखकर सुनैनाने कुछमायाकी कि उससे एकपाशप्रकटहुई और उसने पद्मावतीको बांधलिया तबसुनैना उसको भी खींचतीहुई आकाशमार्गीहुई और वह लटकतीहुई चलीजाती थी और पांचालसे कहतीथी कि हमारेतुम्हारे नैनों के दोषने यह आपत्ति उत्पन्न की उधर राजपुत्री इन्द्रविक्रमसे पुकारकर कहती थी कि हे प्राणप्यारे परमेश्वर तेरीरक्षाकरै मेरे मरनेका हाल सुनकर तुम अपने चित्तपर म्लानता न लाना मैं-नेतुमको ईश्वरको सौंपा हमतो अब अपने प्राणदेनेजाती हैं और तुम्हारेदर्शनों की लालसा चित्तमें रखतीहैं॥

बरवा। दरशदिखावहु प्यारे करिममहेत। सौंपितुमहिं भगवानहिंहम मगलेत॥हायजातहमजगसों दुखसोंपूरि।शोचनहमरोमनमें करियोभूरि॥

राजपुत्र इन्द्रविक्रम उसखड्गको लेकर दौड़ा और चाहा कि किसी प्रकारसे राजपुत्रीके समीप तक पहुँचूं परंतु वह न पहुँच-सका और अंतको उसकीओर टकटकी लगायेहुए देखता और नेत्रों से आंसुओंकी धारा छोड़ताहुआ खड़ारहा जब वह राज-पुत्री उसकी दृष्टिसे ओटमें होगई तब राजपुत्र बिकलहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और शोकके समुद्रमें डूबकर नीचे लिखेहुए पद पढ़ने लगा॥

दो०। प्यारी तुम्हरी सुधि हमहिं क्षणहू बिसरत नाहिं।
दर्शन बिन जिय जातहै हाय कराहि कराहि १
मग जोवत नैना थके छुटी मिलन की आस।
मूर्च्छित ह्वै धरनी गिरों कोऊ आस न पास २
चातक चाहत स्वाति जल चकई चाहत भोर।
हम चाहैं तव मिलन को जैसे चन्द्र चकोर ३
मित्र मिलन सम है नहीं दूसर कोऊ सुक्ख।
पै बिछुरनते होत है अधिक नहीं कोउ दुक्ख ४

बरछी लागी प्रेमकी उठति हृदय में पीर।
टपकि टपकि अँसुआ गिरें धरत चित्त नहिं धीर ५
बिन देखे प्या॰ तेरे मन नहिं नेक अघात।
आंखिन आगे तुम रहौ सदा बनी दिन रात ६

इसी बिरहकी दशामें राजपुत्रको तरंग उठी कि यहांबैठकर रोनेसे क्याहोगा चलकर अपनी प्राणप्यारीको ढूंढ़िये अथवा उसके बियोगमें अपने प्राणदीजिये यहबिचारकर उसने पांचालसे कहा कि तू जाकर पितामहजीसे कहिआ कि मेरा शरीर अच्छा नहीं है इससे मैं कुछ दि॰ोंतक सभामें न आसकूंगा यह सुनकर पांचाल महाराज शत्रुंजयके पासगया उससमय महाराज उठकर श्रीविष्णु भगवान्‌की पूजाकरनेको जातेथे कि इतने में पांचालने जाकर उनसे इन्द्रविक्रमके शरीरसे दुखी होनेका बृत्तांत कहा महाराज शत्रुंजयने उसे सुनकरकहा कि मेरा आशीर्बाद देना और कहना कि मैं भी किसीदिन देखने आऊंगा यह सुनकर पांचाल राजपुत्रके पास लौटकर चलाआया तब राजपुत्र बोला कि मेरा घोड़ा तय्यारकरमैं राजपुत्रीको खोजने जाऊंगा वहबोला कि आपका जानाठीक नहींहै ऐसा न हो कि आपकोउसकाखोज लगातेहुएजानकर कोईराजपुत्रीको धर्षणा करेऔरउसकोकैदमेंडालदे इससेमुझेआज्ञादीजियेतोमैं जाकर आपकी प्राणप्यारीका खोज लगाऊं और बनपड़े तो उसे आपके पास लेआऊं अथवा आपको उसकेपास लेचलूं राजपुत्रने कहा कि अच्छाजाओ प॰तु शीघ्र आना देरी मतलगाना नहीं तो मैं बिलख बिलखकर मरजाऊंगा हाय जबमुझको उस प्राणप्यारीकी भोलीभोली बातें यादआती हैं तो यह जान पड़ताहै कि कोई हृदयपर छुरियां चलारहाहै हाय किसी प्रकारसे चित्तको स्वस्थता नहींहोतीहै ऐसा जानपड़ताहै मानों कोई हृदयको मसोसे डालताहै और वह हाथों उछलताहै ॥

सो० । लगै कालको तीर तलफ थोड़ी देरलौं।
उठिमांगैनहिं नीर नैनबाण जाकेलगें १
प्यारीदरशनआस निकसतनाहीं प्राणहैं।
रक्त पियासी आस दरश सुधारसप्याइये २
पंख डुलावत नैन उड़िदेखें तेरो दरश।
फरकत हैं दिनरैन परवश पक्षीउड़नका ३
ज्योंबिछुरिजलमीन तवबिछुरे गतिअसभई।
तलफितलफिभौंछै नरूपसरोवरद शबिन ४
वेगिदेउ करतार इनिनैननको परखबल।
उड़िदेखें इकबार अपनी प्यारी जायकैं ५

उससमय पांचालने उसे समझाया कि श्रीमान् जो राजपुत्रीका प्रेम आपसे लगाहुआहै तो वह किसीके रोके न रुकैगी आजकलमें वह आप कोई न कोई उपाय रचकर आवैगी आप इतना खेद न कीजिये मैंजाताहूं और उसके समाचार लाताहूं यह कहकर उसने बहुरूप धारिणी विद्या सम्बन्धी सब पदार्थ अपने साथ लेकर अपना स्वरूप एक म्लेच्छकासा बनाया और वहांसे चलदिया और राजपुत्र पृथ्वीपरसे उठकर अपने डेरेमेंआया और शय्यापर लेटकर बिरहके दुःखसे करवटें लेने लगा और कराहकराह और बिकल होहोकर कहनेलगा कि ॥

दो० । प्राणलिये ठाढ़ो नजर तव प्रीतम तवहेत।
हे प्यारी मनमोहनी सो काहे नहिं लेत १
समुझायें मानत नहीं रोवत हैं ये नैन।
व्याकुल तेरे दरशबिन तलफतहैं दिनरैन २
पिकलपिजियजातहैछिमनपड़ैहियचैन।
बिरह बिवशव्याकुलरहों भोजनभावतहैन ३

निदान यह राजपुत्र तो उक्त प्रकारसे राजपुत्री के बिरहमें बिकलथा और उधर सुनैना राजपुत्रीको लेकर उसके बाग में पहुँची किलेमें इसकारणसे न लेगई कि वहां जानेमें सब छोटे बड़ोंको यहहाल बिदित होजा गा और वह बदनाम होजायगी

निदान बाग़में उतरकर उसने क्रोधकेमारे दो तीन थप्पड़ राज-पुत्रीके लगाये और लाललाल आंखें निकालकर बोली कि॥

दो०। अरी कलंकिनि कलमुखी तजि सब कुलकी लाज।
गई पास परपुरुष के कुलटा पड़ी न गाज॥

और पद्मावतीकोभी मारा और कहा कि अरीदुर्भगा तैंनेही मेरी बेटीको बिगाड़ाहै उससमय राजपुत्री और पद्मावती दोनों चुपहोरहीं परन्तु थोड़ीदेरपीछे सुनैनाने राजपुत्री को समझाना आरम्भकिया कि सुन आज तो मैं तेरे अपराधको क्षमाकरती हूं परन्तु जो कहींजाते मैंने देखा तो तुझे मारहीडालूंगी भला भूलकर फिर ऐसाकाम मतकरियो यहसुनकर पद्मावतीको उत्तर देनेका अवकाश मिला और वह सुनैनाके पांवोंपर गिरपड़ी और बोली पहले आप मेरी दोदोबातेंसुनलें फिर जो आपकी इच्छाहो सोकरें हम आपहीके बशमें हैं वहबोली कह क्याकहती है पद्मावतीने कहा कि जो प्रारब्धहीमें बदनामीहोना लिखाहो तो कोई क्याकरे मैंने राजपुत्रीसे बहुत कहाथा कि वहांमतचलो परन्तु उसने नमाना और अपनेसाथ मुझकोभी बदनामकिया सुनिये निजबात यहहै कि राजपुत्री बनबिहार को गईथी वहां महाराज शत्रुञ्जयकापोता इन्द्रविक्रम आनन्दबिहार कररहाथा उसने राजपुत्रीको अपना बराबरवाला जानकर अपनी सभामें बड़े आदरसे लेजाकर बैठाया इसमें कोई बात ऐबकी नहीं है क्योंकि राजा राजा और राजपुत्र और राजपुत्री एक दूसरेकेपास बैठतेहैं और आदर करतेहैं निदान राजपुत्री उसकेसमीप जा-कर बैठगई और उसको राजपुत्री जानकर अपने हाथसे मद्य पिलाई और राजपुत्री नृत्य देखाकी फिर राजपुत्रीके शिरमें दर्द होनेलगा और उसने कहा कि मैं अब जाकर सोऊंगी इन्द्रवि-क्रमने कहा कि यहीं मेरी शय्यापर लेटे लेटे नाच देखो फिर चलीजाना तब राजपुत्रीने मायाविध्वंसिनी खड्ग अपनीबगल

में रखली और लेटतेही सोगई और मैंभी जालेटी मैंने उस
समय जगाना उचित नसमझा उधर इन्द्रविक्रम भी राजपुत्रीके
पास जालेटा और सोगया उससमय आप पहुँचीं और पकड़
लाईं और नङ्गी सोनेकी कोई बात नहींहै केवल युवा अवस्था
की नींदही ऐसीहोतीहै कि उसमें सुध नहीं रहतीहै इसमें राज-
पुत्रीका कुछ दोष नहींहै उससमय आपके चिल्लानेसे राज_
जगपड़ा और उससमय उसके हाथमें वही खड्गपड़ा राजपुत्री
ने उसे खड्ग नहींदिया और जो रोने पीटनेको कहो तो राज-
पुत्री की अभी अवस्थाही क्या है रोकर तो अभीतक रोटी
मांगतीहै वह यह समझी कि माने मुझे परपुरुषके पास देख
लियाहैअबमारडालेगी इससेडरकेमारे उसीसेप्रार्थनाकरनेलगी
कि कदाचित् यही बचाले और उधर वह यह समझा कि राज-
पुत्रीको न जाने कौनालिये जाता है यह मेरेयहां अतिथिहुई है
यह क्या कहेगी कि इससे कुछनहोसका इससे वहभी खड्गलेकर
उद्यत होगया जो आपको मेरीबातोंका विश्वास न हो तो राज-
पुत्रीको नग्नकर के देखलीजिये कि उसका अंगज्योंका त्योंहै ये
वैष्णवलोग अधर्मनहीं करते हैं और परस्त्रीगामी नहींहोते हैं
इससेपरमेश्वर इनकारक्षकरहताहै यहसुनकरसुनैनाने राजपुत्री
को नग्नकरके देखा और जबउसके अंगको ज्योंकात्योंपाया तब
उसको बिश्वासहुआ कि जोकुछ पद्मावतीने कहाहै वहसबसत्य
है ऐसाहीहुआ होगा नहींतो आग फूस एकत्रहोकर नजले ऐसा
नहीं होसकताहै उससमय ऊपरसे तो राजपुत्री परक्रोधकी दृष्टि
रक्खी परंतु फिर और कुछ बुराभलानकहा और अपनी ओरसे
कईस्त्री उसकी रक्षाके लिये नियतकरके आपचाहा कि किलेमें
चलीजाऊँ परंतु फिरशोची कि आजरहकर इसकारंग ढंगदेखलूं
कलचलीजाऊँगी निदानवहभीवहांठहरगई और राजपुत्री एक
एकांतस्थानमें अपनीमातासे पृथक्होकर एकशय्यापर जालेटी

परंतु नींदकिसेआतीहै और सोताकौनहैउसकाचित्तअपनेप्राण-प्यारेको बगलमें ढूंढ़नेलगा उस एकांत स्थानमें वहराजपुत्र के विरहमें बिनजलकी मीनके समान तड़पती थी और रोरोकर ये पदपढ़ती थी॥

क०। व्याकुलही तड़पोंबिनपीतम कोऊतो नेकदया उरलावो।
जीयमें हौंस कहूं रहिजायना हाहरिचन्द कोऊ उठिधावो॥
प्यासीतजोंतन रूपसुधाबिन पानिय पीकापपीहै पियावो।
आवै न आवै पियारी अरेकोउ हालतो जायके मेरोसुनावो १
नेकहिके बिछुरे सबही सुखसाज भये दुखदायक भारे।
नैनन नीरझरी बरसैं तरसैं छतियां बिनप्राण पियारे॥
आली वियोग बिथाहरिवेते भलोमरिबो मनमान्यो हमारे।
एककोदुःखमरे मिटि जात वियोगमें होतहैं दोऊदुखारे २

निदान राजपुत्री तो राजपुत्रके वियोगमें विकलहै परन्तु अब पांचालका वृत्तान्त सुनिये कि वह राजपुत्रसे विदाहोकर चलदिया परन्तु मार्ग न जानने और रात्रि होनेसे किसीसेमार्ग न पूछ सकनेके कारणसे वह राहभूलकर एकबड़े भयङ्कर स्थानमेंपहुँचा जहां पृथ्वी कोसोंतक नङ्गी दिखाई देती थी घास और वृक्षका नाम न था और जलकाहोना तो कैसाथा वायु महाउष्णचलती थी पृथ्वी गरमीसे जलती थी आकाशसे अग्नि बरसती हुई जानपड़ती थी मेघभी वहांजाकर प्यासे रहतेथे और मनुष्यके लिये तो वह कालरूपही था॥

दो०। महातप्तधरणी सकल डोलत उष्ण समीर।
निरजल निरद्रुम कठिनथल लखि न रहतउरधीर॥

उसको देखकर पांचालने परमेश्वरका धन्यवाद किया कि यदि दिनको यहां आनाहोता तो प्राण न बचते और वहां से शीघ्रतापूर्वक चला कि कहीं प्रातःकाल न होजाय अन्तको उस तप्तथलको उत्तीर्ण करके एकउत्तम हरेभरे वनमें पहुँचा और वहां एक सरोवरपर जाकर जलपिया और ठहरगया कि रात्रि

कोमार्ग न मिलैगी दिन निकले तो चलूं निदान थोड़ीदेरमें वह समय आया कि मयङ्क तारागणों सहित सूर्यकी रश्मिरूपीपाश में बँधकर पकड़ागया और बहुरूपियारूपी मार्तंड आकाशमार्ग से पश्चिम दिशाको मार्गी हुआ ॥

सो० । विकसे रवि आकाश मिट्यो सकल तम जगतको ।
छीनभयो सु प्रकाश उडुगण सहित मयंकको ॥

उससमय पांचालने नित्यकर्म किया और श्रीविष्णुभगवान्का ध्यान करके आगेको बढ़ा थोड़ीदेरमें एकआंधी बड़े वेग सेआई और सामनेसे एकम्लेच्छ भयंकर रूपको आतेहुए देखा पांचालतो म्लेच्छकारूप धारण कियेहीथा उसम्लेच्छको देखकर आगेबढ़ा और कुशल प्रश्न करके पूछा कि भाई कहां जातेहो वहबोला कि मैं सुनैनाकेपास जाताहूं क्योंकि नतो वह अपनी बेटीका विवाह करती है और न उत्तरही देती है और बेटीको उसकी सुनाहै कि वनविहार करती फिरतीहै मैंने अपने लड़केको निरर्थक फँसायाहै आज जाकर सब निर्णय कियेलेताहूं यह सुनकर पांचालने विचारकिया कि इसका वध करके इसकासा रूप बनाकर चलो और उसके साथ साथ होलिया परंतु थोड़ीदूर आगे जाकर वह म्लेच्छ आकाशमार्गी हुआ और पांचाल देखता रहगया परंतु उसके नीचे २ दौड़ताहुआ चलागया और कमलाचलके दुर्गके निकट जापहुंचा उस दुर्ग केबुर्ज बड़े पुष्ट और ऊंचेथे और ऐसेथे कि उनपर मनके सिवाय कोईनहीं चढ़सक्ताथा और उस किलेके दाहिनीओर एक परम सुन्दर और रमणीक बाग बनाहुआथा उस म्लेच्छका नाम दुर्धर्षथा वह उड़ताहुआ उस किलेकी ओरचला और पांचाल वहां ठहरारहा जब वहम्लेच्छ उसबागके समीप पहुंचा तब उसने एकमायाकृत पक्षीको भेजा कि सुनैनासे जाकर उसके आनेके समाचारकहै उसपक्षीने जाकर उसके आनेका वृत्तान्त

कहा सुनैना समधीके आनेका हालसुनकर घबराई कि जो वह यहां आवैगा तो मेरी बेटीभी यहीं है कहीं ऐसा न हो कि उसको मेरी बेटीकी कुमार्गता मालूमहोजाय इससे उसके लेनेको आप हीगई और मार्ग में मिलकर बातें करतीहुई उसे किले में लिवा लेगई और वहां उसको उत्तमस्थानमें टिकाकर मद्य आदिपेय और भक्षभोज्य आदि पदार्थ देकर उसका सन्मान किया और आज्ञादी कि नृत्यहोय निदान नृत्यहोने लगा उससमय सुनैना ने उससे आनेका कारणपूछा वह बोला कि तुम्हारी बेटी युवान होगई है और मारीमारी फिरती है और तुम उसका विवाह नहीं करतीहो आज मुझको हां या नाहींका उत्तर ठीकठीकदो सुनैना यहसुनकर समझी कि इसको मेरी बेटीकी कुचलनी मालूमहो-गई है यहसमझकर वहबड़े शब्दसेबोली कि उसको जो कोई बुराकहताहै वह झकमारताहै मेरी बेटी ऐसी सीधी है कि उसे बाततक तो करना आताही नहीं है वह निगोड़ी बुरीभली बात क्याजाने और सुनिये वहसौखरावोंकीखराबहै आपको जोगोंहो तो विवाहकीजिये मैं उसको बरजोरी किसीके गलेसे तो चिप-कातीही नहीं हूँ कुछमत्स्यतो हैहींनहीं कि सड़े जातेहैं जबतुम लोगोंने मेरी देहलीकी राखतक न छोड़ी तब तो मैंने सगाई की थी और अबआपकी येबातेंहैं मुझेअबभी किसीकी कुछपरवाह नहींहैआपयहनसमझना कि मेरीलड़कीकोकोई नपूछैगाऔर न भी पूछै तो मत पूछो उसको किसबातकी कमी है और यहकहकर उसने कोसना आरम्भकिया कि हे मायाकर्ता जिसने मेरीबच्ची को उड़ायाहो उसकी छातीके सामनेआवै उनकी छोटी बड़ी सब बखानीजावें निदानउसने उसकोऐसा आड़ेहाथों लिया कि उस-से कुछकहते न बनपड़ा और बोला कि मैं यह कबकहता हूँ कि राजपुत्री तुम्हारी कुचलनहै परन्तु विवाह कबकरोगी वहबोली कि करूंगी क्यों नहीं उसकाबाप महाराज महेन्द्रके पाससे आ-

जाय तब विवाहकी तयारीकरूं कुछ बेटी मेरी मुझेभारू तो है
ही नहीं कि शीघ्रउसका कुआरपन उतारदूं मुझको तो अपने
मनके सब मनोरथ पूरेकरनेहैं आप घबराइये नहीं मैं उसकेबाप
को पत्र लिखतीहूँ और अबजल्दीही तयारीकरतीहूं यह सुनकर
दुर्धर्षने बिदामांगी परन्तु उसने उसे रोककरकहा कि अब आज
कहां जाओगे कलचलेजाना और उसके सत्कारकरनेका सब
सरंजामकिया परन्तु एक मायावी म्लेच्छी को उसनेभेजा कि तू
जाकर बागमें राजपुत्रीकी रक्षाकर देखियो वह कहीं बाहिर न
जाने पावै मैं तो काम में फंसी हूँ घरपर समधी आया हुआहै
नहीं तो मैं आप चलती तू यहांसेजा और मेरा तांबूलपात्र लेती
जा जो कलावती पूछे कि कैसे आईहोतो कहना कि तुम्हारी मा
ने बीड़ियां तुम्हारे लिये भेजी हैं यह उसको न जानपड़े कि यह
मेरा पहरा देने आई हैं वह म्लेच्छी उसकी आज्ञापाकर तां-
बूलपात्र लेकरचली जब किले के बाहिर निकली वहां पांचाल
ठहराहुआथा उसने उसे देखकरकहा कि हमारेस्वामी दुर्धर्षक्या
कररहे हैं वह बोली कि अपनी समधिनसे वार्तालाप कररहे हैं
तुमभी चलेजाओ क्या तुम उनके सेवकहो वह बोला कि हां
हम तुम्हारे साथ चलेंगे वहबोली कि मैं तो बागमें जातीहूं राज-
पुत्रीको ताम्बूल लियेजातीहूं मेरा तुम्हारा साथ न होगा यह
हाल सुनकर पांचालने उससे बातें करतेकरते में उसके मुखपर
मूर्च्छाकर चूर्ण फेंककर डालदिया कि उसके नाक में जातेही वह
मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी तब पांचालने उसकेवस्त्र उतारकर पहिर
लिये और अपना स्वरूप उसकासा बनाकर उसे और अधिक
अचेत करके एकगर्तमें डालदिया और आप ताम्बूलपात्रलेकर
बागकीओरचलदिया और बागकेभीतरजापहुँचा उससमयउस-
नेदेखाकि वह बाग परमरमणीक और शोभायमान बनाहुआहै
नानाप्रकारकेफूल खिलेहुये हैं भांति भांतिके वृक्ष फलोंसेलदेहुये

खड़ेहैं लतापरमसुन्दर शोभायमान हैं बेलोंके बितान तनेहुये निर्मल सरोवरों में नीलोत्पल और पुण्डरीकआदि कमलखिले हुयेहैं वायु शीतलमन्द और सुगन्ध बहरही है और नानाप्रकार के पक्षीमधुर मधुर बाणी सुनारहे हैं जलकीधारा बहतीहुईबड़ा चमत्कार दिखारही हैं आहा क्या अपूर्वशोभा उसबनकी है ॥

क० । फूलिरहे द्रुमवेलि लता शुक कोकिल गान करें मधुरी धुनि ।
गुंजत भौंरन भीर फिरैं मधुमत्त प्रसूननि बैठि उड़ैं पुनि ॥
कंज अनेकन भांतिन के सरवर्य लगाये हे क्रम सों चुनि ।
गन्ध भरी वर वायु वहै उपजावति अंग अनंग कला मुनि ॥

वहां पहुँचकर पांचाल चारोंओरको फिरकर राजपुत्री को ढूंढ़नेलगा यहां राजपुत्रीकी बहुत दासियांतो वहथीं जो राजपुत्रीके पकड़ेजानेके समय भागकर आई थीं और छुपी२ फिरती थीं और बहुत सी सुनैनाकीपरिचारिका थीं उन सबों ने पांचाल को देखकर कहा कि हेसुदर्शना तुम यहांकहां आई वहबोली कि भैना राजपुत्रीको पानलेकरआईहूं और फिर उनकेपास चुपकेसे जाकरबोली कि इसनेतो अच्छाफूल खिलायाहै उड़ीउड़ी फिरती है उसका श्वशुर उसके हालको सुनकर आयाहै सुनैना ने मुझे उसके पास रातको रहनेको भेजाहै सो बताओतो कि राजपुत्री कहांहै मैंभी तो देखूं कि अपना क्याहाल बनायाहै मुझेभी डर लगताहै ऐसा न हो कि मेरे पहरेमें से निकलकर चलीजाय कि नाक और चोटी काटीजाय भैना आजतो सायाकर्ताही लाज रक्खे तो रहेगी यहसुनकर उन्होंने कहा कि राजपुत्री वह सामने के पलङ्गपर मृतकरूपपड़ीहै अच्छा हुआ जो तुमआगई हमभी डररहे थे कि ऐसा न हो कि वह कहीं चलीजाय और हमपर आपत्ति आवे अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने हम वहां जायँगे भी नहीं यह कहकर सब किनारे होगईं और पांचाल उस द्वादश द्वारीके भीतर गया और ओटमें चुपके चुपके सुनने

लगा कि राजपुत्री क्याकहरहीहै वहां पद्मावती उसकी शय्याकी पट्टी पकडे बैठीथी और राजपुत्री उससे चुपके चुपके कहरही थी कि क्यों पद्मावती इस समय इन्द्रविक्रम क्या कररहेहोंगे वह बोली कि आपके प्रेमके स्मरणमें होंगे उसने कहा कि मेरे पकड़े जानेके पीछे न जाने उनके चित्तमें क्या क्या कल्पना न हुईहोगी हाय कोई उनको स्वस्थकरनेवालाभी न होगा हाय कहीं ऐसा न हो कि अपनेप्राणदेदें हाय किसकोउनकेपासभेजूं और किससे उनकी क्षेमकुशल मँगवाऊं यह कहकर वह विलापकरने और नीचेलिखेहुए पदोंको पढ़नेलगी॥

क०। यह संग में लागिये डोलें सदा बिन देखे न धीरज आनती हैं।
छिनहूं जो वियोग परै हरिचन्द तो चाल प्रलयकी सुठानती हैं॥
वरुनी में थिरैं न झपैंउझपैं पल में न समाइवो जानती हैं।
पियप्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियांदुखियां नहिं मानती हैं॥

पांचाल राजपुत्रीकी उक्तदशाकोदेखकर दुखीहुआ और पाओंसे आहट की उसको सुनकर राजपुत्री चुपहोरही और पद्मावतीनेभी उधरको दृष्टिउठाकरदेखा सुदर्शनारूपी पांचाल ने उसको अपने पासबुलाया वह घबराई कि देखिये यह क्या कहेगी परन्तु लाचारी से उठकर उसके पास आई पांचाल उस का हाथपकड़कर उस स्थानके एक कोने में लिवालेगया और पहिलेतो हास्यकी रीतिसे उससेकहा कि क्योंरी तैंने राजपुत्री को अच्छीकुराहपरचलायाहै उसकोलेजाकर परपुरुषों के साथ सुलादेती है यह सुनकर पद्मावतीडरी और कांपनेलगी और सौगन्दखाकर बोली कि तुम क्याकहतीहो मैं कुछ नहींजानती हूं वह बोली कि मैं सब जानतीहूं पहिलेदिन तैंने मायाविध्वं-सिनी खड्गदेकर म्लेच्छोंका बधकराया और दूसरीरातको साथ सोई यह सुनकर पद्मावती बहुत भयभीत होकर काँपनेलगी उससमय पांचालबोला कि जो तू मेरे गले से लगजाय तो मैं

तुझे इन्द्रविक्रमके पासलेचलूं पद्मावती उसे स्त्री जानकर उस के गलेसेलिपटगई पांचालने उसे अच्छीप्रकारसे प्यारकिया तब पद्मावतीनेपूछा कि बताओ हमको क्योंकर लेचलोगी तब उसनेकहा कि मैं सुदर्शनानहीं हूं किंतुपांचाल बहुरूपियाहूं यह सुनतेही वह खिझककर उसकी अंकसेनिकली और उसे बुरा भला कहतीहुई राजपुत्रीकेपासचलीआई राजपुत्रीने पूछा कि क्याथा और तू कहांगईथी वहबोली कि मैं क्याजानूं मरेबहुरूपिये भूतहोते हैं जहांदेखो तहीं मौजूद रहतेहैं राजपुत्री बोली कि अरी कौनहै और तू क्या बकतीहै वह बोली कि वही मरा इन्द्रविक्रमका बहुरूपियाहै और कौनहै यह सुनतेही राजपुत्री उठकरदौड़ी और उधरसे पांचालनेभीबढ़कर दंडवत्की और एक पानकी बीड़ी मूर्च्छाकर चूर्णयुक्त उसकोदी और कहा कि राजपुत्रने आपकेलियेभेजी है राजपुत्री उसेलेकरखागई और खातेही अचेतहोगई यह देखकर पद्मावती बोली कि अरे मरे यह तैंनेक्याकिया उसने चुपकेसेकहा कि मैं राजपुत्रीको पृष्ठभार में बांधकर लियेजाताहूं तू ऐसी मायाकर कि इसबाग में जितनीस्त्रियांहैं सब अचेतहोजायँ और तुमभी हमारेसाथसाथ चलो यह सुनकर पद्मावतीने तुरंत कुछपढ़कर तालीबजाई कि सब बागके रहनेवाले स्त्री पुरुष मूर्च्छितहोगये क्योंकि किसीको यह तो मालूमही न था कि हमपर कोई मायाकरैगा इससेभूल में सब अकस्मात् मायासे अचेतहोगये उससमय पांचाल ने राजपुत्रीको पृष्ठभार में बांधकर पीठपर लादलिया और वहां से मार्गीहुआ और पद्मावतीभी उसकेसाथ मायाबलसे उड़ती हुई चली दोनों बागकेबाहिरआये और पद्मावती मार्ग बताती हुई आगे हो ली इस मार्ग में वह तप्त स्थान नहींपड़ा जो पहिले मिलाथा किन्तु एक प्रहरमें वहांसे चलकर उस स्थानपर आगये जहां राजपुत्र इन्द्रविक्रम अपनी प्राणप्यारीके बिरहमें

शय्यापर पड़ाहुआ विलखरहाथा वहां पहुँचकर पाञ्चालने पृष्ठ भारको एक स्थानपर रखदिया और पद्मावतीसे कहा कि तुम राजपुत्रीको चैतन्यकरो और आप इन्द्रविक्रमकेपास आयाउस को देखतेही वह उठबैठा और अधीर्य्यहोकर पूँछनेलगाकि॥

सो०। अहो प्राण प्रिय मित्र मिली प्राण प्यारी तुमहिं।
तासु गेह है कुत्र वेगि बतावहु मोहिं अब॥

कहोतो क्यासमाचार लाये कहांगयेथे और क्याकर आये पांचाल बोला कि जो कुछ हमनेकियाहोगा वह आपहीप्रकट होगा और अकस्मात् शुभ समाचारको प्रकटकरना अनुचित जानकर उसने राजपुत्रको इधरउधरकी बातें सुनाईं उधर पद्मावतीने राजपुत्रीको चैतन्यकर यहप्रियसमाचार सुनाये कि पांचाल जोगया था वह आपको राजपुत्रकेपास लेआयाहै यह सुनकर राजपुत्री बड़ीप्रसन्नतासेडेरेमें चलीआई राजपुत्रनेजो अपनीप्राणप्यारीकोआतेदेखाअधीर्यहोकरयहकहताहुआदौड़ा॥

दो०। धन्य धन्य प्रभुधन्य प्रभु तुम्हरी कृपा सुपाय।
प्राण प्रिया मम मोहनी मिली जु मोसन आय॥

और राजपुत्रीको अंकमें भरकर गद्दीपर बैठाया और दोनों परस्पर प्रीति मानों वे एक दूसरे से मिलकर प्रेमके अश्रुपात छोड़े उस समय राजपुत्रीने कहा कि हे प्राणप्रिय तेरे विरहमें मेरी यह गतिथी॥

क०। प्यारे मनमोहन तिहारे बिछुरेते गति मेरी सुनि प्यारे भईखरी कलिकानही। जलविन मीन ज्यों विकल तलफति अति कहैं कवि कृष्ण असहोति आनवानही॥ ज्यों ज्यों करियतउपचारन की भीर त्यों त्यों बढ़त रहीपीर आंखिनरहे प्रानही। विरहकी ज्वालन सों जरिवे के लेखे मोहिं मरिवेकी बातसों अशिशके समानही १॥

इन्द्रविक्रमने उक्तविरहजन्य दुःखको सुनकर कहा कि॥

चौ०। आपन कथा कहेहु तू गाई। हों आपन केहि देउ बुझाई॥

विरहमें जो हाल होताहै उसको कौन कहसकताहै जिस पर

बीतताहै वही जानताहै अब हँसीखुशीकी बातेंकरो और उस बिरह जन्यदुःखको भुलादो यह कहकर आज्ञादी कि ॥

जयकरीछंद। मधुसों बनी मद्यकोंलाय। पानपात्र सहदेहु धराय॥
जाते मिटै दुःखकर मूल। उरमें रहै न एकहु शूल॥
मद्यपान जग आनँद एक। उपजावत जो हृदय विवेक॥
ज्ञान प्रीति रसकी पहिंचान। नहिंआवत बिनमद्य प्रमान॥

राजपुत्र की आज्ञा के अनुसार सेवक उत्तमवारुणीके पात्र ले आये और दोनों प्रिया और प्रीतम आनन्दपूर्वक मद्यपान करनेलगे इसअवसरमें किसीने जाकर यह सबवृत्तांत महाराज शत्रुञ्जय को सुनाया और कहा कि राजपुत्र की प्रीति के कारण से कमलाचलाधीश की बेटी कलावती नामी राजपुत्र इन्द्रविक्रमके पासआई है और उसने वैष्णवीमत अंगीकार किया है महाराज शत्रुंजयने सबवृत्तांत सुनकरकहा कि जो यह हाल पहिलेसे विदितहोता तो राजपुत्रको निषेधकरंदियाजाता क्योंकि पराये घरमें विपरीत बातकरना श्रेष्ठ नहीं है परंतु जो अब राजपुत्रीने आकर वैष्णवीसेनामें शरणली है तो अब यहशूरवीरता के विपरीत है कि उसेफिर म्लेच्छोंको देदें इससे १२१ थालरत्नोंके भरकर राजपुत्रीके पासभेजेजावें और उसके आनन्द और विहारकेलिये सबसामग्री करदीजावे यहआज्ञा पाकर कूपसंपूर्ण पदार्थ वहांसे लेकर राजपुत्रके पासगया और राजपुत्रीको वहसब निवेदन करकेकहा कि महाराजने आपको आशीर्वाद कहाहै इन्द्रविक्रमने कूपको बहुतकुछ पारितोषिक दिया वहउसको लेकरचलाआया और इन्द्रविक्रम और कलावती और पांचाल और पद्मावती वहांरहकर आनन्द करनेलगे दोनों प्रियाप्रीतम एकदूसरेके गलेमें हाथडाल डालकर बैठगये और अनङ्ग की तरंगों में परस्पर प्रीतिभाव करने लगे और यह पद पढ़नेलगे॥

दो०। प्रेमसुधारस पानकरि उपज्योआनँद अंग।
सोविनमदकीकोलगे तिय विनकामतरंग॥
सो०। ताते मधुकृत मद्य पान करहु सहर्षसव।
सुखसंगमहोइअद्य प्रीयप्रिया मदप्रेमको॥

निदान इन्द्रविक्रमतो यहां उक्तप्रकारसे आनन्द कररहा है परंतु वहस्त्री जिसको पांचाल मूर्च्छितकरके गर्तमें डालआयाथा चैतन्यहुई और अपनेको नङ्गीपाकर किसीकिसीप्रकारसे छिपती छिपाती बागकेभीतरगई और वहां किसी दासी से कुछ वस्त्र मांगकर पहिरे और लोगोंसे पूछा कि राजपुत्री कहांहै लोगोंने कहा कि बारहदरीमें है वहवहांगई और चारोंओरकोढूंढ़ा परंतु जबकहीं उसका पतानमिला तबअनुमानकिया कि अपनेप्रीतम को ढूंढ़नेकोगईहै और जो मुझको अचेत करगयाथा वहकोई बहुरूपियाथा निदानवह और कई और दासियां रोती पीटती हुई रानीसुनैनाके सन्मुखगई और बोलीं कि राजपुत्रीतो कहींको भागगई उसकाकुछपतानहीं है समधीके सामने इसबातकोसुनतेहीं सुनैना परमलज्जितहुई सहस्रोंघड़ेपानीके उसके ऊपरपड़ गये मुखकावर्णजातारहा और वहनीचे को मुखकरके रोनेलगी उससमय दुर्धर्षबोला कि मैं इन्हींदिनों को झीकताथा अबतुम नेदेखा अच्छा अबतुमसेतो क्याकहूं परंतुउसीकुलटाको दंडदेने जाताहूं यहकह के वहमायाबलसे आकाशमें उड़ा और किलेसे निकल कर पर्वत और बनोंको ढूंढ़ताहुआ चला परजबकहीं पता न पाया तब अनुमानकिया कि शत्रुंजयकी सेनाके सिवाय और कहीं नहीं होगी यहअनुमानकरके उससेनामें आया परंतु वहां भी उसको पता न मिला तबवहांसे भी लौटा और पांच कोस पर आकर एक परमरमणीक बनके बीचो बीचमें एक नदीके तटपर कुछ उत्सवकासा सरंजाम पाया और वहां जाकर जो देखा तौ एक सुन्दर शय्यापर एक महान् सुन्दर स्वरूपवा-

न् युवान् पुरुषको बैठेहुये और उसकी जङ्घापर शिर रखकर राजपुत्रीको लेटेहुये पाया देखतेही क्रोधकी अग्निसे लाल हो गया और हस्तरूप होकर बिजलीकी भांति कड़क कर गिरा और बोला कि अहंदुर्धर्षोऽस्मि उसको देखकर पद्मावतीने पुकारकर कहा किहे राजपुत्र खबरदार होजाओ वहतो आनन्द विहारमें था इसलिये उसके पास अस्त्र न थे पद्मावतीकी वाणी सुनतेही उठकर माया विध्वंसिनी खड्गलाया परन्तु जबतक वह आवे आवे तबतक दुर्धर्षराजपुत्रीको लेकर आकाशमार्गी हुआ राजपुत्रीने उससमय अपना करुणा विलाप सुनाया और इन्द्रविक्रम खड्गलिये हुये उसके नीचे नीचे दौड़ता चलापरन्तु क्या कर सकताथा वहयह जा वह जा होकर निकलगया और इन्द्रविक्रम मूर्च्छित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा पांचालने उसपर सुगन्धित जल छिड़ककर उसेचैतन्य किया परन्तु चैतन्य होनेपर उसकी दशा राजपुत्रीके विरहमें औरही होगई चारों ओरको आंखें फाड़ फाड़कर देखताथा और अधीर्य होकर रोता और नीचे लिखे पदको पढ़ताथा॥

दो०। सुखके बदले दुख मिल्यो मिलत न सुख छिनएक।
सुपनेहुं सो दरशत नहीं जेहि लखि ममसुख टेक॥

पांचाल यद्यपि राजपुत्रका बहुरूपियाथा तथापि उसका लँगोटियामित्रथा और जिस रानीसे राजपुत्रउत्पन्नहुआथा उसकी सहेलीसे पांचाल उत्पन्न हुआथा इसकारणसे वह उसीप्रकारसे राजपुत्रसे हँसता बोलता और बुराभला कह लेताथा जैसा कि प्रहासमहाराज शत्रुंजयसे हँसताबोलताथा और बुराभला कह लेताथा निदानउससमय राजपुत्र और राजपुत्रीकीदशाकोदेख कर पांचालका चित्ततो विदीर्ण होगया परन्तु राजपुत्रकी अशूरतापर उसको देखकर क्रोधआया और वह बोला कि आपकी वीरता देखली खड्गउठातेहीरहे उठायाभी न गया बड़ाभारीथा

आपको तो रण्डा स्त्रियोंकी भांतिशिरपर हाथरखकररोना आ-
ताहै तुमसेतो अच्छी वह राजपुत्रीही थी जो स्त्री होकर और
अपनेप्राण बेचकर तीनबार तुमतकआई अबजाओ तुमसेकुछ
न होसकैगा यह दुर्धर्ष म्लेच्छ राजपुत्रीका श्वशुर है जातेही
राजपुत्रीको अपने बेटेकेपास लेजायगा प्रीतिकरना कोई हँसी
ठट्ठानहींहै प्रीतिकरना और प्राणदेना एकही बातहै यहसुनकर
राजपुत्र क्रोधमें भरगया और बोला कि परमेश्वरने चाहा तो
कमलाचलपरपहुंचकर ऐसा असियुद्धकरूंगा कि वहांकेम्लेच्छ
बहुतदिनोंतक यादकरेंगे रक्तनदी बहादूंगा मेराअश्व शीघ्रमँग-
वाओ पांचालतो ताना मारनेको आंधीथा अबजो उसे राजपुत्र
के धर्षणा पानेका विचार हुआतो बोला कि आप यहीं रहियेमें
जाताहूं इन्द्रविक्रम बोला कि अब ठहरना कैसा कहीं आस-
क्तभी बिना अपनी प्रियाके रहसक्ताहै उससमय पांचालने दौड़
कर राजपुत्रकेसेनापतियोंको खबर करदीवे सब दौड़कर राज-
पुत्रकेपास आये और बोले कि आपयहींरहिये हमजाकर राज-
पुत्रीको छुड़ायेलातेहैं परन्तु इन्द्रविक्रमने एकका कहनानमाना
और अपने घोड़ेपर सवारहुआ॥

छंद। इन्द्रविक्रम खड्ग लीन्हें अश्वपर इमि लसत भो।
जिमि शक्र पूरबकाल करगहि वज्रदानव बधतभो॥
अरुगदा शायक धनुषलीन्हें तासु शोभा असबनी।
जस कार्तिकेयसुलसेपूरब बधन हित दानवअनी॥

यह देखकर राजपुत्रके सब सेनापति शीघ्रतापूर्वक अस्त्र
शस्त्र लेलेकर बाहनोंपर सवार हुये और सातलाख योद्धाओं
की सेना तयार होकर साथहुई उनके चलनेसे पृथ्वी हिलने
लगी और धूल उड़कर गगनमें ऐसी छागई कि उससे एक
दूसरा आकाश दीखनेलगा दुंदुभी आदि नानाप्रकारके युद्ध
वाद्य बजनेलगे और शूरबीर गर्जतेहुये वहांसेचले और क्षण-

मात्रमेंआकर राजपुत्रकेसाथहोलिये राजपुत्रबोला कि एक किले पर इतनी भारी सेनालेजाना अनुचितहै तुमसब यहींठहरो मेरे साथ जो कोई आवेगा वहमेराशत्रुहोगा यहसुनकर सेनातो लौट गई परन्तु सेनापतियोंनेसाथ न छोड़ा तिसपरभी कईसहस्रयोद्धा थे इस हलचलका शब्द महाराज शत्रुंजयके कानमें पड़ा और उन्होंने पूछा कि यह कैसा कोलाहलहै लोगोंने सब वृत्तान्तकह सुनाया उसको सुनकर महाराज शत्रुंजयने कहा कि परमेश्वर रक्षा करै इन्द्रविक्रम बड़ा साहसीहै वह अपने साहससे अपने प्राण देदेगा क्योंकि मायावी म्लेच्छोंका सामनाहै इससे हे कृप तू चालीस सहस्र अश्वसादी लेकर चलाजा परन्तु पीछे पीछे इतनी दूरीपररहियो कि इन्द्रविक्रम यह न जाननेपावै कि पितामहने सेना मेरीसहायताकरनेकोभेजी है नहींतो वह तुझी से लड़नेलगेगा यह आज्ञापाकर कृपसभा से उठकर बाहिर आया और युद्धकी तूर्य बजवाकर चालीससहस्र सवार तयार कराये और उनको साथलेकर वह बड़ी धूमधामसे चलदिया अपूर्व शोभा उस सेनाकीथी ॥

जयकरीछन्द। शूर वीर सबबल आगार। रणचारी दुर्मद विकरार ॥
पुष्टबलिष्ठहयनि असवार। लहहि न वायु वेगकोपार ॥
कवचअभेद्यकियेसबगात। करमेंभल्लविशालविभात ॥
खड्गचर्म धनुशायकअस्त्र। औरहुविविधभांतिकेशस्त्र ॥
लीन्हें महावीर ते शूर। गर्जत चलेप्रलय जनुपूर ॥
बाजे बजत महारव भान। ध्वजा पताका साथमहान ॥
पढ़तवीररसपदकविजात। रणसुखउपजत सबकेगात ॥

निदान यहसेनातो राजपुत्रके पीछे पीछे जातीथी और पांचाल राजपुत्रके साथसाथथा और पद्मावती मायाबलसे उड़ती हुई मार्ग दिखाती जातीथी उससमय राजपुत्र अपनी प्राणप्यारीका स्मरण करकरके यहकहता जाताथा ॥

दो०। मगनरहौं तव प्रेम में हे प्यारी दिन रैन।

तबमूरति नैननिबसी छिनसो बिसरतहैन ॥

निदान येसब तो वनमें उक्तप्रकारसे चलेजारहे हैं और उधर दुर्धर्ष उसप्रेमाकुल राजपुत्रीको लेकर कमलाचलके दुर्गमेंपहुँचा सुनैना लज्जावशसे किलेके बुर्जपर नीचेमुख कियेहुये खड़ीहुई बाट देखरहीथी जब दुर्धर्षपहुँचा उससे और कुछतो बन न पड़ा दौड़कर समधी के पावोंपर गिरपड़ी और बोली कि भाई तुम ने मेरी प्रतिष्ठा रखली अब तुम मुझको अपने वस्त्रके दामनमें छुपालो यह तुम्हारीही है अपने हाथसे इस निर्लज्जका गला घोटडालो मैं मायाकर्ताकी शपथखाकर कहती हूं कि रोऊंगी भी नहीं यहकहकर उसने राजपुत्रीके दो तीन थप्पड़मारे और एक सुवर्णकी जंजीर मँगाकर उसके पैरमें बांधी और बड़े क्रोधसे बुराभला कहकरबोली कि अरी मरी जो तू पराये घरकी न होती तो आजमैं तुझेकाटकाटकर तेरेशरीरके खण्डखण्ड करडालती और चील्ह और कागोंको बांट देती यहकहकर आज्ञादी कि राजमन्दिरमें जो बागहै उसमें लेजाकर इसे कैदकरो यह आज्ञा पाकर सेवक उसको लेगये और उसकी रक्षाके लिये कईम्लेच्छी नियतकरदीं निदान यह तो कैदहुई और दुर्धर्षको सुनैनाने बड़े आदरसे किलेकेबुर्जपर बैठायाइतने में सूर्यरूपी प्रीतम पश्चिम दिशारूपी अन्धकूपमें कैदहोगया और निशारूपी उसकीप्रिया ओसरूपी अश्रुपात उसके विरहमें छोड़नेलगी ॥

दो०। अँथवतही दिननाथके निशिकारी गइछाय।
बिरहदुखी मनजासुत्यहि कालरूपदरशाय ॥

उस वियोगकी रात्रिको राजपुत्री अपने प्राणप्यारेके विरह में उसका स्मरणकरकरके महाविकलहोतीथी और दैवसे कहती थी कि अरेदैव मैंने क्यातेरा बिगाड़ाहै जिसकेकारणसे तैंने मेरा प्राणप्यारा मुझसे छुटादिया मेरेइसकरुणा विलापपरभी तुझ को दया नहीं आतीहै हाय अब मैं किससे अपना दुःखकहूँ और

क्योंकर अपने प्राणप्यारेके समाचार मँगाऊं इसप्रकारसे अनेक प्रकारकी बातेंकहकहकर वहबड़ी करुणासे रोरोकर अधीर्य हो जातीथी और यहकहती थी ॥

दो०। मनबहलावत दिनगयो महाकठिन है रैन।
कहाकरौं कैसे जियौं बिन देखे नहिं चैन ॥
तलफौं अति व्याकुलपड़ी बिरहलियो तनलूटि।
का करियो फिरि आयके जबतन जैहै छूटि ॥

जबरातको सुनैनाने अपनी बेटीकी बिरहदशादेखी तब मा की प्रीतिके कारणसे उसका हृदय धड़कनेलगा और वहउसके पास आकर समझाने लगी ॥

उपदेशपदी। करती है विलाप क्यों अरी तू। मरतीहै बताउ क्यों मरीतू ॥
घेरा है तुझे गिरह दशा ने। मुख इन्दु ग्रसा है राहु माने ॥
मुख तेरा मलीन हो गया है। छवि चन्द्र से क्षीण हो गया है ॥
दर्पण तौ मँगाके देख मुखड़ा। हो कैसा गयाहै सूका सुकड़ा ॥
मति तेरी है हाय किसनेखोई। पर पुरुषको चाहता है कोई ॥
आतंक किया तुझे है केवल। छोड़ै तौ छुटै अभी इसीपल ॥
ले नाम कभी न इन्दुबिक्रम। फिर घर वही वही सुखक्रम ॥
समझानाहिं कामहै हमारा। चलना उसपैहै काम थारा ॥
बन्धन में पड़ी है तू कि हमहैं। दुख भोगती है तू कि हम हैं ॥
दुख राह नहीं कि साथ दीजै। दुख बोझनहीं कि बांट लीजै ॥
यहसुनकेवह म्लानचित्तबोली। होनीथी जोबात अब सो होली ॥
दुख भोगतीहूं मैं तुम्हें क्या। आपत्तिमें मैं पड़ी तुम्हें क्या ॥
तन मेरा वियोगसे तचा है। होगा वही राम जो रचा है ॥
हों भौर उसी प्रसूनकी मैं। रति हूं मैं उसी अनंग की मैं ॥
यहसुनकेउसने कियाअनुमान। वेढबही लगा है प्रेमका बान ॥
तनमें जो कोई भी रोग होवै। औषधकर उसको जड़ से खोवै ॥
यह प्रेम तो रोगही नया है। इसका तो भिषज नहीं भयाहै ॥
कुंजलाल वोतबनिराशहोकर। दुर्धर्षके पास गई वह रोकर ॥

इसी अवसरमें आकाशमंडल से चन्द्रमा अस्तहुआ उस

के विरहमें निशाने अपने को नाशकरके प्रातःकालको प्रकट किया और पूर्व दिशासे दिनमणि ने उदयहोकर अपने दीप्त तेजसे संसारको व्याप्त करदिया ॥

दो० । छिन पल घटिका याम निशि रोवत बीती ताहि ।
करत स्मरण प्रिय भयो प्रात कराहि कराहि ॥

प्रातःकाल होतेही राजपुत्री राजपुत्र के विरहमें और भी विकलहोगई और वायुसे अपना वृत्तान्त कहकर कहनेलगी कि जहां राजपुत्रहो वहां उसको मेरेदुःखकी खबरकरआ निदान वह तो इसप्रकारसे विकलथी और उसकी माता और दुर्धर्ष दोनों किलेकेबुर्जपर बैठेहुयेथेकि सामनेसे अकस्मात् धूलउड़ती हुई दृष्टिपड़ीऔर इंद्रविक्रमकेकईसहस्र योद्धादृष्टिपड़ेबीचमेंराजपुत्र घोड़ेपर सवारचला आताथा राजपुत्र बीचमें कहीं ठहरा न था रातोंरात चलाआया और प्रातःकालके समय कमलाचलके दुर्गके निकटआपहुँचा वहांपहुँचकर उनशूरवीरोंने उसकिलेको घेरलिया और सबशूरवीर सिंहनाद करनेलगे यहदेखकर दुर्धर्ष बोला कि देखो वहउत्पाती यहांभीआया परन्तु मैं उसे जीताकब छोड़ताहूँ यहकहकर उसने आज्ञादी कि किलेकी सेनातयारहो आज्ञापातेही सबसेनाके म्लेच्छ शीघ्रशीघ्र अस्त्रशस्त्र औरमाया करनेकी सामग्री लेकर मायाकृत वाहनोंपर सवारहुये और रण-के लिये सन्नद्धहोकर किलेके बाहरनिकले द्वारकिलेका बन्दकरा दियागया और दुर्धर्ष महोर्गपर चढ़कर मायाकृत चमत्कारदि-खाताहुआअपनी सेनासहितराजपुत्रइन्द्रविक्रमकेसन्मुखआया

जयकरीछन्द । म्लेच्छगणनिकोलैसोसाथ । गहैं प्रचण्ड अस्त्रनिजहाथ ॥
मायावी अतिरण उत्कर्ष । नाम जासुहै जग दुर्धर्ष ॥
आयो तहां करन संग्राम । रूपभयंकर वलको धाम ॥
करिसो मायाको उपचार । इन्द्रविक्रमहिं कियोप्रचार ॥
सोवलसोंव ताहिलखितत्र । रणहित लीन्हें गूरवमस्त्र ॥

बोलो बचनबीररस पागि। करतबिलम्बकहहु केहिलागि॥
जोकछुबलमहरणव्यवसाय। करनचहहुसोकरहुजोआय॥
आउदिखाउ वीरता मोहिं। रणमें बधिहों छिनमें ताहिं॥
इन्द्र विक्रमी है मम नाम। शक्रसमान मोर बलआम॥

यहसुनकर दुर्धर्षमेघकीसमान गर्जताहुआ रणभूमिमेंआया और मायाकरके अग्नि और बाणोंकी वर्षाकरनेलगा कभीकोई आपत्ति मायासे प्रकटकरताथा कभीकोई करताथा परन्तुमाया विध्वंसिनी खड्गकेप्रभावसे राजपुत्रको उसके किसी माया के प्रयोगने व्यथानपहुंचाई उससमय राजपुत्र उस खड्गको हाथ में लेकर उस म्लेच्छकी ओर चला॥

जयकरी छंद। राजपुत्र सो बलको धाम। इन्द्रविक्रमी जाकर नाम॥
उछिनखड्गहि कीन्हे बाम। वज्रपाणिसमलस्यो ललाम॥
जिमिमघवान वृत्र बध हेत। चल्यो वज्रगहि पूर्व सचेत॥
तिमिसोबलवर बुद्धिनिकेत। गयो म्लेच्छ तन भानन हेत॥

निदान राजपुत्रने उसखड्गका प्रहारकिया औरएकहीहाथ में उसमायावीम्लेच्छ को उसके मायाकृत महोर्ग सहित चार खण्ड करके यमलोक में पहुँचादिया उसके मरनेसे बड़ाकोलाहल प्रकटहुआ आँधी चलनेलगी और अग्निकी वर्षाहुई और उसकी सेनाने लेना लेना पुकारकर राजपुत्रको आघेरा तबतो उधरसेभी योद्धाओंने घोड़ेउठाये और मारधार प्रारम्भहुईऔर महाघोर युद्ध मचगया॥

जयकरीछंद। तेसब एक एकको टारि। करत प्रहार प्रचारि प्रचारि॥
गदा आयसी लै उत्कर्ष। मारत शत्रुनि केगहि हर्ष॥
मण्डलकरिकरिअसिकोबाहि। सन्मुख होत बधतहे ताहि॥
देवासुर सम युद्ध महान। माचो चहूँ ओर घमसान॥

राजपुत्र के योद्धा यद्यपि म्लेच्छीय मायाके कारणसे कुछ व्यवसाय नहींकरसकते थे तथापिरणसे मुखनहीं मोडते थे मरते थे और घुसेपड़ते थे जब पद्मावतीने देखा कि राजपुत्रके योद्धा

माया से मरतेचलेजाते हैं तब वह एकपर्वतकी कन्दरामें चली गई और वहांसे उसनेकुछ ऐसीमायाकी कि शत्रुओंपर तीरोंकी वर्षाहोनेलगी यह वृत्तांत सुनैनाने किलेपरसेदेखकर अपनीएक सहेलीसे कहा कि ये वैष्णवभी बड़ेमायावी होते हैं देखो तीरोंकी कैसीवर्षा होरही है तूयहांसे जा और कोईऐसीमायाकर कि माया विध्वंसिनी खड्गहाथ आजाय यह सुनकर वह उड़कर आकाश में चलीगई और वहांसे पत्थर वर्षानेलगी पद्मावती ने पत्थर वर्षतेहुये देखकर चारोंओरको देखा कि यह कौन मायाकररहा है और उसको विदितहुआ कि सुनैनाकी सहेली है यहदेखकर वह उड़कर आकाश में चलीगई और पीछेसे जाकर एक नारि-केल अस्त्रमायाकरके छोड़ा कि वहउस सुनैनाकीसहेलीके शरीर को विदीर्ण करताहुआ पारहोगया और वह मरकर पृथ्वी पर गिरपड़ी और उसके मरनेसे बड़ाकोलाहल मचगया दैवयोग से पद्मावतीको उसे वधकरतेहुये कलावतीकी धायनेदेखा और वहक्रोधकरके मायाबलसे उड़ी और पद्मावतीको पकड़कर पर्वत की कन्दरामें लेआई और वहां उसनेचाहा कि उसकाशिर काटकर सुनैनाकेपास लेचलूं क्योंकि जो जीतीहुई जायगी तो कलावती उसकावध कभी न होनेदेगी निदान यह शोचकर वह पद्मावती का शिर काटनाही चाहतीथी कि इतनेमें पाञ्चालने देखा कि जो तीरोंकी वर्षा पद्मावती के मायाबलसे होतीथी वह बन्दहोगईहै इससे विदित होताहै कि वह किसी आपत्तिमें पड़गईहै यह वि-चारकर उसने अपना स्वरूप सुनैनाकासा बनाया और वहां आया जहां पर्वतकेबीचमें पद्मावतीथी और वहां उस धायको खड्गसे पद्मावतीका शिरकाटनेपर उद्यत देखकर पुकारा कि आपने बड़ाकामकिया जो आप इसदुष्टाको पकड़लाईं उसधाय ने जो अपनी प्रशंसा सुनी और इसकोदेखा तुरन्तही हाथजोड़ कर उसके सामने नम्रीभूतहोकर खड़ीहोगई पाञ्चाल शीघ्र

उसकेपासगया और एकमूर्च्छाएड ऐसामारा कि उसकीनाकपर पड़ा और वह तुरन्त मूर्च्छितहोगई तब पाञ्चालने उसका शिर काटडाला महाकोलाहल प्रकटहुआ और वाणीहुई किपद्मावती ने धायको मारडाला यह देखकर सुनैनाने तुरन्तही मायाकृत तूरबजाई कि उसको सुनकर उसकीसेना किलेमें भागकर चली जाय निदान उसको सुनकरम्लेच्छोंने समझा कि सुनैना युद्ध करनेसे निषेध करतीहै और वे सब मायाबलसे उड़कर किलेके भीतर चलेगये और द्वारकिले का बन्दकरलिया इन्द्रविक्रमने जब कोई लड़नेवाला न पाया तब कहाकि आजतो दिनव्यतीत होगयाहै कलकिलेपर चढ़ाईकरूंगा यह आज्ञादेकर वहीं उसने अपनाडेरा खड़ाकराया और वहां विश्रामकरके कहनेलगा सब कुछ युद्धतो हुआ परन्तु प्राणप्यारीका दर्शन नहीं मिला यह कहकर वह उसके विरहमें व्याकुलहोगया और कहनेलगा ॥

दो० । तव आननकी परम छवि अरुतव मधुरी बात ।
करतरहत स्मरणहो कटतन मम दिन रात ॥

उसविकलताकी दशामें उसने पाञ्चालको बुलाकर कहा कि हमारा धैर्यतो अब जातारहा अब हमारे प्राणोंके रहनेकीआशा नहींहै वहबोला कि प्रेमके मार्गमें चलनेवालोंका यही अन्त है जो मरजाओगे तो तुमभी प्रेमियोंमें अपना नाम करजाओगे राजपुत्र बोला कि हाय हमारीप्यारी हमसे पृथक्है ईश्वरहमारा हमसे अप्रसन्नहै अब यहरात्रि मुझको भयभीत करनेको आती है और तारागण रूपी आंखें दिखादिखाकर डरातीहै यहहाल राजपुत्रका देखकर पाञ्चालको दयाआई और वहबैठकर जितना दिन शेषथा समझायाकिया और जब वहदिन व्यतीतहुआ और सूर्य पश्चिममें जाकर अस्तहोगया और चन्द्रमा उदय होकर आकाशरूपी वनमें विहार करनेलगा ॥

चौ० । पश्चिम दिशि दिनमणि जब गयऊ। संध्यारुण तबप्रकटतभयऊ ॥

तदुपरि निशिआई उजियारी । विरहीजनको अतिदुखकारी ॥

उससमय पाञ्चाल अपनी बहुरूपधारिणी विद्या सम्बन्धी सब सामग्री लेकर किलेकी ओर चलदिया और किलेके द्वार परजाकर खड़ारहा उधर सुनैनाको धायके मारेजानेसे बड़ाकष्ट हुआ और उसने अपने बालोंको खोलकर हिलाया और कुछ मायाकी कि अकस्मात् उससे एकअंधकारसा प्रकटहुआ और वह समिटकर एकपरछाईंसी होगया सुनैनाने उससेकहा कि हे कृष्णापत्ति तू जाकर इन्द्रविक्रमकी सेनासे पांचालको पकड़ला यह आज्ञापाकर वह राजपुत्रकीसेनामें आई और उसकोचारों ओर ढूंढ़कर लौटकर चलीगई क्योंकि पांचालतो वहांसे चला आयाथा और किलेकेद्वारपर एक म्लेच्छका भेषधारण कियेहुये खड़ाथाऔर उसनेजाकरसुनैनासेकहा कि मैंउसकोसबजगह ढूंढ़ आई वहराजपुत्रकीसेनामेंनहींहै जो शत्रुंजयकीसेनामें चलागया होतो आश्चर्य्यनहींयहसुनकर सुनैना निराशहोगई और उनको उसने उस आपत्तिको अपनेबालोंमें फिरलयकरलिया उससमय सुनैनाकी एक सहेलीने उससेकहा कि तुम शोचतीक्याहो अपने पति मुचुकुन्दजीकेपास किसीको मायाकृत देशमें भेजिये और इस सबवृत्तांतसे विदित कीजिये यह वैष्णवोंके साथ युद्ध बड़ा कठिनहै येलोग न मायाकोमानते हैं न किसी मायाधिष्ठान देवता को समझतेहैं ये तो हमारेपरमेश्वरसे युद्धकरनेवाले हैं यह सुन कर सुनैनानेकहा कि तू सत्यकहती है और फिर अपनेबालोंको खोलकर हिलाया वही अन्धकार फिर प्रकटहुआ और उससे उसनेकहा कि तू बदरी उद्यानमें जाकर मुचुकुन्दको सबवृत्तांत सुनाकर कहियो कि शीघ्र आप चलिये सबघर उजड़ाजाता है मैं अकेलीस्त्री क्या क्याकरूं परन्तु यह सबवृत्तांत सबके सामने न कहना कि जिससे मेरेपतिको लज्जाप्राप्तहो उनको एकांत में बुलाकर कहना यह आज्ञापाकर वह परछाईंरूप आपत्तिचलदी

और सुनैना किलेका प्रबन्ध करनेलगी परंतु पांचाल किले के द्वारपर खड़ाहुआ श्रीविष्णुभगवान् से प्रार्थना कररहाथा कि मैं किसीप्रकारसे भीतर जानेपाऊं दैवयोगसे रनिवासकी एकसैरन्ध्री कईदिन पहिलेसे आज्ञालेकर अपनेघरको गईथी उसने जो इस युद्धका वृत्तांतसुना समझी कि जो मैं इससमय न जाऊंगी तो विमुख कहलाऊंगी इससमय जाना अवश्यहै यह विचारकर वहअपनेघरसेचली और जब किलेके पासआई पुकारी कि कोई यहां है पांचाल जो म्लेच्छ बनाहुआ खड़ाथा तुरंत उसकेसामने चलागया वह बोली कि कपाटखुलवाओ यह सुनकर पांचाल द्वारपर आया और पुकारकरबोला कि भाई पहरेपर कौनहै सैरन्ध्रीजीआईहैं फाटकखोलदो यह सुनकर म्लेच्छों ने जो रक्षाके लिये नियतथे द्वारखोलदिया पांचाल पहिले तो आप घुसगया और फिर सैरन्ध्रीसेकहा कि आइये वहभी भीतर चलीगई उन म्लेच्छोंनेतोजाना कि यह सैरन्ध्रीकेसाथहै और सैरन्ध्रीने जाना कि यहभी कोई सुनैनाके सेवकोंमेंसे है निदान जब वह नगरमेंपहुंचा यद्यपि रात्रिकासमयथा तथापि उस नगर को बड़ासुशोभितपाया बड़ेस्वरूपवान् म्लेच्छ वहां वासकरतेथे दुकानें सजीहुईथीं और मार्ग सुन्दर पाषाणके बनेहुएथे निदान उसनगरकी शोभा देखताहुआ पांचाल सैरंध्रीके साथसाथ चला आया जब एक एकान्तस्थानमेंपहुँचा तबउसने अपनेपाससेएक कांचकुप्पीनिकाली और सैरंध्रीकोदेकरकहाकि मैंने यहसुगन्धित तैलबनायाहै आपसूंघकरदेखिये कि यहरानियोंके योग्यहै या नहीं यहसुनकर सैरन्ध्रीने उसतैलको लेकर सूंघा और तत्कालछींक मारकर मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी तबपांचालने उसके वस्त्र और आभूषण उतारकर आपधारण करलिये और एक एकांतस्थान में बैठकर एकबत्तीप्रज्वलित की और दर्पणनिकालकर अपना स्वरूप उससैरन्ध्री कासाबनाया और उसको और अधिक अ-

चेतकरके वहीं छोड़ दिया और आप आगेबढ़ा मार्गमें उसने शोचा कि आजकल सुनैनाकिलेके बुर्जपर रहाकरतीहै वहींराज-पुत्री भी होगी यह विचारकर वह उसीओरकोचला और जब उसबुर्जके समीपपहुंचा तबउसको एकदासीमिली उसनेप्रणाम किया और पूछा कि सैरन्ध्रीजी आपकहांथीं रानीने आपको कई वार स्मरण कियाथा पांचालबोला कि अरी अच्छाहुआ जो मैं यहां न थी नहीं तो कुटनापनकरना मेरेमाथेपर जाता भलाबना तो कि कैसीकैसीबात है दासीबोली कि बसअबकुछ कहलवाओ मत वहीकहावतहै कि किया और कर न जाना मैं होती तो करदि-खाती तुम क्या कोई बालकहो देखती नहींहो कि राजपुत्री का यार घरघरेपड़ाहै पांचालबोला अरीसच्चकह तुझे मेरे शिरकी सौगन्दहै बता क्या बातहै दासीबोली कि मैं नहींजानतीहूं कि राजपुत्रीने क्याकियाहै जिसका पापहो उसीकेशिरमैंनेतोसुनाहै किसी परायेपुरुषके साथ पकड़ीगईथी देखोअब ऐसी ऐसीराज-पुत्री रहगई हैं कि जिनको महलतो कैसा कोई आड़ भी न मिली बीचमैदानमें कुकर्मकराया सैरन्ध्रीबोली कि वहअभी बच्चाहै वह क्याजाने उसको अभी अपनेतनकी तो सुधिही नहींहै और वह पुरुषभी कुछऐसाबड़ा न होगा किसीका नन्हालाड़ला बेटाहोगा दासीबोली कि चलोबैठोभी ऐसीनन्ही है कि रोटीकोहप्पा और पानीकोपप्पा कहती है अभी दूधके दांतनहीं उखड़े हैं अजीनो जाये और दशखिलाये की कहावतहै जो बिवाहहोगयाहोता तो अबतक चारलड़कोंकी माहोती परपुरुषसे प्रीतिकरना तो जा-नतीथी और यहनहींजानतीथी कि जोहमबीच मैदानमें बैठेंगेतो अंतमेंक्याहोगा मनुष्य अपना आगापीछा तो देखलेताहै अब अच्छाहुआ कि दोबारपकड़ीगई अबघरमेंअकेली पड़ीहुईरोती है पांचालबोला कि सुनैनाने अपनेपास कैदकियाहोगा वहबोली कि नहींमहलों में जोबागहै उसीमें कैदहै रानीआप उसकापहरा

देतीं या लड़ाईको देखतीं स्त्रीको इतनाहीकरना बहुतजानिये जो सबओरकी ताकरखतीहैं पांचालबोला कि अच्छा अब जो कुछ होगा देखाजायगा मैं रानी के पासतो होआऊँ यहकहकर वह आगेबढ़ा और कहारी ने अपनी राहली परंतु वह फिर लौट पड़ा और राजमन्दिरको ढूंढ़ताहुआ महलोंके समीप जापहुंचा वे महल बड़ेसुन्दर और शोभायमान बनेथे और ऐसे ऊंचेथे कि आकाश से बातकरते थे सैरन्ध्रीका रूपहोने से उसको किसीने नहींरोका और वहमहलों के भीतरचलागया उसमें चारों ओरको द्वारबनेहुए थे और बीचोंबीच में एक सिंहासनरक्खा था और उसकेओर पासप्रकार प्रकारके आसन बिछेथे एक ओरको रनिवास में जाने का द्वारथा उसपर परदा पड़ाहुआ था और सहस्रों रक्षक वहांखड़ेहुएथे पांचाल परदा उठाकर भीतरको जैसेहीचला तैसेही किसी रक्षकने कहा कि कहां जाओगी उसने कहा कि अरे मरे तू अपने और बिरानेको नहीं पहिंचानता है मैं सैरन्ध्री हूं बर्षोंसेआतीजातीहूं आजही भूल गया यह सुनकर वह बोला कि आज तो तुम बायुके घोड़ेपर सवारहो दूसरेनेकहा कि आज छबिभी निरालीहै वह बोला कि क्या तुम्हारी कुदशाआई है मरे बकवादकरके अपनी जीभको बिगाड़ते हैं यहकहकर भीतरघुसगया और वहां से हाथबाहर निकालकर सबकोअंगूठा दिखाया कि तुममेरीचाहमेंही रहोगे और मैं कभीतुम्हारेहाथ न आऊंगी निदानआगेबढ़ातो किसी ने पूछा कि अरी सैरन्ध्री क्याहै वह बोला कि निगोड़े द्वारपालक ऐसा हँसातेहैं कि हँसतेहँसते पेटफूलजाताहैमेरीतो टूडीकेनीचे शूलहोनेलगानिदान वहांसेचलकर सबदासियोंसेहँसतीबोलती हुईउसबागमेंपहुंची उसकोअपूर्व रमणीक और शोभायमानपायाकिजहां बायुसदैवसुगंधितऔर मनकोआनन्ददेनेवालीचला करतीथी ऐसाही आनन्दथा जैसा कि किसीकबिने कहाहै कि॥

क०। आई है वहार बनवेलिन नवेलिन में वहुधाचमेलिनमें भौंर भौंर छाई है। छाई है छपाकरकी मरीचिकादरीचिनि में तिनहूं लाखि तनकी तनुतापताई है॥ ताई है सकल सुधि बुधि यशवन्त मेरी जब ते प्राणप्यारे प्राणप्यारी विसराईहै। राईहै न नेक कहूं नवमें कलेवरमें कहियो हो कन्त सों वसन्तऋतु आई है॥

पांचाल चारोंओर देखताहुआ और दासियों और सेवकनि आदिकीबातें सुनताहुआ चलाजाताथा कोई कहतीथी देखिये इस प्रेमका अंत क्याहोता है दूसरी उत्तरदेतीथी कि दो में से एकके प्राणजायँगे और शिरकटेगा और क्याहोगा कोई दांतों में उंगली देकर हाहाकरतीथी कोई नाक भौं चढ़ाकरकहती थी कि इसछोटीसीछोकरीने कैसी आपत्तिमचाई है कि साथ अपने परपुरुषको लगालाई है और अपने मा बापकी नाककटवाई है और यह झगड़ाडालदिया है इसीप्रकारसे कोई तांबूलपात्र खोले तांबूलखातीथी कोई शृंगारकरतीथी कोई कहानी कहरही थी कि एक था राजा हमारा तुम्हारा राजा परमेश्वर है कहानी ऐसी झूठी नहीं बात ऐसी मीठी नहीं निदान यही सब देखता हुआ पांचाल द्वादशद्वारीतक पहुंचा यहां कुछस्त्रियां रक्षाकेलिये नियतथीं उनमें से एकनेपूछा कस्त्वम्भो अर्थात् कौन आता है पाञ्चाल बोला—सैरन्ध्र्यस्मि अर्थात् मैं सैरन्ध्री हूं उसने कहा भीतरमतजाना पांचाल बोला अच्छा न जाऊंगी मुझेक्यापड़ी है जो जैसाकरैगा वैसा पावैगा आजकल तो पहरेवालियोंहीका राज है अपनापराया कुछ नहींपहिंचानती हैं देखो एकतो माकी ममता कि उसने क्षेमकुशलको भेजा और बीड़ियां दी हैं दूसरे में दिनरातकी पासकीउठनेबैठनेवाली लेकरआईहूं तुम कहती हो कि भीतर मत जाओ मैं सत्यकहती हूं और मायाकर्त्ता की शपथ खातीहूं कि मुझे आजतक किसीने नहींरोका मैं ऐसी नौकरी जूतीपरमारतीहूं क्या नकटियों ने मुझे कोईकुटनीसमझा

है जो भीतर जानेसे मुझे मनाकरतीहैं आज राजपुत्री जो इन के पहरेमें आगई है तो जानती हूं कि अब मा बेटियोंसे कभी मिलाप न होगा वही कहावत हुई कि मा बेटियोंमें लड़ाई हुई लोगोंनेजाना बैरपड़ा यहकहकर पांचाल फिरकरचला यहदेख कर एक दूसरी गृहरक्षक ने कहा कि सचतो है ये सब परिचा- रिका नाककी बालहैं दिनरात पास रानीके रहती हैं हम तुमतो रक्षकहैं जहां बतादिया वहीं खड़ेहोकर रक्षा करनेलगे महीनों तक हम तुमसे रानीसे भेंटतक नहीं होती है इसकी जो मानी जायगी सो क्या हमारी मानीजायगी अब देखो न जाने यह क्या क्या जाकर लगावैगी इससे इसे जानेदे यह सुनकर उस पहरेवाली स्त्री ने पुकारकर कहा कि हे सैरिन्ध्री जाओ जाओ तुम्हारेलिये मनाई नहींहै हमक्याकरें हमभी तो आज्ञावर्ती हैं जो न रोकें तो तुमही कहनेलगतीं कि तुम कैसा पहरा देतीहो कि मैं भीतर चलीगई और किसीने टोकातक नहीं यह सुनकर पांचाल बोला कि तुम सत्य कहतीहो परन्तु बाहिरकोंको रोकते हैं कि हमको यह कहताहुआ पांचाल उस द्वादशद्वारीके भीतर चलागया वहां भांति भांतिके दीपक प्रज्वलितथे उत्तमबिछौने बिछेहुये थे और एकओरकोकोने में एकशय्यापर राजपुत्री सोने की जंजीरसे बँधीहुई कराहरही थी और चारमान्य म्लेच्छी बैठी हुई उसकी रक्षाकररहीथीं परन्तु वह सुन्दरी अपने प्राणप्यारे के विरहमें अचेतपड़ीथी जबकभी उसको चेतहोताथा तब राजपुत्र का स्मरणकरके विकलहोजातीथी और चिल्लाकर यहपढ़तीथी॥

क० । थाकी गति अंगन की मति परिगई मन्द मुख झांझरीसी ह्वैके देहलागी पियरान । बावरीसी बुद्धिभई हँसी काहू छीनलई सुखकेसमाज जित तित लागे दूरजान ॥ हरीचन्द रावरे विरह जग दुखमयो भयो कछु और होनहार लागे दिखरान । नैन कुम्हिलानलागे बैनहू अथान लागे आवोप्राणनाथअबप्राण लागे मुरझान ॥

पांचाल जब आगेबढ़ा तब उन स्त्रियोंने पूछा कि सैरिन्ध्री जी कहां आई पांचाल बोलाकि भैना यहां आते तो अंग अंग कांपताहै पर क्याकरूं स्वामीकी आज्ञा अवश्य पालनीय है श्री महारानीने ये बीड़ियां राजपुत्रीके लिये भेजीहैं और कहाहै कि समझाकर उसकोबीड़ियां खिलादेना क्योंकि राजपुत्रीको लड़कपनसे बीड़ीपरबीड़ी खानेकी आदतहै कहीं ऐसा न हो कि बीड़ी न खानेसे कुछरोग खड़ाहोजाय यह कहकर ताम्बूलपात्रसे बीड़ियां निकालकर उन चारोंकोदीं कि लो तुमभीखाओ राजपुत्री सबथोड़ीही खायगी धनवानोंकेयहां आधाधन सेवकलोग खा जाया करतेहैं राजाकेयहां तिहाईही पहुंचताहै यह सोनेका तांबूलपात्रभी लेलो कोई पूछै तो बतानामत इसको अपनाहीधन समझो यह सुनकर वे चारो म्लेच्छी प्रसन्नहोगई और चारोंने उन बीड़ियोंको खालिया और मूर्च्छितहोगई तब पांचाल राजपुत्री के पास गया उसको देखकर राजपुत्री ने कहा कि हे सैरिन्ध्री अब हमारा अन्त समय है ॥

दो० हमरे प्राणअधारसों कोउ कहियो जाय।
चलनचहतअब प्राण हैं वेगिवचावहुआय ॥

वह बोला कि हे राजपुत्री मैं पांचालहूँ यह सुनतेही वहखड़ी होकर लपिटगई और बोली कि हे ईश्वर धन्यहै भय्यावता तो पद्मावती कैसे हैं पद्मावती का नामलेनेसे राजपुत्रीका प्रयोजन इन्द्रविक्रमसे था पांचालने एकबीड़ी राजपुत्री को भी खिलादी कि वहभी मूर्च्छितहोगई तब पांचालनेउसे पृष्ठभारमें बांधकर चाहाकि यहां से किसी प्रकारसे निकलचलिये परन्तु सुनैना ने उनचार म्लेच्छियोंके सिवाय एक और म्लेच्छीको छुपाकर राजपुत्रीकी रक्षाकेलिये बैठादिया था वहचुपके बैठीहुई राजपुत्री की बातें सुनाकी और जिससमय पांचाल उसको पृष्ठभारमें बांधरहाथा उसी समय उसने जाकर सुनैनासे कहाकि एकबहुरू-

पिया राजपुत्रीको लियेजाताहै यह सुनतेही वह महाक्रोधितहो-
कर चली और अग्निशिखाकीभांति चमककर पांचालपरगिरी
उसने बहुतकुछ चाहा कि पृष्ठभार लेकर भागजाऊं परन्तु सु-
नैनाने ऐसीमाया करदी कि पृथ्वीने उसकेपैर पकड़लिये और
उसपृष्ठभारको छीनकर राजपुत्रीको चैतन्यकिया और कहा कि
अरी निर्लज्ज तेरेहतकण्डे अबभी नहींजाते वहबोली जोकोई
मुझे अचेतकरदे तोमेरा क्या दोषहै सुनैनाशोची कि यह सत्य
कहती है और बोली कि बेटा ये दुष्ट वैष्णव ऐसेही हैं राजपुत्री
बोली कि तुममुझको मारडालो तो सबझगड़ा दूरहोजाय वह
बोली कि मैं इसमरे बहुरूपिया का बधकरती हूँ कि यही तुझको
लेजायाकरताहै यहसुनकर पांचाल डरा और बोलाकि मेरेभाई
बन्धआकर तुझे टुकड़े २ करडालेंगे यह सुनकर सुनैनाने वि-
चारकिया कि बहुरूपिये बड़ेछलीहोते हैं ऐसा न हो कि इसकेमा-
रेंजानेसे तुझे आकरधर्षणाकरें इससे इसे छिपाकर मरवानाउ-
चितहै यह विचारकरउसने एकम्लेच्छी से कहा कि तू इसेकिले
के बाहिरलेजा और किसी पर्वतपर लेजाकर मारडाल तेराकोई
क्या करैगा यह आज्ञापाकर वह पांचालको हाथमेंपकड़कर मा-
याबलसे लेउड़ी और किलेके बाहिरआकर एकपर्वतके समीप
पहुंची दैवयोगसे कृपजो सेनालेकर चलाथा वहीं राजपुत्रसेदो
कोसपीछेआकर ठहराथा और चांदनीरात होनेके कारणसे ख-
ड़ाहुआ बन और चन्द्रमाकी शोभा देखरहाथा कि अकस्मात्
उसने देखा कि एक म्लेच्छी किसीको लटकायेहुये लियेजाती है
यह बाणैत तो असदृशीथा कि अँधेरीरात्रिमें बालकोबाणसे छेद
डालताथा उसीसमय उसने धनुषपरबाण चढ़ाकर मारा कि वह
उस म्लेच्छीकी पीठको फोड़कर पारहोगया और वहमरगई और
उसके मरनेसे कोलाहल प्रकटहुआ और पाञ्चाल कलामुण्डि-
यां खाताहुआ नीचेकोगिरा कृपने दौड़कर उसको हाथोंपर रोक

लिया और पृथ्वीपर उतारकर जोदेखा तो पाञ्चालथा तुरन्त उस
को चैतन्यकिया और कहा कि आजतुझको परमेश्वरही ने बचा-
या वहबोला कि मेरी आयुथी इससे बचगया और फिर अपने
छलकरनेका सबवृत्तान्तकहा और वहांसे विदाहोकर इन्द्रविक्रम
के पासआया वहपड़ाहुआ राजपुत्रीकास्मरणकररहाथा पाञ्चाल
को देखतेही पुकारा कि हे मित्र शीघ्र प्रकटो वहमेरी प्राणप्यारी
कैसे और कहांहै पांचालने सबवृत्तान्त कहसुनाया जबउसको
यह विदितहुआ कि वह उसको लायानहीं और योंहीं फिर
आया तबतो वह राजपुत्रीके विरहमें महाव्याकुल होनेलगा
परन्तु वह रात्रि व्यतीतहोचुकीथी और तारागण क्षीणज्योति
होकर मनुष्योंकी दृष्टिसे अस्तहोगयेथे और राजारूपी सूर्य्य
आकाशरूपी किलेको विजय करनेकी इच्छासे अन्तरिक्षरूपी
रणभूमिमें निकल आयाथा॥

दो०। होत उदय श्री भानुके भयो सकल तम दूर।
निर्मल ज्योतिप्रकाशकी गईसकल जगपूर॥

उससमय राजपुत्रने उठकर नित्यकर्मकिया और विजयमि-
लनेकी परमेश्वरसे प्रार्थनाकी सबसेनाको रणकेलिये सन्नद्धहोने
की आज्ञादी और आपभी अस्त्रशस्त्र धारणकिये और उधरकृप
ने समझा कि मेरेआनेका वृत्तान्त तो पांचालने राजपुत्रसे कहा
ही होगा अब मुझेभी राजपुत्रके पासचलनाउचितहै यह शोच
कर वह सेनाको तयारकरके आप सबसे पहिले पहुंचा और
जाकर राजपुत्रसे मिला और दंडवत् करके महाराज शत्रुंजय
का आशीर्वाद कहा राजपुत्रने उसे पारितोषिक देकर आज्ञादी
कि तुम सेनाको व्यूहितकरो यह आज्ञा पाकर वह बाहिरआया
और सब सेनाको युद्धकेलिये सन्नद्ध किया चारोंओरसे युद्धके
बाद्यबजनेलगे और उनकाशब्द सबदिशाओंमें पूरितहोगया॥
जयकरीछंद। जयजय विष्णुबोलि भटशुद्ध। रणहितसन्नधभये सक्रुद्ध॥

तिनसों राजपुत्र बलवान। बोल्यो इमिकहि बचनप्रमान॥
सकल शूर तजिकें सबभीत। लेउ शत्रुके दुर्गहि जीत॥
क्षात्र धर्म को करिलविचार। रणकरि शत्रुन बधौ प्रचार॥
क्षत्रिहि रणमिलिवोहै धन्य। यावासरसमनहिं कोउअन्य॥
हौ तुमसकल शूर वर बीर। सकत न पायशत्रु रणधीर॥
लखि तव विक्रमअस्त्रप्रहार। तजिहैं शत्रुयुद्ध उपचार॥
अस्त्रशस्त्र वर्षा करि भूरि। देउ अकाशहि तिन सों पूरि॥
यह सुनि सकलशूर वर बीर। रणउछाह सों भरे सधीर॥
गर्जिगर्जि गहिगहि हथियार। सिंहनाद करि भये तयार॥
तिनसह राजपुत्र वरभूप। लस्यो सुरनमें शक्र स्वरूप॥
चल्योधीररसभरयो उदण्ड। चाहत मनहुग्रसन ब्रह्मण्ड॥
थरथरानिधरणीतेहि काल। लखिसब अरिगण भयेविहाल॥

इसप्रकारसे सेनाको सन्नद्ध करके जब राजपुत्र किलेकेपास पहुंचा तब उसने अपनी सेनाको व्यूहितकिया उधर सुनैनाभी राजपुत्रीको अच्छीप्रकारसे कैदकरके किलेके बुर्जपरआई और राजपुत्रकी सेनाकोव्यूहित होतेहुए देखकर आज्ञादी कि हमारी भी सेनासन्नद्धहो और आप युद्धकरनेका विचारकिया परंतु वह किलेकेबुर्जसे उठनेनहींपाईथी कि अकस्मात् सामनेसेधूलउड़तीहुईदिखाईदीऔर लाखोंबादलरंगरंगकेप्रकटहुए औरउनपर लाखोंभयंकरम्लेच्छ बैठेहुएदिखाईदिये जिनके शिरोंसेसर्पलपटे हुएथेऔर मुखोंसेअग्निकी ज्वालानिकलतीथी औरउनकेआगे आगे एकम्लेच्छस्वरूपवान् युवानगलेमें मोतियोंकीमाला धारणकिये दोनों भुजाओंपर रत्नजटित बाजूबांधे कमरमें सुवर्णकी तगड़ीपहिरे एकबड़े सर्पपरसवार प्रकटहुआ और पृथ्वीपर उस म्लेच्छकी सेनाके वासकरनेका सबसरंजाम वाहनोंपरलदाहुआ चलाआताथा जबकिलेके समीप यहसेनाआई तबआकाशसे उतरकर इन्द्रविक्रम की सेनाके सन्मुख पृथ्वीपरखड़ीहुई और वहस्वरूपवान्म्लेच्छ उसकिलेके बुर्जकी ओर चलागया सुनैना

ने जोउसेआतेदेखा तुरंत पहिचाना कि मेराजामात्र है जिससे मेरीबेटीकी सगाईहुई है अपने पिताके मारेजानेका समाचारसुन कर इन्द्रविक्रमसे युद्धकरनेकी इच्छासे आयाहै निदान उसको देखतेही सुनैना मान्यम्लेच्छियों सहित उठकर उसकेपासआई और समधीका स्मरणकरके उसकेसामने रोनेलगी उसनेसुनैना को प्रणामकिया उसने उसेगलेसे लगाया बलैयांलीं और कहा कि बेटातुम्हारेपिता तो मारेगये और तुम्हारेपित्ती अर्थात् चचा जो श्वशुरभी तुम्हारे हैं वहमायाकृत देशसे आयाचाहते हैं मैं दूतभेजचुकीहूं वआकर इसदुष्टको दंडदेंगे अच्छाहुआ जो तुम आगयेचलो किलेमें चलकर अपनी भार्याकीरक्षाकरो मैं आज इसयुद्ध से निवृत्तहोकर तुम्हारे साथ अपनीबेटी का विवाहकर दूंगी फिरतुमउसको अपनेवशमें रखना यहसुनकर उसनेलज्जा से अपनाशिर नीचेको झुकालिया और कहा कि हेमाजीमें जा-कर इसवैष्णवको दंडदेताहूं तुमकिलेके बुर्जपर चलकर मेरेयुद्ध को देखो और किसी प्रकारकीचिंता नकरो निदान सुनैना ने हरप्रकार से समझाया परंतु उसने न माना और वहांसे आकर इन्द्रविक्रमके सन्मुखआया पाञ्चालने उससमय पद्मावतीसेपूछा कि यह कौनहै वहबोली कि राजपुत्रीका विवाह जिससे होनेवाला था वह यहीहै तबपाञ्चालने इन्द्रविक्रमसे कहा कि देखो इससे चैतन्य रहकर युद्धकरना यहबड़ा छली और आपका पूर्णशत्रु है इन्द्रविक्रमबोला कि ईश्वररक्षकहै निदान दोनोंसेनाएक दूसरे के सन्मुख खड़ीहुई उधर मायाकृत तूरबजी और इधरदुंदुभी आदि युद्धकेबाद्यबजायेगये दोनोंओरकीसेना युद्धोत्सुकहुई और कवीश्वरोंने अनेक प्रकारके वीररसकेपद सुनाकर सबशूरवीरों से कहाकि युद्धके समानक्षत्रीको कोईयज्ञ और पुण्यनहींहै मरे और जीये दोनोंप्रकारसे भलाईहै इससेहेवीरो कादरताकोत्याग कर सब मिलकर शत्रुओंको संहार और विजयकरो ॥

सो०। दोउदल के वीर उक्तवचन सुनिकविन के।
रणहित उरधरि धीर गह्यापरम उत्साहमन॥

जयकरी छंद। सेन वैष्णवी के सबवीर। जयतिविष्णुइमिबोलेधीर॥
रणउछाहको गहैं हुलास। लीन्हेंअरिदल जीतनआस॥
तेहिअवसरसो अरिह्वैक्रुद्ध। राजपुत्रसों करिवे युद्ध॥
निजउर गहि रणहेतबढ़ाय। रंग भूमिमें पहुंचो आय॥
रुष्टपुष्ट अति दीरघ काय। संगलिये अरिगणसमुदाय॥
ताहि देखि रणहित सन्नद्ध। वीरइन्द्र विक्रम ह्वै क्रुद्ध॥
करि तुरंगको चपल अथोर। सन्मुखगयो गहे असिघोर॥

जबराजपुत्र इन्द्रविक्रम उसके सन्मुखपहुंचा तबवह म्लेच्छ उसके पासमायाविध्वंसिनी खड्ग देखकर घबराया और अपने महोर्ग से उतरकर पृथ्वीपर बैठगया और कुछ मायाकरने लगा थोड़ीदेरमें किलेकीओरसे एकविमान प्रकटहुआ और इन्द्रविक्रमनेदेखा कि उसमें राजपुत्री कलावती सुवर्णकी जंजीर से बंधीहुई बैठीहुई हैं बालबिखरेहुए हैं कपोलोंपर थप्पड़ों के लगनेसे नीलपड़गये हैं मानोंचन्द्रमापर नीलोत्पल दलचढ़ाये हैं नेत्रोंसे आँसुओंकी धाराबहरही है और रोते २ लालहोगयेहैं और जिह्वासे अपनेप्राणप्यारेकेगुणोंको वर्णनकरकरके विलाप करतीहैक्याकहाजाय प्रेमनेअपूर्वही उसकास्वरूपबनादियाहै॥

क०। विरहानल ज्वालके झारनिते भुवनेश निते मुरझानपरै।
अँग अंग मलीनभये हैं सवै अबनेकनहीं पहिंचानपरै॥
कसके उर अंतरऐसी बढ़ी हमसे कछुनाहीं बखानिपरै।
कहिके तुमसोंहमजातिचलीं अबकीजियेजोजियजानिपरै॥

निदान वहस्त्री राजपुत्रके समीपआई उसको देखकर राजपुत्रघोड़ेपरसे उतरपड़ा और यहकहताहुआ दौड़ा॥

सो०। यद्यपि दुःखअनेक तबकारण प्यारीसहे।
तदपिन अवहियएकतव प्रियदर्शनपायके॥

पद्मावतीने जोयहदेखा पुकारकरकहा कि हेराजपुत्र यहस्त्री

राजपुत्री तुम्हारी प्राणप्यारी नहींहै यहएकमाया निर्मितमूर्तिहै देखोधोखेमें मतआजाना अपना मायाविध्वंसिनी खड्गसँभालिये यहसुनकर राजपुत्रने वहखड्ग हाथमें लेलिया यहदेखकर उस राजपुत्री रूपीमायामूर्ति ने अपने दांतों में उंगलीदबाई और राजपुत्रकी ओरदेखकर रोनेलगी और ठंढीसांसलेकर बोली ॥

दो० । हायनहीं संसारमें कोउकाहू को मित्र ।
मित्रजाय जानतरहे सोऊ भयोअमित्र ॥

क्योंराजपुत्र हमनेतुमको यह मायाविध्वंसिनी खड्गइसी प्रयोजनसे दियाथा कि तुमहमपरही हाथसाफकरो यदितुमजानते हो कि मैं राजपुत्रीनहींहूं तोभीउसके सदृशरूपवतीतो हूं फिरतुम को अपनी प्राणप्यारीकी अनुरूपापर हाथउठातेहुये लज्जानहीं आतीहै लाओ यहखड्गमुझेदेदो उससमय राजपुत्र उसकेविरह में ऐसामोहितथा कि उसको पूर्वापरका कुछभी ज्ञाननथा इसकारणसे उसनेकहा कि हेप्राणप्यारी तूतो मेरेहृदयमें बसीहै तेरेनिमित्त जोमेरेप्राणभीजायँ तो मुझको कुछचिंतानहींहै लोयहखड्ग आपकेलिये मौजूद है और मैंने जो तुमपर खड्गउठाया उसके बदले में मुझेघायल करदो इसकेपीछे उसमायाकृत मूर्तिने जैसे ही वहखड्गहाथमें लिया तैसेही एककोलाहल प्रकटहोगया और अंधकार छागया और उसअँधेरेमें वहम्लेच्छ राजपुत्रको माया बलसे उठाकर आकाशमार्गीहुआ उससमय पद्मावतीने माया करके उसअंधकारको दूरकिया और सबनेदेखा कि वहम्लेच्छ राजपुत्रको उठायेहुएलियेजाताहै तबपांचालने पद्मावतीसेकहा कि देखसेना तेरेआधीनहै अबमैं राजपुत्रके पीछे २ जाताहूं यह कहकर वहराजपुत्रको देखताहुआ उसके पीछे २ हुआ और उधर म्लेच्छोंकीसेना ने वैष्णवीसेनापर धावाकिया उससमय पद्मावती पृथ्वीपर बैठगई और ऐसीमायाकी कि उससे दोनोंसेनाओंके बीचमें एककृष्णवर्णकी भीतसीखड़ीहोगई उससमय

म्लेच्छोंने बहुतकुछचाहा कि उसभीतिको हटाकर वैष्णवीसेना से युद्धकरें परंतु वहउसभीतको न हटासके इसीअवसरमें सुनैना की आज्ञाहुई कि जबतकमेरा जामात्र नआवै तबतकयुद्धमतक-रो परंतु रणकेलिये सन्नद्धरहो जिससे जबवहआवै तो इनशत्रु-ओंका विध्वंस न करें यह आज्ञापाकर म्लेच्छोंकी सेनारुकगई और वैष्णवीसेनाके शूरवीरभी उनके प्रहारकरनेकी बाटदेखने लगे उधर सुनैनाने एक म्लेच्छीको अपनेजामात्रके पासभेजा और कहलाभेजा कि उसदुष्टको किलेमें लाकरबधकरो जिससे सबकिलेके निवासी प्रसन्नहों वहम्लेच्छी मायाबलसे उड़कर उसके जामात्रके पासगई और सुनैनाकी आज्ञाकहसुनाई उसने उत्तरदिया कि किलेमें इसकावधकरना श्रेष्ठनहीं है क्योंकि वहां राजपुत्री मौजूदहै जो इसपरमोहित है कहींऐसानहो कि इसका वधदेखकर वहभी अपने प्राणछोड़दे और मेराघर बरबादहो-जाय इससे मैं इसका शिरकाटकर अभीआताहूं राजपुत्री जब यहसुनैगी कि मेराआसक्त मरगया तबउसको दुख तो अवश्य होगा परंतु धीर्यधारणकरके चुपरहैगी क्योंकि सुनाहुआहाल देखनेकी बराबरनहीं होताहै यहसुनकरवहम्लेच्छी फिरकरसुनै-नाके पासचलीगई और सबवृत्तांत कहसुनाया उसको सुनकर वहचुपहोरही और वहम्लेच्छ राजपुत्रको एकपर्वतकी खाईमें लेगया और पृथ्वीपरउतारकर बुराभलाकहनेलगा इसीअवसर में वहमायाकृत मूर्तिमायाविध्वंसिनी खड्गलेकरआई उसम्लेच्छ ने वहखड्ग तो लेलिया और उसमायामूर्तिको जानेकी आज्ञादी आज्ञापातेही वहधूम्रहोकर आकाशमें अंतर्द्धानहोगई यह देख कर राजपुत्रशोकसमुद्रमें डूबगया कि हाय इसमायाकृत मूर्ति ने मेरी प्राणप्यारीका रूपधारणकरके मुझसे छलकिया और माया विध्वंसिनी खड्गलेलिया निदानयह तो इसशोकमें था औरउधर उसम्लेच्छने क्रोधकरकेकहा कि क्योंरेदुष्ट तू मेरीनिमकको हुई

भार्याको कैसेभगाकर लेगयाथा अबबता कि तेराबध किसप्र-
कारसे करूं राजपुत्रने इसकाकुछ उत्तरनहींदिया इसीअवसरमें
पांचाल जो चलाथा सुनैनाका स्वरूपधारणकरके वहां जाप-
हुंचा और उसम्लेच्छ से बोला कि देख इसराजपुत्र का बधम
तकरियो नहीं तो बहुतपछितायगा यहसुनकर उसने कहा कि
दूरहो तू सुनैनानहीं है कोई इसकी सहायक जानपड़ती है यह
सुनकर पांचाल उसके पाससे भागा और यहदेखकर कि राज-
पुत्रपर मायाकृत वेष्टन किसी प्रकारका नहीं है कहतागया कि
हे राजपुत्र यह दुर्वचन बोलरहाहै जो आप मायाकृत वेष्टन में
कैदनहों तो गलादबाकर इसको मारडालिये राजपुत्र उससमय
चित्रकीसी मूर्ति खड़ाहुआथा पांचालके उक्तवचनोंको सुनकर
चौंकपड़ा और दौड़कर उस म्लेच्छसे लिपटगया और एक
हाथ से उसकी ग्रीवापकड़कर ऐसी दबाई कि यह बोल न सका
और दूसराहाथ ग्रीवाके पीछेलगाकर उसकाशिर धड़से पृथक्
करदिया तब अग्नि और पाषाणोंकी वर्षाहोनेलगी और बड़ा
कोलाहल मचगया उससमय राजपुत्र ने वह मायाविध्वंसिनी
खड्गलेलिया और पांचालने जो कुछ आभूषण उसके पासथे
सब उतारलिये और वहां से दोनोंजने प्रसन्नता पूर्वक अपनी
सेनामेंआये उससमय पद्मावती ने उसमायाकृत भीतको दूरकर
दिया और राजपुत्र मायाविध्वंसिनी खड्गलेकर विष्णोर्जयति
ऐसा उच्चारण प्लुतस्वरसे करताहुआ म्लेच्छोंकी सेनापर चला
और म्लेच्छों का बधकरनेलगा उससमय पद्मावती मायाकृत
नारिकेल आदि अस्त्रोंका प्रयोगकरकरके म्लेच्छोंको मारनेलगी
और कृपबाणोंकी वर्षाकरके उनकेशरीरोंको विदीर्णकरनेलगा॥

भुजंगप्रयातछन्द। तहांविक्रमी इन्द्रविक्रमसुचीन्हों। महाउद्धकेतौरको
युद्धकीन्हों॥ कियो गौरता डोरको पाणिलाघो। मृगापै यथा ना करैदौर
बाघो॥ युधैनीतिकी जीतिकी साधसाधै। बधैभूरियोधा प्रजयनाधनाधै॥

तोमर छंद । ते वीर वर्षे तत्र । गुरु गदा मूसल पत्र ॥ अरुमल्ल शक्ति अनेक । की किये झरि गहि टेक ॥ रुप तहां योधा चंड । अति चपल करि कोदंड ॥ करि चक्र समकोदंड । भरिबाण वृष्टि अखंड ॥ बधि डारि अगणित वीर । बिचलाय अगणित भीर ॥ अनगिने म्लेच्छनि मारि । भो खेतमहि पै डारि ॥ बररुधिर सरिता तत्र । निकसी भयो रण यत्र ॥

निदान दिनभर महायुद्ध रहा और जिससमय सूर्य तारागणोंकी सेनाके आनेका वृत्तांतसुनकर पश्चिमदिशा में पलायमानहुआ उससमय म्लेच्छोंकी सेना में युद्धनिवृत्तकरनेकेवाद्य बजे और सब म्लेच्छ मायाबलसे उड़उड़कर किलेकेभीतरचले गये सुनैनाने जब राजपुत्रको मायाविध्वंसिनी खड्गसहितयुद्ध करते देखाथा तब उसने एकम्लेच्छकोभेजकर अपनेजामात्रका हालपुछवायाथा उन्होंने सब वृत्तांतपूछा और उससे जाकरकहा कि वह मारागया वहउससमय युद्धकेहोने और किलेकीरक्षाकरने का प्रबन्धकररहीथीइसकारणसेरोकरचुपहोरही और जा न सकी थी जब सेना किलेमें आगई और किलेकाद्वारबन्द होगया तब वह हाय हायकरके रोनेलगी और अपनेजामात्रके मृतक शरीर को देखनेआई और अनेकप्रकारसे विलापकरकरके रोई हायमेरे जामात्रकी बरातआई उसे कौनलेगया हाय अबमेरी बेटीकाराज और सुहाग कौनकरैगा हे मेरेजामात्र अबशीघ्र उठकरचलो और अपनी भार्याको आनन्ददो यहांकैसेपड़ेहुये सोरहेहो हाय आज शय्याआदि सबभोगछोड़कर तुम पृथ्वीमें पड़ेहुये सोरहे हो निदान अनेकप्रकारसे बिलापकरके उसने उसके शरीरका अपनेमतके अनुसार संस्कारकराया यहतो इसप्रकारसे अपने जामात्रके मरनेकेकारणसे बिकलरहीआई और उधर राजपुत्र युद्धकरके अपने डेरोंकोलौटा सबसेनाने कमरखोलकर आहारादिकक्रियाकी और कृपनेरक्षक नियतकरके वासस्थलका प्रबन्ध किया और राजपुत्र अपने डेरेमेंआकर अपनीशय्यापर लेटरहा

और फिर अपनीप्रियाका स्मरणकरके उसकेविरहमें व्याकुल होगया और अधीर्यहोकर यहपढ़नेलगा॥

दो०। निशि दिनमन व्याकुलरहै विरह दियो तन फूंक।
तब बिछुरन सुधिजबकरत उठतिकरेजे हूक॥

जब राजपुत्र और अधिकव्याकुलहुआ तबपद्मावती और पांचालने आकरसमझाया और अनेकप्रकारसे उसके चित्तको स्वस्थकिया कि इसीमें वहरात्रि व्यतीतहोगई और सूर्यने पूर्व दिशासे उदयहोकर अपनेनिर्मलतेजसे संसारको व्याप्तकरदिया॥

जयकरी छन्द। उदयभये रविजबआकाश। चहुँदिशि जगमें भयोप्रकाश॥
तमामिटिसबउडुगणभयेछीन। भई इन्दु कीज्योतिमलीन॥
कली सुप्रात वायुसों भूलि। भई पुष्प तेहिअवसरफूलि॥
उठे सकल बरवीर महान। जे रणकर्कश परमसुजान॥
सहित इन्द्रविक्रम बलवान। प्रात क्रिया कीन्ही सविधान॥
धारण करिकरिअस्त्र प्रशस्त। रणहित सन्नध भये समस्त॥
पूजि विष्णु भगवानहि तत्र। राजपुत्र करि मन एकत्र॥
जय हित मांगिसुबरवरदान। पूजि द्विजनकोसहितविधान॥
उत्तमकुल भवअश्व प्रधान। वायु वेगसम वेग महान॥
तापर चढ्यो तदावर वीर। गहे महान अस्त्र रणधीर॥
कीन्हतदा सेना निर्याण। निरखिजाहिअरि भेगतप्राण॥
बाजे युद्ध वाद्य अति घोर। नभ छादित भौतिनकोशोर॥
कुंजलाल इमि सेना साज। चल्यो इन्द्र विक्रम रणकाज॥

जब राजपुत्रकी सेना किलेके समीपपहुँची तबउसको सुनैना ने देखा जो अपनेजामात्रके शरीरका संस्कारकरके आईथी और किलेकेबुर्जपर बैठीहुईथी सेनादेखतेही उसने आपयुद्ध करनेकी इच्छाकी परन्तु उससमय उसकीसहेली उदण्डानेकहा कि आज मैं युद्धकरनेको जातीहूँ और इसदुष्टको दण्डदेतीहूँ सुनैनाने उसे वस्त्र और आभूषणोंसे पूजकर युद्धकरनेकी आज्ञादी और मरते मराते जो कुछ सेनाबचीथी उसेभी युद्धके लियेजानेकी आज्ञादी आज्ञापातेही म्लेच्छ बड़ीशीघ्रता पूर्वक रणकेलिये सन्नद्धहुये

किलेका द्वारखुलगया वह म्लेच्छीयसेना नानाप्रकारके मायाकृत वाहनोंपर सवार ध्वजाओंको आकाशमें ऊंचीकियेहुए निकली और रणभूमिमें आई॥

दो०। मायावी अतिप्रबल सब धरे भयंकररूप।
मेघसदृश गर्जतसकल आये कुत्सितरूप॥

निदान सेनाके व्यूहितहोनेपर उदंडा रणभूमिमें आई और बोली कि अरे राजपुत्र इन्द्रविक्रम तू केवल मायाविध्वंसिनी खड्गके भरोसेपर लड़ताहै यह खड्गभी राजपुत्री कलावतीका उताराहै नहींतो अबतक कभीका जीताहुआ पृथ्वीमें गड़वादियाजाता अब किसीयोद्धाको मुझसे युद्धकरनेकोभेज कि मैं उसका वधकरके उसेयमलोकमें पहुंचाऊं यह सुनकर राजपुत्रके साथी सेनापतियोंसे रहा न गया और उनमेंसे एकने अपने वायुवेगी अश्वको चपलकरके उसके सन्मुख पहुंचाया उस समय उदण्डाने कुछ मायाकी कि एक अश्वसादी वनकीओर से आया और उस वैष्णवीसेनाके योद्धासे युद्धकरनेलगा दोनों ने परस्पर अस्त्रोंके प्रहारकरके युद्धकिया अन्तमें उसमायाकृत सवारने मायाबलसे वैष्णवीसेनाके योद्धाको स्तम्भितकरदिया और फिर उसको पकड़कर म्लेच्छोंको देदिया कि उन्होंने लेजाकर उसको क़ैदकिया उसमायाकृत अश्वसादीने फिर युद्धके लिये दूसरे योद्धाको बुलाया वैष्णवी सेनासे एक दूसरा योद्धा गया दोनोंमें गदा भल्ल और असि आदि अस्त्रोंके प्रहार हुए परन्तु अन्तमें वहभी पहले योद्धाकी भांति क़ैदहोगया इसी प्रकारसे वैष्णवी सेनाके चालीसयोद्धा उस तुमुल युद्धमें क़ैद होगये उससमय वहदिन व्यतीतहोगया और संसारको प्रकाशित करनेवाला राजा सबजगत्में विहार करताहुआ और सम्पूर्ण पदार्थों के रसोंको शोषणकरताहुआ पश्चिम दिशाकी ओर चलदिया और तारागणोंकी सेना यूथ यूथ और पंक्ति

पंक्ति होकर अकाश में अपने नेता इन्दुसहित प्रकट हुई॥

दो०। तेहि अवसर सन्ध्या निरखि उभय सेन भट शुद्ध।
निज निज डेरनि जातभे तजि मल्लनिको युद्ध॥

उस समय सबने कमरखोलकर आहारादिक क्रियाकी और उदण्डा किलेके भीतर न गई किन्तु वहीं राजपुत्रकी सेनाके सामनेउतरी क्योंकि राजपुत्र नित्यकिलेपर धावाकरनेकी इच्छा करताथा उसने शोचा कि यहां रहनेसे राजपुत्र धावा किलेपर न करसकैगा और इसीकारणसे उसने राजपुत्रके सेनापतियों को बुलाबुलाकर युद्धकिया कि जिससे दोतीनदिन इसीप्रकारसे कटजाय जिसमें सुनैनाकापति मुचुकुन्द आयजाय जो मैं अभी युद्धकरती हूं तो सब मायाविध्वंसिनी खड्गसे एकही दिनमें मारेजायँगे और किलाभी हाथसेजातारैहगा निदान जब म्लेच्छों की सेना किलेकेबाहरउतरी हाट खुलगई और दोनोंओर सेना के रक्षक फिरनेलगे उससमय पांचालने इन्द्रविक्रमसे कहा कि आपके पितामहका यहचलननहींहै कि शत्रु किसी औरको युद्ध केलिये बुलावै और आप उससे युद्धकरने को चलेजायँ देखिये महाराज शत्रुंजय महामन्त्र जाननेपरभी आप पहलेयुद्धकरने को नहींजातेहैं किन्तु जो जिससे युद्धमांगताहै उसीको भेजते हैं इससे अब आपकोभी ठहरना पड़ैगा और आपको आपकीप्रि-याका वियोग बहुत कालतक सतावैगा मैं अबशत्रुसेनामें जाता हूं इससे आप अपने चित्तको दृढ़करके विश्रामकीजिये पर-मेश्वरकी कृपाका भरोसा रखिये यहकहकर उसने अपनास्वरूप एक म्लेच्छकासा बनाया और शत्रुसेना की ओर चलदिया जब उससेनामें पहुंचादेखा कि उदण्डा अपने डेरेमें आनन्दकर रहीहै अर्थात् मद्यकापान और नाचहोरहा है यह देखताहुआ वह दूसरीओर चलागया और वहांदेखा कि एकडेरा मखमल का खड़ाहुआ है उसमें रत्नजटित परदेपड़े हैं और चौकसी को

कोईनहीं है उसनेपरदा उठाकर देखा तो उसमायाकृत अश्वसा-
दीको सुवर्णकी शय्यापरसोतेहुएपाया देखतेही उसने तुरन्त लेट
लगाकर अपनेको उसकी शय्याकेसमीपपहुंचाया और मूर्च्छाकर
चूर्ण एक नलिकामें भरकर उससवारकी नाकमें फूंकदिया और
वह मूर्च्छित होगया तब वह उसको पृष्ठभार में बांधकर वनमें
लाया और वहां एक गड़हा खोदकर उसको गाड़दिया औरफिर
शत्रु सेनामें म्लेच्छका रूप धारण कियेहुए बजारमें फिरनेलगा
और एक मांस बेचनेवालेको अपनी दुकान बढ़ातेहुए देखा उस
को देखकर पाञ्चालने विचार किया कि इसकेसाथ छल करना
चाहिये यहविचारकर उसनेभुड़भुड़के बनेहुए चारशिर और कई
हाथ अपने शरीरमें लगालिये और शरीरपर एक तैल ऐसामल
लिया कि वहअग्निकी समान दीप्तहोगया इसप्रकारसे अपना
भयङ्कररूप बनाकर वह उसमांस बेचाके पासगया और पीछेसे
पूछा कि क्यों तुझको हमाराभी ध्यानहै उसनेपीछे फिरकर देखा
औरवह भयभीतहुआ और हाथ जोड़कर बोला कि आप कौन
हैं पाञ्चाल बोलाकि हमवहीहैं जिनकी पूजातू नित्य शनिवारको
किया करताहै वहबोला कि मेराअपराध क्षमाकीजिये अबकी
मेरेपास कुछद्रव्य न था इससे मैंने गुड़काभोग आपका लगाया
था पाञ्चाल बोला कि कुछ चिन्ता नहींहै अबहम तुमसे प्रसन्नहैं
चल अपनी दुकानके भीतरचल हमतुझको बहुतकुछ आजदेंगे
यहकहकर वह उसका हाथ पकड़कर उसकी सिबिरमें लेगया
और वहां उसके मुखपर मूर्च्छाकर चूर्ण मलदिया कि वहमूर्च्छि-
त होगया तब पाञ्चालने उसका स्वरूप मायाकृत अश्वसादीका
सा बनाकर उसके शरीरमें हथियार बांधदिये और उसे चैतन्य
किया और कहा कि मायाकर्ताकी यह आज्ञाहै कि मांसबेचातु-
म्हारीसेवा बहुतदिनोंसे करताहैइससे तुमउसकोमायाकृतअश्व-
सादीबनादो इससे परमेश्वरकीआज्ञासे मैंने उस अश्वसादीको

अन्तर्द्धानकरदियाहै और तुझको उसकास्थानापन्न बनायाहै तेरे हाथसे सबवैष्णवोंकीमृत्युहै इससे आजसे तू अपनेकोमांसबेचा कभीमत बताइयो जो कोई तुझसे पूँछे तू कहियो कि मैं मायानिर्मित अश्वसादीहूं अर्थात् मायाकाबनाहुआ सवारहूं यहसमझाकर वह उसको हाथपकड़कर उसअश्वसादीके डेरेमें लेआया उसकोजातेहुए जिसकिसीनेदेखा यहीजाना कि सवार कहीं को गयाथाअबआयाहै निदान पांचालने उसे वहांलेजाकर उसशय्यापर लिटादिया और कल इन्द्रविक्रमहीसे लड़ना क्योंकि वह सबकास्वामीहै उसके मरतेही सबसेनाभागजायगी और कलही विजयहोजायगी उसको इसप्रकारसे समझाकर पांचाल अपनी सेनामेंचलाआया और उसमांसबेचाने जो सुवर्णकीशय्या और मखमलके बिछौनेदेखे समझा कि परमेश्वरने मुझेराज्यदियाहै निस्संदेह अब मैं मायाकृतसवारहूं इसी हुलासमें वहरात्रिभर जागतारहा और जिससमय पूर्वदिशामें मार्तण्डमण्डल का उदयहुआ और तारागणोंकीसेना उसके भयसेपलायमानहुई ॥

चौ०। प्रात होत दोउ सैनिकजागे। निज निज सैननि साजनलागे ॥
ध्वजा पताका अमित बनाईं। बहु रँग पट सों परम सजाईं ॥
सोहैं तिनसों दोऊ सैना। अति विचित्र मानहुँ जग जैना ॥
बाजे नाना भांति सुहाये। दोउन दोऊ दिशि बजवाये ॥
तिनको शब्द बज्र समघोरा। शूर गर्जना को पुनि शोरा ॥
अरु शंखनिकोरव विकराला। छायो नभ अरु गिरिन तराला ॥
इमि उत्साह गहें दोउ सैना। आईं रङ्गभूमि जग जैना ॥
व्यूहित भईं दोऊ दिशि ठाढ़ीं। रणहित दोऊ अमरष बाढ़ीं ॥

उससमय उद्दण्डाने उसमांसबेचाको मायाकृत अश्वसादी जानकर आज्ञादी कि रणभूमि में जाकर वैष्णवोंका बधकर वह आज्ञापाकर रणभूमिमेंआया और बोला कि हे इन्द्रविक्रम आज तू मुझसे युद्धकरनेकोआ यह सुनकर राजपुत्र उसके सन्मुख

गया उसने राजपुत्रपर खड्गका प्रहारकिया राजपुत्रने मण्डल करके प्रहारको व्यर्थकिया और अपनाखड्ग मारकर उसके दो टुकड़े करडाले उसके मरनेसे कोलाहल प्रकट न हुआ तब उद-ण्डा घबराई कि यहक्या कारणहै क्यायह मायाकृत अश्वसादी नहींथा और उधर इन्द्रविक्रमने युद्धकेलिये शत्रुसेनाको प्रचारा तबतो उदण्डा बड़ाक्रोधकरके उसकेसन्मुखगई और कुछमाया करके एक अस्त्रछोड़ा कि उससे महाअँधकार होगया राजपुत्र कोकेवल मायाविध्वंसिनी खड्गपासहोने से दिखाईदेताथा और सब अंधे थे उससमय राजपुत्रने देखा कि उदण्डा आकर मेरे पैरोंपर गिरपड़ीहै औरकहतीहै कि जो तुमको राजपुत्रीको लेना है तो मायाविध्वंसिनी खड्ग मुझे दे दीजिये मैं जाकर राजपुत्री को लेआऊं यह सुनतेही राजपुत्र प्रेमसे गद् गद् होगया और उसने वह खड्ग देदिया उसके देतेही आपत्तिआई आकाश में शब्दहुआ कि मैं उदण्डामायाहूं और फिर वह उसको माया बलसे उठाकर आकाशमार्गीहुई और म्लेच्छीय सेनासे कहती गई कि तुम कमरखोलो और युद्धनिवृत्तिके बाद्यबजवाकर फिर कर चलेजाओ यह आज्ञापाकर म्लेच्छोंने युद्धनिवृत्तिके वाद्य बजाये और सब फिरकर अपने२ डेरों में चलेआये उससमय वह अंधकार मिटगया और जब सबनेदेखा कि राजपुत्र नहींहै तब तो सब सेना में हाहाकारपड़गया और पांचाल सब सेनाको पद्मावतीको सौंपकर आप राजपुत्र के खोजमेंचलदिया उधर उदंडा राजपुत्रको अपनेबागमेंलाई और उसमें जो द्वादशद्वारी बनीहुईथीं उसमें राजपुत्रको लिटादिया और ऐसी मायाकरदी कि वह उठबैठ न सकै और फिर आप कुछ सामग्रीलेनेचली गई कि उसकोलाकर राजपुत्रका वधकरूं और उसको प्रेतरूप बनाकर अपने वशमेंकरलूं वह बाग एक बनमेंथा जब वह चली गई तब पांचाल वहां राजपुत्रको ढूंढ़ताहुआ आपहुंचा और

यह अनुमानकरके कि कदाचित् राजपुत्र यहीं नहो उसने तुरंत अपनास्वरूप एक मालिन कासा बनाया लहंगापहना चूंदर ओढ़ी शिरकीमांगकाढ़ी बेंदीलगाई टीकादिया पानखाया और आभूषणोंसे ऐसा अलंकृत अपनेको किया कि वह एक परम-सुंदरीस्त्री दीखनेलगा नेत्रों में सुरमादेने से ऐसा जानपड़ता था जैसा कि किसी कविकी उक्ति है कि ॥

दो० । एक तो नैना मद भरे दूजे अंजन सार ।
ए बौरी कोऊ देत है मतवारेहि हथियार ॥

और फूलोंकी टोकरी हाथ में लियेहुए छुम छुमकरतीहुई बागके द्वारपरआई और देखा कि वह बाग बड़ामनोहर और रमणीक बनाहुआ है और प्रकार प्रकारके फूलों के खिलेहोनेके कारणसे यह जानपड़ताहै कि बसंतऋतुके रहनेका यही स्थान है सघनवृक्षोंकी छायामें मोर नाचरहेथे कोयल आदि पक्षी मधुरी मधुरी ध्वनिसे गानकरतेथे चारोंओरभूमि हरी हरी दृष्टि आती थी तड़ाग उसमें भांति भांतिके बने और निर्मलजल से भरेथे उनकेकिनारे जलपक्षीक्रीड़ाकररहेथे अपूर्वआनन्दकास्थानथा॥

चौ० । भांति भांति के फूल सुहाये । ठौर ठौर बहु भांति लगाये ॥
कुसुमितद्रुमअरुलतासुहाई। सघन पल्लवितत‍हां लगाई ॥
गंध भरी अति पवन सुहाई। डोलति मंद मंद सुखदाई ॥
गुंजत चंचरीक मधु लोभा । बरणि न जाय तहांकीशोभा ॥

निदान जब वह मालिन आगेबढ़ी मालियोंनेपूछा कि तुम कौन हो वह बोली कि मैं मालिनहूं सुनैनाके सेवकोंके पास सदैव आयाकरतीहूं आज इसबागकी स्वामिनि यहांआईहैं इससेमेरा चित्तभी चाहा कि चलकर मैंभी बागदेखिआऊं माली बोले कि तुम अकेले मेंभी यहांआयाकरो अब तो जाओ पर देखना हम अपने भक्तोंको भूल मत जाना हमको तो तुम्हारी चालही ने मारलिया दूसरा बोला कि भला हँसकर अपनामुख तो दिखला

दो निदान ये सब तो उससे ठट्ठाकरतेथे परन्तु उन मालियोंका जो चौधरी था उसका बेटा उस मालिनके महान सुंदरस्वरूप को देखकर आसक्तहोगया और उसपर अपने प्राणोंको खोने लगा वह उठकर उसके साथ होलिया और कहनेलगा कि हे प्राणप्यारी मुझ अपने भक्तको अपने कपोलरूपी प्रफुल्लितफूलोंके मकरन्दका परमलोभी भ्रमरजानकर अंगीकारकर ॥

सो०। प्यारी तुम्हरेहेतु अँखियां ते नदियां भई।
तनभयो बालूरेत कटिकटिपरत करारज्यों ॥

यहकहकर वहउसके पासचलागया और हाथपकड़करबोला कि मेरेप्राण निकलेजाते हैं कृपाकरके मेरेसाथआओ तबमालिन ने मुसकुराकरकहा कि अपनी भैनाकोबुलाओ तेरीबातों में आग लगाऊँ कैसाजल्दी मजेमें आगयाहै परन्तु वहमाली ऐसाप्रेममें आगयाथा कि उसने उसकेवाक्योंको परमप्रियमाना और उस को गोदीमेंउठाकर उसकोठरीमें लेआया जिसमें आपरहताथा उसमें एककोनेमें सीताफलोंका ढेरलगाथा दूसरे में रम्भाफल रक्खेथे तीसरे में अमरूदथे और बीचमें एकशय्या बिछीथीउस मालीने उसमालिनको लेजाकर उसीशय्यापर बैठाया उसी समय उदण्डा सामग्री लेकर आगई और उसने पूजनकरके मायाधिष्ठानअसुरों को बुलाया उन्होंने आकरकहा कि कोठरी में बहुरूपिया मालिन बनाहुआबैठाहै यहसुनकर वहक्रोधितहोकर यह कहतीहुई चली कि मराबहुरूपिया यहांभीआया इसबातको पांचालनेसुना और समझा कि तेरा आना प्रकटहोगया उदंडा यहां भी आवैगी यहसोचकर उसने तुरन्तमूर्च्छाकर चूर्ण उसमाली बच्चेके मुखपरमलदिया वह तो मूर्च्छितहोगया और आपभीतर जाकर कोठरी के पटकी आड़में खड़ाहोरहा उदण्डाने आतेही द्वारखोला और जैसेहीभीतर अपनाशिरडाला तैसेही पांचालने भुजाली उसकी ग्रीवापरमारी कि उसकाशिर भुट्टासाकटकर जा

पड़ा उसकेमरतेही बड़ाकोलाहल प्रकटहुआ और वाणीहुई कि
मुझे मारडाला मेरानाम उदण्डामायाथा उसकोलाहलको सुन
कर सबमाली भागगये और इन्द्रविक्रमभी मायावेष्ठित कैदसे
छूटगया और उठकर खड़ाहोगया उसी द्वादशद्वारीमें वह माया
विध्वंसिनी खड्गभी रक्खाथा राजपुत्रने उसेउठालिया और जो
कोई म्लेच्छ मिला उसकावध करडाला और पांचाल भी उस
मालीबच्चेको मारकर राजपुत्रके पासचलाआया और उसकोसाथ
लेकर अपनी सेनाकी ओर चलदिया उधर वे माली सुनैना के
पासभागकरगये और उससेउदण्डाके मारेजानेका वृत्तान्तकहा
वहरोनेलगी और किलेकेबुर्जपर आकरमायाकृत तूरबजाईउस
को सुनकर सब म्लेच्छोंकीसेना जो बाहिरठहरी हुईथी किलेके
भीतरचलीगई और द्वारकिलेका बन्दकरलिया इसी अवसरमें
इन्द्रविक्रम आकर अपनी सेनामेंपहुँचा उससमय वैष्णवीसेना
के सबशूरवीर जो कैदहोगये थे वेभी उदण्डाके मारेजानेसे कैद
से छूटगये और अपनीसेनामें चलेआये इन्द्रविक्रमकेभयसे उन
को किसीने नहीं रोका अब उसमायाकृत परछाईंका वृत्तान्त सु-
निये जिसको सुनैनाने अपने केशोंसे प्रकटकियाथा वहसुनैना
की आज्ञा पाकर बदरी उद्यानमें गई और उसने मुचुकुन्द को
वह पत्र सुनैनाका दियाहुआदिया उसमें सब वृत्तान्त राजपुत्री
और इन्द्रविक्रम और युद्धसे घरके बिगड़ जाने का लिखाथा
मुचुकुन्द उसको पढ़कर रोता हुआ महेन्द्र के पास गया और
विनयपूर्वक बोला कि मायाविध्वंसिनी खड्ग के तोड़े का कुछ
यत्न बतलादीजिये मेरा सबघर नष्ट होगया है यह सुनकर महे
न्द्रने अपने कोपसे एकरत्न मँगवाकर उसको दिया और कहा
कि इसको मढ़वाकर अपनीभुजापर बांधलेना और जिससम-
य शत्रुके सन्मुखजाना अपनीभुजाको उसेदिखाना इस रत्नकी
आभा देखतेही शत्रु मूर्च्छितहोकर गिरपड़ेगा उससमय तुम

उसमे मायाविध्वंसिनी खड्ग छीनलेना और उसे पकड़लेना क्षणमात्रमें वह फिर चैतन्यहोजायगा फिर जो तुम्हारी इच्छा हो सोकरना मुचुकुन्दने वहरत्न लेलिया और उसी समय उस को मढ़वाकर अपनी भुजापर बांधलिया और म्लेच्छोंकी सेना अपने साथलेकर बड़ीधूमधामसे चलदिया और बड़ेमार्ग को उत्तीर्णकरके अपने किले के समीप जापहुंचा उसकीभार्या बुर्ज परबैठीथी और किलेकाद्वार बन्दथा और राजपुत्रनेभी उसदिन युद्धनहींकियाथा कि अकस्मात् बादलोंकी घटा और अग्निकी ज्वाला आकाशमें प्रकटहुई और थोड़ी देरमें बारहसहस्रम्लेच्छ सर्पों पर बारहसहस्र सिंहों पर और बारहसहस्र हाथियों पर और बारहसहस्र पैदल मायाबलसे आकाशमार्ग से उड़तेहुए आते दिखाईदिये और एक विमान पर मुचुकुन्द बैठाहुआदृष्टिपड़ा जिसका छत्रलगाथा और चमरहोताहुआ चला आता था और वह महाराजाओं के योग्य वस्त्र और कीटआदि अलंकारों से अलंकृत था साथ में नानाध्वजा थीं और अनेक प्रकारके बाजे बजतेआतेथे सुनैना उसे आतेहुए देखकर अपने अनुचरों सहित आगे गई और भूर लुटातीहुई बड़े आदरसे उसे लिवालाई उससमय पद्मावती ने राजपुत्रसे कहा कि राजपुत्री का पिता यही है परमेश्वर विघ्न शांतकरे यह बड़ाभारी मायावी है वहबोला कि हमाराईश्वर सबसे अधिक बलवान्है निदान वह म्लेच्छीयसेना राजपुत्रके सामने आकर उतरी और मुचुकुन्दके डेरे बीचोंबीच सेना में खड़ेकियेगये जब मुचुकुन्द किले के भीतरगया तब उसकीभार्या ने सबवृत्तांतकहा वहबोला कि शत्रुंजयने अपनेपोतेको निषेधकिया या नहीं क्योंकि लड़ाई थी तो महेन्द्र और अद्भुतसेथी मुझसे क्याप्रयोजनथा अच्छा मैं पत्रलिखताहूं यहकहकर उसनेपत्रलिखा कि हेशत्रुंजय तुम अपने पोतेको युद्धकरने से निवृत्तकरो नहींतो वह मेरेहाथ से

माराजायगा यहलिखकर उसने उसपत्रको एकम्लेच्छकोदेकर आज्ञादी कि इसपत्रको महाराज शत्रुंजयकेपास लेजा वह उस पत्रको लेकर वैष्णवीसेना में गया और श्रीमहाराजको अपने आनेके समाचार सुनाये उन्होंने आदरपूर्वक उसको बुलवाया और पत्रकोपढ़कर उत्तरलिखा कि इन्द्रविक्रमकेकार्यमें मैं कुछ नहींजानताहूं तुमजानो और वहजाने जो तुम मुझसे न लड़ोगे तो मैंभी तुमसेलड़ने न आऊंगा यहउत्तर लिखकर उसम्लेच्छ कोदेदिया वह उसेलेकर मुचुकुन्दके पासआया उसने उसपत्र कोपढ़करकहा किशत्रुंजयको युद्धकरनारुचताहै अच्छा युद्धके वाद्यबजायेजावेंऔर यह कहकर वह वहांकीभी सेनाको लेकर किलेके बाहिरआया और अपनेडेरों में आकर बैठगया और जिससमय कि सूर्यने अपनीरश्मियोंको खींचकर पश्चिमदिशा कोअपनाकूचकिया और आकाशदेशकोखालीपाकर चन्द्रमारू-पीराजाने तारागणोंकी सेनासहितआकर अपना प्रबन्धकिया॥

दो०। निशि अँधियारी निश्चरी तारागण चख रूप।
चख दिखाइ सूचित करत रणको भयद स्वरूप॥

उससमय दोनोंसेनाओंमें युद्धकेवाद्य बजनेलगे और योद्धा युद्धकी तैयारी करनेलगे जो शूरवीर थे उन्हों ने अपने शस्त्रों को पैनाया और ठीककिया और जो मायावी थे उन्होंने अपने मायाकेप्रयोग जगाये दोनों सेनाओंमें रात्रिभर इसीप्रकारसे तैयारी रही और जब सूर्यरूपी राजाने अंधकाररूपी सेना को पराजित किया॥

दो०। आवत गरुड़ प्रभात के निशा उरग भई नाश।
नखत उलूक लुके सकल रविको देखि प्रकाश॥

प्रातःकाल होतेही इन्द्रविक्रमने नित्यकर्मकिया और सब सेनाको लेकर रणभूमिमेंआया उधरसे मुचुकुन्दभी म्लेच्छोंकी सेनालेकर आया रणभूमि निष्कंटक कीगई और कवीश्वरों ने

वीररसकेपद पढ़कर शूरवीरोंको रणकरनेका उत्साह दिलायाइस केपीछे म्लेच्छोंकीसेनामेंसे एकपरिश्रमी नामीम्लेच्छ निकलकर रणभूमिमें युद्धकरनेकोआया और इधरवैष्णवीसेनासे वीरसेन नामी शूरवीर उससे युद्धकरनेको गया उससमय परिश्रमी एक चक्रहाथमें लेकरबढ़ा और मायाकरके वहचक्र वीरसेनके ऊपर फेंका वहआकर वीरसेनकी ग्रीवामें गिरा और उससे वहबँधकर निश्चल और शक्तिहीनहोगया तब परिश्रमीनेबढ़कर चाहाकि उसका शिर काटडालूं कि इतने में राजपुत्रइन्द्रविक्रम ललकार कर आगेबढ़ा और मायाविध्वंसिनी खड्गका प्रहारकिया परिश्रमीने बहुतकुछ रक्षाके लिये मायाकी परन्तु एक न चली और उसके शरीरके दो खण्डहोगये और एक कोलाहल मचगया उसके मरनेसे मुचुकुन्दपर रहा न गया और वह मायाबलसे चपला चमकाताहुआ अपने महोर्गको बढ़ाकर रणभूमिमें युद्ध के लियेआया उससमय इन्द्रविक्रम मायाविध्वंसिनी खड्गको हाथमें लियेहुए दौड़ा उसको देखकर मुचुकुन्दने घबराकर अपनी भुजा उसके सामने करदी जैसेही उसभुजापर बँधेहुएरत्न की आभा इन्द्रविक्रमपर पड़ी वह अचेतहोगया और मुचुकुन्द ने उसकेहाथमें से मायाविध्वंसिनी खड्गलेकर उसे मायाबलसे उठाकर आकाशमार्गीहुआ यहदेखकर वैष्णवीसेनामें कोलाहल मचगया और सब शूरवीर लेना लेना पुकारतेहुए पीछे दौड़े परन्तु मुचकुन्द ने युद्ध निवृत्ती के बाजे बजवादये और कहा कि प्रथम इन्द्रविक्रमका बध करलूं उपरांत तुमसबको दंडदूंगा यहसुनकर सबशूरवीरनिराशहोकर फिरआये औरम्लेच्छभीअपनेडेरोंमेंगये और मुचुकुन्दने इन्द्रविक्रमको एकम्लेच्छ निहङ्ग नामीको देकर कहा कि इसको अच्छीप्रकारसे कैदकर किलेके भीतर वह दुष्टा कलावतीमौजूदहै वहां इसकाजाना श्रेष्ठ नहीं है निहंग उसको लेकर एक पर्वतकी खाड़ीमें आया और वहां

मारा जायगा यहलिखकर उसने उसपत्रको एकम्लेच्छकोदेकर आज्ञादी कि इसपत्रको महाराज शत्रुंजयकेपास लेजा वह उस पत्रको लेकर वैष्णवीसेना में गया और श्रीमहाराजको अपने आनेके समाचार सुनाये उन्होंने आदरपूर्वक उसको बुलवाया और पत्रकोपढ़कर उत्तरलिखा कि इन्द्रविक्रमकेकार्यमें मैं कुछ नहींजानताहूं तुमजानो और वहजाने जो तुम मुझसे न लड़ोगे तो मैंभी तुमसेलड़ने न आऊंगा यहउत्तर लिखकर उसम्लेच्छ कोदेदिया वह उसेलेकर मुचुकुन्दके पासआया उसने उसपत्र कोपढ़करकहा किशत्रुंजयको युद्धकरनारुचताहै अच्छा युद्धके बाद्यबजायेजावेंऔर यह कहकर वह वहांकीभी सेनाको लेकर किलेके बाहिरआया और अपनेडेरों में आकर बैठगया और जिससमय कि सूर्यने अपनीरश्मियोंको खींचकर पश्चिमदिशा कोअपनाकूचकिया और आकाशदेशकोखालीपाकर चन्द्रमारूपीराजाने तारागणोंकी सेनासहितआकर अपना प्रबन्धकिया॥

दो०। निशि अँधियारी निश्चरी तारागण चख रूप।
चख दिखाइ सूचित करत रणको भयद स्वरूप॥

उससमय दोनोंसेनाओंमें युद्धकेबाद्य बजनेलगे और योद्धा युद्धकी तैयारी करनेलगे जो शूरबीर थे उन्हों ने अपने शस्त्रों को पैनाया और ठीककिया और जो मायावी थे उन्होंने अपने मायाकेप्रयोग जगाये दोनों सेनाओंमें रात्रिभर इसीप्रकारसे तैयारी रही और जब सूर्यरूपी राजाने अंधकाररूपी सेना को पराजित किया॥

दो०। आवत गरुड़ प्रभात के निशा उरग भई नाश।
नखत उलूक लुके सकल रविको देखि प्रकाश॥

प्रातःकाल होतेही इन्द्रबिक्रमने नित्यकर्मकिया और सब सेनाको लेकर रणभूमिमेंआया उधरसे मुचुकुन्दभी म्लेच्छोंकी सेनालेकर आया रणभूमि निष्कंटक कीगई और कवीश्वरों ने

बीररसकेपद पढ़कर शूरबीरोंको रणकरनेका उत्साह दिलायाइस केपीछे म्लेच्छोंकीसेनामेंसे एकपरिश्रमी नामीम्लेच्छ निकलकर रणभूमिमें युद्धकरनेकोआया और इधरबैष्णवीसेनासे बीरसेन नामी शूरबीर उससे युद्धकरनेको गया उससमय परिश्रमी एक चक्रहाथमें लेकरबढ़ा और मायाकरके वहचक्र बीरसेनके ऊपर फेंका वहआकर बीरसेनकी ग्रीवामें गिरा और उससे वहबँधकर निश्चल और शक्तिहीनहोगया तब परिश्रमीनेबढ़कर चाहाकि उसका शिर काटडालूं कि इतने में राजपुत्रइन्द्रबिक्रम ललकार कर आगेबढ़ा और मायाबिध्वंसिनी खड्गका प्रहारकिया परिश्रमीने बहुतकुछ रक्षाके लिये मायाकी परन्तु एक न चली और उसके शरीरके दो खण्डहोगये और एक कोलाहल मचगया उसके मरनेसे मुचुकुन्दपर रहा न गया और वह मायाबलसे चपला चमकाताहुआ अपने महोर्गको बढ़ाकर रणभूमिमें युद्ध के लियेआया उससमय इन्द्रबिक्रम मायाबिध्वंसिनी खड्गको हाथमें लियेहुए दौड़ा उसको देखकर मुचुकुन्दने घबराकर अपनी भुजा उसके सामने करदी जैसेही उसभुजापर बँधेहुएरत्न की आभा इन्द्रबिक्रमपर पड़ी वह अचेतहोगया और मुचुकुन्द ने उसकेहाथमें से मायाबिध्वंसिनी खड्गलेकर उसे मायाबलसे उठाकर आकाशमार्गीहुआ यहदेखकर बैष्णवीसेनामें कोलाहल मचगया और सब शूरवीर लेना लेना पुकारतेहुए पीछे दौड़े परन्तु मुचुकुन्द ने युद्ध निवृत्ती के बाजे बजवादिये और कहा कि प्रथम इन्द्रबिक्रमका बध करलूं उपरांत तुमसबको दंडदूंगा यहसुनकर सबशूरबीरनिराशहोकर फिरआये औरम्लेच्छभीअपनेडेरोंमेंगये और मुचुकुन्दने इन्द्रबिक्रमको एकम्लेच्छ निहङ्ग नामीको देकर कहा कि इसको अच्छीप्रकारसे कैदकर किलेके भीतर वह दुष्टा कलावतीमौजूदहै वहां इसकाजाना श्रेष्ठ नहीं है निहंग उसको लेकर एक पर्वतकी खाड़ीमें आया और वहां

उसने इन्द्रविक्रमको एकडेरेमें कैदकिया और आप पहरा देने बैठगया कि अकेले में जो आवैगा मुझे दीखजायगा सेनामें बहुत मनुष्योंके होनेके कारणसे पहिंचान नहीं होसकतीहै नि-दान यहतो वहांरहा और पांचाल एक म्लेच्छकासारूप धारण करके सेनासे निकलकरचला और ढूंढ़ताहुआ उसी म्लेच्छके डेरेकेपास जापहुंचा उसने पूछा कि तू कौनहै पांचाल बोला कि मैं मुचुकुन्दके पाससे आयाहूं उन्होंने आपकी क्षेमकुशल पूछी है यह सुनकर निहंगने अपने पाससे एक मोमका गोला नि-काला और उसको पृथ्वीपर फेंककर कहा कि उसको उठाकर तू मेरेपास आ पांचाल उसको उठानेको झुका परंतु जैसेही हाथ लगाया तैसेहीउसकाहाथ जलगया और वहवहांसेभागा निहंगने उसका पीछा किया परंतु नहींपाया और फिर लौटकर अपनेडेरेमें चलाआया और पांचाल जो भागाहुआ गया तो आगे बढ़के उसको एक वृद्ध म्लेच्छमिला यहभीतो म्लेच्छही का वेषधारणकियेथा तुरंत उसकेसमीप चलागया और मूर्च्छा कर चूर्ण उसके मुखपर डालकर उसको मूर्च्छितकरदिया और उसकेवस्त्र उतारकर आप धारणकर लिये और उसकासाही स्वरूप अपना बनाकर उसको पृथ्वीमें खोदकर गाड़दिया और एक थालमें कुछ मिष्टान्न लगाकर फिर निहंग के पास आया और बोला कि आपकेलिये मायाकर्ताकी प्रसादीलायाहूं उसने वही गोला फिर फेंकदिया और कहा कि इसको उठाकर मेरेपास आ पांचाल तो उसको पहिले देखचुकाथा इससे उसने उसे नहीं उठाया किंतु वहांसे भागकर चलदिया तबनिहंगने समझा कि यहभी कोई बहुरूपिया था इसी अवसर में मुचुकुन्द भी वहां आया निहङ्गने उससेकहा कि बहुरूपिया दोबार यहां आचुका है परंतुभागभागगयाहै तब मुचुकुन्दनेकहाअच्छा कि अबबहुत चौकसरहना मैं तुमसे यहीकहने आयाथा यहकहकर वहफिरा

और उसको लौटतेहुए देखकर पांचालने तुरंत अपनास्वरूप उसकासा बनाया और निहङ्गके पास चलागया उसनेपूछा कि आप लौट कैसेआये पांचालनेकहा कि मैंचाहताहूं कि मैं और तुम मिलकर इसकी चौकसी करें यहकहकर उसकेपास चलागया औरबोला कि देखो वह पीछेतुम्हारे बहुरूपिया आपहुंचा यहसुनकर उसने पीछेफिरकरदेखा और पीछेसे पांचालने एक हाथ भुजालीका ऐसामारा कि उसकाशिर कटकर पृथक्जापड़ा और उसके मरनेसे बड़ाकोलाहल प्रकटहुआ और इन्द्रविक्रम कैदसे छुटगया मुचुकुन्दने मायाविध्वंसिनी खड्गको इन्द्रविक्रमको पकड़ने के पीछे एकगुफामें गड़वादियाथा और प्रयोजन यहथा कि किलेमेंरखनेसे कदाचित् फिर किसीप्रकारसे शत्रु के हाथपड़जाय निदान उसको पर्वतकीगुफामें उसखड्गको गाड़तेहुए इन्द्रविक्रम ने देखा था इससे जब वह कैदसे छुटा तब उसने उसखड्गको खोदकरनिकाललिया और पांचालसहित आकर अपनीसेना में पहुंचा इसकेउपरांत मुचुकुन्दको यह समाचार पहुंचे कि बहुरूपिया निहङ्गको मारकर राजपुत्रको छुटालेगया यहसुनतेही वह क्रोधकेमारे कंपायमानहुआ और उसीसमय युद्धकेवाद्य बजायेजानेकीआज्ञादी कि रात्रिभर युद्ध की तयारी कीजावे प्रातःकाल में इन्द्रविक्रमका बधकियेबिना रणभूमि से नहींलौटूंगा यहआज्ञा होतेही म्लेच्छोंकी सेना में युद्धकेवाद्य बड़ेशब्दसे बजनेलगे जब राजपुत्रको यहसमाचार मिले तब उसनेभी अपनी सेनामें युद्धकेवाद्य बजवाये और पिछलीरात्रि से प्रातःकालतक युद्धकी तयारी होतीरही और जिस समय चन्द्रमारूपी शत्रु भयभीतहोकर भागगया और रविरूपी राजाने पूर्वदिशासेआकरआकाशरूपीदेशकोअपनेबशमेंकिया॥

दो०। उदयहोत दिननाथके मिट्यो सकलतमजाल।
रिपु कुमुदिनि सकुचींखिले मित्रकमलबरताल॥

प्रातःकालहोतेही दोनोंसेना रणभूमिमें पहुंचीं युद्धके वाद्य बजनेलगे और कवीश्वर वीररसके पदसुनाकर शूरवीरोंको रण काउत्साह दिलानेलगे॥

जयकरीछंद। भरेवीररससों सबशूर। गर्जिगर्जि दीन्हों नभपूर॥
गदा शक्ति तोमर असि चर्म। आयुध जेते भेदक मर्म॥
धारणकिये सकल बलवान। जिनहिन जीतिसकै मघवान॥
लस्यो इन्द्रविक्रम तहँ भूप। जिमि सुरगणमें शक्र स्वरूप॥
सहित सेन तब सोभट शुद्ध। चल्यो शत्रुसों करिबे युद्ध॥
चलतहि असगुन भये महान। होत दैवइच्छा बलवान॥
परसो वीर विष्णुपद ध्याय। पहुंचो रंगभूमि में आय॥
क्षात्रधर्म को उर में धारि। अनचितजान्यो तजिबोरारि॥
तेहि अवसर मुचुकुन्द सुवीर। आयो चढ्यो सर्पपर धीर॥
क्रोधभरयो इमि वोल्यो वैन। कहां इन्द्रविक्रम अघऐन॥
थिरैजो ममसन्मुख सो आइ। यमके घरको देउँ पठाइ॥
सो सुनि राजपुत्र बलवान। धारयो उर में क्रोध महान॥
कुंजलाल करि चपल तुरंग। गो अरि सन्मुख भरे उमंग॥

निदान जब इन्द्रविक्रम मुचुकुन्दके सन्मुखपहुंचा तब उसने ऐसीमायाकी उससे बड़ीभारी आंधीआई महाअंधकार छागया और हाथकोहाथ सुझाईनदेनेलगा उसीअंधकारमें मुचुकुन्दने एकपुतला बनाया और मायाकरके उसकाशिर काटकर पृथ्वीपरडालदिया राजपुत्रको मायाविध्वंसिनी खड्गके कारण से प्रकाशदीखता था उसको मुचुकुन्दने अपनीभुजा दिखाई उसपर जो रत्नबँधा था उसकी आभापड़तेही राजपुत्र अचेत होगया तब उसने मायाविध्वंसिनी खड्गलेलिया और एकमायाकृत हस्तको आज्ञादी कि वह राजपुत्रको उठाकर एकओर को लेगया और फिर उसने उसमायाका संहारकरके प्रकाशकर दिया जब प्रकाशहुआ तब सब वैष्णवीसेनानेदेखा कि राजपुत्र रणभूमिमें शिरकटाहुआ पड़ा है यह देखकर सबसेना विकल

होगई और कृप क्रोधकरके खड्गलियेहुए मुचुकुन्दपर दौड़ा
तब उसने फिर मायाकी कि अंधकार छागया और एक माया
कृत हस्तप्रकटहुआ कि वह कृपकोभीलेकर एकओरको चल-
दिया उसके जानेपर मुचुकुन्दने एक और पुतलाबनाया और
मायाकरके उसको पृथ्वीपर डालदिया और फिर अंधकार को
दूरकरदिया अंधेरेके दूरहोतेही सबनेदेखा कि कृपकाभी मृतक
शरीर शिरकटाहुआ और रुधिरमें भराहुआ पृथ्वीपर पड़ा है
उससमय वैष्णवी सेनाके शूरवीर अस्त्रलेलेकर म्लेच्छीयसेना
परदौड़े परंतु मुचुकुन्दने युद्धनिवृत्तहोनेके बाद्यबजवादिये और
पुकारकर कहा कि अरे वैष्णवो इनलोथोंको अपनेसाथ शत्रुं-
जयकेपास लेजाओ और उससेकहदो यहां जो कोई आवेगा
यहीगति उसकी होगी उस समय युद्धनिवृत्ती के बाद्यबजने से
सब शूरवीर युद्ध न करसके और रोतेपीटतेहुये राजपुत्र की
लोथकेपासगये और कहनेलगे कि हाय हेराजपुत्र हमारेस्वामी
तुम अपनी प्रिया कलावतीका सत्संगभी न करनेपाये और इस
युवावस्था में इसलोक से चलदिये उधर पांचाल राजपुत्रकी
लोथके चारोंओर फिरताथा और कहताथा कि हेस्वामी अपने
दासकोभी अपनेही समीप बुलाले तेरेबिना मैं किसप्रकारसे जी-
ऊंगा हाय अब मैं कहांजाऊंगा और किसकाहोकर रहूंगा नि-
दान उक्त प्रकारसे बिलापकरके सबने दोनोंकी लोथोंको अर्थी
पर रखलिया और वहांसे उन्हेंलेकर महाराज शत्रुंजयकीसेना
कीओरचले जब सेनाके समीपपहुंचे तबउनके बिलापका शब्द
सुनकर राजदूतआये और सब वृत्तांतपूछकर सभामेंगये और
महाराज शत्रुंजयसे विनयपूर्वक कहाकि महाराज राजपुत्र इन्द्र
विक्रम कमलाचलपर युद्धमेंमारागया और उनकेसाथही कृपका
भीदेवलोकहोगया दोनोंकी लोथेंआतीहैं यह सुनतेही महाराज
शत्रुंजय और सब सभासद् नंगेशिर और नंगेपांव भागे और

बाहिरआकर देखाकि पांचाल अपनेमुखसे रक्तलगायेहुये लोथों की अर्थीउठाये चलाआताहै और सबराजपुत्रकेसाथी विलाप करते आतेहैं महाराज शत्रुंजयभी वहां आकर रोनेलगे परंतु और सभासद जोथे उन्होंने ऐसा रुदनकिया कि उसकाशब्द आकाशमें छागया सब सेनाके योद्धा और सेवक रोतेथे और राजपुत्रकेपिता पार्थविक्रमको मूर्च्छापरमूर्च्छाआतीथी और उस का युवानपुत्र शक्रविक्रमनामी रोरोकर अपने पिताकी लोथपर गिरताथा और कहताथा कि हे पिता अब तुम्हारे बिना कौन मुझपर प्यारकाहाथ रक्खैगा निदान दोनोंकीलोथें लाकर सभा में रक्खीगईं और रनिवासमें यह समाचार पहुंचे सुनतेहीरानी चन्द्रभागा इन्द्रविक्रमकीमाता पछाड़खाकर गिरपड़ी और महा विलाप करनेलगी और रानीचन्द्रवदन राजपुत्रकीभार्या विकल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी और अपनी चूड़ियोंको फोड़कर और बिछियों को उतारकर महा करुणा विलाप करनेलगी और राजपुत्रके गुणोंको और वर्णन करकरके शिर धुननेलगी इन्द्र-विक्रमकी दादी महान् शोक ग्रसित होकर विकल होगई और बड़े विलापसे रोरोकर पछाड़ खानेलगी और कहनेलगी कि हे मेरेपुत्र यह कैसी तेरीबरात कमलाचलसे आई हाय कैसातेरा व्याह कलावतीसे हुआ अरे बेटा मेरे हाथों के पालेपनासे तेरे बिना मैं कैसे जीऊंगी हाय तुझको किस निगोड़ेकी दृष्टिखागई निदान इसीप्रकारसे बाईस सहस्र स्त्रियां रनिवास में बैठकर महान् विलाप करनेलगीं कोई शिर धुनतीथी कोई छाती पीट-तीथी और कोई टक्करेंलगातीथी इसप्रकारसे ऐसा महा कोला-हल और करुणा विलाप छारहाथा कि यह जानपड़ताथा कि पृथ्वी और आकाश दोनों रोरहेहैं ॥

जयकरीछंद॥ हायहाय हाहाकरि शोर । रोवत सकलवाम अतिघोर ॥
सबकेदृगन बहतिजलधार । बिलखिबिलखिसब करत पुकार ॥

मृत्युनहोति विहित विनुकाल। तुमविनु हम जीवतनरपाल॥
विलपति हमहिंदेखि छविरास। आयनशांत करत हमपास॥
इविधि करतसत्र महाविलाप। रोवतसकल अलाप सलाप॥

निदान लोथ उठानेका प्रबन्ध होनेलगा कि इतनेमें वहां गार्गेयजी आये और उन्हों ने कहा कि इसीप्रकार से एकबार भीमविक्रमकी लोथभीआईथी परंतु वह केवलएकआटेका पुतलाथा इससे इन लोथोंपरभी महामंत्र पढ़कर जल छिड़कियें क्या आश्चर्यहै जोयेभी पुतलेहीहों यह सुनकर महाराज शत्रुंजयने महामंत्र पढ़कर जो जल छिड़का तो दोनोंलोथें आटेके पुतले होगये यह देखकर सबको धीर्य्यहुआ और सबने जाना कि राजपुत्र इन्द्रविक्रम और रूप कैदमें हैं तब महाराज शत्रुंजयने उन पुतलोंको फिंकवादिया और चुपके होरहे परंतु शक्रविक्रमको बापके कैदहोनेका बड़ा शोकहुआ और एकदिनपीछे उसने महाराज शत्रुंजयसे कहा कि मुझको अहेरखेलनेके लिये जानेकी आज्ञा दीजिये मेरा चित्त बहुत घबराताहै महाराजने उसे आज्ञादेदी और उसने अपने साथी बहुरूपिया हुलास नामीको आज्ञादी कि अहेर खेलनका सब सरंजाम तयारकरो उसने सब सरंजाम तयारकिया और अहेर खेलनेवाले पक्षी और श्वान आदि पालकोंको आज्ञादी कि तयारहोरहें डेरेऔर तंबू हाथियोंपर लदवायेगये और कुछ एक सेना और भक्षभोज्य पदार्थ और थोड़े बणिकोंको साथलिया और जिससमय कि सूर्यरूपीसिंहने आकाशरूपी वनमेंआकर रश्मिरूपी गर्जना सुनाई और उसको सुनकर तारागणरूपी मृग वनको छोड़छोड़कर भागगये॥

दो०। उदयवाज रविको निरखि उडुगण लवा लुकान।
अन्धकार विनस्यो सकल भयो प्रभात अमान॥

उससमय राजपुत्र शक्रविक्रम अपने हाथपर उस बाजको

बैठाकर अहेर खेलनेको चला जो एक झपटमें बड़े २ पक्षियों कोपर्वतपरसे पकड़लाताथा उससमय प्रातःकालथा वनमेंहरेरी लहलहारहीथी वायु शीतल मन्द सुगन्ध बहरहीथी उसकेस्पर्श से कलियां छिटकछिटककरफूलतीथीं और उनसेउत्तमगंधउत्पन्न होकर वायुकोसुगंधितकरतीथी उसबनकीशोभाकोदेखकर राज-पुत्रका चित्त स्वस्थहुआ और वह प्रथम पक्षियोंका अहेर करने लगा और अपने उस उत्तम बाजको उसने पक्षियोंपर छोड़ा॥

सो०। सो खगवर बलवान प्रबलपक्ष अरु चंचुधर।
धायझपटि जिमिबान ग्रहण करतभो खगनको॥

पहरदिन चढ़ेतक राजपुत्र पक्षियोंको अहेर करतारहा और उस बनके सबपक्षी भयभीत होकर भागगये उपरांत उसने अपने वायुवेगी अश्वको बनके मृगोंकेपीछे डालना आरंभकिया और धनुष बाण लेकर मृगोंको अहेर करनेलगा॥

दो०। बहुमृग अरु बाराहबहु बहुत सिंह बलवान।
अरु प्रमत्तगज बहुहने हनिहनि तीक्षणबान॥
सो०। यहिविधि करत शिकार यामयुगल बीत्यो दिवस।
मृगकरि करि चिंघार भये पलायन बनहि तजि॥

ठीकदोपहरके समय एक आंधी कालीपीली आई कि दिन कीरात होगई और घोड़ेके मुखपर जो बायुलगी उसने कनोती बदलकर वायुके वेगके समान फरफर एकओरकी राहली राज-पुत्रभी घोड़ेको पुचकारता हुआ और कोई ठहरनेका स्थान देखताहुआ घोड़ेपर सवार चलाजाताथा और चलते २ एक पर्वतके समीप पहुंचा कि वहां आंधीकी प्रबलता कुछ कमहो-गई उससमय एक बिजली चमककर गिरी और राजपुत्र शक्र विक्रमकी कमरमेंहाथ लपेटकर एकओरको लेउड़ी राजपुत्रकी आंखें उससमय वायुके वेगसे बन्दहोगईथीं परंतु लेजानेवाले ने इतना कहा कि यह युवान पुरुष मायादर्पण देशके राजपुत्र

केपास जाताहै जोकोई इसके साथहो सुनरक्खे परंतु वहांकौन था जो सुनता थोड़ीदेरपीछे उसके सेवक वहांपहुंचे और राजपुत्रकी सवारीके अश्वको खाली देखकर चिंतायुक्त हुये और चारोंओर ढूंढ़नेलगे परंतु जबकहीं पता न पाया तब बेबशहोकर महाराज शत्रुंजयकी सेनामें लौटआये और महाराजसे सब वृत्तांत राजपुत्र शक्रविक्रमके गुप्तहोजानेका कहा महाराजने उसको सुनकर कहा कि परमेश्वर उसका रक्षकहै और चुप होरहे परंतु राजपुत्रका साथी बहुरूपिया हुलासनामी राजपुत्रके ढूंढ़नेको आगे चलागया प्रकटहो कि राजपुत्र शक्रविक्रम और मायादर्पण देशके विजयहोने और राजपुत्र इन्द्रविक्रमके छुटनेका वृत्तांत दूसरी पुस्तकमें वर्णन कियाजायगा इससे इस पुस्तकको समाप्त करनेकी इच्छासे अब विलक्षणा कुटनी और मायावती का वृत्तांत वर्णन कियाजाता है और इसके उपरांत महाराज शत्रुंजयकी सेनाका वर्णन और प्रहाससे कालेन्द्रका पहिलेही पहिल मिलनेका वृत्तांत और रत्नकूपपर मेलाहोनेकी कथा वर्णन कीजायगी॥

जयकरीछंद॥बागसदृश यहकथा ललाम। प्रेमआदि रसद्रुम अभिराम॥
नाना वरणन चरित अनूप। फलअरु फूललगे सुख रूप॥
पाठकश्रोता चाखनहार। चाखें निज निज स्वादऽनुसार॥
पद लालितता सुरस अमान। चाखि चाखिके करें बखान॥
कुंजलाल हर्ष मुदआनि। सफल परिश्रम आपुन जानि॥

सौरभ महाराजने आगे इसकथाको इसप्रकारसे वर्णन कियाहै कि जब वहम्लेच्छ विलक्षणा कुटनीको लेकर मायाकृत नदी के पार आया उसने नदी के रक्षकों से महेन्द्र की आज्ञा कही अर्थात् कहा कि महेन्द्रने आज्ञादीहै कि यहस्त्री जिससमय नदी के पार उतरनाचाहे उसीसमय इसकी सहायता करना और हाथोहाथ पार उतारदेना यह कहकर वहम्लेच्छ तोचला

गया और वहस्त्री एक भिक्षुकका भेष धारण करके रानी निशा-
करीकी सेनामेंआई और चारोंओर फिरकर भीखमांगने लगी
एक दिन सभाके द्वार खुलेहुएथे और वहां रानी निशाकरीबैठी
हुई बनकीशोभा देखरहीथी कि उस कुटनीने जाकर जय शब्द
का उच्चारणकिया और विजयप्राप्तीका आशीर्वाद देकर भिक्षा
मांगी रानी निशाकरीने उसे अपने समीप बुलाया और पूछा
कि कौनहै वहबोली कि मैं दैवकी मारीहुई वृद्धाहूं अपने सब
घरवालोंको खाकर अब अकेली रहगईहूं एक घरमें मैं नौकर
भी होगईथी परंतु प्रारंभहीसे मुझे किसीकी बात सहनेकी आ-
दतनहीं है इससे वहांसेभी छूटगई अब भीख मांगती फिरतीहूं
इसमें मुझको अब आनन्दहै दिनभर मांगतीहूं और जो कुछ
मिलजाता है उसेखाकर सायंकालको पैर फैलाकर सोरहतीहूं
यह सुनकर रानी निशाकरी बोली कि अच्छा अब तू यहां रह-
कर अपनी शेष आयुको व्यतीतकर तुझको दोनोंसमय भोजन
और रहनेको डेरा और सेवाकेलिये एकदास मिलेगा और तुझ
को कुछकाम न करना पड़ेगा यह कृपा देखकर उस छल मूर्त्ति
कुटनीने अनेक आशीर्वाद दिये और कहा कि आपकी ऐसी
कृपा और दया करनेवाला संसारमें कौनहै॥

दो०। तुम समान जगमें नहीं कृपा दयाको धाम।
मोसीदीन अनाथको कीन्हों आदर आम॥

मैंभी यही आशाकरके आईहूं कि अपनी आयुको आपही
के चरणारविन्दकी सेवामेंकाटदूं तब रानीनिशाकरीने कृपाकरके
उसको पहिरनेको वस्त्रदिये और रहनेको डेरा देकर भोजनके
लिये पेटिया करादिया और वह कुटनी वहां रहनेलगी दैवयोग
से जबयह सभामेंआईथी तबकोई बहुरूपिया वहां न था क्योंकि
प्रथमतो बहुरूपिये सभामें बहुत कम रहा करते हैं दूसरे प्रहास
अब मायावती के डेरे में अधिक रहताथा क्योंकि मायावती

राजपुत्र रुद्रविक्रमका हाल सदैव प्रहास से पूछा करती और सुनाकरती थी उसने प्रहासको बहुतकुछ दियाथा और आगे देने की वाचाभरी थी और अब उनदोनों का सत्संग इतना अधिक बढ़गयाथा कि सबम्लेच्छ यहीकहतेथे कि मायावती प्रहासपर आसक्तहै दोनों एकहीशय्यापर पड़ेरहते हैं यहवृत्तांत महेन्द्रनेभी सुना और उसको बड़ीईर्षा उत्पन्नहोगई कि जिसके कारण से वह पछतावे करकरके कहताथा कि मायावती बड़ी दुर्भाग्यहै देखो एकबहुरूपियेपर आसक्तहुई है सत्यहै कि स्त्रीका कुछ विश्वासनहीं है जो नाकनहोय तो गूखाय निदान सबतो उसको प्रहासपरआसक्त जानते थे परंतु प्रहास उसको अपनी बेटीकेतुल्य जानताथा केवल धनकेलोभ और मायाकृत देश की गुह्यवार्त्ताओं को जानने की इच्छा से उसके साथ अधिक रहताथा निदान उस कुटनी ने समयपाकर रानी निशाकरीको अपनी बातोंपर लुभाया और उसके हृदयमें अपनाघर बना लिया और सदैव पास रहनेलगी और अपनाअवसर देखती रही एकदिन उसने अपनागुण दिखानेकी इच्छासे बड़े स्वादिष्ट भोजन बनाये और उनको रानी निशाकरीको भोजनके समय पर निवेदनकिया उसने उसभोजनको उत्तमजानकर मायावती से कहलाभेजा कि जबसे तुम आईहो तबसे हमको प्रहासके दर्शन दुर्लभहोगये आज भोजन बहुत अपूर्व बनेहैं तुम और प्रहास आओ और यहीं भोजनकरो यह सुनकर प्रहास और मायावती दोनों वहांआये उससमय रानीनिशाकरी ने कहा कि प्रहासजी हमने एक नया सेवक रक्खाहै वहसबबातोंमें प्रवीण है स्वादिष्ट पाकी भी है उसीने ये भोजन बनाये हैं यह सुनकर प्रहासको ध्यानहुआ कि कहीं समीररूपा स्वादिष्टपाकी बनकर नआईहो आगे भी वह लड़की बनकरआईथी और रतिकाल को पकड़लेगईथी अब मायावती को पकड़ने आईहोगी यह

शोचकर उसने भोजन उठाकर सूंघे और थैलीमेंसे परीक्ष पाषाण निकालकर भोजनकीपरीक्षाकी और पूछा कि वह स्वा दिष्ट पाकी कहांसे आयाहै तब रानी निशाकरी ने सबवृत्तांत ब र्णन किया और कहा कि वह एक भिक्षुकिनथी मैंने उसेरखलिया है प्रहासने कहा उसे यहां बुलवाओ वह बुलाईगई और प्रह स के सन्मुखआई प्रहासने उसको अच्छीप्रकारसे देखकर कहा कि यह बहुरूपिनी तो नहींहै परन्तु कुटनी मालूमहोतीहै व ड़ी चंचल इसकी दृष्टिहै यहकहकर बोला कि अरीविलक्षणा मे री ओर तो देख उसने प्रहाससे आंखसे आंख मिलाई परंतु प्र- हासने भुलावादेकर कहा कि फिर तो मेरीओरदेख उसने फि प्रहासकी ओर देखा तब प्रहासनेकहा देखो पहिले इसने जिस दृष्टिसे मुझको देखाथा अबकी वहदृष्टिनथी इतनीहीदेरमें इस की त्योरियां बदलगईं इससे यह निश्चय कुटनीहै और इसकी मा भी कुटनीहै कहो तो कोड़ेमारकर अभी इससेकहलादूं यह कहकर प्रहासने अपनी थैलीसे कोड़ानिकाला उससमय वि- लक्षणाने देखा कि बेढबमारपड़ेगी जो प्राणजातेरहैं तो आश्च- र्य नहींहै यह शोचकर वह दौड़कर प्रहासके पैरोंपर गिरपड़ी और बोली कि प्रहासजी धन्य है आपकी समान पहिंचानने वाला कोईनहींहै निश्चयमैं विलक्षणानामी कुटनीहूं मुझे महे- न्द्रने लाखोंकी संख्याका धनदेकर मायावतीके पकड़नेको भेजा था परंतु अब मैं बचनदेतीहूं कि कभी छल नकरूंगी अब मेरा चित्त रानीनिशाकरीके चरणोंको छोड़करकहींजाना नहींचाहता है क्योंकि रानीने ऐसीही कृपा मेरेऊपरकी है प्रहासने उसकी बात सुनकर कहा कि मैं तेरेरहनेकी कभी आज्ञा न दूंगा क्यों- कि बुरेसे सदैव बुराईहीहोगी जब रानी निशाकरीने देखा कि प्रहास इसका रहना स्वीकार नहीं करताहै तब उससे प्रसन्न होनेके कारणसे वह बोली कि प्रहासजी अब यह कहतीहै कि

मुझसे अपराधनहोगा इससेइसेअब रहनेदीजिये प्रहासबोला कि आप सबकी रानीहैं जैसा उचितहोकीजिये परंतुमेरीसमझ में इसका यहां रहना अच्छा नहींहै क्योंकि कुसंगसे कल्याण कभी नहीं होताहै निशाकरी बोली कि यह अलग पड़ीरहैगी मैं इसको मुंह नहीं लगाऊंगी यह कहकर उसने कुटनीकीओर नेत्रसे चलदेनेको कहा और वहवहांसेहटगई तबप्रहास आदि सब भोजनकरने लगे और वह बातआईगई होगई और भोजन करनेके उपरांत सबकोई अपने २ स्थानोंको चलेगये वह कुटनी अपनेडेरेमेंसे कईदिनतक ननिकली और नउसने किसी को अपना स्वरूप दिखाया और न किसी औरको उसका कुछ ध्यान आया और वह दोदिनके पीछे आनन्दा और मारीच के डेरोंमें आने जानेलगी और चित्तसे कहतीथी कि जो रानी निशाकरीको पकड़ लेजाऊं तो महाराजकी आज्ञाके विपरीत होगा और मायावतीके पास प्रहास रहताहै उसपर वश नहीं चलसक्ताहै अंतमें वह एक रात्रिको छिपकर विचित्रमाया के पासगई और सब वृत्तांत कहकर बोली कि आपमेरेसाथ बड़े प्रबल मायावी करदीजिये कि जिससमय मायावती को अपने वशमें लाऊं वहउसको पकड़कर महाराज महेन्द्रकेपासलेजाय यह सुनकर विचित्रमायाने सब वृत्तांत लिखकर महेन्द्रके पास भेजदिया उसने पढ़कर विश्वमालीको आज्ञादी कि तुमजाओ और कुटनीकेपासरहो वह आज्ञापाकर उठा परंतु उसकी स्त्रीने कहा कि महाराज तो मायावतीको खराबकरना चाहतेहैं तू अपनी कुदशा क्यों बुलाताहै उसने कहा कि सेवकको स्वामी की आज्ञाके पालनमें क्योंकर शंका होसक्ती है महेन्द्रने भी उनकी कानाफूंसी सुनकर पूछा कि क्या है विश्वमाली बोला कि मेरी स्त्री प्रसूनी मुझको जानेसे निषेधकरतीहै वह बोला कि मैं तेरे सत्यसे बहुत प्रसन्नहुआ अच्छा अब तूजा और मायावतीको

पकड़ला यह आज्ञापाकर वह दण्डवत्करके चलदिया और प्रसूनी भी उसकेसाथहोली और मार्गमेंबोली कि तुम मुझको क्यों रांड़ करना चाहतेहो प्रहाससे अदावत करना श्रेष्ठनहींहै वह बोला कि तेरी बुद्धिनष्टहोगई है जातूबागमें जाकर अपना काम देख मैं महाराजका काम अवश्य करनेजाऊंगा यहकहकर वह चलदिया और उसकी स्त्री बेबशहोकर अपने बागमेंचली गई और वह वहां से चलकर विचित्रमाया की सभामें आया उसने उसे कुटनीके साथ करदिया और वहउसको उसका स्व-रूप मायाबलसे बदलवाकर अपने डेरेमेंलाई और वहां उसे बैठाकर मायावतीके डेरेमेंगई दैवयोगसे प्रहास उससमय कहीं गयाथा उसने अवसर पाकर छलकरके मायावती से कहा कि आज मैंने एकपक्षी बड़ा अपूर्व बनायाहै आपके देखनेकेयोग्य है वह बोली उसका क्या प्रभावहै कुटनीने कहा कि चीनी मृ-त्तिकाकी पुतलियां हैं परंतु मायाबलसे नाचती गाती और बजातीहैं यह सुनकर मायावतीको उसके देखनेका व्यसनहुआ और वह शनैः शनैः उसके साथ साथ उसके डेरेमें आई वहां विश्वमाली बैठाहुआथा उसने माया करके मायावती के ऊपर थोड़ीसी मायाकर्त्ताकी समाधिकी भस्मडालदी उससे वह अ-चेतहोगई और विश्वमाली उसको उठाकर मायाबलसे आका-शमार्गीहुआ और वहकुटनी सबअसबाब छोड़कर भागी जब सेनाजनोंने देखा कि मायावतीको कोई उड़ायेहुए लियेजाताहै उन्होंने हल्लामचाया और बहुरूपिये और मायावीम्लेच्छ दौड़े परंतु विश्वमाली बड़ीशीघ्रतासे मायानिर्मितनदीके पारहोगया और सब देखतेकेदेखते रहगये और वह कुटनीभी भागतीहुई नदीकेतटपर पहुंची दैवयोगसे प्रहास जो मायावतीके लियेदौ-ड़ाहुआ आयाथा उसकीदृष्टि उसकुटनीपरपड़ी देखतेहीकहाकि अरीदुर्भगाखड़ीरह कहांजायगी उसकीबाणीकोसुनकरकुटनी ने

बहुतशीघ्रअपनेको नदीरक्षकोंकेपासपहुँचाया और उन्होंने उस सेकहा कि हम हाथोंहाथ तुझकोपारउतारेदेतेहैं परंतु अभी पार उतरनेनपाईथी कि इतनेमें प्रहासनेदेखा कि यह निकलीजाती है तुरंत गोफनमें एक भारीपत्थर रखकर भ्रामित किया और ऐसामारा कि उस कुटनीके शिरपरजाकरलगा और वह टुकड़े२ होगया वह कुटनी तड़पतड़पकर मरगई और आईगई उसीके शिरगई तब म्लेच्छ प्रहासको पकड़नेदौड़े परंतु प्रहासने मरु- तदत्तवस्त्र ओढ़लिया और अपनीसेनामें चलाआया और रानी निशाकरी आदिसे विश्वमालीका वृत्तान्त कहकर बोला कि मैं जाताहूँ और अपने प्राणोंपरखेलकर मायावतीको लाताहूँ यह सुनकर सबने कहा कि मायावतीका रक्षक परमेश्वरहै आप न जाइये रक्तवाहिनी नदीके पारजाना कठिनहै परन्तु प्रहासने न माना और चलदिया और उसके पीछे और बहुरूपियेभी मार्गी हुए मायावतीके पकड़ेजानेका वृत्तान्त विचित्रमायाकोभी मालूम हुआ और वह बड़ीप्रसन्नतासे सवारहोकर बदरीउद्यानमें आई वहांसे महेंद्र तो देवीखण्ड को गयाहुआथा परंतु विश्वमालीने उसको अपनी मायासे वेष्टितकरके चैतन्यकियाहीथा कि इतने में विचित्रमाया पहुँची और बोली अरी दुर्भगा चाण्डाली महा राजने तेरेसाथ क्याबुराईकीथी तेरा तो मान ऐसा बढ़ायाथा कि सब मायाकृत देशकेराजा तेरा सत्कारकरतेथे सो तू प्रहास पर आसक्त हुई इतने में एक घटाउठी और महेंद्रकी सवारी आई सबने उठकर उसका सत्कार किया और वह आकर सिंहासन पर विराजमानहोगया और वह भी मायावतीको दुर्वचन कहने लगा उस समय मायावतीने अनुमानकिया कि अबतू निश्चय मारीजायगी हाय तू अपने प्राणप्यारे राजपुत्र रुद्रविक्रमकोभी न देखनेपाई योंहीं अपनी आशाको साथलियेहुए इससंसारसे चली और फिर रोकर अपने चित्तसे कहनेलगी कि ॥

बरवा। पियप्रीतमसेभयोनकबहुंमिलाप। बिनामिले मरचली यहीउर दाप। तेहिबिनलखे परैनहिंजियमेंचैन। रोवतनिशिवासर ममदुखियानैन॥

निदान वह तो अपनेप्राणप्यारेका स्मरणकररहीथी कि इतने में महेंद्रने दुबारा उससे दुर्बचन कहे और बोला क्यों तुझपर प्रहास आसक्तहै वहबोली कि प्रहासतो मेरेपिताकी बराबरहैपरंतु और मेरे सैकड़ोंमित्रहैं क्योंकिसीनपूतेका इजाराहै मैं एकदिनमें अस्सीसहस्र मित्रकरूंगी यह सुनकर महेंद्र बहुत क्रोधितहुआ और बोला कि तुझकोप्रहासका भरोसाहै कि वह तुझकोआकर छुड़ालेजायगा वहबोली कि भरोसा तो मुझे परमेश्वरकाहै परंतु प्रहास मुझे यहांसे क्या आकाशमेंसेभी छुटालेजानेकी सामर्थ्य रखतेहैं और ऐसेहैं कि तेरी नाकमें होकर तीरचलातेहैं यह सु- नकर महेन्द्रने क्रोधकिया और कहा कि अरी कुलटा तूमुझको उस बहुरूपियेपर धमकातीहै मैं तुझको उसके सामने आगमें जलादूंगा यह कहकर उसने विचित्रमायाको आज्ञादी कि तुम जाकर मैदान में लकड़ियां इकट्ठी कराओ और इसको इसके मित्रवर्गोंके सन्मुखजलादो और एकबड़ीमायाविनी म्लेच्छीवि- वर्णीनामाको आज्ञादी कि तूजाकर चौकसीकेलिये पहरेखड़ेकरदे और लकड़ियोंका प्रबन्धकरके विचित्रमायाकी सहायताकर वह म्लेच्छी आज्ञापाकर कईसहस्रम्लेच्छ अपनेसाथ लियेहुए नदी के पारआई और निशाकरीकी सेनाकेसामने मैदानमें अपनाडेरा खड़ा कराया और म्लेच्छोंको आज्ञादी कि सूखाकाष्ठ लालाकर इकट्ठाकरो यहआज्ञापाकर म्लेच्छ बनसेवृक्षकाटकाटकर इकट्ठा करनेलगे दैवयोगसे प्रहासजो मायावतीको छुटानेकेलिये चला था वहां आनिकला और उन म्लेच्छोंको लकड़ियां इकट्ठा क- रतेहुए देखकर अपना स्वरूपभी म्लेच्छोंकासा बनालिया और उनकेपास जाकर काष्ठ इकट्ठाकरनेका कारण पूछा उन्होंने सब वृत्तांत कहसुनाया और उसको सुनकर प्रहासने चाहा कि यहां

ठहरकर कुछ छलकरूं परंतु उसीसमया महेंद्रने अद्भुतजालकी पुस्तकदेखी कि देखूं प्रहास इससमय कहांहै वह मायावती को छुटाने अवश्य आवैगा और उस पुस्तकसे उसको विदितहुआ कि प्रहास म्लेच्छकारूप धारण कियेहुए वहां खड़ाहै जहां लकड़ियां इकट्ठी होरहीहैं यह देखतेही उसने विचित्रमायासेकहा कि लोदेखो मायावती के मित्र तो आपहुँचे लकड़ियों के पास खड़ेहैं अब तुम इनको तो लेतीजाओ और उनको भी मैं पकड़ाये देताहूं जोड़ीकीजोड़ीको अग्निमें जलादो यह कहकर उसने विवर्णीको एकपत्रलिखा कि प्रहास लकड़ियोंकेपास खड़ा है उसको तुम पकड़लो और वहपत्र एक मायाकृत पुतलेकेहाथ भेजदिया विवर्णी उसपत्रको पढ़कर अपने डेरे के बाहर निकली और चारोंओरको दृष्टिकरके देखनेलगी प्रहासने उसको किसी का खोजी जानकर मरुतदत्त वस्त्र ओढ़कर गुप्तहोगया और थोड़ीदूरपर आकर उसवस्त्रको उतारकर प्रकटहुआ और देखा कि चपला म्लेच्छकारूप धारणकियेहुए आरहाहै उसको देखकर प्रहासने तूर्य बजाई उसको पहिंचानकर चपला उसकेपास चलाआया तब प्रहासनेकहा कि बेटा आज मायावती जलाई जावेगी इससमय तुम अपनारूप मेरासा बनाकर म्लेच्छों के सामने जाओ और अपनेको पकड़वादो फिर मैं समझलूंगा वह बोला कि बहुतअच्छा और तुरंत अपनारूप प्रहासकासा बनाकर और म्लेच्छों की सेनाके सन्मुखगया यहां समीररूपा को महेन्द्रने भेजाथा कि प्रहास आयाहुआहै तूभी विवर्णी के पास जा और उसकी रक्षाकर वह वहांआकर कईम्लेच्छ अपनेसाथ लियेहुए लकड़ियों के ढेरकेसामने टहलरहीथी कि इतनेमें चपला प्रहासकारूप धारण कियेहुए वहां आनिकला समीररूपा उसको देखतेही भुजाली लेकर डाट बतातीहुई दौड़ी चपला ने भी अपनाखड्ग निकाललिया और उसकेसन्मुख होगया उन

दोनोंमें दो एकहीहाथ चलनेपायेथे कि इतनेमें जो म्लेच्छ स-
मीररूपाकेसाथथे वे उस मिथ्या प्रहासपर आपड़े और उसको
पकड़कर विवर्णीकेसम्मुख लेगये उसने चपलाको कैदकरलिया
और महेन्द्रको पत्रभेजा कि आपकी आज्ञाके अनुसार समीर-
रूपाने पहिंचानकर प्रहासको पकड़वादिया उसको पढ़कर वह
प्रसन्नहुआ और पुस्तकमें प्रहासके वहां होनेका वृत्तांत देखने
और दूसरे समीररूपाके पहिंचानकर पकड़वाने के कारण से
उसको कुछ सन्देह नहीं रहा कि प्रहास पकड़ा गयाहै अथवा
और कोई निदान उसने प्रसन्नहोकर विचित्रमायासे कहा कि
तुमभी तयारीकरो और इसमायावतीको लेचलो मैंभी आताहूं
इसको प्रहासकेसाथ जलाकर अपनी छाती ठण्ढीकरूं यहसुन
कर विचित्रमाया उठखड़ीहुई उसकेखड़ेहोतही सहस्रोंम्लेच्छ
खड़ेहोगये सबअदृश्यखंडमें कोलाहलमचगया जितने मायाव-
तीके मित्रथे सबको बड़ाखेदहुआ और सबने मंत्रकिया चल
कर अंतसमयपर उसको देखलें और जो उसकेशत्रुथे उन्होंने
कहा कि आज उसकी दुर्दशादेखकर चित्तकोप्रसन्नकरें निदान
उसके मित्र और शत्रु सबआकर मार्गपरखड़ेहोगये उधर वि-
चित्रमायाने मायाकृतनिगड़ मायावतीको पहिराकर विमानपर
बैठाया और आप मयूरपर बैठकर उसकोलेकर चली सहस्रों
म्लेच्छ उसकोघेरेहुए उसकेसाथहुए और महेन्द्रभी बड़ीधूम-
धामसेचला उससमय निद्रावती उसकीबहिनने बहुतप्रकार से
समझाकरकहा कि भैना जो तू सच्चेमनसे महाराजकी आज्ञामें
रहना अंगीकारकरे तो मैं अपनीओर से कहकर तुझे छुटालूं
वहबोली कि यहजलना मेरा करोड़वर्षजीनेसे अच्छाहै मैं ऐसे
दुष्टराजाकी आज्ञामें कभीनरहूंगी तब वह बेबशहोकर चुपहो-
रही और महेन्द्रसेभी कुछनकहसकी परंतु बहिनकेलिये विला-
पकरकरके रोती थी और जोलोग कि तमाशा देखनेआये थे

उनमें से बहुतसे रोतेथे और बहुतसे हँसतेथे और उनमें जो बुद्धिमान्‌थे वेकहतेथे कि देखो इसराजपत्रीकी यहतो अवस्था है और ऐसासुंदरस्वरूपहै परंतु देखो दैवने इसका यह स्वरूप जलाने के वास्ते रचाथा हाय क्या इस दैवकी गति है कोई नहींजानता है॥

दो०। कुंजलाल संसारमें सुखिया कोऊनाहिं।
जेते सुखयहँलाखिपरें तेसब मिथ्यामाहिं॥

अब यह म्लेच्छोंकी समाजतो मायावतीकोलेकर आतीहै परंतु अब प्रहासका वृत्तांतसुनिये कि जब चपला पकड़ागया तबवह मरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर त्रिवर्णीके डेरेमेंआया और देखा कि वह आनन्दसे आसीनहै और उसके चारोंओर कुछसेवक स्थितहैं वहांपहुंचकर प्रहासने पुकारकर कहा कि हेत्रिवर्णी मैं मायाकर्त्ताका गणहूं प्रहासके पकड़ेजानेसे परमेश्वर मायाकर्त्ता बहुतप्रसन्नहुएहैं और सालनेके पर्वतकीगुफामें आयेहैं तुमको बुलातेहैं मैं जानताहूं कि तुमको अक्षयआयु देंगे इसवाणीको सुनकर त्रिवर्णी बहुतप्रसन्नहुई और अपनेचित्तमें कहनेलगी कि बोलनेवाला दिखाईनहींदेता है निस्संदेह यह कोई माया कर्त्ताका गणहै यह विचारकर वह एकाकी वहांसे चली और जो उसके साथहुए उनसेकहा कि तुम मतचलो क्योंकि परमेश्वरने मुझकोही बुलायाहै तुमको विनाबुलाये जाना उचितनहीं है निदान वहांसेचलकर वह उस पर्वतकीगुफाके निकटपहुंची यहां प्रहास पहिलेसेबैठाहुआ उसकी बाटदेखरहाथा और कई शिर और कईहाथ अपने शरीरमेंलगाकर अपनास्वरूप ऐसा भयंकर बनालियाथा कि मुख और नेत्रोंसे अग्निनिकलतीहुई दिखाईदेतीथी जब त्रिवर्णी वहांपहुंची तब वह एकथालीमें कुछ फलरखकर प्रकटहुआ और उसके समीपआकर कहा कि तुम ने आनेमेंदेरकी इससे परमेश्वरतो चलेगये परंतु येफल देगये

हैं इनको खालो खानेसे आयुबढ़जायगी यहकहकर उसने वह थाली उसको देदी और आप मरुतदत्त वस्त्र ओढ़कर गुप्त होगया उसने जाना कि यह कोई परमेश्वर का गण था फल देकर अन्तर्द्धान होगया है उसने उनफलों में से कुछतो खाये और जोबचे उनकोलेकर अपनेडेरेकी ओरचली और मार्गमें मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी तबप्रहासने अपनास्वरूप उसकासाब-नाया और उसकेवस्त्रउतारकर पहिरलिये और पृथ्वीखोदकर उसेगाड़दिया आपउसके डेरेमें चलाआया और जोम्लेच्छ लक-ड़ियांइकट्ठीकररहेथेउनसेकहाकि पहिलेनीचेअग्निगर्भाअर्थात् बारूदबिछाओ उसपर लकड़ियोंका ढेरलगाना जिससे आगल-गतेही अपराधी भस्महोजायँ क्योंकि प्रहासकेसहायक बहुतसे हैं ऐसा न होकि कोई पेचपड़जाय और उसको आगमेंसे कोई निकाल लेजाय यहकहकर उसनेथैलीमेंसे मूर्च्छाकरचूर्ण ऐसा निकाला कि देखनेमें वहअग्निगर्भा अर्थात् बारूदमालूम होती थी और उनम्लेच्छोंकोदी उन्होंने पहिलेपृथ्वीपर उसबारूदको बिछाया और उसपर लकड़ियोंका ढेरलगाया और सेरों बारूद लकड़ियोंपरभीडालदी इसप्रकारसेजबप्रबन्धहोगया तबमहेन्द्र की सवारी बड़ीधूमधामसे आई और विचित्रमाया उसप्रेमातुर मायावतीको कैदकियेहुयेलेकर आई उसकेआनेका सबमायाकृत देशमेंचर्चाफैलगयाथा और रानीनिशाकरीकीसेनामेंभीयहखबर पहुँची कि मायावती जलाईजाती है यहसुनकर सबनेपछाड़खाई और रानीनिशाकरी अपने प्राणदेनेको तयारहुई और उसने बड़ी शीघ्रतासे अपनी सेनाको तयारकराया और सबसेनापति मायाकृतअस्त्र लेलेकर युद्धके लिये तयारहोकर नाना प्रकारके वाहनोंपरसवारहुये॥

जय० छन्द। रणउद्यत सब शूर प्रधान। संगलिये सेनाबलवान॥
कवच आयसी धरें शरीर। अस्त्रशस्त्र लीन्हे रणधीर॥

चढ़े बाहननि नाना रूप । जिनकरवरणि नजायस्वरूप ॥
ध्वजापताका लीन्हे हाथ । बजबावत बाजे निज साथ ॥
गर्जत तर्जत ते बलवान । चलेयुद्धहित सहितविधान ॥
तेहिअवसर सो सेनमहान । रक्तसिंधुसम लसी महान ॥

निदान जिससमयसेना तयारहोकरचली और युद्धप्रारम्भ करनेकी तूर्यका शब्दउपहासकेकानोंमेंपड़ा वहदौड़ताहुआरानी निशाकरीकेपासआया औरपूछा कि आपकहांजातीहैं उसनेकहा कि हम मायावतीकेलिये लड़करप्राणदेंगी उपहासबोला कि जो हम उपायसे न लड़ते तो आजतक महेन्द्रके हाथसेकभीके मारे जाते प्राणदेना कुछकठिननहींहै जबचाहो युद्धमेंप्राणदेदो परंतु प्रहासजी गयेहुये हैं जबतकवह न आजायँ तबतक आगेकोपैर मतबढ़ाओ मैं खबरलेनेको जाताहूँ तुमयहींठहरो यह सुनकर-रानी निशाकरीवहीं रुकगई और उपहासवहांसे खबरलेनेको चलदिया वहांमहेन्द्र मायावतीसहित आकरपहुँचा और विश्वर्णी ने उसका सत्कार किया और विचित्रमायाने मायाबलसे वहां एकमण्डप रत्नजटित तुरन्तउत्पन्न करदिया और महेन्द्रआकर उसमें आसीनहोगया और जो जो नामी म्लेच्छथे वे आकर वहां बैठगये और थोड़ीसीसेना रक्षाकेलिये लकड़ियोंकेढेरको घेरकर खड़ीहोगई और महेन्द्रने मायावतीको सामनेबुलाकर फिर समझाया कि अबभी तू अपनेअधर्मके छोड़नेकाप्रणकरे तो फिर तू राजपुत्रीकीराजपुत्रीहीहैतू राजपुत्रीहोकरएकबहुरूपियापर आसक्तहुईहै तुझको ऐसाकरना अनुचितहै बराबरवालोंमें कबतेरी दृष्टिसामनेहोगी इसमें तू अपनीओरकोदेख और अपने सुन्दर स्वरूप और युवावस्थाका ध्यानकरके अपनी कुचालोंको छोड़दे यहसुनकर मायावतीरोनेलगी और ठण्ढेश्वास लेकरबोली कि ॥

बरवा । हियके नैनाकासोंलड़िगयेजाय । रोयरोयचखपरदापरिगयेहाय ॥
बुरोभलो नहिं सूझत अबकछु मोय । हुइहै अबजो होनी हुइह सोय ॥

बिरहज्वालसों परे फफोला हीय। ताकेदुखसों चवमोहिंमरिबो प्रीय॥

हे महाराज इसप्रेमने मुझको अपने आपेमें नहीं रक्खा है इससे मेरी इच्छाहै कि शीघ्रमेरा बधकीजिये और इसप्रेमजनित दुखसे मुझेछुड़ाइये यहसुनकर महेन्द्रनेसमझा कि अब यह न मानेगी और झल्लाकर आज्ञादी किइसकोलेजाकर प्रहाससहित जलादो उससमय विवर्णीने विचित्रमायासेकहा कि आपइसपर से मायाका वेष्टनदूरकर दीजिये तो मैं इसेलेजाकर चितापर बैठाऊं यहसुनकर विचित्रमायाने अपनीमायाको उसके ऊपरसे दूरकरदिया और बड़े २ मायावी उसको घेरेहुयेथे अकेली उनमें से क्योंकरभाग सकतीथी इससे आकाशकी ओर देखकररहगई और विवर्णीने उसेलेजाकर लकड़ियोंके ढेरपरबैठाया और चपलाकोभी उसकेपास बैठादिया जो प्रहासका रूपधारण कियेथा वहांजाकर चपलानेदेखा कि नीचेबारूदबिछी है देखतेही मनमें बिचारकिया कि परमेश्वर संसारमें गुरूजीका नामरक्खै मेराभी नामहोगा कि गुरूकी आज्ञासे अपनेप्राणदेदिये गुरूजी मुझको पकड़वाकरअवतक नहीं आयेअवयहां प्राणजानेका सवसामान है इसअवसरमें मायावती प्रहासरूपी चपलासेबोली कि श्रीमान् तुमने मुझदुर्भाग्यकी प्रीति के कारणसे अपने को क्यों फँसाया आप जो जीतेरहते तो मेरावदला महेन्द्रसेलेते और मेराजलायाजाना मेरे प्राणप्यारे राजपुत्र रुद्रविक्रमको सुनाते तो क्याआश्चर्यहै जो मेरा प्राणप्यारा मेरेशरीरके प्रेमभरीहुई भस्मको देखनेआता जैसा कि कहाहै कि॥

दो०। मरणभयेपर भस्मतन उड़तफिरतहै आज।
जाके विरहानल दही तासों भेटन काज॥

यहकहकर वह वड़ीकरुणासे रोनेलगी और विकलहोकर यह सुनानेलगी॥

क०। कासोंकहौं यहव्यथासजनी चूंबुर्ददिलम् अज्ज़ारोसितम्।

दर्शसुधारस प्याइये जू अजजुदाइये तो मन जीवलवम्॥
तापवुझाओ हियेकी मेरे तुम गाहवगाहन मूदकरम्।
चैन नहीं दिन रैनपरै अब हाफिज हाल वेहाल अजगम्॥

प्रहास ने इनबातोंको सुनकर उत्तरदिया कि हे मायावती परमेश्वर का स्मरणकरो उसकी कृपा से क्षणमात्र में कुछका कुछ होजाताहै हमने सहस्रोंम्लेच्छ मारडाले देखोतो परमेश्वर क्या करताहै इसीअवसरमें विवर्णीरूपी प्रहास ने आकर मायावती को डाटा कि अरी अधर्म्मचारिणी अब भी अपनी कुचालों को छोड़दे इसरोनेधोने में क्या मिलैगा अबभी अपने प्राणबचा उस समय चपला ने जो विवर्णी को अच्छी प्रकार से देखा तो पहिचाना कि गुरूजी हैं और यह अनुमानकरके प्रसन्नहुआ कि अब हमारे प्राणबचे और मायावती ने विवर्णी को उत्तरदिया कि अरी चाण्डाली तू मुझको मरने से क्या वारवार डराती है जा दूरहो मैं महेन्द्रकी आज्ञामें कदापि न रहूंगी यह सुनकर विवर्णी ने पुकारकरकहा कि हे महाराज यह अपराधिनी किसीप्रकारसे राजीनहींहोती है महेन्द्रबोला कि अच्छा तुम हटआओ और आज्ञादी कि चितामें अग्नि लगादीजावै आज्ञाहोतेही एकम्लेच्छ पूलालेकर अग्निलगाने दौड़ा उससमय उपहास जो खबरलेनेआयाथा म्लेच्छका रूप धारणकियेहुए सबवृत्तांत देखरहाथा जैसेही वहम्लेच्छ पूला जलाकर अग्नि देनेको बढ़ा तैसेही उपहास ने लपककर एक भुजाली ऐसीमारी कि उसम्लेच्छकेशिरके टुकड़े उड़गये उसके मरनेसे कोलाहलमचगया और कालीपीली आंधी छागई और अग्नि और पाषाण वर्षनेलगे और उपहास भागगया और प्रहासने चितापर चढ़करजालमारा और मायावतीको खींचकर थैली में डाललिया और मायावेष्टनतो दूरहोई चुकाथा चपला भीकूदकर वहांसेभागा और लेना लेनाका शब्दहोनेलगा और

प्रहासभीभागा म्लेच्छ जो उसकेपीछे दौड़े उसने अग्निगर्भी सेयुक्त यंत्रफेंककर उसचितामें अग्निलगादी उसके कारण से मूर्च्छाकरचूर्णमें अग्निलगी और उसकेधूमको घ्राणकरके म्लेच्छ मूर्च्छितहोगये और वहधूम वायुसे प्रेरितहोकर महेन्द्र के मंडपमेंपहुंचा और महेन्द्र और विचित्रमायाभी मूर्च्छितहोगये उससमय उपहासने दौड़कर रानीनिशाकरीको सबवृत्तांतसुनाया वहतो अपनीसेनाको सन्नद्धकियेहुए खड़ीहीहुईथी सुनतेही म्लेच्छोंपर आपड़ी और नारिकेलआदि नानाप्रकारके आसुरी अस्त्रोंका प्रयोगकरके म्लेच्छोंका बधकरनेलगी उससमय जो म्लेच्छ मूर्च्छित नहींहुएथे वहभागे और वैष्णवीसेना म्लेच्छोंका बधकरनेलगी प्रहास जालमारमारकर असबाब लूटनेलगा एक प्रलयकालमचगया और रक्तकीनदी वहनिकली ॥

जयकरीछंद । सैनिकसकल प्रचारिप्रचार । लागेकरन सुअस्त्र प्रहार ॥
तिनसों हुइ अरिवेधितकाय । चले ऊर्ध्वलोकनिमें जाय ॥
माचो महाघोर संग्राम । कटे असंख्यन भट अरि आम ॥
हेलचेत जे वीर अमित्र । भयवश भागे ते सब तत्र ॥

इसी अवसरमें भूकंपहुआ और पृथ्वीको विदीर्णकरके कुछ अप्सरा हाथ में पिचकारियां लियेहुए निकलीं उनको देखकर प्रहासने रानी निशाकरीसेकहा कि अब यहां मतठहरो येअप्सरा महेन्द्रको चैतन्यकरदेंगी और वह सबको पकड़लेगा यह सुनकर रानी निशाकरीने मायाकृत तूर्य बजाई उसको सुनकर सबसेना इकट्ठीहोगई और वह उसकोलेकरचलदी इधर अप्सराओं ने सुगंधितजलकी पिचकारियांछोड़कर विचित्रमाया और महेन्द्रको चैतन्यकिया जब उनको चेतहुआ तो उन्हों ने अपनेसेवक और सेनापतियोंकी अपूर्वदशा देखी बहुतसे उस चिताकेपास जलेहुएपड़े हैं सहस्रोंकीलोथें कटीहुईपड़ी है आग लगरही है तंबू आदि उससे भस्महोरहे हैं और न मायावती

जलती है और न प्रहासका पताहै यह देखतेही वह क्रोधसेभर गया और कहनेलगा कि हाय मुझसे बड़ीचूकहुई जो मायावती को नदीके इसपार लाया परंतु ये सब शत्रु अब मेरेहाथसेबच कर कहांजायँगे अबकी किसीको जीता न छोडूंगा यह कहकर वह बैठे २ गुप्तहोगया प्रकटहो कि दूषणनामी एकमहामायावी म्लेच्छ इसदेशमें रहताथा उसकेपास एक मायाकृत जालथा उसमें मायावी म्लेच्छोंकी ग्रीवा फँसजाती थी और वह लटक जाताथा निदान महेन्द्र उसी जालको लेनेकोगयाथा कथा उस की आगे वर्णनहोगी उधर विचित्रमाया अपनी सेनाको इकट्ठा करके अपने डेरेको लौटआई और इधर रानीनिशाकरी अपने डेरेमें आई और सभामें आसीनहुई योद्धाओंने कमरखोली सब सभासद अपने २ योग्यस्थानोंपर आकर बैठगये उस समय सब बहुरूपियेभी आये प्रहासने मायावतीको थैलीसे निकाला सब उठउठकर उससे मिले और प्रहासकी प्रशंसा करनेलगे उससमय प्रहासने कहा कि क्यों रानीनिशाकरी उस कुटनीके रखनेका तमाशा तुमनेदेखा वह बोली कि अबमैं आप के मंत्रके विपरीत कोई काम न करूंगी तब प्रहास बोला कि अबकी महेन्द्र बहुतबड़ी आपत्ति लावैगा और हे मायावती तुमभी कोई बड़ी प्रबल मायाविनी नहींहो क्योंकि न तो तुम इस मायाकृत देशकीकोई गुह्यबात बतातीहो और न महेन्द्रका साम- नाही करसक्तीहो वह बोली कि श्रीमान् हम मायाकृत देशाधिप का कुछ नहीं करसक्तीहैं अबमैं चारदिन जाकर जोमायाकरता के कूपपर रहूं तो पृथ्वी और आकाशको एककरदूं यहसुनकर मारीच जो राजपुत्री सुंदरीके विरहमें विक्षिप्तसा रहाकरताथा सचेतसाहुआ और बोला कि जो मायाकृत देशाधिप मुझको पकड़कर मेरी प्रियाकेपास मुझको कैदकरदेता तो अच्छा था और जो मेरागुरू मेरेवृत्तांतको सुनता तो महेन्द्रको सीधाकर

देता वह निस्संदेह महेन्द्रकी बरोबरीकाहै प्रहासनेपूछाकि वह कौनहैऔर कहांरहताहै मारीचने कहा कि वहजहां रहताहै वहां कोई जा नहीं सक्ताहै क्योंकि मार्ग अगम्य और महा कठिन है प्रहास बोला कि बताओ तो सही वह बोला कि उसकेमाया कृतदेशकी दोराहहैं एकतो रत्नाकरपर्वतकीओरसेहै और दूसरी मायारूप म्लेच्छके देशमें होकरहै वह मेरागुरू भी मायाकृत देशका स्वामीहै उसका देशभी बहुतबड़ाहै ऐसाहीहै जैसा कि यह विस्मयी मायारचित देशहै यदि वहां कोईजाय और कहै कि आपका शिष्य मरताहै और महेन्द्रका सामनाहै तोवहसुन कर तुरंत चलाआवैगा प्रहास बोला कि उसकानाम और उस के मायाकृत देशकानाम और वहां जानेकेमार्गको अच्छी प्र-कारसेबताओ मारीच बोलाकि उसकानाम महानुभावकालेन्द्रहै और उसके एकपुत्री ऐसी मायाविनीहै कि उसकी समतानहीं है उसके देशकानाम प्रभाकरीमायादेश है यदि कोई जानाचाहै तो पहलेउसको सिकतादेश मिलेगा उपरान्त सप्तवर्णीनदी मिलेगी उसनदीकेउसपारसे उसकेदेशकी सीवांप्रारंभहोजातीहै महेन्द्रने कईबारचाहा कि उसके देशमेंजाकरविहारकरूं परंतुवहजानस-का न कोई इधरका उसओर जासक्ता है और न उस ओरका इधरआसक्ताहैकालेन्द्रतो कईबारइसदेशमें चलाभीआया परंतु महेन्द्र न जा सका और नदी के इसपार बहुतसे मायाकृतबन पड़तेहैं वह मुझको ठीकठीक स्मरणनहींहोते हैं कि कहां कहां होकरमार्ग है और क्या क्या बनाहै यह सुनकर प्रहास बोला कि सप्तवर्णी नदी कैसीहै उसनेकहा कि उस में श्याम रक्तपीत आदि सातरंगका जल बहता है तब प्रहासने ठंढीसांसभरकर कहा कि जो मैं मायाजानताहोता तो उसको अवश्य लेआता और तुम्हारावृत्तांत जाकरकहता मायावतीबोली कि प्रहासजी उस नदीका आरापार कोईनहींजानता है कि कितनी चौड़ी है

सैकड़ों बर्ष चलनेपरभी उसका अंतनहींमिलताहै और मैं मार्ग जानतीहूं मेरा एक नातेदारभी वहांरहता है मैं जो कहोगे सो कहआऊंगी परंतु बड़ीबुरी बात यहहै कि उस नदीमें नतोकोई नौकाहै न कोई खिवैया है प्रहासबोला कि कुछही क्यों नहो मैं तो जाताहूं तब रानी निशाकरीने घबराकरकहा कि अरे मारीच तैंने प्रहासजीको हमसे पृथक् किया अब सेना किसके सहारेसे रहैगी यह सुनकर मायावती बोली कि प्रहासजी आप न जाइये मैं जातीहूं यह कहकर वह उठखड़ीहुई और अपने डेरे में आकर चलनेकी तयारी करनेलगी परंतु अब महेन्द्रका वृत्तांत सुनिये कि उसने क्रोधमें आकर क्या उपाय किया और कैसी आपत्ति उठाई ॥

इतिश्रीआगरापुरनिवासिचौरासियागौड़वंशावतंसश्रीपण्डितमोहन लालात्मजश्रीपण्डितकुंजविहारीलालकविनाविरचितेविचित्र चरित्रेप्रथमखण्डेदशमोऽध्यायः १० ॥

अध्याय ग्यारहवां ॥

समीररूपा का मायावतीको पकड़लेजाना और प्रहास का उसको छुटाना और बहुतसे म्लेच्छोंका बधकरना और महेन्द्र का दूषणम्लेच्छको लाना और प्रहास और रानीनिश करीकी सबसेनाको पकड़वाना और कालेन्द्रकीपुत्रीका मायाकृत जाल तोड़कर प्रहासको अपने मायाकृतदेशमें लेजाना और प्रहास और कालेन्द्रका पहिलेही पहिल मिलापहोना फिर आकर प्रहासकादूषणम्लेच्छको बधकरना और रानीनिशाकरीकी सेना को छुड़ाना फिर सैन्धवका युद्धकरना और बहुरूपियों का छल करना और अद्भुतके पाससेपत्र आना और महेन्द्रका दो बड़े मायावी म्लेच्छोंको उसकीसहायताके लिये भेजना उनका बहुरूपियोंकेहाथसे माराजाना और मायावी म्लेच्छोंसे युद्धहोना और बहुरूपियों का अनेक छल करना ॥

जय०छंद ॥ एकब्रह्मको जे नरध्याय । नितप्रति ताहीमें चितलाय ॥
तनतजिपावत ऊरधलोक । निवसततहां त्यागिसबशोक ॥
करतअमियरसकोनितपान । जो यहलोक अलभ्यमहान ॥
भोगत भोगरहत आसीन । क्षुधा पिपासा तृष्णा हीन ॥
सो रसमोहिं देहु बागीश । अन्तरयामी त्रिभुवन ईश ॥
डोलत आजु सधीर समीर । गान सुगावत कोकिलकीर ॥
फूलि रहे बहुजाति प्रसून । भरे गंध मकरन्द सुजून ॥
यहिअवसर करिसोरसपान । भरों चित्त आनन्दन आन ॥
बरणनकरों सुकथाअनूप । होयसो मान सरोवर रूप ॥
कथा प्रसंग सु उत्तमनीर । प्रेम वीर रस ताके तीर ॥
ललितछन्द जेकहे सटेक । सफल वृक्षते लगे अनेक ॥
श्रोता पाठक हंस सुजान । आनँद कथा करें रसपान ॥
पढ़ि पढ़ि उरमें भरेंप्रमोद । तेहि सरवर में करें विनोद ॥
सोलखिकुंजलालसुखपाय । निजश्रमसफल जानिहर्षाय ॥

इस ललितकथा के प्रसङ्गको श्री सौरभ महाराजने इसअध्याय में इसप्रकारसे बर्णनकियाहै कि जबवह प्रेमातुरी अर्थात् मायावती मार्गकासरंजाम लेकर सभामें आई और सबसभासदोंसे बिदाहोकर मायाकृत मयूरपर चढ़कर सप्तवरणी नदी कीओर चली प्रहासने अपनेचित्तसे कहा कि तू भी इसकेपीछे चल और कुछनहीं तो मायाकृतदेशका मार्गही मालूमहोजायगा यहां बैठेरहने से क्या मिलेगा यह शोचकर वहभी चलदिया परन्तु मायावती जबसेनासे निकलकर बनमेंपहुँची वहां समीररूपा पर्बतकी गुफामें बहुरूपियोंको पकड़नेकी चिन्तामें खड़ी हुईथी उसने मायावतीको जातेहुएदेखकर अपनास्वरूप प्रहासकासा बनाया और जबवह कुछदूर निकलगई तबपीछेसेदौड़कर उसने बुलाया कि हे श्रीजी थोड़ीदेर ठहरजाइये मुझेकुछ कहनाहै मायावतीने जो प्रहासकोदेखा अपना मयूर पृथ्वीपर उतारा समीररूपा उसकेपास चलीगई और जातेही मूर्च्छाकर

चूर्ण उसके मुखपर मारा कि वह मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी तब उसने मायावतीको पृष्ठभार में बांधकर पीठपरलादलिया और वहां से चलनिकली इसीअवसरमें प्रहास भी वहां आनिकला और देखा कि समीररूपापृष्ठभार लियेजातीहै और मायावती का मयूरखड़ाहुआहै यह देखतेही उसनेडांटा कि कहांजाती है मैं आपहुँचाहूं समीररूपाने उसकीवाणी सुनकर पृष्ठभारउतार कर अलगरखदिया जिससे अच्छीप्रकारसे लड़सके और भुजाली लेकर उसके सन्मुखगई प्रहासने भुजालीके प्रहारको व्यर्थ किया और पाशफेंकी समीररूपा उसके कुंडलोंमें से उछलकर निकली परन्तु इस अवसरमें समयपाकर प्रहासनेजालमारकर उसपृष्ठभारको खींचलिया और थैली में डाललिया समीररूपा कूदकर दूरगिरीथी जब उसने देखा कि पृष्ठभार छिनगया तब झल्लाकर बड़ेवेगसे आई और प्रहाससे लड़नेलगी दैवयोग से एकमायावी म्लेच्छ जिसका नाम उपलाङ्गी था एकपर्वतपर बैठाहुआ यहसब देखरहाथा उसनेवहींसे बैठे२ कुछमायाकी कि दोहस्तआकाशसे गिरे और प्रहास और समीररूपाकोउठाकर लेगयेऔर उसम्लेच्छके सन्मुखलायेउसनेप्रहाससेपूछा कि तुम कौनहो वहबोला कि क्याकहूंलज्जाकीबातहै यहमेरीभार्याहै परन्तु कुलटा होगईहै फिर आपजानतेही हैं जैसा कि कहाहै कि॥

चौ०। कुलटा जासु त्रिया जग होई। जीवत नरक पड़ो नर सोई॥

जबइसको मैं कुकर्म करनेसे निषेध करताहूं तभी यह लड़ने लगती है यहसुनतेही समीररूपा प्रहासको कोसनेलगी कि तेरी भार्याको भाड़में डालूं और जो मुझको अपनी भार्या कहै उस पर आगडालूं और अपने पैरोंकी एँड़ियोंपर न्योछावरकर डालूं हे उपलाङ्गी इसमरे झूठेछलीकी बातोंमें मतआजाना मैं समीररूपानामी महाराज महेन्द्रकी बहुरूपिनीहूं और यह प्रहास है उपलाङ्गीने उत्तरदिया कि मैं महाराजका सेवकनहींहूं किंतुप्रजा

में से हूं इसकारणसे पहिचाननतानहींहूं और जो मायाबलसे प-
हिचानूं तो देरतकमायाका प्रयोगकरना पड़ेगा इससे मैं तुम
दोनोंको महाराजकी सभामें लियेचलताहूं यहकहकर उसने उन
दोनोंको खंभोंसे बांधदिया और आपभोजन करनेलगा उस
समय प्रहासनेदेखा कि इसपर्वतपर छोटासा घरबहुत उत्तम स-
जासजाया बनाहै असबाबभीहै और कोनेमें तितारारक्खाहुआ
है उसकोदेखकर उसने अनुमानकिया इसम्लेच्छको गानेका भी
व्यसनहैयहबिचारकर वह बँधेबँधे गानेलगा उसकोसुनकर उस
म्लेच्छने कहा कि तुमगानविद्यातो अच्छीजानतेहोप्रहासबोला
कि जो मैं खुलाहोता तो आपको आनन्ददिखाता उसको तो
गानासुनने से प्रेमही था तुरंत उठकर प्रहासकोखोलदिया और
कहा कि अच्छा अपनागाना सुनाओ तबप्रहासने बांसुरी निका-
लकर मुखसेलगाली और हाथसे तितारेकोबजाकर प्रेमसंबन्धी
उत्तमपद बड़ीमधुर ध्वनिसेगानेलगा उसको सुनकर उपलाङ्गी
का हृदयप्रेमसे गद्गदहोगया और वहचित्रकासा लिखा बैठकर
भोजनको त्यागकर रोताथा और जब सचेतहोता था तबप्रहास
की बड़ी प्रशंसाकरताथा उससमय प्रहासनेभी अच्छीप्रकार से
चित्तलगाकरगाया कि वहांके पक्षीभी सबआकर उसकेऔर
पास इकट्ठे होगये फिर तो यह गतिथी॥

दो०। मधुर मधुर सुरसों करत ताननसहित अलाप।
उपलाङ्गी तेहि श्रवण करि गदगद करत विलाप॥
सो०। मधुर बांसुरी तान अरुत्तितारकी मधुर गति।
तिनसह मधुरोगान करत भयो मोहितसभै॥

इस प्रकारसे गाते गातेथमगया और बोला कि हे पर्वताङ्गी
मुझकोमद्यपान करनेकी बड़ीआदतहै दो एकपात्रमद्यकेदीजिये
तो फिर आपको बहुतही प्रसन्नकरूं उसनेसुनतेही उसकीइच्छा
के अनुसार मँगवादी और कहा कि तुमभीपीओ और मुझेभी

पिलाओ प्रहासने मद्यका पात्रउठालिया और उसमें से एकपान पात्रभरकर उपलाङ्गीकोदिया उससमय समीररूपा जोबधाहुई थी उसनेपुकारकर कहा कि इसमद्यमें मूर्च्छाकर चूर्णमिला है इसको कदापि पानमतकरना नहीं तो यहबहुरूपिया आपकोमा-रडालेगा यह सुनकर उपलाङ्गी उसमद्यको पानकरने में ठहरा परंतु प्रहासने ऐसाही कुछपरिणामशोचकर पहिलेहीबिनामूर्च्छा करचूर्णमिलीहुईमद्यदीथी इससेउसनेउससमयविनयकी कियह मेरीशत्रुहै परमेश्वर न करै कि किसीकी स्त्री किसीके बुराकरनेपर कमरबांधे आपमेरे ऊपरकृपाकरके इसपानपात्रको किसी और को पिलाकर मेरी और इसकी शत्रुताको जानलीजिये उपलाङ्गी ने इसबातको अंगीकाराकिया और अपनेसेवकोंको बुलाकरउन में से एकको वह मद्यपिलाई और उसको कुछनहुआ सामने बै-ठाहुआहँसाकिया तबप्रहासबोला कि महाराज आपनेदेखा यह स्त्री मेरीशत्रुहै यानहीं यहसुनकर उपलाङ्गीको प्रहासकी बातपर विश्वास आगया और वहबोला कि तू सच्चाहै लाथोड़ी मद्यइस पानपात्रमें और भरदे प्रहासने फिर उसकेपात्रको बिनामूर्च्छाकर चूर्णमिलीहुई मद्यसेभरदिया और जबवह मद्यपानकरनेमें लिप्त होगया तबउसने अवसरपाकर सबमद्यके पात्रोंमें मूर्च्छाकरचूर्ण मिलादिया और जो दोतीनम्लेच्छ वहांपरथेउनसबको वहमद्य पिलाई और उपलाङ्गीकोभी पानपात्रभरकरदिया वहभीपीगया और यद्यपिसमीररूपा बारंबारनिषेधकरतीरही परंतु उसकीबात पर किसीने ध्याननकिया और सबकेसब दोदो एकएक पानपात्र पीकर मूर्च्छितहोगये उससमय प्रहासनेसमीररूपाको बंधाहुआ और बेबश पाकर कहा कि क्यों प्राणप्यारी ऐसा छलकरनाभी तुमको आताहै समीररूपा ऊपरसे तो उसेकोसनेलगी परंतुचि-त्तसे उसकी सराहनाकरती थी उससमय प्रहासने जालमारकर सबसरंजामलूटलिया और उनम्लेच्छोंके शिरभुजालीसे काट-

डाले उनके मरने से महाकोलाहल प्रकटहुआ और प्रहास ने बढ़कर उपलाङ्गीके खड्गमारा परंतु उसकाअङ्ग तो उपलकाथा खड्गसे उसकाशिर न कटा तब प्रहासने उसेउठाकरअपनी थैली में डाललिया और समीररूपा के पासआकर उसे छेड़नेलगा समीररूपाबोली कि अरेशिरकटे अबतोतेरा मनोरथ पूराहुआ अबमुझेतोखोलदे प्रहासनेउसेखोलनेकेप्रयोजनसे हाथबढ़ाकर उसकीछाती पररक्खे उससमय समीररूपाबोली कि मायाकर्ता की शपथ जो तैंनेमुझे किसीप्रकार पापकी दृष्टिसेदेखा तो मैं तेरे और अपने प्राण एककरदूंगी निदानयह तो समीररूपासे हँसी यहांकररहा है और वहांमहेन्द्र जो गुप्तहोगयाथा वहांसे चलकर अदृश्यखंडके एकपर्वतपरपहुंचा वहपर्वतअनेकप्रकारके फूलोंके फूलनेसे परमशोभायमानथा और उसकेऊपर एकस्थान चन्दन के काष्ठ का बड़ामनोहर बनाहुआ था और शय्याआदिसे अलंकृतथा और दूषणम्लेच्छ अपने इष्टमित्रोंसहित वहांसुखासीनथा जबमहेन्द्र उसपर्वतपर पहुँचा तब मायाकृतपुतलोंने उसके आनेकेसमाचारदूषणको सुनाये वहसुनतेही उठकरउसस्थानके बाहिरआया और आगे बढ़कर महेन्द्रको दंडवत्की महेन्द्रने नेत्रकी कोरसे उसकी दंडवत्को अंगीकारकिया और उससेकहा कि तुममायाकृतजाललेजाकर सबविमुखोंकोपकड़लाओ वहबोलाकिबहुतश्रेष्ठ परंतु अबआपजोमेरेस्थानपर पधारेहैंतोकृपाकर के मेरे स्थानको अपने चरणों से पवित्रकीजिये मैं उपस्थित हूं जो आज्ञाहोगी उसकापालन अपनेमनवाणी और कर्मसे करूंगा यह सुनकर महेन्द्र उसके स्थानमेंगया और गद्दीपरआकर बैठाईथा कि दो पक्षीआये और उन्होंने उपलाङ्गी के मारेजाने का सब वृत्तांत कहकर कहा कि प्रहासने उसका सब घरबार लूटलिया यह सुनकर महेन्द्रने दूषणसे कहा कि अब किसीको भेजकर प्रहासको तो शीघ्रपकड़वालो यह आज्ञापाकर उसने

कुशब्दी और नावकनामी दो अपनेमित्रोंको प्रहासके पकड़ने
को भेजा और आप वहीं महेन्द्रकी सेवामें रहा आया और
उत्तममद्य मंगाकर निवेदनकी और गंधर्बिणीबुलाकर नृत्य और
गानकराया और नावक वहांसे चलकर उपलाङ्गी के स्थान के
निकटपहुंचा उससमय प्रहास समीररूपासे हास्यकररहाथा कि
इतने में आंधीउठी प्रहास ने उसे देखकर अनुमान किया कि
महेन्द्र आता है और तुरंत मरुतदत्त बस्त्रओढ़कर गुप्तहोगया
इसी अवसर में नावक वहां आगया और समीररूपाको बंधा
हुआ देखकर पूछनेलगा कि प्रहास कहांगया है वह बोली कि
आपकोदेखकर भागगयाहै उसनेकहा कि कहांजायगा मैं अभी
उसको पकड़ेलाताहूं यह कहकर चलदिया समीररूपाने पुकार
करकहा कि मुझेखोलतेजाओ वहबोला कि तुझेखोलने मेंमुझे
बिलम्बहोगी वहछली निकलजायगा उसकोपकड़लाऊं तोतुझ
को आकर छुड़ाऊं यह कहताहुआ बाहिर निकला प्रहास भी
मरुतदत्त बस्त्र ओढ़ेहुए बाहिरआया और उसनेदेखा कि एक
म्लेच्छ मुझे ढूंढ़ताफिरता है यह देखकर उसने अनुमान किया
कि अकेला तो हैही मारडालो यह शोचकर उसने एक कोने में
खड़ाहोकर अपनीथैली में से मायावतीको निकाला और पृष्ठ
भारको खोलकर उसे चैतन्यकिया और सब बृत्तांत कहा यह
सुनकर मायावती उस म्लेच्छको डांटतीहुई चली और प्रहास
ठहरारहा उसकी डांटको सुनकर नावक मायाकृत अस्त्र लेकर
फिरा और आतेही नारिकेल आसुरी अस्त्रका प्रयोग किया
मायावतीने उस अस्त्रको अपनीउंगली दिखाकर ब्यर्थकरडाला
तब उस म्लेच्छने मायानिर्मित धनुषनिकाला और उससे बाण
मारनेलगा तब मायावती ने कुछ मायाकी कि उस से एक पुत-
ला उत्पन्नहोगया और वह हाथ में खड्गलेकर उसके बाणोंको
काटनेलगा और फिर उसने नारिकेल अस्त्र मायाकरके मारा

कि वह नायकके हृदयको फोड़कर पारहोगया और वह मरकर गिरपड़ा उसके मरनेका बड़ाशब्दहुआ और प्रहासने जाकर उसके वस्त्रआदि जोकुछ उसकेपास था लेलिया इसीअवसरमें कुशब्दी म्लेच्छभी आकर उपलाङ्गीके घरमेंपहुंचा और समीर-रूपासे सबहालपूछकर घरकेबाहिरचला उससमय समीररूपाने उससे कहा कि मुझे खोलतेजाओ उसने उसे खोलदिया और जब बाहिरआया तबदेखा कि अग्निकी ज्वाला उठरहीहै और आकाशसे वाणीहुई कि मुझकोमारडाला मेरानामनायकथा यह सुनतेही कुशब्दीदौड़ा उसकोदेखकर मायावतीने ललकारा कि आ इधरआ कहांजाताहै यहसुनतेही वहमायावतीकीओरचला और अपनेशिरके बालोंको नोचकर मायावतीकी ओर फेंका वे बालबड़े रुविषधर होकरचले तब मायावतीने एक चक्रमायाक-रकेफेंका कि उसने सबसर्पोंको लपेटलिया और फिर एक नारि-केलअस्त्र मायाकरकेमारा कि वह कुशब्दीके शिरपरपड़ा उससे उसका शिरफटगया और वहभी पंचत्वको प्राप्तहुआ और उसके शरीरसे पक्षीनिकलकर महेन्द्रकेपास चले और मायावती और प्रहासवहांसे कालेन्द्रके मायादेशकी ओर चले उस समय प्रहासने कहा कि मायावती पैदलमतचलो मायाकृत विमानपर चढ़करचलो वह बोली कि प्रहासजी आपसेनाको लौटजाइये मैं एकाकी चलीजाऊंगी प्रहासबोला कि जो मैं तुम्हारेपीछे न आता तो समीररूपा फिर तुमको महेन्द्रकेपास लेचलीथी इस से मेरा चलना तुम्हारे साथ अवश्यहै यह सुनकर मायावतीने अनुमानकिया कि इसकेसाथ चलनेसे मेरे विरहका दुखदूरर-हेगा यह शोचकर उसने मायाकृत विमान बनाया और उसपर बैठकर दोनों चलदिये उधर वे पक्षी उड़ते हुए महेन्द्रके पास पहुँचे और उन्होंने नायक और कुशब्दीके मारेजानेका वृत्तांत कहा उसको सुनतेही महेन्द्रने दूषणकी ओर देखा उसने न

कुछ कहा न सुना किंतु मायाकृत जाललेकर तुरंत चलदिया
और प्रहास और मायावती अभी कोसभरभी न गयेथे कि
अंधकार छागया और दोनोंके कण्ठमें फंदेपड़गये और दोनों
उड़तेहुये तो जातेहीथे आकाशमें लटकगये और फिर जब अं-
धकार दूरहुआ तब देखा कि आकाशमें सुनहली जालदूरतक
फैलाहुआहै इसकेपीछे उसने मायाकृत पक्षी महेन्द्रकेपास भेजे
और उन्हों ने जाकर विनयकी कि आपके अपराधी दूषण ने
पकड़ लिये यह सुनतेही महेन्द्र प्रसन्नहोकर वहांसेचला और
वहां आकर पुकारा कि अरे प्रहासतैंने बड़ा उपद्रव मचारक्खा
था अबतैंने देखा कि क्याहोगया यह वाणी महेन्द्रने ऐसे घोर
शब्दसे कहीथी कि उसको सुनकर प्रहास और मायावती दोनों
अचेतहोगये तब महेन्द्र ने दोनोंको उस मायाजालसे छुड़ाकर
एकरस्सी में बांधलिया और विचित्रमायाकी सेनाकी ओर चला
और दूषणसे कहा कि तुम जाकर अपनी सेनालेआओ और
सब शत्रुओंसे युद्धकरो यह सुनकर वह सेना लेनेको चलदिया
और महेन्द्र विचित्रमायाकी सभामें आया उसने बड़ा सत्कार
किया और महेन्द्रजाकर सिंहासनपर बैठगया और मायावती
और प्रहासको चैतन्य किया जब उन दोनोंको चेतहुआ तो
देखा कि हमदोनों रस्सीमेंबँधेहैं और विचित्रमाया सिंहासनपर
महेन्द्रकेसमीपबैठीहै यह देखकर दोनों नीचेकोदृष्टिकरके चुप
होरहे परंतु दूषणजो वहांसेचला अपने स्थानपरआया और
अपनी बारहसहस्रसेनाको तैयारहोनेकीआज्ञादी उसकी आज्ञा
से मायाकृत तुरबजाईगई सब सेनाने मायाकृत अस्त्रशस्त्र धा-
रणकिये और मायाकृत नानावाहनोंपर सवारहोकर वहांसेचल
दिये दूषण आगे आगे सेनाकेथा और उसके साथ साथ शंख
और महाशंख और क्षुद्रकर्ण और विकर्ण और आतापी और
वातापीआदिअनेकसेनापतिथे प्रतिपद मायाकर्ताकीजयबोलते

हुये औरमायाबलसेअग्नि और पाषाणबरसातेहुयेचलेजातेथे॥

चौ०। सिंधुलदश म्लेच्छनकी सेना। चली महाकर्कशजग जना॥
कबहुंक थिरिथिरि महिगत जाईं। कबहूं सबआकाश उड़ाईं॥
लाललालचख अतिविकरारे। भयदमहा दीरघ तन धारे॥
तिनके चलत महाघन आयो। अन्धकार चहुंदिशि में छायो॥
वर्षत चहुंदिशि अग्नि पषाना। चलत प्रचंड वायु बलवाना॥
इविधि सकलते वीर सुहाये। सेन विचित्रमाय में आये॥

उससमय विचित्रमायाकी सेनाकेमान्य म्लेच्छ उनकी आगौनीकोगये और दूषण आदिको सभामें लिवागये विचित्रमायाने उसकी सेनाको उतरवाया और दूषणकेरहनेको उत्तम डेरेखड़ेकियेगये निदान वह दिन इस सेनाकेआने में व्यतीत हुआ और अंधकारने अपना तारागणरूपी जाल आकाश में बिछाया और उसमें सूर्यरूपी पक्षीको फंसाकर पश्चिमदिशा रूपी पिंजरेमें बंदकिया॥

तोमर छंद। जब छिपे सूर अकाश। मिटि गयो सकल प्रकाश॥
निशिकृष्णभयदकराल। आई मनहुं जनुकाल॥

उससमय दूषणसे महेन्द्रनेकहा कि आज रात्रिको मैं यहीं रहूंगा तुम युद्धके वाद्यबजवाओ और कलका युद्धदेखकर जाऊंगा यह सुनकर उसने युद्धके वाद्यबजवाये और उधर रानी निशाकरीकी सेना में भी नगाड़ेगड़गड़ाये बहुरूपिये सब वेष बदलेहुए शत्रु सेनामें मौजूदथे वे सब हालदेखकर रानीनिशाकरीके पास आये और यथायोग्य दण्डवत् करके बोले कि प्रहास और मायावती कैदहोकर आये हैं दूषणनामी म्लेच्छने उन्हें मायाजालमें फँसाया है अबउसने युद्धके वाद्यबजवाये हैं कलयुद्धकरनेकी इच्छारखता है रानी निशाकरी प्रहासके पकड़े जानेका वृत्तांत सुनकर रोनेलगी और दूषणके नामसे उसके मुखका वर्णफीकाहोगया और समझी कि अबप्राणबचने कठिन हैं परंतु अपनेचित्तको दृढ़करके मुखसे कुछ न बोली कि सेनाका

जी छोटाहोजायगा और आज्ञादी कि हमारी सेनामें भी युद्धके बाद्यबजाये जावें यहआज्ञाहोतेही युद्धके बाद्यबजनेलगे उसको सुनकर सबसेनाके लोग युद्धकी तैयारी करनेलगे जोमायावीथे वे अपने मायाके प्रयोगोंको सिद्धकरनेलगे और जो शूरवीर रणधीरथेवे अस्त्रालयसे छांटछांटकर उत्तमउत्तम शस्त्रलेनेलगे॥

दो० । वज्रलोह निर्मितश्रमल अतितीक्षण तरवार।
जासुदमक दामिनिमदश सोअसिलईनिकार ॥
गदाश्रायसी अतिगरू वज्रपात समघात।
प्रबलवीर युधहेतसब गहि गहि तिन्हें बिभात ॥

उसरात्रिको दोनोंसेनाओंमें महाभयंकर शब्दहोतेथे सबमायावीम्लेच्छ और म्लेच्छी अपनी अपनी मायाके प्रयोगोंको सिद्ध करते थे कोई बाराहका बलिदान करताथा कोई मयूर के मांसको अग्निमें होमताथा कोई अशौच बैठाहुआ कुछ पढ़रहा था कोई भेड़ाको मारकर उसके रक्तको कपालमें भररहाथा कोई फूललाकर चढ़ाताथा कोई धूपदेताथा कोई मृतककी खोपड़ी में हविबनाताथा कोईमद्यचढ़ाताथा कोईनग्नबैठाहुआ कुछपाठकरताथाकोई हाड़ोंकीमालासे जपकररहाथा कोईउलूकके रक्तको चढ़ाताथा कोई अपनेशरीरका रक्त निकालकर अग्निमेंडालता था कोई शूललेकर अंडोंकोछेदताथा निदानअनेकअनेकप्रकार से सबमायावी अपनेमायाके प्रयोगोंको सिद्धकरतेथे और जब वे प्रयोगसिद्धहोजाते तब उनकेअधिष्ठाता असुर सिंह व्याघ्रआदि नानारूपधारणकरके प्रकटहोतेथे और म्लेच्छ उनकीपूजाकरके उनकोबिदाकरतेथे और बाचाभरवातेथे उसरात्रिको रानीनिशाकरी और आनन्दा और रक्तकेशी और केसरीआदि सबने नये नये प्रबल प्रयोग सिद्धकिये और सबमरने और मारनेपर उद्यत हुए उनके मायाकृत प्रयोग महाप्रबल और आपत्तिप्रदथे॥

जय० छंद। प्रबलअसुर मायाबलवान। सिद्धकरत भे ते सविधान ॥

करे प्रयोग एकजो कोपि। देय महान प्रलय आरोपि॥
छिनमें शत्रुनिके समुदाय। यमके घरको देयँ पटाय॥

इसप्रकारसे दोनों सेनाओंमें रात्रिभर युद्धकी तैयारी रही और जिससमय महान् सिद्धयोगीरूपीसूर्य आकाशरूपीमाया युद्धभूमिमेंआया और उसकेभयसे तारागणरूपी मायावीम्लेच्छ अपनेगुरू अंधकारसहित अस्तहोगये॥

सो०। योगीवर प्रभुभानु नभमाया थलमें उगेउ।
सहित समाजपलानु निशिम्लेच्छीमायाविनी॥

प्रातःकालहोतेही दोनोंसेना युद्धकेलिये सज्जहोकर रणभूमि में आई शर्वनिशाकरी मायाकृत विमानपर बड़ीदृढ़तासे बैठीहुई सेनाके बीचमें थी और उसके चारोंओर आनन्दा और केसरी और रक्तकेशीआदिबड़ीबड़ीसेनापतिसिंह व्याघ्रमयूर गरुड़गज अश्व आदि नानाप्रकारके मायाकृत वाहनोंपर सवारथीं और संपूर्णसेना सालुपी और मायाकृत अस्त्रलियेहुए अपने २ सेना पतियोंके साथ थी बाजेनानाप्रकारके बजतेथे ध्वजाएंआकाश तकऊंची फहराती थीं इसप्रकारसे सबसेनाको सजाएहुएमाया बलसे अग्नि और जलकी वर्षा करती और प्रचण्डवायुकोचला- तीहुई शर्वनिशाकरी रणभूमि में आकर रणकरनेको उपस्थित हुई उसके आतेही दूसरीओरसे अकस्मात् नानाप्रकारके सह- स्रोंबाजेबजनेका शब्दहुआआकाश घटाओंसेछागया मायाकृ- तपक्षी नानाप्रकारकी बोलियां बोलतेहुएप्रकटहुए और आका- शमें चौसठसहस्र नगाड़ेबजे उनकेशब्दसे पृथ्वीकाँपनेलगी आ- काश गूंजनेलगा और पर्वत हिलगये और फिर एकरत्नजटित मंडप आकाशमें उड़ताहुआ प्रकटहुआ और आकर रणभूमि के समक्षमें उतरा उसमेंपरमसुंदर सिंहासनपर महेन्द्रविराज- मानथा वामाङ्गमें उसके विचित्रमाया थी चारों ओर सहस्रों से- वक और सान्यम्लेच्छ और सभासद मायाबलसे अनेक २ प्र-

कारके भयानकरूप बनायेस्थितथे किसीके मुखसेअग्नि निकल तीथीकोई महानागपर सवारथा कोई हाथोंसे बिजलीछोड़ताथा इसीअवसरमें दूषणम्लेच्छभी मायाकृत जाल लियेहुए बारह सहस्र सेनासहित रणभूमिमें आया उससमय दोनोंसेनाओं के मायायुद्ध करनेवाले योद्धा अपना २ मायाबलदिखाते थे और ऐसीमायाकरते थे कि सूर्य और आकाश और पृथ्वी कुछनहीं दिखाई पड़ताथा बायुमहा प्रचंड अंधकार लियेहुए चलतीथी सहस्रों चपलाचारोंओर चमकती थीं अग्नि और पाषाणोंकी वर्षाहोती थी महाघोर शब्दहोताथा उससे आकाशमें अत्यंत भयङ्कर गूंजउठती थी और वहपर्वतमें टकराकर पर्वतोंको हिलातीथी और यहजानपड़ता था कि महाप्रलय काल यहीहै ॥

चौ०। वर्ण वर्णकी घटा भयंकर। उठि २ छाईं नभ प्रलयं कर॥
अगगगघन गर्जतअतिघोरा। सननन पवन बहत चहुंओरा॥
दुसहदामिनी अतिछिकिरारी। कड़कि कड़किदमकतिभयकारी॥
दखित भानु तेजसों रीता। छिपत फिरतजनु अतिभयभीता॥
लखि यहदशा सकलजगजीवा। भे मोहित भयभीत अतीवा॥
थरथरात इमिसकल सभीता। जिमि मृगलखिके सिंहअभीता॥

जब उक्तप्रकार से दोनों सेना सजकरके रणभूमि में आगईं और व्यूहरचनाहोगई तबकर्वीश्वरों ने निकलकर सबयोद्धाओं को शिक्षाकी कि यह संसारनाशवान्है जो उत्पन्नहुआहै उसका एकदिन मरणअवश्यहै इससे रोगवश मरनेसे रणमेंमरनापरम श्रेष्ठहै शूरवीर सदैव इसकालके आनेकी अपेक्षा कियाकरते हैं और बड़ेभाग्यसे यह युद्धयज्ञकालप्राप्तहोताहै क्योंकि जो लोक सहस्रोंवर्ष तपस्याकरने से भी नहींमिलते हैं वे युद्धमें सन्मुख प्राणतजनेसे प्राप्तहोते हैं और विजयहोनेपर संसारमें यश और पृथ्वीके भोग प्राप्तहोते हैं यहजानकर हेशूरवीरो यथाशक्ति विक्रमकर के युद्धकरो और शत्रुओंको विजयकरो यह शिक्षाकरके

जैसेही कवीश्वर रणभूमिसे हटे दूषणने अपनेशंखनामी सेनापति को आज्ञादी कि तू बढ़करशत्रुसेनाको अजय दे वहआज्ञापातेही महेन्द्रसे आज्ञालेकर अपने महोर्गको बढ़ाकर रणभूमिमें लाया उससमय महेन्द्रकी आज्ञासे मायावती और प्रहासदोनों उस मायाजालमें लटकादियेगये यहदेखकर रानीनिशाकरी आदिने बड़ा खेदकिया और अपनी सेनामें से एकदुर्धर्षनामी योद्धाको युद्धकरनेकी आज्ञादी उसको आतेदेखकर शंखने नारिकेलअ-स्त्रका प्रयोगकिया दुर्धर्षने कुछमायाकी कि पृथ्वीसे एकमायाकृत जंजीर निकली और शंखके अंगमें लिपटगई तबशंखने माया-से एकपुरुष उत्पन्नकिया और उसने खड्गसे उसजंजीरको काट दियाशंख उससेछुटकर पृथ्वीपरलोटगया और मायाबलसे ज्वा-लारूपहोकर दुर्धर्षपरजापड़ा उसने अनेकप्रकारसे अपनीरक्षा की परंतु कुछनहुआ और वहजलनेलगा और मरगयाउसके मरनेसे शब्द प्रकटहुआ यहदेखकर उसकाभाई दुर्मुख वैष्णवी सेनासे निकलकर रणभूमि में गया और माया करके एक पाश फेकी कि वह सर्परूपहोकर शंखकेअंगसे लिपटगई तब शंख पृथ्वीपर लोटनेलगा और उसने मायाबलसे मयूर उत्पन्नकिया कि वह उस सर्पको खा गया और उड़कर उसने दुर्मुखके शिर में चंचुमारी कि उससे वह घायलहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और मरगया और उसके मरनेका कोलाहलहुआ उससमय संडीन चपला से न रहागया उसने अपने पुत्रकीओर देखा और बि-जलीहोकर आकाशमेंचलीगई उसकापुत्र अपनी माका अभि-प्राय जानकर तुरंत पृथ्वी में प्रवेशकरगया और शंखके समीप प्रकटहोकर ऐसे वेगसे अट्टहासकिया कि वह अचेतहोकरगिर पड़ा और ऊपरसे संडीनचपला जो गिरी उसकेशरीरको भस्म करतीहुई पृथ्वी में प्रवेशकरगई उसके मरने से बड़ाकोलाहल प्रकटहुआ और वाणीहुई किशंख मारागया यहदेखकर महेन्द्रने

दूषण से आज्ञाकी यह जाने न पावे उसने दौड़कर अपनामाया
कृत जाल मारा कि रंतिकाल उस में लटकगया इतनेमें उसकी
माता संडीनचपला पृथ्वीसे प्रकटहुई और अपनेपुत्रको माया
कृत जालमें फंसादेखकर दूषणके ऊपर चमककरगिरी परंतु
दूषणने उसकेभी जाल मारा वहभी उसमें फंसकर लटकगई
प्रकटहो कि इस मायाकृत जालका एक शिरा दूषणके हाथ में
रहताथा और सब जाल आकाशमें अदृश्यफैलाहुआरहताथा
उसमें दूषण जिसको पकड़ताथा लटकाताजाता था निदान जब
रंतिकाल और संडीनचपला लटकगये तब दूषण अपनेस्थान
पर जा खड़ाहुआ और उसने अपने दूसरेसेनापति महाशंख
नामीको आज्ञा दी कि तू जाकर जो शत्रुशेषरहेहैं उनका वधकर
वह आज्ञापातेही अपने सिंहको चलायमानकरके रणभूमि में
आया और वैष्णवीसेनाके वीरों को युद्धकेलिये प्रचारनेलगा
उससमय रानीनिशाकरीके विमानकेसमीप रानीआनंदा अपने
मनोहर मोरपर सवार स्थितथी शिरसेपैरतक रत्नजटित आभू-
षण पहिरेथी गलेमें मुक्ताओंकी माला और हाथोंमें मुक्ताओं
की पहुंचियांधारणकियेथी और हरितवर्णकी साड़ी रत्न और
सुवर्णसे भूषितपहिरेहुएथी वह उस म्लेच्छको रणभूमि में खड़ा
हुआ देखकर अपने मोरपरसे कूदकर उसके सन्मुखआई महे-
न्द्रने उसको झुककरके देखाऔर अपनी छातीपर हाथमारकर
विचित्रमायाकी कानसे हाथ मारकर चुपहोरहा और उधरमहा
शंखने दौड़कर खड्गका प्रहारकिया उससमय आनन्दा माया-
बलसे कंठतक पृथ्वी में समागई और अपना शिर जिसपर
फूलोंका मुकुट बनाहुआ रक्खाथा बाहिररहनेदिया उस म्लेच्छ
का खड्ग उसके मुकुटपरपड़ा और उससे फूलोंकी पंखडियांकट
कर फैलगई और उनसे गंधप्रकटहोकर चारोंओर फैलनेलगी
उसको घ्राणकरके महाशंख ने कहा कि क्या उत्तम गंध है तब

तो आनंदा पृथ्वीमें से निकलआई और कुछ मायाकरके पुकारी कि हे वसंतऋतु शीघ्रआओ यह कहतेही शीतलमंद सुगंध वायु चलनेलगी और चारोंओर फले फूलेहुए वृक्ष प्रकटहोगये और भ्रमरउनपर गुंजारकरनेलगे॥

क० फूलिरहे बहु फूल चहूंदिशि गंधभरे अति उत्तमसोहैं।
गुंजत भौंरत भृंग फिरैं मधु लोभभरे प्रति फूलहिटोहैं॥
गंधभरी वरवायु चलै पक्षी मधुरी धुनिसों मनमोहैं।
नीरभरे सरकंज खिले कुंजलाल भलो यह आनंदजोहैं॥

यहां स्थितहोकर उस सुंदरीने पुकारकरकहा कि क्यों महा-शंख तुमनेभी इन पुष्पोंकी गंधको घ्राणकिया तुमको कुछ आ-नंद आया यह सुनकर महाशंख दौड़ा और वहांआकर बोला कि मैं अब इन फूलोंको सूंघताहूं यह कहकर उसने कुछ सुगं-धित फूलतोड़े और उनको सूंघतेही पुकारकर बोला कि प्रीति का परिणाम यह नहीं है कि अपने प्रियकी प्रीतिको छोड़कर अपनेकिसी सनबंधीका कार्य कियाजाय इससे हे प्राणप्यारीआ-नंदा जो आज्ञादीजिये वह मैं करूं वह बोली जा दूषणकोपकड़ ला यह सुनकर महाशंख रससंबंधीपदपढ़ताहुआ दौड़ा और आकर दूषणकी सेनापरगिरा और जिसके ऊपर प्रहारकिया उसीको मारडाला एक आपत्तिखड़ीकरदी और सैकड़ों म्लेच्छों का बधकरडाला उससे बड़ाकोलाहल प्रकटहुआ उसकोसुनकर महेन्द्रने विचित्रमायासे कहा कि देखो यह तुम्हारी बहिन का कार्यहै यह कहकर उसने कुछ मायाकरके अपनेहाथहिलादिया कि एक बिजली प्रकटहुई और वह चमककर महाशंखकेऊपर गिरी और उसकोभस्मकरकेपृथ्वी में समागई विचित्रमायाबोली कि आपने अपने सेवकोंकाही बधकिया महेन्द्र बोला कि बिना बधकिये इसपरसे मायाका वेष्टन दूरहोना संभवनथा और यह सहस्रोंको बधकरडालता यह कहकर उसने बैठे २ एक माया-

कृत अस्त्रका प्रयोगकिया वह अस्त्र आकर उस स्थानपर पड़ा जहां आनन्दा ने बसंतऋतु उत्पन्नकी थी और उससे अग्नि प्रकटहोकर सब वृक्ष और फूलों में लगगई क्षणमात्रमें कुछ का कुछ होगया अर्थात् वह फुलवाड़ी तत्काल अग्निवाड़ीहोगई ॥

दो० । फूल फूलप्रति पर्ण प्रति कढ़ति अग्निकी ज्वाल ।
द्विमुख चतुर्मुख पंचमुख दीपनिकी जनु माल ॥
झरत अग्नि द्रुम पर्णसों कढ़ति ज्वाल मधि तासु ।
छूटत बहुत अनार जनु अनिल फुहारन आसु ॥

अंतमें जब सब बाग भस्महोगया तब आनन्दा अचेतहो-गई और महेन्द्रने पुकारकर कहा कि हे दूषण अब इसकोपकड़ ले यह सुनतेही उसने जालमारा और वहभी उसमेंटँगगई यह देखकर रक्तकेशी और केसरी दोनों विलापकरनेलगीं और रानी केसरी मायाकृत अस्त्रलेकर दूपणकी ओरचली उसने अपने सेनापति क्षुद्रकर्ण से कहा कि इसकोरोको उसने दौड़कर त्रिशूल मारा केसरी ने उसको मायानिर्मित चर्मपर रोककर नारिकेल अस्त्र का प्रयोगकिया उससे महाअग्नि प्रकटहुई और उस अग्निने क्षुद्रकर्ण को घेरलिया तब उसने मायाकरके नदी प्रकट की और उससे वह अग्निशांतहोगई उससमय महेन्द्रने पुकार कर कहा कि हे दूषण इसको पकड़ उसने दौड़कर जाल मारा कि रानी केसरी भी उसमें लटकगई यहदेखकर रानी निशाकरी क्रोधकरके अपने विमानपरसे कूदी और क्षुद्रकर्ण के शरीर से लिपटगई उसने बड़ी बड़ी मायाकी और अनेकमायाके अस्त्रों का प्रयोगकिया परंतु रानीनिशाकरीने उसकीमायाको व्यर्थकर के अपनास्वरूप सिंहकासाबनालिया और क्षुद्रकर्णको चीड़फा-ड़कर फेंकदिया उसकेमरनेसे कोलाहलप्रकटहुआ कि क्षुद्रकर्ण मारागया और दूषण मायाकृत जाललेकर दौड़ा परंतु रानी निशाकरी मायाबलसे पृथ्वीमें समागई और फिर अकस्मात्

दूषणके पीठकीओर प्रकटहोकर चाहा कि उसेभी चीरफाड़कर फेंकदूं परंतु उसकासेनापति विकर्णनामीम्लेच्छ बीचमेंआगया उससमय रानीरक्तकेशीने रानीनिशाकरीको एकाकी युद्धकरते हुए देखकर अपने मयूरकोबढ़ाया और रणभूमिमें आकर कुछ मायाकरके चन्द्रबिन्दु आकाशकीओर फेंकदिये वे बिन्दु कराल बाण होकर आकाशसेगिरे और विकर्णके शरीरको काटतेहुए पारनिकलगये और वहमरगया और कोलाहलहुआ कि विकर्णमारागया यह देखकर दूषण जाललेकर दौड़ा परंतु वहभी मायाबलसे पृथ्वीमें समागई इस अवसरमें रानीनिशाकरी रणभूमिसे अलगजा खड़ीहुईथी और आतापीनाम सेनापतिने दूषणसे कहा कि आपभी हटजाइये मैं इन शत्रुओंकोपकड़े लेताहूँ यह सुनकर दूषण अलगजाखड़ाहुआ और आतापी मायाकृत अस्त्रलेकर आगेबढ़ा इस अवसरमें रानीरक्तकेशीभी पृथ्वीसे निकली और आतापीने उसपर नारिकेल मायाअस्त्रका प्रयोगकिया रक्तकेशीने अपने अस्त्रसे उसकेअस्त्रको फेरदिया आतापीने बड़ी कठिनतासे अपने फिरेहुए मायाअस्त्रको ग्रहण किया यह देखकर दूषण जाललेकर दौड़ा परन्तु वह आने न पायाथा कि रानीनिशाकरीने दौड़कर मायाकृत असिसे आतापी का शिर काटडाला और रक्तकेशी और रानीनिशाकरी दोनोंपृथ्वीमें समागईं उस म्लेच्छके मरनेसे बड़ा कोलाहल प्रकटहुआ उससमय वातापीने आकर दूषणसेकहा कि आपहटजाइये मैं इनदोनोंको पकड़ेदेताहूँ इस अवसरमें रक्तकेशी पृथ्वीसेप्रकट हुई उसे देखकर वातापीने मायाकृत पाशफेंकी वह उसको माया बलसेतोड़कर निकलीहीथी कि दूषणनेदौड़कर जालमारा कि वह भी उसमें फँसगई और और सबकी भांति वहभी लटकगई उस समय रानीनिशाकरी प्रकटहुई और वातापीतो जालदेखरहाथा इसने बढ़कर उसपर मायाकृत खड्गका प्रहारकिया कि उसके

दोखण्डहोगये और कोलाहलहुआ कि बातापीमारागया और रानीनिशाकरी खड्ग लियेहुए दूषणकेऊपर आकरगिरी यह देखकर दूषणका सेनापति उग्रमुखनामी दौड़ा रानीनिशाकरीने उसपर ऐसाखड्गका प्रहारकिया कि उसकेभी दोखण्डहोगये यह देखकर दूषणजाललेकर दौड़ा परन्तु रानीनिशाकरी पृथ्वी में प्रवेशकरगई उससमय एक अपूर्व चरित्र रणभूमिमेंथा म्ले-च्छोंकेमारेजानेसे महाकोलाहल मचाहुआथा अन्धड़चलताथा अग्निकीज्वाला प्रकटहोतीथी चारोंओर आगसी लगीहुई दृष्टि पड़तीथी और रानीनिशाकरी पृथ्वीसे बारंबार निकलकर और शत्रुओंको खड्गसे मारकर बारंबार पृथ्वीमें प्रवेश करजातीथी महेन्द्रभी उसकेसाहसको देख देखकर चकितहोताथा अन्तको उसने आज्ञादी कि सबम्लेच्छोंकीसेना निशाकरीको घेरकर ग्र-हणकरले यह आज्ञापाकर दण्डधर म्लेच्छ कुछ सेनालेकरबढ़ा और दूषणजाल लियेहुए अवसरदेखतारहा यह देखकर काल-खञ्ज और उसकी स्त्रीचान्द्रीमाया दोनों दौड़े चान्द्रीने अपने गलेसे चक्रनिकाला और मायाकरके जो फेंका तो दण्डधरके शरीरमें वह सर्पहोकर लिपटगया परन्तु दण्डधरने दण्डमारा तो वह सर्पभस्महोगया और उसकी गर्जनाकेशब्दसे कालखंज और चान्द्रीदोनों अचेतहोगये उससमय दूषणने जालमारकर उनकोभी जालमेंलटकालिया इसअवसरमें रानीनिशाकरीपृथ्वी से निकली और उसेदेखकर म्लेच्छोंकी फौज लीजियो लीजियो करतीहुई दौड़ी उसने बड़ीशीघ्रतासे एकखड्ग ऐसा दण्डधरके मारा कि उसकाभी शिरकटकर अलगजापड़ा और उसके मरने से कोलाहल प्रकटहुआ उससमय दूषणने दौड़कर जालमारा परंतु रानीनिशाकरी अग्निशिखारूपहोकर जालसे निकलगई और दूषणके एकतलवारमारी वहभी मायाबलसे उड़गया और म्लेच्छोंने मायाकृतअस्त्र रानी निशाकरीपर छोड़ना आरंभकिये

उससमय रानीनिशाकरी अग्निरूपहोकर शत्रुसेनाको तृणवत् जलानेलगी सबसेनामें त्राहि त्राहि पड़गई उसी अवसरमें रानी निशाकरीकी सेनाभी आपड़ी और बड़ा तुमुल युद्धमचगया और रानीनिशाकरीने ऐसा युद्धकिया कि ॥

जय०छंद। करगहिमायाकृत तरवारि। शत्रुनिबधति विदारि विदारि ॥
करपग काटि करत दुइखंड। शीशबिदारि बधति भटचंड ॥
विनभुज कीन्हें बहुतकवीर। कीन्हें विनपग बहु रणधीर ॥
केतिक द्विधाकिये असिवाहि। सक्योनकोऊतिनिकोत्राहि ॥
इविधि करत विक्रमरण सत्र। रुंडमुंड पाटी महि तत्र ॥

दोनों सेना आपसमें युद्धकररहीथीं और बहुरूपियेसब जाकर पहाड़ोंमें छिपगयेथे उससमय ऐसाअपूर्व युद्धहुआ कि उसको देखकर देवताभी विस्मितहोगये दोनों सेनाओंके योद्धामाया वलसे कभी अग्निबरसातेथे कभीजलकी नदीप्रकटकरतेथेकभी अंधकार करदेतेथे और सिंह और व्याघ्र और सर्प और पक्षी आदिके नानारूप धारणकरकरके आपसमें लडतेथे और गर्जगर्जकर प्रलयकालकासा स्वरूप दिखातेथे ॥

जय०छंद। सिंहरूप धरि कोऊ धाइ। गहिके शत्रुहि लेत चबाइ ॥
कोऊ नागरूपधरि ऊटि। व्यथित करत प्रतियोधहिजूटि ॥
कोऊ मल्ल युद्ध विस्तारि। बधत शत्रुको महिपै डारि ॥
अस्त्र अनेक वाहि बहुवीर। मारत शत्रुन गहि उर धीर ॥
कोऊ भागि कहत मोहिंत्राहि। धाइगहतपटकतकोउताहि ॥
भयो इविधिको संगर तत्र। पृथकपृथक कहिजात नमत्र ॥

ऐसाप्रबल युद्धदेखकर महेन्द्र अपने स्थानपर से उठा और बोला कि अरेदुष्टो ठहरो और यहकहकर उसनेऐसीकुछ मायाकी कि रानीनिशाकरीके सेनाकेयोद्धा पृथ्वीमें कमरतक प्रवेशकरने लगे तबतो सबसेनामें भगदड़ पड़गई परन्तुरानी निशाकरीने रणभूमिसे मुखनमोड़ा किन्तुमरना अंगीकार किया और उसने मायाबलसे एकनदी प्रकटकी कि वह तरङ्गों सहित बहनेलगी

और आप उसमें मछलीरूपसे मुखबायेहुए महेन्द्रकीओर चली उससमय महेन्द्रने मायाकर्त्ताकी उच्छिष्टनदीमें फेंकी रानी निशाकरीको उसेखोतहीबना और खातेही जालमें फँसगई महेन्द्र ने उसे खींचकर दूषणकीओर देखा उसनेबढ़कर जालमारा कि वहभी उसमायाकृत जालमें फँसकर लटकगई और उसकास्वरूपज्योंकात्यों होगया और महेन्द्रने मायाबलसे उसमायाकृत नदीका संहारकिया उसके पकडेजानेसे जोरही सहीसेनाथी वह भी भागी और महेन्द्रने अडीन और निडीन आदि चपलाओं को आज्ञादी कि तुम शत्रुसेनाका पीछाकरो और उसपर गिर गिरके नाशकरदो यहआज्ञापाकरवे बिजलियां कड़ककड़ककर गिरने और वैष्णवी सेनाकावधकरनेलगीं उससमयमारीचबची हुई सेनाकोलेकर भागा और बिजलियां उसकेशिरपर चमकतीहुईचलीं डेरेतम्बू और सबअसबाबसबने छोड़दिया औरजिस को जिधर भागतेबना वहउधरही भागगया पृथ्वीकेगर्त औरपर्वतोंकी गुफा आदिस्थानोंमें जोजिसकेमिलावहीं छिपरहा उसस मयमहेन्द्रने खड़ेखडे सबडेरे तम्बू लुटवालिये और सभाकेडेरे में आग लगवादी उससमय वैष्णवी सेनाके बहुरूपिये पर्वतोंमें छिपेहुये अपनी सेनाकीयह दुर्दशा देखदेखकर रोतेथे औरनाना प्रकारके उपाय बिचारतेथे परन्तुकोई बन न पड़ताथा॥

दो०। हाय हाय अरुहाय कहि करत विलाप महान॥
काहूको वश चलत नहिं थकेसकल बलवान १
छलीवीर छलसों भरे छलमय बहुत उपाय॥
करत कल्पनाथकिगये चलत न कछु व्यवसाय २

बहुरूपिनीभी लूटपर गिरीहुईथीं जोपदार्थ चाहतीथीं अपनीअपनी झोलियोमें डालती जातीथीं यही दिनभर रहा और जिससमय सूर्यने अपने तेजरूपी जालकी रश्मिरूपी डोरियों को खींचलिया और उसको निशाके अंधकारने घेरलिया॥

दो०। होत अस्त दिननाथके निशिआई बिकराल।
कारी कारी भयकरी बिरही जनकर काल॥

उससमय महेन्द्रने आज्ञादी कि मायाकृत जालका एकसि-रनिष्प्रभभवन और दूसरा हमारी सभाके कलशमें बांध दो और जो शत्रु पृथ्वीमें आधे आधे धड़सेगड़ेहुएहैं उनकोभी इसी जालमें लटकादो यह सुनकर दूषणने सबको पृथ्वीसे निकाल कर जालमें लटकादिया और उसके दोनोंसिरे उक्तआज्ञानुसार बांधदिये वहजाल एक अलग नीकीभांति सबदेशमें तनाहुआ था और उसमें सहस्रों मायावी म्लेच्छ लटकेहुएथे बहुतसेतो उसमें मरगयेथे और बहुतसे टँगेहुए सिसकरहेथे निदान महेन्द्र रणभूमिसे लौटकर अपनी सभामें आया और पूछनेलगा कि शत्रुसेनामेंसे कौनकौन विनापकड़ाहुआ रहगयाहैम्लेच्छोंने वि-नयकी कि चार बहुरूपिये और मारीच नहीं पकड़ेगयेहैं यहसुन कर महेन्द्रने विचित्रमायासे कहा कि तुमतो घबरातीथीं अब देखो कि क्षणमात्रमें सबपकड़ लियेगये अब बहुरूपियोंकोभी कल पकड़ूंगा देखो शूली देनेवालेजायँनहीं मैं सबको शूलीदूंगा इससेहे दूषण तुमसामनेके पहाड़पर अपना डेरा खड़ा कराके जालकी रक्षाकरो आजरातको बहुरूपिये तुमसे छल करनेको अवश्य आवेंगे उनसे चौकस रहना और जिसको पकडना जा-लमें लटकादेना यह आज्ञापाकर दूषणने अपनाडेरा पर्वतपर खड़ाकराया और अपने बचेहुए सेनापतियों सहित वहांजाकर उसडेरेमें निवासकिया और मद्यपान करनेलगा उससमय उस के सामने नाचहोनेलगा और इधर महेन्द्रनेभी आनन्दमनाया सभाकेद्वार सब खुलवादिये वस्त्रभांति भांति के दूरतक डसवा दिये सहस्रोंमणि और रत्नोंके पात्रोंकेकमल प्रज्वलित करादिये मायाकृत वाद्यालयमें उत्सवीवाद्य बजनेलगे और विचित्रमाया शिरसे पैरतक रत्नजटित आभूषण और उत्तम २ वस्त्रधारणकरके

महेन्द्रके वामाङ्गमें आकर बैठगई उससमय सब सभासद और सेवकोंको पारितोषिकद्रव्य और वस्त्रादिकपदार्थ बँटनेलगे और मद्यपान करानेवाले सेवक कञ्चनमयी वस्त्रोंको धारणकिये हाथों में रत्नजटित मद्यपात्र और पानपात्रलियेहुए वहांआकरआज्ञाभिलाषी खड़ेहो गये और आज्ञापाकर सबको मद्यपान कराने लगे और जो जो मान्यम्लेच्छथे वे शत्रुओंकी अजयका हाल सुनकर भेटें लेलेकर महेन्द्रकेपासआये और परमसुन्दरी स्त्रियां आकर नृत्यकरनेलगीं और बड़ेमनोहर स्वरसे गानेलगीं निदान यहतो यहांउक्तप्रकारसे आनन्द मनानेलगा और उधर दूषणभी अपने आनन्दमें मग्नथा परन्तु उधर बैष्णवीसेनाके बहुरूपिये महान् क्लेशमेंथे अंतमें चपलाने उपहाससे कहा कि मैंतो जाकर कुछछलकरताहूं यातो इस दूषणका बधही करताहूं नहींतो अपने प्राणही देताहूं उपहासबोला कि अच्छा तुमसब अपना अपना उद्योगकरो मैंभी इसी चिन्तामें जाताहूं यहकह कर चारोंबहुरूपिये चारों ओरको चलदिये और उपदेशीने एक स्थानपर ठहरकर अपनास्वरूप एक नटकासा बनाया लँगोट बांधलिया भुजाओंपर रजचढ़ाली कानोंमें कुण्डल पहिरे बांस कन्धेपर रक्खा और खम्भ ठोकता हुआ और कलाखाताहुआ बड़ेबड़े खेल पुकारताहुआ चलदिया और एकओरसे चपला चलताहुआ वहां पहुँचा जहांदूषण टिकाहुआथा और वहांउस ने देखा कि म्लेच्छोंका बड़ा जमघटाहै यहदेखकर उसनेएकांतमें बैठकर अपना स्वरूप कलवारिनकासा बनाया बड़ी बड़ी आंखें कमानसी भौं चन्द्रमाकासा मुख नाकमेंनथ उसमें लटकन झूमताहुआ लाल चूनरओढ़े हाथों में मद्यके पात्रलिये मनोहर स्वरूप बनाकर वहांसेचला उससमय उसका स्वरूप बड़ा शोभायमान दीखताथा॥

क०। अलक अमोल अलबेलीकी अनोखी आंखि अतिअलसात और

अजब अमेजेमें । मन्दमुसक्यान मांगमोती मोहनीकेनीके मोदमदमाती मनमदन मजेजेमें ॥ योवन जलूस ज्योति जोवके नरायनजू सकल शृं-गार नख शिखते सहेजेमें । चन्द्रमुखी चञ्चल चलांक चंचलासी चारु चसक लगायगई कसक करेजेमें ॥

निदान उक्तप्रकारसे अपना शृङ्गार करके वह एकस्थानपर आई और उत्तम मद्यकेपात्र ऊंचेपर स्थापितकरके दुकान ल-गाकर बैठगई जो कोई उधरआया कलवारिनके स्वरूपको देख कर आसक्त होगया और कुछदेकर बैठगया और बोला कि अच्छीसी मद्यदेना घड़ीभरमें मद्यपीनेवालों के ठटकेठट लग गये और कलवारिन मुसकुरा मुसकुराकर सबके चित्तोंकोलुभा-नेलगी उससमय हरएक म्लेच्छ प्रमत्तहोकर झूमताथा और यह कहताथा ॥

बरवा । हेकलवारिनकृपया ममदिशिजोहि । हेमृगनैनविरमधुमददैमोहि॥ सुन्दरिहमको निजअनुचरसमजानि । हियसनमतीविसारेहुहेसुखखानि ॥

यहजमघटाजो हुआ और मद्यपीनेवालों के शब्द प्रकटहुये उनको सुनकर दूषणकेसेवक खबरलेनेकेलिये पहाड़से उतरकर नीचेआये और उसकलवारिनके सुन्दर स्वरूपपर मोहितहो-कर सबने दोदो एकएकपात्र मद्यकेपिये और लौटकर दूषणसे जाकर उसकी प्रशंसा करनेलगे उसको सुनकर वहभी उस के दर्शनोंका लालसीहुआ और एक सेवकको आज्ञादी कि कल-वारिनको जाकर बुलाला उसने जाकर कलवारिनसे कहा कि हमारे स्वामी आपको बुलातेहैं उत्तम मद्यलेकर वहां चलिये और अपनेमनमाने मनोरथकोपाकर सिद्धकार्य्य हूजिये यहसुन कर पहिलेतो कलवारिनने कुछचलनेमें निषेधसाकिया उपरान्त कहा कि चलो देशके स्वामीकी आज्ञा अवश्य माननीयहै यह कहकर उसने दुकान बढ़ादी और उत्तम मद्यकेपात्र लेकरउस सेवकके साथसाथ पहाड़परआई जबदूषणके सामनेगई उसने

मद्यकेपात्र उसके सन्मुख रखदिये और घूंघटको खोलकरअप-
ना सुन्दर स्वरूप उसे दिखलाकर नेत्रों के कटाक्षरूपी बाणोंसे
उसे घायल करदिया दूषणने हाथपकड़कर उसको बैठालिया
और सेवकोंसेआज्ञाकी कि सबहटजाओ वह सब एकएककरके
डेरेके बाहर चलेआये और वे दोनों अकेलेरहगये तबतो कल-
वारिनभी मानकरनेलगी और अकेला देखकर उठखड़ीहुई कि
मैंभी जाती हूं तबदूषण उठकर उससे लपटगया और अनेक
प्रकारकी आधीनताईकी बातेंकरके उसको मनानेलगा इतनेमें
खम्भ ठोकनेका शब्दहुआ और यहबाणी सुनाईपड़ी कि परमे-
श्वर सदाजयकरें बड़ेबड़े खेलहैं उसको सुनकर कलवारिन ने
कहा कि इसको बुलाइयेमें तमाशा कराऊंगी यहसुनकर उसने
नटको इस प्रयोजनसे बुलवाया कि किसी प्रकारसे कलवारिन
प्रसन्नहोवे निदान सेवक जाकर नटको पहाड़केऊपरबुलालाये
और तमाशा होनेलगा परन्तु महेंद्र ने बहुरूपियों के भय से
मायाकृत पक्षी बैठादिये थे कि जब कोई नवीनबार्ता हो मुझको
उसकी खबर पहुंचजाय निदान उन पक्षियों ने जाकर सब वृ-
त्तांतकहा और उसकोसुनकर महेंद्र विचित्रमायासे बोला कि
बहुरूपियेभी बड़ेकठिनहैं देखो कलवारिन और नटबनेहुये दू-
षणकेपासगयेहैं चलो मैं तुमको तमाशादिखाऊँ और यहकहकर
वह विचित्रमायाका हाथपकड़कर चलदिया यहां कलवारिन ने
तमाशादेखते २ मूर्च्छाकर चूर्णमिलीहुई मद्यदूषणके सेवकोंको
पिलाई थी और उसकोभी पानपात्रभरकर दियाथा परंतु जैसे-
ही वह उस पात्रको पीयाचाहताथा तैसेही महेंद्र आकर पहुँच
गया और बोला कि अरे दुष्टो में आपहुँचाहूँ अब कहां बचकर
जाओगे यह सुनतेही कलवारिन और नट छलांगमारकर भागे
उससमय महेंद्रने दूषणसेकहा कि इनको पकड़ उसने तुरंतकुछ
मायाकी कि पृथ्वीसे दोगणप्रकटहुये और उन दोनोंको पकड़

लाये दूषणने उनकोभी उसीमायाजालमें लटकादिया इसकेपीछे महेंद्रने दूषणके कानमेंकुछकहा उसने सबकोहटाकर एक म्लेच्छ को बुलाया और कहा कि महाराजकी यह आज्ञा है कि तुम मेरा स्वरूप मायाबलसे धारणकरके यहांबैठो और जो कोईतुमसेपूछे उससे यहीकहना कि दूषण मैंहीहूँ यह सुनकर वह बोला कि ऐसाही होगा और अपनास्वरूप उसकासा मायाबलसे बना करवहां बैठगया और दूषण वहांसे उसस्थानपर चलागयाजहां जानेको उससेमहेंद्रने कानमेंकहाथा और महेंद्र विचित्रमाया सहित बदरीउद्यानमें चलाआया कि अब रात्रिको विश्रामकरके प्रातःकाल आकर सबकावधकरूंगा और दूषणके गुप्तस्थानमें वासकरने का हाल उसकेसेवकोंतकको विदित न हुआ और वे सब उस दूषणरूपधारी म्लेच्छकी सेवा अपनास्वामी जानकर यथावत्करतेरहे महेंद्रके चलेजानेके पीछे प्रचंड और उपहास बहुरूपियेभी वहां आकर पहुँचे और उन्होंने देखा कि दोम्लेच्छ किसी कार्यको करके नीचेसे पहाड़के ऊपरकोजाते हैं उपहासने उन्हें पुकारकर कहा कि भाइयो एकबात सुनतेजाना वह दोनों ठहरगये और इन्होंने समीपजाकर मूर्च्छांड उनके मुखपर मारे कि वे मूर्च्छितहोगये तब उनदोनों ने अपने स्वरूप उनदोनोंम्ले-च्छोंकेसे बनाये और उनके वस्त्रको उतारकर पहिरलिया और पहाड़के ऊपर चढ़गये और देखा कि एक ओरको मद्यके पात्र मद्यसे भरेहुये रक्खे हैं जब ये दोनों वहांगये एक म्लेच्छबोला कि तुमकहां गयेथे महाराज बहुत देरसे मद्य मांगरहेहैं उपहास ने कहा कि उन्हींके कामकोगयेथे और समझे कि जिनको हमने मूर्च्छित किया है वे दोनों मद्य पिलानेवाले सेवक हैं यह कहकर वे दोनों मद्यके पात्र लेकर दूषण रूपधारी म्लेच्छ के डेरे में गये उपहास तो उसकी बगल में खड़ाहोगया और प्रचण्ड मद्य लियेहुए सामने खड़ारहा थोड़ी देरमें दूषण ने मद्य मांगी प्र-

चंडने पानपात्र मद्यसे भरकरदिया वह पीयाही चाहताथा कि एकओरसे बाणीहुई कि देखियो इसमद्यको मतपीजियो और फिर पृथ्वीमें से एकगण उत्पन्नहोकर प्रचंडसे लपटगया और उसेउड़ाकर लेगया और मायाजालमें लटकादिया वहांसे फिर फेरें वह आने न पायाथा कि उपहासने जो बगलमें खड़ाथा एकभुजाली ऐसी मारी कि उस दूषणरूपधारी म्लेच्छका शिर कटकर दूरजापड़ा और महाकोलाहल प्रकटहोकर अग्निकी वर्षाहुई और बाणीहुई कि प्रपंची मारागया उसहुल्लडमें उपहास छलांग मारताहुआ भागगया और समझा कि यहम्लेच्छ दूषण न था क्यों कि सब कैदीजालमें जैसेकेतैसे लटकेहुएहें जो दूषणहोता तो उसकी मायानष्टहोजाती और सबकैदी छूटजाते निदान उपहास तो भागगया और वह माया निर्मितगण जिस को महेन्द्र रक्षाकेलिये गुप्तवास करागया था प्रचंडको जालमें लटकाकर महेन्द्रके पासगया और प्रपंची म्लेच्छ के मारेजाने का वृत्तांत कहसुनाया विचित्रमाया बोली कि उपहासबड़ाभारी छलीहै उसका पकड़ाजाना बहुत कठिनहै महेन्द्रबोला कि दूषण ऐसे स्थानमें जाकर रहाहै कि वहां कोई उसका पतानहींपासकताहै और मायाकृत जालको कोई तोड़नहींसकता है इससे अब विशेषरक्षाकरनेकी कुछआवश्यकता नहींहै जोम्लेच्छवहांमौजूदहें वहीबहुत हें और विचित्रमायाकी सेनाभी समीपमें है और अबरात्रिभी थोड़ीरहगई है में दिननिकलतेही चलूंगा और सब का बधकरूंगा हां इससमय में उपहासको पकड़नाचाहिये यह कहकर उसने पांचोंबहुरूपनियों को बुलाकरकहा कि तुमपांच हो और वहअकेलाहै इससे तुमअबजाकर उसकोघेरकर पकड़लाओ और उसमायारूपी गणसेकहा कि तुम इनबहुरूपनियों के साथ साथ गुप्तरूपसेरहो और जहांकहीं ये उसबहुरूपियेसे लड़नेलगें तुममायाबल से उसे पकड़लेना यहआज्ञापाकर वह

मायारूपगिण और पांचोंबहुरूपनियां वहांसेचलदीं उधरउप-
हास चारोंओर फिर फिर कर दूषणका खोज लगाता रहा कि
मिलजाय तो उसका बधकरूं परंतु उसको उसका कहींपता न
मिला और इधरबहुरूपनी उपहासको ढूंढ़तीरहीं परंतु कुछपता
उनको भी उसका न चला अंतको वहसमयआया कि काल-
चक्रने भी वैष्णवी सेनाके पकड़ेजाने के हर्षमें रात्रिरूपी कृष्ण-
वस्त्रोंको उतारकर दिनरूपी सुनहले अंबर धारणकिये ॥

सो० । होतप्रातको काल उठेसकल जन जगतके ।
रंक और नरपाल लागेनिजनिजकाज सब ॥

प्रातःकालहोतेही महेन्द्रबड़ीप्रसन्नतापूर्वकउठा और स्नान
करके परम उत्तमवस्त्र धारणकिये सभासद भी सबआगये और
वह सबको साथलेकर बड़ी धूमधामसे विचित्र मायाकी सभामें
आया और देखा कि सबकैदी जालमें ज्योंके त्यों टँगेहुए हैं यह
देखकर प्रसन्नहुआ और बड़े आनन्दसेबोला कि शीघ्र मैदानमें
शूलियां गड़वाईजावें और शूलीदेनेवाले चांडाल बुलायेजावें
यह आज्ञापाकर सबसेवक मैदानमें शूलियांखड़ी करानेलगेसब
सेना अस्त्रलेकर शूलियोंको घेरकर जाखड़ी हुई और चांडाल
शूलीदेनेवाले हाथोंमेंखड्गलियेहुए चारों ओर कोफिरनेलगे और
लोगबाग तमाशा देखनेवाले इकट्ठे होनेलगे निदान यह तो
इसउद्योगमें लगाहुआथा परंतु अब उस सत्यरक्षक परमेश्वर
की मायाकोदेखिये जैसा कि कहाहै ॥ चौ० ॥ हुइहै वह जो राम
रचिराखा। कोकरितर्कबढ़ावहिशाखा ॥ जिस मायाकृत देशाधिप
का ऊपरवृत्तांत वर्णनहो चुकाहै अर्थात् कालेन्द्र जबप्रातःकाल
होनेपर अपनीसभामें आकर सिंहासनपर विराजमानहुआ तब
मुक्ताधर और खेचर और कंचनी माया और सुकुमारी माया
और पुष्परागधर और वैडूर्यधरऔर मुक्ताधिराजआदिअनेकमा-
न्यम्लेच्छ और सेनापति सभामेंआये और सबअपने २ योग्य

स्थानोंपर विराजमानहोगये और कालेन्द्रकी पुत्री असिचंचला नामीभी वहां आकरसिंहासनके समीप एकउत्तम आसनपर आकर बैठगई और मंत्री उस राजाके अपने अपने स्थानोंपर बैठेहुएथे चमरहोरहा था और छत्रलगाहुआथा सब सभासद रक्तवर्णके वस्त्र धारण कियेहुएथे उससमय उससभाकी ऐसी शोभाथी मानोंचन्द्रमा सोलहोंकलासे उदयहोकर आकाशरूपी सभामें तारागणरूपी सभासदों सहित प्रकाशकररहाहै अथवा सत्यलोकमें सूर्यसिंहासनपर विराजमानहै और सहस्रों रश्मि रूपी सभासद उसके चारोंओर आसीन हैं ॥

दो० । लसततहांसो नृपतिवर तेजजासु असमान ।
शक्रसभामें जिमिलसत देवनसहमघवान ॥

उस राजाका तेज और प्रताप और ऐश्वर्य असदृशी था और यशउसके विक्रमका सूर्यकी समानभासितथा सहस्रोंल-क्षोंकी सेना उसकी आज्ञामें थी और बहुतसे अनेक २ देशके राजा उसकी आज्ञाके अभिलाषी होकर वहां स्थितथे और सेवकोंकी समान उसकी आज्ञाका पालन करतेथे ॥

दो० । मायाकोविद तेजधर बीर प्रचंड महान ।
असनृपसोभूपति किये वशमें वणिकसमान ॥

और उसके सन्मुख उर्वशीको लज्जित करनेवालीं परम सुंदरी स्त्रियां आकर नाचकरनेलगीं और उत्तम मद्यका पान होनेलगा निदान इसप्रकारके आनन्द होनेपर महाराज काले-न्द्रने अकस्मात् कहा कि इससमय मेरीइच्छा बनविहार करने की है और सिंहासनसे उठकर बनकी ओर चलदिया उसके साथ साथ सबअन्य म्लेच्छ होलिये उससमय वह परम सुं-दरी शोभायमान जिसके मुखारविन्दकी शोभाको देखकर च-न्द्रमाकोडाह और सूर्यको लज्जाहातीथी अर्थात् असिचंचला जिसके मनोहर स्वरूपको असदृशीकहना योग्यथा और जिस के नखशिखकी शोभा नीचे लिखीजातीहै ॥

केश-क०। नीलमणीनकेसूत किधौं किधौंपन्नगपूतलसे छबिवारहैं।
रेशमश्यामसमूह किधौंकिधौंकामवटैके वरोहअपारहैं॥
राजिवनयन सुनैरघुराज किधौंरसराजनदीकेसिवारहैं।
कैसटकारे महाछविवारेप्रकाश पसारे सुकारे येवारहैं॥
वेणी-क०। कैधौंसुधारसचाखिवेको लपिटींलरितीनभुजंगिनिकारी।
कैधौंप्रभाकर भीतशशीनिशिको छरिकें निकटे निजधारी॥
कामकसा किधौं राजतिहैं कलकीधौं शृंगारकीबेलिसुधारी।
श्रेणीसहीसुखमाकी सजी किधौं तेरीयहवेनीवनीहैसुखारी॥
मांग-क०।नीलके शैलपैराजिरही किधौं गंगकी धारहैशम्भुकी ढारी।
सोहातिहैकिधौंश्यामनिशामधिस्वातिकीपन्थमहाछविवारी॥
कामके काननपंथ किधौं तनुरावरे चन्दन रेख निहारी।
फूलीतमालपैमल्लिकाकी लतिकाकिधौंसुंदरमांग सुधारी॥

ललाटटीकासहित	दो०। नीको लसत ललाटपर टीको जटित जराय। छबिहि बढावत रविमनो शशिमंडलमें आय॥

भृकुटी-स०। खेलहिंखेलशशीमें किधौं अतिचंचलशावकद्वैअहिकेरे।
कीधौंलसें युगपांतिमलिन्दकीद्वै अरविन्दनके अतिनेरे॥
भावै मुनीरघुराजद्वै रेखवचायदिया किधौंमारिचितेरे।
काम कृशानके काम कमानकै सुंदरिभौंह परे दृगहेरे॥
श्रवण-दो०। नहिंदीरघ नहिंलघु कछू सुंदर अति द्युतिमान।
भूषणयुत सोहत परम मृदुल मनोहर कान॥
नेत्र-दो०। रस शृंगार मंजन किये कंजन भंजन दैन।
अञ्जन रंजनहू विना खंजन गंजन नैन॥
चितवन-दो०। वारौं बलि तो दृगनपै अली खंज मृगमीन।
आधीदीठि चितैय जो करत जगत आधीन॥
अंजन-दो०। नैननि अंजन आंजिके चितवत जेहि इकवार।
ताके उर लागत कठिन अतितीक्षण तरवार॥
कपोल-दो०। मृदुअरुणारे कंज सम मंजुल गोरे गोल।
इन्दु प्रभा सम द्युति भरे सुंदर परम कपोल॥
नासिका-दो०। कीरनासिका अतिसुघर रची मंजु करतार।
जनुयुग अम्बुज मधिलसत चम्पकली सुकुमार॥
अधर-दो०। अरुण वरण कोमल सुखद परम छबीले होंट।

निरखतही शोभाललन घालत हियमें चोट॥

दशन-दो०। कुन्दकली से शुभ्रअति हीरनि से द्युतिवन्त।
मुक्ताअवली सम लसत परममनोहर दन्त॥

मुसक्यान-दो०।प्रीतिउपावन मनहरण शुचिमुसिक्यान विभात।
नखत ज्योति दामिनिछटा दोऊ देखि लजात॥

बाणी-दो०। कोकिलपिकतें मधुरअति सुधासदृश प्रियबैन।
श्रवण परत अतिचावसों उपजावत हियचैन॥

चिबुक-दो०। चिबुक मनोहर अतिललन उपजावत हियचाव।
मनहुं मैनके बागकी द्युतियुत कली गुलाव॥

मुखमंडल-क०। कैधौं अरविन्द प्रात वापी में प्रकाशभयो कैधौं सोन जूहीपै गुलाव फूल फूलोहैं। भनत दिवाकर न ताव महताव आब देखत शिताव आफताब ओप भूलोहै॥ सारीसेत घूंघटतें सुखमा दिखात कैसे मानो जल जाह्नवी में कंज फूल फूलो है। शरद नक्षत्रपति ताराके समूह साथ तापै तेरे मुखके न ओट समतूलोहै॥

ग्रीवा--दो०। त्रिवलीयुत सुंदर परम ग्रीवा कम्बु अनूप।
लखिकपोत निन्दाकरत निजग्रीवाकोरूप॥

भुजा--स०। कैधौंसुधाकेसरोवरके ढिग सोहैं मृणालउभयअतिभाये।
कैधौं मयंक पियूषके पानको पन्नगपीत है ऊरध धाये॥
भापै मुनीरघुराज किधौं युग हेमके दंड अखंड सुहाये।
कैधौंलसै सुखमाकी लता किधौंसुंदरिकेभुजहै छविछाये॥

हाथ-दो०। कंजसदृश कोमल परम मंजु मनोहरहाथ।
जिनहाथनकी निरखिछवि मननरहतजनहाथ॥

करांगुलि और नख दो०।गोरी अंगुरी अरुणनख छला श्याम छविदेय।
लहतिमुकति रति पलकुयह नैन त्रिवेनी सेय॥

कुच-स०। कोउकहै कुच कंचनकुम्भ सुधारस से भरराखे हैं सोऊ।
श्रीफल शम्भु सुमेरु समान मनोजके गेंदकहैं कवि कोऊ॥
मोमनमें उपमा असआवति भापतहों पुनि होउ न होऊ।
जीति सबै जग औंधधरेहैं मनोज महीपके दुन्दुभि दोऊ॥

उररोमावली सहित दो०।उरअति सुभगअनूपमृदु कुचविचरोमपुनीत।
मनहुं मेरुते भानुजा निकसत होत प्रतीत॥

उदर } दो०। उदर मनोहर त्रिवलियुत तामें नाभि गँभीर।
नाभि } जाकी शोभा देखिके धरत न जनमन धीर॥
पीठ-दो०। मृगनैनी की पीठपर बेनी लसै सजोय।
कंचन कदली पर्णपर जनु सांपिनिरहि सोय॥
कटि-दो०। छीनछवीली छोटकटि छाजत छविसों नित्त।
छलछाई गति छलतिहै क्षितिपालनकोचित्त॥
जंघा-दो०। पीन सचिक्कन अति मृदुल कंचनसम कमनीय।
लाजत कदलीछवि निरखि जंघयुगल अमनीय॥
चरण-दो०। पगपगमगअगमन परम चरणअरुणद्युतिऊल।
ठौर ठौर लखियत उठे दुपहरिया से फूल॥
चरणांगुली-दो०। अरुणवरण तरुणी चरणअँगुरी अतिसुकुमार।
चुवत सुरँग रँगसी मनो छविविछियनके भार॥
एँड़ी-दो०। कोहरसी एँड़ीनकी लाली देखि सुभाय।
पायँ महावर दैनको आपभई वे पाय॥
सुकुमारता-दो०। भूषणभार सँभारि है क्योंयहतन सुकुमार।
सूधे पायँन परत धर शोभाही के भार॥

वह सुन्दरीभी पिताकेसाथ होली और बोली कि मायाकर्त्ता की समाधि के मठके सामने जो बन परमोत्तम है वहसब मायाकृत स्थानोंसे ऊंचाहै वहां चलकर आप बनविहार कीजिये और वहांसे सबम्लेच्छ अपने२ मायाबलके अनुसार आकाश में उड़उड़कर ऊंचेजायँ इस उत्सवके देखने से आपकाचित्त स्वस्थहोजायगा कालेन्द्र यहसुनकर बोला कि बेटी अभीतक तेरी शिशुता नहींगई वहीबात तुझको यादहै जो खेलकूदकी है अच्छाचलो आज हमभी उड़ेंगे और सुना है कि रानी मुक्ताधरी बहुत ऊंचेतक उड़कर चलीजाती हैं सो आज उनका उड़नाभी देखेंगे यहबातें करतेहुए सबकेसब उसीओरकोचले जहांकापता उस परमसुन्दरी असि चंचला ने दियाथा और कुछकालमें वहांजापहुंचे वहबन बड़ारमणीक और शोभाधाम था नानाप्रकारके वृक्ष और लताओं से हराभराथा और जल

धाराओं से बड़ामनोहर मालूमहोताथा फूल भांति भांति के फूलरहेथे और उनको स्पर्शकरतीहुई सुगन्धितवायु वहरहीथी उसरमणीक वनमें एकबाग कईकोसलम्बा और चौड़ा महाराज कालेन्द्र के विहारकरनेको बनाहुआथा उसके समीप मायाकर्त्ताकी समाधि की नकल पूजनकेलिये बनीहुईथी निदान कालेन्द्र उस बागके भीतरआया और उसमेंजो द्वादश द्वाररत्न जटित बनीहुईथी उसकेएक उत्तम स्थानमें सिंहासन बिछवाकर कालेन्द्रने विश्रामकिया और उसबैकुण्ठके तुल्य शोभायमान बागकी शोभा देखनेलगा आहा धन्यहै क्याशोभाहै प्रातःकाल कासमय शीतल सुगन्धित वायुका चलना तड़ागोंमें कमलोंका खिलना बाग में कलियों का छिटकना पक्षियों का चहचहाकर बोलना उस बागमें बसन्त ऋतुका वासकरना सूचित करते थे क्याउसकी शोभा वरणन कीजाय॥

स०। फूलिरहीं तरुवेलिलता अलि गुंजतभौंरत तानकहैं।
अतिगन्धभरी रुजहानिकरी शुचि शीतलमन्द समीरवहैं॥
खग कोकिलआदिक बोलिरहे मधुरी मधुरीध्वनि तानलहैं।
कुंजलाल जो आनँदछायरह्यो कहिजातनसो अवजोइकहैं॥

उस समय सब सुन्दरी स्त्रियां अपनी अपनी गातियां बांध बांधकर आकाशमें उड़ीं उधरतो सूर्य उदय होकर आकाशमें चढ़ाथा इधर ये सब सूर्यमुखी सुवर्ण लिप्तवस्त्रोंको धारण किये हुयेजो आकाशमें उड़ींतोयह जानपड़ताथा कि आज सहस्रों सूर्यउदय हुयेहैं कोई पांचकोसऊंची उड़ीहुई चलीगईं कोईउस सेभी अधिकगईं और कोई कोई तीनकोस परही जाकर ठहरगईं उससमय उनकीशोभा ऐसीदीखतीथी मानोंआकाशमें रत्नजटित पात्रलटकेहुयेहैं अथवा स्वर्गसे अप्सरा उतरउतरकर आकाश मेंवायु बिहारकर रहीहैं जब सबउड़कर आकाशमें चलीगईंतब रानी मुक्ताधरी मायाबलसे उड़ी और सन्नाटा बांधकर सबसे

ऊँची निकलगई म्लेच्छ उसको मायायंत्र द्वारा देखतेथे परन्तु
वह दृष्टि नहींआतीथी उसकी प्रशंसा सबके मुखसे निकलती
थी और सब उसकेमायाबलकी सराहना करतेथे उससमयका-
लेन्द्रने अपनी पुत्रीसे कहा कि बेटीअब तुमभी अपनीनभचारी
गतिको दिखाओ और आज इतनी ऊंची उड़कर जाओ कि
विस्मयीमाया रचित देशको देखकर वहांसे कोई चिह्न लेकर
आओ यहसुनकर उसकोमलाङ्गीनेभी अपनीगाती बांधीऔर
अपने जूड़ेको खोलकर एकमोती निकालकर हाथपररक्खा यह
मोती मायाकर्त्ताकी समाधिकाथा इसमुक्तासे अनेकमाया चरित्र
प्रकट होतेथे और जिसकेपास वह मोतीहोताथा वह संसारके
मायावियोंको जयकरनेकी सामर्थ्य रखताथा उसकी प्रभासूर्यके
समानथी निदान उस सुन्दरीने उसमोतीको हाथपररखकर कुछ
मायाकी कि उससे उसमोतीकी प्रभाके दोखण्डहोगये औरदोनों
से प्रभा निकल निकलकर पृथ्वीपर पड़नेलगी अपूर्व चमत्कार
उससमयथा यह जानपड़ताथा कि सितारे टूटकरगिररहेहैं और
गिरतेगिरते इतनी प्रभागिरी कि उस प्रभाकीएकलड़ी मुक्तारूपी
आकाशतक बढ़तीहुई चलीगई और वह मनोहरी उसलड़ीको
थामकर आकाशमार्गी हुई उससमय उसमुक्तासे प्रभानिकल
निकलकर गिरती जातीथी और पृथ्वीपर आतेआते उसप्रभा
के मुक्ताबनजातेथे आहाक्याचमत्कारथा कि आकाशमें सहस्रों
अग्निशिखा दीप्त दिखाई देतीथीं मानोंआकाशमें दीपदानहुआ
है और पृथ्वीपर मोतीबरसतेथे और पृथ्वीसे आकाशतकमोति-
योंकीलड़ियां ग रतीहुई चलीजातीथीं मानोंजगकर्त्ताने आकाश
के शिरपर मो स पर ंका सहरा बांधाहै और वहसुंदरी उन्हीं मो-
तियोंकीलड़ोंमें जापहु ोलेहुए ऊंचीउड़तीहुई चलीजातीथी और
अपने दीप्तकपोल गुश्च प्रभासे प्रकाशमान सूर्यको लज्जितकरती
जातीथी चारोंओर म्लेच्छ आहा और धन्य धन्यका शब्द

वोलतेथे और ऊपरको शिरउठाकर टकटकी लगायेहुए उसको देखते थे ॥

चौ०। सो सुंदरी परम छवि छाई। जाकी शोभा वरणि न जाई ॥
मायावलसों उड़ी अकाशा। विद्युछटासम करत प्रकाशा ॥
दृष्टिगत जिमि छिनमेंजाई। तिमि नभमें पहुंची सो आई ॥
अति ऊंचीसो परत न चीन्हीं। मायावल गति पूरण कीन्हीं ॥
तहां सो चहुंदिश देखनलागी। हिय प्रसन्न आनंद सों पागी ॥

जब इतनी ऊंचीउड़कर पहुँची कि वहांसे वहदेश एक अन्न के दानेकीसमान दीखनेलगा तब वह सूर्यके समान स्थिर हुई और वहांसे दृष्टिकरके चारोंओरको देखनेलगी मायादर्पणदेश और विस्मयी मायारचितदेश आदि सबदेश उसके सामनेथे निदान सब देशोंकोदेखते २ विस्मयी माया रचितदेश में उसने एक अपूर्वही चमत्कारदेखा कि एक सुनहला जाल आकाश में टंगाहुआहै एकसिरा उसका निष्प्रभभवन में बंधाहै और दूसरा रक्तवाहिनीनदीकेतटपर एकसभाके कलशमें अटकाहुआहै और उस में सहस्रों म्लेच्छ लटकेहुएहैं बहुतसे उनमें से सिसकरहेहैं बहुतसे श्वासरुकनेके कारणसे तडपते हैं और बहुतसे मरगये हैं और मैदानमें सेनाटिकीहुई है चारोंओर म्लेच्छ खड़ेहुए चौकसी कररहे हैं शूलियांखड़ीहोरही हैं चांडालशूलीदेनेवाले हाथ में खड्गलियेहुए खड़े हैं एक कोलाहल मचाहुआहै यह देखकर वह चकितहुई कि यह क्याबात है और आगे जो बढ़ी तो उस की दृष्टि प्रहासपर पड़ी और देखाकि एक अपूर्वस्वरूपका मनुष्य जालमें लटकाहुआ है उसको देखकर वह समझी कि यह कोई मायाकृत पक्षी जालमें फंसगयाहै तबतो इसका ऐसास्वरूपहै कि तोमड़ी सा शिरहै जीरेसी आंखेंहैं कलछुलीसे गालहैं मोती से दांतहैं मुख जो उसका ग्रीवाके फंसजाने से खुलगया है तो ग्रीवा उसकी सूत्रके समानहोगई है हाथ पैर रस्सीके समानहैं नीचेका

धड़ छै गज लम्बाहै और ऊपरका शरीर तीनगजकाहै यहदेख
कर वह सोची कि इस बिचारेको आपत्ति से छुटानाचाहिये और
इस देशका यहीचिह्न अपनेबापके पास लेचलना चाहिये यहवि-
चारकर उसने उसमुक्ताकी प्रभाको काटना आरंभकिया और वह
प्रभा कट कटकर इकट्ठीहोनेलगी और फिर सूर्यरूपीहोगई वह
सुंदरी उस प्रभानिर्मित सूर्यमें गुप्तहोकरचली उससमय जो लोग
जालमें फंसेथे वे सब ईश्वरसे प्रार्थनाकररहेथे कि हे विश्वनाथ
हे विश्वंभर हमको इस महाआपत्तिसे मुक्तकर॥

छप्पै। जयति जयति जयतटापटल पाटित घन मण्डल।
जयति जयति जय भक्तिवश्यचतुर गज आखण्डल॥
जयति जयति जय विकट भृकुटि दंष्ट्राकराल मुख।
जयति जयतिजय निपटदलतनिज शरणागतदुख॥
जयजयतिकुटिलतरकोटिखरनखरविदतजबरउरदरण।
जय जय कृपाल वपुधरण मम इच्छा पूरण करण॥

इसदशा में सबके प्राण कण्ठागतहोरहे थे कि इतने में वह
सुन्दरी सूर्य्यरूप बनीहुई उस जालकेऊपर आकर धराई और
मायाकृत सूर्यका तेज जो बढ़ा तो उससे उस मायाकृत जालकी
कड़ियांपिघलने लगीं वह मायाकृत सूर्य अकस्मात् फटा और
उसमेंसे वह सुन्दरी प्रकटहोकर उसजालपर गिरी उससमय प्र-
हास जालसे छूटकर पृथ्वीपर गिरना चाहताथा कि उसने उसे
हाथमें लेलिया औ सँभलकर जानाचाहतीथी कि कड़ीकेटूटने
से सबकैदी झुककर एकओरको चले परन्तु ग्रीवा सबकी फँसी
रहीं क्योंकि और सबकड़ियां तो उसकी ठौरथीं और दुष्ट
जिसकी मायासे यह जाल निर्मित था वह अभीजीताथा इससे
सब कैदियोंका छुटना कठिनथा और उसको लेजाना केवल
प्रहासहीकोथा इससे उसने सबजालको टुकड़े२ नहींकिया नि-
दान वह जालजैसेही गिरनेलगा म्लेच्छों ने कोलाहलकिया

महेन्द्र उसको सुनकर दौड़ा और जितना वहजाल टूटगयाथा उसको छोड़कर और जो दोएक कैदी टूटेहुयेस्थानसे गिरनेलगे थे उनको माया निर्मित पुतलोंसे रुकवाकर उसनेजालका दू-सरासिरा थामलिया और पुकारकरकहा कि दूषण शीघ्रआओ वह दौड़ाहुआआया और महेन्द्र उसको जाल थमाकर आप उस मायाकृत सूर्यकीओर दौड़ा असिचञ्चला थोड़ीही दूरगई थी कि उसने झपटकर उसे घेरलिया उसके जानेसे बहुतसे और म्लेच्छभी दौड़पड़े थे असिचञ्चला ने उसमुक्ताकी प्रभा को काटकर जो फेंका वह प्रचण्डअग्नि होकर उन म्लेच्छोंपर गिरी और उनको भस्मकरनेलगी महा कोलाहल उनके मरनेसे प्रकट हुआ और आग और पत्थर बरसनेलगे उससमय महे-न्द्रने महोरगकारूप धारणकरके मायाबलसे अपने मुखसेप्रचण्ड अग्निकी ज्वाला छोड़ना आरम्भकिया वह सुकुमारी इस दुष्ट की उस मायाकृत अग्निसे महादुखी होगई सब शरीरपर उस के छालेपड़गये परन्तु उसने अपनेचित्तको दृढ़करके प्रहासको न छोड़ा और वहमुक्ता खींचकर महेन्द्रकेमारा वहउसकोआते हुए देखकर हटगया और उसके प्रहारको बचागया कदाचित् वह उसपर पड़जाता तो उसके हृदयको तोड़कर पारहोजातातो भीउसकी प्रभाकेपड़नेसे महेन्द्रका वहमायाकृतरूप नष्टहोगया असि चञ्चलाने उड़कर फिर उसमुक्ताको हाथमें लेलिया और महेन्द्र मायाकृत पाश लेकर उसकेपीछे दौड़ा तब उसने कुछ मायाकी कि उससे दोपुतली दौड़करआईं और महेन्द्रकेहाथोंमें लिपटगईं तबमहेन्द्रने कुछपढ़कर उँगली जो उठाई कईचपला चमककर गिरीं और उन्होंने उन पुतलियोंको भस्म करदिया और शब्दहुआ कि हम कालेन्द्रकी सेवासे उऋणहुईं और महेन्द्र फिर मायाकृत पाशलेकरदौड़ा यहतो मायाकृत देश का राजाथा वह सुन्दरी इसकी सराबरी क्योंकर कर सकतीथी

इससे अबकी बार जोमहेन्द्रने पाशफेंकी तो उसको यह रोक न सकी किंतु उसमें फँसगई परन्तु ऐसी मायाविनी थी कि तब भी मायाबलसे उसने पाशके कई कुण्डलतोड़डाले परंतु वहपाश उसके शरीर में ऐसी कसगई थी कि उसके शरीरके मांस में बैठगई और उससे उसके शरीर से रुधिर निकलनेलगा और शरीर बिदीर्णसा होगया उससमय महेन्द्रने उसकोपाश में बँधाहुआ जानकर अपनी ओरको खींचा उधर उसनेभी बल किया परंतु वह एक सुकुमारस्त्री और यह हृष्टपुष्ट मनुष्य क्योंकर रुकसक्तीथी महेन्द्रकेखींचनेसे खिंचीहुई चली परंतु अबआगे कावृत्तांतसुनो कि जब कालेन्द्रनेदेखा कि मेरीबेटीको उड़ेहुएबहुतविलम्बहुई है और अभीतक उतरकर नहींआई तबउसनेअनुमानकिया किया तो बहुत ऊँचाउड़नेसे श्रमितहोकर गिरपड़ी है अथवा कोई और आपत्ति आकर उसपरपड़ीहै जो किसीको भेजूं तो इतनाऊंचाकोई उड़ न सकेगा इससे उचितहै कि मैंहीं आकाशमें उड़करदेखूं कि क्याबातहै यह बिचारकर वहसिंहासन परसेउठा और आकाशमार्गीहुआ जब बहुत ऊँचा पहुंचा तब चारोंओरको उसने दृष्टिकी और देखा कि बिस्मयीमाया रचित देशमें उसकीपुत्रीको म्लेच्छ घेरेहुएहैं और वहपाशमें बंधीहुई है और महेन्द्र उसको खींचेलियेजाताहै यह देखतेही वह वहांसे झपटा और हरितवर्णकी चपलाबनकर महेन्द्रके शिरपर जाकर चमका उसकोदेखकर महेन्द्रघबराया और अपने स्वरूपका पुतला मायाबलसे निर्मितकरके वहांछोड़दिया और आपगुप्त होगया कालेन्द्र जो चपलाबनकर गिरा उसकेदोटुकड़ेकरडाले और उस मायाकृतपाशको जलाकर असि चञ्चलाको छुटाया और वह सँभलकर प्रहासको लियेहुए अपने घरकोचलीगई इस अवसर में महेन्द्र फिर प्रकटहुआ और रक्तवर्ण चपला बनकर कालेंद्रपरगिरा उसने अपनेस्वरूपका पुतला छोडदिया

और आपअदृष्टहोगया और वहचपलाजोगिरी उसपुतलेके दो टुकड़ेहोगये यह देखकर महेंद्रने अनुमानकिया कि मैंने कालेंद्र कोमारलिया परंतु थोड़ीदेरमें पीछेकीओरसे अकस्मात् शब्दहुआ कि कालेंद्रोहम् उसको सुनकरमहेंद्रने अपनीभुजापरसे माया कर्ताकी मणिखोली और उधरकालेंद्रनेभी कुछमायाकी कि एक मायाका पुतलामायाकर्ताका दर्पण लेआया इधरसे महेंद्रने कालेंद्रको वह मणिदिखाई और उधरसे कालेंद्रने वह दर्पण महेंद्र कोदिखाया दोनों एक दूसरेके मायातंत्रको देखकर अचेतहोगये और मूर्च्छितहोकर आकाशसे पृथ्वीकीओर चले उससमयकुछ पुतलियां प्रकटहुई उन्होंने महेंद्रको रोका और कईएक पुतली खेचर अश्वोंपर सवार कालेंद्रकेदेशकी ओरसे उड़तीहुई आई और उन्होंने कालेंद्रको सँभाला और वे पुतलियां दोनों महाराजाओंको चैतन्यकिया चाहतीथीं कि इतनेमेंपृथ्वीफटी और एक मछली जिसका वर्ण वैडूर्य मणिकासाथा प्रकटहुई यह महेंद्रकी नानीथी नाम उसका मत्स्यकलाथा कथा उसकी पहिले वर्णन होचुकीहै निदान वह मत्स्यरूपसे निकली और अपने मुखको फैलाकर महेंद्रको निगलगई इस अवसरमें वे खेचर अश्वपर सवार पुतलियां कालेंद्रको चैतन्यकरचुकीथीं कि उसने पुकार करकहा कि बेटाकालेंद्र यह लड़ाई और बखेड़ा कैसाहै कोईअपनेभाईसेलड़ताहै महेंद्रने बड़ाबुराकिया कि उसने तुम्हारीपुत्री परहाथउठाया वह जैसी तुम्हारी बेटीहै वैसीही उसकीहै अब मैं महेंद्रको लियेजातीहूं उसकोभी समझाऊंगी औरबेटातुमभीअवजाओ यह कहकर वह अंतर्द्धानहोगई और कालेंद्रभी अपने मायाकृतदेशकोचलाआया और थोड़ीदेरमें अपनीबागमें जापहुंचा जहांसे उड़ाथायहां सब सभासद् आकाशसे उतरकर उस की बाटदेखरहेथे सबने बड़े सत्कारसे उसकोलिया और वह सिंहासनपर जाकरविराजगया परंतु असिचञ्चलाने प्रहास

को लाकर पृथ्वीपर डालदियाथा और मायाकृत ओषधियों से उसको चैतन्यकरके उसकी ग्रीवामेंसे उसजालकी कड़ियां निकालीं और जो व्रणपड़गयेथे उनपर ओषधी लगाई निर्बलता के कारणसे प्रहासकी आंखें बन्दथीं उससमय उसको कुछ आराममिला और चित्तजो उसका स्वस्थहुआ तो बड़ीदेरतकआंखेंबन्दकियेहुये पड़ारहा कि इसीअवसरमें कालेन्द्रआकर सभा में विराजमानहुआ उससमय असिचंचलाने युद्धका वृत्तांतपूछा और फिर चित्तकी स्वस्थताको पूछकर बोली कि हे पिता मैं इस अपराधीको इसकारणसे लाईहूं कि इसकोदेखकर आपबताइये कि यह मनुष्यहै अथवा कोई दूसराजीवहै अथवा यह कोई यक्ष या राक्षस या भूतादिगणोंमें सेहै महेन्द्रने इसको क्यों कैदकिया था और फिर इसकेछुटनेमें क्यों क्रोधकरके इतनालड़ा यह सुनकर कालेन्द्रने प्रहासको अच्छीप्रकारसे देखा और सब सभासदोंसे कहा कि इसको देखकर पहिचानिये कि यह कौन है सब प्रहासकास्वरूप देखकर हँसनेलगे और अपनी बुद्धिके अनुसार किसीने कहा कि यह मायाकृतपक्षी है इससे कोई अपराधहुआ होगा इससे महेन्द्रने इसे कैदकिया था दूसराबोला कि यह दैवी खंडकी आपत्तिहै महेन्द्र इसको अपने वशमें कियाचाहताहोगा निदान सब इसी इसी प्रकारसे अपनी २ बुद्धि बलसे विचार २ करकहते थे कि कालेन्द्रने प्रज्ञार्क्षसेकहा कि तुमबड़ेभारी मायावीहो तुम विचारकर बताओ कि यह कौनहै यहसुनकर प्रज्ञार्क्ष बोला कि इस मायादेशको रचनेवाले प्राचीनजन इसदेशकी जन्मपत्री बनाकर रखगयेहैं यदि आपकी आज्ञाहो तो उसेलाऊं कुछआश्चर्य नहीं है कि इसकाहालभी उसमें लिखाहो कालेन्द्र बोला कि मुझको इसका वृत्तांत अच्छीप्रकारसे विदितहै इसी कारणसे मुझको लोगकालज्ञभी कहतेहैं सुनो यह मनुष्यप्रहास नामी बहुरूपिया है इसकी प्रशंसा श्री परमेश्वर मायाकर्त्ता ने

अपनी पुस्तकमें लिखी है जहांइसके चरणजायँगे वहांमायाकर्ता कापूजन बन्दहोजायगा असिचंचलाने बड़ाकठिनकर्म किया जो इसको यहांलेआई अच्छाअब जन्मपत्र इसदेशकालाओ देखूं इसमाया देशके रचनेवालोंने क्यालिखाहै प्रज्ञाक्षी जन्मपत्र ले आया और उसको जो देखातो उसमें लिखाथा कि मायाकर्ताके अमुकसंवत्सरमें श्रीमहाराज शत्रुंजयकादौहित्र आकर विस्मयी माया देशको विजयकरैगा और प्रभाकरी मायादेशकास्वामी प्रहासकोकैदसे छुटावैगा इससे उचितहै कि वहप्रहासकी सहायताकरै क्योंकि विस्मयी मायादेशका स्वामी माराजायगा और प्रभाकरीमायादेशके स्वामीकी बड़ीभारी प्रतिष्ठाबढ़ैगी और जो वह प्रहासकी सहायता न करैगा तो महेन्द्रकीभांति वहभीनीचा देखैगा और माराभीजायगा यहपढ़कर उसने वहजन्मपत्री तो प्रज्ञाक्षीको देदी और आप प्रहासकी ओर देखनेलगा उससमय तक प्रहासभी अच्छीप्रकारसे चैतन्यहोचुकाथा आंखेंखोलकर जो उसने देखा तो अपनेको राजसभामें पाया और परसोत्तम मन्दिर और सुन्दररमणीकवाग भी दृष्टिपड़ा देखतेहीवह आश्चर्ययुक्तहोगया क्योंकि ऐसा स्थानउसने अद्यापिकभीनदेखाथा ॥

छन्द। सोथल परम रमणीक मायाकृत मनोहर अतिबना। प्रासाद बहुउन्नत अनेकनसों सुशोभित अतिघना॥ शुचिभांति ताकी परमसुन्दर हेम ईंटनसों बनी। मणिरत्न निर्मितफूल वेलिनसों सदा शोभासनी॥ अतिचारु बाग अनूप दिवसम सकल शोभासों सन्यो। नाना सु तरुवर वेलिफल अरुफूल युत सुन्दर बन्यो॥ प्रतिवृक्ष सन्मुख रत्न निर्मितवृक्ष तादृश हेमने। जलधार बीचफुहार छूटत अमित संख्याको गने॥ तहँ बन्यो द्वादशद्वार युतहो भवन यक सुन्दरमहा। बहु रत्नभाजन शयनशय्या आदि जातनसब कहा॥

दो०। सिंहासन सुन्दर परम ता मधि बिछयो अनूप।
तापर सुख आसीन तहँ तेजवन्त यकभूप॥

चौ०। ताके चहुं दिशिहै आसीना। सकल सभासद परम प्रवीना॥

बीर शस्त्र धारी तहँवैठे। मूछनि ऐंठि ऐंठिसों ऐंठे ॥
चित्र विचित्र वर्ण तिन केरे। कहत बनत नहिंरूप घनेरे ॥
काहूको तनकांच समाना। कोऊ रजत देह धरमाना ॥
कोऊ कंचन बर्ण शरीरा। ताम्र वर्णहे बहुतक बीरा ॥
कोऊ नागवंग सम कायक। और सदृशहे बहु भट नायक ॥
यहलखिउठिप्रहास तेहि यामा। भूपहिंमहिपरि कीन्हप्रणामा॥
नम्रबिनययुत करिनिजबाणी। बोल्यो बचन जोरि युग पाणी ॥

सो०। हे नृपहेभटचंड हेभूपनिके मुकुट मणि।
रहै प्रताप अखण्ड सहित सकल ऐश्वर्यतव ॥

चौ०। बिपद ग्रसित मनमहा मलीना। हौं तव दासतोरआधीना ॥
आयोहौं अब शर्ण तिहारी। क्षमा करहु सवचूक हमारी ॥
हौंमैं खल खल सदृश स्वभावा। दयावन्त तुम दयानुभावा ॥
यद्यपि नख शिखलौं अपराधी। तदपि नाथ हौं तव आराधी ॥
आपनि कथा कहौं का नाथा। है वह दुःख शोककी गाथा ॥

दो०। अजय लहहिंहौं और सब हेजे जन मम साथ।
तवप्रसाद सों प्राणमम बचे सुनौ हे नाथ ॥

यह सुनकर कालेन्द्रनेआज्ञादी कि हमारे सिंहासनके समीप एक उत्तम रत्नजटित आसन बिछाया जावे और प्रहासउस आसनपर आसी न होय तबप्रहास उसआसनपर बैठगया और मायाकृत देशमें आनेका सब वृत्तान्त कहकर यहभी कहा कि मैं महादीन और दरिद्रीहूं महाराज शत्रुंजय मुझको बहुतकुछ दिया करतेथे अब प्रारब्ध मुझे यहांले आयाहै देखिये यहांक्या पाताहूं यह सुनकर कालेन्द्रने उसेबहुतसा धनदिया और कहा कि हे प्रहासजो मेरीबेटी तुमको न छुड़ालाती तो तुम मारेजाते तुम्हारे साथी इससमय तक कैदहैं महेन्द्रको उसकी नानी ले गईहै जबवह वहांसे आवैगा तब सबको यमलोकमें पहुंचावैगा कोई ऐसाहोता कि मायाकृत नदीके तटपर जाता वहां एक पहाड़पर एक स्थान बनाहुआहै सीढ़ियां उसकी सुवर्णकीहैं दूषण वहीं रहताहै वहांजाकर जो कोई उसका बधकरे तो माया-

कृतजाल टूटै और सब कैदीछूटैं प्रहास यह सुनकर चुपहोरहा और सोचा कि अबतेरे दिन अच्छे आयेहैं येसबभी मायावीहैं सो इनको अपनेसाथ मिलाना और न मिलान एकसा है इससे दूषणको मारकर सबको छुटाइये अब विश्वासहै कि कुसमय निकलगया अबकोई कुछदुःख न पहुंचासकैगा परन्तु यहांसेजो चलियेतौ इनसबको लूटकर और यहांका सब सरंजाम लेकर चलियेयह सोचकर वहकुछ गुनगुनानेलगा कालेन्द्रको उसकी बाणी अच्छी मालूमपड़ी और असि चञ्चलातौ लोटपोटहोगई और सब म्लेच्छोंकीभी इच्छाहुई और सबने उससेगानेके लिये कहा प्रहास बोला कि मेरा चित्ततौ ठिकानेसेहैहीनहीं गाऊंक्या मैं दरिद्री दुखीआपद् ग्रसितहूं यहसुनकरसबने बहुतकुछ मँग कर उसकोदिया और कालेन्द्रनेभी उससे गानेको कहातबप्रहास ने बांसुरी निकाली और उससमय मायाकृत घटाओंकी बहार कोदेखकर सावन गानेलगा॥

सावन घन गरजैं घूमि घूमि। बरसत शीतल जल झूमि झूमि॥ टेक॥ कोयलकीर कोकिला बोलैं। हंसचकोर चहूंदिशिडोलैं॥ नाचत वन भाति करत किलोलैं मोरमोरनी चूमि चूमि॥ सावनघन० १॥ कंचन खंभहिं-डोला झलकैं चंदनपट्ट मढ़ मखमलके। चुनचुन बिछे बिछौना हलके लालकंज दल तूमि तूमि॥ सावनघन० ॥ डोलै त्रिविध पवन पुरवाई। सरयू निकट निपटछबि छाई॥ झूलैं जनकसुता रघुराई बहुबालझुलावैं झूमि झूमि॥ सावनघन० ३॥ गावैंराग रागिनी भामिनि दमकिरही मानो छबि दामिनि। झोंकादेतर पटगज गामिनि पायलबाजे छूमिछूमि॥ सावनघन०४॥ जयजयकरतसुमनसुरबरषत इन्द्र निशानबजावतहरषत॥ दास गणेश युगलछबि निरखत छायरह्योसुख रूमरूम॥ सावनघन० ५॥

प्रहासने इससावनको ऐसीमोहनी धुनिसे गाया कि सबकीहिलकी बँधगई उससमय प्रहासने अपनी गानबिद्याकी निपुणाता दिखानेको क्षणक्षण पीछे राग बदलना आरम्भ किया और ऐसाचमत्कारहुआ॥

सो० । गायो प्रथम मल्हार तासोंघन उमड़ेसघन ।
वर्षि वर्षि जलधार भग ग ग ग ग गर्जनलगे ॥
पुनि गायो हिंडोल तासों तत्क्षणही तहां ।
आपुहिआपु अडोल सकलहिंडोलाचलतभे ॥
तदुपर तहां प्रहास सिरी राग गावतभयो ।
होतहि तासु प्रकास सूखेद्रुम भेहरित सब ॥

निदान जब इसप्रकारसे अनेकरागोंको गाकर प्रहासनेसब रागोंका स्वरूपखड़ाकरदिया तब सबने उसकोलाखोंकी संख्या का धनदिया प्रहास एक पहरतक गातारहा और फिर चुपका होरहा परन्तु सबके चित्तमें तो गानसुननेकी लालसालगीहुई थी इससे सबने कहा कि और गाओ अभी और कुछहोने दो उसको सुनकर प्रहासने कहा कि मेराचित्त गानेको क्या चाहै न मद्यहै न कुछहै यहसुनतेही कालेन्द्रने मद्यपिलानेवाले सेव-कोंकीओरदेखा और उनमेंसे एकने पानपात्र भरकर प्रहासको लाकरदिया प्रहास बोला कि इतनी मद्यमें मेरा क्या भलाहोगा आजतो मद्यालयमेरे आधीनकरदीजिये और मेरेमद्यदान क-रानेके आनन्दको देखिये मैं वेष्णवीसेनाको मद्यपानकराताहूं वह आनन्द हरएकको मिलनादुर्लभहै परन्तु यहांभी आपदे-खेंगे कि क्यासे क्या होगया यहसुनकर कालेन्द्रने बहुतसे मद्य के पात्रभरेहुये मँगवाकर प्रहासको दिये तब उसने एकघटकी मद्य दूसरेमें और दूसरेकी तीसरेमें करना आरम्भकिया और उनघटोंको रक्त पीत वर्णानुसार चुनचुनकर रखने लगा इस लौट फेरमें उसने मद्यमें मूर्च्छाकरचूर्ण मिलादिया और फिरम-द्यकापात्र हाथमेंलेकर उसकी प्रशंसाकरताहुआ कालेन्द्रके स-न्मुखगया और मद्यसे पानपात्रभरकर निवेदनकिया उसनेवह पानपात्रलेलिया और उसको पानकरनाचाहा परन्तु वह तो मायाकृत देशाधिपथा और महेन्द्रकी बराबरकी प्रतिष्ठारखने

वालाथा जैसेहीउसने पानपात्रको मुखकेसन्मुखकिया तैसेहींवह मद्यअग्निशिखा बनकरउड़गई तबउसने उसपानपात्रको फेंक दिया और प्रहाससे कहा कि तू महादुष्टात्माहै सत्यहै जैसाकि कहाहै कि ॥ शठंप्रतिशठंकुर्यात् आदरंप्रतिसादरं ॥ भलाई का बदलायही है जो तैंनेकिया भला अच्छाहुआ जो मैं तेरासाथी न हुआ यह क्रोधयुक्त वचनसुनकर प्रहासबोला कि महाराज मैंने केवलपरीक्षा करनेकोमद्यमेंमूर्च्छाकर चूर्णमिलाया था कि देखूं आपको यह हाल विदितहोताहै अथवा नहीं यह कहकर वह हाथजोड़कर आगेबढ़ा और बड़ीनम्रता से बोला कि मेरा अपराधक्षमाकियाजाय कालेन्द्र बोला कि हेप्रहास तू महाछली है तेरीबातका विश्वासनहीं अब तू विस्मयीमायारचितदेशमेंजा तू इसी योग्यहै वहां जाकर महेन्द्रकी लातजूतीखा यह कहकर उसने छातीपरहाथ रखकर ऐसाढकेला कि प्रहासको यह जान पड़ा कि मैं पीछेकीओर कलाखाताहुआ चलाजाताहू उससमय भयके मारे उसकी आंखें बन्दहोगईं और थोड़ीदेर पीछे फिर जो आंखें खुलीं तो देखा कि न वहबाग है न वह राजमन्दिर है और उसनरेन्द्र और उसके सभासदभी नहीं हैं किंतु रक्तबाहिनी नदीकेतटपर एकपर्वतके समीपअपने को पायादेखतेही चकितहोगया कि हे परमेश्वर यह क्या चमत्कार है कहांप्रभाकरी मायादेश और कहां रक्तबाहिनी नदी में कहांथा और कहां आगयाधन्यहै हेपरमेश्वर कि तैंने एक एक मनुष्यको ऐसीसामर्थ्य भी दी है कि उसनेक्षणमात्रमें मुझकोकहां से कहां पहुंचादिया इस प्रकारसे बहुतदेरतक चकितरहा उपरांत समझा कि मेरा यहां आना और जाना केवलएकमायाकृत चरित्रथा यह सोच कर उसनेअपने चित्तको सावधानकिया और अपनेको उसीपर्वतके नीचे खड़ापायाजहां दूषणकारहना कालेन्द्रनेबताया था यह देखकर वहसमझा कि कालेन्द्रचित्तसे मेरासाथी है यहबात

जो उसनेकी सो केवलमेरी कुचालपर क्रोधकरके कियाहै परंतु इसमें भी उसने मेरा हितही किया क्योंकि जो मैं यहां शीघ्र न आता तो सबसेना मारीजाती उसकोमेरीसेनाके मनुष्योंको छुटानाचित्तसे स्वीकार था नहीं तो मैं वहीं बैठारहता और महेन्द्रअपनी नानीकेपाससे आकरसबका बधकरडालता जो वह मेराआदर सत्कार वहां करता उससे श्रेष्ठ तौ उसने यही किया कि मुझको यहां शीघ्रभिजवादिया निस्संदेह वह बड़ाश्रेष्ठपुरुष है यह सोच विचार करनेकेपीछे उसने अपना स्वरूप महेन्द्र कासा बनाया किरीट और कुण्डलधारणकिये मोतियोंकी माला गलेमें डारी और उत्तमवस्त्र धारणकरके पहाड़पर चढ़गया वहां जाकर उसने उसस्थानको बड़ारमणीकपाया नानाप्रकारके वृक्ष फूले फलेहुये लगेहुयेथे सुगन्धित वायु चलरहीथी और भांति भांतिके पक्षी मधुर मधुर ध्वनिसों गानकररहेथे और एक ओर नीचे जानेको सुवर्णकी सीढ़ियां बनीहुईथीं प्रहासने वहांखड़ाहो करपुकारा कि हेदूषण यहांआ उससेमायाकृतपुतलेनेजाकरकहा कि तुझको प्रहास बुलाताहै वह घबराकर बाहिरजो आयादेखा कि महेन्द्र खड़ाहै उससमय वह चकित हुआ कि जोमैं इसको पकड़लूँ और कहीं यह महाराज महेन्द्रहीहो तौ अपनेभी प्राण जायँ दूसरे असि चञ्चला प्रहासको अपने देशमेंलेगईहै वहयहां कहांहै क्या आजही गया और आजही चलाआया और जो असि चञ्चला जैसे मायाबलसे लेगई थी वैसेही पहुंचाभी गई हो तो इसकोमेरे रहनेकास्थान क्योंकर विदितहुआ इससेनिस्सन्देह इसमें कुछ न कुछबातहै यकायक इसपर हाथमत डालो पहले परीक्षा करलो यह शोचकर उसने महेन्द्ररूपी प्रहासको दण्डवत्की और समीपआकर प्रहासको मायादृष्टिसे देखनेलगा उससमय प्रहासने उसकी दृष्टिको पहिंचानकर कहाकि हे दूषण ऐसीही चौकसी रखनाउचितहै मुझकोभी मायाकी दृष्टिसे देख-

तेहो मैं इसकारणसे आयाहूं कि वह उत्पाती अर्थात् प्रहासछुट गयाहै तुमकोकोईपदार्थदेआऊंजिससे तुमसबकोदेखसको और तुमकोकोई न देखसके अच्छा अबजो तुमको प्रतीतनहींहोतीहै तो मैं जाताहूं लो यह सुगन्धित तैल अपने शरीरसे लगालेना इसकेलगानेसे सबकी दृष्टिसे छिपेरहोगे यहकहकर उसने मूर्च्छा करतेलकी एक कुप्पीनिकालकर उसकोदेदी और आप दो तीन पद्चलकर मरुतदत्त वस्त्र ओढ़कर अदृश्य होगया तब दूषण नेविचारकिया कि जो यहमहेन्द्र न होतातौ मेरी मायाकृत दृष्टि को कैसे जानजाता और फिर गुप्त कैसे होजाता बहुरूपियेका कामतौ यहहै कि पास बैठे और छलकरै निस्संदेह वह महा-राज महेन्द्रहीथे अबमैं उनसे किसीसमय अवसरपाकर अपना इससमयके निरादर करनेका अपराध क्षमाकरालूंगा यह सोच कर वह उस तैलको लेकरचला और प्रहासभी उसके साथ २ मरुतदत्तवस्त्र ओढ़ेहुए होलिया वह एक गृहके भीतर गया वहां एकशय्या बिछीथी आसन अनेक बिछेथे मद्यरक्खीथी और नानाप्रकारके खाद्यपेय पदार्थभी स्थापितथे प्रहास वहां एक किनारे ठहरारहा और दूषणने उस कुप्पीको खोलकर वह तैल पहिले अपने मुखपर मला और दर्पणलेकर देखने लगा कि देखूं मेराशिर अदृश्य होगयाहै अथवा नहीं परंतु उस तैल की गंधके ब्रह्मांडमें जातेही उसको छींकआई और वह अचेत होगया तब प्रहासने मरुतदत्त वस्त्र उतारडाला और खड्ग लेकर दूषणकी छातीपर जाचढ़ा और उसकेवक्षस्स्थलको फाड़ कर शिर काटडाला उसके मरने से महाकोलाहल प्रकटहुआ कि लीजियो मारियो जाने न पावे इसने बड़ा कठिनकर्म किया कि दूषणका वध करडाला उससमय प्रहासने उस स्थानको लूटकर अपना मार्गलिया और उधर वह मायाकृत जाल टूट गया प्रहास जब पहाड़के नीचे उतरकर आया उसने देखा

ज्वाला उठरही है और अग्निकी वर्षा होरही है और वह दौड़-
ता हुआ सेनाके पासगया यहां विचित्रमाया और २ म्लेच्छ
महेन्द्रके आनेकी वाट देख रहेथे कि अकस्मात् वह जालटूटा
और रानी निशाकरी और आनन्दा आदि सब छूटगईं उनमें
जोजो बड़े मायावीथे वे तो चैतन्यरहे और बाकीसब अचेतथे
और ढुलमुलातेहुए पृथ्वीकी ओर चले उससमय चैतन्य से-
नापतियोंने मायाकी कि उससे पुतले उत्पन्नहुए और उन्होंने
उन गिरनेवालोंको थाम थामकर पृथ्वीपर उतारा दोनों बहुरू-
पियाभी छुटगये और रानी निशाकरी ने कुछ मायाकी कि सब
चैतन्यहोगये उससमय बड़ा कोलाहल मचा विचित्रमायाडेरेसे
निकलकर दौड़ी और सबसेनापति आदिभी झपटे और देखा
कि मायाकाजाल टूटगयाहै और सब कैदी छुटगयेहैं यह देख
कर सबकेसब मायाकृत अस्त्र लेलेकर दौड़े कि सबको पकड़लें
उससमय रानीनिशाकरी और आनन्दा और मायावती आदि
को कैदहोनेके कारणसे बड़ा क्रोधथा और यद्यपि सब सेना
निर्बलथी परंतु सब अपने प्राणोंका छोह त्यागकरके दौड़े और
शत्रुओंसे युद्ध करनेलगे रानी आनन्दाने माया करके फूल जो
फेंके आकाशसे फूल वर्षनेलगे और शीतल वायु चलनेलगी
जिसने उन फूलोंको सूंघा वहीं विक्षिप्तहोकर विचित्रमाया की
सेनाको बध करनेलगा एकओरसे मायावतीने माया करके जो
मद्यको फेंका जिसपर उसकी बूंदपड़ी वहीं विक्षिप्त होगया और
रस सम्बन्धीपद पढ़पढ़कर अपना बध आप करनेलगा उधर
रानी निशाकरीने अग्निगोलक मायाकरकरके फेंके और रंति-
कालने गर्जना और संडीनचपलाने चमक चमककर गिरना
आरंभकिया इसप्रकारसे युद्धहोनेलगा परंतु विचित्रमाया ऐसी
भारी मायाविनीथी कि इन सबकी मायाको रोकतीथी और सब
पर प्रहारभी करतीथी कभी आग बरसातीथी कभी नदी प्रकट

करतीथी कभी अपनी सेनाको रोकतीथी और कभी प्रहारभी करतीथी क्षणमात्रमें सहस्रों म्लेच्छ मारेगये रक्तकी नदी बह निकली और अस्त्र शस्त्र आकाशमें चमकनेलगे॥

जय०छंद। उभयसेनकेवीरविशाल। प्रकटतमाया अग्निकराल॥
प्रकटतकोऊ घनअति घोर। फिरतधूम समते चहुंओर॥
गर्जतउग्र करत अतिशोर। सहसनचपलाचमकतिघोर॥
चमकिचमकिगिरिगिरिचहुंओर। भस्मकरतिशत्रुनिकोंफोर॥
निशाकरी मायाकरि तत्र। प्रकट कियो घनहोरणयत्र॥
घूमिघूमि सो गर्जिअपार। वर्षो वारि मूसला धार॥
तासों चपला गईं बिलाय। अरिकी माया गई नशाय॥
तब विचित्र माया बलवान। प्रकट कियो इकसर्पमहान॥
श्वासश्वासप्रति सोविकराल। छोड़तमहा अग्निकीज्वाल॥
ता ज्वालासों प्रकटति आग। तासों निकसत कारेनाग॥
छुभत डसत हेते अहिजाहि। मारत डंकरिजल समताहि॥
यहलखि मायावती रिसाइ। माया करत चली तहँधाइ॥
निजकरकी मुद्रिका उतारि। तेहिअहि सन्मुखदीनीडारि॥
तासोंसो अहिगयो नशाय। मरनलगे तबअरि समुदाय॥
यहलखि शत्रुक्रोधसों छाय। उड़िउड़ि नभमें पहुंचेजाय॥
थिरितहँ कीन्हों युद्ध महान। नभसों वर्षन लगे पषान॥
तिनसों निशाकरीकी सैन। व्यथितभईतजिहियकोचैन॥
तबयहि दलके कढ़ि कछुवीर। उड़िअकाशमें गये सधीर॥
परदलके योधनि सों जूटि। लागे करन युद्ध जय ऊटि॥
माया करिकरि अस्त्र प्रहार। माचो संगर तहां अपार॥
करभुज शीश आदि सब भङ्ग। गिरत धरणिपै ह्वइके भङ्ग॥
यहि विधिको संगर अतिघोर। दुइ मुहूर्तलों भयो अथोर॥
कुंजलाल तहँ वरणे बीर। कटे असंख्यन भट रणधीर॥

निदान इसीप्रकारका युद्ध सायंकाल तक होतारहा और जिससमय सूर्य्यरूपी कैदी रश्मिरूपी जालसे मुक्तहोकर पश्चिम दिशारूपी सभामें चलागया और चन्द्रमाने तारागणों सहित आकाशको सुशोभित किया॥

दो०। अथये रवि उडुगण सकल निकसन लगे अकाश।
विकसिइन्दु तेहिसमय तहँ कीन्होविमल प्रकाश॥

उससमय विचित्रमायाने समझा कि इससमय शत्रु कैद न होसकेंगे महेन्द्रके आनेपर कोई और उपाय कियाजायगा अब रात्रिको युद्धनिवृत्त होनाचाहिये यहविचारकरउसने युद्धनिवृत्ती के वाद्य वजवादिये और म्लान चित्तहोकर अपनीसभामें फिर कर चलीआई और उसकी सेनानेभी कमर खोली उधर रानी निशाकरी जोअपने वासस्थलपरपहुंची तो देखा कि सभाकेडेरे जलेपड़े हैं और हाटेंसब लुटगई हैं और सबवहांकेनिवासीभागगये हैं यहदेखकर रानी निशाकरीने उसीसमय सेवकोंकोउन नगरों में भेजाजोजयहोचुकेथे और जिनकेस्वामी सेनामेंमौजूद थे और नयेसिरेसेसबडेरे और तंबूआदि सकलपदार्थ मँगवाये सबने वहांकमरखोली और ढिंढोरापिटवाया कि जो भागगये हैं वह फिर आकरवसें तब ढिंढोरे के शब्दको सुनकर मारीच जो बचीबचाई सेनाको लेकर पर्वतों में जाछिपाथा सबकोबटोरकर बड़ीप्रसन्नतापूर्वक सेनामेंचलाआयारात्रिभरमें वहीसबसरंजाम फिर होगयारानी निशाकरी सभामें आकर बैठी और सबसभासद उसके चारोंओर अपने अपने स्थानोंपर विराजमानहुए वेश्याआकर नृत्य और गानकरनेलगीं मद्यपान प्रारंभहुआ बहुरूपिये भी सबआगये उपहास जो छलकरने के उद्योग में छिपाहुआफिरताथा सभामेंआया प्रहासभी सेनाके साथसाथ आयाथा वह सबसे मिला उससमय एक अपूर्वआनन्दथा एक दूसरे से मिलताथा और प्रसन्नहोताथा और रानी निशाकरीको भेंटें सब देतेथे और सबोंको पारितोषिकधन और वस्त्र बांटेजाते थे और परमसुंदरी स्त्रियां अप्सराओंको लज्जितकरतीहुई आनन्द उत्पन्न करनेवाले पदोंको गातीथीं॥

चौ०। सुंदर चतुर नारि अलवेलीं। नवगति नाचत तहां नवेलीं॥

घूंघटकाढ़ि भुजनि फैलाई। नाचि कोऊ मन लेत लुभाई॥
करधरि कोऊ कटि लचकावै। घूमि घूमि भ्रमि नाचदिखावै॥
बंकग्रीव हुइ करकटि करिकें। निरततठुमकि ठुमकिपगधरिकें॥
नैन सैन भृकुटि पग उरसों। नानाभाव बतावत करसों॥
मधुर मनोहर धुनिसों साजे। बाजत भांति भांतिके बाजे॥
इविधिनृत्य आनन्दको काला। लहि हर्षेसब बीरविशाला॥
तबते बाल मनोहर बैनी। रसपद गावनलगीं सुनैनी॥
तिनको मधुर गानसुनिबीरा। भूले सकल दुःख रणधीरा॥

दो०। तेहिछिन तत्र निशाकरी शुचि सेवकनि बुलाय।
कह्यो निछावरि करहुधन सब बीरनिढिगजाय॥

सो०। सुनि यह सुंदर बाच ते सबलाये रत्न बहु।
याचक किये अयाच दैदै तत्र असंख्यधन॥

निदान यहांतो यहउत्सव होरहाहै परंतु महेन्द्रको जो मत्स्य कला निगलगईथी उसने अपने घरपरजाकर उसेउगला और जब वह चैतन्यहुआ तब उसने अपनी नानीको दंडवत् की और कहा कि तुमतो मुझे यहां लेआईहो और वहां कालेन्द्र ने सब कैदियोंको छुटाकर मेरीसेनाको तितरबितर कियाहोगा यहसुनकर मत्स्यकला अप्रसन्नहुई और बोली कि अरेनिर्बुद्धी जिससमय असिचंचलाने आकर दूषणको छुटायाथा तू उसको आदरसहित बुलाता और लड़नेका कारणपूछता नकि एकाएक लड़नेलगा अपने भाईबान्धवोंसे लड़ना अच्छानहीं है अब तूजाकर कालेन्द्रको पत्रलिखकर लड़नेकाकारणपूछ और उस से सन्धिकरले नहींतो तेरेशत्रु बड़ेप्रबलहोजायंगे यह सुनकर महेन्द्रने उसरात्रिको वहीं विश्रामकिया और जब कि वहरात्रि व्यतीतहुई और सूर्यके निर्मलप्रकाशके निकलने से अंधकार दूरहुआ और नक्षत्र क्षीणहोगये॥

दो०। विकसत रवि उडुगण सकल भये क्षीण आकाश।
महि रजकण चमकन लगे रविको पाय प्रकाश॥

उससमय महेन्द्र सवारहोकर चलदिया जब विचित्रमाया की सेनामेंपहुंचा दूपणकेमरिजाने और कैदियोंके छुटनेका सब वृत्तांत सुनकर महामलीन मनहुआ और बड़ाक्रोधकरके चाहा कि अभीजाकर सबको पकडूं परंतु विचित्रमाया बोली कि मुझ को कालेन्द्र उनकासहायक जानपड़ताहै इससे आप न जाइये यह जो हुआहै सब कालेन्द्रकीही उपाधिका कारणहै आप उस को पत्र लिखिये यह सुनकर वह रुकगया और चाहा कि पत्र लिखूं कि इतनेमें वहां सैन्धूआया जो बहुतदिनोंसे आयाहुआ था और मायाकृत चित्र सबकेखींचरहाथा और अबकुछकाल से अदृश्यखण्डमें कुछ प्रयोग कररहाथा महेन्द्र आदि सब ने उसका बड़ा आदरकिया और सभामें लिवालेगये और उसके साथियोंको उतारा जब उसने कालेन्द्रके मिलजानेका सबवृत्तां-त सुना तब बोला कि मेरानाम भी अवश्य पत्रमेंलिखना और जो वह न मानेगा तो फिर मैं उसका चित्र भी खींचूंगा नि-दान यह मंत्र होहीरहाथा कि वहां समीररूपा आकर पहुंची उसको देखकर महेन्द्र महाक्रोधित हुआ और बोला कि क्यों री दुष्टा तू तो उपहासको पकड़ने गईथी सो खाली फिर आई वह बोली कि मैं उसको ढूंढ़ती फिरती थी कि अकस्मात् सब अपराधी जालसे छुटगये और महायुद्ध होनेलगा तब मैं ला-चार होगई परंतु अब जातीहूं और किसी बहुरूपिया अथवा किसी सेनापतिको पकड़कर लातीहूं यह कहकर वह बहुरूप-नियों सहित चलदीं और जब रानीनिशाकरीकी सेनाके निकट पहुँचीं सब पृथक् पृथक् होगईं और समीररूपा और प्राता दोनों सेवकोंका रूपधारण करके सभामें गईं और एक कोनेमें खड़ीहोकर कुछ छलकरनेकी चिंता करनेलगीं वहां प्रहास भी नित्यकर्म से निश्चिंत्यहोकर बैठाहुआ था और सब सभासद आआकर बैठतेजाते थे कि अकस्मात् प्रहासकीदृष्टि उनदोनों

सेवकोंपर पड़ी और देखा कि दोनों कुछ उठातेहैं कुछ बिछाते हैं परंतु चाल उनकी बहुरूपियोंकीसी है यह देखकर उसने अच्छी प्रकारसे उनको नीचे ऊपर से देखा और पहिंचाना कि दोनों बहुरूपनी हैं तबउसनेपुकारकर कहा कि देखोतुम उठाया धरी छोड़दो और जललेकर अमुकस्थानमें रक्खो मैं लघुशंका करूंगा यह सुनतेही दोनोंबहुरूपनी जानगईं कि हमको प्रहास ने पहिंचानलिया और दोनोंकी दोनों छलांग मारकर वहां से भागीं और सेनाके बाहर पहुँचीं प्रहास ने उनका पीछा किया और सेनासे निकलकर उनकेपास जापहुँचा तब वे दोनों जनी भुजाली निकाल निकालकर प्रहासपर दौड़ीं प्रहासने भी खड्ग निकाललिया और उनसे लडनेलगा उससमय समीररूप ने पाशफेंकी और प्राताने भुजाली का प्रहार किया प्रहासने मण्डल घूमकर उस प्रहार को व्यर्थ किया और पाशके कुंडलों को खड्ग से काटदिया उस समय चपला भी उधर आनिकला और गुरूजीको घिराहुआ देखकर खड्गलेकर आपड़ा और एकसे प्रहास और दूसरीसे चपला लड़नेलगा परंतु और बहुरूपनीजोपृथक् होगईथीं उनमेंसे तीव्रानेदूरसे इसलड़ाईको देखकर विचारकिया कि यही अवसरअच्छाहै तू चलकर रानी निशाकरीको पकड़ला यह विचारकर उसने तुरंत अपनास्वरूप प्रहासकासा बनाया और दौड़तीहुई सभामेंगई और रानीनिशाकरीसेबोली कि मुझे कुछ कहनाहै आप एकांतमें आइये रानीनिशाकरी प्रहासकी आज्ञाके विपरीत कभीनहीं करतीथी इससे तुरंत उठकरचलीआई उसने उसकाहाथपकड़लिया और बातें करतीहुई उसेसेनाकेकिनारे लिवालाई औरमूर्च्छाडमारकर उसे अचेतकरदिया और पृष्ठभारमें बांधकर लेचली और उसी ओरको आकर निकली जहां प्रहास और समीररूपा लड़रहे थे उनको देखकर उसने पुकारकर कहा कि हे समीररूपा तुम

क्यों लड़तीहो मैं निशाकरीको पकड़लाईहूँ यह सुनकर समीर-रूपा और प्राताभागीं और प्रहास और चपलाने उनका पीछा किया परंतु तीब्रादूरथी वहभी बड़ीतीब्रतासे चली और प्रहास और चपला जो लपककरचले तो समीररूपाने फिरकर रोका और जबतीब्राकुछदूर औरनिकलगई तबदोनोंबहुरूपनी फिर भागीं इसीप्रकारसे रुकती और भागतीहुई मायाकृत नदीकेत-टपरजापहुंचीं और पुकारीं कि हमको शीघ्रनदीके उसपारपहुँचा दो तब नदीकेरक्षक हस्तबनकर तीनोंको उठाकर नदीकेउसपार लेगये और प्रहास और चपला दोनों रोतेहुए फिरे उन बहुरूप-नियोंने रानी निशाकरीको बदरीउद्यानमें पहुँचादिया और एक म्लेच्छकोभेजा कि विचित्रमायाकी सेनामेंजाकर महाराज महेंद्र को इस वृत्तांतकी खबरकर आ वह म्लेच्छ वहां आया और नि-शाकरीके पकड़ेजानेके समाचार महेंद्रको सुनाये वह सुनतेही प्रसन्नहुआ और विचित्रमाया सहित सवारहोकर बदरीउद्यान में आया और रानीनिशाकरीको मायाकृत निगड़पहिराकर चै-तन्यकिया उसकी जो आंखें खुलीं तो अपनेको महेंद्रके सन्मुख खड़ाहुआ पाया और ग्रीवाको नीचेको झुकाकर चुपहोरही उस समय विचित्रमायाबोली कि क्योंरी दुर्भगा तू महाराजके सामने रानीबनकरबैठीहै देखतोअब तू किसदुर्दशासेमारीजातीहैवहबो-ली कि मेरा बचानेवाला परमेश्वरहै तब महेंद्रने आज्ञादी किबा-गके द्वारके बाहर शूली खड़ीकराईजावै और शूलीदेनेवाले चां-डाल बुलावाकर यहीं इसको शूलीदीजावै नदीकेपार इसको न लेजाओ यह सुनकर मायाकृत पक्षियोंने उड़कर शूलीदेनेवालों को आज्ञासुनाई और समस्त अदृश्यखण्डमें यह बातप्रकटकी कि जो कोई महाराजसे विमुखहोगा उसकी यहीदशाहोगी आज प्रहासकी सेनाकीनेता रानीनिशाकरी शूलीदीजायगी यह सुन कर म्लेच्छ वहां आनेलगे निदान यहांतो रानीनिशाकरीको शू-

लीदियेजानेका प्रबन्धहोरहाहै परंतु अबप्रहासकावृत्तांतसुनिये कि वह रक्तबाहिनीनदीसे लौटकर परममलीन मन और चिंता ग्रसित चारोंओर फिरनेलगा कि किसीप्रकार से नदीके पार जाऊं और रानीनिशाकरीको छुड़ाऊं चारोंओर बहुत फिरा परंतु कुछ बस उसका न चला तब वह निराशहोकर एक पर्वत पर चढ़गया और वहांएकाग्र चित्तकरके श्री विष्णुभगवान्‌की स्तुति करनेलगा ॥

चौ०। हे प्रभु हे जगदीश कृपाला। हे करुणानिधि दीनदयाला ॥
मोर प्रार्थना प्रभुसुनि लीजै। नदीपार मोकों कर दीजै ॥
तूसब जगको है करतारा। तोसम एक तुही संसारा ॥
महिमा तोर अनूप सुहाई। काहूपै जग कहीं न जाई ॥
परम गुह्य अरुपरम अपारा। नहिं कछु ताको पारावारा ॥
सुनी इतिक वेदनकी गाथा। छिनमें रचत कोटि जगनाथा ॥
गाढ़ पड़े भक्त न ढिग जाई। तत्क्षण तिनकी करत सहाई ॥
सो श्रुतिबचन आजु सतकीजै। पार उतारि पाहि मोहिंलीजै ॥

अपने भक्तकी उक्तप्रार्थनाको सुनकर श्री विष्णु भगवान्‌ने उसीसमय कृपाकी और उसका बेड़ापार किया अर्थात् अदृश्यखण्डमें एक हंसनामी म्लेच्छरहताथा और उसकी श्वसुराल नदीके इसपार प्रत्यक्षखण्डमेंथी उससमय उसकी स्त्री पिताके घरआईहुईथी और उसने अपने भाई श्येनम्लेच्छको उसके लेनेको भेजाथा वह अपने भाईकी श्वसुरारिमें एक दिन रहकर अपनी भावजको अपनी पीठपर बैठाकर श्येनरूपसे उड़ता हुआ चला और दैवयोगसे उससमय लघुशंका करनेके लिये उसी पर्वतपरउतरा जहां बैठाहुआ प्रहास परमेश्वरसे प्रार्थना कररहाथा उसने वहां अपनी भावजको उतारकर एकस्थानपर बैठादिया और आपदूरजाकर एककोनेमेंबैठकर लघुशंकाकरने लगा उससमय प्रार्थना करते २ जो प्रहासकी दृष्टिउस स्त्री

पर पड़ी देखा कि एक परमसुंदरी सुकुमारी बाला नानाप्रकारके आभूषण और बस्त्रोंसे अलंकृत खड़ीहुईहै उसके मुखारबिंदकी छबि चन्द्रमाको लज्जाकरनेवालीहै नेत्र मृगकेसे बड़े बड़े बाणरूपी कटाक्ष कररहेहैं और सर्बांगकी ऐसी मनोहर शोभाहै कि उसकी सुंदरताकी समता नहींहै॥

क०। केसरकी बेंदीलाल भौंह माधिराजतिहै सुरँगकपोल तिलसोहत अपारहै। पानभरे आनन कटाक्षदृग काननलों सोहैं कच श्याम मखतूलकेसेतारहै॥ बेसरकी महा छबि नेहउपजावन की बरनेसुकबि अंग अंग सुकुमारहै। रूप छबिमानभरी सोहै सो सुंदरनारि कुंजलाल कीन्हे आज सोरहूशृंगारहै॥

उसको देखतेही प्रहास चकित होगया कि यह अकस्मात् कौन यहां आगईहै परंतु उठकर वह उसके पासगया और बोला कि हे सुकुमारी कुछ मुझभक्त की ओर भी देखो उसकी बोली सुनकर वह फिरकर देखनेलगी कि यह कौन आया उससमय प्रहासने मूर्च्छाडमारकर उसको अचेतकरदिया और उसके बस्त्र और आभूषण उतारकर उसे अपनी थैलीमें डाललिया और तुरंत अपना स्वरूप उसकासा बनाकर और उसके बस्त्र और आभूषणोंको धारणकरके वहां बैठगया इस अवसरमें श्येन शौचहोकर आया और बोला कि आओ भाभी पीठपर सवार होलोउसको देखकर प्रहासने घूंघट काढ़लिया और वह श्येन रूप धारणकरके उसके सामने आखड़ा हुआ प्रहास उस पर बैठ लिया और वह उड़ता हुआ रक्तबाहिनी नदी के तट परआया और जैसेही नदीकेपार जानेलगा तैसेही नदीका पाट फैलनेलगा और कोलाहल मचगया उससमयश्येनने पुकारकर कहा कि मैं महाराज महेन्द्रकेसभासद हंसकाभाईहूं हंसकी स्त्री को लेनेपरसों गयाथा और नदीके पारजानेकी आज्ञाका पत्रनदीकेरक्षकोंको देगयाथा आज मुझकोपार जानेको मार्ग मिलना

चाहिये यहसुनकर नदी यथावस्थित होगई और वह उड़कर उसके पारआया और क्षणमात्रमें एकघरमें पहुंचकरउतरा वहां उतरकर प्रहासने देखा कि वह घरपरमशोभायमान बनाहै एक ओर दुहेरा कोठापरम सुन्दर बनाहै उसमें नानाप्रकारके वस्त्र बिछेहुएहैं शय्या परमअलंकृत बिछीहै वस्त्रधरेहैं नागदन्तों में प्रकारप्रकारकेपदार्थस्थापितहैं द्वार और खिडकियांशोभायमान बनीहैं और दूसरीओर रसोईका स्थानहै वहां एककोठरीमेंसब प्रकारके भोज्यपदार्थ और अन्नादि संग्रहीत रक्खेहैं औरनानाप्रकारके सुन्दरपात्र रक्खेहैं और आंगनमेंएक ओरको एकचौकी लम्बीचौड़ी बिछीहै उसपर वस्त्रउत्तमबिछेहुएहैं और एकम्लेच्छ सांवलेरङ्गकातकियालगाये बैठाहुआहै उसम्लेच्छने जबअपनी स्त्रीकोदेखा चौकीसे उठकर उसकेपास चलाआया प्रहासनेभी उसे देखकर अपना घूंघट खोलदिया और मुसकुराकर उसकी ओर कटाक्षकिया उससमय हंसने प्रहासको श्येनकी पीठपरसे उतारलिया और श्येनसे कहा कि भाई तुमअब अपनेघरजाओमें घरबार अपनी स्त्रीको सौंपकर महाराजकी सभामें जाने वालाहूं वहां निशाकरीके बधकी तयारीहोरहीहै बहुतसे मनुष्य इकट्ठेहुएहैं तुमभी अपनेघर होकर उत्सव देखनेको आजाओ यह सुनकर श्येनतो चलागया और हंस अपनी स्त्रीसे हास्य करनेलगा तब प्रहास वहांसे उठकर चला उसनेपूछा कि कहां जातीहो प्रहासबोला कि मद्यलेने जातीहूं वहचुपकाहोरहाऔर प्रहासजो कोठरीके भीतरगयातो देखा कि गृहस्थीका सबअसबाब रक्खाहै और नागदंत अर्थात् आलोंमें मद्यभरे हुये पात्र स्थापितहैं यह देखकर उसने एक पात्र उठालिया और उसमें मूर्च्छाकरचूर्ण मिलाकर बाहिर चलाआया और उस मद्यसेएक पान पात्रभरकर हंसको दिया वहउसको पीकर प्रहासकोअपनी स्त्री जानकर लिपटगया प्रहास वहांसे उछलकर भागा वहउस

केपीछे चला परन्तु बायु लगतेही मूर्च्छित होकर गिरपड़ा तब प्रहासने जाल मारकर उसका सब घर लूटलिया और उसके वस्त्र उतारकर उसकोभी थैलीमें डाललिया और अपनास्वरूप उसकासा बनाकर और उसीकेसे वस्त्रधारण करके वहांसेबाहिर निकला और देखा कि सहस्रों म्लेच्छ चलेजातेहैं उनमेंसेबहुत से कहते जातेथे कि आज शत्रुमारा जाताहै इसी निशाकरीने प्रहासकी सहायताकीथी देखोआज असहायहोकर कालके गालमें बैठीहै यहसुनकर दूसरा कहताथा कि भाई ऐसामत कहो किसीकी आपत्तिको देखकर मतहँसोयह दिनदशाकी बात है कि जिससे बड़ेबड़े आपत्तिमें पड़जातेहैं बड़ेबड़े राजाओंका राज्य जाता रहताहै और भीखभी मांगे नहीं मिलतीहै भाई संसारमें दुख और सुख दोनोंहोते हैं ॥

दो० । कुंजलाल संसार यह दुख सुख रूप सराय ।
कबहूं दुख अरु कबहुं सुख पावत यहँनर आय ॥

निदान इसीप्रकारकी बातें करतेहुये वे चलेजातेथे प्रहासभी उनके साथसाथ होलया और बदरी उद्यानके द्वारपर पहुंचा वहांजाकर देखा कि महेन्द्र और विचित्र माया दोनों सिंहासन पर बैठेहुयेहैं और बधिक खड्ग लियेहुये रानी निशाकरीकेशिर परखड़ेथे म्लेच्छ खड़ेहुये हँसरहेथे और रानी निशाकरीआकाश की ओर देखदेखकर श्रीविष्णु भगवान्से प्रार्थना कररहीथी ॥

चौ० । प्रभु तुमहो भक्तन प्रतिपाला । अन्तरयामी दीनदयाला ॥
रवि अरु चन्द्रज्योतिके दाता । हौप्रभुतुमसबजगत विधाता ॥
यद्यपि अलख अगोचर साईं । तदपिरहत प्रभुतुम सबठाईं ॥
निज भक्तनकी करत सहाई । आपदलखिप्रकटत प्रभुआई ॥
ताते जानिमोहिं निज दासी । अरिबन्धन मोचहुअविनासी ॥

यह देखकर प्रहासभी रोनेलगा और महेन्द्रके समीपजाकर विनय पूर्वक बोला कि श्रीमहाराजमेरी इच्छाहै कि इसअपराधि नीको मैं अपने हाथसे बधकरूं महेन्द्रने कहा कि जाओ और

शिरकाटलाओ यह सुनकर हंसरूपी प्रहास खड्ग निकालकर गया और बधिकों को हटादिया और बोला कि आप अपनी मायाका संहार कीजिये मैंने इसको अपनी मायाके बन्धनोंसे अच्छी प्रकारसे बांधलियाहै महेन्द्रकोयह शंकातो कदापिनथी कि यहां कोई बहुरूपिया आवेगा क्योंकि नदीके पारतो कोई जाई नहीं सकताथा इससे उसने अपनीमायाका संहार किया और प्रहास निशाकरीकेपास जाकर धमकाने लगा कि जोतू महाराज महेन्द्रकी अज्ञानुगामी होकररहैतोतोरेप्राणबचें उसने झल्लाकर कहा कि मैं अपने सहस्र मन से प्रहासकी साथी हूं तू शीघ्रमेरा बधकर प्रहासबोला कि मैं तेरे शत्रुओंको मारूंगा और यह कहकर उसने जालमारकर रानी निशाकरीको थैली में डाललिया और पुकारा कि मैं यशस्वी प्रहास बहुरूपियाहूं यह सुनतेही म्लेच्छ लीजियो पकड़ियो कहतेहुये पीछेदौड़ेउस समय प्रहासने दो तीन धूमयंत्र छोड़दिये कि उनसे धूमनिकल कर छागया और उस अँधेरेमें दो तीन म्लेच्छोंके शिरभीकाट डाले कि उससे बड़ा कोलाहल प्रकटहुआ और औरभी अधिक अंधकार होगया और प्रहास मरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर अदृश्य होगया उससमय महेन्द्र और विचित्र माया चकितसे होकर रहगये और जब चैतन्यहुयेतो देखा कि दो तीन म्लेच्छोंके शिर कटेहुये पड़ेहैं और निशाकरीका पतानहीं है यह देखकर वह चकभकसा रहगया और विचित्र मायाने कहा कि महाराज प्रहास बड़ी बुरी बलायहै मुझको यह आश्चर्य होताहै किवह यहां क्योंकर आगया तब महेन्द्रने कुछमायाकी कि उससे एक पुतलाप्रकटहुआ महेन्द्रनेउससेपूछा कि प्रहासकहांहै वहबोला कि नदीके इस पारहै वहबोला कि सत्यकह पुतला बोला कि मैं मिथ्यावादीकोदुर्वचनकहताहूं यहीं मायाकृत देशमें है तब महेन्द्र ने अद्भुतजालकी पुस्तकनिकालकरदेखी उससे उसको वि-

दितहुआ कि प्रहास हंसकीस्त्रीका रूपधारणकरके श्येनकीपीठ परसवारहोकर नदीकेइसपारआया और हंसको कैदकरके उसका स्वरूपधारणकरके निशाकरीको छुड़ालेगया यह देखकर महेन्द्रने श्येनकोबुलवाकर कहा कि अरेदुर्बुद्धी तू प्रहासको अपनी पीठपरबैठाकर लेआया और अपने भाईको मरवाया यह सुनकर श्येनरोनेलगा और अपनेभाईके घरकी ओरचला औरसब म्लेच्छ जो तमाशादेखनेको आयेथे चलेगये बधिकनिराशहोकर अपने अपनेघर फिरगये और मायावी म्लेच्छ प्रहाससे भयभीतहोकर अपनी २ जगहपर जा बैठे और महेन्द्रभी बाहिरसे उठकरबदरी उद्यानके भीतर जा बैठा और आज्ञादी कि मायाकृत पक्षी चारों ओर जाकर सबको खबरकरदें कि यहां प्रहासआया है सब चौकसरहैं और ऐसाप्रबन्धकियाजाय कि वह अब नदीके पार न जासके निदान सब अदृश्यखंडमें यह समाचार फैलगये और सब चौकसहोगये और नदी रक्षकों से कहलाभेजा कि हमारी आज्ञाके बिना कोई नदीकेपार न उतरनेपावै इस प्रबन्धके करनेपर उसके पास सैन्धका पत्रआया उसमें लिखाथा कि सुनागयाहै कि प्रहास नदी उतरकर अदृश्यखंडमें गयाहै मैंने प्रहासके स्वरूपका चित्रबनालियाहै जैसास्वरूप उसने अपनाबनायाहोगा वैसाही स्वरूप इस चित्रकाहोजायगा मैं उसको पहिंचानकर पकड़दूंगा इसपत्रको पढ़कर महेन्द्रने उत्तरलिखा कि आप शीघ्र पधारिये और सब सभासदोंसे कहा कि अब परमेश्वरके पौत्र आतेहैं वह प्रहासको पकड़देंगे यह बात सबजगह फैलगई और लोग इसका चरचा सब जगहकरनेलगे प्रहासने भी यह बात सुनी और घबराया कि देखिये अब प्राणक्योंकर बचतेहैं और मरुतदत्त वस्त्रओढ़े हुए हंसके मकानपर पहुँचा और फिर अपना स्वरूप उसकी स्त्रीकासा बनाया और आवश्यक वस्तु अपनी थैलीसे निकालकर वहांरखदीं और बिछौने

विछाकर बैठगया प्रकटहो कि जब हंसने अपनी स्त्रीको श्वशु-
रारि भेजाथा तब अपने घरके सेवकोंको भी छुट्टी घरजाने की
देदीथी जिससमय हंसके मरिजानेकी खबर उड़ी वे सबसेवक
उसको सुनकर दौड़ेहुए आये और घरपर हंसकी स्त्रीको बैठा
हुआ देखकर सबने दण्डवत्की और कहा कि हायदेखो शत्रु-
ओंका नाशजाय कैसीखबर उड़ाई है प्रहास बोला कि क्याहै
कहो तो उन्होंने कहा कि शत्रुओं ने यह उड़ाया है कि हमारे
चिरंजीव स्वामी प्रहासके हाथसे मरिगये यहसुनतेही प्रहासने
अपनाशिरपीटडाला वस्त्रफाड़डाले आभूषण उतारकरफेंकदिये
और आंगनमें लोटलोटकर विलापकरनेलगा उससमय श्येन
भी रोताहुआ वहांपहुंचा और अपनी भावजको बिलापकरते
हुए देखकर सोचा कि महाराज ने मुझसे कहाथा कि प्रहास
तेरीभावजका रूपधारणकरके आयाथा सो नजाने यह मेरीभा-
वजहै अथवा प्रहासहै इसशोचमें उसने रोनाभी बन्दकरदिया
और उसको अच्छीप्रकारसे देखनेलगा उसकीदृष्टिको प्रहास
ने पहिचानकर विचारकिया कि यह मुझको जानगया है यह
सोचतेही उसने कहा कि लाला तुमने जब मुझको पहाड़पर
उतारदियाथा तब मेरेपास एकमनुष्यआया और उसने मेरे
मुखपर एक अंडामारा उससे मैं अचेत होगई फिर जो मेरी
आंखखुली तो मैंने अपनेको इस अपने घरमेंपाया और देखा
कि एक क्षीणमनुष्य सबघरलूटकर मेरागहना उताररहाहै फिर
गहनाउतारकर वह खड्गलेकर मुझको मारनेचला प्राणतो
प्यारेहोतेहीहैं मैंने हल्लामचाया तब वह भागगया अब सुनती
हूं कि वह कोईबहुरूपियाथा और उसने मेरेपतिको मारडाला
सत्य बताओ कि तुम्हारे भाई मरिगयेहैं अथवा नहीं यह सुन
कर श्येनने समझा कि प्रहास जब मेरे भाईको मारचुकाहोगा
तब इसको भी थैलीसे निकालकर मारताहोगा क्योंकि प्रहास

पहिले भी यहां आयाथा इससे यहांके म्लेच्छ थैलीकेहालको जानतेथे निदान जब श्येनको यह विश्वासहोगया कि यह मेरी भावजहै तब उसके पास बैठकर हाय हायकरके रोनेलगा तब प्रहासने उठकर दो तीन टक्करें दीवारमें लगाई कि उसकाशिर फटगया और रुधिर बहनेलगा और फिर विलाप करनेलगा हाय मेरा राजपाट जातारहा सुहागमेरा लुटगया हाय अब मैं कैसे संसार में जीऊंगी॥

जय०छं०॥हनिहनिउरकोकरति पुकार। रोवतमहाबहतदृगवारि॥
हा ममजीवन प्राणअधार। हा मम प्राणनाथ भरतार॥
हाप्रिय कहांगये मोहिंछोड़ि। भयेनिठुर कतहो मुखमोड़ि॥
मम पालन रक्षण संसार। तुम बिन को करिहै भरतार॥
हा मैं कहा करौं कहंजाऊं। तबप्रिय दर्शन केहिविधिपाऊं॥
वेगि न कत मोहिं कंठ लगाय। करत मोरभाइबालनआय॥

इसप्रकारसे रोता और शिर पीटताहुआ वह बाहरनिकल-कर चला श्येन हांहां करताहुआ उसके पीछे दौड़ा कि भाभी कहांजातीहो और हाथजोड़े और पैरों पर गिरपड़ा पर उसने एक न सुनी और रोता और शिर धुनताहुआ लोहू लुहान बदरी उद्यानकी ओरचला उससमय श्येन आगेबढ़गया और महेन्द्रके पास जाकर विनयपूर्वक बोला कि महाराज प्रहास पहिले तो मेरी भावजका रूप बनकर मेरेभाईके पासगया और जब उसको मारकर घरलूटचुका तबउसने मेरीभावजको थैली से निकाला और उसको भी मारना चाहा परंतु उसके पुकार करने से भागआया और मेरेभाई का रूप धारण करके रानी निशाकरीको छुड़ालेगया अब जो मेरी भावजने भाई के मारे जाने का हाल सुना तो उसने अपना शिर फोड़ डालाहै और अपने को मृतक प्राय करदिया है और अब आपके पास आती है महेन्द्र अद्भुत जाल में यह तो देखही चुका था कि

प्रहास हंसकी स्त्री का रूप धारण करके यहां आयाथा इस से उसने दुबारा उस पुस्तक को निकालकर नहीं देखा और श्येनके कहनेको सत्यमाना इसी अवसरमें रोने और विलाप करने का शब्दसुनाई पड़ा और वह हंसकी भार्या महेन्द्रके सन्मुखआई और उसकेपैरोंपर गिरपड़ी उसने उसके शिरको जो उठाया तो देखा कि शिरसे रुधिरबहरहाहै बालबिखरे हैं और रोते रोते हिलकी बँधगई है यहदेखकर महेन्द्रने आपभी आंखोंमें आंसू भरलिये और बोला कि परमेश्वरकी इच्छामें कुछ किसीका वशनहीं चलता है हंसतो अबनहीं है परंतु और जो कुछ तू चाहै सो मिलसकताहै जो मासिकतेरेभरतारको मिलता था वह अब तुझको मिलाकरैगा जा तू अपनेघरपर चैनसेरह और अपने चित्तको धीर्यदे यह सुनकर वह स्त्री रूपी प्रहासबोलाकि महाराज अबमेरे पासरहाहीं क्या है घर तो सब प्रहास लूटलेगया अब जो अकेली घरमेंरहूंगी तो सब संसार मुझे देवरकेसाथ कलंक लगावेगा इससे श्रीमहाराज मुझको मेरे मा बापके पासभेजवादीजिये वहांपर जो आपकी कृपासे में मासिक पाऊंगी तो खाकर आपका धन्यवादकरूंगी और न दीजियेगा तो मैं सूतकातकर अपनी अवस्थाको व्यतीतकरदूंगी यह कह कर उसने बहुतरुदनकिया विचित्रमायाभी रोनेलगी औरबोलीकि हेमहाराज जो यह यहांरहैगी तो दिन रात्रि इसकोअपने पतिकीयाद आवैगी कि हाय यहांमेरापति बैठताथा यहांसोता था और इसकारणसे रातदिन रो रोकर मरजायगी इससे इस को इसके मा बापकेही यहां पहुंचादीजिये यह सुनकर महेन्द्रने दो तीन मायावीम्लेच्छ उसकेसाथ करदिये और उनसेकहा कि इसको अच्छीप्रकारसे इसकेमैके में पहुंचाआओ और एकमायाकृत मयूरपर उसेबैठाकर और कुछधनदेकर विदाकिया जब नदीके तटपरपहुंचे तब उसकेसाथ महेन्द्रके निजसेवकोंके सा-

थहोनेके कारणसे किसी ने न रोका और वह मयूरउड़ताहुआ उसीपर्वतपर पहुंचा जहांपर प्रहास स्त्री बनकर श्येनकीपीठपर सवारहुआ था वहांपहुंचकर उसने अपने साथियों से कहा कि इसी स्थानपर मुझको उसनिपूते बहुरूपियाने छलाथा तुमथोड़ीदेरको मुझे उतारदो तो मैं यहां बैठकर अपने पतिको रोलूं कि हाय वह कौनसी बुरी घड़ी थी जिसमें मैं यहां आकर पहुंची थी और मैं भूखीभीहूं कईदिनसे कुछनहीं खायाहै सो कुछखाऊंगी भी यहसुनकर म्लेच्छोंने उसमाया मयूरको उतारा और प्रहास उसपरसे उतरकर पहले तो डीकमारकर रोया फिर उसने कुछफलनिकालकर एकआध आपखाया और उन साथकेम्लेच्छोंको दिये उनकोखाकर वे म्लेच्छअचेतहोगये तब प्रहासने उनके वस्त्रआदि जो कुछउनके पास था लेलिया और एकपत्र लिखकर एकम्लेच्छकी डाढ़ीमें बांधदिया उसमें यह लिखा था कि हे महेन्द्र तैंनेदेखा कि मैं जिसस्वरूपको धारणकरके गयाथा उसी स्वरूपसे फिर लौटकरअपनी सेनामें चलाआया और अपनाकामकर आया इसीप्रकारसे किसीदिन आकर तुझको भी मारडालूंगा नहीं तो मेरे पासचलाआ और श्रीवैष्णव मतको स्वीकारकर मैं म्लेच्छोंका कालहूं यह पत्रबांधकर वह पर्वत से उतरा और अपनी सेनाकी ओर चलदिया यहांसेनामें जबसे चपला ने आकरकहाथा कि बहुरूपिणी रानी निशाकरीकोनदी केपार लेगईहै तबसे रानीआनन्दा आदि पछाड़ेंखाखाकर रोती थीं और सबको विश्वास होगया कि रानी निशाकरी अबजीती न बचेगी यह सोचकर सबकोई अधीर्यहो होकर उसपरम कृपालु अन्तर्यामी विष्णु भगवान्‌से विनय पूर्वक प्रार्थना करता था कि भगवान् तू ऐसा कृपालुहै कि क्षणमात्रमें परम दुखीके दुखको दूरकर सकताहै और भक्तके मनोरथको पूरा करताहै हम सबकी रानीको उस दुष्टात्मा महेन्द्रके हाथसेबचा निदान

इसप्रकारसे सबकोई ईश्वरसे प्रार्थनाकरतेथे और सेनाकेमनुष्य रोते पीटतेथे कि इतनेमें प्रहास जाकर पहुंचा और उस ने सब का आश्वासन करके रानी निशाकरी को थैलीसे निकाला उस की जो आंख खुलीतो उसने अपने को अपनी सभामें पाया और उस परम कृपालु और भक्त वत्सल ईश्वरका धन्यवाद करके स्नान किये और उत्तम वस्त्रोंको धारणकिया और राज सिंहासन पर विराजमान हुई यह खबर चारोंओर सब सेनामें फैली उसको सुनकर सब प्रसन्न हुये और प्रहासके छल कर्म को सुनकर सबको आश्चर्य हुआ निदान सब आनन्द मंगल मनाने और मद्यपान करनेलगे और नृत्य और गानहोनेलगा निदान यहांतो उत्सव होनेलगा और वहां पर्वतपर कुछकाल पीछे म्लेच्छ जो सचेतहुयेतो अपनेको नङ्गादेखकर रोते पीटते हुए महेन्द्रके पास गये उसने डाढ़ीसे पत्र खोलकरपढ़ा और अपनी जङ्घापर अपना हाथदेमारा और विचित्रमाया से कहा कि वह हंसकी स्त्री न थी किन्तु प्रहासथा धोखा देकर नदीकेपार उतरगयायह सुनकरउन सेवकोंने आपसमें कहा कि भाई हमारे प्रारब्ध अच्छेथे जो उस बहुरूपियेने हमकोमारा नहीं औरसब ने अपने अपनेमान्य असुरोंको दण्डवत्की और महेन्द्रनेसैन्ध्र को पत्रलिखा कि हे सर्वोपमा योग्य श्रीमायाकर्त्ताकेपौत्र आपने प्रहासको पकड़नेके लिये यहां आनेको लिखाथा सो वह छली यहांसेछल करके फिर नदीके उसपार प्रत्यक्ष खण्डमें चलागया है अब आप उसको वहीं पकड़कर कैद करलीजिये यह लिख- कर उसने पत्र एक हस्तको दिया वह उसे लेकर सैन्ध्रके पास पहुंचा वह चलनेकोही था परन्तु पत्र पढ़कर वहींठहरगया और अपनीसुमुखीनामस्त्रीसे कहा कि अबमैंप्रहासको पकड़ताहूं मैंने उसका चित्र खींचलियाहै इससे वह जिसस्वरूपमें होगामैं उस को पहिंचानलूंगा जिससमय सैन्ध्रने उक्तबाते अपनीस्त्रीसे कही

थी उससमय वहां चपला बहुरूपिया अपना स्वरूप बदलेहुये आयाहुआथा उसनेभीसबवृत्तांतसुना और प्रहाससेजाकरकहा उसकोसुनकर प्रहासबोलाकि बेटा किसीप्रकारसे मेराचित्र सैन्ध्र के पाससे लानाचाहिये चपलाबोला कि बहुतअच्छा मैंजाताहूँ और बनपड़ताहै तो चित्रको लिये आताहूं यहकहकर वह चल दिया और प्रहासभी सभासेउठकर वनमेंचलाआया और म्लेच्छोंका रूपधारणकरके गुप्तबास करनेलगा उधर महेन्द्रने बहुरूपिणियोंसेकहा कि तुम्हारे कर्त्तबमें कसरनहीं अबतुम विचित्र मायाकी सेनामें जाकर सैन्ध्रकी रक्षाकरो और जब वह प्रहास को कैदकर लें तब उसको यहांले आओ यह आज्ञा पाकर वे बहुरूपिणी सैन्ध्र के पासआई और उससेसब वृत्तांत कहा तब उसने अपने डेरेके चारोंकोनोंपर चारडेरे खड़े कराकरउन में बहुरूपिणियोंको टिकाया और कहा कि तुम यहांरहकर मेरी रक्षाकरो और बहुतसे म्लेच्छोंका पहराभी खड़ा करादिया और कहदिया कि यहां किसीको आने न देना और अपने पाससेवा के लिये कुछदासियां रखलीं और और सब सेवकोंको बाहिर रहनेकी आज्ञादी इस प्रकारसे जब सब प्रबन्ध कर चुकातब उसने प्रहासकाचित्र लेकर अपनेकण्ठमें पहिरलिया कि हरसमयमेरेपासरहै जिसमें मैं धोखा न खाऊं निदान उसने सबप्रकार से अपनी चौकसीकरली परन्तु चपला बहुरूपिया जो छलकरनेको गयाथा वह अपना भेष बदलकर उसकी सेनामें आया और देखा कि बड़ा प्रबन्धहै डेरेमें कोई जाने नहींपाताहै यह देखकर वहएक किनारे ठहरारहा इतनेमें वह दिन व्यतीतहुआ और सूर्यके आधी चलपर जानेके पीछे सन्ध्याहुई और आकाश में तारागणों ने न्तू ''श किया॥

चौ०। होत अस्ताकब निशि उजियारी। भाई शीतल शुचिश्रमहारी॥
नभमें उदयहोत जिमि तारे। तिमि सैननिमें दीपक बारे॥

रात होनेपर वहांपर एक भङ्गिनि उत्तमवस्त्र पहिरे औरहाथ पैर और कानमाकमें आभूषण धारण किये हाथमें झाडूलिये कमरपर टोकरारक्खे इठलातीहुई और हरएककी ओर अपने सुन्दर नेत्रोंसे कटाक्ष करतीहुई आई चपलानेजो उसकोआते देखा समझा कि यह डेरेके भीतर जायगी इसको लेनाचाहिये यह शोचकर वह उसके निकटगया और बोला कि ॥

दो०। लहरि लहरि हियमें उठत सुखकी परम तरङ्ग।
धनिते नर जे पियत हैं यह दुख भङ्गिन भङ्ग॥

भङ्गिन शब्दके कहनेसे वह भङ्गिन पीछेको देखकर मुसकुराई उससमय चपलाने उसे कुछ अशर्फियां दिखलाई और कहा कि कृपाकरके मेरी एकबात सुनतीजा वह लालचमें आकरउस के समीपगई और बोली कि तुम आगे जाकर उस वृक्षकेनीचे ठहरो वहां एकांतहै कोई आता जाता नहीं है यहां बात चीत करनेमें बदनामी होगी बिरादरीमें दण्डपड़जायगा चपलाबोला कि हम तेरादण्डदेदेंगे वहबोली कि इसकी क्या आवश्यकताहै जो काम सहजही में सधै उसके लिये कठिन साहस करना मूर्खताहै यह सुनकर पहिले तो चपला उस वृक्षके नीचे चला गया पीछेसे वह भङ्गिनभी राह कतरातीहुई वहांपहुंची चपला ने उसे अशरफियांदीं और उसके मुखपर बड़ेप्रेमसे अपनाहाथ फेरा यह देखकर वह बोली कि मैं बात सुनने आईहूं मुझेऐसी हँसी अच्छी नहीं लगतीहै यह कहकर वह झाउनी बताकरवहां से चली चपलानेमूर्च्छाकर चूर्णसे भराहुआ हाथतो उसकेमुख पर फेराहीथा जैसेही दोपग चली तैसेही मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी तब चपलानेउसकेवस्त्र और आभूषणउतारलिये और छलवि-द्यासम्बन्धीवर्त्तिकाको प्रज्वलितकरके अपनास्वरूप उसकासा बनाया औरकुछमुखकीछबि और अधिक करकेबनाईऔरसबव-स्त्र और आभूषणपहिरकर डुपट्टेकीगाती इसप्रकारकीबाँधी कि

उभरेहुए पीनपयोधरोंपर सबकीदृष्टिपड़ै और कपोलोंपरअरुणताऐसीजमआई कि गुलाबके फूलउनके सामनेलज्जितहोनेलगे और ऐसी शोभा उनकी मालूमहोनेलगी मानों टोकरा उठानेके श्रमसे सुकुमारताके कारणसे कपोलोंपर अरुणताआगई है ॥

क० । चिलकति चारुचिकनाई की चटकभरी चलत फिरत में सुलङ्क लचकतिहै । सुन्दरसलोनी अतिलोनी अजोंहोनी बैसशोभाकी सनीसी छबिसींवसीलसतिहै ॥ कुटिलसुभाई चित वनि प्रेमबिषभरी तनमननागिनसम देखतडसतिहै । कुंजलाल सुन्दर सुरूपभरी तोनबाललखत बिचित्तकरि चित्तमें बसतिहै ॥

इसप्रकारका सुन्दर स्वरूपबनाकर वह डेरेकीओरको चला जिसनेउसेदेखा मोहितहोगया रक्षकरस के पदपढ़तेथे और द्वारपालकहास्य बचनबोलतेथे कोई बोलादेखोजी यहां परभी जो कुछ पड़ापड़ायाहोवै उसेउठालो दूसरेनेकहा कहोजी तुम्हारी चौकी कौनधोताहै यहसुनकर वहभङ्गिन मुसकुराई और बोली कि क्या तुम्हारी दिनदशाने घेराहै मुझे हँसीअच्छीनहीं लगती है देखो मैं आजमहाराज से कहूंगी यहकहतीहुई वहभीतरडेरे के चलीगई और टोकरेको शौचगृहमें रखकर वहां आबैठी जहां परमसुन्दरी दासियां बैठीथीं और बोली कि थोड़ीसी तमालकृपा करके देदीजिये उनदासियोंमें से एकने उसको पान लगाकर देदिया उसने हाथफैलाकर पानडुपट्टेपर लेलिया तब एकदासी बोली कि अरीकुछगाकर तो सुना भङ्गिनने एकगीत गाया उससमय एक दासीको लघुशंका करने की आवश्यकता हुई वहभङ्गिनसे बोली कि यहांबैठीहुई इठलारही है मुझको लघुशंकालगी है शीघ्रजाकर अपना टोकरा शौचगृहसे उठाले तो मैं जाऊं भंगिनबोली चलोमैं चलतीहूं यहकहकर वहउठी और उसकेपीछे२ वहदासीहुई उसनेटोकराहटादिया और दासी से कहा कि आओ जैसेही वहभीतरगई भंगिनरूपी चपलाने

मूर्च्छाकर चूर्ण उसके मुखपर डालदिया जिससे वह मूर्च्छितहो-
गई और उसके मुखसे बोलभी न निकल नेपाया तबचपलाने
उसके वस्त्र और आभूषण उतारलिये और उसको अच्छीप्र-
कारसे अचेतकरके उसने अपना स्वरूप उसकासाबनाया और
उसको एक कनातकी आड़ में छिपाकर और टोकरे को भी
वहींरखकर चलाआया और जिसस्थानपर से उठकर वहदासी
गई थी वहीं आकर बैठगया सबने जाना भंगिनचलीगई होगी
उसडेरे के बीचमें एक अंतरपट अर्थात् परदा पड़ाथा उसपर-
देके इसओरदासियां थीं और दूसरीओर रत्नजटित शय्या
बिछीथी उसपर सैन्धलेटाहुआथा और उन्हींदासियोंसे एकको
बुलाकर उससे कामकेलिकररहाथा उससमय चपलाने सैन्धके
पासजाने के सहस्रों उपायकिये परंतु किसीप्रकार जानेकेयोग्य
समय न मिला इसीडेरे के समीप एक दूसराडेराखड़ा था उस
में सैन्धकी भार्या सुमुखी जिसको सुंदरी भी कहते थे रहती थी
उससमय वहअपने पतिकेपास जानेकोवहांआई और दासियों
को द्वारपर छोड़कर आप परदा उठाकर भीतरचलीगई उसस-
मय सैन्ध उसदासीके मुखको चुम्बनकर रहाथा और वहभी
अपनी बाहँको सैन्धके गलेमें डालेहुएथी यहदेखकर सुमुखी
पीछेको हटगई और सैन्धघबराकरउठबैठा और वहदासीबालों
को समेटतीहुई और ओढ़नी को ओढ़तीहुई शय्यापरसे उठी
और बोली महाराज आपमुझको निरर्थक बदनामकरते हैं मैं
बड़ी दुर्भाग्यहूं हाय यहां कहां आनमरी नाहींकरते रबरजोरीसे
मुझे नोचने खसोटनेलगगया उससमय सैन्धने अपनीस्त्री से
कहा कि आइये आइये आपक्यों रुकरहीं सुन्दरीबोली कि मैं
आकर क्याकरूंगी आपआनन्दमें हैं मुझेबुलाकर क्याकीजिये-
गा में जो ऐसाजानती तो काहेकोआती और दूसरेके आनन्दमें
क्यों बिघ्नडालती और फिरउसदासीसे कहा कि अच्छा छिनाल

तूरह तो जा कैसीबातें बनातीहुई अपने धगड़ेके पाससे उठीहै आहा अबक्याकहनाहै अबतो आपघरवालीबनीहैं जो तुझको शिरमुंडाकर गधेपर न चढ़ाया तो मेरानामनहीं लो सौतकी बातें लपटी तो पड़ीथी और कहतीहै कि मुझसेबरजोरी नोचाखसोटी करता है यहकहकर वहदासी को मारनेकोदौड़ी और दासी बुड़ बुड़ातीहुईभागी कि हांआपके भर्तारमें लाललगेथे सो मैंनेतोड़ लिये उससमय सैन्ध्रनेअपनीस्त्रीका हाथपकड़लिया और कहा कि सुनोतो सुनो तो क्रोधमतकरो उसका कुछ अपराध नहीं है मैंने पैरदबानेको बुलायाथा आओबैठो यहकहकर उसको बड़ी सुश्रूषासे बैठाया वहबैठ तो गई परंतु उसका मनमलीनहीरहा सैन्ध्रने अनेक प्रकारसे उसको प्यारकिया परंतु उसने मुखसे बात न की और उठकर अपने डेरेकोचलीगई चपला यहसब दासी बनाहुआदेखरहा था उसके साथ साथहोलिया वहजब अपनेडेरेमें आई उसने वहांका सब क्रोध अपनी दासियों पर उतारा किसीको दुर्बचनकहे किसीकोमारा किसीपर चिल्लाई इसप्रकारसे निरपराध सबपर क्रोधितहुई और बड़ीदेरतक बक झिकके तबचपला से बोली जो दासीरूपसे उसकेसाथ आया हुआथा कि क्योंरी चमेली तू अपने स्वामीको छोड़कर क्यों चलीआई है चपला बोला कि महारानी आप तो पासही बैठ कर सबदेखआई हैं उसदासीकाहालमुझसे सुनिये कि महाराज से वहकैसे कैसे मनाउने करातीहै यहबातमतलबकी जो उसने सुनी तो तो और सबदासियों को हटादिया और चपलाकोअ-केली लेकर बैठी और बातें पूछनेलगी उसनेकहा कि महारानी वहदिनरात टांगोंमें टांगडाले पड़ीरहतीहै और महाराजप्रयोग करने का बहानाकरके उसीकोलिये पड़ेरहते हैं यहकहते २ च-पला जमुहाई लेकर खड़ाहोगया और बोला कि मैं फिरआऊं-गी वहबोली कि अरी बैठ तो उसनेकहा महारानीजी मैं आपसे

क्या कहूं मुझे मद्यपीनेका बुराढब पड़गया है यहसुनकर सुंद-
रीने मद्यका पात्रउठाकर उसको देदिया और बोली कि तू भी
पी और मुझे भी पिला तब चपलाने मूर्छाकर चूर्ण मिलाकर
मद्यसे पानपात्रभर कर उसको देदिया और वहउसको पीतेही
मूर्छितहोगई एकांत तो थाही चपलाने शीघ्र उसके वस्त्रउतार
कर आप पहिरलिये और उसीकासा अपनास्वरूपबनाया और
उसको और अधिकअचेत करके एकवस्त्रमें लपेटकर उसीडेरे
के एककोनेमें छिपादिया और आपजाकर सुंदरीकी शय्यापर
लेटरहा उधरसैंध्रने सुंदरीके चलेआनेपर पहिले तो उसदासी
का आश्वासन किया फिर वहांसेबड़ी रातगये अपनी स्त्रीके पास
आया और पलँगपर बैठकर हाथ पकड़कर कहा कि इधरआ-
ओ मुखसे बोलो और मेराअपराधक्षमाकरो चपलाने जो उस
की स्त्रीका रूपधारणकियेहुये लेटाहुआथा उसको देखकर कर-
वटलेली और अपनामुखवस्त्रमें छिपालिया और कहा कि जा-
ओ जाओ तुम अपनी दासीके पासजाकर रहो और उसी से
अपना अपराध क्षमाकराओ मैं तुम्हारी कौनहूं यह सुनकरसैं-
न्ध्रने उसके हाथजोड़े बड़ीउसकी सुश्रूषाकी और कहा कि अब
मैं उसदासीको अपनीमा और बहिनकी समानजानूंगा उसस-
मय चपलाने उससे सीधेहोकर बातचीत की और वहलेटकर
छेड़छाड़ करनेलगा उससमय प्रहासकाचित्र जो गलेमें पड़ाथा
उसपर सैन्ध्रकी दृष्टिजापड़ी और उसको मालूमहुआ कि प्रहास
म्लेच्छ रूपधारणकियेहुये एकपर्बतकी गुफामें बैठाहै यहजान-
कर उसने अपनी स्त्रीरूप चपलासेकहा कि देखो तुम्हारी बक-
झिकमें प्रहासके पकड़नेका ध्यानजातारहा वह इससमय पर्वत
की गुफामें बैठाहै चलोउसे पकड़कर लेआवें और महेन्द्रके पा-
सभेजकर निश्चिन्त्यहोकर आनन्दकरें वहबोली कि अच्छाचलो
परन्तु भीड़साथ मत लो नहीं तो वह भागजायगा यह सुनकर

सन्ध्रबोला कि अच्छा और चपलाको अपनी स्त्री जानकर उस
का हाथ पकड़कर चलदिया जब उस गुफाके समीपपहुँचा उस
की छलनिर्मित स्त्रीने कहा कि तुमठहरेरहो मैं गुफामें जाकर प-
कड़ेलातीहूं यह कहकर झपटकर गुफामें गया वहां प्रहासबैठा
हुआ था उससे कहा कि सैन्ध्रतुमको पकड़ने आताहै भागजा-
ओ यह सुनकर प्रहासने मरुतदत्तवस्त्र ओढ़लिया और चप-
लाने डरकी वाणीबनाकर पुकारकर कहा कि चलियो यहां तो
कोई आपत्तिबैठीहै उसको सुननेहीसैन्ध्रदौड़ा और देखाकिवहां
न प्रहासहै न कोई है किन्तु मेरी स्त्री भयभीतहोकर कांपरही है
उसकी यह दशादेखकर सैन्ध्रने उसे हृदयसे लगालिया और
कहा कि रात्रिका समयथा मैं इसी से कहताथा कि अकेलीमत
जाओ परन्तुतुमने न मानाऔरउसका यहपरिणामहुआ कि डर
गईअच्छा अब यहांसे चलो प्रातःकाल प्रहासको पकड़ेंगे यह
कह कर सैन्ध्र उसको अपनीगोदमें उठाकर अपनेडेरे में आया
औरस्त्रीको शय्यापर लिटाकरप्यारकरनेलगा उससमयचपलाने
मूर्च्छाकर सुगंधितैल निकालकर अपनी कंचुकीपर लगादिया
कि उसके सूंघनेसे सैन्ध्रछींकमारकर अचेतहोगया तब चपला
ने उसके गलेसे प्रहासकाचित्र उतारलिया और चाहा कि उस
को बांधकर लेजाऊं परन्तु रात्रिके अधिकजानेपर बहुरूपिणी
अपने२डेरोंसे निकलकर पहरादेरहीथीं उन्होंने सैन्ध्रकेछींकनेका
शब्दसुना और समीररूपाने प्रातासेकहा कि यह छींक तो ऐसी
है जैसे किसीने किसीको मूर्च्छाकर चूर्णदियाहो वह बोली कि
आपका कहना सत्यहै चलोदेखें डेरे में क्याहोरहाहै यह कह-
कर ये दोनों डेरेके भीतरआईं उनको देखकर चपला डेरेकोखड्ग
की नोकसेफाड़कर निकला और यह कहताहुआभागा कि मैं च-
पलाहूं समीररूपाभी कनातकोफलांगकर उसकेपीछेहुई चपला
वहांसेभागकर पर्वतके नीचेआकरठहरा और उधर समीररूपा

ने विचारकिया कि जो वह बहुरूपिया मिलभी जायगा तो बराबरकी लड़ाईरहैगी इससे ऐसा करूं कि वह धोखाखाय यह सोचकर उसने अपनास्वरूप प्रहास कासा बनाया और आगे बढ़कर छलविद्यासम्बंधी तूरबजाई उसको सुनकर चपला जो प्रहासको ढूंढ़ताफिरताथा एक ऊंचेस्थानपर चढ़गया और चंद्रमाकी निर्मल चांदनीहोने से देखा कि गुरूजीखड़े हैं देखतेही दौड़कर पासआया क्योंकि एकबार तो वह प्रहासको पर्वत की गुफामें देखहीगयाथा इससे समझा कि यह वहीस्थान तो हैही गुरूजीही खड़ेहैं निदान पासआकर उसनेकहा कि गुरूजी सैंध्र तो बचगया परंतु आपकाचित्र मैं उसकेपाससे लेआयाहूं यह सुनकर समीररूपा ने वाणीबनाकर कहा बेटा तैंने बड़ा काम किया ला वहचित्र मुझेदेदे चपलाने वहचित्रदेदिया और एक छलांगमारकरभागी और बोली कि मैं समीररूपाहूं चपला उसके पीछे दौड़ा परंतु वह भागकर सैन्ध्रकी सभामेंआई और सैंध्र को चैतन्यकरके कहा कि आप ऐसे अचेतहोगये कि बहुरूपिये को बगलमें लेकर सोरहे वह चित्र उतारकरलेगया मैं उससे छीनलाईहूं नहीं तो आपका सबपरिश्रमही व्यर्थगयाथा यहकहकर उसने वह चित्र देदिया और वह उसको पाकर बहुतप्रसन्न हुआ परंतु अपनीस्त्रीको उसने सब जगहढूंढ़ा और कहीं उसका पता न पाया तब वह परम अस्वस्थहुआ और उसने जाना कि उसको बहुरूपिया पकड़लेगया है यह सोचकर वह मायाबलसे उड़ा और बनमेंजाकर सबझाड़ी झंकाड़ में उसको खोजनेलगा और वह रात्रि उसको अपनीस्त्री के खोजलगाने में व्यतीतहुई औरप्राचीदिशामें सूर्यके उदयहोने से अंधकार दूरहोगया और चंद्रमा और तारागणोंकी ज्योति मलीनहोगई ॥

दो०। निजपत्नी के खोजमें बीती निशासमस्त।
उदयभये जब दिवसपति भयोइन्दु तबअस्त ॥

प्रातःकालहोनेपर वह रोतापीटताहुआ मायाकृतनदीको उ-ल्लङ्घनकरके बद्रीउद्यान में पहुंचा और महेन्द्र जो सोरहाथा उसको जगाकर सब वृत्तांत कहा और बोला कि तेरे लड़ाई झगड़े में अंतको यह गति मेरीहुई कि मेरी स्त्रीको बहुरूपिये पकड़ लेगये उससमय महेन्द्र सोकर उठने के कारण से मन मलीन होरहाथा परंतु वह सैन्धको बहुत मानता था इसका-रणसे इसके कहनेपर कुछ ध्यान न किया किंतु चुपका होरहा और शयन मंदिरसे उठकर सभामें आकर बैठगया और सब सभासद भी आकर अपने अपने स्थानोंपर बैठगये उससमय महेन्द्रका चित्तसावधानहुआ और वह सैन्धके अधीर्यहोनेपर हँसा और बोला कि आपने बहुरूपियोंके हाथसे अभी क्यादुख उठायाहै मेरेहृदयको कहिये इनदुष्टोंने सहस्रों म्लेच्छोंकावधकर डाला और मेरे मुखसे हाय न निकली आपकी स्त्री इसदेशके विनाजयहुए तो मरेगीही नहीं इससे आप घबराइये नहीं छूट आवेगी यहकहकर उसनेचाहा कि अद्भुतजालकीपुस्तकदेखकर उसकाहाल विदितकियाजावै परंतु यह हालतो विदितहीसाथा क्योंकि सैन्धने आपहीकहाथा कि चपला मेरी स्त्री का स्वरूप धारणकरके आयाथा वही उसको पकड़लेगया इससे इस खुली हुईबातको पुस्तकमेंदेखनेकी कुछ आवश्यकता न थी क्योंकि पुस्तकतो इसप्रयोजनसे थी कि जिसबातका कुछहाल न खुले उसेदेखकर जानलें निदान उसने कुछमायाकी कि उससे एकच-पलासीचमकी और एकहस्तउत्पन्नहुआ महेन्द्रने उससेकहा कि चपला बहुरूपिया जहांहो वहांसे उसेपकड़ला यह आज्ञापाकर वहहस्त चमककरचला और उधर चपलाने जब सर्सीररूपाको न पाया तब वह म्लानचित्त होकर अपनीसेनामें लौटकर आया वहां प्रहाससे मिला और उसको सब वृत्तांत सुनाया इसीअव-सरमें प्रातःकाल हुआ और रानीनिशाकरी सिंहासनपर आकर

विराजमानहुई और प्रहास और चपलाभी सभामें आये उससमय महेन्द्रका प्रेरितहस्त बिजलीकी समान चमककर वहां गिरा प्रहास तो मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर गुप्तहोगया परंतु वह हस्त चपलाको उठालेगया इसपर वैष्णवीसेनाजनोंने अनेकप्रकारके अस्त्रमारे परंतु किसीसे कुछ न हुआ और वह हस्तचपलाको लेकर महेंद्रके सन्मुखपहुंचा चपलाकी जब दृष्टिखुली तो उसने उसस्थानको बड़ाहीअपूर्व पाया और उस मायाकृत मनोहरबागकोदेखा कि उसकोदेखकर वह चकितहोगया यद्यपिइसउद्यान की प्रशंसा कईवार पहिले वर्णनहोचुकीहै परंतु यह स्थानमायाकृतदेशाधिपका था इससे इसमें नित्यही नवीन नवीनशोभामायाबलसे प्रकटकी जायाकरती थी इससे जिससमय चपलाने उस मनोहर उद्यानको देखाथा उससमय सहस्रोंपक्षी फलेफले हुए वृक्षोंकी लताओंपर बैठेहुए मधुर मधुर गान कररहे थे और कहतेथे कि चपला बहुरूपिया आयाहै उससमय वहांकी पृथ्वी और आकाश औरहीवर्णकाथा ॥

छंद। सोबाग भयद स्वरूप भयकर बन्यो जनु भयबासहै।
जो वस्तु देखहुतहां सो जनु करतभीत प्रकास है॥
आरक्त नभबन्यो तेहि बिच लोहनिर्मित रबिलसै।
अरुण हुत वह सदृशअति प्रज्वलित दीपितनभबसै॥
दमकि दामिनि जात कबहुंक होति घनरव गर्जना।
अग्नि वर्षत कबहुं महिपै होति हिय लखि लर्जना॥
धरणि अरु आकाश दोऊ अनिल ज्वालनि सों भरे।
प्रति पत्र शाखासों अनिलकीज्वाल छोड़त तरु हरे॥
अति भयानक अरुणखग उडिकरतरव भयकर महा।
अग्नि समहौंतल सब जलधार जातनसों कहा॥
दो०। तिनसों निकसत हो तहां लहफुलागि सित धूम।
होत अदृशहो सो सकल नभमें चहुंदिशि घूम॥

चपला उस मायाकृत स्थानको देखकर भयभीतहुआ परंतु

उसने मायाकृतदेशाधिपको दंडवत्की और उसने उससे पूछा कि हे चपला तैंने सुंदरीको अचेतकरके क्याकिया यद्यपि मैं अद्भुतजालकोदेखकर जानसकताहूं परंतु उस मेंभी यही निकलैगा कि चपलाउसकोलेकर अपनीसेनामें किसीस्थानपरछिपा आया है निदान यह जाननेपरभी तुझीसे पूछनापड़ता इससे तुझसे प्रथमही से पूछाजाता है जो तू बतादेगा तो तुझको हम छोड़देंगे यह सुनकर चपला बोला कि मैंने उसे मारडाला है महेन्द्रने कहा कि यह झूठहै वह मारी नहींजासकती है तब चपला बोला कि महाराज शत्रुंजयकी सेनासे मेरेनामका एक दूसरा बहुरूपिया आयाथा वह उसको लेगया है तब महेन्द्र ने पूछा कि सब बहुरूपिये कितने हैं चपला बोला कि एकलाखचौरासी सहस्र हैं दोचार दिनमें वे सब यहां आवेंगे महेन्द्रने कहा कि तू झूठाहै यहां कोई नहीं आसक्ता है यह कहकर उसने सैन्ध से कहा कि यह बहुरूपिया आपकाअपराधी है जो आप की इच्छाहो सो इसकाकीजिये वह बोला कि अरे बहुरूपिये जो तू मेरीस्त्रीकोबतादेतो मैं तुझेनदीकेपार उतारदूं चपलाबोला कि जो तुम सत्यता से नियमकरो तो मैं बतलादूं सैंधने तब शपथखाई और चपलानेकहा कि सत्यतो यहहै कि मैंने उसे प्रहासको दे दिया और उन्होंनेउसको थैलीमेंरखलियाहै जबतक दोचारलक्ष रुपया बहनलेंगे तबतक न छोड़ेंगे क्योंकि वह बड़े लालचीहैं यहसुनकर महेंद्र बोला कि इसने यह बात अलबत्ता सत्यकही अब सुंदरीका छूटना कठिनहै क्योंकि थैलीपर न माया चलतीहै और न अद्भुतजालकी पुस्तक उसके भीतरका हालबताती है यह सुनकर सैंध रोनेलगा और बोला कि क्यों चपला तू कभी उस थैलीके भीतरगया है उसमें क्या क्याहै वह बोला कि मेरा तो वह घरहीहै जब मेरीइच्छाहोती है तभी चलाजाताहूं और विहारकरताहूं उसमें सात नगरबसे हैं और नदी और बनभीहै

और नरदेवके रहनेका स्थानभी उसमेंहै देवता वहां बासकर-
ते हैं और स्वर्गकी वारुणी पियाकरते हैं उसमें सहस्रों मायावी
म्लेच्छकेदहैं प्रातःकाल और सायंकाल उनपर सौ सौकोड़े पड़ा
करते हैं उनसे दिनभर तो टोकरीढुलाई जाती है और रात्रिको
उनको सूखे टुकड़े भोजनको मिलतेहैं यह सुनतेही सैन्ध बड़े
शब्दसेरोया और बोला कि मेरीस्त्रीने तो कभी फूलकी छड़ीकी
भी मार नहीं खाई वहसौ कोड़ोंकीमारसे तो मरगईहोगी चपला
बोला कि मरगईहोगी तो मेरी जूती से जो ऐसाही स्नेह है तो
पांचलाख रुपया और उत्तमवस्त्र हमारे गुरूके पासभेजदो मैं
यहांसे उनके नाम पत्र लिखदूंगा जो उनकी इच्छाहोगी तोवह
छोड़देंगे नहीं तो गई तो हैंही यहसुनकर सैन्धने प्रहासके नाम
एकविनयपत्र उत्तमकागजपर लिखा आशय उसका यह था ॥

दो० । हे छलविद्याचार्य हेछलियनके मुकुटमणि ।
बहुस्वरूपधर आर्य हे प्रहास वैष्णवपरम ॥
हेबलबुद्धि निधान हेनेताक्षिति पतिनके ।
सकलगुणनकीखान तवगुणगणनहिंजातकहि ॥

आपके सकाशमें यह विनयपत्र भेजताहूं हमारा ईश्वरकरै
यहपत्र आपकेपास ऐसेशुभमुहूर्त्त और आपकी चित्तकी प्रस-
न्नताके समयपहुंचे कि मेरी प्रार्थनाको आपस्वीकारकरें वहप्रा-
र्थना मुझदीनकी यह है कि मेरी सुकुमार स्त्री को आप अपनी
थैलीसे निकालकर छोड़दीजिये मैं आपके शिष्य चपलाकीम-
तिकेअनुसार आपकेपास पांचलाख मुद्रा और उत्तमवस्त्र भेज-
ताहूं इस मेरीभेटको अंगीकारकीजिये और मेरी स्त्रीको संकटसे
छुटाकर भेजदीजिये आपकाप्रताप और म्लेच्छमारण शौर्य्यता
का यश संसारमें मार्तंडकी सदृशप्रकाशित और दीप्तरहै यह
पत्र लिखकर उसने पांचलाख रुपया और वस्त्रों सहित एक
म्लेच्छको दिया और कहा श्रीप्रहासजीके पासलेजाओ और

ने की माया नहींदेखी यह कहकर उसने वहचित्र सैन्ध्रकोदे-
दिया और उससे बिदाहोकर चपलासहित अपनी सेनामेंआया
रानीनिशाकरीने चपलाके ऊपर निछावरकी और उसके छल
का वृत्तांत सुनकर प्रसन्नहुई प्रहास बोला कि मेरेशिष्यने मुझ
को दोचार कौड़ियां दिवादी हैं उससे मेरा ऋण कुछकम होजा-
यगा और मैंनेभी उसके देनेको दोगाढ़ेकेवस्त्र बनवायेहैं उत्सव
के दिनदूंगा चपला बोला कि गुरूजी आपकी कृपासे मेरे पास
सबकुछ है आप इतना व्यय मेरे निमित्त न कीजिये यह सुन-
कर सब सभासद हँसनेलगे और मद्यपानकरके आनन्दमङ्गल
मनानेलगे और उधर सैन्ध्र अपनीस्त्रीको सभामें लाया और
उसको शय्यापर बैठाया उस दासीने बहुत कालसे पुरुष का
स्वरूपभी न देखाथा इससे हाथलगातेही कामानन्दमें मग्नहो-
गई परन्तु उसीसमय महेन्द्रका पत्र आया कि जो आपकीस्त्री
मिलगईहोतो आप यहां कृपाकरें हम और विचित्रमाया भी
आपकी भार्यासे मिलनेकी इच्छारखतेहैं उस पत्रको पढ़करवह
अपनी स्त्री सहित बदरी उद्यान मेंगया सबनेउसका आदरकिया
और वह महेन्द्रके बराबर जाकर बैठगया और महेन्द्रसे बोला
कि अद्भुत आपकी सदैव रक्षाकरै आपने मेरामान रखलिया
इतनेमें विचित्रमाया बोली कि सुन्दरीका वर्णतो कुछबदलसा
गयाहै वह दासीबोली कि दुखमें मनुष्यका स्वरूप अच्छाकब
रहताहै तब एक म्लेच्छने कहा कि इनसे थैलीका वृत्तान्त तो
पूछो वह बोली वहांकभी अन्धकार और कभी उजेला रहताहै
सहस्रों मायावी म्लेच्छ उसमें कैदहैं और खानेको एकएकरोटी
और एकएक गुड़कीडली मिलतीहै यह वार्तालाप होहीरहाथा
कि बहुरूपिनीभी वहांआई और सबने सुमुखी रूपदासीकीबलै-
यांलीं परन्तु जब निकट जाकर अच्छी प्रकारसेदेखा तबहँसीं
और आपसमें कहनेलगीं कि यहसुमुखीनहीं है इसबातकोसैन्ध्र

नेभी सुना और कहा कि तुम चुपकेचुपके क्या कहरहीहो वह बोलीं कि श्रीमहाराजने पांचलाख रुपये और बहुतसे रत्नतो व्ययकिये परन्तु अपनी भार्य्याकोभी पहिचाना इनसे पूछियेतो कि मायाभी इनको आतीहै यह सुनकर वह सुमुखी रूपदासी बोली कि थैलीमें जानेसे माया भूलगई उसकीवाणीको सुनकर समीररूपाको औरभी निश्चय होगया कि यह सुमुखी नहीं है और उसनेकहा कि महाराजहमभी बहुरूपिनी हैं यह कोईबुढ़िया दासीहै दो कोड़े मारनेसे अभीसत्य कहदेगी यहसुनकर सैन्ध्र घबराया और महेन्द्रसे बोला कि आप कृपाकरके अद्भुतजाल में देख दीजिये कि यह मेरी निज भार्य्याहै या नहीं यह सुनकर महेन्द्रने उसपुस्तकको निकालकरदेखा तो उससेजानागया कि सुमुखी अचेतहोकर एक वस्त्रमें लपटी हुई अपने डेरेमें पड़ी है और वहांसे हटकर एक वृक्षके नीचे भंगिन अचेत पड़ी है और शौचगृह में एकदासी अचेत पड़ी है यह देखकर महेन्द्र ने समीररूपा आदिसे कहा कि क्यों निर्लज्जो हमने तुमको रक्षाके लिये भेजाथा सो ऐसीही रक्षाकी जातीहै कि बहुरूपियेने इतने मनुष्य अचेत किये और तुमको खबरतक नहीं यह सुनकर समीररूपाने अपनी भूलको अंगीकार किया और छलकरनेको जानाचाहा परन्तु महेन्द्रने सैन्ध्रसेकहा कि यहकरूपपातिकी दासी है और आपकीभार्य्या वस्त्रमें लपटीहुई डेरेमें पड़ीहै यहसुनतेही सैन्ध्र उड़कर चलदियापरन्तु यहांका वृत्तांत सुनिये कि सभामें प्रहासने चपलाकी जो बड़ाईकी तो उपदेशी और प्रचण्ड बहुरूपियेभी वहांसे चले कि हमभी कोईकामऐसा करें जिससे हमाराभी नामहो और शत्रुसेनामें आये यहां न बहुरूपिनीथीं और न विचित्र मायाथी सन्नाटाथा यह अवसर पाकर उन्होंने विचार किया कि सैन्ध्र किसीसमयतो सभामेंआवै हीगा इससे अभीसे उसके कैद करनेका उपायकर रक्खो यह

सोचकर उन्होंने सेनाके वासके किनारेसे सुरङ्ग खोदना आरम्भ किया और उसका मुख सुमुखीके डेरेमेंजा फोड़ा वहां सुमुखी वस्त्रमें लपटीहुई पड़ीथी उन्होंने उसको सुरङ्गमें खींचकर इस प्रकारसे रक्खा कि उसका आधाधड़ तो सुरंगमेंरहा और आधा बाहिररहा और नीचे उसके पैरोंको पाशसे बांधलिया और उसकी आड़में आपभी छिपकरबैठरहे कि जो कोई उसको उठाने आवेगा उसके हम मूर्च्छांड मारकर उसेभी उठाकरलेजायंगे निदान ये तो इस घातमें बैठे और उधर सैन्ध्र बड़ी अधीर्यता से वहां आकर उस डेरेमेंगया और वस्त्रको जो उठाया तो एक स्थानपर अपनीस्त्रीको पड़ापाया और जब उसे उठानेलगा तब देखा कि उसकेपैर एक गर्तमें लटकेहुएहैं तब चकितहोकर उस गर्तमें उझककरदेखनेलगा उससमय एकबहुरूपियाने मूर्च्छांड मारा कि वह मूर्च्छितहोगया और दूसरेने पाशमारी और उस से उसे बांधकर सुरंग में खींचलिया तब एकने सैन्ध्रको और दूसरेने सुमुखी को पृष्ठभार में बांधा और पीठपर लादकर सुरंगसेनिकलकर बाहिरआये और अपनीसेनाकी ओर मार्गीहुए परंतु वन व गुफामेंहोकरचले कि कोई हमकोपहिंचान न ले और जब बनमेंपहुंचे तब उन्होंने विचारकिया कि प्रहासका चित्रले लो और इनके शिर काटकरलेचलो यहविचारकर उन्होंने खड्ग निकालकर दोनोंके मारे परंतु खड्ग उचटउचटगये तबउन्होंने पत्थरमारे वहभी उलटे फिरआये तब विचारकिया कि पृथ्वी खोदकर उस में अग्नि गर्भा अर्थात् बारूदबिछाकर उसपर इन को लिटादें और बारूद में अग्निलगाकर जलादें निदान वह दोनों तो पृथ्वीखोदनेमेंलगे और यहां महेन्द्रने फिरअद्भुतजाल की पुस्तकदेखी कि सैन्ध्रजी एकाकीगयेहैं देखूं उनकी क्यादशा है उसके देखनेसे विदितहुआ कि बहुरूपिये दोनोंका बधकिया चाहते हैं यह देखतेही वह पुस्तक बंदकरके मायाबलसे उड़ा

और वहींपहुँचा जहां वह दोनों गर्त खोदकर बारूद बिछारहेथे और पहुँचकर बोला ठहरो तो यह सुनतेही बहुरूपियेभागे परंतु उसने ऐसीमायाकी कि दोनों आधे२शरीरसे पृथ्वीमें समागये उससमय चपला और उपहासभी छलकरनेके प्रयोजनसे सेना से चलेथे और एक ऊंचेस्थानपर से शत्रुसेनाको देखकर किसी प्रपंचके रचनेकी चिंतामेंथे कि उन्होंनेदेखा कि महेन्द्रने प्रचंड और उपदेशी कोपकड़ाहै यहदेखकर उपहासने म्लेच्छरूपधा-रणकिया और चपलाको निज स्वरूपसे पकड़कर लेचला और महेन्द्रके सन्मुखजाकर दंडवत्की और बोला कि यहबहुरूपिया मेरेरहने के स्थानपर आयाथा मैंने इसको पकड़ाहै महेन्द्रप्रसन्न हुआ और उपहासने पच्चीस सुवर्णखंड अर्थात् अशर्फियां हाथ पर रखकर महेन्द्रको भेंटदीं और कहा कि इनदोनों बहुरूपियों को भी मुझे देदीजिये कि मैं अपनी मायासे इनको वेष्ठितकरके श्रीमहाराजके साथ२लेचलूं तबमहेन्द्रने भेंटपरहाथरखकर अ-पनीमायाका संहारकिया कि दोनोंबहुरूपिये पृथ्वीसे निकलआये उससमयउपहास पास तो महेन्द्रके खड़ाहीथातुरन्त उसनेमूर्च्छा-कर चूर्ण उसकेमुखपरमारा कि वह मूर्च्छितहोकरगिरा तब उप-हास खड्गलेकरचला कि शिरकाटडालूं परंतु उसीसमय पृथ्वी थर्राई और फटी और उसमें से मायाकृत पुतलियांनिकलीं और बोलींकिपकड़ियेोलीजियो जाने न पावें यह सुनकर तीनों बहुरू-पियेघबराकरभागे और महेन्द्र और सेना और सुमुखीतीनोंपृथ्वी मेंसमागये क्षणमात्रपीछे जोउनकीआंखेंखुलींतोदेखा कि वहांकी पृथ्वीवैडूर्यकीहै आकाश सुवर्णकाहै हरेभरे वृक्ष और वनस्पति लगेहुयेहैं जलकीधारा बहरहीहै अपूर्व रमणीक स्थानहैं ॥

जय०छंद॥ तहँपुनिमिल्यो सुवनरमणीक। परममनोहरसुन्दरनीक॥
तहँकी शीतल वायु सुखैन। परशिगात तिनि दीन्हों चैन॥
पुनितहँ मिल्यो सुसरवरस्वच्छ। बनेघाट जनुलाग मतच्छ॥

ठाढ़े जलसों करवरकाढ़ि। मत्स्य भिरतकहुं अमरपवाढ़ि॥
तेहि सरवरमें करि असनान। तीनोंभये सचेतसप्रान॥

जबतीनोंसचेतहोगये तब तीनस्त्रियांपरमसुन्दरी रत्नजटित वस्त्रधारण कियेहुए वहांआईं और बोलीं कि हम तीनों माया रूपीअप्सराहैं और यहबन और सरोवर मायाकृतहैं आपमाया कृत देशाधिप होकर अकेले फिराकरतेहैं इससमय बहुरूपिये आपको मारेडालतेथे हमउठालाये यह सुनकर महेन्द्र लज्जित हुआ और सैंध्रसे बोला कि मेरीप्रतिष्ठातो जाचुकी क्योंकि सब देशमें यह बात फैलजायगी कि वह बहुरूपिया मायाकृत देशाधिपको मारे डालताथा इससे अबआपतो यहां इस बन में बिहार कीजिये और मैं जाकर उपहासको पकड़ताहूं यह कहकर उन अप्सराओं से बोला कि जब सैन्ध्रजी बनविहार करचुकें तब इनको मेरेपास पहुंचादेना निदान यह तो उधरसे आता है और सैन्ध्र अपनी स्त्री सहित बनविहार कररहाहै परंतु यह चपला आदि बहुरूपिये जो भागकर सभामेंगये तो उन्हों ने प्रहाससे सब वृत्तांतकहा उसने जोसुना कि सेना सूनी है सैन्ध्र आदि सब पृथ्वी में समागयेहैं तुरंत सब बहुरूपियों को लेकर बनमेंआया और वहां उसने अपनारूप सैन्ध्रकासा बनाया चपलाको सुमुखीकारूप धराया और प्रचण्डको सेवककासा रूप बनाकर वहांसेचला और शत्रुसेनामें पहुंचा उनको देखकर सब म्लेच्छ दौड़े और बहुत प्रसन्नहुये सबनेभेंटेंदीं और न्योछावरें कीं तब प्रहास सभामेंजाकर बैठगया और अपने सब सेवकोंको बुलाकरकहाकि मेरा सबधन और कोष लाकर इकट्ठाकरो में उसे लेजाकर कहीं छिपादूं कहीं ऐसा न हो कि बहुरूपिये आकर लेजायँ यह आज्ञापाकर सब सेवक धन वस्त्र और कोषके सन्दूक लेआये और विनय पूर्व्वक बोले कि सब कोष एकत्रकरदियाहै यहां लानेमें परिश्रमहोगा वहीं चलकर

सब लेलीजिये प्रहास वहांगया और सबको हटाकर उसने जालमारकर सब कोष और धन अपनी थैलीमें डाललिया और फिर उन सेवकोंको बुलाकर बोला कि इन सन्दूकोंमें कंकड़ पत्थर भरदो जिससे प्रहास धन जानकर जो इनको ले भी जाय तो बहुत पछिताय यह आज्ञापाकर सब सेवक उनमें कंकड़ पत्थर ठिकड़ी और रोड़े भरनेलगे निदान जिससमय प्रहास यह प्रबन्ध यहां कररहाथा उससमय सैन्धने प्रहासके चित्रको देखा क्योंकि जब महेन्द्र ने प्रचण्ड आदिको पकड़ा था तबप्रहासका चित्र उनसे छीनलियाथा और उस वनमेंजब वह चैतन्यहुये थे तब महेन्द्रने उस चित्रको सैन्धको देदिया था और आप उपहासके पकड़नेको चलाआयाथा निदान उस समय जो उसने प्रहासकाचित्र देखा तो उसको विदितहुआ कि प्रहास मेरास्वरूप धारण करके मेरेधनको लूटरहाहै यह जानतेही उसने उनमायानिर्मित अप्सराओंसे कहा कि हमको सेना में शीघ्र पहुंचादो वे उन दोनोंको एक वनमें लेआईं और बोलीं कि जाइये आपकी सेना वह सामनेदिखाईदेती है तब सैन्ध अपनीस्त्री सहित मायाबलसे उड़ा और अपने डेरोंके पास आ कर पुकारा कि ठहरोतो छलियोमैं आपहुंचा यहसुनतेही चपला और प्रचंड तो छलांगमार मारकरभागे सैन्धको चित्रके कारण से प्रहासका हाल तो मालूमहोगयाथा परंतु और बहुरूपियोंके आनेका वृत्तांत न जानताथा इससे वे दोनों तो भागगये परंतु प्रहासपर ऐसी मायाकरदी कि वह न भागसका उसके पैरों को पृथ्वी ने पकड़लिया इसप्रकारसे प्रहासको स्तंभितकरके वह अपनी सभामें आया और सेवकोंको संदूकोंमें कंकड़ पत्थरभरते हुए देखकर बड़ाक्रोधितहुआ और सबको निकालदिया और अपना सब धन और कोषलुटाहुआ देखकर प्रहाससे बोला कि देख तो मैं तेरीक्यागति बनाताहूं और चांडालको बुलाकर आज्ञा

दी कि शीघ्र इसका शिर काटडाल चांडाल शिर काटनेको उप-स्थितहुआ तब प्रहास अपनेचित्तको एकाग्रकरके परमेश्वर से बिनय करनेलगा उससमय चपला जो भागकर गया तो बन में पहुँचा और वहांउपहाससे मिलकर सबवृत्तांतकहा और बोला कि गुरूजी पकडेगयेहैं यह सुनकर उपहासने तुरंत अपना स्व-रूप महेन्द्र कासा बनाया अर्थात् मोतियोंसे अलंकृत कीट और मुकुट धारण किया मोतियोंकी माला गलेमें डाली और रत्न-जटित बस्त्र पहिरे और मायाकर्ताओंके चित्र भुजाओंपर बांध कर चपलासे बोला कि तुम बनके सिंहकासारूप बनाओ प्रकट हो कि इस चपला बहुरूपियेके पास सिंह और व्याघ्र और मृग और श्वान आदि पशुओंके चर्म घुंडीलगेहुए बहुतसे रहाकर-तेथे यह बहुरूपिया पशुका रूप बड़ाही अपूर्व धारण करताथा एकसमय जब महाराज शत्रुंजय और नागेंद्र मायावी म्लेच्छ-पतिसे युद्धहुआथा तब यह चपला नागेंद्रके यहांका बहुरूपिया था और कुत्ता बनकर प्रहास और बहुतसे सेनापतियों को पकड़ लेगयाथा और उसको किसीने नहीं जानाथा उपरांत जब नागेंद्र मारागया तब चपला पकड़ागया उससमय उसने बैष्णवमत स्वकारकिया और प्रहासका शिष्यहोकर बैष्णवीसेना में रहने लगा और अबतक रहता है निदान उसने सिंहका चर्म धारण करके घुंडियां लगालीं और उनको बालों में छिपा दिया और हाथ और पैरोंको सिंहके हाथ और पैरोंके चर्म में डालकर नख लगे पंजोंसे खड़ाहोगया और शिर अपना सिंहके शिरके चर्म में डालकर ऐसा सिंहका रूपधारण किया कि उसको देख-कर सब बनके सिंह और व्याघ्र पलायमान होजायँ॥

दो०। चपलासमचमकत नयन गर्जनघनसमघोर।
धरयो सिंहकोरूप तेहि भयकर प्रबलअथोर॥

जब इसप्रकारसे तयारहोचुका तबउपहास उसकेऊपरसवार

होलिया और वह उसको लेकर सैन्धकी सेनाकीओर चला जब सेनामें पहुंचातब उसकोदेखकर सबम्लेच्छ उसकासन्मानकरने को खड़ेहोगये और चांडालभी प्रहासका बधकरने से रुकगया और सैन्धभी महेन्द्रकाआगमनसुनकर दौड़ा और सत्कारकरके उसको सभामें लेगया और बोला कि बहुतश्रेष्ठहुआ जो आपआगये मैंने इसछली बहुरूपिये को पकड़कर इसकाबध कराना बिचारा है यहसुनकर महेन्द्ररूपी उपहासने कहा कि आपअपनी माया इसकेऊपरसे उतारलीजिये मैं इसकोअपने सिंहसे भक्षणकरायेलेताहूं यहकहकर वह उससिंहपरसे उतरा और उसकोआज्ञादी कि इसबहुरूपियेको जाकर खाले वहसिंह जो गर्जताहुआ चला जितने देखनेवाले और बधिकचांडाल खड़ेथे सबभयभीत होकरभागे और सैन्धने अपनी माया का संहार करदिया और सिंहने जाकर प्रहासको अपने मुखमें दबा कर उठालिया उससमय भयकेमारे प्रहास मृतकतुल्यहोगया घिग्घी बँधगई और परमेश्वरसे यहप्रार्थना करताहुआ कि मुझको सिंहसे बचा अचेतहोगया परंतु सिंहने उसे न छोड़ामुख से झटका देकर पीठपर लादलिया और मिथ्यामहेन्द्रके सन्मुखलाया उसने कहा कि वहडेरा जोखाली है वहांजाकर इसको खाले और फिर मेरीसवारीको शीघ्रआजा यहआज्ञा पाकरवह प्रहासको उसीडेरेमें लेगया और एकांतपाकर प्रहासको चैतन्य किया और बोला कि गुरूजी भय न कीजिये मैं चपलाहूं और सब वृत्तांतकहा तब तो प्रहासके प्राणोंमें प्राणआये और उसने अपने चेलेको हृदयसेलगाकर कहा कि बेटा यहांमायाकृतदेशाधिपको जोकुछ भेंट इत्यादि मिलै और सैन्धके पास जो कुछहो सबलेना चाहिये चपलाबोला कि अबअधिकलोभ न कीजिये अबकी जो पकड़ेगये तो फिर न छुटसकोगे यहसुनकर प्रहासने क्रोधकरकेकाहा कि अरेनिर्बुद्धी तू मुझसे संतोषीको

लोभी समझता है चपला बोला कि आपक्रोध न कीजिये मैं
जाताहूं आपके धनकीहानि मुझको भी इच्छितनहीं है यहकह
करवहसिंहबनाहुआ उपहासकेपासचलागया परंतु यहांउपहा-
सने सबमान्य म्लेच्छोंको बुलाकरवार्त्तालापकरना आरंभकिया
उससमय सैन्धने मद्यपानकरानेवालेसे इशाराकिया उसनेपान
पात्रमें मद्यभरकर उपहासकोदी उसने आंखबचाकर उसमें मू-
र्च्छाकरचूर्ण मिलादिया और वहपानपात्र सैन्धको दिया कि
प्रथमआप पानकीजिये आप मायाकर्ताके पौत्र हैं यहसुनकर
सैन्ध उसपानपात्रकोलेकर मद्यपीगया तब उपहासने मद्यका
पात्र अपनेहाथमें लेलिया और कहा कि आजप्रहासके बधकी
प्रसन्नताके कारणसे मैं अपनेहाथसे सबको मद्यपान कराऊंगा
और उसपात्रमें बड़ीचंचलतासे मूर्च्छाकरचूर्णमिलाकरसबको
मद्यपान कराया थोड़ीदेरमें मूर्च्छाकर चूर्णने अपनागुण प्रकट
किया और सबम्लेच्छ आपसमें लड़तेभिड़तेहुए अचेतहो-
गये उससमय उपहासने खड्ग निकालकर दो चारके शिरकाट
डाले उनके मरनेसे बड़ा कोलाहल प्रकटहुआ और सेनाके
लोग कुछतो भागे और कुछ सभाकी ओर दौड़े कोलाहल जो
हुआतो प्रहास म्लेच्छरूप धारण कियेहुए उसडेरेसे निकला
और पकड़ियो पकड़ियो कहताहुआ सभामेंघुसगया औरजाल
मारकर सब असबाब लूटनेलगा और चपलानेलटमारकर सिं-
हचर्मको उतारडाला और वह और उपहास दोनोंअपनाअपना
नाम बखान करके भागे और प्रहासभी रत्नआदि जो कुछपदार्थ
थे सबको लूटकर अपना नाम सुनाताहुआ भागा और सैन्ध
पर इसकारण से हाथ न डाला कि इसकी मृत्युतो अभीहै नहीं
कहीं किसी आपत्तिमें न पड़जायँ निदान सब लूट मारकरके
भागगये और म्लेच्छोंने वहां आकर सैन्धको चैतन्यकियाउस
ने उक्तदशाको देखकर अपना शिर धुना और इच्छाकी कि बहु-

रूपियोंको पकड़नेजाऊं परन्तु उसकी स्त्रीने निषेध किया कि ये बहुरूपिये बड़े प्रबलहैं इनका पीछाकरना अच्छा नहींहै उसके निषेधसे वह रुकगया और अपनीसभाको फिरसे नवीनपदार्थों से युक्त करके बैठगया और बहुरूपिये भागकर अपनी सेनामें गये और वहां सभामें जाकर सब वृत्तांत रानी निशाकरीआदि से कहा उसको सुनकर सब बड़े आनन्दसे हँसने लगे और आनन्द मङ्गलमनानेलगे नाचहोनेलगा उपहासतोवनमें चला-गया और और बहुरूपिये अपनी अपनी कृत्य करनेलगेअर्थात् कुछ छल करनेका उद्योग करनेलगे अब महेन्द्र जो उपहासको पकड़ने चलाथा उसने बिचारकिया कि पहिले अद्भुत जालकी पुस्तकमें उसका हाल देखलूं तबचलूं यह बिचारकर वह बदरी उद्यानमें आया सबने उसका सत्कार किया और वह आकर सिंहासनपर आसीन हुआ वहां वहदासीभी बैठीहुईथी जिस को प्रहासने सैन्धकी स्त्री बनाकर भेजाथा उसको महेन्द्रनेआज्ञा दी कितू यहांसे निकलजा तब वह निराश होकर चली आई और भिक्षा मांगकर अपना निर्वाह करनेलगी कुछ कालपीछे एक म्लेच्छने उसको अपने घरमें डाल लिया अब सुनिये कि वहां जाकर महेन्द्रने अद्भुत जालकी पुस्तक देखी और उससे उसको बिदित हुआ कि उपहास मेरा स्वरूप बनाकरगया और सैन्धको लूटकर और म्लेच्छोंका बधकरके चलागयाइस समयबनमेंहै यहदेखकर उसनेचाहा कि जाकर पकड़ूं परन्तु बि-चित्रमाया उसकी जानेकी इच्छा देखकर पूछनेलगी कि आप कहां जानेवालेहैं उसने अपने मनका सङ्कल्प प्रकट कियातब वहबोली कि बहुरूपियोंके पीछेपीछे डोलना श्रीमहाराजकेयोग्य कर्मनहींहैइससे आपविराजमानरहैं इनबहुरूपियोंके पकडनेका कुछ उपाय कियाजायगा यहसुनकर महेन्द्रकुछ समझबूझकर थमगया और उत्तमवारुणीको पानकरके अपने चित्तकोस्वस्थ

किया औरनृत्यहोनेलगा परन्तुउसीसमय मायाकुलहम्लने एक पत्रलाकरदिया उसपरउसमिथ्या ईश्वरअकुतके हस्ताक्षरबनेथे महेन्द्रने उसको देखकर अपनी आंखोंसे लगाया और खोल-कर जो पढ़ा तो उसमें लिखाथा कि हे मदोन्मत्त मायादेशाधिप तैंने अपने परमेश्वरके कार्यकरने में बड़ीअचेततार्की है परमे-श्वरको उनके स्वभावस्थाके उत्पन्नकियेहुए जनबड़ा खेददेरहे हैं और तुझसे कुछनहींहोसकता है क्या परमेश्वरने तुझको इसीदिनकेलिये उत्पन्नकिया था और मायावी म्लेच्छोंका राजा बनाकर तुझकोमायाकृत देशका राज्यदिया था कि तू अपनेप-रमेश्वर की खबरतक न ले अबइसपत्रके देखतेही यातो किसी महान्मायावीको शत्रुंजयसे युद्धकरने के लियेभेज नहीं तो उत्तर लिखभेज कि मैं सहायता न करूंगा जिससे परमेश्वर नेरीकर्म रेखाको मेटकर अपने किसीदूसरे उपासकको बुलावें अथवा आपही वहांचलेजायँ यह पढ़कर महेन्द्र अपनेपरमेश्वर का अपनेऊपर कोपदेखकरकांपनेलगा और उसीसमय उसनेकुछ मायाकी कि उससे अंधकारहोगया और थोड़ीदेरमें अंधकार दूरहोनेपर आकाशमें एकबादलप्रकटहुआ और वहपृथ्वीपर उतराउसपरदोम्लेच्छ कृष्णवर्ण भयंकररूपसवारथे और उनके सबशरीरसे अग्निकी ज्वालानिकलतीथी निदानदोनों उतरकर महेन्द्रके सन्मुखआये और उसको दण्डवत् करके खड़ेहोगये उसने आज्ञादी कि हे दंड और हे संडतुम दोनों अपने देशसे बड़ीसेना लेकर परमेश्वरके पासजाओ और उनके शत्रुओं का विध्वंसनकरो और एकपत्रभी लिखकर उनको दिया उसमें लिखाथा कि हेपरमेश्वर निस्संदेहमुझ सेवकसे अपराधहुआ उसकोआपक्षमाकीजिये मैं अपने चित्तसेआपकीसहायता और आपकी आज्ञाकापालनकरने को तैयारहूं दो म्लेच्छ बड़ेमाया-वीआपकेपासभेजेजातेहैं ये आपके विमुखजनोंको नाशकरदेंगे

निदान वेदोनों म्लेच्छ उसपत्रको लेकरअपने देशमें आये और सेनाको तैयारहोने की आज्ञादी आज्ञाहोतेही एकलक्षम्लेच्छ सबसेनापतियोंसहित नानाप्रकारके अग्न्यास्त्रलेकरबड़े२ नागों परसवारहोकरतैयारहुए युद्धकेवाद्यबजनेलगे औरदंड औरसंड नामीम्लेच्छभी सर्पजुतेहुए मायाकृतविमानपर सवारहोकर सब सेनासहित रत्नाकर पर्वतकीओर चलदिये उनके चलने से पृथ्वी कँपनेलगी और आकाशमें काली कालीघटाएँ छागईं ॥

जय०छंद। दंडसंड दोऊ बरवीर। संगलिये योधारणधीर ॥
महाभयानकमहाकुभेस। जिनकेनहीं दयाकोलेस॥
दीर्घदन्तचखकायमहान। शतविंशतहयजासुप्रमान॥
मायाकृत विमानआरूढ। युधहितचलेमहामतिकूढ॥

निदान इसप्रकारसे तैयारहोकर वेरत्नाकरपर्वतके समीपजा पहुंचे वहां वह मिथ्याईश्वर अर्थात् अद्भुत नास्तित अपनी सभामें मिथ्याईश्वरीय सिंहासनपर बैठाहुआथा कि अकस्मात् विद्युच्छटाहुई और बादलकी गर्जना सुनाई पड़ी ॥

जय०छंद। प्रकटे घन कारे आकाश। चमकत चपलाकरतप्रकाश।
नभमें नाचततेचहुंओर। गर्जत प्रलयकाल समघोर॥

यहदेखकर अद्भुतने पुकारकरकहा हमाराकोई मुख्यजनआता है यह सुनकर चित्रांगद और राजा महावीर दोनों उठकरबा-हिर आये और देखा कि सहस्रों म्लेच्छ अग्निसम प्रज्वलित सिंह आदि नाना वाहनोंपर सवार चले आतेहैं और दोम्लेच्छ राजाओंके योग्य वस्त्र और आभूषण धारण कियेहुये एकवि-मानपर बैठेहैं और उसमें दोमहानाग अग्नि छोड़तेहुये जुतेहुये हैं यह देखकर चित्राङ्गदने पुकारकर कहा स्वागतम् आपका आना शुभहोय आइयेमेरे गृहको पवित्र कीजिये यहसुनकरवे दोनों म्लेच्छ विमानसे उतरकर चित्राङ्गदसे मिले सेनाउनकी उतरने लगी और नानाप्रकारके वाद्य बजनेलगे इसकेपीछेदोनों

म्लेच्छ चित्राङ्गद सहित सभामेंआये उन्होंने अद्भुतकी पूजा करके दण्डवत्की और भेंटआगे रखकर महेन्द्रका दियाहुआ पत्र दिया उसको पढ़कर अद्भुतबोला कि हमने महेन्द्रकाअप-राध क्षमाकिया और अब हम उसपर अपनी कृपाकरेंगेनिदान वे दोनोंम्लेच्छ उत्तम आसनोंपर बैठगये और मद्यपान और नाच होनेलगा उससमय उनदोनोंने शत्रुंजयकी सेनाका हाल पूछा कि वे कैसे परमेश्वरके जनहैं कि ऐसा अपराध करनेपरभी परमेश्वर उनका नाश नहीं करतेहैं चित्रांगद बोला कि परमे-श्वरकी गुप्तवार्ताहै इसको जो जानना चाहताहै वह शीघ्र नष्ट होजाताहै मैंतो इतना जानताहूं कि शत्रुंजय दिनभर परमेश्वर से लड़ताहै और आधीरातकेपीछे एक गर्तमें जाकर मनुष्यकी दृष्टिसे अदृश्यहोकर उलटा लटकजाताहै और शरणागत शर-णागत पुकारताहै तब परमेश्वर उसके पिछले दिनके सबअप-राधोंको क्षमाकरदेतेहैं और प्रातःकाल होतेही फिर उपद्रवकर-नेलगताहै दूसरेपरमेश्वरनेइनमनुष्योंकोमदोन्मत्तहोनेकेसमय उत्पन्न कियाथा इससे इनकाकाल लिखना भूलगये अबअपना लिखा आप मेटना नहीं चाहतेहैं इससे उनकी इच्छाहै किइन को किसी अपने बलवान् जनसेवध कराकर इनका नाशकरदें यह सुनकर वे म्लेच्छ भयभीतहुए और उन्होंने कहा कि जब परमेश्वर शत्रुंजयका अपराध नित्य क्षमाकरदिया करतेहैं तब हम उससे क्योंकर जयपासक्ते हैं चित्रांगद बोला कि तुमडरो मत परमेश्वरने कहा कि अबमें उसका अपराध क्षमा न करूंगा और तुम उसको जयकरोगे यह सुनतेही अद्भुतने पुकारकर कहा किहे मेरेसेवक मैं तुझको अपनी कृपा दृष्टिसे देखताहूंअब मैं तेरेहाथसे सब शत्रुओंका वध कराऊंगा और तुझकोवरदान दूंगा यह बात अपने परमेश्वरके मुखसे सुनकर उन दोनोंम्ले-च्छोंने लम्बी दण्डवतेंकीं और बहुत प्रसन्नहुए इसमें वह दिन

व्यतीतहोगया और मायावी म्लेच्छरूपी समयने संसाररूपी मायाकृत देशमें रात्रिरूपी अंधकार करदिया और आकाश में मायाकृत चमत्काररूपी तारागणोंको फैलादिया ॥

दो०। होत निशाके तेहिसमय निकसे उडुगणभार।
तिनिसहइन्दु अकाशमें कीन्हप्रकाश अपार ॥

उससमय उन दोनोंम्लेच्छोंने कहा कि हमारेनामसे युद्धके वाद्य बजाये जावें यह आज्ञाहोतेहीं मानुषीऔर मायाकृत नाना वाद्य बजने लगे उनकेशब्दसे आकाश गूँजने और पृथ्वीथर्राने लगी ॥

दो०। बजत दुन्दुभी आदिबहु बाजे रवकर घोर।
महाघोर दुस्सह परम छायोतिनको शोर ॥

उस शब्दको सुनकर वैष्णवी सेनाकेदूत जो भेष बदले हुए वहांके समाचार लानेको गयेथे वे लौटकर वैष्णवी सेनामेंआये और भास्करी सभामें जाकर श्री महाराजाधिराजसे परम बिनय युक्त होकर बोले ॥

दो०। हे सहस्र श्री पति नृपति हे भूपन के ईश।
रणमें लहिअरि होति तव जगजयबिस्वेबीश ॥

श्री महाराजाधिराज दो मायावी म्लेच्छ दण्ड और सण्ड नामी आये हैं उन्होंने युद्ध के वाद्य बजवाये हैं यह कहकर दूत तो चलेगये और श्री महाराजाधिराज ने महाराज शत्रुंजयकी ओर देखा उन्होंने महाराजाधिराजके मनवृत्तिकोजानकर आज्ञादी कि हमारी सेना में महा दुन्दुभीआदि युद्धकेवाद्य बजाये जावें क्योंकि जो कुछ कि भविष्य हम सबके निमित्त ईश्वर ने रचाहै वह अवश्यहोगा उसको उल्लंघनकरनेकी किसीको सामर्थ्य नहीं है यह आज्ञापाकर सुवासने वाद्यालय खोला और महा दुंदुभीको बजाना आरम्भकिया उसकाशब्द सर्वत्र पूर्ण होगया और सब योद्धाओं को बिदितहुआ कि कलयुद्ध होगा

और सबकोई कहनेलगा कि श्रीविष्णुभगवान् हमसबकीलज्जा इन मायावी म्लेच्छोंसे भी युद्धकरनेमें रखले निदान महाराजाधिराजने सभाको विसर्जनकरके आज्ञादी कि सबसेना युद्धकी तैयारी करे यह आज्ञापाकर सब शूरवीर युद्धकी तैयारी करने लगे चारोंओर अस्त्रोंके निकालने और रखने और पैनाने का शब्द होनेलगा उससमय शूरवीर अपने २ अस्त्रोंको ले लेकर वीररससों भरेहुए इस प्रकारके नाना वाक्य बोलते थे॥

तोमरछंद। यह खड्ग मम अति घोर। बध करत शत्रुनि ओर॥
ये विशिख मोर कराल। अरिबधत जिमिडसिव्याल॥
यह गदा गुरु अति चण्ड। लगिकरति अरिशिर खण्ड॥
यह परम तीक्षण भल्ल। छेदत अरिन के दल्ल॥

निदान रात्रिभर दोनों सेनाओं में युद्धकी तैयारीरही कोई शस्त्र निकालताथा कोई पैनाताथा और कोई पैनाकर बांधता था और जो मायावीशत्रु सेनामें थे वे अपनी मायाके प्रयोग सिद्ध करते थे इसीप्रकारसे वहरात्रि व्यतीतहुई और मयूररूपी सूर्य प्राचीदिशा रूपी घोंसलेसे निकलकर नेत्ररूपी प्रकाशसे देखता हुआ आकाशमें उड़कर आया और निशारूपी कालेव्याल को भक्षण करके संसारमें प्रकटहुआ अर्थात् सूर्य उदय हुआ और वह अपने तेजसे संसारमें व्याप्त होगया॥

दो०। प्रभा तेज अरु कांति युत निकस्यो भानु अकाश॥
अन्धकार को दूरि करि कीन्हो जग सु प्रकाश॥

प्रातःकाल होनेपर सबसेना रणभूमिको सजकरचली और महाराज शत्रुंजय ने नित्यक्रियाकी और उससे निवृत्त होकर सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्र धारणकिये और सब सेनापतियों सहित श्री महाराजाधिराज के शयन मन्दिरपरगये वहां श्री महाराजाधिराजभी निद्राको त्यागकर उठे और श्री विष्णु भगवान्की पूजा

और ध्यान करके और अस्त्रशस्त्रोंको धारणकरके रणभूमि में जाने को सन्नद्धहुए॥

चौ०।भूप प्रात उठि करि असनाना। नित्यकर्म करि दीन्हेउ दाना॥
तदुपरि मँगवाये सविधाना। अस्त्र शस्त्र भूषण पट नाना॥
मणि मुक्तनसों जटित सम्हारे। क्रीटमुकुट कुण्डल शिर धारे॥
अम्बर अमल नवीन वनाये। धारण किये सुपरम सुहाये॥
सुन्दर गजमुक्तन की माला। विचविच पन्ना पुहे सुआला॥
कंचन कृत डोरन सों पोही। धारण करी सुसुखमा वोही॥
वज्र लोह निर्मित मन भायो। खड्ग अनूप सुपरम सुहायो॥
अतिगुरु अति अभेद्यअतितीछन। हेममुष्टिसह लायक वीछन॥
कंचन कोष मध्य गत कीन्हो। कटिसों वांधि ताहि नृप लीन्हो॥
चर्म अभेद्य अनूप सुहाई। कंचन फूलन जटित वनाई॥
धारण कीन्ह ताहि नृपराजा। साधनहेत सुरणको काजा॥
धनुष कठोर अभेद्य सुहायो। कनक मुष्टियुत सुभग वनायो॥
जापर कंचन वेलि सुहाई। कनक पुष्पसह सुथर वनाई॥
शत्रुदाप कर चाप अनूपा। धारण कियो ताहि सो भूपा॥
कनक पुंख नाराच ललामा। चारु निषंग भरे अभिरामा॥
लीन्हे नृपति वीर वर योधा। करिको सकत तासु अवरोधा॥
इमि शस्त्रन को धारण कीन्हे। दासी दास वहुत सँग लीन्हे॥
जिनकर सुन्दर रूप ललामा। भूषण वसन धरे छवि धामा॥
मन्दिरतें कढ़ि वाहिर आयो। लखि सबकेउर आनँद छायो॥
उठिउठि सब लैलैं निज नामा। कीन्हो ताको दण्ड प्रणामा॥
तव्सो नृपति वीर रस छायो। निजचढ़िवेको गजमँगवायो॥
ऐरावत वंशज जो गायो। महा वलिष्ट सुपरम सुहायो॥
दीर्घ दन्त अति दीरघ काया। करि विशाल मदमत्तसुहाया॥
छत्र सहित हौदा छवि धामा। जापरलगी सुध्वजा ललामा॥
तापर चढ़्यो भूप वर योधा। वज्रपाणि समलख्यो सक्रोधा॥
सुनत स्वस्त्ययन तहांद्विजन सों। चल्यो भूप भिरिवेअरिगनसों॥
रथी गजी हय सादी योधा। चलं तासु सँग उर नहिंक्रोधा॥
वाजत वहु गह गहे निशाना। भांति भांतिको करैवखाना॥

पढ़त वीर रसपद कवि राजा । सुनिसुनिसो सबवीर समाजा ॥
चलेजात लहि रण उत्साहू । गर्जत तर्जत सहित उछाहू ॥
यहि विधि सहित सेनसो भूपा । पहुँचो जहँरण भूमि अनूपा ॥
उतते अद्भुत मिथ्या ईशा । चल्योसाजि निजसैनअनीशा ॥
अगणित मायावी नरयोधा । चलेतासु सँग करिकरि क्रोधा ॥

दो० । कंचन चौकी सुथरपर कंचन मण्डप छाय ।
गज गणपै कसवाइ तेहि बैठो अद्भुत जाय ॥

चौ० । भृष्टधर्म सो महा अपावन । बनि त्रिलोक को ईश उपावन ॥
रंग भूमिमें पहुँचो आई । लिये संग दुर्जन समुदाई ॥
तेहि अवसर दोऊ दल माहीं । भई व्यूह रचना तेहि ठाहीं ॥
मधिमें नृपनिराखिसब योधा । रणहित सन्नधभये सक्रोधा ॥
तेहि अवसर पर दलके बीरा । परमसुमायावी रणधीरा ॥
पढ़िअशौच मन्त्रनिकोंचावन । निजमायाबललगे दिखावन ॥
कोऊ करत अग्निकी वर्षा । वर्षावत जल कोउ सह हर्षा ॥
प्रकट करत कोऊ जल धारा । कोऊ प्रकटत नाग अपारा ॥
कोऊ उर में गहें सुहर्षा । प्रकटत सिंह व्याघ्र दुर्धर्षा ॥
यहि प्रकार माया दरशाई । व्यूह मध्य जब पहुँचे जाई ॥
तब दोऊ दल के कवि राजा । दलसों कढ़िके सजोसमाजा ॥
बोले बचन सुनो हे बीरा । बड़े भाग रण पायेउ धीरा ॥
रण शूरता सुयश सम भाई । नहिं जगदूसर कछु प्रभुताई ॥
ताते रण विक्रम करि भारी । लेहु सुयश अरिदलको मारी ॥

दो० । यहसुनि मायावी परम दण्ड म्लेच्छ बरबीर ।
शत्रुञ्जय महराज सों बोल्यो इमिरणधीर ॥

सो० । हे शत्रुञ्जय बीर हों रणहितठाढ़ोयहां ।
को अस है रण धीर जो मोसन संगरकरै ॥

यह सुनतेही महाराज शत्रुञ्जयका पुत्र चण्डविक्रम नामी अपने अश्वको चपलकरके उसके सन्मुखगया और बोला कि प्रहारकर तब दण्ड पृथ्वीपर गिरकर एक महानाग बनगया और मुखसे अग्निकीज्वाला छोड़ताहुआ चण्डविक्रमकी ओर चला उसनेउससर्पके अनेकबाणमारे परन्तु जोबाणजाताउसके

मुखकी अग्निसे भस्महोजाताथा तब राजपुत्र खड्गलेकर उसपर दौड़ा परन्तु उस महानागने अग्निकी ज्वाला छोड़कर अपना श्वासखींचा और वह श्वाससे खिंचताहुआ उसनागके मुखकी ओर चला उससमय राजपुत्रने बहुतसा बलकिया परन्तु वह श्वास ऐसा प्रबलथा कि किसीप्रकारसे रुक न सका और उस नागके मुखमें चलागया उसको निगलकर वहनाग अपनीसेना में चलागया और वहांजाकर उसने राजपुत्रको उगलदियारा-जपुत्र अचेतथा उसको कारागृह का स्वामी उठाकर लेगया और उसने कैदकरलिया और दंड फिररणभूमिमेंआकरयुद्धके लिये बुलानेलगा तब वैष्णवीसेनासे राजपुत्र भीष्मविक्रम जो भीमविक्रमकापुत्र और महाराज शत्रुंजयका पौत्रथा उसके स-न्मुखगया दंडने उसीसमय एकफूलोंका गुच्छाराजपुत्रकेसन्मुख करके कुछमायाकी कि फूलखिलगये और उनमें से एकअप्सरा प्रकटहुई और वहबहुतहँसी राजपुत्रउसकोदेखकररोनेलगाऔर रोते रोते अचेतहोगया तबउसम्लेच्छने उसकोभी बांधकरका-रागृहस्वामीकोदेदिया और आपरणभूमिमें स्थितहोकर युद्धके लिये बुलानेलगा तबवैष्णवीसेनासे इन्द्रविक्रमका पुत्र राजपुत्र इन्दुविक्रम युद्धकी आज्ञालेकर उसम्लेच्छके सन्मुखगया उस कोदेखतेही दंडने कुछमायाकी कि उससे प्रथम तो प्रचंडवायु चली और फिरपृथ्वीमेंसे एक स्त्रीपरमसुंदरी मनोहर हास्यमृग-नैनी कोकिलबैनी निकली और उसने राजपुत्रके समीपआकर कहा कि हेराजपुत्र तुमहमसे प्रीतमाननहींहो यहसुनतेही इन्दु-विक्रम घोड़ेपरसे उतरपड़ा और उसके समीपगया उसनेराज-पुत्रको अंकभरकर कंठसेलगाया परंतु कंठसेलगातेही राजपुत्र अचेतहोगया उससमय वहमायाकृत नारीतो फिर पृथ्वीमें समा गई और दंडने उसराजपुत्रकोभी पकड़कर कारागृह स्वामीको देदिया और फिर रणकेलिये वैष्णवी सेनाकेयोद्धाओंको प्रचार-

नेलगा तबवैष्णवीसेनासे दूसरा राजपुत्रगया और उसको भी उसने उक्तप्रकारसे कैदकरलिया इसप्रकारसे एक २ करके एकसौबीस सेनापति और राजपुत्र वैष्णवी सेनाके कैदहोगये उस समयचित्रांगदने दूतभेजकर दंडसे कहलाभेजा कि अबशत्रु सेनाको घेरकर विध्वंसनकर क्योंकि शत्रुंजय महामंत्रकाज्ञाता है जो वहयुद्धके निमित्तआवैगा तो कुछ न बनपड़ैगा यहसुन कर दंडने सबमायावीम्लेच्छों को ललकारा और कहा कि इन सबशत्रुओं को घेरकर इनकाबधकरो यहसुनतेही म्लेच्छों की सेनानेधावाकिया इधरसे वैष्णवीसेनाभी चली और दोनोंसेना आपसमें भिड़कर युद्धकरनेलगीं उससमय महाराजाधिराजने हाथीपरसे शत्रुओंपर बाणवृष्टिकरना आरम्भकिया और महाराज शत्रुंजय आदि शूरवीर खड्गनिकालकर म्लेच्छोंकीओर गये और गर्ज गर्जकर उनका बधकरनेलगे चारोंओर हाहाकार मचगया और प्रलयकालकासा कोलाहलहोनेलगा यहदेखकर म्लेच्छोंनेमायाकी कि उससे आकाशसे सर्पगिरगिरकरवैष्णवीसेनाके योद्धाओंको काटनेलगे जिसको वेसर्पकाटतेथे वहीपानी होकर बहजाताथा॥

जय०छंद। मायावी म्लेच्छन तहँआय। सैन वैष्णवी घेरीजाय॥
करि करिबहुमायातेहिथान। चहुंदिशिकरीउपाधिमहान॥
तिनसों घिरीसैन नरनाहु। ग्रसत चन्द्रमाकोंजिमिराहु॥
व्यथितभई तासों सबसैन। भीतभरी हियसों गतचैन॥
सव्यओर जबचली पराय। देखे आवत अहिअतिकाय॥
चले वामदिशिको जबभाग। आवत लखे सहस्रननाग॥
चले पृष्ठदिशिजब मुखमोड़ि। लखेसिंह बहुआवत दौड़ि॥
यहिविधिजेहिदिशिचलेपराय। तेहिदिशि देखनिईबलाय॥
पूर्व उक्त मायाकृत व्याधि। तेहिक्षणहुइसमीपसबआधि॥
पीड़ित करतभई सबसैन। भई सैन सबमहा अचैन॥
नागन डसे सहस्रनवीर। सिंहनखाये अगणितधीर॥

दो०। यहलखि शत्रुंजय नृपति पढ्यो वैष्णवी मंत्र।
नशनलगे तासों सकल माया उन्नवतंत्र॥
सो०। होय म्लेच्छभयभीत थरथरान लागेसकल।
शत्रुंजय तिनजीत पढ़तमंत्र लागे भ्रमन॥
जय०छंद। शत्रुंजय जितकीन्हो गौन। तितकी माया मिटीसुतौन॥
परिजितगयो नहीं सोभूप। नशी न तितमाया दुखरूप॥
यहलखिभूपतिकियोविचार। खड्ग बासवीलियो निकार॥
महामंत्रसों मंत्रित कीन। तबसो भयो तेजमें लीन॥
भूपति तबकरि ऊरधताहि। भूमितकियोनभमेंजयचाहि॥
सहसनचपलासदृशअमान। तासों कढ़ो सुतेज महान॥
गयेतेजसो सबदिशि पूरि। भई म्लेच्छ मायासबदूरि॥
भस्मितभयोम्लेच्छसमुदाय। करतरह्यो जो मायाभाय॥
जरेसकल मायाकृत नाग। भस्मित भयेसिंह अरु बाघ॥
सैनिक विष्णुहिनावतशीश। बोलतजयतिजयति जगदीश॥
सकलदिवसइमियुद्धकराल। रह्यो भयो पुनि सायंकाल॥
तारागण तब उगे अकाश। नभगतइन्दुहु कियो प्रकाश॥
दो०। तबश्री शत्रुंजय नृपति जय दुंदुभि बजवाय।
लगेलरन तब शत्रुसब भगेसभय अनखाय॥

जिससमय सूर्यरूपी राजा पराजितहोकर पश्चिम दिशाको भागा और चन्द्रमा तारागणरूपी सेनाको लेकर नभरूपी रणभूमिमें आया उससमय अद्भुतकी सेनामें युद्ध निवृत्त करनेके बाद्य बजनेलगे और दोनोंसेना लौटकर अपने २ डेरोंकोचलीं चलते समय दंडने पुकारकर कहा कि हे वैष्णवो आजमें शत्रुंजयके महामंत्रके तेजको हरण करके तुम सबका बध करूंगा नहींतो यहां आकर परमेश्वरकी पूजाकरो यह सुनकर वैष्णवीसेनाके शूरवीरोंने उस मिथ्या ईश्वरके नामपर अनेक दुर्वचन सुनाये उससमय महाराज शत्रुंजय अपने पुत्र और सेनापतियोंके पकड़ेजानेके कारणसे म्लानचित्तहोकर अपने डेरोंको आये सबसेनाने आकर कमरखोली और आहारादिक किया

की और जो योद्धा मारेगयेथे उनका ऊर्ध्वदैहिक कर्म कराया और जो घायलथे उनकी चिकित्सा कराई उसदिन श्रीमहाराजाधिराजने सबको श्रमित जानकर रात्रिकी सभा न की और सब अपने अपने डेरोंमें विश्राम करनेलगे और श्रीमहाराजाधिराजभी अपने शयनमन्दिर में चलेगये महाराज शत्रुंजय श्री विष्णुभगवान्‌के ध्यानमें लयहुए और सेना में रात्रिरक्षक फिर डोलकर चौकसी करनेलगे जिससमय सेना लौटकर आतीथी उससमय मार्ग में श्री महाराजाधिराज ने कहा कि एक प्रहासके न होनेसे मायावी म्लेच्छ हमारी सेना के शूरवीरोंको पकड़लिया करतेहैं यहां एकलाख चौरासीसहस्र बहुरूपिये हैं परंतु नामही नामको हैं किसीसे कुछ होनहीं सकताहै यहकहकर श्रीमहाराजाधिराज तो चलेआये परंतु बहुरूपियोंको बड़ी लज्जाआई और उन्होंने आपसमें मंत्रकरके कहा हम चलकर इनदंड और संड म्लेच्छोंका वधकरें और अपने राजपुत्र और सेनापतियोंको छुड़ावें यह कहकर विचक्षण १ सुवास २ तैलंगी ३ और महाराष्ट्री ४ येचारों बहुरूपिये अपने प्रपंचनाकी सब सामग्री लेकर चलदिये यहां अद्भुतने आज्ञादी कि दुर्गके समीप जो परमोत्तम वाटिका है वहां दंड और संड के निमित्त भोग और बिहारका सरंजाम कियाजाय और वह सबप्रकारके अलंकारोंसे ऐसा अलंकृत कियाजाय कि हम आजसे उस बागको बैकुंठ बनादेंगे यह आज्ञापाकर राजा महावीरने उस वाटिका और उसके भीतरकी द्वादशद्वारी को सजाना आरंभ किया और बहुत थोड़ेकालमें उसको बैकुंठकी सदृश बनादिया कोई पदार्थ ऐसा न था जो वहां नथा उससमय उस बागकी शोभा बड़ी मनोहर होगई नानाप्रकार के कमल निर्मल जल से भरे हुए तड़ागों में फूल रहेथे वृक्ष और नानालता फूलीं फलीं और हरी हरी लगीथीं जिसको देखने से यह मालूम

होता था कि वसन्तऋतु के वास करने का यही स्थान है ॥

छन्द। बहुफूल गन्ध अतीवकर तहँ लगे नाना कोगने।
मणिमयी पटरीजासुअसजलधार वरणत नहिंवने ॥
बहुभांति के द्रुम हरे फूले फले गोटा सों मढ़े।
शुचि कौमुदी में परम अद्भुत देत हे शोभा खड़े ॥
बहु विहंग नाना जाति नानावर्ण के तहँ बसतहे।
तेमधुरध्वनिसोंभांतिभांतिनगाननिशिदिनकरतहे ॥
जस बनी शोभा तहांकी सोजाय सब कापै कही।
शुचिगन्ध लीन्हे पवन डोलतरहतनिशिवासरसही ॥
अंगूर बेलि महान सुन्दर हरित शोभासों बढ़ीं।
हीलसति छविसों भरीं तहँते हेमदण्डनिपै चढ़ीं ॥
बहु सुघरसुन्दर नवल मालिनलिये खुरपी हाथमें।
फलफूल तोड़त दूबछीलत फिरत चहुंदिशि साथमें ॥
शुचि फटिक निर्मितजटित रत्ननिसोंबनी रौसेंघनी।
अति दमकशोभा कुंजलाल न जात काहूपै भनी ॥

दो० सुखमा शोभासों भरो शुचि रमणीक महान।
कुंजलाल नहिं कहुंरह्यो जग दूसर असथान ॥

निदान जब वहबाग सम्पूर्णपदार्थों से युक्त और सबअलंकारों से अलंकृत होचुका तब वह मिथ्या ईश्वर उन मायावी म्लेच्छोंसहित वहांगया और सिंहासनपर आसीनहोगया और मद्यपानहोनेलगा उससमय दण्डसे चित्रांगदने कहा कि आप दोनों तो यहां विराजमानहें वहां सेनामें बहुरूपिये आकर सब कैदियोंको छुड़ालेजायँगे यह सुनकर दण्डबोला कि मैं दिनभर युद्ध करनेके कारणसे थकगयाहूँ इससेमैं जाताहूँ भीतरसभामें विश्राम करूँगा और अपराधियोंकी भी रक्षाकरूँगा यहकहकर वह उसमिथ्याईश्वरको दण्डवत्करके सेनामें चलाआया और वहां सभाके भीतर जाकर विश्राम करनेलगा और बागमें उस के भाई के सन्मुख नाचहोनेलगा अब बेचारों बहुरूपिये जो वैष्णवीसेनासे चलेथे उनमें से तैलंगी अपना स्वरूप एकदरिद्री

मनुष्यकासा बनाकर अर्थात् लँगोटीलगाकर नंगेशिर और नंगेपैर उस बागके द्वारपरआया यहां एक उत्सवसाहोरहाथा जितनेमान्यम्लेच्छ बागकेभीतरथे उनकेसाथकेसेवक और दास बागकेद्वारपर जो गृहबनेहुएथे उनमें इकट्ठेथे कोई बागकेभीतर जाताथा कोई बाग से बाहर आताथा कोई मद्यपीताथा कोई अपने स्वामीको उठाहुआ देखकर जललियेहुए दौड़ाजाताथा कोई लाठी और उपानह लेकर जाताथा कोई हाथमें दुशाला लियेथा कोई उसको कंधेपरडालेथा और कोई धूम्रपानकरताथा और सबके शिरपर स्वामीकाचिह्न अर्थात् चपरासेंबँधीथीं पगड़ियां सबकीलालथीं और कमरसे सबवस्त्रलपेटेथे उनमेंसे एक वृद्ध दण्डधर सेवक एकस्थानपर एकान्तमें बैठाथा वृद्धावस्था के कारणसे थकाहुआथा और उससमय उसकाचित्त धूम्रपानकरने को चाहरहाथा परन्तु उससे उठा न जाताथा तैलंगी उसको अकेला देखकर उसीओरकोगया वह तो यह चाहहीरहाथा कि कोई इधरकोआवै इससे उसने तैलंगका जाना स्वागत समझा और विनापूछेताछे कि कौनहै बोला कि बेटा उधरसे थोड़ीअग्नि लेतेआना यहसुनकर तैलंग बोला कि बहुत श्रेष्ठ क्यादण्डधरजी आप धूम्रपानकिया चाहतेहैं आज्ञाहो तो चिलमभर लाऊं और आपके धूम्रपानयंत्र अर्थात् हुक्केमें जल करलाऊंयह सुनकर वहवृद्धदण्डधरबोला बेटा तुम चिरंजीवरहो आओतुम भी धूम्रपान करना यहसुनकर तैलंगने उसके हुक्केमें जलकिया और चिलमलेकर भरनेगया वहांउसने तमाखूमें मूर्च्छाकरचूर्ण मिलाकर चिलमभरी और हुक्केपररखकर उसदण्डधरको दिया वहबोला कि बेटा सुलगाओ तैलंग बोला कि मैं तो धूम्रपान नहीं करताहूँ केवल आपके लियेभरलायाहूँ यहसुनकर वहआशीर्वाददेनेलगा और धूम्रपान जो श्वासखींचकरकिया धूमसुख मेंहीरहा और वहअचेतहोगया तब तैलंगने उसके वस्त्रउतार

कर अपना स्वरूप उसकासाबनाया और उसे उसीके वस्त्रोंमेंल-
पेटकर और और अधिक मूर्च्छितकर कहीं छुपादिया और आप
उसके वस्त्रोंको धारणकरके दण्डहाथमें लेकर बागभीतर चला
गया और वहां सुवर्णके सिंहासनपर अद्भुतको बैठादेखा और
उसके चारोंओर राजकाजी सभासदोंको बैठापाया वहां सण्ड
भी बैठाहुआथा सामने उसके नाचहोरहाथा और सबआनन्द
मङ्गलमेंमग्नथे कि यहभी वहांजाकर सन्मुख खड़ाहोगया उस
समय चित्रांगदने उससेकहा कि आपके भाई अकेले सेनामेंगये
हैं उनकीभी चौकसी रखियेगा और वैष्णवी सेनाके कैदियोंको
भी अच्छी प्रकारसे कैदरखियेगा नहीं तो बहुरूपिये आकर छु-
ड़ालेजायँगे सण्डबोला कि कलिजी आपको शंकाबड़ी रहतीहै
मेराभाई ऐसा नहीं है कि उसके रहनेपर कोई सेनाकेभीतरआ-
सकै और कैदियोंकी ओरदेखसकै वहबोला कि भाई बड़े बोल
मतबोलो मुझे तो आजकी रात्रि क्षेमकुशलसे कटती नहीं दी-
खती है पहिले तो यहां प्रहासथा अबउसके भाई बेटेसब काल
रूपहैं मुझे आज ये सबसभासद बहुरूपियेही जानपड़तेहैं और
येही नहीं किन्तु इसस्थानके द्वार और भीत और वृक्षादि सबप-
दार्थ बहुरूपियारूपही दीखतेहैं भाई अभी समयहै तुम परमेश्वर
की बातपरभरोसा मतकरो कोई ऐसा उपायकरो जिससे तुम्हारे
प्राणबचें यहसुनकर सण्डहँसा और बोला कि हम ऐसे वैसे मा-
याबी नहीं हैं कि हमकोकोई मारडाले तुमदेखना कि मैं शत्रुंजय
के महामंत्रको हरणकरके सब वैष्णवोंका विध्वंसन किये देताहूँ
चित्रांगदबोला कि इनबातोंसेकाम न चलेगा जोमैं कहताहूँ उसे
मानो और अचेत मतरहो निदान उसदुष्टकलिरूपके कहनेसे
उसने अपने भाईको एकपत्र लिखा आशयउसका यहथा कि
भाई अपने रहनेकेस्थान और कैदियोंकेस्थान दोनोंको मायासे
बन्दकरदेना क्योंकि सेनामें बहुरूपिये फैलेहुएहैं यहलिखकर

उसने सामनेको जोदेखा तो तैलंगीको जो दण्डधरका स्वरूप धारणकियेथा खड़ाहुआदेखा उसनेउसकोबुलाकर वहपत्रदिया और कहा कि इसको दण्डके पासलेजाओ और कहभी देनाकि मायाकरनेसे अचेत न रहै बहुरूपियोंका बहुतध्यान रक्खे कि कोई कैदियोंकी ओरजाने न पावै यहसुनकर तैलंगी बहुतप्रसन्न हुआ कि अब अवसर तो अच्छामिलाहै अब मैंने दोनोंको मार लिया यहकहताहुआ वहसेनामें पहुँचा और दण्डकेपास जाकर वहपत्रदिया और कहा कि इसको पढ़कर आपमेरेसाथ एकातमें चलिये तो मैं और भी कुछकहूँगा जोआपके भाईने पत्रमें नहीं लिखाहै किन्तु मुखसेकहाहै उसने अपनेभाईके हस्ताक्षरोंकोप-हिंचानकर पत्रकोपढ़ा और उठकर वहांसे तैलंगके साथसाथ सेनाके बाहरआया जब एकान्तमें पहुँचातैलंगने मूर्च्छाकरचूर्ण उसके मुखपरमारकर उसे अचेतकरदिया और अपना स्वरूप उसकासा बनाकर और उसके वस्त्रउतारकर आपधारणकरके उसे गठरीकी भांतिबांधा और एकवस्त्रसे ढककर उसगठरीको हाथमें लटकायेहुए सभामेंआया वहांआकर उसने सबसेवकोंसे कहा कि तुमहटजाओ भाईने मेरेपास एकवस्तुभेजी है मैं उसको छिपाकर रक्खूंगा वहसबहटगये और उसने दण्डको एकसन्दूक में बन्दकरके उसमें तालालगादिया और फिर सभाकेबाहरआ-कर पुकारा कि कोईहै सुनतेहीं सबसेवक श्रीमहाराज२कहतेहुए दौड़े उनको उसने आज्ञादी कि तुम जाकर कारागृहके स्वामीसे कहो कि सब कैदियोंको यहांलेआवैं क्योंकि मुझको बहुरूपियों का खटकाहै मैंआप बैठकररक्षा करूंगा यहआज्ञापाकर सेवक दौड़े और वह आपभीचला कि सबको कैदसेछुटाकर बाहरसे बाहरही लेजाऊं फिर आकर समझलूंगा निदान उनसेवकों ने जाकर कारागृहके स्वामी से कहा कि श्रीमहाराज कैदियों को मांगतेहैं आपशीघ्र उनको लेचलिये यह आज्ञापातेही कारागृह

का स्वामी कैदियों को माया निर्मित पाश में बांधकर लेचला मार्ग में उसको दण्डका वस्त्राध्यक्ष मिला उसने कारागृह के स्वामी को कैदियों को लेजातेहुए देखकर पूछा कि तुम अपराधियों को कहां लियेजाते हो वह बोला कि श्रीमहाराज ने बुलाया है ये बातें होईरही थीं कि दण्डस्वरूपधारी तैलंग भी वहां जापहुँचा उसको देखकर वस्त्राध्यक्ष चुपहोरहा और सभा की ओर चलागया और उसने कारागृह के स्वामी से कहा कि तुम इनपरसे अपनी मायाका बन्धन उतारलो यहसुनकर वह अपनी मायाका संहारकरनेको कुछपढ़नेलगा परन्तु वस्त्राध्यक्ष जो सभामेंगया उसने वस्त्ररखनेको सन्दूकजो खोले तो एक में दण्डको बन्दपाया उसेदेखतेही वह चकितहोगया कि यह क्या बातहै एक दंडतो वहां अपराधियोंको छुड़ारहेहैं और दूसरे यहां बंदहैं यहदेखकर उसनेकुछमायाकी कि पृथ्वीकोफोड़कर एकस्त्री एकपत्रलियेहुए निकली उसकोजोपढ़ा तो लिखाथा कि यहदंडहै और वह जो कैदियोंको छुड़ारहाहै बहुरूपियाहै यहपढ़कर उसने वहपत्रउसस्त्रीको फिरदेदिया वहउसको लेकर पृथ्वीमें समागई और वहवहांसे दौड़ा कि कहीं ऐसा नहो कि बहुरूपिया अपराधियोंको छुड़ालेजाय और मार्गसेही ऐसी कुछमायाकी कि तैलंग पृथ्वीपर गिरकर लोटनेलगा कारागृहकास्वामी कहां तो मायासंहारपढ़रहाथा कहांउसको पृथ्वीपरगिरताहुआ देखकर दौड़कर उसकोउठानेलगा इतनेमें वस्त्राध्यक्षपहुँचा और पुकारकर बोला कि इस छली बहुरूपियेको पकड़ना यहहमारे स्वामी को संदूक में बन्दकरआयाहै यह सुनतेही कारागृहके स्वामीने उसको भी मायाकृत पाशमें बांधलिया और सब कैदियों को लेकर फिर कारागारमें चलागया और वस्त्राध्यक्षने लौटकर दंडको चैतन्य किया और सब वृत्तांत कहा उसको सुनकर दंडनेपूछा कि वह बहुरूपिया कहांहै उसनेकहा कि मैं उसको कैदकर आयाहूं दंड

उस सब वृत्तान्तको सुनकर भयभीतहुआ और राजसभामें जाने के वस्त्रोंको धारण करके बागकी ओर इस प्रयोजनसेचला कि वहां जाकर भाई से सब वृत्तान्तकहूँ और उसकोभी लिवाला-ऊँ क्योंकि अकेला रहना कल्याणकारी नहीं है एकसे दोभले हैं यह सोचकर वह चलदिया उसको जातेहुए दूरसे विचक्षण बहुरूपिये ने देखा क्योंकि चार बहुरूपिये यहां आयेहुएथे और सब छलकरनेकी चिन्ता में चारोंओर फिर रहे थे निदान जब उसने दण्डको जातेहुए देखा तुरन्त अपना स्वरूप एक म्लेच्छ शिक्षक कासा बनाया बालोंकाजूड़ा पीछेबांधा डाढ़ी मूँछ मुड़ाये हुए लंगोट बांधे ढीलाऊर्ध्व वस्त्र गुल्फोंतक पहिरे एक हाथ में लकुट और दूसरेमें रमलके पांसे लिये बगलमें रमलकी पोथी दबाये उसीओर आ निकला जिधरसे दण्ड जारहाथा उसको देखकर दण्डने कहा शिक्षकजी दण्डवत् वह बोला मायाकर्त्ता तुम्हारी रक्षाकरै तेज और प्रतापको अखण्डरक्खे वैभवको चौगुनाकरै और शत्रुओंको क्षयकरै यह आशीर्वाद सुनकर द-ण्डने अपना घोड़ा रोकलिया और कहा कि शिक्षकजी आज तो बड़ी कुशलहुई नहीं तो बहुरूपियेने मुझे मारही डाला था भला आप विचारकर बतावें तो कि मेरी और मेरी भाईकीवि-जय होगी अथवा नहीं शिक्षक बोला कि आप कुछकाल ठहर जाइये तो में रमलसे विचारकर कहूं यह सुनकर दण्ड घोड़ेसे उतरपड़ा और शिक्षकके पास आया उसने कहा कि कहीं से दीपक मँगाइये उसने एक सूखी लकड़ी उठाकर कुछ मायाकी कि वह लकड़ी दीपककी भांति जलनेलगी तब शिक्षक बैठग-या और रमलके पांसोंको दण्डके हाथसे छुआकर फेका और लब्ध बिंदुओंको पृथ्वीपर लिखकर कोष्टक बनाये और विचार करनेलगा उस समय शिक्षक रूपी विचक्षणने दण्डका ध्यान कोष्टकोंकी ओर देखकर मूर्च्छाकर चूर्ण उस दीपक के ऊपर

डालदिया डालतेही ऐसा धूमउठा कि दण्ड उसमें अदृश्यहो-गया और उसको घ्राणकरके मूर्च्छित होकर गिरपड़ा तब वि-चक्षणने वहीं बैठकर अपना स्वरूप उसकासा बनाया औरउस के वस्त्रों को धारण करके उसे एक गर्तमें बन्द करदिया और उसके मुखको एक पाषाणकी शिला से बन्दकर दिया परन्तु वह लकड़ी उसी प्रकारसे पृथ्वीपर पड़ीहुई जलतीरही उसने जाना कि जबतक दण्डमारा न जायगा तबतक यह लकड़ी न बुझैगी निदान उसको उसी प्रकार से छोड़कर आप घोड़े पर सवारहोकर उसबागमें पहुँचा और उसमिथ्याईश्वरको दण्ड-वत् करके अपने भाईके पास जा बैठा उसने पूछा कि हे दण्ड तुम क्यों आयेहो हम दोनोंको मारनेकेलिये सहस्रों बहुरूपिये फिर रहे हैं तुमने बुरा किया जो यहांपर अकेले चलेआये तब दण्डबोला कि आपने अच्छा पत्र भेजाथा उस दण्डधरने तो मेरे प्राणही लियेहोते यह कहकर उसने सब वृत्तान्त जो उसने शिक्षक बनकर दण्डके मुखसे सुनाथा वर्णनकिया यह सुनकर सण्डने अपने भाईकी बड़ीआपत्तिसे मुक्तहुआ जानकर कण्ठ से लगाया और कहा कि अब मैं तुमको अकेला न जानेदूँगा मैंभी साथ चलता हूं और रात्रिको सेनाहीमें रहूँगा यह कह-कर वहउस मिथ्या ईश्वरसे विदामांगकर चलदिये चलतेसमय चित्रांगदने कहा कि मार्ग्ग में शत्रु और मित्र पहिंचानते हुए जाना वह बोला कि मैं अच्छी प्रकारसे चौकसहूं यह कहकर दोनों बाहरआये और घोड़ोंपर सवार होकर चलदिये मार्ग्ग में सण्डने विचारकिया कि कहीं ऐसा न हो कि यह कोई बहु-रूपियाहो और मेरे भाईका रूपधारणकरके मुझे छलनेआया हो यह विचारकर उसने कुछ मायाकी कि उससे विचक्षण का स्वरूप ज्योंका त्यों होगया और वह घोड़ेसे कूदकर भागा संड ने तुरन्त माया करके अपने गलेकी माला तोड़कर पृथ्वी पर

फेंकदी और वह सर्परूपहोकर विचक्षणके शरीरसे लिपटगई और उसको खींचकर सण्डके सन्मुखलेआई तब सण्डनेपूछा कि तू सत्यव्रता कि कौनहै और तैंने मेरेभाईको क्या किया विचक्षणने कहा कि मैं बहुरूपियाहूं और तेरेभाईको गर्त्तमें डाल आयाहूँ वह बोला कि चल मुझे बतादे विचक्षण ने कहा कि मुझे छोड़दो तो बतादूं वहबोला कि अरे दुष्ट तेराछल अब न चलैगा मैं तुझे छोड़दूं सो तू भागजाय और फिर आकरमुझ को दुःखदे वह बोला अच्छा जो तुम्हारा ऐसाही विचारहै तो सेनामें चलकर संधिकरलो अपने भाईकोलो और मेरेभाईको मुझेदो संड बोला कि अरेदुष्ट मैं तुझसे ऐसा पराक्रम हीनहूं सो दबकर संधिकरलूं यह कहकर उसने ऐसी मायाकी कि विचक्षण अपनेआप दौड़ताहुआचला और वहींआया जहां दंड को वह गढ़े में बन्दकरगया था वहां आकर संडने उसे बाहर निकाला परंतु वह अचेत अधिकथा इससे उसने विचक्षणसे कहा कि इसको चैतन्य करदे विचक्षण बोला कि मेरे ऊपरसे माया उतारले तो मैं इसको चैतन्य करदूं यह सुनकर संड ने विचारा कि इसके चारोंओर मायाका कुण्डलकरदूं तो फिर यह भाग न सकेगा और जब मेरेभाईको चैतन्यकरदेगा तबमैं फिर इसको पकड़लूंगा यह सोचकर उसने उसके चारोंओर मायासे कुण्डलकरदिया और उसको मायाकृत वेष्ठनसे मुक्तकिया जब विचक्षणमुक्तहुआ तब उसनेसण्डकोमायाकरनेमेंध्यानावस्थित देखकर उसके मुखपर एकमूर्च्छाडमारा कि उसकेलगतेही वह मूर्च्छितहोकर धमसे पृथ्वीपरगिरपड़ा विचक्षण खड्गलेकर उस का वधकरनेको उसकी छातीपर जाबैठा परन्तुउसी समय दण्ड को जीवनकी शीतलवायुलगी वह चैतन्यहोकर उठबैठा और एकमनुष्यको दूसरे किसीको वधकरनेको उद्यतदेखकर उसने ऐसीमायाकी कि विचक्षण गिरपड़ा और निर्जीवसा होगया और

वहउठकर उसकेसमीपआया और अपने भाईको पहिंचानकर उसके शरीरसे लिपटगया और यह बिचारकर कि कोई और बहुरूपिया न आजाय एकहाथसे अपने भाईको उठाया और दूसरेसे बिचक्षणाकोलेकर मायाबलसे आकाशमार्गी हुआ और अपनी सभामें पहुँचकर अपने भाईको चैतन्यकिया और एक दूसरेने अपनावृत्तांत कहकर कारागृहके स्वामीको बुलाया और बिचक्षणाको भी कैदकराया और उससेकहा कि बहुत चौकस रहियो और फिर उन दोनोंने आपसमें मंत्रकिया कि येबहुरूपिये बड़े प्रबलहैं निस्संदेह फिर आवेंगे इससे कोई ऐसाउपायकिया जाय जिससे जो आवे वह पकड़ाजावे यह मंत्रकरके उन्हों ने दो पुतले मायासे निर्मितकिये एक तो द्वारपर बैठादिया और दूसरेको अपने पलंगके पास रखदिया और अपने सबसेवकों को बुलाकर कहा कि तुममें से जो कोई भीतर आनाचाहे वह यह कहदे कि मैं सेवकहूं और अमुक कामकेलिये भीतरजाता हूं और जो कोई ऐसा न कहैगा वह द्वारके बाहरके स्थानमें उ-लटाहोकर लटकजायगा यह सुनकर सबसेवक चुपहोरहे और उन्होंने कुछ सेवक आवश्यक तो भीतर रहने दिये और जो और थे उनको बाहर रहनेकी आज्ञादी निदान जब सब प्रबंध करके दोनोंजने शय्यापर लेटे तब संडनेकहा कि भाईपरमेश्वर ने बागमें बड़ा उत्तम उत्सव कियाहै मेरा चित्त तो वहीं लगा हुआहै इससे जो तुम कहो तो मैं चलाजाऊं अबरातभी थोड़ी रहीहै और स्थान भी मायासे रक्षितहोगयाहै यह सुनकर दंड बोला किभाई मुझको भय नहींलगताहै तुमइच्छापूर्वक जाओ और अपने चित्तको आनन्ददो परंतु मार्गमें बहुरूपियोंसे बच कर जाना वहबोला कि मैं आकाशमार्गसे जाऊंगा और पृथ्वी पर न उतरूंगा यह कहकर वह सभाके बाहर आया और मा-याबलसे आकाशमार्गसे चलदिया उसके जानेकेपीछे दंड सो-

रहा और सेवक उसके पैरदाबनेलगा थोड़ीदेरपीछे वह सेवक उठकर सभाके बाहर आया वहां सुवास बहुरूपिया सेवकों का सा स्वरूप बनायेहुए भीतरजानेकी चिंतामें खड़ाहुआ था कि इस सेवकने जाकर उससे पूछा कि भाई क्या तुम भी सेवकों में सेहो सुवास बोला कि भाई हम तो परमेश्वरके सेवकहैं वहां बैठे २ चित्त घबराया इससे इधर चलेआयेहैं परंतु क्या हुआ हम तुम तो एकही हैं जो कुछ तुम्हारा कामहो हम करदें वह बोला कि भाई मेरी सेवा इससमय महाराजके पासथी परंतु मेरे पेटमें शूलहोताहै इससे मैं चलाआया थोड़ीदेरकेलिये जो तुम जाकर महाराजके चरण दबादो तो मैं शौचहोआऊं परंतु भाई यह स्थान मायारक्षितहै इससे तुम परदेको उठाकर यहकहना कि मैं सेवकहूं पैर दाबनेको जाताहूं जो यह न कहोगे तो उलटे होकर लटकजाओगे सुवासनेकहा कि भाई यह तुमने अच्छा बतादिया नहीं तो मैं बिना कारणही पकड़ाजाता अच्छा अब तुम शौचहोआओ मैं भीतर जाताहूं निदान सुवास उससभा के द्वारपर आया और जो उस सेवकने बतायाथा वह कहकर भीतर चलागया और देखा कि दंड उत्तम शय्यापर सोरहाहै उसके सिरहाने एक फूलोंका गुच्छा रक्खाहै और शय्याके समीप एकपुतला रक्खाहुआहै और बहुतसे छोटे २ पुतले और रक्खेहुए हैं निदान सुवास उसशय्यापर बैठगया और मूर्च्छा कर चूर्णका एकचुकटा भरकर दंडके मुखपर डालदिया वह तत्काल छींकमारकर अचेतहोगया और सुवास उसकी छाती पर चढ़बैठा और जैसेही उसनेचाहा कि उसकाशिरकाटूं तैसेही वह फूलोंका गुच्छा खिलगया और उसमेंसे हा हा हा हँसनेका शब्दहुआ और अग्निकी ज्वाल ने निकलकर सुवासको चारोंओरसे आवृतकरलिया उससमय सुवास बेचैन होगया छातीपर बैठाहै परंतु न हाथ उठताहै कि उसको मारे और न

पैरउठतेहैं कि भागजाय और उधर उसपुतलेने पुकारकर कहा कि इस बहुरूपियेको पकड़ना यहदंडको मारेडालताहै यहसुन कर बहुत सेवक दौड़े परंतु जो आया बाहरके स्थानमें उलटा लटकगया क्योंकि वह बात सबको तो बताईही नहींगईथी कि यह कहकर भीतर आना केवल दो चारको बताईगईथी उन में से एक तो शौचहीगयाथा और जो बाकीथे वे बाहरसभाके सो सा रहेथे यह देखकर सबसेवक दौड़ेहुए बागमें गये और संडसे जाकर उन्होंने कहा शीघ्रचलिये बहुरूपिया आपकेभाई को मारेडालताहै यह सुनतेही वह अचेतसाहोकर भागा और सभाके समीप पहुँचकर बोला कि जिसको भीतर आनाहो मेरे साथआओ क्योंकि यहसभामायावेष्टितहै फिरकोईभीतर आन-सकेगा क्योंकि मैं भीतरजाकर और अधिकमायाकरकेसबमार्गों को बन्दकरूंगा जिससे बहुरूपिया भागकर निकलने न पावै और बाहरसे और कोई बहुरूपिया भीतर न आने पावै उस समय महाराष्ट्री बहुरूपिया भी वहां म्लेच्छ रूपधारणकियेहुए फिररहाथा क्योंकि चारबहुरूपिये चलेथे उनमेंसे यही एक रह गयाथा सोवह गुलगपाड़ा सुनकर वहां दौड़ाहुआ आया और संडसे बोला कि चलिये हम आपकेसाथ भीतर चलते हैं संड इसकारणसे भीतर न जाताथा कि यह बहुरूपियोंका कर्म है न जानें भीतर क्याहोरहाहै कहीं मैं भीतरजाऊंतो मुझपरभी कोई आपत्ति न आजाय इससे और म्लेच्छोंको बुलाताथा परंतु उन सबकोभी यही भयथा और इसीसे वेभी भीतर नहीं जाते थे इससे महाराष्ट्रीने जो आकर साथ चलना अंगीकार किया उसने उसके साथको अहोभाग्य समझा और उसको साथ लेकर सभाके भीतरआया और आकर पहले सुवासके चारों ओर जो अग्निचक्रथा उसको दूरकिया जिससे वह छातीपरसे उतरसकै उसचक्रके दूरहोनेसे सुवासके हाथपैर खुलगये और

उसने चाहा कि मैं भागजाऊं परंतु संडने माया करके सभाके सब द्वार बन्दकर दियेथे इससे वह भाग न सका और उससे संडने कहा कि बता अब तेरी क्यादशा कीजावे यहां तेराछल नहीं चलसकताहै यह कहकर उसने चाहा कि भाईपर गुलाब जल छिड़ककर उसको चैतन्यकरूं और कोड़ालेकर बहुरूपि-येको दंडदूं कि इतनेमें उस पुतलेने शय्याके पासरक्खाथा पुकारकर कहा कि धन्यहै क्या कहनाहै तुमतो आपही अचेत हो कि अपने साथ बहुरूपियेको लेकर आयेहो यहभी न पहिं-चाना कि यह अपनाहै अथवा परायाहै कि जिसको हम भीतर सभाकेलिये जातेहैं उससमय वह गुलाबजल उठाने झुकाथा उसपुतलेकी वाणीको सुनतेही झिझककर सँभलने चाहताथा कि इतनेमेंमहाराष्ट्रीने यहविचारकर कि इसपुतलेनेसबकाम बि-गाड़दिया अबकिसी प्रकारका विचार ठीकनहीं है तुरंत खड्गनि-कालकर संडके ऐसा हाथमारा कि वह सीधा भी नहोनेपायाथा और उसका शिर भुट्टासा कटकर दूर जापड़ा और महाकोला-हल होनेलगा उससमय सुवास छूटगया क्योंकि उसीने उसको मायाबलसे स्तंभितकिया और छूटतेही उसने खड्गलेकर दंडके मारा जो अचेतपडाहुआथा उसीसमय वहपुतला फिर चिल्ला-या और फूलोंके गुच्छेमेंसे फिर अग्निकीज्वाला निकल निकल कर सुवासको घेरनेलगी यह देखकर महाराष्ट्रीने एकहाथ ऐसे बलसे दंडकेमारा कि उसका भी शिरकटगया तब तो ऐसा को-लाहलमचगया कि जानो आकाश फटपड़ाहै चपला चमकचमक कर गिरतीथी यह देखकर जो सेवक आदि बाहरथे सब भागे कि यहअकस्मात् क्याआपत्ति आगई और बहुरूपिये अपना अपना नाम कहतेहुए सभाके डेरेकी कनातोंको फांद फांदकर भागे उससमय कारागृह स्वामी और वस्त्राध्यक्ष भी दौड़ेहुए आये उनको देखकर महाराष्ट्री और सुवास दोनों बहुरूपिया

लौटपड़े उनको अपना स्वरूप तो कुछ बदलनाही नहींथा क्योंकि महाराष्ट्री म्लेच्छकारूप और सुवास सेवककारूप धारण कियेहुएहोथे दोनों दौड़कर वस्त्राध्यक्ष और कारागृह के स्वामीके पासआये और रोनेलगे कि हाय हाय वहुरूपियों ने हमारे दोनों स्वामियों को वधकर यमलोक में पहुंचादिया हम उन वहुरूपियोंका पीछाकरतेहुए गयेथे परन्तु वे सामनेकीओर जो वृक्षोंकी कुंजेंहैं उनमें जाछिपे हैं हम भयसे वहां न जासके यहसुनकर उनदोनोंनेकहा कि चलो हमचलतेहैं यहकहकर वे दोनों उनके साथहोलिये उधर सेनाके म्लेच्छ और सेवकआदि सभाकीओर दौड़े चलेजातेथे आग और पाषाण बरसरहेथे और बड़ाभारी कोलाहलमचाथा उससमय में अवसरपाकर वे दोनों वहुरूपिये उनदोनों को कुछदूर बाहर लाकरबोले कि देखिये वे सामने के वृक्षों में वहुरूपिये खड़ेहुए मालूमहोते हैं वे दोनों जैसेही ध्यानसे उधर देखनेलगे वहुरूपियों ने उनके मुख पर मूर्च्छाएडमारे कि वे अचेतहोकर गिरपड़े तब वहुरूपियों ने उनदोनोंके शिरकाटडाले उनके मरने से यहांभी महाकोलाहल मचगया और उसको सुनकर वहुतसे म्लेच्छ इसओरभी दौड़े परन्तु वहुरूपिये अपना२ नाम सुनातेहुए भागगये और उधर कारागृह स्वामीके मारेजानेसे वैष्णवीसेना के सब राजपुत्र और शूरवीर जो पकड़ेगयेथे मायाकृत कैद से छुटगये और उन्होंने अपनेहाथपैरोंकोखुलाहुआ पाकर अनुमानकिया किसीनकिसीने उन कैदकरनेवाले म्लेच्छोंको मारकर यमलोकमें पहुंचादिया यह शोचकर सबशूरवीर और वहुरूपिये जो कैदथे खड्गलेलेकर कारागृहसेनिकले और शत्रुसेनाकाविध्वंसनकरनेलगे उससमय घबड़ाहटमें वे मायावीम्लेच्छ अपनी मायाकरना भूलगये और भयभीतहोकरभागे परन्तु वैष्णवी सेनाके शूरवीरों ने क्षणमात्रमें सहस्रोंको वध करडाला और उनकेरक्त की नदी बहने लगी॥

चौ०। इहिविधि शत्रुसेनाहि नशावत। महा रुधिर सरिता उमगावत॥
सैन वैष्णवीके सब बीरा। अति प्रचण्ड योधा रणधीरा॥
मायावी अरि गणको काटत। अस्त्र शस्त्रसों धरणी पाटत॥
अरिसंहारकुलभांति जयपाई। निज सेनामें पहुंचे जाई॥

ये समाचार बागमें उस मिथ्या ईश्वरकेपास पहुंचे कि म्लेच्छ सब मारिगये और वैष्णवी सेनाके शूरवीर सबको विध्वंसन करके अपनी सेनामें चलेगये सेनामें एक आपत्ति पड़ीहै मानों प्रलयकालहै यह सुनतेही वह मिथ्या ईश्वर सवारहोकर सेनामें आया और देखा कि लोथपर लोथ पड़ीहै और सैनिकोंकी चेष्टा रुधिरसे बिगड़ी है डेरे सब भस्म होरहेहैं और मायावी म्लेच्छ भागते फिरतेहैं यह देखकर उसने स्वस्थताके वाद्य बजवाये और सेनापतियोंको बुलाकर आश्वासित किया और आकर सभाके डेरेमें सिंहासनपर बैठगया उससमय वेमायावी म्लेच्छ सण्ड और दण्डकी लोथोंको लेकर वहां आये और उस मिथ्या ईश्वरसे बोले कि हम मायाकृत देशकोजातेहैं वह बोला कि इनको अभिमान होगयाथा इससेमैंने इनकोनष्ट करदिया मुझको किसीकी सहायताकी आवश्यकता नहींहै तब चित्रांगद बोला कि परमेश्वरको वैष्णव बड़े प्यारेहैं कि उनके कारणसे आप अपना देश और घरबार छोड़कर भागते फिरते हैं और जिसदेशमें जातेहैं वहांके निवासी और शूर वीरों को उनके हाथसे वधकरातेहैं यहसुनकर वे म्लेच्छ सत्यसत्य और धन्य धन्य कहतेहुए अपने देशकी ओर चलदिये और इधर जब वैष्णवी सेनाके सब शूर बीर छूटकर अपनी सेनामें पहुँचे तो देखा कि रात्रि व्यतीतहोगईहै और वहसमयहै कि सूर्यरूपी प्रबल योद्धाको देखकर निशाचररूपी रात्रि भागगईहै और उसयोद्धाने अपनी रश्मिरूपी असिको आकाशरूपी रणभूमि में प्रकटकरके सम्पूर्णसंसारको दीप्तकरदियाहै॥

दो० । प्रातकाल के होतही रवि उदये आकाश ।
मिट्योसकलतमजगतको निर्मलभयोप्रकाश ॥

उससमय महाराज शत्रुंजय श्रीविष्णु भगवान्‌का पूजनकर रहेथे सबोंने जाकर उनको दण्डवत्‌की महाराजने सबको कंठसे लगाया और छुटनेका निमित्त पूछा तब सबोंने बहुरूपियोंका कर्म वर्णनकिया उसको सुनकर महाराजने सब बहुरूपियोंको धनसे पूजा और पूजनकरके सभामें आये और कोई आनन्द मंगल मनानेलगे परंतु वे म्लेच्छ जो मायाकृत देशको चलेथे एक नगरमें पहुँचे कि वहांकी रानी दंड और संडनामी म्लेच्छों की भगिनीथी उसने सुना कि कुछ म्लेच्छ परमेश्वरके पाससे भागकर आयेहैं और महेन्द्रके पास जातेहैं उसने उनको बुला कर पूछा कि तुम परमेश्वरके पास किसके साथ गयेथे उन्होंने सब वृत्तांत कहकर संड और दंडके मारेजानेका हालकहा यह सुनतेही म्लेच्छी जिसकानाम कोकिलाक्षीथा क्रोधसे रक्तहोगई और अपने भाइयोंका बदला वैष्णवोंसे लेनेके लिये उद्यतहुई और महेन्द्रको उसने एकविनयपत्र लिखा कि महाराजा धिराज मुझको अपने भाइयोंका वधसुनकर इतना धैर्यनहींरहा कि मैं आपके पासआकर युद्धकरनेकी आज्ञामांगती इससे मैं यह विनयपत्र आपकेपास आपके सेवकोंके हाथभेजतीहूं और मैं वैष्णवोंका वधकरनेको जातीहूं निदान वेम्लेच्छ तो उसकेविनय पत्रको लेकर उधरकोगये और इसने अपनी सेनाको युद्धके लिये सन्नद्धहोनेकी आज्ञादी और सेनानिर्याण वाद्यबजनेलगे उससमय बारह सहस्र म्लेच्छयुद्धके लियेतयारहुए और वह म्लेच्छीमायाकृत अग्निमयूरपर सवारहोकर उनम्लेच्छों को साथलिये हुए वहां से चलदी उससमय घटाघनघोर आकाश में छागई और बिजलियां चमकनेलगी निदान वह बड़ेमार्ग को शीघ्रउत्तीर्ण करके अद्भुतकी सेनामें पहुंची उससमय अद्भुत

उनम्लेच्छोंके मारेजाने से महाम्लानचित्त बैठाथा कि इतनेमें आकाशमें चपलाचमकतीहुई दिखाईदी सबचकितहोकर देखनेलगे और चित्रांगद बोला कि परमेश्वर का कोई उपासक आता है यहसुनकर अद्भुतबोला कि क्या मैंने तुझे इसलिये कलिबनाया है कि तू मेरी भविष्यरचनाको पहिले से प्रकटकर दिया करे निस्संदेह मेरानिजभक्त आरहाहै जा उसको आदर पूर्वकलिवाला उससमय और सेवकों ने पूछा कि हे परमेश्वर आपका कौनसा भक्तआताहै मिथ्याईश्वर बोला कि मेरेसहस्रों भक्तहैं किसकोमैं बताऊं कि कौनआताहै जबसन्मुख आजायँगे तब बतलादूंगा निदान वहमिथ्या ईश्वरतो ऐसीही निरर्थकबातें बकतारहा और वहां चित्रांगदने जाकर कोकिलाक्षीकीआगोनी की और उसे आदरपूर्वक सभामें लिवालाया वहां आकरउसने उस मिथ्याईश्वरकी पूजाकी और उस मिथ्या ईश्वरनेपूछा कि हे सौभाग्यवती तू कुशल पूर्वकहै उससमय चित्रांगदबोला कि परमेश्वरतुमको बहुतदेरसे स्मरणकररहेथे तब उसमिथ्याईश्वर ने उसकी पीठपर हाथफेरा और बैठनेको उत्तमआसन बताया उसने भेटसामने मिथ्या ईश्वरके रक्खी और उसने उसको सन्माना भूषण और वस्त्रदिये इसके पीछे उसकी सेना उतरी और उस मिथ्या ईश्वरनेकहा कि हे सुमुखी मैंने तेरेरहनेको अपना बैकुण्ठदिया जातू उसबागमें जाकर निवासकर और राजा महावीरसेकहा कि उसबागमें सम्पूर्ण पदार्थ पहुँचादो यहआज्ञा होतेही मद्य और मांस और शय्या आदि सम्पूर्ण भोग और बिहारके पदार्थ वहां पहुँचादियेगये इसके अनन्तर कोकिलाक्षी अपनी सहेली और दासियोंसहित उसबागमें चलीगई और श्रमितहोने के कारणसे दिनभर उसने वहां आनन्दपूर्वक विश्रामकिया और चित्तमें बड़ी प्रसन्नथी कि परमेश्वरने मुझको रहनेको बैकुण्ठमें बासदिया निदान दिनभर उसबागमें रहकर

वह विगतश्रमहुई और जिससमय आकाशरूपी सरोवरमें सूर्य रूपीपुण्डरीकने अपने प्रकाशरूपी विकासको संहार करलिया और कुमुदनी गणरूपी तारागण खिलनेलगे॥

दो०। फूल नक्षत्र सकोचकर रविको मिटयो प्रकाश।
फुलवारी उडुगणनकी फूली पुनि आकाश॥

उससमय कोकिलाक्षी उस मिथ्याईश्वरकी सभामेंआई और दो चार मद्यके पानपात्रपीकर वैष्णवोंकाहाल पूछनेलगी तब चित्रांगदनेकहा कि ये लोग बड़ेप्रबलहैं उनसे कोई जयनहींपा-सकताहै परमेश्वरकोभी उन्हें उत्पन्नकरनेकी लज्जाहै अब तुम यहांपर आईहो दो चार दिनरहकर सबहालदेखो वहबोली कि श्रीमान् मायाभी बड़ीप्रबलहै वैष्णव क्याकरलेंगे मैं वह हूं कि जलके समुद्रको अग्निकासमुद्र और अग्निके समुद्रको जलका समुद्र करदेतीहूं क्षणमात्रमें पृथ्वी और आकाशको मिलासक-तीहूं अभी वैष्णवोंसे किसी अच्छे मायावीसे सामना नहीं हुआ है अब आप मेरेनामसे युद्धके वाद्य बजवाइये और फिर देखिये किक्षणमात्रमें क्याथा और क्याहोगया मैं उनकी सब प्रबलता निकालदूंगी चित्राङ्गदबोला कि अभी युद्धकेवाद्य मतबजवाओ अभी संसारकी शीतलवायुमें विहार करलो क्योंकि शत्रुंजयके पास महामंत्रहै उसको किसी प्रकारसे बन्द करलो और बहुरू-पियोंसे अपनी रक्षाकरलो फिरजो इच्छाहो सो करना यह सबमैं प्रीतिके कारणसे कहताहूं क्योंकि मुझको तुम्हारी युवावस्था देखकर दया आतीहै यह सुनकर कोकिलाक्षी बोली कि आप धन्यहैं मैंने आपको जैसा सुनाथा वैसाही पाया परन्तु अबतो युद्धके वाद्य बजते हैं पीछे देखाजायगा यह कहकर उसने आज्ञादी कि युद्धके वाद्य बजायेजावें जिससे सब सेना जन युद्ध के लिये सन्नद्ध रहें यह आज्ञाहोतेही म्लेच्छोंने नानाप्रकारके भयानक युद्धकेवाद्य बजाये उनको सुनकर सबम्लेच्छोंकी सेना

युद्धकी तयारीकरने लगी उधर वैष्णवी सेनाके दूतोंने श्रीमहा राजा धिराजकेपास जाकर विनय पूर्वक कहा कि श्रीमहाराजा धिराजकातेज ऐश्वर्य और राज्यअखण्डरहै श्रीमहाराजएकको किल्लाक्षीनाम म्लेच्छीआई है उसने श्रीमहाराजकी सेनासे युद्ध करनेके लिये युद्धकेवाद्यबजवायेह यहसुनतेही श्रीमहाराजा धिराजनेआज्ञादी किहमारी सेनामें भी वाद्य बजायेजावें यहआज्ञा होतेहीवैष्णवी सेनामेंभी बड़ेघोररवसे युद्धसूचकवाद्यबजनेलगे॥

जय० छंद। महा घोररव वाद्यबजाय। महाशब्ददीन्हों नभछाय॥
सो सुनिशूरवीर रसछाय। एक एक सनकहतसुनाय॥
हैजगप्रकटशरीर अनित्य। मरिबोअनशिकहतहमसत्य॥
तातें रणमें प्राणविहाय। ले यशवसे अमरपुरजाय॥
यहकहिकहिनिजशस्त्रनमज्ज।करतरहेसवअस्त्रनसज्ज॥
सभाविसर्जनकोलखिकाल। सभाविसर्जनकीन्हभुवाल॥
सकलसभासद डेरनआय। रणहित गहे अस्त्रहरपाय॥
सैन वैष्णवीके इमिवीर। रणहित हर्षित हेरणधीर॥
कोकिलाक्षी उत हरपाय। मायासंभव रचत उपाय॥
नरकपालनररुधिरमँगाय। फूलनसहित दयेधरवाय॥
माषचूर्णयुगपुत्तल कीन्ह। कांचकुप्पिकामें धरिदीन्ह॥
इमिकरि सामग्री एकत्र। करन लगी सोमायातत्र॥
मायाकरि कर मांटी गूँदि। कांचकुप्पिकादीन्ही मूँदि॥
लैकेचली ताहिजेहिकाल। चपलाआंधी उठीकराल॥
सैंन वैष्णवीको सो आय। देखी रणहित रचतउपाय॥
माया बलसोंकीन्हविचार। कहँ शत्रुंजय भूभरतार॥
तासों बिदितभयोतेहितत्र। करतरहे पूजा नृपयत्र॥
पहुँची तहां तूर्णसो डोलि। कांचकुप्पिकादीन्ही खोलि॥
तासों कढ़ियुग पुत्तलकूदि। भयेनिशाचर गिरिमहिंरूँदि॥
कृष्णवर्ण अतिभीषणरूप। अग्नि दण्डकर गहे अनूप॥
गयो एक पूजा के भौन। लख्यो ताहि नृपबैठे मौन॥
महामन्त्रनृपपढ्योसचाय। पढ़तनिशाचर गयोविलाय॥
सुनिसो मंत्रगहे आनन्द। निशिचरअपर कीन्हतेहिबन्द॥

तवसोमाया विनिगाहितताहि। धरो कांच कुप्पी में पाहि॥
बोली वाणी करि कछुतन्त्र। लिये जातहों वशकर मन्त्र॥
मन्त्र रहित शत्रुंजय भूप। भये अचेत महादुख रूप॥
लिये कांच कुप्पीसो हाल। निज सेनामें गई उताल॥
इतनेमें सोनिशिभइ अस्त। भयो अकाशप्रकाश प्रशस्त॥
तारागण सहइन्दु पराय। सूर्य तेज लखिगये लुकाय॥
सहसकला रवि तेजसपूर्ण। लगीं प्रकाश प्रसारण तूर्ण॥
सकल शूरआये तेहिकाल। जहँरहे पूजा करत नृपाल॥
लखि अचेत ताकों ते सर्व। सुदतजिव्याकुलभये अखर्व॥
सभा सिविरिमें लावेताइ। शुचिशय्यापरदियो लिटाइ॥

महाराज शत्रुंजयके अचेतहोजाने से वैष्णवी सेनामें हाहाकारमचगया परंतु युद्धका दिनहोने से कोई ठहरनसका सब सेनादलिपति और यूथयूथहोकर रणभूमिकोचली और सेनापति सब श्रीमहाराजाधिराजके शयनमन्दिर परआये श्रीमहाराजाधिराज भी महाराज शत्रुंजयके अचेतहोजाने का वृत्तांत सुनकर शयनमन्दिर से शीघ्रनिकले जिससे सेनाजन और शूरवीर अपनेको अनाथमानकर पलायमान और दुखीनहों॥

छन्द। शयनमन्दिरसों नृपति कढिद्विरदमँगवावत भये।
शुचिवसनभूषण धारिअसिधनुवाणशायककरलये॥
सो महामत्त मतंग दीरघकाय जब आवत भयो।
चढिनृपतितापरइन्द्रसमलसिसैनकोप्रमुदितकियो॥
वजवाय वाद्य महानरवकर संग शूरनको लये।
अतिगहेरणउत्साहगजहँकवायरणमहिदिशिगये॥
तहँ अश्वसादी गजप्रमादी रथपैदर अनगिने।
शुचि अस्त्रनानाभांतिलीन्हेगयेतहँअतिरिससने॥
वहुध्वजागारुडिवर्ण नानाभांतिकी सँग सोहहीं।
अरुतूर्य लयउत्सारण करि शूरगणकों मोहहीं॥
वहुशूरसो सुनिवीर रसभरि धनुषज्याटंकारहीं।
वहुगार्जिगर्जिस्वताल हानिहनि महारवहुंकारहीं॥
इमि वैष्णवी सेना समुदसमउमड़िजवरणमेंगई।

तब सैनपतिसों पायशासनसो तहां व्यूहित भई ॥
इमि वैष्णवनकी सेनको सन्नद्धरणहित देखिके ।
सोईश मिथ्या स्वजय मायाम्लेच्छसो अवरेखिके ॥
निज सेनको चलवाय रणकी भूमिमें आवत भयो ।
उरगहे रणमें सुजय पावनको सुआनँद अतिनयो ॥
तहँ म्लेच्छ मायावी प्रबल बहुअस्त्र मायाकृत धरैं ।
अति दर्पसों रणभूमि में भयहीन इतउतको फिरैं ॥
उतकोकिलाक्षी परममायाविनि तहां रणहितगई ।
कुंज लालसो तहँ आय संगरभूमि में ठाढ़ी भई ॥

निदान जब दोनों सेना रणभूमि में आगई व कोकिलाक्षी ने बढ़कर बैष्णवीसेनाके क्षत्रियोंको प्रचारा तब बैष्णवीसेनासे राजपुत्र इन्द्रबिक्रम महाराजाधिराज से आज्ञालेकर उसके सन्मुख गया उससमय उसम्लेच्छीने कुछ मायाकी कि उससे एक काला बादल प्रकटहुआ और उसमेंसे एक मल्ल घोड़ेपर सवार निकलकर पृथ्वीपरउतरा और राजपुत्रको प्रचारकर बोला कि जोतू युद्धकीसामर्थ्यरखताहै तोआ घोड़ेसेउतरकरमेरेसाथ मल्ल युद्धकर यह सुनतेही राजपुत्र इन्द्रबिक्रम घोड़ेसे कूदपड़ा और शस्त्रोंको उतारकर मल्ल युद्धका ठाटबदलकर खड़ाहोगया दोनों ने हाथसे हाथमिलाया और बांयांहाथएकदूसरेकी ग्रीवापररखकर युद्धकरनेलगे फिरतो एकने जो दस्तीकी तो दूसरेने दुदस्ती की एकने गलादिया तो दूसरा पट्टोंपरगिरा निदान दोनों नाना भांतिके पेंचकरतेथे और एक दूसरेके पेंचको काटकर लड़तेथे कभी राजपुत्र उसे नीचेलेआताथा और कभी वह राजपुत्र को पटक देताथा इसप्रकारसे बड़ीदेरतक दोनोंने महाघोर मल्लयुद्ध किया उपरांत राजपुत्र प्रबलहोगया और जैसेही उसने चाहाकि उस आकाशचारी मल्लको चित्तकरकेबांधलूं तैसेही कोकिलाक्षी ने कुछ मायाकी कि उससे राजपुत्रके शरीरकी शक्ति जातीरही और उस मल्लने जो उसीसमय उखेड़दी तो राजपुत्र पृथ्वीपर

चित्त जा पड़ा तब उस मल्लने राजपुत्रको बांधलिया और अद्भुत के सेनापतियों को देदिया और उन्होंने राजपुत्रको कैद करलिया और उस मल्लने फिर पुकारकरकहा कि जिस किसी को लड़ने मरने की इच्छाहो सो मेरे सन्मुखआवे वैष्णवी सेनाके शूरवीरों का यहनियमथा कि शत्रु जिसप्रकारसे युद्ध करना चाहताथा उसी प्रकारसे वे युद्धकरतेथे अर्थात् जो खड्गसे युद्ध करनाचाहता था उससे खड्गही से लड़ते थे जो बाणों से चाहताथा उससे बाणोंसे प्रहार करतेथे और जो मल्लयुद्धचाहताथा उससे मल्लयुद्धही करतेथे निदान उस मल्लके शब्दको सुनकर वैष्णवी सेनाके शूरवीर निकल२कर उसके सन्मुखजाने लगे परन्तु जो गया उसकीवही गतिहुई जो राजपुत्रकी हुईथी अर्थात् मायाके कारणसे शक्तिहीन होगये और पकड़ेगये इस प्रकारसे साठ सत्तर शूरवीर जिनका पराक्रमभीम और कर्णके समानथा मायाके कारणसे निर्वीर्य होकर कैदहोगये उससमय चित्रांगदने कहलाभेजा कि हे कोकिलाक्षी तुम एक एकसेकहां तक युद्धकरोगी इससमय शत्रुञ्जयका महामंत्र बन्दहै ऐसे में सब वैष्णवों का वध करडालो यह सुनकर कोकिलाक्षी ने सब मायावीम्लेच्छोंको वैष्णवोंका बधकरनेकी आज्ञादी और आपनेभी मायाकृत नारिकेल अस्त्रका वैष्णवी सेनापर प्रयोग किया उससे बड़ीभारी आंधीउठी और घटाघिरआई चपला चमकर करके गिरनेलगी और पानी मूसलाधार पड़नेलगा जिसपर वह जलगिरताथा वह पत्थरकाहोजाताथा चारोंओर हाहाकारमच गया और ऐसा जानपड़ताथा कि महाप्रलयका काल यही है ॥

जय०छंद। गरजत बादलकरिअतिशोर। बरषत बारि प्रलयसमघोर ॥
चमकति चपलामहा कराल। अति भीषणजनु जगकोकाल ॥
माचो कोलाहल चहुं ओर। महा भयंकर महा कठोर ॥
कुंजलाल ता मधिपरि लोग। लख्यो न कहूं त्राणको योग ॥

इसमायाकृत आपत्तिके सिवायएकओरसे सबमायावी म्लेच्छ त्रिशूल आदि नानामायाकृत अस्त्रलेकर युद्धकरतेथे और माया बलसे अग्नि जल पत्थर और शस्त्र वरसातेथे उससमय वैष्णवी सेनाके शूरवीर अपने अपने शिरपर ढालरोककर उसमायाकृत जलसे बचतेथे और महाराजाधिराजके शिरपर सहस्रों ढालोंसे छायाकियेहुये थे सहस्रोंशूरवीर पाषाणकेहोगये थे एक अपूर्व चमत्कार मायाकाथा कि यूथकेयूथ पत्थरके होकर खड़ेहुये ऐसे दीखतेथे मानों श्वेतपाषाणके पुतलेबनायेहुये खड़ेकियेगये हैं ॥

जय० छंद। महामलीन चित्तसबवीर। भये अचैन दुखित तजिधीर।
सकतन भागिन करि रणरंग। जलपरि होत उपलको अंग ॥
अतिसभीत अतिव्याकुलसर्व। भये देखिसो प्रलय अखर्व ॥
कुंजलाल सो सैन सनाथ। तेहिआपति परि भई अनाथ ॥

यह देखकर वैष्णवीसेनाके जो शूरवीर पाषाणके नहींहुयेथे वे अपने जीवितकीआशाछोड़कर अस्त्रलेलेकर म्लेच्छोंपरपड़े और लोथपर लोथ गिरानेलगे उससमय सब शूरवीर एकदूसरे से पुकारकर कहतेथे कि शत्रु बचकर न जानेपावें यह देखकर अद्भुत मिथ्या ईश्वर और राजा महावीरकी सेनानेभी वैष्णवी सेनापर धावाकिया फिरतो खड्ग और गदा और मुशल और बाणोंकीवर्षा दोनोंओरसे होनेलगी और ऐसाघोरयुद्धहुआ कि क्षणमात्रमें रुधिरकी भयंकर नदी वहांसे बहनिकली ॥

भुजङ्ग० छंद। भिरे हेरिकै टेरिकै फेरिवीरै। लगेडारने डाटिपट्टीशतीरै ॥
गदाशक्ति भल्लैभली भांतिझेलें। खरेखड्गकीखेलमेंखड्गखेलें ॥
अरे आडुरे आडुरे टेरि टूटें। बनीलोहकीयष्टिसों शीशकूटें ॥
किते खड्ग टूटे कटारी नवाहैं। कटे हाथकेते भरे रोष चाहैं ॥

मुक्तिकाछं०। परेशोणितोदानदीमेंलसैगात। भरेभूरिभासोंचहूंघाडरेख्यात॥
मनोंभारती में पटेहैंकटेकाठ। दरेजानकेहैं खरेतेध्वजालाठ ॥
परे पंक्तिशक्तीनिकेभूरिहैंभात। गदाभल्लयष्टीअनष्टीलखौतात ॥
परेतोमरें भिंदिपालेंकितेवान। परे सांपसे चापहैंतापकेथान ॥

सो०। भयो कठिन घम सान कहत बनत नहिं तौन सब।
कुंजलाल चढ़ियान निरखि सुमन विस्मित भये॥

निदान दिनभर उक्तप्रकारसे युद्ध हुआ और जिससमय सूर्य रूपी शत्रु आकाशरूपी रणभूमिसे भागकर पश्चिमदिशामें जाकर छिपगया और चन्द्रमारूपी विजयी राजा अपनी तारागण रूपीसेना सहित आकाशमें आकर राज्यशासन करनेलगा उस समय वैष्णवी सेनाके सब शूरबीर मायावी म्लेच्छोंकेहाथसे घायल होगयेथे श्रीमहाराजाधिराज केभी कई घावलगे थे और बाकी सबसेना और शूरवीर पाषाणके होगयेथे यहदेखकर वैष्णवी सेनाके बहुरूपियोंने भास्करीसभा उखाड़कर लदवाई और सब स्त्रियोंको लेकरभागे और स्थान रक्षक शूरवीरथे वेमहाराज शत्रुंजयको पालकी में डालकरभागे इधर सब शूरवीर घायलहोने और शरीरसे सेरोंरुधिर निकलजानेके कारणसे निर्बल होगये थे तथापि उन्होंने धीर्य धारणकरके श्री महाराजाधिराजको रण भूमिसे हटाया और युद्ध निवृत्तीके बाद्य बजवाकर श्रीमहाराजाधिराजको एक पालकी में डालकर शोणितसे भरेहुए गिरतेपड़ते पर्वतोंकीओर भागे उससमय सब शूरवीरों के मनमलीन और उदासथे और सब यह कहतेथे कि॥

जय०छं०। अहोकालगतिअति बलवान। कौनेउबिधिनाहिंवारणमान॥
होनहारसो होत अवश्य। करिनसकतउल्लंघनतस्य॥
सुर अरु असुर नाग गंधर्ब। कालहि नांघिसकतनाहिंसर्ब॥
कुंजलालते कालहि पाय। कालार्णव में जात नशाय॥

निदान वैष्णवी सेनाके महाराजाधिराजकी यह अजय देखकर चित्रांगद हाथीपरसे कूदपड़ा और कोकिलाक्षीकेपास आकर बोला कि धन्यहै धन्यहै क्या कहनाहै अब तुम इनशत्रुओं का पीछा मत छोड़ो क्योंकि किसी कविकी उक्तिहै कि॥

दो०। काजु आजुको कालिपै छोड़त नहिं धीमान।
अवसर पाये शत्रुको अवशिहनत करि ज्ञान॥

सो ये बैष्णव हमारे प्राण और मत दोनोंके शत्रु हैं इनको समय देना कदापि उचित नहींहै यहसुनकर कोकिलाक्षी बोली कि श्रीमान् आपका कहना यथार्थ है मैं भी यही चाहतीहूं यह कहकर उसने म्लेच्छोंको आज्ञादी कि शत्रुओंके डेरेतंबू आदि सब असबाब लूटलो यहसुनतेही म्लेच्छतो लूटपाटमेंलगे और बैष्णवी सेनाजनोंको भागजानेका समयमिला जब बैष्णवीसेना की हाटबाट सबको अच्छीप्रकारसे लूटलिया और सैनिक अपनी स्त्री आदिको लेकर कोई किसीओर और कोई किसी ओर निकलगया और पहाड़ोंमें जा जाकर छिपरहे उससमय कोकिलाक्षी अपनी सेनाको लेकर बैष्णवीसेनाके पीछेहुई और वह मिथ्या ईश्वरभी अपनी सेनाको लेकर उसके साथहुआ और हाथीपर बैठाहुआ यह कहकहकर बड़े शब्दसे हँसताजाता था कि हेमेरे उत्पन्नकियेहुए मनुष्यो देखो में जिनअपने उत्पन्नकिये हुए जीवोंसे आप भागताफिरताथा और उनके चित्तको हाथमें लियेरहताथा आज उनको मैंने अपनी क्रोधानलसे क्षणमात्रमें नाशकरदिया देखो मेरी माया और क्रोधानलको रोकनेकी किसी कीसामर्थ्य नहींहैं निदान यहतो इसप्रकारसे अपनी ईश्वरताका बखान करताथा परन्तु बैष्णवी सेनाके शूरवीरभागते भूगतेहुए एक पर्वतके नीचे पहुँचे बहुरूपिये उन सबको लेकर पर्वतके ऊपरचढ़ गये और वहां पृथ्वीपर श्री महाराजाधिराज और महाराज शत्रुंजयको उतारकर सब बैठगये और समयकी विपरीतताका ध्यान करकेरोने लगे ॥

दो० । महा कठिन गति कालकी काल कालको काल ।
शत्रुंजयसे नृपति को कीन्हो जेहि यह हाल ॥

बहुरूपिये इनसबको यहां रोता पीटताहुआ छोड़कर पर्वतके ऊपर आनेके मार्गोंको रोककर खड़ेहोगये और अग्निगर्भाकृत अर्थात् बारूदके भरेहुए नानाप्रकारके यंत्र और गोफिनोंमें पा-

षाण ले लेकर अग्निवर्त्तिका प्रज्वलितकर करके रणके लिये सन्नद्धहुए और जो जो शूरवीर कम घायलथे वेभी अस्त्रशस्त्र लेकर उनकेसाथहुए उससमय पर्वतपर सहस्रों स्त्रियोंके रुदनकरनेका शब्द ऐसाभयानक और घोरहोताथा कि आकाश फटता हुआ जानपड़ताथा उसीअवसर में कोकिलाक्षी म्लेच्छोंकीसेना को लियेहुए उसपर्वतके नीचे जापहुँची और म्लेच्छों ने चाहा कि पर्वतपरचढ़कर सबकोपकड़लें कि इतनेमें बहुरूपियोंने ऊपर से अग्निगर्भाकृत यंत्र आगलगालगाकर छोड़े उनसे म्लेच्छों के मुखझुलसगये और वस्त्रजलनेलगे तब सब म्लेच्छ उसअग्निको बुझानेलगे कि इतने में ऊपरसे बहुरूपियोंने एकलाख चौरासी सहस्र पाषाण गोफिनोंको फिरा २ कर फेंका उनसेसहस्रोंम्लेच्छ मरकर यमलोकमें पहुँचे यहदेखकर बहुतसेम्लेच्छ मायाबलसे उड़कर ऊपरआनेलगे परन्तु बहुरूपियोंने तुरन्त दूसरे अग्निगर्भाकृत यंत्रछोड़े कि उनकेलगतेही वे सब पञ्चत्वको प्राप्तहुए यह देखतेही म्लेच्छोंकी सेनाका मुखमुड़गया और कोकिलाक्षीने कहा कि इससमय बहुरूपियोंकी अधिकता होनेके कारणसे मायाबलसेभी कुछ न होगा क्योंकि जो दशबीस होते तो उनको मायाकृत पुतलों से पकड़वालेती परन्तु ये तो लक्षोंहैं इससे आज रात्रिको ऐसा एकमायाका प्रयोग सिद्धकरूँगी कि ये बहुरूपिये पर्वतसे अपनेआप उतर उतरकर अपने हाथसे अपना शिर काटडालेंगे अब उचितहै कि सबसेना इस पर्वतको घेरेहुए पड़ीरहै और सेनासे हटकर डेरे तम्बूलगायेजावें कि उनमें उतरकर मैं दिनभरकी मारीधारी विश्राम करूं उसके इस कहनेकेसाथ म्लेच्छों की सेनाने पर्वत को घेर लिया और सभा और निवासकेडेरे तम्बूखड़े कियेगये सभामें अद्भुत मिथ्याईश्वर सिंहासनपर विराजमान हुआ और बोला कि आजरात्रिभर आनन्द उत्सवहो जिससे प्रातःकाल आनन्द

दायकहो और शत्रुमारेजायँ यहआज्ञाहोतेही जयदुन्दुभीबजने लगीसभामें मद्यपान आरम्भहुआ और नृत्यहोनेलगा और सब म्लेच्छों ने उसमिथ्याईश्वरकी पूजाकरके उसके आगेभेट रक्खी उससमय कोकिलाक्षीभी स्नानकरके सभामेंआई और उसनेभी अद्भुतकी पूजाकी अद्भुतने उसकीपूजाको ग्रहणाकरकेउसको अ- पनाअङ्गीकृतकिया और बोला कि हे मेरी शक्तिकी उपासक हम अपनीशक्तिकातेजतेरे पेटमें उतारेंगे यहसुनकर कोकिलाक्षीमुस कुराकर और आंखें फिराकर चुपहोरही परन्तु चित्रांगद उठकर नाचनेलगा और पुकारा कि॥ हरित वरण बनड़ी तव रूपम्। अद्भुत प्रभुनाअङ्गी कीतम्॥ आहा! अब क्याहै परमेश्वरअब तुमको अपनी अनन्त शक्तिका भागदेंगे परन्तु आजकी रात्रि कटजाय तो सबकुछहो यहरात्रि मुझको तुमपर बड़ीभारी दी- खती है भला यहतो बतलाओ कि तुमने शत्रुंजयके महामन्त्र को बन्दकरके क्याकिया वहबोली कि उस कांचकुप्पीको मैंने सन्दूक में बन्दकरदिया है चित्रांगद बोला कि मेरा यहमंत्र नहीं है कि वहकांचकुप्पी यहींरहे किन्तु उसको किसी ऐसे स्थानपर भिजवादो कि जहां वह कभी न खुलसके और बहुरूपिये लाख ढूंढ़ें परन्तु उसकापता न पावें वहबोली कि मेराचित्तचाहताहै कि उसको महाराज महेन्द्रकेपास भेजदूं कि महाराज उसको देवी खण्डमें रखवादें यद्यपि बहुरूपिये वहांभी हैं परन्तु मायाकृत नदीके पार नहीं जासकते हैं और जो पारभी चलेजायँगे तोदेवी खण्डकामार्ग न पावेंगे क्योंकि उसकामार्ग सिवायमहाराज म- हेन्द्रके और कोईनहीं जानताहै यहसुनकर चित्रांगदबोला कि यहबात परम श्रेष्ठहै भेजदो यहसुनतेही कोकिलाक्षीने महाराज महेन्द्रको यह विनयपत्रलिखा कि महाराज मुझ आपकीदासीने परमेश्वरके पास आकर शत्रुंजय महामंत्र बन्दकरदिया और शत्रुओंको पाषाणका बनादिया अब थोड़ेसे शत्रु औररहगयेहैं

वह आकर एकपर्व्वतपर छिपे हैं कल उनकाभी वधकरूंगी आप
केपास वह कांचकुप्पी जिसमें मैंने महामंत्र बन्दकियाहै भेजती
हूं इसको देवीखण्डके किसीऐसे स्थानमें रखवादीजियेगा जहां
प्रहासकावश न चलसके श्रीमायाकर्ता आपके तेज और प्रताप
को सदैव अखण्डबनायेरक्खे और आपकेमित्रोंका उदय और
शत्रुओंकी क्षयहोय यहपत्र लिखकर उसने अपनी कंजमुखी
नाम दासीकोदिया और वह कांचकुप्पीभी देकर उसको आज्ञा
दी कि महाराज महेन्द्रके पास लेजा यहआज्ञापाकर वहदासी
चलदी इधर चित्रांगदनेकहा कि हे कोकिलाक्षी इसमहामंत्रके
बन्दरहनेसे कईलाभ हैं प्रथम तो आपके शत्रु सब मारेजायँगे
और जो बचभीरहेंगे तोशत्रुंजय सचेत न होगा औरबहुतदिन
अचेतरहनेपर मरजायगा उसके मरतेही उसकेअनुगामी प्र-
हास और भानुविक्रम आदि सब उसकेशोकमें मरजायँगे तब
मायाकृतदेशकाभी बखेड़ामिटजायगा और परमेश्वरकोभी कोई
न सतावेगा अच्छा अबतुमभी यहां मत ठहरो किसीपर्व्वतकी
कंदरा अथवा किसीगर्त में छुपकररहो जिससे बहुरूपिये तुम
को न पावें क्योंकि तुम्हारेभाइयोंने अपनी बड़ीरक्षाकीथी परंतु
बच न सके मुझको वहीभय लगाहुआहै तुम्हारीभी यहरात्रि
मुझको कटतीनहीं दीखती वह म्लेच्छी इस चित्रांगदकेकहने
को परमहित और सत्य जानतीथी क्योंकि वहसमझतीथी कि
यह परमेश्वरका पार्षदहै सदैव उनके समीप रहताहै इससे उन
के भेदको जानताहै इसका कहनामानों परमेश्वरकाही कहना है
ऐसा समझकर वह माया बलसे उड़ी और बन में एक दूरके
स्थानपर जाकर एकगर्त्त में उतरी और वहां उसने निवासकिया
निदान यह आपत्तिरूपा तो यहांआकर गर्त में बैठी और वहां
अद्भुत मद्यपानकरके आनन्द में बैठाहुआ नृत्य देखनेलगा॥

चौ०। तहँ अद्भुतकी सभा सुहाई। बैठेसकल सभासद आई॥

अति सुन्दर शोभा आगारू। चहुं दिशि ताकेलग्योबजारू ॥
बेचत वस्तु वणिक जननाना। अति अपूर्वको करैबखाना ॥
तेहि अवसर गणिकातहँ आई। रूप सुन्दरी परम सुहाई ॥
नाचत भाव अनेक दिखाई। मनवश करतमधुर धुनिगाई ॥

निदान यहांतो यह उत्सव होरहाहै परन्तु अब उन आपत्ति ग्रसित अर्थात् वैष्णवी सेनाके बहुरूपियों और शूरवीरोंका वृत्तांत सुनिये कि इन्द्रविक्रम और पार्थविक्रम और भीष्मविक्रम और श्रीमहाराजाधिराज आदि सब शूरवीरोंकी जबमूर्च्छा जगतीथी तब वे अपनी शूरताके कारणसे खड्ग लेकर उठतेथे कि चलकर शत्रुओंका वधकरें परन्तु घाउ जो रणमेंलगेथे उन सें से रुधिरनिकलनेके कारणसे फिर मूर्च्छितहोकर गिरपड़ते थे यह दशा देखकर उनकी स्त्रियां अपने २ पतियोंके पासबैठ बैठकर महाशोक ग्रसितहोकर करुणा विलाप करतीथीं ॥

जय० छन्द। हापतिहापति हाममनाथ। कहि कहि रोवत हनिउरमाथ ॥
गिरतविकलहोइमहितजिचीर। रोवतउठिउठिपुनिधरिधीर ॥
निरखि स्वपति गतितेसहशंक। भेटतपतिसों भरिभरि अंक ॥
गिरतिउठतिफिरिफिरिछविधाम। करुणाकरिकरिरोवतिभाम॥
होय शोकसों तप्त महान। कहत श्वासलै वचन प्रमान ॥
हे पति प्राणनाथ बरबीर। उठि क्यों हमहिं न धारत धीर ॥
तुमबिनकेहिविधिजीवबनाथ। हमहिं चलहुलै अपने साथ ॥
नहिं तुमते हमरेप्रिय आन। छाँड़हु हमहिं न परम सुजान ॥
हम भाषत तुमसों हे बीर। तुम हमसों कछु कहत न धीर ॥
इमिकरिकरिअतिकरुणाभाम। रोवतविकलसकलछविधाम ॥
बोलें दुःखभरे बहु बैन। वहत नीर दृग भरीं अचैन ॥
कुंजलाल जो दुःख अखर्ब। कहत बनत नहिं सो अबसर्ब ॥

इस प्रकारसे उनको विलाप करतेहुए देखकर सब बहुरूपिये उन राजपुत्रियों के पासगये और बिनयपूर्वकबोले कि इस आपत्तिकालमें धीर्यधारणकरके परमेश्वरसे विनयकरो कि शत्रुओंकीक्षयहोय जो परमेश्वरनेचाहा तो आजरात्रिकोहम म्लेच्छों

का नाम न रहनेदेंगे हम लोग अबजाते हैं और उपाय करते हैं यह सुनकर उन रानियों ने रोनाबन्द किया और सब एकाग्रचिहोत्तकर परमेश्वर से प्रार्थना करनेलगीं कि हे विश्वम्भर हे जगदीश्वर हे अन्तर्यामी हे कृपाल हे ईश्वर हे त्रिभुवननाथ हे दीनोद्धर तू सर्वशक्तिमान् और अपने भक्तों का रक्षकहै हम सब इस समय अनाथहैं तेरे सिवाय कोई हमारा नाथ नहीं है हम दीन दुखियोंपर अपनी कृपाकर और इस आपत्तिसे हमारी और हमारे पतियोंकीरक्षाकर और इन शत्रुओंकानाशकर निदान जब ये उक्तप्रकारसे परमेश्वरसे प्रार्थना करनेलगीं तब बहुरूपियों ने विचारकिया कि पर्वतके नीचे तो सेनाठैरी हुईहै यहांसे किस प्रकारसे जायँ जो उसदुष्टाकावधकरैं इस विचाररूपी समुद्र में सोबहुरूपियों ने गोतालगाया और अन्तको मनोरथरूपी मुक्ताकोपाकरसबनेतत्काल अपनास्वरूप सुन्दरस्वरूपवान् स्त्रियोंकासा बनाया और वस्त्र और आभूषणों से अलंकृतहोकर वेबहुरूपिये ऐसेस्वरूपवान् दीखनेलगे मानों आकाशसे अप्सरा उतरकरआईहैं नैन उनकेपुण्डरीकके समानथे और आनन ऐसेसुघर और मनोहरथे कि कामदेवकी रति भी उनकेसामनेलज्जितहोतीथी आहा! क्यावर्णन उनकीशोभा का कियाजाय॥

क०। नैन ऐन मैनके से बान खरसान धरे आननकी छबिबनी जैसे चन्दपूरेकी। कनक लतासीभुज उरज उतंग गोरेसोहै तापै कंचुकी सबजरंग रूरेकी॥ कहै कवि कृष्ण मटकीली चारु चितवन चटकीली चूनरी चटकचोखे चूरेकी। शीश पटटारि भुज उलटि समेटि कच क्यों न मनबांधे बांकी बांधनि सुजूरेकी १॥

सवैया। कंज कुरंग गुमाननु गंजन पीमनअंजन हैं अनियारे।
खंजन मीनन के मद भंजन अंजन हूं बिन ये कजरारे॥
लाज समाज सुशील हँसी रसरंग भरे विधि मैन सुधारे।
कृष्ण कहा उपमा कहिये तिय याजगमें दृग तेरे उजारे १॥

सुन्दर रूपभरी सुमुखी नखतेंशिखलों सुनिकाई भरी है।
केसरिकी सुकुमारि मनोंछवि पुंजसोंओप विरंचिकरी है॥
गोरी के गोरे गरे मनमोहत सोहत पीककी लीक खरी है।
चीरगुलीबँद लालकीलाल मनोंदुतिकीप्रति लीकपरी है २॥

निदान जब उक्तप्रकारसे अपने स्वरूपको मनोहर बनाचुके तब और बहुरूपियोंको सबकी रक्षाकेलिये छोड़कर वे सौ बहुरूपिये उस पर्वतपरसे उतरे यहां म्लेच्छोंके पहरे खडेथे और सब चौकसबैठेहुएथे कि अकस्मात् पैरोंके आभूषणोंके बजने का शब्दसुनाईदिया और ऊपरको जो दृष्टिकी तो एकसौ परम सुन्दरी स्त्रियोंको आतेहुएदेखा उनको देखकर म्लेच्छ दौड़कर उनकीओरगये और उनके सुन्दर मनोहर स्वरूपको देखतेही सब आसक्तहोकर भौंचक्केसे होगये और सबने अधीर्यहोकर उनसेपूंछा कि हे सुन्दरीयो तुम इसअंधेरी रात्रि में पर्वतपरसे उतरकर क्योंआईहो उन्होंने उत्तरदिया कि हमसब चन्द्रवदन श्रीपरमेश्वरकी पुत्रीकी दासीहैं हम पहिले अद्भुत परमेश्वरकी पूजाकरतीथीं परन्तु जबसे परमेश्वरकी पुत्रीको वैष्णवक्षत्री हरकर लेगये तबसे परवशहोकर उसके साथरहीं और आजतक किसीकोऐसानपाया कि जिसकेसाथ निकलकरचलीआतीं और वह हमको इन वैष्णवोंसे छुड़ालेजाता सो आज हमसबके मनोरथ भी पूरेहुए कि इन वैष्णवों की अजयहुई इससे हमसब तुमलोगोंके पासआईहैं हमको परमेश्वरके पासपहुंचादो और इससमय इसकारण आई हैं कि प्रातःकाल वैष्णवों के साथ हमारा भी बध न कियाजाय और फिर अपने पुराने परमेश्वर की शरणमें पहुंचकर तुमलोगोंका भलामनावें यहसुनकर सब म्लेच्छ बहुत प्रसन्नहुये और समझे कि परमेश्वरने ये सुन्दरी स्त्रियां हमपर कृपाकरके हमारे निमित्त भेजी हैं और बोले कि तुमअब मतघबराओ प्रातःकाल सबवैष्णवों का बधहोगा जो

तुम वहांरहतीं तो तुमलुटजातीं अच्छाहुआ जो तुमचलीआईं यहकहकर वे सब उनका हाथपकड़ पकड़कर अपनेडेरेपर ले आये और मायाकर्त्ताका धन्यवादकरके उस एकांत में उनसे हास्य विनोदकरनेलगे उन दासीरूप वहुरूपियोंनेकहा किहम को मद्यपानकरनेका व्यसनहै परंतु दोतीनदिनसे नतो मद्यही पानकरनेको मिलीहै न भोजनही मिलाहै युद्धकेकारणसे भागी भागी फिररहीहैं इससे हमाराचित्त स्वस्थनहीं है हमको थोड़ी मद्यपीनेको दो तो हमाराचित्त ठीकहो यहसुनकर उनम्लेच्छों ने मद्यके पात्र और खाद्यपदार्थ लाकर उनके सामने रखदिये उन्हों ने आंखबचाकर उस मद्य में मूर्च्छाकरचूर्ण मिलादिया और एकएक पानपात्रभरकर सबने अपनेअपने चाहनेवालेको दियावेम्लेच्छउसमद्यकोपीतेहीमूर्च्छितहोगयेउससमयउनवहु-रूपियोंने खड्गनिकालकर उनसबके शिरकाटडाले और अप-नाअपना नामसुनाकर वन में भागगये उनके मरने से बड़ा कोलाहलमचा आँधियांउठीं और म्लेच्छ उसकोदेखकर दौड़े परंतु उन्होंने वहुरूपियोंको नहींपाया और उन मरेहुए म्लेच्छों की लोथोंको उठाकर अद्भुतके सामने लेगये और बोले कि ये सौम्लेच्छ इससमय मारेगये हैं यहसुनकर चित्रांगदबोला कि वहुरूपिये छलकरनेकेलिये पर्वतसे उतरेहोंगे और मार्गपैदाकर के कोकिलाक्षी का वधकरने को सेना में आयेहोंगे हमने यही सोचकर कोकिलाक्षीको छुपादियाहै और अद्भुतसे बोला कि हे परमेश्वर अपनी शक्ति से ऐसाभविष्य रचिदीजिये कि इनके हाथसे आपकीप्रिया कोकिलाक्षी बचजाय और उन म्लेच्छोंसे कहा कि इनलोथोंको लेजाकर गड़वादो और आज्ञादी कि स्त्री अथवा पुरुष जोकोई पर्वतसेउतरे उसे अवश्यपकड़लेना और उनकेछलमें मतआना यहआज्ञापाकर म्लेच्छजाकर रक्षाकरने लगे और वहुरूपिये अपनाभेष भृत्यगणोंकासा बनाकर अद्भुत

कीसभामें पहुंचे वहां कोकिलाक्षीको नहींपाया परंतु चित्रांगद कहरहाथा कि हेपरमेश्वर जो मुझको यह मालूमहोता कि बहु-रूपिये पर्वतसे उतरआवेंगे तो मैं कोकिलाक्षी से पूछलेता कि तुम बन में किसस्थानपर जाकर छिपोगी और वहां मैं जाकर आप उसकी रक्षाकरता अब आप अपनीशक्ति से बताइये कि वह कहांहै यहसुनकर अद्भुतबोला कि हमसब जानते हैं परंतु बतावेंगे नहीं इनबातोंको सुनकर बहुरूपियों ने अनुमानकिया कि इसदुष्टने उसचांडालीको कहीं बनमें छिपादियाहै चलो बन मेंचलकरढूंढें यहसोचकर सब वहांसेचले और सबनेमंत्रकिया कि हममेंसे एकबहुरूपिया बिना स्वरूपबदले खड्ग लियेहुए बन में फिरे और हमसब उसको एक ऊँचेस्थानपरसे देखतेरहें और जब कोकिलाक्षी उसकोपकड़नेआवे तब हम उसकेरहनेका स्थान देखलें और छलकरें यहमंत्रकरके मालवी बहुरूपियाहाथ में खड्गलेकर फिरनेलगा और कहताजाताथा कि वह चांडाली कोकिलाक्षी मिलजाती तो आज उसेबतादेता दैवयोगसे वह बकताहुआ वहांजानिकला जहां कोकिलाक्षीने एकगढ़ेमें नि-वासकियाथा उसकी वाणीको सुनकर वहघबराई और बाहिर निकलकरदेखा कि एकअकेला बहुरूपिया हाथमेंखड्गलियेहुए जारहाहै देखतेही उसने कुछमायाकी कि मालवी निर्वीर्यहोकर गिरपड़ा उसने आकर उसको एकवृक्षसे बांधदिया और कहा कि मरे सबेरेतुझेतेरे मित्रवर्गोंके सामनेमारूंगी न जानेंतूपहाड़ परसे क्योंकर उतरआया मैं जानतीहूँ कि तूपहाड़पर न था यह कहकर वह गर्तमें उतरगई उसको और बहुरूपियोंने भी देखा और उनमें से गुर्जर बहुरूपिये ने अपना भयङ्कर स्वरूप बनाया अर्थात् भोडलके चारशिर सातहाथ और तीन पैरबना करलगाये एकहाथमें त्रिशूल दूसरेमेंखड्ग तीसरेमेंगदा चौथेमें चर्म पांचवेंमें धनुष छठेमेंबाण और सातवेंमें अग्निपात्रलेकर

सब शरीरसे ऐसातैलमला कि उसका सब शरीरचमकने लगा इसप्रकारसे अपना भयङ्कर रूपबनाकर वहउस गर्तपरगया और पुकारा कि हे अद्भुतकी उपासकबाहिरआ यहवाणी सुन कर कोकिलाक्षी बाहिर निकलआई और उसभयङ्कर रूपको देखकर भयभीतहोकर बोली कि आप कौनहैं वहबोला कि पर-मेश्वरकागणहूँ मुझको अद्भुत परमेश्वरने इसगढ़ेका पताबता कर आज्ञादी है कि तूजाकर जहांहमारी भक्तहै वहांका पहरादे सोमैं आयाहूँ आपगढ़ेमें क्यों छुपी हैं यहां बैठिये यहां आनेकी किसीकी सामर्थ्य नहीं है यहकहकर वहउसगर्तके समीपउसके साथठहराथा कि इतनेमें सुबास बहुरूपियेने अपनास्वरूपचि-त्रांगदकासा बनाया एकसौ कलीका जामापहिरा पगड़ीधारण की और चपड़ौआं जूतापहिरकर चारबहुरूपियोंको सेवकबना केसाथलिया और उसस्थानके निकट पहुँचकर उसम्लेच्छीसे पूराछलकरने और उसे अपनापूर्ण विश्वासकरानेके लियेपुकार करबोला कि हे कोकिलाक्षी मैं कहताथा कि नहीं कि यह रात्रि कुशलतासे कटती नहीं दीखती है आपऐसी अचेतहोगई कि बहुरूपियेको पासलिये हुए बैठी हैं यह परमेश्वर कागण नहीं है किन्तु बहुरूपियाहै इसको शीघ्रपकड़ो यहसुनतेही कोकिलाक्षी उसगणकीओरको फिरी और वहभागा परन्तुउसनेऐसीमायाकी कि वहबेचैनहोकर गिरपड़ा तबउसने उसेभीबांधदिया इतनेमें चित्रांगदरूपी सुबासउसके पासआया और बोला कि इससमय परमेश्वरने मुझे इसगर्तका पताबताकर आज्ञादी कि तूशीघ्रजा मेरीभक्तको बहुरूपिया मेरागणबनकर बधकरना चाहताहै यह कहकर परमेश्वरने एकगणको आज्ञादी कि वहमुझे उठाकरयहां पहुँचागया क्योंजी कोकिलाक्षी जो मैं यहां न आजाता तो बहु-रूपिया तो तुमको समाप्तही करचुकाथा देखो परमेश्वरकोभी तु-म्हाराबहुतध्यानहै यहसुनकर कोकिलाक्षीने अद्भुतको दंडवत्की

ओर विश्वासपूर्वक चित्रांगदके पासआकर वार्तालाप करनेलगी ओर बोली कि श्रीमान् आप इनदोनोंबहुरूपियोंको परमेश्वरके पास लेजाइये में अब यहांसेभीजातीहूँ ओर मायाकृत वनमेंजा-करगड़ूंगी ओर वहीं एक प्रयोगभी सिद्धकरूंगी ओर प्रातःकाल होनेपर आऊँगी यह सुनकर चित्रांगदरूपी सुवास बोला कि परमेश्वरको तुम्हारे इतनेही परिश्रमकरनेका बड़ाशोक है इस से उन्होंने मुझे एकबीड़ी तुम्हारे लियेदी है इसमें परमेश्वरका उच्छिष्ट पड़ाहै इसके खानेसे आयुबढ़जायगी कोई शस्त्रशरीर पर न लगेगा ओर पृथ्वीका गड़ाहुआ सब धन दीखनेलगेगा ओर बहुरूपिया किसी भेषमेंआवेगा तुमको मालूमहोजायगा परमेश्वरकी तुमपर बड़ीकृपाहै कहते थे कि मैं आजहीअपना तेजरूपी वीर्य उसके शरीरमें धारण करूंगा यह कहकर उसने अपने पाससे एक सुवर्णका ताम्बूलपात्र निकाला ओर उसे खोलकर उसके सामने किया उसमें एकपानकी बीड़ी सुगन्ध भरी सुवर्णकेसूक्ष्मपत्रोंसे मढ़ीरक्खीथी कोकिलाक्षीने उसेउठा कर खालिया ओर सिसकी भरतीहुई उसकेसाथहोली जबउस बीड़ीका स्वरस पेटमेंगया वहचक्र खाकर गिरपड़ी तब बहुरू-पियोंने उसके चारोंओर नालीखोदकर उसमें अग्निगर्भा अ-र्थात् बारूद बिछादी ओर उसमें आगलगाकर आपदूरजाखड़े हुए क्षणमात्रमें वहम्लेच्छी भस्महोगई उसके मरनेसेमहाअंध-कारछागया वायु प्रचण्ड चलनेलगी ओर बड़े भयानक शब्द होनेलगे मालवी ओर गुर्जर दोनोंबहुरूपियोंपरसे मायाकृतबे-ष्टन उतरगया ओर वे दोनों छुटगये ओर वाणीहुई कि कोकि-लाक्षी मारीगई हायइसकी वय अभी तीनसौहीवर्षकीथी ओर अभीतक उसने पुरुषका मुखभी न देखाथा निदान उसकेमर-नेसे वह सब सेना जो पाषाणकीहोगईथी फिर ज्योंकीत्योंहोगई उस समय उन्हों ने देखा कि हम घोड़ोंपर सवार हथियार लिये

हुएहैं न हमाराराजा है न वैष्णवी सेनाके वासस्थलका पताथा यह देखकर वह सब वनकीओरचले इधर बहुरूपियों ने अनुमानकिया कि जो सेना पर्वतपर है वह सब भूंखी प्यासी और घायलहै उससे तो कुछ न होसकैगा परन्तु जो सैन पत्थर की होगईथी वह अब यथावस्थित होगईहोगी उसको लाना चाहिये यह विचारकरके वे सबरणभूमिकीओर चलेथे कि मार्गमें उनको सम्पूर्ण सेनाआती हुई मिली बहुरूपियों ने उनसे सब वृत्तान्तकहा और बोले कि तुम्हारे राजापहाड़परहैं म्लेच्छ उन को घेरेहुएहैं जो हम उसम्लेच्छोंका वध न करते तो तुम लोग कभी न मुक्तहोते अब चलकर सबशत्रु सेनाका वधकरो इस समय सब अपने २ व्यसनमें बेसुधपड़े हैं यह सुनतेही वैष्णवी सेनाके सेनापतियों ने चारभाग किये उनमेंसे तीन अनियोंने शत्रुसेनापर आगे और दोनोंओरसे धावाकिया और चौथीअनीने अद्भुत मिथ्याईश्वरकी सेनाको जाघेरा जातेही रक्षकों का वध करडाला सबडेरे तम्बुओंके बन्धनोंको काटडाला और उन में आगलगादी यह देखकर सबलोग घबराकर बाहर निकले और वैष्णवी सेनासे भयभीत होकर जो जो युद्ध विचक्षणथे वे युद्धकरते हुए गृह्यताम् गृह्यताम् पुकारतेहुए निकलगये उससमय शत्रुसेनाकेयोद्धाओंकी अपूर्वदशाथी घबड़ाहटमें कोई ऊर्ध्व वस्त्रकोनीचे पहिरताथा और अधोवस्त्रको ऊपरसे धारणकरता था और जब वेवस्त्र अङ्गमें न चढ़तेथे तब उनके बनानेवालोंको दुर्वचनकहतेथे कोईतर्कसमें खड्गकोरखताथा और खड्गकोष में बाणोंको भरताथा कोईखड्ग लगानेके स्थानमें गदाको बांधताथा निदान चारोंओरको एकहुल्लड़मचाथा लोगघबराघबरा कर वैष्णवोंकीओर दौड़तेथे और अपनेप्राण खोतेथे मायावी म्लेच्छ तो बारहसहस्रहीथे उनमेंसे बहुतसे तो पहिलेही मारे गयेथे और जोबचेथे वे पहिलेही हल्लेमें बधहोगये क्योंकि सब

अचेतथे और जो दो एक बचरहेथे प्राणलेकर भागगये आगे जाकर उनको वहलोग मिले जो अद्भुतकीसेनासे भागेथे और दोनों एकदूसरेको शत्रुअनुमानकरके युद्धकरनेलगे निदान एक महायुद्ध चारोंओरको मचाथा जिधरसुनो हाहाकार होरहाथा कोई खड्गप्रहार करताथा कोई मल्लयुद्धकरके लड़ताथा कोई बाण बर्साताथा इस महायुद्धके शब्दको सुनकर वह मिथ्याई-श्वरअपने डेरेके बाहिरआया और देखा कि सबसेना तितर बितरहो रही है मायावीम्लेच्छ चलनेकी तयारीकर रहे हैं वैष्णवी सेनाके योद्धा गर्जगर्जकर खड्ग आदि शस्त्रोंका प्रहार करते हैं और शत्रुओंका बधकरकरके प्रसन्नहोते हैं॥

चौ०। वैष्णवयोधा अति रिस पागे। अस्त्रशस्त्र तहँ वर्षन लागे॥
दावा दहै गहन वन जैसे। मर्दत भे पर दलकों तैसे॥
रथ धनु ध्वजातुरङ्गभटवारण। अङ्गभङ्ग करि लागे डारण॥
कितने भगे प्राणहर ज्वैकें। किते मरे बढ़िसन्मुख ह्वैकें॥
भागे बन्धुपुत्र तजि केते। बहुभगि पलटिलरैंजयदेते॥
घायल परे किते भट ऊबें। कितने मरे रुधिर में डूबें॥
भु०छन्द। किते खड्ग टूटे कटारी न बाहैं। कटेहाथ केतेभरेरोपचाहैं॥
भिदे गात केते खरे गात भेदें। किते जातके घातदै मांसभेदें॥
कटे शीश केते अटे कोपघूमें। कटे गात केते लिटे भूमिचूमें॥
बिनाबीरकेह्वै किते अश्वधावें। बने बातके पांतसे भूरि भावें॥
तजें सङ्गही आयुधै बीर केते। मरें सङ्गही सङ्गही जात चेते॥

यह देखकर चित्रांगदने अद्भुतसेकहा कि लीजिये आपकी प्रिया तो मारीगई अब कुछअपनी मायासे भविष्य रचना कीजिये नहीं तो शत्रुञ्जय जो पर्वतपरसेउतरा तो प्रलय पूरदेगा आपको भागनेका मार्गभी न मिलैगा यहसुनकर वह मिथ्याई-श्वर बड़ी शीघ्रतासे वहांसेभागा और राजामहावीर डेरेको लदवाकर दुर्गकी ओरचलदिया सबशत्रु मारेगये और जो बचे सो भागगये अद्भुतरत्नाकर पर्वतके किलेमें जाकरछुपा और उस

दुर्गकाद्वार बन्दकराकर परखाओंमें जल भरवादिया उससमय वैष्णवी सेनामें जयदुन्दुभी बजनेलगी शत्रुओंको परमअजय प्राप्तहुई उसमिथ्याईश्वरके सहस्रोंउपासक क्षणमात्रमें नाशहो-गये इतनेमें वह रात्रिसमाप्तहुई और सूर्यने आकाशरूपी रण-भूमिमें अपने रश्मिरूपी खड्गसे अन्धकाररूपी शत्रुसेनाकोवध करके प्रकाशरूपी मित्रोंका उदयकिया ॥

दो० । अरुणोदय परलखि परी अरुणवर्ण महिसर्ब ।
जहां युद्धकी भूमि में अरिगण मरे अखर्ब ॥

उससमय सुत्रसेनापति और बहुरूपिये पर्वतपरसे उतरकर नीचेआये और भास्करीसभाके डेरेको भारकराकरश्रीमहाराजा धिराज और महाराज शत्रुञ्जयको लेकर उसी स्थानपर आये जहां पहिले वैष्णवी सेनाठहरीहुईथी वहांफिरसे सभा आदिके डेरेखड़े कियेगये सिविर बनाईगई हाटें खुलवाईगई और सब सेना और शूरवीरों ने फिर आकर पूर्ववत् वासकिया और सब देशमें विजय घोषित कराईगई उसको सुनकर जो जो लोग भागगयेथे वे फिर सेनामें आगये और सब आनन्द उत्सवम-नानेलगे जहां तहां नृत्यहोनेलगा उससमय वैद्योंने श्रीमहा-राजाधिराज आदि जितने वीर घायल थे सबकी यथा विधि चिकित्साकी और महाराज शत्रुंजयको उसीप्रकार अचेत श-य्यापर लिटादिया परन्तु सब बड़े आश्चर्यमें थे कि वह म्ले-च्छी तो मारीगई फिर महाराज शत्रुंजयको चेत क्यों न हुआ सब शूरवीर और बहुरूपिये उनकी शय्याके चारोंओर खड़ेहो-कर रोतेथे और बहुतसे यत्नचिन्तामें फिरते थे परन्तु जबकोई उपाय न सूझता तब निराशहोकर फिरआते थे और महाराज शत्रुंजयके मूर्च्छितरहनेका कारण यह था कि कोकिलाक्षीने वह कांचकुप्पी जिसमें मायाकृत पुतलेको बन्दकरके महाराज श-त्रुंजयको अचेतकियाथा वह उसनेएक दूसरी म्लेच्छीकोमाया-

कृत देशमें लेजानेके लियेदियाथा और उस म्लेच्छीने उसकाच कुप्पीपर अपनी मायाकीथी कि जबतक मैं जीतीरहूं तब तक महामन्त्रका जाननेवाला अचेत रहै और यह कुप्पी न खुले निदान यह उपाय करके वह म्लेच्छी वहांसे चलकर मायाकृत देशमें पहुँची परन्तु जानेमें पहिले प्रत्यक्ष खण्ड पड़ताहै और वहां रानीनिशाकरीकीसेना उतरीहुई थी और सेनाके बहुरूपिये स्वरूप बदलेहुए बन बन फिराही करते थे निदान दैवयोग से उससमय चपला बहुरूपिया म्लेच्छरूप धारण किये बनमें फिर रहाथा कि उसने इस म्लेच्छीको बड़ी शीघ्रतापूर्वक आकाशमार्ग से जाते हुए देखा देखतेही बिचारा कि इसका बध करना चाहिये क्योंकि जो म्लेच्छकमहो वही सही यह बिचार कर वह पुकारा कि धन्यहै भाई धन्य आपको ऐसी दुश्शीलता शोभानहीं देतीहै यह सुनकर वह म्लेच्छी बोली कि इससमय मुझको बड़ा आवश्यक कार्य है इससमय आप क्षमाकीजिये चपला बोला कि तुम हमारी एकबात सुनती हुई न जाओगी तो बड़ी आपत्तिमें पड़ोगी क्योंकि मैं जानताहूं कि तुम महाराज महेन्द्रकी सभामेंजातीहो परन्तु वहां महेन्द्र जो कोई अपना परायाजाताहै सबका बध करवाडालताहै यह सुनकर वह म्लेच्छी घबराई और उसने अनुमानकिया कि यह तो यहांका रहनेवालाहै और तूयहांकावृत्तांत जानतीनहींहै इससे इससे सब हालपूछकर जाना उचितहै यहशोचकर वह पृथ्वीपर उतरी और बोली भाईमें रानीकोकिलाक्षीकी दासीहूं यह कांचकुप्पी जिसमें शत्रुंजयका महामंत्रबन्दहै महाराज महेन्द्रकेपास लियेजातीहूं और सब वृत्तांत वैष्णवीसेनाके तित्तरवित्तर होनेका कहकर पूछनेलगी कि अबतुम बतलाओ कि महाराज महेन्द्र सबका बध क्यों करतेहैं चपलानेकहा कि प्रहासबहुरूपिया अपनाभेषबदल कर महाराजकी सभामेंगयाहै उसनेसबको वहां ऐसादुखदियाहै

कि अब महाराजमहेन्द्र विनापूछेपाछे जोकोई जाताहै उसीको मरवाडालतेहैं सो यहतोसबकुछहै परंतु इससमय तुमनेवैष्णवोंके विध्वंसनकी ऐसी प्रियबात सुनाई कि चित्तचाहताहै कि तुम्हारा मुखमोतियोंसे भरदीजिये आओ हमारेगलेसे तो लगजाओ यह कहकर चपलाने दोनोंहाथ फैलादिया वह म्लेच्छी भी उससे हाथफैलाकरमिली परंतु मिलतेमें चपलाने अपनेमुखसे मूर्च्छा करचूर्ण फूंका कि वह नासिकासे उसके ब्रह्मांड में पहुंचा और वह चक्करखाकर गिरी चपलाने उसका शिर काटडाला उस के मरनेसे कोलाहल प्रकटहुआ थोड़ीदेरमें जब वहमिटा तब चपलाने वह कांचकुप्पीलेकर फोरडाली और उसमें जो पुतलाथा उसकेभी टुकड़ेटुकड़े करडाले और फिर जोकुछधन उसम्लेच्छी केपास था उससबको प्रहासकेलिये लेकर अपनी सेनाकीओर चलदिया निदान यह तो उधरचला और यहां महाराज शत्रुंजयको चेतहुआ आंखेंखुलीं परंतु निर्बलता के कारणसे बोला न गया इशारेसे बातपूछी तब महाराजाधिराजने सबवृत्तांत कह सुनाया और पौष्टिकपदार्थ सेवनकराये दोदिनमें वह निर्बलता दूरहुई और महाराजशत्रुंजय सभामें आकर बैठे सबसभासद भी आकर आनन्दपूर्वक अपने २ योग्यस्थानोंपर आसीनहुए जयदुंदुभी बजी और भेटें महाराजाधिराजको दीगईं सब वैष्णव क्षत्री आनन्दपूर्वक मद्यपानकरनेलगे और परमसुंदरीस्त्रियोंका सुंदरनाच देखने और मनोहरगान सुननेलगे ॥

चौ० । तेहिअवसर अति आनँदछायो । लोनहिंसकल बनतअबगायो ॥
मधुकृत मद्य पियतसबबीरा । अति आनँदसों भरयो शरीरा ॥
बरगति नाचत सकल सुनैनी । रूप मनोहर कोकिल बैनी ॥
गाय मधुरधुनि से छबिधामा । हरत चित्त सबको ते बामा ॥

निदान यहां तो आनन्दउत्सव होताथा परंतु वहां चपला वहसब धनलेकर रानी निशाकरीकी सेना में पहुंचा और वह

धन प्रहास को दिया उसने प्रसन्नहोकर उसको लेलिया और कहा कि मेरा यहशिष्य बड़ा सुशीलहै इसकेपीछे चपलाने वैष्णवीसेनाका सबवृत्तांत जो उस म्लेच्छोंसे सुनाथा और उस कांच कुप्पीके तोड़नेकाहाल प्रहाससेकहा उसको सुनतेही प्रहास ने रानी निशाकरीसे कहा कि मुझको शीघ्र मायाकृत देशकेबाहर पहुंचादो मेरास्वामी न जाने जीता है अथवा बैकुंठवासी हुआ जो उसका एकबालभी बांकाहुआ होगा तो मैं मरुतदत्त वस्त्र ओढ़कर उस मिथ्याईश्वरको और उसके सबउपासकोंको मारडालूंगा रानी निशाकरीबोली कि आप घबराइये नहीं मैं आपके स्वामीका हाल सब देखेदेतीहूँ यह कहकर रानीनिशाकरीनेकुछ मायाकी कि उसमें तत्काल एक मठ प्रकटहुआ और उस के एक नागनन्त में एकपुस्तक रक्खीथी रानी निशाकरीने उस पुस्तकको लेकर पढ़ा तो उसमें कोकिलाक्षी और सब म्लेच्छों के मारेजानेका वृत्तांत और महाराज शत्रुंजयके सचेत होनेका हाल लिखाथा उसको सुनकर प्रहासका चित्त स्वस्थहुआ तब रानी निशाकरी ने उस पुस्तक को उसी आले में रखकर फिर कुछ मायाकी कि वह मठगुप्तहोगया इसके पीछे सब आनन्द उत्सव मनानेलगे परन्तु प्रहासने कहा कि हे रानी निशाकरी मैं बड़े आश्चर्यमें हूँ कि यह मायाकृत देश क्योंकर जयहोगा और भानुविक्रम और रानी चन्द्रचूडा आदि क्योंकर छूटेंगे मैंने सहस्रांम्लेच्छोंका वधकरडाला परन्तु कुछकार्य न हुआ यह सुनकर रानी निशाकरी बोली कि आपचिन्ता न कीजिये परमेश्वर चाहेगा तो एकदिन यह देश विजयहोगा और राजपुत्र भी कैदसे छूटेगा इन बातोंसे प्रहासका चित्त स्वस्थ न हुआ और वह सभासे उठकर बनमें चलागया मार्ग में उसे उपहास मिला उसनेपूछा कि गुरुजी कहां जातेहो वह बोला कि मेरा चित्त घबराताहै इससे योंही फिरताहूँ यह कहही रहेथे कि अ-

कस्मात् सामनेसे किसीके आनेकी पहचट सुनाईदी औरदेखा कि उपदेशी म्लेच्छरूप धारण कियेहुए चलाजाताहै उपहासने उसे पुकारा उसने आकर प्रहासको दण्डवत्की प्रहासने उससे पूछा कि तुम कहांसेआतेहो वह बोला कि मायाकृत नदीकी ओर से आताहूं परन्तु मैंने एक अपूर्वबातदेखी कि उससे मेरा चित्त चिन्ताव्यग्र होरहाहै वह यहहै कि मार्तण्डनामी एकराजपुत्र जो मायाकृत देशके अदृश्यखण्डके एकदेशका राजाहै अपनेदेशसे यह विचार करके चलाथा कि अकस्मात्जाकर निष्प्रभ भवन पर धावाकरूं और राजपुत्र भानुविक्रमको छुड़ालाऊं क्योंकि मेरी बहिन चान्द्रीमाया प्रहाससे मिलगईहै मैंभी वहींजाऊंपरन्तु ऐसाकरूं कि महेन्द्रको मेराहालमालूम नहो अचानकमें जाकर सबका बधकरूं और फिर अपनी बहिनकेपासजाऊं वहां मेरी भूआ रक्तकेशीभीहै निदान जबवह विचारकरकेचला तब उस की सेनामेंसे किसीनेजाकर यह वृत्तान्त विचित्रमायासे कहदिया और उसने नागिननामी एक म्लेच्छीको भेजा कि वह उसकी आगौनीकरनेके बहानेसे उसकेपासगई और मायाकर्ताकीसमाधिकी रजलेकर उसकेऊपर डालदी उससे वह राजपुत्र मार्तण्ड अचेतहोगया और अब वह म्लेच्छी उस राजपुत्रको बांधकर विचित्रमायाके पास लियेजातीहै यह सुनकर प्रहासनेपूछा कि क्या उसकेसाथ सेना न थी जो इसप्रकारसे पकड़ागया उपदेशी ने कहा कि उसकेसाथ बारह सहस्रसेनाथी परन्तु जब राजपुत्र कैदहोगया तब सेनाभागकर पर्वतोंमेंजाछिपी और सबने कहा कि हमारी ऐसीसामर्थ्य नहींहै जो हम मायाकृत देशके स्वामी की भार्यासे युद्धकरसकें परन्तु रानीनिशाकरीकी सेनामें जाकर उसकीभूआ और बहिनसे सब हालकहें सो उन्होंने एक म्लेच्छ को हमारीसेनामेंभेजाहै यह सुनकर प्रहासबोला कि हे बेटा उपहास राजपुत्र मार्तण्डको छुड़ानाउचितहै चलो इसको यत्नकरें

यहकहकर तीनोंबहुरूपिये छलकरनेके लिये पृथक् पृथक् वहांसे चले और इधर वह म्लेच्छ रानीनिशाकरीके सेनामेंपहुंचा और उसने सबवृत्तान्त रानीरक्तकेशीसे कहकर कहा कि आपकेभतीजे कैदहोगये हैं यह सुनतेही रानीरक्तकेशीको बड़ा क्रोधहुआ और उसने चाहा कि अभीसेना लेजाकर रानीविचित्रमायासे युद्धकरूं परन्तु फिर अनुमानकिया कि नागिन अभी मार्गमेंही है उसको चलकरमारूं और अपने भतीजे को छुड़ालूं यह विचारकर वह एक मायाकृत हंसपरबैठकर चलदी और चारोंओर ढूंढ़तीहुई एक वृक्षकेनीचे ठहरगई और वहांसे चारोंओरको दृष्टि करनेलगी कि उसको अकस्मात् प्राता बहुरूपिनीने देखा और तत्काल उसनेअपनास्वरूप चपला बहुरूपियेकासा बनाकररक्तकेशीकेपासआई और बोली कि आप यहां अकेली किस चिन्ता में खड़ीहैं उसने उसे चपला समझकर सब वृत्तान्तकहा और बोली कि मेरी यह इच्छाहै कि मैं पृथ्वीमें प्रवेशकरके पातालमें रहूं और मेरा भतीजा जब आकर कैदहोतो उसको छुड़ालाऊं वह पासतो खड़ीहीथी यह सुनतेही उसने मूर्च्छाकरचूर्ण उसके मुखपर डालदिया कि रक्तकेशी मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी तबप्राता ने उसको पृष्ठभारमें बांधलिया और उसको लादकरचली और उधर नागिन विचित्रमायाकी सभामें पहुंची और मार्तण्डको उसके सामनेकिया और उसने कारागृह स्वामीको आज्ञादी कि इसको लेजाकर कैदकर मैं महाराजकोपत्र भेजतीहूं जैसी उनकी आज्ञाहोगी वैसा कियाजायगा यह सुनकर कारागृह स्वामीने राजपुत्र मार्तण्डको अपने मायाबलसे कैदकिया औररानीविचित्र मायाने एकपत्र लिखकर एकमायाकृतपुतलेकेहाथ महेन्द्रके पासभेजा वह उसको बदरी उद्यानमें लेगया और महेन्द्रउसको पढ़कर पूर्वोक्त धूमधामकेसाथ सवारहुआ और विचित्रमायाकी सेनाकी ओर चला जब उस सेनामें पहुंचा रानी विचित्रमायाने

मान्य म्लेच्छों सहित उसकी आदर पूर्वक आगौनीकी और वह सभामेंजाकर सिंहासनपर विराजमानहुआ उससमय प्राताप्रष्ठ-भारलियेहुए आई और बोली कि महाराज रानीरक्तकेशी अपने भतीजेको छुड़ानेकेलिये आईथीं सोमैं उनको पकड़लाईहूं महेन्द्र ने आज्ञादी कि इसकोभी लेजाकर कैदकरो यह सुनकर प्राताने उसकोभी कारागृहमें पहुंचादिया उससमय विचित्रमाया बोली कि महाराज इन शत्रुओंकावध आप क्यों नहींकरतेहैं महेन्द्रने कहा कि बधकरना बहुत सहजहै परन्तु जीवदानदेना कठिनहै इनकोमैंने सहस्रोंकी संख्याकाधन खर्चकरके पालाहै भलाअकस्मात् क्योंकर इनकावधकरूं निदान यहांतो यहवार्तालापहोरहा था परन्तु बहुरूपियेजो चलेथे उनमेंसे प्रहास एक म्लेच्छकारूप धारणकरके विचित्रमायाकी सेनामेंआया और उसने कारागृहके स्वामीको कैदियोंको लेजातेहुएदेखा और समझा कि कारागृह यहीहै और वहां रक्षकभी बहुतसेथे और कारागृहका स्वामी वहां एक उत्तम आसनपर आसीनथा उसको देखकर प्रहासने अपना स्वरूप एक सुन्दर स्त्रीकासा बनाया मांग अपनी मोतियोंसे भरी केशोंको सुगन्धित करके लटेंमुखके कपोलोंपर छोड़लीं और पीछेको तिरछा जूड़ाबांधा आंखोंमें अंजनदिया और कपोलोंका बर्ण नवनीतकंजकासा बनालिया और शिरसे पैर तक रत्नजटित आभूषण पहिरे निदान ऐसासुन्दर स्वरूप उसने बनाया कि उसकीशोभा और छविको देखकर अप्सराभी लज्जित होतीथीं नेत्रोंकीदृष्टिकी चञ्चलता ऐसीथी कि देखनेवालोंके हृदयको बाणकी सदृश विदीर्ण करतीथी और हाथ और पैरोंमेंमेहँदीका रक्तवर्ण परमशोभादेताथा और देखनेवालोंके मनको खंड खंड करताथा ॥

क०।चोवासोंचुपरिकेशकेसरीसुरंगअंग केशरि उबटि अन्हवाईहैगुलावसों।
अंगअंगधोइ आछेअम्बरलेपोंछिओंछिछातियाँअंगोंछि हँसिहँसिरसभावसों॥

कटिमृगराजकैसीमुखहै मयंकमानो तीखेदृगदेखगति सीखिमृगशावसों।
पैन्हेपीरोचीरचारु चोकीपैठाढ़ीभई चांदनीसोंप्यारीपै उज्यारीमहताबसों॥

निदान इसप्रकारसे अपना सुन्दरस्वरूप बनाकर घूंघटका-ढ़े हुए कारागृहके स्वामीके सामनेहोकर निकला और उसको अपना चन्द्राननदिखाताहुआ आगेकोबढ़ा उसकेनेत्रोंकेकटाक्ष और सुंदर स्वरूपकी शोभासे वहविदीर्ण चित्तहोकर रसकेपद पढ़ताहुआ उसके पीछे २ होलिया और जबएकांतमें पहुंचा तब धीर्यकोत्यागकर बोला॥

दो०। हे सुमुखी ममदिशि निरखि बोलौ मधुरैबैन।
ममहियकों बेधनकियो तवमृगशावकनैन॥

यह सुनकर वह स्त्री फिरी और घूंघटको खोलकर मुसकु-राई तब कारागृहके स्वामीने दौड़कर उसका हाथ पकड़लिया और बोला॥

दो०। मृतक प्रायमोकों कियो तव चितवनि हिय बेध।
तन तजिहैं मम प्राण अब तेरे करत निषेध॥

तब उस सुन्दरी ने अपनाहाथ झटककर छुड़ालिया और बोली कि जाओ जाओ मैं ऐसेमनुष्योंसे बातनहीं करतीहूं यह सुनकर कारागृहका स्वामी उसके पैरोंपरगिरपड़ा और बोला कि मैं तेरासेवकहूं अपनेजीवितकी अवधितक तेरा भक्तरहूंगा यहसुनकर उससुंदरी ने उसका शिर अपने पैरोंपरसे हटादिया और अपना माथा कूटकरबोली हाय मैं निगोड़ी आज कहां आगई और किसदुखमें पड़गई अरे लोगोदेखो यहमनुष्य कैसा चमचिच्चड़ है क्यों मेरेपीछेपड़गयाहै अच्छाकह तू क्या कहताहै यहसुनतेही कारागृहके स्वामी ने उसेहृदयसे लगालि-या और आलिंगन करनाचाहा परंतु वहबोली कि देखो कोई आजायगा और अपने कपड़ोंको सँभालकर एकतांबूलपात्र निकाला और उसे खोलकर एकबीड़ीखाई और फिरबन्दकर

के जैसेही रखनाचाहा तैसेही कारागृहके स्वामीने उसकाहाथ पकड़लिया और कहा क्याहमको बीड़ीनदोगी उसनेअँगूठा दिखाया परंतु उसने न माना और एकबीड़ीउठाकर खागया और मूर्च्छितहोगया तबप्रहासने उसे और अधिक अचेतकरदिया और उसके वस्त्रउतारकर उसीकासा अपना स्वरूप बनाया और उसको एकगढ़ेमें डालकर आपकारागृहके द्वारपरआबैठा परंतु वहां महेन्द्र और विचित्रमायासे जो अपराधियों का वध करनेके विषे वार्तालाप होरहाथा तो महेन्द्रने अपनी स्त्रीको प्रसन्नकरनेकी इच्छासे प्राताबहुरूपनीसे कहा कितू जाकर कारागृहके स्वामी से कहदे कि सबकैदियोंको हमारे सन्मुख लेआवे वह आज्ञापातेही कारागृहके स्वामीके पासआई और उसे महेन्द्रकी आज्ञासुनादी यहसुनकर प्रहासने कैदियोंके लेजानेमें कुछविलंबसी की तब प्राताबोली कि जोमैंभी साथचलूं तो क्या बुराई है प्रहास बोला कि तुमबहुरूपनीहोकर निर्बुद्धिहोगईहो तुम्हारेसाथ चलनेसे क्या लाभहै आओ इधरसुनो और एक कोनेमें लेजाकर चाहा कि उसको अचेतकरूं कि उससमयप्राताउसको पहिंचानगई और लोगोंको सुनानेकेलिये बोली कि प्रहासजी कैदियोंकोछुटालेजाना बहुतकठिनहै और खड्ग निकालकर प्रहासपर चली प्रहासने तुरंत पाशफेंककरमारी कि वह उलझकर गिरपड़ी और फिर मूर्च्छाकर चूर्ण मुखपर डाल दिया कि वह अचेतहोगई इतनेमें लोग कुछदौड़करआये थे प्रहासने उनसेकहा कि यह बहुरूपिया था प्राताकारूपबनकर आयाथा सोमैंने उसेभी पकड़लिया है अबमैं जाकर वस्त्रधारण करताहूं तुमतबतक कैदियोंके ऊपरसे मायाकृतबन्धनदूरकरो फिरमें आकर सबको महाराजके सामने लेजाऊंगा यहसुनकर म्लेच्छ कैदियोंको मायाकृतबन्धनसे मुक्तकरनेलगे परंतु प्राता कोगयेहुए देरजानकर महेन्द्र ने कुछमायाकी कि उसीसमय

पृथ्वीसे एकपुतली प्रकटहुई उससे पूछा कि कारागृहका स्वामी क्या करताहै वहबोली कि एकगर्तमें अचेत पड़ाहै और प्रहास केदियोंको छुड़ाकरलियेजाताहै यहकहकरवहपुतलीतो गुप्तहो-गई और महेन्द्रक्रोधकरके चपलाकी सदृशचमककरगया और कारागृहमें पहुंचकर प्रहास और सबकेदी और प्राताको माया-कृतहस्तमें दाबकर अपनी सभामें उठालाया और प्राताको चै-तन्यकरके बोला कि कारागृहका स्वामी गर्तमें अचेतपड़ाहै जा उसको चैतन्यकरके लेआ निदान वहतो उधरगई और इधर महेन्द्रने सबकेदियोंको चैतन्य करके मार्तंडसे कहा कि क्योंरे मैंने तुझको राज्य और धन और सेना इसीदिनकेलिये दिये थे कि तू अचानकमें आकर माया विध्वंसकर्ताको छुड़ालेजाय अच्छा अबजोहुआसोहुआ अबभीतू अपनेचित्तके अभिप्राय को दूरकरकेमेरेआधीनहोकर मेरीआज्ञामेंरहतोमैं तेराअपराध क्षमाकरके तेरेप्राणछोड़दूं वहबोला कि मैंतेरी आज्ञामें न रहूंगा जोमेरी मृत्युहै तो माराजाऊंगा नहीं तो छूटजाऊंगा और अप-नी भूआकासाथदूंगा भानुविक्रम यहएकाकीआयाथा अबउस के साथी कितने मायावीम्लेच्छ हैं महेन्द्रबोला कि फिर वे साथी हैं तो क्याहुआ निशाकरी क्या सामर्थ्य रखतीहै अभीचाहूं तो उसे पीटताहुआ सभामें लेआऊं मार्तंडबोला कि बहुत बोलने से क्यालाभहै आजतक तुमने किसीको न मारा तुम्हारेहीसाथी सहस्रों मारेगये कहीं किसीको धोखेमें पकड़लियाहोगा यहसुन कर महेन्द्र महाक्रोधितहुआ और नागिनसेबोला कि यह तो अपने प्राणोंपर खेलरहाहै इससे जो मुखमें आता है सोबकता है तू इसको निशाकरीकी सेनाके सामने लेजाकर इसकी भूआ और प्रहास सहित इसका बधकरदेखूं तो कौन इसको छुड़ाता है सबको प्रहासके छलका घमंडहै सो तू पहिले प्रहासहीका बधकरियो वह यह आज्ञादेहीरहाथा कि इतनेमें प्राता कारागृह

के स्वामीको चैतन्यकरकेलाई उसको महेन्द्रने आज्ञादी कि तू साठसहस्र म्लेच्छोंकी सेनालेजाकर नागिनके साथ जा और इनअपराधियों का बध इनके मित्रवर्गोंके सामनेकर यहआज्ञा पातेही साठ सहस्रम्लेच्छआये और कैदियोंकोलेकर चले नागिनभी उसकेसाथचली और उसकेसाथ जो पचाससहस्रम्लेच्छथे वेभी अस्त्रादिक धारण करके उसके साथहोलिये नाना प्रकारके वाद्यबजनेलगे और एक बड़ाकोलाहल मचगया इस नागिनम्लेच्छीकी माता सर्पिणीनामथी उसको वातव्याधिका रोगहोगया था उसके कारणसे वहदिन रात्रि अचेतसी पड़ी रहती थी सो जब नागिनचलनेलगी तब उसने विचारकिया कि मैं अपनी माताकोभी साथलेतीचलूं यद्यपि कहींदूरजाना नहींहै तथापि पासरहने से रोगीको प्रतिपद देखसकूंगी ऐसा विचारकर के उसने अपनी माताको भी पालकीमेंबैठाकर साथ लेलिया और कुछकालमें सेनासहितरानीनिशाकरी की सेनाके सन्मुखआई क्योंकि दोनोंसेनाओं के बीच में पांच छैकोसका मैदानयुद्धकेलिये छुटाहुआथा निदान जब यह वहांपहुंची तब बहुरूपियोंने जो छलकरने के प्रयोजनसे फिररहे थे प्रहासको भी कैदमें देखा और उसको शीघ्रछुड़ानेकी चिंताकरनेलगे उधरमायाकृत पक्षियोंने वैष्णवी सेनामें जाकर रानीनिशाकरीसे विनयपूर्वक कहा कि महेन्द्रकी सेना प्रहास और रानीरक्तकेशी और उसकेभतीजेको आपकीसेनाके सन्मुखबधकरनेकोलाईहै यहसुनतेही रानी निशाकरीने कहा कि प्रहासके विनाजीना निष्फलहै और सेनाको सन्नद्धहोने की आज्ञादी और मायाकृत तूर्यबजाई उसको सुनतेही सबशूरवीर अपने २ अस्त्रशस्त्रोंको धारणकरके युद्धकरनेकोसन्नद्धहोगये मायावीयोद्धाओंने अपने २ प्रहारके अस्त्रलेलिये युद्धके घोर वाद्यबजनेलगे और एकप्रलयकालकासा कोलाहल मचगया उसकोसुनकर उपहास

बहुरूपिया दौड़ाहुआ आया और रानीनिशाकरी से बोला कि जबहम सबबहुरूपिये पकड़ेजायँ तब जो आपकी इच्छाहो सो कीजियेगा तबतक आपसेना लियेहुए तय्याररहैं और जबयह शब्दआपको सुनाईपड़े कि मैंमारीगई मेरानाम नागिनथा तब आप सेनालेकर शत्रुओंपर आपड़ें यहसुनकर रानीनिशाकरी सेना लेकर पर्वत और बनमें छिपकर समयकी बाटदेखनेलगी उधर नागिनने आकर डेरेखड़ेकराये और आज्ञादी कि आज रात्रिभरबधभूमिकीतय्यारीकीजाय और नानाप्रकारकेबाद्यबजवाकर उनतीनोंके बधहोनेके वृत्तांत घोषितकरायाजिससे शत्रु सेनामें इसकीखबरपहुँचे और वेलोगआकर इनकी दुर्दशाको देखें क्योंकि महेन्द्रकी यही आज्ञाथी और इसीकारणसे उसने यहां बधकरनेकोभेजाथा निदान उसीसमय डेरेलगगये सेनाके बीचमेंकैदियोंकोरक्खाओर उनकेएकओरनागिननेऔर दूसरी ओरको कारागृहके स्वामीने अपने डेरेखड़ेकराये और नागिन ने एक डेरेमें अपनी माताको उतारकर दुंदुभी बजनेकी आज्ञा दी जिससे कोई बातरह न जाय प्रातःकालहोतेही अपराधियों का बधकरडालूं उससमय चारोंओर यहशब्द घोषितहुआ कि जो कोई महाराजके विमुखहोगा उसका बधइसीप्रकार से किया जायगा जैसा कि इन अपराधियों का होगा यहसुनकर ऋहास के मित्रमहादुखी और शत्रु प्रसन्नहुए निदान वहदिन इसीप्रबन्धमें बीतगया और सूर्यरूपी कैदी पश्चिमदिशारूपी कारागृहमें कैदहुआ और रात्रिरूपी शत्रुने आकाशरूपी देशमें आकर समयरूपी अपना डेराखड़ाकराया ॥

दो० । होत अस्त दिननाथके निशागई जगछाय ।
अंधकार व्यापोजगत विकसे उडुगणआय ॥

संध्याहोतेही नागिन और कारागृहकेस्वामीने ऐसीमायाकी कि उनकीसेनाकेचारोंओर एकबादलखड़ाहोगया अर्थात् ऊपर

तो बादलकामंडपसा होगया और चारोंओर बादलही की भी-
तसी खड़ीहोगई परंतु जिससमय चारोंओर से बादलउठनेलगे
थे उससमय बहुरूपियोंने अनुमानकिया कि कोई आपत्तिआती
है यहअनुमानकरके सबबहुरूपिये छलांगमारमारकर सेनाकी
सीवांसे बाहरनिकलगये और दूरसेदेखनेलगे थोड़ीदेरमें देखा
सबसेनाकेऊपर एकबादलआकर मण्डपरूपछागया और फिर
चारोंओरकी बादलकीही भीत खड़ीहोगई जिसके कारणसे
नागिनकी सेनाकादीखनाबन्दहोगया केवल उनमायाकृतभीतों
पर कुछ म्लेच्छबैठेहुये और कुछदीपकसे जलतेहुए दिखाईदेते
थे और भीतरजानेको कहींसेमार्गनथा यहदेखकरसबबहुरूपिये
चिन्तायुक्त होकर कहनेलगे कि हमलोग भीतरसे निष्फलचले
आये अब भीतरजाना दुर्लभहै जो भीतररहजाते तो प्रहासके
साथरहते और उसको छुड़ाते अथवा अपने भी प्राणदेदेते
यही चिन्ताकररहेथे कि उपहासने चपलाकोबुलाकर कुछकानमें
कहा और वह बहुतश्रेष्ठ कहकर चलागया तब उसने औरबहु-
रूपियोंसेभी कुछकहा कि वहभी चलेगये उनकेजानेकेपीछे उप-
हासभी एक ओरको चलागया परन्तु चपला जो पहिलेसे गया
था उसने एकस्थानमें बैठकर अपनास्वरूप एक स्त्रीकासाबना-
या और कल्पवल्लीकी धूनीदेकर अपने शरीरकेवर्णको ऐसा
बदलदिया कि पहिचानजातीरही शरीर गदबदा छोटेछोटे हाथ
पतलीपतली उँगलियां सूक्ष्मकटि पीनपयोधर उन्नतभ्रूबिशाल
भालदीर्घनेत्र चिबुकललाम कंबुग्रीवा पद्महस्तकदलीजंघ पाद
पंकज उत्तमवस्त्रधारणकियेहुए परमशोभायमानस्वरूपबनाया॥

क०। सारी जरतारी लगी मणिन किनारी त्योंही दामिनी दबायलेत
दमकरदनकी। हीरनके हारहटी गजरा गोहावदार अंगअंग फैलरही
दीपकमदनकी॥ हेमकी छरीसी मान मुखनजराबजरी सबगुणभरीपरी
छविके कदनकी। भूषणअनूप सुअंगअंग धारणकिये चांदनीमें ठाढ़ीबाल
चन्दसे बदनकी॥

इसप्रकारसे अपना मनोहर स्वरूप बनाकर उसने हाथमें एक सोनेका थाललिया और उसमेंकुछ मिष्टान्न और पक्वान्नरख कर उसबादलके परकोटेके सामनेआया और एकओरको चल दिया थोड़ीदूरगयाहोगा कि उसको उपदेशी मिला जो उपहास की आज्ञानुसार उसका स्नेहीबनाहुआ एकस्थानपर खड़ाहुआ उसके विरहमें रोरहाथा निदान वह इसको देखते इसकेसमीप आया और बोला कि ॥

बरवा। हेहेसुन्दरि हमसों आंखि चुराय। कहां जातिहो कासोंने हलगाय॥
सैनबैनसोंतुमचितलियोचुराय। तबकरहममनदियोनसकेदुराय॥

यह कहकर उसने हाथ पकड़लिया तब वह सुन्दरी बोली कि आप मुझे लज्जित क्यों करते हैं ऐसी बातों में मनुष्यों के प्राण जातेरहते हैं आप मेरी प्रीतिको त्याग कीजिये नहीं तो अच्छा न होगा मैंआपकेलिये बनमें अकेली कहांतक आयाक-रूंगी जिसदिन मेरापतिदेखलेगा बड़ीआपत्ति आजायगी नि-दान यहवार्तालाप होहीरहाथा कि एकओरसे उपहास हाथ में सोंटालियेहुए एकबड़ा हृष्टपुष्टमनुष्यबनाहुआ वहांआया और ललकारकरबोला कि क्योंरी दुष्टातू सदैवकहाकरतीथी कि तुम मुझको किसीकेसाथ पकड़लोतोमैंजानूं सोआजमैंने तुझकोतेरे स्नेहीकेसाथ पकड़लिया अबमैंतेरीनाककाटूंगाआजतेराव्यभि-चारसब प्रकटहोगया यह सुनतेही वह स्त्रीतो सहमकर बैठगई और वह आसक्तभागा और अपनी प्रियाकाभी कुछध्यान न किया कि उसकी क्या दशाहोगी इसकेपीछे उस बनेहुए पति ने उस स्त्रीकेबाल पकड़कर मारना आरंभकिया और वह स्त्री रो रोकर चिल्लाने और पुकारने लगी कभी वह स्त्री दुहत्तड़ मारती थी और कहती थी कि जो मेरी इच्छाहोगी सो मैं क-रूंगी और तेरेमुखमें कालोंछलगाऊंगी आज तुझको बड़ी लज्जाआई कलजब उसने वस्त्रलाकरदियेथे तबतो चुपकेसेरख

लिये यह न जाना कि यहकिस प्रयोजनसे देतालेताहै क्याकिसी काधन योंहींखालेगा जो मुझको मारताहै अपनी भैनको क्यों नहीं मारता जो दिनधौरे अपनेस्नेहियोंको बुलाबुलाकर व्यभिचारकराती है निदान वहस्त्री तो कांढनीथी और दुर्वचन कहती थी और वहपुरुष उसकोसोंटेसे पीटताथा कोलाहल बड़ामचा हुआथा और जो म्लेच्छ उसबादलकी भीतपर रक्षाके लियेनियतथे वहसब वृत्तांत देखरहेथे क्योंकि रातचांदनीथी उनम्लेच्छोंनेजाकर कारागृहके स्वामीसेकहा कि इसवनमें एक अपूर्व चरित्रहोरहाहै आपभी चलकरदेखिये वहचलाआया और उन दोनोंकी लड़ाईको देखनेलगा और उसको वहस्त्री जो चांदनी रातमें स्वरूपवान् मालूमहुई तुरंतउसनेएकमायाकृत हस्तभेजा कि वहजाकर उसस्त्री को उठालाया और कारागृहके स्वामी के समीप खड़ाकरदिया जबउसने पाससे उसस्त्रीकोदेखातो देखते ही उसकेसुन्दर स्वरूपपर मोहितहोगया और बोला कि हेसुंदरी यहकौनमनुष्यथा जो तुझसीस्वरूपवान्को माररहाथातेरीसुकुमारता तो फूलसे ताड़नाके योग्यभी नहीं है वहबोली कि आप आजहीकी मारको कहते हैं मैं जबसे इस निर्दयीके पाले पड़ीहूँ तबसेही मारताहै मेरी हड्डीहड्डी चूरहोरही है इससमय आपने बड़ाबुरा किया जो मुझको उसके पाससे हटवालिया अब वह मुझको जीता न छोड़ैगा अजी वहबड़ाही भ्रांती औ कठोर है कहैगा कि बतातुझको किस तेरेस्नेहीने बुलायाथा वहबोला कि उसकी क्यासामर्थ्य है जो अब तुझपर हाथउठासकै स्त्रीबोली कि सामर्थ्यकी क्याबातहै वहमेरापतिही है इससे जो आपनेकृपाकरके मुझको बुलालियाहै तो मेरेपतिको भी बुलवालीजिये मेरे लिये बड़ीखराबी होजायगी और अबमें अकेली उसकेपास भी नहीं जासकतीहूँ देखतेही यहीकहैगा कि तू अपने स्नेहीके पासगईथी हायहाय मैं किस आपत्तिमें आपड़ी अजी कृपाकरके

उसे शीघ्रबुलवाइये कारागृहके स्वामीने उससमयचाहा कि मा-
याकृतहस्त भेजकर उसको बुलवालूं परन्तु वहस्त्री बोली कि
हस्त न भेजिये नहीं तो वह एक कठोरमनुष्यहै आतेही मुझ
को मारनेलगेगा प्रतिष्ठाकेसाथ बुलवाइये जिससे वहप्रसन्नहो
और उसकाक्रोध शांतहोजाय फिर उसकोप्रसन्नकरके मेरीउस
की पृथक्ता करादीजिये पृथक्ताका नामसुनतेही वहप्रसन्नहो
गया और एकम्लेच्छको आज्ञादी कि मायाकृत विमानपर बैठा
कर इसकेपतिको लेआ वहम्लेच्छ तुरंत मायाकृत विमानलेकर
गया वहमनुष्य बर्कभिकरहाथा कि इसनेजाकरकहा कि चलिये
जहां आपकीस्त्री है उन्होंने आपको बुलायाहै वहउस विमान
पर बैठगया और उस मायाकृत परकोटेके भीतर आया जब
कारागृहके स्वामीके समीपगया उसने उसे आदरपूर्वक बैठाया
और थोड़ीदेरके पीछे समझानेलगा कि तुम्हारीस्त्री व्यभिचा-
रिणी है इससे कुछ धन तुम हमसे लेलो और उसे छोड़दो
वहबोला कि मैं इससमय श्रमित बहुतहूं कल इस बात का
उत्तरदूंगा तब उसने एकम्लेच्छको आज्ञादी कि इनको लेजा-
कर एक डेरेमें उतारो वह उपहासको एक डेरेमें लिवालेगया
और उसके सोनेकेलिये वहां एक उत्तम शय्या बिछादी उधर
कारागृहका स्वामी उस स्त्री से छीनाझपटी करनेलगा तब वह
स्त्री बोली कि मैं भी अपने पतिकेपासजातीहूं जबप्रातःकालको
हमारी उसकी पृथक्ताहोजायगी तबदेखाजायगा यहसुनकर
कारागृहकास्वामी अधीर्यहोगया और बोला कि तुमयहींठहरो
वहबोली धन्यहै आप तो बड़े अच्छे हैं जो पर स्त्रीपर लैलोट
होगये यह कहकर उठी कि जातीहूं तबवह उठकर उस स्त्रीसे
लपटगया और शपथ देनेलगा तब वह स्त्री बोली कि थोडी
देर धीर्यकरो मैं जातीहूं जब वह सोजायगा तब मैं आपकेपास
किसी न किसीबहाने से चलीआऊंगी यहकहकर वह स्त्रीरूपी

चपला उसडेरेमें आया जहां उपहास ठहराहुआ था और उस से सबवृत्तान्त कहकर बोला कि अबकी जाकर मैं कारागृहके स्वामीको पकड़े लेताहूं इसीअवसरमें उसने एकओर से कराहने का शब्द सुना और चपलाने बाहर आकर पूछा कि यह आहि आहि कौनकरताहै एकम्लेच्छनेकहा कि नागिनकीमाता वातव्याधिसे पीड़ितहै वहीकराहरही है यहसुनकर चपला उस ओरकोगया और देखा कि एक डेरा खड़ाहुआहै उसके बीच में एक शय्यापर एकरोगिनपड़ीहुई कराहरही है बहुतसे सुगंधित पदार्थ पासरक्खे हैं एकओरको शौचजाने के लिये चौकी बिछीहै और बहुतसी सुन्दर नवीनदासियां वहांसेवाको नियत हैं बहुतसी खड़ी हैं बहुतसी बैठी हैं और कईएक पट्टीकोपकड़े हुए उसरोगिनकी वायुकररही हैं चपलाने समीपजाकर एकस्त्री को उंगलीसे बुलाया और जबवहपासआई तब उससेकहाक्यों मैनातैंने मुझेपहिचाना वहबोली कि तुमको नहींजानतीहूं वह बोली कि अबकाहेको जानोगी मैं कारागृहके स्वामीकी दासी हूं यहकहते कहते उसने मूर्च्छाकर चूर्ण उसकेमुखपर मलदिया कि वह छींकलेकर अचेतहोकर गिरपड़ी तब चपला उसको उठाकर मार्ग काटकर अपने डेरेकेपीछेआया और कनातकोकाट कर भीतरगया और फिर द्वारपर आकर सबसे बोला कि यहां हम दोनों स्त्री पुरुष सोते हैं कोई भीतर मत आना और मैं जहां कहींजाऊं मुझको कोईरोकटोक नकरे यहसुनकर म्लेच्छों ने अनुमान किया कि यह स्त्री व्यभिचारिणी है अपने पतिको सुलाकर हमारे स्वामीके पासजायगी अथवा और कुछकरेगी इसकेबीचमें बोलनाअच्छानहीं यहअनुमानकरके वेसबतोचुप होरहे और यहां डेरेकेभीतर चपलाने उस स्त्रीके कपड़े उतार कर आप पहिरलिये और अपने वस्त्र उसको पहिराकर अपना स्वरूप उसकासा बनाया और उसका स्वरूप अपना सा

बनाकर उस स्त्री को चैतन्यवर्तिका सुंघाकर चैतन्य किया उस दासी ने चैतन्यहोतेही देखा कि एक स्त्री मेरे स्वरूपकी सामने खड़ीहै यह देखतेही उसने चकित होकर वृत्तांतपूछा चपला बोला कि भैना मैं और तुम खड़ीहुई बातें कररही थीं कि एक वायुका झोकालगा उससे मैं और तुमदोनों अचेतहोकरगिर-पड़ीं उससमय हमारेपरमेश्वर मायाकर्ताआये और उन्होंनेह-मारे तुम्हारेमुखपर हाथफेरकरकहा कि हमनेतुमदोनोंकाकाया पलटकरदियाअबइसमेंतुमकोतोअच्छाहै और मेरेलियेखराबी है परमेश्वरके कर्तबको कौनमेटसकता है कि जिसने नागिनकी दासीको कारागृहके स्वामीकीभार्या बनादिया और उसकीभार्या कोनागिनकीदासीकरदियाअब तुममेराहालसुनो कि मैं इसमनु-ष्यकी भार्याथी जोशय्यापर सोरहाहै मुझपर कारागृहका स्वामी आसक्तहुआ था सो प्रातःकाल वह मुझको इससे पृथक्करा कर अपनेपास रखता इससे अब जो कोई तुमसे पूछे तो तुम अपनेको इसीपुरुषकी भार्या बताना और कारागृहके स्वामीने मुझसे वचन लेलियाथा कि जब तुम्हारापति सोजाय तबतुम मेरेपास चलीआना सो अब यह सोताहै तुम कारागृहके स्वा-मी के पासचलीजाओ और आनन्दकरो और मैं तुम्हारेपलटे तुम्हारी रोगिनि रानीकी सेवामें जातीहूं वह दासी बहुतदिनों से पुरुषके पास नहींगईथी और दुखी भी रहाकरती थी अब जो उसने वस्त्र और आभूषणपाये और इतने बड़े पुरुष की भार्याहुई तो बड़ी प्रसन्नहुई और उससे बोली कि अच्छाभैना अब मुझे कारागृहके स्वामीकेपास पहुँचादो और अपनानाम बतादो चपला बोला कि मेरानाम प्यारी है और अपने साथ लेजाकर उसको कारागृह के स्वामी का डेरा बतलादिया वह उसके भीतर चलीगई कारागृहका स्वामी तो बैठाहुआ उसकी बाटही देखरहाथा उसे देखतेही उठखड़ाहुआ और गोदमें उ-

ठाकर उसको शय्यापर लिटाया और प्यारकरके उसेमद्यपान कराया और काम कलोल करनेलगा निदान वहदासी तो उक्त प्रकारसे आनन्दमें मग्नहुई और चपलावहांसे दासीबनाहुआ सर्पिणीके डेरेमेंआया और कामकाज करनेलगा परन्तु दीपक पर मूर्च्छाकर चूर्णके पतंग छोड़ताजाताथा थोड़ीदेरमें मूर्च्छा-कर धूम घुटा और उसको सूंघकर जोजो वहां थे सबमूर्च्छित होगये उससमय चपलाने मूर्च्छाकर चूर्णलेकर सर्पिणी के मुख पर भी मलदिया कि उससे वह मृतक तुल्यहोगई तब चपला ने उसे उठाकर एकवस्त्रमें लपेटकर एककोनेमें छिपादिया और आप उसके वस्त्र पहिरकर और उसीकासा अपनास्वरूप बना करशय्यापर आलेटा और हाय हाय कर करके कराहनेलगा और शय्याकेपास जो दासियां अचेत पड़ीथीं उनको पानीका छींटा मारकर चैतन्य किया और जब वे जगीं तब शनैःशनैः बोला कि मुझको अकेला छोड़कर सबसोरहीं इनपर थोड़ासा पानी छिड़कदो कि सब जगउठें और मेरेहाथ पैरोंको दाबें मेरे हाथ पैर इंठतेहैं यह सुनकर उनदासियोंने सबपर पानीछिड़क दिया और वे सब उठकर उसके हाथ पैर दाबनेलगीं इतनेमें वह रात्रि व्यतीत होगई और चन्द्रमा रूपी रोगीके प्रकाशरू-पी रोगको आतेहुए देखकर वैद्यरूपी सूर्य्य आकाशरूपी डेरेमें आया अर्थात् सूर्योदयका कालहुआ ॥

दो० । होत व्यतीत निशा सकल प्राची दिशिमें भानु ।
मण्डल आरुत भे उदय लोहित वर्ण कृशानु ॥

प्रातःकाल होतेही नागिन उठी और कारागृहकास्वामी भी निद्राको त्यागकरउठा और उसस्त्रीकी सेवाकेलिये दासीनियत करके और उसके भोजनके लिये उत्तम उत्तम पदार्थ मँगवा दिये और फिर उसके मिथ्यापतिको बुलाकर अपनेसाथलिया और कहा कि प्रहासका बधकरलूं तबतुमको धनदेकरप्रसन्न

करूं सबसेनाको सन्नद्धहोनेकी आज्ञादी और नागिनभी सवार होकर आई सेना वहां घेरकर खड़ीहोगई चांडाल बधिक तो रात्रिहीसे वहां आयेहुएथे उन्होंने तीनों कैदियोंका बध करने को तीन ऊंचे स्थान बनाकर उनपर मृतकवस्त्र बिछारक्खा था निदान सबतय्यारी होजानेपर प्रहासको लाकर एकवस्त्रपर बैठा दिया और रानी रक्तकेशी और राजपुत्र मार्तंडकी जिह्वाको सूचीसे छेदकर उन दोनोंको भी पृथक् पृथक् मरणवस्त्रपर बैठाया और तीनों के ऊपर चांडाल खड्ग ले लेकर खड़े होगये कि उससमय कुछ छाया कीगई कि वह बादलोंकी भीति और मंडप दूरहोगये इस प्रयोजनसे कि रानीनिशाकरी आदि सब कोई अपने मित्रोंकी दुर्दशाकोदेखें उससमय प्रहासआदि सब को अपने मरनेका निश्चयहोगया और प्रहास अपने चित्तको एकाग्रकरके श्रीविष्णुभगवान्से प्रार्थना करनेलगा कि हे विश्वनाथ हेजगदीश्वर हे परमेश्वर इनम्लेच्छों से मेरीरक्षा कर और मेरेप्राणों को बचा मुझको तैंने वरदानदियाथा कि जबतक तू अपने मुखसे तीनबार मृत्यु न मांगेगा तबतक न मरेगा सो हेपरमेश्वर तू सत्यहै तेरा वरदान सत्यहै उसको सत्यकर और मुझको इन म्लेच्छोंके हाथसे बचा ॥

छप्पै। जय कराल कलिकाल कवल गत धरम समंडक।
जय अखंड उद्दंड चंड पाखंड विखंडक॥
जय दिनेश रजनीश वंश युग भूप सहायक।
जय अनूप अनुरूप चरित सुर मुनि सुखदायक॥
जयजयतिप्रबलखलदलजनितविपुलधरणिसंकटहरण।
जय जयति कल्कि वपुधरण मम इच्छा पूरण करण॥

निदान यह तो प्रार्थना कररहाथा और उधरबधिकोंने पूछा कि बधकरना हमारा काम है और जीवदेना ईश्वरका काम है इससे समझ बूझकर आज्ञादीजिये ये लोग बड़ेप्रबलहैं इन

का बधकरना सुलभनहींहै कारागृहका स्वामीबोला कि लाख आज्ञाओंकी एक आज्ञा यही है कि इन अपराधियों के शिर काटकर शीघ्र लेआओ जिससमय ये लोग आज्ञा पूछ रहे थे उससमय उस माग्राकृत पर कोटेके दूरहोजानेसे उपदेशी और प्रचंड बहुरूपिये भी अपना स्वरूप म्लेच्छोंकासा बनाकर सेनामें आखड़े हुएथे कि इतनेमें चांडाल बधकरनेकी आज्ञा लेकर अपने २ खड्गों को निकालकर चले उनको देखकर बहुरूपियों ने गोफिनों में पाषाण रखकर मारे कि उनके शिर कटकर पृथक् जापड़े उनके मरने से बड़ा कोलाहल हुआ और किसी बधिकको बध करने का फिर उत्साह न हुआ और सब मनुष्यों का ध्यान उनअपराधियों की ओर होने के कारण से किसीने यह न जाना कि पत्थर किसनेमारे तब कारा-गृहके स्वामी ने कहा कि मैं आप इनका बधकरताहूं यहसुन कर उपहास बोला कि आपठहरें मैं जाके सबका बधकरताहूं मैं सब बधिकों का पिताहूं क्षणमात्रमें सैकडों का शिरउड़ादेताहूं वहबोला कि अच्छा शीघ्रजाकर इनका बधकरो मैं तुमको ब-हुतप्रसन्नकरूंगा उपहासबोला कि पहिलेधनमँगाकर देदीजिये तबमैं इनकाबधकरूंगा तबउसने धनमंगाकरदिया निदान यहां तो यहवार्तालाप होरहाथा उधरनागिनकी दासियां रोतीपीटती हुईआई उसनेपूछा क्या है वे बोलीं कि शीघ्रचलिये आपकी माताऊर्ध्वश्वास लेरही हैं उनके दर्शन अंतसमयके करलीजिये यहसुनतेही वहदौड़ी वहांचपला हाथपैर पटकरहाथा माथेपर पसीनाआगयाथा और रुक रुककर ऐसाश्वास लेताथा कि मानो अभीप्राणजानाचाहते हैं इतनेमें नागिन हाय हायकरती हुईगई उसेदेखकर चपला और अधिकतड़पनेलगा औरथोडी देर पीछे कुछठहरकर आंखखोली और पूछा कि मेरीबेटीआई नागिनबोली अम्मामैं यहींहूं तबचपलाने हाथफैलाकर उसको

छातीसे लगालिया और कहा कि बेटी दासियों को हटादो तो मैं तुमको अपने अंतसमयकी शिक्षाकरजाऊं उसने सबकोहटा दिया और जब एकांतहुआ तब चपला बोला कि बेटीदासियां कहतीथीं कि मेरेपसीने में दुर्गंधआती है सो तू तो सूघंकेदेख आती है या नहीं यहसुनकर नागिनने क्रोधकरके कहा कि यह किस दुष्टादासीने रोगीकेमुखपर कहामैं मारतेमारते उसकीखाल उधेरडालूंगी वहबोली कि बेटी क्रोधमतकरो तुझेमेरी सौगंद है मेरेमाथे का पसीना लेकर सूंघ तो जो उसमें दुर्गंधआतीहो तो दासियों से कुछमत कहना और जो झूठहो तो उनको दंड देना उसके शपथदिलाने से नागिनने कुछपसीना माथेपरसे पोंछकर सूंघा चपलाने मूर्च्छाकर चूर्णपहिलेही से मलरक्खा था वहपसीना सूंघतेही मूर्च्छितहोगई तबचपला दौड़कर उस की माताको भी उठालाया और दोनोंको बराबर लिटाया और उपहास जबधनलेचुका तबबोला कि कहिये तो आपका शिर उड़ादूं काराग्रह का स्वामी बोला कि तू क्या विक्षिप्तहोगया उप-हासनेकहा कि आपके पीछेखड़ाहुआ एकमनुष्य मुझसे कहता है कि इसको मारडाल यहसुनतेही काराग्रहके स्वामीने पीछेफिर करदेखा उससमय उपहास ऐसाएकखड्गमारा कि उसका शिरकट कर दूरजापड़ा महाकोलाहलमचगया और चारोंओरअंधकार छागया म्लेच्छ उससमय लीजियो लीजियोकरतेहुए दौड़ेथे कि वहां चपलाने नागिन और सर्पिणी दोनोंके शिरकाटडाले उनके मरने से कालीआंधीछागई और महान्‌भयंकर शब्दहोनेलगा औरम्लेच्छोंकी सेनाइसओरकोदौडीचपलाखड्गलिये तो खड़ाही थाम्लेच्छोंपरपिलपड़ा और उधरउपहास औरप्रचंडऔर उपदे-शीभी खड्गलेलेकर प्रहारकरनेलगे उससमयम्लेच्छोंने नारिकेल और निम्बुकआदि अनेक मायाकृत अस्त्रोंका प्रयोगकिया परंतु नागिन आदिके मारेजाने से रानीरक्तकेशी और मार्तंडके ऊपर

से मायाकृत वेष्टन उतरगयाथा तबप्रहासनेशीघ्रउठकर उनदो-
नोंके मुखोंमें से मूर्छानिकालली और वे बहुरूपियोंको घिराहुआ
देखकरमाया नाशन प्रयोगकरनेलगे उससे उनम्लेच्छोंकेमाया-
कृतअस्त्रों के प्रयोग व्यर्थहोगये और फिर वे दोनों युद्धकरने
लगे और अकस्मात् मायाबलसे अग्नि पत्थर और हिमकी
वर्षाहोनेलगी उससमय रानीनिशाकरी जो सेनालियेहुए छिपी
खड़ी थी उसकोलाहलको सुनकर आई और शत्रुसेनासे युद्ध
करनेलगी दोनोंओरसे मायाकृतअस्त्रोंकी वर्षाहुई संडीनचपला
शत्रुको खंड खंड करनेलगी रानीआनन्दाने वसन्तऋतुको प्र-
कट करके सहस्रोंको मोहितकिया और यमपुरमें पहुंचाया और
मायावती ने अपनी मायासे म्लेच्छोंको प्रमत्तकरकरके मारा
महाघोर युद्धमचगयालोथपर लोथगिरनेलगीऔर ऐसाभयंकर
कोलाहलमचा मानों प्रलयकाल आगया है॥

भुजं०छन्द। कितेआपने नामगोतबोलें। हनैवो हनैवाहनैहांकिडोलें॥
सहैं सेल्हसूधे धसें सेल्ह झेलें। महालालसे कालसेयुद्धकेलें॥
कटे मुण्ड केते पड़े रुण्डलोटें। गिरैं औ उठें को उठेंसूखरोटें॥
छसन्दीभये यो सुछन्दी बिहारें। अदन्दी अदन्दीन द्वंदानमारें॥
जुरे भूत पीशाच के यूथहेलें। चहूंघाचढ़े चावचौगान खेलें॥
पिये शोणितै औ भखेंमांसमेदें। बलीनिर्बलीओभलीभांतिखेदें॥
हँसे फेरि आने तिते रंगठानें। खुशीह्वै खवींसैंकरें खानपानें॥
भयो उद्दसो युद्ध ताठौरजैसो। लख्योनासुन्योआजुलोंऔरऐसो॥

निदान शत्रुसेना पराजित होकर विचित्रमायाकी सेनाकी
ओरभागगई और रानी निशाकरी विजयपाकर शत्रुओंका
सब सरंजामलूटकर राजपुत्रमार्तंड और प्रहाससहित अपने
डेरोंमें आई और प्रहासपर बहुतसाधन निवछावरकिया और
मार्तंड अपनी भैनचान्द्री से मिला और उसकी सेनाके बारह
सहस्र म्लेच्छ वहांआये उसके डेरे भी खड़ेहुए रानी निशाकरी
ने उसको उत्तम अधिकार दिया और उत्सवहोनेकी आज्ञादी

मद्यपान करानेवाले सेवक उत्तमोत्तम सुरालेकर वहां आये और उत्सवहोनेलगा॥

दो०। पाय सुजय अति मुदित मन सुनत सकल जग गान।
अति आनँदसों भरि हृदय करत सुराको पान॥
सो०। तेहि दिन जस आनन्द सेन वैष्णवी में भयो।
सुखद महान अमन्द जात न सो मोपै कह्यो॥

उधर शत्रुसेनाके लोग नागिन आदिकी लोथेंलेकर विचित्रमायाकी सेनामेंपहुँचे और सभामें महेंद्रकेसन्मुख लाशेंरखदीं और बहुरूपियों का सबवृत्तान्त कह सुनाया उसको सुनकर महेंद्रने बड़ाशोककिया औरहाथसे हाथकोमलनेलगाउससमय विचित्रमाया बोली कि महाराज आप मद्यके आवेशमें सदैव रहतेहैं न आपको घरकी सुधहै न अपनी प्रजाकीखबरहै बहुरूपियोंकीउपाधें बढ़तीजातीहैं और आप तरहदेतेजातेहैं इससे मैं जानतीहूं कि एकदिनवे आकर मुझकोभी मारडालेंगे इससे अब मेराचित्त चाहताहै कि मैं अपनागला अपने हाथसे काट डालूं उससमय महेंद्रने विचित्रमाया को दुखी देखकर अपने कण्ठसे लगालिया और कहा कि तुम घबराओ नहीं देखोतो मैं इनविमुखोंकी कैसीदुर्दशा करताहूं जो बूँदबूँद पानीको तरसा तरसाकर न मारा तो अपना नामही न रक्खा मुझको बहुरूपियोंके छलकरनेका सबवृत्तान्त मालूमहोगयाहै यह मायाकृत देशहै इसकीगति बड़ी सूक्ष्महै थोड़ीसीभी चूक होजानेसे आपत्तिका आगम होजाताहै देखो मायाविध्वंसकर्ता कैदहै परन्तु इस देशकान्याय ऐसाहै कि उसको मैं बध नहींकरसक्ताहूं यह वार्तालाप होहीरहाथा कि अकस्मात् बिजलीचमकी और आकाशमें एकबादल प्रकटहुआ और फिर सुवर्णवर्ण और चन्द्रवर्णकी विद्युच्छटा होनेलगी थोड़ीदेर में वह बादल फटा और उसमेंसे एकम्लेच्छ भयङ्कररस्वरूप रत्नोंसे अलंकृत कृष्णाम्बर

धारणकिये हंसपर सवार निकला और पृथ्वीपर उतरा उसको देखकर विचित्रमाया अपने स्थानपरसे उठी और बोली आमेरे वीरनभैया और यह कहकर उससे गले मिलने चली उसने पहिले महेंद्रको दण्डवतकी और फिर अपनाशिर विचित्रमाया की गोद में रखदिया उसने उसके बलैयांलीं और अपने पास बैठाया उससमय उसके साथकीसेना बाजेबजातीहुई बड़ीधूमधामसे आई सबको ठहरनेकी आज्ञा दीगई और उस एक लाख सेनाने उतरकर कमरखोली यह म्लेच्छ विचित्रमायाका मौसियाता भाईथा नामउसका उग्रललाटथा और रानीविचित्रमायाकाभी ऐसाही भाई लगताथा इस मायाकृत देशमें एक नक्षत्रपाटन नामी नगरथा यह वहांकाराजाथा जब इसने सुना कि मेरी एक बहिन तो शत्रुओंसे मिलगईहै और दूसरी शत्रुओंके सन्मुख सेनालियेपड़ीहै तो उसकी सहायता करनेके लिये एकलक्ष सेनालेकर आया निदान जब वह आकरबैठा तबमहेंद्र की आज्ञासे सेवकोंने उत्तम मद्यसे एक पानपात्र भरकर उस को दिया और उसके सामने नाच होनेलगा उससमय उसने पूँछा कि हे महाराज आपनें इन शत्रुओंको इतना समय क्यों दिया कि उनकेसाथी इतने अधिकहोगये और उपाधि अधिक फैलगई यह सुनकर महेंद्रने बहुरूपियोंके प्रपंचका हाल और जोजो वृत्तान्त होचुकाथा सब वर्णन किया और बहुरूपियों की उपाधिकी बहुतही बुराईकी यह सुनकर उग्रललाट बोला कि अब मुझको आप आज्ञा दीजिये तो मैं जाकर इन बहुरूपियों को बांधकर और सब शत्रुओं के शिर काटकर आपके पास लेआऊं महेंद्र बोला कि तुम मेरेप्रियहो मैंतुमको नहीं भेजसक्ताहूं और उधर विचित्रमायानेकहा कि भाई मैं तुझे न लड़नेदूंगी वह बोला कि मैं अवश्य युद्धकरूंगा और जो तुम न मानोगे तो मैं अपनावध आप करडालूंगा तब महेंद्रने कहा

कि अच्छा दो एकदिनके पीछे युद्धकरना अभी तो तुम आयेही हो परन्तु उसने न माना और युद्धकेवाद्य बजायेजानेकीआज्ञा दी महेंद्र उसको बहुरूपियोंके छलकरनेकी सब बातें बनाकर बदरी उद्यानको चलागया और यहां जिस समय सूर्यरूपी राजाने पश्चिमरूपी डेरेमेंजाकर शयनकिया और आकाशरूपी देशमें निशारूपी शत्रु आकर राज्यशासन करने लगा॥

सो०। रविको अथयो जानि अन्धकार छायो दिशिनि।
निशा निशापति मानि सहनक्षत्र ऊगतभयो॥

उस समय युद्धकेवाद्य बजनेलगे और उनकी गड़गड़ाहट चारोंओर छागई यह संदेशालेकर मायाकृतपक्षी रानीनिशाकरी की सेनामें आये और अपना स्वरूप मनुष्योंकासा बनाकर विनयपूर्वक बोले॥

सो०। धन बल तेजप्रताप धर्मराज्य अरु सुयश सब।
अक्षय रहें सब थाप जबलों महि दिवि सूर शशि॥

श्रीमहारानी शत्रुसेनामें उग्रललाटनामी एक म्लेच्छ आया है उसने युद्धकरनेके वाद्य बजवाये हैं यह कहकर वे दूत तो हटगये और बहुरूपिये उसी समय सेनासे निकलकर बाहिर चलेगये और रानीनिशाकरीने आज्ञादी कि युद्धकेवाद्य हमारी सेनामें भी बजायेजावें यह आज्ञाहोतेही दुन्दुभी आदि नाना प्रकार के वाद्यबजनेलगे कि उनका शब्द चारोंओरको व्याप्त होगया और उसको सुनकर सबशूरवीर और मायावीयोद्धा युद्धकीतयारी करनेलगे॥

चौ०। कोऊ खड्गहि लेत निकारी। धरत ताहि पुनि धार सुधारी॥
कोऊ बाणनि को पैनावै। घर्षि शिलापर धार बनावै॥
कोऊ दृढ़ नवीन ज्या लेकें। धनुपर धारत रण दिन ज्वैकें॥
मायावी जे हैं बलवाना। मायाअस्त्र रचे तिन नाना॥
पावक जल समीर करगोला। रचिरचिधरे सुभरिभरिझोला॥
यहि प्रकारसों करत तयारी। बीती निशावीर सुदकारी॥

भयो प्रभात भूप सब जागे। रणको साजसजन सब लागे॥

और जिस समय चन्द्रमारूपी शत्रु तारागणरूपी सेनासहित भागगया और आकाशरूपी रणभूमि में सूर्यरूपी भूपने प्रकाशकिया उस समय रानीनिशाकरी अपने शयनमन्दिर से उठकर मायाकृत विमानपर सवारहुई सब शूरवीर और योद्धाओंने आकर दण्डवत्की और वह सबसेना सहित वहांसेरणभूमिकीओर चलदी उस समय मायाकृत पक्षी मायावियों के शिरपर छाया करतेजाते थे और चारोंओरको अग्निकीज्वाला प्रकटहोती थी सब म्लेच्छ अपना अपना मायाबल दिखाते जाते थे कभी मायाकृत सिंहको मायाकृत प्रमत्त गजसे लड़ाते थे कभी अग्निकी नदीप्रकट करते थे और कभी हिमकीशिला वर्षाते थे इस प्रकारसे सब रणभूमि में पहुँचे और उधरसे भी इसी प्रकारसे सेनाआई और विचित्रमायाका मण्डप वायुमें उड़ताहुआ आया उसमें सैन्धव और सुन्दरी दोनों स्थित थे और रानी विचित्रमाया एक सिंहासनपर विराजमानथी और उस मण्डपके चारोंओर बड़े २ म्लेच्छ भयानक स्वरूप अग्निरूपी सिंहोंपर सवार हाथों में सर्पों के कोड़ेलिये हुए चले आतेथे और एकओरसे उग्र ललाट हंसपर सवार अपनेसाथ एकलाख म्लेच्छ लियेहुए आया और सेनाको व्यूहित करके एक ओरको खड़ाहोगया उस समय रणभूमि निष्कंटककीगई और मायाबलसे जलवर्षाकर गगनधूलको शांतकिया उपरांत दोनोंओरकी सेनाओं में व्यूह रचना हुई और व्यूह रचना के पीछे कवीश्वर दोनोंओरसे निकलकर बोले॥

दो०। युद्ध यज्ञको पायके विमुखहोत नरजौन।
भूमिभोग यशमुक्तितजि बसतनरकमेंतौन॥

हे शूरवीरो यहसमय यशमुक्ति और भूमिभोग प्राप्त करने काहै मरणसे मुक्ति और विजयसे यश और पृथ्वीके भोग मि-

लते हैं ऐसे समयकोपाकर हे शूरवीरो सन्मुख रहकर शत्रुओं का वधकरो और यश प्राप्तकरो देखो अर्जुन भीमआदि बड़े२ शूरवीर कोई पृथ्वीपर नहीं हैं किन्तु उनकायश आजतकछाया हुआ है वही यशतुम सबभी शत्रुओंका वध करके प्राप्तकरो जिससे तुम्हारा नामभी संसारमें अमरहोजाय यह शिक्षाकरके कवीश्वर तो हटगये और उग्रललाटकी सेनासे एक योद्धा रक्ताक्षनामी निकलकर रणभूमिमें आया और मायाबलसे अनेक चमत्कार दिखाके प्रतियोद्धाका आवाहन किया॥

दो०। हों जेतासब जगतको जीतत मोहिं न कोय।
सोसों रणजो करतहै होत मृत्यु वश सोय॥

यह सुनकर रानी निशाकरीकीसेनासे एकयोद्धा सविता नामी अपने महोर्गको उड़ाकर उसके सन्मुखगया उसने तत्कालनिम्बुकास्त्रका प्रयोगकिया उससे सहस्रोंसर्प निकले और सविता के ऊपरचले यह देखकर सविताने नारिकेल अस्त्रमारा कि उससे सहस्रोंगरुड़ प्रकटहुए और उन सर्पोंको भक्षणकरनेलगे तब रक्ताक्षने कुछ मायाकी कि उससे पृथ्वीफटी और एकसिंह निकलकर थप्पड़ उठायेहुए सविताकीओर चला उसने अनेक प्रकारकी मायाकी परन्तु कोई न चली और उस सिंहने आकर सविताको तलप्रहारसे ताड़ित किया कि वह महानाग परसे गिरा और सिंहने उसको फाड़डाला और शत्रु सेना में प्रसन्नताका शब्दहुआ यह देखकर रानी निशाकरी ने अपना विमान बढ़ाया और एकमायाकृत त्रिशूलफेंका उसनेउसे रोकनेको अनेक प्रकारकी मायाकी परन्तु वह न रुका और उसके हृदयको फाड़ताहुआपार निकलगया यह देखकर उग्र ललाट अपना हंस उड़ाकर रणभूमि में आया और कुछ मायाकी कि अकस्मात् चार सहस्र अश्व सवार बनकीओर से प्रगटहोकर आये और एकओरको खड़ेहोगये और अपनेअपने भल्लोंको

भ्रमानेलगे उनसे एकएक लूका प्रकटहुआ और आकाश में ऊँचाहोकर रानी निशाकरीकी सेनापर गिरा और जिसकेशिरपर पड़ा वह यमधामको पहुँचा इसप्रकारसे प्रतिपद उनसवारोंके भल्लों से लूका निकल निकलकर वैष्णवी सेनापरगिरने और सेनाके योद्धाओंको मारनेलगे सहस्रोंयोद्धा उनसे मरगये यह देखकर रक्तकेशीकी बहिनरानी सुगन्धकेशी आगेबढ़ी और अपनेकेशोंको खोलकर कुछरजत बिन्दु निकालकर आकाशमेंफेंके और वे बिन्दुबाणरूपहोकर शत्रुसेनापर गिरनेलगे उसकोदेख कर उग्रललाट ने सवारोंसे कहा कि इसका बधकरो यह सुनकर एकसवार ने अपनेभल्लकोलेकर भ्रमाया उसमेंसे एकफल भल्ल का निकलकर सुगन्धकेशीकी ओरचला उसेदेखकर वह माया बलसेउड़ी परन्तु वह फल समीप जापहुंचाथा उसकी एँड़ी में लगा और उसको विदीर्णकरके पारनिकलगया तबवह घायल होगई यहदेखकर रानी माणिक्य ने नारिकेलअस्त्रका प्रयोग किया उग्रललाटने उसको अपने मायाकृत अस्त्रसे शमितकिया और सवारों को उसका बधकरने की आज्ञादी उनमें से एकने फिर भल्लको भ्रमाया और उसमेंसे एकलूका निकलकर माणिक्यकी जंघापर जाकरपड़ा और पारनिकलगया इसके उपरान्त अन्धकारहोगया और वैष्णवीसेनापर लूकपर लूकगिरने लगे कि उनसे सहस्रों योद्धामारेगये यहदेखकर रानीआनन्दा जो मायाकृत विमानपर पुष्पों के गुच्छे लियेहुए बैठी थी रानी निशाकरी से युद्धकी आज्ञालेकर आकाशमार्गी हुई उससमय एककड़कड़ाहटका शब्दहोनेलगा और फिर एक ऐसाभयंकर घोरशब्दहुआ कि पृथ्वी कम्पायमानहोगई और सहस्रों स्त्रियां परमसुन्दरी अतिउत्तम वस्त्र और आभूषण धारणकिये और एक२ हाथमें दो दो फूलों के गुच्छेलिये प्रकटहुई और रानी आनन्दाभी आकाशसेउतरी उसके हाथमें एकगेंदेका फूलथा

उसने उसे उग्रललाटके सन्मुख फेंकदिया और उसने उसे उठालिया और उनस्त्रियोंने फूलोंकेगुच्छे उनसवारोंके आगेफेंके कि उन्होंने भी उनको उठालिया और उनको सूंघकर सबमोहितहोकर रससम्बन्धी पदपढ़नेलगे और उग्रललाट भी रसके पदपढ़ताहुआ रानी आनन्दाकी ओरचला उससमय रानी विचित्रमाया मायाकृत मण्डपसेकूदी और मायासंहारकर पाठ पढ़तीहुई आगे बढ़ी उसको देखकर आनन्दा ने एकफूलों का गुच्छा बनकीओरफेंका और कहा कि हे बसन्तऋतुआओ यह कहतेही शीतलमन्दसुगन्ध वायुचलनेलगी उसके स्पर्शसे सब की आँखें बन्दहोगईं और फिर जो खुलीं तो उस रणभूमिको बैकुण्ठ के बागसे भी उत्तमपाया चारोंओर सुगन्धित फूलोंसे लदेहुए वृक्ष लगगये बेलोंके वितानतनगये सौगन्धिक पुण्डरीकआदि कमल तड़ागोंमें खिलगये निर्मल जलकीधारा बहनेलगी पक्षी भांति भांति की मधुरी बोली बोलनेलगे अपूर्व आनन्द छागया आ हा क्या वर्णन कियाजाय॥

सो०। भांति भांति के फूल फूले चहुंदिशि तरुनमें।
सुन्दर शोभा मूल गन्धभरे अति सोहने॥
तिनको परसि समीर मन्दमन्द डोलतितहां।
जनु बसन्तऋतु भीर त्यागि स्वर्गआई तहां॥

और उस उत्तमबागमें वह आनन्दरूपिणी आनन्दा अपनी सहस्रों सहेलियोंको साथलियेहुए फूलोंकी शोभादेखती फिरतीथी उससमय उसके कोमल कपोलों के वर्णको देखकर सब फूल लज्जितहोतेथे और फूलोंसे लदीहुई वृक्षकीलता समीप होनेसे ऐसा जानपड़ताथा मानों उनकपोलोंपर अपनेको नौछावरते हैं उसके केशमुक्ता और रत्नोंके फूलोंसे अलंकृतअनूप शोभा देते थे और उत्तमोत्तमवस्त्र और आभूषणों से अलंकृत उसका स्वरूप परममोहनी था॥

क०। केसरिसी केतकीसी चम्पक चमीकरसी चपला चमकचारुगात की गुराई है। जाकोमुख चन्ददेखि चन्दमन्द ज्योतिहोत जाकेलखि नैन अरविन्द द्युति पाई है॥ नीलमणि मोतिनकी मालउर डोलत मयूर ओ मरालनकी पंगति सुहाई है। वरणी न जायछवि सुन्दर अनूप ताकी मोहनी स्वरूपधरि रतिजनुआई है॥

उस मोहनी स्वरूपको देखकर रानी विचित्रमाया और उग्र-ललाट और सैन्ध्र और सुमुखी अर्थात् सुन्दरी और सबसेना-पति आदि मान्य म्लेच्छ मोहित होगये और रस सम्बन्धी पद पढ़तेहुए उसकीओरको चले॥

स०। रमिके रसरीतिकी गैलनिमें अनरीतिकोपन्थ न गाइयेजू। अब तौ छल छन्दकी बानतजो हँसि बोलिके चित्त उमाहियेजू॥ इतनी कर जोरिकैं विनती कछु और हमें नहिं चाहियेजू। मुखफेरिकै ओर हमारी सुनो मुखसों कछुबात सुनाइयेजू॥

निदान सेनापति तौ इस प्रकारसे मोहित होकरव्याकुलता से उसके पीछे २ चलेजाते थे और सेनाजन उन पुष्पों की गन्धको सूँघकर अचेतसे होगयेथे उस समय रानी निशाकरी ने शत्रु सेनापर धावाकिया और सहस्रोंका वध करडाला और सहस्रोंको कैद करलिया उस स्थानपर रक्तकी नदी बहनेलगी और एक महाकोलाहल मचगया म्लेच्छोंके मरनेसे आंधियां उठती थीं चारोंओर हाहाकार मचाथा और सबको विश्वासथा कि आज शत्रुसेना में से कोई न बचेगा परन्तु अकस्मात् आ-काशमें एकचमकहुई और यहवाणी हुई कि मैं महेन्द्र मायाकृत देशाधिपहूं उससमय महेन्द्रने रानी आनन्दा के स्वरूपको देख कर अपनेहृदयपर हाथरखलिया और मनसेकहा कि इससमय चलकर इसके चरणोंपर गिरूं और उसकी अप्रसन्नताको दूर करमनालूं परन्तु अपनी सेनाको विकल और नष्टहोताहुआ दे-खकर समझा मेरेचित्तका इतना प्रेम करनेका कारण इसकी

मोहनीमायाहै यहसोचकर उसने अपनाहाथ हिलाया कि उस-
से एक चपला चमककर गिरी और बसंतऋतुके मायाकृतबाग
को भस्म करनेलगी और रानीआनंदा अपनीमाया के भ्रष्टहो-
ने के कारणसे अचेतहोकर गिरपड़ी उससमय महेन्द्रने माया-
कृत हस्तभेजे कि वे रानी विचित्रमाया और सैन्ध्र और सुमुखी
अर्थात् सुन्दरी और उग्रललाटको उठाकर बदरीउद्यानमें ले
गये और रानी आनन्दा के अचेत होजानेसे सब शत्रुसेना चै-
तन्य होगई और रानीनिशाकरीकी सेनासे युद्धकरनेलगी उस
समय रानी निशाकरीने महेन्द्रको देखकर अनुमान किया कि
युद्धबनकर बिगड़गया अब सब पकड़ेजायँगे यह सोचकर वह
युद्ध निवृत्ती के बाद्य बजवाकर फिर पड़ी और उधर महेन्द्रभी
अपने से दुर्बलका पीछाकरना अनुचितजानकर फिरगया और
विचित्रमाया की सेना श्रमित होकर अपने डेरोंको गई और
रानी निशाकरी आकर अपनी सभामें गई और उसकी सेना
ने कमर खोली और नृत्य होने और उत्सवी बाद्य बजनेलगे
और सब आनन्द मङ्गल मनाने लगे और थोड़ीदेरमें जब
रानी आनन्दा चैतन्यहुई तबसबोंने माया संहारकर तंत्रकिये
कि उससे उसका चित्त सावधान होगया निदान ये सब तो
आनन्द में मग्नहैं परन्तु महेन्द्र वहांसे बदरी उद्यान में आया
और विचित्रमाया आदि सबको मोहित देखकर उनके ऊ-
पर मायाकर्त्ताके कुंडका जलछिड़का उससे सब चैतन्यहोगये
और महेन्द्रसे पूछनेलगे कि हमसब यहां क्योंकरआये महेन्द्र
ने सबवृत्तांत कहकर कहा कि आज आनन्दाने तुम सब को
मारहीडालाहोता मैं जाकर उठालायाहूं यहसुनकर सैन्ध्र क्रोध
के मारे थर थर कांपनेलगा और बोला कि इसआनन्दा छो-
करीने मेरी भी कुछकाननकी और सबकेसन्मुख मुझको नीचा
दिखाया अब मैं जातेही सबका विध्वंस न करूंगा आजतक

में इसकारणसे न बोलताथा कि मेरे पितामह श्रीमायाकर्त्ताके सब सेवक हैं मैं इनको क्या बधकरूं यह कहकर वह उठनाही चाहताथा कि उग्रललाटने हाथजोड़कर विनयकी कि अब तो मुझदाससे कामपड़ाहै आप थँभजाइये एकबार मुझको और जानेदीजिये यह कहकर वह उड़ताहुआ विचित्रमायाकी सेना में पहुँचा और अपनी बचीहुई सेनाकोलेकर एकपर्वतके नीचे पहुँचा और वहां सेनाको उतारकर डेराखड़ाकराया और उस में स्थितहोकर मद्यपान करतारहा और जब सूर्य पश्चिमदिशा में जाकर अस्तहुआ और आकाशरूपी मद्यदेयीने चन्द्रमारूपी पानपात्रमें चांदनीरूपी मद्यको भरा॥

दो०। त्रियारूप रजनी निकसि तमरूपी कबखोलि।
निशानाथ पतिसोंमिली चहुँदिशि जगमेंडोलि॥

अर्थात् सायंकालहोनेपर वह म्लेच्छ एक एकांतस्थान में जाकरबैठा और मंत्रपढ़कर कुछ होम करनेलगा उसमेंसे एक सर्प प्रकटहुआ उसने उसकेआगे रक्तरखदिया वहउसे चाटने लगा और जब चाटचुका तब उसने कहा कि जा मेरेशत्रुओं को पकड़ला यहसुनतेही वहसर्प उड़ा यहांसब आनन्दमें मग्न थे और रानीनिशाकरी सिंहासनपर विराजमान थी कि वह सर्प अकस्मात् आकाशसे उतरा और रानीनिशाकरीके शरीर में लिपटकर उसे उड़ाले चला उसको देखकर सबमायावी वीरों ने अनेकप्रकारकी मायाकी और नारिकेल आदि मायाकृतअ-स्त्रोंके प्रयोगकिये कि सर्पकोमारडालें परंतु सबव्यर्थहुआ और वह सर्प रानीको लेकर उग्रललाटके सन्मुख पहुंचा उसने रानी निशाकरी से कहा कि क्यों तैंने विमुखताका परिणामदेखा और यह कहके ऐसी मायाकी कि वह अचेतहोगई उसने रानीको एक सन्दूकमें बन्दकिया और उस सर्पको फिर भेजा यहांरानी निशाकरी के पकड़ेजाने से सब चिन्तामें थे सवार चारों ओर

को दौड़ाये थे कि देखें यहसर्प कहां से आता है और रानी आनन्दा प्रबन्धकररही थी कि सेना भागनजाय और बाजार लुटनजाय और बहुतसे बैठेहुए रानी निशाकरी के पकड़ेजाने का शोककररहे थे कि वहसर्प फिर प्रकटहुआ और रानी रक्त-केशीको पकड़कर लेचला फिर सबने अनेकप्रकारके यत्न उस सर्पके मारनेकेकिये परन्तु कुछनहुआ और वहउसको भी उग्र-ललाटके सन्मुखलेगया उसने उसे भी मायाबलसे अचेतकरके सन्दूक में बन्दकरदिया और उससर्प को फिर भेजा कि यहां अब और भी घबराहट मचीथी और कोलाहल सुनकर बहु-रूपियेभी आगयेथे कि वह सर्प मयूरमायाकी कमरमें आकर लपटगया और उसे उड़ाकर लेचला बहुरूपिये उसके नीचे नीचे भागतेहुए चले इनमेंसे प्रहास वायुकासा बेग रखताथा सो वह तो सर्पकी बराबर गया और बाकी सब पीछे रहगये वहां जब पर्वतके नीचे पहुँचा तो प्रहासने देखा कि एक सेना म्लेच्छोंकी उतरीहुईहै और एकओरको एक डेरेमें उग्रललाट बैठा हुआ मद्यपान कररहा है और वह सर्प्प मयूर को उसके सामनेलाया और उसने उसको दुर्वचन कहकर उसकोभी ले-जाकर संदूकमें बंदकरदिया यह देखकर प्रहासने कहा कि इस दुष्टको नरकगामी करनाचाहिये यहसोचकर बनमेंआया और बहुरूपधारिणी विद्यासम्बन्धी तूर्य्यबजाई उसको सुनकर जो बहुरूपिये पीछेसे दौड़ेआतेथे उसके समीपआये और खड़ेहो-गये प्रहासने उनसे कहा कि तुम सेनामें जाकर रानी आनंदा से कहो कि कुछ सेनालेकर आवै और इसी बनमें ठहरे और सब सेनापतियों को अपनेसाथ न लावै सब सभामें ज्योंकेत्यों बैठेरहें जिसमें सर्प खालीफिरके न जाय जो खाली जायगा तो उग्रललाट होशियारहोजायगा और मेरी प्रपञ्चरचनामें बाधा डालेगा इससे अच्छा यहहै कि जोजो यहांआवै वह अपने २

स्वरूपकी एक २ म्लेच्छी बैठाकरआवै यहसुनकर चपला सेना में गया और उसने सब व्यवस्थाकही रानीआनंदा ने उसको सुनकर अपनी एक दासीकास्वरूप मायाबलसे अपनासाबना दिया और उससे कहा कि जो कोई तुझसे पूछे तू अपने को आनंदा बताइयो और मेरेअधिराजकी सबआज्ञादीजियो यह कहकर उसने अपनी निजसेनाको चुपचाप तयारहोनेकी आज्ञादी और जब वह तयारहोगई तब आप मायाकृत मयूरपर सवारहुई और चपलाके बतायेहुए पतेपर सेनालेकर चलदी और उसको किसी ने न जाना सब यही जानतेथे कि आनंदा मौजूदहै अब वह सर्प बारंबार आताथा और किसी न किसी को उठालेजाताथा एक कोलाहल मचाथा एक दूसरेको धीर्य देताथा और सब श्रीविष्णुभगवान्से प्रार्थनाकरतेथे ॥

जय०छं० हेजगदीश्वर परमकृपाल । हे हे दीनानाथ दयाल ॥
हे हे भक्तवछल असुरारि । हेकरुणाकर प्रभो मुरारि ॥
हे हे विश्वंभर जगदीश । अन्तरयामी त्रिभुवनईश ॥
हेप्रभु निर्भय निरआकार । अव्यय अक्षय सर्वाधार ॥
शरणागत हमकरतपुकार । रक्षहु हमहिं हरहुदुखभार ॥
भक्तनप्रबल शत्रुवशजान । पाहितूर्णप्रभु कृपानिधान ॥
कुञ्जलालतवशरणविहाय । सूझतप्रभो नआनउपाय ॥

निदान ये तो यहां विनय कररहेहैं परन्तु अब बहुरूपियों का वृत्तान्त सुनिये कि उन्होंने बदरीउद्यानको कईबार देखाथा और वहां जो दासियां नियतथीं उनमें से कई एकके स्वरूपों को उन्होंने अच्छीप्रकारसे ध्यानकर रक्खा था कि कदाचित् कहीं उनका स्वरूप धारण करनेका प्रयोजन न पड़े निदान प्रहासने वर्त्तिका प्रज्वलित करके सामनेदर्पणरक्खा और बदरी उद्यानकी एक परम सुन्दरीदासी के स्वरूपको ध्यानकर कर के उस दर्पणमें देख देखकर अपना स्वरूप उसकासा बनाया आहा क्या प्रशंसा प्रहासके हस्तकर्म की कीजाय जो विश्व-

कर्म्भा भी होता तो आश्चर्य्य युक्त होकर उसके हाथोंको चूम लेता ऐसी स्वरूपकी प्रति उसने अपने स्वरूपपर उतारी कि उस दासीके निजस्वरूपसेभी परमउत्तमथी मुखऐसासुंदर उसका बनाथा कि वैसा संसारमें कभीकिसी मानुषीका न हुआहोगा उसकी शोभाकी उपमाचन्द्रमासे देना चन्द्रमाकीवड़ाईकरनाथी कपोल ऐसे कोमल और सुडौलथे कि अरुणसरोरुहभी उनके सामने फीकाजानपड़ताथा दांत ऐसेउज्ज्वल और समथे कि उनकी समतामें मुक्ताओंको बताना उनकी निन्दाकरनाथा नासिका परमसनोहर और नेत्रसंसारको बशकरनेवालेथेअधर लाल लाल और पतलेपतले महान् सुशोभितथे निदान सर्वाङ्ग उस सुंदरीका छवि और शोभासे ऐसा भराहुआथा कि उसका वर्णनकरनेमें चित्तचकितहोहोकर रहजाताहै और यही चाहताहै कि चुपरहूं और देखाकरूं आहा क्याशोभाहै क्या छविहै अनूप है आदर्यहै अदोषहै प्रशंसाउसकी करनेकी किसकीसामर्थ्यहै ॥

क०। मदन तुकातीकीधों इन्दु कुन्द कासी मनो कुंजकलि कासी कुच नोरी बिकासी है। गांसी भरी हांसी मुखभासी मोह फांसी मद यौवन उजासी नेह दीपक शिखासी है॥ जाकी रति दासी रसरासीहै रमासी कौनकहैतिलोत्तमासी रूपसदनविकासी है। कामकी कलासी चपलासी कविनाथ किधों चम्पक लतासी चारुचन्द्रिकाप्रकासीहै॥

ऐसा सुंदर मनोहर स्वरूपबनाकर उसने उसका उत्तमोत्तम वस्त्रोंसे अलंकृतकिया और फिर जो दर्पणमेंदेखा तो अपनेस्वरूपपर आपही मोहितहोगया उपरांत उसने अपनी थैली से जीवक विमान निकाला प्रकटहो जीवक नामी एक बड़ामायावी म्लेच्छोंका राजाथा और अपनेको कहताथा कि परमेश्वर मैंही हूं उसने मायाबलसे एक दो कोस ऊंचामहल बनायाथा उसके ऊपर वह रहाकरताथा और उसके यहां एक बड़ाभारी तांत्रिकथा उसने एक बिमान अपनी विद्या और बुद्धिकेबलसे ऐसा

बनायाथा कि उसपरचढ़कर वहराजा उस महलकेऊपर जाया करताथा और उसीपर सवारहोकर उतरा करताथा उसमें एक चक्र लगाथा उसचक्रको शिरकेऊपरचढ़ादेनेसे वह बिमानमन मानाऊपरको उड़ाचलाजाताथा और छातीके पासचक्र रखनेसे आकाशमें थोड़े ऊंचेपर स्थिररहकरचलताथा और पैरके नीचे उस चक्रको दबानेसे वह बिमानपृथ्वीपर उतरआताथा सो जब बैष्णवोंसे और उस राजासे युद्धहुआथा और वह राजा महाराज शत्रुंजयके हाथसे मारागयाथा तब प्रहासने उसके बिमान को जालमारकर थैलीमें डाललियाथा वह बिमान मायाकृत न था नहीं तो उस राजाके मरनेपर नष्टहोजाता किंतु वह तंत्र बिधिसे बनाथा इसकारणसे उसका प्रभाव ज्योंकात्योंथा निदान प्रहासने उस बिमानको निकालकर उसपर चारोंओर फूलों के गुच्छे पात्रोंमेंलगा लगाकर स्थापितकिये और एक ओर उत्तम बारुणीके पात्र भरेहुए रक्खे और फूलोंपर मूर्च्छाकर सुगंधित तैलबहुतसाछिड़ककर वह सुंदरस्वरूपबनाहुआथा उसपरबैठगया और उसको उड़ाकर वहींपहुंचा जहांउग्रललाट बैठाहुआ था और उससमय वहसर्पसुगंधकेशीको पकड़करलायाथा और वह उसकोदुर्बचनकहरहाथाकि इतनेमेंप्रहासनेउसबिमानपरसे अपनेपैरोंके घुँघुरूबजाये उसको सुनकर उग्रललाटने ऊपरको देखा तो एकबिमान रत्नजटितदीखा कि तारेकी समानआकाश से उतरता आताहै उसको देखकर उग्रललाटने जाना कि महाराज महेन्द्र आये यह जानकर वह खड़ाहोगया कि इतनेमें वह बिमान पृथ्वीपर उतरा और उससमय उसने उसके परम मनोहर और सुन्दर स्वरूपको देखा कि वैसा स्वरूप कभीउस के चिंतवनमेंभी न आयाथा निदान देखतेही भौंचकसा होगया और थोड़ीदेरमे उसबिमानके समीपगया और उसकेचारोंओर परिक्रमा करनेलगा तब वहसुन्दरी घुँघुरू बजाती हुई

सिंहासनसे उतरी और मुसुकुराकर उसका हाथ पकड़लिया तब वह बोला कि हे सुन्दरी तू स्वर्ग्गकी अप्सराहै अथवाकोई देव कन्याहै या मानुषी है तेरा स्वरूप ऐसा सुन्दर और शोभायमानहै कि त्रिलोकीको वश करनेवालाहै यह सुनकर वह सुमुखी अपनेदांतोंकी कांतिको बिजलीकी समान चमकाती हुई मधुरवाणीसे बोली कि मैं महाराज महेंद्रकी दासीहूँ उन्हों ने अद्भुत जालमें आपके शत्रुओंका पकड़ना देखकर आप की बड़ी प्रशंसाकी हैं और मुझे आपकेपास आपकी क्षेम कुशल पूछने भेजाहै और कहा है कि कैदियों को अच्छीतरह रखना और आपके वास्तेफल और फल और मद्यभेजी है सो आप इनसब पदार्थोंको लेलीजिये और मुझे अपनी क्षेम कुशलका पत्र लिखदीजिये कि मैं उसको लेकर चलीजाऊं जानेका नाम सुनतेही उसका चित्त उदासहोगया और श्वास लेकर बोला कि हे कोमलांगी मेरेहृदयको कामरूपीबाणोंसे बेधकर अबकहां जायगी कुछकाल ठहरकर विश्रामकरो उसने हँसकर कहा कि तेरी बुद्धि कहांगई है अपनेचित्तको सावधानकर अरेमें मायाकृत देशाधिपकी अङ्गीकृतहूँ यदि मुझको किसीसे हँसते हुए देखले तो न जाने क्या आपत्ति मेरे ऊपरडाले क्या तुम मेरी नाककटवाओगे हटो अब मुझेजानेदो यह सुनकर उग्रललाट ने अपना शिर उसके पैरोंपर रखदिया और कहा कि मैं विचित्र मायाका भाईहूँ मैं तुझे महेन्द्रसे मांगलूंगा और मुझसे हँसने बोलने में महाराज महेन्द्रअप्रसन्ननहोंगे निदान उसके बहुत कहने सुननेसे उसने कहा कि अच्छाकहो प्रयोजन आप का क्याहै यह सुनतेही उसने उसे गोदमें उठालिया और डेरे के भीतरलेआया और एक उत्तम गद्दीपर बैठाकर वही मद्य सामनेरक्खी जो वह सुन्दरीलाई थी तब उस सुलोचनानेमद्य पानपात्रमें भरली और हाथपर रखकर कहा कि मेरे हाथ से

दियाहुआ पानपात्र वह पीता है जिसके बड़ेभाग्यहोते हैं यह सुनकर उग्रललाटने धीर्य छोड़कर वह मद्यपात्र शीघ्र हाथ में लेलिया और बोला कि धन्य मेरा भाग्यहै और उस मद्यको बड़ी प्रसन्नतासे पीगया और पीतेही अचेतहोगया कुछ तन कीभी खबर न रही तब प्रहासने उसे उलटाकरके एकखड्गका प्रहार ऐसामारा कि उसका शिरकटकर पृथक् जा पड़ा उसके मरनेसे महाकोलाहल प्रकटहुआ और बाणीहुई कि उग्रललाट मारा गया और उसकी मायाके नष्ट होजाने से वह सर्प भी अन्तर्द्धानहोगया और रानी निशाकरी आदिकोभी चेतहोगया उससमय प्रहासने दौड़कर सामने जो सन्दूकरक्खे थे जिनमें रानी निशाकरी आदि बन्दथीं खोलदिये और उनमें से वे सब निकलआये उधरसे उस कोलाहल को सुनकर उग्रललाट की सेनाके सब लोग दौड़े आतेथे कि इधरसे रानी निशाकरी और रक्तकेशीने नारिकेल आदि मायाकृत अस्त्रोंका प्रयोगकिया उन से अग्नि और पाषाणोंकी वर्षाहोनेलगी और म्लेच्छ उससे मरनेलगे उससमय प्रहासने वह जीवकविमान तो अपनीथैली में रखलिया और वस्त्र और आभूषण उतारकर बांधलिये और जालसार मारकर लूटनेलगा परंतु शत्रु सेना बहुतथी उन्हों ने आकर घेरलिया और सेना बड़ी शीघ्रतासे युद्धकेलिये तयार हुई उससमय उस कोलाहलको सुनकर रानीआनन्दा जो सेना लियेहुए छिपीबैठीथी सेनासहितआई और मायाकृत अस्त्रचलने लगे उनसे म्लेच्छ मरनेलगे और लोथपरलोथ गिरनेलगी महान् युद्धहोनेलगा और अस्त्रशस्त्रोंकीवर्षा मेघके वर्षाकेसमान होनेलगी वह महारणयमलोकका बढ़ानेवाला बड़ादुस्सह और कठिन हुआ ॥

जय०छं० । माचो महा घोर घमसान । प्रलयकाल समयुद्ध महान ॥
मरेअसंख्यन भट समुदाय । शत्रु सेनके उन्नतकाय ॥

सिंहासनसे उतरी और मुसुकुराकर उसका हाथ पकड़लिया
तब वह बोला कि हे सुन्दरी तू स्वर्गकी अप्सराहै अथवाकोई
देव कन्याहै या मानुषी है तेरा स्वरूप ऐसा सुन्दर और शोभा-
यमानहै कि त्रिलोकीको बश करनेवालाहै यह सुनकर वह सु-
मुखी अपनेदांतोंकी क्रांतिको बिजलीकी समान चमकाती हुई
मधुरबाणीसे बोली कि मैं महाराज महेंद्रकी दासीहूँ उन्हों ने
अद्भुत जालमें आपके शत्रुओंका पकड़ना देखकर आप की
बड़ी प्रशंसाकी है और मुझे आपकेपास आपकी क्षेम कुशल
पूछने भेजाहै और कहा है कि कैदियों को अच्छीतरह रखना
और आपके वास्तेफल और फूल और मद्यभेजी है सो आप
इनसब पदार्थोंको लेलीजिये और मुझे अपनी क्षेम कुशलका
पत्र लिखदीजिये कि मैं उसको लेकर चलीजाऊं जानेका नाम
सुनतेही उसका चित्त उदासहोगया और श्वास लेकर बोला
कि हे कोमलांगी मेरेहृदयको कामरूपीबाणोंसे बेधकर अबकहां
जायगी कुछकाल ठहरकर बिश्रामकरो उसने हँसकर कहा कि
तेरी बुद्धि कहांगई है अपनेचित्तको सावधानकर अरेमैं माया-
कृत देशाधिपकी अङ्गीकृतहूँ यदि मुझको किसीसे हँसते हुए
देखले तो न जाने क्या आपत्ति मेरे ऊपरडालें क्या तुम मेरी
नाककटवाओगे हटो अब मुझेजानेदो यह सुनकर उग्रललाट
ने अपना शिर उसके पैरोंपर रखदिया और कहा कि मैं वि-
चित्र मायाका भाईहूँ मैं तुझे महेन्द्रसे मांगलूंगा और मुझसे
हँसने बोलने में महाराज महेन्द्रअप्रसन्ननहोंगे निदान उसके
बहुत कहने सुननेसे उसने कहा कि अच्छाकहो प्रयोजन आप
का क्याहै यह सुनतेही उसने उसे गोदमें उठालिया और डेरे
के भीतरलेआया और एक उत्तम गद्दीपर बैठाकर वही मद्य
सामनेरक्खी जो वह सुन्दरीलाई थी तब उस सुलोचनानेमद्य
पानपात्रमें भरली और हाथपर रखकर कहा कि मेरे हाथ से

फिर अजयतो रक्खीहीहुईहै इसकारणसे राजाहोनेकेयोग्य वह मनुष्यहै जो सिवाय अपनेबराबरराजाके और दूसरेसे अजय नहो और जिसकेभयकेमारेशत्रुके किसीअसमअधिकारीकोउस कासामनाकरनेकाउत्साहनहो परंतुउसकेबिपरीत तुमछोटेछोटे मायावीम्लेच्छोंसे अजयपातीहो और वहआकरतुमको कैदक- रलेजातेहैं यहसुनकर रानी निशाकरीनेकहा कि आपकाकहना सत्यहै और उसमेंकोईबात तर्कणायोग्य नहींहै अच्छा हे रानी आनन्दा मैं यह राज्य और सब सेना तुम्हारे सुपुर्दकरतीहूँ तुम थोड़े दिनोंतक राज्य सिंहासनपर बैठकररक्षाकरो मैंने तुमको ईश्वरके आधीनकिया और मैं अब मायाकर्ताके भवनको जा- तीहूँ वहांजाकर मैं एकप्रयोग सिद्धकरूंगी जो ईश्वरकी इच्छा होगीतो उसप्रयोगके सिद्धकरनेपर सिवायबड़ेप्रबल मायावीके जैसे किमहाराजमहेन्द्र अथवा विचित्रमाया अथवा सैन्धूआदि के और कोईमुझकोजयनकरसकैगा तब प्रहासबोला कि अपने साथ किसको लेजाओगी उसनेकहा कि वहस्थान ऐसा नहीं है जहां किसीकी गतिहोय यहकहकर उसने कुछमायाकी कि उससे अंधकार लियेहुए एक आंधी प्रकटहुई और क्षणमात्रमें एकस्त्री एक विमानमें बैठीहुई प्रकटहुई उसने वहांआकर एकपात्रसुवर्ण का रानी निशाकरीके सामने रखदिया उसने उसेखोला और उसमेंसे एकमयूर उत्तमबर्णका निकला थोड़ी देरमें वह मयूर बढ़कर घोड़ेकी बराबरहोगया रानी निशाकरी उसपर सवारहो गई और वहस्त्री उसपात्रको उठाकर बिमानपर बैठकर उसके साथहोली और दोनों उसअंधकारमें अदृश्यहोगईं उसके जाने के पीछे रानीआनन्दा चन्द्रिकाको धारणकरके सिंहासनपर वि- राजमानहुई और राज्यप्रबन्ध करनेलगी निदान इधर तो यह हुआ और उधरम्लेच्छ उग्रललाटकी लोथकोलियेहुए महेन्द्रके पासगये और उससे सबवृत्तांतकहा रानी विचित्रमाया अपने

किया शत्रुसेनाकोनाश । जिमिगिरिदामिनिकरतविनाश ॥
जैसेदहति अनलतृणराशि । मारयो तिमिशत्रुनकोगांसि ।
क्षण में रही जहांलो सैन । भयो तहां लोथनको ऐन ॥
इविधि होत संग्राम महान । बीती सो निशिकालसमान ॥
होतप्रभातभयो तमनाश । निर्मलनभमें भयो प्रकाश ॥
तेहि अवसरपरदलके वीर । भागे युद्ध त्यागि तजिधीर ॥

जिससमय कि सूर्यरूपीराजा प्रकाशरूपी अस्त्रसे अंधकार रूपीशत्रुकोवधकरके आकाशरूपी रणभूमिमें विजयपाकरस्थित हुआ उससमयशत्रुसेनाकेम्लेच्छ उग्रललाटकी लोथलेकरभागे और रानी निशाकरी जयपाकरप्रसन्नतापूर्व्वक सब सेनापतियों सहित लौटकर अपनीसभामेंआई प्रहासको बहुतसा धनदिया और फिर पहिलेकेअनुसार नाच और आनन्दमंगलहोनेलगा उससमय रानीआनंदा और प्रहास उठकर राजसिंहासनकेसमीप आये और रानी निशाकरी को यथाविधिसे दण्डवत्‌करके विनयपूर्वक बोले ॥

सो० बल प्रताप अरुराज तेज सेन ऐश्वर्यता ।
रहैंअछत सुखसाज यावतनभमार्तंडगति ॥

हे श्रीमहारानी जो आपकी आज्ञाहो और आपको किसी प्रकारसे अप्रियन जानपड़े तो हम आपसे एक वार्ताअपमान की कहैं यह सुनकर रानी निशाकरी सिंहासनपर खड़ी होगई और बोली हे प्रहासजी आप मुझे लज्जित न कीजिये आप को राजाको राज्य उतारने और स्थापितकरनेका अधिकार जो कुछ आपआज्ञाकरें मैं तत्कालकरूं मैं तो आपकीदासीहूँ ॥

चौ० हो तुम सबविधि धर्मप्रकाशक । अरुअधर्मकी मूल विनाशक ॥
हमसब हैं तुम्हरे अनुगामी । अहैं आपु हमसबके स्वामी ॥

प्रहास बोला कि वह मनुष्य राजाहोनेके योग्यकबहै जिस को हरएक मनुष्य जोचाहै सो पकड़करलेजाय सेनाको राजाके रहनेहीसे बलरहताहै इससे जब राजाही बेर २ कैदहोजाय तो

फिर अजयनो रक्खीहीहुईहैं इसकारणसे राजाहोनेकेयोग्य वह मनुष्यहै जो सिवाय अपनेबराबरराजाके और दूसरेसे अजय नहो और जिसकेभयकेमारेशत्रुके किसीअसमअधिकारीकोउस कासामनाकरनेकाउत्साहनहो परंतुउसकेविपरीत तुमछोटेछोटे मायावीम्लेच्छोंसे अजयपातीहो और वहआकरतुमको कैदक- रलेजातेहैं यहसुनकर रानी निशाकरीनेकहा कि आपकाकहना सत्यहै और उसमेंकोईबात तर्कणायोग्य नहींहै अच्छा हे रानी आनन्दा मैं यह राज्य और सब सेना तुम्हारे सुपुर्दकरतीहूँ तुम थोड़े दिनोंतक राज्य सिंहासनपर बैठकररक्षाकरो मैंने तुमको ईश्वरके आधीनकिया और मैं अब मायाकर्ताके भवनको जा- तीहूँ वहांजाकर मैं एकप्रयोग सिद्धकरूंगी जो ईश्वरकी इच्छा होगीतो उसप्रयोगके सिद्धकरनेपर सिवायबड़ेप्रबल मायावीके जैसे कि महाराजमहेन्द्र अथवा विचित्रमाया अथवा सैन्धूआदि के और कोईमुझकोजयनकरसकेगा तब प्रहासबोला कि अपने साथ किसको लेजाओगी उसनेकहा कि वहस्थान ऐसा नहीं है जहां किसीकी गतिहोय यहकहकर उसने कुछमायाकी कि उससे अंधकार लियेहुए एक आंधी प्रकटहुई और क्षणमात्रमें एकस्त्री एक विमानमें बैठीहुई प्रकटहुई उसने वहांआकर एकपात्रसुवर्ण का रानी निशाकरीके सामने रखदिया उसने उसेखोला और उसमेंसे एकमयूर उत्तमवर्णका निकला थोड़ी देरमें वह मयूर बढ़कर घोड़ेकी बराबरहोगया रानी निशाकरी उसपर सवारहो गई और वहस्त्री उसपात्रको उठाकर विमानपर बैठकर उसके साथहोली और दोनों उसअंधकारमें अदृश्यहोगईं उसके जाने के पीछे रानीआनन्दा चन्द्रिकाको धारणकरके सिंहासनपर वि- राजमानहुई और राज्यप्रबन्ध करनेलगी निदान इधर तो यह हुआ और उधरम्लेच्छ उग्रललाटकी लोथकोलियेहुए महेन्द्रके पासगये और उससे सबवृत्तांतकहा रानी विचित्रमाया अपने

भाईकी लोथको देखकर रोनेलगी और शिरपीटपीटकर बिलाप करनेलगी महेन्द्रनेभी आंखोंमें आंशूभरे अंतको उसकी लोथ का संस्कारकिया उपरांत महेन्द्रनेविचारा कि अबकीकिसी बड़े प्रबलमायावीको युद्धकरनेके लियेभेजूं उसकेमनकीवृत्तिको जान कर सैन्धने उठकरकहा कि मैं सबके चित्रखींच चुकाहूं अब मैं जाकर सबको विध्वंस कियेदेताहूं महेन्द्रबोला कि आप मेरेपू- जनीयहैं ऐसा नहो कि बहुरूपिये आपका अपमानकरें वहबोला कि उनकी क्यासामर्थ्य है मैंने सबके चित्रबनाये हैं जिस रूपको धरकर वे मेरेपास आवेंगे वही रूपउन चित्रोंका होजायगा यह कहकर वहअपनीस्त्री सहित सवारहोकर सेनामेंआया और अ- पनीसभामेंजाकर बैठगया उसकेआनेसे उसकेसबसभासद जि- नकी संख्या चारसौके लगभगथी आये और अपने २ स्थानों परबैठगये उनसे सैन्धनेकहा कि कलमें सबशत्रुओंका नाशक- रूंगायहसुनकर सबसभासदबोले कि कलकेदिन युद्ध न कीजिये क्योंकि एक बणिक् आपकानाम सुनकर बड़ीदूरसे नानाप्रकारके वाणिज्यकेपदार्थलेकरआयाहै इसमायाकृतदेशमें जोसाठसहस्र उपदेशहैं उनमेंसे वहउस देशकारहनेवालाहै जो इस देशकी प- रलीसींवांके समीपहै सोऐसा नहो कि युद्धमें उसकाधन लुटजाय कल उसको विदाकरदीजियेतो अच्छा है यह सुनकरसैन्धबोला बणिक्के आनेकी आजकल तो कुछआवश्यकता नथी किंतु जो वहमेरा नामसुनकर आयाहैतो अच्छाहै उसकोबुलालो जिससे युद्धमेंविघ्न पड़े यहआज्ञापाकर सेवक उसबणिक्को बुलानेको गये और वहबणिक् आज्ञापाकर अपनेवाणिज्यके सबपदार्थोंको लेकर सभाकीओर चला परंतु सुमुखी अर्थात् सुंदरीनेकहा कि ऐसानहो कि प्रहास बणिक्कास्वरूप धारणकरके आवै और दुःखदे आप उसके चित्रको देखलीजिये यहसुनकर सैन्धने प्र- हासकाचित्र निकालकर जोदेखा तो विदितहुआ कि वहअपने

निजस्वरूपसे रानीआनन्दा आदि सहित सभामें एक उत्तम आसनपर बैठाहुआहै यहदेखकर वहबोला कि इसचित्रमें जहां प्रहासहै वहांकी सभातकका स्वरूपबनगयाहै इससे कुछसंदेह नहींहै उसवणिक्को बुलालो निदान वणिक् सभामेंलायागया उसने आकरदंडवत्की और जहां और वणिक्सभामें आसीनथे वहीं उसको भी बैठनेको आसनदियागया तबसैन्धूने आज्ञादी कि अच्छा जोकुछ अद्भुत पदार्थ तुमलायेहो उनको दिखाओ वह खोलखोलकर दिखानेलगा परंतु यहां दूतलगेहुएथे उन्होंने सबवृत्तांतको जानकर रानीआनन्दाके सन्मुखजाकर वर्णनकिया उसवृत्तांतको और बहुतसेधन औरअपूर्व पदार्थोंकानामसुनतेही प्रहासके मुखमेंपानीभरआया और वह चित्तसेकहनेलगा कि जो तुम चित्रसे डरगये तो छल क्याकरोगे यहसबधन योंहींजाता है जो इसको नलिया तो सदैव ऋणी बनेरहोगे इससे चलो परमेश्वर रक्षकहै यह विचारकर उठा आनन्दानेकहा कि प्रहासजी कहांकोपधारे वहबोला कि जायँ हमभीदेखआवें वहबोली कि लोभमें आकर कहीं सैन्धकी सभामें नजाइयेगा और उस को आप अचैन समझियेगा वहबोला कि जैसाहोगा समझ लेंगे और यहकहकर बाहरआया और वहांसेचलकर अपना स्वरूप म्लेच्छोंकासा बनायेहुए सैन्धूकी सभामें पहुँचा और देखा कि वणिक्केसेवक वाणिज्यकेपदार्थोंको दौड़दौड़करलातेहैं और कुछम्लेच्छ सभाके द्वारपरखड़ेहैं कि वे लेलेकर भीतरपहुँ-चातेहैं जिससे बिलम्बनहो यहदेखकर प्रहासने तुरन्त वस्त्रादिक धारणकरके अपनाभेष सेवकोंकासाबनाया और उसडेरेके द्वार पर आया जहांसे सेवक उनपदार्थोंको लेलेजातेथे और देखा कि एकसेवक एकसन्दूकलेकरनिकला और सभाकीओर दौड़ा प्रहास उसकेपासगया और बोला कि सेठजीने कहाहै कि जो सन्दूक हमारी शय्या के पास रक्खा है वहभी लेतेआना वह

बोला कि शय्या के पास तो लेखनीयंत्र रक्खाहै सन्दूक तो नहीं है प्रहास बोला कि हांहां वही वहबोला कि अच्छा तुम सन्दूकचा लेचलो मैं वहभी लेकरआताहूं यहकहकर उसने सन्दूक देदिया और प्रहासने उसेलेकर अपनी थैलीमें डाल लिया उधर वहसेवक लेखनीयंत्रलेकर सभामें गया और उसको वणिक्के सामने रखदिया उसनेकहा कि देरक्योंलगाई वह बोला कि दोबारजाना आनापड़ा तब उसने पूछा कि लेखनीयंत्र क्योंलाया है वहबोला कि सैन्धका सेवक सन्दूक लेआयाहै और मुझसे लेखनीयंत्र लानेको कहआयाथा तब वणिक्नेउठकर और हाथ जोड़कर सैन्धसे विनयकी कि आप पूछें कि आपका कोईसेवक मेरा सन्दूकलायाहै सैन्धनेआज्ञादी कि शीघ्रदेखो कौन इसका संदूकलाया है तब सबसेवक बुलाये गये और उनसे जोपूछा तो किसीने संदूककालाना स्वीकार न किया तब तो वहवणिक् मृतक तुल्य होगया और रोनेलगा क्योंकि उसमें कईलाखकी संख्याका धनथा तब सुमुखीजिसका दूसरानाम सुन्दरीभी था उसने कहा कि आप प्रहासका चित्र निकालकर तो देखिये वहां प्रहास सन्दूकको थैली में डाल-नेके पीछे थालमें मिठाई लगाकर पक्कान्न वणिकोंका भेषधारण करके डोलफिरकर मिष्टान्नबेचनेलगाथा सुमुखीकीबातको सुन कर सैन्धने चित्रकोदेखा और कहा कि प्रहासमेरी सेनामेंपक्का-न्न वणिक् अर्थात् हलवाईका रूप धारण कियेहुए फिर रहाहै सेवककासा तो स्वरूप उसका नहीं है यह कहकर उस सेवक से कहा कि सत्यबता तैंने सन्दूक क्या किया तब उसने साक्षी दिये और उन साक्षियोंने कहा कि हां हमारे प्रत्यक्षमें इसनेस-न्दूक सेवकोंको दियाथा निदान जबकुछ खोजनचला तब उस ने चाहा कि प्रहासको पकड़ूं परन्तु उसके सभासदों ने कहा कि प्रहासके ग्रहणहोनेसे और बहुरूपिये उसको छुटानेआवेंगेइस

में और अधिक उपद्रवहोगा और यह बणिक् लुटजायगा यह सुनकर सैन्धने आज्ञादी कि यह जो धन इस बणिक्का जाता रहाहै हमारे कोपसे सबदियाजावे यह सुनकर वह बणिक् आशीर्वाद देनेलगा और फिर अपने वाणिज्यके पदार्थों को दिखानेलगा इस अवसरमें प्रहासने अपना स्वरूप एक म्लेच्छ कासा धारणकिया और उस सन्दूकमें से सबधन निकाल कर धनके पलटे कंकड़पत्थर भरकर और सन्दूकको शिरपर रख कर फिर सभाके द्वारपर आया और पुकारकर बोला कि वह सन्दूकजो चोरीगयाथा यह तो नहीं है यह सुनतेही मनुष्यउस को हाथोंहाथ सभामें लेगये और उस बणिक्ने सन्दूकको देख तेही कहा कि हां यहीहै उससमय सैन्धने पूछा कि यहसन्दूक तेरे हाथकैसेलगा प्रहासबोला कि मैं पर्वतपर रहताहूँ वहांएक मनुष्य सन्दूक लिये हुए जाताथा मैंने उसे पकड़लिया और पूछा तो उसने पताबतादिया परन्तु उसकी सुश्रूषा करनेकेकारणसे उसेतोमैंनेछोड़दिया और सन्दूकयहांलेआया अबमैंनहीं जानताहूँ कि इसमें आपका धनहै या नहीं सैन्ध बोला कि तू बड़ा धर्मात्माहै अच्छा बैठजा वह एक आसनपर जाकर बैठ गया परन्तु जबसे प्रहास आयाथा तबसेरानी आनन्दाकोबड़ी चिंताथी दैवयोगसे उसी समय वहां उपहासगया उसको देख कर उसने कहा कि आपकेगुरू श्रीप्रहासजी एकाकी शत्रु सेना में छल साधन करनेकोगये हैं ऐसा न हो कि सैन्धसे किसी प्रकारकी धर्षणा पावें उपहास सब वृत्तांत जानकर स्वरूपबदलकर शत्रुसेनामेंआया उससमय उस बणिक्का मुनीम संदूक के मिलनेका यत्नकर रहाथा और सेवकोंको भेजता भाजताथा कि उपहास उसकेपास गया और बोला कि चलो तस्कर को हम बतादें वह चुपकेसे उसकेसाथ होलिया और जब एकांतमें पहुँचे तब उपहासने उसकेमुखपर मूर्च्छाकर चूर्णडालकर उसे

मूर्च्छित करदिया और उसकेवस्त्र उतारकर आपधारणकरलिये और उसीकासा अपनारूप बनाकर और उसेएकगर्तमें डालकर सैंध्रकी सभामें उससमयआया जब प्रहाससंदूक लेकरगयाथा निदान उपहासभी वहांजाकर बणिक्केपास बैठगया और उसब-णिक्ने वड़ी प्रसन्नतासे उस संदूकको खोला परन्तु उसमेंकंकड़ पत्थरभरेदेखकर रोनेलगा सैंध्रयह देखकरबोला कियहबातबुद्धि के विपरीतहै कि चोर धनलेजाय और फिर देदेय इसम्लेच्छने यह निर्बुद्धिता की कि उसको पकड़कर छोड़दिया अच्छाअरे वणिये तू अपनेकिसी विश्वासपात्र मनुष्यकोबुला तो मैं आज्ञा-पत्र उसके नामसे लिखदूँवहजाकर हमारे कोषसे धनलेले वह अपने मुनीमरूपी उपहासको देखकरबोला कि इससे अधिक मेरा कोई विश्वास पात्र मनुष्य नहीं है तब सैन्ध्रने अपने कोषा-ध्यक्षको पत्रलिखा कि स्वस्तिश्री हीरामणिकोषाध्यक्षको आ-शीर्वाद--इसपत्रके देखतेही पत्रके लेजानेवालेको तीनलक्षका धन सुवर्ण और रत्नोंमें देदो इससे किसी प्रकारकाअधिक धन न लेनापूरापूरादेकर इसकेहस्ताक्षरोंसे धनप्राप्ति पत्रलिखालेना शुभम् अमुक तिथौ अमुकमासे श्रीमायाकर्त्ताब्दौ ७५५२०— यह पत्र लिखकर मुनीमको दिया यह देखतेही प्रहास का वर्णपीत होगया कि यहधन योंहींजाताहै परंतु मुनीमबोला कि भाई तुम धन्यहो तुम्हारी कृपासे हमारेस्वामीको इतना धन मि-ला यहसुनकर प्रहासने जो मुनीमको अच्छी प्रकारसे देखा तो पहिंचाना कि उपहासहै बहुत प्रसन्नहुआ और उससे इशारेसे कहा कि इसधनमेंसे एककपर्दिकाभी न जानेपावें मैं सबका हि-साबलूंगा निदान उपहासउसपत्रकोलेकर कोषाध्यक्षकेपासगया वहां देखा कि जिस जिसका धनपावनाहै वे सब खड़ेहुए धनले रहे हैं और दो तीन मुनीम बैठेहुए लाभ और व्ययका लेखालगा रहे हैं उसने उसपत्रको देकर रत्न और सुवर्णलिया और अपने

हस्ताक्षरसे धनप्राप्त पत्रलिखकर वहांसे चलदिया और एक पर्वतकी कंदरामें उसधनको गाड़कर फिरशत्रुसेनाकी ओरआया उधरकोषाध्यक्ष उसधनप्राप्ति पत्रको लेकर सैंध्रके हस्ताक्षरकरानेलाया सैंध्रने हस्ताक्षरकरदिये और उसवणिक्से पूछा कितैंने धनपायावहअपनेमुनीमको खोजनेलगा परंतु उसकाकहींकुछ पतानलगा तबबड़ाकोलाहलमचा दैवयोगसे कुछमनुष्य सेनाके वाहरगयेथे उन्होंने मुनीमको एकगर्त में पड़ाहुआपाया वे उसे उठाकरउस वणिक्के सामनेलाये उसने जल छिड़ककर उसे चैतन्यकिया और पूछा कि तू धनलायाहै वहबोला अच्छा आवेश है फिर उसनेपूछा कि अरे तू आज्ञापत्रलेगयाथा उसनेकहा कि भोजन वहुतकियाहै यहसुनकर लोगोंनेकहा कि इसको अभी आवेश वहुतहै एकनेकहा कि यह अपनेको अव बनाताहै तब वणिक्नेकहा कि इसे लेजाकर कैदकरो और मारपीटकर धन पाना स्वीकार कराओ निदानलोग उसे तो लेकरगये और प्रहासने यहांविचारकिया कि अवअधिक पूछताछहोनेपर सैंध्रमायाकृतचित्र देखैगा और सबहाल खुलजायगा यह सोचकर उसने अंगड़ाईली सैंध्रबोला कि क्याआपका चित्तघवड़ाताहै प्रहासने कहा नहीं महाराज मैं लघुशङ्का करनेको जानेचाहताहूँ वह बोला कि जाइये शौचगृहमें चलेजाइये अरे सेवको आपको शौचगृह बतादो प्रहास उठकर शौचगृहमेंगया और सेवक उसके साथसाथगये वहांजाकर उसने शौचगृहकी कनातको खड्गकी नोकसे फाड़डाला और उसमेंसे निकलकर अपनामार्ग लिया सेनाकेलोगोंने उसे देखकर अनुमान किया कि यहवही म्लेच्छहै जो संदूकलेकर आयाथा अवजाताहै और प्रहास वहांसे चलकर पर्वतकी कंदरामें पहुँचा और वहां उसने अपने शरीरपर भस्म लगाकर लंगोट कसकर घोंटुओंतकका ऊर्ध्व वस्त्रधारण करके गलेमें नील और पीत कांचकी माला पहिरकर हाथमें

लोहे का झुंझुना लियेहुए बैठगया यहां जब अच्छी प्रकार से पूछताछ हुई तब सुन्दरी ने कहा कि चित्र निकालकर तो देखिये कहीं बहुरूपिये तो धन नहीं लेगये हैं यह वार्तालाप होहीरहाथा कि सेवकोंने आकर कहा कि यह मनुष्य जो लघुशंकाको गयाथा शौचगृहकी कनातको चीरकर उसीमार्ग से कहीं को चलदिये यहसुनतेही सैन्ध भौचक्का होगया और समझा कि वहसंदूकका लानेवाला मनुष्य प्रहासथा हाय हाथ से निकलगया फिर चित्र जोदेखा तो विदितहुआ कि पर्वतकी कंदरामें म्लेच्छ साधूबना बैठाहै उधर वणिक्ने विनयकी कि महाराज मेराधनगया और मैं नष्टहोगया सैंधबोला कि मैं क्या करूं मैंतोएकबारदेचुका तेरेमुनीमकेधनपानेकेहस्ताक्षर मौजूद हैं तब उसवणिक्नेफिर मुनीमकोबुलाया अबवहचैतन्यहोगया था वहबोला कि एकमनुष्यमुझको चोरकोबनलानेके बहानेसे लिवालेगया और ऐसाकुछ मेरेमुखपरमारा कि मैं अचेतहोगया मुझे आज्ञापत्रके लिखेजाने और धनलेनेका कुछवृत्तांत नहीं मालूमहै और न ये मेरेहस्ताक्षरहैं यहसुनकर सैंधने आज्ञादी कि इसे छोड़दो यह निरपराधहै और उसवणिक् से कहा कि अब मैं तेरेधनका कुछउपाय नहींकरसक्ताहूं तब वहवणियांरोने लगा उसने आज्ञादी कि इसे निकालदो यहउत्पातीहै लोगों ने उससेकहा कि इससमय महाराजका चित्त क्रोधमेंहै अबचले-जाओ फिर समयपाकर विनयकरना तो मिलजायगा तब उस वणिक्ने सेवकोंसेकहा कि यहां जितनामाल फैलाहुआहै सब उठालेचलो परंतु प्रहास जब म्लेच्छ साधूबनकर वहांबैठारहा और कोईवहांनगया तबउसनेसबपदार्थ थैलीमेंडालदिये और म्लेच्छकारूप धारणकरके फिर शत्रु सेनामेंआया जब उसव-णिक्ने कहा कि असबाबसब उठालो तबप्रहासने बढ़कर एक संदूक रत्नोंका उठालिया और वहवणियां सबअसबाब उठवा

कर आगेचला यहभी साथचला कि औरकुछलूं परंतु सैंध्रको संदूकउठानेके समय कुछशंकाहुई और उसने प्रहासका चित्र निकालकर देखा और उससे उसको विदितहुआ कि प्रहास वणिककेसाथहै वहकुछ दूरहीगयाथा कि सैंध्र नंगेपांव दौड़ा और सभाके द्वारपरआकर हाथमें नारिकेल अस्त्रलेकर माया करनेलगा वहां उपहास भी धनको गाड़कर आगयाथा उसने देखा कि गुरूजी वणिककेसाथहैं और सैंध्र मायाकृत अस्त्रका प्रयोगकरना चाहताहै यहदेखकर उसने गोफिनमें पाषाणरख-करमारा कि सैंध्रके हाथपर आकरपड़ा उससे वह अस्त्र चूर्ण होगया और सैन्ध्रकेहाथमें बहुत चोटआई और उपहास यह कहकर भागा कि गुरूजीचौकसहोजाइये उसकोसुनकर प्रहास मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर अदृश्य होगया और सैंध्र पकड़ियो पकड़ियो कहताहुआ रहगया म्लेच्छ चारोंओरको दौड़तेफिरे परंतु किसीको नपाया तब सैंध्र सभामेंगया और अपनी स्त्री कोहाथ दिखाकर बोला कि अबमैं प्रहासको बिनामारे नछोड़ूंगा उसने मुझे बहुत लज्जित कियाहै वह यह कहही रहाथा कि इतनेमें उस वणिकने सभाके द्वारपर आकर दुहाईदी कि मेरे अनमोलरत्नोंका सन्दूकभी लेगयाहायमैं नष्टहुआ जीतेजीमर-गया मेरीसहायता कीजिये सैंध्रने सन्दूकको लेजातेहुए अपनी आंखसे देखाथा इसकारणसे वह सभासदोंसे बोला कि सत्यतौ यहहै कि वणियां लुटगया अच्छा तुम जाकर उससे कहदो कि तू धीर्यकर तेरा जितना धनगयाहै सब मिलजायगा अभी जो दियाजायगा तो बहुरूपिये फिर लेलेंगे यहसुनकर उन सबने आकर उस वणिकको धीर्यदिया और सैंध्रने चाहा कि युद्धके वाद्य बजनेकी आज्ञादूं परंतु अब प्रहासका वृत्तांत सुनिये कि वह मरुतदत्त वस्त्र ओढ़ेहुए वनमेंगया और वहांजाकर उसने अपना स्वरूप तेजोमय बनाया अर्थात् चारहाथ भुड़भुड़के

बनेहुए लगाये और तीनआंखें लगाईं और मुखको परमसुंदर बनाया और उसपर ऐसा तैललगादिया कि वह चन्द्रमाकी समान प्रकाश करनेलगा और देवदत्तवस्त्र धारणकिये जिनका वर्ण क्षणक्षणमें बदलताथा कभीपीत कभीहरित कभीरक्त और कभी दूसरे वर्णका होजाताथा और शिरपरथैलीसे निकालकर कीटबांधा जिसमें नानाप्रकारके रत्न जड़ेथे और बीचमें एक मुक्ता अनमोल लगाथा और गलेमें मुक्ता और रत्नोंकी माला धारणकी उससमय उसका तेजस्वी स्वरूप बड़ा अद्भुत और शोभायमान दीखताथा॥

चौ०। प्रभायुक्त आनन अतिछाजै। इन्दुप्रभा लखिजाकी लाजै॥
तापर वरकिरीटकी शोभा। उपजावत सबके मन क्षोभा॥
देवदत्त वरवसन सुहाये। चित्रवर्ण कर अमल बनाये॥
तिनकीशोभा कहीनजाई। छिनछिन प्रतिनववरणलखाई॥
तिनकोधारि प्रहास अमाना। भयो शचीपतिदूत समाना॥

निदान प्रहास उक्तप्रकारसे बनकर अपने अंगोंमें अनेक प्रकारके सुगंधित पदार्थ लगाकर जीवक विमानपर बैठा और वहांसे चलदिया जब सैन्धककी सभाके समीप पहुंचा तब उसने एक सुगंधयंत्र छोड़ा वहयंत्र वायुके स्पर्शसेफटा और उसमेंसे सुगंध निकलकर चारोंओर फैलगई और उससे वहसभा बस गई सब म्लेच्छ उसको सूंघकर बोले कि आहा क्या उत्तम सुगंधआई है इतने में वाणीहुई कि मैं मायाकर्ताका दूतहूं यह सुनतेही सब सभासद खड़ेहोकर ऊपरको देखनेलगे आहाक्या सुंदर स्वरूप है क्यातेज है क्या सुगंधहै कि जिसको देखतेही मनुष्य पूजा करनेलगे मुखारविन्दकी कांति ऐसीथी कि उसकी चमकके आगे चन्द्रमाकी भी चमक मन्द पड़जाती थी और स्वरूप ऐसा सुंदरथा कि उसको देखकर कामदेवभी लज्जित होताथा सुगंध सब शरीरसे ऐसी उठतीथी कि उसके प्राणमात्र

से सबम्लेच्छ प्रसन्न होजातेथे कपोलोंपरसे रश्मि ऐसीछुटीहुई
थीं कि दृष्टिनहीं ठहरतीथी ऐसे प्रकाशमान सुंदर शोभायमान
स्वरूपको देखकर सैंध्रने हाथजोड़कर विनयकी कि मेरे भाग्य
धन्यहैं जो आज मुझको ऐसे अद्भुत दर्शनमिले आइये और
मेरेस्थानको पवित्र कीजिये यहसुनकर वह विमान नीचेउतरा
सब म्लेच्छोंने उसको दंडवत्की और वह बोला कि मुझको
मायाकर्ताकी यह आज्ञाहै कि मैं उसके पोते और उसकीस्त्रीकी
आयु बढ़ादूं क्योंकि प्रहास असह्य आपत्तिरूपहै जब तुम्हारी
मृत्युही नहोगी तब वह आकर तुम सबका बध न करसकैगा
इससे तुम शर्करा डालकर मिष्टजल बनाओ मैं उसमें माया-
कर्ता की दी हुई भस्मको डालकर तुम सबको पिला दूं फिर
प्रहासका तुमपर छलबल न चलैगा यह सुनकर सैंध्रने उत्तम
शर्करा मँगवाकर कोरी ठिलियों में बहुतसा शरबत बनवाया
और उनमें अनेक प्रकारके सुगन्धित जलभी छोड़ दिये गये
और उधर म्लेच्छ मिष्टान्न पक्वान्न और फूलमालालेलेकर उस
देवदूतके दर्शनोंको आनेलगे और मिष्टान्न आदि चढ़ानेलगे
बड़ी भीड़ लगगई और उस विमानपर सहस्रोंरुपये चढ़गये
इतने में वहमिष्टजल बनकर तय्यारहोगया तबप्रहासरूपी देव-
दूतने उठकर प्रथम उसको मायाकर्त्ताके अर्पणकिया और फिर
उसमें मूर्च्छाकर चूर्ण मिलाया और कहा कि यह मायाकर्त्ता की
दीहुई भस्महै और फिर उसमें से दो पात्रभरकर अपने हाथ से
सैन्ध्र और सुमुखी को पिलाये और आज्ञादी कि एक एकपात्र
सब पानकरें फिर तो एकपर दूसरा टूटपड़ा और लाओ लाओ
और हमैंभीहमैंभी का शब्दपूरिगया निदान लोगोंने उनठिलियों
कोधोधोकर वह मिष्टजल पानकिया और जबउसचूर्णने अपना
गुण प्रकटकिया तब मदोन्मत्त होकर सैंध्रने अपनी स्त्रीसुमुखी
से कहा कि तू देवदूतके सन्मुख नृत्यकर वह अपना वस्त्रफेंक

करनाचनेलगी और सैंध्रभी उसके सामने उछलने कूदनेलगा और देखनेवाले आहा आहा धन्य है धन्य है पुकारनेलगे और फिर उन्मत्तताके शब्द बकनेलगे उससमय उससभाकी अपूर्बदशाथी॥

चौ०। भांतिभांतिकेपद कोउ बांचै। थेई थेई करि कोउ नाचै॥
आहा हा करि कोऊ गावै। कोऊ बहु दुर्बचन सुनावै॥
गावत गावत रोवत कोऊ। हँसत हेहड़ा करि करि कोऊ॥
कोऊ पुलत स्वर उच्चारै। कोऊ बैठो मनकूं मारै॥
कोऊ बैठो शीश हिलावै। पद वियोग के कोऊ गावै॥
पनहीं धरत शीश पर कोऊ। टोपी पहिरत पग में कोऊ॥
हुइअचेत सोयोकोऊ औंधा। पञ्चोचित्त कोऊ मल सौंधा॥
एक एकके प्रति उठि धावै। कहि कछु करसों धौललगावै॥

निदान थोड़ीदेरमें सबअचेतहोगये उससमय प्रहासनेउठकर सभाके सबपरदेडालदिये और सबकेबस्त्र उतारकर थैली में रखलिये और सब स्त्री और पुरुषोंकेशिर और भौंहकेबाल और डाढ़ी और मूछ मूड़डालीं और सबकेमुखोंको कालाकरके जूतियोंकेहार सबकेगलेमें डालदिये और सभामें जोकुछ था सबको जालमारकर थैलीमें रखलिया फिर चाहा कि सैन्ध्रके गलेसे अपनेचित्र उतारलूं और जैसेही गलेमेंहाथडाला तैसेही पृथ्वी से एकहस्तनिकला और प्रहासको उसने पकड़नाचाहा परन्तु प्रहासने चित्र छोड़दिया और वह हस्त अदृश्यहोगया तब उसने फिर चित्र उतारनाचाहा परन्तु फिर वैसाही हुआ तब प्रहासने चाहा कि सैन्ध्रको मारडालों और खड्गलेकर चला परन्तु उसी समय पृथ्वीसे एकपुतलानिकला प्रहास उस को देखकर भयभीतहुआ और वह पुतला चिल्ला चिल्लाकर कहनेलगा कि चलो प्रहास सैन्ध्रको मारेडालताहै यह सुनकर प्रहासने शीघ्र शीघ्र दोचार म्लेच्छों के शिर काटडाले परन्तु सैन्ध्रतक न पहुंचा उन म्लेच्छोंके मरनेसे बड़ा कोलाहलहुआ

और उसकोसुनकर सेनाके म्लेच्छ घबराकर दौड़े प्रहास जी-
वक विमानको तो थैली में पहिलेहीरखचुकाथा यह कहताहुआ
भागा कि ॥
चौ०। हौं प्रहास सब विधि छल रूला। करत म्लेच्छगणको निर्मूला ॥
निदान वह तो कनात फलांगकर भागगया और म्लेच्छ
यह अनुमानकरके कि सैन्धआदि मारेगये सभामेंआये उन्होंने
सबको अचेतपाकर मायाकृतजलबर्षाया कि उससे सब चैतन्य
हुए और एक दूसरे के स्वरूपको देख देखकर हँसनेलगे उस-
समय सुमुखी अपनेपति सैन्धका कालामुख देखकर हँसनेल-
गी उससे सैन्धनेकहा कि तू बड़ीनिर्लज्ज है जो पुरुषोंमें नग्न
बैठी है यह सुनकर उसने अपने शरीरकोदेखा और अपनेको
नंगा पाकर भागी निदान सबने स्नानकरके कालौंछ छुड़ाई
और नवीनवस्त्र धारण करकरके फिर सभा में आकर बैठे उस
समय सैन्धबोला कि यह प्रहास परम कठिन आपत्तिहै भी
तो वणिकको लूटाथा अबआकर मेरामानभंगाकिया क्याउपाय
करूं जो मेरेहाथआवे यह सुनकर सुमुखी बोली कि जोअपना
भला चाहतेहो तो प्रहाससे मिलजाओ वह क्रोधकरके बोला
कि मैं मायाकर्त्ताका पौत्रहूं अभी उसको पकड़ताहूं यहकहकर
उसने चित्रदेखा प्रहास यहांसे जाकर अपना स्वरूप एकम्ले-
च्छकासा बनाकर बनमें ठहराहुआथा उस चित्रमें उसकोवही
स्वरूप दिखाई दिया उसकोदेखकर उसने जानेकाबिचारकिया
कि इतनेमें उसकेएकसेवक क्रूरनामीने आकरकहा कि आपबैं
मैं जाकर अभी उसदुष्टको पकड़ेलाताहूं यहकहकर वहउड़कर
चला और उसीस्थानपर पहुंचा जहां प्रहास म्लेच्छभेष धारण
कियेहुए खड़ाथा परंतु प्रहास उसम्लेच्छको उड़तेहुएआतेदेख-
कर छिपगया और वह वहांउतरकर प्रहामकोफिरफिरकर ढूँढ़ने
लगा उससमय प्रहासने अपना स्वरूपएक दूसरे म्लेच्छकासा

बनाया और उसकेपास आया उसनेपूछा कि क्यों भाई तुमने प्रहासको तो नहीं देखाहै वह बोला कि तुमको उससे क्या प्रयोजनहै तब उसने सब वृत्तांत सैन्धके मानभंगहोनेका कहा और बोला कि मैं उसे पकड़ने आयाहूँ वह बोला कि सैंध्र निर्बुद्धि है जो प्रहाससे मनुष्यसे युद्ध करनेका उत्साह करताहै मनुष्य को अपने बराबरवाले से यद्धकरना उचितहै प्रहास वह मनुष्य है अद्भुत परमेश्वरकीभीडाढ़ी मूड़डालताहै और जबसेयहांआया है उसने मायाकृत देशाधिप की नाकमें श्वासकररक्खी है तुम देखना कि सैंध्र एकदिन कुत्तेकीभांति माराजायगा इन बातोंको सुनकर क्रूरपहिले तो भयभीतहुआ उपरान्त सोचा कि तुझको डराताहै कदाचित् यही प्रहास न हो यह सोचकर उसने कुछ मायाकी कि प्रहासका स्वरूप जैसाका तैसाहोगया तब उसने प्रहासको पकड़लिया और बोला कि क्यों बे दुष्ट तू मुझकोधमकाताथा देखतो मैं तुझको किसप्रकारसे बधकरताहूँ यहकहकर वह प्रहासको खींचताहुआ लेचला और चाहा कि उड़कर लेचलूं परन्तु उसकी मृत्यु निकटआगईथी इससे उसने सोचा कि प्रहासको जो और बहुरूपिये छुड़ानेआवें उनकोभी पकड़ता लेचलूं जो उड़करजाऊंगातो यहलाभनहोगा ऐसाकुछसोचकर पैदरचला उसकोजातेहुएचपलानेदेखा और आगेबढ़कर उसने पाश पृथ्वी में फैलादी और उसका सिरा थामकर आप झाडीमें जाबैठा जबवह पाशकेस्थानपर पहुँचा चपलाने पाशको झटका देकर खींचलिया और वहम्लेच्छ उसमें उलझकरगिरपड़ा तब चपला दौड़कर उसे मारनेआया परन्तु उस म्लेच्छने ऐसीमायाकी कि चपला कमरतक पृथ्वीमें गड़गया और आप मायाबलसे पाशके कुण्डलोंको काटनेलगा परन्तु उसकी आयु पूर्ण होचुकी और वह मृत्युरूपी पाशमें बँधचुका था इस कारणसे अभी वह पाशके कुण्डलोंको काट न चुकाथा कि उपहास बहु-

रूपिया म्लेच्छरूप धारण कियेहुए उधर आनिकला और उस वृत्तांतकोदेखकरदौड़ताहुआउसम्लेच्छके पासआयाऔरबोला कि भाईसुनो मुझेकुछकहनाहै और समीपआकर ऐसाखड्गमारा कि उसके शिरकेटुकड़े२उड़गये और उसके रनेका कोलाहल प्रकटहुआ और प्रहास और चपला छूटगये इसके अनन्तर उपहासने प्रहाससे कहा कि गुरूजी आपका धन स्थापितहै चलकर लेलीजिये और जहां वह धनगाड़ाथा वहां लिवागया और खोदकर प्रहासको देदिया उसने थैलीमें रखलिया और उपहासकी प्रशंसाकरके उसेकुछ झूँठेरत्न पारितोषिककी भांति देनेलगा वह बोला कि गुरूजी मेरेपास आपका दियाहुआसब कुछहै मैं केवल आपकी कृपाचाहताहूँ यह सुनकर प्रहासनेउन कोभी थैली में रखलिये और तीनोंपृथक्२होकर फिर कुछप्रपंच रचना करनेको चलदिये उधर महेन्द्रने जब सैंध्रको गयेहुएबिलम्बहुई तब अद्भुतजालकी पुस्तकदेखकर सब हालजाना और विचित्रमायासे कहा कि मायाकर्त्ताके पौत्र केवल पूजाहीकेयोग्य हैं उनसे और कुछ नहीं होसकता है देखो बहुरूपियों ने उन को कैसा दुखदिया है इससेचलो उनके चित्तको स्वस्थकरें यह कहकर वहांसे बड़ी धूमधामसे चलकरआया और सैंध्रकीसभा में पहुँचा सबने उठकर उसका सन्मानकिया और वह सिंहासन पर बैठगया और बहुरूपियों के छलका सब वृत्तान्त सुनकर बोला कि आप अबयुद्ध न कीजिये मैं विचित्रमायाको भेजकर मायाकर्त्ताकी अंगूठीमँगाताहूँ फिर मैं रत्नकूपका मेलाकरूंगा वह सब संसारके मायावी म्लेच्छोंके पूजाकास्थानहै इससे वहांसब म्लेच्छ और बहुरूपिये अपने आपआवेंगे उससमय मैं उनका बधकरूंगा यहसुनकर सैन्ध्रबोला कि मुझको एकबार मनभरके युद्धकरलेने दीजिये फिर जो आपकी इच्छाहो सोकीजियेगा यह वार्त्ताहोहीरहीथी कि रोनेका शब्द सुनाईपड़ा और सेवकोंनेआ-

कर बिनयपूर्बक निवेदनकिया कि क्रूरमारागया और उसकापुत्र उसकी लोथउठाकर लाताहै महेन्द्रनेकहा कि अच्छाउससे कह दो कि विधिपूर्बकउसकेशरीरका संस्कारकरै और फिर यहांआवै लोगोंने जाकर आज्ञासुनादी उसने वैसाहीकिया और अपने पिताके शरीरका संस्कार विधिसेकरके सभामेंआया और अपने पिताके स्थानपर बैठकर बिनय पूर्बकबोला कि मैं इन धर्मवि-मुखोंसे अपने पिताकाबदला लेनेआया हूँ महेन्द्र ने कहा कि अच्छा क्योंकि उधर तो सैन्धकी इच्छायुद्ध करनेकीथी इधर इ-सनेकहा इससे महेन्द्रने आज्ञादी कि आज सायङ्कालको युद्धके वाद्य बजायेजावें यहकहकर मद्यपानकरनेलगा और जिससमय सूर्य अस्तहुआ और आकाशरूपी नीलबर्ण सभामें चन्द्रमा रूपी राजा तारागणरूपी योद्धाओं सहितबैठकर युद्धकी सलाह करने लगा॥

दो०। अथवतही दिननाथके निशिपति निकसि अकाश।
तारागण सहआइकैं कीन्हो विमल प्रकाश॥

उससमय सैन्धकी आज्ञासे युद्धके वाद्यबजायेगये और मा-याकृत पक्षियोंने आकर रानी आनन्दासे बिनयपूर्बक कहा॥

चौ०। श्रीपति श्रीयुत श्रीमहरानी। छत्रचन्द्रिका पति गुणखानी॥
तवरणविक्रम तेजप्रतापू। उपजावत अरिके हिय दापू॥

हे श्रीमहारानी आजशत्रुसेनामें विक्रूरने युद्धके वाद्यबजवाये हैं यह सुनकर रानी आनन्दाने आज्ञादी कि हमारी सेनामें भी युद्धकेवाद्य बजायेजावें यह आज्ञाहोतेही वैष्णवी सेनामेंभी भेरी दुन्दुभी आदि नानाप्रकारके वाद्यबजनेलगे और उनकोसुनकर सबशूरबीर युद्धकी तय्यारीकरनेलगे जो जो उनमें मायाविदथे वे अपनेमायाके प्रयोगोंको सिद्धकरतेथे अग्निमें रक्तकी आहुति देकर म्लेच्छी मायाको सिद्धकरतेथे और नानाप्रकारके म्लेच्छ विद्याके पाठकरतेथे और यहम्लेच्छ भाषाकामंत्र पढ़कर जप

करतेथे ॥ मंत्र॥ (वुआइतोवलीसआइतोकलीजिवहन्तेमलीकु-शकुशदुशन्) निदान दोनोंओर जो जो मायाकृत युद्ध करने वालेथे वे मायाकृत प्रहारोंकोतयारकरतेथे और जोमानुषीअस्त्रों से युद्ध करनेवालेथे गदा खड्ग मुशल पट्टिश भल्ल शर चापआदि आयुधोंको निकालते और देखतेथे और खड्ग और बाणोंको शिलापर पैनातेथे ॥

चौ० । वीरसधरि वरिरसछाके । गहि गहि प्रबल अस्त्र रणबांके ॥
बोलत रिसभरि निर्भयबैना । येमम मस्त्रसकल अरिजैना ॥
काल्हि शत्रुबधिहों जय लेहों । आनन्दा को आनँद देहों ॥
एकएक सों इमि ते भाषत । हृदगत समर भीत भे नाषत ॥

इतनेमें वहरात्रि ब्यतीतहुई और प्राची दिशारूपी गर्भवती स्त्रीके सूर्यरूपी पुत्रके उत्पन्नहोनेकी बेला जानकर प्रभातरूपी दाई दौड़ीहुई आई और आकाशरूपी भवनमें स्थितहुई ॥

चौ० । प्रात होत रबि कढ़े अकाशा । छायोचहुँदिशिबिमलप्रकाशा ॥
चले कुमोदिनिके हृदहूले । बरसरवरनि कमलशुचि फूले ॥

प्रातःकाल होतेही रानी आनन्दा अपनेशयन मन्दिरसे उठ कर बाहिरआई और मायाकृत विमानपर उत्तमोत्तमवस्त्र और आभूषणोंको धारणकरके सवारहुई उससमय दुन्दुभी भेरी मृ-दङ्ग तूर्य और शङ्खआदि नानाप्रकारके वाद्यबजनेलगे सबशूर-वीर और योद्धा नानाप्रकारके अस्त्र लियेहुए रणकेलिये तयार हुए और अनेकप्रकारके मायाकृत बाहनोंपर सवारहोकर महा-रानी आनन्दाके समीप आकर स्थितहुए उससमय रानी आ-नन्दा मायाबलसे बसंत ऋतुको प्रकटकरतीहुई सब सेनासेआ-वृत वहांसे रणभूमिकी ओरचली आहा क्याबर्णन उससमयकी शोभाका कियाजाय वहप्रातःकालका समय तारागणोंका झि-लमिलाना शीतल मंद सुगंधवायुका बहना पक्षियोंका नानाप्र-कारकी प्रातसमयकी बोलीबोलना वायुके स्पर्शसे नानाप्रकार

के फूलोंकी कलियोंका खिलना और उनसे सुगंधका उमड़ना नदीके प्रवाहके मनोहर शब्दकाहोना और उससमयमें रानी आनन्दाका मायाबलसे वसंतऋतुका प्रकटकरना ऐसी शोभा और आनन्द दिखाताथा कि मौनरहनेकेसिवाय कुछ वर्णन नहीं होसकताहै उसआनन्दकालमें श्रीमहारानी आनन्दा मायाकृत विमानपर धानीवस्त्र और रत्नजटित आभूषणोंसे अलंकृत ऐसी शोभायमान दीखतीथी कि उनकी उपमा नहीं कही जासकती है ज्यों ज्यों आगेबढ़ती जातीथी त्यों त्यों नानाप्रकारके फूलोंकेबाग उसकेसामने प्रकटहोते जातेथे और नानावर्णके मायाकृतबादल शिरपरछाया करतेजातेथे सब योद्धा नानावाहनोंपर सवारसाथ में आकाशमार्गथे सहस्रोंदासियां अप्सराओंसे अधिकस्वरूपवान् मयूरआदि नानाप्रकारके मायाकृत पक्षियोंपर सवार साथमें हास्य विनोद करती चलीजातीथीं धन्य धन्यहै उस ईश्वर चिदानन्दको जिसने अपने प्रभावसे ऐसी ऐसी मायारची जिससे क्षणमात्रमें वहशोभा प्रकटहोगई कि मनुष्य तो क्या देवताभी जिसको देखकर मोहित होजावं ॥

क० । नवपल्लव फूलि रसालरहे अरुफूल अनेकन कौन गनै ।
पिक कोकिलआदिक कूंजरहीं तहँगुंजत डोलतभृङ्गघने ॥
बरगन्धभरी सुबयारिचले जल धार उपावत मोदमनै ।
जसआनँदचहुँधां छाइरह्यो कुंजलालन बरणत तौन बनै ॥

दो० । आनन्दा माया तहां रूपराशि छबि धाम ।
तेहि शोभामें लसतही रतिरूपी बरबाम ॥

चौ० । मुक्ता गुहे सु कुंचित केशा । घन बिच दामिनि मांगसुभेशा ॥
आनन परम मनोहरराजे । जनु अद्भुत छविसींवां छाजे ॥
नखशिखलों सो सुंदरवामा । बनी परम शोभा की धामा ॥
भूषण बसन सहितसो सोहै । सुरनर मुनिसबके मन मोहै ॥

निदान वहसुंदरी उक्तप्रकारसे सब सेनासहित रणभूमिमें गई और इधर महेन्द्र अपनी भार्यासहित निष्प्रभ भवनके उस

कोठेपर जाबैठा जहांसे रानी निशाकरीकी सेना दिखाई पड़ती
थी और सैंध्र और विक्रूर दोनों मायाकृत सिंह और सर्प्प पर
सवारहोकर असंख्य सेनालियेहुए रणभूमिमें गये और युद्धके
लिये दोनोंसेना उपस्थितहुईं और जब युद्धकी भूमिको सेवक
निष्कंटक करचुके और मायाबलसे जल वर्षाकर गगनधूलको
शांतकिया तब कवीश्वरोंने निकलकर रणकाउत्साह करनेवाले
बीररसके पदपढ़े उनको सुनकर सब शूरवीर गर्जनेलगे और
विक्रूर अपने सर्प्पपर सवार रणभूमिमें निकलकर आया और
ललकारकर युद्धकेलिये बुलानेलगा तब बैष्णवी सेनासे रानी
आनन्दा का एक सेनापति शूरनामी उससे युद्ध करने को
गया उसने नारिकेल अस्त्र का प्रयोग किया शूरने अनेक
प्रकारसे उसेरोका परन्तु वह नरुका और उसके हृदयको फोड़
कर पारहोगया तब रानी आनन्दाने मायाकृत हस्त भेजकर
उसको बुलवालिया और जम्भनामी योद्धाकोउससे युद्धकरने
भेजा विक्रूरने उसपरभी नारिकेल अस्त्रका प्रयोग किया और
वह उससे मारागया उसके मरनेका कोलाहलहुआ निदानइसी
प्रकारसे रानीआनन्दाके चालीस शूरवीर मारेगये तब बिक्रूर
बोला कि हे आनन्दा तू आपआकर क्यों मुझसे युद्धनहींकरती
है इनक्षुद्रपुरुषोंकोक्याभेजकर अपनेप्राणबचातीहै यहसुनतेही
रानी आनन्दा बिमानपरसे गाती बांधकर कूदी उससमय की
उसकी छबिदेखकर महेन्द्र बिकलहोगया परन्तु बिचित्रमायाके
समीप बैठेहोने से अपनी विकलताको प्रकट न करसका और
वह बिमानसे कूदकर बिक्रूरके सन्मुखहुईउसने उसपरभीनारि-
केल अस्त्रका प्रयोगकिया आनन्दा ने उसे अपनी अनामिका
दिखाकर गिरादिया और सम्पुटास्त्रका प्रयोगकिया वह सम्पुट
बिक्रूरकेपास जाकरफटा और उसमेंसे ऐसीउत्तम गन्धनिकली
कि वहसब रणभूमि उससे सुगंधित होगई उसकी सूंघकर सब

शत्रुसेना मोहितहोगई और विक्रूर विक्षिप्तसा होकर तालियां बजाताथा और उसके चन्द्राननको देखदेखकर हँसताथा और कहताथा कि हेप्राणप्यारी जो तुझको मेराबध करना रुचताहै तो यह मेराशिर तेरेचरणों में रक्खाहै जोइच्छाहो सोकर॥

बरवा। हेवर कामिनि सुन्दर लोचनचारु। प्राणनि अधिक पियारी अति सुकुमारु॥ अबमम तनमन धनहै तेरेहाथ। बेगिप्राण हरि मेरे नावहु माथ॥

उससमय आनन्दाने चाहा कि उसका शिर काटलूं परंतु जैसेही यहइच्छाकी सैंध्रपर न रहागया और वहदौड़कर आनन्दाके सन्मुखआया और कुछमायाकी कि उससे एक पुतली प्रकटहुई क्षणमात्रमें वहपुतली रानी आनन्दाके सदृश होगई वही स्वरूप वही बस्त्र और आभूषण धारणकर आनन्दाके समीप आई और बोली कि क्यों भैना आनन्दा क्यातू हमसे अप्रसन्न है उसको देखकर आनन्दा पीलीपड़गई परंतु उसने दृढ़ताकरके मायाकरके कुछ फूल उसमायाकृत पुतलीपर फेंके उनको आतेहुए देखकर वहपुतली हँसी हँसनेसे उसके मुखसे अग्निकीज्वाला निकली और उससे वहफूलभस्म होगये और वहपुतली आगेबढ़ी और हाथमें दर्पणलेकर आनन्दाको दिखाया वह देखतेही थरथर कांपनेलगी और फिर अचेतहोकर गिरपड़ी तब वहपुतली उसेउठाकर उड़ी उससमय रानी रक्तकेशी आदिने अनेक मायाकृत अस्त्रोंका प्रयोग उस मायाकृत पुतलीपर किया परंतु उसने हँसहँसकर सबको अपने मुखकी अग्निसे व्यर्थ करदिया इसके पीछे जब सैंध्रने देखा कि सब वैष्णवीसेना उमड़तीहुई युद्धको चलीआतीहै तब उसने सबके चित्रोंको निकालकर पृथ्वीपर डालदिया कि वेचित्र जिसजिस केथे उसीउसीके स्वरूपके सदृश मनुष्य होकर युद्ध करनेलगे अर्थात् वे चित्र रंतिकाल और संडीनचपला और मयूर और

चान्द्रीमाया और मायावती आदिकारूप धारणकरके युद्धकरने लगे अबजो माया मायावती करतीथी वहीउसकी प्रतिरूपाभी करतीथी इससे आनन्दाकी सेनाके मनुष्य काम आनेलगे तब सैंध्रने रानी आनन्दाको कैदकिया और विक्रूरको चैतन्यकरके आप त्रिशूललेकर वैष्णवी सेनामेंघुसा उससमय वैष्णवीसेना पर बड़ी विपत्तिथी चारोंओर त्राहित्राहि पड़ीथी परंतु कोई रक्षक न था लोथपर लोथ गिरतीजातीथी और सैंध्र बधकरता हुआ सेनाके एकछोरसे दूसरे छोरतक चलाजाताथा और फिर वहांसे जो घुसता तो दूसरीओरको बध करताहुआ निकलता था इसपरभी वैष्णवीसेनाके शूरवीरों ने मरना अंगीकार किया परंतु युद्धसे मुख न मोड़ा उससमय सैंध्रपर सहस्रों मायाकृत अस्त्रफेंकेजाते थे परन्तु वह तो मायाकर्त्ताका पोताथा इससेसब ब्यर्थ होजाते थे इसकेपीछे सैंध्रने उन चित्ररूपी प्रतिरूपों को आज्ञादी कि अपने २ स्वरूपके योद्धाओंको पकड़लाओ यह सुनकर वे प्रतिरूप मायाकृत चमत्कार दिखाने लगे अब एक अद्भुत चरित्रयहथा कि जैसा अट्टहास रन्तिकालकरताथा वैसा ही उसका प्रतिरूपभी करताथा अर्थात् जोजो बातें वैष्णवीसेना के योद्धाकरते थे वही वही उनके प्रतिरूपभी करतेथे प्रतिरूपों पर वैष्णवी सेनाके योद्धाओंकी कीहुई मायाब्यर्थ होजातीथीप्रतिरूपोंकी कीहुई माया वैष्णवी सेनाके योद्धाओंको ब्यथितकरतीथी क्योंकि ये तो मनुष्यथे इनपरमाया असर करतीथीऔर वे मायाकृत रूपथे उनपर माया नहीं चलतीथी इस प्रकार से वैष्णवी सेना बहुतभारी बिपत्ति में पड़गई और बिक्रूरने उस समयमें सबका बध करना आरम्भ किया उससमय ऐसा युद्ध प्राणोंका नाशकारक हुआ कि ऐसाकभी पहिले न हुआहोगा ॥

जय०छं०। महा बिक्रमी अरुबरधीर। सैन वैष्णवी के सबबीर॥
लहिसोमहाबिपतिकोजाल। कीन्होंतहँविचारतेहिकाल॥

यहि अवसर रणभूमि विहाय। प्राणबचावहुचलहुपलाय ॥
पर संगर तजि करिबो गौन। जान्यो अहै नर्कको भौन ॥
अस जियजानि बिक्रमी बीर। रहे तहांथिरहुइ रण धीर ॥
दिवअवलोकनको पणधारि। लगेल्डनतहँअरिगणटारि ॥

उस सेनाकी इस व्यवस्थाको वैष्णवी सेना के बहुरूपियों ने पहाड़परसे देखकर चित्तमें बड़ा दुःखमाना और प्रहासनेकहा कि हमारी सेनाकी अब अजय होना चाहती है बिना राजा के इतनीदेर युद्धकरनाभी बड़ाकामहै अबतुममें से ऐसा कोई है जो जाकर इस युद्धको रोके और शत्रुसेनाको भगादे यह सुन कर और बहुरूपियोंने अपना शिर झुकालिया और प्रहासकी बातका कुछ उत्तर न दिया और उपहास बोला कि गुरूकी बात तो गुरूके सिवाय कौन जानसकताहै परन्तु जो आज्ञाहोय तो मैं जाऊं यह सुनकर प्रहासने उसकी पीठपर हाथफेरा औरकहा कि निस्संदेह तू बरदान पायेहुएहै तू जाकर कार्य्य करसकताहै परन्तु तू मेरा परमप्रियहै और मेरा प्राणदाताहै जब मैं पकड़ा जाताहूँ तब तुही मुझको छुड़ाताहै इससे जो इस कठिन युद्ध में तेरा वध होगया तो मैं बलहीन होजाऊंगा इससे मैंही जाता हूँ यह कहकर उसने अपना स्वरूप एक म्लेच्छकासा बनाया और चपलासे बोला कि तू हमारी सेनाके किसी मायावी सेनापति को शीघ्र बुलाला वह दौड़ाहुआ गया दैवयोग से रानी रक्तकेशी युद्ध करती हुई इधर को निकल आई थी उससे चपलाने कहा कि तुम को प्रहास जी बुलाते हैं तब उसने परीक्षा की कि यह चपला है अथवा चपला के भेषमें कोई शत्रु है और परीक्षा ठीक होनेपर अपने मयूर का उड़ा कर पर्वतपर प्रहासके पास पहुँची प्रहास ने उससे कहा कि तुम मायाकृत एक विमान बनाओ और मेरेसाथरहो जिससे जहां मैं चाहूं तहां वह विमानचलै यहसुनतेही रक्तकेशीने मा-

यासे विमान बनाया प्रहासउसपर बैठगया और चार मायाकृत अप्सरा उस विमानको उठाकर लेचलीं और रानी रक्तकेशी उसकेसाथहुई उससमय वह ऐसा दीखताथा मानों दांतनिकाले हुए काल विमानपर बैठा हुआहै ॥

जय०छं० । कृष्णबरणअतिरूप कराल । चख अतिभीषणदीरघलाल ।
दीरघ दशन कराल कुरूप । दोऊ श्रवण मनौ दुइ सूप ॥
पुष्ट विशाल दोऊ भुज दंड । कालदंडसम अतिशय चंड ।
महा भयंकर दीरघ काय । जेहि देखै सो जाय डराय ॥

निदान उक्तप्रकारका रूप धारणकरके वह विमानपर बैठा हुआ शत्रुसेनामें पहुंचा और पुकारकर बोला कि मैं कालानल हूं अरे सैन्ध्र तू अपनीसबपुतलियोंको इकट्ठाकरके मेरेसन्मुख भेज मैं महानुभाव प्रहासका सेवकहूं सैन्ध्र तो चारोंओर फिरताहुआ युद्ध कररहाथा उसने शब्दको सुनकर अपनी पुतलियों के समीपआया और बोला कि इसको शीघ्र जाकर पकड़ो यह आज्ञा पातेही सब पुतलियां जो वैष्णवी सेनाके योद्धाओं कासा स्वरूप रखतीथीं प्रहासके ऊपरचलीं उससमय प्रहासने अपनीथैलीमेंसे मायाकृतजलका पात्रनिकाला पाठकोंकोस्मरण होगा कि पहिले यहकथा बर्णनहोचुकीहै कि महेन्द्रने कीर्तल नाम म्लेच्छको दोपात्र मायाकृत जलके दियेथे और प्रहासने उसम्लेच्छका बधकरके दोनोंपात्र लेलियेथे और उन्हींपात्रोंके जलका छींटा प्रहासने निद्रावतीके संडीन चपलाके स्थानपर माराथा वहजल बड़े २ मायावियोंको मूर्च्छित करनेवाला और मायाको नष्ट करनेवालाथा निदान जब वे पुतलियां प्रहास के समीप आईं प्रहासने उसीजलका छींटामारा कि अकस्मात् अग्नि प्रकटहुई और उसमें वेसब भस्महोगईं यहदेखकर विक्रूर और सैन्ध्र दोनों प्रहासके ऊपर सेनासहित झुके उससमय वैष्णवी सेनाके योद्धाओंनेदेखा कि एकम्लेच्छ हमारापक्षलेकर

युद्धकरताहै और उसपर सब सेना झुकाचाहतीहै यहदेखतेही सब योद्धा उसके चारोंओर आखड़ेहुए कि कोई पीछे आगेसे आकर धोकेमें उसपर प्रहार नकरसके और पुतलियां जो बची थीं वह दर्पणलेकर प्रहासको दिखानेलगीं तब प्रहासने अपना इन्द्रदत्त छत्र निकालकर शिरपरखड़ाकरलिया और सबयोद्धा-ओंसे कहा कि तुम मेरी रक्षा मतकरो मैं ऐसा मायावीहूं कि लाख दो लाखसे अकेला युद्धकरसक्ताहूं और किसीका प्रहार मुझपर नहीं चलसक्ताहै यह सुनकर वैष्णवी सेनाके सबयोद्धा चकितहोगये और युद्धकरनेलगे उधरपुतलियां जबदर्पणदिखा चुकीं तब त्रिशूललेकर प्रहासपरदौड़ीं परंतु जबवे उसइन्द्रदत्त छत्रके निकटपहुंचीं तब उसके प्रभावसे जलकरभस्महोगईं जो वे मायाकृत न होतीं और मानुषीहोतीं तो उसमें उलटीलटकजातीं जब सब चित्र भस्महोगये तब सब वैष्णवीसेनाके योद्धा चैतन्य होगये क्योंकि इन्हीं प्रतिरूपरूपी चित्रोंकेकारणसे उनकी माया के प्रयोग नहींचलतेथे अब रंतिकाल अट्टहासकरनेलगा और संडीनचपला चमक चमककर गिरनेलगी मायावतीने अपने जो वू अस्त्रका प्रयोगकिया कि उससे म्लेच्छ प्रमत्तहोने लगे इसी प्रकारसे सबयोद्धा अपने २ अस्त्र चलानेलगे और बिग-ड़ाहुआ युद्ध सुधरगया उससमय प्रहासने डाटकर सैंध्रसे कहा कि तू मायाकर्ता का कैसा पोताहै जो मेरे सन्मुखहोनेसे डरता है यह सुनकर सैंध्र अपने सिंहको उड़ाकर उसके सन्मुखआया और बोला कि तैंने बड़ा दुष्कर्म किया जो मेरेचित्रों को भस्म करदिया जो बहुतकालमें बनेथे यह कहकर उसने कुछमायाकी कि उससे चारपुतले प्रकटहुए और वे खड्ग लेकर प्रहासपर दौड़े प्रहासने एक छीटा उसीपानीका मारा कि वे पुतले भस्म होकर गुप्तहोगये इसके पीछे प्रहासने बढ़कर एक छीटा उसी जलका सैंध्रके मारा कि वहभी अचेत होकर सिंहपरसेगिरायह

देखकर उसकी स्त्री अपने स्थानपरसे मायाबलसे उड़ी और चपलाकीसदृश गिरकर सैंध्रको हाथमें लेकर उड़गई औरउसे अचेत देखकर समझी कि जोमैं इसे लेकर यहांरहूँगी तो शत्रु पीछा न छोड़ेंगे और यह माराजाएगा यह सोचकर बनकीओर चलीगई उसके जानेसे उसकी सेनाके योद्धाओं के पैर उखड़ गये और वैष्णवी सेनाके योद्धाओं ने बध करना आरम्भकिया उससमय शत्रुसेना भागनेलगी महेन्द्र यहसब वृत्तांत निष्प्रभ भवनपरसे देखा और अधीर्यहोकर उठा कि जाकर इस म्लेच्छ का बधकरूं जिसने सैंध्रकी यह दशाकी है परन्तु बिचित्रमाया नेकहा कि आप देखिये तो कि यहम्लेच्छकौनहै और किसप्रकार की माया करताहै जिसने सैंध्र ऐसे मायावीको अचेतकरदिया है यह सुनकर महेन्द्रने कुछमायाकी कि उससेकुछ पुतलेउत्पन्न हुए उनको उसने आज्ञादी कि अद्भुतजालकी पुस्तकलेआओ वे गये और पुस्तकलेआये उसने देखा तो लिखाथा कि यहम्ले-च्छनहींहै किन्तु प्रहासनामी बहुरूपियाहै और मायाकृत जालके पात्र तैंने पहिले अपने कीर्तिसनाम योद्धाको दियेथे वह इस के पासहैं यह देखकर उसनेपुस्तकको बन्दकरदिया और बड़ाखेद किया कि अपने कर्त्तबकी क्या चिकित्साहै और बिचित्र माया से सब वृत्तांतकहा और बोला कि यद्यपि इसका निवारण मुझ को मालूम है परन्तु पुस्तक में युद्धकरना निषेध लिखाहै और दूसरेसेनाभी भागचुकीहै और सायंकालभी होगयाहै इससेतुम जाकर युद्ध निवृत्तिके वाद्यबजवादो यह कहकर वह लज्जित होकर बैठा बैठा गुप्तहोगया और बिचित्रमाया मयूरपर सवार होकर सेनाकीओरचली इस अन्तरमें वहांलोथोंका ढेरहोगया था सहस्रों म्लेच्छ मारेगये थे और अस्त्र शस्त्र चलरहेथे प्रहा-स जाल मार मारकर लूटरहा था और बड़ा कोलाहल मचाथा और सबको बिश्वासथा कि विचित्रमाया और सैंध्र दोनोंके भा

के डेरेभी लुटजायँगे और रानी आनन्दा को छुड़ालेंगे परन्तु उसीसमय बिचित्रमायाआगई और उसनेकहा कि युद्धनिवृत्ति के बाद्य शीघ्रबजायेजावें सेना तो पहिलेही से भागरहीथी यह आज्ञा पातेही शत्रुसेनामें युद्ध निवृत्तिकेबाद्य बजायेगये उनको सुनकर वैष्णवीसेनाके शूरवीरोंने बिचारकिया कि अबशत्रुत्राण माँगताहै और हम सबभी अत्यन्त श्रमितहोरहेहैं और सूर्यभी अस्तहोगयाहै जिसके कारणसे अरुणता मन्दहोकर अन्धकार दिशाओंको व्याप्त करताआताहै और तारागण उछलतेडूबते हुए इसप्रकारसे उदयहोरहे हैं मानों आकाश चकित होहोकर अपने नेत्रोंसे इस अकस्मात् प्राप्त बिजयको देखरहे हैं ॥

दो०। अंधकारके होतही शशि निकस्यो नभ आय।
अजय शत्रु पावतभये करिकरि निज व्यवसाय ॥

अंतको दोनोंसेना फिरकर अपने२डेरोंकोगईं और सब वैष्णवीसेनाके योद्धाओंनेआकर उस कालानल म्लेच्छकी प्रशंसा की सब सेना डेरोंपर पहुंचकर बिश्रामकरनेलगी और सब सेनापति सभामेंगये उससमय रानी रक्तकेशीभी सभामेंआई और प्रहासके हाथोंको चुंबनकरके बोली कि हे बहुरूपधारि ! विद्याके आचार्य आज तुमने वह कामकिया कि जो किसी ने कभी न कियाहोगा यह सुनकर प्रहास हँसपड़ा उससमय सब ने जाना कि यह योद्धा प्रहासहै तब सबने प्रहासको भेटदी और बड़ी प्रशंसाकी उधर जब विचित्रमाया सभामेंआई तब सुंदरी भी सैंध्रको लेकर वहांगई परंतु महेन्द्र जो गुप्तहोगयाथा सो मायाकर्ताके कूपपरगया इस कूपका वर्णन आगे आवैगा वहां जाकर उसने कूपसे जल भरा और उसे लेकर बदरीउद्यान में आया और एक मायाकृत पुतलेको बुलाकर उस जलमें से कुछ जल एक पात्रमेंदिया और कहाकि इसको विचित्रमायाके पास लेजा इसके छिड़कने से सैंध्र चैतन्य होजायँगे यह आज्ञापाकर

वह पुतला जल लेकर विचित्रमायाकी सभामें आया औरवह
जल विचित्रमायाकोदेकर महाराज महेन्द्रकी आज्ञा कहसुनाई
उसने तुरंत उस जलको सैंध्रके ऊपर छिड़कदिया वह चैतन्य
होगया और उठकर और स्नानकरके और नवीन वस्त्र धारण
करके सभामें आबैठा दैवयोगसे वहां समीररूपा खड़ीथी उस
से उसने कहा कि देख प्रहास कैसे कैसे छलकरता है परंतु तुझ
से कुछ नहीं होसकता है यह सु कर वह बोली कि आप अप्र-
सन्ननहों मैं छलकरने जातीहूं यह कहकर वह वहांसेचली और
मार्ग में उसने उपदेशी बहुरूपियाको वैष्णवीसेनासे निकलकर
कहींको जातेहुए देखा तुरंत अ ना स्वरूप उसने उपदेशी का
सा बनाया और वैष्णवीसेनामें आकरदेखा कि प्रहास सभा में
उत्तम आसनपर विराजमान है और ब सभासद बैठेहुए हैं
उनको देखकर समीररूपाने बिचारकिया कि प्रहासको यहां से
उठाकर लेचलूं और बनजाय तो पकड़लेजाऊं यह सोचकर
वह प्रहासकेपासगई और बोली कि आप निश्चिन्तहोकरबैठे हैं
वहां सैंध्र आनन्दाका बध करना चाहताहै सुनतेही प्रहासघब-
राकर खड़ाहोगया और वहांसे चला कि चलकर कुछछलकरूं
समीररूपा उसकेसाथहोली मार्गमे उसकी चालको देखकरप्रहा-
सने पहिचाना कि यह समीररूपा और बोलाकि हेप्राणप्यारी
तू मु को एकांतमें बुलालाई मैं इस तेरे बुलानेसे बड़ा प्रसन्न
हुआ अब तू मुझको रतिदान देकर प्रसन्नकर यह सुनतेही
समीररूपा छलांगमारकर बनकीओरभागी परन्तु इसनेभीउस
का पीछा न छोड़ा और वह बनमें खड्ग निकालकर लड़नेको
उपस्थितहुई दोनों लड़नेलगे और भुजाली चलनेलगींलड़ते
लड़ते समीररूपाबोली कि क्योंरेदुष्ट आनंदाके पकड़ेजाने की
चोट तो तेरे हृदयमेंलगीहोगी प्रहास बोला कि अब तुझ को
पकड़कर अपना प्रयोजन निकाललूं तो फिर आनन्दाको जा-

कर छुटाऊं यह सुनकर समीररूपा बोली कि तुझ प्रयोजन नि-
कालनेवालेको खड़ापृथ्वी में गड़वाऊं निगोड़े अपना स्वरूपतो
देख जो दर्पण न हो मूतमें अपनामुखदेख कि कैसाहै जो ऐसी
बातें बनाताहै प्रहासबोला कितुझकोमेरा मूत्रही करना प्रिय है
तो मैं मूत्रकरनेको उपस्थितहूँ वह बोली तेरेऊपर आगडारूं नि-
गोड़े अपनामुख बनवाकेआ मुझसेठट्ठामतकर मैं तेरेमुख लख-
नेके योग्यनहींहूँ प्रहासबोला कि तू नहींहै तो मैंतोहूँ यहसुनकर
समीररूपा लज्जितहुई और नीचेकोमुखकरकेबोली कि अरे दुष्ट
तू बड़ामूँफट और निर्लज्जहै मैं तुझसेवार्ता नहींकरतीहूँ और
अबजाकर आनन्दाकी चौकसीकरतीहूँ जबजानूंगी जब तू आ-
कर उसको छुड़ा लेजायगा इसकहनेसे समीररूपाका प्रयोजन
यह था कि यहांसे इसेलिवालेजाऊँ तो वहां जाकर सैन्धइसको
मायाबलसे पकड़लेगा निदान प्रहासने कहा कि हे समीररूपा
तू चाहे विघ्नडालियो चाहे न डालियो परन्तु मैं आनन्दाको
छुड़ाने अवश्यआऊंगा वहबोली कि धर्म तो यहीहै कि अपने
सुहृद् और मित्रका क़ैदमेंरहना न देखसके॥

चौ०। जेनमित्र दुखहोइँ दुखारी। तिनहिं बिलोकत पातक भारी॥
निजदुख गिरि समरजकरि जाना। मित्रके दुखरजमेरुसमाना॥

निदान उक्तप्रकार से वार्त्तालाप होनेके पीछे समीररूपाछ-
लांगमारती हुई चलदी और प्रहासने भी अपना मार्ग लिया
राह में चपला और प्रहास मिले जो प्रहास के आनेके पीछे
चले थे प्रहास ने उनसे सब वृत्तांत कहा और आनन्दा के
छुड़ाने में जो नियम हुआ था वह भी कहा निदान वे दोनों
भी शत्रुसेनाकी ओर चलदिये परन्तु प्रहास जबवहांगया तो
उसने अपनास्वरूप द्वारपालकोंकासा बनाया और हाथमें ल-
ट्ठिकालियेहुये सैन्धकी सभाके द्वारपर जाखड़ाहुआ वहांसैंध
आनन्दको बुलाकर कहरहाथा कि देखतोतुझको मैं किसदुर्दशा

केसाथ मारताहूं और वहकहरहीथी कि तू अपनी कुशलमना प्रहास आयाही चाहतेहैं यहसुनकर सुन्दरी बोली कि हमचित्र देखाकरेंगे और उसछलीकोभी पकड़लेंगे इसी अवसरमें समीर रूपा वहांआई परन्तु प्रहासको द्वारपालकके भेषमेंखड़ाहुआ देखतीगई उसनेजाकर कहा कि प्रहासद्वारपर द्वारपालकबनाहुआ खड़ाहै सैंध्र उसकीबात सुनकरदौड़ा परन्तु प्रहासभी समीररूपा को जातेहुये देखकर ताड़गयाथा इससे उसने उसकेभीतरघुसतेही अपना स्वरूपमायावी म्लेच्छोंकासा बनालिया और वहीं खड़ारहा सैंध्रने द्वारपर आकर एक आधसेपूछा कि यहां कोई द्वारपालक खड़ाथा परंतु सबने निषेधकिया तब उसने समीररूपासे कहा कि तू किसको प्रहासबताती है और वह कहांगया वहभी चारों ओरको देखनेलगी इतनेमें प्रहासने बढ़कर कहा कि आपइतनी चिंताक्यों करतेहैं प्रहासकाचित्र न देखलीजिये उससे सबहाल आपही विदित होजायगा तब सैंध्रने चित्रनिकालकर देखा और मालूमहुआ कि यही प्रहासहै उसको देख कर जैसेही उसने ऊपरको शिरकिया तैसेहीप्रहासने समीररूपा के एकधौलमारी और मरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर गुप्तहोगया यह देखकर सबम्लेच्छ चकितहुए और सैंध्र अपनासा मुखलेकर सभामें चलाआया उससमय समीररूपाने सबवृत्तांत कहकर कहा कि आप प्रतिपद चित्रको देखते रहिये मैं नियमकरके उस को यहां इस प्रयोजनसे लाईहूं कि आप उसको पकड़कर वध करें वहबोला कि मैंभी तो मनुष्यहूं चित्रको कहांतक देखाकरूंगा समीररूपा बोली कि वह प्रणकरके आया है इससे आप एकांतमें बैठिये और अपनेपास किसीको न आनेदीजिये सैंध्र ने इसमंत्रको स्वीकार किया और एकडेरा खालीकर के उसमें जाबैठा और वहां दो सेवक आवश्यक सेवा करनेको रखलिये और समीररूपा को पास बैठालिया परंतु वह शीघ्रता में अ-

पने साथ किसीप्रकार का सरंजाम नलाया था इससे उसने सेवकों को मद्यलाने को भेजा वे डेरेके बाहिर आये प्रहासभी घातमें लगाथा म्लेच्छरूप से उनके पासगया और बोला कि मैं प्रहासको अपने नेत्रों से देखआयाहूं वह बड़ाछली है इससे-अकेलेजातेहुए डरलगताहै कोई चलै तो मैं उसे पकड़ादूं उनसे वकों को लालचलगा कि प्रहासको पकड़लानेसे पारितोषिका-दि पावेंगे इससे वे उसकेसाथ होलिये जब एकांतमें पहुँचेप्रहास ने कुछ फलनिकालकर उनकोदिये कि लोखातेचलो उनको खाने से दोनों अचेतहोकर गिरपड़े प्रहास ने उनके वस्त्र उतारकर उनको किसीगर्तमें डालदिया और उनमेंसे एककास्वरूप धारण करके सैंध्रके डेरे में आया वहां समीररू ा तो बैठीही हुईथी देखतेही ताड़गई और बोली कि इससेवकसे चौकस रहियेगा यह सुनकर सैंध्र चकितहुआ और अभी देखने भी न पायाथा कि प्रहासने दौड़कर सैंध्रके एक चपतलगाई और अपनानाम बताकर भागा सैंध्र अपनीपगड़ी सँभालता रहगया प्रहास ने बाहर जाकर दूसरे सेवककासा स्वरूप बनाया और फिर डेरेमें गया उससमय सैंध्र समीररूपासे बातेंकररहाथा इससे दोनोंने इसका कुछध्यान न किया और वह पीछेखड़ाहोकर मूर्छलकरने लगा उससमय समीररूपा बोली कि श्रीमान् प्रहास आनन्दा को अवश्य छुड़ालेजायगा आपदेखतेहैं कि कैसे कैसेछल करता है सैंध्र बोला कि अब उसकी क्या सामर्थ्यहै जो यहांआवै यह सुनकर प्रहासने एक धौल मारी और बोला कि क्योंबे तू मार जो खाईथी सो भूलगया समीररूपा बोली कि श्रीमान् इसको पकड़िये देखिये आपके शिरपरही खड़ाहै उससमय प्रहास ने मरुतदत्त वस्त्र ओढ़ना चाहा परंतु सैंध्र ने बड़ी शीघ्रता से ऐ-सी माया की कि प्रहासके हाथ और पैर स्तंभित होगये और उसने उसको पकड़लिया तब समीररूपाबोली यहक्षण आपको

धन्यहै उसने अपनेगलेसे मोतियोंकी माला उतारकर समीर-रूपाकोदी परंतु अबआगेका वृत्तांतसुनो कि उपहास और चपला बहुरूपिये भी शत्रुसेनामें आयेथे उनमेंसे चपला सेवकोंकासा भेष धारणकरके सैंध्रकी सभामें आयाथा और प्रहासके पकड़नेकी चिंतामेंहोनेकेकारणसे किसीने उसकाध्यान न कियाथा निदान जिससमय सैंध्र दूसरे डेरेमेंचलाआया उससमय उसकी स्त्री सुमुखीको भी भयहुआ कि कहीं भीड़भाड़में बहुरूपिये न चलेआवें और मुझको कष्टदें यह सोचकर उसनेआज्ञादी कि यहांसे सब बाहर चलेजाओ यहां कोई मतरहो और आनन्दाकोकारागृहमें भिजवाकर विक्रूरकोआज्ञादी कि तूइसकी चौकसीकर निदान सभामें कोई न रहा केवल चपला ठहरारहा सुमुखीने उससे पूछा कि तू क्यों ठहराहै वहबोला कि मुझको कुछ विनय करनाहै वह बोली कि शीघ्रकहकर बाहरजा यहसुनकर चपला उसकीओर दौड़करगया और हाथमें मूर्च्छाकरचूर्ण तो लियेहीहुएथा पास जातेही उसके मुखपर वह चूर्ण मल दिया वह अचेतहोगई चपलाने उसकेवस्त्र उतारकर उसे एकवस्त्रमें लपेटकर एककोनेमें खड़ाकरदिया और वहींबैठकर उसने अपना स्वरूप सुमुखीकासाबनाया और उसीके वस्त्रोंको धारणकरके चला कि सैन्ध्रको पकडूं जब बाहर आया तब उसने प्रहासके पकड़े जानेका वृत्तांतसुना सुनतेही चित्तसे कहा कि आनन्दा तो कैदहीथी गुरूजी भी फँसगये अच्छा चलो देखो तो क्या होता है जब डेरेके द्वारपर पहुंचा तब वहां समीररूपाको देख कर उसने अनुमानकिया कि जो इससे आंखसे आंखमिली तो यह मुझे पहिंचानजायगी यह सोचकर वह अकस्मात् अपनीआंखोंको वस्त्रसे बन्दकरके बैठगया और बोला कि हाय मेरीआँखोंमें कुछ पड़गया यह देखकर सैन्ध्र दौड़कर उसकेपास आया और उसेगोदीमें उठाकरलेगया और अपनेपास गद्दीपरबैठाया

और बोला कि लाओ देखूंतो क्या पड़गया है वह बोला कि
पानी कटोरेमें मँगवाओ उसमें आँखें खोलूं जो कुछहोगा नि-
कलजायगा समीररूपा पानीलेने दौड़ी परन्तु फिरसोची कि
इसमें कुछछल तो नहींहै ऐसा क्या आँखमें पड़गयाहै जो मुख
तक नहीं खोलतीहै लाओ सैन्धसे कहूं कि आप पहिले माया
बलसे यह तो देखलीजिये कि यह आपकी भार्याहै अथवा
कोई और है यह सोचकर वह कहनाचाहती थी परन्तु अभी
उसकेहोठभी न हिलनेपाये थे कि पीछेसे पाशकेकुण्डल उसके
ऊपरगिरे और वह उनमें उलझकर गिरी उपहास एक भृत्य
का भेष धारणकियेहुए इस प्रयोजनसे सुमुखीके साथसाथगया
था कि सैंधकाशिर काटलूं परन्तु वहां सुमुखीको मानभाव करते
देखकर समझा कि यह चपलाहै इससे चुपका खड़ाहुआ सब
चरित्र देखाकिया कि पहिले इसके प्रपञ्चकाफल देखलूं तब मैं
कुछकरूं निदान उससमय समीररूपा जो चलकर सैन्धसे उक्त
बार्ता कहनेको फिरी वह समझा कि यहकुछ विघ्नडालेगी इस
से उसे पाशमें फँसाकर गिराया वहचिल्लाई कि महाराज दौ-
ड़िये परन्तु उपहास उसे उठाकर बाहर लेगया उसने सेना के
मनुष्योंसे कहा कि मुझे छुड़ाओ परन्तु जो कोई पासआया
उससे उपहासने कहा कि जो कोई इसमें बोलेगा वहमहाराज
का अपराधीहोगा और दण्डपावेगा यहबहुरूपिया प्रहासऔर
आनन्दाको छुड़ानेकेलिये समीररूपाका रूप धारणकरकेआया
था महाराजने मुझे पकड़करदियाहै कि इसका शिरकाटलाओ
सो मैं शिरकाटने जाताहूँ यह सुनकर सबने उपहासकी बातका
विश्वास किया और कोई न बोला और वह उसकोलियेहुए च-
लागया उधर सैन्धने उठकर जानाचाहा परन्तु चपलाने उस
का वस्त्र पकड़लिया और कहा कि वह बहुरूपिणी आपको ऐसी
प्यारी है कि मुझको आप अकेला छोड़कर जाते हैं दूसरे

यहछलियोंका प्रपंचहै आपसमें नियम होगयाहोगा कि मैं इसको पकड़करभागूंगाजोकोईछुड़ाने आवेगा उसकोदूसराबहुरूपिया मारडालेगा मेरी समझमें कोई न कोई आपके लिये लगाहुआ होगा आपचाहे जाकर देखलीजिये प्राणोंपर बीतती है या नहीं यह सुनकर सैंध्र भयभीत होकर बैठरहा उधर उपहास रूपीर रूपाको बनमें लेजाकर बोला कि गुरुआनी अबतुम बहुतचल निकलीहो सैंध्रके पास अकेलेमें क्यों बैठीथी कहो तो अब तुम्हारी नाककाटडालूं यह सुनकर वह कोसनेलगी कि तेरीगुरुआनीका नाशहो तुझपर भवानीका कोपहो और तेरागुरुभटकताहुआ मरजाय यह कोसासुनकर उपहासने उसके मुखपर मूर्च्छाकर चूर्णमलदिया वह अचेतहोगई तब उसनेउसे एकगर्त में डालदिया और आपफिर सैंध्रकी सेनामें आकर खड़ा होगया और इधर चपलाने सैंध्रसे कहा कि यहांछल बहुत होते हैं लाओ मैं प्रहास और आनन्दाको महेन्द्रकेपास लेजाऊं यह सुनकर सैन्ध्र जो भयभीतसा बैठाथा बोला कि जो मैं तुम को आपत्तिमें फँसाऊं और बहुरूपियोंसे बधकराऊं तो तो कैदियों को तुमकोदूं यह सुनकर चपला जो सुंदरीका रूप धारणकिये था बिगड़गया और आंखोंमें आंशू भरकर रोनेलगा तब तो सैन्ध्रने उसेकंठसे लगालिया और कहा कि अप्रसन्न क्यों होगई वह बोली हटो हमको गैर समझा तब तो कैदियोंके देनेसे हम को निषेधकिया अच्छा तुमजानो और तुम्हारा काम जाने मैं तो गैरहूं मुझसे क्या प्रयोजनहै यहकहकर वह दामन झिटककर उठी तब सैंध्रने उठकर उसको अपनी गोदमें बैठालिया और कहा कि कैदी किनमेंहैं तुम मेरे प्राणतक मांगो तो मैं तुम को निषेध न करूंगा यहकहकर डेरेके द्वारपर आया और प्रहास और आनन्दा परसे अपनी माया दूरकरके बोला कि लो अब मुझको अपनी मायासे वेष्ठितकरलो यहसुनकर सुंदरी उठ कर

उनकेपास आई और अपनेगलेसे हार उतारकर प्रहास और आनंदाके गले डालदिया जिससे यह विदितहो कि इनको मायासे वेष्ठितकियाहै परंतु हार पहिरानेकेसमय चुपकेसे दोनों से कहदिया कि मैं चपलाहूं मेरे कहनेके अनुसारचलना जिस से यह जानपड़े कि दोनों मायाकृत कैदमेंफँसेहैं निदान हार प-हिराकर कहा कि हेअपराधियो मेरेसाथ साथआओ उससमय सैंध्रबोला कि विमानपर बैठकरजाओ बदरीउद्यान तक तुमसे पैदर नजायाजायगा चपलाबोला कि मैं बाहरजाकर विमानपर चढ़लूंगी परंतु कैदी मेरे मायाबलसे आप दौड़ते चलेजायँगे यहकहकर डेरेके बाहर आया उससमय आनंदाबोली कि मेरी इच्छाहै कि अब मैं प्रकटहोकर इन दुष्टोंको दण्डदूं चपला ने कहा बहुतश्रेष्ठ तब आनंदाने नारिकेल अस्त्रका प्रयोग किया उससे अग्नि प्रकटहुई और सैंध्रकी सभाकेडेरेको जलानेलगी उससमय आनंदाने प्रकटहोकर अपनानाम सुनाया उसकोसुन कर म्लेच्छ दौड़े और कोलाहल करनेलगे उससमय प्रहास जालमारकर लूटनेलगा और चपला भी प्रकटहोकर युद्धकरने लगा उससमय सैंध्र डेरेकेबाहर निकलआया और एकओरसे विक्रूर भी दौड़ा आनंदाने जब भीड़भड़का अधिक देखा तब मायाकी ओर बोली कि बसंतऋतु आओ यहकहतेही सबकी आंखें बन्दहोगईं और फिर जो खुलीं तो देखा कि एक क्षेत्रमें एक स्फटिक का प्राकार तेजोमय बना है उसमें परममनोहर बाटिका लगीहुई है वृक्ष नानाप्रकारके नवीन पल्लवों से युक्त लगे हैं और नानाप्रकारके सुगंधित फूल और फलोंसे लदेहुए हैं उन फूलों की गंध बड़ी मनोहर और चित्त को आनंददेने वाली है और शीतलमंद वायुसे प्रेरितहोकर शरीर को स्पर्श करतीहुई आनंदमें मग्न करके मोहितकरतीहै आहा उसबाग की क्या उपमा कही जाय जो अमरावतीके उद्यानकी तुल्यता

भी कहीजाय तो वहभी उसकी समता को नहीं पासक्ता है॥

बरवा। मदमाती कोयलियाबैठीडार। मधुरीधुनिसों कूकतिवारम्बार॥
बरमकरंद मदछाकित करि संचार। मधुकर श्रेणीडोलतकरि गुंजार॥
शीतलमंदसुगंधितपरमसमीर। परसति जाके उरको त्यागतधीर॥
नूतनसुबरण गंधभरे बहु फूल। ललचावतमनउपजावतउरहूल॥
फटिकबनेबहुसरवरनिरमलवारि। जलजजंतुयुतफूले बहु कल्हार॥
कुंजलालकिमिशोभावरणीजाय। सुधिबुधिसरबसभूलतनिरखतताय॥

निदान जब उस उत्तम मायाकृत वाटिकाकी वायु उनके शरीरमेंलगी सबमोहितहोकर उसीकीओरचले और जब उस केभीतर पहुंचेतो वहां उस परमसुंदरी निर्दोषअंगी सुलोचना शुभाङ्गी आनन्दाको खड़ाहुआ देखा उससमय उसकी अलकें छुटीहुई उसके मुखारविन्दपर महान्‌छवि देती थीं और वह उत्तम वस्त्रोंको धारण कियेहुए छवि और सुंदरताकी सीवांसी जान पड़तीथी सबअंग उसके परम सुशोभित बनेहुएथे और फूलोंके बीचमें खड़ीहुई वह फूलोंसेभी अधिक सुकुमार जान पड़तीथी॥

जय०छं०। यौवनपरम मनोहरजासु। कुच अतिपीन सचिक्कन तासु॥
भृकुटिबंक नैना रतनार। कंज कपोल धरैं द्युतिभार॥
नाक मनोहर चिबुक ललाम। सर्व अंग छवि शोभाधाम॥
ताहि बिलोकतही सब वीर। भये मोहवश तजितजि धीर॥
छोड़े कहुँ आयुध कहुँ चीर। सबके भये विवर्ण शरीर॥
कुंजलाल तेहि अवसरज्ञान। तजितजिभये विमूढ़ समान॥

उससमय सध्र और विक्रूर दोनों मोहितहोकर उस सुंदरी के सन्मुखगये परंतु कोलाहलको सुनकर विचित्रमायाभी वहां आई और रानी आनन्दाको मोहनीमायाका प्रयोग करतेहुए देखकर सीधी बदरीउद्यानमें चलीगई और पुकारी कि बहुरू-पियोंसे हमारीरक्षा कीजिये पाहिपाहि महेन्द्रने उसे पास बैठा कर सबवृत्तांत सुना और वहांसे आकाशमार्गी होकर उसस

मय आकर पहुंचा कि जब सैंध्र आदि आनन्दाके पास पहुंच कर उससे विनयकररहेथे आतेहीउसने कहा कि मैं महेन्द्र आन पहुंचाहूं ठहरतो यह सुनतेही रानी आनन्दा यह सोचकर कि अब ठीकनहीं है टलजाना अच्छाहै तुरंत मायाबलसे पृथ्वीमें प्रवेशाकरगई और बहुरूपिये जो लूटमार कररहेथे वहभी भाग गये परंतु आनन्दाके गुप्तहोजानेसे सैंध्र आदि व्याकुल होगये और विरह विषयके पद पढ़तेहुए बनकी ओर चले उससमय महेन्द्र उनसबको उठाकर आकाशमार्गी हुआ और जब ऊंचे पर पहुंचा तब कुछ ऐसी मायाकी कि वह आनन्दाका लगाया हुआ मायाकृत बाग गुप्तहोगया और रानी आनंदाजो पृथ्वी में गुप्तहोगईथी वह पृथ्वीके नीचेनीचे चलकर अपनी सभामें पहुंची परंतु मार्गमें मायासंहार पढ़ती गईथी कि जिससे जो कोई उसके मायाकृत बागको नष्टभीकरैतो वह अचेतनहोजाय इसकारणसे वह अचेत नहींहुई और अपनी सभामें जाकर आनंदपूर्वक सिंहासनपर बिराजमानहुई बहुरूपियेभी आगये और आनंदयुक्त सभामें बैठे और नृत्य और गान आदि मंगल होनेलगे उधर जब महेंद्रने उसबागको अपने मायाबलसे नष्ट करदिया तबसब सेनाजनोंको चेतहुआ और सबकी अधीर्यता मिटगई और सैंध्रको महेंद्र बदरीउद्यानमें लाया और अद्भुत जालको देखकर बोला कि आपकी स्त्री आपकेडेरे में एकवस्त्रमें लपेटीहुई खड़ीहै और समीररूपा एकगर्तमें पड़ीहै यहकहकर उसने एकमायाकृत हस्तको भेजकर समीररूपाको उठवा मँग- वाया और एकम्लेच्छको सेनामेंभेजा उसने सैंध्रकी स्त्रीको वस्त्र मेंसे निकालकर चैतन्यकिया और उससे कहा कि आपकेभर्त्ता बदरीउद्यानमेंहैं यहसुनकर उसनेभी अपने वस्त्रोंको बदला और वहांसे बदरी उद्यानकी ओरचली इसके पीछे बिकूरने महेन्द्रसे कहाकि महाराजप्रहासको जैसासुनाथा वैसाहीपाया महेन्द्रबोला

कि अबदोचारदिन में मेलाहोगा तब सबहेकड़ी निकलजायगी सैन्धबोला कि मेरेशरीरमें अग्निलगीहुईहै और यहचित्तचाहताहै कि अपने और इनदुष्टोंकेप्राणोंको एककरदूंमहेन्द्रनेकहा कि आपथोड़ेदिन और चुपरहिये इससमयमें दोनोंओरके म्लेच्छ मारेजायँगे और कुछलाभनहोगा सैन्धबोला कि अबतोचाहे प्राणरहैंचाहेजायँ एकबार तो मैं और लड़ूंगायद्यपिमेरेमायाकृत चित्र सबनष्टहोगये हैं तथापि मेरीमायाकात्राणनहीं है मैं माया कर्ताकापौत्रहूं मेरायहयुद्ध संसारमें बहुतदिनोंतक स्मरणरहैगा यहकहकर वह उठामहेन्द्रने अनेकप्रकारसे समझाया परंतुवहन माना और अपनीस्त्री और विक्रूरसहित चलदियाउससमयमहेन्द्रने विचित्रमायासेकहा कि तुममतजाओ इसयुद्धका परिणाम अच्छा न होगा और सैन्धजीतो हमारेपूज्यहैं मैं उनकोनहींरोक सकताहूं यहसुनकर विचित्रमायानहींगई और सैन्धवहांसेचल कर अपनीसेनामें आया और समीररूपा भी उसकेसाथआई और प्रपंचरचनाकी चिंतामें बनकीओरचलीगई और सैन्ध दिनभर तो सेनाको देखतारहा और जिस समय दिवाकर आकाशमार्ग को उत्तीर्ण करके पश्चिमकी ओर चलेगये और गुप्तहोगये और अंधकारने चारोंदिशाओं से निकलकर संसार को व्याप्त करलिया ॥

दो० । नीलवरण आकाशमें तारागण सबआय ।
क्रमसों कीन्हप्रकाशतहँ अंधकार बलपाय ॥

उससमय सैन्धने युद्धके वाद्यबजवाये उनकोसुनकर माया कृतपक्षी रानीआनन्दा के पासआये और विनयपूर्वकबोले ॥

दो० । विजयजासुकरतलबसत विक्रमजासुअपार ।
सो आनन्दाजयलहहि सबशुभगुणआगार ॥

हे श्रीमहारानी उसनिर्लज्ज सैन्धने फिरयुद्धके वाद्यबजवाये हैं आपके योद्धाओंसे युद्धकरनाचाहताहै यहसुनकर रानीआम

न्दाने भी युद्धकेवाद्यबजवाये और दोनोंदलोंमें युद्धकीतयारी होतीरही मायावी सबअपने २ मायाके प्रयोगोंको सिद्धकरतेरहे और शूरवीर अस्त्रशस्त्रोंको पैनातेरहे और जिससमय वहरात्रि व्यतीतहुई और पूर्वदिशामें अरुणोदय होनेसे आकाशसेअंध कारहटगया और सूर्यकी किरणोंकी प्रभासे सबतारागणों की ज्योति क्षीणहोगई ॥

दो० । उदयहोत दिननाथके तारागये लुकाय ।
जिमियोधा बलवंतलखि अरिकी सेनपलाय ॥

उससमय रानीआनन्दा अपनी सबसेनासहित रणभूमिकी ओरचली आहा क्याआनन्द उससमय वीररसकाथा प्रातका समय शीतलमंद सुगंध वायुकाचलना फूलोंका वायुके स्पर्शसे खिलना मायाविनी स्त्रियोंका सुंदर शृंगारकरके युद्धकेलिये च-लना उनके मयूरआदि नानामायाकृत वाहनों का प्रकार प्रकार की बोलियां बोलनाशूरोंका गर्जना हाथियोंका चिंघारना घोड़ों का हींसना रथोंका घड़घड़ाना दुंदुभी आदि नानाप्रकार के युद्धके वाद्योंकागड़गड़ाना मायाकृत घटाओंका उठना और गुप्तहोना अपूर्वही आनंद दिखाताथा निदान उक्तप्रकार से रानीआनन्दा सबसेनासहित रणभूमिमें पहुंची उधर से सैन्ध्र भी अपनी सेना को साजकर युद्धभूमि में पहुंचा दोनोंकी सेना व्यूहितहुई और जब रणभूमि निष्कंटकहोचुकी तब कवीश्वरों ने सेनासे निकलकर शिक्षाकी कि हे शूरवीरो यहरण मरणहेत नहींहै किन्तु जीवनमूल है क्योंकि रोगवशहोकर मरने से उसे कोईनहीं जानताहै और युद्धमें शूरताकर के मरनेसे संसार में यशहोता है और परलोकमें उत्तम स्थानपाताहै इससे सबशूर वीर अपने२ हृदयसे प्राणोंकेक्षोभको दूरकरके विक्रमकरो और शत्रुओंको मारकर विजयलो यहकहकर जब कवीश्वर हटगये तब सैन्ध्रने बढ़करकहा कि क्योंरी आनन्दा आज तुझको भी

यह अधिकारहुआ कि तू मायाकर्त्ताके पौत्रसे युद्धकरै वह बोली कि जो मायाकर्त्ता आपभी लड़नेआता तौ उसकोभी हमनरक-गामीकरते और जबतक प्राणरहते तबतक लड़ते और निर्लज्ज तुझको लज्जानहीं आतीहै कि हमारी सेनाका स्वामी नहीं है और तू अनाथ सेनापर चढ़कर आया है यहसुनकर सैन्ध ने विक्रूरको आज्ञादी कि तू सेनालेकर सबकावधकर इधरसे रानी आनन्दा ने भी पुकारकर अपनीसेनाके शूरवीरोंसे कहा कि ये निर्लज्ज जीतेनजानेपावें निदान उधर से विक्रूरआया और इ-धरसे एकमायावीम्लेच्छ उससे युद्धकरनेगया थोड़ीदेरतक युद्ध हुआ उपरान्त वैष्णवीसेनाका योद्धामारागया तब दूसरा योद्धा उसके सन्मुखगया वह घायलहोकर हटगया इसप्रकारसे रानी आनंदा के बहुत से योद्धामारेगये और घायलहुए उससमय रानी केशरीमायाने नारिकेलअस्त्रका प्रयोगकिया उसको आते हुए देखकर विक्रूर अपने वाहनपरसे कूदकर दूरचलागया और उसअस्त्रने उसके वाहनको भस्मकरदिया तब वह त्रिशूललेकर रानी केशरीपरदौड़ा दोनोंका मायाकृत युद्धहोनेलगा उसने अ-ग्निकीवर्षाकी तौ उसने जलवर्षाकर शान्तकिया और उसने जो सर्पप्रकटकिये तो उसने गरुड़ोंको उत्पन्नकर के सर्पोंकानाश करादिया इसप्रकारका घोरयुद्ध देखकर सैन्धने अपनीसेनाको आज्ञादी कि घेरकर इन सब शत्रुओं का बधकरो और आप अपने अग्निरूपसिंहको बढ़ाकर वैष्णवीसेनामें चलाआयाउस समय दोनों सेना मिलगईं और महाघोर तुमुलयुद्ध मचगया नानाप्रकार के मायाकृत अस्त्र चलनेलगे कहीं चपलागिरती थीं कहीं घनगर्जताथा कहीं अग्निबरसतीथी कहीं नदी प्रकट होतीथी कहीं घटायेंउठतीथीं कहीं हाथी और गेंड़े टक्करें लड़ा-तेथे कहीं श्येन और गृद्धलड़ते थे मायावी म्लेच्छोंके मरने से नानाप्रकारका कोलाहलहोताथा आंधीचलतीथी और रजकी

वर्षाहोतीथी निदान एक प्रलयकाल मचाथा उससमय सैंध्र ने जबदेखा कि वैष्णवीसेनाकी विजयहोना चाहतीहै तुरंत अपने सिंहपरसे कूदपड़ा और मायाकर्त्ताका पौत्रहोनेसे पृथ्वीमें दुहत्तरमारकर बोला कि अब मायाकर्त्ता का कोई नाम लेनेवाला नहींरहा जो आकर उसके पौत्रकी सहायताकरता यहकहतेही पृथ्वीफटी और उसमें से सहस्रों पुतले प्रकटहुए क्षणमात्रमें वे सब बड़े लम्बे लम्बे योद्धाहोगये और हाथोंमें दर्पणलेकर आनंदाकी सेना के योद्धाओं के सन्मुखआये और उनको दर्पण दिखानेलगे उनदर्पणोंमें चित्रबनेहुएथे वे चित्र खिलखिलाकर हँसे और जिसने उनदर्पणोंको देखा वह उन्मत्त होकर अपनी ही सेनाका बध करनेलगा और महाकोलाहल मचगया उससमय आनंदाने अपनी मायाकी कि उससे एकघटा प्रकट हुई और महीनमहीन धारोंसेजल बरसानेलगी जिसपुतलेपर वह जलपड़ा वह जलकर भस्महोगया परंतु पुतले सहस्रोंथे और आनंदाकी सेनाके योद्धाओंको दर्पण दिखादिखाकर मोहितकर चुकेथे इसकारणसे सेनाके पैर उखड़गये और सैंध्रकी सेनाके योद्धाओंने अपने अपने शिरपर ढालें आड़करलीं जिससे वह मायाकृतजल उनपर नपड़े और सैंध्र अग्निखड्ग लेकर वैष्णवीसेनामें घुसपड़ा और लोथपरलोथ गिरानेलगा परंतु रानी आनन्दाने मुखनमोड़ा और उन पुतलोंको भस्म करतीरही उससमय एक और बिपत्तियहथी कि जोजोयोद्धा मोहितहोगये थे वेतो अपनी सेनाका बध करतेथे और जो मोहित नहींहुएथे वेउनको नहीं मारतेथे और वेमायाकृत पुतले औरभी आपत्ति प्रकटकररहेथे केवल आनन्दाके जलकीवर्षा करनेसे नामीनामी योद्धा थमेहुएथे और बाकीसब मोहित होरहेथे सब सेना लड़तीहुई पीछे को हटतीजातीथी यहांतक कि डेरोंके समीपजा पहुंचीथी और यह जानपड़ताथा कि क्षणमात्रमें परम अजय

वैष्णवी सेनाकी होय परंतु इस दुर्दशाको देखकर बहुरूपिये पहाड़पर से उतरकर रानी आनन्दा के पास आये और बोले कि हे महारानी अब समय युद्धका नहीं रहा आप भी निकल चलिये वह बोली कि सब सेना तो मोहित होगई है मेरे भाग जाने से ये सब मारेजायँगे इससे यह न्याय के विपरीत है कि मैं रानीहोकर अपने प्राणबचालूं और अपनी सेना का वधकरादूं बहुरूपिये बोले कि राजाकी रक्षा और उसका सजीवरहना सदैवही उचितहै क्योंकि राजाके सजीवरहनेसे देश रक्षितरहताहै और सेवकोंको क्याहै जो शिरपरसे दश बीस बाल गिरगये तो कुछ हानिकारक नहींहै आनन्दाबोली कि मैं राजा नहींहूं आपका समझाना व्यर्थहै मैं रणसे न भागूंगी तब बहुरूपिये लाचारहुए और उपहासने कहा कि मैं सैंधको पकड़े लिये जाताहूं चपलाबोला कि मैं विक्रूरकोलेताहूं यह सुन कर आनंदा बोली कि आप सब ठहरजाइये मैं विष्णुभगवान् की भक्तहूं जिसप्रकारसे सैंधनेमायाकर्त्तासे पुकारकरके पुतलेमाया के बुलायेहैं उसीप्रकारसे मैंभी अपने भगवान्से प्रार्थनाकरती हूं वह बड़ा कृपालुहै अवश्य मेरी सहायता करैगा यह सुनकर प्रहास आदि सबबहुरूपिये ठहरगये और रानी आनंदाने अपने शिरसे किरीट और चंद्रिका उतारकर श्रीविष्णुभगवान्केचरण कमलोंमें निवेदनकिया और चित्तको एकाग्रकरके उससर्वव्यापी दीनानाथ भक्तवत्सल अन्तर्यामी विष्णुभगवान्से प्रार्थना करनेलगी कि हे ईश्वर हे सर्व सामर्थ्यवान् हे त्रिलोकीनाथ मैं आपकीभक्त अपनी सब सेनासहित आपकी शरणहूं आपही यश और अयश और सुख और दुःख के देनेवाले हैं मुझ दीन और शरणागतपर कृपाकीजिये और मेरेदुःखको दूरकरके इन प्रबल मायावी शत्रुओं से रक्षाकीजिये और शत्रुओं पर विजय दीजिये ॥

चौ०। हौं अतिदीन शरण तव आई। राखहु मोरलाज प्रभुधाई॥
मांगौं बार बार शिरनाई। अरिसों रक्षा करहु गोसाँई॥

अब इनके तो श्रीविष्णुभगवान्की प्रार्थनामें छोड़िये और अब आगे वृत्तांत शनीनिशाकरीका सुनिये कि जब वह मायाकृतमयूरपर सवारहोकर उस मायाकृत स्त्रीके साथचली तबवहमयूर उसको एक मायाकृत क्षेत्रमें लेगया कि वहां जो वृक्षल थे परमेश्वरकी अनन्तशक्तिको प्रकटकरतेथे और जो फूललगेथे वह उसकी अपार चातुर्यताको दिखाते थे वहांकीपृथ्वी चन्द्रमाकी प्रभा और समनताको लज्जितकरती थी और वायुकीगन्ध कस्तूरीकी गंधसे अधिक चित्तको प्रसन्न करतीथी बेलें प्रकारप्रकारकी झुकीहुई लगीथीं और उनके पल्लवोंते अपूर्व प्रकारकी प्रभा भासितहोतीथी किसी फूलसे अप्सराका मुखनिकलाहुआ हँसरहाथा किसीसे कालानाग निकलाहुआ लहरारहाथा और वृक्षोंकेनीचे पशुआ आकर लोटतेथे और सुन्दर अप्सराओंका रूप बनकर नृत्य करतेथे कभी घटा रंगबिरंगी उठती थी और जल बरसातीथी सबवृक्षों में झूलेपड़ेथे उनमें झूलतेहुए कोई दृष्टि न पड़ताथा और न उसजलकी बूंद उनके ऊपरपड़तीथी परन्तु गानकरनेकी ध्वनिसुनाई पड़तीथी और उनरागोंमेंऐसी मधुरताथी कि सुननेवालोंके चित्त तुरंत मोहितहोजाते थे॥

चौ०। तेहि बनकी सुमनोहरताई। अतिअपार कछुवरणि न जाई॥
तरु फल फूल सरोवर जेते। माया निर्मित हे सब तेते॥
तिनकी शोभा परमसुहाई। ही उपमासों रहित बनाई॥
चित्रविचित्ररूप अरुवरणा। नैननदीख सुन्यों नहिं करणा॥
भांति भांतिके खग वरसोहैं। मधुरी ध्वनिसों जन मनमोहैं॥
चित्रविचित्र वरणमृगनाना। विहरत फिरैं अनूप अमाना॥
कंचनवरण सरोवर कूला। कंचनवरण खिले बहुफूला॥
शोभा सुन्दरता बनकेरी। कहत बनतनहिं कविमतिहेरी॥
दो०। तहँ निशाकरी उतरिके सहमायाकृत नारि।

पश्चिमदिश मारगलिये जातभई मुदधारि ॥

चौ०। आई जब तेहि बनकीसीमा। बोली तबसो नारि अधीमा ॥
मायाकृत मारग अबनाहीं। प्रभुरक्षत जावहु प्रभुपाहीं ॥
असकहि सो तेहि कंठलगाई। अन्तरध्यान भई गुणगाई ॥
आगेचलि निशाकरी देखा। अतिविशाल मन्दिरअवरेखा ॥
कहौं कहा मैं तासु उँचाई। जनु दूसर नभदीन बनाई ॥
निरख्योजाइ तासुपुनिद्वारू। दिवको द्वार न तेहिसमचारू ॥

उस मन्दिरकेनीचे सहस्रों म्लेच्छ इकट्ठेथे उन सबके स्वरूपकालेकाले और भयंकरथे किसीकामुख सर्पकासाथा और किसीके दशशिरथे और सब मायाकर्त्ताकी जय बोलरहेथे उस मंदिरमें सहस्रों घंटे एकसाथही बजतेथे और वे म्लेच्छ बारम्बार दण्डवत् करतेथे निदान रानीनिशाकरीभी वहां एकओर को जा बैठी और म्लेच्छ मायासम्बन्धी मंत्रकाजप करनेलगी उससमय एकवाणीहुई कि जा तेरा मनोरथ सिद्धहुआ यह सुन तेही रानीनिशाकरीने अपने शरीरकामांसकाटा और कहा कि हे मायाकर्त्ता यह नैवेद्य मैं आपको निवेदन करतीहूँ यह कहते ही एक शब्दहुआ और वह मांस और रुधिर उसके हाथोंपरसे गुप्तहोगया इसके पीछे फिर वाणीहुई कि जो तू अपराधिनी न होती और वैष्णवोंकासाथ न देतीतो हमतुझको अपनेसन्मुख बुलाकर अपनी मायादिखाते अच्छाअब तू जाकर मायाकृतबन में चालीसदिनतक हमारी तपस्याकर फिर जोतूमांगेगीसो मिलेगा हमारे रहनेका स्थान तो औरही है परन्तु उस बनमें जो कोई हमारी तपस्याकरताहै उसका मनोरथ हमपूराकरतेहैं इसी कारणसे हमारे सेवक यहांआया करते हैं इसबनका नाम माया कर्त्ताका बनहै हमारेलेखे हमारे सब उपासक एकसेहैं क्या महेन्द्र और क्या सैंध्र परंतु हां इतनाअंतरहै कि वेलोग सातमायाकृत बन और सात मायाकृत पर्वत और सात मायाकृत नदीको उल्लंघनकरके हमारे समाधिके मंदिरतक पहुँचजातेहैं और ह-

मारे मुख्य भक्तहैं और तुमसब वहां नहीं जासक्तेहो इससे हम
तुम सबकोयहांबुलाकर तुम्हारे मनोरथोंको पूराकरतेहैं प्रकटहो
कि रानीनिशाकरी इससमयतक श्रीवैष्णव इसी कारणसे नहीं
हुईथी कि मायाकरनेमें मायाकर्त्ताका पूजन करनापड़ैगा और
हृदयमें विष्णुभगवान्की भक्तिहोनेसे उसकाचित्त मायाकर्त्ताकी
पूजाकरनेमें ग्लानिमानताथा परंतु अपनेअर्थकीसाधनाकेप्रयो-
जनसे उसने मायाकर्त्ताकोदण्डवत्की और एकपाउँसेखड़ीहोकर
पुकारी कि हेपरमेश्वर मायाकर्त्तामुझे मायाकृत देशाधिपमहेंद्रसे
प्रबल करदीजिये तब बाणीहुई कि यह नहोगा और कुछ मां-
गनाहो सो मांग तब वहबोली कि जो प्रबलनहोऊं तो निर्बल
भी न रहूं फिर बाणीहुई कि यहभी न होगा परंतु जो तपस्या
करैगी तो इतना होजायगा कि महेंद्रकेसिवाय हरएक म्लेच्छ
तुझको जीत न सकैगा महेंद्रकी छीतकसे तू बराबररहैगी यह
सुनकर रानी निशाकरी उस मायाकृत बनमें चली आई और
तपस्या करनेलगी जब चालीसदिन होगये तब फिर बाणीहुई
कि तू शीघ्रजा मेरे पोतेने तेरी सेनाका तित्तरवित्तर कररक्खा
है वहां से हमारी पूजाके कुछफूल चुनकरलेजा और माया
निर्मित पुतलों से अपनी सेनाकोबचा यहसुनकर रानीनिशाक-
रीने फूलचुनकर झोली में भरलिये और कुछ मायाकी तुरन्त
एक आंधीआई और एककंचन वर्णका बिमान प्रकटहोकरपृ-
थ्वीपर उतरा रानीनिशाकरी उसपर सवारहुई और अपनी से-
नाकीओर चलदी और उससमय आकर पहुँची कि जबरानी
आनन्दा विष्णुभगवान्से प्रार्थना कररहीथी और प्रार्थनासमा-
प्तनहीं होनेपाई थी कि आकाशमें वह बिमान चमकता हुआ
प्रकटहुआ और शब्दहुआ कि मैं रानीनिशाकरी आन पहुँची
वैष्णवी सेनाके योद्धा अपने स्वामीकी वाणी पहिंचानकर बहुत
प्रसन्नहुए उससमय रानीनिशाकरी ने मायाकर्त्ताके बनके फूलों

को सैंध्रकी सेनापरफेंका अकस्मात् ऐसीआंधीआई कि संसार में अंधकारछागया और कालेपीले बादल आकर शत्रुसेनापर छागये और उनमेंसे वाण और पाषाणभारी भारी निकलकरबरसनेलगे उससमय रानी निशाकरी ने अपना बिमान पृथ्वीपर उतारा और कहा कि हे दर्पणधर शीघ्रआ और यह मायाकर्ता के बनके पुष्पों को ग्रहणकर यह कहकर उसने कुछ फूलफेंके और मायाकी तुरन्त पृथ्वीफटी और उसमेंसे एक म्लेच्छ निकला जिसका सब शरीरदर्पणकी समान चमकताथा उसनेनिकलकर उन फूलोंको उ लिया और जैसेही उनको सूँघा उस के शरीरमें आगलगगई और वह भस्महोगया और णीहुई कि दर्पणधर म्लेच्छ मारागया उसके मरतेही सबपुतले जोवैष्णवी सेनाके योद्धाओंको दर्पण दिखाते फिरते थे भस्म होगये और जो सेनाजन मोहित होकर अपनी सेनासे लड़ते थे वे चैतन्य होकर शत्रुसेनासे युद्ध करनेलगे और इधरबाण और पाषाणों की वर्षाहोहीरहीथी थोड़ीहीदेरमें सैंध्रकी बहुतसीसेना मारीगई उससमय शत्रुसेनाको कोई शरण देनेवाला न मिला औरक्षणमात्रमें म्लेच्छोंके मरनेसे रणभूमिमें रुधिरकी नदी बहनेलगी उससमय रानी निशाकरी मायाकृत अस्त्रोंका प्रयोग करतीहुई शत्रुसेनामें बिचरनेलगी ॥

चौ०। जेहिदिशिगई निशाकरिरानी। बधे असंख्य म्लेच्छ अभिमानी ॥
तेहि अवसर तेहि थरकी धरणी। रुधिर आदिसों भई विवर्णी ॥
कटे असंख्यन अरिदल योधा। रह्यो न काहू निजपर बोधा ॥
अरिदलसक्यो न थिर तेहिकाला। भाग्यो उरगहि भीतिबिशाला॥

उससमय सैंध्रने उस मायाको दूरकरनेकेलिये अनेकप्रकार के यत्न किये परन्तु किसीसे कुछ न हुआ और उसने अनुमान किया कि जो कोई तीर अथवा पाषाणमेरे लगजायगा तोमैंभी माराजाऊंगा और वहीं पृथ्वीमें समागया और बहुतदूरजाकर

निकला परन्तु सेनाको अजय होचुकीथी और सुन्दरी अर्थात्
सुमुखीभी भागगई थी अन्तमें सैंध्रने युद्ध निवृत्तीके वाद्यबज-
वादिये उनको सुनकर रानीनिशाकरीने कुछ मायाकी कि वे बा-
दल अन्तर्द्धानहोगये और बाण और पाषाणवर्षा दूरहोगई और
फिर अपनी सेनाको लेकर अपने डेरोंको लौटी परन्तु विक्रूर ने
जब रानी निशाकरीकी जयहोतेहुए देखी तब वह रणमेंसे रानी
आनन्दाके एकसेवकको पकड़कर बनमेंलेगया और वहां उसका
बधकरके मायाबल से उसीका सा स्वरूप अपना बनाया और
उसीके वस्त्रोंकोधारणकरके वैष्णवीसेनामें चलाआया औरजब
रानीनिशाकरी सेना लेकर फिरी वहभी साथसाथ चला आया
डेरोंपर आकर रानीनिशाकरी सिंहासनपर बिराजमानहुई सब
ने भेंटदी और सब अपने २ योग्य स्थानोंपर बैठे और आनंद
मंगल होनेका सरंजाम होनेलगा और सब सेनाने भी कमर
खोलकर बिश्रामकिया और उधर जब सैंध्र अपने डेरोंमेंपहुँचा
तब उसने सभामें बिक्रूरको न पाकर चारोंओर ढुँढ़वाया और
जब वह न मिला तब उसका बधहुआ जानकर बड़ाखेदकिया
और चुपकाहोरहा इधर बिक्रूर इस प्रयोजन से ठहरारहा कि
जो बनजाय तो रानीनिशाकरी अथवा आनंदाका शिरकाटकर
लेचलूं और प्रहासको धर्षणकरूं निदान जब रानी निशाकरी
आनन्द मंगल मनानेलगी तब बहुरूपियेभी उससे मिलनेको
आये दैवयोगसे बिक्रूर सभाके द्वारपर खड़ाथा उधरसे चपला
बहुरूपिया जो आनेलगा उसने सोचा कि प्रहास तो बड़ाभारी
छली है वह हाथ न आवे तो कुछ आश्चर्य नहीं है लाओ इस
बहुरूपियेको लेताचलूं यह सोचकर उसने चपलाकोपकड़लि-
या और मायाबलसे आकाशमार्गीहुआ उससमय चपलानेपु-
कारकर कहा कि दौड़ो मुझे यह म्लेच्छ पकड़ेलियेजाताहै यह
सुनकर बिक्रूरने मायाबलसे उसकी जीभको स्तंभित करदिय

परन्तु दो चारने उसकी वाणीको सुनाथा उन्होंने प्रहाससे जा-
कर कहा प्रहासने उपदेशीसे कहा कि तू जाकर देख तो कि क्या
बातहै वह चलदिया और इधर बिक्रूर चपलाको सैंध्रकी सभा
में लाया वह उसको सजीव देखकर बहुत प्रसन्नहुआ और सु-
न्दरीने कहा कि यही मरा मुझे वस्त्रमें लपेटकर खड़ा करगया
था लाओ इसेमुझेदो मैं इसका बधकरूं सैंध्र बोला कि बहुरू-
पियोंके बीचमें तुम मत बोलो मैं आप इसका बधकरूंगा यह
सुनकर बिक्रूर बोला कि आप ठहरजाइये मैं इसको कैद करता
हूँ प्रहास इसको छुड़ाने आवेगा तब मैं उसकोभी पकडूंगासैंध्र
ने कहा कि अच्छालेजाओ परन्तु बड़ी चौकसीसे रखना वह
उसको लेकरचला परन्तु उपदेशी जो भेष बदलकर आया था
वह यहां स्थितथा उसने जाकर प्रहाससे सब वृत्तांत कहा वह
उसीसमय चलदिया और म्लेच्छका रूप धारण करके सैंध्रकी
सेनामें आया औरदेखा कि बिक्रूर चपलाको लियेहुए उड़ाहुआ
चलाजाताहै प्रहास भी छुपाहुआ नीचे नीचे चला बिक्रूर एक
पर्वतके नीचे पहुँचा और वहां उसने मायाबलसे एकडेराप्रकट
करके खड़ाकिया और उसके भीतर चलागया और चारखूंटी
गाड़कर चपलाको चारोंओरसे बांधदिया प्रहासने सब यह वृ-
त्तांत पर्वतपर चढ़करदेखा और रोकर विष्णुभगवान्से प्रार्थना
की कि हे प्रभो चपलाको इस दुष्टके हाथसेबचा अन्तमें प्रीतिके
कारणसे उसपर रहा न गया और पर्वतपरसे उतरकर डेरेकेभी-
तरगया बिक्रूरने पूछा तू कौनहै प्रहास बोला कि मैंनेआज यहां
डेराखड़ाहुआ जो देखा तो नईबात समझकर हाल पूछनेचला
आया तब बिक्रूर उसको घूरनेलगा प्रहासने समझा कि अब
यह मायाबलकी दृष्टिसे मुझको जानना चाहताहै यह समझ
कर वह डेरेकेबाहर चलाआया और बोला कि मैं जाताहूँ आप
अप्रसन्न न हूजिये और दौड़कर पर्वतपर चढ़गया और वहां

से उसनेदेखा कि त्रिक्रूर कोले सुलगारहाहै और कह रहाहै कि अरे बहुरूपिये मैं तेरामांस काटकाटकरभूनूंगा यह देखकरप्रहास ने तुरन्त अपना स्वरूप परम भयंकर बनाया अर्थात् भोडलके बनेहुए दशशिर और बहुतसे हाथपैर लगाये और देवदत्तअ-म्बरको धारण करके उस डेरेमेंगया और बोला कि मैं अद्भुतप-रमेश्वर का प्रेरित महाकालनामी गणहूँ उसको देखकर त्रिक्रूर खड़ाहोगया और बोला कि आपके आगमनका क्याहेतुहै वह बोला कि अद्भुत परमेश्वरने मुझको तेरेप्राण हरनेको भेजा है और कहाहै कि उस बहुरूपियेका अभीकाल नहीं है जो कोई उसका बधकरनेकी इच्छाकरै तू जाकर उसके प्राणहरला यह सुनकर त्रिक्रूर घबराया और बोला कि जो आपआज्ञादें सो मैं करूं प्रहासने कहा कि शीघ्र इस बहुरूपियेको खोलदे जब उस ने यहकहा तब त्रिक्रूरको शंकाहुई कि कहीं यहकोई बहुरूपिया न हो यह विचारकर वह उसे मायाबलसे घूरनेलगा परन्तु प्र-हास तो देवदत्ताम्बर धारण कियेथा इसकारणसे उसकी माया-न्वित दृष्टि उसको पहिंचान न सकी और घूरनेसे उसके नेत्रों में उन वस्त्रोंके तेजकी ऊष्मा ऐसी व्यापी कि नेत्र उसके जलने लगे और उसको यह जानपड़ा कि नेत्रफूटा चाहते हैं यहदेख-कर त्रिक्रूरने विचारकिया कि निस्संदेह यह महाकालहै जब तो ऐसा तेजहै कि मायाकृत दृष्टिभी नहीं देखसकतीहै यह विचार करके वह भयभीत होकर गिड़ गिड़ाताहुआ उठा औरचपला को खोलनेलगा उससमय प्रहासने विचारकिया कि अब अ-धिक दुःखके न उठावै मारभीडालो यह सोचकर अपनीथैली मेंसे खड्ग निकाला और पूर्णबलसे उसकी ग्रीवापर ऐसामारा कि उसकाशिर कटकर दूरजापड़ा उसकेमरनेसे कोलाहलहुआ और वाणीहुई कि त्रिक्रूर मारागया और वह डेरा नष्टहोगया और चपला छूटगया और मायाकृतपुतले उसम्लेच्छकी लोथ

को सैंध्रके पास उड़ाकर लेचले प्रहास चपलाको साथ लेकर अपनी सेनाकीओर चला और वेपुतले लोथकोलियेहुए सैंध्र के सन्मुखगये और बोले कि इसकावध प्रहासने किया है यह सुनकर सैंध्ररोनेलगा और अपने मतके अनुसार उसके शरीर का संस्कार कराया इसकेपीछे उसने बिक्रूरके पितामह अनुक्रूर को पत्रलिखा कि तुम्हारापुत्रक्रूर और पौत्र विक्रूर दोनों माया-कर्त्तालयकोगये जीवन और मरण दोनों मायाकर्त्ताके आधीनहैं हमको उनके मरनेका बड़ाशोकहै उचितहै कि तुमभी धीर्य्य धारणकरो जो मायाकर्त्ताकी इच्छाहुई तो तुम्हारेपुत्र और पौत्र के बधकर्त्ताओंका बहुत शीघ्र बध करके हम बदलालेंगे यह लिखकर उसने एक म्लेच्छको दिया कि वह उसे वहां लेगया जहां सैंध्रके रहनेका नगरथा और वह पत्र अनुक्रूरको देदिया वह अपने पुत्र और पौत्रका मरण सुनकर शोकसे व्याकुलहो-गया यहभी असंख्यसहस्रसेनाका सेनापतिथा सैंध्र इसको अपने देशका प्रबन्ध करनेको छोड़आयाथा इसने पत्र पढ़तेही उस सेनाको निर्याण करनेकी आज्ञादी आज्ञापातेही दुंदुभी और शंख और भेरी आदि नानाप्रकारके वाद्य बजने और सेनाके योद्धा सर्पमयूर सिंहअश्व और२ नानाप्रकारके मायाकृत वाह-नोंपर सवारहोकर चलनेको तय्यारहुए और अनुक्रूरभीघोड़े पर सवारहोकर आगया और सब सेनासहित चलदिया और बड़ेमार्गको उत्तीर्णकरके सैंध्रके वासस्थलमें पहुँचा वहां उसने डेरेखड़ेकराकर सेनाको उतरनेकी आज्ञादी और आप सभामें आकरसैंध्रके पैरोंपर गिरपड़ा और विलाप करनेलगा कि हाय मेराघर नष्टहोगया मेरेकुलके चंद्र और सूर्य दोनों अस्तहोगये अब मैंक्याकरूं और क्योंकर अपने प्राणरक्खं तब सैंध्रने उसे धीर्य्यदिया और कहा कि अब संतोषकरो वहबोला कि संतोष के सिवाय और क्या करसकताहूं परंतु अबआप आज्ञादीजिये

तो मैं निशाकरीकी सेनाको विध्वंसकरूं और प्रहासको इसप्रकारसे मारूं कि शत्रु देखकर भयभीत होजावें सैंध्रने कहा कि निशाकरी मायाकर्त्ताके वनमेंजाकर वरदानलेआईहै और वहांके फूलभी लाईहै इससे तुम उससे जीतनसकोगे मैं मायाकर्त्ताका पौत्रहूं इससे मैं उसकी मायाका संहार करनेका उपाय रच लूं तब तुम युद्धकरना अच्छा अब डेरेमें जाकर विश्रामकरो और यह बताओ कि भोजन मेरेसाथखाओगे अथवा अलग रसोई बनाओगे वह बोला कि पुत्रशोकके कारणसे क्षुधा तो जातीरही है परन्तु जो कुछ आप भोजनकरें उसमेंसे थोड़ासा कुछ अपनी प्रसादी मुझेभी भेजदीजियेगा यह कहकर वह अपने डेरेमें चलागया और विश्रामकरनेलगा उधर मायाकृत पक्षियोंने जाकर रानीनिशाकरीसे सबवृत्तांत कहा वहां प्रहास भी आगयाथा उसको सुनकरबोला कि अब चलकर अनुकूरजीकेभी दर्शनकरिआवें यहकहकर वहचलदिया और सब बहुरूपियेभी चलदिये परन्तुप्रहास जब शत्रुसेनामें पहुँचा तबउसने एकरसोइयेको जातेहुएदेखा वहउसके पासगया और बोला कि भाई हमभी तुम्हारी विरादरी हैं सबप्रकारका भोजन बनाना जानते हैं कहीं आधसेर आटेकेधंधेसे हमकोभीलगादो वहबोला कि अच्छा फिरकभी मेरेपासआना तो मैं कुछउपाय करूंगा प्रहासनेकहा अच्छा परंतु एकबातमुझको आपसे एकांतमें कहनी है वहउसकेसाथ एकांतमें चलाआया और वहांआकर प्रहासने उसके मुखपर मूर्च्छाकर चूर्ण डालदिया वहमूर्च्छितहोकर गिरपड़ा तब प्रहासने अपनास्वरूप उसकासा बनाया और उसके वस्त्रउतारकर आप पहिरलिये और एकथालमें अनेक प्रकारके व्यंजन जिनमें मूर्च्छाकर चूर्ण पड़ाहुआथा रखकर श्वेत वस्त्रसे ढकलिया और उसे हाथमें लेकर सैन्ध्रकी सभामें आया सैन्ध्र अनुकूरसे तो भोजनोंकेलिये पूछहीचुकाथा जब वह चलागया

तब उसने भोजन मँगवाये और अपनीस्त्रीसहित मद्यपान और भोजनकरनेलगा उसीसमय यह रसोइयापहुँचा और उसने वह थालसैन्धके सामने रखदिया सैन्धने पूछा यहक्याहै वह बोला कि अनुकूरने आपके लिये यहमिष्टान्न औरपकान्नभेजाहै यहसुनकर सैंधप्रसन्नहुआ और अपनीस्त्रीसेबोला कि लोयहपकान्न बहुत उत्तमहै इसकोखाओ वहबोली कि आपखायँ मैं अभीआतीहूं यहकहकर वह वहां से उठकर एकदूसरे डेरे में चलीगई वहां उसने मिष्टान्न बनवाकर रक्खाथा सो इस प्रयोजनसे गई कि मेंभी अपना मिष्टान्नलेआऊं तो देखूं कि अनुकूरने जो मिठाई भेजीहै वहअच्छीहै अथवा मेरीबनवाईहुई मिठाईस्वादिष्टहै निदान वहतो इधरआई और उधरसैन्धने उसमिठाईकोखाया उस समय प्रहासने जो दोचारसेवक वहांपर सेवाकोमौजूदथे उनको अपनेपाससे कुछमिठाईदी और कहा कि तुमसब महाराज के यहांकी जूंठनखायाकरतेहो इससे तुमको यहांकी मिठाईका स्वादमालूमहोगा अब इसको खाकर सत्य सत्यकहो कि यहां मिठाई अच्छीबनतीहै अथवा यह मेरेहाथका बनाहुआ मिष्टान्न स्वादिष्टहै यहसुनकर सैन्धनेभीकहा कि हां खाकर सत्य सत्य कहो कि कहांकी मिठाई स्वादिष्ट बनती है उन सेवकों ने उस मिष्टान्नको अलगलेजाकरखाया और जब वहांसेआये तब मूर्च्छितहोकर गिरपड़े यह देखकर सैन्धउठा कि देखूं सेवकोंको क्याहुआहै परन्तु वहभी मूर्च्छितहोकरगिरपड़ा उससमयप्रहास ने अनुमानकिया कि जो सुमुखीआजायगी तो सबकाम बिगड़जायगा यहसोचकर उसने सैन्धको एकवस्त्रमें गठरीकीतरह बांधा और शिरपररखकर सभासे यहकहताहुआ निकला कि हम ऐसी सेवकाई नहीं करसकते हमने रसोईबनानेका काम स्वीकारकियाथा कुछ बोझाढोनेका मासिक नहीं ठहराया जो हमसे बोझाढुवायाजाता है बाहर एकआधनेपूंछा कि रसोइ-

याजी क्याहै वहबोला भाई उधर से तो अनुकूर ने मिठाईका थालभेजा इधरसे सैन्धने यह गठरीदेदी कि लेताजा भलाब-ताओ तो कि मैं रसोइयाहूं अथवाभारवाहीहूं यहसुनकरम्लेच्छ समझे कि सैन्धने कोई गठरी अनुकूरकेपास लेजानेकोदीहोगी यहसमझकर किसी ने उसे रोकटोक न किया और वह गठरी लियेहुए सेनासे निकलकर बनकीओरचला कि यहयोंनहीं म-रता है अब इसको लेचलकर पृथ्वी में गाड़दूं अथवा किसी पहाड़परसेफेंकदूं निदान यह तो उधरगया और इधर सुमुखी मिष्टान्नलेकरआई और वहां सेवकों को मूर्च्छितदेखकर और अपनेपतिको वहां न पाकर डेरेके द्वारपरगई और द्वारपालकों से पूछा कि तुम्हारे स्वामी कहांगयेहैं वहबोले कि भीतरहीहोंगे इधर नहींआये केवल रसोइया गठरीलेकर यहांसेगया है यह सुनतेही उसने पृथ्वीपर पछारखाई और बोली कि हाय उनको प्रहास पकड़लेगया और वहींसे अर्धांगहोकर मायाबलसेउड़ी इसीअवसरमें विचित्रमायाने बदरीउद्यान में महेन्द्रसेकहा कि आप अद्भुतजालकी पुस्तक तो देखिये कि सैन्धकी क्याव्यवस्था है महेन्द्रने उस पुस्तकको देखा और युद्धका सबवृत्तान्तकहकर बोला कि इससमय प्रहास उनको पकड़लाया है और उनका वधकरना चाहता है यहकहकर उसने पुस्तक तो बन्दकरदी और कुन्द और इन्दुनामी दोम्लेच्छोंको आज्ञादी कि तुम से-नाकेपास जो पर्वतीदेश है वहांजाओ और सैन्धको प्रहास से बचाओ यह आज्ञापाकर वे दोनोंम्लेच्छ चलदिये और यहां सुमुखी जो रोतीपीटतीहुईगई तो सबसेनामें यहबात फैलगई कि सैन्धको प्रहास पकड़लेगयाहै और म्लेच्छचारोंओरको उसे ढूंढ़नेको चलनिकले यहबात अनुकूरनेभी सुनी वह तो पहिलेही से क्रोधमें भराहुआथा और युद्धकेलिये उपस्थितथा अब जोसै-न्धका पकड़ाजानासुना तो मारेक्रोधके लालहोगया और विचार

किया कि जबतक सैंध्रकापतालगे तबतक निशाकरीकी सेना का बधकरके सब शत्रुओंका शिरकाटला यह विचारकर उसने क्रोधके आवेशमें सेनाको रणकेलिये सन्नद्धहोनेकी आज्ञादी और आपभी महोर्गपर सवारहोकर अस्त्रशस्त्रादिसे अलंकृत हुआ और सेनाको लेकरचला उससमय उसकेसाथ अस्सी सहस्र म्लेच्छ नानाप्रकारके भयङ्कर और विवर्ण स्वरूपधारणकियेहुए अनेक प्रकारके बाजेबजातेहुए होलिये ॥

जय० छं० महाभयंकरम्लेच्छकराल। अतिदुर्धर्षमनहुंजनुकाल ॥
दीरघ काया दीरघ नैन। दीरघ दंत महा कटु बैन ॥
अस्त्रशस्त्र मायाकृतजौन। करलीन्हे कटिबांधे तौन ॥
कुंजलालते गर्जत क्रुद्ध। चलेसकलमिलिकरिबेयुद्ध ॥

बहुरूपियोंने इससेनाको अपनी सेनाकीओरजातेहुये देखकर रानीनिशाकरीसे आकरकहा कि महारानी प्रहासजीसैन्ध्रकोपकड़ कर लेगयेहैं सो उसीक्रोधके आवेशमें अनुक्रूर अपनी अस्सी सहस्र सेनालेकर आया हताहै और धोखे में घेरकर आपकी सेनाको पीड़ापहुंचाना चाहताहै यह सुनकर रानीनिशाकरी प्रहासकी प्रपंचरचनापर बहुतहँसी और बोली कि यहदुष्ट सैन्ध्र माराजाय तो अच्छाहै और यहकहकर उसनेमायाकृत तूर्य बजाई उसको सुनकर सबसेना और सेनापति अस्त्र शस्त्र धारण करके शीघ्र शीघ्र तय्यारहोनेलगे ॥

जय० छं० महाविक्रमी अति रणधीर। सेन वैष्णवी के सब वीर ॥
मानुष आयुध अरु सब शस्त्र। अरु मायाकृत हे जे अस्त्र ॥
धारण करि करिके सविधान। अरु गहि उरमें क्रोध महान ॥
गर्जत तर्जत चले अक्षुद्र। उमड्यो आवत मनहुसमुद्र ॥
ताहि विलोकत शत्रुसकान। तरिबो ताको दुस्तर जान ॥
कुंजलाल क्षणमें सो सैन। पहुँची जहँ अरिदलअघऐन ॥

जब दोनोंसेना एक दूसरी के सन्मुखपहुँचीं तब व्यूहरचना हुई और मायाकृत चपला गिरनेलगीं कवीश्वरोंने निकलकर

सबको रणका उत्साहकराया और शूरवीर अस्त्रशस्त्रोंको निका-
लकर खड़खड़ानेलगे उससमय अनुक्रूर अपने महानाग पर
सवार रणभूमिमेंआया और पुकारा कि हेअधर्मियो अब मुझ-
से युद्धकरनेको मेरेसन्मुखआओ यह सुनकर वैष्णवी सेनाका
एकयोद्धा रानीनिशाकरीसे आज्ञालेकर उसकेसन्मुखगया और
उसने नारिकेल अस्त्रकाप्रयोगकिया अनुक्रूरने स्थानसे चलित
होकर उसको व्यर्थकिया और निम्बुक अस्त्र के प्रयोगसे उस
योद्धाको वैकुण्ठवासीकिया जब इसी प्रकारसे कई योद्धा रानी
निशाकरीके मारेगये तबरानीरक्तकेशीने बढ़कर नारिकेलअस्त्र
का प्रयोगकिया अनुक्रूरने उसेआताहुआ देखकर ऐसी माया
की कि वह अस्त्र उलटा फिरपड़ा परंतु रानीरक्तकेशी पृथ्वीमें
प्रवेशकरगई उससमय अनुक्रूरने ऐसी मायाकी कि चारोंओर
से बादलघिरआया और सेपाषाणोंकी वर्षाहोनेलगी उस
समय रानीनिशाकरीने ऐसीमायाकी कि बज्रकी ढालें प्रकटहो-
कर हरएक योद्धाके ऊपर स्थितहोगईं और फिर आगेबढ़कर
अग्निगोलक प्रहारकिया उसे देखकर अनुक्रूर उड़गया और
उसगोलकने उसकेमहानागको टुकड़े२करडाला परंतु अनुक्रूर
के उड़जानेसे उसकीसेनाने समझा कि हमारास्वामी मारागया
इससे सबसेना लीजियो लीजियो करतीहुई दौड़पड़ी इधरसे
रानीनिशाकरीने अपनीसेनाको भी आज्ञा बध करनेकीदी नि-
दान दोनोंसेना मिलगईं और प्रलयकालकासा कोलाहलहोने
लगा चारोंओरसे अस्त्रशस्त्र सर्प और पाषाण आदिकी वर्षा
होनेलगी उससमय रानीनिशाकरीनेमायाकी कि पीत और रक्त
बादल आकर शत्रुसेनापर छागये और उनमेंसेबाण और पा-
षाणोंकी वर्षा शत्रुसेनापर होनेलगी और वह आप भी अग्नि
गोलकोंका प्रहारकरतीहुई शत्रुसेनामें विचरनेलगी जिधर निक-
लगई सैकड़ोंको क्षणमात्रमें यमपुरमें पहुँचादिया यह देखकर

अनुक्रूरने अकस्मात् वहांआकर रानीनिशाकरीपर निम्बुकास्त्र छोड़ा रानीने स्थान त्यागकरके उसकोव्यर्थकरडाला और मायाकृत असिसे उस अनुक्रूरका शिर काटलिया उसके मरने से बड़ा कोलाहलहुआ और सेनाकेपावँ उखड़गये और भगदड़ पड़गई उससमय वैष्णवीसेनाके योद्धाओं ने उनका पीछाकिया और सबको घेर घेर कर बधकरना आरम्भकिया॥

तोमरछं०। तहँ चहूँदिशिसों दौर। बध करत भट शिरमौर॥
करि बाण बर्षा घेरि। नहिं बचत अब इमि टेरि॥
शर भल्लपट्टिशआदि। भे तजत आयुध नादि॥
इमितजतअस्त्रअघोर। भे बधत अरि दल घोर॥
दो०। बर्षा पूरत महिहि जिमि रचि जलधार अपार।
तिमि पूर्‌यो अरि सेन सब वीर शरनके धार॥

निदान वहसेना बहुतसीमारीगई और जो बची वह किसी को अपनारक्षक न पाकर पर्वत और बनोंमें भागकर जाछिपी यद्यपि वहांसमीपही सैन्ध्र और विचित्रमायाकीसेना पड़ीहुईथी और उसनेइससेनाकी सबदुर्दशादेखीपरंतुवहांनविचित्रमायाथी न सुमुखीथी इसकारणसे दुर्दशादेखनेपरभी उससेनाने स्वामीके न होनेसे सहायतानकी और रानीनिशाकरी उसको विध्वंसकरके और विजयपाकर अपने डेरोंकोआई सबसेनाने विश्रामकिया और सेनापतिभी आनन्दमंगल मनानेलगे परंतु अब प्रहास का वृत्तांत सुनिये कि जब वह सैन्ध्रको लेकर बनमें पहुँचा तब मार्ग भूलगया क्योंकि सैन्ध्र तो मायाकर्त्ताकापौत्रथा और वह अपने चित्तमेंकहनेलगा कि मैंतो यहांनित्यही फिराकरता था आज क्या कारणहै कि मार्गनहींमिलताहै इसी सोचविचार में वहएकपर्व्वतके समीपपहुँचा और वहांहोकर एकमार्गदेखकर पर्वतकी घाटीमें चलागया और वहां सैन्ध्रको पृथ्वीपर उतार कर खोला और चाहा कि उसकेगलेसे सबचित्रउतारलूं परंतु

जब उतारनेकोगया तो एकचित्र न पाया और जब पृथकखड़ा होगया तब सबचित्र फिर उसेदिखाईदेनेलगे यहदेखकर प्रहासने अनुमानकिया कि यहमायाकाकारणहै कि चित्रगुप्तहोजाते हैं परंतु उसकाअनुमान सत्यथा क्योंकि जब सैन्ध्र बहुरूपियों से कईबार धोखाखाचुका तबउसने ऐसीमायाकीथी जब कभी में पकड़ाजाऊं तो चित्र अदृश्यहोजायाकरें सो वहीहुआ और जब प्रहास उनचित्रोंको न पासका तबउसनेविचारा कि इसको किसीप्रकारसे मारडालूं इसीअवसरमें उसको रोनेकाशब्द सुनाईदिया और उसको ध्यानसे जो सुना तोजाना कि सैन्ध्रकी स्त्री सुमुखी रोती और विलापकरतीहुई अपने पतिको ढूंढ़ती आतीहै यह जानतेही उसने विचारकिया कि इसका बधहोना कठिनहै और इसकी स्त्री जो इधरआगई तो आपत्ति मचजायगी यह विचारकरतेही उसने तुरन्त अपना स्वरूप मायावी म्लेच्छोंकासा बनालिया और सैन्ध्रको चैतन्यचूर्ण सुंघाकर चैतन्यकिया जबउसकीआंखेंखुलीं तो उसनेपूछा कि मैं यहां क्योंकर आयाहूं प्रहासनेकहा कि मैं देवीखण्डका रहनेवालाहूं एक काममें जाताथा यहां जोआया तो मैंनेदेखा कि एकबहुरूपिया आपका बधकरना चाहताहै देखतेही मैंने उसेललकारा और चाहा कि उसे पकड़लूं परंतु वह अंतर्द्धानहोगया और मैंने आपको चैतन्यकिया यहसुनकर सैंध्रने उसेकंठसेलगाया और कहा कि वह बहुरूपिया प्रहासहोगा उसने मरुतदत्तवस्त्र ओढ़ लियाहोगा आपने मेरे प्राणबचाये मैं आपके इस उपकारको अपने जीवितकी अवधितक न भूलूंगा यहबातेंहोहीरहीथीं कि उसकी स्त्री भी ढूंढ़तीहुई उधरआनिकली और अपने पतिको सजीव देखकर प्रसन्नहुई उससमय सैंध्रनेकहा कि मेरेप्राणोंके बचानेवाले आपहैं नहीं तो आजप्रहासने मुझे मारहीडालाथा यहसुनकर वहनम्रतासेबोली कि श्रीमान्‌कानामक्याहै वहबोला

कि मेरानाम सुज्ञानीहै और प्रपंची भी मुझे बहुतसे कहते हैं यह सुनकर सैंध्र और उसकी स्त्रीने कहा कि॥

चौ०। परम नम्रता युत करि बानी। बोल्यौ सैन्ध्र परम अभिमानी॥
परमुपकार आपु मम कीन्हा। मोको जीवदान जनु दीन्हा॥
ममधन प्राणराज अधिकारा। बचये तुम करि कृपा अपारा॥
यह तव अकथ अनुग्रह भारा। हुइहै नहिं ममशिरसों न्यारा॥
अबकरिकृपाचलहुममसाथा। करहु पवित्र मोर गृह नाथा॥
फल दल मूल जौन गृहमोरे। ताहिपाय बसिये मम धोरे॥
यहसुनिके प्रहास मतिमाना। नम्र बचन बोल्यौ सविधाना॥
उचित नआपुहिकहिबोऐसो। मान बढ़ाइ कह्यो प्रभु जैसो॥
हम कीन्हो सुधरम आदेशा। यामें कहा अनुग्रह लेशा॥
अबकरिकृपा देहुमोहिंशासन। जाऊं जहां मोर प्रभु आसन॥
बोल्यौसैन्ध्र उचितनहिंतोहीं। हर्ष भंग दुख देवो मोहीं॥
यह सुनिकै प्रहास सुज्ञाना। चल्यौसाथकरि बचन प्रमाना॥

जब तीनोंवहांसेचले तब सैंध्रने कहा कि आओ आकाशमार्गसेचलें जिससे बहुरूपियोंकेदुःखसेबचें प्रहासबोला कि इस बनकी शोभा चित्तको प्रसन्नकरनेवालीहै इससे बनकी शोभा देखतेहुए और चित्तको प्रसन्नकरतेहुएचलिये यहसुनकर वहां से तीनोंचले और थोड़ीदूरजाकर उमप्राणयाचक अतिथिने अपनेपाससे एकतांम्बूल पात्रनिकालकर खोला और सैंध्र के आगेकिया वहबोला कि आप ताम्बूलखाइये प्रहासनेकहा कि हमारी आपकी एकहीबातहै आप ताम्बूलखानेमें निषेध न कीजिये यहसुनकर सैंध्रनेएकबीड़ी आपखाई और दूसरीउठाकर सुमुखीकोदी जैसेही उनकीपीक कंठकेनीचे उतरी तैसेही दोनों अचेतहोकर गिरपड़े और प्रहासनेचाहा कि दोनोंको बांधकर अपनी राहलूं परंतु उसीसमयमें ढुन्ढु और कुन्ढुनामी म्लेच्छ जिनको महेन्द्रने भेजाथा वहांआपहुँचे और उन्होंने उनकोबिना देखे ऐसी मायाकी कि तीनों मूर्च्छितहोजायँ कारण यहथा कि उ-

न्होंनेबिचारा कि मायाकर्ताकेपौत्रको तो हमचैतन्यकरलेंगे और अचेतहोजानेसे जो बहुरूपियाउनकेसाथहोगावहभागनसकैगा सोपरमेश्वरकोप्रहासकीबातरखनाथी किइधर तोउसकाबीड़ीका देनाहुआ और उधरउनदोनोंने मूर्च्छाकर मायाकी कि बीड़ीकेप्र-भावसे तो सैंध्र और सुमुखीअचेतहोकरगिरपड़े और उसमोहनी मायासे प्रहासभी अचेतहोगया उससमय वे दोनों म्लेच्छ वहां आये और देखा कि सैंध्र और उसकीस्त्री और एक और म्लेच्छ तीनों अचेतपड़े हैं ह देखकर उन्होंने अपनी मायाका संहार किया उससे प्रहास तो चैतन्यहोगया परंतु सैंध्र और सुमुखीको अनेकउपाय करनेसे भी चेत न हुआ क्योंकि वेतो बीड़ीखानेसे अचेतहुएथे उससमय उनदोनोंने प्रहाससेपूछा कि यह क्याका-रणहै उसनेकहा कि मैंभी इनदोनोंको चैतन्यकररहाथा मैं नहीं जानताहूं कि ये क्योंकर अचेतहुए यदिकोई बहुरूपिया इनको अचेतकरगयाहो तो कुछआश्चर्य नहीं है तुमठहरो तो मैं जलले आऊं यहकहकर वहचाहताथा कि टलजाऊं परंतु उन दोनोंने बिचारकिया कि ऐसा न हो कि यहपानी लेनेकोजाय औरबहुरू-पिये आकर हमको कष्टपहुँचावें अथवा जो इसीम्लेच्छका कुछ कर्त्तबहो इससेइनतीनोंको महेन्द्रके सन्मुखलेचलनाचाहिये यह सोचकर उन्होंने फिर कुछमायाकी कि उससे प्रहास फिर अचेत होगया तब उन्होंने मायाबलसे एक विमान निर्मितकिया और उसपर तीनोंको लिटाकर आपउस बिमानको मायाबलसे लेउड़े जबरक्तबाहिनी नदीकेपार पहुँचे तब उन्होंनेसुना कि महाराज महेन्द्र निष्प्रभभवनके उसरत्नजटित बुर्जपरगये हैं जिसपरसे प्रत्यक्षखण्डकी सेनासब दिखाई देती है यहसुनकर वे दोनोंभी उसी ओरकोचले और उसबुर्जपर पहुँचकर वह विमान महेन्द्र के सामने रखदिया और बिनयकी कि हम दोनों श्रीमहाराजकी आज्ञासे उसपर्वतीय देशमेंगये और गुप्तहोकर हमने मोहनी

मायाकी कि उससे सैंध्रजी और उनकी भार्या और यह म्लेच्छ जो उनके पास पड़ाहुआहै तीनों मोहितहोगये फिर हमने पास जाकर मायाका संहारकिया उससे यह म्लेच्छ तो चैतन्यहोगया परंतु सैंध्र और उनकी भार्याको बोध न हुआ तब हमीं तीनोंको यहांलेआये यहकहकर उन्होंने फिर मायासंहारकर्त्ता मंत्र पढ़ा उसके पढ़नेसे प्रहास चैतन्यहोगया और नेत्र जोखोलें तो देखा कि एकपरमउत्तम बुर्जआकाशसे लगाहुआबनाहै चारों ओर उसमें मणि और रत्नों के समूहजड़ेहैं और ऐसाअद्भुत और उत्तमबनाहै और इसप्रकारसेजगमगारहाहै कि बैकुण्ठकीभीशोभा होगी तो उससे अधिक न होगी महान्उत्तमवस्त्र और आसन जैसे कभी देखे न सुने बिछेहुएहैं नानाप्रकारके अद्भुत अद्भुतअलङ्कारलगे हैं सहस्रोंम्लेच्छ हाथजोड़ेहुएखड़े हैं और एकपरमोत्तम सिंहासनपर महेन्द्र और विचित्रमाया विराजमानहैं॥

वसुकलाछंद। सोगृहअनूप। दिवतुल्यरूप॥ शोभाअपार। अद्भुतप्रसार॥ बरणीनजाय। कोसकहिगाय॥ मणिकेसमूह। बहुरत्नजूह॥ हेजटित तत्र। होभूपयत्र॥ जनुरत्नखान। ताकोबखान॥ नहिंकुंजलाल। करिसकतहाल॥ सुन्दरसुनारि। नवपंचचारि॥ जनुस्वर्गनारि। डोलेंनिहारि॥ मनलेतमोहि। इकदृष्टिजोहि॥

प्रहास चैतन्यहोतेही उठकर सिंहासनके सन्मुखचला आया और साष्टांग दण्डवत्करके परमरुचिर और मनोहरबाणीसे बिनयपूर्बक बोला॥

क०। मायादेशपति श्रीमहेन्द्रको अभंग जगमगत दिनेशको सो तेज अंग अंगमें। लाग्यौही रहतनित निशि दिन जैको चावदान करिबेको रहतचित्त उमंगमें॥ परदल लाखनको नृपको बदन लखि सन्मुखरहि न सकत रण रंगमें। अखरनजाने सोऊ लाखन लहतधनयाचक अयाचीहोत मौजके प्रसंग में॥

हे श्रीमहाराजाधिराज आपके अनुचर आपही तो मायाकरते हैं और फिर आपही उसकासंहार नहीं करसकते हैं यहकहकर

उसने अपनी थैलीमेंसे जलका पात्र निकाला और सबको दि-
खलानेके लिये कुछ पढ़कर फूँका और जलकाछींटा सैन्धऔर
सुन्दरीके मुखपर मारा पानीके पड़तेही दोनोंकीआंखें खुलगईं
और जो उठे तो वहां महेंद्रको देखकर आश्चर्य में रहगये कि
हमको यहां कौन लायाहै उससमय प्रहासने कहा कि आपने
अच्छीमेरी पूजाकी और बहुत उत्तम भोजन कराये कि पकड़ा
हुआ मैं यहांपर आया आप मायाकर्त्ता के पौत्रहैं इससे मुझे
जान पड़ताहै कि आप अपनीभेटमें मेरे प्राणलेंगे तब सैंधने
नमस्कार करके महेंद्रसे पूछा कि हमको यहांकौन लायाहै वह
बोला कि मैंने अद्भुत जालकी पुस्तक देखकर आपको प्रहास
से छुटानेके निमित्त इन्दु और कुन्दुको भेजाथासो उन्होंनेआप
सबको गुप्तहोकर अपनीमायासे मूर्च्छित करदिया और यहां
आप सबकोलेआये और प्रकटहोकर माया इस कारणसे नहीं
की कि आपसे महात्माका मूर्च्छित होना दुर्लभथा यह सुनतेही
सैंधने प्रहासका हाथ पकड़कर महेंद्रसे कहा कि इस मनुष्यने
मेरेऊपर बड़ा अनुग्रह किया और फिर अपने पकड़ेजाने और
प्रहासके हाथसे सुज्ञानीके छुड़ानेका वृत्तांतकहा उसको सुनकर
महेंद्रने सुज्ञानीको उत्तम वस्त्रदिये और बैठनेको सुवर्णका आस-
नदिया और सैंधने अपना मूर्च्छितहोना इन्दु आदिकी माया
से जान और यह ज्ञान उसको न हुआ कि मैं इसी सुज्ञानीकी
बीड़ीखाकर अचेत हुआथा निदान थोड़ीदेर पीछे सैंध बोला
कि मैं अब जाताहूँ और युद्धका प्रारम्भ करताहूँ वह बोला
आप व्यर्थ परिश्रम करतेहैं कुछकाल ठहरिये और मुझकोरत्न-
कूपका मेलाकरने दीजिये वह बोला कि आपकी जो इच्छाहो
सो कीजिये मैं अब अपनीसेना में जाकर ठहरताहूँ और जो
कुछ चित्र मुझसे खिंचसकेंगे वह मैं खींचूंगा यह कहकर वह
मायाकृत बिमानपर अपनीभार्या और सुज्ञानीको बैठाकरचल

दिया और मायाकृत नदीकेपार आया उससमय प्रहासने बि-
चारकिया कि इसकेसाथ जानेमें जो तुमको बिलम्बलगी और
महेंद्रने मेला आरम्भ करदियातो बचाउका कुछ उपाय न बन
पड़ेगा इससे अब यहांसे चलकर कोई उत्तम उपाय रचो यह
सोचकर उसने सैंध्रसे कहा कि मुझको लघुशंका करनाहैआप
बिमान थोड़ी देरके लिये पृथ्वीपर उतारिये उसने वैसाहीकिया
प्रहास उसपरसे उतरपड़ा और बोला कि वह सामने सेनादि-
खाई देती है आपचलिये और पीछेसे मैंभी आताहूं सैंध्रने भी
समझा कि मैं आगेसे चलकर उसकेमान और सन्मान करनेका
सरंजाम पहिलेसे चलकर करूं यह समझकर उसनेउससेआ-
नेकी बाचा भराली और चलागया वहांसे प्रहास अपनानिज
स्वरूप बनाकर सेनामें या और सभामें जाकर उत्तम आसन
पर आसी न हुआ उससमय रानीनिशाकरीने अनुक्रूरके मारे
जाने और बिजय प्राप्तहोनेका वृत्तांतकहा उसको सुनकर वह
बहुत प्रसन्नहुआ और फिर अपनी सबकथाकही और बोला
कि मैं निष्प्रभ भवनके बुर्जपरभी होआया उसकी इस प्रपंच
रचनाको सुनकर सबको आश्चर्यहुआ और सबकोई मेलाहोने
पर अपना अपना बचाउकरनेका उपाय करनेलगे यहां सैंध्रने
सुज्ञानीकी बड़ीराहदेखी और जब वह न आया तबउसने कुछ
मायाकी उससे एकपुतली उत्पन्न हुई उससे कहा कि तू जाकर
जहां सुज्ञानी हो तहांसे बुलाला यह सुनकर वह पुतली हँसी
और बोली कि वह प्रहास बहुरूपियाथा और फिर सबवृत्तांत
उसके छलकरनेकाकहा यहसुनकर सैंध्र चकितहोगया और उ-
धर अनुक्रूरके मारेजानेका वृत्तांत सुनकरबोला कि अब इस
मायाकृतदेशकी आयु पूर्णहोचुकीहै अब यह अवश्य नष्ट होगा
यह कहहीरहाथा कि एकपुतला एक पत्र महेंद्रकालेकर आया
उसको खोलकर जो पढ़ा तोउसमें लिखाथा कि हमको सुज्ञानी

बड़ाबुद्धिमान् और दूरदर्शी जानपड़ता है इससे उसका भो-
जन आदिका सत्कारकरके उसे हमारे पास भेजदीजियेगा हम
उसका मासिक नियतकरके उसको अपना सभासद् बनावेंगे
और प्रतिष्ठादेंगे उसको पढ़कर सैंध्रको बड़ीलज्जा आई और
उसने पत्रकेउत्तरमेंलिखा कि वह सुज्ञानी बनाहुआथा वह प्र-
हास बहुरूपियाथा उसपत्रको पुतला महेंद्रकेपास लेगया जब
महेंद्रने उसेपढ़ा तब अद्भुतजाल देखकर सब वृत्तांत जाना
और कहा कि हाय यहदुष्ट बहुरूपिया कैसे कैसे छल और प्र-
पंच रचताहै और निकलजाताहै और हमसबको अंधाबनाकर
हमारी आंखोंमें धूलझोंकदेताहै सो हेविचित्रमाया अबतुमजा-
कर मायाकर्त्ताकी मुद्रिकालेआओ मैं मेलाकरूंगा और इनवि-
मुखोंमेंसे एककोभी न छोडूंगा यहआज्ञापाकर विचित्रमाया उस
मुद्रिकाके लानेका प्रयत्नकरनेलगी॥

इतिश्रीआगरापुरनिवासिचौरासियागौड़वंशावतंसश्रीपण्डितमोहनला-
लात्मजश्रीपण्डितकुंजविहारीलालकविनाविरचितेविचित्रचरित्रेप्रथम
खण्डेएकादशोऽध्यायः ११॥

बारहवां अध्याय॥

महेन्द्रकेपास अद्भुत मिथ्या ईश्वरका पत्रआना और वाणवेगीका उ-
सकी सहायताके लियेजाना और महाराज शत्रुंजय से युद्धहोना और
वैष्णवीसेनाके बहुरूपियोंका छलकरना और नागकेपुत्र कीर्तलका चढ़कर
रानी निशाकरीपरआना और प्रहासका उसको वधकरना और विचित्र-
मायाका मायाकर्त्ताकी मुद्रिकाकालाना महेन्द्रका अपनेमांससे बलिप्रदान
करना और रत्नकूपपर मेलाहोना और सबमायाकृतदेशके मायावियोंका
उस मेलेमेंआना और रानीनिशाकरीकी सबसेनाका कैदहोना और प्र-
हासका छलकरके उसको छुड़ाना और मेलेका लौटना और भागना
रानी निशाकरीका और महेन्द्रका पीछाकरना फिर रानी निशाकरीका
धोखादेकर भागना फिर महेन्द्रका पीछाकरना और रानी निशाकरीका
एकम्लेच्छके यहांजाकर छिपना और प्रहास और मायावतीका नानाप्र-

धारके मायाकृत चरित्र देखतेहुये प्रभाकरी मायादेश में महाराज काले-न्द्रके पासजाना॥

जय० छं० । जेनरश्रुतिमारग अनुकूल । तजत न कबहुं धर्मकी मूल ॥
तेनर अंतकाल को पाय । निबसत स्वर्गलोकमें जाय ॥
भोगततहांसकलदिवभोग । जरामृत्यु सों रहित अरोग ॥
सहितअप्सरनसहआनन्द । विहरतपीवत मधु मकरन्द ॥
क्षुधा पिपासादिकसों हीन । रहत सदा आनन्दासीन ॥
रहत हृदयमें ज्ञान प्रकाश । सकल अविद्या होतविनाश ॥
हृदय चक्षुसों वैठेतत्र । निरखत रहतहोत जो यत्र ॥
सोई परम मधुर रसपान । मोहिं देहु वागीश सुजान ॥
पीवतजाके नशै बिकार । देखों माया चरित अपार ॥
वर्णनकरों सुकथाअनूप । दरशावों ताको नव रूप ॥
सोउत्तमइतिहासमझार । वनै मनोहर रुचिर बजार ॥
नाना कथा सुमारग तत्र । नानाचरित दुकान विचित्र ॥
मोह प्रेम रसके वहुछंद । और वीररस आदि अमंद ॥
तेहैं नानाविधि पकवान । धरे दुकाननमें मिष्ठान ॥
बहुप्रकारको कथनसुयुद्ध । अरु वागनिको वर्णन शुद्ध ॥
मायाकृत जेमन्दिर तत्र । तिनको वर्णनपरम विचित्र ॥
तेसबविविधभांतिकीवस्तु । धरीं दुकानानि परमप्रशस्तु ॥
श्रोतापाठक तेहि बाजार । बिचरतचहुंदिशि करें विहार ॥
जोपदार्थ जाको स्वीकार । सो तेहिलेयमहामुद धार ॥
हर्षे कुंजलाल सो देखि । सफलपरिश्रमनिजअवरेखि ॥

इस विचित्र और मनोहर कथाको सौरभ महाराज ने इस प्रकारसे वर्णनकियाहै कि जब रानी विचित्रमाया मायादेशाधिप महेन्द्रकी आज्ञानुसार मायाकर्त्ताकी मुद्रिकालाने को तय्यारहुई परंतु गईनहींथी कि उसीसमय मायाकृत पुतला अद्भुतकापत्र लेकर आया महेन्द्रने उस पत्रको आंखोंसे लगाया और शिरपररक्खा और फिर पढ़ा तो उसमें लिखाथा कि हे हमारे प्रियभक्त हमको वैष्णव और बहुरूपियोंने बड़ादुःख दे रक्खाहै और तू हमारी सहायतानहीं करसकताहै हमने अठारह

सहस्र देशोंको इसीकारणसे छोड़ाथा कि ये दुष्ट वैष्णव तेरेही हाथसे बधहों और तेरा यशहोवै इससे त शीघ्र किसीबड़ेप्रबल मायावीको हमारी सहायताको भेजनहीं तो हमतुझसे अप्रसन्न होकरकिसी औरदिशाको चलेजायँगे उसको पढ़कर महेंद्रनेकुछ मायाकी कि उससे एक बादल प्रकटहुआ और एकपीतवर्णका म्लेच्छ उड़ताहुआ महेंद्रके सन्मुख आया और भेटदेकर सन्मुखहाथजोड़कर खड़ाहोगया उससेमहेंद्रने कहा कि हेवाणवेगी तुम परमेश्वरकी सहायता करनेकोजाओ परन्तुयहां मेलाहोने वालाहै सो इतना शीघ्र परमेश्वरके शत्रुओं का बध करना कि मेलेमें लौटकर आजाओ यह आज्ञापाकर वह अपने घरआया और वहांसे बारहसहस्र म्लेच्छ अपनेसाथ लेकर चलदियापरन्तु अब महाराज शत्रुंजयकी सेनाकाहाल सुनिये कि शत्रुंजय के पुत्र राजपुत्र वायुविक्रमनेमहाराजसे अहेरखेलनेकी आज्ञा लेकर अहेरका सबसरंजाम ठीककरनेकी आज्ञादी उसीसमय से लोग श्येनआदिक अहेर करनेवाले पक्षियों को लेकर वहां आगये और बहुतसे सेवक अहेर करनेवाले श्वान और चीता आदिकोलेकर आगेबढ़े यह अहेरका सरंजाम उससमयसेहोने लगाथा कि जबसे आकाशरूपी आखेटक अर्थात् अहेरियाने निशारूपीजालमें सूर्यरूपी कंचनबर्णके पक्ष रखनेवाले पक्षीको फँसाकर पश्चिमदिशारूपी पिंजरे में बन्द करदिया था ॥

दो० । बीत्यो दिवस भई निशा भये दिवाकर अस्त ।
उदयहोय नभ इन्दुतब कीन्हप्रकाशप्रशस्त ॥

अन्तको वहसमय आया कि सूर्यरूपीपक्षी निशारूपीघोंसले से निकलकर उड़गया और दिनरूपी आखेटकने अन्धकाररूपी जालको लपेटकर तारागणरूपी अन्नकणों को आकाशरूपी पृथ्वीपरसे बटोरलिया ॥

सो० । निकसे रवि जब आय क्षीण तेज ताराभये ।

तम सबगयो नशाय भयो इन्दुबिन ज्योति तब ॥

प्रातःकालहोतेही राजपुत्र नित्यकर्म से निबटा और वायु वेगी अश्वपर सवारहोकर अहेरखेलनेको चलदिया और प्रातःकालकी वायुको स्पर्शताहुआ और वनकी अपूर्व शोभाको देखताहुआ वहांपहुंचा जहां नानाप्रकारके पक्षी वनमें रहतेथे वहांजाकर उसने श्येनआदि अहेरकरनेवाले पक्षियोंको छोड़ा और नानाप्रकारके पक्षियोंको अहेरकिया यहांतक कि उसवन में पक्षी भयभीतहोकर अपने२ घोंसलोंको छोड़छोड़कर भागगये और उससमय वहवन पक्षियोंसे रहितहोगया ॥

जय०छन्द। पुनिपुनिश्येनजु झपटतधाय। गहिगहिपक्षिनलावतजाय ॥
श्येन श्येन प्रति होत सक्रुद्ध। हनिहनि चंचुकरतदोउयुद्ध ॥
राजपुत्र आमिष दिखराय। टेरत तिनहिं बुलाय बुलाय ॥
आमिष भक्षि उड़त बलपूर्ण। धरतखगनिको पुनिपुनितूर्ण॥

इसप्रकारसे पक्षियोंका अहेरकरके जब पक्षी न रहे तब राजपुत्र मृगोंको अहेरकरनेलगा और चीता और अहेरी श्वानों को छोड़दिया दैवयोगसे वहांहोकर एकमृग निकला राजपुत्र ने उसके बाणमारे परन्तु वह बाणखाकर भागाचलागया राजपुत्र ने उसकेपीछे अपनाघोड़ा डालदिया और थोड़ीहीदूर गयाहोगा कि सामने से एकमनुष्य उत्तमवस्त्र धारणकियेहुए वायुवेगी उत्तम घोड़ेपरसवार हाथ में धनुषबाण खींचता हुआ प्रकटहुआ राजपुत्र ने उससे पुकारकरकहा कि यहमृग मेरा अहेरहै तुम इसके बाण मतमारना परन्तु उसमतिहीन ने न माना और बाणमारकर उसमृगको गिरादिया राजपुत्र भी उसके समीपगया और बोला कि हे वीर तुमने यह शूरता और धर्म के विपरीत काम किया कि नाहीं करनेपरभी तुमने पराये अहेरको ग्रहणकिया वहबोला कि अरे कालग्रसित यह

वन सबमेराहै और मेरेराज्यमेंहै तू कौन है जो मुझको निषेध करताहै और यहां तू अहेरखेलने किसकी आज्ञा से आया है अच्छी इसीमेंहै कि अपने कानदबायेहुए सीधीराहले नहीं तो तू माराजायगा और तेरे पक्षीरूपी प्राण मृत्युरूपी जालमें फँसजायँगे मैं रक्तभक्षी पर्वतीका दासहूं जो इसवनका स्वामी है और राजामहावीर के यहांसे अधिकारपाये हुएहै इन कठोर वचनोंको सुनकर राजपुत्रने क्षमाकिया और अपना बाण उस मृगके शरीरमेंसे निकालकर चलनेलगा परन्तु उसदासने जब उसबाणकोदेखा अपने प्राणोंको उसका लक्षबनाया और राजपुत्र से बोला कि यहबाण मुझे प्रिय है ला मुझेदेदे और तू अपनीराहले यहसुनकर राजपुत्रबोला कि यद्यपि हम राजपुत्र हैं और देशोंको विजयकरते फिरते हैं तथापि तेरेकहनेसे अब जाते हैं क्योंकि शूरवीरोंको पहिले क्षमाकरना सदैव उचित है परन्तु अबतू बाण हमसे मांगताहै तो आयुधोंका छिनवादेना कायरोंका कामहै इससे जा अपनी राहपकड़ और मुझसे रार मतबढ़ा नहीं तो माराजायगा यहसुनकर उसदासने एक भी बातका उत्तर न दिया और खड्गनिकालकर राजपुत्रपरदौड़ा राजपुत्रने स्थान त्यागकर प्रहारको व्यर्थकिया और बोला कि वायुविक्रमी है ममनाम। वधिपठवत तोहिं यमकेधाम॥ और यहकहकर राजपुत्र ने अपनी चन्द्रमाकीसी प्रभारखनेवाला खड्गनिकाला और प्रहारकरनेको ऊंचाउठाया उसकी प्रभाको देखकर वहदास भयभीतहुआ और घोड़ेकी रासफेरकर भागा उससमय राजपुत्रने ललकारकरकहा कि अब मैं अपना अहेर कहां जानेदेताहूं और उसका पीछाकिया उसके पीछे पीछे चार सहस्र सवार उसे ढूंढ़तेहुए आरहेथे वे वहां आगये और उन से उसदासनेकहा कि इस अपमानीको घेरकर मारडालो यह आज्ञापातेही उन सवारों ने राजपुत्र को घेरलिया उससमय

राजपुत्र धनुषबाण और खड्ग निकालकर उस समुद्ररूपी स-वारोंकी सेनामें प्रवेशकरके युद्धकरनेलगा ॥

जय०छन्द। सन्मुखदक्षिणबामप्रहार। करिकरि मारत राजकुमार॥
चहुंदिशि घूमि दर्षि कोदण्ड। करतशीशभुजपगअरिखण्ड॥
गहि असि कबहुंसो उन्नतकाय। द्विधाकरत अरिके समुदाय॥
पाश फेंकि काहूको कर्षि। करतछिन्नशिर बहुबिधिधर्षि॥
कुंजलाल यहि बिधिको युद्ध। करतभयो सो भट अतिशुद्ध॥

राजपुत्रकीसेना जो पीछे रहगईथी वहभी उससमय आन पहुंची और अपने स्वामीको युद्धकरताहुआ देखकर उनसवारों से लड़नेलगी उससमय बड़ा कोलाहलहुआ और राजपुत्र उक्तप्रकार से उनसवारोंका बधकरताहुआ अपने शत्रुके पास पहुंचा उसने राजपुत्रपर खड्गका प्रहारकिया राजपुत्र ने उसके प्रहारको बचाया और फिर ऐसा खड्गमारा कि वहदास अश्व सहित दोखण्डहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और मरकर यमलोक में पहुंचा और सेना भी उसकी सब कटचुकीथी और जो थोड़े से योद्धा रहगयेथे वह उसकी लोथको लेकर वहांसेभागे इस के पीछे राजपुत्र अहेर खेलताहुआ अपने डेरोंको लौटआया और स्नानकरके और नवीनवस्त्र धारणकरके सभामें आकर बैठा उसकी सेनाने भी आकर कमरखोली और विश्रामकिया और राजपुत्र वामभागमें बैठकर नृत्यदेखनेलगा और महाराज शत्रुञ्जयसे इसयुद्धकाहाल कुछ न कहा उधर वे सवार उसदास की लोथको लेकर रक्तभक्षीके पासगये और वह युद्धकी व्यवस्था सुनकर क्रोधकेमारे लालहोगया और उसीसमय अस्सीसहस्र पर्वती म्लेच्छोंको आज्ञादी कि शीघ्र तय्यारहोकर परमेश्वर के पासचलो यह आज्ञापाकर सेना तय्यारहुई और वह निर्बाण वाद्य बजवाकर वहांसे घोड़ेपर सवारहोकर सेना सहितचला॥

जय०छन्द। बाजतबहुबिधि बाद्यअमान। फहरावतबहुचित्र निशान॥

धनुशायकचालिआदिकशस्त्र। गदाभल्लआदिकबहुअस्त्र॥
धारण किये सकल बरवीर। अतिरणकर्कशअतिरणधीर॥
चले बजावत बाजे घोर। छायो नभमें तिनको शोर॥

मार्गमें उस पर्वती राजाने अद्भुतको विनयपत्रलिखा और उसमें अपने दासके मारेजानेका सबवृत्तान्त वर्णनकिया जब वहपत्र अद्भुतके सन्मुखपढ़ागया तब उसने प्रसन्नहोकर बहुत से शूरवीरोंको उसकी आगौनी करनेकोभेजा परन्तु वहां वैष्णवीसेनाके दूत लगेहुएथे उन्होंने उसपत्रकोसुना और आकर महाराज शत्रुञ्जय से सबवृत्तान्त वर्णनकिया उसको सुनकर महाराज ने वायुविक्रम से पूंछा कि तैंने हमसे इसयुद्धकी व्यवस्था नहींकही वहबोला कि इस थोड़ीसी बातका कहना मैंने कुछ उचित न समझा अब जो कुछ मैंने कियाथा वह आपही प्रकटहोगया निदान यहां तो यह वार्त्तालाप होरहाथा और वहां वे शूरवीर रक्तभक्षीको आदरपूर्वक लिवाकरलाये डेरे और तंबू उसकेलिये खड़ेकियेगये और उसने सभामें प्रवेशकरके अद्भुत की पूजाकी वहांसे उसको प्रसादीमिली और वह उससभा में बैठकर मद्यपान करनेलगा उससमय वहां नृत्यहोरहाथा और सबमद्यपान कररहेथे निदान दिन तो इसीप्रकारसे आनन्द में बीता और जिससमय प्रकाशरूपी राजा सूर्यरूपी रक्षकके चलेजानेसे संसाररूपी रणभूमिसे भागकर पश्चिमरूपी पर्वतमें जाकरछिपा और अन्धकाररूपी विजय प्राप्तकरता आकाशरूपीराज्यपर बैठा॥

चौ०। रवि जब दिवस अन्तगतिपायो। अन्धकार चहुंदिशि जगछायो॥
ताको बलगाहि इन्दु अकाशा। करनलग्योअतिअमलप्रकाशा॥

उससमय रक्तभक्षी और अद्भुतकी सेनामें युद्धके बाजे बजनेलगे उनको सुनकर राजदूत दौड़कर महाराज शत्रुञ्जय के पासआये और विनयपूर्वक बोले॥

दो०। धन प्रताप ऐश्वर्यता तेजसु कीर्त्ति प्रपूर।
रहैं अखण्डित आपके जबलगि महि शशिसूर॥

आज शत्रुसेनामें युद्धके वाद्यबजरहेहैं और प्रातःकाल सब युद्धकरनेको रणभूमिमें आवेंगे यहसुनतेही महाराज शत्रुञ्जय ने भी युद्धके वाद्यबजायेजानेकी आज्ञादी आज्ञापातेही सुवास ने वाद्यालयकोखोला और कार्तिकेयी दुन्दुभीको बजाया जिसका शब्द चौंसठकोसतक जाताथा उसके बजनेसे शब्द आकाशमें गूंजनेलगा और यह जानपड़ताथा कि मानों संसार हिलरहा है॥

जय०छन्द। परदलबाजनकी धुनिघोर। सुनि दुन्दुभी बजी यहिओर॥
ताको रव अति कठिन कराल। महिसों दिवलों व्यापोहाल॥
भये सभीत सकल नर नारि। अरिदलकोहिय लरज्योहारि॥

उसको सुनकर सबशूरवीर युद्धकीतयारी करनेलगे परन्तु वैष्णवीसेनासे वायुवेगीनाम बहुरूपिया शत्रुसेनामें कुछ प्रपंच रचनाकरनेको भेषबदलकरगया उससमय रक्तभक्षी युद्धके वाद्यबजवाकर उस मिथ्या ईश्वरकी सभासे उठकर सेनाका प्रबंध करनेको अपने डेरेमें आयाथा वह बहुरूपिया एकसेवकका स्वरूप धारणकरके उसके पासगया और बोला कि चलिये महाराज आपका स्मरणकररहेहैं वहबोला कि मैंतो अभीचलाआताहूं बहुरूपिया बोला कि काम आवश्यकहै परमेश्वरने बहुत प्रकारसे कहा है कि अभी बुलालाओ यह रक्तभक्षी यहांका रहनेवाला तो थाहीनहीं जो पहिंचानलेता कि यह सेवक परमेश्वरका सेवक है इसकारणसे उसकेसाथहोलिया और जब एकांतमें पहुंचा तब उसने मूर्च्छाकरचूर्णसे उसे मूर्च्छितकरदिया और एकवस्त्रमें उसको गठरीकीभांति बांधकर रात्रि के अन्धकार में उठता बैठताहुआ उसे महाराज शत्रुञ्जय के सामने लेआया और महाराज ने अभी सभा विसर्जन नहींकीथी कि

उसने उसगठरी को महाराज के सन्मुख रखकर सबवृत्तान्त कहा श्रीमहाराज ने आज्ञादी कि इसको चैतन्य करदो क्या आश्चर्य है जो मेरेसमझानेसे यह सुमार्गपरचले यह सुनतेही उस बहुरूपियेने चैतन्यवर्त्तिका सुंघाई उसके सूंघने से उसकी आंखेंखुलगई और उसनेचाहा कि उठकरबैठूं परन्तु वह पाश से बँधाहुआथा इससे उठ न सका तब उसने चारोंओरको दृष्टिकी कि मैं कहांहूं और देखा कि एक परमसुन्दर सभा चारों ओर बनीहुई है॥

चौ०। सिंहासन इकपरम सुहायो। मणि रतननिको रुचिरबनायो॥
है तेहि सभामध्य में राखो। रविसम तेज जासु जग भाखो॥
तापर तेजवन्त स्वाधीना। पुरुष सिंह इक नृप आसीना॥
महा विक्रमी वरणे योधा। अरु सुसभासद सकल सुबोधा॥
यथायोग आसननि विराजे। अस्त्र शस्त्र बहुबिधि के साजे॥

यद्यपि वह बहुतभयभीतथा तथापि उसने हृदयको सावधानकरके कहा कि हे शत्रुंजय आपबहुरूपियोंके भरोसेपर अच्छा युद्धकरतेहैं और हरएकको पकड़वाकर उसकी प्रतिष्ठाभंगकरते हैं यहसुनकर महाराज शत्रुंजयनेकहा कि मैं अपनेधर्मकी शपथखाकर कहताहूं कि मैंने इसबहुरूपियेको तेरे पकड़नेकेलिये नहींभेजा और अब जो तूआगयाहै तो तेरीप्रतिष्ठा में लेशमात्र भी अंतरनआवेगा आगतंवःसुस्वागतम् यहकहकर महाराजने पाशखोलनेको आज्ञादेनाचाहा परन्तु उसनेबलसे पाशको तोड़डाला उससमय महाराजनेउठकर उसेकंठसेलगाया और अपनेबराबर बैठनेको आसनदिया और बहुतकुछ उसका सन्मानकिया वह महाराजशत्रुंजयके परम आदर और सन्मान और वैष्णवीसेनाके राजाधिराजके तेज और वैभवको देखकर चकितहो गया और चित्तमेंकहनेलगा कि ऐसेहीप्रतापवान् और तेजस्वीराजाके आधीनहोकर रहनायोग्यहै जिसकीआज्ञामें सं-

मारेहै परन्तु ऊपरेमनसे उठकरखड़ाहोगया और बोला कि हे शत्रुंजय अबमैं बिदाहोताहूं यहसुनकर महाराजने उसको बहुतसेरत्नदिये और एकअश्वदिया कि उसपर सवारहोकर वह अद्भुतकी सभामेंगया और वहांउसने महाराजशत्रुंजयकी बड़ी प्रशंसाकी यहसुनकर चित्रांगदबोला कि अबतुम्हारा रंग भद-रंगहोगयाहै आधे वैष्णव तो होआयेहो अब जानपड़ताहै कि कलसे उसीसभामें बैठोगे यहसुनकर रक्तभक्षी हँसकर चुपहो-रहा उधर महाराजाधिराजने सभाको बिसर्जनकिया और शूर बीर सबयुद्धकीतयारी करनेलगे धनुषोंपरनईज्या चढ़ाईतर्कसों में प्रकारप्रकारके तीरभरेखड्गोंपर धारधराई और भल्लोंको शि-लापरपैनाया निदान रात्रिभर यहीतयारीहोतीरही और जिस समय निशारूपीस्त्रीने अंधकाररूपी घूंघटकोखोलकर सूर्यरूपी मुखदिखलाया॥

सो० भयोनिशातम दूरि निकसतही दिननाथके ।
प्रभागई जगपूरि अतिनिर्मल अरुस्वच्छअति ॥

उससमय दोनोंओरकीसेना अनीअनी और पत्तिपत्तिहोक-र क्रमपूर्वक रणभूमिमें आनेलगी और सबसेनापति और म हाराजशत्रुंजय स्नानपूजनआदि कर्मोंसे निवृत्तहोकर श्री महा-राजाधिराजके शयनमन्दिरपर गये उसदिन श्रीमहाराजाधिराज भी शीघ्रनिकलकर बाहिरआये सबने दण्डवत प्रणाम किया और वहांसे श्री महाराजाधिराज सहित रणभूमिकी ओरचले उससमय अपूर्वही आनन्दथा वह प्रातःकालकासमय वायुका फरफरचलना फूलोंकाफूलना पक्षियोंका चहचहातेहुए घोंसलों से निकलना रंगबिरंगी सेनाकी पत्तियोंका पृथक् पृथक्होकर रणभूमिकी ओरजाना ध्वजाओंका फहर[illegible]प्रकारके बा-द्योंकाबजना शूरवीरकागर्जना और उसशा[illegible]तुमें बीररस के पदोंकोसुनकर बीररसमें भरना और बीरताके बाक्यबोलना

सारहै परन्तु ऊपरेमनसे उठकरखड़ाहोगया और बोला कि हे शत्रुंजय अबमैं बिदाहोताहूं यहसुनकर महाराजने उसको बहुतसेरत्नदिये और एकअश्वदिया कि उसपर सवारहोकर वह अद्भुतकी सभामेंगया और वहांउसने महाराजशत्रुंजयकी बड़ी प्रशंसाकी यहसुनकर चित्रांगदबोला कि अबतुम्हारा रंग भदरंगहोगयाहै आधे वैष्णव तो होआयेहो अब जानपड़ताहै कि कलसे उसीसभामें बैठोगे यहसुनकर रक्तभक्षी हँसकर चुपहोरहा उधर महाराजाधिराजने सभाको बिसर्जनकिया और शूर बीर सबयुद्धकीतयारी करनेलगे धनुषोंपरनईज्या चढ़ाईतर्कसों में प्रकारप्रकारके तीरभरेखड्गोंपर धारधराई और भल्लोंको शिलापरपैनाया निदान रात्रिभर यहीतयारीहोतीरही और जिस समय निशारूपीस्त्रीने अंधकाररूपी घूंघटकोखोलकर सूर्यरूपी मुखदिखलाया॥

सो० भयोनिशातम दूरि निकसतही दिननाथके।
प्रभागई जगपूरि अतिनिर्मल अरुस्वच्छअति॥

उससमय दोनोंओरकीसेना अनीअनी और पत्तिपत्तिहोकर क्रमपूर्वक रणभूमिमें आनेलगी और सबसेनापति और महाराजशत्रुंजय स्नानपूजनआदि कर्मोंसे निवृत्तहोकर श्री महाराजाधिराजके शयनमन्दिरपर गये उसदिन श्रीमहाराजाधिराज भी शीघ्रनिकलकर बाहिरआये सबने दण्डवत् प्रणाम किया और वहांसे श्री महाराजाधिराज सहित रणभूमिकी ओरचले उससमय अपूर्वही आनन्दथा वह प्रातःकालकासमय वायुका फरफरचलना फूलोंकाफूलना पक्षियोंका चहचहातेहुए घोंसलोंसे निकलना रंगबिरंगी सेनाकी पत्तियोंका पृथक् पृथक्होकर रणभूमिकी ओरजाना ध्वजाओंका फहराना नानाप्रकारके बाद्योंकाबजना शूरवीरकागर्जना और उसशीतलवायुमें बीररसके पदोंकोसुनकर बीररसमें भरना और बीरताके बाक्यबोलना

शिरपरलगाया उसनेभी चर्मपर उस प्रहारको रोका परन्तु वह खड्ग उसकीचर्मको काटकर उसकेशिरपर चारअंगुलप्रमाण ा घाउकरताहुआ गैंड़ेकी ग्रीवापरपड़ा और उसे उसकेशरीर से पृथक् करदिया यह देखकर रक्तभक्षी गैंड़ेपरसे कूदपड़ा और खड्गउठाकरचला कि राजपुत्रके अश्वकेपैरकाटडालूं परंतुराजपुत्र उसका भावजानकर घोड़ेसेउछलकर पृथ्वीपरआगया और दोनों वीरचाहतेथे कि एकदूसरेसे लिपटकर मल्लयुद्धकरें कि इतने में दुंदुभीआदि बाद्योंकेबजनेका शब्दआकाशसे सुनाई दिया और नानाप्रकारके म्लेच्छ नानाप्रकारके मायाकृत बा नोंपर बैठेहुए आकाशमार्ग सेआतेहुये दिखाईदिये उनको देखकर रक्तभक्षी घायलहोनेके कारणसे ठहरगया और दोनों वीर उनको देखनेलगे बारहसहस्र म्लेच्छ माया त चमत्कार दिखातेहुए चलेआतेथे और नके आगे आगे बाणवेगी उनका नेता महानागपर सवार परमभयानक रूपचलाआताथा उसने वहां पहुँचकर उस मिथ्याईश्वरकी पूजाकी और विनयपूर्वक बोला कि मैं मार्गके श्रमसे आज विश्रामकरके विगतश्रमहोजाऊं तो कलइनसब वैष्णवोंका अंतकरदूं अबआप युद्धनिवृत्तीके बाद्यबजवाकर फिर चलिये यह सुनकर अद्भुतने भी सोचा कि रक्तभक्षी घायल होचुका है पलट चलनाही अच्छा है यह सोचकर बोला कि आजके युद्धका भविष्य हमने विजय रचा था सो उसको मेटकर अब हमने सेनाकालौटआना रचदिया इससे सेनालौटआवे यह आज्ञाहोतेही युद्ध निवृत्तीके बाद्य बजायेगये और रक्तभक्षी राजपुत्रके सन्मुखसे फिर आया और महाराज शत्रुंजय जय दुन्दुभी बजवाकर अपने डेरों को गये दोनों सेनाओंने कमरखोली और बिश्रामकिया और वह म्लेच्छी सेनाभी डेरे तम्बूखड़े करके उतरी महाराज शत्रुंजयने रात्रिके समयकी सभाकी नागाकी और सब सेनापति और शूरबीरोंने

अपने २ डेरों में रहकर बिश्राम किया और इधर वाणवेगीभी अद्भुतकी सभामें बैठकर नाचदेखनेलगा और उसने शत्रुंजयकी सेनाकाहाल पूछा तब चित्रांगदने प्रारम्भसे सब वृत्तांतवर्णन करके कहसुनाया परन्तु अब मायाकृत देशका वृत्तांत सुनिये कि महेंद्र जब बाणवेगीको भेजचुका तब बिचित्रमाया माया-कर्त्ताकी अंगूठी लेनेको जानेलगी परन्तु महेंद्रने उससेकहा कि थोड़ीदेर ठहरजाओ और लेखकको बुलाकर आज्ञादी कि दो पत्र लिख एक तो रानी बिम्बरूपाकेनाम और दूसरा बिचक्षण के नाम और दोनों में यह लिखो कि तुम परमेश्वरकेपास रत्ना-कर पर्वतपर जाकर उनकी सहायताकरो अथवा जो वहां न जाओ तो यहांआकर शत्रुओंसे युद्धकरो क्योंकि रानी बिचित्र माया मायाकर्त्ताकी मुद्रिकालेने सप्तब्याधि भवनकी ओर जाती हैं यह आज्ञापाकर उसलेखकने दोपत्रलिखे महेंद्रने उन पत्रों को दो म्लेच्छोंके द्वारा दोनोंकेपास भेजदिया उनमेंसे बिचक्षण ने तो लिखा कि मैं आताहूं परन्तु रानीबिम्बरूपाने जो बिम्ब-नगरकी रानीथी और जो नगर रत्नाकरपर्वतके समीपथा जहां अद्भुत मिथ्याईश्वर ठहराहुआ था उसने यह उत्तरलिखा मैं आपकीदासी परमेश्वरके समीपहूँ इससे जो परमेश्वर मुझको कोई प्रतिष्ठित मनुष्य भेजकर बुलवावेंगे तो मैं जाकर उनकी सहायता करूंगी नहीं तो न जाऊंगी इस उत्तरकोपढ़कर महेंद्र ने बड़ाक्रोधकिया परन्तु बिम्बरूपा प्रचण्डा म्लेच्छी की सुहृद थी जिसको प्रहासनेभीमविक्रमके पकड़ेजानेके समय बधकिया था और इसीकारणसे महेंद्र उसको अपनी बड़ी बूढ़ी समझ-ताथा और उसका सन्मानभी बहुत करताथा इस कारणसेउस ने क्रोधका लोपकिया और फिर कुछबिचारकर एकपत्र अद्भुत मिथ्याईश्वरको लिखा उसका यह आशयथा कि हे परमेश्वर आपके समीपही बिम्बनगर नामीएक नगरहै वहांकी रानीका

नाम बिम्बरूपाहै आप उसकेपास अपनेकलिको भेजकर उसे बुलवाय लीजिये उसने आपकेपास आनेकेनिमित्त यहीलिखा है कि जो परमेश्वर मुझको कोई प्रतिष्ठित मनुष्य भेजकर बुलावेंगे तो मैं जाकर उनकी सहायता करूंगी यह प-लिखकर उसने उन्हीं दोनों म्लेच्छोंकोदिया जो पहिले पत्रलेगयेथे और कहा कि इसको परमेश्वरकेपास लेजाओ यह आज्ञा पाकर वे म्लेच्छ पत्रलेकरचले और जब नदीकेपार उतरे तब उन्हों ने मंत्रकिया कि आओ निशाकरीकी सेनाभीदेखतेचलें औरपृथ्वी पर उतरकर सेनादेखते हुए पैदल होलिये वहां प्रहास मेलेसे बचनेकामंत्र कररहाथा कि अकस्मात् वह उठकर बाहरआया कि देखूं शत्रुसेनामें क्या प्रबन्धहोरहाहै और बाहर आकर दो म्लेच्छोंको सेनासे निकलकर जातेहुए देखा प्रहास उनकेपीछे पीछेहोलिया और एकएकांत स्थानमें बैठकरउसनेअपनास्वरूप म्लेच्छें कासा बनाया और लपककर फिर उन म्लेच्छोंकेपास गया औ नमस्कारकरके बोला कि आप दोनोंको एकदिन तो हमने महाराज महेंद्रकी सभामें देखाथा और एक आज देखा है कहिये कहांके आप पधारे हैं उन्होंने उसे अपनी ओरका मनुष्य जानकर सब वृत्तांत कहसुनाया उसको सुनकर प्रहास बोला कि आज आप दोनोंसे बन्तदिनों पीछे भेटहुईहै इससे आप मेरेघरको चलकर पवित्रकीजिये और थोड़ीसी मद्यपा- करकेचले जाइयेगा उन्होंनेहाथजोड़कर कहा कि आपकी कृपाहै परन्तु हमको जाने में देरहोगी प्रहासने कहा कि अच्छा थोड़ी सी मद्यमेरेपासहै एकएकपात्रउसीकापी लीजिये और फिर चले जाइये यह सुनकर वे म्लेच्छठहरगये और प्रहासने उनदोनोंको एकएक पात्र मूर्च्छाकर चूर्णमिलीहुई मद्यकादिया दोनोंम्लेच्छ उसमद्यको पीतेही मूर्च्छितहोगये तब प्रहासने उनके झोलेमेंसे महेंद्रका दियाहुआ पत्र निकाल लिया और उसको फाड़कर

फेंकदिया और आपने दूसरापत्र उन्हीं हस्ताक्षरों में लिखाजि-
सका यह आशयथा कि हे परमेश्वर ये म्लेच्छ बड़े पाखण्डी
और खोटे हैं मैं इनको यहां दयाभावसे दण्ड नहीं देसक्ताहूँ
इससे आपके पास भेजताहूँ आप इनके नाक कान कटवाकर
अच्छीप्रकारसे इनकोपिटवाइयेगा और निकालदीजियेगा और
एक पत्र चित्रांगदको अपने नामसे लिखा उसका आशय यह
था कि अरे वर्णसंक" मुझको यहां आयेहुये इतने दि" हुए
परंतु तैंने आजतक उपानाहखानेका कर मुझको नहीं भेजा
परमेश्वर चाहताहै तो इस मायाकृतदेशको विध्वंसनकरके मैं
आताहूँ "ला जोकुछ मेरा कर इ"ने दिनोंका चाहिये वह सब
कौड़ी कौड़ी बटोररखियो न"ीं तो मैं आकर तेराभी मोहनभोग
उसीप्रकारसे बनाऊँगा जिसप्रकारसे तेरेबापका बनायाथा नि-
दान दोनों पत्र लिखकर उसने जोपत्र अद्भुतकेनामथा उसको
महेंद्रकी मुद्रासे मुद्राङ्कितकिया जो उसने छलकरनेको बनाली
थी और उसके नीचे इतना और लिखदिया कि मैंने ए" पत्र
चित्राङ्गदको भी लिखकर इन म्लेच्छोंको दियाहै जो येम्लेच्छ
अपनी वाचालतासे उस पत्र"ोनदें तो आपइनकी नंगाझोरी
लेकर पत्रलेलीजियेगा और उस पत्रको चित्राङ्गद सभामें न
पढ़ें अलगलेजाकर पढ़ें निदान उसने अद्भुतके नामके पत्रको
तो उनके झोलेमें रखदिया और जो पत्र चित्राङ्गदके नामसे
था "सको उनकी कमरसे बांधकर "अप"ा मार्गलिया थोड़ीदेर
पीछे जब वे म्लेच्छ "ैतन्यहुए तब शोचनेलगे कि यह मद्यही
बड़ी कड़ीथी कि जिससे हम मूर्च्छित होगये अथवा वह मद्य
पिलानेवाला कोईबहुरूपियाथा जो हमको मूर्च्छाकरचूर्णपिला-
गया फिर बोले कि जो बहुरूपियाहोता तो हमको मारडालता
और लूटलेता परन्तु हमारी तो सबचीजें मौजूदहैं यहकहकर
उन्होंने झोलेमें हाथडालकर पत्रदेखा तो वह उनकोमिला तब

दोनोंबोले मायाकर्त्ताकी सबप्रकारसे कृपाहै चलोअब देरहोती है निदान वहांसे चलकर बड़ेमार्ग को उत्तीर्णकरके उससमय वहां पहुँचे कि जब अद्भुतमिथ्याईश्वर रणभूमिसेलौटकर सभा में जाताथा औ बाणबेगीआदि सब बैठेहुएथे परंतु चित्राङ्गद उनमायाविम्लेच्छोंको उतरवारहाथा और डेरे तम्बू तनवारहा था इतनेमें उन म्लेच्छोंने बढ़कर अद्भुतको दण्डवत्की और वह पत्रदिया अद्भुतने उसे पढ़कर कहा कि कोई और भी पत्र तुम्हारेपास है उन्होंनेकहा कि नहीं तब अद्भुतबोला कि सत्यहै तुम बड़ेछली और कुचालीहो यह कहकर आज्ञादी कि इनको पकड़ो और मारो वे दोनों तो मायावीथे जब उन्होंने अपनी अप्रतिष्ठाकी आज्ञासुनी तब मायाकरनेलगे कि जो कोई उनको पकड़नेगया वहीं मूर्च्छितहोगया तब अद्भुत ने बाणबेगी को आज्ञादी कि तुम इसको पकड़ो उसने मायासंहार मंत्रपढ़कर उन दोनोंको पकड़लिया और अद्भुतके सन्मुख लेआया तब अद्भुत ने आज्ञादी कि इनकी नाक और कानकाटकर इनको पीटो यह आज्ञापातेही बधिकों ने उनकी नाक और कानकाट लिये और वे चिल्लातेरहे कि हम पत्रलानेवाले हैं और महाराज महेन्द्रके प्रियसेवकहैं और निरअपराधहैं यहपत्र महाराज ने आपको विश्वरूपाके बुलानेकेलिये लिखाहै परन्तु अद्भुतने एकनसुनी और नाक और कान कटनेकेपीछे उनपर मारपड़नेलगी उनके रोने पीटने के शब्दको सुनकर चित्रांगद दौड़ा हुआआया और पत्रपढ़कर उनको पीटेजाने से निषेध किया और पूछा कि तुमको मार्गमें तो कोई नहींमिला उन्होंने मद्यपान करनेका वृत्तान्तकहा उसको सुनकर वह बोला कितो तुम्हारेपास दूसरापत्र भी निस्संदेहहोगा यहकहकर उनकी कमर जो टटोली तो वहपत्र भी मिला उसको पढ़कर वहबोला कि अरे अद्भुतले हमारे गुरूने तो डाढ़ी मुण्डन न करने का कर

मांगा है सो मेरेपास तो है परन्तु तुझको भी वहकर बटोरकर रखना उचितहै देख उन्होंनेही दोनोंके नाक और कान वहांसे बैठे२ कटवालिये हैं यहकहकर वहपत्रदिया उसको पढ़कर अ-द्भुत लज्जितहुआ और समझा कि यहसब प्रहासका प्रपंचथा इसकेपीछे उसने उनम्लेच्छोंको छोड़तो दिया परन्तु अपनेको परमेश्वर जानकर उनसे कुछ न कहा क्योंकि लोग कहते कि परमेश्वर आपही तो पिटवाते हैं और आपही फिर क्षमा मां-गतेहैं इससे जो परमेश्वरनेकिया वही ठीकथा और वे म्लेच्छ रोतेपीटतेहुए मायाकृतदेशको चलेगये और इधर वाणवेगीने पूंछा कि श्रीमान् यहक्याबातथी वहबोला कि बातक्याथी मेरे गुरू और स्वामीने जो लिखाथा वह होगया अब डाढ़ी न मूं-ड़ेजानेका करमांगाहै वह मैं मायाकृतदेशमें भेजदूंगा और जो परमेश्वर न भेजेंगे तो उपानह शिरपरखायँगे वाणवेगी बोला कि परमेश्वर से बढ़कर कौन है वह बोला कि वहभी कोई म-हात्मा हैं मैं उनकानाम न लूंगा मेरे पिताका मोहनभोग बना चुकेहैं निदान वह समझगया कि यह प्रहासको कहता है यह समझकर वहबोला कि श्रीमान् आप कैसीबात कहते हैं एक बहुरूपियेको परमेश्वरसे अधिक आप बताते हैं देखो मैं एक क्षणमें इन वैष्णवोंका नाशकियेदेताहूं चित्राङ्गदबोला कि अब आप चुपरहिये और बहुत दूनकी न लीजिये क्योंकि हमारे गुरुपुत्र यहां सदैव बनेरहते हैं कहीं ऐसानहो कि आपका भी काम तमामकरदें यहसुनकर वाणवेगीको क्रोधआया और उ-सने अपने तर्कस से एक तीर निकालकर कुछमाया की और अपनी सेनाके लोहाङ्गीनाम सेनापतिको बुलाकर वहबाणदिया और कहा कि इसको लेजाकर एकपर्वतपर इसका मुख शत्रु-ञ्जयकी सेनाकी ओरकरके रखदीजो और कहियो कि माया-कर्त्ताकी आज्ञासे शत्रुसेनापर बाणोंकीवर्षाहो यह आज्ञापाकर

लोहाङ्गी वहांसे चला परन्तु इन मायावी म्लेच्छोंकी सेना तो बीचोंबीच युद्धमेंआईथी और सब बहुरूपियों ने इनको देखाथा इससे जानतेथे कि ये जो आये हैं तो कुछ न कुछ उपाधि उठावेंगे इससे बहुतसे बहुरूपिये भेषबदलेहुए अद्भुतकी सभामें आयेहुए थे उन्हों ने उनम्लेच्छों के नाक और कान कटतेहुए देखे और वाणवेगी का बाणभेजना भी देखा निदान जब लोहांगी बाण लेकरचला तब उसकेसाथ वे सब बहुरूपियेभी होलिये और सभाकेबाहर आकर सुदास बहुरूपिया तो महाराज शत्रुञ्जयके पासगया कि उनको इस मायाप्रयोगकी खबरकरदे जिससे महाराज महामन्त्रसे मायाका नाशकरें और सब सेनापतिआदि मान्यलोग भास्करीसभामें चलेआवें जहां मायाकृत उपाधि से बचें निदान वह तो उधरगया और प्रहासका पुत्र सुबास लोहांगी के साथ होलिया और फिर आगे निकलकर पर्वतकी गुफामें चलागया और सिंहकाचर्म्म अपनी थैली से निकालकर ओढ़लिया और घुंडियालगाकर सिंहका स्वरूप बनकर गुप्तबैठरहा इतने में लोहांगी वहां पहुंचा और उसने चाहा कि घाटी पर से चढ़कर पर्व्वतपर जाऊं कि इतने में सिंह दहाड़कर उसके ऊपर आपड़ा वह भयकेमारे माया करना भूलकर मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा तब सुवास उसी प्रकार सिंहबनाहुआ उसकी छातीपर चढ़बैठा और अपने मुख से मूर्च्छाकर चूर्ण उसके मुखपर डालनेलगा वह श्वास तो लेताहीथा जैसेही वहचूर्ण उसके ब्रह्माण्ड में पहुंचा तैसेही वह और भी अधिक अचेत होगया तब सुवास उसकी छातीपर से हटआया और उस सिंहके चर्मको उतारकर रखलिया और उसकी झोलीसे वहबाण निकाललिया और उसकी जगह वैसाही दूसरा बाण रखदिया और आप पर्व्वतकी गुफामें छिप रहा थोड़ीदेरमें लोहाङ्गीकी मूर्च्छाजागी परन्तु भयके कारणसे

उसे यही जानपड़ताथा कि सिंह मुझे दबाये बैठाहै इससे उस की घिग्गीबँधगई और बड़ीदेरतक योंही पड़ारहा परन्तु जब उसको किसीने कुछदुख न पहुंचाया तब उसके हृदय से भय दूरहुआ और उसको शरीरमें शक्तिजानपड़ी और आंखें खोलकर जो देखा कि सिंहनहीं है तो प्राण तो प्यारे होतेही हैं उठकर वहांसेभागा कि ऐसानहो फिर सिंहआजाय और जब दूरनिकलगया तब उसकाचित्त सावधानहुआ और अपनेको मायासे वेष्टितकरके दूरजाकर दूसरीओरसे पहाड़पर चढ़गया और उसबाणको निकालकर वैष्णवी सेनाकीओर करके रखदिया और पुकारा कि मायाकर्त्ताकी आज्ञासे शत्रुसेनापर बाण वर्षाहोय उधर तो उसने तीररक्खा और इधर सुवासने पर्वत पर चढ़कर उसबाणको पहाड़पर अद्भुतकी सेनाकीओरको मुखकरके रखदिया और कहा कि मायाकर्त्ताकी आज्ञासे जिधर इसबाणका मुख है उसीओर जो शत्रुसेना है उसपर बाणोंकी वर्षा हो यहकहतेही एकबादल प्रकटहोकर अद्भुतकी सेनापर छागया और उसकेनीचे सहस्रोंपुतले धनुषबाण लेलेकर खड़े होगये और सेनाके लोगोंको ताक ताककर बाणमारनेलगे उससमय सबसेना के मनुष्य तो अचेतथे कोई गारहाथा कोई बजारहाथा कोई रसोई बनाताथा कोई लेटाथा कोई सोताथा कोई वेश्यासे हास्यकररहाथा और कोई अद्भुतकी मूर्तिबनाकर उसकी पूजाकररहाथा निदान सब अपने२ काममें लगेथे और कोई ईश्वरकीगतिको न जानताथा कि अकस्मात् इनबाणोंकी बौछार उनपरगिरी पहिलीही बौछारमें अद्भुतकीसेना के दश सहस्र योद्धा मृतकतुल्य होकर पृथ्वीपर लोटनेलगे उससमय उन मायावीम्लेच्छ और दूसरे म्लेच्छोंकी सेनामें त्राहि त्राहि का शब्दपूरगया और उससेना के दूरतक पड़ाहोनेसे क्योंकि लाखोंम्लेच्छथे उन मायावी म्लेच्छोंने समझा कि यह अद्भुत

की सेनाके म्लेच्छोंकी दुष्टताहै यह समझकर वे मायाकृततूर्य बजाकर अपने अपने डेरोंसे निकले और अद्भुतकी सेनापर जापड़े येभी उनसे युद्धकरनेलगे और समझे कि शत्रुंजयकी सेनाआई है इससे सब सेनातयारहोगई और एकअनी दूसरी अनीको शत्रुसेना समझकर आपसहीमें युद्धकरनेलगे और अस्त्र शस्त्रोंकीबर्षा करनेलगे इसयुद्धका कोलाहल जोमचा उस को सुनकर बाणवेगी और चित्रांगददौड़े और देखा कि आकाश से बाणोंकीबर्षा होरही है यहदेखकर चित्रांगदनाचनेलगा और बोला कि यहअद्भुत दुष्टका नाशहोय हेबाणवेगी तैंने हमारेगुरु-पुत्रके कार्यकोदेखा कि वह न हुआ कि जो तैंनेकहाथा हमारेही ऊपर आपत्ति आई यहदेखकर बाणवेगी बड़ीशीघ्रतासे माया संहार मंत्रपढ़नेलगा और एकप्रहरतक पढ़ाकिया कि पसीनोंमें नहाउठा उपरात वे पुतले अन्तर्द्धानहोगये और वह बादलभी फटकर दूरहोगया अब आकाशसे तो बाणोंकीबर्षा दूरहोगई परन्तु प्रहरभरमें लाखोंयोद्धा मारेगये और जोसेना आपसमें शत्रुजानकर लड़रहीथी वहबन्द न हुई इतनीबड़ी सेनाकोयुद्ध करनेसे कौनबन्दकर सकताथा सब शूरबीर अपने २ अस्त्रोंको लेलेकर लड़रहेथे और शूरता दिखादिखाकर आयुधपातकरते थे रक्तमें सब भरेहुएथे और ऐसे उन्मत्तहोगयेथे कि एक दूसरे को पहिंचान नहींसक्तेथे ॥

चौ०। भो अतिघोर युद्ध तेहि ठाईं। अबसब कहत न बनतगुसाईं ॥
शूरबीर दोउदलमधिधसिकें। पारयौ प्रलयरुद्र सम लसिकें ॥
बधिअगणितरथहयगजगामी। रच्यौ रुधिरको नदजयकामी ॥

दो०। कटे चक्रबाजी मरे रथपरि शोणित बीच।
लसैमनो लटिफटिपरी नावभारती बीच ॥

जबयुद्धका कोलाहल बहुतबढ़ा तब लोहाङ्गी बाणपर्बत पर रखकेचला और उसनेजाना कि शत्रुसेनापर बाणोंकी बर्षाहो

रही है और जबसेनामें पहुँचा तबवहां महायुद्धदेखकर समझा कि शत्रुसेना बिकलहोकर हमारी सेनापरआपड़ी है यह अनुमानकरके वहभीलड़नेलगा और मायाबलसे अग्नि बाण और पाषाणबर्षाकर सेनाजनोंका बधकरनेलगा इस कोलाहलकोसुनकर वैष्णवीसेनाभी तयारहुई सब शूरबीर अपने २ डेरोंसे निकले और श्रीमहाराजाधिराज और महाराज शत्रुंजयभी बाहिर निकलआये इतनेमें सुदास और सुवास दोनों बहुरूपिये वहां पहुँचे औ दोनोंने महाराजाधिराजको दण्डवत्करके सब वृत्तांत कहा उसको सुनकर सब हँसनेलगे और सुबासको बहुतसाधन पारितोषिकदिया और सेनाकोआज्ञादी कि जबतक यहकोलाहलरहे तबतक यहांभी कोईकमर न खोले निदान यहां तो यह प्रबन्धथा और वहां लाखोंयोद्धा आपसमें लड़कर मरगये और युद्ध करतेकरते वहरात्रि व्यतीतहुई और निशारूपी शत्रुके हृदयसे सूर्यके किरणरूपीबाण पारहुए अर्थात् प्रातःकालहुआ॥

दो०। मिटयो निशाको सकलतम निकसेनभ जबसूर।
परदल सैनिक युद्धकरि भये अमित सब चूर॥

प्रातःकालहोनेपर सबयोद्धाओंने एकदूसरेकोपाहिंचाना और युद्धकरना बन्दकिया और लज्जितहोकर महाशोकमें बैठगये उससमय चित्रांगदने बाणवेगीकी व्यंगबचनोंसे प्रशंसाकी और कहा कि धन्यहै आपकी दयाबातहै कैसीअच्छी मारा आपनेकी वहीकहावतहुई कि मतवाला हाथी अपनीही सेनाको मारताहै और हमारे गुरुपुत्रकी प्रशंसा तो कहांतक होसकतीहै श्रीबाणबेगीजीके ऐसा चूनालगाया कि सबमायाकरना भूलगये यह कहकर उसने अद्भुतसेकहा कि आपने यहकैसा भविष्यरचाथा वहबोला कि मैं परमेश्वरहूँ जो मेरीइच्छाआई सो मैंनेरचा तू बीचमें बोलनेवाला कौनहै इसके पीछे बाणवेगी ने जो अपनी सेनाके योद्धाओंकी गणनाकी तो केवल सौ दोसौ म्लेच्छरहगये

थे और बाकी बारहसहस्र सब सेना मारीगई तब तो उसनेबड़ा शोककिया और महेन्द्रको सबवृत्तान्त लिखकर विनयकिया कि थोड़ीसीसेना और भेजदीजिये उसपत्रको उसने एकम्लेच्छके हाथभेजा परन्तु उसके पहुंचनेके पहिले वे दोनों म्लेच्छ पहुंचे जिनके कान और नाक काटलीगईथीं महेन्द्र उनकी दशाको देखकर आगहोगया और जब बाणवेगीका पत्रपहुंचा तब उसने उसक्रोधके आवेशमें उसपर कुछध्यान न किया और उन म्लेच्छोंसेकहा कि जो परमेश्वरका यहकर्म न होता तो मैं अपने सेवकोंकी अप्रतिष्ठाका बदलालेता अच्छा अबतूजा और बाणवेगी से कहदे कि एकाकी युद्धकरै और जब वैष्णवों की अजयहोगी तब परमेश्वरकी सेना उनका बधकरनेको बहुत होगी मैं कुछदिनोंकेपीछे विचारकरके सेनाभेजूंगा वह म्लेच्छ यहसुनकर लौटकर बाणवेगी के पासआया और उससे सब वृत्तान्तकहा और वह एकाकी युद्धकरनेको उपस्थितहुआ उस समय रक्तभक्षीनेकहा कि आज मेरेनामसे युद्धकेवाद्य बजवाये जावें मैं युद्धकरूंगा यहसुनकर चित्रांगद ने चुपकेसे बाणवेगी से कहा कि जब यहयुद्धकरे तब तुमगुप्त ऐसीमाया करना कि इससे युद्धकरनेवाला इसके वशमें होजाय वहबोला कि ऐसाहीहोगा निदान दिनभर येहीमन्त्र कुमन्त्र होतेरहे और सेना को एकत्रकरके जो मारेगयेथे उनके शरीरका संस्कार कराया इसके उपरान्त जिससमय सूर्यरूपी पथिकने पश्चिमका मार्ग लिया और आकाशरूपी धर्मशाला में चन्द्रमारूपी बटोही पूर्वदिशासे आकर उतरा ॥

मधुभारछन्द। भो दिवसअन्त। रविकीन्हगन्त ॥ निशिरूपनारि ॥ शशिपतिनिहारि ॥ चहुंओरधाय। जगफिरीआय ॥ लखिताहिचन्द। भोअतिअनन्द ॥

उससमय शत्रुसेनामें युद्धके नगाड़े गड़गड़ानेलगे उसको

देखकर वैष्णवीसेना के शूरवीर वहांसे दौड़कर श्रीमहाराजाधिराजके सन्मुखआये और दण्डवत्‌करके विनयपूर्वकबोले ॥

तोमरछन्द। हे नृपतिके शिरमौर। तवरहै जगमेंढौर ॥
तवतेज और प्रताप। लखिरहैअरिउरदाप ॥

हे श्रीमहाराज आज शत्रुसेना में फिर युद्धके वाद्य बजे हैं फिर सबको मृत्युने घेराहै यहसुनकर महाराजाधिराज ने आज्ञादी कि हमारीसेनामें भी युद्धकेवाद्य बजायेजावैं और सब शूरवीर युद्धकेलिये तयारहों यह आज्ञापातेही वाद्यालयखोलकर कार्तिकेयी नगाड़े बजायेगये और उनका घोरशब्द सब संसारमें छागया ॥

मधुभारछन्द। सो शब्दघोर। दुस्सहअथोर ॥
सुनिशत्रुसैन। भइअतिअचैन ॥

इसके उपरान्त महाराजाधिराज ने सभाको विसर्जनकिया और सबशूरवीर और योद्धाआकर युद्धकी तयारी करनेलगे अस्त्रालयखोलकर सबको खड्ग चर्म गदा भल्ल तोमर धनुष और बाणआदि अस्त्रदियेगये और वे उनको लेकर प्रसन्नता पूर्वक वीररसके वचन परस्पर कहनेलगे और शस्त्रोंको शिला आदिपर पैनाकर युद्धयोग्य करनेलगे रात्रिभर दोनोंदलों में युद्धकी तयारीरही और जिससमय रात्रिके व्यतीतहोने से कुमोदिनी संकुचितहुई और सूर्योदयकी वेलाजानकर कमलोंका विकास प्रारम्भहुआ ॥

चौ० प्रातहोत रविकीन्ह प्रकाशा। सकलनिशातम भयोविनाशा ॥
खगमृग जीव चराचर जागे। निजनिजक्रियाकरनसबलागे ॥
डोलनलगी सुगंध समीरा। शीतलमन प्रमोद करधीरा ॥
ताहिपरसि बनमेंतेहिकाला। फूलनलगे प्रसून विशाला ॥

उससमय महाराज शत्रुंजय स्नानादिकर्मोंसे निवृत्तहोकर अस्त्रशस्त्र धारणकियेहुए सब सेनापति और शूरवीरोंसहित श्रीमहाराजाधिराजके शयनमन्दिरपरआये श्रीमहाराजाधिराज

भी उससमय नित्यकर्मसे निबटकर बाहिर निकले सबने दंड-वत्की और यथायोग्य सबका सन्मानकरके सबकोसाथलेकर उत्तम बाहनोंपर सवारहोकर रणभूमिकी ओरचले ॥

चौ० सेनापति अति वीरविशाला। रथहयचढ़े सकलतेहिकाला ॥
शुक्लबरण शुचिगज बलधामा। कुबलयपीड़ जासु होनामा ॥
तापरचढ़्यो नृपतिबलधामा। शक्रसमान लख्योतेहियामा ॥
लैसब संग वीर समुदाई। चल्यो युद्धहित ओजबढ़ाई ॥

इसप्रकारसे जब सब वैष्णवीसेना रणभूमिमें जाकर स्थित हुई तब अद्भुतमिथ्या ईश्वरकीभी सेनादूसरीओरसेआई दोनों सेनाओंमें व्यूहरचनाहुई कवीश्वरोंने योद्धाओंको युद्धकाउत्सा-ह कराया उपरांत लोहाङ्गी रणभूमिमेंआकर मायाकृत चमत्कार दिखाने और वैष्णवीसेनाके योद्धाको युद्धकेलिये बुलानेलगा राजपुत्र वायुविक्रम उसके सन्मुखगया और उसने एकत्रिशूल लेकर राजपुत्रपरफेंका इसप्रयोजनसे कि जो बलसे काम न नि-कलेगा तो मायाकरूंगा तब राजपुत्रने उसत्रिशूलके प्रहारको बचाया और एकभल्ल ऐसेबलसेमारा कि वह सँभलनसका और घोड़ेपरसे नीचेगिरपड़ा तब राजपुत्र अपने घोड़ेपरसे कूद्कर उसकेपास सिंहकीसदृशआया और एकठोकर ऐसीमारी कि वह धूलमें लोटपोटहोनेलगा और फिरएकपैर उसकेएकपैर पर रखकर दोनोंहाथोंसे दूसरापैरपकड़कर ऐसाझटका दिया कि उसकेशरीरके दोखण्डबीचाबीचसे चिरकरहोगये और वह त्राहित्राहि करताहुआ मरगया रक्तभक्षी उसके इसपराक्रमको देखकर चकितहोगया और बाणवेगीने अपने दूसरे मायावी म्लेच्छोंको आज्ञादी कि देखो यह वैष्णव जीतानजानेपावे यह सुनतेही सबमायावी म्लेच्छ निम्बुक और नारिकेलआदि मा-याकृत अस्त्रलेलेकर राजपुत्रपरदौड़े उससमय महाराजशत्रुं-जय अपना घोड़ादौड़ाकर रणभूमिमेंगये और वायुविक्रमको

हटाकर आपयुद्धकरनेलगे और महामंत्रके प्रभावसेउनम्लेच्छों कीमायाको दूरकरके उनका बधकरनेलगे यह देखकर पर्वती और अद्भुत उपासकोंकीसेना शस्त्रउठाकरचली उसकोआतेहुए देखकर महाराजाधिराजभी सब सेनासहितबढ़े और सवार से सवार सेनापतिसे सेनापति और पैदरसेपैदर भिडगये और अस्त्रशस्त्रोंकी वर्षाकरनेलगे ॥

भुजं॰छंद। उभैसेनबीराधनुर्वेदचारी। दुहूँओरकीबाणकी वृष्टिभारी॥
किये घोर संग्राम ताठौरदोऊ। नहींलामुहे भे दुहूँओरकोऊ॥
गये दूर जेते भये मौज ऐसे। गयेसामनेते भयेना भयेसे॥
दुहूँ ओरके वीं कहैं बाचिबेको। नहींआजुतौ योगहैबाचिबेको॥

दो॰ कहूं वीर योधा प्रबल करत खड्ग सों युद्ध।
गदा आपसी लै कहूं भिरत महाभट शुद्ध॥
अगणितविधिकेपैंतरे करतफिरतजिमिचक्र।
गदा युद्ध ते करत भे गहि गति सूधी बक्र॥
कबहुंबाम दक्षिणकबहुं कबहुं ऊर्ध्वअधलाय।
अति चापलता करि करत गदायुद्ध दृढ़भाय॥
सिंहसिंहभिरि जिमिलरे द्विरदद्विरदमतवार।
मत्तवृषभसमभिरिलरत सकलवीरतजिप्यार॥
गदा गदा के लगन सों कढ़े फुलंग अपार।
तक्षकवासुकिलरतमनु अबिरल वमतअँगार॥
इबिधि लरत दोऊदलनि मरेअसंख्यन बीर।
शोणित की सरितावही जनु भारती गँभीर॥

इसीप्रकारसे सूर्यास्ततक युद्धहुआकिया और जिसस अंधकारने आकर चारोंओरसे संसारको घेरलिया॥

चौ॰ अस्ताचल रवि प्रविशेजाई। अंधकार छायो नभआई॥
मिटयोसुरबिको परमप्रकाशा। बिकसेउडुगणसकलप्रकाशा॥

उससमय चित्रांगदनेदेखा कि अनरात्रिको जो मायावी म्लेच्छ शेषरहगयेहैं वहभी मारेजावैंगे यह देखतेही उसने युद्धनिवृत्तीके बाजबजवाये और अपनीसेनाको लौटाया तब वैष्णवी

सेनाभी फिरकर अपनेडेरोंकोगई और दोनोंदलोंने कमरखोल करबिश्रामकिया श्रीमहाराजाधिराज सब सभासदोंसहित सभा मेंबैठे और आनन्दपूर्वक सबवीर मद्यपानकरनेलगे उससमय चित्रांगदबोला कि क्यों जी बाणवेगी तुमने इनवैष्णव क्षत्रियों का पराक्रमदेखा रक्तभक्षीबोला कि श्रीमान् वह ऐसेहीहैं मुझे भी उनसे युद्धकरनेका उत्साहहै आपने मायावीम्लेच्छको भेजकर आजकायुद्ध खोदिया चित्रांगदबोला कि मैं चाहताहूं कि तुम कुछकाल यहां और रहो परन्तु तुम शत्रुंजयकेपास जाने की शीघ्रताकररहेहो अच्छा आजतुम अपनेनामसे युद्धकेबाद्य बजवाओ और डंकेकीचोटजाकर वैष्णवहोजाओ यह सुनकर रक्तभक्षी हँसा और उसनेयुद्धके बाद्यबजने की आज्ञादी नगाड़ोंके बजतेही वैष्णवीसेनाके दूतोंनेआकर श्रीमहाराजाधिराज को खबरदी यहांभीयुद्धके बाद्यबजनेलगे और दोनोंसेनाओंमें युद्धकीतयारी होनेलगी और जिससमय वहरात्रि व्यतीतहुई और कालरूपीचक्रने फिरकर निशारूपी दण्डको नीचेकिया और दिवसरूपी आरा फिरकर ऊपर आगया अर्थात् प्रातःकालहुआ॥

बालाछंद। ऊग्योरविभोरहोतपूरवजाला॥कीन्होंपरकाशमहानिर्मलआला॥ इन्दुताहिं देखिभयो हालबिहाला॥त्यागिके सुज्योति गह्योशोकविशाला॥

प्रातःकालहोतेही महाराजशत्रुंजय नित्यकर्मसे निबटे और सबशूरोंसहित श्रीमहाराजाधिराजके मन्दिरपरआये और वहां से उनकेसाथ साथ रणभूमिको पधारे इधरसे अद्भुतभी अपार सेनालेकरगया दोनोंदलोंमें व्यूहरचनाहुई और कवीश्वरोंके रणकाउत्साह करनेकेपीछे रक्तभक्षी अपनाघोड़ाबढ़ाकर रणभूमि मेंआया और अपनी अस्त्रशिक्षा दिखाके युद्धकेलिये बुलाने लगा उससमय राजपुत्र वायुविक्रम जिसके कारणसे यह रण प्रारंभहुआथा युद्धकीआज्ञामांगकर अपनाघोड़ाबढ़ाकर उसके

सन्मुखगया उसकोआतेहुए देखकर रक्तभक्षीने एकबड़ीभारी लोहकी गदाघुमाकर राजपुत्रपरछोड़ी राजपुत्र ने उसे अपनी गदापररोंका और फिर अपनीगदाको भ्रमाकर उसकेमारा उसनेभी उसको अपनीगदापर रोंकलिया परन्त वहगदा गैंडे कीकमरपर गिरी और उसके भारसे उसकी कमर टूटगई तब रक्तभक्षी उसपर से कूदकर खड्ग लेकर राजपुत्र के अश्व को मारनेदौड़ा परन्तु राजपुत्र तुरन्त घोड़ेपरसे कूदपड़ा तब रक्तभक्षी दौड़कर राजपुत्रसे लपटगया और दोनों वीर मल्ल युद्ध करनेलगे उससमय वे दोनों दो मतवाले हाथियों की समान लड़तेथे और उनके अंगसे अंग के टकराने का शब्द पर्वतके फटनेकासाहोताथा निदान अनेकप्रकार के दाँव और पेंच करकरके उनदोनोंने महायुद्धकिया अन्तको जब चित्राङ्गद ने राजपुत्रको प्रबलदेखा तब वाणवेगी से मायाकरनेको कहा उसने मायाकी कि उससे राजपुत्र के शरीरका बलजातारहा और रक्तभक्षी ने उसे पटककर बांधलिया उससमय दिन तो व्यतीतहोहीचुकाथा चित्रांगदने युद्धनिवृत्तीके वाद्यबजवादिये और दोनोंसेना रणभूमिसे फिरकर अपने अपने डेरोंको आईं और सबने विश्रामकिया उससमय महाराज शत्रुञ्जयने कहा कि मुझको वायुविक्रमके पकड़ेजानेका बड़ाआश्चर्य है सेनापतिबोले कि महाराज राजपुत्र मायाबलसे पकड़ागयाहै निदान यहां तो यहवार्त्तालाप होरहाथा और वहां रक्तभक्षीने राजपुत्र को भारी भारी निगड़ पहिरवाकर अपने सामने बुलाया कि मैंने तुझे बल से जीतकर अपने बशमें किया है अब तुझको मेरेआधीनहोनेमें क्याशंकाहै परमेश्वरकीपूजा क्योंनहीं करता है वायुविक्रमबोला कि मुझपर माया तैंने करवाई और छलसे तू पकड़कर मुझको लायाहै और अब बातें बनाता है रक्तभक्षी बोला कि मैं इसबातको लेशमात्रभी नहीं जानताहूं और फिर

वाणवेगीसेकहा कि आप मुझको अयश न दीजिये और इसपर से अपनीमाया दूरकीजिये यहसुनकर उसने अपनी मायाका संहारकिया और राजपुत्र पहिलेकीभांति बलिष्ठहोगया तब रक्तभक्षीने कहा कि लोहारको शीघ्र बुलाकरलाओ कि इसकी बेड़ियां काटडाले परन्तु राजपुत्रने अपनेबलसे हाथ और पैर दोनोंके निगड़ों को तोरडाला उससमय रक्तभक्षी ने चाहा कि जैसा शत्रुञ्जयने मेरेसाथकियाथा वैसाही मैंभी इसका सन्मान करूं और इसको वस्त्रादिकदेकर आदरपूर्वक बिदाकरूं परन्तु राजपुत्रनेकहा कि हम नास्तिकोंके यहां मद्यतक पाननहीं करतेहैं जो तुझको मुझसे युद्धकरनाहो तो देरक्योंकरता है खड़ाहोजा और हमतुम अपनेप्रारब्धको अभीदेखलें यहसुनतेही रक्तभक्षी सिंहासनसे कूदपड़ा और लँगोटबांधकर राजपुत्र के सन्मुखहुआ उससमय चित्राङ्गदबोला कि हे परमेश्वर अब रक्तभक्षीजी आपकी सेवासेगये अब किसीप्रकार नहीं रहसक्ते हैं निदान दोनोंबीर भीम और कीचककी समान मल्लयुद्ध करनेलगे और नानाप्रकारके पेचोंसे लड़नेलगे चारघड़ीपीछे राजपुत्रने रक्तभक्षीको भ्रमाकर चित्तदेमारा और उसकीछाती पर बैठकर जैसेहीचाहा कि उसका शिरधड़से खींचलूं तैसेही उसने चुपकेसे कहा कि हे राजपुत्र मैं तेरादासहूं तू चलकर मेरीसभाके समीपठहर मैंभीआताहूं यहसुनकर राजपुत्र उसकी छातीपरसे उठखड़ाहुआ और बोला कि हे अद्भुत उपासकों में जाताहूं तुममेंसे कोई ऐसाहै जो मुझको रोकसके यहसुनकर सबचुपरहे और राजपुत्र वहांसे बाहिरआकर खड़ाहोगया थोड़ीदेरमें रक्तभक्षीभी वहांआया और वायुविक्रमको अपनेडेरेमें लिवालेगया इसअवसरमें वहदिन जो रहगयाथा वहभी व्यतीतहोगया और सूर्यके अस्तहोने से आकाशरूपी नीलवर्ण सभामें चन्द्रमारूपी राजाआकरबैठा ॥

दो०। नीलवर्ण आकाश में शशिको भयो प्रकाश।
चहुंदिशिछिटकी कौमदी श्रमरुजकरन विनाश॥

उससमय रक्तभक्षीने अपनेसेनापतियोंको बुलाकरकहा कि यहदुष्ट अद्भुत परमेश्वरबनताहै परन्तुकैसा ईश्वरयहहै कि जो कोई इसकीसहायताको आताहै वहीमाराजाताहै और अप्रतिष्ठितहोताहै इससे मैं आजसे इनविष्णुभक्तोंका साथीहोताहूं और आजकेदिनसे मैं श्रीविष्णुभगवान्‌को जगत्‌का ईश्वरमानताहूं इससे तुमकोभी उचितहै कि तुमभी इससतमार्गको अंगीकारकरो और श्रीविष्णुभगवान्‌को अपना ईश्वरसमझो यह सुनकर उन्होंनेभी अपनेचित्तसे वैष्णवीधर्मको स्वीकारकिया और मनसे उसजगत्कर्ताको प्रणामकी यहसुनकर रक्तभक्षी बोला कि अबतुम सबजाकर अपनी २ अनीको युद्धकेलियेगुप्ततयारकरो हमभी तयारहोतेहैं इननास्तिकोंका बधकरके महाराजशत्रुंजयकेपास चलेंगे यहसुनकर वे शूरबीर वहांसेगये और अपनीसेनाको तयारकरनेलगे थोड़ीदेरमें रक्तभक्षी और वायुविक्रम दोनों अद्भुतकीसेनापर जापड़े और रक्तभक्षीकी सेनाभी अपनेस्वामीका शब्दसुनकर अस्त्रशस्त्रलेकरगई और नास्तिकोंकीसेनाको नाशकरनेलगी वहसेना तो अचेतथी और इन अस्सीसहस्र पर्वतीवीरोंने जो उसकोजाकरघेरा सेनामें खलबलीपड़गई उससमय रक्तभक्षीकी सेनाने सबसिविर और तंबुओंकीडोरियां काटदीं जो योद्धा उनकेनीचे बैठेथे वे उनकेनीचे दबकर निकलनेलगे परन्तु पर्वतीसैनिकोंने अपनेघोड़े उनपरसे दौड़ादिये कि वे उनकेनीचे दबदबकर इसप्रकारसे बिलबिलाने लगे जैसेपक्षी जालमें फँसकर तड़फड़ाते हैं और सहस्रों क्षण मात्रमें पंचत्वको प्राप्तहोगये उससमय ऐसाभारी कोलाहल मचा कि यहजानपड़ताथा कि आकाशफटताहै अथवा पर्वत पर बज्रपात होताहै॥

चौ०। चेतिभिरें वीरनि सों जेते। कटि कटि गिरें भूमिपै तेते॥
काहूकेपग कटि भुजकाटत। कितने शीशकाटि महिपाटत॥
कितने घोरशब्द सुनिजागें। कहाहोत इमिबूझत भागें॥
कितने नींदभरे नहिंबूझें। कहाहोत को आयो कूझें॥
जागत सोवत बैठे भागत। बधततिन्हैं कछुदयानपागत॥
हाहाकार महा तेहिपलमें। होतभयो सबअद्भुत दलमें॥
धुनिसुनिद्विरदतुरंगभयपागे। तोरिसुबन्धन धावन लागे॥
तिनकेघातलाततरपरिपरि। मरतभये भटहाहाकरिकरि॥
उड़ीधूरिअतिशय तमछायो। सबकेमन विभ्रमभरिआयो॥
बिनचीन्हेंआपुसमेंलरिलरि। मरेअसंख्यनवीरजधरिधरि॥
कितने पिता बन्धु सुत टेरें। कितने हय गजरथ धनुहेरें॥
सुभटअसंख्यराजसुतमारयो। प्रलयकालकोपूरिपसारयो॥
वधैपशुनिको पशुपतिजैसे। हय गज भटनिबध्योलो तैसे॥
दो०। वधि अरिसैन समस्तको करिपूरण प्रणआस।
चले वीरवर सैन सह शत्रुंजय के पास॥

उसमहाकोलाहल को सुनकर अद्भुत और वाणवेगी दौड़कर बाहिरआये और सबसेनाको आपसमें लड़तेहुए देखकर चकितहुए कि यह क्या बातहै उससमय राजपुत्र वायुविक्रम और रक्तभक्षी दोनों अपनीसेनाको लेकर वैष्णवीदलकीओर चलदिये वहां रक्षकचारोंओर चौकसीकररहेथे और सबसेना भी कमरबांधे तयारथी इससेनाको आतेहुए देखकर रक्षकआगेबढ़े और पुकारकरबोले कि कौनआताहै उससमय वायुविक्रम सबसेनाको ठहराकर अकेला वैष्णवीसेनामें आया और सबवृत्तांत कहसुनाया उसको सुनकर वैष्णवीसेना रक्तभक्षीको लिवानेगई और उसेसेनासहित बड़ेआदरसे लिवालाई सेनाके लिये डेरेखड़ेकियेगये और उनमेंसबसैनिकउतरे और रक्तभक्षीको राजपुत्रने अपनेडेरेमेंलेजाकर उतारा उसओरसेनाको आपसमें लड़तेहुए देखकर वाणवेगीनेकहा कि शत्रुंजयआया जान पड़ताहै मैं भी अपनी मायाकरताहूं चित्रांगदबोला कि शत्रुंजय

की यहचालनहींहै कि धोखादेकरआवै और अचेततामें किसी को मारै हां शत्रुञ्जय और उसकेपुत्र उसजगह ऐसाकर्म करते हैं जहां शत्रुसेनाके मनुष्य लाखोंहों और वह अकेलेहों इससे मैं जानताहूं कि यहकर्म किसी औरकाहै और क्या आश्चर्यहै जो हमारीहीसेना आपसमें लड़तीहो इससे तुम मायामतकरो अच्छा मायाकृत युद्धनिवृत्ती के वाद्यबजवाओ उसको सुनकर आपसका युद्धबन्दहोजायगा और जो कोई शत्रुहोगा तो युद्ध बन्द न होगा यहसुनकर वाणवेगीने कुछ मायाकी कि उससे सहस्रों पुतले प्रकटहोकर पुकार पुकारकर कहनेलगे कि भाइयो आपसमें क्योंलड़तेहो लड़ाई बन्दकरो यहशब्द सबके कानमें पहुंचा और सबने लड़ना बन्दकरदिया और बैठकर विश्राम करनेलगे परन्तु इसयुद्धमें भी लाखों मनुष्य मारेगये और रक्त की नदी बहनिकली रात्रिभर सब इसीदुखमेंरहे और वहरात्रि व्यतीतहोकर पीरीफटी और पूर्वदिशामें अरुणोदयहुआ ॥

चौ०। अरुण वरण शोणित महिसानी। अरुणोदयसों अरुणलखानी ॥
रवि प्रकाश लहि लखे सबेरे। मृतहय गज नर परे घनेरे ॥

प्रातःकालहोनेपर अद्भुतको मालूमहुआ कि रक्तभक्षी रात को छापामारकर शत्रुसेनामें चलागया यहजानकर वह शोकसे करसे करको मलकर रहगया और चुपहोरहा और वहां श्री महाराजाधिराज सभा में आकर सिंहासनपर विराजमानहुए उससमय वायुविक्रम ने जाकर दण्डवत्की और रक्तभक्षी से भेटदिवाई और सबवृत्तान्त कहसुनाया उसको सुनकर श्रीमहाराजाधिराज ने उसके रहने को उत्तम डेरेदिये और उसका मासिक नियतकिया और उसके देशका करछोड़दिया उपरान्त आनन्दमङ्गल होनेलगा और नृत्यहोना प्रारम्भहुआ परन्तु अद्भुतकीसेनामें बड़ा रोना पीटनामचाथा क्योंकि रात्रिको बेटा बापकेहाथसे और बाप बेटेकेहाथसे बधहुएथे इससे कोई अपने

वस्त्रफाड़ताथा और कोई शिरपीटताथा तब वाणवेगीने सबको बुलाकर बहुतसाधीर्यदिया और बहुतसा धनदेकर उनके शोक का दूरकिया और फिर अद्भुतसेबोला कि हे परमेश्वर मैं पर्वत परसे जाकर ऐसी मायाकरताहूं कि शत्रुसेनापर ऐसी आपत्ति आवैगी कि वह उससे न नचसकेगी यहसुनकर अद्भुत कुछ कहने न पायाथा कि उसके एक सेनापति ने कहा कि आज मैं अपनेनामसे युद्धके वाद्यबजवा र अपनी मायाकरनेकी शिक्षा को आपको दिखाना चाहताहूं वाणवेगी बोला कि अच्छा तब वह सेनापति जिसकानाम सुक्तिमुखीथा उठकर अपने डेरेमें चलागया और दिनभर अपने माया के प्रयोगको सिद्धकिया किया और जिससमय काल पी अहेरीने आकाशरूपी वनसे सूर्यरूपी कंचनमृगको सायंकालरूपी वाणमारकर भगादिया॥

अमृतग छिन्द। आई निशि अंधियारी। अतिशय कारी कारी॥
उपजावत भयभारी। व्यापी जगत मँझारी॥

उससमय युद्धकेनगाड़े गड़गड़करनेलगे और सबसेनामेंयुद्ध की खबर तरंगकीभांति फैलगई दूतों ने जाकर महाराजाधिराज से कहा कि आज फिर शत्रुओं को कालनेघेरा है फिर उन्होंने युद्ध के वाद्यबजवाये हैं यहसुनकर श्रीमहाराजाधिराज ने भी आज्ञा युद्धके वाद्यबजने ी दी आज्ञाहोतेही बड़ेशोररवसे वाद्य बजनेलगे और शूरवीर उनको सुनकर युद्धकीतयारी करनेलगे रात्रिभर शस्त्रों की ख ़ड़ाहट और युद्धकी तयारी होतीरही और जिससमय सूर्यरूपी बंधुआ अन्धकाररूपी कारागृह को तोड़कर आकाशरूपी क्षेत्रमेंआया॥

अचलधृतिछंद। अरुणउदयपूरबदिशि दरसित। रविकर उदयसमयशुभ सरसित॥ तेहिलन सबनग करतम विनासित। भइनिर्मल युतिनभविच परसित॥

उससमय महाराजशत्रुंजय नित्यकर्मसे निबटकर सबशूर

वीरोंसहित श्रीमहाराजाधिराजके शयन मन्दिरपरआये और उनकीसवारीको मध्यमेंकरके बड़ी धूमधामसे रणभूमिमें पहुँचे उधरसे शत्रुकाभी दलसजकरकेआया और जब व्यूहरचनाहो चुकी तब सुक्तिमुखी रणभूमिमेंआया और युद्ध लिये वैष्णवी सेनाको प्रचारनेलगा उससमय रक्तभक्षीमहाराजसे आज्ञाले- कर उसकेसन्मुखगया उसने नारिकेलमाया अस्त्रकाप्रयोगकिया कि उससेरक्तभक्षी अचेतहोगया और उसने उसेबाँधकर अ- पनीसेनामें भेजदिया और फिरयुद्धकेलिये योद्धाओंको बुलाने लगा निदान उसने दशशूरवीरोंको इसीप्रकारसे कै किया उ- ससमय प्रहासकापुत्र सुबास बहुरूपिया जो महाराजशत्रुंजय केपासथा वहांसेचलकर बनमेंगया और वहांउसने अपनास्व- रूप योद्धाओं कासाबनाया और धनुषबाणआदि सबशस्त्रधा- रणकियेहुए घोड़ेपरसवार रणभूमिमेंआया और सुक्तिमुखीको ललकारा उसकोदेखकर चित्रांगदने वाणवेगीसेकहा तुम सुक्ति मुखीको शीघ्रबुलालो नहींतो वहमाराजायगा क्योंकि हमारे गुरुपुत्रउससे युद्धकरनेआयेहैं वाणवेगीबोला कि तूमूर्खहै और उधर सुक्तिमुखीनेचाहा कि मायाकृत अस्त्रछोडूं कि इतनेमें सु- वासने गोफनमें पाषाणरखकर ऐसाभ्रमाकरमारा कि सुक्तिमुखी का शिरकटकर दूरजापड़ा और उसकेमरनेका कोलाहल हुआ और उसकीमायासे जो शूरवीर कैदहोगयेथे वे मुक्तहोगये और अपनेको कैददेखकर निगड़ोंको तोड़कर वज्रसे मारतेहुएचले यह देखकर वाणवेगीबोला कि इनसेकोई नबोलै देखो तो मैं क्याकरताहूं यहकहकर उसने युद्धनिवृत्तीके बाद्यबजवादिये और दोनोंसेना फिरकर अपने अपनेडेरोंकोगईं और कमरखो- लकरआहारादिक क्रियाकरनेलगीं परंतु वाणवेगीने तीत और अतीतनामी म्लेच्छोंको आज्ञादी कि तुम दोनों पहाड़परजा- कर मायाकरो आज्ञापाकर वे दोनों पर्वतपरगये और वहांजा-

कर उन्होंने अग्निको प्रज्वलितकिया और उसमेंमांसकाहवन करके एकनारियललिया और उसको पृथ्वीपरदेमारा वह नारियल पृथ्वीमेंसमागया और यहां वैष्णवीसेनामें सबआनन्द पूर्वकबैठेथे कि अकस्मात् भूकंपहुआ और पृथ्वीफटकर उसमें सेअग्निकीज्वाला निकलनेलगी उससमय सुबासआदिक कई बहुरूपिये भागकर सेनाथलकी सींवासे बाहरनिकलगये और सेनापति और योद्धालोग दौड़कर भास्करी सभामें जानेलगे इतनेमें महाराजशत्रुंजयको खबरपहुँची वहभी शीघ्रतासे उठे और जललेकर महामन्त्रसे मन्त्रितकरके जलको पृथ्वीपरधार बाँधकर सेनाकेचारोंओर छोड़नेलगे परन्तु सेनाबड़ेबीचमें पड़ीथी कहांतकजलछोड़ते इससे भास्करीसभामें जितनेमनुष्य आसकेवहसब और जितनेउसजलके कुण्डलकेबीचमेंथे वे सब तो परमरक्षितथे परन्तु और जितनीसेनाथी उसमें खलबलीपड़ीथी और भगदड़पड़गईथी लोगदौड़कर बाहिरजातेथे और अग्नि पृथ्वी से निकल निकलकर उनके चारोंओर प्रज्वलित होतीजातीथी थोड़ीदेर में भास्करी सभा और महामंत्र से मन्त्रित पृथ्वी को छोड़कर चारोंओर अग्नि फैलगई और मार्ग बन्दहोगया जहांतक मनुष्यों से दौड़तेबना दौड़कर बाहिर गये और उसमन्त्रित भूमिमेंआये परन्तु वहांभी इतने मनुष्य थे कि पैररखने को जगहनथी और सबखड़ेहुए देखरहेथे कि सब डेरे और बिछौने अग्निकीज्वालाओंमें पड़गयेहैं लोग सब भस्महोरहे हैं सबके शरीरसे अग्निकी चिनगारियां निकलती हैं और सब त्राहि त्राहि कररहे हैं शरीरपर फफोले पड़ते हैं और महाविकल हैं॥

जय०छन्द। महिसोंउठतअग्निकीज्वाल।करतनरनकोपरमविहाल॥
तन अरु वस्त्र बस्तुहीं जौन। सबसों कढ़ति अग्निही तौन॥
जितकूंजायँ भागिलै प्राण। तितही अग्नि कहूं नहिं त्राण॥

हाहा करि करि आरत वैन। बोलत कतहुं परत नहिं चैन॥

अन्त को यहां तो लोग श्रीविष्णुभगवान् से प्रार्थना करने लगे और उधर वहुरूपिये अपनाअपनास्वरूप बदलबदलकर कुछ छलकरनेके उद्योगमें अद्भुतकी सेनामेंगये और वहां ठहरेरहे और उधर जब शत्रुसेनाके दूतोंने अद्भुतको इसबात की खबरपहुंचाई तब वहबोला कि क्योंमेरी अचिन्त्य सामर्थ्य को देखा कि मैंने कैसी आपत्ति इनदुष्टोंपर डालीहै उसको सुनकर उसके सब उपासकबोले कि सत्यहै हे ईश्वर तुममें बड़ीसामर्थ्य है निदान यहां तो ये बातेंहोरहीथीं और इधर मालवीबहुरूपिया उधरजानिकला जहां बाणवेगीकी पाकशालाथी और म्लेच्छों का रूप तो धारणहीकियेथा उसने पाकाध्यक्षको इशारेसेबुलाया वहसमझा कि यहम्लेच्छ हमारेस्वामीका नौकरहै कुछ तो कार्यहोहीगा जो यहबुलाताहै यहअनुमान करके वह उसके पास चलाआया तब वहबोला कि मैं इससमय सभामेंथा वहां महाराज कहतेथे कि पाकाध्यक्षका धनचुराना अब प्रकाशितहोगया है इससे अब उसको दण्डभी देनाचाहिये यहसुनतेही उसका जीछूटगया और वहबोला कि यद्यपि तुम मुझको नहीं जानते हो परन्तु मुझको तुम्हारा बड़ाध्यानहै इससे मेरेसाथचलो तो मैं गणिकसे कहकर तुम्हारा हिसाब ठीककरादूं पाकाध्यक्ष उसीसमय उसकेसाथ होलिया और उसने उसे एकान्तमेंलाकर मूर्च्छाकरचूर्णसे उसेमूर्च्छितकरदिया और उसकासास्वरूप अपना बनाकर उसके वस्त्रउतारकर पहिरलिये और उसकीगठरी बांधकर वनमेंलेआया और वहां उसको मारडाला और आप वहांसे पाकशालामें आकर भोजन बनानेका प्रबन्ध करनेलगा और सब व्यंजनों में मूर्च्छाकर चूर्ण मिलादिया बाणवेगी जब सभासे उठकरआया और उसको क्षुधालगी तबउसने भोजन मांगा मालवीने सबव्यंजन परोसकर थालभेजदिया और सब

सेवकोंको भी थोड़ा थोड़ा भोजनदेकर आप वाणवेगी के पास चलागया वह अपने मित्रोंसहित उसभोजनको खा रहाथा जब खाचुका तब उसने चाहा कि सभामें जाऊं परन्तु उसका शिर फिरनेलगा इससे वह लेटरहा और यहीहाल उसके सब मित्र और चाकरोंका हुआ और सबअचेतहोगये उससमय मालवी खड्गनिकालकर चाहताथा कि बाणवेगीका बधकरै परन्तु दैव-योग से उससमय एक म्लेच्छकहीं बाहिर से आया जिसका नाम मद्यपेयी था और उसने देखा कि सबलोग अचेतपड़े हैं और एक मनुष्य वाणवेगीका बधकिया चाहताहै यह देखकर उसने मायाबलसे मालवी को पकड़लिया और पूछा कि तू कौन है वह बोला कि मैं बहुरूपियाहूं म्लेच्छों को मारने को आयाथा मद्यपेयी सबवृत्तांत सुनकर उसे कैदकरने को लेच-ला परन्तु बाहिर उससभाके सुबासबहुरूपियाभी छलकरने के प्रयोजनसे ठहराहुआथा उसने जो मालवीको पकड़ाहुआदेखा तत्काल पीछेसे पाशफेंककरमारी मद्यपेयीपाशमें उलझकरगिरा और जबतक सँभलेसँभले तबतक सुबासने बढ़कर एकखड्ग मारा कि मद्यपेयीका शिरकटकर शरीरसे पृथक्होगया उसके मरनेसे कोलाहलहुआ और मालवी और सुबास दोनों भाग गये उस कोलाहलको सुनकर म्लेच्छ दौड़े और डेरेके भीतर आकर वाणवेगीआदिको चैतन्यकिया जब सब चैतन्यहोगये तब वाणवेगीका चित्तउड़गया और वह बड़ीशीघ्रतासे सवार होकर परमेश्वर की सभामेंगया बहुरूपियोंने भी उसे जातेहुए देखा वे उसकेसाथहोलिये और अपने२ स्वरूपोंको बदलकर अद्भुतकीसभामें जाखड़ेहुए वहांजाकर वाणवेगीने सबवृत्तान्त कहा और बोला कि बहुरूपिये आज मुझे मारहीचुकेथे इसी अवसर में तीत और अतीत भी पर्वतपर से आगये उनको देखकर चित्राङ्गदबोला कि तुमने वैष्णवी सेनापर मायाकी है

इससे तुम यहां मतठहरो नहीं तो मारेजावोगे यहसुनकर अतीतने तीतसेकहा कि इसपर्वतके समीप जो हरिताचलहै वहां एक मायाकृतक्षेत्र है उसमें एक रमणीक मायाकृत बागलगा है और वहां जो क्षेत्रपाल और उसके शिष्यरहते हैं वह मेरे मित्रहैं चलो हमतुम वहीं चलकररहैं और शत्रुञ्जय के महामन्त्रको बन्दकरैं क्योंकि यहमाया हमने ऐसीकीथी कि सबसंसार इसमायाकृत अग्निमें भस्महोजाता परन्तु शत्रुञ्जय उस मंत्रकेबलसे अपनी सेनाको बचालेगा और हमारे दिनभर के परिश्रमको व्यर्थकरदेगा यहकहकर वोचले परन्तु चित्रांगदने कहा कि तुमने बड़ा बुराकिया जो अपने रहनेका स्थान बतलादिया बहुरूपिये वहां पहुंचेंगे क्योंकि वह इससमय यहांभी होंगे और उन्होंने पताभी सुनाहोगा यहसुनकर अतीत ने हँसकरकहा कि वहां जो जायगा वह माराजायगा क्योंकि एकांत में अपने पराये की पहिंचान होतीहै और सेनामें बहुतसे मनुष्यहोनेसे बहुरूपिये पहिंचाने नहींजाते और बचना भी कठिन है यहकहकर वे दोनों मायाबलसे उड़कर चलदिये और बहुरूपिये भी उनके खोजमें सभाके बाहिरआये मार्गमें सुबास और विचक्षणसे भेटहुई उनसे सबवृत्तान्तकहा वहबोले कि तुम यहीं ठहरो हमदोनों हरिताचलकीओर जाते हैं यहकहकर वे दोनों चले परन्तु प्रथम वहां वे दोनों म्लेच्छपहुंचे और उसक्षेत्रका द्वारबन्ददेखकर मायाबलसे उसकी भीतको फलांगकर भीतर गये उनको देखकर चेलोंने चोर चोरका शब्दकिया परन्तु उन दोनोंने क्षेत्रपाल के पासजाकर अपना हालकहा उसने पहिंचानकर अतीतको कंठसेलगाया और बैठने को आसनदिया दोनोंजने जब बैठगये तब क्षेत्रपाल ने चेलोंसेकहा कि तुम्हारे यहां आज अतिथिआये हैं इनकेलिये शीघ्र भोजनलाओ यह सुनकर चेले पक्कान्न और मांसआदि भोजनलेकरगये परन्तु

अतीतबोला कि पहिले मद्यपानकरलें तब भोजनकरैं वहबोला कि इनकेलिये मद्य शीघ्रलाओ चेलों ने कहा कि महाराज इस समय मद्य तो नहीं है क्षेत्रपालनेकहा कि जाकर मोललेआओ यहसुनकर दोचेले मद्यलेनेको बाहिरगये और जब हरिताचल से निकलकर बाहिरगये उधरसे दोनों बहुरूपिये उस स्थानको ढूंढ़तेहुए आरहेथे उन्हों चेलोंकोदेखा और पास जाकर बोले कि यहां मायाकृत क्षेत्रमें हमारे स्वामीगये हैं तुमको वहस्थान मालूमहो तो बतादो चेलेबोले कि क्या तुम अतीतके सेवकहो वहबोले कि हां तब चेलों ने कहा इधरसे जाकर पूर्वकीओर फिरजाना आगे तुमको श्मशानमिलैगा उसकेआगे एकनदी है उसीनदीके तटपर वह क्षेत्रबनाहुआ है यहसुनकर बहुरूपियों ने पूछा कि तुम कहांजातेहो उन्होंने साराहाल मद्यमँगाने का वर्णनकिया उसको सुनकर बहुरूपिये पास तो खड़ेहीथे मूर्च्छांड निकालकर दोनोंचेलोंके मुखपरमारा उससे वेदोनों अचेतहो-गये तब उन्होंने उन्हींकेसे अपने स्वरूपबनाये और उन्हीं के वस्त्रोंको धारणकरके मूर्च्छाकर चूर्णमिलीहुई मद्य अपनेपाससे लेकर उसीपतेपरचले जो सुनचुकेथे और उसी क्षेत्रमें जाकर पहुंचे और देखा कि छोटासा बागलगाहुआहै और फल और फूलोंसेलदा है और बीचमें एकचबूतरेपर वह क्षेत्रपाल बैठा हुआ उनम्लेच्छों से वार्तालाप कररहा है दोनों बहुरूपियों ने मद्यकेपात्र उनके सामनेलाकर रखदिये वे म्लेच्छ तो मद्यके आश्रय भोजनलियेहुए बैठेहीथे मद्यके पहुंचतेही पात्र भरभर कर पीनेलगे उससमय वह क्षेत्रपालबोला कि हमारेलिये थोड़ी विजयाबनालाओ दोनों बहुरूपियोंने और चेलोंसेपूछा कि वि-जया कहांधरी उन्होंनेकहा कि सामने के आलेमेंहै और सिल लोढ़ीभी वहीं है जाओ पीसलाओ परन्तु कुछ अधिक बनाना हमभीलेंगे यहसुनकर उनदोनों बहुरूपियों ने बड़ीशीघ्रता से

विजयाबनाई और उसमें मृच्छोकर चूर्णडालकर थोड़ीथोड़ी तो उन चेलोंको पिलाई और जो बची सो लाकर क्षेत्रपालकोदी वहभी पीगया थोड़ीदेर में सब अचेतहोगये बहुरूपियों ने उन सबके शिरकाटडाले उनके मरनेका कोलाहलहुआ और बहु-रूपिये भागकर अपनीसेनामें चलेआये यहां वह अग्निशान्त होगई और वैष्णवीसेना उसआपत्तिसे मुक्तहुई और प्रसन्नता के बाजेबजनेलगे उसको देखकर शत्रुसेना के दूत अद्भुतकी सभामेंगये और बोले कि इससमय वहअग्नि शान्तहोगई और शत्रुसेना उससे मुक्तहोगई यहसुनतेही चित्राङ्गदबोला कि वह मरा क्यों मैं कहताथा कि नहीं कि अब इनके प्राणबचना क-ठिनहैं उससमय वाणवेगीको क्रोधआया और वहबोला कि हे परमेश्वर आप ऐसी उलटी भविष्यरचना करतेहैं कि जो आप की सहायता करनेआताहै वही माराजाताहै यहसुनकर अद्भुत क्रोधकरके बोला कि अरे अपमानी अब तुझको भी इतनी सामर्थ्यहुई कि तूभी परमेश्वरकी मायामें बोलनेलगा अब तूभी माराजायगा वाणवेगी उसमिथ्या ईश्वरके क्रोधकरनेसे डरगया और चुपकाहोरहा इस अवसरमें वहदिन तो व्यतीतहोही चु-काथा और सूर्य के अस्तहोने से निशारूपी योगिन तारागण रूपी चेलोंको साथलेकर आकाशरूपी तीर्थमें आकर उतरी॥

सारंगियछन्द। कारी कारी रतियां। दरकावत मम छतियां॥
पियवियोगकी बतियां। लिखतिरही मैं पतियां॥

उससमय वाणवेगीने युद्ध के बाजेबजवाये वैष्णवीसेना के दूतों ने उसकाहाल श्रीमहाराजाधिराज से आकरकहा उसको सुनकर वैष्णवीसेनामें भी बाजेबजे और सभाके विसर्जनहोने पर शूरवीर रणकी तयारी करनेलगे उधर चित्राङ्गदनेकहा कि हे वाणवेगी आजतुम बचते नहीं दीखतेहो वहबोला तू सत्य कहता है परन्तु मैं बहुत चौकसरहूंगा यहकहकर वह अपने

डेरेमेंआया और वहां दीपक प्रज्वलित कराकर डेरेके द्वारोंको खोलदिया और सबसेवकों को बाहिरकरके निश्शंकहोकर वि- श्रामकरनेलगा और सेनामें शूरवीर युद्धकीतयारी करनेलगे परन्तु वैष्णवीसेनाके शूरवीर इस प्रयोजनसेचले कि जो बन- पड़े तो आज वाणवेगीको पकड़लावें और शत्रुसेनामें पहुंच कर देखा कि वाणवेगीके डेरेकेद्वार खुलेहुए हैं और दीपक प्र- ज्वलितहोरहेहैं और वाणवेगी विश्राम कररहाहै और द्वारपा- लक अथवा रक्षक कोई नहींहै सन्नाटा बीतरहाहै यह देखकर सबनेकहा कि इसमें कुछभेद है इससे हमसब यहांठहरें और एक बहुरूपिया जाकर कथकरै और यहीकिया सब तो ठहरे रहे और वायुवेगी आगेबढ़ा और जब उनदीपकों के उजेलेमें पहुंचा तब अन्धाहोगया और लाचारहोकर लौटआया और जब अँधेरेमें आया फिर सूझनेलगा तब वहसमझा कि वहां आंखोंमें कुछपड़गयाहोगा यह शोचकर वह आंखेंमलताहुआ फिरगया और जब फिर वहीदशाहुई तब समझा कि ये दीपक मायाकृतहैं और फिर लौटकर अपने साथियों से सब वृत्तान्त कहा तब बहुरूपिये बोले कि सुरंगखोदकर भीतरचलो इन दीपकोंको जलनेदो यहकहकर सुबास एककोने में गया और सुरंगखोदनेलगा जब उसपृथ्वीपर पहुंचा जहांपर दीपकों की ज्योति पड़तीथी तब वहांकी पृथ्वीको लोहकेसमान कड़ापाया और वह लाचारहोकर सुरंगके बाहिर चलाआया और उसको बन्दकरदिया तब सबने मन्त्रकिया कि एकपर्वतपर चलकर पत्थरमारकर इनदीपकोंको तोड़डालें और ऐसाहीकिया परन्तु जो पत्थरगया उलटाही फिरआया और उनदीपकोंतक न प- हुंचा निदान कोई उपाय न चला और वहरात्रि व्यतीतहोगई और सूर्यरूपी वाणेत रश्मिरूपी वाणोंको छोड़ताहुआ आका- शरूपी क्षेत्रमें आया॥

वसुमतीछन्द । दिननाथआभा । नभकहीनाभा ॥ सबजीवजागे। निजकामलागे ॥ बहुकंजफूले । सरसरितकूले ॥ अतिपौनप्यारी। बहैसुक्खकारी ॥

उससमय दोनोंओरकी सेना तयारहोकर रणभूमिमें आई और वैष्णवीसेनाके शूरवीर महाराज शत्रुंजयसहित श्रीमहाराजाधिराज के साथ साथ युद्धभूमि को पधारे और उधर से अद्भुत भी वाणवेगीसहित वहांआया उससमय सेना व्यूहित हुई रणभूमि निष्कंटकहुई और कवीश्वरों ने निकलकर शिक्षा की कि ॥ नहिं अर्जुन नाहिं भीमकराल । नहीं कर्ण धर्म प्रतिपाल ॥ हे शूरवीरो कालसे कोई नहींबचा और न बचैगा परंतु यश संसारमें सदैवरहताहै इससे उचितहै कि प्राणोंके क्षोभको छोड़कर पूर्णविक्रमसे युद्धकरो और ऐसायशलो कि भीमादिक की शूरताका यशभी अस्तहोजाय निदान जब शूरवीर शिक्षा करकेहटे वाणवेगी हाथों में फूलोंकी छड़ियां लेकर रणभूमि में आया और योद्धाओंको युद्धकेलिये बुलानेलगा उससमय वैष्णवीसेनासे राजपुत्र अग्निविक्रम युद्धकी आज्ञामांगकर उसके सन्मुखगया और बोला कि अपना प्रहारकर उसने पुकार करकहा कि हे वायु यह राजपुत्र गरमीमेंआयाहै इसको शीतल करदे यह कहतेही वायुका एक झोकाआया और राजपुत्र उससे अचेतहोकर गिरपड़ा और जब उसको चेतहुआ तब उसने फूलोंकीछड़ीको कंधेपररखकर उससेकहा कि परमेश्वर सन्मुखखड़े हैं जाकर उनकी पूजाकरो और अपने ईश्वर को पहिंचानो यहसुनकर अग्निविक्रम घोड़ेपर सवारहोकर अद्भुत के समीपगया और उसका पूजनकरके उसीके समीप सेनामें जाखड़ाहुआ वहबोला कि अन्त को येभी मेरेही बनायेहुए हैं कहांतक मुझको न पहिंचानेंगे निदान अग्निविक्रमके जानेके पीछे वाणवेगी ने फिर युद्धकेलिये बुलाया तब उस राजपुत्र के

सबसेनापति एक दूसरेके पीछे उस के सन्मुखगये और माया बल से सब अद्भुत उपासक होगये इसप्रकार से जब राजपुत्र अग्निविक्रम के चारसौसाथी जाचुके तब राजपुत्र पार्थविक्रम युद्धकी आज्ञालेकरगया परन्तु वहभी मायावश होगया प्रथम तो वायुके झोंकेसे मूर्च्छितहोगया और फिर फूलोंकीछड़ीखाकर अद्भुतकी उपासना स्वीकारकी निदान दिनभर यहीरहा और वैष्णवी सेनाके कई सहस्र शूरवीर जाकर शत्रुके साथी होगये और सूर्यरूपी राजपुत्र के पकड़ेजानेपर चन्द्रमारूपी मायावी प्रसन्नहोकर रणभूमिरूपी अपने क्षेत्रमें आया॥

एकादशकलाछंद। इन्दुज्योति निशिपाय। बाढ़ी नभमें आय॥
फैलि कौमुदीजाय। सबजग दीन्हों छाय॥

उससमय दोनें सेनाओंमें युद्धनिवृत्तीके वाद्यबजे और दोनों सेनालौटकर अपने अपने डेरोंकोगईं और कमरखोलकर आहारादिक क्रियाकरनेलगीं उससमय वैष्णवीसेनाके बहुरूपिया छलकरनेको चले और यहांअद्भुतने वैष्णवीसेनाके शूरवीरोंके लिये उत्तमडेरेखड़ेकराये और परमसुंदरी दासियां उनकीसेवा करनेको नियतकरदीं और सभामें अपनेसन्मुख बैठनेको उत्तम आसनदिये और फिरसबसेपूछा कि तुम वैष्णवीसेनासे युद्धकरोगे यहसुनकर सबबोले कि जो आपकी उपासनानकरैगा उस के हमशत्रु हैं यहसुनकर अद्भुत बहुत प्रसन्नहुआ और उसने आज्ञादी कि यहां जो नदीहै उसकेकिनारे उत्तम उत्तमडेरे खड़े कराकर सबप्रकारके भोग्यपदार्थ वहांपहुँचायेजावैं मैं वहांइन राजपुत्रोंको भोजनकराऊंगा यहआज्ञापातेही राजामहावीर और उसकेसेवक वहांसेचले और एकउत्तमस्थानको देखकर वहांडेरेखड़ेकराये और परमप्रकाश करनेवाले मणियोंके दीपकों को प्रज्वलितकराके सुन्दरबसन बिछादियेगये और संपूर्ण खाद्यपेयआदि भोग और बिलासकरनेके पदार्थ स्थापितकिये उसस-

मव वहांकि शोभाबड़ीही अपूर्वथी आगे क्या उसकावर्णनहो॥
तोमरछंद। तहँदिखे तम्बूतानि। जो परम शोभाखानि॥मणिपात्र दीपव-
राय। तहँदिखे सबथरवाय॥ अतिउग्र तिनकी जोति। रवितुल्य भासित
होति॥ बहुरेशमी पटलाय। तहँदिखे सबडसवाय॥ कञ्चन सुआलना-
। तिनथरधरे तजिभर्म॥ बहुगात्र सुन्दररूप। तहँधरेलाय अनूप॥ बहु
सुन्दरी शुचिबाम। जिनके विलक्षणनाम॥ शुचिबसन भूषणधारि। ही
बड़ी शोभागारि॥ सबखाबपेय पदार्थ। धरिदिखे तहाँबथार्थ॥ बहुफूलरंग
बिरंग। उरजनत कामउमंग॥ शुचिगन्ध युतसमीर। तहँबहतिही अति
धीर॥ उपमातहाँ के योग। नहिं कुञ्जलाल सँयोग॥

निदान जब सब सरंजामहोचुका तब अद्भुतसब वैष्णवीसे-
नाके शूरवीरोंको लेकरवहांआया उससमय वहांकेबनकी हरेरी
नदीकीतरंग वायुकास्पर्श फूलोंकीगन्ध अपूर्व आनंदमनको देते
थे और सुन्दरस्वरूपवान् दासियां उत्तमोत्तमवस्त्र और आभू-
षणपहिरेहुए और हाथोंमें महानूउत्तम बारुणीके रत्नजटितपा-
त्रलियेहुए परमशोभा देतीथीं उससमय चित्रांगदने अद्भुतसे
कानमेंकहा कि येलोग इससमय मायाकेवशमेंहैं इससमय तो
ये हमारेयहांकी बारुणीपीलेंगे जिसकापीना ये लोगबुराजान
हैं परन्तु जो वाणरेगी मारागया और ये चैतन्यहोगये तो इस
बातकोजानकर कि इन्होंनेहमको मद्यपिलाकर हमाराधर्मलिया
बहुतबुरीभाँतिसे हमसबसे बिगड़ेंगे कि प्राणोंकाबचना दुर्लभ
होजायगा इससे आप इनमेंसे एकको आज्ञादीजिये कि हम्ने
सुनाहै कि तुम्हारेयहांकी मद्यबहुतउत्तमहोती है इससे तुम में
से एकमनुष्यजाकर अपनेयहांकी मद्यलेआओ और अपनेसब
भाईबन्धोंको पिलाओ अद्भुतने इसमंत्रको स्वीकारकिया और
वायुविक्रमसे यहीकहा वहउठकर अपनीसेनामेंगया उसको रा-
जपुत्रजानकर किसीनेनरोका और वहांसेबहुतसे मद्यकेपात्र ले
आया और सबको मद्यपानकरानेलगा और नृत्यहोनेलगा वै-
ष्णवीसेनाके बहुरूपियेभी वहां फिररहेथे उनमेंसे विचक्षणउधर

आनिकला दैवयोगसे एकमद्यपानकरानेवाला बाहर लघुशं ा
को आया इसनेदौड़कर उसकेमुखपर मूर्च्छाडमारा वह अचेतहो
गया और विचक्षणउसे उठाकर पृथक्लेगया और उसको भी-
ड़भाड़में किसीनेनदेखा वहांजाकर उसने अपनास्वरूप उसका
साबनाया और उसीकेवस्त्रोंको धारणकरके उससभामेंगया और
मूर्च्छाकरचूर्ण मिलीहुई मद्यसे पानपात्रभरकर बाणवेगीको नि-
वेदनकिया वह उसकेस्वरूपकोदेखकर हँसा और ऐसीमायाकी
कि उसकास्वरूप ज्योंकात्यों होगया और उसने उसको पकड़
लिया उसके पकड़ेजानेकेपीछे फिर कोई बहुरूपिया वहां नहीं
गया और वह उत्सवएकरात और दिनभररहा और जिसस-
मय कालचक्ररूपी अहेरियेने सूर्यरूपी सुनहरेपक्षीको पकड़कर
पश्चिमदिशारूपी झोलेमें रखलिया और निशारूपी कालेपक्षी
को निकालकर आकाशमें छोड़दिया॥

सूरछंद। होतनिशा सब उडुगन। नभमें निकले दुतिजन॥
तिनसों छिबरणनभ। अतिशै शोभितभौ शुभ॥

उससमय शत्रुसेनामें युद्धकेवाद्य बजनेलगे उनको सुनकर
दूतोंने महाराजाधिराजको खबरदी यहांभी बाजेजुझाउके बज-
नेलगे उसकोसुनकर वैष्णवीसेनाके शूरवीरोंके चित्तमें बड़ाभय
उत्पन्नहुआ कि कलबड़ाकठिन युद्धहै क्योंकि जो शूरवीरहमारी
सेनाके मायासे हतचेतहैं उनसे लड़नापड़ैगा निदान इधर तो
रोना और पीटनाथा और उधरआनंद और मंगलथा उससमय
चित्रांगद और बाणवेगी आनंदसे बैठकर चौपड़खेलनेलगे और
उसदिनभी बहुरूपिये सेवकोंका स्वरूप धारणकरकेगये उसस-
मय एकपरछाईं प्रगटहुई और उसने बाणवेगीके कानमें कह
दिया कि बहुरूपियेआये हैं यहसुनतेही बाणवेगी हँसकरबोला
कि चित्रांगदजी बहुरूपियेआये हैं वहसुनतेही ऐसा घबराया
कि उठकर अपने डेरे में चलागया और बाणवेगी मायाकरकेप

लँगपरलेटरहा और आज्ञादेदी कि जो कोई यहांआवै उसेरो-
कनानहीं यहसुनकर सबसेवक जाजाकर सोरहे बहुरूपियेभी
पहिले तो चलेआयेथे और फिर दुबारा म्लेच्छोंकारूप धारण
करकेगये और जैसेही सभामेंघुसे एकझोका वायुकाऐसालगा
कि अचेतहोकर गिरपड़े और वहीं पड़ेरहे निदान वहरात्रि
इसीप्रकारसे व्यतीतहुई और सूर्यरूपी राजा निद्राकात्यागकर
रश्मिरूपी आयुधों को लेकर आकाशरूपी रणभूमिमें आया॥

नाराचिकाछन्द। सूरजउदै हुआ जभी। काली निशागई तभी॥
सुन्दर प्रकाश होगया। जगमें वोदिनहुआनया॥

उससमय महाराज शत्रुञ्जय सब सेनापतियों सहित श्री
महाराजाधिराजको लेकर रणभूमिमेंआये उधर वाणवेगीजगा
और बहुरूपियों को चैतन्यकरके बोला कि जाओ इसउपकार
को यादरखना और फिर मतआना और फिर सेनालेकर रण-
भूमि की ओरचला उससमय म्लेच्छ नानाप्रकार के मायाकृत
बाहनोंपर बैठेहुए आकाशमार्ग से मायाकृत चमत्कार दिखाते
हुए रणभूमिमेंआये वहां युद्धसेवकोंने सम और विषम भूमिको
बराबरकिया और पानीका छिड़काउ करके धूलको बैठाया उ-
परान्त दोनोंदलों में व्यूहरचनाहुई और उसकेपीछे अद्भुत ने
चाहा कि वैष्णवीसेनाके शूरवीरोंको युद्धकेलियेभेजूं परन्तु चि-
त्राङ्गदने उससेकहा कि शत्रुञ्जय महामन्त्रसे इनसबको चैतन्य
करदेंगे तो ये सबहाथसे निकलजायँगे इससे इनको युद्धकेलिये
न भेजिये इसबातको अद्भुतने स्वीकारकिया और वाणवेगी से
कहा कि युद्ध प्रारम्भकरो उसने सूमनामी म्लेच्छको आज्ञादी
वह रणभूमिमेंआया और अनेक मायाकृत चमत्कार दिखाकर
युद्धकेलिये योद्धाओं को बुलानेलगा राजपुत्र वायुविक्रम युद्ध
की आज्ञालेकर उसके सन्मुखगया सूमने कुछमायाकी कि वि-
जलीचमकी और एक कालीघटाआकर छागई राजपुत्रने अपने

समझा कि इधर तो ये म्लेच्छआते हैं उधरसे अद्भुतकीसेना के लोगदौड़ेंगे तुम अपनीसेनातक न पहुंचसकोगे यहसोचकर वह घबड़ाकर इधर उधर देखनेलगा उसदिन अद्भुतकीआज्ञा से रातकोभी बाज़ारखुलाथा और क्रयविक्रयहोरहाथा वहां एक वणिककी दुकान में घी औटरहाथा और कड़कड़ बोलरहाथा सुवास ने उसको उसकढ़ाउ में डालदिया और उस वणिकपर खड्गखींचकरचला वह वणियां दुकान छोड़करभागा और सूम उसकड़ाही में पूरीकीभांति तलगया उसके मरनेका कोलाहल हुआ और अग्नि और पाषाण बरसने लगे उसको सुनकर चित्राङ्गदबोला कि वह मारा वाह हमारे गुरुपुत्र कितनाभला छलकरते हैं और उधर बाणवेगी शिरपकड़कर बैठगया कि अरेदुष्ट तैंने बड़ा दुष्कर्मकिया परन्तु अद्भुतके सेनाके लोगोंने सुवासको आघेराथा उसने भी खड्गखींचलिया और युद्धकरने लगा परन्तु वे सब शूरवीर जो पाषाण के होगयेथे सूमके मारे जानेसे फिर मनुष्यके मनुष्यहोगये और अपनेको शस्त्रोंसहित घोड़ोंपरसवार शत्रुसेनामें खड़ादेखकर गदा और खड्गनिकाल निकालकर शत्रुसेनापर पिलपड़े यहदेखकर सबसैनिक सुवास को छोड़कर इनकी ओरआये और सुवास छलांगेंभरताहुआ निकलगया और यहां अस्त्रशस्त्र चलनेलगे यहसेना तो कोसों में पड़ीहुईथी इसकारण से फिर वही हालहुआ कि सवारों से पैदल और पैदलोंसे सवार भिड़गये और लीजियो पकड़ियो का शब्दहोनेलगा उसको सुनकर अद्भुत ने उससभाको विसर्जनकिया और सवारहोकर शीघ्र सेनाके किनारेआया उससमय वैष्णवीसेनाके उन शूरवीरोंने जो मायासे अद्भुत उपासक होगयेथे कहा कि हम जाकर अभी शत्रुसेनाको विध्वंस किये देतेहैं परन्तु चित्राङ्गदने उनकोरोका और कहा कि पहिले पूछाजावै कि यह क्यावातहै निदान जबतक ये पूछेताछे और कुछ

लँगपरलेटरहा और आज्ञादेदी कि जो कोई यहांआवै उसेरो-
कनानहीं यहसुनकर सबसेवक जाजाकर सोरहे बहुरूपियेभी
पहिले तो चलेआयेथे और फिर दुबारा म्लेच्छोंकारूप धारण
करकेगये और जैसेही सभामेंघुसे एकझोका वायुकाऐसालगा
कि अचेतहोकर गिरपड़े और वहीं पड़ेरहे निदान वहरात्रि
इसीप्रकारसे व्यतीतहुई और सूर्यरूपी राजा निद्राकात्यागकर
रश्मिरूपी आयुधों को लेकर आकाशरूपी रणभूमिमें आया ॥

नाराचिकाछन्द । सूरजउदै हुआ जभी । काली निशागई तभी ॥
सुन्दर प्रकाश होगया । जगमें वोदिनहुआनया ॥

उससमय महाराज शत्रुञ्जय सब सेनापतियों सहित श्री
महाराजाधिराजको लेकर रणभूमिमेंआये उधर वाणवेगीजगा
और बहुरूपियों को चैतन्यकरके बोला कि जाओ इसउपकार
को यादरखना और फिर मतआना और फिर सेनालेकर रण-
भूमि की ओरचला उससमय म्लेच्छ नानाप्रकार के मायाकृत
बाहनोंपर बैठेहुए आकाशमार्ग से मायाकृत चमत्कार दिखाते
हुए रणभूमिमेंआये वहां युद्धसेवकोंने सम और विषम भूमिको
बराबरकिया और पानीका छिड़काउ करके धूलको बैठाया उ-
परान्त दोनोंदलों में व्यूहरचनाहुई और उसकेपीछे अद्भुत ने
चाहा कि वैष्णवीसेनाके शूरवीरोंको युद्धकेलियेभेजूं परन्तु चि-
त्राङ्गदने उससेकहा कि शत्रुञ्जय महामन्त्रसे इनसबको चैतन्य
करदेंगे तो ये सबहाथसे निकलजायँगे इससे इनको युद्धकेलिये
न भेजिये इसबातको अद्भुतने स्वीकारकिया और वाणवेगी से
कहा कि युद्ध प्रारम्भकरो उसने सूमनामी म्लेच्छको आज्ञादी
वह रणभूमिमेंआया और अनेक मायाकृत चमत्कार दिखाकर
युद्धकेलिये योद्धाओं को बुलानेलगा राजपुत्र वायुविक्रम युद्ध
की आज्ञालेकर उसके सन्मुखगया सूमने कुछमायाकी कि वि-
जलीचमकी और एक कालीघटाआकर छागई राजपुत्रने अपने

हृदयको कठोरकरके एकखड्ग उसघटामेंमारा परन्तु सूमने फिर मायाकी कि उससे राजपुत्र घोड़ासहित पत्थरकाहोगया और उसने फिर युद्धको बुलाया तब उस राजपुत्रके अनुगामी शूर-वीर क्रमसे उसके सन्मुखगये परन्तु सबपाषाण के होगये यह देखकर राजपुत्र भीष्मविक्रम अपना घोड़ाबढ़ाकर उसके स-न्मुखगया उससमय बाणवेगीने सूमको बुलालिया और आप उससे युद्धकरनेकोगया और पुकारकरबोला कि हे समीर इस राजपुत्र को ठंढाकरदे तुरन्त एकवायुका झोकालगा राजपुत्र मूर्च्छितहोगया और जब चैतन्यहुआ तब उसने फूलोंकीछड़ी मारकर उसको भी अद्भुत उपासक बनादिया उसकेपीछे राज-पुत्र इन्दुविक्रम उस के सन्मुखगया उसकी भी वही गतिहुई संक्षेपमात्रयहहै कि उसदिन सौशूरवीर तो पाषाणकेहोगये और सौ अथवा डेढ़सौ मायाहत चेतसहे कर अद्भुत उपासकहोगये निदान वहदिन इसी में समाप्तहुआ और सायंकाल होनेपर आकाशरूपी बाटिका में तारागणरूपी नानाफूल निशारूपी वायुके चलनेसे खिलगये॥

सो०। नभ फुलवारी माहिं निशावायु चहुँदिशि भ्रमणि।
उडुगण फूलनिकाहिं बहुबिधि बिकसावत भई॥

उससमय दोनोंसेना लौट लौटकर अपने २ डेरोंको आईं और सब सैनिक कमरखोलकर विश्रामकरनेलगे उसकाल में महाराज शत्रुञ्जय ने विचारकिया कि जो शूरवीर नहीं हैं उन की तो लाचारीहै परन्तु जो पाषाणके होगयेहैं उनको महामन्त्र पढ़कर छुड़ालायें यह विचारकर आगेबढ़ेथे कि दूतोंने आकर कहा कि शत्रुने उन शूरवीरोंपर जो पाषाणकेहोगयेहैं सेनानियत इसप्रयोजनसे करदीहै कि श्रीमहाराज जाकर उनको छुड़ा न लेजावें यहसुनकर महाराज शत्रुञ्जय ठहरगये कि अबजानेमें युद्धहोगा फिर युद्ध तो हेहीरहा है रात्रिको युद्धकरना निष्फल

है जब ये म्लेच्छमारेजायँगे तब वे आपही मायासे मुक्तहोज यँगे निदान महाराज तो यहां परमेश्वरके आश्रयपर ठहरग और उधर अद्भुत सबको लेकर वहीं नदी के तटपर आन॰ करनेलगा और पहले दिनकी समान उत्सवकिया और मद्य पानहोतारहा॥

चौ०। मदको पानपात्र तेहि पलमें। चहुँदिशि चलनलग्यो तेहिगनमें॥
हँसिहँसिके पुनिपुनिमदपीमें। मद्य पद्य पढ़ि हुलसत जीमें॥

उससमय वैष्णवीसेनाके वहुरूपियेभी अपनीचिंतामें फिर रहेथे दैवयोगसे बाणवेगी लघुशंकाकरनेगया उसको जातेहुए देखकर सुवासने तुरन्तअपनारूप उसकासावनाया और उस सभाके किनारेपरजाकर हाथसे सूमकोबुलाया वहउसको अपनास्वामी समझकरउठा चित्रांगदने पूछा कि कहांजातेहो वह बोला कि आताहूं मेरेस्वामी मुझकोबुलातेहैं यहकहकर वह सुवासकेपासआया उसने उसकाहाथ पकड़लिया और कहा कि एकांतमेंचलो मुझकोकुछमंत्र तुमसेकरना है और यहकहकर वहउसको वनकीओरलेचला उधर बाणवेगी जब लघुशंकाकरकेआया चित्रांगदनेपूछा कि आपसूमको बुलालेगयेथे उसने कहा नहीं तो तब चित्राङ्गद ने कहा कि हाय मारडाला अरे शीघ्र सूमकी खबरलो नहीं तो वह माराजायगा यहसुनकर बाणवेगी और और म्लेच्छ वनकीओर दौड़े यहां सुवास ने मूर्च्छाएडमारकर सूमको अचेतकरदियाथा और उसकावधकरना चाहताथा कि पकड़ियो पकड़ियो का शब्दसुनकर और म्लेच्छों को आतेहुए देखकर वह उसको कंधेपर रखकरभागा म्लेच्छोंनेकहा देखो वहजाताहै बाणवेगीने पूछा किधर है एक ने कहा अभी अभी इसीओरगयाहै यहसुनकर सब उसीओर दौड़े सुवास वनसेनिकलकर अद्भुतकी सेनाकेसमीप पहुंचाथा कि उसने लेना लेनाका शब्द अपने पीछेसुना उसको सुनकर

समझा कि इधर तो ये म्लेच्छआते हैं उधरसे अद्भुतकीसेना
के लोगदौड़ेंगे तुम अपनीसेनातक न पहुंचसकोगे यहसोचकर
वह घबड़ाकर इधर उधर देखनेलगा उसदिन अद्भुतकीआज्ञा
से रातकोभी बाज़ारखुलाथा और क्रयविक्रयहोरहाथा वहां एक
बणिककी दुकान में घी औटरहाथा और कड़ाड़ बोलरहाथा
सुवास ने उसको उसकढ़ाउ में डालदिया और उस बणिकपर
खड्गखींचकरचला वह बणियां दुकान छोड़करभागा और सूम
उसकड़ाही में पूरीकीभांति तलगया उसके मरनेका कोलाहल
हुआ और अग्नि और पाषाण बरसने लगे उसको सुनकर
चित्राङ्ग बोला कि वह मारा वाह हमारे गुरुपुत्र कितनाभला
छलकरते हैं और उधर वाणवेगी शिरपकड़कर बैठगया कि
अरेदुष्ट तैंने बड़ा दुष्कर्मकिया परन्तु अद्भुतके सेनाके लोगोंने
सुवासको आघेराथा उसने भी खड्गखींचलिया और युद्धकरने
लगा परन्तु वे सब शूरवीर जो पाषाण के होगयेथे सूमके मारे
जानेसे फिर मनुष्यके मनुष्यहोगये और अपनेको शस्त्रोंसहित
घोड़ोंपरसवार शत्रुसेनामें खड़ादेखकर गदा और खड्गनिकाल
निकालकर शत्रुसेनापर पिलपड़े यहदेखकर सबसैनिक सुवास
को छोड़कर इनकी ओरआये और सुवास छलांगेंभरताहुआ
निकलगया और यहां अस्त्रशस्त्र चलनेलगे यहसेना तो कोसों
में पड़ीहुईथी इसकारण से फिर वही हालहुआ कि सवारों से
पैदल और पैदलोंसे सवार भिड़गये और लीजियो पकड़ियो
का शब्दहोनेलगा उसको सुनकर अद्भुत ने उससभाको बिस-
र्जनकिया और सवारहोकर शीघ्र सेनाके किनारेआया उसस-
मय वैष्णवीसेनाके उन शूरवीरोंने जो मायासे अद्भुत उपासक
होगयेथे कहा कि हम जाकर अभी शत्रुसेनाको बिध्वंस किये
देतेहैं परन्तु चित्राङ्गदने उनकोरोका और कहा कि पहिले पू-
छाजावै कि यह क्याबातहै निदान जबतक ये पूछेताछे और कुछ

प्रबन्धकरै तबतक सहस्रोंके शिरकटगये और वहक्षेत्र लोथोंसे पटगया और घोड़ोंकी हिनहिनाहटसे वहबन गूंजनेलगा और खड्गोंकी सनसनाहट और बाणोंकेजाने का सन्नाटा बड़ेवेग से होनेलगा उससमय अस्त्रों के चलने से वायुरुकगई और शूर वीर प्रतिपद सहस्रों मरनेलगे॥

तोमरछन्द। तेहि सेनके भटशुद्ध। तहँ करतभे अति युद्ध॥
जय दुन्दुभी बजवाय। सबबढ़त शायक छाय॥
शरभल्ल तोमर भूरि। इतदये अविरल पूरि॥
जिमि रुद्रबासवकाल। तिमिपरे देखि कराल॥

दो०। रथी पदादी अनगिने अगणित तुरँग सवार।
अगणित गजहय भटमहा लरिभिरिमरे गँवार॥

उससमय वैष्णवीसेनाके शूरवीर मारधाड़ करतेहुए सेनासे निकलआये और अपने डेरोंकीओरचले और वहांआकर सब ने बिश्रामकिया और उधर म्लेच्छोंने बड़े बड़े उपायों से उस आपस के युद्धको बन्दकिया रात्रिभर इसीमें व्यतीतहुई और सूर्यरूपी शूरवीरको रश्मिरूपी शस्त्रोंसहित आतेहुए जानकर तारागणरूपी शत्रुसेना पलायमान होगई॥

संयुताछन्द। रवि उदयहोत कढ़ीप्रभा। तब प्रातकाल समौ भवा॥
उडुगणनसहशशिकीसभा। भजिगईंतेहिलखितजिनभा॥

प्रातकाल होनेपर श्रीमहाराजाधिराज सभामें आकर वि-राजमानहुए और जो शूरवीर मायासे मुक्तहोकर आयेथे उन का सनूमानाकिया और उधर म्लेच्छोंकीलोथें उठवाईगईं उस समय चित्रांगदनेकहा कि हे बाणवेगी तुम बचेरहना आजका दिन मुझको तुमर भारीजानपड़ता है बाणवेगीबोला कि मैं डेरेमेंजाकर अकेला बैठताहूं और वहां मैं शत्रुञ्जयके महामन्त्र ो बन्दकरने का उपाय करूंगा और आज उसका महामन्त्र

वाकर कटवादियाथा यहकहकर उसने आज्ञादी कि आज मेरे रहनेको एकडेरा पृथक् खड़ाकियाजावै और वहां शय्याआसन मद्य भोजन जलआदि सम्पूर्णपदार्थ रखदियेजावें कि मुझको किसी पदार्थके लिये बाहर न आनापड़ै और उस सबसरंजाम को ठीककरके सबसेवक वहांसे चले- वें और वहां कोईनरहै यहआज्ञापाकर सेवक वहांसेचले परन्तु बहुरूपियों के तो मन से लगीथी वह अनेकभेष धारणकियेहुए उससभासे लगेहुएथे और उन्होंने सब उक्तवार्ताको सुना सुनतेहीं बाहर चलेआये और भारवाही अर्थात् मजूरोंका भेषबनाकर वहांगये जहां सेवक वाणवेगीके सबपदार्थोंको निकाला निकूली कररहेथे और बोले कि जो आपको भारवाही चाहियें तो हमहीं से कामलीजिये यहसुनकर वाणवेगी के भंडारीने कई बहुरूपियोंपर सरंजाम लदवाकरभेजा और जब सबपदार्थ पहुंचगये तब उसने मजूरों को कमेरी देकर बिदाकरना चाहा उससमय सुवास ने हाथ जोड़कर भंडारी से कहा कि हे स्वामी जहां से मैं यह पदार्थ ढोकर लायाहूं उस डेरेमें मेरा एक बटुआ रहगया है उस में मेरी सब वयकी कमाई है आप मेरे साथ चलैं तो मैं उस को ढूंढ़कर लेलूं नहीं तो मैं दीन मरजाऊंगा और यह कहकर उसने चुपके से उससे कहा कि एक अशरफी आपको भी दूँगा यह सुनकर भण्डारी लालचमें आया और विचार करनेलगा कि चलकर जोकुछ बटुएमेंहो उसमेंसे आधा इसको दो और आधा तुमलेलो यह मजूरतोहैही क्याकरलेगा निदान वह उसकेसाथ होलिया और जब एकान्तमें पहुँचा सुवासने मूर्च्छांडमारकर उसको मूर्च्छितकरदिया और उसके वस्त्रउतार कर उसीकासा अपना स्वरूपबनाया और उसको और अधिक अचेतकरके किसीगर्तमें डालदिया और आपआकर डेराखड़ा करानेलगा परन्तु सेवकोंको आज्ञादी कि तुम सब चलेजाओ

मैं अकेला सब प्रबन्ध करलूंगा क्योंकि बाणवेगीको बहुरूपियों का बड़ा भयहै इससे किसीकाठहरना अच्छा नहीं यह सुनकर सब सेवक चलेआये और वहां केवल आप और वेमजूर जो बहुरूपियेथे रहगये उससमय सुवासने आज्ञादी कि बड़ीशीघ्रतासे डेरेके चारोंओर बीसबीस हाथ पृथ्वी खोदकर अग्निगर्भा अर्थात् बारूदभरदो और सुरंगखोदकर चारोंओर वर्त्तिकालगादो यह आज्ञापातेही उन बहुरूपियों ने वैसाहीकिया और चादरें फाड़ फाड़कर वर्त्तिकाबनाईं और उन में बारूदभरकर बीसहाथकी दूरीपर सुरंगखोदकरलेगये और सुरंग के मुखको बन्दकरदिया इसके उपरान्त उसडेरेमें उत्तम बिछौना बिछादिये और रत्नजटित शय्या बिछाकर गद्दी और उपधान लगादिये और फूल और सुगन्धित द्रव्य और मद्य और खानेपीने के सम्पूर्णपदार्थ यथायोग्य स्थानोंपर रखदिये निदान सबप्रकार का सरंजाम ठीककिया और इधर वाणवेगी ने सोचा कि कल वैष्णवीसेनाको विध्वंसकरदेना चाहिये यहसोचकर उसने एक पत्रलिखकर महाराज शत्रुञ्जयके पासभेजा सेवकोंने महाराज से कहा कि शत्रुसेनासे एकम्लेच्छ पत्रलेकरआयाहै महाराज ने उसे बुलवाकर बड़े सन्मान से आसनपर बैठाया क्योंकि वह अद्भुत उपासकथा जो कदापि वह मायावीहोता तो इसप्रकारकीसभा में न आसकता निदान वहपत्र पढ़ागया तो उसमें लिखाथा कि हे शत्रुञ्जय यहां आकर हमारे परमेश्वर अद्भुत की उपासनाकरो नहीं तो आज तुम्हारा महामन्त्र बन्दकरके कल वैष्णवोंकालेश न रहनेदूंगा महाराजने उसपत्रकोपढ़कर उत्तरलिखा कि श्रीविष्णोर्जयति अरे वर्णसंकर धर्महीन जो तुझसे बनपड़े वहतूकर हमतेरे उस श्वान शृगालरूपी परमेश्वरको सिवाय दुर्बचन कहनेके अच्छे शब्दोंसे भी स्मर्णनहीं करसकते हैं और हमको महामन्त्रपर कुछभरोसानहींहै हमको

केवल श्रीविष्णुभगवान्का भरोसाहै जो सर्वव्यापी और हमारा रक्षकहै यहउत्तर लिखकर उसीम्लेच्छकेहाथ भेजदियावहउसको वाणवेगीके पासलेगया वह उसे पढ़कर क्रोधके मारेलालहोग- या और बोला कि इनकी मृत्युही अबआई है यह कहकरउठा कि डेरेमें जाकर महामंत्रको बन्दकरूं परन्तु चित्रांगदबोला कि अब जो दिनरहगया है उसको यहीं व्यतीत कीजिये क्योंकि आजका दिन अन्तसमयकाहै हम आपको देखें और आपह- में देखें फिर हमकहां और आपकहां यह सुनकर वाणवेगीहँस- कर बैठगया और बोला कि क्यों श्रीमान् तुम सदैव मेरा बुरा चीततेहो और बुरे बचन मुखसे निकालतेहो वह बोला कि इन वैष्णवोंसे ऐसी हेकड़ीकरके कोई नहींबचा जो तुम बचजाओ तो बचजावो और मैं ऐसीबातें इसकारणसे कहाकरताहूँ कि तुम चौकसरहो सो आज अवश्य बहुतही चौकस रहना आजतुम किसीप्रकार से न बचोगे निदान इन्हींबातों में वह दिन व्यतीत हुआ और कालरूपी बहुरूपियेने आकाशरूपी डेरेमें रात्रिरूपी अग्निगर्भा अर्थात् बारूद बिछाकर चन्द्रमारूपी बर्त्तिका को प्रज्वलित किया ॥

रतिलेखाछं० । निशिआय अति कृष्ण सबदिशनछाई । शशिकीनपरकाशनभ जरनआई ॥ उजियारअति स्वच्छ सब जगतछायो । अवलोकि दृग ताहि अति हरषपायो ॥

सायंकाल होतेही वाणवेगी मायाकरनेके निमित्त उसडेरेकी ओरगया और कहतागया कि युद्धके वाद्यबजायेजावें कल मैं हूँ और ये वैष्णव हैं यह आज्ञाहोतेही युद्धके वाद्यबजने लगे वैष्णवी सेनाके दूतोंने यह खबर श्रीमहाराजाधिराजको जाकर सुनाई उन्होंने भी युद्धके वाद्यबजाये जानेकी आज्ञादी और उ- नकी आज्ञाके अनुकूल नगाड़ेगड़गड़ाने लगे कि उनकाशब्द सुनकर सब शत्रुओंका हृदय कांपनेलगा उससमय वैष्णवीसे-

नाके वीरोंने समझा कि कलहमारी सेना मायावी म्लेच्छों के हाथसे अजयपावैगी इससे सबके चित्तको ह्रासथा और मन उदासथा शूरवीरअपने आयुधोंको युद्धयोग्यकरतेथे और शत्रु सेनामें सबसैनिक वैष्णवी सेनाकाधन लूटनेकी प्रसन्नता में थे कोई हँसताथा कोई गाताथा कोई पद पढ़ताथा और सबप्रसन्नता पूर्वक अपने शस्त्रोंको शिलाओंपर पैनातेथे निदानसैनिक तो युद्धकी तयारी कररहे थे और वाणवेगी अपने चारों ओर मायाकृत मण्डल बांधताहुआ और बायेंदांयें देखताहुआ डेरे में आया उससमय मजूर तो चलेगये थे केवल भण्डारि वहां मौजूदथा उसने प्रणामकिया इसकेपीछे वाणवेगीने वहांसबसरंजाम ठीक देखकर आज्ञादी कि अबतुमभी चलेजाओ सुवास वहांसे चलाआया और जब वह एकाकी रहगया तबकुछमाया करके बेखटके होकर बैठगया और महामन्त्र बन्द करने का उपाय करनेलगा परन्तु वैष्णवीसेना में तो बहुरूपिये बहुत थे इससे जो सुरंग लगानेके भेदको न जानतेथे वे वाणवेगीकाबध करनेको उसके डेरेके समीपगये परन्तु जैसेही वहांगये उनका चित्त विकलहोगया और विक्षिप्तसे होगये और जब वहां से हटआये तब फिर ज्योंके त्यों होगये और समझे कि इस दशा के होनेका कारण मायाहै हाय इसदुष्ट मायावीसे कोई बशनहीं चलताहै सबेरे यहवैष्णवी सेनाको विध्वंस करेगा यह सोचकर वे रोनेलगे और बनमें आकर परमेश्वर से प्रार्थना करनेलगे कि हे प्रभो हमको और हमारी सेनाको इस अधर्मी के हाथसे बचाले ॥ होतुम कृपासिंधु भगवाना। करहुकृपा अब दया निधाना ॥ निदान ये सब तो यहां प्रार्थना करतेरहे और वहांबहुरूपिये डेरेसे कुछ दूरीपर घातमें लगेरहे और जब वाणवेगीने मायामंत्र कुछ जपकर अग्निको प्रज्वलितकिया औरउसमें मांस आदिहोमकरके म्लेच्छोंमायाके अधिष्ठाता देवताओंका आवा-

हनकरनेलगा उससमय सुवास और सुदास बहुरूपिये श्रीबिष्णु भगवान्का ध्यानकरके आगेबढ़े वहां कुछ पहराचौकी तो थाही नहीं क्योंकि बाणवेगीने पहिलेदिनतो दीपकमायाकृत प्रज्वलि-तकरके अपनी रक्षाकीथी दूसरेदिन वायुकेझोकेसे जो जाताथा मूर्च्छितहे जाताथा और आज ऐसी मायाकी थी जानेवाला वि-क्षिप्तहोजाता था और बहुरूपियों ने तो डेरेसे बीसहाथपर सुरंग का मुखरक्खा था निदान वहांजाकर उन्होंने चारोंओरसे अग्नि लगादी और वहांसे तत्काल हटगये आगलगतेही वह बारूद डेरा और शय्या और सब सामग्रीको लेकर आकाश की ओर उड़ी और ऐसा महान्घोरशब्दहुआ कि अद्भुत अपने सिंहा-सनपरसे उछलकर गिरपड़ा और चित्रांगद अपने हृदयपर हाथरखकर व्याकुलहोकर लोटनेलगा कि हाय हृदय में बड़ी चोटलगी और जो जो सभासद् वहांथे उन सबके कान बड़ी देरतक बहिरेरहे आये सांइसांइ के सिवाय कुछ उनको सुनाई नहीं पड़ताथा और पृथ्वी से धूल और तम्बू आदि के खण्ड बारम्बार उछलतेथे उसको देखकर सब कहतेथे कि परमेश्वर अद्भुतने क्रोधकियाहै इसीसे यह सब होरहाहै और बाणबेगी के मरनेसे अन्धकार छागया और बड़ा कोलाहल हुआ और आंधी बड़ेबेगसेआई और वैष्णवीसेनाके सब शूरबीर जो उस की मायासे हतचेतसहोकर अद्भुत उपासक होगयेथे सब चै-तन्यहोगये वे अपने को वहां देखकर खड्ग निकाल निकाल कर अद्भुत उपासकोंका बधकरनेलगे वह सब डरेहुए तो थेही घबराकर भागे और अद्भुतभी कनातफाड़कर बड़ी कठिनतासे अपने प्राणलेकर भागगया तब वे शूरबीर सभासे निकलकर अद्भुतकी सेनापर गिरे और एक बात यह और हुई कि सुरंग के उड़नेके शब्दको सुनकर घोड़े बन्धनटुड़ाटुड़ाकर बनकीओर भागे और सेनामें भी भयकेकारणसे भगदड़पड़गई उससमय

अद्भुत और महावीर और चित्राङ्गद कम्बल ओढ़ओढ़ कर एक गर्तमें उतरगये और औंधे पड़रहे कि देखिये अब क्या होताहै और पड़े २ अपनी सेनाकी दुर्दशा देखतेथे कि लोग रोरहेहैं कोई कहताहै हाय कहांजाऊँ दूसरा बोलताहै हे मेरेपरमेश्वर यह क्या किया हाय मेराबेटा डेरेमेंरहगया तीसरा कहताथा अरेभाई बताओ तो बचेंगे कि नहीं बचेंगे चौथा कहता था हाय मेरी सुकुमारस्त्री न जाने किधरगई और उसपर कैसी बीती कोई कहताथा हाय हमारी माकी बुढ़ापेमें मट्टी खराबगई कि घोड़ोंकी टापों में कुचलकर मरगई कोई अपनी बहन की यादकरताथा और लड़के अपने बापसे लपटकर हाय मा हाय माकरकेरोतेथे और बनमें जो घोड़ोंके हिनहिनानेकाशब्द सुनाई पड़ताथा तो यह जानपड़ताथा कि सेना आरहीहै इससे लोग इधरसे उधर भाग कर जातेथे और फिर उधरसे भागकर इधर को आतेथे और वैष्णवीसेना के बहरूपिये लूटतेफिरतेथे और पुकारतेथे कि भागो सेना आगई इसी आपत्तिकालमें वैष्णवी सेनाके शूरबीरोंने खड्गखींच लिये और शत्रुसेना को मारना आरम्भकिया और गर्जगर्जकर ऐसा युद्धकिया कि जिधर जा पड़े खेतकेखेत उड़ादिये इस सेनामें पर्वतीथे और अद्भुत और विशल्य की सेनाथीं तीनों मिलाकर कईकरोड़ मनुष्योंकी सेना थी सो इतनी बड़ी सेनामें यह बात सम्भव नहीं है कि सबही बोदेथे शूरवीर भी बहुतसेथे वे सब इस आपत्तिकालमें भी न भागे और शस्त्रलेकर युद्धकरनेलगे परन्तु वैष्णवी सेनाकेशूरबीर तो बहुत थोड़ेथे और वह सेना बड़ी भारीथी इससे एक ओरसे जो सेना तयारहोकर चली और दूसरी ओरसे दूसरी अनी आई उन्होंने एक दूसरेको शत्रुसमझा और आपस में लड़नेलगे परन्तु वैष्णवीसेना के बीर तो युद्धविचक्षणथे वे जब आयुधपात करतेथे तब विष्णुकी जयबोलकर मारतेथे जिसमें

यदि कोई वैष्णवहोगा तो कहैगा कि हमभी वैष्णवहैं और जो नास्तिकहोगा वह माराजायगा ऐसाकरनेसे वह आपसके युद्ध से बचेरहे और थोड़ेहोनेके कारणसे शत्रुओं की धर्षणासे बचे रहे और उन्होंने शस्त्रोंके प्रहारसे शूरवीरताका बागलगादिया जिसमें शत्रुओंकेकटेहुएशिर अनगिनेफूल लगेहुएथे और रुंड बहुत प्रकार के वृक्षथे और रुधिररूपी जलधारा बहतीथी और मृतकों के मरणकालके शब्द नानाप्रकारके पक्षी बोलते थे और शस्त्रों का चलना उस बागमें खुरपी आदि से वृक्षोंको खोदना और लगानाथा॥

चौ० माचत भयो सुनो तेहिपलमें। अतिशयघोर युद्ध तेहि थलमें॥
पट्टिश शक्ति भल्लशर रूरे। आयुध विविध दुहूंदिशि पूरे॥
दिव्य शरन की वर्षा करिकरि। लरेसुभटबहुविधिसोंचरिचरि॥
बिनामुण्ड के अगणित योधा। आयुध गहें करें अवरोधा॥
कितने मरे धरणि पै लोटें। मारु मारु कहि भूमि खसोटें॥
कितने खरे अधमरे झूमैं। घायल किते रोपसा घूमैं॥
रुण्डमुण्ड शोणितसों धरणी। भई भयानक रूप विवरणी॥

जब शत्रुसेना आपसमें लड़नेलगी तब वैष्णवी सेनाकेशूरबीर निकलकर अपनी सेना में चलेआये यहांसब सेना तयार थी बहुरूपियोंने जाकर पहिले शूरवीरोंके आनेका वृत्तान्त कहा फिर वे सब शूरवीर भी सेना में पहुंचे और उधरजो शूरवीर थे वह तो रणमें कटमरे और बाकी सब पर्वत और बनमें भागगये विचक्षण बहुरूपिया एक डेरेमें कैदथा जब सेना भागगई और कोई रोकनेवाला न रहा तब वहांसे निकलकर अपनी सेनाकी ओर चला आया रातभर यहीमार धाड़रही उपरान्त वहसमय आया कि कालचक्र रूपी रंगन हारने संसारसे रात्रिरूपी रंग को धोडाला और सूर्यकी प्रभारूपी दाड़िमी रंग में रँग दिया॥
हंसगति छन्द। सहसकलासों उगे भानु जब पूरब। जगसों मिटिगो

अन्धकार अति गूरव ॥ जीव जन्तु सब जागे अरु सब नरवर । निज निज कामनि लागे तजितजि सरवर ॥

प्रातःकाल होनेपर वह उपाधिमिटी और अद्भुत और चित्रांगद उसगर्तसे निकले उसकोदेखकर सबने उसेअपना परमेश्वर जानकर दण्डवत् की और उसनेजाकर वाणवेगी के डेरेको देखा तो वहां एक बड़ाभारी गर्तमालूम हुआ उससमय चित्रांगदने कहा कि उस दुष्टका यही दण्डथा बहुतदूनकी उड़ाया करताथा मैं कहताथा कि देख हमारे गुरुपुत्रको बुरा भलामत कहे परन्तु वह न माना और अन्तको सीधा नरक में गया यह कहकर वह उस मिथ्या ईश्वरको लेकर सभामें आया और उस को सिंहासनपर बैठाया और फिर सेना में जाकर प्रबन्ध किया और भागीहुई सेनाको ढिंढोरा पिटवाकर बसाया निदान यहां तो यह प्रबन्ध रहा और वहां वैष्णवी सेना में प्रातःकाल होने पर सब शूरवीर श्रीमहाराजाधिराज से मिले महाराज शत्रुंजय ने उनके आनेकी प्रसन्नता में उत्सव कराया और सुवास आदि बहुरूपियोंको धन देकर उनका अधिकार बढ़ाया ॥

छप्पै । नृपति वीर बर वरि सेनभट चण्ड विचक्षण । बेदविहित सत पन्थ धर्म सज्जन जन रक्षण ॥ प्रमित भांति उद्दण्ड चण्ड पाखण्ड विखण्डक । श्रुति अस्मृतिसों विहित सुभग शुचि धर्म सुमण्डक ॥ कबि कुंजलाल कहत तव यश धन धान्य सम्पति सुजय । तब लगि रहैं अक्षय सकल जब लगि दिव शशि सूरमय ॥

निदान वैष्णवी सेना में तो आनन्द होरहा है परन्तु उधर अद्भुतने फिर महेन्द्रको पत्र लिखा कि हे हमारे भक्त वाणवेगी को बड़ाअभिमान होगयाथा और अभिमानको हमकदापि नहीं रहने देते हैं इससे हमनेउसको बैकुण्ठमें भेजदिया अब किसी और को हमारी सहायताके लिये भेजो यह लिखकर वह पत्र पर्वतपर रखदिया मायाकृत हस्त उसको लेकर महेन्द्रके पास गया उससमय महेन्द्र बिचित्रमायाकी सभामें आया हुआ था

क्योंकि बिचित्रमाया मुद्रिकालेनेको जानेवालीथी और सेनाको किसी बड़े मायावीको सौंपनाथा निदान वह हस्त पत्र लाया महेन्द्रने उसे पढ़कर म्लेच्छोंके मारेजानेका बड़ा सोचकिया और कहा कि परमेश्वरके आनेसे वृद्धि होनीचाहिये थी और सबको रक्षित रहना योग्यथा परन्तु यहां तो और विपरीत होताहै कि सब मायाकृतदेश उजड़ाजाता है अब मैं किसको भेजूं और क्या करूं जो नहीं भेजताहूं तो धर्मपीड़ा पाता है यह कहही रहाथा कि इतने में मायाकृत पक्षी आये और उन्होंने नरतन धारणकरके दण्डवत् की और कहा कि विचक्षण और अश्ववेगी भाई वाणवेगीका दोनों आये हैं महेन्द्रने कुछ म्लेच्छों को भेज कर उनको सन्मान पूर्वक बुलवाया उन्होंने आकर महेन्द्र को भेटदी और अपनी प्रतिष्ठाकेयोग्य आसनपर बैठगये उससमय अश्ववेगीको महेन्द्रने परमेश्वरका पत्र दिखाकर कहा कि भाई तेरामारागया यह सुनकर वह रोनेलगा और बोला कि मैं जाकर अपने भाईका बदलावैष्णवोंसे लेताहूं महेन्द्रको तो किसी को वहां भेजनाहीं था उसके आरूढ़ होनेपर वह प्रसन्न हुआ और उसको प्रतिष्ठा बस्त्र देकर बिदाकिया और वह बाहर आकर अपनी सेनाको लेनेके लिये अपनेदेशको चलागया इसके युद्धकी कथा दूसरेखण्डमें आवेगी निदान उसके चलेजाने पर महेन्द्रने सबसेना बिचक्षणको सौंपदी और बिचित्रमायासेकहा कि तुम मायाकर्ताकी मुद्रिका लेनेकोजाओ उससमय बिचक्षण बोला कि मैं दीर्घसूत्री नहींहूं मैं आजही सब शत्रुओंका काम तमाम करूंगा तब महेन्द्रने उसे समझाया कि अभी युद्ध का समय नहीं है जहां सैन्धसे मायावी जो मायाकर्ताके पौत्रहैं हैरान होगये तहां तुम्हारी क्या चलेगी तुमसेनामें सेनापति बने बैठे रहो और मुझे मेलाकरने दो यह सुनकर विचक्षणने बड़ी नम्रतासे कहा कि आपनेबड़ा अनुग्रह किया जो मुझको समझाया

परन्तु जबतक मैं मौजूदहूं तबतक आपमेला न करें जब मैं मारा जाऊं अथवा मेरा कुछ वश न चलसके तब आप मेलाकीजियेगा यह सुनकर महेन्द्र बोला कि अच्छा जो तुम्हारी इच्छाहो सोकरो और यह कहकर पूछा कि सैन्धजी कहांहैं लोगोंने कहा कि बनमें कहीं छिपकर शत्रुओंके चित्रखींचा करतेहैं और उनकी स्त्री उनकी और उनकी सेनाकी रक्षा में रहतीहैं यह सुनकर उसने बिचित्रमायासे कहा कि अच्छा अब तुम बदरीउद्यान में जाकर जानेकी तय्यारीकरो और मैं देवीखण्ड में जाकर किसी को सेनाकी रक्षाके लिये भेजूंगा और हेविचक्षण तुमभी युद्धकरके अपनाउत्साह मिटालो यह कहकर वह सवारहोकर देवीखंड कीओर चलदिया और बिचित्रमाया बदरी उद्यानको चलीगई उनकेजानेके पीछे विचक्षणने विश्रामकरके मार्गके श्रमको दूर किया और अपनी सेनाको बड़ी धूमधामसे सजाया उपरान्त एक दिन जब सायंकाल हुआ और सूर्य के अस्तहोनेसे रात्रिका अंधकार संसार में छागया॥

वसुकला छन्द। तबनिशाआय। सबदिशाछाय॥ वरअन्धकार। कीन्हों अपार॥ उडुगणसमूह। कढ़िजूहजूह॥ सोपायरात। भेनभविभात॥

उससमय उसने मायाकृततूर बजाई और म्लेच्छों ने शंख आदि नानाप्रकारके वाद्य बजाये मायाकृतपक्षी उसको सुनकर रानी निशाकरीके पास आये और बिनयकरके बोलेकि विचक्षण नामी मायावीने आकर आज शत्रुसेना में युद्धके वाद्य बजवायेहैं उसकीइच्छा युद्धकरनेकी है यह सुनकर रानीनिशाकरीने युद्धके वाद्योंको बजानेकी आज्ञादी वहां भी बाजेबजनेलगे और सब मायावी म्लेच्छ युद्धकेलिये उपस्थितहुए परन्तु सेनाके बहुरूपिये उसी समय बाहर चलेगये और उनमेंसे प्रहासने अपना स्वरूप एक चौदहबर्षके लड़केकासा बनाया और लड़के केसे उत्तम बस्त्र धारणकरके विचक्षणको मद्यपान करानेवाले सेवक

के डेरेके समीपगया वहां वह बैठाहुआ था इसने जाकर हाथ जोड़कर कहा कि मैं एक भलेमनुष्यका पुत्रहूँ आपकृपा करके जो मुझे मद्यपान करानेपर नौकर करादीजिये तो मैं आपका सदैव गुणमानूंगा उसने इसबालकको बड़ा स्वरूपवान् देखकर कहा कि यह मद्यकेपात्र लेकर सभामें चलेजाओ और महाराज को आज मद्यपान कराओ कल मैं समय पाकर तुम्हारे चाकर करानेका उद्योग करूंगा क्योंकि मद्यपीनेके समय थोड़ी बयऔर सुन्दर स्वरूपवानोंको पानक बनानेकी आवश्यकता हुआईकरती है वह तुझको अवश्य चाकर करलेंगे यह सुनकर प्रहास मद्यकेपात्र लेकर सभामेंगया और देखा कि विचक्षणके पभा सद बैठेहुएहैं और सभालगरही है और विचक्षण बड़े मानसे सिंहासनपर बैठाहै उसको देखकर प्रहासने दण्डवत् की और उसने देखतेही पहिचानलिया कि बहुरूपियाहै और सोचा कि इसको बुलाकर ‍ाथ पकड़लूं और सब वृत्तांतपूछूँ यह सो‍कर उसने हाथसे कहा कि मद्यभरकर दे प्रहासभीउसकी त्योरियों से समझगया कि यह पहँचा‍गया प्रकटहो कि बहुरूप धारण विद्याके ग्रन्थों में एक पदार्थलोष्ट क्रियाकरके लिखीहै वहपदार्थ गोलगोल बनाहुआ बहुरूपियोंके हाथमें रहताहै जबकोई उन को पकड़नाचाहताहै तब बड़ी फुरती से वे पकड़नेवालेकेहाथ में उस लोष्टको देदेते हैं वह चिकनाहोताहै और पकड़नेवाला जानताहै कि मैंने हाथ पकड़लिया तब वह उसलोष्टको खींचता है और बहुरूपिये निकलजाते हैं और खींचने के समय उसी लोष्टको ताककर मुखपरमारते हैं कि वह जाकर कण्ठमें फँस जाताहै और फिर मनुष्यबोलनहीं सक्ताहै निदान प्रहास उसी लोष्टको हाथमें छिपायेहुये मद्यसे पानपात्र भरकर लेगया उस ने वह पात्र तो नलिया परन्तु उसका हाथ पकड़ना चाहा तब प्रहासने हाथ को इसप्रकारसे घुमाया कि उसकेहाथ में लोष्टरह

गया और फिर पृथ्वीपर दोनों हाथ जमाकर ढेंकलीकी कला करके दोनों लातें बिचक्षणकी छाती में इतनेबलसे मारीं कि वह सिंहासनके पीछे चितजागिरा यह देखकर सब म्लेच्छ भयभीत हुए कि यह क्या बात और वह जबतक उठै उठै तबतक प्रहासकनात फांदकर और अपना नाम प्रकाशकरके भागगया जब वह उठा उसनेकहा इसको पकड़ना म्लेच्छ दौड़े परन्तु वह यह जावहजाहोकर किसी स्थान में छुपगया जब न मिला तब बिचक्षण बोला कि यह बहुरूपिया परम आपत्तिरूप है अब आप सब जाकर युद्धकी तयारीकरें मैं अकेला इसरात्रिको काटूंगा यह कहकर उसने सभाको विसर्जन किया और बाहर निकलकर ऐसी मायाकी कि वह सभा अदृश्यहोगई फिर बहुरूपियोंने बड़ा खोजकिया और अनेकउपायरचे परन्तु किसीप्रकारसे भीतर जानासम्भव न हुआ और रातभर दोनों सेनाओं में युद्धकी तयारी रही मायावी सब अपने मायाकृत प्रयोगोंको सिद्धकरतेरहे और शूरवीर अस्त्रशस्त्रोंको तीव्र करतेरहे उसदिन रात अन्धेरीथी और कभीकभी बादलभी आजातेथे इससे यह सूचित होताथा कि आज आकाशभी अपनी मायाको सिद्धकर रहाहै कि सूर्यरूपी मायाको प्रकट करके किसी का शिर कटा देखूंगा किसीका हृदय विदीर्णहो किसीका हाथ कटै किसीका पैर टूटै कोई विमानपर चढ़ा चढ़ा घूमै कोई रोवे कोई आपत्ति में फँसे निदान एक नईबात और नया चमत्कारहो वहरात शूरवीरोंके शस्त्र तीव्रकरने और मायावियों के मायाकृत प्रयोगनाना प्रकारसे सिद्ध करने में समाप्तहुई और कालचक्रने सूर्यरूपी मायाकृत चमत्कारको प्रकट करके तारागण रूपी शत्रुसेनाको आकाशरूपी रणभूमि से भगादिया ॥

दो० । निशि राजा सेना उरग नभ रणभूमि समान ॥
सूर शूर आवत निरखि भागे होत विहान ॥

उससमय सेना अनी अनी होकर रणभूमि में आई और रानीनिशाकरी और आनन्दा दोनों बड़ी धूमधामसे मायाकृत विमानोंपर बैठकर रणभूमिकी ओर चलीं उससमय अनेक प्रकारके युद्धके वाद्य बजनेलगे और मायावी नानाप्रकारके मायाकृत चमत्कार दिखातेहुये चले ॥

जयकरीछन्द। नभमें प्रकटत अनिल अथोर। शिलवर्षावत गर्जतघोर ॥
कबहूं प्रकटत बहुजल धार। क्षणमें करत तालु संहार ॥
प्रकटतचपलाचमकतघोर। घनबहुबरणकरत अतिशोर ॥
इविधि दिखावत मायाघोर। पहुंचे रंगभूमि के धोर ॥

जब रणभूमि में सेना व्यूहित होगई तब एक ओर से एक एक काला बादल आकर छागया और उसमें अग्निकी ज्वाला चपलाकी भांति चमकनेलगी थोड़ीदेर पीछे वह बादल फटा और विचक्षण महानागपर सवार उसमें से प्रकट हुआ उसके निकलतेही सहस्रोंचपला रणभूमि में गिरीं कि उनसे वृक्ष और झाड़ी झंकार सब भस्म होगये फिर उसी बादलसे जलकी बर्षा हुई कि धूलका नाम न रहगया उससमय मायाकृत तूर ऐसे शब्दसे बजतीथी कि कान फूटे जातेथे और पृथ्वी और आकाश उससे गूंजनेलगा और वहांके पक्षी और वनकेजीवभय भीत होकर वन छोड़ छोड़कर भागे पृथ्वी कंपायमान होगई और वायु बड़ेवेगसे चलनेलगी इसके उपरान्त रानीनिशाकरी ने एक ओर अपनी सेनाको व्यूहित किया और दूसरीओर विचक्षणने अपनी सेनामें व्यूहरचनाकी और जब सेनाको व्यूहित करचुका तब रणभूमिमें आकर अग्नि और पाषाण बरसाने लगा और युद्धके लिये परदलको बुलानेलगा ॥

जयकरी छन्द। नाम विचक्षणहों बरबीर। मोसमानको जगरणधीर ॥ उरगण क्षण में डारों टोरि। पलमें अचलनिधरों मरोरि ॥ करतलसों महि गर्भ विदारि। सकतमेरु पर्वतकों फारि ॥ नभहि सकतहों छिनमें जाय। बायु न सकति मोर गति पाय ॥ पलमें सकत विश्वकों नासि।

गया और फि पृथ्वीपर दोनों हाथ जमाकर ढेंकलीकी कला करके दोनों लातें बिचक्षणकी छाती में इतनेबलसे मारीं कि वह सिंहासनके पीछे चितजागिरा यह देखकर सब म्लेच्छ भयभीत हुए कि यह क्या बातहै और वह जबतक उठै उठै तबतक प्रहासकनात फांदकर और अपना नाम प्रकाशकरके भागगया जब वह उठा उसनेकहा इसको पकड़ना म्लेच्छ दौड़े परन्तु वह यह जावहजाहोकर किसी स्थान में छुपगया जब न मिला तब बिचक्षण बोला कि यह बहुरूपिया परम आपत्तिरूप है अब आप सब जाकर युद्धकी तयारीकरें मैं अकेला इसरात्रिको काटूंगा यह कहकर उसने सभाको विसर्जन किया और बाहर निकलकर ऐसी मायाकी कि वह सभा अदृश्यहोगई फिर बहुरूपियोंने बड़ा खोजकिया और अनेकउपायरचे परन्तु किसीप्रकारसे भीतर जानासम्भव न हुआ और रातभर दोनों सेनाओं में युद्धकी तयारी रही मायावी सब अपने मायाकृत प्रयोगोंको सिद्ध करतेरहे और शूरवीर अस्त्रशस्त्रोंको तीव्र करतेरहे उसदिन रात अन्धेरीथी और कभीकभी बादलभी आजातेथे इससे यह सूचित होताथा कि आज आकाशभी अपनी मायाको सिद्धकर रहाहै कि सूर्यरूपी मायाको प्रकट करके किसी का शिर कटा देखूंगा किसीका हृदय विदीर्णहो किसीका हाथ कटै किसीका पैर टूटै कोई विमानपर चढ़ा चढ़ा घूमै कोई रोवे कोई आपत्ति में फँसे निदान एक नईबात और नया चमत्कारहो वहरात शूरवीरोंके शस्त्र तीव्रकरने और मायावियों के मायाकृत प्रयोगनाना प्रकारसे सिद्ध करने में समाप्तहुई और कालचक्रने सूर्यरूपी मायाकृत चमत्कारको प्रकट करके तारागण रूपी शत्रुसेनाको आकाशरूपी रणभूमि से भगादिया ॥

दो० । निशि राजा सेना उरग नभ रणभूमि समान ॥
सूर शूर आवत निरखि भागे होत बिहान ॥

उससमय सेना अनी अनी होकर रणभूमि में आई और रानीनिशाकरी और आनन्दा दोनों बड़ी धूमधामसे मायाकृत विमानोंपर बैठकर रणभूमिकी ओर चलीं उससमय अनेक प्रकारके युद्धके वाद्य बजनेलगे और मायावी नानाप्रकारके मायाकृत चमत्कार दिखातेहुये चले॥

जयकरीछन्द। नभमें प्रकटतअनिल अथोर। गिलबर्षावत गर्जतघोर॥
कबहूं प्रकटत बहुजल धार। क्षणमें करत तासु संहार॥
प्रकटतचपलाचमकतघोर। घनबहुबरणकरत अतिशोर॥
इविधि दिखावत मायाघोर। पहुंचे रंगभूमि के धोर॥

जब रणभूमि में सेना व्यूहित होगइ तब एक ओर से एक एक काला बादल आकर छागया और उसमें अग्निकी ज्वाला चपलाकी भांति चमकनेलगी थोड़ीदेर पीछे वह बादल फटा और विचक्षण महानागपर सवार उसमें से प्रकट हुआ उसके निकलतेही सहस्रोंचपला रणभूमि में गिरीं कि उनसे वृक्ष और झाड़ी झंकार सब भस्म होगये फिर उसी बादलसे जलकी बर्षा हुई कि धूलका नाम न रहगया उससमय मायाकृत तूर ऐसे शब्दसे बजतीथीं कि कान फूटे जातेथे और पृथ्वी और आकाश उससे गूंजनेलगा और वहांके पक्षी और वनकेजीवभय भीत होकर वन छोड़ छोड़कर भागे पृथ्वी कंपायमान होगई और वायु बड़ेवेगसे चलनेलगी इसके उपरान्त रानीनिशाकरी ने एक ओर अपनी सेनाको व्यूहित किया और दूसरीओर विचक्षणने अपनी सेनामें व्यूहरचनाकी और जब सेनाको व्यूहित करचुका तब रणभूमिमें आकर अग्नि और पाषाण बरसाने लगा और युद्धके लिये परदलको बुलानेलगा॥

जयकरी छन्द। नाम विचक्षणहौं बरबीर। मोसमानको जगरणधीर॥ उरगण क्षण में डारों टोरि। पलमें अचलनिधरों मरोरि॥ करतलसों महि गर्भ बिदारि। सकतमेरु पर्वतकों फारि॥ नभहि सकतहों छिनमें जाय। बायु न सकति मोर गति पाय॥ पलमें सकत विश्वकों नासि।

केतिक बात बघब नर राति ॥ मम विक्रम सागरको पार। पाय सकतको भूभरतार ॥ मम सन्मुख रणमें जो होहि। नहिं अस जो नहिं जाय व्यपोहि ॥ काल कराल व्याल सममोय। जानहु कहहुं सत्यहित जोय ॥ मृत्यु चहत जो नर सो भाय। मोसों करै युद्ध व्यवसाय ॥

उससमय रानीनिशाकरीकी सेनासे एक म्लेच्छ निकलकर उसके सन्मुख गया उसने कुछ मायाकी कि एक वाण प्रकटहुआ और उसके शरीरको फोड़कर पार निकलगया और वह बैकुंठबासी हुआ फिर दूसरा योद्धागया वह भी उस अलक्षवाण से नबचसका इसीप्रकारसे जब कई योद्धा मारेगये तब रानी आनन्दा अपने डुपट्टेकी गातीमारकर और शिरके बालोंका जूड़ा ांधकर बिमानपरसे कूदी और रणभूमि में आकर मायाकरने लगी उससे विचक्षणके नेत्र अकस्मात् बन्द होगये और फिर जो आंखें खुलीं तो उस निष्पादप भूमिको नानाप्रकार के फूलों से रंगा रंग पाया नानाप्रकारके वृक्ष फूल और फलोंसे लदेहुये लगगये और भांति भांतिकी बेलेंफैलगईं उनपर नानाप्रकार के पक्षी उड़ उड़कर बैठतेथे और मधुर मधुर वाणी बोलतेथे और फूलोंपर भ्रमरों की श्रेणी भौंरती और गुंजार करतीथीं बहुतसे सरोवरोंमें कल्हार और पुण्डरीकआदि नानाजाति के कमल खिलेहुए शोभा देरहे थे जलकीधारायें बहरहीथीं और शीतलमन्दसुगन्ध वायुबहरहीथी ॥

दो०। अतिउत्तम आनन्दप्रद शोभापरम सुपास।
जनुवसन्तऋतु गेहतजि कीन्होंतहांनिवास ॥

और उस आनन्दवाटिकामें वह आनन्दामाया परमसुन्दर स्वरूपधारणकिये उत्तमो-म वस्त्र और आभूषणों से अलंकृत हाथोंमें फूलोंकी छड़ीधारणकिये परमशोभादेतीथी ॥

युक्ताछन्द। दृगयुग मनको मोहैं। तिन संग पुतरी सोहैं ॥
लखि यहउपमायुक्ता। कमल भ्रमर संयुक्ता ॥

नाराचिकाछन्द। भौहैं करी कमानहैं। नैना प्रचण्ड बानहैं ॥

रेखा शिरैं जो देदई। नाराचिका यहोभई॥

उससमय शीतलवायु के झोकोंके लगनेसे विचक्षण और उसकीसेना मोहितहोगई और रससम्बन्धी पदपढ़तेहुए सबके सब उससुन्दरी की ओरचले और जब वे सब उस मायाकृत बागके समीपपहुंचे तब कईपक्षी वनकीओर से उड़तेहुएआये और विचक्षणके शिरपरबैठकर मधुरवाणीसे बोले कि हेश्रीमान् हे मायाकर्ताके भक्त आप आनन्दाकी प्रकटकीहुई मायामें फँसतेहैं यहसबमिथ्याहै यहसुनतेही विचक्षणका मोहदूरहोगया और वह मायाकरनेलगा कि उससे एकबादल आकर छागया और उसमेंसे अंगारे बरसनेलगे जब आनन्दानेदेखा कि वह मायाकृत बागजलता है तब उसने भी कुछमायाकी कि उससे एकबादल प्रकटहोकर उसबागके ऊपर मण्डपरूप होकर छागया और जो आगबरसतीथी वह उसबादलपर पड़तीथी और उसबाग में चिनगारीतक न आतीथी और विचक्षणकी सेना उसीप्रकार से मोहित और हतचेतस रहीआई तब विचक्षण समझा कि जबतक यहबाग न मिटैगा तबतक सैनिक चैतन्य न होंगे यहसमझकर वह वहीं बैठगया और उसनेचाहा कि मायाकरके मायाधिष्ठान देवताओं का आवाहन करके बागको उजड़वाऊं परन्तु उसको बैठतेहुए दूरसे बहुरूपियोंनेदेखा और प्रहास ने कहा कि इसकीसेना आनन्दा के बागको घेरेहै और उसपर मोहित है और वह अग्निके कारण से बागके भीतरहै परन्तु इससमय जो आनन्दा इनसैनिकों से कहती कि जाओ अपने स्वामीको पकड़लाओ तो सबसेना विचक्षणपर फिर पड़ती फिरचाहे सेना उसे मारडालती अथवा वह सेनाको मार डालता सोमैं जाताहूं और रानीनिशाकरी से धावाकराकर विचक्षणका बधकराताहूं यहकहकरचला परन्तु मार्ग में उसे एक छलसूझपड़ा अर्थात् उसने तुरन्त अपना स्वरूप रानी आ-

नन्दाकासा बनाया और मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर रणभूमि में आया और वहां उसवस्त्रको उतारकर एकछलांग ऐसीभरी कि सबको छुमछुमका शब्दसुनाईदिया और सब उसकीओर देख-नेलगे और वह जो उछरकर पृथ्वीपरगिरा सबने यहजाना कि आनन्दा मायाकृत बागसे उड़करआईहै वे सबसैनिक आनन्दा के न दीखनेसे परमविकलथे अब जो उन्होंने इसबनीहुई आ-नन्दाकोदेखा सब उसकीओरदौड़े और बोले कि हे सुन्दरी टुक हमारी ओर तो निहार हमसब तेरे प्रेमके रोगीहैं क्षणमात्र ठ-हरकर हमसब रोगियोंकी नाड़ी तो देखले उसने इन्हें तो कुछ उत्तर न दिया परन्तु विचक्षणसे बोली कि श्रीमान् मेरा अप-राध क्षमाकीजिये और जो मुझपर अग्निकी वर्षा न हो तो मैं आपकेपास आऊं और आपके साथसाथ महाराज महेन्द्र के पासचलूं और जो आपमेरी इस बातको न मानेंगे तो मैंआप की सेनाको आपकेपकड़नेकी आज्ञादेदूँगी विचक्षण उससमय मायासंहारमंत्र पढ़रहाथा उसकी विनयको सुनकर प्रसन्नहुआ कि प्रथम तो ऐसी स्त्री मेरे बशमें होती है जिसपर मायादेशा-धिप मोहित है दूसरे मेरी सेनाभी इसके आधीन है जो सेना को मेरेऊपर भेजेगी तो बड़ी कठिनता पड़जायगी यह कहकर वह पुकारा कि मैं आपआताहूँ और यह कहकर वह उसकेस-मीपआया तब उस बनीहुई आनन्दाने कहा कि क्या अपने साथ मायाके असुरोंको भी लायेहो वह बोला नहीं उसने कहा वह क्यापीछे पीछे आतेहैं उसने जो फिरकर देखा इधरसे प्र-हासने खड्गऐसे बलसे उसकी ग्रीवापर मारा कि उसका शिर कटकर पृथक् जापड़ा तब वह अग्निबर्षा तो दूरहोगई और अन्धकार छागया और कोलाहल मचगया रानीनिशाकरी रो रहीथी कि हाय आनन्दा उधरमिलीजाती है उससमयजबउस ने प्रहासका नामसुना तब उसके प्राणोंमें प्राणआये और उधर

आनन्दा मायाकृत बादलको हटाकर बाहर निकली परन्तुसेना विचक्षणकी इस समयतक मोहितथी वह आनन्दाको देखतेही उसकी सुश्रूषा करनेलगी उसने कहा कि हे मेरे भक्तो तुम जाकर विचित्रमाया की सेनासे युद्धकरो उनको जीतकर मेरेपास आना प्रकटहो कि महेंद्रने इस विचक्षण से कहा था कि तू युद्धमत करै परन्तु इसने न मानाथा और हठसे युद्धकी आज्ञालीथी सो इस म्लेच्छकी निज सेना बारह सहस्र थी उसीको लेकर यह रणभूमिमें आयाथा परन्तु विचित्रमायाकीभी सेना युद्धकेलिये सन्नद्धथी इस प्रयोजनसे कि कदाचित् आवश्यकताहोय तो तत्काल तयार न होसकेंगे निदान उससमय आनन्दाकी आज्ञा से वह बारहसहस्र म्लेच्छ बिचित्रमाया की सेनासे युद्ध करने के गये और आपस में नारिकेल आदि अस्त्रोंका प्रयोग करते हुए युद्धकरनेलगे उससमय त्रिशूल और पंचशूल और खड्गों का प्रहारहोताथा और मायासे सर्प प्रकटहोतेथे और मायावी म्लेच्छों के मरनेसे बड़ाकोलाहल होताथा परन्तु ये तो केवल बारह सहस्रहीथे और बिचित्रमायाकी सेना बहुतथी इसकारण से वह बारहों सहस्र म्लेच्छ घिरगये और एकएकको दसदस ने घेरकर मारडाला पहरभरमें सब यमलोकमें पहुँचगये इधर रानी निशाकरीकी सेनामें जय दुन्दुभी बजी और आनन्दा ने मायाकृत बागका संहारकिया और सेना लौटकर अपने डेरों पर आई और रानी निशाकरी सेनापतियों सहित सभामें गई और सब बहुरूपिये भी आये और सब बैठकर आनन्दपूर्वक मद्यपान करनेलगे परन्तु मायाकृत पक्षी बदरी उद्यानमें गये और वहां बिचित्रमाया से विचक्षण और उसकी सेनाके मारे जानेका वृत्तांत कहा उसने सब हाललिखकर एकपत्र दैवीखण्डमें महाराज महेंद्रके पासभेजा मायाकृत हस्तने वह पत्रले जाकर महेंद्रको दिया और उसने उसे पढ़कर बड़ा शोककिया

और वहांसे बदरी उद्यानमें आया सबने उसका सन्मानकिया औरवह सिंहासनपर आसीनहुआ और सब नामीनामीमायावी म्लेच्छभी वहांआकर बैठेथे महेन्द्रने उनको आज्ञादी कि आज चौंसठसहस्र मायाकृत नगाड़ेबजें और मायाकृत पक्षियोंसे कहदो कि सबदेशमें पुकारआवें कि आज के सातवेंदिन रत्नकूप का मेलाहै और श्रीमायाकर्ताओंकी सभाकादिनहै यहसुनतेही वे सब मायावी पक्षीबनकर आकाशकीओरगये क्योंकि वे साठसहस्र नगाड़े आकाश में अधर टँगेहुएथे और उनपर रक्त पट ढकाहुआथा और वहां मायाकृत पुतलियां हाथमें डंकालियेहुए खड़ीहुईथीं उनम्लेच्छों ने जाकर महेन्द्रकी आज्ञा उन पुतलियोंको सुनादी और वे उन नगाड़ोंको बजानेलगीं उनका प्रचण्डशब्द आकाशमें गूंजनेलगा और सम्पूर्ण मायाकृतदेश के बासियोंने उसशब्दकोसुना उससमय रानी निशाकरी ने प्रहाससे कहा कि मायाकृत नगाड़े बजरहेहैं अब मेला प्रारम्भ हुआ अब बचनेका कोई उपायनहीं है प्रहासबोला कि मैं तुम सबको थैलीमें रखकर एककूप में उतरकर बैठरहूंगा वहबोली महेन्द्र तुम्हाराहाल अद्भुतजाल में देखेगा और जब उसको यहविदितहोगा तुम कूपमेंहो तब उसकूप को पटवादेगा ि र निकलना कठिनहोगा तब प्रहास ने कहा फिर इससमुद्ररूपी आपत्तिसे तरनेका तुमने क्याउपाय सोचाहै वहबोली कि इस विषयमें इस उपाधिसे तरनेके निमित्त आपसे बढ़कर कौनमंत्र देनेवालाहै आपही अपनी प्रमाणिक जिह्वाके द्वारा जो कर्त्तव्य मन्त्रहो उसको प्रकाशकीजिये मैं आपके होतेहुए क्या मन्त्रदूं कहावतहै कि सूर्यकेसामने दीपककाजलाना आप जो मन्त्रदेंगे उसीके अनुकूल हमचलेंगे यहसुनकर प्रहासबोला कि इसमंत्र के करने को एकान्त चाहिये यहसुनकर रानी निशाकरी कुछ मन्त्रियोंको साथलेकर एकपृथक् डेरेमेंआई और वहां मन्त्रहोने

लगा और सबने मिलकर यहीकहा कि जो कुछ प्रहासजीकहैं वही कर्त्तव्यहै प्रहासबोला कि एकदिन सायंकाल को तीन से-नापति बहुतसीसेना और डेरेसाथलेकर मेरेसाथचलें और जहां मैं उनको नियतकरदूं वहांसे न हटें फिर आगे मैं समझलूंगा यहसुनकर रानीरक्तकेशी और केसरीमाया और समृद्धने कहा कि प्रहासजी हम आपके साथहैं प्रहासबोला कि इसमन्त्र को किसीसे मतकहो और जाकर गुप्तप्रकारसे चारलक्षसेना तया-रकरो जब सायंकालहोगा मैं तुमको लेचलूंगा यहकहकर वे बाहिरआकर ठहरे और रानी रक्तकेशी ने चुपचाप चारलक्ष सेना अस्त्रादिसेयुक्त तयारकराई और जब सूर्यअस्तहुआ और चन्द्रमारूपी राजा आकाशरूपी डेरेमें तारागणरूपी मन्त्रियों सहित मन्त्रकरनेको बैठा ॥

वसुकलाछन्द । सन्ध्याजुभई । निशिआयगई ॥
अँधियारभयो । जगछायगयो ॥

सायंकालहोतेही प्रहास वनमें चलागया और रानी रक्त-केशी और केसरीमाया और समृद्ध तीनों एकदूसरेकेपीछे वहां आये और उसीप्रकार से सेनाभी सहस्र सहस्रकी अनीहोकर जो स्थान बतायागयाथा वहां फेरफार खाकर आगई और कि-सीको न जानपड़ा कि चारलाख मनुष्य किधरगये क्योंकि यहां सेना पचासलाख के लगभगथी और जो पचासमेंसे चारकम होजाय तो कुछ जाननहीं पड़ताहै निदान जब सबआगये तब वहभी मायाकृत बिमानपर बैठकर तीनों सेनापति और सबसेना को एकओरकोलेचला और रानी निशाकरीकी सेनासे दशकोस निकलगया और एक कालेपर्वतपर पहुंचा उसपर्वतकी गुफा बड़ीतंग और अंधेरीथी और उसपर चढ़ने के मार्ग बड़े बड़े सूक्ष्म और सीधीचढ़ाईकेथे उसके चारोंओर एकनदी बहतीथी परन्तु उसपर्वतके कालेहोनेके कारणसे वहनदी भी कालीथी ॥

स्वरूपीछन्द। सो पर्वतहो अतिकारो। हौ गुफानमें अँधियारो॥
तहँ दीपकहू जो बारो। नहिंकरतनेकउजियारो॥

मधुभारछन्द। अतिवाटतंग। नहिंएकअंग॥ होसकतजाय। तिहिठोरआय॥

प्रहासने वहां एक कालेरंगका डेराखड़ाकराया और रानी केसरीमायाको वहां एकलाख सेनासहित छोड़दिया और कहा कि मेरीआज्ञाकेबिना यहांसे मतहिलना यहकहकर वहांसे आगे चलदिया और इसकाले पर्वतसे और दशकोस निकलकर एक पर्वती देशके समीपपहुंचा और पहिंचानकेलिये उसने वहां एक हरेवर्णके पर्वतपर हरेरंगका डेराखड़ाकराया यहपर्वत हरे भरे वृक्षोंसे लदाहुआ परम शोभायमानथा हरप्रकारकी हरेरी वहां लहलहारहीथी और वृक्ष ऐसे सघनथे कि वहपर्वततक उनमें छुपाहुआ नहीं दीखताथा॥

तोमरछन्द। तरुवरघने सुखधाम। जहँ धूपको नहिं नाम॥
फलवहुताविधिकेमिष्ट। हे लगे तहँ स्वादिष्ट॥

वहां हरेरंगके डेरेमें रानी रक्तकेशीको उतारा और वहांभी एकलाखसेना छोड़कर सबसेकहा कि बिना मेरीआज्ञाके यहां से मतटलना और फिर वहां से प्रहास दशकोस और आगे बढ़गया दैवयोगसे वहां एक वन पर्वतोंके बीचाबीचमें अंधेरा गुपागुपमिला कि ऐसा किसी राजाका गढ़भी न होगा और पहाड़ोंपर मार्ग ऐसे घूमघुमारेथे कि घूंघरवाली लटोंकोभी लज्जितकरतेथे वृक्ष वहां बड़े सघनलगेथे और निर्मलजलकी धारायें वहतीथीं और वहवन भी बहुत हराभराथा परंतु पर्वतों के बीचमें होनेसे अंधेरेमें छुपाथा॥

जय०छन्द। सोवनहो अतिशयरमणीक। परमसुरक्षित सुन्दरनीक॥
लगे सघन तरु सुन्दररूप। जिनिकेफलकोस्वादअनूप॥
महामिष्ट सरितनको नीर। डोलति शीतलमन्दसमीर॥
खगमृग नानाजातिअपार। विचरत तहां सुशोभागार॥

वहां समृद्धको दोलाखसेनासहित छोड़दिया और कहदिया

कि बिना मेरी आज्ञाके यहां से मतहटना और वहां से अपने साथ एकमायावी म्लेच्छको लेकर मायाकृत विमानपर बैठकर लौटा और रानीरक्तकेशी से मिलताहुआ रानी केसरीमायाके पासआया और उसकेपास बैठकर ऊंचनीच समझानेलगा वहबोली कि प्रहासजी आजके सातवेंदिन वह मेलाहोगा कि ऐसामेला काहेको किसीने देखाहोगा वह देखनेही के योग्य है मायाकृत देशाधिपकी एकसौ इक्कीससभाके डेरेखड़ेहोंगे और विचित्रमायाकी सवारी के साथ साथ सहस्रमण्डली मायावी म्लेच्छोंकी उत्तमोत्तम वस्त्रधारणकियेहुए चलेंगी और माया-कृतदेशके साठसहस्र राजा और रानियांआवेंगी उसदिन वि-चित्रमायापर धन निछावरहोगा और एककूप जो तलावकी भांतिहै और जिसको रत्नकूप कहतेहैं वहधन और रत्नोंसे भर जायगा प्रहासबोला कि जो कुछ सामने आनेवाला है उसका कहना क्याआवश्यकहै हमाराभी परमेश्वरहै कुछ न कुछ हमको भी मिलरहैगा अबतुम यहां ठहरो मैं और कुछ उपाय करने जाताहूं यहकहकर वह चलदिया और रानी निशाकरीकेपास पहुंचा और इसआपत्ति के विषयमें कुछ न कहकर आज्ञादी कि आनन्द उत्सवहोययह आज्ञाहोतेही नृत्य करनेवाली सुन्दर स्त्रियां आगईं और नाच और मद्यपान होनेलगा॥

जय०छं०। नाचिनाचि सुन्दरगतिरीत। गायगाय सुमनोहर गीत॥
भावकटाक्ष अनेकबताय। सबकेउर मुद दीन्हदृढ़ाय॥

इस चिन्तामें रात्रि जब अधिकगई तब सभाको विसर्जन करके सबने विश्रामकिया अब ये तो मरतेनजीते यहांआनन्द पूर्वकविश्राम कियेहुएहैं परन्तुअब कुछहाल उसमेलेकासुनिये॥

जय०छं०। नन्दन वनमें निवसतआम। जौनअप्सरा छबिकी धाम॥
भ्रमरनसह तहँकरतकलोल। बोलिबोलिशुचिमधुरेबोल॥
तिनसह पीवतमधुमकरन्द। बिहरतबनमें फिरि स्वच्छंद॥

आनँद मग्नरहतसबकाल । जानतनहिं कसदुखकोजाल ॥
मांगोंहेवागीश निहोरि । सोरस पान कराव बहोरि ॥
तासोंनिर्मल मममतिहोय । रहै न चिन्ता चितमें कोय ॥
वरणनकरों कथासुखरूप । मनप्रमोद करपरम अनूप ॥
जाके शब्दशब्दसों चाय । मधुर प्रेमरस टपके आय ॥
श्रोता पाठक परमसुजान । चितसोंकरैं तौन रसपान ॥
कुंजलाल हर्षे सो देखि । सफल परिश्रमनिज अवरेखि ॥

श्रीमत महानुभाव सौरभ महाराजने इस परमअद्भुतमेले की कथाको इस प्रकारसे मनोहर वाणी में वरणन किया है कि ‾‾व वह रात्रि ब्यतीतहुई और पूर्व दिशासे मार्तंड मण्डलके उदय होनेसे चन्द्रमाक्षीण होगया और तारागण आकाश में गुप्तहोगये ॥

दीपक छन्द । नभवीच रविआय । निजतेज जगछाय ॥
करिपर्म परकाश । तमदीन्ह सबनाश ॥

उससमय महेंद्र बदरी उद्यानमें सभामें आकर राज्य सिंहासनपर बैठा और विचित्रमायाको आज्ञादी कि तुम जाकर मुद्रिकालेआओ वह जानेका सरंजाम तो पहिलेहीसे करचुकी थी उसने अपनी दासियोंको बुलाया तत्काल १७ दासी परम सुन्दरी रत्नजटितवस्त्र और आभूषणों से अलंकृत हाथोंमें सुवर्णके थाललिये हुए आईं उन थालों में नानाप्रकारकी मणि और मुक्ता और रत्नभरेहुए थे उनके पीछेकुछ म्लेच्छआये कि वे अनेक प्रकारके पक्षी और पशुओंको पुष्प और वस्त्रोंसेअलंकृत कियेहुए लियेथे और उनके उपरांत और बहुतसीदासी थाल हाथोंमें लियेहुए आईं कि जिनमें नानाप्रकारके खाद्य ब्यंजन और पक्वान्नरक्खेथे जब ये सब आचुकीं तब बिचित्रमाया मायाकृत मयूरयुक्त बिमानपर सवारहुई जिसमें चारमयूर परम शोभायमानरत्नोंके बनेहुए लगेहुएथे और उनकेपंख इसप्रकार से बनायेहुएथे कि वे बिचित्रमायाके ऊपर छत्ररूप होगये उस

समय मायाकृत नानाप्रकारके बाद्यबजनेलगे और महेंद्रने अपने हाथमे पानकी बीड़ी बनाकर उसको खिलाई और जो जो सभासदथे उन सबोंने उठकर उसको भेंटदीं और महेंद्रनउस का कंधापकड़कर कुछ मायाकर्त्ता के मंत्र पढ़कर उसके शरीर पर फूंकदिये उससमय रानी बिचित्रमायाका स्वरूप स्वर्ग की चतुर्दश बर्षकी बयवाली देवकन्याओं से भी दुगुण सुंदरहोगया कि जिसके एकही कटाक्षसे संसारके जीव मोहित होजायँ और मृतकभी उसके दर्शनोंकी अभिलाषामें जी उठैं ॥

जय० छं०। तासुरूपको निरखैजोय। नैन बाणसों घायलहोय ॥
वरणतबनै न ताकीचाल। लाजतलखिकेंजाहिमराल ॥
जितनिकसै वहसुन्दरवाम। रूपराशिछबिशोभाधाम ॥
तितकेसबरे निरखनहार। होयँमोहबश तजिघ द्वार ॥

निदान रानी विचित्रमाया उक्त सब सरंजामलेकर वहांसे चली और थोड़ीदेरमें एक परममनोहर बनमें पहुंची कि वहां की बायुका स्पर्श वैकुंठकी बायुको मनसे भुलाताथा और एक बार मृतकको भी जीवदान देताथा चारोंओर हरियाली बड़ी मनोहर फैलीहुईथी और नानाप्रकारके रंगबिरंगे फूलोंसे युक्त परम शोभित मालूमहोतीथी वृक्ष बड़े अद्भुत और सुशोभित लगेहुयेथे और उनपर चढ़ीहुई बेलैं बड़ाचमत्कार प्रकट रतीथीं पक्षी भांतिभांतिके बर्णके एकवृक्षसे उड़कर दूसरे वृक्ष पर बैठतेथे और मधुर मधुर बाणी बोलते थे सरोवरोंमें नाना प्रकारके कमल फूलेहुएथे और उनपर भौंरों की श्रेणी गुंजार कर रहीथीं कहीं नागबल्ली लता बृक्षसे लिपटीहुई सुंदरी स्त्री की लटोंकोभांति मनको बांधतीथीं और कहीं सोमबल्लीके फूल मृगनयनीकेसे बाण चलातेथे और कहीं जलजा लताका गुल्म चन्द्रमुखीकीसी प्रभाको दिखाताथा और चित्तकोबशमें करता था निदान वहांकी शोभा बड़ीही रमणीक और मन प्रमोदकथी॥

रोलाछं०। हौमहारमणीक सो अतिफुल्ल बिपिन महान।
भृंग खग मृग जहां नानाभांति के सुखदान॥
कमलजिनमें विबिध बिधिके भरे बनकललाम।
स्वच्छ सलिल समेतहे जहँ सरित सर अभिराम॥
परम शोभित अमित शोभा तरुनकी सुखधाम।
फरे फूले भरे नवदल हरित ललित ललाम॥

निदान उस रमणीकबनमें होतीहुई वह सुंदरी एक बड़ेऊंचे पर्वतके समीप पहुंची उस पर्वतपर एक लालरेखा इसप्रकार से दीखतीथी जैसे बंद मंदिरमें झरोखेसे धूपकीआभाकी रेखा दिखाई देतीहै और दूसरी रेखा सुनहरी पूर्वसे पश्चिम और उत्तरसे दक्षिण त इसप्रकारसे पर्वतपर खिंचीहुईथीं मानो आकाशरूपी पत्र पर सुवर्णके जलसे रेखा खिंचीहुई हैं ये रेखा उस मायाकृत देशके ध्रुवेथे प्रकटहो कि ये ध्रुवे उस मायाकृत देशके उसीप्रकारसेथे जैसे कि जगतके ध्रुवेहैं मायाकृतदेश में रात्रि और दिन इसक्रमसे नहींहोतेथे जैसेसंसारमें रात्रि और दिनहोतेहैं वहांकेरात्रि और दिन उनध्रुवोंके अनुकूलहोतेथे और ये ध्रुवे इसकारणसे लगायेगयेथे कि मायाकृतदेशके वे उपदेश जो दुस्तर और कठिनथे और देशोंसे पृथक्रहैं जैसे कि विचित्रमाया सप्तव्याधि भवनको मुद्रिकालेनेजातीथी वह इसदेशका एक परम दुस्तरखण्डथा जहांहरएक नहींजासक्ताथा यहसंसारभी तो मायारूपीहै इसका रचनेवाला ईश्वरहै और मायाकृत देश मायावी मनुष्योंका रचाहुआथा जोमायाकर्त्ता कहलातेथे जैसे इससंसारकी आयु ब्रह्माका एकदिन पूराहोनेपर पूरी होती है और तब यह संसार महाप्रलय होनेसे नष्टहोजाताहै इसी प्रकारसे मायाकृत देशकीभी आयुथी और उसके नाशकाकारण ईश्वर प्रकटकरताथा जिसकी इच्छासे मायाकर्त्ताओंने माया कोपाया और उसके बलसे मायाकृत देशरचेथे वहांके निवासी

उनमायाकर्त्ता मनुष्योंकोही ईश्वर मानतेथे और जोसत्य ईश्वर जगतकाकर्त्ताहै उसको नहीं मानतेथे वहांके मनुष्योंकीआयमा-याबलके कारणसे अधिक होतीथी परन्तुमरण और जीवन यह सत्यईश्वर जगतकर्त्ताहीके हाथमेंथा और जैसे संसारी मनुष्य मरकर कर्मानुसार नरक या स्वर्गभोगते हैं उसीप्रकारसे वहां के मनुष्यभी मरनेपरस्वर्ग अथवा नरकभोगकरतेथे परंतु जोमाया कर्त्ता थे वे चिरजीवी थे और उन्हों ने समाधिलेली थी तथापि उनकी आयुकी पूर्णता उसदेशकी आयुकेपूर्णहोनेतक रक्खीगई थी आवागमनभी वहां के मनुष्योंका संसारके मनुष्योंकीभांति था और शिशुमारचक्रकी भी गति मायाकृत देश और दूसरी पृथ्वीपर बराबर रहती थी यहां इन चक्रोंकी कथा और ध्रुवों का वरणन करना कथाके आशयके व्यतिरिक्तहै और ग्रन्थ भी बड़ाहोजानेका भयहै इसकारणसे इसको छोड़कर अबकथाका प्रसंग वरणन कियाजाताहै कि विचित्रमाया इस मायाकृतदेश के निज उत्पत्ति स्थानपरजाया चाहतीथी इसकारणसे उस रेखा के नीचेहोती हुई उस पर्वतकी घाटीमेंगई और वहांनानाप्रकार के मायाकृत चमत्कारों को देखतीहुई आगेबढ़ी इन चमत्कारों का वरणन उससमय होगा जब इस देशके नाशहोनेकावरणन कियाजायगा वहां होतीहुई विचित्रमाया एकबनमें एकपरकोटे के समीप पहुँची उस परकोटेपर चारोंओर माणिक्यके बुर्ज बने हुएथे और द्वारउसका बन्दथा उसने कुछ पाठपढ़ा कि उसके पढ़नेसे वह द्वार खुलगया और वहांपर भी उसकोउसकांचनी ध्रुवकी आभा दिखाईदी उसी आभाके नीचे २ वह चली गई और थोड़ीदूर जाकर एकगर्त में समागई और उसमें से जो उसने सिरनिकाला उसको एक सुवर्णका मकान दृष्टिपड़ा उस में सात कोठरी बनीथीं एकसोनेकी दूसरी चांदीकी तीसरीवि-द्रुमकी चौथी माणिककी पांचवींनीलमणिकी छठीमोतीकी और

सातवीं हीरेकी थी इन सातों कोठरियों में मायाकृत चमत्कारों के नानापदार्थ भरेहुए थे और सातवीं कोठरी में सातकोठरी और थीं उनमें सप्त व्याधि बन्दथीं सो जब वे कोठरी खुलेंगी तब वे व्याधि निकल निकलकर रानी निशाकरीकी सेनाकोबि-ध्वंस करेंगी और इन व्याधियोंकी मृत्यु नहीं है इससे इनका दूरकरना बड़ा कठिनहोगा इनकी कथा इसदेशके नाशहोनेकी कथाके प्रसंगमें वरणनहोगी निदान बिचित्रमाया सोनेकेभवन के सामने गई आहा इस भवनका क्या कहना है कंचन और हीरेकीभी द्युति उसकी द्युतिकेसामनेफीकी मालूमहोतीथीसोने प॰ रत्नोंकी पच्चीकारीका कामकियाहुआथा और ऐसे ऐसे बेल बूटे निकालेथे कि देखकर आश्चर्य होताथा उँचाई उसकीआ-काशकी बराबर कहीजाय तो थोड़ी है और उसके विस्तार को चिंतवन करलेना मनुष्यकी बुद्धिके बाहरथा प्रभा उसकीऐसी थी कि सूर्यकी उपमादेना उसकी बुराई करनाहै कपाट ऐसे सु-घर सुशोभित और सुडौलथे कि देखकर मनको वि॰मयहोता था नागदन्त नानाप्रकारके ऐसे अद्भुतबनेथे देखनेवाला देख-ताही रहजाय द्वार ऐसे शोभायमान थे कि उनमें खड़ा होकर मनुष्य इन्द्रभवन देखनेकी भी इच्छानकरै कंगूरे माणिकके ऐसे उत्तम और प्रभावान्बनेथे कि देखकर मनुष्य चकभकहोजाय निदान वहां॰ी शोभाकी उपमा इन्द्रभवनसे भी देना उसस्थान की अप्रशंसा करनाहै॥

जय०छन्द। बन्यो परम अद्भुतसोभौन। वरणनकरतहोति मतिमौन॥
हौ अचिन्त्यताकोविस्तार। हौ न उँचाई को कछुपार॥
जो देखो सो अद्भुतरूप। विस्मयकर अरु परमअनूप॥
बनकतासुविस्मयकरपर्म। लखिनरचकितहोयकरिभर्म॥

उसअद्भुतभवनकेसामने एकवाटिका परममनोह॰लगीहुईथी कि उसके फूलोंपर भ्रमर गुंजारकररहेथे और पक्षी भांतिभांति

की बोली सुनातेथे वहांकीशोभा ऐसीमनोरमथी कि उसके प्रेम में प्रेमलता बलखारहींथीं और सोमवल्लीके फूल आंखें फाड़ फाड़कर देखरहे थे आहा क्या उसका वर्णन कियाजाय ॥

जय०छन्द। कंचनवरण तासु सबभूमि। लता अनेकरहीं तहँ भूमि॥
सलिल स्वच्छ शुचिआनँदकन्द। बहति प्रभंजन शीतलमन्द॥
भांति भांति े फूल अनेक। चित्रविचित्रलगे सविवेक॥
तरुवरलता प्रफुल्लिततत्र। भांतिभांतिकीपरमविचित्र॥

विचित्रमायाने उस बाटिका में खड़े होकर कुछ पढ़ा और पुकारकर कहा कि हे कंचनी आओ यहकहतेही अकस्मात् उस बागमें उत्तम वायुचलनेलगी और कलियां खिलगईं और एक बिमान उड़ताहुआ आया जिसमें सैकड़ों घूँघरू लगेथे कि उन के बजनेका शब्द ऐसा होताथा मानो नृत्य होरहाहै जब वह विमान नीचे उतरा तो उसपर एकसुवर्णकी पुतली बैठीहुईथी परन्तु बोलतीथी और ऐसी स्वरूपवान्थी कि कामदेवकी रति उसके पैरके धोवनकी भी बराबर न थी ॥

दो०। भूषणभार सँभारिहै क्यों यह तन सुकुमार।
सूधे पांयनपरत धर शोभाही के भार॥

उसपुतलीने विचित्रमायाको प्रणामकरके अपनेमुखारबिंद से कहा कि मुझ दासी को आपने किसकार्यके निमित्त स्मरण कियाहै वह बोली कि हे कंचनी इससुवर्णके भवनकी कुंजी तुम्हारे पासहै इसको खोलो महाराज महेन्द्रने मायाकर्ताकी अंगूठी मांगी है और मैं भेंटलेकर उस अंगूठीको लेनेआईहूँ उस भेंटको देखकर वह दासी हँसी और बोली कि यह भेंट ठीक नहीं है मुख्यपदार्थ तो हैही नहीं इससे परमेश्वर मायाकर्ता की अंगूठी नहीं मिलसक्तीहै इससे आपको उचित है कि आप लौटकर महाराजकेपास जायँ और वहांसे मुख्यपदार्थ भेंटका लेआवें मैं जबतक आप न आवेंगी यहीं खड़ीरहूँगी यह सुन

कर विचित्रमाया चकितहोगई परन्तु लाचारहोकर सबपदार्थ वहीं छोड़कर आप लौटकर महेन्द्रकेपासआई और उससे सब उक्त वृत्तान्तकहा उसकोसुनकर महेन्द्रने कुछ मायाकी कि अकस्मात् एक आंधीउठी उससे संसारमें अँधेरा होगया और थोड़ी देरमें एकमायाकृत बिमान प्रकटहुआ और पृथ्वीपर उतरा उसपर एकपरमवृद्ध म्लेक्ष बैठाहुआथा जिसके शरीरपरबुढ़ापे के कारणसे झुर्रियां पड़गईथीं और एकएक हड्डी पसली चमकतीथी और ऐसा काला और भयानकरूपथा कि कालोंछको भी उसकेसामनेलज्जाआतीथी मानोवहकलिकालकापिताथा॥

जय०छन्द। महावृद्ध अरु महाकुरूप। महामलिनअरुकृष्णस्वरूप॥
बोलतमुखसों कढ़ति कुगन्ध। कोसनतक व्यापत दुर्गन्ध॥
पूरण कलिको सो अवतार। महामलिन ताको भरतार॥
अतिशयकृश अरु दुर्बल गात। कारो भीषम ताको तात॥

एकपुस्तक महान् प्राचीन और अतिशयजीर्ण हाथमेंलिये हुए सामने महेन्द्रके आया महेन्द्र और उसके सबसभासद उसे देखकर खड़ेहोगये और सबने बड़े आदरसे उसे बैठाया तब वह बोला कि मुझको क्यों बुलायाहै महेन्द्रने कहा कि मैं माया कर्ताकी मुद्रिका मँगानाचाहताहूँ सो आप उसे मँगादीजिये और मेरे मनोरथको पूराकीजिये वह बोला कि तू अपने इसमनोरथ के पूरा होनेका उपाय मतकरै वह बोला कि बिना उस मुद्रिका के यहां सबसमाप्तहुआ जाताहै और इसमायाकृत देशकानाम और निशान मिटा चाहताहै और राज्य जो है वह दूसरेकेपास जायाचाहताहै वहबोला कि तुझसे दुख सहा न जायगा इससे तू अंगूठीसे अब हाथउठा वहबोला कि बिना उसके मेराकोई काम सधनेका नहींहै यहसुनकर उसवृद्धने कुछपढ़कर आकाश की ओर फूँका तत्काल एक पुतला हाथमें एकछड़ी और एक पात्र लियेहुए उत्पन्नहुआ और छड़ी महेन्द्रको देकर वहपात्र

उसके सामने ग"दिया उसवृद्धनेकहा कि अपने शरीरके सात खण्ड काटकर सपात्रमें डालदे दो दोनों हाथोंके और दोदोनों पैरों के दो दोनों गालोंके और एक हृदयका महेन्द्रने तत्काल अपने शरीरसे मांसके खण्डकाटकर उसपात्रमें डालदिये और वे खण्ड तत्काल माणिक के खण्ड होगये तब उसवृ"ने एक श्वासलिया उससे एक ज्वाला निकली और वह जलकर राख होगई और महेन्द्रने उसीराखको जो अपने घाओंपर लगाया सबघाव अच्छे होगये और पूर्वार्द्धमें ऐसालिखाहै कि वहवृद्ध जीताजी जहांसे आयाथा वहींको चलागया और कहतागया कि पात्रमें जो रक्तहै उसेघाओंसे लगाले घावअच्छे होजायँगे और माणिककी मालाबनाकर विचित्रमायाके हाथमें पहिरादे कि वहां जाकर मुद्रिका लेआवे महेन्द्र ने ऐसाही किया और माला विचित्रमायाके हाथमेंबांधकर उसको भेजदिया और वह सबमार्गको उत्तीर्णकरके उसी कंचनभवनमें आई वहां कंचनी को उसीप्रकारसे खड़ीपाया और उससे उसनेकहा कि मैं मुख्य पदार्थ भेंटका लेआई हूँ अब तू भवनको खोलदे यह सुनकर वह तालेकेपासगई और दण्डवत्करके अपने कोमल हाथोंसे नाड़ेसे कुंजी खोलनेलगी और कुंजीलेकर तालाखोलनेझुकी उससमय उसकी पतली पतली हाथोंकी उँगलियां अतिसूक्ष्म कटि अतिमनोह" वस्त्र और उनमें से उसके शरीरकी झांईका दीखपड़ना फिर घांघरेका "टुरकर आ" आजाना शिरझुकाने में बालोंका चन्द्रमारूपी मुखपर आपड़ना और फिर उसका शिरको हिलाकर बालोंका सँभालना एक अपूर्व मनोहरता सु-न्दरता और सुकुमारता उससुन्दरीकी दिखाताथा निदान एक तड़ाकेका शब्दहुआ और ताला खुलग्या वहदासी कुंजी ता-ला लियेहुए पीछे को हटी और विचित्रमाया दण्डवत् करती हुई भीतरको गई आहा क्या भी तर उसकी शोभाथी जिसके

बाहिरकी शोभा अचिन्त्यथी उसकेभीतरकी शोभाका चिंतवन भी करना छोटामुख और बड़ीबातहै संक्षेपयहहै कि सबपदार्थ वहांके आश्चर्य करानेवालेथे और ऐसे सुन्दरथे कि मनुष्य तो क्या जो देवता भी वहां जाते तो स्वर्गकी शोभाको भूलजाते चारोंओर उसमें भवनबनेथे और बीचाबीचमें एक मन्दिरथा विचित्रमाया उन भवनों में होकर परिक्रमा करतीहुई उस म-न्दिरमें आई वहां एक सिंहासन ऐसा कि न किसी ने देखा न सुना बिछाथा और उसके सामने एक परदापड़ाथा वहांजाकर विचित्रमायाने दण्डवत्की और एकपैरसे हाथजोड़कर खड़ी होगई उससमय सहस्रों घण्टे अपनेआप बजनेलगे और वह परदा भी अपनेआप हटगया उस सिंहासनपर एक पुतला मायाकर्ता के स्वरूपका बैठाथा विचित्रमायाने उसको साष्टांग दण्डवत् की तब वह पुतलाबोला कि हे मायाकृतदेशकी रानी तूक्याचाहती है वहबोली कि आपकी मुद्रिका और वहभेंट जो लाईथी सामनेरक्खी वह पुतला सबको एकहीवारमेंभक्षणकर-गया और अपना हाथबढ़ादिया कि लेअंगूठी उतारले विचित्र मायाने जबउसकेशरीरसे हाथलगाया वहभुरसगई और उसने हाथहटालिया तबउसपुतलेनेकहाकि पहिलेउसमाणिककीमाला को जो महेन्द्रके शरीरके मांसकी बनीहुईहै हमारेहाथमेंपहिरादे फिर अंगूठीको उतारले विचित्रमाया ने वैसाहीकिया फिर अक-स्मात् सहस्रोंघण्टे अपनेआप बजे और उस सिंहासनकेसामने परदापड़गया विचित्रमाया तबदण्डवत्करके बाहिरचलीआई और उस दासीने स्वागतम् कहकर उस भवनको बन्दकरदिया और बोली कि अब मुझ दासीको जानेकी आज्ञाहै उसने पुतली को भेटकर बिदाकिया और वह विमानपरबैठकर जहांसे आई थी वहींको चलीगई और विचित्रमायाभी उस अंगूठी को ले-कर सवारहुई उससमय मायाकृत पक्षियोंने आकर विचित्रमा-

याके शिरपरछायाकी और उसको सब भूत पिशाच और राक्षस आदि जो म्लेच्छीमायाके अधिष्ठाताथे दीखनेलगे और विचित्र माया वहांसे चलकर बड़ेमार्गको उत्तीर्णकरतीहुई बदरीउद्यान के समीप पहुँची परन्तु बागमें न गई और समीपमें एक और बाटिकाहै वहांउतरी और दासियोंकोआज्ञादी कि सब सरंजाम महाराजाओंके योग्य लेआओ यह आज्ञापातेही उन्होंने सब सरंजाम इकट्ठाकरदिया और विचित्रमाया अपना दूसराशृङ्गार परमोत्तम करके बिमानपर बैठी और उसमुद्रिकाको अनमोल रत्नोंके बीचमें एक पात्रमें रखकर हाथमें लेलिया और साथमें सहस्रों म्लेच्छ और दासियोंको लेकर बदरी उद्यानकी ओर चली उससमय भेरी मृदंग और दुन्दुभी आदि नानाप्रकारके उत्तमवाद्य आकाशमें बजतेहुए चले प्रतिपद नभसे फूलवर्षते थे और आगे २ दासियां परमस्वरूपवान् गुलालउड़ाती और रंग खेलतीहुई चलीजातीथीं॥

चौ०छं०। अगणित संग म्लेच्छ समुदाय। परम अलंकृत सुन्दर काय॥ महा सुन्दरी अगणित बाम। जाति संगमें शोभा धाम॥ अगर तगर कस्तूरी धूप। महँकत जात सुगन्ध अनूप॥

इस धूमधामसे जब वह बदरी उद्यानके समीप पहुँची तब महेंद्रको खबरहुई कि विचित्रमाया अंगूठी बड़ी धूमधामसे लेकर आती है यह सुनतेही महेंद्र सब सभासदों सहित खड़ा होगया कि अँगूठीकी प्रतिष्ठा करनाचाहिये और बागके द्वारसे कुछही आगे बढ़ाथा कि विचित्रमाया मिली और वह सब साथियों को बाहर ठहराकर आप महेन्द्र के साथ भीतरगई उस समय महेन्द्र सबके देखतेदेखते अन्तर्द्धानहोगया और थोड़ी देरमें सबवृक्ष उस बागके गोटेसे मढ़गये और सब फूल मुक्ता कीसमान प्रकाशकरनेलगे पल्लवों में चमक उत्पन्नहोगई और पत्ते तालियां बजानेलगे और प्रतिपंखड़ीसे मायाकर्त्ताकी जय

का शब्द निकलनेलगा और द्वादशद्वारीके बीचमें जो सिंहासन बिछाथा उसके सामने बड़ा दर्पण लगगया और सहस्रों सोने चांदीके कमल प्रज्वलित होगये और सुगन्धितद्रव्य सुलगादियेगये उससमय महेंद्र उस दर्पणमें प्रकटहुआ और वह क्रीट और मुकुट शिरपर दिये था कि जिसको कभी सूर्य्यने भी न देखाहोगा और ऐसे उत्तम अम्बर धारणकियेथा कि चन्द्रमा का प्रकाशभी उनकेसामने मलिन मालूम होताथा निदान जब महेंद्र प्रकटहुआ तब सहस्रोंघण्टे बजनेलगे और पहिले विचित्रमाया ने उठकर वह मुद्रिका भेटदी महेंद्रने मुसकुराकर उस भेटको अंगीकार किया और रत्नोंके बीचमेंसे उस अँगूठी को उठाकर हाथमेंलिया और मायाकर्ताको दण्डवत्करके अँगूठी को पहिरलिया उस अँगूठीका नग सूर्य्यसेभी अधिक प्रकाशमानथा परन्तु यह नहीं जानागया कि किस पदार्थका बनाथा और उसपर कुछ यंत्रसा खिंचाथा कि उसीकेप्रभावसे सब संसारके मायावी और भूत पिशाचआदि उसकेबशीभूतथे निदान अँगूठीको पहिरकर महेंद्रने ताली बजाई कि उसी समय एक जीव जिसका मुख तो अप्सराओं कामाथा और सब शरीर मयूरकासाथा नाकमें नथ और कानोंमें कुण्डल पहिरेहुए महेंद्र के सन्मुखआया उसको देखकर महेंद्रनेकहा कि अरे मयूर मैंने अँगूठीकी परीक्षालेनेको तुझे बुलायाथा वह बोला कि जिसके पास यह अँगूठी हो उसके आधीन सब मायाकृत देशहैं मेरी क्या गिनती है तब महेंद्रने कहा कि अच्छा जाओ और प्रहास को पकड़ ला जो परमेश्वर मायाकर्ता से बिमुख है यह आज्ञा पाकर वह मयूर रानी निशाकरी की सभामेंगया और उतरकर बोला कि प्रहासजीआपको महाराज महेन्द्रने स्मरण कियाहै यहां उसकेआनेसे पहिले तोप्रहासनेभागनेकामनकिया उपरांत मोरकी बाणीकोसुनकर बोला कि मैं चलनेकोउपस्थितहूं और

उसकेपास चलागया उसने उसे अपनी पीठपर बैठालिया और लेजाकर महेन्द्रके सन्मुखडालदिया प्रहासने उठकर महेन्द्रको प्रणामकी और आज वह तेजउसकादेखा कि जैसा पहिले कभी न देखाथा देखतेही थरथर कांपनेलगा और उसकी प्रशंसाकरताहुआ बोला॥

तोमरछंद। तवतेजरूपीदीप। जगरहै ज्वलितमहीप॥ सुखकीप्रभातवभूप। शशिसोंअधिकतमरूप॥ तवशक्तिअनुमान। नहिंतासुकछूप्रमान॥बल बुद्धितेजनिधान। तूअहै ईशसमान॥

तब महेन्द्रने प्रहासको बैठनेको आसनदिया प्रहास प्रणाम करकेबैठगया महेन्द्रबोला कि मैंने तुझे इसलिये बुलायाहै कि तू और तेरेसाथी जो आकाशमें भी जाकरछिपेंगे तौभी न बचेंगे इससे उचित है कि तू और तेरेसाथी श्रीमायाकर्ता और अद्भुत भगवान्‌की उपासनाकरें प्रहासबोला कि मैं अपनेमनका आप स्वामीहूंमैं अभीमायाकर्ता की उपासना करनेको तय्यारहूं और औरोंको मैं समझाऊंगा मानना न मानना उनका कामहै महेन्द्र बोला कि तेरामायाकर्ता का उपासकहोना प्रमाणकेयोग्यनहीं है मैंने तुझेकेवल अपनातेजदिखानेको बुलायाथा कि देख मुझमें यह सामर्थ्य है अच्छा अब जा और सबको समझा जो सके विपरीत किया तो दण्डपावैगा यह कहकर मयूरसेकहा कि इस कोपहुंचाआ वह उसकोलेकर रानीनिशाकरी की सभामें आया और उधरमहेन्द्रने कहा कि प्रहास अवश्यसबको समझावैगा क्योंकि आज बहुत दबाउ खागया है विचित्रमाया बोली कि वह महाछलीहै उसका क्या बिश्वासहै और आप कईबार देखने परभी ऐसाकहतेहैं कैदफेउसपर दबाउनहींपड़ा परंतु वह धोखा देकरनिकलगया यहसुनकर महेन्द्रने कुछमृत्तिकालेकर मायाकी और मायाकर्ताकी अँगूठी उसेस्पर्शकराई तरंत उसमृत्तिकामें से एकम्लेच्छ उत्पन्नहोगया महेन्द्रने उससेकहा कि तू जाकरगुप्त

रहकर जोकुछवार्तालाप प्रहासकरै उसकोसुनकर चलाआ यह आज्ञापाकर वह उड़ताहुआ रानीनिशाकरी की सभामेंआया और वहांगुप्तबैठकर बातेंसुननेलगा इधरप्रहास जबवहांपहुंचा सब उसकोदेखकर प्रसन्नहुए और वह मयूर यहकहकर कि जो तू महेन्द्रसेबचनभरआया है उसीके अनुकूलकरियो नहीं तो तेरी बुरीगतिहोगी चलागया और रानीनिशाकरी आदि सबउठकर उससे मिलीं परंतु प्रहासके मुखकावर्ण पीलापड़गयाथा वह चिंताकर करकेचित्तको धीर्यदेरहाथा कि परमेश्वर तेरासहायकहै निदान जबवहबैठा और उसकाचित्त कुछस्वस्थहुआ तब उसनेसबवृत्तान्तकहा उसको सुनकर सबने यहीउत्तरदिया कि हमसब आपकेआधीनहैं जैसाआपकहैं वैसाहीकरैं प्रहासबोला कि कोई उपाय बचनेका निकालो वहबोली कि कोई उपायनहीं है क्योंकि उसअंगूठी के पासहोनेसे जो सबसंसार के मायावी मिलकर मायाकरैं तौभी उसपर न चलेगी प्रहासबोला कि कुछहो क्योंनहो मुझसे तो इसदुष्ट के आधीनहोकर न रहाजायगा और जहां भानुविक्रम महाराज शत्रुञ्जयका पौत्रआवै और वहदेश विजयनहो ऐसासम्भव नहीं यह मायाकृतदेश अवश्य विजय होगा क्योंकि जहां महाराज शत्रुञ्जय की संतानजातीहै कैसीही आपत्ति क्यों न हो अवश्य टलजातीहै हां यहमैं नहीं जानताहूं कि मेरेप्रारब्धमें क्यालिखा है जो मृत्युही आगईहै तो क्याउपाय चलसकताहै अबमेराचित्त तुम सबके लिये पीड़ापाता है इससे तुमसबजाकर महेन्द्रकी आज्ञामानो और पहिलेकीभांति अपने देशका राज्यकरो यहसुनकर सबने कहा कि प्रहासजी हमको मरना स्वीकार है धूलमें मिलजाना अंगीकारहै परन्तु महेन्द्रके आधीनहोकर रहना स्वीकारनहीं है प्रहासबोला कि तुम्हारी बुद्धिकोधन्यहै अच्छा कालेपर्वतपर जाकर वासकरो उन्हों ने कहा यहां वहां सबबराबर है मेलेमें

अवश्य जानापड़ैगा तब महासनेकहा कि अच्छा ईश्वरका भरो-
साकरके यहींठहरो ये सबबातें उसम्लेच्छनेसुनी और जाकर
महेन्द्रसे कहा उसकोसुनकर वहबोला कि अब इनसबकी मृत्यु
निकटआगईहैं हे विचित्रमाया अबमैं देवीखण्डमें अपने वृद्ध
जनोंको बुलानेजाताहूं यहकहकर उसने कुछ मायाकरके एक
गोला ऊपरको फेंकदिया वहकुछ ऊपरजाकर अदृश्यहोगया
और बदरीउद्यानके ऊपर जो मायाकृत आकाशबनाथा जिस-
का वर्णन पहिले होचुकाहै उसके दोपरतहोगये और उसमेंसे
एकनगाड़ेकी जोड़ी एकमहासर्पपर खिंचीहुई प्रकटहुई महेन्द्र
ने एकगोलेको मायाकर्त्ताकी अंगूठी से लगाकर उननगाड़ोंपर
मारा मारतेही जहांतक मायाकृतदेशथा तहांतक उसका घोर
शब्दगूंजगया और उसअंगूठीके कारण से उसदेशके सबनि-
वासियोंके चित्तको प्रेरणाहुई कि मेलेमेंचलें और महेन्द्रसवार
होकर निष्प्रभभवनकेनीचे जो सभाकेडेरे खड़ेकियेगयेथे वहां
आया यहांसे कुछदूरपर एकबागहै कि उसकानाम मायाकर्त्ता
का बागहै और उसीकेपास एककूप सरोवरकीभांति बनाहुआ
था वहरत्नकूपकेनामसे विख्यातथा निदान महेन्द्र उसमायाकर्त्ता
के बागके समीपआकरठहरा और विचित्रमायासेबोला कि तुम
मायाकर्त्ताकी पूजनकरो और सेवकोंको आज्ञादी कि माया-
कृत सभाकेडेरोंसे मायाकर्त्ता के बागतक जो मार्ग है वह नाना
अलंकारोंसे अलंकृतकियाजावे और यहकहकर वह देवीखण्ड
को चलागया यहां चारोंओर पक्केमार्ग बनगये और उनमें ना-
नाप्रकार के सचिक्कण पाषाणलगायेगये और रत्नोंसे जड़ेगये
और मार्गोंके दोनोंओर पक्कीदूकानें बनाईगईं और उनकी कु-
रसी कमरकी बराबर रक्खीगई और मार्ग के दोनोंओर स्थाई
झाड़खड़ेकियेगये और सबबागों के वृक्षभी अलंकृतकियेगये
उनकी पींड़ चांदी और सुवर्ण और रत्नोंसे मढ़ीगईं इसीप्रकार

से सायंकालतक सवतय्यारी होती रही और जिससमय कि आकाशरूपी भूमि तारागणरूपी रत्नोंसे जटितहुई और माया कृतदेशवासी रूप संसारीजीव उस परमअलंकृत आकाशको आश्चर्यहोकर देखनेलगे॥

दीपकछन्द। दिनअस्तकालपाय। निशिअन्धकारआय॥ सर्वजगदीन छाय। रवितेजकोमिटाय॥ शशिआयोनभभाय। उडुगगसंगलाय॥ कु-मोदनीलखिताय। खिलिगईहरपाय॥

विचित्रमाया तो उसस्थान में एक एकान्तमें मायाकर्त्ताकी पूजनकररहीथी उसका परिणाम प्रातकाल मालूमहोगा परन्तु उसरात्रिको म्लेच्छोंका जमघटाहोनेलगा पहिले एकरक्तवर्ण का आकाशसा आकर वहां घटाटोपहोगया उसमें से सुनहरी फूलोंकीवर्षाहुई और फिर वहफटा और उसमेंसे महानाग और मोर अपने ऊपर सुनहरी और रुपहरी और मखमल के डेरे लादेहुए प्रकटहुए म्लेच्छोंने उनडेरोंको सड़कके किनारे किनारे खड़ाकिया वे डेरे परमउत्तम और अपूर्वथे उनपर माणिक और विद्रुमके कलशचढ़ेहुएथे और हरएक कलशपर रत्नोंके बनेहुए मोरबैठेहुएथे और चंचुमेंमोतियोंकी मालालियेहुएथे उनकेभी-तर परमोत्तम वस्त्रोंके बिछौनाबिछेथे और उनके चारोंओर सु-नहरे वितानतनेथे जिनमें झालरें मोतियोंकीलगीथीं उनकेनीचे रत्नजटित तखतबिछायेगये और उनकेसामने सुवर्ण औ चांदी आदिके उत्तम उत्तम आसन बिछवादियेथे और रत्नोंसे जटित उत्तम२ मणियों के फानूसलगादियेगये और सुगन्धित पदार्थ और फूलोंके फूलपात्र वायुके आनेकीओर सर्वत्र स्थापितकर-दिये फिर अकस्मात् आकाशमें उजेलाहुआ और नौबतबजी और महेन्द्रकेआधीन जो जो मायावी राजालोगथे उनकी स-वारियांआनेलगीं उनमें बहुतसेराजा पूर्वदिशाकेदेशोंकेथे बहुत से पश्चिमदेशीयथे बहुतसे दक्षिणकी सीवांकेथे और बहुत से

उत्तरीयदेशकेथे जो पूर्वदिशादेशीयथे उनके वस्त्र श्वेत और पीलेथे और आभूषणरक्त और उनपदार्थोंके बनेथे जो सूर्यसे सम्बन्धरखतीहैं और जो पश्चिमदेशकेथे उनकेवस्त्र और आभूषण ऊदे और कृष्णवर्णकेथे और उत्तरदेशीय राजालोग नीलाम्बर और दक्षिणदेशीय रक्ताम्बर पट और भूषणधारणकिये हुएथे इसकेआगे इनके दिशादिशाप्रति भिन्नवर्णके भूषण और बसन धारणकरनेका कारण नक्षत्रोंके सम्बन्धसे बड़ेविस्तारमें दिखाया है परन्तु वह प्रथम तो प्रसंग से सम्बन्धनहीं रखता दूसरे हरएकके समझनेयोग्यनहींथा तीसरे कथाकेरसके प्रवाह में अन्तरडालताथा इसकारण से छोड़दियागया निदान इन राजाओंकीसवारी बड़ीधूमधामसेआई कि उनका वर्णनकरनेमें जिह्वामौनहोजातीहै उनमें कोई स्त्रीथी और कोई पुरुषथा सब मायाकृत विमानोंपर राजाओंकेयोग्य वस्त्रधारणकियेहुए विराजमानथे उनके चारोंओर मन्त्री और सेनापतिथे और सहस्रों दास सुनहले वस्त्रधारणकियेहुए और सहस्रोंदासियां परमसुन्दरी उत्तमवस्त्रोंसे अलंकृत आगे आगे जातीथीं बाजे नानाप्रकारके बजतेआतेथे और नानापशु और पक्षी बलिदानकेलिये और रत्नोंकेपात्र भेटकेलिये सहस्रों म्लेच्छलियेथे और रानियां और राजपुत्रियां परमसुन्दरी सोरहोंशृंगार कियेहुए रत्नजटित वस्त्रऔर आभूषणोंसे अलंकृतथीं उससमय उनकास्वरूप ऐसा मनोहर और शोभायमानदीखताथा कि देवताभी देखकरउनपर मोहितहोजायँ उनके कटाक्षटोनेकासा प्रभावरखतेथे और चाल और भाव और वाणीऐसीथी संसारके मनुष्योंके चित्तकोबशमें करतीथी ये सब राजपुत्रियां असंख्य सेनासाथमें लियेहुएमायाकृत चमत्कार दिखातीहुई चलीआतीथीं कभी फूलबरसाती थीं और कभी पृथ्वीपर बागलगादेती थीं ॥

क० । कंचन बरन तन बनक अनूपमानो रूपकी अवधि मनमथ की

रसालहै। एकधोती सेतमें अनेकछविदेतीबाल मानो हंसमण्डलमें चंपक कीमालहै॥ शरदघटानिमधि दामिनी लसति किधों क्षीरसिंधु मांभबड़-वानलकी ज्वालहै। सुरसरि सोतमें सुधानिधिकी कलाकिधों भूषण पट धारे लसति वहबालहै १ ब नि बरनिदृग कहत सकलकवि कमल कु-रंगमीन खंजन समानहैं। कहैंकविकृष्ण रचिपचि चतुराननने लोचन ये पाहन बनाये मेरेजानहैं॥ कमलसों कमलगाय देखेंकैयोबेर एकआंक कयोंहूँ उपजति न कृशानहै। लागतहीं तियनैन तबहीं उपजिउठै लगनि अगिनि यातें प्रकट प्रमानहै २॥

इसी प्रकारसे रात्रिभर मायाकृत देशके राजा और रानियां आयाकीं और रानी सुगंधमाया रानीमालतीमाया रानी प्रेम-माया रानी सुगन्धवेणी रानीप्रसत्तमाया रानीप्रसूनावती रानी रूपावती और रानीछविआननी आदि अनेकरानी और राजा अनिलाङ्गी राजाभीष्मांगी राजाअसुरांगी और राजावज्रांगी आदि अनेक राजालोग आये उन सबकेनाम कथाके बढ़जाने के भयसे नहीं लिखेगये परन्तु आगे प्रसंगमें वर्ण न होंगे नि-दान जब राजालोग आचुके तब उस देशके प्रतिष्ठित पुरुष आनेलगे और राजाओंकी सेना और ये सब लोग कोसोंतक उतरते चलेगये और मायाकृत डेरोंसे लेकर आनन्द बाटिका तक जो एक दूसरे से कई योजनपरथे मनुष्यही मनुष्य दिखाई पड़तेथे और डेरे और तंबू और बितान और मनुष्योंकीभीड़ के सिवाय कुछदृष्टि न पड़ताथा जबप्रतिष्ठित लोग आचुके तब उस देशके निवासी आनेलगे और मायादेश प्रबन्धकआदि सब बड़े २ अधिकारी लोगभीआये जो ऐसे २ स्थान में प्र-बन्ध करते थे जहां मायाके मुख्य चमत्कारके स्थान हैं जिस समय राजपुत्र भानुविक्रम उन देशों में जायगा उससमय इन से युद्धहोगा और जबमायान्वेषणी चक्रसे इन सबकी मृत्युहो-नेका उपाय मालूमहोगा उससमय ये मारेजायँगे निदान जब ये प्रबन्धक अधिकारी वहांआये तब अकस्मात् एक बादल

घिरआया और उसमेंसे रत्नोंके बनेहुए गुलाबके फूलोंकी वर्षा हुई और सहस्रों नगाड़ेबजे और सोने और चांदीकी मसालें जलतीहुई दृष्टिपड़ीं उससमय सब राजा और प्रतिष्ठितम्लेच्छ और प्रबन्धक आगौनीकेलिये आकाशकीओरउड़करचले और वहां देखा कि एकपरमोत्तम रत्नजटित विमानपर सुन्दरबिछौने बिछे हैं और उसपर एक सुन्दरी छवि और रूपकी सींवा सर्व शृंगारोंसे अलंकृत बैठीहै और उसके चारों ओर कई सहस्र दासियां और सहेलियां उत्तमोत्तम वस्त्र और आभूषणधारण कियेहुए अपने २ अधिकारके अनुसार खड़ी और बैठीहैं इस सुन्दरीकी नखशिख शोभाक्यावर्णनकीजाय कि लेखनी लिखते लिखते उसके वरणनको बैकुण्ठकी शोभा बनादेती हैं औरवि-स्मय करके रुक रहती है लटें उस सुन्दरीकी बड़ेबड़े राजाओं को दास बनानेवाली थीं और घुँघुरारेकेश कालेनागकी भांति डसतेथे और मांगकी चमक घनकी दामिनीको राह भुलानेवा-लीथी ललाटकी शुभ्रता प्रातःकालकी स्वच्छताको मलीनकर-ती थी भौंहें ऐसी धनुषाकारथीं कि उससे मुक्तहुए वाणसे कोई नहीं बच सकताथा पलकें ऐसी नावकथीं कि एकही मारमें सै-कड़ोंके प्राणहरलेतीथीं बरुणी क्षणमात्र में सहस्रोंके चित्त को कैद करनेवालीथीं आंखें दो मद्यसे भरेहुए कटोरोंकीसमानथीं कि एकदृष्टि में करोड़ोंको उन्मत्त करतीथीं नेत्रोंकी सफेदीरत्नों की स्वच्छताको मलीनकरती थीं और कालेतिल रात्रिके अंध-कारको लज्जित करतेथे कोमल कपोल रक्त प्रसूनोंको लजाते थे और अपनीप्रभासे चन्द्रमाको मन्दज्योतिकरतेथे मुखछोटा सा खिलेहुए कमलको कुशोभित करताथा अधर दोनों अपनी अरुणता और उज्ज्वलतासे माणिक और विद्रुम के मोलको कौड़ियोंके भाव करते थे दांतोंकी उज्ज्वलता चपलाकी चमक को निन्दित करतीथी चिबुककी मनोहरता गुलाबकी कली को

ईर्षादेतीथी चिबुकगाढ़ करोड़ों अश्विनी कुमारोंको गर्तमें गि-
रातीथी ग्रीवा कपोतोंको भुलातीथी भुजा हेमदण्डकी प्रभाको
मन्द करतीथीं और कोमलतामें कमलनालको कठोर बनाती
थीं हस्त दोनों पद्मोंसे शुभ्रथे कुच कंचनवर्ण कठोर और गोल
थे उर उसका त्रिवलीयुक्त स्फटिकसे अधिक सचिक्कन औरद्यु-
तिमानथा पीठपर चोटी पड़ी हुई नागिनका रूपथी नाभिगंभीर
शोभारूपी अमृतकीसरोवरथी कटिअतिही सूक्ष्मथीउसकेआगे
बड़ेआनन्दकी वस्तुथी वहहास्यकासंगहै और लज्जाकाअंगहै
जिसपर तरुणताकी रेखाखिंची है अथवा वह वह दीप्त नेत्रहै
जिसमें संयोगकी सलाई सुरमा लगावैगी अथवा वह वह मुहँ-
मुँदीकली है जिसको यौवनरूपी प्रातकालकी वायुने स्पर्श कर-
के अभी नहीं खिलायाहै दोनों जंघा द्युतिमान और कदलीस्त-
म्भसी चिकनी और गोलथीं चरणदोनों अरविन्दके वरणको
विवर्ण करते थे और अपनी प्रभासे दर्पण की स्वच्छता और
मोतीकी आभाको मलीन करतेथे निदान वहसुन्दरीअविशोभा
और सुन्दरताकी धामथी॥

क०। सुनत भमाके त्यों छमाके भूरि भूषणके सागर छमाके सिद्ध
चौंकत छमाके हैं। जातही छिपाकेउठि दौरत छिपाके अंग आवतछिपा
के जेनछाके छतछाके हैं॥ कायल क्षुधाके वसुधाके कीरधाके ओठचाखत
सुधाके येमजाके विवपाके हैं। नन्दरामताके दृगताकेहैं मृगाके कहां काके
समताके जो रमाके उपमाकेहैं॥

इससुंदरीको सब राजा और मान्यमहाजन और प्रबन्धकोंने
भेटदी क्योंकि यह इस देशके प्रभासनामी ईश्वरकीबेटीथीयह
प्रभास मायाकर्त्ताका निजपौत्रथा और अपनेको परमेश्वरमा-
ननाथा और अपने स्थानपर जिस राजाको चाहताथा उसके
चित्रका शिर काटडालताथा उससे उसदेशके राजाका शिरकट
जाताथा जिसका वहचित्र होताथा और उसकेस्थानापन्न जिस

को वह चाहताथा राजा बनादेताथा और इसके सिवाय और भी बहुतसा अधिकार उसको इस मायाकृत देशमेंथासो उसने अपने पलटे अपनीपुत्रीको मेलेमें भेजदियाथा और वहअपने स्थानसे कहींकोजाताभीनथा उसकेदर्शनभी लोगोंकोबड़ीकठिनतासे मिलतेथे और जबयात्री बहुतसेदर्शनोंको इकट्ठेहोजाते थे तब एकपरदा अपनेआप उठजाताथा और एकप्रकाशसा दिखाई देताथा निदान इस लड़कीका नाम चन्द्रकलाथा इसके नखशिखकी शोभा इसकारणसे वरणनकीगई है कि इससुन्दरीका विवाहभी राजपुत्र भानुविक्रमके साथहोगा औरप्रभास नगरके विजयहोने और प्रभासके वैष्णवी मत धारणकरने की कथा दूसरेखण्डमें आवेगी निदान जब यह मिथ्याईश्वर पुत्री आकाशसे उतरी तो उन मायाकृत डेरोंमें जाकर सिंहासनपर विराजमानहुई जो निष्प्रभ भवनकेनीचे लगायेगयेथे औरजिनमें महेंद्रके सिवाय और कोई नहीं जासकता था उसकी सहेली और दास और दासी सब चारोंओर अपने २ स्थानोंपर स्थितहोगईं उससमय वहां नृत्यहोनेलगा और मद्यपान आरम्भहुआ परन्तु उस मिथ्याईश्वर पुत्रीको क्रोधसारहा आया और उसने प्रबन्धकोंसे कहा कि इस महेंद्रको अभिमान बहुत होगयाहै जो हमारी आगोनीतकको न आया लोगोंने कहा कि उनको श्रीजीके आनेकी खबर नहीं है जबही सुनेंगे तभी आकर आपका यथायोग्य पूजन करेंगे निदान जबयहां ये बातेंहो रहीथीं तब मेले में बड़ा कोलाहल हुआ और उस देशके भूत पिशाच और असुर और नानाप्रकारकी आपत्तिरूप भूतयोनि वहांआईं वह सब ऐसी भयंकरथीं कि जो कोई एकबार स्वप्नमें भी उनको देखले तो जबतकजीवै तबतक उसकोनिद्रा न आवे और जो जागतेमेंदेखै तो चौंकपड़े और बरानेलगे उनकेशिर आकाशसे लगेथे और पैर पृथ्वीमें गड़ेथे किसीके शिरपरमहा

नागफन निकालेहुए अग्निकीज्वाला छोड़ताथा किसीकीआंख से आंसू गिरकर एक नवीन पिशाच उत्पन्नहोजाताथा औरम-नुष्योंको भक्षण करताथा निदान इन सबने आकर मायाकर्त्ता के बागके एक कोनेमें निवासकिया अबप्रहासके साथियोंकोछोड़ कर कोईऐसा नहींरहा जो वहां न आगयाहो और जबसेमहेंद्र ने इस देशके पहिले राजाको कैदकियाहै तबसे उसके यहां के तीन आचार्योंको भी कैदकी भांति कररक्खाहै ये तीनोंभीनहीं आयेथे नाम इनके अस्त्राचार्य १ चिकित्साचार्य २ और प्रब-न्धाचार्य ३ ये तीनों विष्णुभक्तथे और महेंद्रकीदादी औरनानी मत्स्यकला और आपत्ति माया आदि रत्नकूपपर पूजाहोने के समय आवेगी संक्षेप मात्र यहहै कि रात्रिभर में सब मायाकृत देशके आनेवाले वहां आकर इकट्ठेहोगये और जिससमयआ-काशरूपी रत्नकूपपर सूर्यरूपी राजामेला देखनेआया॥

एकादशकला छन्द। रविऊग्यो नभआय। प्रभादई जगछाय॥
खगघोंसलनि विहाय। चलेचुगनहितधाय॥

उससमय महेंद्र बड़ी धूमधामसे वहां आया और मिथ्याई-श्वर सुताके आनेकाहाल सुनकर भेटके लिये अनेकरत्न थालों में लेकर उसके सन्मुखगया और दण्डवत् करके उसकोभेटदी और कहा कि मैं न जाननेके कारणसे पहिले नहीं आसकाथा और सब सेवकोंको आज्ञादी कि देखो ईश्वरसुताको किसी प्र-कारका दुःख न पहुँचे सब सेवाके लिये बनेरहना और सब प-दार्थ मौजूद रखना फिर वहांसे विदाहोकर बनमेंगया जहांवि-चित्रमाया मायाकर्त्ताकी पूजा कररहीथी और एकपाउँसे खड़ी होकर कुछ पढ़रहीथी उससमय महेंद्रने अपने हाथसेएकपान की बीड़ी बनाकर उसको खिलाई उससमय विचित्रमाया को ऐसा मायाबलका आवेशथा कि वह थर थर कांपती थी और उसने बीड़ी खाकर शिर हिलाया तब महेंद्रने वहांसे सबअपने

साथी म्लेच्छोंको हटादिया तब विचित्रमाया ने अपना श्वास छोड़ा उसके साथ एक नीलीज्वालामुखसे निकली और ऊपर जाकर वह रक्तवर्ण होगई तब विचित्रमायाने दोनों हाथअपने मुखपर रखलिये तब एक अग्निरूपी वस्त्र प्रकटहुआ और वह उसके चारोंओर लिपटगया उससमय महेंद्रने कहा कि हे विचित्रमाया क्या कहनाहै धन्यहै तुम मायाकर्त्ता की परम प्रिय भक्तहो तब विचित्रमाया बोली कि मैं अब जाकर रत्नकूप के भीतर पूजा करूंगी परन्तु अब आप शत्रुओंको बुलाइये क्योंकि सब आगये हैं केवल वही नहींआये हैं महेंद्र बोला कितुम पूजा करलो तब मैं बुलाऊँ तब विचित्रमायाने अपने दोनोंहाथ जोड़कर ऊपरको उठाये एक अग्निकी शिखा धरतीसे आकाशतक उत्पन्नहोगई और वह उसीके साथ अदृश्य होगई उस समय महेंद्र बोला कि मुझेभी बहुत कामहै और यह कहकर वहभी अदृश्यहोगया अब मेला तो सब आगया परन्तु रानी निशाकरीकी सभाका वृत्तांत सुनिये कि प्रहास रात्रिभर विष्णु भगवान्से प्रार्थना करतारहा और विष्णुमंत्र पढ़पढ़कर सबके शरीरोंपर फूंकतारहा कि उसकेप्रभावसे सबरुकेरहे और मेलेको नहींगये प्रातकालहोनेपर प्रहास नित्यकर्मकरके सबबहुरूपियों सहितचला कि मैं भी जाकरमेला देखआऊं और चलतेसमय रानीनिशाकरीसे कहतागया कि हे रानी नाचदेखो और प्रसन्नतापूर्वक रहो मैं आताहूँ इसने बहुतकुछ समझाया परन्तु सब के सब चित्रकेसे लिखे चुपबैठेरहे क्योंकि मायाकृत नगाड़ोंको सुनकर सबके चित्त मोहितहोगये थे और सबको यही प्रेरणा होतीथी कि मेलेको चलो निदान प्रहास उनको उसी अवस्था में छोड़कर चलदिया और कुछदिन चढ़े मेलेकेपास जापहुँचा और जिधर देखाउधरहीपरमशोभापाई और दसदस औरबीस बीस सहस्र म्लेच्छोंके समूह आतेहुए दीखपड़े क्षणिक उसस

उत्तम वस्त्र धारण करके दुकानें लगारहेथेसब दुकानों में दर्पण लगेहुएथे और बजार अलंकृत होरहाथा और डेरे तम्बू और वितान जिनकाकुछ वर्णन ऊपर होचुकाहै और विस्तारपूर्वक वर्णन करना जिह्वाकी सामर्थ्य नहीं है सब प्रहासने देखे उन के कलशोंकीज्योतिसे नेत्रोंमें चकाचौंध लगतीथी औरयहजान पड़ताथा कि सहस्रों लाखों सूर्य उदय होरहेहैं दुकानदारों की लाखोंपालें तनी थीं और एक बड़ाभारी जमघटाथा कि तिल भर पृथ्वी खाली न थी उससमय प्रहासने म्लेच्छ रूप धारण करके चाहा कि किसी बजारमें जाऊं परन्तु वह दो चारही पग गयाहोगा कि उसको एक वृद्धा मिली जिसकाशिर हिलताथा और मुखमें न दांत न पेटमेंआंत वह लकड़ी हाथमें लियेहुए प्रहासकेपासआई और बोली कि क्यों मरे तू दुष्टता करनें फिर आया प्रहासने हास्यकी रीतिसे उससे कहा कि ऐ बुढ़िया तू अबभी बुढ़वाकेसाथ सोती है वह यह सुनकर उसकेपीछेलाठी लेकरदौड़ी प्रहासभागा परन्तु जहांगया और जिधरकोमुड़ावहीं उस बुढ़ियाकोपाया अन्तको वह एक स्थानपर ठहरगया तब उस बुढ़ियाने लाठीउठाई कि कहै तो निपूतेऐसी लाठीमारूंकि एक शिरके चारशिर होजायँ प्रहास बोला बुढ़िया हमसे अप-राधहुआ क्षमाकरो तब उसने कहा कि देख कहींजो तैंनेदुष्टता की तो इतनीलाठीपड़ेंगी कि तेरे हाथ पैर टूटजायँगे यहकहकर वह बुढ़िया चलीगई इसीप्रकारसे और बहुरूपियेभी भेषबदले हुएफिररहेथेउन्हेंभी वहबुढ़ियामिली और एक एककोपकड़कर उसने समझाया कि देखो किसीप्रकारकी दुष्टतामतकरना नहीं तो दण्डपावोगे जबउपहासको वह बुढ़ियामिलीतब उसनेचाहा कि तानकर एक भुजाली लगाऊं परन्तु वह बुढ़िया बोली कि सुनमरे मैं समझाये देतीहूँ कि कहींचोरीओरी मतकरियो नहीं तो यह भुजाली उजाली एक न चलैगी और यह कहकर वह

अन्तर्द्धानहोगई तब पांचों बहुरूपिये तूर बजाकर इकट्ठे हुए और बुढ़िया आदिका सबहाल परस्परमें कहा चपला ने कहा मुझको जो वह मिली तो बोली कि जा मैंने तेरेगुरूकोछोड़दिया इसीप्रकारसे सबने अपना अपना वृत्तांतकहा प्रहासबोला कि वह बुढ़िया न थी किंतु मायाथी उपहास बोला कि गुरूजी जब हमको एक बुढ़ियाने पकड़लिया तब महेंद्र तो जब इच्छाकरेंगा तभी हमको पकड़लेगा और मेरा पकड़ाजाना मेरीमृत्यु है मेरे स्वामीने मुझसे कहाथा कि जिसदिन तेरा हाथ बँधेगा उसीदिन तू मरेगा इससे मुझको कहीं छुपाइये और निशाकरी की सेनाभी विनाजाये न रहेगी क्योंकि निशाकरी और आनन्दा आदि सब चुपचाप सन्नाटे में हैं ये कभी जायेविना न रहेंगी महेंद्रकेमायाकरतेही सबचलीआवेंगी प्रहासबोला कि बेटा तुम सत्य कहतेहो आओ मेरेसाथरहो आज दिनभर और रातभर अच्छेप्रकार से मेलादेखो और मायाकर्त्ताका बाग और रत्नकूप और आनन्दवाटिका और मायाकृतडेरे जो मायादेशाधिपोंकेहैं उनसबको नेकनेक देखरक्खो कल आठवांदिनमेलेके भीड़ और जमाउकाहै सो कल यातो हमतुम पकड़ेहीजायँगे और मारेजायँगे अथवा हम मेले को लूटलेंगे और ऐसा लूटेंगे कि जितनेमेलेमेंआयेहैं सबनग्नहोकरजायँगे और बहुतसे यमधाम को पहुँचेंगे कि उनकी लोथों को काग और शृगालखायँगे जो यह महेंद्र मायादेशाधिपहै तो मैंभी सप्तऋषियोंसे वरदानपाये हूँ परमेश्वरने चाहा तो कलमैं हूँ और यह मेलाहै और महेंद्र है उपहास बोला कि अच्छाहै जो ईश्वरकी इच्छाहोगी वहीहोगा मैं आपकादास आपकेसाथहूं यहकहकर सबबहुरूपिये भेष बदलेहुए चले और प्रहास सबकोलियेहुए राहकतराकर माया कर्त्ताके बागमेंआया कि इसीकेपास रत्नकूपभी है वहबाग बड़ा विस्तरित और उत्तमबनाथा कोसोंतक रंगविरङ्गे फूले फूलेहुए

थे वृक्षभी रत्नोंके बनेथे और फूलभी रत्नोंहींके थे और वे रत्नों के फूल जिन संसारी फूलोंके अनुरूपथे उन्हींका सुगन्धिततैल उन फूलों के बीचमें रखवादिया था कि वायुके चलनेसे गन्ध उन्हीं फूलोंकी आतीथी और यह न जानपड़ताथा कि ये फूल रत्नोंके बनेहैं वायुका स्पर्श ऐसासुखदथा कि एकबार मृतकको भी जीवदान देताथा और कुन्द १ मालती २ कुसुम ३ चम्पा ४ वेला ५ कञ्ज ६ पुण्डरीक ७ कल्हार ८ और २ भांतिभांति के फूल परममनोहर रत्नोंके बनेथे पत्तियांभी उनकी रत्नोंकीथीं और उनमेंसे ऐसी सुगन्ध उठतीथी कि चित्त परम प्रसन्नहो-जाताथा लता परममनोहर लगीहुईथीं और वेलें अपूर्वशोभा दिखा रहीथीं वृक्षसबसघन और छोटे छोटेथे उनकेनीचे उत्तम बिछौने बिछे थे और उनपर परमसुन्दर और स्वरूपवान् स्त्री और पुरुषोंका जमघटाथा बड़ीही अपूर्वशोभाथी उसकावर्णन उसके तद्रूप करना बुद्धि और वाणीसे असंभव है॥

जय० छन्द। प्रतिपद उठति घटाघनघोर। सुन्दरपवनचलतझकझोर॥
भूषणवसनधरें अनमोल। वामसुभग बोलतिशुचिबोल॥
नभपथ गहिगहिआवतसर्व। प्रविशततेहिशुचिबागअखर्व॥
जनुदिवकों अवलोकनकाज। जातअप्सरन के सुसमाज॥

प्रहास यहांकी शोभा देखताहुआ और आगे बढ़ा तो ब-हुरूपियेभी सब साथ में आगये बनमें वितान तनेहुए थे और उनके नीचे छोटेमोटे मायावी म्लेच्छ बैठेहुए थे और नाचहो रहाथा वहां ऐसीऐसी सुन्दरी नाचकरनेवालीथीं कि अपनेभाव और कटाक्षोंसे देखनेवालोंके चित्तोंको विदीर्ण करतीथीं उनकी कटिकी लचक और घुटनेको आगे बढ़ाना ऐसाथा कि उन के आशक्तोंके चित्तपर एक सांपसा लोटजाताथा और फिर फिर कर बैठजाना और भाव बताकर घूँघट काढ़लेना उनके प्राणों को खींचताथा॥

जय०छन्द। कोऊ प्रवलडाहदुखदेय। छिनमेंकोउ चितवशकरलेय॥
चलतिकोऊ काहूसों चाल। विनाछुरी कोउहोतहलाल॥
हँसति प्रसून सदृशकोउ वाम। मन मलीन कोउ बैठीम्राम॥
कोउ आशक्तहि मोदति लाय। छलति कोऊ काहूइबनाय॥

जब यहांसेभी आगेबढ़ा कुछलोगोंको वीणा और सितार और वीन और सारंगी बजातेदेखा ठेका अद्भुत बजरहाथा और बजानेवाले नईनई तानेंउड़ारहेथे कोई मल्हारगाताथा कोईके-दाराका सुरभरताथा और पीलूकी लयमें अलापरहाथा उत्सव देखनेवालोंके ठठ्केठठलगेथे वाहवाहका शब्दहोताथा जब और आगे बढ़ा उसने नगर नारियोंके पालतनेहुएदेखे उनके नीचे चौकियां पड़ीथीं और उनपर उत्तमबिछौने बिछे थे और उनपर पानपात्रआदि वस्तु रक्खीथीं एकसंदूकसे लगाहुआ दर्पणस्था-पितथा और वेउन बिछौनोंपर शृंगार कियेहुए बैठीथीं कोई स-फेद ओढ़नीओढ़ेथीं किसीकागोट और लचकालगाहुआ ऊदा डुपट्टाथा और ग्रीवाके भूषणोंको दिखानेको आगेसे डुपट्टा खोले थीं और माथेपर टीकारक्तलगाये मांग निकाले बालबांधे परम शोभा देती थीं कानोंके कुण्डल उनके भूमभूमकर कपोलोंपर आतेथे और उनसे उनकेमुखकीकांति औरभी अधिक दिखाई पड़तीथी और कांतिमें इनकुण्डलों की भाईपड़नेसे यहजान पड़ताथा कि मानो नदीमें चन्द्रकला प्रकाशकररही है हाथोंमेंकड़े पड़ेथे और मेहँदीसे रचीहुई उंगलियोंमें पोरपोरपरछल्लेथे एक ओर जलकेभरेहुए पात्ररक्खेथे और दूसरीओर धूम्रपान यंत्र स्थापितथे और तिपाइयोंमें चिलमें उरसी हुईथीं मेला देखने वालोंके झुंडकेझुंडखड़ेथे कोई धूम्रपानकरताथा कोईजलपीता था और कोई धनदेनेवाला आकरउनकेपास चौकियोंपर बैठ जाताथा और उनसेआंखें लड़ाताथा वहभी उसको देखकरमु-सकुरातीथीं और उसको इससेदुगुना आनन्ददीखताथा सामने

चाहनेवालोंकी भीड़लगीथी चिलमभरनेवाले चिलमें उड़ाते थे कोईकहताथा कि इसनगरनारका भलाहो भाई आज तो इसने पेंडूपरकी हमको पिलाई वह उत्तरदेतीथी कि बेटे अंगियाके भीतरकी पीओ इसप्रकारसे वहसबको प्रसन्नकरतीथी उधरबैठने वाले आपसमें कहते थे कि इस चिलमको पीजाओ वह उत्तर देताथा कि क्याहम पिटपोंछे हैं तुमपीलो हमअबकी दोआने देकर भरवावेंगे तबहमपीवेंगे कोई कहताथा कि भाई हमारी चिलमपर आगफटककर रखना दूसराबोलताथा भाई हमारी पर बकलेकी आगरखदेना निदान लोगचिलमोंसें धूम्रपानकरते थे और उनमेंसे लोयें भकभक निकलती थीं और उनको आवेश होताआताथा और जब चिलमभस्महोजाती तब खंजरीआदि बजा बजाकर चौकियोंपर ठुमरी और गीतगाते थे ॥

चौ० । धूम्रपान के यंत्र सुहाये । देखन हारेनि के मनभाये ॥
बहुजन रूपवान अलबेले । संगसखाकहुँ खड़े अकेले ॥
कोऊ लै खंजरी बजावै । सारंगी पर कोऊ गावै ॥
तहँसबनगरनारि अलबेलीं । बैठीं देखन योग नवेलीं ॥
जे जन नामचरसकों धरैं । तिनिसों ते उत्तर इमिकरैं ॥
कहा नपुंसकइवतुमभाषत । किमि न पानकरियहरसचाखत ॥

उनसे आगेबढ़कर प्रहासने मदक पीनेवालोंकोदेखा कि चारों ओरसे मण्डली बांधेहुए लोग बैठेथे हाथोंमें सुलगीहुई कलमें थीं महरूयंत्रोंपर जमेथे और सामने गंगाजमनी छींटेरक्खेथे ॥

वसुकला छंद ॥ बहुजनचटक । बेचतमदक ॥ बहुनरयुवान । तेहिकरतपान ॥ महरूलगाय । पीवतसचाय ॥ तामेंभगिनि । बरिउठतभिनि॥

आगे बढ़कर विजया बेचनेवालोंको देखा जलभरे रक्खे हैं सामने सिल लोड़ी हैं ठंढाई पिसरही है मनुष्य वहां इकट्ठे हैं कोई लोटालेकर पीरहाहै कोई ओकलगाकर पीरहाहै कोई कहता है मेरी ठंढाई में बादामभी डाललेना कोई लौंग और इलायची डलवाकर पिसवाताहै कोई कहताथा ऐसी अइयो हरगुनगइयो

तेरेही चरणारविन्द से ध्यानलइयो और लोटा चढ़ाजाता था दूसरा कहताथा ऐसा नशाआवे हाथीका सवार भुनगाई नजर आवे और बहुतसे विजयाके आवेशमें प्रमत्तहोकर यहकहतेथे॥

क०। बुद्धिकों गणेश बल देवेकों विधाता जैसे चातुरीकों वाक वाणी थम्भन अफीमसी। योग जैसे रुद्रमों वियोग जैसे रामचन्द्र भोगको कन्हैया और रोगनकों नीमसी॥ जागिवेकों गोरख ध्यान धरिवेकों ध्रुवत्यों देवेकों अचल सबकाजकों अतीमसी। निपट निरंजन सो विजया अचल जानि सोवेकों कुम्भकरण भोजनकों भीमसी॥

वहांसे आगेबढ़कर मद्यपेयी म्लेच्छोंको देखा दुकान कलवारकी बसंती सजीहुईथी और एक ऊंचेस्थानपर पीले और लाल और श्वेतवर्णकी मद्यकेपात्र भरेहुए रक्खेथे कुछ म्लेच्छ दूकानके भीतर मद्यपात्र और पानपात्र सामनेरक्खे हुए बैठेथे और मद्यपान कररहेथे जिसकिसीको अधिकनशाहोगयाथा वह भीतसेलगकर चुपका बैठगयाथा बहुतसे उनमेंसे हँसरहेथे और आपसमें हास्य विनोद कररहेथे परंतु ये सब अपने आपेसे बाहिर नहींहुएथे कोई पद पढ़ताथा और कोई गाताथा परंतु दुकानके सामने जो मद्यपेयी इकट्ठेथे वे सब अपनी २ उड़ारहेथे कोई कीचड़में लोटताथा कोईडगमगाता फिरताथा कोईअचेत पड़ाथा और उसकेमुखसे लार बहरहीथी किसीको डोलीमेंडाल कर लोगलियेथे कोई नशेमें बैठाहुआ अपनी वयकासब पूर्व वृत्तांत कहरहाथा बहुतसे आपसमें गालीगलौज और जूतीपैजारकररहेथे और बहुतसे जो पढ़ेलिखेथे वे यहकह रहेथे॥

बरवाछंद। हेहे मम प्रिय मद्य पिवावनहार। रहै अछत जगमें तव सुयश अपार॥ देहमको मदहमहैं पीवनहार। ठाढ़े मांगतकबसों तेरेद्वार॥ अब जिनि करि इठलैयां देमधु मद्य। पानपात्र मम भरिदे मधुसोंसद्य॥ कुंजलाल जबभइहै मद आवेश। भूलि जाइगो सुत तिय घर अरुदेश॥

वहांसे आगेबढ़े तो देखा कि कुछ मनुष्य बिगड़गये हैं आपसमें खड्ग खिंचगये हैं और कोलाहल होरहाहै लोग भागते

फिरते हैं अकस्मात् तूरबजी और प्रबन्धक दौड़लेकर आप-हुँचा बहुतोंको पकड़लिया और बहुतसे भागगये एक ओरको तस्कर गिरहकट पकड़ेगयेथे कोई किसीकी गिरह काटताथा और कोई किसीका वस्त्रलेकर भागाथा यहांसे आगे जो बढ़ेतो हलवाई आदि अन्नके पदार्थ बेचनेवाले वणिकोंकी दुकानेंसजी सजाई देखीं हलवाइयोंकी दुकानोंपर थालचुनेहुएथे और पीतलकी जंजीरोंमें बंधेहुए घंटेलटकेहुएथे और भीतर भट्ठीपरकढ़ाउचढ़ेहुएथे और मिष्टान्नबनरहेथे और नानाप्रकारके पक्वान्न बनेहुए रक्खेथे और थालोंमें मिठाईको इसप्रकारसे चुनचुनकर रक्खाथा कि थालोंमें फूलोंके गुच्छे से रक्खेहुए मालूमहोते थे और उनपरसोने और चांदीके पत्रचिपकेहुएपरम शोभादेतेथे ॥

जय०छं० । बहुप्रकार के उज्ज्वल थाल । धरे दुकाननिपै तेहि काल ॥
तिनमें बहुप्रकार पकवान । भरिभरिधरिधरिसजीदुकान ॥
उत्तम तुला सुउत्तम बांट । तिनसों तोलतसबबिनआंट ॥
लै लै जेंवत मनुज सुजान । परमस्वादको करतबखान ॥

उधर दूसरेवणिक उत्तमपात्रोंमें मृगअजा कुक्कुट और कुक्कुटांड आदि अनेकजीवोंके मांसके नानाप्रकारके पदार्थ दुकानोंमें लगाये हुएथे और अन्न मिश्रित मांसके पदार्थ घृतमें परिप्लुत एकओर स्थापितथे भट्ठी उनकी जलरहीथी और उसमें मांसके और अन्नके पदार्थ बनरहे थे बहुतसे मनुष्य वहां बैठे हुए खारहेथे और बहुतसे मोललेरहे थे ॥

जय०छं० । मांस क्वाथसों तंदुलविद्ध । मांस खण्डसह कीन्हे सिद्ध ॥
पक्व सुतंदुलधरे बनाय । पाकित घृत शर्करा मिलाय ॥
कुक्कुटांड अरुमीन महान । पक्व अपक्व धरे सु दुकान ॥
तिनहिंलेतऔखातसुजान । वरणततिनिकोस्वादमहान ॥

इनसे आगेबढ़कर शाकबेचनेवाली वणैनियोंको देखा सब लहँगे अनमोल पहिरेथीं और सामने डलियोंमें नानाप्रकार के शाक और फल मूललगायेथीं सुन्दरतामें एकएकसे बढ़कर

और वाणीमें एकदूसरीसे मनोहरथीं भालसबके विशाल और नेत्रकटीलेथे और हाथोंमें मेहँदीलगाएहुए परमशोभा देतीथीं लेनेवाले युवान उनकेसामने टहलते फिरतेथे और उनकेकटाक्षहास्य और भावको देखदेखकर अपने प्राणदेतेथे और किसीने जो उठाकर कुछपदार्थदिया तौ उनके पीनपयोधरोंकी शोभाको दृष्टानुरागके भावसे देखते थे ॥

जय०छं०। यौवनभरयो सुरूपअनूप। शावकनैननिको शुचिरूप॥
रीझतनरलखि कुचन उभार। एकअनार सहस बीमार॥
सुघरनासिका अधर ललाम। रीझतखीझतलखिनरआम॥
नैन सलोने अरु रतनार। लखिलखिविकलहोतरिझवार॥
दरकावे हिय लखत अनार। कुच कठोरको परमउभार॥
कली कंचुकी परम ललाम। पट विचरखित शोभाधाम॥
लाललाल अतलसके आम। पहिरे लहँगा ते वरवाम॥
शुभ्रकड़ा हाथनि में गोल। पग में पड़े छड़ा अनमोल॥
एरि फेरि सव बनवें बात। करत अनेकभांति की घात॥
उलटो धड़ा बांधि के सर्व। लूटत रिझवारनिकरिगर्व॥
ले तिसवनको मन ते तोलि। छलतिसवनिको मीठे बोलि॥
सेव कसेरू और अनार। आमरसालसु अमितप्रकार॥
कदलीफल अमरूद ललाम। वहुविध शाकधरे ते वाम॥
वेचतिहँसिहँसिसवनिरिझाय। दुगुन मोललें तिन्हेंभुलाय॥

और बीचसड़कपर सहस्रों वणिक थालोंमें दालमोठ हलुआसोहन मोदक दहीवड़े पापड़आदि नानाप्रकारके मीठे और सलोने पदार्थरक्खेहुए फेटबांधे उसमेंपत्तेभरे हाथमें खजूरका पत्ता मक्खीआदिको हांकनेको लिये पुकारतेहुए फिररहेथे जव इनको देखकर आगेवढ़े तौ वजाजादेखा कि वहां नानाप्रकार के वस्त्रोंकेथानोंके ढेरलगेथे और दलाल ग्राहकोंको बुलातेहुए और एकदुकानसे दूसरीदुकानपर वस्त्रदिखातेहुए फिररहेथे॥

जय०छं०। तिरछे वांके वने वजाज। सुन्दररूप धरें सव साज॥
वसनविविधविधिकेसवधारि। शिरके केसनिसुभगसँभारि॥

अपनी अपनी साजि दुकान । बैठे बेचन तजितजिमान ॥
मखमलअतलसआदिकथान । पट रेशमी सुसुघ्र महान ॥
ऊनी थान प्रकार प्रकार । चित्र वरण के शोभागार ॥
सूती थान अनेक विचित्र । नाना देश वनिक के तत्र ॥
धरे दुकाननि पैनिज धार । खुले बहुत अरुबँधे अथोर ॥
बेचत ग्राहक गननि बुलाय । फारतथान दिखायदिखाय ॥
मोलकरत बहुविधसों भाय । जासोंनहिंग्राहकफिरिजाय ॥
निज संकेतिन वाणी बोलि । प्रेरि दलालनिबेचतमोलि ॥

उनसे आगे बढ़कर सराफोंका बजारदेखा कि बड़े २ बणिक पगड़ियां बांधे सामने पैसा कौड़ी और दुअन्नी चौअन्नी ढेरलगाये बैठे थे ॥

दो० । बैठे बणिक दुकान में परखत सबके दाम ।
खोटो खरा बताय के बट्टा लेत स्व काम ॥

वहांसे आगेबढ़के रत्नबणिक अर्थात जौहरी लोगोंका बजार देखा वहांबड़े २ धनाढ्य बणिये उत्तमोत्तम वस्त्रधारणकिये ऐनकलगाये गद्दी उपधानलगाये सामने नानाप्रकारके रत्नों कोड़िब्बोंमेंरक्खे बैठेहुएथे और रत्नोंकी परीक्षा और उनका मोल तोल कररहेथे ॥

जय० छं० । धनीबणिक जोहरीअनूप । जिनके सुन्दर परमस्वरूप ॥
लीन्हे विविध भांति के रत्न । बैठे कीन्हें परम सुयत्न ॥
मुक्तनि की माला छविधाम । माणिक विद्रुम रत्नललाम ॥
तोलितोलि काटनिकरिभाव । बेचत लेत परख करिचाव ॥

और सबबजारमें अनेक म्लेच्छचर्म के पात्रोंमें जलभरेहाथोंमें कटोरेलिये उनको झनकारतेहुए पानीपिलाते फिरतेथे प्रहास वहां अपनेचेलोंको साथमेंलियेहुए सैरकरता फिरताथा कि इतनेमें चपलाने कहा कि गुरूजीहमको कुछदो तौ हमभी कोईपदार्थ मोललें प्रहासबोला कि बेटाम्लेच्छों ने यहमेला हमारा बधकरनेको कियाहै हमकोइसमें किसीप्रकारका हर्षकरना उचितनहींहै और जो तू मांगताही है तौ कलमैंतुझको खरच

दूंगा यहकहकर आगेवढ़ा और विसातियोंके वजारकोदेखा कि काष्ठकीसीढ़ी वनीहै और श्वेतवस्त्रोंसे मढ़ीहै उसपर खिलौने और वाजे और चाकू और कैंची औ दर्पण और सूत्रकेगोले आदि नानाप्रकारके देशदेशके पदार्थरक्खेहैं एकओरको छत्र टँगेहैं दूसरीओर नानाप्रकारके काँजे और लालपात्ररक्खे हैं औ तीसरीओर लड़कोंके खेलके पदार्थ जैसेलट्टू और चकई आदि स्थापितथे और कहीं नगविकरहेथे कहीं सुरमा विकता था कहींहाथीदांतकीकंघी औरकहीं और२नानापदार्थविकतेथे॥

जय०छं०। रुचिरविसांतिनिकोवाजार। तहां दुकान सुसजीअपार॥
विछे वसन तहँ श्वेत महान। तिनपरधरे पदार्थ अमान॥
चाकू कैंची मोतिन माल। दर्पण पात्र अनेकन लाल॥
चकई लट्टू प्याली आम। विविधखिलोना शोभाधाम॥

उनके समीपही वटानियोंकी दुकानेथीं कोई फूलसोनेके बुन रहाथा कोईकलावत्तू वटरहाथा कोईउत्तम गहनोंको गूथरहाथा कोईझालर वनारहाथा निदान जो उनके कामथे सव वड़ीउत्तम हस्तक्रिया केथे॥

जय०छं०। बीनतफूलसुसुष्टुअन्यून। जनु वागनिके रुचिरप्रसून॥
कोऊ कतरत कंचन तार। कोऊ वनवत सुवरणहार॥
ओढनपटअंचलकोउवीनि। मोतीरतननि सीवतचीनि॥
यहि प्रकारके नाना काम। हेम सूत सों वनवतआम॥
तिनकी हस्तक्रियाकोदेखि। सकलसराहत गुणअवरेखि॥

उनसे आगेवढकर जड़ियों और नगीनाआदिके कामकरने वालोंकी दुकानेथीं वहुमौल्य पाषाण और रत्नोंके नग वहांवन-रहेथे और मोतियोंमें छिद्रहोरहे थे॥

जय०छं०। नगवेचावहुपरमसुजान। वैठे सुन्दर धरे दुकान॥
लघुदीरघनगवहुअनमोल। लम्वे चौकुंठे अरुगोल॥
धरे तहां नौकनिमें लाय। निरखितिन्हैंदामिनीलजाय॥
कंगन वाजू मुँदरी आदि। जड़ियाजड़तविवादिविवादि॥

भापतग्राहकजननदिखाय। कैसे सुन्दर दिये बनाय ॥

और जो आगेबढ़े तो गोटे किनारीवालोंकी दुकानेसजी दे-खी उनपर बणियें बड़ी चमकदमकसे बनेठनेबैठेथे और प्रकार२ का रुपहरी और सुनहरी लचकारक्खेहुए थे वहां ग्राहकउनसे मोलतोल कररहेथे कोईकहताथा हमको चौड़ापट्टा दिखाओ दूसरा सीकिया गोटा मांगताथा तीसरालचकेका ग्राहकथा और कोई गोखरूमांग रहाथा ॥

जय०छं। बहुजनगोटा बेचनहार। रूपवान सुन्दर सुकुमार ॥
साजे अतिसोहनी दुकान। बैठे धारैं वस्त्र सुजान ॥
सन्मुखगोटा भरे पिटार। धरे परम शोभा आगार ॥
चमकनिगोटाकीलखिताय। तुरतदामिनीजायखिजाय ॥
किरन मनोहर प्रभाप्रपूर। जेहिलखिलाजतदिवकोसूर ॥
चुटकी बनी सुशोभाकूटि। जो ग्राहक चितचोंटतऊटि ॥
लचकासुभग सुनहरीरूप। जनु कंचनको डलाअनूप ॥

बीचबीचमेंतम्बोली और तंबोलिनोंकी दुकानेंशोभादेरही थी सामनेअपने काष्ठबिछाये उसपर तांबूलउलटे सूधेरक्खेहुएथे और वे बारम्बार उनको छांटतेथे और एकओर पीतलकी चम कती हुईथालियांसजीथींउनमें लवंगऔर इलायचीआदिपदार्थ रक्खेथे और दूसरीओरचूना और खैरकीकलसियां स्थापितथीं॥

जय०छं०। आगेतखताधरिमतिमान। सुघरतंबोलिनिबेचतपान ॥
पुंगीफल अरु एला लोंग। चूना खैर धरे सब ढोंग ॥
सुन्दर बीड़ी परम बनाय। राहिनदेतिबुलायबुलाय ॥
बोलतिबचनमधुर सुखरूप। यहदिसाबरी पान अनूप ॥

एक ओरको गंधी दुकानोंको सजायेहुए बैठेथे और नानाप्र-कारके सुगन्धित तेलोंको बेचरहे थे कहीं माली सुगन्धित फूल और फूलोंकेहार लिये बैठेथे कहीं तमाल वणिक् नानाप्रकारकी बनीहुई सुन्दर तमाखू बेचरहेथे कहीं भिषज अनेक प्रकारकी औषधी लिये चिकित्साकर रहे थे कहीं कुम्हार नाना प्रकारके

सुन्दर सचिक्कण और मनोहर मृत्तिकाकेपात्र बनायेहुए दुकानों में धरे बैठे थे और कहीं धूम्रपानयन्त्र अर्थात् नैचा बनानेवाले नाना प्रकारके नैंचे बनारहे थे ॥

जय०छं०। सजि सजि सुन्दर सुभग दुकान। बैठे गंधी परमसुजान॥
कांच कुप्पिकन के बहु हार। ऊंचे नीचे टँगे सुतार॥
बहुविधिको सुसुगंधित तेल। भरौ कुप्पिकनमें अनमेल॥
एक दिना जो लेय लगाय। तासु गंध कबहूं नहिं जाय॥
गंध अतर की परम अनूप। चित प्रमोदकर अतिसुखरूप॥
सबहि गन्धधारण अभ्यास। सबथर फैली तासु सुवास॥
बेचत माली विविधसुफूल। बागहु के उरकैं जो शूल॥
बने रुचिर बेला के हार। जिनिकोपहिरव जगवशकार॥
कली मोतिया के गलबन्ध। पहिरत ग्रीवाहोय सुगन्ध॥
कोऊ कहत पुकार पुकार। हमपर सबप्रकार के हार॥
हार मालती के हैं अत्र। लेउ न जाओ कहुं अन्यत्र॥
इत तमाल बेचा मतिमान। बैठे बहुविधि सजैं दुकान॥
मखमल के बोरानिमें तत्र। भरिभरिधरी तमाल विचित्र॥
स्वर्ण रजतमयभाजनग्राम। रत्नजटित तहँ धरे ललाम॥
विविधप्रकार तमाखू लाय। तिनिमें दई सकल भरवाय॥
करुई मीठी दोउ रसयुक्त। गन्धयुक्त कछु गन्ध विमुक्त॥
ताको धूमकरैं जो पान। होय प्रसन्न चित्त सविधान॥
आगे बैठे भिषज उदार। धरे औषधी बहुत प्रकार॥
बटी और अवलेह अनेक। उत्तम चूर्ण एकसों एक॥
बहुप्रकार के रस कमनीय। दुस्तररोग हरण अमनीय॥
लतावनस्पति फलअरुमूल। पर्णबेल वल्कल अरु फूल॥
गुटिका तैल लेप घृत पाक। गुग्गुल आसव अर्क सुशाक॥
करत चिकित्सा विद्या पूर्ण। हरतरोग रोगिन के तूर्ण॥
बैठे आगे बाढ़ि कलवार। धरे वारुणी अमितप्रकार॥
तिनि के आगे रहे कुम्हार। सजैं दुकान सुशोभागार॥
मिट्टी के बहुभाजन स्वच्छ। कागजसमअतिसूक्षमअच्छ॥
बहुविधिबालनिके खिलवार। हाथी घोड़ा मनुज सवार॥

धरें दुकानानि परमविचित्र। बेचत करि करि मोलसुतत्र॥
तिनि के आगे नैचा बन्द। बैठि दुकानन तजितजिद्वन्द॥
बांधत कोऊ उलटी चीन। कोऊ गट्टा करत नवीन॥
पेचवान कोउ बांधततत्र। सटकबनावत परम विचित्र॥
यहि विधि नैचाशुभ्रनवीन। बांधत ते सबपरम प्रवीन॥
ग्राहक यूथ यूथ तहँ जाय। नैचनि लेत मुलायमुलाय॥
कुंजलाल भसरुचिरबजार। देख्यो सुन्यो न शोभागार॥

निदान प्रहासको देखते देखते सायङ्काल होगया और काल-चक्ररूपीजौहरी सूर्यरूपी मणिको बन्दकरके आकाशरूपी दुकानमें तारागणरूपी मोतियोंको देखाने लगा॥

दिगीशछं०। जब द्यौस अंत पायो। निशि संग इन्दु आयो॥
निज तेज को प्रकाशा। सो कीन्ह वद्धि अकाशा॥

रातकोभी बहुरूपियोंने फिरना बन्दनकिया और देखा कि योजनोंतक भाड़प्रज्वलितहैं और रत्नोंकेकवलप्रज्वलितकरकरके वृक्षों में लटकायेगये हैं और अग्निक्रीड़ा अर्थात् आतशबाजी योजनोंतक गड़गई है अग्निकेपुष्प बरसानेवाले चक्र परमशोभायमान चारोंओरलगे हैं औरथोड़ीदेरमें अकस्मात्अग्निकुंभ अर्थात् अनार आदि छूटनेलगे और चक्रोंमें आगलगाई गई उनसे नानाप्रकारके अग्निपुष्पबरसनेलगे और चारोंओर उनकी प्रभा छागई उससमय वे अग्निपुष्प योजनोंतक आकाश में तारागणोंकी भांति पृथ्वीपर पड़ेहुए परमशोभा देतेथे और चक्रोंसे गिरतेहुए अपनीप्रभासे उडुगणोंकी प्रभाको मलीनकरतेथे इसकेपीछे रात्रिके सन्नाटेमें सब अपनेअपने डेरोंपर जम गये और उत्सवकरनेलगे इसमेलेमें सब देशोंके मनुष्य आयेथे यमन म्लेच्छ कांबोज पर्वती और और मनुष्यभीथे और बौद्ध शाक्तशांभव और वैष्णवआदि मतोंके पुरुषभी थोड़ेबहुतथे जो किसी न किसीप्रकारसे इस देशमें आफँसेथे निदान चारोंओर उत्सव और मद्यपान होनेलगा॥

जय०छं० । होन लग्यो आनन्द विशाल । महामहोत्सव तहँ तेहिकाल ॥
नाचहोत तहँ सतसह ठौर । निरखत यूथयूथ करि गौर ॥
अतिसुन्दर बालाशुचि अंग । थिरकि थिरकि निरतत गतिसंग ॥
बाजत मिरदंगादिक साज । निरखत हर्षत सकलसमाज ॥
करतमाधुरी धुनिसों गान । गायक परम प्रवीण सुजान ॥
भैरव माल कौस हिंडोल । सिरी मेघ दीपक धुनि बोल ॥
मालसिरी गौरी केदार । टोड़ी आसावरी मल्हार ॥
कुंजलाल करि करि अनुराग । गावत विविध भांतिकेराग ॥

उस मेलेका जमाउ ऐसाभारीथा कि उसका वर्णन करना परम दुर्लभ है इसकारणसे थोड़ासा उक्तवर्णन लिखकर अब आगेकी कथालिखी जाती है कि इससमय बहुरूपिये देखरहेथे कि महाजन नीचे नीचेजामे पहिरेबालकोंको साथलिये बजार की शोभादिखाते फिरतेहैं स्त्रियां शृंगारकियेहुए फिररही हैं कहीं वेश्या अपने आशक्तको लिये शृंगारकियेहुए बैठीहैं कहीं मांसके पिंडोंको म्लेच्छ अग्निमें पक्ककररहेहैं कहींएकवेश्याके दोव्यसनी होनेसे झगड़ा होरहाहै कहीं दासीके पीछे खड्ग खिंचगये और प्रबन्धककी दौड़आई है एक दूसरेसे लागलगरही है कहीं नट तमाशाकररहे हैं और नटनियां नाचरहीं हैं कहीं झूले पड़े हैं उनपर स्त्रियां झूलझूलकर सावन और मल्हारगाती हैं कहीं वृक्षोंके नीचे बिछौने बिछायेहुए सत्पुरुष बैठे हैं कहीं अफीमी बैठेहुएहैं अफीम घुलरही है ऊख छिलरहीहै धूम्रपान भरेरक्खे हैं किसीने एकफल टुकड़े टुकड़ेकरके सबको बांटाहै कोईकहता है मैं ऐसी ऊख छीलताहूँ जैसा दीपक किसीने कुछ मिष्टान्न निकालकर दियाहै उसकी प्रशंसाहोरहीहै बहुतसे ओंघरहेहैं और रुकरुककर बातेंकररहे हैं बहुतसे म्लेच्छ स्नानकररहे हैं बहुत से मायाकर्ताकी पूजाकररहे हैं कोई कुछपढ़रहाहै कोईमालाफेर रहाहै कोई दंडवत्लगारहाहै साधू नानामतके आयेहुए फिररहे हैं बहुतसे मांगते फिरते हैं और झगड़ते हैं बहुतसे धूनी रमाए

बैठे हैं बहुतसे शिरपरछत्रलागेहुए पड़े हैं बहुतसे जटिलहैं बहुतसे मूड़मुड़ाएहैं बहुतसे नग्नहैं बहुतसे नीलेवस्त्र पहिरे हैं बहुतसे हरेवस्त्रधारणकिये हैं बहुतसे बैठेहुए मादक पदार्थ भक्षण कररहे बहुत धूम्रपीते हैं और बहुतसे ग्रामीण म्लेच्छ आये हुए जहांतहां मोटा झोटाखापीरहे हैं कहीं स्वांग बनबनकर निकलरहे हैं और बरछी आदि अस्त्रोंको निगलतेहैं कोई तमाल खाताहै कोईसूतमुखसे निगलताचलाजाताहै इसप्रकारके नाना प्रकारके तमाशे देखते देखते उन बहुरूपियोंको सब रात्रि वहीं व्यतीत होगई और कालचक्रने घूमकर रात्रिको संसारसे हटा दिया और दिनको उसका स्थानापन्न किया॥

जय०छं०। निशा विगत रवि निकसे आय। रजनी भव अंधियारहटाय॥
मानहुं कृष्ण शिलाको फोरि। निकसी शुचिमणि करतउजोर॥

उससमय विचित्रमाया रत्नकूपसे निकलकर बाहिर आई और महेन्द्रभी सब कामोंसे निबटकर बदरी उद्यानमेंगया और वहांसे मेलेमें आनेको बड़ी धूमधामसे सवारहुआ यहां प्रहास आदि मेला देखते फिरतेथे कि अकस्मात् आकाशमें बादलप्रकटहुआ और नानाप्रकारके बाजे बजनेलगे फिर सहस्रोंतखत जिनपर बागलगेहुएथे और जिनमें रत्नोंके बनेहुए फूलउरसेथे उतरेउनसे वह भूमि परमविचित्र बागरूप दीखनेलगी उनके पीछे बारहसहस्र मायाकृत सवारघोड़ोंपर बैठेहाथोंमें नंगेखड्ग लिये निकले उनके पीछे बारहसहस्र मायाकृत अप्सरा शिरसे पैरतक रत्नोंको धारण कियेहुएआईं मृदंग आदि बजतेथे और वे सब मायाकृत देशाधिपकायश गातीथीं उनके पीछे सत्रहसहस्र सुन्दरस्वरूपवान् दासियां उत्तमोत्तमवस्त्र और आभूषण धारण किये हाथोंमें मोरछल आदि सब पदार्थ सेवाके लियेनिकलींउनके पीछे एक बादल जिसमें चपला चमकरहीथी गरजताहुआ आया और निकलगया उसके उपरांत एक बादल

ऐसा आया कि जिससे सुवर्ण और रत्नोंकी वर्षाहोतीथी और नाना प्रकारके बाजे उसके ऊपर बजते थे और फुइयां बरसती थीं और उसके नीचे एक मण्डप वायुमें उड़ताहुआ आताथा उस मण्डपके भीतर साठ सहस्र आसन माणिकके बिछेहुएथे और बीचमें राजसिंहासनथा उसपर महेन्द्र बिराजमानथा और शिरपर मायाकृत कीट और मुकुटबांधेथा और रत्नजटित अम्बरोंको पहिरनेसे ऐसा जानपड़ताथा कि सहस्रोंसूर्य लगेहुए हैं और दृष्टिनहीं ठैरतीथी उससमय सब मायाकृत देशकेराजा अपने अपने डेरोंसे निकलकर उस मण्डपके सामनेआये और उसके साथहोलिये और साठ सहस्र रानी और राजा अपने अपने विमानोंपर बैठकर उसमण्डपके चारोंओर स्थितहोकर चले उस मण्डपके आगे आगे नाचहोताजाता था इसकेपीछे विचित्रमायाकी सवारी निकली उसके साथभी इसी प्रकार की धूम धामथी निदान दोनोंकी सवारियां रत्नकूपकीओर चलीं प्रहास भी उनके नीचे नीचेचला निदान वहां जाकरसबपहुँचे और देखा कि चारम्लेच्छ एकपावँसे खड़ेहोकर कुछ पढ़ रहे हैं और रत्न और सुवर्ण इतना चढ़रहा है कि वह सरोवर के समान कूप पटगयाहै जिससमय महेन्द्र वहांआया म्लेच्छमायाकर्त्ता की जय बोलनेलगे वहां इक्कीस डेरेखड़े हुए थे महेन्द्र उतरकर उनमेंगया उससमय नानाप्रकारके बाद्यबजनेलगेऔर सब महाजन लोग भेटलेलेकर दौड़े और अपने अपने योग्य असनोंपर जाकर बैठगये उससमय महेंद्रने कहा कि अब उन विमुख शत्रुओंको बुलाना चाहिये यह सुनतेही प्रहास घबराकर भागा कि अपनी सेनाको चलकर देखूं सब बहुरूपिये भी उसकेसाथ हुए और वह बड़ी शीघ्रतासे अपनी सेनामेंआगया और रानी निशाकरीसे मेलेका सब वृत्तांत कहनेलगा उधर महेन्द्रने मायाकर्त्ताकी अँगूठी हाथमें लेकर कहा कि निशाकरी

अपने सब साथियों सहित यहांआवें यह कहतेही एक मयूर अकस्मात् प्रकटहोकर उड़ताहुआ गया और रानी निशाकरी की सभामें जाकर भयानक वाणीसे बोला कि हे विमुखो शीघ्र जाओ तुमको मायाकृत देशाधिप बुलाता है यह सुनतेही सब बहुरूपिये भागगये और प्रहासने मरुतदत्त वस्त्र ओढ़ लिया और देखा कि रानीनिशाकरी और आनन्दा कहरही हैं कि निपूते प्रहासने हमको खराबकियाहै जो हम उसको पाते तो खंड खंड करडालते यह कहकर रानीनिशाकरी और आनन्दा आदिने परमोत्तम वस्त्रपहिरकर सिरसे पैरतकरत्नोंको धारणकिया और परमसुन्दरी सहस्रों दासियोंको वस्त्र और भूषणोंसे अलंकृत करके साथलिया और हाथोंको बांधकर और थालों में भेटकेलिये नानाप्रकारके रत्नोंको भरकर मायाकृत विमानों पर बैठ बैठकर सब सेनापति चलदिये चलतेसमय बाजे बजनेलगे और सम्पूर्ण म्लेच्छोंकी सेना और शूरवीर मयूर आदि नाना प्रकारके वाहनोंपर बैठ बैठकर उनके साथहुए केवल ऐसे वैसे म्लेच्छरहगये जिनकी पूछ ताछ भीनथी और उधरसे हरे और काले और रक्त पर्वतों परसे केसरीमाया और रक्तकेशी और सम्हदमी अपनी२ सेनाको छोड़कर सब सरञ्जाम लेकरचले आये निदान क्षणमात्रमें सब मेलेमें पहुँचगये उससमय उपहासने प्रहाससेकहा कि गुरूजी हमारी सेना तो हमसे विमुख होकर चलीगई अब क्षणमात्र में हमभी बुलाये जायँगे और फिर हमभी न रहसकेंगे प्रहासबोला कि परमेश्वरका स्मरणकरो और साथ चलेआओ यह सुनकर सब बहुरूपिये आश्चर्यमें हुए कि देखिये अब ये कौनसा छलकरतेहैं बुद्धि कुछकाम नहीं करती है और गुरूजी तब मेला लूटनेका दावा बाँधते हैं अच्छा अब देखेंगे यह बिचारतेहुए प्रहासके साथ होलिये और प्रहास अपना भेषबदलकर फिर रत्नकूपपर आया और देखा

कि आनन्दा आदि जाकर सब महेन्द्रके पैरोंपर गिरी हैं और अपने अपराधकी क्षमा चाहतीहैं महेन्द्रने उससमय आज्ञादी कि बधिकोंको बुलाओ कि यहांआकर इनका बधकरें उससमय जो लोग वहांपरथे उन्होंने विनयकी कि अब ये सब आपसे क्षमा चाहतेहैं और आप इनका बधकरनेकी आज्ञादेतेहैं तोहम सब आपसे क्या आशारखसक्ते हैं महेन्द्रनेकहा कि तुमसब देखोगे भाई ये मायाहतचेतस होकर ऐसाकहरहे हैं यह कहकर उसने कुछमायाकी और मुद्रिकासेकहा कि ये सब मायाकृत बन्धनसे मुक्तहोकर फिर ज्योंके त्यों होजायँ उसीसमय सब चैतन्यहोगये और रानीनिशाकरी आदिने महेन्द्रको देखकर उस कीओरसे अपनामुख मोड़लिया उससमय महेन्द्रने पूछा कि क्यों रानी निशाकरी आदि तुमसब मेरी आज्ञामें चलोगी वह सबबोलीं कि बहुत झकमारना अच्छानहीं हम सब प्रहासजी के चरणोंकी दासीहैं वह आतेहीहोंगे और यहसब घमण्ड तुम्हारा भुलादेंगे और यहबात सम्भवनहींहै जो हमउनके आज्ञानुगामी होकर कैदरहें तब महेन्द्रबोला कि क्यों आपनेसुना अब इनका बध न करूं क्याकरूं सबबोले कि आपका कहना यथार्थहै ये सब बधकरनेके योग्यहैं तब महेन्द्रबोला कि अब इनको कैदकरके इनके सहायकोंको पकड़ना चाहिये जिनपर इनको बड़ाघमण्डहै और फिर सबका बधसाथही कियाजाय यह कहकर उसने सबके हाथों पैरोंमें भारी २ निगड़डलवादिये और आज्ञादी कि इनको लेजाकर मायाकर्त्ताके बागमें कैदकरो और फिर किसीपर ऐसी माया न की कि हतचेतस होजायँ इस प्रयोजनसे कि सब अपनी बुरीदशाको देखकर चित्तमें कुढ़ें और जो सेना उनकेसाथ आईथी उसको भी कैदकरके एकबनमें उतरवाया और उनपर रक्षक नियतकरदिये जब यह प्रबन्धहोचुका तब उसने मायाकृत मयूरोंको बुलाया और आज्ञादी कि

प्रहास और उपहास आदि बहुरूपिये जहाँहों तहाँसे पकड़ला-
ओ यहसुनकर वे मयूरउड़े परन्तु प्रहास इसआज्ञाको सुनतेही
एककोने में इन्द्रदत्त छत्रकोलगाकर और उसकेनीचे सब बहु-
रूपियोंको भी बैठाकर परमेश्वरका स्मरण करताहुआ बैठगया
इसछत्रका यह प्रभावहै कि जबप्रहास मरुतदत्त वस्त्रओढ़कर
और छत्रलगाकर बैठजाताहै तब मायासेभी उसकास्थान जाना
नहीं जासक्ताहै निदान मयूर सब मायाकृत देशमें फिरकर आये
और महेन्द्रसे विनयपूर्वकबोले कि हमकोबहुरूपिये नहीं मिलते
हैं तब महेन्द्रने मायाकृतदेशकी आपत्तियोंकोभेजा वेभी ढूंढ़कर
फिरआई फिर उसने मायाकृत पुतलोंकोभेजा जब वेभी लौट-
आये तब महेन्द्र ने उसमुद्रिकासे कहा कि बहुरूपियोंको बुला
दीजिये यहकहतेही वाणीहुई कि बहुरूपिये इसीमेलेमें हैं परन्तु
ऐसेस्थानमें हैं कि दिखाई नहींदेते हैं यहसुनकर महेन्द्रने अपनी
सवारी मँगवाई कि मैं आपजाकर उनको ढूंढ़कर पकड़ेलाताहूं
और मेलेमें अगणित भीड़होने से उसने अकेलेजाना उचित
न समझा इससे उसी धूमधाम से उठकर ढूंढ़नेचला परन्तु
योजनोंमें मेलाहोनेसे और इतनीभारी सवारीका रुक रुक के
चलनेसे और फिर इतने मनुष्यों में देखकर बहुरूपियोंको प-
हिंचानने में महेन्द्रको तो विलम्बहोगी परन्तु अब आगे का
वृत्तान्तसुनिये कि अद्भुत मिथ्या ईश्वरकीडाढ़ी प्रहासने सैक-
ड़ोंबार मूड़ीथी और उसमें मुक्ता और रत्नपिरोयेहुए होनेसे उ-
सने अपनी थैली में रखछोड़ीथी निदान उससमय उसने बहु-
रूपियोंके कानमें कुछकहा बहुरूपिये उसकी आज्ञाके अनुसार
करनेलगे और उसने तुरन्त भोड़लकाशिर अद्भुत मिथ्याई-
श्वरकासा बनाया और उसको लगाकर ६० हाथकीदाढ़ी जो
उसने मूड़कर रखछोड़ीथी लगाई और हाथ और पैर औरसब
शरीर उसीकासा बनाया अर्थात् उस मिथ्याईश्वरका शरीर ए-

कसौंपचासवेहाथ लम्बाथा वैसाही शरीर उसने अपनावनाया और जीवकविमानपर सवारहुआ जिसका वर्णन पूर्वमें होचुका है और चपला ने एकसौइक्कीसकली का अंगापहिरकर छोटी ग्रीवाबनाकर अपनास्वरूप उस मिथ्याईश्वरकी सभाके कलि चित्रांगदकासा बनाया और प्रहास के पीछे खड़ाहोकर मोर्छ-ल करने लगा और उपहास अपना भयानक भेष बनाकर उसके दहिनेहाथकीओर खड़ाहोगया इसने ऐसास्वरूपबनाया था कि उसका एकहोठ तो छातीतकलटकताथा और दूसरा आंखोंतक चढ़गयाथा और मुख और कानोंसे अग्निकीज्वाला निकलतीथी और हाथमें अग्नि निकलतीहुई गदालियेहुएथा और उपदेशी एकप्रभारूपी गणबना कि सबशरीर उसका च-मकताथा और दोनोंकन्धोंपर पक्षलगेहुएथे जिनसे नानाप्रकार की गन्धनिकलतीथी प्रकटहो कि इन बहुरूपियोंने आवश्यकता को पहिलेसे पक्षबनाकर रखछोड़ेहैं और उनमें कुछस्थान ऐसे बनादियेहैं जिनमें कस्तूरी अगर तगर आदि सुगन्धित पदार्थ भरदिये हैं कि पक्षोंको हिलाने से उनमें से वे गन्धबाही पदार्थ गिरतेहैं और उनकी गन्धफैलतीहै निदान वह उक्तरूप धारण करके प्रहास के बायेंओर खड़ाहुआ और प्रचण्ड ने अपना स्वरूप एकस्वरूपवान् प्रभावान् डीलडौल के मनुष्यकासा ब-नाया और अपनेहाथमें रत्नजटित मद्यपात्र और पानपात्रलेकर खड़ाहोगया उससमय प्रहास ने प्रार्थनाकी और करतेही इन्द्र के वरदानके कारणसे वहछत्र एकसभाके समानहोगया जिसमें माणिक और २ रत्नों के सहस्रों कलशचढ़े थे और वहसभा प्रतिपद स्वरूपबदलतीथी कभी श्वेत कभी श्याम कभी रक्त कभी पीत कभी हरी और कभी और २ रंगकी भी होजाती थी निदान प्रहासने उक्त प्रकार से सब रचना करके उस वि-मानको उड़ाया और वह देवदत्ततूर जिसके शब्दको सुनकर

जीवमात्र नाचने लगने हैं बजाई और उसकेद्वारा यह वाणी कही कि मनुष्यो दौड़कर अपने उत्पन्नकर्त्ता परमेश्वरकी आकर पूजाकरो उस तूरका शब्द कई योजनतक गया उसकोसुनकर सब मायावी म्लेच्छ दौड़े और जब समीपआये प्रहास ने कहा अद्भुतईश्वरोहम् बहुतसे उनमेंसे अद्भुतको देखभी चुके थे इससे पहिचानतेही सब दण्डौतें करनेलगे और सबमेलेमें हल्लाहोगया कि अद्भुतईश्वर मेलेमें पधारे हैं चलो दर्शन करलो यह सुनतेही सब मायाविनी वस्त्र और आभूषणोंसे अलंकृत मिठाईके थाल लेलेकर झुमझुम करतीहुईचलीं औरउधर से सब मायावी दोनोंमें मिष्टान्न और फूल और हारलेकरचले सबने आकर प्रहासकी पूजाकर दण्डवत्की और मिष्टान्न सामने रखके फिर दण्डवत्की उससमय प्रहासने जालमारकरसब पदार्थोंको थैलीमें डाललिया जब वे दण्डवत् करके उठे उन्हों ने वहां कुछ न पाया तब प्रहासरूपी ईश्वरने कहा हमारेमायाबलका हस्त तुम्हारे सब भोगको लेगया वह बोले कि हे परमेश्वर तू सर्व सामर्थ्यवान्है निदान यहां तो पूजाहोरहीहैऔर उधर सेवकोंने दौड़कर रानी विचित्रमायासे विनयपूर्वक कहा कि श्रीअद्भुतईश्वर मेला देखने आये हैं यह सुनकर विचित्रमाया और मायाकृत देशकी सब रानी उठकर दौड़ीं और वहां आकर सबने दण्डवत्की और परमेश्वरके गण और उन की सभाके स्वरूपको देखकर सब चकितहोगईं उससमय सबबहुरूपिनीभी विचित्रमायाके साथथीं उन्होंने कहा कि ये कहींबहुरूपिया न हों उससमय प्रहासने बहुरूपिनियोंके होठोंकोहिलता हुआ देखकर क्रोधपूर्वक कहा कि क्यों विचित्रमाया तेरी बहुरूपिनी हमको बहुरूपिया बताती हैं अच्छा तू अपनीमायाहम परकर और अबहम जाते हैं यह सुनतेही विचित्रमायासुश्रूषा करनेलगी और बहुरूपिनियोंसे बोली कि तुमने देखा ईश्वरसब

जानते हैं देखो तुम्हारे मनकी बातको उन्होंने जानलिया अब तुम यहांसे जाओ परमेश्वर अप्रसन्नहैं यह कहकर उनको निकालदिया उससमय प्रहासरूपी ईश्वरनेकहा कि अबहम तब प्रसन्नहोंगे जब तुम सब हमपर मायाकरो यह सुनकर सबनेलाचारहोकर मायाकी और सब राजालोगोंने मायाकृत अस्त्रों के प्रयोगकिये परन्तु किसीसे कुछ न हुआ और जो भीतरजाने लगे वे सब उलटेहोकर लटकगये तब प्रहासरूपी ईश्वरनेकहा कि हे विचित्रमाया हम अब तेरेघरपर कभीनआवेंगे तैंने बहुरूपिनियों से हमारी अप्रतिष्ठाकराई यहसुनकर सबरानी और राजा त्राहि त्राहि और पाहि पाहि पुकारनेलगे और विचित्रमायाने विनयकी कि आप सभामें पधारें और जो कुछ मेरेपास निवेदन करनेकोहै उसको अंगीकारकरें जब सबने बड़ीसुश्रूषा की तब प्रहासने फिर विनयकी और करतेही वह सभाकारूप संहारहोनेलगा और केवल इतनारहगया कि उस विमानपर छाया बनीरही उसके चारोंखम्भोंको उनचारोंगणोंने थामलिया और सब खड़ेहोगये उससमय वह विमान उड़करचला और म्लेच्छों ने सहस्रोंघंटे और वाद्यबजाये और वह विमानमहेन्द्रकी सभाकेपास पहुँचा उससमय विचित्रमाया बोली कि जो आप उचित समझें तो इसअपनेविमान और अपनी सभाकोगणोंकोदेदीजिये वहबोला कि नहीं यहहमारी कलाकामण्डपहै हमइसमें से बाहर नहींआवेंगे और पूछा कि महेन्द्र कहां है वहबोली कि प्रहासको ढूंढ़नेगयेहैं वहबोलाकि हमउसकोयहीं पकड़बुलावेंगे और यह बताओ कि तुमसे कौनलोग विमुखहैं उसने सबवृत्तान्त कहकरकहा कि वे सब पकड़ेहुएहैं तब वहबोला कि मैं जाकर उनकोभी तुम्हारेआधीन कियेदेताहूं यह कहकर उसीओरको चला और मायाकर्त्ता के बागमेंपहुँचा विचित्रमाया आदिभी सब साथथीं जबवहांपहुँचा इसनेसबको डाटकरकहा कि हमको

अपना ईश्वरजानकर दण्डवत्करो परन्तु महेन्द्र ने उनपरसे माया तो दूरकरहीदीथी और वे चैतन्यथे और परमेश्वरसेप्रार्थना अपनेछुटनेकी कररहेथे इससे यहसुनतेही वे अद्भुत और मायाकर्त्ता दोनोंको दुर्वचन कहनेलगे यह देखकर ईश्वररूपी प्रहास विमानपरसे कूदकर उनकेपासगया और बोला कि शीघ्र हमको दण्डवत् करो नहीं तो हमनाश करदेंगे प्रत्यक्ष में तो यह कहतागया परन्तु परोक्ष में सबको अपनी आंखका तिल दिखलाकर इशारेसेकहा कि मैं प्रहासहूं तुमको छुटानेकोआया हूं जो मैं कहूंसोकरो यहसमझतेही सबने पृथ्वीमें गिरकर लंबी दण्डवत्की और कहा कि हे ईश्वरतूसत्यहै हमारा अपराध महाराज महेन्द्रसे क्षमाकरादे इसप्रकार से जब उन्होंने आज्ञा में रहना स्वीकारकिया तब वह ईश्वर बनाहुआ प्रहास अपने विमानपर आबैठा और बोला कि इन कैदियों को छोड़दो यह सुनकर विचित्रमायाने सबको छोड़दिया प्रहासने उनसब को भी बुलाकर अपनी सभामें बैठाया और अपनेगणोंको आज्ञा दी कि हमारी उच्छिष्टमद्यमेंसे एकएक पानपात्र इनसब राजाओंको पिलाओ जिससे इनकी आयुबढ़जाय और हमारेमायाकृत कार्य इनकोदीखनेलगें यहसुनतेही वे गण उनको मूर्च्छाकर चूर्ण मिलीहुई मद्यपिलानेलगे और एकपात्र विचित्रमाया कोभी पिलाया जब सबपीचुके तब निशाकरी आदिसेभी कहा कि पानकरो वह तो यह जानतीथीं कि विचित्रमाया और इन राजालोगोंकी तो मृत्युनहीं है परन्तु प्रहासने इनको मूर्च्छाकर चूर्ण इसप्रयोजनसे मद्य में पिलायाहै कि इनकी की हुई माया सेबचानेवाला कोईनहीं है जो ये अचेतन होंगे तो सबसेना फिर पकड़जायगी निदान उनसबने ललकारा और नारिकेलआदि अस्त्रलेकर उठे यहदेखकर सबराजालोग घबराकर उठे परन्तु मूर्च्छितहोकर गिरपड़े और विचित्रमायाभी अचेतहोगई तबतो

रानी निशाकरी और रानी आनन्दा और मायावती आदि ने आकाशमें जाकर लोहगोलक आदि नानाप्रकारके मायाकृत अस्त्रोंका प्रयोगकिया बागके बाहर म्लेच्छों ने कोलाहल सुना और उसको सुनकर सबचकित थे कि यह क्या बातहै क्योंकि परमेश्वर अद्भुतआगयेहैं अब कोई शिर न उठावेगा इसीविचार में थे कि अग्नि पत्थर बरसनेलगे और प्रहासने तूर बजाकर कहा कि हे मेलेमें आनेवालो सब शीघ्रयहांसे भागजाओ परमेश्वरका कोपआयाहै यह सुनकर मेलेवाले भागनेलगे और वह सेना जो कैदकीगईथी वहभी छूटगई और रानीनिशाकरी और आनन्दाआदि अपने२स्वामियोंको पहिचानकर सबइसके पास चलीआई तब उसको आज्ञादीगई कि महाजनआदिसब धनाढ्योंको लूटलो और शत्रुओंका वधकरो यहसेनाभी लाखों मनुष्योंकीथी और राजा लोगों के अचेतहोजानेसे कोई रोकने वालाभी नथा और वह दिवसभी समाप्तहोचुकाथा और तारागणोंकीसेनाने दिवसके प्रकाशपर धावाकिया और प्रकाशमान सूर्य भागकर पश्चिम को चलागया॥

लक्ष्मीछन्द। घोसकिन्हों जभैयन्त। रातिआई लिये कन्त॥
ऊगिसोही तबप्रकाश। कीनस्वच्छ सुप्रकाश॥

रातिके अंधेरेमें लूट अच्छीबनपडी उधर रानी निशाकरीने खड्गखींचकर कईलाख साथियोंसहित युद्ध प्रारम्भकिया और मेलेके मनुष्यों का वधकरनेलगे उनके मरनेका कोलाहलहोने लगा और अग्निकीज्वाला प्रकटहोनेलगी उधर रानीआनन्दा ने मायाकरके फूलफेंके उससे शीतलवायु चलनेलगी और अंधकार छागया उससमय आनन्दा ने अपने माथेपर सोने की बिन्दियांलगाकर मायाकी कि उससे तारागण प्रकटहुए और टूट टूटकर गिरनेलगे उनसे जो मायाकृत बागलगाथाथा उसके फूल प्रकाशमान होगये उसबाग में जो जो शत्रु युद्धकरने को

आये सब वायुका स्पर्शलगतेही उन्मत्तहोगये आनन्दा ने उन को आज्ञादी कि जाओ और मेलेमें आनेवालोंका वधकरो वह भी जाकर मेलेवालोंका वधकरनेलगे और रतिकालने अट्टहास करना और सण्डीनचपलाने चमक चमककर गिरना आरम्भ किया और एकओर मायावतीने पानपात्र जो मायाकरके फेंका अकस्मात् ठंढीवायुचली और जिस के शरीरको उसने स्पर्श किया वह मद्यपीकर और डफलेकर होलीगानेलगा॥

चौ० कोउकह पानपात्र मनलाओ। मधुरमधुर धुनि होलीगाओ॥
कोऊ पानपात्र को चूमै। अति प्रमत्त कोऊ तहँ झूमै॥

एक ओरको रानी रक्तकेशी अपने केशोंको खोलकर माया करके हिलातीथी उससे सहस्रों दीप्तविन्दु निकलकर शत्रुओं पर गिरतेथे और उनको भस्मकरतेथे निदान एक कोलाहल होरहाथा उस समय प्रहासने पहिले तो मायाकर्ता के बागमें जो कुछ राजाओं का धन और वस्त्र और आभूषण पाये सब उतारलिये और आसनआदिक जो कुछ वहांथा सबको जाल मारकर अपनी थैलीमें रखलिया और बहुरूपियोंको आज्ञादी कि सभाओंके ऊपरचढ़कर कलश उतारलाओ वेभीलूटनेलगे और म्लेच्छों की सेनाने मायाबलसे बिजलियां गिराकर उन सब सभाके डेरोंको भस्म करदिया और बहुरूपियों ने कलश उतारलिये और प्रहास मायाकर्त्ताके बागको लूटकर महेन्द्रके बैठनेकी सभामें आया उसपर सण्डीनचपला जो चमककर गिरी उसे भस्मकरके गिरादिया और प्रहासने वहां के सबसरं-जाम को जालमारकर थैलीमें रखलिया फिर वहां से रत्नकूपपर आया वहां से सब तो भागगयेथे परन्तु रक्षक वहां मौजूदथे प्रहासने मरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर वहां भी जालमारा कि जोकुछ सुवर्ण और रत्न और आभूषण वहां चढ़ेथे सब खिंचकरचले आये यह देखकर रक्षक घबराये और मायाकरने लगे परन्तु

किसपर मायाकरें दिखाई तो कोई देताहीनथा इतनेमें प्रहासने दूसरीबार फिर जालमारा तो जो कुछ उस सरोवरमें था और जो कुछ उसके किनारे पड़ाहुआ था सब खिंचकर चलाआया यहांतक कि मिट्टीतक इँचआई और वहां एक गर्त्तसा होगया प्रकटहो कि यह स्थान मायाकर्त्ताके कूपकेनाम से विख्यात था इससे मायावीम्लेच्छ इसको एक अपने ईश्वरकाधाम जानकर इसकी पूजा करतेथे यहां न तो कोई मायाकृत स्थानथा और न यहां पिशाचादिकोंमें से कोई रहताथा परन्तु वह जाल तो वरुणदेवताका दियाथा उस पर न माया चलतीथी और न उसके प्रभावमें कोई पिशाचिक अन्तर डालसक्ताथा यदि यह जाल महेंद्रपरपड़े तो वहभी खिंचकरचलाआवे परंतु महाराज शत्रुंजयने निषेधकर दियाथा इससे प्रहासने ऐसा कभी नहीं किया और इस स्थानपर जालमारनेका कारण यहथा कि जब शत्रुने ऐसा काम किया कि उसके कारण से छुटना असम्भव होगया तब उसकार्यके बदलेमें यहीकरनाउचितथा कुछअधि-क वर्णनकरनेकी आवश्यकता नहींहै पढ़नेवाले आपजानलेंगे निदान यहांपर एक गर्त्तपड़गया और पिशाच और रक्षक वहां के घबराकरभागे जब वह स्थानभी नष्टहोचुका तब बहुरूपिये जो सामने पडा उसीको नष्टकरनेलगे और सहस्रोंम्लेच्छ मार-डाले उसमेलेमें झमेला डालदिया और क्रय विक्रयके पलटेमें प्राणोंका भाव बड़ा कड़ाथा ६० वर्षका वृद्ध और १० वर्ष का बालक एकहीभाव था इसप्रकार से सबको बधकिया कि कोई भागनेतक न पाया उनके रक्तसे वहां की पृथ्वी रक्तहोगई थी और वह बजार अपूर्व दर्शनथा जहां देखो तहां मृत्यु विकती थी यमदूत उसके क्रय करनेवालेथे मृतकोंके शरीरोंके बिछोने बिछेथे मायाकृत खड्ग बिजलीकी भांति चमकचमककर गिरते थे चारोंओर भगदड़ पड़ीथी भागो भागो का शब्द होरहाथा

एक दूसरे पर गिरापड़ताथा भागतेहुए मार्ग न मिलताथा दुकानोंपर सन्नाटाहोगया और ऊपर से यह आपत्ति वरुणदत्त जाल जो पड़ताथा तो लाखोंमनके पदार्थोंको सवासेरका करके खींचलाताथा उस समय प्रहासने अपनी थैलीकी चौरासियों घुंडियां खोलदीथीं और कहताजाताथा कि रामदिवावे चाकर लेय मुझसे निर्धनीको आज परमेश्वरने दोचारकौड़ियां दिलादीं और सब वहुरूपिये भी लूटते फिरतेथे थोड़ीदेरमें उन्होंने बजाजा और शराफा और जौहरी आदि बजारों को लूटकर निष्पदार्थ करदिया सेनाने लोथोंकेढेरलगादिये लाखोंही मनुष्य थे एकएक दुकानको दसदसने लूटा परंतु जिसने जो लूटा सब प्रहासके लिये रखछोड़ा कि उन्होंने हमारे प्राणबचाये हैं और हमारेरक्षकहैं जोउनकोकुछ अपनेपाससेनदें तो जोलूटाहै उसमें तो हाथ न लगावें दूसरे वहसबसे हिसाबभी मांगेंगे उससमय जो देनापड़ा तो झूंठेभीबनेंगे निदान दोपहरतक लूटमार और प्रलयकालमचारहा चारोंओर मृतकोंकीलोथेंहीलोथ दीखतीथीं॥

सो० यहि विधि भट दुहुँओर बढ़िबढ़ि भिरि लागे लरन।
मचो युद्ध अति घोर उमँगि चली शोणित नदी॥

चौ० शोणित वारि भौंर थर भाये। धनुप स्रोतध्वज वृक्षसुहाये॥
कर पग ग्राह वाण असि मीना। चर्म परेतहँ कच्छप पीना॥
मज्जा मेद फेण सम राजै। मुख वारिज समसुखमासाजै॥
चमर केश सेवार अहीने। छत्र मनों पक्षी श्रमलीने॥
द्विरद गिरे मनु गिरत करारे। सुभट लसें मनु मज्जाहारे॥
शूर द्विजनकहँ सुख दातारा। म्लेच्छ कादरन भयदअपारा॥
यहिविधिमचो घोररणसाजा। कटेअसंख्यन मनजसमाजा॥
भगेमनुज तजि सुतपितुसंगी। नहिंकाहू निरख्योनिजअंगी॥
शून्य भयो जबहीं बाजारू। निर्भय लूटन लगे सुतारू॥
दौरिदौरि सैनिक सब परहीं। जो जेहि पाव ताहिते हरहीं॥
यहिविधि लूटिसकलथरमेला। निष्पदार्थ कीन्हों तेहि बेला॥

इसप्रकारसे लूटमारकरके सबवैष्णवीसेना अपनेडेरोंकीओर चलदी और बहुरूपनी जो निकालदीगईथीं वह इसआपत्ति को देखकर चकितथीं और मारेजानेके भयसे एकस्थानमें गुप्त थीं उन्होंनेकहा कि सबराजा और विचित्रमायाको बहुरूपियोंने मारडाला जानपड़ताहै चलो चलकरदेखें तो यहकहकर अपना भेषबदलकर वे मायाकर्त्ता के बागमेंआई और वहांजाकर विचित्रमायाको उन्होंने चैतन्यकिया आंखखुलतेही उसने अपूर्व दशादेखी कि न सभाकेडेरेहैं न मेलाहै न शोभाहै न अलंकार हैं किन्तु चारोंओर बध और मारधाड़ मचरहीहै और भगदड़ पड़ीहै और लूटहोरही है यहदेखकर वह बिलबिलाकरउठी परन्तु अपने और पराये लाखोंम्लेच्छ फिररहेथे वह किससेलड़े और अकेली किसकिसको रोके अन्तको खम्भपकड़कर रोने लगी और इधर रानीनिशाकरी और बहुरूपिये आदि सबअपनी सेनामें पहुंचे वहांपहुंचकर प्रहासनेकहा कि तुमसब माया बलसे अपने२ स्वरूपके पुतलेबनाकर अपने२ स्थानोंपरबैठादो और ऐसी मायाकरो कि यहां नृत्यहुआकरै और मद्यपानभी होतारहै यहसुनकर सबने ऐसाहीकिया और अपने२ स्वरूप का पुतलाबनाकर अपने२ स्थानोंपर बैठादिया इसकेपीछे वहां ऐसे वैसे म्लेच्छों को वहांका रक्षक नियतकरके उनसेकहा कि यदि कोई आपत्तिआवे तो तुमभागजाना और सबसेना और शूरवीर और सेनापतियोंको केशरीमायाके साथ कालेपर्वतपर भेजदिया और बहुरूपियोंसेभीकहा कि तुमभी इनकेसाथजाओ और चौकसरहना इसकेपीछे सब कालेपहाड़पर चलेगये सब सेनापति तो कालेडेरे में ठहरे और सेना पर्वतपर इधर उधर ठहरी और बहुरूपिये सेनाके चारोंओर चौकसीकरनेलगे निदान ये सब तो यहां विश्रामकररहे हैं परन्तु चौकस हैं और प्रहास वहीं मरुतदत्त वस्त्रओढ़ेहुए ठहराहुआ है परन्तु अब

महेन्द्रकी व्यवस्थासुनिये कि आनन्दवाटिका के समीपजाकर उसने विचारकिया कि बहुरूपिये पर्वतोंमें किसीगुफामें छुपेहोंगे और प्रहासने मरुतदत्तवस्त्र ओढ़लियाहोगा इससे अब चल-कर और बहुरूपियोंको पकड़लाऊं तो प्रहास उनके छुड़ानेको आवैगा उससमय उसको भी पकड़लियाजायगा यहसोचकर वह बनमें ठहरगया और जो पिशाचादिक उसकेसाथ आयेहु-येथे उनको आज्ञादी कि बहुरूपियोंको जाकरढूंढ़ो वह सबचले और महेन्द्र ठहरारहा उससमय मेलेकेलोग जो भागेथे उनमें से कुछ उधरभी जानिकले महेन्द्रने देखा कि बहुत से मायावी म्लेच्छ और म्लेच्छी रोतेपीटते उघारे दीनदुखी अचेतसे भा-गेहुए चलेजारहेहैं उसने उनको बुलाकरपूछा कि यह क्याबात है उन्होंने महेन्द्र को पहिचानतेही करुणाविलापकिया और कहा हमसब लूटेगये और बालबच्चे हमारे मारेगये और फिर सबवृत्तान्त वर्णनकिया यहसुननाथा कि वह क्रोधकेमारे लाल होगया अपनेसाथी म्लेच्छ और पिशाचादिको फेरकर तुरन्त मेलेमेंआया और अपूर्वदशादेखी कि एक पिपीलिकाने एकब-ड़ेभारी गजको पछाड़दियाहै मेलेमें चारोंओर सन्नाटाथा दुकानें सब लुटीहुई और डेरे तम्बू सबजलेहुएथे यहदशादेखकर उस ने विचित्रमायाको धीर्यदिया और अपनेसाथमें लेकरकहा कि मैं सबको अभी मारेडालताहूं और सबराजा और महाशयोंको चैतन्यकिया उन्होंने अपनालुटना और मेलेका विध्वंसन देख-कर विनयकी कि अब मायाकृतदेशके प्रबन्धमें अन्तरआगया इससे हमसबको अब आज्ञादीजिये कि हम अपने २ स्थानों परजायँ महेन्द्र ने परमलज्जितहोकर सबको बिदाकिया और सबराजा और रानी और महाशय और प्रबन्धक और पिशा-चादिक जो मेलेमेंआयेथे अपने२ स्थानको चलेगये और म-हेन्द्र विचित्रमायाको साथलेकरचला उसकेसाथ पांचसहस्र तो

सोरथे जिनपर बड़े२ नामी मायावी म्लेच्छ सवारथे और उस समय वह क्रोधरूपी समुद्रमें डूबाहुआथा हाथमें कालेसांपका कोड़ालियेथा और मुखसे कफ निकलरहाथा निदान वह वहां आया जहां निशाकरीकी सेना उतरीहुईथी और अपनानाम सुनाकर नानाप्रकारके मायाकृत अस्त्रोंका प्रयोगकरनेलगा उनसे बाण असि भल्ल और त्रिशूलआदि शस्त्र और पाषाण और अग्निकी वर्षा होनेलगी चपला चमक चमककर गिरने लगी महाप्रचण्डवायु चलनेलगी घोरकोलाहल मचगया पृथ्वी फटगई और क्षणमात्रमें वहांके सबडेरे तम्बू और प्रतिरूप जो वहां बैठेथे नष्टहोगये और जिन म्लेच्छोंको प्रहास छोड़आया था उनसे जहांतकहोसका भागगये और बाकी मारेगये उस समय महेन्द्रने वहां आकरदेखा तो सबको मराहुआपाया यह देखकर उसने आज्ञादी कि इन्हीं लोथोंकेऊपर हमारे पांचडेरे खड़ेकियेजायँ यहआज्ञाहोतेही पांचडेरे जिनके स्तम्भ रत्नजटितथे खड़ेकियेगये और प्रतिडेरे में बारह बारहसौ रत्नजटित आसन बिछायेगये वहां सिंहासनपर महेन्द्र बैठा और सब ने शत्रुओं के मारेजानेकी प्रसन्नता में भेटेंदीं और नृत्यहोनेलगा उससमय महेन्द्रने विचित्रमायासेकहा कि लो मैंने क्षणमात्र में सबको विध्वन्सकरदिया अब तुम अपनी सेनाको यहींउतारो और नाचदेखो मैं प्रातःकालआकर जो मेलालुटगयाहै उसका प्रबन्धकरूंगा और बहुरूपिये अब अकेलेरहगयेहैं वहकहांतक भागतेफिरेंगे सबको पकड़कर बड़ीदुर्दशासे मारूंगा इससे अब मैं बदरीउद्यान में जाकर विश्रामकरताहूं क्योंकि कईदिन से शयन नहींकिया है परन्तु तुम उसदुष्ट छली बहुरूपियेसे चौकसरहना यहकहकर वह बदरीउद्यानको चलागया और वहां जाकर शयन करनेलगा निदान यह तो सोया और वह छल वेद्याचार्य अर्थात् प्रहासजगा और महेन्द्रको गयाहुआ जान-

कर वायुकासावेग धारणकरके वहांसेचला और रानीनिशाकरी के पासआकरबोला कि शीघ्रचलो शत्रुके मारनेका यहीसमय है यहसुनतेही रानी निशाकरी सेनातयारकराकर चलदी यहां विचित्रमाया नाचदेखरहीथी कि अकस्मात् आकाशसे आप त्तिआकरगिरी अर्थात् रानीरक्तकेशीने अपने शिरको हिलाकर ऐसीमायाकी कि महाप्रचण्ड वायुचलनेलगी उससे संसार में अन्धकारछागया और सब दीपकआदि सेना में बुझगये उस समय उसअन्धकार में रानीनिशाकरीकी सेना विचित्रमायाकी सेनापरगिरी फिर वही आपत्तिकालहोगया आकाश से शिला गिरनेलगीं और शत्रुमरनेलगे एकप्रलयसीहोगई और म्लेच्छ तो सबपहिलेसेही डरेहुएथे थोड़ीदेरभी न ठहरसके सबभाग खड़ेहुए और उधर डेरेजलने और गिरनेलगे उससमय वि-चित्रमाया अपना मुखपीटकर बाहर निकली और पुकारी कि अरे मायाकृत उलमुखलाओ अरीमायामणि अरीमायालल कि-धर है सेनाकोरोको परंतु उसकी कौन सुनताथा जालपड़रहाथा बिजलियांपड़तीथीं वायुशीतल चलरहीथी मायाकृत बागलगा हुआथा कहीं मायावती की माया से लोग मद्यपान कररहेथे भगदड़ पड़ीथी म्लेच्छोंका वधहोरहाथा और कोलाहल मच रहाथा निशाकरी की सेनामें बाद्यबजरहेथे ध्वजाफहरा रहीथीं निदान थोड़ेही कालमें सब म्लेच्छ वहांके मारे गये ॥

चौ० । बज्रसमान प्राण हररूरे । अस्त्र शस्त्रसब दिशिमें पूरे ॥
दावा दहै गहन बन जैसे । मर्दतभेअरिको दल तैसे ॥
प्रति योधनवाणनकी धारा । पूरिदयो रणधीर अपारा ॥
रथ धनुध्वजा तुरँगभटबारण । अंग भंग करिलागेडारण ॥
कितने भगे प्राण हरज्वैकें । किते मरे बढिसन्मुखद्वैकें ॥
कितेभागकरसुनिआह्वाहन । आयलरें फिरिकीपिशरासन ॥
घायलपरें किते भट ऊवें । कितने मरे रुधिरमें डूवें ॥

निदान इसप्रकारसे सब शत्रु सेनामारीगई और भागग

जब वह रात्रि व्यतीतहोगई और सूर्योदयहुआ तब विचित्र
ाने देखा कि उसस्थानमें लोथोंके ढेरलगेहुएहैं और जंबुक
ार गृद्ध और चील्ह आदिपक्षी वहांइकट्ठे होकरमांस भक्षण
ररहेहैं सिवाय उनके और कोई नहीं है और मेलेमें लुटनेसे जो
छ धन और सरंजामबचाथा उसकाभी पता न था न सेनाथी
मित्रथे सब भागगयेथे यहदेखकरवहरोतीहुई बदरी उद्यानकी
ओर चलदी और उधरप्रातःकाल होतेही प्रहास सब सेनासहित
शत्रुओंका विध्वंसन करके काले पहाड़पर लौटआया और रानी
निशाकरीसे कहा कि अब यहांसे हरेपर्वतपर चली जाओ और
अपना अपनाप्रतिरूप यहां छोड़जाओ यह सुनकर सब ने मा-
याबलसे अपने २ स्वरूपकेपुतले बनाकर वहां छोड़दिये और
नकेसाथ जो घोड़े हाथीरथ और छकड़ेथे उन सब को वहांके
ोड़दिया और डेरेखड़ेरक्खे और जो ऐसे वैसे म्लेच्छथे
हां तहां पर्वतके ऊंच नीचे स्थानोंमें रक्षाके लियेनियत
और उनसे कह दिया कि जब कोई आपत्ति आवै तब
जाना निदान यहप्रबंधकरके रक्तकेशीकेसाथ साथहरे पर्वत
की ओर चलदिये औरप्रहासमरुतदत्तवस्त्र ओढ़कर वहींठहरा
रहा इधर विचित्रमायाने बदरीउद्यानमें जाकर महेन्द्रकोजगाया
और सब वृत्तांतकहा सुनतेही महेन्द्र महा क्रोधितहोकर वहांसे
चला और उसस्थानपर आया जहांसेनामारीगईथी और उस
दुर्दशाको देखकर ऐसा क्रोधितहुआ कि अदृश्यखण्डकी औरको
छोड़कर और तीनों ओर दशदशकोस तक ढूँढ़ताचला गया
और अन्तको देखा कि कालेपर्वतपर सभामें नाचहोरहाहै और
सबसेनापति बैठे हैं और सेना उतरीहुई है यह देखतेही उसने
अंगूठीको पहाड़की ओरकरके ऐसा अट्टहासकिया कि वहपर्वत
फटगया और उसमेंसे पत्थर टूटटूटकर बरसनेलगे और एक
ड़ीभारी नदी प्रकटहोगई कि उसमें डेरे तंबू और सब म्लेच्छ

डूबनेलगे भगदड़परगई जिनकी मृत्यु न थी वह तो भा
और सब मारेगये इसप्रकारसे क्षणमात्रमें उसस्थानको
करदिया और कहा कि ये दुष्टयहांआकरछिपेथे और वहां
स्वरूपके पुतलेछोड़ आयेथे यहकहकर उसने वहांतंबू तन
और बैठकर कुछमायाकी कि मायाकृत वाद्य आपही बजने
उनको सुनकर सैनिक और मेलेकेभागे हुए मनुष्यउसके
आये उनसबकोधीर्य दिया और जो जो बणिक लुटगयेथे
सबको बहुतसा धनदेकर बिदाकिया और प्रबंधकोंको आज्ञा दी
कि मायाकर्त्ताका बाग और रत्नकूप आदि जो जो स्थान भ्रष्टहो
गयेहैं वेसब फिरसे नवनीत किये जायं यह आज्ञापाकर वे सब
वैसाहीकरनेलगे और इधर महेन्द्रने विचित्रमायासेकहाकि अब
इसमायाकृत देशमें जहांकहीं बहुरूपियेहोंगे वहांसे मैं उनको
ढूंढकरलाताहूँ अपनाकार्य आपही अच्छाहोताहै अच्छा
जाताहूँयहकहकर सेना और विचित्रमायाको छोड़कर
इसअवसरमें वहदिन व्यतीतहोगया और सूर्यरूपी
चलेजानेसे तारागणरूपी विचित्रमायाकी सेना आकाश
काले पर्बतपर स्थितरही ॥

चित्रपदाछंद । निशि आई अंधियारी । चन्द्र कियो उजियारी ॥
तारा गण नभ चारी । विकसे निशा विचारी ॥

उससमय प्रहासने जाकर रानी निशाकरीसे सब हालकहा
वह फिरसेना लेकर आगिरी विचित्रमायाकी सेना तोबड़ा धोका
उठाचुकीथी वहडेरोंके गिरतेही औरबिजलियोंकेचमकतेहीभाग
खड़ीहुई कि प्राणहैं तो सबहै और विचित्रमाया अकेली रहगई
उसने ध्यानकिया कि इतनी बड़ी सेनासे अकेले युद्धकरना असं-
भवहै यहसोचकर वहभी भागखड़ीहुई फिर तोप्रहास वहांकासब
सरंजाम लूटकर बड़ी शीघ्रतासे हरेपर्बतपरआया और वहांपर
भी पहिलेकी भांति प्रबन्धकरके सबको साथलेकर रक्त पर्बतपर

चलागया और अबकी प्रहासभी साथउनके गया उधरसे महेन्द्र और बहुरूपियोंको ढूँढ़रहाथा कि उसको सेनाके भागेहुए लोग मिले और उनसे सबहालसुनकर वहफिरपड़ा परंतु सबने विनयकी कि महाराज पहिलेकी समानरानी विचित्रमाया सेनालेकर युद्धकेलियेक-हींविश्रामकरें जब शत्रुयुद्धकरनेकोआवें तबआप उनकावधकरें और इसप्रकारसे बहुरूपिये बड़ा बड़ा धोकादेंगे महेन्द्रने इस बातको स्वीकारकिया और बदरीउद्यानमें चलागया विचित्रमा-याभी वहांआई फिर सेना निर्माण करनेका विचार किया और विचित्रमायाकेसाथ नामीनामीमायावी म्लेच्छोंके जानेकाविचार होनेलगा निदान यह तो यह प्रबन्ध कररहाहै और उधर जब प्रहास रक्त पर्वतपर पहुँचा उससे मारीचनेकहा कि अपनीप्राण प्यारीके विरहमें जो इसयुद्धमें हमारे प्राणनिकलजाते तो अ-न्यथा अब जो मेरेगुरू महाराज कालेन्द्रको मेरीदशाकी खबर जाती तो वह अवश्य मेरी सहायताकरते प्रहासबोला कि ...जायंगे तुम पताबतादो वहबोला कि पूर्वदिशामें सप्तव-र्ण नामी पर्वत और सप्तबर्णीनदी है वह इतनाहीकहनेपा-या कि अकस्मात् बिजलीचमकी और हाथीपर एकध्वजा के ऊपर एकसूर्य निकलाहुआदेखा प्रहासनेजाना कि महेन्द्र आया और उसने भागनेका विचारकिया कि इतनेमें मारीचने पहिंचा-नकरकहा कि घबराओ मत मेरेचचा दधीचहैं यह सुनकर सब ठहरेरहे कि उससमय पांचलाख म्लेच्छ मायाकृत हाथी सिंह सर्प मयूर और बाहनोंपर सवारप्रकटहुए और दधीच हाथीपर सवार दिखाईदिया मारीचदौड़कर उसकेपासगया उसने पहिं-चानकर कंठसेलगाया और सबवृत्तान्त सुनकर हाथीसे उतरा और सेनाको ठहराकर रानीनिशाकरीके पासचला प्रहासनेउस कोआतेहुए देखकर परमोत्तम वस्त्रधारणकिये और शिरपरऐसा किरीटबांधा कि संसारके राजाओंने ऐसा न देखाहोगा कि उ

लगेहुए मुक्ता एक एकदीपककीभांति चमकतेथे निदान अंग
को अलंकृतकरके सिंहासनपरजाबैठा कि इतने में वह रानी
निशाकरीके पासआया परन्तु उसने प्रहास के तेजको देखकर
प्रणामकिया और उत्तम आसनपर बैठगया और अपनी भौ
जाईसे बोला कि तुम मायाकृतदेशाधिप से निष्फल फिरआई हो
निशाकरी ने कहा कि अब तो हम प्रहासके आधीन हैं उसने
कहा वहकहाहैं वहबोली यहक्याबैठे हैं उसने पहिंचानकर प्र
हाससे वार्त्तालापकिया और कहा कि प्रहासजी मेरेपास एक
मुद्रिका और एककड़ा है मैंने इनदोनों अपूर्वपदार्थोंको अपनी
समस्तवय में परिश्रमकरके लाभकिया है वह मैं आपकोदूंगा
आपके बड़ेकामआवैंगे और महेन्द्र मायाकृतदेशका अधिपहै
इससे मैं उससे युद्धनहीं करसकताहूं यहबातें करताहुआ वह
सेनाकोलेकर वहांआया जहां रानी निशाकरीकी सेना सदैव
रहतीथी और जहांसे युद्धकेलिये जायाकरतीथी यहां महे कि
ओरसे कईसहस्र म्लेच्छटिकेहुएथे उसने मायाकरके एक कि
का प्रयोगकिया वह बीचाबीच सेना में जाकरफटा औरउससे
ऐसाधूम प्रकटहुआ कि सबसंसार में अन्धकारछागया जिस
महेन्द्रके सैनिकों के शरीर में वहधूमलगा उन्होंने अपने शिर
अपनेहाथ से काटडाले तब उनको खिंचवाकर भस्मकरादिया
और उसस्थानपर सभाकेडेरे शयन के तम्बू रहनेको सिविर
लगाएगए बजार फिरसे खुला दुकानेलगगईं और सबसेना
फिर पूर्ववत् आकर वहांठहरी और वाद्य नानाप्रकारके घमा-
घम बजनेलगे इसबातकी यहखबर मायाकृत पक्षियोंने महेन्द्र
को पहुंचाई सुनतेही उसने बड़े २ प्रबल मायावी म्लेच्छ और
बड़ीभारी सेनादेकर रानी विचित्रमायाको भेजा और वह उस
नाको लेकर नदी के इसपार आई और प्राचीन स्थानपर
रीति से आकरठैरी उसकेसाथ समीररूपा बहुरूपिणीभी
भी

ाईथी वह अपनी सेनासे छलकरने कोचली और भेषबदल
रानीनिशाकरीकी सेनामेंआई और देखा कि प्रहास सेना
उतरवानेके प्रबन्धमें लगाहुआहै यहदेखकर वह तुरन्त अ-
ास्वरूप प्रहासकासा बनाकर दधीचके डेरेमेंगई वह श्रमित
ो कारण से विश्रामकररहाथा प्रहासको देखतेही उठबैठा
ीरूपा ने कहा मेरेसाथचलो कुछकाम है वह साथहोलिया
ौ जबएकान्तमें पहुंचा उसने उसेमूर्च्छापण्डसे अचेतकरदिया
ो एकसारमें उसे बांधकर विचित्रमायाकी सभामें लेगई तब
उसको मायामें वेष्ठितकरके कैदकिया और फिर उसे चे-
कहा कि अबतू इसबातकी बाचाभर कि मैं प्रहास
गा तो तू छोड़दियाजाय वहबोला कि अब तो मैं
प्रहासकासाथीहूं उसने बधिकोंको बुलाकर आज्ञादी
शिरकाटडालो परन्तु यहां थोड़ीदेरपीछे प्रहास द-
पगया और उसको डेरेमें न पाकर भेषबदलकर
ीकी सेना में पहुंचा परन्तु समीररूपा ने उसे पहिं-
हा कि निपूते खड़ातोरह और भुजालीलेकरदौड़ी तब
वहां से बाहरनिकलआया परन्तु वहां चपलाभी गया
वह समीररूपाको आतेहुएदेखकर छिपरहा और जब
पआई उसने पाशमारी कि वह उलझकरगिरी तब
ने उसे अचेतकरके वृक्षपर चढ़कर बांधदिया प्रहास
कर बोला कि बेटा तैंने अच्छाकिया यहसबखेल बिगा-
निदान चपला समीररूपाका स्वरूपधारणकरके सभाके
या परन्तु वहां एकम्लेच्छ ने कहा कि यह समीररूपा
यहसुनकर विचित्रमायाने मायाकरके चपलाकोभी पक-
और कुछपढ़कर चपला के ऊपर फूंकदिया कि उसका
रूप प्रकटहोगया तब उसने उसको भी दधीचकेसाथ
जानेकी आज्ञादी और येदोनों अपनाचित्त

श्रीविष्णु भगवान् से अपने मुक्तहोने की प्रार्थनाकरने लगे ॥

चौ० । हे जगदीश्वर दीनदयाला । भक्तबछल प्रभु परम कृपाला ॥
हमभक्तनि शरणागतलीजै । जीवदान प्रभु हमको दीजै ॥

श्रीविष्णुभगवान्ने उनकी करुणाविनयको सुनकर तत्काल उनके मुक्तहोनेका उपायरचदिया अर्थात् दोम्लेच्छ कालेकाले भयानकभेष धारणकियेहुये वहांआये और उन्होंने विचित्रमा को एकपत्रदिया उसको खोलकर उसने पहिंचाना कि मेरेपति श्रीमहाराज महेन्द्रका लिखा है उसमें यह लिखाथा कि अद्भुत जालकेदेखनेसे हमको विदितहुआ कि तुमने दधीच और चपलाको पकड़ाहै इससे उनदोनोंको तुम हमारेपास इनदूतों के साथभेजदो वह हस्ताक्षर अपनेपतिके तो पहिंअधिपहै थी बिनाविचारे उसने अपनी मायाको दूरकरके देखा वह म्लेच्छों को देदिया ये दोनों म्लेच्छ प्रहास और उसदेवदत्त बहुरूपियेथे म्लेच्छकारूप धारणकरके और कृत्रिमपत्र लायेथे जब सेनाके बाहरपहुंचे दोनों अपनाश्नाम कि- भागगये और दधीच उड़कर अपने डेरेमेंआया त्रमायाने उनकेनामोंको सुनकर बड़ापछितावाकिया और बलसे जाना कि समीररूपा वृक्षसे बँधीहुईहै उसको खुलवै बुलवाया इधर दधीच ने कहा कि प्रहासजी आपने मेरेऊ बड़ाअनुग्रह कियाहै यहकहकर उसने बहुतसा धनलेकर हास के सन्मुखरक्खा प्रहासबोला कि वह अंगूठी और कड़ जो आपने देनेकहाथा उसको दीजिये यहसुनकर उसने अप संदूक मँगवाया और उसमेंसे वह अंगूठी और कड़ा निका उसमुद्रिका का नग सूर्यकीसमान चमकताथा उसको देकर उस ने प्रहास से कहा कि इसके प्रभाव से तुम हरएक म्लेच्छ से प्रबलरहोगे और तुमपर किसीकी मायानचलैगी यहमुद्रिकाभी मायाकर्त्ताकी मुद्रिकाकी समानहै इसमें बड़े बड़े प्रभाव हैं व